C.no
3079

3079

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

0152m444 3079
F9.8
Vishwakarma, Mangal Prasad, Ed.
Chand.

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

0152m N44
F9.8

3079

SHRI JAGADGURU VISHWARADHYA JNANAMANDIR
(LIBRARY)
JANGAMAWADIMATH, VARANASI

Please return this volume on or before the date last stamped
Overdue volume will be charged 1/- per day.

SRI JAGADGURU VISHWARADHYA
JNANA SIMHASANA JNANAMANDIR
LIBRARY
Jangamwadi Math, VARANASI
Acc. No. 3079

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

4-9-0

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

मारवाड़ी-अङ्क

वर्ष ८, खण्ड १
संख्या १, पूर्ण संख्या ८५

SRI JAGADGURU VISHWARADHYA
JNANASIMHASAN JNANAMANDIR
LIBRARY
Jangamwadi Math, VARANASI

इस अङ्क के सम्पादक

प्रोफ़ेसर चतुरसेन शास्त्री

Certified Circulation
15,000. Copies

Price Rs. 3/- Nett.
इस अङ्क का मूल्य ३) रु०

THE FINE ART PRINTING COTTAGE, ALLAHABAD.

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

तार का पता :—"गोल्डमाइन" कलकत्ता

टेलीफ़ोन नं०—बड़ा बाज़ार १५६०, कलकत्ता

सोना, चाँदी और जवाहरात के ज़ेवरों का

अपूर्व संग्रह-स्थान

[इस प्रतिष्ठित फ़र्म के सञ्चालकों से हमारा पूर्ण परिचय है। यहाँ किसी प्रकार का धोखा होगा, इस बात का स्वप्न में भी भय न करना चाहिए। सारा काम सञ्चालकों की देख-भाल में सुन्दर और ईमानदारी से होता है ; हमें इसका पूर्ण विश्वास है।

—सम्पादक 'चाँद']

मोती, पुखराज और इमीटेसन मानिक। बहुत सस्ता नाक का कील हमारे यहाँ मिलेगा।

0152m N44
F9.8

सोने चाँदी का हर एक क़िस्म का ज़ेवर हमारे यहाँ तैयार रहता है और ऑर्डर देने से बहुत शीघ्र इच्छानुसार बना दिया जाता है।

हीरे, पन्ने, मोती, मानिक की हर एक चीज़ हमारे यहाँ तैयार मिलेगी। नमूना-सूची मँगा कर देखिए।

हर एक क़िस्म के चाँदी के बर्तन और चाँदी की फ़ैन्सी चीज़ें हमारी नोवेल्टी है।

पता :—सरारजी गोविन्दजी जौहरी, १५६ हैरिसन रोड, कलकत्ता

नोट—सोने और चाँदी का विशाल सूचीपत्र ।) का टिकट भेजने से मुफ़्त भेजा जायगा।

SRI JAGADGURU VISHWARADHYA
JNANA SIMHASAN JNANAMANDIR
LIBRARY
Jangamawadi Math Varanasi

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

विषय-सूची

क्रमाङ्क	लेख	लेखक	पृष्ठ
१	मारवाड़-भूमि (कविता)	[प्रोफ़ेसर रामकुमार जी वर्मा, एम० ए०] ...	...

* * *

सम्पादकीय विचार

२	मारवाड़	... ...	१
३	मारवाड़ के महाराजा	... ...	३
४	मारवाड़ी-साहित्य	... ...	१४
५	गुप्त-व्यभिचार	... ...	२६
६	ब्रह्मचर्य का अभाव	... ...	३८
७	पर्दा	... ...	४१
८	वैवाहिक कुरीतियाँ	... ...	५०
९	विधवा-विवाह	... ...	५५
१०	मारवाड़ियों के गुणावगुण	... ...	५८

* * *

११	वैधव्य-वेदना (कविता)	[पं० सूर्यनाथ जी तकरू]	६४
१२	ओसर	[श्री० विश्वम्भरनाथ जी शर्मा, कौशिक]	६५
१३	हमारे कुछ विचित्र विश्वास	[श्री० मोहनलाल जी बड़जात्या]	७१
१४	मारवाड़ की भौतिक और साम्पत्तिक दशा	[श्री० जगनलाल जी गुप्त, मुख़्तार] ...	७६
१५	ठकुरानी	[श्री० चतुरसेन जी शास्त्री] ...	८८
१६	चेतावणी का चँगव्या	[देशभक्त राजस्थान-केशरी ठाकुर श्री० केसरीसिंह जी बारहठ]	९६
१७	कुछ जानने योग्य बातें	[कुँवर जगदीशसिंह जी गहलोत, एम० आर० ए० एस०]	९९
१८	पराजित पापी	[श्री० जनार्दनप्रसाद झा, 'द्विज', बी० ए०]	१३६
१९	महाकवि चन्द के वंशधर	[प्रोफ़ेसर रमाकान्त जी त्रिपाठी, एम० ए०] ...	१४६
२०	चेतावनी (कविता)	[श्री० देवीप्रसाद जी गुप्त, 'कुसुमाकर' बी० ए०, एल्-एल्० बी०]	१५१
२१	कलकत्ते का सामाजिक जीवन	['एक बागड़ी']	१५२
२२	दुबे जी की चिट्ठी	[श्री० विजयानन्द दुबे जी]	१६६
२३	मारवाड़ी-स्त्रियाँ	['एक मारवाड़ी'] ...	१६९
२४	मारवाड़ी (कविता)	[श्री० छैलविहारी जी 'कण्टक']	१७३

* * *

विविध-विषय

२५	मारवाड़ी-समाज	[श्री० पद्मराज जी जैन]	१८१
२६	सत्परामर्श	[श्री० अर्जुनलाल जी सेठी] ...	१८२
२७	मारवाड़ी घिस-घिस	[रावसाहब रामविलास जी शारदा]	१८४
२८	मारवाड़ी-नवयुवकों से दो बातें	[श्री० बालकृष्ण जी मोहता]	१८५
२९	कलकत्ता का सुधारक मारवाड़ी-समाज	[श्री० रामदहिन जी ओझा]	१८८
३०	हमारा प्यारा राजस्थान	[कुँ० चाँदकरण जी शारदा, बी० ए०, एल्-एल्० बी०] ...	१९२
३१	मारवाड़ी-जाति में समाज-सुधार	[श्री० गुलराज गोपाल जी गुप्त]	१९५
३२	मारवाड़ियों के गहने और कपड़े	[श्रीमती कमलादेवी जी भालोठिया]	१९७
३३	मद्रास में मारवाड़ी	['एक मारवाड़ी भाई']	२०१
३४	भाट और चारणों का हिन्दी-भाषा सम्बन्धी काम	[स्वर्गीय मुन्शी देवीप्रसाद जी] ..	२०४

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

क्रमाङ्क	लेख	लेखक	पृष्ठ
३५	वीर-भूमि राजस्थान	[श्री० द्वारकाप्रसाद जी लाखोटिया]	२०६
३६	मारवाड़ी-जाति और व्यापार	['एक अध्ययन-शील मारवाड़ी']	२०९
३७	राजस्थान की दरोगा-जाति	[रायसाहब हरविलास जी शारदा, एम० एल० ए०]	२१०
३८	मारवाड़ियों की इच्छाएँ	[श्री० रामसुन्दर जी शर्मा]	२१४
३९	हमारा सनातन-धर्म	[श्रीगोपाल जी कल्ला]	२१७
४०	मारवाड़ की मरोड़	[श्री० पन्नालाल जी शर्मा]	२२०
४१	मारवाड़ी-समाज के कुछ चित्र	[श्री० आनन्दप्रिय जी, बी० ए०, एल्-एल्० बी०]	२२३
४२	मारवाड़ी-समाज की विचित्र नामावली	['एक नाम-सुधारक मारवाड़ी']	२२४
४३	इतिहास के कुछ पृष्ठ	[श्री० गोकुलप्रसाद जी शर्मा, पाठक 'हिन्दी-प्रभाकर']	२२५
४४	मारवाड़ का भीषण पाप	[श्री० पुरुषोत्तम प्रसाद जी गौड़, 'नय्यर']	२३१
४५	मारवाड़ियों में रोने की रीति	[श्री० शिव-दयाल जी अग्रवाल]	२३६
४६	मारवाड़ के गीत	[श्री० जगदीशसिंह जी गहलोत]	२३९
४७	राजपूताने की कविता और उसका चमत्कार	[स्वर्गीय मुन्शी देवीप्रसाद जी]	२४३
४८	मारवाड़ी-समाज में पर्दा	[श्री० रामसरूप जी भालोटिया]	२४६

* * *

विनोद-वाटिका

४९	पकौड़ीमल	[श्री० जी० पी० श्रीवास्तव, बी० ए०, एल्-एल्० बी०]	२४८
५०	सेठ जी राम खा गए	['एक सेठ का भतीजा']	२५२

* * *

५१	मारवाड़ी (कविता)	[पण्डित रामनरेश जी त्रिपाठी]	२५५
५२	मारवाड़ के साधु	['एक साधु-भक्त']	२५६
५३	रामकी	[श्रीगोपाल जी कल्ला]	२६२
५४	मारवाड़ का खड्ग और तराज़ू	[खरवा-नरेश श्रीमान् गोपालसिंह जी राष्ट्रवर]	२७०

* * *

रङ्ग-भूमि

५५	हम और वह	२७६
५६	विधवा	२७८
५७	बाल और वृद्ध	२८०
५८	स्त्रियाँ	२८०
५९	नीच और ऊँच	२८१
६०	इज़्ज़त	२८४
६१	जान-माल और आबरू	२८४
६२	भाग्य	२८४
६३	मृत्यु-भोज	२८६
६४	सट्टा और फाटका	२८८
६५	नौटङ्की और रास-लीलाएँ	२८८
६६	बाल-विवाह-निषेध क़ानून	२९१
६७	"स्वतन्त्र" की शिष्टता	२९२

* * *

६८	चित्र-परिचय	२९५
६९	उत्थान और पतन (कविता) [श्री० शोभाराम जी 'धेनुसेवक']	४०८

* * *

चित्र-सूची

तिरङ्गे

१—उदयपुर का राजवंश
२—जोधपुर का राजवंश
३—बीकानेर का राजवंश
४—बूँदी का राजवंश
५—जयपुर का राजवंश

(व्यङ्ग)

६—गोट जीमवा चाली
७—बागाँ में चाली
८—पर्व-स्नान
९—शुभ-लग्न
१०—सेठ जी का भोजन
११—पीर-पूजा

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

१२—एक सेठ के दो रूप (दोरङ्गा)
१३—छोटो दूल्हो सदा सुहाग (")

आर्ट-पेपर पर रङ्गीन

१४—बीकानेर-नरेश
१५—ऋषिवर रामगोपाल जी मोहता
१६—राजा बलदेवदास जी बिड़ला
१७—मारवाड़ी-समाज के चार रत्न
१८—सेठ शिवरत्न जी मोहता
१९—सौभाग्यवती सरस्वतीदेवी जी मोहता
२०—श्रीयुत बाबू देवीप्रसाद जी खेतान (धर्मपत्नी-सहित)
२१—सेठ जमनालाल जी बजाज
२२—श्री० पद्मराज जी जैन
२३—सेठ रामकृष्ण जी मोहता
२४—कलकत्ते का खेतान-परिवार
२५—इन्दौर के वर्तमान नरेश
२६—श्रीमती माणिकदेवी जी
२७—स्वर्गीय कुँवर प्रतापसिंह जी बारहठ
२८—श्री० ठाकुर केशरीसिंह जी बारहठ
२९—बाबू प्रभुदयाल हिम्मतसिंह जी
३०—रायसाहब हरविलास जी शारदा

इसके अतिरिक्त इकरङ्गे, सादे चित्रों तथा कार्टूनों की विस्तृत सूची समयाभाव के कारण देना सम्भव नहीं है, पाठक क्षमा करें। आर्ट-पेपर के चित्रों की सूची केवल इसलिए दी गई है कि कोई भूल से रह न जाय—पाठकगण मिलान कर लें।

[लेखक—श्री० जी० पी० श्रीवास्तव बी० ए०, एल्-एल० बी०]

लाल बुझक्कड़

श्री० श्रीवास्तव महोदय संसार के सबसे श्रेष्ठ हास्य-नाटककार फ़्रान्स के 'मोलियर' (Moliere) की चुनी हुई रचनाओं का रसास्वादन हिन्दी पाठकों को अनेक बार करा चुके हैं। प्रस्तुत नाटक मोलियर महोदय की चुनी हुई रचनाओं में से है। यह नाटक सर्व प्रथम सन् १६५३ या १६५५ ईस्वी में लॉयन (Lyons) नगर में, उसके बाद सन् १६५८ में फ़्रान्स की राजधानी पेरिस में बादशाह के समक्ष खेला गया था और सारे विश्व ने इसकी भूरि-भूरि प्रशंसा की थी।

श्रीवास्तव महोदय ने जिस बाने में इसे हिन्दी-संसार में उपस्थित किया है, वह देखने योग्य है। हँसते-हँसते पेट न फूल जाय तो पुस्तक का दाम वापस !!!

व्यवस्थापिका 'चाँद' कार्यालय, चन्द्रलोक, इलाहाबाद

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

यौवन-विज्ञान

में बतलाया गया है कि किस उपाय से पूर्ण दैहिक सुख और यौवन का उपभोग किया जा सकता है। किस तरह यौवन की तेज़ी, सुखभोग, यौवन-धर्म, इन्द्रिय-वृत्ति चरितार्थ कर अपना स्वास्थ्य और सुख ज्यों का त्यों क़ायम रक्खा जा सकता है; रक्तहीन बहुसन्तान की जननी की अकाल-मृत्यु से किस तरह रक्षा की जा सकती है, यौवन किस तरह बहुत दिनों तक भोग किया जा सकता है। इस समय आधुनिक विज्ञान ने जो उपाय बताए हैं, वे सभी उपाय इस पुस्तक में लिख दिए गए हैं। डॉक्टर मेरी स्टोप्स के उपायों से निश्चित हो गया है कि गर्भ-रोध का कौन उपाय सर्वोत्तम है—सभी बातें इसमें मिलेंगी। भारत के जलवायु के उपयुक्त विज्ञान-सम्मत सभी उपाय इसमें लिख दिए गए हैं। प्रत्येक युवक-युवती को यह पुस्तक अवश्य पढ़नी चाहिए। इस पुस्तक द्वारा वे निर्भय होकर अपनी गृहस्थी चला सकते हैं। सजिल्द पुस्तक का मूल्य केवल २) रु०!

विवाह-विज्ञान

विवाह किस उम्र में करना चाहिए? यौवन-धर्म क्या है? स्त्रियों की ऋतु क्या वस्तु है? इन्द्रिय-परिचालन किस अवस्था में करना चाहिए? वन्ध्या (बाँझ वा निपूती) होने के क्या कारण हैं? उनका इलाज क्योंकर हो सकता है? किन उपायों के अवलम्बन करने से गर्भ नियमित किया (रोका) जा सकता है? अर्थात् किस प्रकार इच्छानुसार तीन-चार वर्षों का अन्तर देकर नीरोग तथा बलिष्ठ सन्तान प्राप्त हो सकती है—इन गृहस्थ तथा जीवनोपयोगी विषयों पर विशद रूप से इस पुस्तक में विचार किया गया है। यूरोपादि देशों में गर्भ रोकने के जितने विज्ञान-सम्मत उपाय डॉक्टरों ने बतलाए हैं, वे प्रायः सभी इस पुस्तक में भली-भाँति समझा दिए हैं। सजिल्द पुस्तक का मूल्य केवल २); किन्तु यह पुस्तक केवल विवाहित स्त्री-पुरुष को ही पढ़ना चाहिए, केवल नव-दम्पतियों के लिए ही पुस्तक लिखी गई है।

विवाहित स्त्री-पुरुषों के लिए चार अनमोल पुस्तकें!

स्त्री की चिट्ठी

समाज-लीला का ज्वलन्त चित्र है। जो गृहस्थी स्वर्ग का नन्दन-वन होनी चाहिए, वह नरक-कुण्ड बन रही है। स्त्री का स्वास्थ्य, सुख, प्रेम, उच्च अभिलाषा सभी तो रसातल में चला जा रहा है। इसीलिए आज स्त्री-संसार तड़प उठा है; इसीलिए इस पुस्तक में स्त्री ने पति से, अपने हृदय की भीषण दाह के कारण प्रकट किए हैं; इसीलिए आज वह पूछती है—स्त्री-जाति ने ऐसा क्या अपराध किया है, जिससे उसे यह अत्याचार सहन करना पड़ता है, इतनी निर्दयता भोगनी पड़ती है? क्या स्त्री-पुरुष के सम्बन्ध का यही मतलब है, क्या मातृत्व के विकाश का यही रूप है? इन बातों का कौन उत्तरदायी है? इसका क्या उपाय है? एक चिर-दुःखिता नारी ने मूक-पशु की भाँति ये सभी बातें, उपद्रव, सभी अत्याचार सहन कर अन्त में ऊब कर पति-देवता को आड़े-हाथों लिया है! सजिल्द पुस्तक का मूल्य केवल २) रु०!

मैनेजर—'चाँद' कार्यालय, चन्द्रलोक, इलाहाबाद

गुप्त चिट्ठी

इस पुस्तक में स्त्री-पुरुष सम्बन्धी गुप्त विषय को एक जगत्-प्रसिद्ध विद्वान् डॉक्टर ने स्त्री-पुरुष के पत्र-रूप में लिखा है। छोटी अवस्था में ही मेडिकल कॉलेज के एक विद्यार्थी का विवाह, विवाह के कारण बालिका संसार-ज्ञान से हीना, नव-वधू की प्रलोभनों से रक्षा करने की चेष्टा, प्रथम यौवन-काल, द्विरागमन, प्रथम सहवास, गर्भ—सभी बातों पर इसमें विचार किया गया है। सन्तान पर सन्तान होने के कारण जब शरीर एकदम ख़राब हो जाता है, सब सुख नष्ट हो जाते हैं, तब सुधार किस तरह हो सकता है। प्रणय के प्रबल आवेग में स्वामी ने स्त्री को और स्त्री ने स्वामी को जो पत्र लिखे हैं, वे बड़े ही गुप्त, संसार भर के लिए नहीं, परस्पर की दो आत्माओं के लिए हैं—संसार में होने वाली स्त्री-पुरुष सम्बन्धी सभी बातें लिखी गई हैं। ऐसी चिट्ठियाँ, इतना ऊँचा साहित्य सबको अवश्य पढ़ना चाहिए। सजिल्द पुस्तक का मूल्य केवल २) रु०!

मैनेजर—'चाँद' कार्यालय, चन्द्रलोक, इलाहाबाद

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

चित्तौड़ की चिता

कविता की अनमोल पुस्तक

[रचयिता—प्रोफ़ेसर रामकुमार जी वर्मा, एम० ए०]

यह वह पद्यमय पुस्तक है, जिसे पढ़ कर एक बार उन लोगों में भी शक्ति का सञ्चार हो जाता है, जो जीवन से विरक्त हो चुके हैं। वीर-प्रसविनी चित्तौड़ की माताओं का यदि आप स्वार्थ-त्याग, देश-भक्ति तथा कर्म-निष्ठा का ज्वलन्त उदाहरण देखना चाहते हैं, यदि आप चाहते हैं कि भारत का मातृ-मण्डल भी इन वीर-क्षत्राणियों के आदर्श से शिक्षा ग्रहण कर, अपने निरर्थक जीवन को भी उसी साँचे में ढाले; यदि आप चाहते हैं कि कायर बालकों के स्थान पर एक बार फिर वैसी ही आत्माओं की सृष्टि हो, जिनकी हुङ्कार से एक बार मृत्यु भी दहल जाया करती थी, तो इस वीर-रसपूर्ण ऐतिहासिक पुस्तक को स्वयं पढ़िए तथा घर की स्त्रियों और बच्चों को पढ़ाइए। कविता में ऐसी सुन्दर वीर-रस में पगी हुई पुस्तक हिन्दी-संसार में अब तक प्रकाशित नहीं हुई थी। "कुमार" महोदय की कविताओं का जिन्होंने 'चाँद' द्वारा रसास्वादन किया, वे इन कविताओं की श्रेष्ठता का अभी से अनुभव कर सकते हैं। सुन्दर छपी हुई पुस्तक का मूल्य केवल १।) रु०; स्थायी ग्राहकों से ।।।≈)

व्यवस्थापिका 'चाँद' कार्यालय,

चन्द्रलोक, इलाहाबाद

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

उदयपुर का राजवंश

FINE ART PRINTING COTTAGE ALLAHABAD

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

सन्देश

भाइयो !

बम्बई, कलकत्ता के वैभव पर मत इतराओ ! उन गगन-चुम्बी अट्टालिकाओं और लक़दक़ मोटरों पर मत गर्व करो, इनसे तुम्हारी प्रतिष्ठा नहीं बढ़ सकती !!!

आओ, अपनी करोड़ों की सम्पत्ति लेकर देश को लौट आओ। मारवाड़ उजाड़, सुनसान, मुर्दा, स्मशान-वत् पड़ा है, उसे आबाद करो, उसमें कला-कौशल, व्यापार और उद्योग की वेगवती गङ्गा बहा दो, तुम्हारे हाथ में करोड़ों की सम्पत्ति है, व्यापार की क्षमता और योग्यता है, ईश्वरदत्त मुस्तैदी, धैर्य और सहिष्णुता है, इसे उस पुण्य-भूमि में बखेर दो। मारवाड़ सोता है, उसे जाग्रत करो, उसमें महालक्ष्मी की प्रतिष्ठा करो, उसके शासन में योग्य नागरिक की तरह अधिकार प्राप्त करो। तुम कलकत्ता-बम्बई में जस्टिस ऑफ़ दी पीस हो—पर तुम्हारी जन्म-भूमि ठिकानेदारों की स्वेच्छाचारिता की ग़ुलाम बन रही है। बीसवीं शताब्दी की कोई जाति इसे सहन नहीं कर सकती। उठो ! ऐसा करो, जिससे भारतवर्ष का त्राता मारवाड़, हिन्दुत्व का रक्षक मारवाड़, पृथ्वी की महाजातियों का पवित्र मारवाड़, निकट-भविष्य में आने वाले स्वाधीन भारत के नवीन-युग में अपनी जन्म-सिद्ध प्रतिष्ठा और स्थान का अधिकारी हो।

माताओ और दादियो !

तुम हमारे रास्ते से हट जाओ। हमें क़दम-क़दम पर नामर्द और हास्यास्पद मूर्ख मत बनाओ। हम अपने भाग्य से युद्ध करने चले हैं, हम रूढ़ियों को कुचल कर युग-धर्म का अनुसरण करेंगे। "मेरे जीते जी ऐसा न होने पावेगा" ऐसा निकम्मा रोड़ा हमारे मार्ग में मत अड़ाओ। हमें दौड़ने दो, वह देखो, वह भयानक प्रवाह प्राचीन महासत्ताओं को कुचलता हुआ "उठो और जियो" की तूफ़ानी गर्जना करता हुआ बढ़ा चला आ रहा है, तुम झूठे मोह-वश हमें रूढ़ियों के दलदल में फाँस रक्खोगी तो तुम्हारे यशस्वी वंश का बीज नाश हो जायगा !!!

बहिनो !

तुम अपने उन्मत्त मन, जाग्रत पतियों की सहधर्मिणी बनो ! पैर की जूतियाँ बनने के दिन गए। इस बेहूदे घूँघट को और भद्दे घाँघरे को लात मार कर फेंक दो। हाय ! कैसे तुम ख़ुशी से क़ैदी की तरह दिन काटती हो ? क्या तुम्हें याद है कि तुम्हारी माताओं और दादियों ने स्वाधीनता के नाम पर, धधकती चिता पर अपने स्वर्ण-शरीर को राख कर दिया था ? तुम उस प्राचीन गौरव के नाम पर महाशक्ति का अवतार बनो। घूँघट को फाड़ डालो, मत डरो कि कोई तुम्हें कुदृष्टि से देखेगा। सिंहनी पर गीदड़ दृष्टि नहीं डाल सकते, सूर्य की ओर देखने वालों की आँखें चौंधिया जाती हैं। तुम सूर्य के समान तेजस्विनी और सिंहनी के समान साहसी बनो ! परिश्रम, त्याग, सादगी, विद्या, विवेक और पवित्रता की तस्वीर बनो ! तुम्हारे नाम पर वह घर, वह ख़ान्दान धन्य हो

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

जाय, जिसमें तुम जन्मी हो और जिसमें तुम सौभाग्य की चूनरी ओढ़ कर गृहलक्ष्मी बन कर गई हो। अपने पतियों को धर्मात्मा और त्यागी बनाओ, अपने पुत्रों को वीर और साहसी बनाओ। तुम मारवाड़ की देवी, मारवाड़ की आबरू, मारवाड़ की बहू, मारवाड़ की जीवन-धन और मारवाड़ की प्राण हो, ऐसा कोई काम न करो कि मारवाड़ को लज्जित होना पड़े! भारी-भारी गहने पहनने का बेहूदा मोह त्याग दो। एक कटार सदा पास रक्खो, बेखटके घर से बाहर बन्धु-बान्धवों के यहाँ जाओ, जो नीच ज़रा भी तुम्हारे अपमान का साहस करे, कटार से काम लो! भारतवर्ष देखे कि मारवाड़ की सिंहनी कैसी होती हैं। विषय-वासना की ग़ुलाम मत बनो, पतियों की अनुचित आज्ञा मत मानो। पति में व्यभिचार, मद्यपान, जुआ की बुरी आदतें हों, तो उसे बलपूर्वक ठीक करो, तुम उसकी उसी तरह स्वामिनी हो, जैसे वह तुम्हारा है। धर्मात्मा, सच्चरित्र पति की तन-मन से सेवा करो!

बेटियो!

विद्या तुम्हारा शृङ्गार है; जितना पढ़-लिख सको, पढ़ो-लिखो, घमण्ड मत करो, घर के छोटे-बड़े सभी काम अपने हाथों से करने का अभ्यास करो, दिन में कभी न सोओ। नौकर को कभी मुँह मत लगाओ। ऐसे शब्द बोलो, जैसे फूल झड़ते हैं। माता-पिता, भाई सभी की मन से सेवा करो! गुड़िया मत खेलो, हठ मत करो, गन्दी मत रहो, कम बोलो, अधिक सोचो।

युवको!

बुज़ुर्गों की उन आज्ञाओं को मानने से इन्कार कर दो, जो अधर्म-सम्मत हों, तुम अपने को योद्धा समझो, साहस, वीरता, त्याग और सेवा नस-नस में भर लो। पेट की चिन्ता में मत पड़ो, पेट तो कौवे-कुत्ते भी भर लेते हैं। तुमने क्या नहीं सुना 'नराँ मारवाड़'—अर्थात् मारवाड़ के मर्द प्रसिद्ध हैं, तुम वही मर्द हो। अगर तुम्हारे रहते पृथ्वी पर मारवाड़ी-पगड़ी का अपमान हुआ, तो तुम्हारा जीवन धिक्कार है! जाओ, सीधे विलायत पर धावा बोल दो। देखो, जीवित जातियों के बच्चे किस तरह पृथ्वी पर लात मार कर आगे बढ़ा करते हैं। नहीं-नहीं, कला-कौशल सीखो, और अपने प्यारे मारवाड़ में आकर जीवन की फूँक फूँक दो! ऐसे बनो कि मारवाड़ की आन-शान भारत में सबसे बढ़ी-चढ़ी हो जाय!!

पाखण्डियो!

मारवाड़ पर से अपना शनैश्चर हटा लो! उसे पोथी-पत्रे, ग्रह-दशा और झूठे वहमों में मत फँसाओ। उसे सच्चे रास्ते पर आने दो—अपने पेट के लिए देश का नाश मत करो। देश में उजाला होने दो। तुम पाखण्ड छोड़ दो—ठोस योग्यता प्राप्त करो। सच्चा आत्म-सम्मान मन में रक्खो, पापी पेट के लिए पाप मत करो—ईश्वर तुम्हारा कल्याण करेगा।

—चतुरसेन वैद्य

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

मारवाड़ी-अङ्क:

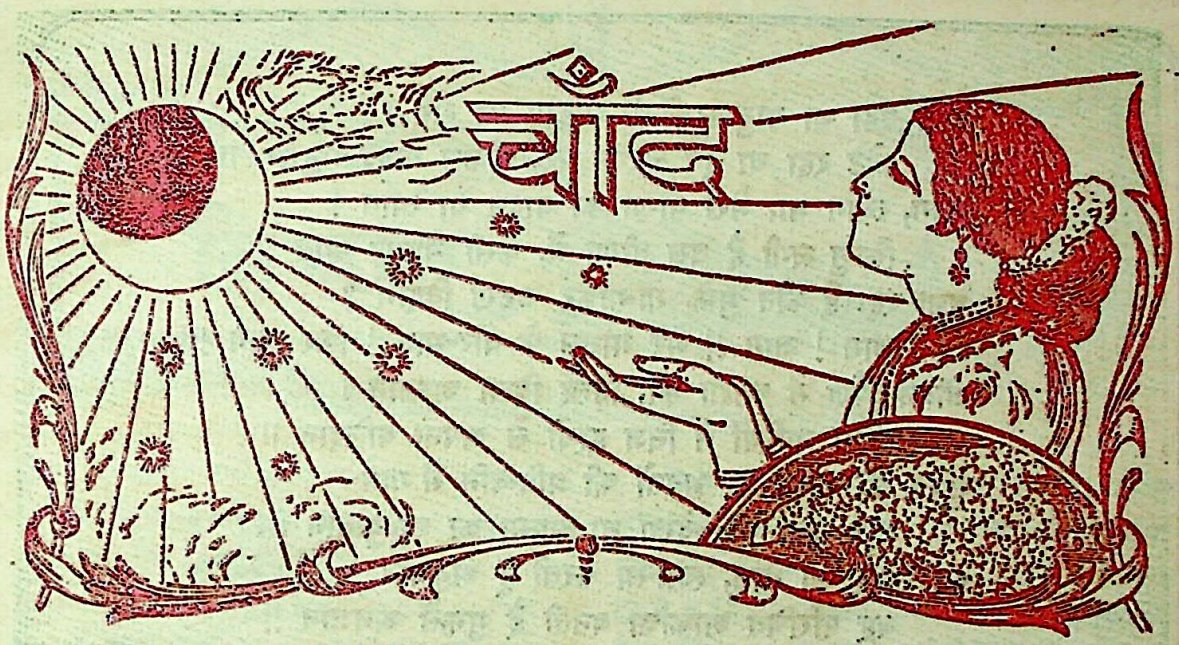

C. P. and Berar Government have also deleted from the approved list and is no longer approved by the U. P. Government and should not be purchased by any recognised institution of these Provinces.
No such news from Punjab yet.

वर्ष ८, खण्ड १

नवम्बर, १९२९

संख्या १, पूर्ण संख्या ८५

मारवाड़-भूमि

[प्रोफ़ेसर रामकुमार जी वर्मा, एम० ए०]

सुनती हूँ सुमधुर शब्दों में, अपना ही अपमान ।
पाप पास मेरे आते हैं, बन-बन कर वरदान ॥
छिपा हुआ मेरे आँसू में, मेरा ही आख्यान ।
किस समीर ने चुरा लिया है, मेरा गौरव-गान ?
अभिशापों की ध्वनियों में ही, मेरा ही सम्मान—
मुझे देख कर हँसता है—'यह कैसा है अभिमान' ?

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

कभी उठा था वायु-तरङ्गों में महिमा का राग ।
लोट रहा था इन चरणों पर, विकल विश्व-अनुराग ॥
त्याग, त्याग था, मेरी वीणा का वादन था त्याग !
किन्तु लगी है उस वीणा में, कैसी भीषण आग !!
रुला रहा है कौन मुझे, गा-गाकर करुण विहाग ?
जाग ! जाग !! मेरे मानस के धीर-भाव ! फिर जाग !!!
जीवन-दर्पण में आशा का, बिम्ब दिखा अम्लान ।
किया नारियों ने निज हाथों से अपना बलिदान ॥
गौरव की गाथा का भवनों की प्रतिध्वनि में गान—
खूब सुना था—देखा था आत्मा का अभ्युत्थान ॥
वह गौरव का मान, स्वप्न-सा करती हूँ अनुमान !
वह परिचित आकांक्षा बनती है मुझसे अनजान !!
कितना था वह प्यार देश पर, कितना था वह प्यार !
पातिव्रत से होता था ललनाओं का शृङ्गार ॥
कहती थी मुख के शब्दों को, वीरों की तलवार ।
चकित बना देखा करता था, यह निर्बल संसार ॥
किन्तु अरे ! मेरे वैभव की कैसी है यह हार !
प्रेम, प्रेम है कलुषित चुम्बन का भीषण उपहार !!
जहाँ वासना की मदिरा से, मतवाली है चाह ।
आह ! वही क्यों लेती है अब मेरे मन की थाह ?
दो ध्वनियों से गूँज रहा है भीषण वायु-प्रवाह ।
निर्दयता का दाह और भोले मुख की मृदु आह !!
निर्बल को नत करने में है, सबलों का उत्साह ।
नाम दूसरा है विक्रय का—(वह क्या ?) अरे विवाह !!
मेरे गौरव के बादल का, गया सरस-रँग लाल ।
फैला मेरे वक्षःस्थल पर, काला रजनी-काल !!
अपने यश से ही आलोकित, झुकता मेरा भाल
मेरी फिर से लाज रखेंगे, कब ये मेरे बाल ?
'मारवाड़' का नाम रखेगा किस माता का लाल ?
कौन सँवारेगा फिर से, ये मेरे बिखरे बाल ?

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

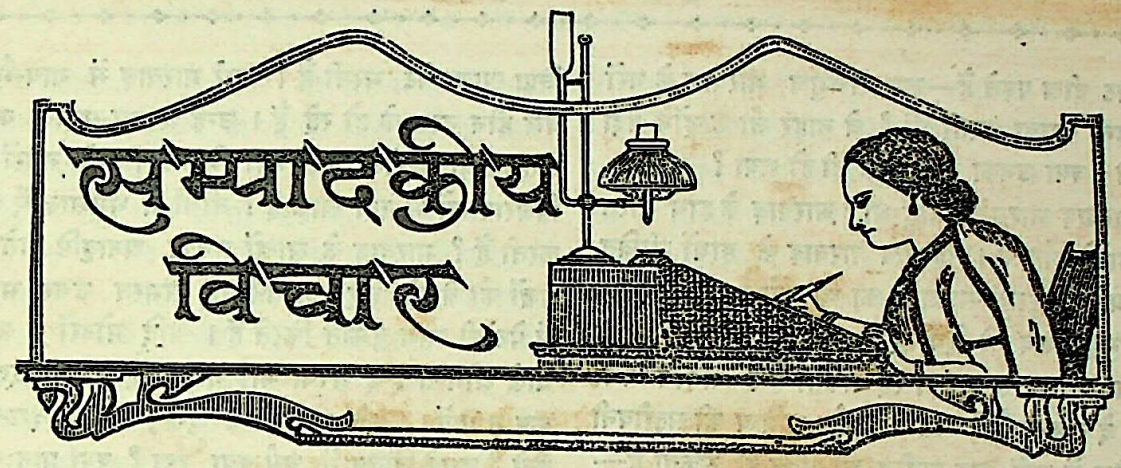

नवम्बर, १९२९

मारवाड़

सात सौ वर्षों तक मुग़लों की दुर्धर्ष ख़ूनी तलवार के सम्मुख खड़ा रहने वाला उद्ग्रीव मारवाड़, आज सो रहा है !! हल्दीघाटी में जब साएँ-साएँ करके हवा चलती है और वे पुराने वृक्ष जब डालियाँ झुका-झुका कर उन वीर-आत्माओं को, जो सदा के लिए वहाँ विश्राम कर रही हैं, प्रणाम करते हैं, तब देखने वाले के मन में एक भय, एक वेदना का उदय होता तो होगा; पर वह तड़प, जो मारवाड़ की बपौती थी, कहीं देखने को भी नहीं मिलती।

वे मृत्यु के व्यवसायी—जीवित नर-सिंह—जिन्होंने जीवन के तत्व को समझा था; जो प्रकृत-आत्मतत्व के ज्ञाता थे; जो मरने से कभी न मरे; वृद्ध होने पर कभी पुराने न हुए; जो हास्य और क्रोध के अधिष्ठाता थे; दैन्य और रुदन जिनके पास न था—आज मारवाड़ के वे धनी-धोरी कहाँ हैं?

मारवाड़ के इस सिरे से उस सिरे तक चले जाइए—नगरों में, गाँवों में, जङ्गलों में, वनस्थली में, खेतों में, चाहे जहाँ—मारवाड़ सो रहा है। सारी पृथ्वी के राष्ट्र जाग रहे हैं—मारवाड़ सो रहा है! पृथ्वी की जातियाँ आत्म-शासन के स्वत्व पर जूझने की तैयारियाँ कर रही हैं—मारवाड़ सो रहा है। हाय रे यह नींद !!!

मारवाड़ के गाँव उजाड़ पड़े हैं, वहाँ भूखे, नङ्गे, फटे चिथड़े पहने हुए वीरों के वंशधर अपनी धूल-भरी दाढ़ी को अपने अस्थि-चर्मावशिष्ट शरीर पर सजाए जी रहे हैं! इनकी तलवारों को म्यान आज नसीब नहीं, वह गूदड़ों में लिपटी ज़ङ्ग खा रही हैं। वे बच्चे, जो अमर-कारनामे कर गए थे—मारवाड़ की गलियों में नङ्गे, भूखे, दीन-हीन, झुण्ड के झुण्ड फिर रहे हैं। इनका कोई नाथ नहीं, कोई धुरी नहीं, कोई रक्षक नहीं! स्त्रियाँ ऐसी सुन्दरी, स्वस्थ, मृदुभाषिणी, परिश्रमी, गृह-लक्ष्मी के सभी गुणों से भरपूर, पतिप्राणा, प्रेममूर्ति—अविद्या और कुसंस्कारों में जकड़ी—गन्दे, भारी-भारी घाघरों में फँसी हुई उसी तरह जीवन काट रही हैं, जैसे किसी किसान की भैंस, जिसे दूध के लोभ से ख़ूब दाना-चारा दिया जाता है, और जो धुआँधार खा-पीकर बैठी-बैठी जुगाली किया करती हैं!! लोग कहते हैं—इनकी माताओं और दादियों ने जौहर व्रत किए थे! प्रत्येक गाँव के बाहर

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

है। इस राज्य में १३,८०,०६३ मनुष्य बसते हैं। इस रियासत का ख़िराज २ लाख रुपए वार्षिक है। आमदनी लगभग ५१ लाख रुपए वार्षिक है। महाराणा की सलामी १९ तोपों की है। यह वंश प्रबल प्रतापी मुग़लों के शासन-काल में बड़ी धीरता और शौर्य से जमा रहा और इसी कारण इसकी आज बड़ी प्रतिष्ठा है। वर्तमान नरेश श्रीमान् छत्तीस राजकुल-शृङ्गार हिन्दु-आसूर्य महाराजाधिराज महाराणा सर फ़तेहसिंह जी बहादुर, जी० सी० एस० आई० हैं।

दूसरी रियासत जैसलमेर है। जिसमें यादव वंश के भाटी राजपूतों की गद्दी है। इसका विस्तार १६,०६२ वर्ग मील है और ६७,६५२ मनुष्य बसते हैं। ख़िराज कुछ नहीं देते। वार्षिक आय ३,२६,११७ रुपया है। सलामी १५ तोपों की है। इस राज्य की नींव ८वीं शताब्दी में पड़ी थी। वर्तमान नरेश श्रीमान् महाराजाधिराज महारावल सर जवाहरसिंह जी बहादुर, के सी० एस० आई० हैं।

तीसरी रियासत जोधपुर है, जो राठौड़ों की गद्दी है। इसका विस्तार ३५,०१६ वर्ग मील है। जन-संख्या १८,४१,६४२ है। ख़िराज १ लाख ८ हज़ार दिया जाता है। वार्षिक आय १,५०,००,००० रुपया है। सलामी १७ तोपों की है। इस राज्य के मूल पुरुष राव सिंहाजी राठौड़ थे, जिन्होंने सम्वत् १३०० के लगभग क़न्नौज प्रान्त के बदायूँ स्थान से आकर यहाँ क़ब्ज़ा किया। वर्तमान नरेश मेजर राजराजेश्वर महाराजाधिराज महाराजा सर उम्मेदसिंह जी बहादुर, के० सी० एस० आई०, के० सी० वी० ओ० हैं।

चौथी रियासत जयपुर है, जिसमें कछवाहों की गद्दी है। राज्य का घेरा १५,५७९ और जन-संख्या २३,३८,८०२ है। ख़िराज चार लाख रुपया है और वार्षिक आय ८५ लाख रु० के लगभग है। १७ तोपों की सलामी है। यह राज्य पहले आमेर के नाम से प्रसिद्ध था। इसकी उन्नति मुसलमानी काल में महाराजा सवाई मानसिंह के समय से हुई है। वर्तमान नरेश श्रीमान् महाराजा सवाई मानसिंह जी बहादुर (द्वितीय) हैं।

पाँचवीं रियासत बूँदी है, जो हाड़ा राजपूतों की है। इसकी जन-संख्या १,८७,०६८ और भूमि-विस्तार २,२३० वर्ग मील है। ख़िराज ८० हज़ार रुपया और वार्षिक आय ९,८३,९८० रुपया है। १७ तोपों की सलामी है। वर्तमान नरेश श्रीमान् महाराव राजा श्रीईश्वरीसिंह जी बहादुर हैं।

छठी रियासत कोटा की है, जिसमें हाड़ा (चौहान) राजपूतों की अमलदारी है। इस राज्य में ५,६८४ वर्ग मील भूमि है और ६,३०,०६० मनुष्य बसते हैं। इसका ख़िराज ४,८४,७२० रु० है और वार्षिक आय ४६,३४,२०० रुपए के लगभग है। तोपों की सलामी १७ है। वर्तमान नरेश श्री० लेफ़्टिनेण्ट-कर्नल महाराजा सर उमेदसिंह जी बहादुर, जी० सी० एस० आई०, जी० वी० ई० हैं।

सातवीं रियासत बीकानेर है, जो राठौड़ों की है। इसका विस्तार २३,३१५ वर्ग मील है और जन-संख्या ६,५९,६८५। ख़िराज नहीं देते। वार्षिक आय ७६,४२,३६९ रु० है। वर्तमान नरेश श्रीमान् महाराजाधिराज नरेन्द्र-शिरोमणि मेजर-जनरल सर गङ्गासिंह जी बहादुर, जी० सी० एस० आई०, जी० सी० आई० ई०, जी० सी० वी० ओ०, जी० वी० ई०, के० सी० वी०, एल्-एल्० डी०, ए० डी० सी० हैं। सलामी १७ तोपों की है।

आठवीं रियासत किशनगढ़ है, जो राठौड़ों की गद्दी है। ८५८ वर्ग मील में विस्तृत है और ७७,७३४ नर-नारी बसते हैं। ख़िराज कुछ भी नहीं है। आय लगभग ५ लाख रुपए वार्षिक है। यह रियासत महाराज कृष्णसिंह जी ने अकबर बादशाह से सं० १६६६ में पाई थी। वर्तमान नरेश महाराजा सर यज्ञनारायण सिंह जी बहादुर, के० सी० एस० आई० हैं।

नवीं रियासत करौली की है, जहाँ यादव राजपूतों की गद्दी है। यह रियासत १,२४२ वर्ग मील में फैली है और १,३३,७३० नर-नारी इसमें बसते हैं। ख़िराज कुछ नहीं है। वार्षिक आय ७,९२,००० के लगभग है। सलामी १७ तोपों की है। यहाँ के नरेश श्रीमान् महाराजा सर भँवरपाल जी बहादुर हैं।

दसवीं रियासत सिरोही है, जो चौहानों की है। भूमि-विस्तार १,९६४ वर्ग मील और जन-संख्या १,८८,६३९ है। ख़िराज ७ हज़ार के अनुमान तथा वार्षिक आय १०,३०,३४६ रु० है। सलामी १२ तोपों की है। वर्तमान नरेश श्रीमान् महाराजाधिराज महाराव श्रीस्वरूपसिंह जी बहादुर, के० सी० एस० आई० हैं।

ग्यारहवीं रियासत डूँगरपुर है, जो गहलोतों की है।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

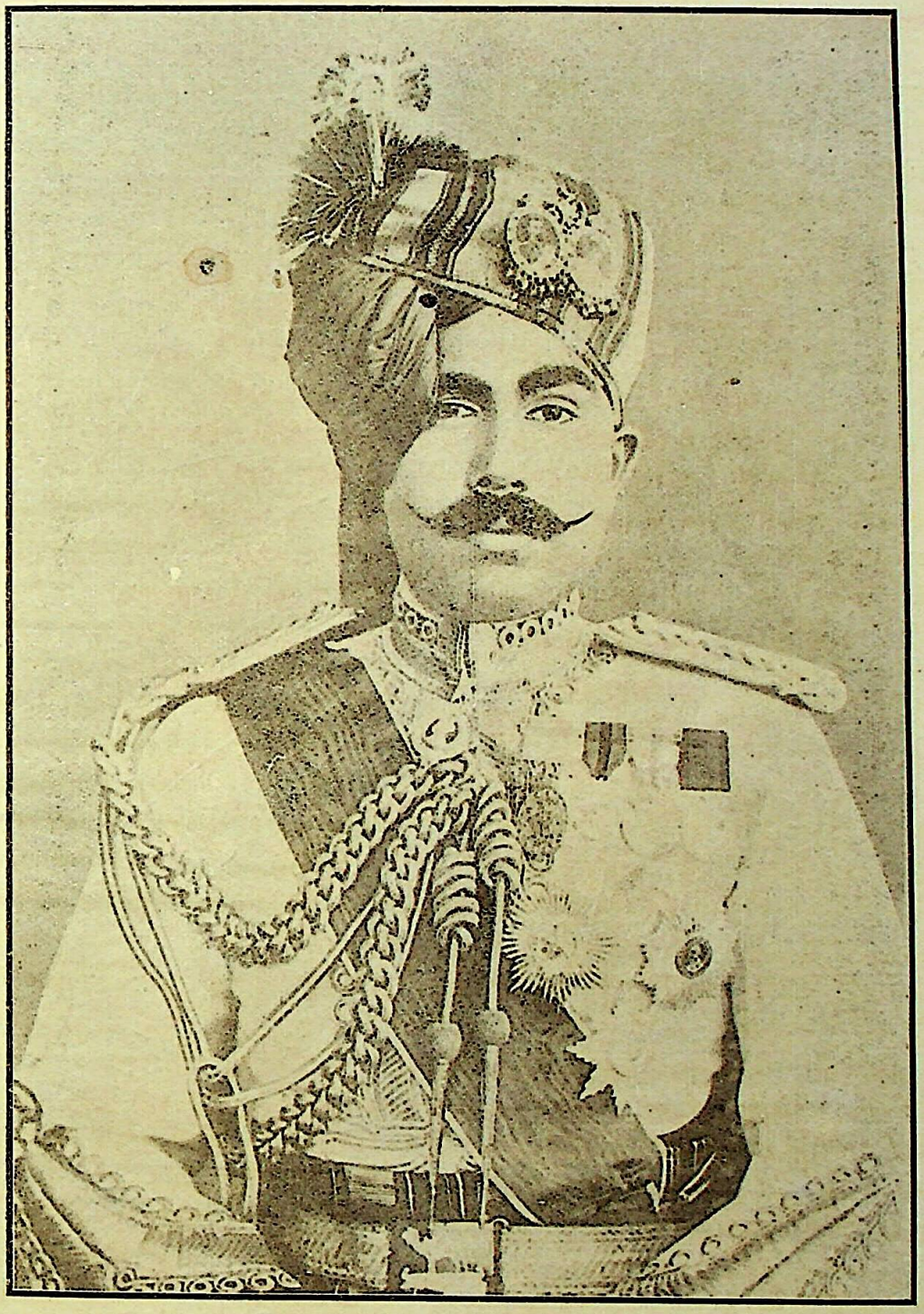

बीकानेर-नरेश

मेजर-जनरल श्रीमान् महाराजाधिराज राजराजेश्वर नरेन्द्र-शिरोमणि महाराजा श्री० सर गङ्गासिंह जी बहादुर, जी० सी० एस० आई०, जी० सी० आई० ई०, जी० सी० वी० ओ०, जी० बी० ई०, के० सी० बी०, ए० डी० सी०, एल्-एल्० डी०

ART PRINTING CO. ALLAHABAD

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

सती-मठ दीख पड़ते हैं—क्या सचमुच मारवाड़ के घरों में सिंहनी दहाड़ा करती थीं ? वे नाहर जो उन्होंने पैदा किए थे ; क्या उनका बीज नाश ही हो गया ?

मारवाड़ भारत का बाहु था। मारवाड़ के हाथ भारत की नैया के डाँड़ थे। हिन्दुत्व मारवाड़ के हाथों जीवित रहा। प्रतापी मुग़ल-साम्राज्य का ध्वंस हो गया। मारवाड़ के राजमुकुट अब भी दिप रहे हैं। पर उस अतीत विभूति के बल पर, यह सदा क्या रह सकता है ? अतीत क्या जीवन दे सकता है ? वर्तमान और भविष्य की सञ्जीवनी जिस देश में नहीं, वह अतीत को लेकर रो सकता है—हँस नहीं सकता !!

परन्तु जातियों का रुदन ही क्या जातियों के जीवन की चरम-सीमा है—नहीं-नहीं। जातियाँ चाहे रोवें—चाहे मरें, पर उद्देश्य तो यही है कि वे हँसें और जिएँ। मुग़लों ने मारवाड़ को हँसने और जीने नहीं दिया। पर मारवाड़ जी तो गया—हँसने में सन्देह है—क्या मारवाड़ ओते-सोते हँसेगा ? छिः !!

मारवाड़ ने जो अमर-ख्याति अपने भुज-बल से मुग़ल-साम्राज्य में पैदा की, लगभग वही ख्याति उसने धन-बल से ब्रिटिश राज्य में पैदा की है, इसमें सन्देह नहीं। वह तलवारों का राज्य था—तलवारों से मुक़ाबला किया गया। यह बनियाई का राज्य है, बनियाई से मुक़ाबला किया जा रहा है। यह सब तो ठीक है, पर उस जीवन में समस्त मारवाड़ के प्राण एकत्र थे और इस जीवन में वे छिन्न-भिन्न हैं—यही तो एक भयानक भेद है ! मारवाड़ वीर-प्रसू है, वह नैसर्गिक युद्ध-भूमि है, मारवाड़ को उसी प्राङ्गण में अपने जीवन-मृत्यु की समस्याएँ हल करनी पड़ी थीं, परन्तु इस धन-युग में मारवाड़ की पृथ्वी नैसर्गिक सहायक नहीं। फलतः मारवाड़ को धन-केन्द्रों में बिखरना पड़ा—लोग धन-कुबेर बने, पर इने-गिने—उससे मारवाड़ की श्रीवृद्धि नहीं हुई। बम्बई-कलकत्ते में मारवाड़ियों के राजप्रासाद हैं, परन्तु उनका गाँव उजाड़ पड़ा है। वे करोड़ों रुपए के व्यापार से मेन्चेस्टर, लङ्काशायर, चीन, जापान, शङ्घाई के जन-साधारण का पेट पाल रहे हैं ! पर उनके गाँव के आस-पास के दरिद्र भूखे मर रहे हैं, बच्चे बेच रहे हैं ! क्या इस बात पर कभी बम्बई-कलकत्ते के धनपतियों ने विचार किया है कि जब वृष्टि नहीं होती तब मारवाड़ की लाखों गायें विष्ठा खाकर पेट भरती हैं ! सारे मारवाड़ में गाय-भैंस, बैल हीन नस्ल के हो रहे हैं। उन्हें अकाल-सुकाल कभी उत्तम तथा भर-पेट चारा नहीं मिलता। बड़े नगरों के पिंजरापोलों में क्या ख़ाक है ? तीर्थों में धर्मशालाएँ क्या करती हैं ? मारवाड़ के लाखों मनुष्य अनावृष्टि होते ही बच्चों को बेचते हुए—मरते-गिरते समस्त उत्तर भारत में पेट की आग बुझाते फिरते हैं। यदि मोटरों में लदने वाले श्रीमन्त इन्हें अपना भाई न समझें; इनकी भूख से कष्ट न पावें; इनके दुख को न देखें; तो वे देश-भक्त कैसे ? उनके जीवन में धर्म क्या रहा ? क्या प्रातःकाल उठ कर जल्दी-जल्दी दो लोटे सिर पर डाल लेना—फिर आँख मूँद कर थोड़ी देर बैठ जाना—कभी-कभी एकाध ब्राह्मण को जिमा देना ही धर्म है ? इन बेहोश और राष्ट्रभाव से रहित लोगों से कौन कहे ?

एक वे राजा लोग थे, जो उस काल में मारवाड़ के धनी थे। जिन्होंने मारवाड़ की स्वाधीनता, हिन्दुत्व की रक्षा, स्त्रियों की मर्यादा के लिए जानें दीं, जवान बेटों को आँखों देखते लोहे की मार में मरवाया, पुत्रियों और पत्नियों को ज़िन्दा जला दिया, अन्त में स्वयं भी घाव खाकर अमर हुए। जिन्होंने धन-जन, मान-प्राण, पुत्र-पत्नी सब कुछ मारवाड़ पर न्यौछावर कर दिए, उनके मुक़ाबले वे श्रीमन्त सेठ लोग, जिन्होंने अपने लिए बड़े नगरों में महल, बँगले, मोटर और सभी ऐश्वर्य एकत्र किए हैं, पर जिनके सामने मारवाड़ भूखा-नङ्गा, अनाथ, हाय पेट ! हाय पेट ! रो रहा है—कहाँ तक प्रतिष्ठा और आदर के पात्र हो सकते हैं ? क्या इस पर मारवाड़ के सपूत विचार करेंगे ?

मारवाड़ में बहुत सी लोहे, सोने, चाँदी, ताँबे, अभ्रक, कोयले आदि की खानें गुप्त पड़ी हैं। कृषि की उन्नति का बड़ा भारी मैदान है। पशु-धन की वृद्धि का बड़ा सुयोग है। पञ्जाब और यू०पी० के गुड़, गेंहू, रुई और तेलहन से माल तैयार करने को बड़े-बड़े कारख़ाने स्थापित करने के पूरे सुभीते हैं। मारवाड़ के धन-कुबेरों के पास रुपयों का अभाव नहीं। उनका करोड़ों रुपया सट्टे की जोखिम में लग रहा है, करोड़ों रुपया विदेशी व्यापार में, जिसमें उन्हें सिर्फ़ दलाली मिलती है। ये प्रतिष्ठित मारवाड़ी लखपती विदेशी फ़र्मों के 'दलाल' कहलाने में ज़रा भी लज्जित नहीं होते, पर यदि इनके मन में ग़ैरत पैदा हो जाय तो

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

ये लोग मालिक बन सकते हैं। मारवाड़ में सैकड़ों कल-कारख़ाने खड़े हो जायँ। कोयले की खानें, तेल की खानें, धातु, उपधातु आदि अरबों की सम्पत्ति निकलने लगे! बुनाई, कताई, तेल पेरना, तेल की वस्तु बनाना, इत्र आदि बनाना तथा शक्कर आदि के अनगिनती कारख़ाने खुल सकते हैं; जिनमें मारवाड़ के धनी धन से और ग़रीब शरीर से जुट जायँ। सबको भरपेट रोटी मिले, नगर-गाँव चमक उठें। लक्ष्मी का मेह बरसने लगे, अष्ट-सिद्धि तथा नवनिधि प्राप्त हों। हम कह सकते हैं, ऐसे कठिन परिश्रमी आदमी पृथ्वी भर में शायद ही कहीं मिल सकें, जैसे मारवाड़ में हैं। ये बेचारे समस्त उत्तर भारत में स्त्री-पुत्रों सहित कड़ी धूप में कुदाल चला कर पेट भरते हैं!!

यह सच है कि ग़रीब अमीरों के बिना नहीं जी सकते, पर यह भी सच है कि अमीर भी बिना ग़रीब के नहीं जी सकते। क्या मारवाड़ियों में ताता के जैसा माई का लाल एक भी नहीं? गुजरात के श्रीमन्तों ने गुजरात को कल-कारख़ानों से भरपूर कर रक्खा है। क्या मारवाड़ पड़ा सोता रहेगा? धन रहते भूखा मरेगा? तब तो यही कहना होगा :—

पानी में भी मीन प्यासी, सुन कर किसे न आवे हाँसी।

यह निश्चय है कि मारवाड़ी चाहे दस-दस मोटरों पर लदें, चाहे बम्बई-कलकत्ते में चाँदी की ईंटों से मकान चुनावें, चाहे हीरे खाएँ और पन्ना .....वे तब तक प्रतिष्ठित नहीं हो सकते, जब तक मारवाड़ की पृथ्वी में वे जीवन, नवीनता, उत्साह और जवानी की तरङ्गें न पैदा कर देंगे।

वे राजपूत मारवाड़ के पति थे, ये वणिक मारवाड़ के पुत्र हैं। पतियों के राज्य में मारवाड़ की भूमि सुहागिन की तरह रही। उन्होंने जीते जी उस भूमि का विछोह न सहा—वहीं मरे, वहीं जिए—वहीं हीरा, मोती, पन्ना से श्रृङ्गार किया। मारवाड़ आज उन्हीं की बदौलत पृथ्वी के मेधावियों के लिए श्रद्धा की वस्तु हो गया है। आज यूरोप और अमेरिका का यात्री चित्तौड़ के क़िले का ध्वंस देख कर क्षण भर वहाँ खड़ा रह कर एक साँस छोड़ता है। कुम्भा के कीर्ति-स्तम्भ के सामने आदर से झुकता है। वे क्षत्रिय थे, उन्होंने क़िले-दुर्ग बनाए, जहाँ मारवाड़ के जीवन की रक्षा होती थी। आज वणिक मारवाड़ के पुत्र हैं, उन्हें विधवा माँ को इस तरह न भूलना चाहिए। उन्हें बड़े-बड़े कल-कारख़ाने, कला-कौशल के केन्द्र स्थापित करने चाहिएँ और मारवाड़ में सच्ची लक्ष्मी-पूजा अपने घर में बैठ कर करनी चाहिए। तभी मारवाड़ का कल्याण होगा—'मारवाड़ी' शब्द पृथ्वी भर में आदरणीय समझा जायगा, मारवाड़ के हाथ में समस्त भारत की सत्ता एक बार फिर आवेगी, अन्यथा नहीं!

* * *

मारवाड़ के महाराजा

मारवाड़ (राजस्थान) में १९ रियासतें और लावा व कुशलगढ़ नामक दो ख़ुदमुख़्तार रियासतें (ठिकाने) हैं, जिनमें केवल एक रियासत टोंक मुसलमानों की है, शेष राजपूतों की हैं। इनमें से सर्व-प्रधान उदयपुर रियासत है, जिसमें गहलोत वंश के सीसोदिया राजपूतों की अमलदारी है। यह राजवंश लगभग वि० सं० ६२५ (ई० सन्, ५६८) से लेकर आज तक समय के अनेक हेर-फेर सहता हुआ उसी प्रदेश पर राज्य करता आ रहा है। इस प्रकार १३५० से अधिक वर्षों तक एक ही देश पर राज्य करने वाला संसार भर में शायद ही कोई दूसरा राजवंश होगा।* इस वंश से वर्तमान के अनेक नरेश अपना उद्भव मानते हैं। † यह रियासत १२,६९१ वर्ग मील में

* The Maharana of Udaipur is the representative of the most ancient ruling race in the world whether in the East or West.—*Capt. Webb.*

† यदि इन सबको फिर से उसी चित्तौड़ गढ़ में निमन्त्रित करके महान् सङ्गठन का आयोजन किया जाय तो इसमें सन्देह नहीं कि क्षात्रशक्ति का पुनरुद्धार और प्रसार हो जाय और महाराणा जी के राष्ट्रीय झण्डे के नीचे नेपाल के सम्राट्, महाराजा कोल्हापुर, ग्वालियर, सावन्तवाड़ी, मुधोल, विजयानगर (विज़गापट्टम), धर्मपुर, भावनगर आदि के नरेश, जो अपने को गहलोत वंशज मानते हैं, सहर्ष आकर उसी चित्तौड़ गढ़ को सुशोभित कर सकते हैं, जहाँ से विपत्ति-काल में उनका विछोह हुआ है।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

कौशिक जी की
चुनी हुई १६ सामाजिक कहानियों का सुन्दर संग्रह

बढ़िया सुन्दर काग़ज़ पर छपी हुई लगभग ५०० पृष्ठों की इस सुन्दर पुस्तक का

ले ख क —
श्रीविश्वम्भरनाथशर्मा कौशिक

मूल्य लागत मात्र—केवल ३) स्थायी ग्राहकों से २।) ह०

☞ व्यवस्थापिका 'चाँद' कार्यालय, चन्द्रलोक, इलाहाबाद

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

भूमि-विस्तार १,४४७ वर्ग मील और जन-संख्या १,८९,२७२ है। ख़िराज २७,३८७॥) दिया जाता है। वार्षिक आय ६,५८,०००रु० है। तोपों की सलामी १५ है। वर्तमान नरेश हैं श्रीमान् महारावल श्रीलक्ष्मणसिंह जी बहादुर!

बारहवीं रियासत प्रतापगढ़ है, जो गहलोतों की है। भूमि ८८६ वर्ग मील और जन-संख्या ६७,११४ है। ख़िराज ५६,८८७॥) दिया जाता है और वार्षिक आय ४,९३,८०० रु० है। सलामी १५ तोपों की है। यहाँ के नरेश श्रीमान् महाराज सर रघुनाथसिंह जी बहादुर, के० सी० आई० ई० हैं।

तेरहवीं रियासत बाँसवाड़ा है, जो गहलोतों की है। इसका विस्तार १,६०६ वर्ग मील और जन-संख्या १,९०,३६२ है। ख़िराज ५ हज़ार रुपए वार्षिक तथा आय ५,३०,००० के लगभग है। सलामी १५ तोपों की है। वर्तमान नरेश श्रीमान् महारावल श्रीपृथ्वीसिंह जी बहादुर हैं।

चौदहवीं रियासत धौलपुर है, जो जाटों की है। इसका घेरा १२०० वर्ग मील, और जन-संख्या २,२९,७३४ है। वार्षिक आय १६ लाख के लगभग है, ख़िराज कुछ नहीं। तोपों की सलामी १५ है। वर्तमान नरेश श्रीमान् रईसउद्दौला, सिपाहदारउल्मुल्क महाराजाधिराज श्रीसवाई राना सर उदयभानसिंह लोकेन्द्र बहादुर, दिलेरजङ्ग जयदेव, के० सी० एस० आई०, के० सी० वी० ओ० हैं।

पन्द्रहवीं रियासत भरतपुर की है, जो जाटों की गद्दी है। भूमि-विस्तार १,९९३ वर्ग मील और जन-संख्या ४९,६४,३७० है। ख़िराज कुछ नहीं दिया जाता और वार्षिक आय ३५,००,००० रु० है। तोपों की सलामी १७ है। वर्तमान नरेश श्रीमान् महाराजा श्रीब्रजेन्द्रसिंह जी बहादुर हैं।

सोलहवीं रियासत अलवर है। इसमें कछवाहे राजपूतों का राज्य है। इस राज्य का विस्तार ३,२२१ वर्ग मील और राज्य की जन-संख्या ७,०१,१५४ है। ख़िराज कुछ नहीं है। वार्षिक आय ३३,००,००० रुपए और सलामी १५ तोपों की है। वर्तमान नरेश श्रीमान् वीरेन्द्र-शिरोमणि "प्रभु" महाराजा सर जयसिंह जी बहादुर, जी० सी० एस० आई० हैं।

सत्तरहवीं रियासत टोंक है, जो पठानों की है। इसका भूमि-विस्तार २,५५३ वर्ग मील और जन-संख्या २,२७,८९८ है। ख़िराज कुछ नहीं दिया जाता। वार्षिक आय २१,१०,३४२ रुपया है। १९ तोपों की सलामी है। वर्तमान नरेश श्रीमान् अमीनउद्दौला वज़ीरउल्मुल्क नवाब सर मुहम्मद इब्राहीमअली ख़ाँ बहादुर, सोलेतजङ्ग; जी० सी० एस० आई०, जी० सी० आई० ई० हैं।

अठारहवीं रियासत झालावाड़ है, जो झाला राजपूतों की गद्दी है। इसका विस्तार ८१० वर्ग मील और जन-संख्या ९६,१८२ है। वार्षिक आय ७,७६,३१० रुपया है। १३ तोपों की सलामी है। वर्तमान नरेश श्रीमान् महाराज राणा श्रीराजेन्द्रसिंह जी बहादुर हैं।

उन्नीसवीं गद्दी शाहपुरे की है, जो गहलोतों की है। भूमि-विस्तार ७०५ वर्ग मील और जन-संख्या ६५,१४२ है। वार्षिक आय ५,६५,२१८ रु० है, सलामी ९ तोपों की है। वर्तमान नरेश राजाधिराज सर नाहरसिंह, के० सी० आई० ई० हैं।

इन रियासतों की सम्मिलित भूमि एक लाख वर्ग मील है और इसमें १½ करोड़ के लगभग जन-संख्या पर केवल १९ व्यक्ति शासन करते हैं तथा प्रजा की कमाई में से २० करोड़ रुपया प्रति वर्ष पाते हैं!! ब्रिटिश-सरकार भी ख़िराज में १० लाख रुपया प्रति वर्ष प्राप्त करती है। इन राजाओं की दुर्दशा ब्रिटिश-साम्राज्य के हाथ से और इनकी प्रजा की दुर्दशा इन राजाओं के हाथ से कितनी बुरी तरह हो रही है, यह बात विचारने के योग्य है। इन राजाओं के पास न सैनिक शक्ति है, न सैनिक अधिकार हैं। ये केवल नाम के 'बहादुर' हैं और प्रायः ऐयाशी और सैर-सपाटा ही इनके जीवन का ध्येय है। जो राजा पक्के सरकारी ख़ुशामदी हैं—वे मज़े में हैं। परन्तु जो ज़रा भी खड़तल हैं, वे मानों तपेदिक़ के शिकार हैं। न जाने कब उन पर मृत्यु का पञ्जा सवार हो जाय। इन दुर्दशा-ग्रस्त रियासतों और राज्यों का अस्तित्व २०वीं शताब्दी रहने देगी या नहीं, अब यही उत्सुकता से देखने योग्य विषय है।

राजा के छः अधिकार होने चाहिएँ—(१) सिक्का ढालना, (२) विग्रह और सन्धि के अधिकार, (३) क़ानून-निर्माण, (४) कर-ग्रहण, (५) न्याय, (६) शासन।

ब्रिटिश-अधीनता में इन छः अधिकारों में से प्रथम तीन देशी राजाओं को असमान और अपूर्ण हैं। वे बाह्य तथा आन्तरीय शक्तियों से मैत्री नहीं कर सकते—उन राजाओं ने अपने सन्धि-पत्रों में स्पष्ट इस शर्त को

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

स्वीकार कर लिया है। शासन और न्याय की दशा भी ऐसी ही है। बहुत-सी रियासतें प्राण-दण्ड नहीं दे सकतीं, कोई नया क़ानून नहीं बना सकतीं—पद-ख़िताब तक नहीं दे सकतीं। कुछ को तो केवल प्रथम श्रेणी के मैजिस्ट्रेट के अधिकार प्राप्त हैं! अन्ततः मारवाड़ भर में ऐसी एक भी शक्ति नहीं है, जो ब्रिटिश-सरकार का कोई अप्रिय कार्य कर सके। रेज़िडेण्ट कठोर यम की तरह राज्यों में उपस्थित रहता है।

अकबर ने इन राजपूत-शक्तियों को मित्र बनाया था। उसके पुत्र-पौत्रों ने भी उसका अनुसरण किया। फलतः मुग़ल-साम्राज्य की नींव जम गई। पर औरङ्गज़ेब ने गद्दी पर बैठते ही हठधर्मी शुरू की। वह भाग्यहीन जवानी में दक्षिण में लड़ता रहा और वृद्धावस्था में मरहठों से टक्करें लेता रहा और मरहठों को प्रबल योद्धा बना गया। उसके साथ ही मुग़ल-साम्राज्य ध्वंस हो गया। परन्तु-राजपूत शक्तियाँ उस समय भी स्वतन्त्र न हो सकीं। निरन्तर युद्ध और कलह इसके कारण थे। जयपुर और जोधपुर में यह नियम था कि उदयपुर की रानी का औरस पुत्र गद्दी पर बैठेगा। मरहठों ने अन्त में राजपूतों का विध्वंस कर दिया।

अङ्गरेज़ी शासन में प्रारम्भ से अब तक तीन प्रधान नीतियों का अनुसरण किया गया है :—

१—शान्ति से व्यापार करने के सुभीते प्राप्त करने की चेष्टा—जो सन् १८१३ तक रही।

२—जहाँ-जहाँ अधिकार हो गया उसकी रक्षा—अधिक विस्तार की आवश्यकता नहीं—१८१५ में यह नीति स्थिर हुई। इसका प्रचार वारन् हेस्टिंग्स ने किया। इन दिनों अमीरख़ाँ पिण्डारी ४० हज़ार लुटेरों को लिए देश भर में लूटता फिरता था। इन्हें टोंक और जावरे की नवाबी देकर शान्त किया गया। इस समय तक भरतपुर और अलवर से ही सन्धियाँ हुई थीं। अब धीरे-धीरे करौली, कोटा, जोधपुर, उदयपुर, बूँदी, बीकानेर, किशनगढ़, जयपुर, प्रतापगढ़, डूँगरपुर, जैसलमेर और बाँसवाड़ा के साथ सन्धियाँ करके इन्हें भी अधीन कर लिया गया!

३—इसके बाद ही सन् ५७ का विद्रोह हुआ और भारत को महारानी विक्टोरिया ने ख़रीद लिया। इस समय जो तीसरी नीति निर्माण हुई, उसका मतलब यह था कि सरकार और देशी राज्यों का लक्ष्य एक है, अतः उन्हें मिल कर सहकारी रूप में शासन करना चाहिए। फलस्वरूप गवर्नमेण्ट को भीतरी मामलों में भी हस्तक्षेप का अधिकार हो गया। पहले कुशासन होने पर चढ़ाई करके उसका राज्य सरकारी अमलदारी में मिला लिया जाता था, अब राजाओं को दण्ड मिलता है—भरतपुर और नाभा के उदाहरण ताज़े हैं। इस प्रकार देशी राजा सरकार के शत्रुओं के शत्रु और मित्रों के विवश-मित्र हैं!! उनकी फ़ौजी ताक़तें सर्वथा नष्ट कर दी गई हैं, भीतरी-बाहरी सभी ख़तरे ब्रिटिश-गवर्नमेण्ट के ऊपर छोड़े गए हैं। जो थोड़ी-बहुत सेना है, वह वास्तव में सेना नहीं कही जा सकती। न ये राजे स्वाधीनता से सिपाही भर्ती कर सकते हैं, न ये अपने युवकों को सैनिक शिक्षा ही दे सकते हैं। उनके शस्त्र निकम्मे, तोपें हल्की और खिलौना मात्र हैं। इसके सिवा ब्रिटिश-शक्ति को यह अधिकार प्राप्त है कि चाहे जिस राज्य में छावनी स्थापित कर दे—राज्यों को उसकी रसद का प्रबन्ध करना अनिवार्य होगा। रेल, डाक, तार आदि का प्रबन्ध सभी रियासतों में गवर्नमेण्ट के हाथ में है। इस प्रकार ये राजागण जो अपने को महाराजाधिराज कहते हैं—प्रजा के माँ-बाप बने हैं—वास्तव में ब्रिटिश-साम्राज्य के अधीन, आश्रित और अवलम्बित हैं। इन परक़ैंच राजाओं में कितना दम है—यह गत महायुद्ध के अवसर पर पृथ्वी की महाशक्तियों ने देख लिया था!!!

महारानी विक्टोरिया से लेकर आज तक ब्रिटिश-प्रभुओं ने इन राजाओं के सम्बन्ध में जो उद्गार प्रकट किए हैं—वे इन घोषणाओं और इन भाषणों से प्रकट हैं :—

१

हम भारतवर्ष के राजाओं को इस घोषणा द्वारा विदित करते हैं कि ऑनरेबुल ईस्ट इण्डिया कम्पनी से की हुई उनकी सन्धियाँ (अहदनामे) और इक़रारनामे हम स्वीकार करते हैं। हम उनके पूरे तौर से पाबन्द रहेंगे और आशा करते हैं कि राजा लोग भी ऐसा ही करेंगे।

हम अपने राज्याधिकारों को बढ़ाना नहीं चाहते और वैसे ही अपने राज्य और अधिकारों पर भी दूसरों को

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

नाजायज़ सिक्का न जमाने देंगे तथा साथ ही दूसरे देशी राज्यों पर हमला भी न होने देंगे। हम देशी राजाओं के अधिकार, मान और ऐश्वर्य का अपने ही अधिकारों की तरह आदर करेंगे और हमारी यह इच्छा है कि राजा लोग और हमारी प्रजा भी उस सुख और सामाजिक उन्नति के फलों को भोगें—जोकि आन्तरिक शान्ति एवं श्रेष्ठ शासन के बिना प्राप्त नहीं हो सकते।

—हर मेजेस्टी महारानी विक्टोरिया
(१ नवम्बर, सन् १८५८ ई०)

२

जब से मैं और अपनी पूजनीया माता भारत की प्रथम राजराजेश्वरी, स्वर्गीया महारानी विक्टोरिया के राजसिंहासन पर बैठा हूँ, तभी से मेरी इच्छा है कि उस परोपकारशील एवं न्यायपरायण शासन-प्रणाली को, कि जिससे वह भारतीय प्रजा की प्रेम-पूजा की पात्र बनी थीं, पूरी तौर से जारी रक्खूँ। भारत के सब राजाओं एवं प्रजा को मैं फिर विश्वास दिलाता हूँ कि हम उनके स्वातन्त्र्य का आदर करते हैं—उनके मान और अधिकारों की इज़्ज़त करते हैं। उनकी उन्नति में हम अनुरक्त हैं, उनकी रक्षा में तत्पर हैं। उपर्युक्त वर्णन मेरे शासन का मुख्य लक्ष्य रहेगा और ईश्वर की दया से भारतीय राज्य और उसकी प्रजा को सुखों के शिखर पर पहुँचाएगा।

—हिज़ मेजेस्टी किङ्ग एडवर्ड सप्तम
(२३ जनवरी, १९०१ ई०)

३

पूजनीया महारानी विक्टोरिया ने शासन की बागडोर हाथ में लेने पर सन् १८५८ ई० में भारत के देशी नरेशों को एवं प्रजा को जो घोषणा की थी और मेरे पूज्य यशस्वी पिता ने ५० वर्ष बाद जिस महत्वपूर्ण फ़र्मान को फिर दुहराया था, शाही शासन के उसी परोपकारशील एवं उदार उद्देश्य के चार्टर (अधिकार-पत्र) का मैं भी भविष्य में बराबर पालन करूँगा।

—हिज़ मेजेस्टी किङ्ग जॉर्ज पञ्चम
(सन् १९१० ई०)

४

भविष्य में उत्पन्न होने वाले प्रश्न सहयोग और पारस्परिक विश्वास की रीति से हल होवेंगे। मेरी पूर्व घोषणा में शाही बुज़ुर्गों द्वारा और मेरे द्वारा दिए हुए विश्वासों को दुहराया गया था और साथ ही भारत के नरेशों के अधिकार, स्वत्व और गौरव को पूर्णतया क़ायम रखने का मैंने अपना विचार भी प्रकट किया था। राजा लोग विश्वस्त रहें कि यह प्रतिज्ञा बराबर अटल रही है और रहेगी।

—हिज़ मेजेस्टी किङ्ग जॉर्ज पञ्चम

५

देशी रियासतों का ब्रिटिश-साम्राज्य से केवल ब्रिटिश-राजसिंहासन (सम्राट्) के नाते से ही सम्बन्ध नहीं है! वरन् इस बात से भी है कि वे उन भूमि-सम्बन्धी सामान्य विषयों में अधिकाधिक स्वार्थ लेते हैं, जिनसे वे और ब्रिटिश-प्रान्त समान सम्बन्ध रखते हैं।

—मॉंटेगू चेम्सफ़र्ड सुधार-स्कीम
(सन्, १९१७ ई०)

हिज़ एक्सलेन्सी लॉर्ड चेम्सफ़र्ड वाइसराय ऑफ़-इण्डिया ने जोधपुर में २० नवम्बर, सन् १९२० ई० के राजदरबार में दिए हुए अपने भाषण में कहा था :—

"बुद्धिमान् नरेश को चाहिए कि समय के परिवर्त्तन की लहर के साथ-साथ उसके अनुकूल अपना राज्य-प्रबन्ध बनावे। उसे कोशिश करनी चाहिए कि अपने बाप-दादाओं की रस्मों का लिहाज़ रखते हुए अपना शासन पहले की अपेक्षा ज़्यादा पब्लिक-राह पर निर्भर रक्खे और अपने तईं यह निश्चय करे कि थोड़े से मनुष्यों के आराम और हुकूमत के लिए बहुतों की भलाई नष्ट नहीं की जावे। हालाँकि नाबालिग़ी के वक़्त में यह मुमकिन नहीं है कि राज्य-प्रबन्ध में बड़ा हेर-फेर किया जावे। फिर भी बहुत-कुछ किया जा सकता है, जिससे कि राजा और प्रजा के आपस में अच्छे विचार हों और सहानुभूति बढ़े। पब्लिक को जहाँ तक हो सके, कार्यों में शामिल रक्खा जावे तथा उनकी शिकायतों को ज़ाहिर करने के मुकम्मिल ज़रिए मुहैया किए जावें और उन शिकायतों को सही साबित होने पर, उनके दूर करने का यत्न किया जावे। कभी-कभी यह देखा जाता है कि राजधानी और उसके चारों ओर की आबादी पर ज़्यादा ध्यान दिया जाता है और किसान

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

लोगों के फ़ायदे और भलाई की तरफ़ बहुत कम ख़्याल होता है। ... ...रेवेन्यू का बन्दोबस्त करने का निश्चय बहुत बुद्धिमानी का है और मेरा विश्वास है कि इससे देहात के लोगों की ज़रूरतों और हौसलों को राज-प्रबन्ध के साथ घनिष्ट तौर पर मिला दिया जायगा।"

हिज़ एक्सलेन्सी लॉर्ड चेम्सफ़र्ड (वाइसराय) ने बीकानेर में २६ नवम्बर, सन् १९२० ई० के दरबार में भाषण देते हुए इस प्रकार कहा :—

"भारत के नरेशों को शासन-कार्य का व्यावहारिक अनुभव प्राप्त करने के अवसर मिलते हैं, इसलिए उनका कर्तव्य है कि स्वराज्य के मार्ग में वे अपने देशवासियों के पथ-प्रदर्शक बनें और उन्हें यह याद दिलाएँ कि यदि व्यक्तियों के अधिकार होते हैं तो साथ ही राष्ट्र के प्रति कर्तव्य भी होते हैं। स्वाधीनता, उच्छृङ्खलता (मनमानी) को नहीं कहते और अराजकता से देश की उन्नति नहीं होती। प्रजा-प्रतिनिधि-सभा (पार्लामेण्ट) में श्रीमान् (महाराजा साहब) ने बीकानेर के निवासियों को रियासत की नीति को ब्योरेवार सीखने और उसकी खोज करने का अवसर दिया है और यदि वे राजनीति को वश में नहीं रखते तो कम से कम यह तो अवश्य समझते हैं कि वह उनसे छिपी नहीं है।

"स्वराज्य के जोश में बहुधा जिस बात पर ध्यान नहीं दिया जाता, उसको श्रीमान् ने अच्छी तरह समझ लिया है। वह यह है कि धीरे-धीरे आगे बढ़ना ज़रूरी है और अन्य कलाओं की तरह राज्य-कला भी सीखनी पड़ती है। जिस प्रकार इस संस्था का प्रारम्भ अच्छा हुआ है, उसी प्रकार यदि बुद्धिमानी से यह चलाई जायगी तो इससे बीकानेर-सरकार और बीकानेर के लोगों का परस्पर वास्तविक सम्बन्ध बढ़ जायगा और उस सम्बन्ध से मुझे विश्वास है कि आपके राज-घराने की निर्बलता नहीं होगी। रियासतों का भविष्य मनुष्यों और संस्थाओं—दोनों पर निर्भर है।"

हिज़ एक्सलेन्सी लॉर्ड कर्ज़न का कथन है कि :—

"कोई भी नरेश तुच्छता और जवाबदेही से बरी नहीं हो सकता तथा अपनी मनमानी नहीं कर सकता। जो हुकूमत उसके ज़िम्मे रक्खी गई है, अपने को उसके लायक़ साबित करे, न कि उसका बेजा इस्तेमाल करे। उसे अपनी प्रजा का मालिक और नौकर दोनों होना चाहिए। उसे यह समझ लेना चाहिए कि उसकी आमदनी और माल, उसकी ख़ुदग़र्ज़ ख़्वाहिशों के पूरी करने के लिए नहीं हैं, बल्कि उसकी प्रजा की भलाई के वास्ते हैं। उसका अन्दरूनी राज-बन्दोबस्त उस हद तक सुधार से बरी है, जहाँ तक कि वह सादिक़ या खरा है और उसका राजसिंहासन इन्द्रिय-लोलुपता का स्थान नहीं है, लेकिन अपने फ़र्ज़ की सख़्त बैठक है। उसकी मूर्ति सिर्फ़ खेल के मैदान (पोलो) में, या घुड़दौड़ में, या यूरोपियन होटल में देखी जाने वाली चीज़ नहीं है। उसका असली काम, उसका राजकीय फ़र्ज़ अपने लोगों के साथ है। इसी पैमाने से मैं उसको जाँचूँगा। इसी कसौटी के ज़रिए वह आख़र में बतौर राजनैतिक संस्था के नष्ट होगा या ज़िन्दा रहेगा। मेरा उद्देश्य तितली के जैसा नहीं है कि जो बेकाम एक फूल से दूसरे फूल पर उड़ती है, बल्कि काम करने वाली मधु-मक्खी से है कि जो अपना छत्ता बनाती है और ख़ुद अपना शहद इकट्ठा करती है। ऐसे मनुष्य के साथ मेरी हार्दिक सहानुभूति और प्रशंसा है। वह अपनी प्रजा का प्यारा है और अङ्गरेज़-सरकार का भी प्यारा है, जिसका कि मैं प्रतिनिधि हूँ। हालाँकि यह बात मुश्किल है, लेकिन बड़ी ज़रूरी है कि पब्लिक और ख़ानगी ख़र्चों में साफ़-साफ़ भेद रक्खा जावे और यह याद रहे कि रियासत की आमदनी प्रजा की है, न कि नरेश की; और वह अगर एक शक्ल में उनसे ली गई है तो बहुधा दूसरी शकल में उन्हें वापस देनी चाहिए। अच्छे और बुरे नरेशों में फ़र्क़ क्या है? अच्छे नरेशों के लिए तो उपयोगिता, कीर्ति और यश का रास्ता खुल जाता है और बुरे राजा शीघ्र नष्ट हो जाते हैं, और उनका विचार तक लोगों के दिमाग़ से उठ जाता है।

"किसी कामयाब नरेश की ज़िन्दगी ऐसी नहीं होनी चाहिए कि जिसमें ठहर-ठहर कर जोश के झोंके हों। कभी तो फ़ुर्ती और भलाई की लहर हो और कभी उदासीनता में परिवर्त्तन तथा उतार हो।

"यह साफ़ है कि उनको ज़माने के ढङ्ग के साथ-साथ काम करना व चलना होगा। वे पिछड़ नहीं सकते और जो अनिवार्य उन्नति हो रही है, उसके लिए उनको भार-रूप भी न बनना चाहिए। शाही राज्य की शृङ्खला में वे कड़ियों के मानिन्द हैं। यह कभी नहीं होना चाहिए

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

स्वर्गीय श्रीमान् महाराज राना सर भवानीसिंह जी बहादुर, के० सी० एस० आई०, एम० आर० ए० एस०, झालावाड़ (राजपूताना)

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

चाँद

स्वर्गीय श्रीमान् कर्नल श्री० बृजेन्द्र सवाई महाराजा सर किशनसिंह जी बहादुर,
के० सी० एस० आई०, भरतपुर

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

श्रीमान् महाराजा सर उम्मेदसिंह जी बहादुर, के० सी० एस० आई०, के० सी० वी० ओ०, जोधपुर

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

श्रीमान् महाराजा सर तुकोजीराव पँवार, के० सी० एस० आई०, देवास (सीनियर)

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

श्रीमान् महाराजा सर गुलाबसिंह जी बहादुर, के० सी० एस० आई०, रीवाँ

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

स्वर्गीय श्रीमान् महारावल सर रघुनाथसिंह जी बहादुर, के० सी० आई० ई०, प्रतापगढ़

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

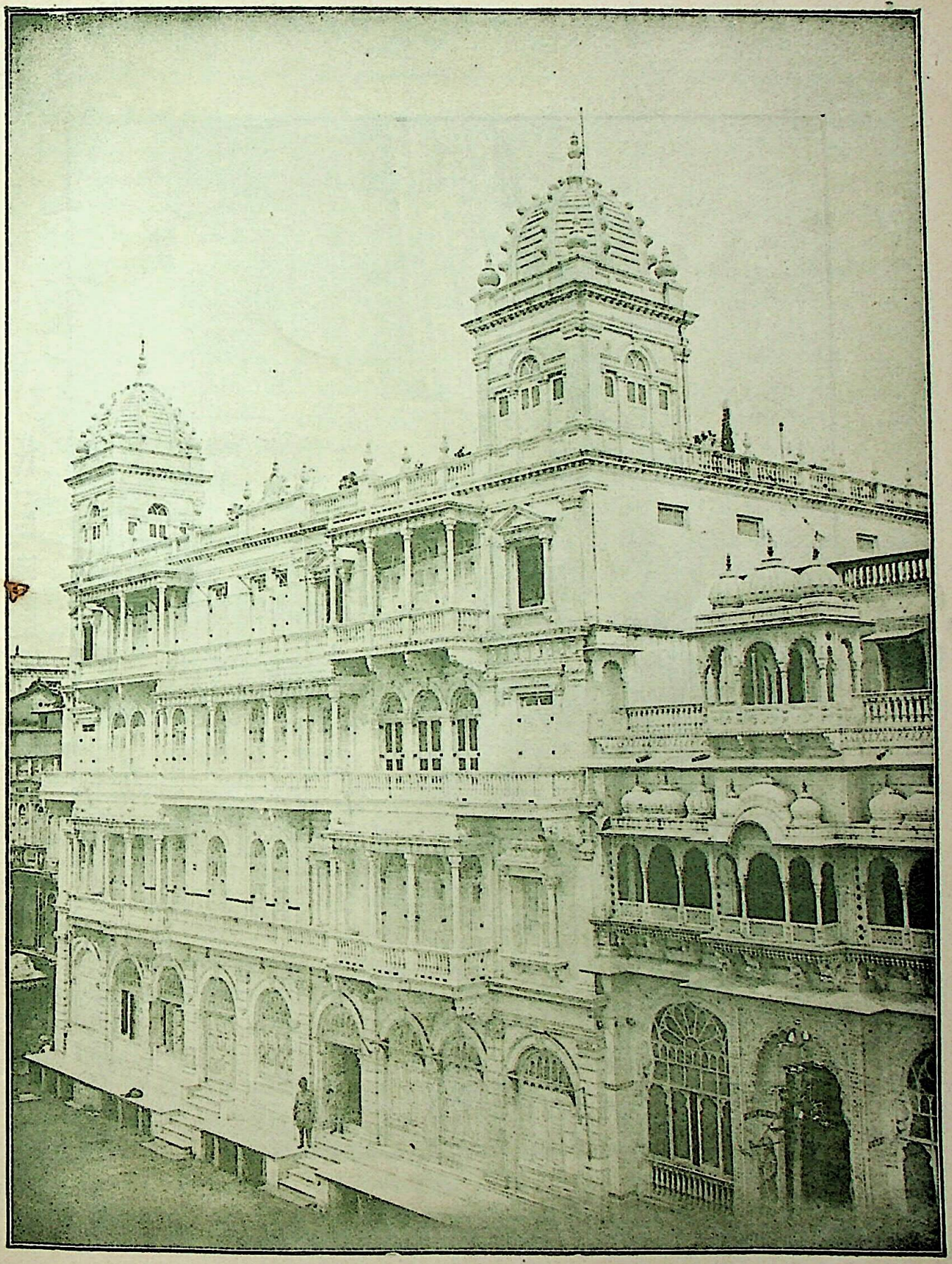

इन्दौर के धन-कुबेर सर हुकुमचन्द जी का राजमहल

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

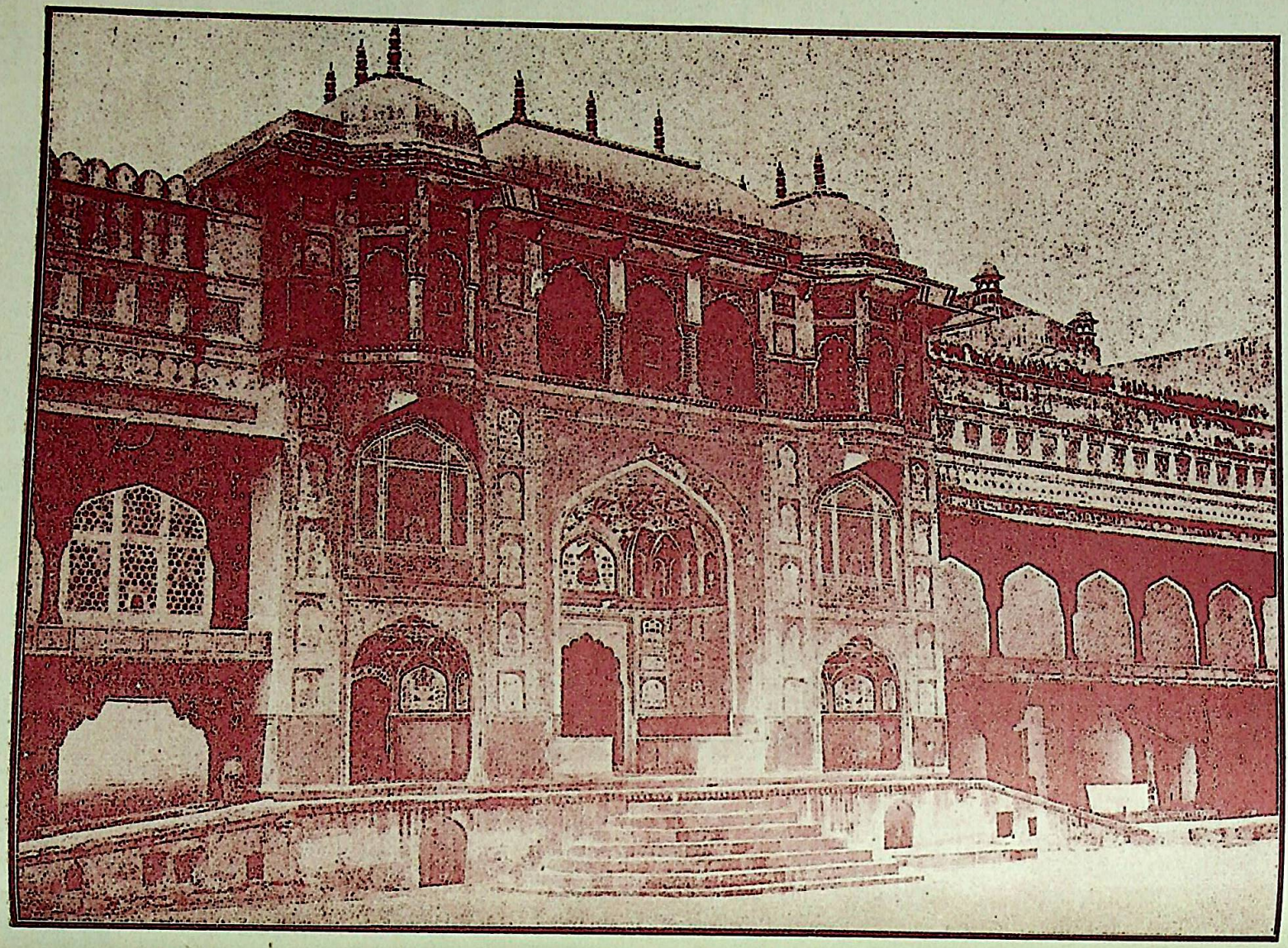

आम्बेर (जयपुर) के महल का बाहरी दृश्य

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

कि ब्रिटिश-किड़याँ तो मज़बूत हों और देशी कड़ियाँ उनसे कमज़ोर या उनसे विपरीत हों।

"जैसे शृङ्खला लम्बी होती जाती है और उसके हर एक हिस्से पर ज़्यादा ज़ोर पड़ता जाता है, वैसे ही गुण और रेशों की समानता आवश्यक है। यदि ऐसा नहीं है तो शृङ्खला टूट जायगी। इसलिए मेरा ख़्याल है और मैं इस बात को देशी नरेशों पर जमा देने में ढील नहीं करता कि उन पर एक बहुत साफ़ और निश्चित फ़र्ज़ का भार है। वह सिर्फ़ उनके खानदान व राज्य को सदा के लिए बनाए रखने का ही नहीं है। उन्हें इस पर सन्तोष नहीं कर लेना चाहिए कि अपने ज़माने में बातें गुज़ार दी जायँ। उनका सिर्फ़ यह फ़र्ज़ नहीं कि शाही राज्य-प्रणाली में निश्चित स्थान उदासीनता से ग्रहण कर लें, बल्कि यह है कि उन पर जो उत्तरदायित्व और भार है, उसको सचेत और सबल सहयोग द्वारा पूर्ण करें।"

हिज़ एक्सलेन्सी लॉर्ड चेम्सफ़र्ड वाइसराय ऑफ़ इण्डिया ने देशी राज्यों के लिए चेतावनी देते हुए यह कहा है :—

"जिस हलचल के ज़माने में हम रहते हैं, उसे और मत कुछ महीनों की घटनाओं को देखते हुए यह भाव प्रबल होता है कि प्रजा के हित का ख़्याल रक्खे बिना स्वच्छन्दतापूर्ण राज्य करने में क्या-क्या ख़तरा है। दुनिया के अधिकतर देशों में इस ख़तरे के ख़्याल से ही किसी एक राजा के स्वच्छन्द अख़्तयार की जगह प्रजातन्त्र-राज्य की स्थापना हुई है। चूँकि ब्रिटिश-गवर्नमेण्ट उनकी रक्षा करती है, इसलिए देशी राज्यों के नरेश अपनी प्रजा की भलाई पर निजी अख़्तयार बहुत ज़्यादा रखते हैं और इसलिए उसी प्रकार उनकी ज़िम्मेदारी ज़्यादा है।"

हिज़ एक्सलेन्सी लॉर्ड रीडिङ्ग वाइसराय ऑफ़ इण्डिया ने जोधपुर-नरेश को पूर्ण शासन-अधिकार देते हुए, २७ जनवरी, सन् १९२३ ई० को जोधपुर-दरबार में कहा था :—

"× × × शिक्षा में जैसी चाहिए, वैसी तरक़्क़ी नहीं हो सकी है। इस मद में ख़र्च बढ़ा कर प्रायः एक लाख रुपया किया गया है, तो भी राज्य की आमदनी की तुलना से ख़र्च कम है। महाराजा बहादुर को चाहिए कि वे इस विभाग की ओर विशेष ध्यान दें। क्योंकि शिक्षा के बिना राज्य की उन्नति नहीं हो सकती, और दरबार की यह इच्छा कि मारवाड़-निवासी ही राज्य के ओहदों पर नियुक्त हों, तभी पूरी होगी जब शिक्षा के लिए पूर्ण सुप्रबन्ध किया जायगा। × × × शासन-कार्य अब जैसा कठिन और जटिल हो गया है वैसा कभी नहीं था। महायुद्ध के बाद से संसार में बहुत बड़ा परिवर्त्तन हुआ है। पुराने विचार जाते रहे हैं। पुरानी प्रथाओं की कड़ी आलोचना हुई है। इस तरह की अशान्ति शुभ का ही लक्षण है, पर परिवर्त्तन का समय शासकों के लिए बड़ा कठिन है। जितने में लोगों के पूर्व-पुरुष सन्तुष्ट थे, उतने में अब लोग सन्तुष्ट नहीं होते। आपके सरदार और प्रजाजन भी वर्तमान युग की उन्नति की दौड़ में पीछे रहना पसन्द नहीं करेंगे। समय की गति से न तो आप ही पीछे रह सकेंगे और न अपनी प्रजा को ही रख सकेंगे। उनकी उच्च आकांक्षाओं पर ध्यान देना ही उचित होगा। तरह-तरह की कठिनाइयाँ उपस्थित होंगी ज़रूर, पर दूर-दर्शिता, साहस और बुद्धिमत्ता से उनका सामना करने से वे आपसे आप दूर हो जायँगी। यदि आप लोगों के हित पर ही सदा दृष्टि रक्खेंगे और न्याय और सहानुभूति से राज्य करेंगे तो भविष्य में आपको कोई भय नहीं रहेगा।"

श्रीमान् भारत-सम्राट् महाराजाधिराज पञ्चम जॉर्ज महोदय के पितृव्य ड्यूक ऑफ़ केनॉट ने, जो उनके प्रतिनिधि-रूप में काउन्सिलों और नरेन्द्र-मण्डल के खोलने के लिए फ़रवरी, सन् १९२० ई० में भारतवर्ष में आए थे, मद्रास कॉरपोरेशन के अभिनन्दन-पत्र का उत्तर देते हुए कहा था :—

"भारत जो बड़ी शीघ्रता से अपने उन्नति-मार्ग में आगे बढ़ रहा है, उसके लिए भी हमें कम गर्व नहीं है। अब पुराना ज़माना गया। अब फिर वह आने को नहीं है। इस समय जो-जो कार्य हो रहे हैं, उनसे कोई भी हाथ नहीं खींच सकता। सभी देशों में ऐसे लोग हैं जो सार्वजनिक कार्य से मुँह चुराते हैं। ये लोग चाहते हैं कि हमारा बपौती अधिकार सदा क़ायम रहे और सभी हमारे हाथ में रहें।"

हिज़ रॉयल हाईनेस दी ड्यूक ऑफ़ केनॉट ने प्रिन्सेज़ चैम्बर (नरेन्द्र-मण्डल) को खोलते समय अपने व्याख्यान में ८ फ़रवरी, सन् १९२० ई० को दिल्ली में कहा था :—

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

"सम्राट् (शाहन्शाह) की यह इच्छा है कि हर एक सन्देह या ग़लत ख़्याल को दूर किया जाना चाहिए, और वह आप सब नरेशों से विश्वास रखते हैं कि आप लोग अपनी मातृभूमि की राजनैतिक उन्नति में अधिकतर भाग लेवें।"

भारत-सरकार के लॉ-मेम्बर स्वर्गीय लॉर्ड मैकॉले ने अपने एक प्रसिद्ध व्याख्यान में कहा है कि :—

"मेरा यह विश्वास है कि इस देश में (विलायत में) जितने राज्य-प्रबन्ध के सुधार हुए हैं, वे कदापि न होते, यदि उनके लिए उद्योग और आन्दोलन (एजिटेशन) न किया जाता। सत्य तो यह है कि आन्दोलन से और स्वराज्य से बहुत घनिष्ट सम्बन्ध है। क्या यूरोप और अमेरिका में दास-प्रथा का बन्द होना कभी सम्भव था, यदि उसके लिए घोर आन्दोलन न किया जाता। जैसे वृक्ष की वृद्धि के लिए जल और वायु की आवश्यकता है, उसी भाँति जाति-सुधार, राज्य-प्रबन्ध और अन्यान्य प्रबन्धों में सुधार के लिए घोर एवं अथक आन्दोलन की आवश्यकता है।"

* * *

सच तो यह है कि यदि देशी नरेश भारतीय स्वतन्त्रता के आन्दोलन में भाग लेना चाहें, अपनी प्रजा का सुधार करना चाहें, तो अपनी इस परवशता में भी बहुत-कुछ कर सकते हैं। उन्हें न युद्ध-सम्बन्धी भय है, न व्यय। पर खेद है, वे प्रायः अपना निश्चिन्त जीवन रङ्गरेलियों में ख़र्च करते हैं। न प्रजा की शिक्षा का प्रबन्ध, न नगर-सुधार, न व्यापार कला-कौशल का निर्माण! जिस भूमि के राजा ऐसे धन-कुबेर हों, जो युद्धादि के भय से इतने उन्मुक्त हों, वे भी यदि अपनी प्रजा की भलाई की ओर ध्यान न दें तो इसे अभागे भारत का दुर्भाग्य ही समझना चाहिए! आए-दिन राजाओं की विलायत-यात्राओं के प्रसङ्ग आते हैं, जो निरर्थक होते हैं और उनका व्यय इतना होता है जितना राज्य भर की शिक्षा में भी वर्ष भर में ख़र्च नहीं किया जाता! फलतः मारवाड़ की प्रजा ग़रीब, भूखी, मूर्ख, नङ्गी और निरीह है, जैसा कि पाठक इस अङ्क में अन्यत्र देखेंगे। अनेक राजाओं के जो भीतरी कुकर्म हैं, ज़रा ठण्डे दिल से उनका विवरण भी पढ़ लीजिए।

स्वर्गस्थ जयपुर-महाराज ६५ वर्ष की उम्र में मरे। इनके रनवास में सात-आठ सौ स्त्रियाँ थीं। रायसाहब मिट्ठनलाल एडवोकेट ने राजस्थान-प्रजा-परिषद् में सभापति के आसन से जो स्पीच दी थी, उसमें उक्त महाराज की ३,००० स्त्रियाँ बताई थीं। श्री० रामनारायण चौधरी ने 'मॉडर्न रिव्यू' के एक लेख में इसी संख्या का समर्थन किया है। ये महाराज बेअन्दाज़ शराब पीते थे। बोतलें गटक जाना साधारण बात थी, सदा ग़र्क़ रहते थे। मरते समय इन्होंने अत्यन्त कष्ट पाया। जिगर बहुत ख़राब हो गया था—लक़वा मार गया था—अङ्ग सूख कर लकड़ी हो गया था। डॉक्टर रॉबर्ट—जिन्होंने अन्त तक चिकित्सा की, इनकी दयनीय दशा प्रायः प्रकट करते थे। इनके मुख्य मर्ज़ीदान बालाजी ख़वास थे, जो जात के दर्ज़ी थे, तथा बाल-मित्र थे। इनका काम यह था कि रियासत भर में जो सुन्दरी स्त्री या कुमारी लड़की होती, ले आते और पर्दे में डाल देते। इनका मर्ज़ीदान भँवरजी दर्ज़ी था। प्रायः जयपुर नगर में उच्च जाति की कोई विधवा या सुहागिन स्त्री बदचलन हो जाती तो उसके संरक्षक बालाजी ख़वास के यहाँ अर्ज़ करते कि हमारी बहिन, बेटी या बहू का चाल-चलन ठीक नहीं है, वह हमारे क़ब्ज़े से बाहर है, सो आप उसे ड्योढ़ी में दाख़िल कर लें। बालाजी, भँवरजी और एकाध नाजर (हीजड़े) को भेजते कि देखें वह सुन्दरी और कमसिन है या नहीं। यदि ठीक होती तो शाम को रथ भेज देते। सौ, दो सौ रु० ड्योढ़ियों में डलवाई की रिशवत लेते और पर्दा डाल कर ले जाते। ड्योढ़ी में रहने को एक कमरा मिलता। दूसरे दिन महाराज उससे मुलाक़ात करते। एक बार उसका 'इस्तेमाल' करते! फिर जब आवश्यकता होती मँगा लेते। दूसरे पुरुष का दर्शन इन अभागिनियों को दुर्लभ था। महाराज १०-१५ स्त्रियाँ प्रतिदिन अपने लिए चुनते थे। सप्ताह में एक बार ज़नाना दरबार होता। सब स्त्रियाँ इकट्ठी होतीं, उनमें से महाराज सप्ताह भर के लिए चुन लेते थे!!

दुर्गापुरा जयपुर से तीन-चार मील पर एक गाँव है, वहाँ ख़वास जी का बँगला था। वहाँ एक बड़ा भारी हौज़ था। वहाँ अक्सर महाराज जल-विहार को स्त्रियों सहित पहुँचते। बहुत सी मशकें पानी में छोड़ी जातीं, जिन पर नङ्गी स्त्रियाँ बैठ जातीं, आप भी नङ्गे होकर घुस पड़ते। फिर वहाँ न कहने और न वर्णन करने योग्य चेष्टाएँ खुल्लम-खुल्ला होती थीं!!!

ड्योढ़ियों में जो औरतें होती थीं, उनके विभाग थे,

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

जिन्हें अखाड़ा कहा जाता था। प्रत्येक में ५०-६० स्त्रियाँ होती थीं। प्रत्येक पर एक प्रधान स्त्री होती थी। महाराज हुक्म देते, आज अमुक अखाड़े की १० औरतें बुलाओ, आज अमुक की!

महाराज की मृत्यु के बाद जब रीजेन्सी जयपुर में क़ायम हुई, तब बालाजी पर बहुत से मुक़द्दमे चले। अन्त में इन्हें २ वर्ष की जेल हुई और कई लाख की स्टेट ज़ब्त कर ली गई!

एक बड़े प्रसिद्ध महाराज अप्राकृत व्यभिचार के लिए प्रसिद्ध हैं। १-२ दर्जन मज़बूत जवान सदैव उनके साथ इसी मतलब के लिए रहते हैं। इस व्यक्ति ने अपनी रानियाँ अन्य पुरुषों को सौंप दी हैं! हाल ही में एक रानी के पास अँधेरे में एक पुरुष भेजा गया। पीछे जब बत्ती खोली गई तो रानी ने भाई को अपने साथ पाया! महाराज के लिए यह मानों बड़ी दिल्लगी थी, वे खिल-खिला कर हँस पड़े। पर रानी को आत्म-घात करके ग्लानि और लज्जा से परित्राण पाना पड़ा। एक बहुत बड़े व्यक्ति का कहना है कि महाराज में यह बुरी आदत एक प्रख्यात लाट साहब की कृपा से पड़ी थी। एक रानी को आबू में ए० डी० सी० की सेवा में जाने का आदेश दिया गया, उसके इनकार करने पर उसे ऊपर से गिरा कर मार डाला गया। आप किसी को नौकर रक्खेंगे तो पहले फ़ोटो मँगा लेंगे। एक व्यक्ति को हम जानते हैं, जो इसी योग्यता से बिना पढ़े-लिखे ही एक बड़ा ऑफ़िसर बना दिया गया है। .....के एक राजा साहब भी आपकी कृपा से जागीर भोग रहे हैं। ये महाशय मेयो कॉलेज से ही उनके हत्थे चढ़े थे। ३-४ वर्ष की बात है कि आपने जोधपुर से एक सुन्दर रावराजा साहब को ए० डी० सी० बना कर बुलवाया। वे बेचारे ७-८ महीने में ही पीले पड़ गए और ख़ून मूतने लगे—रोगी होकर भाग खड़े हुए। .....के एक एफ़० ए० फ़ेल कायस्थ साहब, जो भूखे मरते थे, इस योग्यता की तुफ़ैल से दो-ढाई सौ का वेतन पा रहे हैं!!

एक मारवाड़ के महाराज, जो थोड़े दिन पूर्व युवा अवस्था में मरे हैं, दिन भर पड़े सोते थे, रात भर वेश्याओं के कोठों पर घूमते थे। आपने १० पड़दायतें डाल ली थीं—तीन पातरें, पाँच गोलियाँ (दासियाँ), तीन ब्राह्मणी और एक-दो अन्य थीं। जब वे मरे तो वे सब क़िले पर चढ़ा दी गईं और राज-नियम के अनुसार सड़ती रहीं। जब..... रीजेण्ट बन कर आए तब उन्हें छुट्टी दी गई। ये महाराज एक बार दिन-दहाड़े एक मुसलमान रँगरेज़ की सुन्दरी लड़की को उठा कर मोटर में डाल कर ले गए। ५-६ दिन रख कर १५-२० हज़ार रुपए के साथ लौटा दिया। ये भाग्य-हीन अल्पवयस्क महाराज एक वेश्या के कोठे पर इन्फ़्लु-एञ्ज़ा में पूना शहर में रोगी हुए और घर में आकर मरे!

एक रियासत की घटना है, एक सज्जन ने साहसपूर्वक अपने हस्ताक्षरों से सन् १९१९ में एक दरख़्वास्त राज्य के एक उच्च अङ्गरेज़-ऑफ़िसर को दी। उसका आशय यह था :—

"अमुक व्यक्ति अमुक महकमे का चार वर्ष पूर्व ऑफ़िसर था। उसकी अधीनता में जो लोग थे वे उसी के सम्बन्धी आदि थे। जिन्हें वह जैसे चाहता, काम में ले आता था। वह शहर में से औरतें लाता और अपना मतलब गाँठने के लिए अपने महाराज की सेवा में पेश करता। उसके मरने के बाद उसका लड़का भी यही धन्धा करता रहा। और उसे भी वही ओहदा दिया गया। फलतः अधिक स्त्री-प्रसङ्ग से जवान राजा की मृत्यु हो गई .....!

"मेरा यह कहना अत्युक्ति नहीं है और बड़ी आसानी से इसकी जाँच की जा सकती है। श्रीमान् महाराजा... और महाराज .....इसके स्वयं साक्षी हैं। जो इसे, इसके बाप को और इसके ख़ानदान तथा कारनामों को भली-भाँति जानते हैं।

"कहते हैं, वर्तमान महाराज.....दशहरे की छुट्टी में जब.....से आए थे तब उन्होंने साफ़ कह दिया था कि ".....महकमे के नौकर-चाकरों को हमारे पास मत आने दो, क्योंकि इन लोगों की वजह से राज-परिवार नष्ट-भ्रष्ट होता है।" जबकि राजा लोग इस तरह भ्रष्ट हों तो प्रजा भी उनका अनुसरण करके अवनति के गर्त में गिरती है! जो आदमी इस प्रकार राजाओं को भ्रष्ट करता है, उसका राज्य के कर्मचारियों पर पूरा रुआब ग़ालिब रहता है और वह अपने फ़ायदे के लिए उनसे सब कुछ करा लेता है। यही नहीं, किन्तु ऐसे लोग राजा की दुर्बलता के अवसरों पर अपना मतलब गाँठ लेते हैं, जिसका कभी-कभी बड़ा भयानक परिणाम होता है।"

इस अर्ज़ी पर हलचल मच गई थी, और यह चुप-चाप फ़ाइल में छिपा कर रख दी गई। जिसे किसी तरह

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

देखने का हमें सौभाग्य प्राप्त हुआ था। इसके तीन वर्ष बाद जब प्रधान गवाह महाराजा.....की मृत्यु हो गई, तो लेखक पर मुक़द्दमा चलाया गया और जिन पर आरोप था वही जज बन कर बैठे! लेखक ने वीरतापूर्वक मुक़ाबला किया। वह उन औरतों को गवाही के लिए कोर्ट में लाया—और भी गवाहियाँ पेश कीं, पर उस पर १००) जुर्माना किया गया। अपील करने पर ५००) और कर दिया गया। आप सोच सकते हैं कि इन नीच चेष्टाओं के विरुद्ध आवाज़ उठाना भी कितना भयानक है!

एक और महाराज ने एक पासवान रख छोड़ी थी। उससे एक मन्दिर में मुलाक़ात हो गई थी। यह स्त्री ओसवाल जाति की थी। उस समय के दीवान साहब को भी उसी की आज्ञा लेनी पड़ती थी। रानियों से अधिक उसकी शक्ति थी। महाराज सदैव क़िले से उसके मकान तक बड़े ठाट-बाट से सवारी पर आते थे। जब महाराज की सवारी निकलती तो एक चमार जूतों से अपना मुँह ढक लेता था। जब उससे कारण पूछा गया तो उसने कहा—"ऐसी स्त्री के पास इस तरह खुल्लमखुल्ला जाना शर्म की बात है। महाराजा नहीं शर्माते, मुझे तो लाज लगती है।" महाराज ने सुना तो शर्मा गए। बाज़ार का रास्ता छोड़ दिया और गली में होकर जाने लगे। जागीरदारों को उसकी सवारी में पीछे जाना पड़ता था।

एक महाराज हैं, जिनकी आयु इस समय ७२ के लगभग है। वे अब तक अप्राकृत व्यभिचार कराते हैं। एक दारोग़ा (जिसका चित्र हमने 'चाँद' में छापने को मँगाया था, परन्तु कुछ सोच कर नहीं छापा) इस सुकर्म को सम्पादन करता है। भङ्गन की एक १३-१४ वर्ष की लड़की पर आपने बलात्कार किया, जिससे उसकी मृत्यु हो गई। आपके राजकुमार ख़ास तौर से इसीलिए आपसे नाराज़ हैं!!

एक महाराजा ने दिल्ली से २ हज़ार रु० मासिक पर एक वेश्या किराए पर ली। ५-६ मास बाद उस पर घोर अत्याचार किया गया। ज़रा-ज़रा से अपराधों पर उस पर १०-२० मनुष्य 'उतारने' (!!!) की सज़ा दी जाने लगी—वह वहाँ से मौक़ा पाकर भाग आई। उसके हाथ एक चित्र पड़ गया था। इस चित्र में वह वेश्या, महाराज और उनके मरज़ीदान एक और व्यक्ति—तीनों नग्न कुचेष्टा कर रहे हैं। यह चित्र एक मुसलमान-मित्र की मार्फ़त दो हज़ार में उसने एक प्रख्यात मुसलमान-लीडर को बेचा और उन्होंने महाराज को उस चित्र का कॉपीराइट छब्बीस हज़ार में बेच दिया!!

उस वेश्या से हमने परिचय करके सब बातें पूछी हैं। उसके वर्णन बड़े रोमाञ्चकारी हैं। उसे इतना सदमा इस राजा के दुष्ट बर्ताव से हुआ कि वह सब कुछ त्याग कर अब एक हिन्दू सद्गृहस्थ के घर में बैठ गई है!

एक ठाकुर साहब जन्म-नपुंसक थे। साठ वर्ष के होने पर भी आप अप्राकृत व्यभिचार करवाते थे। शान के लिए आपने एक वेश्या रख छोड़ी थी।

एक महाराज-कुमार जन्म-अपाहिज हैं, नीचे का धड़ मारा गया है, किसी मतलब के नहीं—घर में रानियाँ हैं, रण्डियाँ भी नौकर हैं और व्याह करने की तैयारियाँ भी हैं। कहाँ तक ये उदाहरण दिए जायँ—पाठक इतने ही से सन्तोष करें।

एक बड़ी रियासत के प्राइम मिनिस्टर साहब हैं, जो भारत-सरकार के पूरे पिट्ठू हैं और बड़ी भारी दुम लगाए बैठे हैं। ये अपनी कारगुज़ारी से ३०) के क्लर्क की योग्यता से १५ सौ तक पहुँच गए। इन्होंने युवक महाराज को लड़कों से अप्राकृत कुकर्म का शौक़ लगाया। पीछे—कुत्सित दृश्य के फ़ोटो उतरवा कर क़ब्ज़े में किए। वे फ़ोटो रेज़िडेण्ट को दिखा कर महाराज को नालायक़ ठहराया—अधिकार छिनवाए—और उन्हें विलायत भिजवा दिया। पीछे आपने, खुले हाथों प्रजा की बहू-बेटियों को पकड़ना, सतीत्व लूटना, अनेक अनीतियों से धन बटोरना शुरू किया। अन्त में महारानी से भी कुत्सित सम्बन्ध कर लिया। महाराज के लौटने तक महारानी का पूर्ण पतन हो चुका था। महाराज ने लौट कर विवश दूसरा विवाह किया। उन्होंने महाराजा को डरा-धमका कर अच्छी जागीर अपने नाम लिखा ली। लाखों रुपए की ज़मींदारी ब्रिटिश-राज्य में ख़रीद ली। अब बैठे चैन की वंशी बजाते हैं। इस समय कम से कम डेढ़ करोड़ रुपए का माल पास है!!

* * *

कहावत है—'तपे सो राजा और राजा सो नर्के।' इस कहावत में एक गम्भीरता है। राजा होना मनुष्य-शरीर की चरम सीमा की ऐहिलौकिक इच्छित वस्तु है। राजा

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

पद-सेवा

सेठानी—थारे हाथ सूँ पग चाँपवासूँ म्हाने घणोई चैन पड़े हैं !

नौकर—म्हें थारी नस पिछाणूँ हूँ।

उबटण

सेठानी—जोर सूँ मल रे .....

नौकर—थाणें लचको पड़ जासी ... सा ...

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

गृहस्थ की गाड़ी दलदल में—

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

जब बहू बन कर आई थीं !

अब सास बन कर !!

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

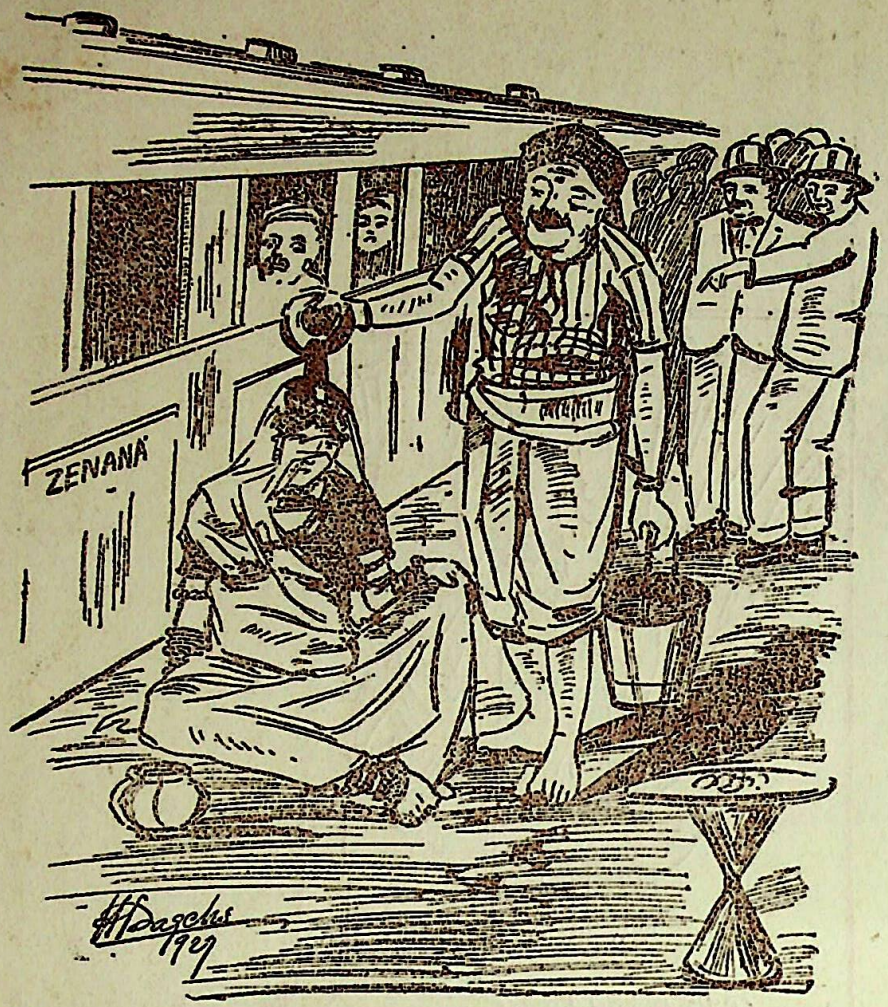

प्लेटफ़ॉर्म पर स्नान

सेठ जी—महाराज ! जल्दी करो, गाड़ी ने सीटी दे दी...

अंग्रेज दर्शक—कैसा गंदा आदमी है—औरत को ऐसा बेपर्द कर रक्खा है !

सौदा

कन्या का ख़रीददार—१० हज़ार तो घणा है, कहीं तो कम करो—इतरो महँगो सोदो क्याँ न पट सी ?

कन्या का पिता—१० हज़ार की तो म्हारी छोरी री एक-एक आँख है—समझा !!

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

को लोग लोकोत्तर समझते हैं। उसके अधिकार और रहन-सहन भी लोकोत्तर ही होते हैं।

जिस समय राजत्व की रचना हुई थी, वह समय ऐसा था कि बिना लोकोत्तर व्यक्तित्व धारण किए कोई राजा हो ही नहीं सकता था। राजा उस समय सर्व-श्रेष्ठ व्यक्ति ही हो सकता था। उसमें योग्यता, शक्ति, त्याग और श्रेष्ठता के हद दर्जे के गुण होने आवश्यक थे। ये ही गुण उसे राजा बनाए रखते थे। दिलीप के विषय में कालिदास लिखते हैं :—

सेना परिच्छदस्तस्य द्वयमेवार्थसाधनम्
शास्त्रेष्कुण्ठिता बुद्धिः मौर्वी धनुषि चातता ॥

अर्थात्—सेना और सब सामग्री तो उसकी सजावट मात्र थी। काम करने वाली वस्तु तो उसके पास दो ही थीं, एक तो शास्त्रों में न रुकने वाली बुद्धि, और दूसरे चढ़ा हुआ धनुष !!

अत्यन्त प्राचीन काल के राजाओं के शौर्य और प्रताप को जब हम पुराणों और महाभारत में पढ़ते हैं तो हमारी आँखों में अँधेरा आता है। हम चूहे से डरने वाले मर्द और स्त्रियों के महाप्रभु-वीर यह कभी कल्पना भी नहीं कर सकते कि पृथ्वी को कम्पायमान् करने वाले और रक्त की नदी में महा-फाग खेलने वाले व्यक्ति भी कभी उत्पन्न हुए थे। मुग़लों के अन्तिम काल तक हमने राजपूताने की हवा में उच्च-कोटि का वीरत्व देखा था। पर आज उसी देश का ऐसा भयानक पतन होगा, यह कौन जानता था ?

परन्तु यदि विवेचना की दृष्टि से देखा जाय तो हम कहेंगे कि अब वीर बनने की हवस रखना मूर्खता है। सामाजिक बन्धनों और उत्कर्षों ने व्यक्तिगत ज़िम्मेदारियों को बहुत ही अनावश्यक बना दिया है। अब यदि मनुष्य वीर बनने की अपेक्षा प्रबन्धक बन सके तो वह अपने जीवन में सफलता प्राप्त करेगा। यों तो वीरता एक आभूषण है, परन्तु सफलता का एक ही मार्ग है—वह है प्रबन्धक बनना। प्रत्येक साधारण पुरुष आज इस बात को अपने ज़ीवन में महसूस है।

सर्व-साधारण का यह नियम राजाओं पर भी लागू हो सकता है। वीरों पर वीरों ने शासन किया, अब व्यवहार-कुशलों और प्रबन्धकों पर व्यवहार-कुशल और प्रबन्धक शासन करें। हम साहसपूर्वक कह सकते हैं कि जिस राजा ने वीरता की—अकड़-ऐंठ की—उसने अपने मार्ग में काँटे बोए, परन्तु जिन्होंने प्रबन्ध-चातुर्य और व्यवहार-कुशलता का परिचय दिया—बन गए। यह एक गम्भीर-सत्य है।

हमें प्रायः राजाओं से वास्ता पड़ता रहा है। और चिकित्सक की हैसियत से हमें उनके न केवल अन्तःपुर तक में जाने के अवसर मिले हैं, प्रत्युत उनके गुप्त-रहस्यों को भी जानने के अवसर आए हैं। और इसके बाद हमें अपनी यह राय क़ायम करनी पड़ी है कि आज राजाओं का जीवन सर्व-साधारण से कहीं अधिक पतित, चिन्ता-युक्त, अशान्त और अपमानपूर्ण है। निस्सन्देह इन नर-वरों की इस दुरवस्था की एक हद तक ज़िम्मेदार अङ्ग-रेज़ी सरकार की वह नीति है, जिसकी भित्ति अब तक भारत के प्रति अविश्वास, सन्देह और अमित्रता के विचार हैं ! हम बार-बार यह अनुभव करते हैं कि सरकार भारत-वर्ष के इन निस्तेज राजाओं के साथ यद्यपि अपेक्षाकृत अधिक निकट रहती है, पर उसी तरह, जैसे सँपेरा साँप के निकट रहता है, या सरकस में सिंह के पिंजड़े के पास खिलाड़ी रहता है। प्रति क्षण की व्यर्थ सतर्कता और नीरस मित्रता हम नहीं समझते कि सच्चा विश्वास और सङ्गठन उत्पन्न होने देंगी। हमें यह कहते ज़रा भी सन्देह नहीं होता कि अकबर और जहाँगीर के साथ, और औरङ्ग-ज़ेब के भी साथ हिन्दू-राजाओं का जैसा घनिष्ट आत्मी-यता का सम्बन्ध था—अङ्गरेज़ी सरकार के साथ वैसा नहीं है। मराठों के प्रबल प्रताप के समय—पानीपत की तीसरी लड़ाई से प्रथम—मुग़लों की जो दशा हो गई थी, और उस समय हिन्दू-राजाओं ने मुग़लों के तख़्त की रक्षा के लिए जैसी चेष्टाएँ की थीं—यदि कभी अङ्गरेज़ी सरकार की वह दशा हो जाय तो हमें विश्वास है कि उसे देशी नरेशों से वह सहायता न मिलेगी ! और इसका कारण है अङ्गरेज़ी सरकार का यह झूठा गर्व कि वह समझती है कि हम सिर्फ़ अपनी ही मुठमर्दी, शक्ति और योग्यता से भारत पर अधिकार रखते हैं। भारत के राजाओं तक के सहयोग की भी हमें ज़रूरत नहीं है।

यह बड़े ही दुख की बात है कि देशी नरेशों में अपनी शान-शौकत दिखाने और ऐश करने तथा थोथे ख़ुशामदियों पर विश्वास कर उन्हीं की सोहबत में रहने

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

की बुरी आदत पड़ गई है। बहुत कम ऐसे राजा हैं जो योग्य साथियों के बीच रहते हैं।

सबसे बड़ा शौक़ जो राजाओं को लगा है, वह विलायत-यात्रा का है। यह दिन पर दिन बढ़ता जाता है। इसमें तो कोई सन्देह ही नहीं है कि देशाटन करना सबसे बढ़ कर योग्यता सम्पादन और अनुभव बढ़ाने का उपाय है। शिक्षा और अनुभव के लिए यूरोप जाना बुरा नहीं है, परन्तु देखा गया है कि प्रायः अनुभव के स्थान पर मौज उड़ाना और बेअन्दाज़ प्रजा का धन फूँकना ही इन यात्राओं का उद्देश्य होता है। पिछले दिनों में जोधपुर-नरेश और पटियाला-नरेश विलायत गए हैं। जोधपुर-नरेश १८ लाख रुपया ख़र्च कर आए! डेढ़ लाख रुपए की तो एक मोटर ले आए हैं। दूसरे महाराज भी लगभग इतना रुपया ख़र्च कर आए और कुत्तों की एक पल्टन साथ ले आए हैं। यह भी मालूम हुआ कि श्रीमती महारानी साहबा जोधपुर, लन्दन के बाज़ारों में बेअन्दाज़ निकम्मी वस्तुएँ ख़रीदती थीं, जिनसे लन्दन वाले भी चकरा गए थे। पटियाला-महाराज अपने जवाहरात दिखा कर लोगों को हैरान करते थे!!

क्या इन तमाम आडम्बरों से यूरोप के लोगों पर शान गाँठी जा सकती है? जहाँ का प्रत्येक बच्चा यह जानता है कि अन्ततः ये अङ्गरेज़ी साम्राज्य के साधारण सेवक हैं और आज्ञाकारी हैं। अपनी तो हम कह सकते हैं कि यदि हम राजा होते तो हमें तो यूरोप के किसी आदमी को भी मुँह दिखाने का साहस न होता। जहाँ का भङ्गी भी हमारे यहाँ के राजा की अपेक्षा अधिक स्वच्छन्द और मानवीय अधिकारों से युक्त है!

इन निकम्मी और हास्यास्पद यात्राओं से इङ्गलैण्ड के वर्तमान युवराज की यात्राओं का मुक़ाबला करना चाहिए। पिछले दिनों जब वे भारत में आए थे तब भारत ने देखा था कि राजाओं की यात्राएँ कैसी होनी चाहिएँ। उनके उद्देश्य और उनके ढङ्ग कैसे होने चाहिएँ। कैसी विषम बात है कि अख़बारों में हमारे राजाओं के तो ख़र्च हुए रुपयों की गिनती छपती है और प्रिन्स ऑफ़ वेल्स की यात्रा के मीलों की गिनती छपती है। इङ्गलैण्ड की सम्पन्न प्रजा पढ़ती है कि उनके भविष्य राजा ने इतने हज़ार मील की यात्रा की और देश-देशान्तर के नर-नारियों ने उनके दर्शन किए, मिले, एक दूसरे के स्नेह का विनिमय हुआ। परन्तु हमारे देशी राज्यों के ग़रीब, दुखी प्रजागण पढ़ते हैं—'हमारे महाराज हमारी ग़रीब कमाई में से इतने लाख रुपए फूँक आए। अब बेगार, केमाली और टेक्सों की भरमार होगी।' क्या यह दुःख का विषय नहीं है कि राजागण दया और उदारता के नाते यह समझें कि उन्हें अपनी दीन-दुखी प्रजा के पसीने की गाढ़ी कमाई को ऐश-इशरत में खोने का कोई अधिकार ही नहीं है। तन्दुरुस्ती के लिए विलायत जाने की बात अत्यन्त हास्यजनक है। जहाँ सदा कोहरा, बदली और गीलापन रहे वहाँ पर्वतराज हिमालय की प्यारी गोद छोड़ कर जाना कैसी अनोखी बात है! जहाँ करोड़ों लोग जी रहे हैं, वहाँ राजा भी अवश्य जी सकते हैं!!

* * *

मारवाड़ी-साहित्य

साहित्य मानव-जीवन के रीढ़ की हड्डी है। जिस देश और प्रान्त का साहित्य पुष्ट और उच्च होगा, उस देश का मानव-समाज भी उतना ही उच्च और पुष्ट होगा। साहित्य मनुष्य के जीवन में वह विकास उत्पन्न करता है, जो उसे साधारण प्राणी की हैसियत से ऊपर उठा कर मनुष्यत्व की चरम सीमा तक पहुँचा देता है। पृथ्वी के इतिहास में साहित्य का प्रभाव अमोघ है। साहित्य ने महाजातियाँ निर्माण की हैं, साहित्य ने महाजातियों का विध्वंस किया है। साहित्य ने मुर्दों को ज़िन्दा बनाया है, और साहित्य ज़िन्दों को मुर्दा बनाता है।

साहित्य की मूल-भित्ति है हृदय, और उसके विकास के प्रभाव का स्थल है मस्तिष्क। हृदय में आन्दोलन उत्पन्न करके मस्तिष्क की सूक्ष्म विचार-धाराओं को सञ्चालन करना साहित्य का कार्य है। यही तो मानव-जीवन का उत्कर्ष है—पशु और मनुष्य में यही तो अन्तर है। पशु साधारण शरीर की आवश्यकताओं का अनुभव करके जीवन की सभी चेष्टा करता है, परन्तु मनुष्य मस्तिष्क की विचार-धाराओं से आन्दोलित होकर जीवन की उन प्रक्रियाओं को भी करता है, जिनसे वास्तव में उसकी शरीर-सम्पत्ति का कोई वास्ता ही नहीं है। इसलिए किसी भी समाज या जाति का साहित्य देख कर हम सरलता

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

से इस बात का अनुमान लगा सकते हैं कि वास्तव में वह जाति मनुष्यत्व की योग्यता में क्या दर्जा रखती है। सच पूछा जाय तो साहित्य वास्तव में मनुष्यत्व की कसौटी है। और केवल कसौटी ही नहीं, वह जातियों के उत्थान और पतन का एक प्रबल कारण भी है। साहित्य जातियों को वीर बनाता है। साहित्य ही जातियों को क्रूर, नीच, कमीना, पापी, पतित बनाता है। इसलिए प्रत्येक जाति के विद्वानों के ऊपर इस बात का नैतिक भार है कि वह अपने साहित्य पर कठोर नियन्त्रण क़ायम रक्खें, उसे जीवन से भी उच्च, पवित्र एवं आदर्श बनाए रक्खें।

मारवाड़ का अब से १०० वर्ष पूर्व तक का साहित्य महाजातियों के सजने योग्य साहित्य है। अब से १०० वर्ष पूर्व तक मारवाड़ भारतवर्ष की सशक्त भुजा के स्थान पर था—वह मर्दों की पृथ्वी थी। वहाँ मर्द पैदा होते थे। उन मर्दों ने मुट्ठी भर की संख्या में साम्राज्यों और सम्राटों के तूफ़ानी हमलों का ऐसा सफल और वीरत्वपूर्ण मुक़ाबला किया था कि जिनकी गाथाएँ पृथ्वी की कोई भी जाति आदरपूर्वक गान कर सकती है। एकतन्त्र शासन की प्रबल चट्टानें वहाँ ७०० वर्षों तक टकराईं और अन्त में चूर-चूर हो गईं। यह उन दिनों की बात है, जब मारवाड़ में असली राजपूत जीवित थे। उन दिनों मृत्यु ही उनका व्यवसाय था। वही उनकी जीवन-क्रीड़ा और विलास था। उन दिनों चारण और भाट उनके दरबार में रहते थे। जब युद्ध-यात्रा में वे वीरों के आगे धौंसे की गर्जना और डङ्के की चोट की ताल पर गम्भीर और ओजभरे स्वर में उन वीरों के पूर्वजों के कृत्य सुनाते थे, प्रत्येक जवान के आगे आकर उनके पिता-प्रपिता और रमणियों तक के उत्सर्ग के साखे गाते थे; तब प्रत्येक वीर का रक्त गरम होकर उसकी नसों में बहने लगता था। उत्कर्ष की हवस उनके मन में उठती थी। नसें फड़क उठती थीं और उनकी तलवार विकराल हो जाती थी। उन शस्त्रहीन बूढ़ों की वाणी में जो बल था, वह हज़ारों तलवारों, लाखों भालों और शस्त्रों से कहीं उत्तम था। वीरत्व की वह कुञ्जी थी। वीरत्व का वह मार्ग था। वीर उसी की डोरी पर आगे बढ़-बढ़ हाथ मारते थे, मरते थे, और अपने पीछे की सन्तानों को एक उदाहरण दे जाते थे। वे वृद्ध साहित्यिक अपनी आँखों देखे उस शौर्य की ऐसी कड़क कविता रचते थे जो जीवित मूर्ति के समान होती थी। उस कविता को वे शान्ति के दिनों में अपने ग़रीब झोपड़ों में बैठे अपने बच्चों को सिखाते थे। वही बच्चे बड़े होकर अपने पिता के स्थान पर आगे बढ़ कर राजपूत मात्र के कर्णधार बन कर, उनके आगे उस मृत्यु-पथ पर ताण्डव-नृत्य करते बढ़ते थे, जो उन्हें अमर कर देता था।

धौंसे की धमक और कड़खे की ताल पर रणरङ्ग की होली खेलने वाले वे वीर—जिनके लिए जीवन और मृत्यु खेल था—प्रकृत वीर, सहिष्णु, संयमी और स्वाभाविक योद्धा थे। वे दिल्ली के प्रबल प्रतापी मुग़ल-तख़्त के सम्मुख मित्र और शत्रु दोनों ही रूपों में अलौकिक बने रहे। जहाँ मुग़लों के इतिहास में सत्तावन के भाग्यहीन दिनों में मुग़ल-शाहज़ादों ने अङ्गरेज़ों के गोइन्दे बन कर शाही ख़ानदानों को मिट्टी में मिलवाया, जहाँ बङ्गाल के नवाबों का जानदार घराना घर के कुत्तों और गधों की नमकहरामी से नष्ट हुआ, वहाँ इन वीर-राजपूतों का गत १५ सौ वर्षों के भारतीय राजतन्त्र में नमकहरामी और विश्वासघात से रहित, प्रकृत वीरता का जो निर्मल जातीय चरित्र मिलता है, वह राजनीति के पण्डितों के लिए आश्चर्य का विषय है। यही मारवाड़ आज भी इस बात पर गर्व कर सकता है कि पर्दे में रहने वाली महिलाओं ने जातीय उत्कर्ष में अपना स्थान पृथ्वी भर में सर्वोत्तम बनाया था। जिनकी वीरता, त्याग, तेज और उत्सर्ग की गाथाएँ ऐसी भारी और अक्षय ऐतिहासिक वस्तु हैं, जिन पर किसी भी देश की स्त्री-जाति गर्व कर सकती है।

परन्तु वे मृत्यु के व्यवसायी अपने पीछे आज कैसी सन्तान छोड़ गए हैं, यह बात आँख वाले ही जान सकते हैं। निकट-भविष्य में जो क्रान्तिवाद की भयानक आँधी आ रही है, हमें भय है कि वह साम्राज्यवाद के साथ ही इस कलुषित राजवंश को विध्वंस करेगी। गौरव गँवा कर जीने की अपेक्षा इस तरह नष्ट होना तो बहुत सुन्दर बात है। परन्तु वह वीरता, जिसकी अमर-कथा अब भी भारत के भाग्यहीन सिर को ऊँचा करती है, क्या मूल तक नष्ट हो जायगी? ऐसा तो पृथ्वी-तल के इतिहास में हुआ ही नहीं। यूरोप की क्रान्तियों ने राजकुमारों को विध्वंस कर दिया। नेपोलियन बोनापार्ट के प्रतापी जनरलों के पोते आज पैरिस में बैरिस्टर बन गए हैं, महासमर के बादशाह और शाहज़ादे आज व्यापार कर रहे हैं;

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

परन्तु प्रश्न तो यह है कि क्या यूरोप का युद्ध-जीवन नष्ट हो गया? यूरोप की रक्त-पिपासा क्या थम गई? नहीं।

यह तो जातियों का स्वभाव है। सात्विक क्रोध प्रत्येक वीर पुरुष की भृकुटी में सजने योग्य वस्तु है। वेद में लिखा है—"मन्युरसि मन्युम्मयी धेहि" अर्थात्—'हे परमेश्वर आप साक्षात् क्रोध हैं—ज़रा सा क्रोध मुझे भी दीजिए।' यह क्रोध मनुष्य में तब तक बना ही रहेगा, जब तक कि वह सर्वथा मनुष्यत्व से पतित न हो जाय।

आज मारवाड़ के वे असंख्य ग़रीब-अमीर परिवार, जिन्होंने अपने इन नेताओं की अधीनता में पीढ़ियों तक रक्त की होली खेली थी, आज बम्बई, कलकत्ता, कराची और समस्त एशिया-खण्ड के छोटे-बड़े स्थानों में पेट की चिन्ता में बिखर गए हैं! धनपतियों ने वहाँ ऐश्वर्य के सामान जुटा लिए हैं, शेष भीख माँगते, ख़िद-मतगुज़ारी करते और पापी पेट की ज्वाला बुझाते फिरते हैं! मारवाड़ के कुम्हार अपना शुद्ध व्यवसाय छोड़ कर १५-२० रु० में जूठे बर्तन माँजने की नौकरी करते फिरते हैं। मारवाड़ के बनियों के बेटे छोटी-छोटी मुनीमी, गुमाश्त-गीरी करने को लम्बी-लम्बी यात्राएँ निरन्तर करते रहते हैं और जीवन भर स्त्री-बच्चों से दूर रहते हैं! बम्बई-कल-कत्ते जैसे शहरों में इन सब लोगों को सूअर और कुत्तों के रहने योग्य मकान मिलते हैं और जानवर के समान कदन्न खाने को मिलता है। तिस पर गर्मी, सूज़ाक, क्षय, क्षीणता की बीमारी पल्ले पड़ती है। साल में १००-२०० रुपए कठिनाई से बचाते हैं, उसे लेकर देश जाते और दो महीने में उसे फूँक-फाँक कर हाथ हिलाते फिर वहीं भाग जाते हैं, मानो मातृ-भूमि उनके लिए तत्ता तवा है। वह मातृ-भूमि, जिसके लिए मारवाड़ के पूर्वजों ने सिर कटाए, स्त्रियों को जीते जलाया और जिसे त्यागना मृत्यु से बढ़ कर कष्टकर था! इस स्थल पर बीकानेर के महाराज रायसिंह-सम्बन्धी एक घटना हमें स्मरण आती है—एक बार बादशाह के आदेशानुसार उन्हें दक्षिण में युद्ध के लिए जाना पड़ा था। वहाँ जङ्गल में कहीं उन्हें फोग का पौदा दीख पड़ा। यह पौदा मारवाड़ में बहुत होता है, झट घोड़े से उतर पड़े और उससे लिपट कर रोने लगे। रोते-रोते आपने कहा :—

तू सैं देशी रूखड़ा, म्हैं परदेशी लोग।
म्हाँ ने अकबर तेड़ियाँ, तू क्यों आयो फोग॥

"प्यारे फोग! तू तो मेरे देश का पौधा है, यहाँ तो हम परदेशी हैं? मुझे तो अकबर की आज्ञा से लाचार यहाँ आना पड़ा है—तू यहाँ कैसे आया?" मातृ-भूमि की इस भक्ति का क्या मूल्य लगाया जाय? तभी तो प्राण देना उस काल के पुरुषों के लिए कठिन न था!

परन्तु ग़रीब मारवाड़ के असंख्य गृहस्थ कर भी क्या सकते हैं। देश छोड़ कर दूर-दूर नगरों में नारकीय जीवन व्यतीत करने को छोड़, उनके लिए चारा ही क्या है? जब उनके अधीश्वर, जिनके पूर्वजों ने प्राणों की शतरञ्ज खेली थी, आज वेश्याओं के घर शराब और पाप की घूँट पी रहे हैं। जब ग्रीष्म की प्रचण्ड दुपहरी में घोड़े की पीठ पर लोहा लेने वालों के वंशधर अपनी निरीह अधम प्रजा को लूओं में झुलसती छोड़ शिमले की ठण्डी हवा के झोंके खाकर अध-नङ्गी मिसों के साथ थिरक-थिरक नाच कर जीवन धन्य कर रहे हैं—तब? उनकी प्रजा, जिसके उत्तरदायित्व का उन्हें ध्यान ही नहीं—परवा भी नहीं, यदि पतित और दुखी न बने तो क्या हो?

यह सब आदर्शों के नष्ट हो जाने का कारण है। आज ऐसे उच्च आदर्शों और प्रतिष्ठित गौरव से पतित होकर मारवाड़ी-जाति ऊपर से नीचे तक जो नष्ट हो रही है, उसका मूल कारण उसका साहित्य है! हम यहाँ पर मारवाड़ का कुछ वह साहित्य पेश करते हैं, जिसने मारवाड़ की इज़्ज़त को क़ायम रक्खा था।

प्रसिद्ध घटना है कि महाराणा प्रताप एक बार भूख से रोती हुई राजकुमारी को देख कर मर्माहत हो गए और बादशाह से सन्धि का प्रस्ताव किया। उसमें उन्होंने बादशाह को अपना अभिमानी शब्द 'तुर्क' न लिख कर 'बादशाह' लिखा। इस पर अकबर ने बीकानेर-नरेश पृथ्वीराज से कहा कि अब तो प्रताप हमें बादशाह कहता है और सन्धि-पत्र की चर्चा की। इस पर सन्देह प्रकट करने पृथ्वीराज ने महाराणा को इस विषय में पत्र लिखने की आज्ञा ले ली। पत्र में आपने दो दोहे लिखे, वे इस प्रकार हैं :—

पातल जो पतशाह, बोले मुख हूँ ता बपण।
मिहिर पछिम दिस माँह, ऊगे कासप राव उत॥

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

सुप्रसिद्ध समाज-सेवी तथा 'सात्विक जीवन' जैसी, दर्शन-शास्त्र की उपयोगी पुस्तक के निर्माता

ऋषिवर रामगोपाल जी मोहता

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

चाँद

की

ग्राहकता स्वीकार करना

सद्विचारों

को आमन्त्रित करना है।

चाँद

का

इष्ट-मित्रों में अथवा सखी-सहेलियों में

प्रचार करना

उन्हें जीवन दान करना है।

?

यदि आप इसके ग्राहक नहीं हैं तो आप इसे हमारा निमन्त्रण समझें। आज 'चाँद' की १५,००० प्रतियों के पढ़ने वाले लाखों व्यक्ति मूर्ख नहीं हैं!! 'चाँद' का प्रचार आज भारत की समस्त पत्रिकाओं की संयुक्त-संख्या से कई गुना अधिक है—क्या यह उसकी सफलता का यथेष्ट प्रमाण नहीं है?

?

चाँद

ही समस्त भारत में ऐसा

प्रभावशाली

पत्र समझा जाता है, जिसने जीवन के प्रथम दिवस से क्रान्ति की उपासना की है।

चाँद

का

एक मात्र उद्देश्य सेवा, साधना और

बलिदान

की सजीव भावनाओं का प्रसार करना है।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

पटकू मूँछा पाण, के पटकूँ निज तन करद।
दीजे लिख दीवाण, इण दो महली बात इक ॥

अर्थात्—"आपके मुख से 'बादशाह' शब्द निकलना उतना ही असम्भव है, जितना सूर्य का पच्छिम में उगना। हे महाराणा! कृपा कर लिख कर भेजो कि मैं मूँछों पर ताव दूँ या छाती कूटूँ?" महाराणा का क्षण भर को निस्तेज हुआ शौर्य इतने ही से जाग्रत हो गया। उन्होंने लिख भेजा :—

तुरक कहासी मुख पतौ, इण तन सूँ इकलिङ्ग।
ऊगे जाँही ऊगसी, प्राची बीच पतङ्ग ॥
खुसी हूँत पीथल कमध, पटको मूँछा पाण।
पछतण है जैते पतौ, कलमा सिर के बाण ॥
साँग मूँड सहसी सको, समजस जहर सवाद।
भड़ पीथल जीतो भलाँ, बैण तुरक सूँ वाद ॥

अर्थात्—"श्रीएकलिङ्ग (इष्टदेव) मेरे मुख से तो 'तुरक' शब्द ही कहलावेंगे। सूर्य जहाँ उदय होता है वहीं पूर्व में उगेगा। हे वीर राठौर! जब तक प्रताप की तलवार यवनों के सिर पर मँडरा रही है, तब तक तुम ख़ुशी से अपनी मूँछों को ताव दो। प्रताप शस्त्र का घाव खाएगा, पर शत्रु का यश न सुनेगा। पृथ्वीराज, तुर्क के विवाद में तुम्हारी जय हो!" कितना ज़बरदस्त वाक्य है!

प्रताप के विषय में एक चारण-कवि मारवाड़ की स्त्री-जाति को सन्देश देता है :—

माई एहा पूत जण, जेहा राण प्रताप।
अकबर सूतो औंध के, जाण सिराणें साँप ॥

अर्थात्—"अरी माताओ! ऐसा पूत जनो, जैसा प्रताप है। जिसके नाम से सम्राट् अकबर सोता हुआ चमक उठता है, मानो सिरहाने साँप आ गया हो।"

इस महावीर की मृत्यु पर एक कवि ने लिखा था :—

अस लेगो अण दाग़, पाघ लेगो अण दागी।
गैरा आड़ा गबड़ाय, जिको बहतो धुर बामी ॥
नव रोजे नह गयो, न गौ आतसाँ नवल्ली।
न गौ झरोखाँ हठे, जेठ दुनियाण दहल्ली ॥
गहलौत-राण जीती गयो, दसण मूँद रसना डसी।
नीसास मूँक भरिया नयन, तो मृतशाह प्रताप सी ॥

अर्थात्—"हे गहलोत राणा! न तो तेरा घोड़ा दाग़ा गया, न तेरी पगड़ी झुकी, तैने बाएँ कन्धे से राज्य के धुरे को वहन किया। न तू नौरोज़ में गया, न हरम में, न झरोखों के नीचे। तेरा सिक्का दुनिया में बैठ गया, तू विजयी हुआ। तभी तो तेरी मृत्यु का सम्वाद पाकर बादशाह ने आँसू टपकाए, दाँतों से जीभ काटी और सिसकारी भरी!!!"

अब एक गीत सुनिए, जो चारण द्वारिकादास का बनाया है। इस गीत में सेना का रमणी से रूपक बाँधा गया है। हम गीत का मर्म ही विस्तार-भय से यहाँ देते हैं :—

"सबल और सुघर सेना रूपी यह सहेली कैसी प्यारी है, जो वर को चाहती है। इसने चार रङ्गों की (जिरह-बख़्तर की) चोली पहन रक्खी है। महाराज अभयसिंह इस पर रीझ गए हैं। इसने छत्तीसों (शस्त्रों) से शृङ्गार किया है। टोप ही इस नायिका का घूँघट है, इस यवन-नायिका पर महाराज मुग्ध हैं। और इसके लोभ से (रण में) उसे कण-कण कर दिया है। पाखर ही नूपुर है, जिसे बजाती वह नृत्य करती है। सरबलन्द (अहमदाबाद का सूबेदार) की इस सङ्गिनी को ख़ूब ही छिन्न-भिन्न किया गया है। यह गजगामिनी सब कुछ लुटवा कर लौट रही है.....!"

* * *

मारवाड़ के ईश्वरदास जी मायल एक बार गायों की रक्षा करते हुए युद्ध में काम आए थे, उनकी वीरता का वर्णन एक कवि इस प्रकार करता है :—

माँटी पणो जिसो जाणता मोहिल,
जालम साय बहताँ जड़ो।
डारण आण ऊभो देद-वत,
इशरीयो सरदाराँ अड़ो ॥ १ ॥
ठाहर पग माँडो ठकराला,
हूँ आयो सुण बाहर हको।
मो ऊभा अतरी छै मालम,
सालम धन ले जाय न सको ॥ २ ॥
मुजरो छै पारख मरदा रीं
बिखमी ऊत खन्न-बाट बिसेकी।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

आवो खाग झटकाँ ईसर सुँ ।
दोय-दोय वट का देखो ॥ ३ ॥
धड़ लड़ियो-भिड़ियो खग धाराँ ।
चित्त हंस जाय विमाणाँ चढ़ियो ।
सारे साथ कियो मिल सुर जो,
पुरजो-पुरजो होय पड़ि के ॥ ४ ॥
पडियो पछाँ लिए धन पेलाँ ।
ऊमाँ थकाँ न दीदी एक ।
चव ती खुँरो धेनु घिर चाली ।
टूक-टूक ऊपर पग टेक ॥ ५ ॥

१—जैसा कि मोयलों के विषय में प्रसिद्ध है—ईश्वरदास वैसा ही योद्धा और रास्ता चलने वालों का सहायक है। यह देश का बेटा जोरावर ईश्वरदास आ खड़ा हुआ है। हे सरदारो! अब इससे लड़ो।

२—हे ठाकुरो, बाहर का हाँका सुन कर मैं आया हूँ। अब आप अपनी जगह पर खड़े रहो। मेरे खड़े रहते सालम की गायों को आप ले जा नहीं सकते।

३—आपको मुजरा (प्रणाम) करता हूँ। मर्दों की परीक्षा बड़ी टेढ़ी है। यदि राजपूती है तो आओ, ईश्वरदास की तलवार के झटके लो और दो-दो टुकड़े होते देखो।

४—रण में धड़ लड़ा और खड्ग-धारा से जुटा, मन और जीव विमान में जा चढ़े। सब सङ्घ ने कहा—ईश्वरदास टुकड़े-टुकड़े होकर गिरा और देवताओं में जा मिला।

५—वह पीछे गिरा, पहले गाएँ छीन लीं। एक भी नहीं जाने दी। वे उसके शरीर के टुकड़ों पर पैर रखतीं और खुरों को ख़ून में टपकाती थीं।

* * *

महाराणा साँगा और बाबर में जो युद्ध हुआ था, उसमें वीरमदेव साँगा की सहायता को गए थे। उस युद्ध में मेड़तिया रत्नसिंह और रायपाल मारे गए थे। उसका एक काव्य सुनिए :—

विहँसी बिड़देत कमँध अतली बल,
लहो छत्तीसाँ भुजाँ बल लेव,
राजा रावल राण मुरड़ताँ,
दोयण हट किया वीरमदेव ॥ १ ॥
पत मेड़ तो समर पत साहाँ,
अरियाँ मुँह मोड़ताँ उखेद
वीरमदेव आवताँ वाँसे ।
उमरावाँ पावी उम्मेद ॥ २ ॥
द्राटक धर खाटक दूदावत ।
धड़च मुग़ल मार खमधार ।
दश शंसाँ नोशंस दुसङ्गल
वीस शंस हुवो तिणवार ॥ ३ ॥
जोधा हरी जोधरिण जूटो,
जवानाँ ऊबल तो जमजाल ।
पीले खाल हूत पालट ताँ,
राव राठौड़ थियो रिछपाल
खन रायमल वन्धवर है रिण,
समवड़ भूप दाख्यो ओ शाप ।
साँगो राण कुशल घर आवे,
योह वीर मदे तणो प्रताप ॥

१—जहाँ विरद धारण करने वाले अतुल्य राठोड़ों का विध्वंस हुआ, जहाँ छत्तीस राजवंश के भुजबल का गर्व खर्व किया गया—जहाँ राजा रावल और राणा पीछे हटे, वहाँ वीरमदेव ने शत्रुओं को रोका।

२—शादी के युद्ध में शत्रुओं का मद भञ्जन करने वाला मेड़ते का वीरमदेव है। उसके आते ही उमरावों को आशा बँध गई।

३—दूध का पुत्र वीरमदेव शत्रु का विजेता, भूमि का विजेता, शत्रु को मारने वाला, सीसोदिया तथा राठौड़ों बीस सहंसा हुआ।

४—दूदावत रत्नसिंह और रामपाल दोनों खेत रहे। साँगा राणा कुशलता से घर आया। यह वीरमदेव का प्रताप है।

* * *

अकबर ने जब चित्तौर पर चढ़ाई की, तब महाराणा उदयसिंह तो गोगूँदा गाँव में थे, क़िले की रक्षा का भार राठौड़ जयमल मेड़तिया के ऊपर था। वही सेना का सेनापति था। अकबर की गोली खाकर वह मरा, तब चित्तौड़ फ़तह हुआ। इस सम्बन्ध का एक काव्य सुनिए :—

ध्वै राव जैमल चीतोड़ मत चल चालै ।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

हेड़ हूँ अरी दलन दूँ हाथै।
ताहरै कमल पग चढ़ै नह ताइयाँ,
माहरै कमल जे खराँ माथै ॥ १ ॥
धड़क मत चत्रगढ़ जोधहर धीर पै।
गूँड गोरी दलाँ करूँ गज-गाह।
भुजारूँ मूझ जुध कमल कमलाँ मिलै।
पछै तो कमल पग दिए पतसाह ॥ २ ॥

१—राव जयमल कहते हैं—हे चित्तौड़! चलायमान् मत हो। मैं तुझे शत्रु के हाथ न दूँगा, उसे मार भगाऊँगा। जब तक मेरे कन्धे पर मस्तक है, शत्रु तुझ पर पैर न रख सकेंगे।

२—मैं जोधा का वंशज हूँ। तू दहले मत, मैं मुसलमानों की सेना का विध्वंस करूँगा। पहले मेरा मस्तक कट-कट कर महादेव की रुण्डमाल में मिलेगा, तब बादशाह तुझ पर पैर देगा।

* * *

सिंह के समान पराक्रमी जयमल सहस्रों योद्धाओं की इच्छा पूर्ण करके शत्रु को छका कर मरा। तब क़िला बादशाह के हाथों आया।

* * *

बादशाह औरङ्गज़ेब की आज्ञा से राठौड़ महाराज जसवन्तसिंह जी जब दक्षिण विजय करने चले तब चारण ने कहा था :—

दिलीनाथ अवरङ्ग करहूत बीड़ो दियौ,
विदारा वाजिया सुसुर वाजा।
दिखवणी मुहम सीलौ हुए दिवाकर।
रोस छायौ दिखण मुहक राजा।

"बादशाह ने महाराज को अपने हाथ से पान का बीड़ा देकर गाजे-बाजे से बिदा किया। दक्षिण की मुहिम में सूरज भी शीतल हो जाता है* परन्तु महाराज (क्रोध से) और भी तप गए।"

* * *

अब हम मारवाड़ के वर्तमान काव्य और कवि-भावनाओं को पेश करते हैं, पाठक धैर्य से सुनें।

मारवाड़ की यह प्रसिद्ध कहावत है कि 'बड़ी बहू बड़े भाग, छोटो दूल्हो सदा सुहाग' अब इस बड़े भाग्य का एक रूपक भी सुनिए। एक छोटी सी पुस्तक किसी झालीराम नामक व्यक्ति की रचना है—नाम है "ख्याल छोटे कन्थ को।" इस पुस्तक को प्रकाशित करने का पुण्य जयपुर के त्रिपौलिया बाज़ार के बुकसेलर कन्हैयालाल ने कमाया है। इसका मूल्य दो आना है।

अब सुनिए पुस्तक में वर्णित कथा का हाल—स्त्री युवती है और पति बालक है। स्त्री को यौवन, अशिक्षा और सोहबत—सबने मिल कर कामान्ध कर दिया है। एक दिन उसने पतिराज को पकड़ लिया और कहा :—

भँवर जी ताबेदार थारी।
मनस्या पूरन करो हमारी।
मैं हूँ ताबेदार तिहारी सुन सासु का जाया।
आवो नाहीं पास मेरे थाने किन सौकन भरमाया।
लाग्यो दाव आज मेरो इब करस्यूँ मन का चाया।
करस्यूँ मन का चाया, सदा रङ्ग माणस्याँ।
मेरी सेज सुरकिया चतुर थाने जानस्याँ।

"हे प्यारे! मैं तुम्हारी ताबेदार हूँ। हमारी इच्छा पूर्ण करो। हे मेरी सास के पुत्र! सुनो तो! तुम मेरे पास भी नहीं फटकते। तुम्हें किस सौत ने बहकाया है? आज तो मेरा दाव लग ही गया है, अब तो मनचीती करूँगी। ज़रूर करूँगी। रँगरेलियाँ खेलूँगी। मेरी सेज पर.....तब तुम्हें चतुर समझूँगी।"

अब पति-श्रेष्ठ का उत्तर सुनिए :—

चाची देखे खड़ी म्हारी।
डुपटो छोड़ जाण दे री।
मुखड़ो खोल खड़ी आँगन में ज़रा नहीं सरमावे।
होय रही जोबन में अन्धी कोई नजर नहीं आवे।
धीरे बोल सुणें घर का तूँ मत ना देर लगावे।

"अरी चाची देख रही है, डुपट्टा छोड़, जाने दे। आँगन में मुँह खोले खड़ी है, तुझे शरम नहीं आती? ऐसी जोबन में अन्धी हो रही है कि कुछ भी नहीं दीखता। अरी धीरे बोल, घर के लोग सुन रहे हैं। जाने दे, मुझे देर हो रही है।"

धर्मपत्नी की तक़रीर सुनिए :—

* दक्षिणायन में सूर्य शीतल हो जाता है।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

चाची सुणों तुम्हारी म्हाला दो-दो दीपक जोवे।
सज सिनगार सेज में पीव सङ्ग बाँहा घाल कर सोवे।
जोबन बीत्यो जाय हमारो मन भीतर स्यूँ रोवे।
... ...
रात्युँ तारा गिणू पिया जी म्हेल मैं।

"सुनो जी, तुम्हारी चाची दो-दो दीए जलाती है, और श्रृङ्गार करके पति के सङ्ग.....। हमारा तो जोबन ही बीता जा रहा है और मेरा मन भीतर से रो रहा है। .....मैं रात भर तारे गिनती हुई पड़ी रहती हूँ।"

पति जी फ़र्माते हैं :—

पाके बिना आम सुण ह्वाली चुसणे में नहीं आवे।
चातुर मजा पका कर ले सुण मूरख तोड़ गँवावे।
सारी कसर काढ़ दूँगा तूँ क्यूँ इतनी घबरावे।
... ...
लाय लग्या सुन कुआ खूदता है नहीं।

"अरी बावली! बिना पके आम थोड़े ही चूसा जाता है। चतुर लोग उसे पका कर खाते हैं और मूरख कच्चा ही तोड़ डालते हैं। घबरावे मत, सारी कसर निकाल दूँगा।.....कहीं आग लगने पर तत्काल ही कुआँ थोड़े ही खोदा जाता है।"

पत्नी जी की दलील सुनिए :—

पाके आम पाल में दीयाँ या सोचो मन माँय।
सोच बिना सङ्ग बालम तुम हो समझण के नाय।
हो तैयार मरद सच मानो पड़ा नार की छाय।
... ...
सङ्ग पोड़ पिया सेजा में कैसी भार हो।

"अजी सोचो तो सही, बिना पाल में दिए कहीं आम पकता है? तुममें कब समझ आवेगी। सच मानो, स्त्री की छाया पड़ने ही से मर्द तैयार होता है.....हे प्यारे! सेज पर.....देखो कैसी बहार आती है।"

अस्तु, सब युक्तियाँ विफल हुईं। अभागिनी मदमाती को छोड़ कर बाल-बलम दूकान को भाग गए। अब पड़ोसिन आई। उससे बाल-पति की बातचीत चली। ज़रा उसकी बानगी देखिए :—

कामदेव कोप्यो काया बिच दीनी आग लगाय।
फाटे बदन मरद बिन मेरो नैना नीर समाय।
... ...
बिन खेवटियाँ अधबीच भूले नाव ज्यू।
... ...
जोड़ी को कोई यार मिला दे, मैं समझाऊँ तोय।
... ...
मैं ताबेदार थारी जतन कोई कीजिए।

"शरीर में कामदेव कुपित हो रहा है, उसने आग लगा दी है। मरद के बिना मेरा शरीर फटा जाता है। आँखों के आँसू तक जल गए। मैं बिना खेवट की नाव की तरह मँझधार में झूल रही हूँ। मेरी बात सुन, कोई बराबर की जोड़ी का यार मिला दे। चाहे जो भी यत्न कर—मैं तेरी ताबेदार होकर रहूँगी।"

पड़ोसिन की सिखावन सुनिए—तजुर्बे की कही है :—

जरा धीरज राखो होसी हुसियार थारो बालमो।
प्यारी समझ बूर का लाडू खाकर तू पिसतावे।
जोबन गयाँ यार छिटकावै ना कोई उमर निभावे।
.....मैं देस्यूँ समझाय थारे पीव कूँ।
कूँतण सी काया है तेरी रूप दियो करतार।
बड़े घराँ में जन्म तुम्हारो लीज्यो आप विचार॥
पर पुरुषा ने अदब दिखावै ओछे कुल की नार।
... ...
यारी करे खुवारी प्यारी सत जायाँ पत जाय।
लाख रुपए के माणसी सा कीमत घट जाय।

"थोड़ा धीरज धर, तेरा पति भी होशियार हो जायगा। समझ कर देख, बूर का लड्डू खाकर पछतावेगी। जोबन बीतने पर यार भाग जाता है, उम्र कोई नहीं निभाता। ..... मैं तेरे पति को समझा दूँगी। कुन्दन के समान तेरी काया है—कैसा रूप विधाता ने दिया है। फिर बड़े घर में जन्म दिया, इस बात को तो सोच? पर-पुरुष को ओछे कुल की स्त्रियाँ शरीर दिखाती हैं।.....यारी में ख़्वारी होती है, सत हारने से पत जाती है। और लाख रुपए की मनुष्य की क़ीमत उतर जाती है।"

बहूरानी फ़र्माती हैं :—

जोबन दिन घालै बालम नादान सङ्ग सोवे नहीं।
बालम कै व्यापो नहीं सुन ले कामदेव तन माँय।
कैसे समझायो समझे... ... ...।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

गोट जीमवा चाली

एड़ी म्हारी ऊजरी जी कई पञ्जो सटवा सूँट । ऐसी तो चालूँ घूमती जी कई रँडुआ छाती कूट ।

गूजरी गजरा मँगवा दो, नेवरी तोड़ा घड़वा दो, अरज करूँ । सिरदार भँवर म्हाने मोटर मँगवा दो ।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

अबलाओं पर अत्याचार

इस पुस्तक में भारतीय स्त्री-समाज का इतिहास बड़ी रोचक भाषा में लिखा गया है। इसके साथ स्त्री-जाति के महत्व, उससे होने वाले उपकार, जाग्रति एवं सुधार को बड़ी उत्तमता और विद्वत्ता से प्रदर्शित किया गया है। पुस्तक में वर्णित स्त्री-जाति की पहली अवस्था, उन्नति एवं जाग्रति को देख कर हृदय छटपटा उठता है और उस काल को पुनः देखने के लिए लालायित हो जाता है! इसमें वर्तमान स्त्री-समाज की करुणाजनक स्थिति का सच्चा और नग्न-चित्र चित्रित किया गया है। मू० २॥), स्थायी ग्राहकों से १॥।=)

विदूषक

नाम ही से पुस्तक का विषय इतना स्पष्ट है कि इसकी चर्चा करना व्यर्थ है। एक-एक चुटकुले पढ़िए और हँस-हँस कर दोहरे हो जाइए, इस बात की गारण्टी है। एक विशेषता इस पुस्तक में यह है कि सारे चुटकुले विनोद-पूर्ण और चुने हुए हैं। कोई भी चुटकुला पढ़ कर अगर दाँत न निकल पड़ें तो मूल्य वापस! मू० १), स्थायी ग्राहकों से ॥।)

मुग़ल दर्बार-रहस्य

उपन्यास

अमृत और विष

यह ऐतिहासिक उपन्यास मुग़ल-दर्बार-रहस्य के आधार पर लिखा गया है। यदि नूरजहाँ के शासन-काल के दाँव-पेच देखना हो; यदि देखना हो कि हिन्दुओं के ख़िलाफ़ मुसलमानों के शासन-काल में कैसे-कैसे भीषण षड्यन्त्र रचे जाते थे; यदि मुसलमान-बादशाहों की काम-पिपासा, उनकी प्रेम-लीला और विलासिता का नग्न-चित्र देखना हो तो इस महत्वपूर्ण ऐतिहासिक उपन्यास को अवश्य पढ़िए। बहादुर राजपूत-नवयुवकों की वीरता का भी आदर्श-नमूना आपको इसमें मिलेगा। जुलेख़ा नामधारिणी एक हिन्दू-महिला की वीरता, साहस और राजनीतिक दाँव-पेच की सत्य घटनाएँ पढ़कर आपको दाँतों तले उँगली दबानी पड़ेगी, उस समय का सारा इतिहास बाइस्कोप के तमाशे की तरह आपकी आँखों के सामने नाचने लगेगा। यह एक ऐतिहासिक महत्वपूर्ण ग्रन्थ है, जिसे एक मनोरञ्जक उपन्यास के आवरण में पढ़कर प्रत्येक स्त्री-पुरुष, बच्चा और बूढ़ा अपनी ज्ञान-वृद्धि कर सकता है। मूल्य केवल ५) रु०; स्थायी ग्राहकों के लिए ३॥।) मात्र!

☞ व्यवस्थापिका 'चाँद' कार्यालय; इलाहाबाद

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

जोबन बीत्यो जाय म्हारो ज्यों दरखत की छाँय।
तू कहनो मेरो मान जहर बिस खा मरूँ।

... ...

मैं बूढी हो जास्यूँ जद मेरो परण्यों होसी मुठ्यार।
पीछे नहीं सेज मैं सुनले सङ्ग सोवण की भार।
यूँही जोबन जाय म्हारो जीतब है धरकार।

... ...

ऐसो बिरछ कोई न देख्यों जिसके हवा न लागे।
डाही गई तोवी तू नित सोवे खसम के सागे।
सार काम वणवै तेरो मन भीतर स्यूँ जागे।
मन भीतर स्यूँ जाणें झूठा ज्ञान दे।
तू ल्या मद छकियो छैल पक्या फल खान दे।

"जोबन उमड़ रहा है—उस नादान के सङ्ग.....। उसके तो अङ्ग में कामदेव जमा ही नहीं। समझाए से समझेगा क्या? मेरा जोबन दरख़्त की छाँह के समान बीता जाता है। तू मेरा कहा कर, नहीं मैं विष खा लूँगी। जब मैं बूढ़ी हो जाऊँगी, तब मेरा ख़सम जवान होगा, तब सेजों पर.....क्या स्वाद मिलेगा? मेरा जोबन तो यों ही गया—मेरे जीवन को धिक्कार है। अरी! ऐसा कौन सा वृक्ष है जिसे हवा न लगी हो? तू भी तो बूढ़ी हो गई, पर नित्य ख़सम के साथ.....सब काम कराती है। तेरे मन में भी तो हूक उठती है। सब कुछ जानती है। मुझे क्यों झूठा ज्ञान देती है? तू तो एक छैल-छबीला ला दे और पका फल खाने दे।"

खूसट का जवाब सुनिए :—

इश्क रोग और खाँसी मद ये छिपता नहीं कोय।
सासु सुणें तुम्हारी निकमो मिले उलझो मोय।
... ...पड़ूँ ना बीच में।
जाण-बूझ कुण भाटो पटके कीच में।

"इश्क़, खाँसी और नशा छिपाए नहीं छिपता। तुम्हारी सास सुनेगी तो व्यर्थ में मुझे उलाहना मिलेगा। मैं बीच में नहीं पड़ती। जान-बूझ कर कौन कीच में पत्थर मारे!"

बहू जी ने तीर मारा :—

दावण जरद दुरगोटे को लम्पी बीच लगाऊँ।
कासी जी को सुरख ओढ़णो ताजा भाण उढाऊँ॥

... ...

कोई ल्या मद छकियो मिला सेज रँग मानस्यूँ।

"पीला लँहगा, दुहरा गोटा लगा कर और गोखरू टाँक कर तुझे दूँगी। और लाल बनारसी ओढ़ना मँगा कर उढ़ाऊँगी। तू किसी छबीले छैल को लाकर.....!"

कुटनी ने जवाब दिया :—

तेरी खातर छैल भँवर मैं घराँ बुलाय।
सायर सुघड़ बुद्धि को सागर देख खुशी हो जाय।
चौबारा में बात करो मैं दूँगी पिलँग बिछाय।

... ...

मैं दे पैरो देस्यूँ बैठी घर के बारणे।

"अच्छा तेरी ख़ातिर मुझे मञ्ज़ूर है। मैं ऐसे छैल को अपने घर बुला रक्खूँगी जो कवि, सुघड़ और बुद्धिमान् हो, देखते ही ख़ुश हो जायगी। चौबारे में मैं पलँग बिछा दूँगी और घर की दहलीज़ पर बैठ कर पहरा दूँगी।"

बहू कहती है :—

पिङ्गल कोक पढ्यो मद छकियो उत्तम कुल को होय।
बीस-तीस के बीच अवस्था रेवे लुगाई दोय।
करस्यूँ प्रीति डरूँ नहीं प्यारी होनी होय सो होय।
... ...किसी से ना डरूँ।
मैं मूरख नर की सेज भूल पग न धरूँ।

"काव्य और कोकशास्त्र का ज्ञाता उत्तम कुल का हो, बीस-तीस के बीच उम्र हो, दूसरी लुगाइयाँ.....। उससे प्रीति करूँगी, किसी से डरूँगी नहीं। पर मैं मूर्ख पुरुष की सेज पर भूल कर भी पैर नहीं रखने की।"

खूसट कहती है :—

ऐसो सायर एक नर घर में मेरे आवे।
चौदह विद्यानिधान नहीं पर तिरिया सूँ बतरावे।
ज्ञानवान धनवान अकलवर ना वह इश्क कमावे।

... ...

तेरी उसकी एक सरीसी शान है।

"ऐसा ही एक पट्ठा मेरे यहाँ आया करता है। वह चौदह विद्या का ज्ञाता है। पर-स्त्रियों पर आँख भी नहीं उठाता—ज्ञानी, धनी, बुद्धिमान् है—वह इश्क़ के फन्दे में भी नहीं फँसा है—तेरी उसकी एक सी रास है।"

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

मदमाती स्त्री की भयानक स्त्री-बुद्धि देखिए :—

या लेजा पोसाख हमारी जा उस दोसत पास।
मेरो नाम भूल उस आगे मत देई परकास।
बूझे तो कह देइ बिकाऊ या पोसाख।
या देखो पोसाख गरज हो लेण की।
है कँवराणी के मन में बिलकुल देण की।

"अच्छा मेरा यह घाघरा उस यार के पास लेजा। पर मेरा नाम भूल कर भी ज़ाहिर न करना। पूँछे तो कह देना यह घाघरा बिकाऊ है। लेने की ग़रज़ हो तो देख लो। कँवरानी ने दिल में इसे दे डालने की ठान ली है।"

घाघरा देख कर कोकशास्त्र के ज्ञाता छैल जी फ़र्माते हैं :—

पोसाख जनानी यह मस्तानी है किस नार की।
या पोसाख पहरने वाली नहीं सहर में नार।
सोला आँगल नेफो जिसमें नाड़ो जालीदार।

... ...

.....है किसको दामण नाँव बता उस नार को।

"यह घाघरा किस मस्तानी का है। इसे पहनने वाली स्त्री तो शहर में है नहीं। जिसमें सोलह अङ्गुल का नेफ़ा है.....उस स्त्री का नाम तो बता, जिसका यह दामन है।"

कुटनी कहती है :—

पोसाख बिकाऊ ताजा नहीं बारात किसी ने देख ल्यो।
कहना नहिं बात किस आगे सुणिए आप हुजूर।
बीकानेर स्यूँ आई सुन्दरी यौवन में भरपूर।
नाजुक बदन चम्पक बदनी मुख पर बरसे नूर।
.....या पहरन वाली छोटे कन्थ की नार है।
मरे घर पदमणी बैठी मतना देर लगावे।

... ...

माल अजूबा चालो मुफ्त दिरादूँ।

"अजी हुज़ूर! यह पोशाक बिल्कुल अछूती है। और बिकाऊ है। किसी से कहने की बात नहीं है। यह मदमाती सुन्दरी बीकानेर से आई है .....यह छोटे कन्थ की स्त्री है। चलो अब देर मत करो, यह मेरे घर बैठी है—चलो मिला दूँ। और यह अनोखा, अछूता माल मुफ़्त दिलवा दूँ।"

इसके आगे का वर्णन न करना ही उचित है। पुस्तक के भयानक विषैले प्रभाव को बुद्धिमान् उपरोक्त उद्धरणों से समझ लेंगे। पुस्तक-लेखक मर्मज्ञ और अनुभवी है—उसकी क़लम में प्रवाह है—यह मानना पड़ेगा पर यह प्रवाह कैसे उसकी लेखनी ने प्राप्त किया है? क्या थोथी कल्पना से? लेखक की यह हैसियत नहीं कि नसों को चुभित करने वाला भाव-प्रवाह कल्पना के उड़ान पर बहा सके। भाव और भाषा का ऐसा प्रवाह प्रवाह और बल एक ऐसे भयानक सत्य-रहस्य को प्रकट करता है, जिसे सुन-पढ़ कर उस समाज के प्रत्येक व्यक्ति को काँप जाना चाहिए, जिस समाज में यह पुस्तक अनगिनत स्त्रियाँ और युवक नित्य पढ़ते हैं, और लाखों की संख्या में इन नाशक और ग़ैरतहीन जीवनों को उत्पन्न करते हैं।

अब इससे भी अधिक भयानक—कमीनी और घिनौनी एक पुस्तक का परिचय लीजिए। इसका नाम है "काकी जेठूत का ख्याल"। प्रकाशक जयपुर का वही कन्हैयालाल बुकसेलर है। पुस्तक में काकी (चाची) और जेठ के पुत्र (भतीजे) के पाप की अपवित्र और कानों को असह्य कथा है। पुस्तक का प्रारम्भ इस प्रकार से है—

थारी लटक चाल पर वारी जी मारा साँमरिया जेठूत।

"मेरे सलोने भतीजे! तेरी बाँकी चाल पर मैं लोट पोट हूँ।"

भतीजा—

काकी बड़िया और भौजाई माय बराबर लागे।
तिरछा नैन चलावो थाँ तो देख्याँ काया जागे।

"काकी और भौजाई माता के समान होती हैं, पर तुम तो ऐसी तिरछी नज़र फेंकती हो कि देखते ही उत्तेजना हो जाती है।"

काकी—

थाँकी काया जागे तो म्हें हाजर ऊभी आय।
और साख सब झूठा जाणो दूध पावे सो ही माय।
लाज शरम सब छोड़ केस मारी तन की तपत बुझाय।

"अजी, तुम्हें उत्तेजना होती है तो मैं भी तो हाज़िर

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

खड़ी हूँ। और माँ तो वही है जो दूध पिलाती है। बाक़ी रिश्ते झूठे हैं। हया, लिहाज़ छोड़ कर मेरे तन की तपन बुझाओ।"

भतीजा—

तन की तपत बुझाऊँ कैसे सुण काकी मेरी बात।
ऐसा काम किया सुँ मारे परथम लाजे जात।
जीव धड़धड़िया रयोस मारो थर-थर काँपै गात।

"तन की तपन कैसे बुझाऊँ काकी जी! ऐसे काम करते पहले-पहल बड़ी ही शर्म मालूम देती है। दिल धड़कता है और शरीर काँपता है।"

काकी—

हाथ उठाव धरो छतियाँ पर मुख सूँ काटो गाल।
पाँव पकड़ ले चलूँ म्हारा भँवर पिलँग पर चाल।
कारज साराँ जीव कास थे खावो मोकला माल।

"हाथ उठा कर.....पर धरो, मुख से..... काटो। मेरे छैल चल, पलँग पर तो चल, तुझे पाँव पकड़ कर ले जाऊँगी। मेरी मनचीती कर दे, फिर ख़ूब माल खिलाऊँगी।"

भतीजा—

माल खवाया मोकलास थे कही काकी किण बात।
कितना यार किया थाँ काकी ओजु बुझी नहीं खाज।

"माल खिलाने की एक ही कही काकी जी! तुमने कितने ही तो यार किए, पर तुम्हारी.....नहीं मिटी!"

काकी—

म्हारी खाज बुझा जेठूता जरा सरम नहीं राखी।
और किसी सूँ प्रीत होवे तो परमेश्वर साखी।
तू छैलो जेठूत कहीजे मैं नाजुकड़ी काकी।

"मेरी.....बुझाने की बात कहते भतीजे जी तुम्हें लाज नहीं लगी। जो मैंने और किसी से प्रीति की हो तो ईश्वर ही साक्षी है। बस, तू छैल भतीजा और मैं नाज़ुकत की पुतली काकी।"

भतीजा—

किस होसी चौबटे सरे आप होवो बदनाम।
दा जी के मालम पड़सी म्हासूँ छटसी गाम।

"काकी! फ़जीता ज़रूर हो जायगा, दादा को मालूम पड़ गया तो मुझे गाँव छोड़ कर भागना पड़ेगा।"

काकी—

थासूँ गाम छड़ावन वारा नहीं शहर में कोय।
रात पड्याँ सेजाँ के माँही लिपट रहीजो सोय।
काको थारो जन्म राँडियो बात कहूँ थाँ आगे।
बारा बरस परण्या ने होगए वासूँ खाज नहीं भागे।

"तुझसे गाँव छुड़ाने वाला शहर में कौन है? बस रात होते ही पलँग पर आकर.....तेरा काका तो जन्म का हींजड़ा है—लो तुम्हारे सामने बात ही खोल दूँ। बारह बरस ब्याह को हो गए, उससे.....नहीं मिटती।"

भतीजा—

प्रीति करो तो सुनो काकी जी इतनो करो करार।
करना तो डरना नहीं सर है खाँडा की धार।
साँच कहो काकी जी थारे नहीं पेट में पाप।
लोग आय भरमासी थाने बदल जाओला आप।

"सुनो काकी जी, इस बात का वचन दो कि प्रीति करो तो फिरना नहीं, करना तो डरना नहीं। इस काम में सिर तलवार की धार पर रहता है। सच कहो—तुम्हारे पेट में पाप तो नहीं है। लोग तुम्हें बहकावेंगे, तुम बदल तो न जाओगी?"

काकी—

म्हें तो नहीं जेठूता बदलूँ म्हारी है एक बात।
थाँ के म्हाँ के बीच रामजी धरूँ हाथ पर हाथ।
परण्या ने तो लात मार दूँ मैं तिरिया की जात।

... ...

मुख पर बरसे नूर सवाया सजूँ फेर सिणगार।
अत्तर अङ्ग लगाय केस मैं कीनी सेज तैयार।
मैं हूँ थाँ की खीस थे पुरब जन्म भरथार।

"भतीजे! मेरी बात पत्थर की लकीर है—बदलेगी नहीं। मेरे तेरे बीच भगवान् हैं। मैं हाथ पर हाथ मारती हूँ। ख़सम को तो मैं लात मार देती हूँ—मैं तिरिया की जात हूँ। मेरे मुख पर नूर बरस रहा है। फिर मैं नए सिरे से सिङ्गार करूँगी। अङ्गों में इतर लगा कर

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

सेज तैयार करूँगी। तू मेरे पूर्व-जन्म का भरतार है और मैं तेरी स्त्री हूँ।"

लेखक कितना बेहया है—यह पाठक समझ गए होंगे। पर वह कितनी नीची और कमीनी भाषा आगे लिखता है—हम अत्यन्त दुःख से उनका नमूना आगे देते हैं। पुस्तक का कथानक ही काफ़ी पापपूर्ण और गन्दा है। पर लेखक की शैली के सामने वह कुछ नहीं। सुनिए, काकी कहती है :—

धीरे रँग माणों कोमल जीव है जेठूता म्हारो।
रँग तो माणया सेजा मायने सङ्का मत राखो।
एक अरज जेठूता थासूँ सुण सुगणी के पीव।
धीरे-धीरे माणजो सरे नाजुक मारो जीव।
मचका मारे मत कमर लचकावती।
बेदरदी थाँने जरा दया नहीं आवती।
काचू बाँदू कटकटीस ने छतियाँ बनी अनार।
सेजा माँणों सायवाँस मारे भर जोबन की बहार।

इन पंक्तियों को स्पष्ट न करना ही उचित है। सुयोग्य भतीजे के कुकर्म का फल आया—उसे देखकर आप फ़र्माते हैं :—

प्रीत छिपाई न छिपेस थारो ऊँचो आयो पेट।
ऊँचो आयो पेट के सेजाँ सोवसी।
थारी कमर तणों बन्देज कटीलो होवसी।
थारी छतियाँ ढीली होय के मेलाँ वेवसी।
भर जोबन की बहार फेर नहीं रेवसी।

"प्रीति छिपी न रही। तुम्हारा पेट तो ऊँचा बढ़ आया। अब कैसे सोओगी। तुम्हारी कमर तन गई, बन्द ढीला हो जायगा। तुम्हारी.....ढीली होकर लटक जाएँगी। जोबन की यह बहार फिर न रहेगी।"

काकी—

तुरत फुरत माजूफल दाबूँ दूणोरे बन्देज।
काठो होवे राम त्योस मारो सुई सरीको बेज।
... ...
मन में होय निसङ्क भँवर रँग माणजो।

"फ़ौरन माजूफल का प्रयोग कर लूँगी, दूना..... होगा। सुई के समान.....कठिन.....फिर निश्चिन्त होकर.....करना।"

इसके बाद पीहर जाकर प्रसव की तैयारी होती है। मारवाड़ में प्रथम प्रसव पीहर में करने की चाल है। भतीजे बिना इस नायिका को चैन नहीं आता और दाई से सब भेद बताती है। वह अतिशय नग्नभाषा प्रसव के बाद अपने गुप्ताङ्गों के शिथिल होने पर खेद भतीजे की विरक्तता का भय सा प्रकट करती है।

कमीनी दाई के वाक्य भी सुनने योग्य हैं :—

टाबर हुवो सवायो आसी सेजाँ माहिं सवाद।
... ...
टाबर हुयाँ बाद देवेलाँ माजूफल को पाटो।
फायो भर दारू को दाबूँ गाव मिलेगो थाँका।
काठो होवे रामत्योस जाणे अमर सुई को नाको।

"अरी, बच्चा होने पर तो सवाया स्वाद आता घबरावे मत, बालक होने के बाद माजूफल का पाटा दूँगी। और शराब का फ़ाया धर दूँगी। तुरत घाव जायगा, और.....सुई के नाके के समान....."

अब इससे भी अधिक अश्लील और फूहड़ भा दाई और कुलटा काकी का पढ़िए। अभी सौर समाप्त नहीं हुआ कि—

काकी—

दाई बुलावो जेठूत ने पड़दा के माँही।
वा बिन घड़ी न सुहावे मारो लहर-लहर जिव ज

"अरी दाई! ज़रा भतीजे को भीतर बुला दे। बिना घड़ी भर नहीं सुहाता—मेरे मन में उठती हैं।"

दाई—

जणती बगत काडात तुँतो सोवा तणीं तला
वे दिन आज भूलगी नाचण जरा सबूरी

"अरी नटनी! जनते समय तो तैंने ऐसा करने की क़समें खाई थीं। वह इतनी जल्दी भूल ज़रा तो सब्र कर।"

कुलटा—

किस विध रहे सबूरी दाई जोबन फोड़ा घाले
सुता बिना सहेज में मारे चसक पेट में चाले

"अरी सब्र कैसे हो? जोबन क्या टिकने दे .....बिना पेट में चसक उठ रही है।"

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

दाई—

चाले चसक पेट में नायण ले अजमाँ की धूणी।
काचो घाव मिल्यो बिन प्यारी खाज चालसी दूणी॥

"अरी तो नटनी! अजवायन की धूनी ले ले। कच्चा घाव बिना मिले.....।"

कुलटा—

दूणी खाज हमारे चाले नहीं मुश्किल है थाँने।
सोना तणों बाँकडो देऊँ यार बुलादे छाणे॥

"मेरे.....चलेगी तो तुझे क्या दुखेगा। चुपके से यार को बुला दे, तुझे सोने का बाँक दूँगी।"

दाई—

छाने प्रीत छिपे नहीं नायण आखर होय फजीत।
बड़ा घरों में आणों-जाणों मारी जाय परतीत॥

"अरी वेश्या! ऐसी बातें क्या छिपी रहती हैं? अन्त में फ़ज़ीता होता है—मेरा बड़े घरों में आना-जाना है, विश्वास उठ जायगा।"

अन्त में सौरि-गृह में भतीजे साहब पधारते हैं। चाची का प्रस्ताव सुन कर आप क्या सुभाषण करते हैं—पाठक, मन की घृणा रोक कर वह भी सुन लीजिए!

भतीजा—

जेजन जाणों सुन्दरी स मारो सेज रमणरो चाव।
टपक-टपक टोपी पड़ेस थारे अजुँ मिल्यो नहिं घाव॥

"सुन्दरी!.....का चाव तो मेरे भी मन में है। परन्तु तुम्हारा घाव तो पुरा ही नहीं, रक्त की बूँदें.....।"

कुलटा—

घाव मिल्यो हे सायवाँ स माने अणछेड़ी परमाण।
मन में मती अँदेशो राखो निसङ्क सेज रँग माण॥

"अरे साहब! घाव तो अछूती के समान हो गया है, मन में सन्देह मत करो—बेखटके.....।"

यह घृणित दृश्य यहीं से दूर होना ठीक है। इस पुस्तक का जो संस्करण हमारे सम्मुख है, वह २० हज़ार!! की संख्या में छपा है और आमतौर से इस पुस्तक का मारवाड़ी युवक-युवतियों में प्रचार है। हमने इस पुस्तक को बड़े चाव से गाते और चार दोस्तों को पढ़ कर सुनाते मारवाड़ी-युवकों को देखा है। पुस्तक के लेखक और प्रकाशक को इस गुनाह की क़ानूनन् और समाज द्वारा भी जो सज़ा मिलनी चाहिए, उस पर अभी विचार न करके, हम प्रथम की भाँति फिर इस तथ्य पर पहुँचते हैं कि यह गन्दी पुस्तक केवल कल्पना नहीं है। हम अगले नोट में बतलाएँगे कि ये गृह-व्यभिचार वास्तव में ऐसे ही अश्लील रूप में अधिकांश मारवाड़ी-परिवारों में अपरिमित संख्या में फैले हुए हैं और वहीं इसके कारणों पर भी प्रकाश डाला जायगा, अस्तु—

अब एक और पुस्तक की चर्चा सुनिए—यह भी जयपुर के एक बुकसेलर ने प्रकाशित की है, उसका नाम है ईसरलाल बुकसेलर। यह भी तिरपौलिया बाज़ार में है। पुस्तक का नाम है "दो गोरी का बालमा"। शायद सभ्य-जगत् तिरस्कार और क्रोधपूर्वक यह सुनेगा कि इस शिक्षा और पुनरुत्थान के युग में भी मारवाड़ के धनी-मानी और प्रसिद्ध व्यक्ति तक अनेक स्त्रियों को एक-साथ ब्याहते हैं। राजा लोग तो अनेक रानियाँ बिना लज्जित हुए रखते ही हैं। सर्व-साधारण में भी ऐसे लोगों की कमी नहीं! भारत के प्रख्यात धनी-मानी इन्दौर के एक सेठ ने पिछले दिनों ही एक पत्नी के रहते दूसरा विवाह किया था। इसलिए लेखक को लिखने का यह मसाला भी मिल गया। पाठक, इस ग्रन्थ-रत्न का भी मुलाहज़ा करके अपनी आँखें धन्य कीजिए!

एक पुरुष-पुङ्गव दो स्त्रियाँ ब्याह लाए हैं। वे अपने सुखमय जीवन का इस प्रकार वर्णन करते हैं :—

छैल छबीलो बालमा स दो गोरी का भरतार।
परणी लायो कामणी स मैं घणाँ रूप की नार।
ढोल्याँ ऊपर पौढ़ता स मैं दो गोरी के लार॥
एक तो पहले कामणीस मैं दूजी परण कर ल्याया।
नई नार के वास्ते मैं घणी लुटाई माया।
लाया चञ्चल कामणीस मैं साहूकार का जाया॥
पैली की तो दमड़ीस या दूजी चातुरङ्ग नार।
दिल में बसी खुशी है म्हारे देख-देख दीदार।
गादी तकिए सोवतास मैं खूब उड़ाऊँ बहार॥
एक तो फुलका पोवतीस रे दूजी करे पकवान।
हाजर तो एक रहे दूसरी थार परोसे आन।
बैठी गोद जिमावतीस वो तिरिया चतुर सुजान॥

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

तरह-तरह का भोजन लावे दूजी जल की झारी ।
पहली खूब करे मनवाराँ दूजी लागे प्यारी ।
एक तो पङ्खा ढोरती दूजी देवे पान-सुपारी ॥
एक तो सेज बिछावती स वा दूजी दीपक जोवे ।
खूब करें सिणगार सेज में अधर पलँग पर सोवे ।
सूरत गोरी देखनेस रे मारूँ का मन मोवे ॥
आजू-बाजू खड़ी कामनी रहे सेज के माई ।
मौज करूँ रङ्ग ढोल्याँ ऊपर सोच-फिकर ले नाई ।
टैल बन्दगी खूब करे है भला घराँ की जाई ॥
दोनों तिरिया देखने स म्हारो हरखे हिया अपार ।
खुशी बहुत है दिल के माँही सामल जो नर-नार ।
ढोल्याँ ऊपर पौढ़तास मैं दो गोरी के लार ।

* * *

यह अभागा पुरुष-पशु कितनी मोहक और उत्तेजक भाषा में मनुष्य के मन को विचलित करने के लिए दो स्त्रियों के सुख को वर्णन करता है। पाठक समझ सकते हैं कि युवकों का मन इन्हीं पंक्तियों से कितना चलायमान् हो सकता है और स्त्रियाँ अपने जन्मसिद्ध आत्म-तेज और आत्माधिकार के प्रति कितनी कच्ची बन सकती हैं। इसके बाद इस लेखक ने दोनों स्त्रियों की कलह सिर्फ़ पति के सङ्ग .....करने के लिए फूहड़ भाषा में दिखा कर पृष्ठ समाप्त किए हैं।

एक ऐसी ही पुस्तक "दस मासियाँ" नामक जयपुर के बुकसेलर ईसरलाल ने छपाई है। जिसमें एक भले घर की बहू, जिसका पति छोटी उम्र का है, पानी भरने जाती है और किसी यार को पक्का कर दर्द के बहाने वैद्य बना कर बुलाती है। ननद सब भेद जान कर भी दोनों के व्यभिचार का प्रबन्ध कर देती है।

पाठकों ने बहुधा प्रतिष्ठित घरों की मारवाड़ी-महिलाओं को सरे-बाज़ार आम रास्ते पर गाली या सीठने गाते देखा होगा। वे कैसी-कैसी गालियाँ गाती हैं, दो-चार नमूने सुनिए। ये गालियाँ ब्याह-शादियों के अवसर पर या समधी-समधिन आदि के मिलने पर गाई जाती हैं :—

नाथूराम जी वाली लाड़ली थारे टेक्यो छै ।
थाने ले गयो धोरा माय सगी जी थारे टेक्य छै ।
सेजा में लकड़ो छै ।
धोरो हो गयो साँकडो ये थारे टेक्यो छै ।
थाने ले गयो क्यारा माय सगी थारे टेक्यो छै ।
सेजा में लकड़ो टेक्यो छै
क्यारा-क्यारा लाल गए थारे टेक्या छै ।
थाने ले गया झरोखा माय सगी थारे टेक्यो छै ।
सेजा में सगी थारे टेक्यो छै
अजब झरोखा गिर पड्यो ये थारे टेक्यो छै ।
थारे ख्याल रयो कड़माय सगी थारे टेक्यो छै ।
सेजा में लकड़ो टेक्यो छै

* * *

'पीतम' सङ्ग सेजाँ खेलो ।
लाज सरम सब ऊँची मेलो, नाथूराम जी वाली है
नखराली तू छन्द गाली में छैली ।

* * *

गाल कचौरी ऊपर भोरी मुख में बीड़ा दे लो ।
मिस्सी काली होटा लाली, हिचकी आवो थे चूँस लो
नाजुक छाती जोबन माती घूमत हाथी अलबेला
आज महलाँ करस्याँ सहला ।

* * *

लाड़ली महलाँ मौज उड़ावे छै ।
ओहो रे अजब प्यारी हुस्न लुटावे छै ।
चन्द्र वदन सो मुखड़ो है, बिजली को सो टुकड़ो है
काणों तो घूघट काड़े.....।
झरोका में झोला देकर सेना में समझावे ।

* * *

थाने यार बुलावे छै ।
भाँगड़ली घुटवावे छै ।
भर-भर प्याला पावे छै ।
फूलाँ सेज बिछावे छै ।
... ...
अङ्ग के लिपटी आवे छै ।
ऊँची टाँग उठाके.....
आसन अलग जमावे छै ।
... ...
सिसकारी कर कर कर.....

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

नायण निचली हो गई छै।
मूडों ढाक कर सो गई छै।

* * *

कै तो नायण नीचे आओ।
नहीं तो यार ने महल बुलावो.....
जोबन गयो कोई ना आसी।
मोती सो पानी ढर जासी।
फिर नायणी मन में पछतासी।

... ...

भाँगड़ली रँग बूँटी छाणो।
पिलँग पर मौजा माँणो।

... ...

.....ने जल सूँ धोओ।
टाँग पसारो सीधा सोओ।

... ...

चड़र-चड़र चूमको मच के
उछल-उछल कर ऊँची उचके।
लचक-लचक कर कम्मर मचके
हाँफत जैसे लधौ मजूर।

... ...

अब तो धाप गई.....

* * *

थे तो पहरो जी नाथूराम जी का नखरो घाघरौ।
नौ गज को छै।
थारो घाघरो में दरजी को बोल्यो,
टँकी लगाऊँ, टुँकी लगाऊँ—करये मरवानी अधर
थारो घाघरो नौ गज को छै।
थारा घाघरा में सोनी को बोल्यो,
चोट लगाऊँ चोट लगाऊँ।
करये मरवानी अन्दर घलावणी।

* * *

आज करो आशिक सँग प्यार।
ठण्डो होय कलेजा नार।
नाथूराम जी वाली है नखराली
याराने झालो दे चाली।

पायल पग में करें पुकार।
फिरे रात को गलियाँ माँई।
याराँ सूँ मुहब्बत ठहराई।
नैणा सूँ मत मार निजार।
घर को खाँविद टिकट लगावे।
छैला ने घर माँय बुलावे।
नार रत्ती नहीं करे उधार। आज०

* * *

दान आप जोबन को देयो इस्यो।
काम सुकरत कर लेवो। ...

... ...

.....ऐसी दशा हो जासी थारी।
बुढ़ापा के माय खाल तूँ घणी कुटासी थे।
कह्या मान चेतन समझावे।
घड़ी-घड़ी क्यू नाड़ हिलावे।
कहे यार नारायण फेर।
काँई धान भरासी ये।

इतने नमूने काफ़ी हैं। इतना कह देना और आवश्यक है कि जयपुर के वही कन्हैयालाल जी इस क़िस्म की गालियों की भी कई पुस्तकें प्रकाशित कर चुके हैं।

* * *

एक और पुस्तक का मुलाहज़ा कीजिए। पुस्तक का नाम "छैला दिलजान" है और प्रकाशक जयपुर के वही ईसरलाल! इसमें एक स्त्री सज-धज कर जल भरने जाती है और किसी परदेशी को पीहर का व्यक्ति बता, घर लाकर व्यभिचार कराती है। भाषा का नमूना देख लीजिए :—

आई मैं नाजुक नखरादार जी जल भरण सागर पार।
मैं नाजुकड़ी कामणी सरे पाणी भरवा आई।
अणी पिणघट के ऊपर मैं साथणियाँ ने लाई।
सागर का मैं जल भरूँस काँई देखें लोग-लुगाई।

... ...

सास ननद को जोर जरा नहीं चाले म्हारे आगे।
प्रीतम म्हारो भोलो-भालो डर कर दूरो भागे

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

कयो नहिं मानूँ सुसरा को देवरिया नादान ।
म्हारे बोले सामनेस मैं तुरत पकड़ लूँ कान ।

* * *

अब कुछ ऐसे गीत और माँड, जो बहुत प्रसिद्ध हैं और आम तौर से समस्त मारवाड़ में गाए जाते हैं तथा पुस्तक रूप में बहुतायत से बिकते हैं—उनके नमूने पेश किए जाते हैं :—

अमलाँ * में रेन गँवाई ढोला, पिय दारुड़ी † ।
म्हारो जोबन झोला खाय, हठीलो बेगो आजो रे ।

... ...

फूल गुलाबी पोमचो पड्यो वीरँगी होय ।
मैं मेरी माके लाड़ली कद मुकलावो ‡ होय ।
जी उमराव थे तो लेवा वेग पधारो मेरी जान ॥
बैंगण तो काचा भला पाका भला अनार ।
प्रियतम तो पतला भला मोट जाट गँवार ।
जी उमराव थारी चाल पियारी लागे मेरी जान ॥
साजन खाई काकड़ी मैं खायो खरबूज ।
साजन राखी जाटणी मैं राख्यो रजपूत ।
जी उमराव थारी चलगत.....॥
आँगण पड़ियो काचरो लावण सुँ गुड़ जाय ।
बिना अकल को सायवो सेजाँ सु उठ जाय ।
जी उमराव चतुर हो थे क्यूँ मोये छिटकाई मेरी जान ॥
काची कली अनार की पाकण द्यो दिन चार ।
खाताँ लागे खाँड़सी अन्त पराई नार ।
ओजी सिरकार थे तो काच्या ने मत तोड़ो मेरी जान ॥
जैपुर के बाजार में पड़यो पेमली बोर ।
नीची होय उठावती गया कमर में जोर ।
ओ उमराव म्हारे रात्यूँ चसका चाले म्हारी जान ॥

* * *

ऊपर जो थोड़े से नमूने दिए गए हैं, इनकी कुछ हैसियत नहीं है। ऐसी गन्दी असंख्य छोटी-छोटी पुस्तकें प्रत्येक शहर में लाखों की संख्या में बिक रही हैं और बालक-जवान, स्त्री-पुरुष, युवक-युवतियाँ उन्हें बड़े चाव से पढ़ते हैं। इसका फल क्या होता है—यह प्रत्य है। मारवाड़ी-समाज के युवक-युवतियाँ घोर अन्धक में डूब रहे हैं। ऐसी धनी और सम्पन्न जाति इस प्रक बीसवीं शताब्दी के नैसर्गिक उत्थान से इतनी वञ्चि है कि देख कर आश्चर्य होता है। सुजन माता-पिता इ बात की बड़ी एहतियात रखते हैं कि उनके बच्चे औ गृहस्थ की स्त्रियाँ गन्दी सोहबतों से बचें। परन्तु उन शायद यह मालूम नहीं है कि ये छोटी-छोटी पुस्तकें एक एक वेश्या और एक-एक बदमाश की सोहबत से क नहीं। कितने युवक-युवतियाँ इन ज़हरीली पुस्तकों छाती से लगाए विष के घूँट पिया करते हैं—यह सोचना चाहिए।

गवर्नमेण्ट इन पुस्तकों को ज़ब्त करने और इन निर्ल प्रकाशकों को जेल भेजने की ज़रूरत नहीं समझती। उस समझ में तो वही साहित्य ज़ब्त होने के योग्य है, जि पढ़ कर मनुष्य वीर बनते हैं। पर जिस साहित्य को प कर जातियाँ लम्पट, कायर, कामुक, आवारा औ कुमार्गी बनती हैं—वह तो सरकार की दृष्टि में निकम्मे वस्तु हो ही नहीं सकता। कुछ यह बात नहीं है कि ऐसे साहित्य पर मुक़द्दमा चलाने के योग्य क़ानून नहीं। प क़ानून तो मतलब ही से चलाया जाता है! दिल्ली, कल कत्ता, बम्बई, कानपुर—भारत भर के चाहे भी जिस प्रान्त के बड़े-छोटे शहरों में बुकसेलरों की दूकानों की तलाशियाँ ली जायँ—मनों ऐसा साहित्य बरामद हो जायगा। मार वाड़ के धनी-मानी सेठ धर्मशालाएँ बनवाने, सदाव्रत बटवाने आदि-आदि कामों में पुण्य समझते हैं, पर ऐसे पाप की भूमि पुस्तकों को नष्ट करने की तरफ़ उनका ध्यान नहीं। इसका क्या अर्थ समझा जाय? क्या उन्हें मालूम है कि इन छोटी-छोटी किताबों का उनकी नस्ल पर क्या प्रभाव पड़ रहा है?

इसके लिए ज़रा उर्दू-साहित्य पर विचार करना चाहिए, जिसका जन्म और उत्थान मुग़लों के वैभव के साथ हुआ। धीरे-धीरे उर्दू-साहित्य शृङ्गार, उन्माद, मद और प्रेम का अथाह समुद्र बन गया। इसमें समस्त मुग़ल जाति, मुग़ल-साम्राज्य, मुग़ल-तख़्त, मुग़ल-राज्य-सत्ता मुग़ल-वंश; उनका यश, वैभव और अस्तित्व सब डूब गया!! वह उर्दू-साहित्य, जिसमें शराब, साक़ी और माशूक़ को छोड़ कर, कुछ भी नहीं रह गया था, मुग़ल

* अफ़ीम का नशा † शराब ‡ गौना ।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

चाँद

सेठ जी—सुण ऐ ! सुण ऐ !! म्हारी वीदणीं, अरी ओ मदनलाल री नई मा !!!
दुल्हन—बचाओ ! कोई बचाओ ; आ पापी म्हारी ईज्जत.....

जीमनवार

"घालूँ शा....."
"आगला तो उठवाद्यो....."

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

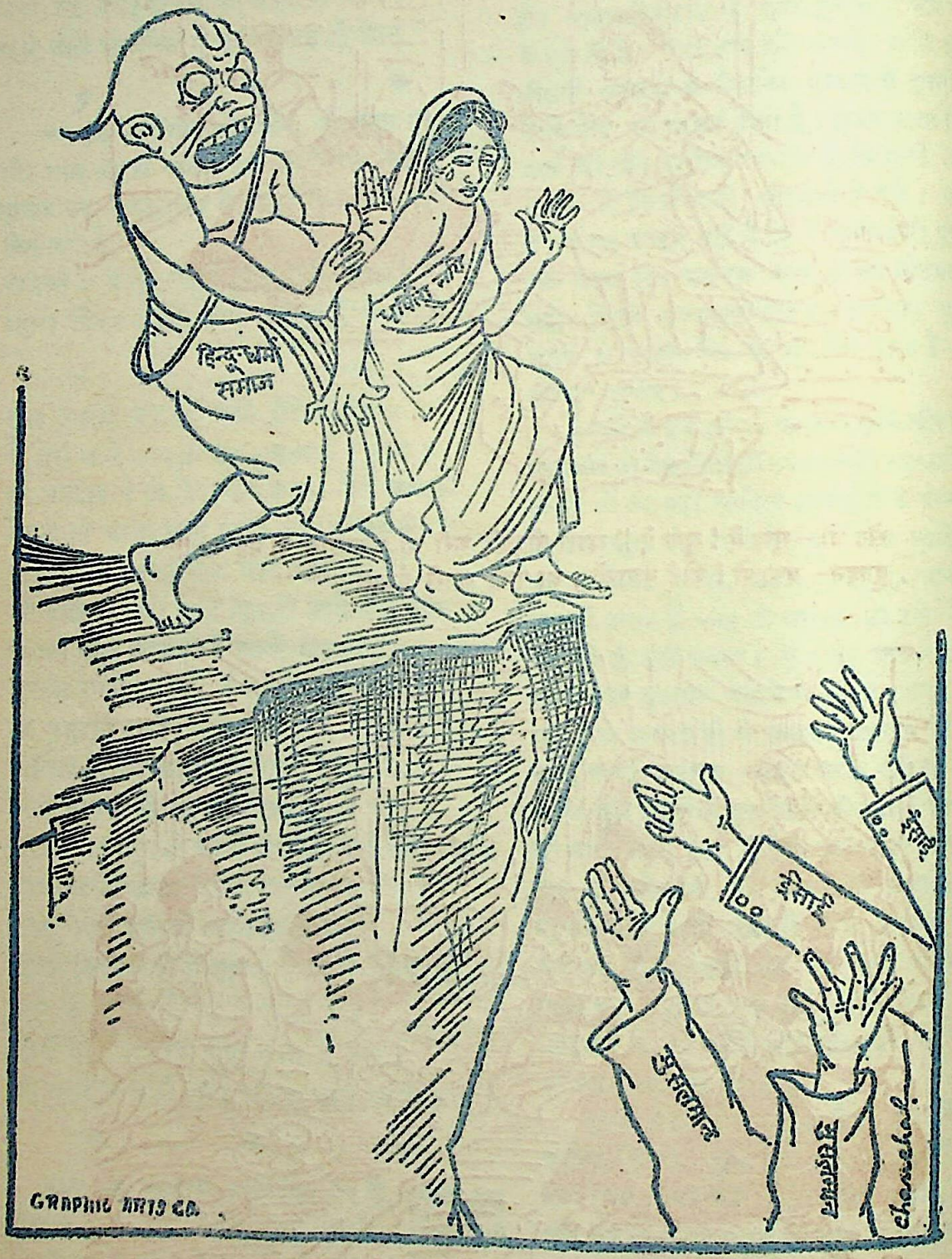

आप से गई जहान से गई !!

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

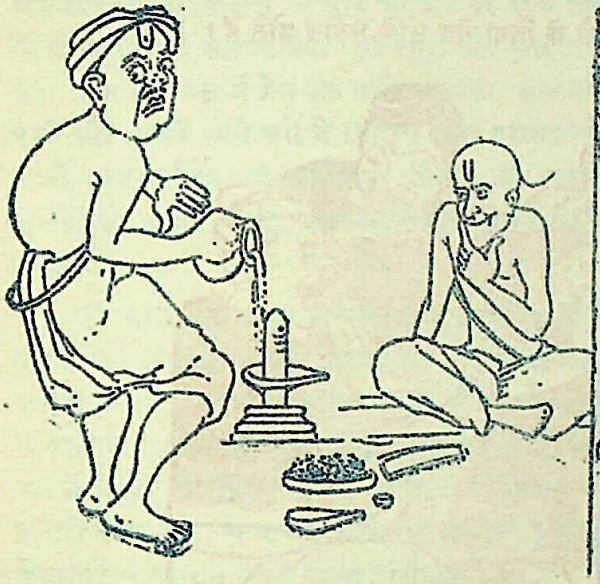

हर-हर महादेव !!

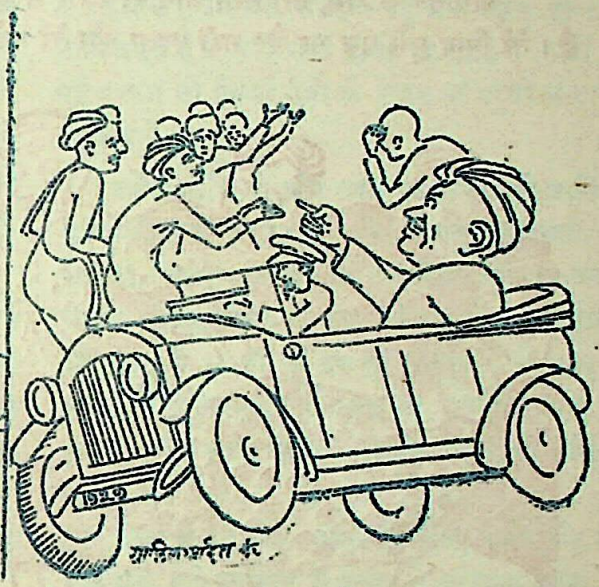

सेठ जी—इन कङ्गलों ने जान खा ली !

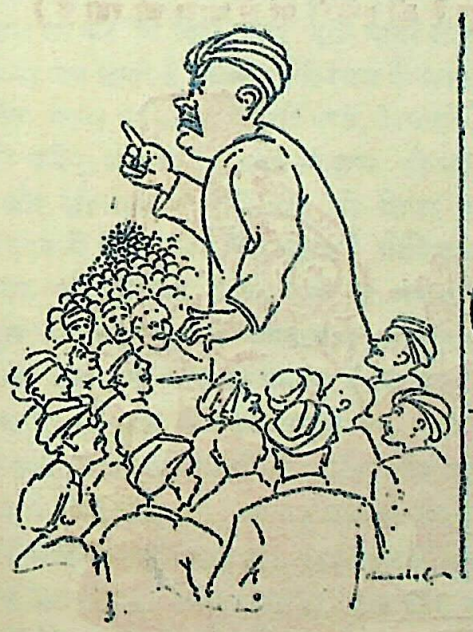

सभा में.....!

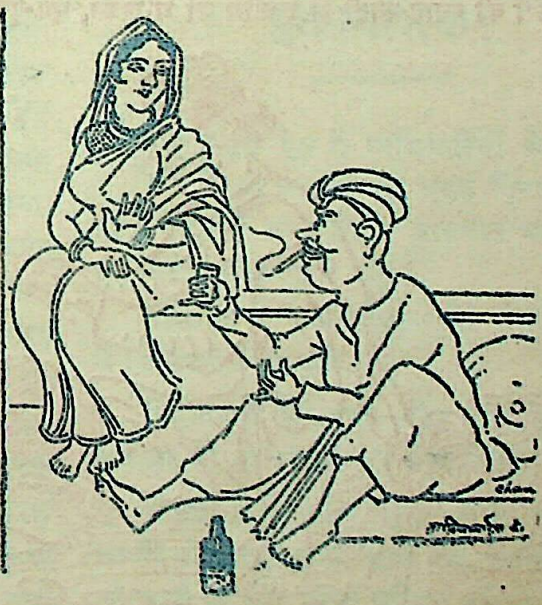

एकान्त में.....!!

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

॥ चौपद ॥

अमल तूँ उदमादिया सेणाँ हन्दा सेण ।
था बिन घड़ी अन आवडे फीका लागे नेण ॥

अर्थात्—अफ़ीम, तेरा नशा आने पर शरीर में चैतन्यता आ जाती है। तू मित्रों का मित्र है। तेरे बिना मुझे पल भर चैन नहीं पड़ता और तेरे नशे के बिना नेत्र फीके प्रतीत होते हैं।

अमल अरोगो ठाकराँ !

(ठाकुरों की ब्याह-शादी में अफ़ीम का घोलुआ, एक-दूसरे की हथेली पर से चाटा जा रहा है)

मनिहार

सेठानी—आ वल्लायती चूड़ी तो तू घणींई चोखी ल्यायो, पण कईक ओछी है, म्हारे हाथ में फँसगी।
मनिहार—सरकार, फँस कर बैठने ही से तो मज़ा आता है ! घबराइए नहीं, मैं बहुत आहिस्ते से उतार दूँगा, तकलीफ़ ज़रा न होने पावेगी।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

साम्राज्य के विध्वंस का कारण हुआ ! मुग़लों के जिन वंश-प्रणेताओं की पत्नियों ने घोड़े की पीठ पर बच्चे जने थे, उनके वंश की शाहज़ादियाँ ११ साल और शाहज़ादे १५ साल की उम्र में प्रेम-पाठ पढ़ने, उसका अभिनय करने और उसमें मरने लगे थे। शराब और हरामख़ोरी मानों उर्दू-साहित्य की मूर्तिमान् प्रतिमा थी, उसने मुग़लों को नामर्द, रोगी, राज्य-च्युत और कर्तव्य-विमूढ़ बनाया !!!

यही हाल मध्य काल के संस्कृत-साहित्य का है। पुराणों को लीजिए—प्रत्येक देवता को व्यभिचार-लिप्त बताया गया है। ब्रह्मा का स्वपुत्री-गमन, विष्णु का वृन्दा से व्यभिचार, कृष्ण का गोपी-विहार, महादेव का कुत्सित रूप में स्त्रियों के निकट जाना, ऋषियों में पराशर का कुमारी धीवर-कन्या से नाव में व्यभिचार, कुन्ती का अनेक देवताओं से सन्तान उत्पन्न करना आदि-आदि।

इस साहित्य का प्रभाव यह हुआ कि मनुष्यों के मन व्यभिचार की ओर झुक गए। अनायास ही उन्होंने सोचा कि यह तो साधारण सी घटना है। जब ऐसे बड़े-बड़े महात्मा, देवता ऐसा काम करते आए हैं तो हम क्या हैं ? आप ख़्याल तो करें कि किस प्रकार ऐसी बातों से कुप्रवृत्ति मन पर जम जाती है। कृष्ण-गोपी-रमण के अश्लील से अश्लील काव्य स्त्री-पुरुष बेखटके पढ़ते, विचारते हैं ! ख़्याल तो करिए, आचार्य का अपने में कृष्ण की भावना बनाना और स्त्री-मात्र में गोपी-भाव की शिक्षा देना, स्त्रियों के हृदय में क्या भाव पैदा करेगा ? गोविन्दभवन का भयानक और कुत्सित काण्ड इसी का प्रभाव था। परन्तु इस भयानक पाप के भण्डाफोड़ को इस तरह चुपचाप सह लेना इस बात का प्रमाण है कि मारवाड़ी-समाज बहुत दूर तक गिर कर नामर्द बन चुका है। पृथ्वी की सभी जातियाँ स्त्रियों की मर्यादा और आबरू के लिए प्राण देती आई हैं। यह एक अनोखा उदाहरण है कि ऐसे भयानक व्यभिचारी और व्यभिचार के अड्डे का इस तरह खुल्लम-खुल्ला भण्डाफोड़ हो जाय और सारी मारवाड़ी-जाति चुपके से इसे पी जाय ! इस भाव की जितनी निन्दा की जाय, थोड़ी है !!

स्त्रियाँ प्रायः मौलिक भावनाओं से परिपूर्ण हुआ करती हैं, फिर हृदय के स्वाभाविक गुण—दया, लज्जा, परोपकार, त्याग, प्रेम, स्वभावतः ही उनमें अधिक होते हैं। इसलिए उन तक साहित्य पहुँचाना बहुत ही उत्तरदायित्वपूर्ण है। यदि गन्दे हाथों का साहित्य स्त्रियों तक पहुँच गया तो स्त्रियाँ देवी के स्थान पर ख़ुशी से राक्षसी हो जावेंगी।

प्रत्येक जाति को और ख़ास कर मारवाड़ी-जाति को ऐसे साहित्य की ज़रूरत है—जो उसे बलवान् बनावे, वीर, साहसी, त्यागी, बलिदान को उत्कण्ठित और नम्र बनावे। वीरता मानव-जीवन की रीढ़ की हड्डी है। राजपूताने के इतिहास में ११ वीं से १८ वीं शताब्दी के अन्त तक ज़बरदस्त वीरतामूलक साहित्य का पता चलता है। वह इतना है कि आज भी वह समस्त भारत को वीर बना सकता है।

अन्त में हम यही कहेंगे कि वीर, कर्मठ और पवित्र बना सके, ऐसे साहित्य के प्रचार में करोड़हा रुपया ख़र्च करना ही वर्तमान समय में सबसे बड़ा दान—सबसे बड़ा पुण्य है।

* * *

गुप्त-व्यभिचार

"आपके देश में व्यभिचारियों के लिए सरकार की ओर से क्या दण्ड नियत है ?"—यह प्रश्न स्पार्टा के जीराडिस से बातचीत करते हुए उसके एक विदेशी मिहमान ने पूछा।

जीराडिस ने जवाब दिया—मेरे मित्र ! हमारे देश में व्यभिचार है ही नहीं।

मिहमान ने फिर पूछा—फिर भी यदि कोई व्यभिचार कर बैठे तो उसको क्या सज़ा मिलती है ?

जीराडिस ने जवाब दिया—अगर कोई व्यभिचार कर बैठे तो उसका इतना लम्बा बैल, जोकि टेरिटस पहाड़ की चोटी पर खड़ा होकर यूजिटस नदी का जल पी सके, छीन लिया जाता है।

विदेशी ने आश्चर्य से कहा—भला कभी इतना लम्बा बैल भी दुनिया में हो सकता है ?

जीराडिस ने मुस्करा कर कहा—यदि ऐसा लम्बा

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

बैल मिलना असम्भव है तो स्पार्टा में व्यभिचार का मिलना भी असम्भव है !

विदेशी इस जवाब से चुप हो गया। पर हर एक को यह कौतूहल हो सकता है कि आख़िर स्पार्टा में ऐसे कौन से क़ानून थे, जिनके कारण स्पार्टा की ऐसी दशा थी कि वहाँ व्यभिचारी का मिलना ही असम्भव था। परन्तु हम जब स्पार्टा के ऋषि लाइकरगस के क़ानून और समाज-नियन्त्रण की ओर ध्यान देते हैं, तो हमारा आश्चर्य निवृत्त हो जाता है।

ऐसी ही एक घटना का उल्लेख हमें उपनिषदों में मिलता है। कैकय-देश के राजा अश्वपति ने एक यज्ञ किया था। उसमें शाल, सत्ययज्ञ, इन्द्रद्युम्न, जन-कुण्डिल आदि ऋषि ऋत्विक् बनाए गए थे। उद्दालक-आरुणी उस काल में उसके राज्य में होकर गुज़रे। राजा ने यह समाचार सुना तो वह दौड़ कर ऋषि के पास गया और कहा—

"मेरे राज्य में न चोर हैं, न व्यभिचारी हैं, न शराबी हैं, न ऐसा है जो अग्निहोत्र न करता हो, न मूर्ख हैं—फिर क्यों नहीं आप मेरे राज्य में आते हैं?" शतपथ ब्राह्मण और छान्दोग्य-उपनिषद् में इस कथा को पढ़ कर आज हमें—जिनकी सामाजिकता की नस-नस में व्यभिचार घुस गया है—आश्चर्य होता है।

यह बात तो हमें स्वीकार करनी पड़ेगी कि पृथ्वी की सभी जातियाँ व्यभिचार-दोष में लिप्त हैं। प्राचीन इतिहास में भी इसकी बहुतायत देख पड़ेगी। पर इसीसे यह बात नहीं कही जा सकती कि व्यभिचार की यह प्रवृत्ति मनुष्य-समाज के लिए क्षम्य है। निस्सन्देह पशुओं में व्यभिचार नहीं है। यद्यपि विद्वान् पुरुष सहवास-कर्म को पशु-कर्म कहते हैं, पर यदि देखा जाय तो वह वास्तव में मनुष्य-कर्म ही है। मनुष्यों में यह घृणित-प्रथा जितनी ज़ोर पर है, उतनी किस पशु-जाति में है? पशुओं को अपने ऋतु-काल का यथार्थ ज्ञान है, और केवल गर्भ-धारण ही उनके लिए इस क्रिया का कारण-रूप हो सकता है। परन्तु मनुष्य-जाति ने तो इसका इतना दुरुपयोग किया है कि उसकी प्रजनन शक्ति ही कुण्ठित हो गई है।

हमें बहुत दुःख है कि हम मारवाड़ी-समाज के जीवन पर विचार करते हुए व्यभिचार जैसे गन्दे वि[illegible] पर ख़ास तौर से विवेचन करने को विवश हुए हैं। [illegible] वाड़ी-समाज का गृह-व्यभिचार एक ऐसा भयानक [illegible] है कि इसे जितनी जल्दी समूल नष्ट किया जाय, [illegible] ही उत्तम है। इस गृह-व्यभिचार को आठ बातों [illegible] उत्पन्न किया है।

१—बाल-विवाह, २—वृद्ध-विवाह, ३—बड़े [illegible] का रहन-सहन, ४—विदेश में एकाकी पुरुषों का [illegible] काल तक रहना, ५—पर्दा, ६—अविद्या और कुसंग, ७—कुरीतियाँ, ८—अनुकरण।

बाल-विवाह एक भयानक पाप है—ऐसा पाप, जि[illegible] प्रतिशोध या प्रायश्चित्त किसी भी दशा में होना [illegible] नहीं है। इन्सान के जानी दुश्मन, तन्दुरुस्ती के हला[illegible] ज़हर, सदाचार के भारी विरोधी बाल-विवाह ने ज[illegible] संसार की मुकुट हिन्दू-जाति में अपना पैर बढ़ाया है [illegible] से चौपट कर दिया है। मुकुट की मणि, मुकुट से गि[illegible] पैरों से कुचली जाने लगी है। और सबसे [illegible] अफ़सोस की बात तो यह है कि इस प्लेग और हैज़े [illegible] भी भयानक रोग का अभागे हिन्दू—ख़ास कर मार[illegible] सदा आनन्द से स्वागत करते रहे हैं और कर रहे हैं!!

इसके भयङ्कर परिणाम को लिखते सचमुच [illegible] थर्राती है, रोंगटे खड़े हो जाते हैं। हमारी सारी इ[illegible] तमाम आबरू, सारा बड़प्पन और हमारे शिर की प[illegible] तक इस डायन प्रथा ने धूल में मिला दी है। कहाँ [illegible] हम रोवें, इसके भयङ्कर नतीजे को देख कर सारे शरी[illegible] हज़ारों बिच्छू काटने जैसा दर्द होता है। १५ वर्ष के [illegible] और ९-१० वर्ष की बालिका जिस देश में माँ-बाप [illegible] कर इस महान् पद को कलङ्कित करें, उस देश का क्यों [illegible] सत्यानाश हो जाय? पकने से पहले ही जिसके खेत [illegible] कुचल कर बर्बाद कर दिया गया है उस कम्बख़्त कि[illegible] की बदनसीबी का भी कुछ ठिकाना है? जिसके [illegible] खिलने से पहले ही मसल कर मोरियों में फेंक दिए [illegible] हों, उसके दुर्भाग्य पर शत्रु को भी दया आवेगी!

आपने क्या देखा नहीं है? छोटे-छोटे बच्चे [illegible] दूल्हिन बन कर विवाह करने चले हैं। बच्चे ने [illegible] पहनना नहीं सीखा, लड़की रोकर रोटी माँगती है, [illegible] वे उस नादानी की उम्र में गृहस्थ की ज़बरदस्त गा[illegible]

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

अपने ज़ालिम माँ-बापों द्वारा जोत दिए जाते हैं। बड़े अभागे बच्चों को ही ऐसे ज़ालिम माँ-बाप मिलते हैं, जिनकी वह ख़ुशी, उस क़साई की ख़ुशी से किसी प्रकार कम नहीं है, जो उसे अपने सामने तड़पते जानवर को देख कर होती है !!

विवाह की बात तो दूर रही, उनके संस्कारों में भी यही विषैली स्प्रिट भरी जाती है—क्यों बेटा ! कैसी बहू लावेगा ? गोरी या काली ! बेटा योंही तोतली वाणी से कह देता है 'ताती' माँ-बाप ही-ही करके हँस देते हैं, बच्चा भी ताली बजा-बजा कर, हँस कर बारम्बार 'ताती-ताती' पुकारता है। बच्चा हँसी को समझता है, हँसी की वजह को नहीं। बच्चों को ख़ुशी ही चाहिए, जिस बात को सुन कर सभी हँसते हैं, उसी बात को बार-बार कहना बच्चे को अच्छा लगता है। जन्म से ही कुसंस्कार का प्रभाव रहता है। दियासलाई में मसाला लगा रहता है, विवाह होते ही रगड़ने मात्र की देर है। रगड़ा लगा कि फक से सारी शक्ति भस्म हो गई, जीवन की आशाएँ धूल में मिल गईं। न तो उसे संसार का तजरबा है और न उसमें प्रबल प्रवाह में ठहरने की शक्ति ही है, और न उसे भविष्य का ज्ञान ही है। हो कहाँ से, उसे ऐसा करने का अवसर ही नहीं दिया गया। वह अनाथ संसार की तपती भट्टी में भस्म होने को फेंक दिया जाता है, शोक !!! इसके भयानक परिणाम को क्या हमें बताना पड़ेगा ? उसे कौन नहीं जानता ? सारा भारत इस आग में तप रहा है। तमाम समुदाय में जो यह आग भड़क रही है—दिन-रात, नोन-तेल की चिन्ता में जो यह अमूल्य जीवन जर्जर हो रहा है—हमारा जीवन जो विषमय हो रहा है—सदा मौत की भीख जो हम माँगते हैं—इन सबका कारण क्या है ? यह दुःख कहाँ से हमारे ऊपर आया है ? इन सबका उत्तर है—बाल-विवाह।

लड़के-लड़कियों के बाल-विवाह, विषय-भोग की अधिकता और व्यभिचार की प्रवृत्ति से मनुष्यों में वीर्य की कमी और निर्बलता आ गई है, जिससे एक तो गर्भ-स्थिति ही कम होती है, दूसरे गर्भ रह भी जाय तो क्षीण हो जाते हैं, अथवा सन्तान होकर तुरन्त मर जाती है। जो भाग्य से बच भी रहे तो यह दशा है कि अत्यन्त निर्बल, निस्तेज, स्वर फटे बाँस के जैसा, सूरत बन्दर जैसी प्रमेह की बहुतायत, स्मरण-शक्ति का नाश, कम-अक्ल, आँखों के अन्धे, चश्मों के ख़रीदार, सदा के रोगी, वैद्य-डॉक्टरों के यार, चुपड़ी रोटी खावें तो खट्टी डकार, पाव भर दूध पीवें तो दस्तों की भरमार, किसी को बादी का विकार, मुटापे की भरमार, तोंद के भार से चलना दुश्वार—पेट लटकना, घुटने पकड़ कर उठना, बोलने में हाँपना, धमकी से काँपना—किसी का पेट पटक रहा है, कमर कमान हो रही है—गालों में गढ़े, आँखें भीतर बैठीं—कोस भर मार्ग चलना महाभारत की लड़ाई, और नीचे से कोठे पर चढ़ना पहाड़ की चढ़ाई है। यह जवानी की दशा है !! यह हमारी खिलती फुलवारी का नमूना है। बुढ़ापे की दशा को तो आप समझ ही लें—बुढ़ापे का स्यापा अब जवानी में ही भुगत जाता है। अब ३४ वर्ष का पुरुष बूढ़ा कहाता है। आप ही कहिए, ऐसे स्त्री-पुरुषों के वंश कैसे चलेंगे ? मित्रो ! इसी से पीढ़ी दर-पीढ़ी सन्तान कम होती जा रही है !!

बचपन ही से काम-कला को भड़का कर जिनकी मनोवृत्ति गन्दी कर दी गई, वे अपने बच्चों के रुधिर में इस विषैले प्रभाव को उतार देते हैं, जिससे उनकी सन्तान बचपन ही से विषयी, लम्पट और अधर्मी हो जाती है—उनकी जड़ में उत्पन्न होते ही कीड़ा लग जाता है—और जब वे फलते-फूलते, अपनी सुगन्ध को संसार में फैलाते, अपने प्रताप से भूमण्डल को कँपाते—उससे प्रथम ही मुरझा कर संसार से उठ जाते हैं। उनकी हार्दिक, स्नायविक, मानसिक दुर्बलता उन्हें अधम और नीच बनाए रखती है।

हमारे शरीर में उत्साह नहीं है—बल नहीं है—साहस-वीरता नहीं है—और दुनिया के किसी भी फल को भोगने में क्षमता नहीं है। ये सब सङ्कट बाल-विवाह द्वारा ब्रह्मचर्य का नाश करके ही क्या हमने मोल नहीं लिए हैं ?

हमारी नस्ल बर्बाद हो गई, ज़िन्दगी घट गई, तन्दुरुस्ती मिट्टी में मिल गई—रह गई हड्डी की ठठरी, रह गई अधमरी देह। इसका कारण क्या है ? वही तुम्हारे ज़ालिम माँ-बापों का प्यार—और वही बहू देखने की लालसा !!! पन्द्रह-सोलह वर्ष की उम्र हुई है, बच्चा स्कूल में ऊँचे दर्जे पर पहुँचा है, दिमाग़ी मेहनत का

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

ज़ोर—उधर गौना होकर भी आ गया। बच्चे की जान पर बलैया लेने वाली उसकी माँ आँचल पसार कर, दाँत निकाल कर, गिड़गिड़ा कर कहती है—हे विश्वनाथ बाबा! हे काली भवानी! हे चौराहे की चामुण्डा! अब तो पोते का मुँह दिखा दे। यही नहीं, उसकी तैयारी भी होने लगी—दोनों को एक कोठरी के अन्दर बन्द कर दिया गया। इधर दिमाग़ी मेहनत, पढ़ने का ज़ोर, उधर खाने की तङ्गी, घी-दूध का काम नहीं, उधर पोते बनाने की लालसा, इन सब में बच्चा पिस मरा, हाड़ की ठठरी रह गई। माँ कहती, है 'अजी, देखो बच्चे को क्या हो गया है? पीला पड़ता जाता है—किसी सैयद-वैयद की छाया तो नहीं पड़ गई है? किसी शाह साहब को ही दिखलाओ!' बाप देवता बोल उठे—'पढ़ने में मेहनत है, अब हम स्कूल न भेजेंगे—बहुत पढ़ गया है—इतना तो हमारे यहाँ कोई पढ़ा भी नहीं था।' बस सब हो गया—तालीम का द्वार बन्द हो गया। अन्त में जल्दी ही 'राम-राम सत्य' बुल गई। जब कली खिलने के दिन आए थे—जब उसकी सुगन्ध फैलनी थी—हाय! उससे पहले ही कुचल डाला गया—मसल डाला गया—सो भी प्यार करने वालों के हाथों से! उस पर न्योछावर होने वालों के हाथों से! तब वही माँ-बाप छाती पीट कर रोते हैं, हाय बेटा! अन्धों की लकड़ी छिन गई! तब उनका रोना आकाश फाड़ता है। वे अभागे नहीं जानते कि उन्हीं के नापाक हाथ उन मासूम और बेगुनाह बच्चों के ख़ून से रँगे गए हैं। उन्हींने अपने वंश का नाश किया है, उन्हींने अपने पैर में कुल्हाड़ी मारी है। कोई शक्ति है, जो उनके दामन से उस ख़ून के दाग़ को छुड़ा सके?

अभागो! क्या अब भी चेत न होगा। ज़ालिमो! ग़ज़ब है, घर में अपना ही ख़ून करते तुम्हें कैसे बन आता है? जिनके वंश में तुम पैदा हुए हो, जिनका ख़ून तुम्हारे शरीर में बह रहा है, उनकी वाणी तुम सुनते, उनकी आज्ञाओं को तुम पालन करते, तो तुम भी वैसे ही रहे होते, तुम्हारा सर्वनाश तुम्हारे ही सामने न होता, तुम्हारा जीवन तुम्हारे देखते ही देखते विषमय न बनता, और जिन फूलों की सुगन्ध ही तुम्हारी बड़ी ख़ुशी थी, वे फूल, वे तुम्हारे हृदय के रत्न, वे तुम्हारे आँखों के तारे—तुम्हारे प्यारे बच्चे, यों अकाल में काल के गाल में न जाते! तुम महा अभागे रहे! हाँ, हज़ार बार अभागे हो! अपने रत्न को, अपने सर्वस्व को, अपनी सम्पत्ति को, पैरों से कुचल कर फेंक दे, उससे अधिक अभागा कौन हो सकता है? उस अभागे की मूर्खता पर बार नहीं, हज़ार बार, लाख बार धिक्कार है। भाइयो तुम्हें दया का बड़ा अभिमान है, पर सच तो यों है तुम्हारे बराबर संसार में कोई क़साई और क्रूर नहीं छोटे-छोटे भुनगे, चींटी, मकोड़े, कौवे, कुत्ते आदि प्राणि के लिए तुम्हारे पास दया का भण्डार भर रहा है। अपनी सन्तानों पर यह ज़ुल्म! कि उनकी सारी आशा को कुचल कर, उनकी उठती जवानी पर कुछ भी तरस खाकर, उन्हें हाय! ऐसी बुरी मौत मार रहे हो कि क़सा गाय को भी न मारेगा। क़साई गाय को एक ही हाथ साफ़ कर देता है, वह बेचारी दुःख से छूट जाती है पर तुम एक-एक वर्ष की दूध-पीती कन्याओं को विष बना कर पापों की नदी बहा रहे हो, उन्हें रोम-रोम विष पैदा करने वाले दुःख-सागर में ढकेला करते हो, जी जी दुःखाग्नि में डाल कर भून रहे हो, उनके तड़पने देख कर पुण्य की उत्पत्ति समझ रहे हो, और इतना हो पर भी तुम्हारा पत्थर का कलेजा नहीं पिघलता? तुम्हा छाती पर साँप नहीं लोट जाता? ये लाखों विधवा तुम्हारी छाती पर मूँग दल रही हैं—कोई चुपचाप आह भर कर भारत को रसातल पहुँचा रही हैं और को कहार, धीवर, क़साई के साथ मुँह काला करके हिन्दू की नाक कटा रही हैं। फिर भी तुम ऋषि-सन्तान कहला की इच्छा रखते हो? अब भी तुम्हें अपने रक्त और का अभिमान है—तो शर्म है और लाख-लाख शर्म है!

अपने बुज़ुर्गों को तो देखो! जो लोग दीन-दुखि का आर्तनाद सुन कर भोजन और भजन छोड़ देते थे, दुःखी जन का दुःख दूर करके जलपान करते थे, या खो देते थे। हाय! आज उनकी सन्तान ऐसी अ हो गई! करोड़ों विधवाओं की बिलबिलाहट और हा कार सुन कर भी तुम्हें सुख की नींद आती है! जिन छाती पर सिला रक्खी रहे, आठों पहर जवान विध कन्या चुपचाप कलेजे का ख़ून पिया करे, उनकी आ फूट-फूट कर रोती रहे—और उन धर्म-धुरियों के हल मज़े से छत्तीसों व्यञ्जन सरक जायँ!

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

पहचानने से प्रथम ही जिसका एकमात्र जीवन का आधार जगत् से उठ जाय—वह ग़रीब अभागिनी तुम्हारे पास ही इस अँधेरी दुखभरी दुनिया में चक्की पीस-पीस कर, कुत्ते भी न खायँ ऐसे सूखे टुकड़े खाकर दिन काटे—सुअर भी न रहें, ऐसी सड़ी-मैली कोठरी में रहे—बीमार पड़ने पर बिना सहाय भूखी-प्यासी तड़प-तड़प कर मर जाय—पर तुम्हारे इत्र-फुलेल और क़लदक़ पोशाक में कुछ भी कसर न रहे ! उनके लिए तुम्हारे हृदय में राई-रत्ती भर भी सहानुभूति न रही ! अधर्मियो ! मुसलमान-ईसाई और क़साई जिन पर तरस खाते हैं—पत्थर-हृदय जल्लाद को भी जिन पर करुणा हो जाती है—उन दुखियाओं पर तुम दयालुओं—दया के अभिमानियों, को तनिक भी दया नहीं आती। जो लोग अपने को अहिंसा-धर्मधारी समझ रहे हैं—जो लोग दयावान् ऋषि-मुनियों की सन्तान होने का अभिमान रखते हैं, उन्हीं की दया का यह दृश्य है ? यह उनकी सभ्यता का नमूना है ? क्या यह सब घोर पाप नहीं है ? क्या ऐसे अत्याचार किसी दूसरी जाति में बता सकते हो ? क़साई को सबसे अधिक क्रूर, निर्दयी कह कर तुम घृणा करते हो, गाली देते हो, और उनका मुँह नहीं देखना चाहते। पर वे तुमसे अधिक घृणित नहीं हैं। बिना सींगों की गायों पर—अपनी बहिन-बेटियों पर—उनकी छुरी कदापि नहीं उठती। हिंसक पशु, पक्षी, सिंह, भेड़िया आदि भी स्त्री-बच्चों पर दया करते हैं। स्त्रियों को सभी ने अवध्य माना है। जङ्गली जाति भी स्त्री को नहीं सताती। पर हिन्दू-जाति के सुपूत, विशेषतः मारवाड़ी, उन्हीं का गला घोट कर अपने लिए स्वर्ग का द्वार खोल रहे हैं !! मनु कहते हैं :—

शोचन्ति जामयो यत्र विनश्यत्यासु तत्कुलम्।

अर्थात्—"जिस कुल में स्त्रियाँ शोकित रहती हैं, वह कुल शीघ्र नष्ट हो जाता है।" हमें आश्चर्य है कि इतने घोर पाप करने पर भी हिन्दू-जाति अब तक कैसे रह गई—वह क्यों न डूब गई—क्यों न ग़ज़ब का पहाड़ उस पर टूट पड़ा ? पर अब यह पाप अन्तिम सीमा तक पहुँच चुके हैं—इसके ज़हरीले फल फलने लगे हैं; देखिए :—

(१) लाखों घराने निर्वंश हो गए—बड़े-बड़े घरों में ताले ठुक गए।

(२) बहुत से स्त्री-पुरुष कङ्गाली के कारण धर्म से पतित होकर ईसाई-मुसलमान हो गए।

(३) व्यभिचार के कारण भी लाखों स्त्री-पुरुष हिन्दू-जाति से टपक-टपक कर गिर रहे हैं।

(४) बिरादरी के पञ्चों के अनुचित बर्त्ताव से सताए हुए कितने ही स्त्री-पुरुष धर्म को लात मार कर विरोधी हो बैठे हैं। क्योंकि आजकल के चौधरी और पञ्च थोड़ी-थोड़ी बातों पर जाति से निकाल फेंकने में ही बहादुरी समझते हैं—पुचकार कर सुधारना तो सीखे ही नहीं।

(५) अनाथ बालक-बालिकाओं का निरादर होने से वे भी भूखे-प्यासे रह कर ईसाई-मुसलमानों की शरण में जाते हैं।

(६) दहेज की महा भयङ्कर कुरीति से सताई हुई ३०-३० वर्ष की क्वारी रहने वाली कन्याओं में से बहुत सी लड़कियाँ कुसङ्गवश या मन के उद्वेग के कारण घर से भाग जाती हैं।

(७) विधवाओं की खेप की खेप हिन्दू-जाति की छाती पर सिर पटक रही है।

अब आप देखें कि आपके घर में कैसा विषैला पौधा उगा है। जब वृक्ष छोटा होता है, तो ज़रा से हवा के झोंके से या ज़रा सी धूप से मुर्झा जाता है, परन्तु ज्यों-ज्यों बढ़ता जाता है—दृढ़ तथा स्थायी बनता जाता है। बच्चों की भी वही दशा है। छोटी उम्र के बच्चों पर ज़रा सी भी सर्दी-गर्मी का भरपूर असर होता है और वे रोगी होकर प्रायः मर जाते हैं। ज्यों-ज्यों वे बड़े होते जाते हैं, उनके रग-पुट्ठे दृढ़ होते जाते हैं, उनके शरीर में सहन-शक्ति की वृद्धि हो जाती है, और वे रोग तथा उसके प्रबल धक्के को सहन कर सकने योग्य हो जाते हैं। यही कारण है जो इतनी बड़ी तादाद बाल-विधवाओं की दीख पड़ती है—इन सब पापों की जड़ बाल-विवाह है। इन सब बातों को सुन-समझ कर भी जो तुम बाल-विवाह की सत्यानाशी प्रथा के पक्षपाती रहे तो हम कहेंगे कि साँप को गले लटकाए फिरते हो—पल्ले में आग बाँध कर रूई के गोदाम में घुसते हो !!

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

वृद्ध-विवाह संसार के सभी देशों और जातियों में होते हैं, पर बराबर की जोड़ी मिला कर; मोती के समान अबोध बालिकाएँ इस तरह नहीं हाँक दी जातीं जैसे निकम्मी गाएँ क़साई को हाँक दी जाती हैं। नौ-दस वर्ष की बालिकाएँ ५०-६० वर्ष के पुरुष को पति समझें, यह कैसी वीभत्स बात है। रियासतों के रईस, राजे, सेठ तो ऐसा गुनाह करते ही हैं, सर्व-साधारण में भी यह बात आम तौर से प्रचलित है। दरिद्रता, स्वास्थ्य के नियमों की अनभिज्ञता, असंयम, पर्दा, अल्पायु में प्रसव—ये सारी बातें मिल कर मारवाड़ में स्त्रियों की मृत्यु की अधिकता को बढ़ा देती हैं। बहुत कम वृद्धा स्त्रियाँ मारवाड़ में होती हैं। यदि पञ्जाब और गुजरात से मारवाड़ की स्त्रियों की आयु को मिलाया जाय तो इस भयानक त्रुटि का पता लग जायगा। दूसरा-तीसरा विवाह तो मारवाड़ में करने वाले अनगिनती पुरुष मिल जावेंगे—चौथा और पाँचवाँ विवाह भी होता ही है। रईसों और राजाओं के विवाहों की संख्या तो न गिनाना ही अच्छा है।

ये विवाह समाज की जड़ में कैसा कुल्हाड़ा लगाते हैं, इस बात पर विचार करना चाहिए। ४० या ४५ वर्ष का एक पुरुष १३-१४ वर्ष की कन्या से विवाह करेगा; क्योंकि उच्च जातियों में विधवा-विवाह होना भीषण पाप माना जाता है। उधर १३-१४ वर्ष की कन्या कुमारी रह गई तो मुहल्ले और गाँव में हल्ला मच जाता है। आम तौर से सारे मारवाड़ में कन्याएँ १० से १४ वर्ष के भीतर अवश्य ब्याह दी जाती हैं। १४ वर्ष की आयु विवाह की चरम सीमा है। इस सीमा को उल्लङ्घन करने वाला शायद ही कोई साहसी पिता होगा, जो लोकापवाद और बिरादरी का मुक़ाबला कर सकता हो। ऐसी अवस्था में ४०-४५ वर्ष के पुरुष जब १४ वर्ष की बालिकाओं को पत्नी बना कर घर में घुसते हैं, तब पहली बात तो यह होती है कि बालिका बराबर की उम्र का जोड़ा पाकर जितनी प्रफुल्ल और उत्साहित होती उतनी नहीं हो सकती—उसके हृदय की कली नहीं खिल पाती। पति के स्थान पर मित्र मिलने की आवश्यकता है, जिससे दिल खोल कर प्रेम किया जाय। प्रेम की नैसर्गिक धारा के लिए प्राकृत आयु की बड़ी आवश्यकता है। विषम अवस्था का व्यक्ति यदि पैतृक परिजन हो तो भी बालिका उससे दिल खोल कर बात नहीं कर सकती। पर यह तो बिल्कुल ग़ैर-व्यक्ति होता है। फलतः भय, लज्जा, सङ्कोच और उदासीनता स्थायी रूप से उसके हृदय में घर कर बैठती हैं। क्योंकि सहेलियाँ और अनुभवी स्त्रियाँ तो बता देती हैं कि तेरा पति बराबरी का नहीं है। फिर वह थोड़ा-बहुत तो स्वयं भी समझती है और शीघ्र ही अधिक भी समझ जाती है।

दूसरी भयानक बात यह होती है कि यदि बराबर बालक से विवाह हो तो दोनों को एक सरीखी लज्जा, आनन्द, उद्रेक आदि होते हैं। प्रायः ३-४ वर्ष उन्हें सङ्गम नहीं हो पाता। प्रेम को प्रणय के रूप में फलित के लिए, परस्पर परिचय घनिष्ट होने के लिए, आकर्षण का उदय होने के लिए यह काल बहुत है। यूरोप की जातियाँ विवाह से प्रथम यह महत्त्वपूर्ण कार्य कर लेती हैं। बाल-विवाह में विवाह की रस्म बीत जाने पर यह होता है। पर विषम-विवाह में बालिका को ऐसा अवसर नहीं मिलता—खूसट पति शीघ्र ही इच्छा पूरी करना चाहता है। उसकी लिप्सा भड़की रहती है—मन लम्पट रहता है—वह बड़ा निर्लज्ज, धृष्ट और पाशविक प्रवृत्तियों का ग़ुलाम होता है। इस उम्र में ऐसा नीच बिना हुए, कोई व्यक्ति कच्ची आयु की बालिका से विवाह कर ही नहीं सकता। फलतः वह भयभीत बालिका बिना ही कारण उद्रेक के, बिना परिचय और प्रेम हुए, केवल भय से उस भाग्यहीन पापी की विषय-वासना का शिकार हो जाती है। उसे सदा के लिए प्राकृत आनन्द से, जो उसके लिए प्राणों से भी बहुत मूल्यवान् है, वञ्चित रहना पड़ता है।

तीसरी बात यह होती है कि इस उम्र में तो अठारह-बीस वर्ष की आयु के युवक के समान प्रेम में मग्न, बेफ़िक्र और लजीले तो होते ही नहीं। इस नई उम्र के युवकों को ८-१० वर्ष तक अपनी पत्नियों दिन में दर्शन तक होने दुर्लभ रहते हैं और शब्द सुनना तथा उँगली तक देखना कठिन है, वहाँ बड़ी उम्र के पति अपनी लिप्सा जीर्ण होने पर ठण्ढे पड़ जाते और फिर क्रोध, शासन और अनेकों प्रकार की चिड़चिड़ाहट उन भाग्यहीन बालिकाओं पर उतरती है। अपने अस्वाभाविक और अविकसित जीवन में बचपन

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

एकदम बुज़ुर्गी में कुदा दी जाती हैं ! किसी कवि का यह शेर उन पर फ़बता है :—

तिफ़लीं गई, अलामते पीरी अयाँ हुई।
हम मुन्तज़िर ही रह गए अहदे शबाब के ॥

इस प्रकार पति के ऊपर विरक्ति, प्रेमाभाव और भय उनके हृदय में स्थिर हो जाता है। इसका परिणाम यह होता है कि वे पति से झूठ बोलती हैं, बातें छिपातीं, और पीछे छिप कर छोटे-बड़े दुष्कर्म और पापाचार करने लगती हैं !!

* * *

अब मारवाड़ी-परिवारों में नौकरों के अपरिमित अधिकारों की बात सुनिए। हमने पञ्जाब, यू० पी०, गुजरात, महाराष्ट्र और बङ्गाल के गृह-सेवकों का मारवाड़ के गृह-सेवकों से मिलान करते हुए अध्ययन किया है। मारवाड़ के नौकर अधिक धृष्ट, घर-घुसने और स्त्रियों के आज्ञाकारी होते हैं। यदि सेठ और सेठानी दोनों दो भिन्न-भिन्न आज्ञाएँ दें, तो शर्तिया यह बात है कि नौकर सेठानी की आज्ञा पूरी करने की चेष्टा करेगा। मारवाड़ के बड़े घरों की स्त्रियों को हमने अपनी आँखों से पुरुष-नौकरों से तेल या पीठी शरीर पर लगवाते देखा है !! बहुधा स्नान करते समय नौकर पानी डालता है, वस्त्र पहनने में मदद देता है, काँचली (चोली) प्रायः दर्ज़ी सीते हैं और स्त्रियाँ बड़े चाव से सिलवाती हैं। इस प्रकार नौकरों का साहस बढ़ जाता है—मर्यादा भङ्ग हो जाती है—वे धृष्टता करने लगते हैं। बड़े-बड़े नगरों में, छोटे घरों में नौकर रात को ऐसी जगहों पर सोते हैं, जहाँ से स्त्रियों का यथेष्ट पर्दा नहीं हो सकता। फिर बहुत स्त्रियाँ तो नौकरों से पैर भी दबवाती हैं !!!

इन नौकरों को अपनी अभिरुचि पूरी करने का एक बहुत बड़ा सुयोग यह मिल जाता है कि सेठ जी बहुत कम दिन में घर आते हैं। प्रायः दूकान में तमाम दिन बैठना ही पड़ता है। रात को बहुत देर तक हिसाब ठीक करना पड़ता है। दूसरे, बड़े-बड़े नगरों में बड़े-बड़े सेठ भी—उनको छोड़ कर, जिन्होंने स्वयं हवेलियाँ खड़ी की हैं—छोटे-छोटे घरों में गुज़र करने का अभ्यास रखते हैं। सजावट और आराम की तरफ़ भी उनका ज़्यादा ख़्याल नहीं रहता, इसलिए घर उन्हें आकर्षित भी नहीं करता। निठल्ली स्त्रियाँ ख़ूब तर माल तोड़ती हैं, नौकरों से हँसी-ठट्ठा करती हैं, सेवाएँ कराती हैं, और फिर अज्ञान, प्रमाद, आयु, और परिस्थिति—सब उन्हें अतल-पाताल में ले डूबते हैं। इस प्रकार पुण्य-स्थान में पाप की नदी बहती है।

* * *

नौकरों के सिवा सम्बन्धी-गण—बहनेऊ, ननदेऊ, देवर आदि सामाजिक रीति से कुत्सित हँसी करने का प्रकट और व्यभिचार करने का गुप्त अधिकार रखते हैं। ऐसी अवस्था में स्त्री की कम आयु, पति पर विरक्ति, भय और अभाव उसके मन में पति पर कुरुचि और इन युवकों पर प्रेम उत्पन्न कर देता है। ये उन्हें ले डूबते हैं। इन युवकों में सौतेले बेटे से लेकर भाइयों के मित्र, चचा और भतीजे तक होते हैं ! काम का उन्माद, मूर्खता के थपेड़ों और वासना की आँधी में फिर रिश्ते का ख़्याल नहीं रहता; क्योंकि रिश्ता नाम का है वास्तव में सब से बड़ी बात आयु की विषमता है—वह स्वाभाविक रीति से पतन में गिराने वाली होती है।

* * *

इन सबके ऊपर व्यभिचार के पथ-प्रदर्शक एक और लोग हैं, वे हैं ब्राह्मण-युवक—चाहे वे रसोइए हों या धर्म-गुरु, पुरोहित हों अथवा योंही पूजा-पाठ करने वाले। ब्राह्मणों का मारवाड़ी-समाज पर असाध्य अधिकार है। मूर्ख और पतित ब्राह्मणों पर सारे भारतवर्ष की हिन्दू-जाति की अश्रद्धा हो गई है; पर मारवाड़ के ब्राह्मण कोरे निरक्षर रसोइए होने पर भी पूज्य बने हुए हैं—बल्कि यह कहा जा सकता है कि समस्त मारवाड़ी-जाति ब्राह्मणों की अन्ध-ग़ुलाम है। हम समझते हैं कि हमारी यह बात बहुत सज्जनों को कड़ुवी लगेगी; पर खेद है कि इसे वापस करने के स्थान पर हम इस बात को दुहराते हैं। ये ब्राह्मण-युवक जो सौ में से २-४ अच्छे पढ़े होते हैं—शेष साधारण पढ़े होते हैं—दान-दक्षिणा लेने, पूजा-पाठ करने, ग्रह-मुहूर्त बताने, आशीर्वाद देने, गङ्गोदक या तुलसीदल देने—चाहे भी जिस कारण से अबाधरूप से चाहे भी जिस मारवाड़ी-परिवार में जा सकते हैं। न इनसे पर्दा, न बचाव—ये हाथ देखते हैं और गुप्त बातें ज्योतिष की आड़ में बताते हैं—गुप्त बातों में, सन्तान होगी कि

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

नहीं, पति वश में होगा या नहीं—भी शरीक रहती हैं। इन समझदार मूर्खों को भोजन और पाप दोनों ही अनायास प्राप्त हो जाते हैं। ये धर्म के बहाने कृष्ण-राधा के प्रेम के गन्दे भाव अपनी पापी आँखों द्वारा स्त्रियों में बखान करते हैं—विधवाएँ तो ख़ास तौर पर चाहे जितनी देर तक इनकी सेवा में रह सकती हैं। ये अयोग्य आदमी घण्टों स्त्रियों के बीच में बैठे मठोले मारा करते हैं, और अवसर पर गृह-वधू या कन्या को पतित कर डालते हैं। रसोइयों को और भी अधिक सुयोग प्राप्त होता है। वे नहाते, खाते, स्त्रियोचित गृह-कर्म करते दिन-रात स्त्रियों में रहते हैं। ये प्रायः युवक, अनपढ़, उजड्ड होते हैं; इनकी एक महा बेहूदी आदत यह होती है कि प्रायः स्त्रियों में नङ्गे फिरा करते हैं। जाँघें खुली रहती हैं, लँगोटे से कुछ ही ज़्यादा कपड़ा लपेटे रहते हैं। इनमें जो थोड़ा-बहुत पढ़ना जानते हैं, वे गन्दी किताबें ज़ोर-ज़ोर से पढ़ा करते हैं और अप्रासङ्गिक रीति से स्त्रियाँ उसे चाव से सुनती रहती हैं। ये नीच प्रायः कुमारी कन्याओं को बहानों से फुसला लेते हैं और उनमें कामोद्दीपन करने की चेष्टा करते हैं। मूर्ख लोग स्थान के अभाव से कन्याओं को उनके निकट ही अरक्षित सुला देते हैं!

बड़े शहरों में तो बहुत से परिवार एकत्र रहने से कोई न कोई दुश्चरित्रा विधवा मकान में बनी ही रहती है, जो अनायास ही ऐसा पाठ इन अभागिनियों को पढ़ा कर अपने रङ्ग में जमा लेती है।

* * *

यह हुई सधवा अवस्था में व्यभिचार में फँसने की रीतियाँ। ये स्त्रियाँ लाज़िमी रीति से कोई चढ़ती जवानी में, कोई चढ़ी में, कोई ढलते-ढलते विधवा हो जाती हैं। विधवा हो जाने से बहुत बन्धन कट जाते हैं। धृष्टता तो पहले ही बढ़ जाती है। अब उसका दुरुपयोग होने लगता है। प्रथम यदि कोई गुप्त-प्रेमी होता है, तो अब वह खुल खेलता है। कभी-कभी तो बड़े-बड़े घरों में इन पातकों के फल फला करते हैं। ..... के एक बड़े घराने में दो-चार आदमी चुपचाप इसी अपराध में मार डाले जाते हैं। एक सेठ साहब ने ६७ वर्ष की उम्र में १२ वर्ष की बालिका से ब्याह किया था और ब्याह के छः महीने बाद मर गए—उनके मरने के डेढ़ वर्ष बाद बालि को प्रथम बार रजोदर्शन हुआ। इस विवाह का सारे ने विरोध किया था, और सेठ जी का साठ हज़ार इसमें ख़र्च हुआ था। यह असहाय बालिका ज़हर मार डाली गई और स्थानीय डॉक्टर साहब ने पाँचों में करके मामला रफ़ा-दफ़ा कर दिया!

* * *

प्रायः ऐसा होता है कि मारवाड़ी-पुरुष व्यापार लिए दूर देश में चले जाते हैं। यह बात धनी-नि सभी के लिए है। उनकी स्त्रियाँ निरन्तर १०-१५ तक देश में अकेली उसी कुसंस्कार में रहती हैं। साल महीने-बीस दिन के लिए पुरुष आते हैं और चले हैं! गाँव में दुश्चरित्रा स्त्रियों का अभाव नहीं होता आस-पास के अनेकों रईस-ग़रीब पराई बहू-बेटियों ताक में रहते हैं। वे प्रलोभन भिजवाते हैं और अन्त पतित करते हैं। ऐसे सहस्रों उदाहरण हमें मालूम हैं!

* * *

पर्दे के विषय में हम दूसरी जगह लिख चुके अधिकांश बुराइयों और पाप की जड़ यह पर्दा है। पर्दे की ओट में बड़ी-बड़ी बेपर्दगियाँ होती हैं। अ और कुसंस्कार यों तो स्त्री-जाति में भारत के दुर्भाग्य साथ-साथ घुस गया है, पर मारवाड़ी-महिलाओं सबसे अधिक है। मारवाड़ भर में (मारवाड़ से अ प्राय राजपूताना प्रदेश भर से है) ५० लाख के लग स्त्रियाँ हैं, जिनमें २० हज़ार से भी कम स्त्रियाँ साधारण लिखी हैं। यदि यूरोप या अमेरिका में यह कहा जाय भारत में एक ऐसा भी प्रान्त है जहाँ की स्त्रियों की संख्या ५० लाख है और उनमें फ़ी हज़ार ४ स्त्रियाँ पढ़ी हैं, तो एकाएक वहाँ की स्त्रियों को विश्वास कठिन है। अमेरिका में क़रीब ४ करोड़ स्त्रियाँ हैं, इनमें लाख तो अध्यापिकाएँ और प्रोफ़ेसर हैं। इङ्गलैण्ड में करोड़, फ़्रान्स में १॥ करोड़ और जर्मनी में ३। स्त्रियाँ हैं—इनमें से २ फ़ी सदी अनपढ़ हैं। ये स्त्रियाँ बात की कल्पना भी नहीं कर सकतीं कि ५० लाख स्त्रियाँ कैसे भेड़-बकरी की तरह अपनी आयु काटती हों अविद्या के अन्धकार में पड़ी इन बेचारी स्त्रियों को की क़ैद ने भयानक रीति से अन्धा कर दिया है।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

जोधपुर का राजवंश

परिचय अन्यत्र देखिए

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

नवीन संस्करण छप गया !!

एक क्रान्तिकारी उपन्यास

मानिक-मन्दिर

[ले० श्री० मदारीलाल जी गुप्त]

[प्रस्तावना-लेखक—श्री० प्रेमचन्द जी]

यह वही क्रान्तिकारी उपन्यास है, जिसकी सालों से पाठक प्रतीक्षा कर रहे थे, ऐसी सुन्दर पुस्तक की प्रस्तावना लिख कर प्रेमचन्द जी ने इसे अमरत्व प्रदान कर दिया है। श्री० प्रेमचन्द जी अपनी प्रस्तावना में लिखते हैं :—

"उपन्यास का सब से बड़ा गुण उसकी मनोरञ्जकता है। इस लिहाज़ से श्री० मदारीलाल जी गुप्त को अच्छी सफलता प्राप्त हुई है। पुस्तक की रचना-शैली सुन्दर है। पात्रों के मुख से वही बातें निकलती हैं, जो यथावसर निकलनी चाहिए, न कम न ज़्यादा। उपन्यास में वर्णनात्मक भाग जितना ही कम और वार्त्ताभाग जितना ही अधिक होगा, उतनी ही कथा रोचक और ग्राह्य होगी। 'मानिक-मन्दिर' में इस बात का काफ़ी लिहाज़ रक्खा गया है। वर्णनात्मक भाग जितना है, उसकी भाषा भी इतनी भावपूर्ण है कि पढ़ने में आनन्द आता है। कहीं-कहीं तो आपके भाव बहुत गहरे हो गए हैं और दिल पर चोट करते हैं। चरित्रों में, मेरे विचार में, सोना का चित्रण बहुत ही स्वाभाविक हुआ है और देवी का सर्वाङ्ग सुन्दर। सोना अगर पतिता के मनोभावों का चित्र है, तो देवी सती के भावों की मूर्ति। पुरुषों में ओङ्कार का चरित्र बड़ा सुन्दर और सजीव है। विषय-वासना के भक्त कैसे चञ्चल, अस्थिर-चित्त और कितने मधुर-भाषी होते हैं, ओङ्कार इसका जीता-जागता उदाहरण है। उसे अपनी पत्नी से प्रेम है, सोना से प्रेम है, कुमारी से प्रेम है और चन्दा से प्रेम है; जिस वक़्त जिसे सामने देखता है, उसी के मोह में फँस जाता है। ओङ्कार ही पुस्तक की जान है। कथा में कई सीन बहुत मर्मस्पर्शी हुए हैं। सोना के मिट्टी हो जाने का और ओङ्कार के सोना के कमरे में आने का वर्णन बड़े ही सनसनी पैदा करने वाले हैं, इत्यादि।" सजिल्द पुस्तक का मूल्य २॥) रु० ! नवीन संशोधित संस्करण अभी-अभी प्रकाशित हुआ है !!

गुदगुदी

पुस्तक क्या है, हँसी का ख़ज़ाना है। श्रीवास्तव महोदय ने इस पुस्तक में कमाल कर दिया है। एक-एक चुटकुला पढ़िए और हँस-हँस के दोहरे हो जाइए, यही इस पुस्तक का संक्षिप्त परिचय है। बालकों तथा स्त्रियों के लिए विशेष मनोरञ्जन की सामग्री है। मू० केवल ॥) ; स्था० ग्रा० से ।=) ; दो संस्करण हाथो हाथ बिक चुके हैं ! तीसरी बार छप कर तैयार है।

व्यवस्थापिका 'चाँद' कार्यालय, इलाहाबाद

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

पर्दा केवल दिखाने के लिए है। वे गन्दे गीतों को बड़े चाव से और बड़े समारोह से सैकड़ों पुरुषों के बीच में बैठ कर तथा सड़कों पर गाती रहती हैं और ज़रा भी सङ्कोच न कन्याओं का करती हैं, न पुरुषों का। ये गन्दे गीत प्रत्येक सज्जन पुरुष के मस्तक को नीचा करने वाले हैं, और मारवाड़ी-समाज इसके लिए जितना अधिक शर्म, करे उतना ही कम है !!

यह बात तो साफ़ है कि इसके लिए केवल स्त्रियाँ दोषी नहीं ठहराई जा सकतीं। पुरुष ही सच्चे दोषी हैं। हम साहसपूर्वक यह कह सकते हैं कि भारत भर की जातियों में मारवाड़ की स्त्रियाँ स्त्रियोचित गुणों से नैसर्गिक रीति से विभूषित हैं। उनके बराबर निरभिमान और तल्लीनता से पति-सेवा करने वाली, घर के छोटे-बड़े धन्धों में प्रेमपूर्वक परिश्रम करने वाली, मृदुभाषिणी, कोखवती, कम-ख़र्च, लजीली, सुन्दर, स्वस्थ और बुद्धिमती स्त्री भारत के किसी प्रान्त में नहीं पैदा होतीं। हमारे इस कथन पर अन्य प्रान्त की बहिनें नाराज़ न हों, हम यह बात बहुत गम्भीरतापूर्वक कहते हैं। परन्तु कुसंस्कार और अविद्या ने उन्हें अधोगति में डाल रक्खा है। जब मारवाड़ की माताएँ जागृत होंगी—भारत की पराधीनता की बेड़ियाँ खनाखन टूटेंगी। मारवाड़ की माताओं ने देश को ज़िन्दा रक्खा था और अन्त में रक्खेंगी। आवश्यकता उनकी अविद्या, कुसंस्कार और दुर्भावनाओं को दूर कर देने की है। और इसके लिए आवश्यकता है पुरुषों को अपने व्यापार, वैभव आदि की तरफ़ से ध्यान हटा कर साहसपूर्वक समाज का भीतरी सुधार करने की।

* * *

हिन्दू-संस्कृति में छोटा भाई बड़े भाई की पत्नी को माता के समान मानता-जानता रहा है। लक्ष्मण जैसे यतिवर ने सीता के चरण ही देखे थे—मुख नहीं देखा था। परन्तु मारवाड़ी-संस्कृति कहाँ तक पतित हुई है, ज़रा ध्यान से सुनिए। मारवाड़ में एक गीत 'काँगसियो' के नाम से प्रसिद्ध है। प्रायः वसन्त, वर्षा आदि में जब दो-चार स्त्रियाँ एकत्र बैठती हैं, तब यह गीत वे बड़ी मौज से गाती हैं ! ज़रा सुनिए :—

म्हारा भँवर को काँगसियो जिठाणीये,
किस विद आयो थारी सेज।
ना म्हें थारे घरे गया दोराणीये,
ना म्हें लियो छै बुलाय।
भाभी के देवर लाड़लो दोराणीये,
आया-आयो ढलती सी रात।
भाभी आणो-जाणो छोड़ द्यो,
मारू जीवो मर जाऊँ जहर विष खाय।
मरस्यों तो जास्यो जीव सूँ,
मारूणीये भाभी म्हारे जीवड़ा को हार।
नखराली भाभी म्हारे सेजाँ को सिणगार।

"ऐ जिठानी जी ! यह मेरे पति का कङ्घा तुम्हारे पलँग पर कैसे आया ?

"हे देवरानी ! न तो मैं तुम्हारे घर गई और न हमने उसे बुलवाया। लेकिन भाभी का प्यारा देवर स्वयम् उतरती रात को आया था ?

"(इस पर देवरानी ने पति से कहा) अजी भाभी के यहाँ आना-जाना छोड़ दो, नहीं तो मैं विष खाकर मर जाऊँगी।

"(पति ने कहा) मर जाओगी तो जी से जाओगी, भाभी तो मेरे प्राणों का हार है, वह नख़रेदार भाभी मेरी सेज का सिङ्गार है।"

ऐसा ही—बल्कि इससे भी कुत्सित भावपूर्ण एक और गीत सुनिए। यह गीत 'ननदोई का गीत' कहा जाता है :—

महमद घड़्यो ओ जी ननदोई जी,
रखड़ी की साई बालम से लगाई।
धीमा-धीमा बोलो ओ जी नणदोई।
बाई जी सुनेला देगा म्हाँने गाली।
बाई जी सुने तो पड्या सुनवाद्या,
आपा रँग माणा प्यारी सालायेली।
जाणों छो तो माणों ओ जी नणदोई,
बाताँ क्यों बखाणों प्यारा नणदोई

"अजी ननदोई जी, हमें एक महमद (आभूषण) बनवा दो। रखडी (बोर) की सटपट तो बालम से मैंने लगा ली है।

"अजी ननदोई जी ! ज़रा धीरे-धीरे बोलो, बाई जी सुन लेंगी तो गालियाँ देंगी।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

"बाई जी सुनेगीं तो सुनने दो—प्यारी सलहज जी आओ·····करें।

"अजी ननदोई जी! यही इरादा है तो·····पर प्यारे जी तुम बातें क्यों बनाते हो?"

विचारशील पुरुष देखेंगे कि ये गीत भले घर की बहू-बेटियों के गाने के योग्य हैं? इन्हें गाने से कैसी कुप्रवृत्ति पैदा होती है? जिन सज्जनों की बहू-बेटियाँ ऐसे गीत गातीं हैं—क्या वे सज्जन इसमें अपनी बेइज़्ज़ती ज़रा भी नहीं समझते? गायन और प्रमोद स्त्रियों के भूषण हैं—वे करें—पर ऐसा, जैसा कि प्रत्येक आबरूदार स्त्री को करना चाहिए।

* * *

ब्रह्मचर्य का अभाव

संसार में रह कर, जीवन के कठिन संग्राम में हमें शारीरिक, आत्मिक, मानसिक सब प्रकार का बल ख़र्च करना पड़ता है। यह बल ब्रह्मचर्य द्वारा ही हम सञ्चय कर सकते हैं—ब्रह्मचर्य को छोड़ इस अनुष्ठान का अन्य सुयोग नहीं है। ब्रह्मचर्य के द्वारा यदि हम वह बल इकट्ठा न कर सकें तो ख़र्च कहाँ से करेंगे? जिसकी पूँजी नहीं है—गाँठ ख़ाली है, वह क्या ख़र्च करेगा? आज जो हमें जीवन-निर्वाह के सामान जुटाए नहीं जुटते—बात-बात में मुहताजी रहती है और पल भर को भी शान्ति नहीं मिलती उसका कारण केवल यही है कि ब्रह्मचर्य की आवश्यक प्रथा का हमने लोप कर डाला है। हमारा शरीर रोगी क्यों? ब्रह्मचर्य के अभाव से। सन्तान क्यों नहीं होती? ब्रह्मचारी न रहने और कच्चा वीर्य फेंकने से! सन्तान क्यों होकर मर जाती या दुर्बल रहती है? ब्रह्मचर्य नष्ट करके वीर्य कमज़ोर कर दिया! ग़रीब क्यों हो? कुछ सीखा नहीं, जल्दी गृहस्थ हो गए। दुखी क्यों हो? इसलिए कि तन पर, मन पर, आत्मा पर जो बोझ है वह अधिक है। तन, मन, आत्मा इनका बल ब्रह्मचर्य से मिलता, उसे पालन नहीं किया। एक-दो मनुष्य नहीं, सारा भारत निर्बल है, इसका भी कारण ब्रह्मचर्य का अभाव है। ब्रह्मचारी बन कर विद्या पढ़ने से आत्मिक बल बढ़ता है—आत्मा बलिष्ठ होने से मनोवृत्ति गन्दी नहीं होने पाती—विशुद्ध मनोवृत्ति होने से शारीरिक बल कुचेष्टाओं से खण्डित न होकर संरक्षित रहता है। व्यक्तियों का समूह ही समाज है, जब हमारी आत्मा और शरीर बली है समाज भी बली है। ब्रह्मचर्य के भक्त प्राचीन आचार्य अपने बल का अखण्ड प्रताप जगत् के सामने रख हैं—और ब्रह्मचर्य-भ्रष्ट हमारा भी बल जगत् के सामने जो है सो सब जानते हैं—कहना-सुनना व्यर्थ है।

सच तो यों है कि हमारी आरोग्यता, आयु, सौन्द ऐश्वर्य और हमारी सारी भावी कामनाओं का जो है, एक मात्र इसी के अनुष्ठान करने से हमारी धार्मिक नैतिक सारी मनोकामनाएँ पूरी होंगी। ब्रह्मचार्य आदर्श-सन्तान पैदा करके उन्हें योग्य पुत्र बना स है। उत्तम सन्तान की कामना करने वाले को उचि कि वह ब्रह्मचारी बने और पूर्ण-ब्रह्मचारी बने। ब्र का नियम पालन करने से हमें अधिकाधिक विद्या का बड़ा अवसर मिलता है। विद्या क्या है? शास्त्र है? यही सब महानुभावों के सच्चे तजुर्बे हैं, उन्हें कर, समझ कर हम जानते हैं कि इस अगम्य संसा गति कैसी है। किस काम को किस प्रकार करके हानि-लाभ होगा। ईश्वर, माता, पिता, पुत्र, धर्म इन सबको जानने ही के लिए ब्रह्मचर्य की है। हमारे सामने जीवन का, सुख-दुःख का, लाभ का, साहस, वीरता और परोपकार का जो बृहत् खड़ा हो सकता है, ब्रह्मचर्य ही उसकी नींव है। ग हमारे सामने धर्म-अर्थ-काम-मोक्ष चतुर्वर्ग प्राप्ति का वृक्ष, है ब्रह्मचर्य ही उसका मूल है। अगर हम चाह कि हमारा भवन दृढ़ बने, अगर हम चाहते हैं कि उद्देश्य-वृक्ष आँधी के बड़े-बड़े झोकों से भी न उखड़ हमें चाहिए कि पूर्ण ब्रह्मचर्य का पालन करके कृत हो जायँ।

मनुष्य-जीवन का उद्देश्य बड़ा गहन है। संसा आकर उसे न केवल अपना ही उद्धार करना होता वरन् समस्त प्राणियों का अधिपति बन कर जगत् शासन करना होता है। महान् शक्ति प्राप्त किए शासन नहीं हो सकता! और शक्ति सम्पादन का ही उपाय है—वह ब्रह्मचर्य है। मनुष्य की उन्नति मार्ग बड़ा प्रशस्त है, वह मोक्ष तक खुला पड़ा है।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

लिए मनुष्य चाहे तो बहुत-कुछ कर सकता है। अपनी गहन मेधा-बुद्धि से, प्रबल बाहुबल से, सारे संसार को अपनी झलक दिखा सकता है। प्राचीन काल में भीष्म, भीम, कृष्ण, राम, लक्ष्मण आदि महानुभाव और शुक, व्यास, कपिल आदि मुनिगण इसके उत्कृष्ट प्रमाण हैं। इन सबमें ब्रह्मचर्य का बल था, उसीसे वे दुर्जय योद्धा और अन्तर्दृष्टि वाले हो गए थे। कोई ब्रह्मचर्य-भ्रष्ट वैसी कामना करे तो कैसे वहाँ तक पहुँच सकता है?

जब द्वापर का युद्ध हुआ, तब जरासन्ध, कालयवन, कंस, शिशुपाल आदि अधर्मियों के अत्याचार के दौर-दौरों का बाज़ार इतना गरम हो गया था कि प्रजा में हाहाकार मचा हुआ था। उनके उत्कृष्ट बल और प्रभाव को देख कर किसी की भी उनके आगे सिर उठाने की हिम्मत नहीं हुई। पर कृष्ण ने बारह ही वर्ष की अवस्था से उनके आगे सिर उठाया, उनके गर्व को तोड़ा और निरन्तर परिश्रम करके यत्न, युक्ति और बल से उनका मूलोच्छेद करके धर्म-राज्य की नींव स्थापित की। इतना करते हुए भी किसी ने उन्हें घबराते या उदास नहीं देखा, वे सदा आनन्दकन्द रहे। दुःख मानो जगत् में उनके लिए था ही नहीं। द्वारिका में जब शल्य के साथ उनका घोर युद्ध हो रहा था, उस आपत्तिकाल में भी द्यूत-सभा में द्रोपदी के वस्त्राहरण के समय उसकी रक्षा करना कृष्ण नहीं भूले! कुरुक्षेत्र में युद्ध की अग्नि भड़कना चाहती है; ख़ून के प्यासे योद्धा जान पर खेल कर समर-भूमि पर डटे हैं; भीषण दृश्य सम्मुख है जिसके ध्यान से रोंगटे खड़े हो जाते हैं; बाप, बेटे, भाई, दादा सब अपने ही आत्मीयों के रक्त से हाथ रँगने को पागल हो रहे हैं; सभी हतचेत हैं; सभी उन्मत्त हैं; हिंसा और स्वार्थ की अग्नि सभी के हृदय में प्रचण्ड वेग से धधक रही है। उन सबको देख कर अर्जुन धनुष पटक देता है, दुःख में भर कर कृष्ण से कहता है—महाराज मेरे हाथ से धनुष खिसका पड़ता है, चमड़ी जली जाती है, मन में उद्वेग आ रहे हैं, मैं खड़ा भी नहीं रह सकता। अपने स्वजनों को मार कर अपना श्रेय मैं नहीं चाहता। जिनके लिए हम राज्य, धन चाहते हैं, वे ही प्राणों का मोह छोड़ कर मरने पर डटे हैं! ये गुरु हैं, ये चाचा हैं, ये भतीजे हैं, ये भाई हैं, ये सम्बन्धी हैं; ये सब हमें मारने को तुले हुए हैं, यह सब जान कर भी हे मधुसूदन! इनको मार कर हम त्रिलोकी का भी राज्य नहीं चाहते। अर्जुन का ऐसा मोह देख कर कृष्ण मन ही मन हँसे। उनका मन तब भी पूर्ण-शान्त था; स्तब्ध था; और इसी कारण ऐसी गड़बड़ के समय में भी कृष्ण ने बड़े शान्त-भाव से गीता का महोपदेश अर्जुन को दिया। यह क्या साधारण बात है? बिना ब्रह्मचर्य की प्रतिष्ठा के ऐसा धैर्य! ऐसी अन्तर्दृष्टि; ऐसी स्थिरता आ सकती है क्या? कभी नहीं!

और चलो, मर्यादा-पुरुषोत्तम के ऊपर भी एक दृष्टि दो। उनका धैर्य, शान्ति, त्याग और दृढ़ता विचारते ही हृदय आनन्द से गद्गद हो जाता है। कैसा चित्र है—एक ओर प्रबल पराक्रमी दुर्जय रावण खड़ा है, लङ्का-सा कोट, समुद्र-सी खाई, बड़े-बड़े शूर-वीर जिसके रक्षक, जिनका काम ही हिंसा और कुटिलता है। कुम्भकर्ण-जैसा भाई, इन्द्रजीत-जैसा पुत्र सहायक है। दूसरी ओर क्या है? अकेले राम हैं, नङ्गा शिर है, नङ्गे पैर हैं, केवल हृदय में अपूर्व साहस और आत्मिक बल है। बस विजय की यह उपयुक्त सामग्री है। ऐसा मारा कि रावण का नाम-लेवा और पानी-देवा भी न बचा। सच है, ब्रह्मचर्य की बड़ी महिमा है।

जिस समय क्षत्रिय मदोन्मत्त होकर धर्म की मर्यादा को उल्लङ्घन कर चले थे, उन्हें अपने प्रबल-प्रताप से नाथने वाले परशुराम, और हिरण्यकश्यपु को केवल नाख़ूनों से चीर फेंकने वाले नृसिंहदेव—ये सब पूर्ण-ब्रह्मचर्य के ही प्रताप से अपना अटल आतङ्क संसार-पट पर मढ़ गए हैं। जिस भीष्म ने एक बार श्रीकृष्ण को भी प्रतिज्ञा-भङ्ग करा कर क्षुब्ध कर दिया था कौन नहीं जानता कि वे आदर्श ब्रह्मचारी थे? रावण के पुत्र मेघनाथ का जिसने हनन किया, उस केशरी का नाम कौन नहीं जानता? सुलोचना बड़ी पतिव्रता स्त्री थी, उसी के पातिव्रत्य-धर्म के बल से मेघनाथ अजेय हो गया था। उसके पास ख़बर पहुँची कि मेघनाथ मारा गया, तो उसने एकदम विश्वास करने से इनकार कर दिया। उसने कहा—राम में क्या शक्ति है कि मेरे पति को पराजित करे? जो बारह वर्ष नींद मार कर अखण्ड ब्रह्मचारी रहेगा वही कहीं उन्हें पराजित कर सकेगा? नहीं तो मेरे पति का बाल बाँका करने वाला किसी माता ने नहीं जन्मा है। उसकी प्रचण्ड मूर्ति, और तीक्ष्ण वाणी सुन कर दास-

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

दासी भय से थर-थर काँपने लगीं। उसका क्रोध सीमा से बाहर हो गया। उसे अपने पति की मृत्यु पर बिल्कुल विश्वास नहीं था। तब एक दासी ने हाथ बाँध कर कहा—देवी! सत्य ही लक्ष्मण ने आज उनका बध कर डाला है। बस, लक्ष्मण के नाम में ही बिजली का प्रभाव था। उसे सुनते ही सुलोचना का लाल मुख पीला पड़ गया, आँखों का प्रकाश बुझ कर अँधेरा छा गया, उद्दण्ड मुख नीचे झुक गया—"हाँ, तब तो मैं निश्चय विधवा हुई"—यही उसके मुख से निकला, और मूर्च्छिता हो, धरती पर गिर गई। उसे लक्ष्मण के ब्रह्मचर्य पर उतना ही विश्वास था जितना अपने पतिव्रत-धर्म पर!! और क्यों न हो? लक्ष्मण यती थे भी इसी प्रशंसा के योग्य? जिस समय राम सीता की तलाश में ऋष्यमूक पर्वत पर आते हैं, उस समय सुग्रीव कुछ आभूषण पहचानने को उन्हें देता है। उन्हें राम, लक्ष्मण को दिखा कर पहचानने को कहते हैं। पर लक्ष्मण क्या उत्तर देते हैं! सुनो :—

केयूरं नैव जानामि नैव जानामि कुण्डलम्।
नूपूराण्यैव जानामि नित्य पादानि वन्दनात्॥

"इन बाजूबन्दों को नहीं जानता क्योंकि कभी उनको नहीं देखा और न इन कुण्डलों को ही पहचानता हूँ। हाँ उन बिछुवों को जानता हूँ, क्योंकि चरण-वन्दना करती बार नित्य देखा करता था।" यह लक्ष्मण यती के वाक्य हैं जो भाभी के लिए उन्होंने कहे थे। वे वीर मेघनाथ क्या, समस्त विश्व को विजय कर सकते थे। सच है ब्रह्मचारी को क्या दुर्लभ है!

बाल्यावस्था से जिनको बड़े-बड़े सिद्ध मुनियों में उच्चासन मिलता था ऐसे प्रबल दिव्य-ब्रह्मचारी व्यास-पुत्र शुकदेव का नाम सभी हिन्दू जानते होंगे। जिस समय वे पिता के आश्रम से निकल कर, विरक्त होकर वन को चले, मार्ग ही में गङ्गा पार करनी पड़ी। तब कितनी ही नग्न नहाती स्त्रियों ने उन्हें देखा और नहाती रहीं। पर जब व्यास वहाँ उन्हें ढूँढ़ते-ढूँढ़ते पहुँचे तो स्त्रियों ने एकदम पर्दा कर लिया। व्यास बड़े चकित हुए। पुत्र-शोक तो भूल गए और कहा—"देवियो, यह क्या बात? पुत्र शुकदेव तुम्हारे बीच से निकल गया, पर तुमने पर्दा नहीं किया? और मैं वृद्ध हूँ, तुम सब मेरी पुत्री हो, फिर मुझ से क्या पर्दा?" स्त्रियों ने मुस्करा कर भक्तिपूर्वक व्यासदेव को प्रणाम किया और कहा—"देव! ऐसा कौन है जो परन्तप व्यास को न जानता हो! ऐसे तपस्वी के दर्शनों से सच्ची शान्ति मिलती है। परन्तु हे शान्ति-धाम मुनि! शुकदेव युवा है तो क्या हुआ, वह जानता नहीं कि हम स्त्रियाँ हैं और किस काम में लाई जाती हैं और आप सब-कुछ होने पर भी हमें जानते हैं, हम उपयोग भी जानते हैं, इसीसे हमने आपसे पर्दा किया है, आप क्षमा करें।" अहा! ऐसे ब्रह्मचारी युवा की पूजा न करें तो किसकी करेंगे? ऋषि क्या, वह ब्रह्मचारी त्रैलोक्य पूज्य है। हा! कब उनका पद-रज भारत के मस्तक पर फिर नसीब होगा?

पूज्यपाद शङ्कराचार्य ने अखण्डित ब्रह्मचर्य का असाधारण प्रभाव जगत् को दिखा दिया है। उनकी अद्भुत बुद्धि-वैलक्षण्य का पता उपनिषद्, व्यास-सूत्र, गीता के गहन पुस्तकों पर भाष्य देख कर लगता है, जिनमें किसी से भी खण्डन न किए जाने वाले अद्वैत सिद्धान्त का प्रतिपादन किया गया है। जिस समय समस्त जगत् पर वेद-विरोधी जनों का प्रबल राज्य था और संसार का सिर जिनके लिए उस समय झुक गया था, उसी समय धुरन्धर और विद्वान् तेजस्वी ब्रह्मचारी ने उनके बल तोड़-मरोड़ कर ऐसा दलित किया कि आज तक कोई उसे न जोड़ सका। कहना नहीं होगा कि यह सब ब्रह्मचर्य के बल ही से था।

दूर कहाँ जायँ? जिस समय समस्त भारत में खलबली मची थी, वैदिक-धर्म का तैल रहित दीपक टिमटिमा रहा था, ढेर के ढेर हिन्दू धड़ाधड़ मुसलमान ईसाई हो रहे थे, हिन्दुओं के शिखा-सूत्र पर घोर आपत्ति आने को थी, अविद्या का अन्धकार प्रबल था—उसी समय एक प्रभावशाली व्यक्ति ने उस बहते प्रभाव में एक ऐसी ठोकर लगाई कि सारा संसार चकित हो गया। वह वीर 'कार्य्यं न साधयामि शरीरं वा पातयामि' कह कर कर्म-क्षेत्र में कूद पड़ा। गति का प्रवाह एकदम फिर गया। मरी हिन्दू-जाति जी उठी, जी उठी, वरन् इस योग्य हो गई कि शत्रुओं का मुँह मुक़ाबला कर सके। इस यति का नाम दयानन्द था। उन्नीसवीं सदी का सारा संसार एक स्वर से हाँ में हाँ मिला कर इस ब्रह्मचारी के प्रबल प्रताप को स्वीकार करेगा।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

ब्रह्मचारियों की हमने इतनी महिमा गाई है। इसका अन्त कहीं नहीं है। हमें यही कहना है कि इन सबके हमारे जैसे ही हाथ, पैर, मुख, बुद्धि थी। अन्तर था तो इतना ही कि वे सब ब्रह्मचर्य-व्रत पर आरूढ़ थे और हम व्रत-भङ्ग हैं। इसलिए संसार में वे अमर हो गए और हम कौवों, कुत्तों की मौत मर रहे हैं! ऐसी आवश्यक प्रथा का नाश होना किसको न अखरेगा? जिसे जातित्व का अभिमान है, जिसमें वंश-मर्यादा की प्रतिष्ठा है, जिसके मन में पूर्वजों के अनुकरण करने के हौसले हैं, वह इस अमूल्य पथ से ऋषि-सन्तान को भ्रष्ट देख कर कैसे जीवित रह सकता है? कैसे उसे चैन पड़ सकता है? उसकी छाती पर विषैला छुरा खुपा पड़ा रहे और उसे चैन पड़े, यह कैसे हो सकता है? बाल-विवाह की निकृष्ट प्रथा द्वारा ब्रह्मचर्य का लोप कर, विद्याभ्यास में बाधा डाल, समस्त वृद्धि का ही मूलोच्छेद किया जा रहा है। हाय! यह बड़े ही सङ्कट की बात है। ईश्वर हमें सुबुद्धि दे!

प्राचीन काल में गुरुकुलों की सुन्दर परिपाटी देश भर में थी। ये गुरुकुल एकान्त वनों में होते थे, इनके आचार्य पूर्ण विद्वान्, जितेन्द्रिय और तपस्वी होते थे। राजा और रङ्क सबके बालक यहाँ एक समान भाव से रहते और विद्याध्ययन करते थे। कृष्ण और सुदामा की अपूर्व मैत्री इन्हीं गुरुकुलों की बदौलत हुई थी। यहाँ नागरिक जीवन की दुर्गन्ध और निकम्मे दृश्य देखने को न मिलते थे। यहाँ बचपन से भरपूर जवानी तक लड़के-लड़कियाँ आनन्द, उत्साह और शान्ति से शरीर और आत्मा को पुष्ट बनाते थे। और फिर वे सच्चे गृहस्थ बन कर जीवन के चार फल धर्म-अर्थ-काम-मोक्ष की प्राप्ति करते थे। ऋषि दयानन्द ने संस्कार-विधि में उपनयन संस्कार के समय ब्रह्मचारी को जो सुन्दर उपदेश किया है, वह इस प्रकार है :—

"तू आज से ब्रह्मचारी है। नित्य सन्ध्योपासना किया कर। भोजन से पूर्व शुद्ध जल का आचमन किया कर। दुष्ट कर्मों को छोड़, धर्म किया कर। दिन में शयन कभी मत कर। आचार्य के अधीन रह कर नित्य साङ्गोपाङ्ग वेद पढ़ने में पुरुषार्थ किया कर। एक-एक वेद साङ्गोपाङ्ग पढ़ने के लिए १२ वर्ष—कुल ४८ वर्ष चाहिए। जब तक तू पूरे तौर से वेदों को न पढ़ ले, अखण्ड ब्रह्मचारी रह। आचार्य के अधीन धर्माचरण में रहा कर। परन्तु यदि आचार्य अधर्म और मिथ्या उपदेश करे तो उसे कभी न कर। क्रोध और मिथ्याभाषण मत कर। आठ प्रकार के मैथुन—स्त्री का स्मरण, कीर्तन, केलि, प्रेक्षण, गुह्य-भाषण, सङ्कल्प, अध्यवसाय और क्रिया-निवृति से बचा रह। भूमि में शयन करना, पलँग पर न सोना। गाना, बजाना, नृत्य, गन्ध, अञ्जन, अति स्नान, अति भोजन, अति निद्रा, अति जागरण, निद्रा, लोभ, मोह, भय, शोक, कुविचार मत ग्रहण कर। रात्रि के चौथे पहर में जाग। नित्य-क्रिया स्नानादि से निवृत्त हो ईश-प्रार्थना और उपासना नित्य किया कर। मांस, रूखा-सूखा अन्न, मद्य मत सेवन कर। तेल मत मल। अति खट्टा, तीखा, कषैला, क्षार और रेचक द्रव्य मत सेवन कर। नित्य युक्ति से आहार-विहार करके सुशील और थोड़ा बोलने वाला बन, तथा सभा में बैठने योग्य गुण ग्रहण कर।"

क्या ही अच्छा हो कि देश भर के माता-पिता और गुरु अपने बच्चों को इन उपदेशों पर चलाने की चेष्टा करें।

* * *

पर्दा

अत्यन्त प्राचीन काल में, जब मनुष्य-जाति आज की तरह सभ्य नहीं हुई थी और वस्त्रों का निर्माण नहीं हुआ था—तब मनुष्य पशुओं की तरह नङ्गे रहते थे। शुभ्र-आकाश के नीचे प्रकृति-देवी की गोद में वस्त्र-रहित विचरण करना, फल-मूल खाना, उस काल के स्त्री-पुरुषों का स्वाभाविक जीवन था।

धीरे-धीरे मनुष्यों के हृदयों में भावुकता उत्पन्न होने लगी और शरीर को सजाने तथा कृत्रिम रीति से रँगने की रीति चली। उन्होंने रङ्ग-विरङ्गी मिट्टी से शरीर को रँगना शुरू किया। बाद में उन्होंने गोदने गुदवा कर शरीर पर स्थायी रङ्गीन चिन्ह अङ्कित करने भी सीख लिए।

इसके बाद उन्होंने यह पसन्द किया कि केवल रङ्ग लगाने की अपेक्षा पत्तियों, वृक्षों की छालों, पशु-चर्मों से शरीर को जहाँ-तहाँ से ढक लिया जाय, जिससे चाहे

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

जब ये आवरण उतार दिए जायँ और चाहे जब बदल लिए जायँ।

इस समय तक 'गुप्ताङ्ग' की तरफ़ किसी का ध्यान न था। पुरुष और स्त्रियाँ प्रायः टाँग, सिर एवं गर्दन को विविध वस्तु लपेट कर ढकते और सजाते थे—गुप्ताङ्गों को प्रायः खुला छोड़ देते थे। परन्तु शीघ्र ही उन्होंने देखा कि शरीर में उपस्थेन्द्रिय अधिक कोमल है और उसकी रक्षा की ख़ास तौर से आवश्यकता है। इसके सिवा मल-मूत्र विसर्जन करना भी एक ऐसी आवश्यकता थी, जिसे मनुष्य विचारशील होने के कारण एकान्त में करना उचित समझने लगे। सर्वत्र मल-मूत्र विसर्जन करने से घृणा उत्पन्न होने का भय था। फिर उन अङ्गों को शुद्ध करना भी आवश्यक था। इन सभी बातों के कारण इन अङ्गों को गुप्त रखने, ढकने आदि की तरफ़ मनुष्य-समाज का ध्यान बढ़ चला।

लज्जा अब तक उत्पन्न नहीं हुई थी। पर यह बात अनुभव से देखी गई कि इन अवयवों को यत्न से ढकने पर काम के वेग को उत्तेजना मिलती है। इस अनैसर्गिक उत्तेजना के प्रादुर्भाव ने स्त्री-पुरुषों में गुप्ताङ्गों को यत्नपूर्वक ढकने की रीति के साथ ही 'लज्जा' का भी समावेश कर दिया। इसके बाद ही वस्त्रों की कड़ी आवश्यकता ने वस्त्रों का आविष्कार करा दिया, और मनुष्य-जाति सभ्यता के युग में एक क़दम आगे बढ़ी।

सभ्यता के इस प्रथम-चरण-काल में स्त्रियों का स्थान पुरुषों से श्रेष्ठ था। शारीरिक बल में वे पुरुषों के समान थीं। आज भी ब्रिटिश कोलम्बिया के आदिम निवासियों की स्त्रियाँ पुरुषों के समान ही शिकारिणी होती हैं। तसमानिया में मछली पकड़ने और ऊँचे-ऊँचे दरख़्तों पर चढ़ने में पुरुष स्त्रियों का मुक़ाबला नहीं कर सकते। प्रायः पृथ्वी भर में प्राचीन जातियों की स्त्रियाँ आवश्यकता पड़ने पर युद्ध में लड़ी हैं। अफ़्रीका के काङ्गो-प्रदेश की जङ्गली जाति की स्त्रियाँ पुरुषों के समान ही मज़बूत होती हैं और उतना ही बोझा ढो सकती हैं। उत्तर अमेरिका और न्यूगाइना की असभ्य जाति की स्त्रियाँ आज भी दो पुरुषों के बराबर काम करने की शक्ति रखती हैं। अरब, कुर्दिस्तान और रूस की अर्द्ध-सभ्य जातियों की स्त्रियाँ पुरुषों के बराबर क़द्दावर और पूरी सामर्थ्यवान् होती हैं।

यह हुई शरीर-सम्पत्ति की समानता की बात। उपयोगिता को लीजिए। उपयोगिता की दृष्टि से प्राचीन काल में पुरुषों की अपेक्षा स्त्रियाँ बढ़ी-चढ़ी थीं। पुरुष केवल शिकार मारने, मछली पकड़ने एवं युद्ध के उपयोगी थे; परन्तु स्त्रियाँ सभ्यता के सभी आवश्यक पदार्थों की, जो आगे चल कर उद्योग-धन्धे और व्यापार के विशाल रूप में परिवर्तित हुए—एकमात्र अभिभावक थीं। मकान बनाना, चटाई बनाना, चमड़े के वस्त्र तैयार करना, भोजन पकाना, खेती करना, नाव बनाना, सूत कातना, कपड़े बुनना और बर्तन बनाना आदि सारे धन्धे उस युग में स्त्रियों को करने पड़ते थे।

धीरे-धीरे स्त्रियाँ पुरुषों की अपेक्षा अधिक सहिष्णु और कर्मठ होने के कारण युद्ध और आखेट से हट कर अपनी पूर्ण शक्ति से उपरोक्त कला-कौशल में लग गईं। कला-कौशल पर उनका पूर्ण प्रभुत्व हो गया। चूँकि स्त्रियाँ पुरुषों की अपेक्षा अधिक शान्ति-प्रिय थीं, इस कारण वे धीरे-धीरे घरेलू होती गईं। मानवीय सभ्यता ने इस प्रकार दूसरे युग में प्रवेश किया।

परन्तु कृषि और कला-कौशल ने मनुष्य-समाज को स्थायी रूप से एक स्थान पर रहने को विवश किया। उन्होंने घर बनाए। धीरे-धीरे घर अधिकाधिक पक्के, स्थायी और विशाल होते गए, और चूँकि एक जगह रह कर विविध कारीगरी की वस्तुएँ बनाना स्त्रियों का काम था—वे उन घरों में अधिक देर तक स्थिर रहने लगीं। पुरुष अब भी शिकार और युद्ध के उपयोगी थे; इसलिए वे भ्रमणशील बने रहे। फलतः स्त्रियाँ पुरुषों से सम्पत्ति में दुर्बल और कोमल बनती गईं। साहसिक कार्यों की कमी से वे नाज़ुक होने लगीं।

मातृत्व अर्थात् प्रसव की स्वाभाविक विशेषता ने उन्हें और भी कमज़ोर बना दिया। इस प्रकार स्त्रियाँ पुरुषों की अपेक्षा धीरे-धीरे कमज़ोर और घरेलू होने लगीं। इस युग में बराबर युद्ध होते थे, और वे अब केवल पुरुषों के हाथ में रह गए थे। इस प्रकार पुरुष स्त्रियों के रक्षक बन गए। स्त्री और पुरुष अब दो भिन्न-भिन्न भावों में थे। घर और बच्चों की सँभाल स्त्रियों पर ही थी। सम्पत्ति का उत्तराधिकार भी स्त्री को ही प्राप्त था—इसलिए वे और भी घरेलू बन गईं। यह सभ्यता का तीसरा युग था।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

अब विस्तृत समाज का विस्तार हुआ—नगर बनने और बसने लगे, युद्धों की अपेक्षा नागरिक जीवन अधिक पसन्द किया जाने लगा। पुरुषों ने राष्ट्रों का निर्माण किया, उद्योग-धन्धों को व्यापार से मिला कर उसमें नया चमत्कार पैदा कर दिया। धीरे-धीरे साधारण युद्ध बन्द हुए। पर पुरुष जो बलवान् और उद्दण्ड बन गए थे और स्त्रियाँ जो परिश्रमी और सहिष्णु बन गई थीं—तथा शरीर, सम्पत्ति खो चुकी थीं—उनका परस्पर का सम्बन्ध असमान हो गया। पुरुष स्त्रियों का स्वामी बन गया और स्त्रियाँ अपने सौजन्य और स्वभाव की मृदुता के कारण पुरुषों के अधीन हो गईं। स्त्रियों का अब एक यह काम भी प्रधान हो गया कि वे पुरुषों को अधिक आराम दें। अब पुरुषों से स्त्रियों का स्थिर सम्बन्ध होना भी आवश्यक हो गया और विवाह-सूत्र की रचना हुई—तब स्त्री 'पत्नी' और पुरुष 'पति' बना।

'पति' 'पत्नी' का नैतिक सम्बन्ध बहुत काल तक ऐसा रहा जिसमें स्त्रियों को सम्मानयुक्त अधिकार और मनुष्योचित एवं नागरिक स्वातन्त्र्य प्राप्त था—यह सभ्यता का चौथा युग था। परन्तु प्रभुत्व मिट्टी का भी बुरा होता है! पुरुष के प्रभुत्व के आगे स्त्रियों का सिर झुका कि झुकता ही चला गया। उनके जीवन-क्रम ने उनकी शारीरिक और मानसिक विकास-शक्ति को दबा दिया। अन्ततः स्त्रियाँ पुरुषों की सम्पत्ति बन गईं। ऐसी दशा में वे अधिक सावधानी से रक्खी जाने लगीं। एक-एक पुरुष अनेक स्त्रियों का स्वामी बन गया। वह उन्हें बेच सकता, गिरवी रख सकता, जुए में दाँव पर लगा सकता एवं मरने पर उन्हें जीवित अपने साथ चिता पर जला सकता, क़ब्र में गाड़ सकता था। यह भयानक एकाधिपत्य स्त्री, माता, पुत्री, परिजन आदि में फट पड़ा। सर्वत्र स्त्रियाँ भयानक रूप से पुरुषों की ऐसी सम्पत्ति बन गईं जिनका कोई स्वतन्त्र जीवन ही न था। सम्पत्ति और पुत्रियों का पति के घर जाना, इन दो विषम घटनाओं ने स्त्रियों की तरफ़ से पुरुषों को और भी सतर्क कर दिया, और उनके अधिकार बड़ी कड़ाई और दूरदर्शिता से सङ्कुचित किए जाने लगे।

जब स्त्रियों की ऐसी पतित दशा हो गई तो उनका सम्मान भी जाता रहा। वे एक प्रकार से बिना उज्र आज्ञाकारिणी दासियाँ बन गईं। तब समाज ने उनका नैतिक-तिरस्कार करना शुरू कर दिया। पुरुषों की आत्मिक उन्नति में स्त्रियाँ बाधक समझी जाने लगीं। पुरुष को पुण्य से खींच कर नरक में ले जाने वाली स्त्रियाँ समझी जाने लगीं। बड़े-बड़े नीतिकार और पण्डितों ने निर्लज्ज बन कर यहाँ तक कह डाला कि—"ये स्वभाव ही से अविश्वासिनी, चरित्रहीन, चञ्चल और मूर्ख होती हैं। इन्हें सदा डण्डे के ज़ोर से रखना चाहिए—ये कभी स्वतन्त्र न होने पावें।" पृथ्वी भर की सभी जातियों ने यथा—भारत, चीन, जापान, रोम, ईरान, यूनान ने स्त्रियों के विषय में एक ही राय गढ़ ली कि उन्हें सदैव दबा कर रक्खो। जापान की संस्कृति में स्त्रियों के लिए कड़ा पहरा है। भगवान् बुद्ध ने अपने शिष्यों को स्त्रियों का मुख तक देखने की आज्ञा नहीं दी थी। मनु महाराज उन्हें ख़ूब कड़ाई से वश में रखने की सम्मति देते हैं। भगवान् दत्तात्रेय तो उन्हें मदिरा ही बताते हैं। तुलसीदास जी कहते हैं—उन्हें ढोल की तरह पीटना चाहिए। वे अन्धे, काने, कुबड़े, अपाहिज, कोढ़ी, कामी, लुच्चे—सभी प्रकार के पति को स्त्री का पूज्य बताते हैं। उनकी राय-शरीफ़ में ऐसे बदमाश और अयोग्य पतियों का अपमान करने पर भी स्त्री नरक को जाती है। मसीह कहते हैं—स्त्रियों को अपने आपको उसी प्रकार पुरुषों को समर्पण करना चाहिए, जैसे परमेश्वर को—क्योंकि पुरुष स्त्री का स्वामी है। मुहम्मद साहब फ़र्माते हैं—स्त्रियाँ मूर्तिमती दुर्बलता हैं। शेक्सपियर कहता है—ओ व्यभिचारिणी, तेरा नाम ही स्त्री है! जर्मनी का प्रसिद्ध दार्शनिक शॉपनहार कहता है—ऐसी कोई बुराई नहीं, जो स्त्रियाँ न कर सकती हों। महान् और पूज्य पुरुषों के इन विधानों ने स्त्रियों के समस्त अधिकार छीन लिए और स्त्रियों को दबा कर, छिपा कर हर तरह सुरक्षित रखने की पूरी-पूरी चेष्टा सब तरफ़ से की जाने लगी। यह सभ्यता का पाँचवाँ युग था।

मुँह ढकना या पर्दा, इन्हीं अन्यायपूर्ण बातों के आधार पर निर्माण हुआ; यद्यपि प्राचीन असभ्य जातियों में भी मुख ढकने के उदाहरण पाए जाते हैं। न्यूगाइना टापू की आदिम जातियों में रजस्वला होने के बाद से विवाह होने तक लड़कियों का मुख ताड़ की पत्तियों से ढक दिया जाता था, और सिवा निकट सम्बन्धियों के उनसे कोई नहीं मिल सकता था। क्रीमिया में रजस्वला पर्दे में रक्खी जाती थीं और सिवा

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

स्त्रियों के उनके पास कोई नहीं जा सकता था। यही बात जापान, कॉकेशस, उत्तरीय अमेरिका की असभ्य जातियों में भी थी। आयुर्वेद में भी रजस्वला के लिए ऐसे ही कठोर आचरण लिखे हैं। हम नहीं जानते कि उन सब बातों का वैसा अद्भुत प्रभाव पड़ता है या नहीं, जैसा कि वहाँ लिखा है। परन्तु रजस्वला को अपने पति तक का मुख देखने का निषेध आयुर्वेद में है।

वह अस्थायी पर्दा मालूम होता है—नवीन आवश्यकताओं ने उसे स्थायी बना दिया। एक रोमन लेखक का कहना है कि प्राचीन काल में यूनानी लोग स्त्रियों को पर्दे में रखते थे। उन्हें निमन्त्रणों या मेलों में जाने का निषेध था और न वे अन्य पुरुषों से मिल सकती थीं।

प्रसिद्ध रोमन विद्वान् प्लिनी, जो मसीह से २३ वर्ष बाद पैदा हुआ था, एक घटना का वर्णन करता है कि एथेन्स के नागरिकों का चरित्र भ्रष्ट करने के अपराध में एक सुन्दरी पर अदालत में मुक़दमा चलाया गया। जब उस पर विचार होने लगा तो उसके वकील ने हठात् उसके मुख का पर्दा हटा दिया! उस असाधारण सौन्दर्य के कारण ही उसे निर्दोष मान लिया गया और छोड़ दिया गया। मन्चूरिया, मङ्गोलिया और चीन में स्त्रियाँ पर्दे में रहती थीं। कोरिया में यह रिवाज था कि रात्रि में एक घण्टा बजता था, तब सब पुरुष घरों में घुस जाते थे और स्त्रियाँ बाहर निकल आती थीं। दिन में उन्हें यदि निकलना होता तो एक बुर्क़ा पहनना पड़ता था। चीन और कोरिया में विवाह-वेदी पर कन्या घूँघट निकाल कर आती थी।

वाल्मीकि-रामायण और महाभारत में ऐसे प्रमाण मिलते हैं, जिनसे पता लगता है कि प्रतिष्ठित स्त्रियाँ उस काल में पर्दा करने लगी थीं। वे आम तौर से बाहर नहीं आती थीं। शकुन्तला भी घूँघट काढ़ कर दुष्यन्त के दरबार में गई थी। ये सारे प्रमाण ईसा के जन्म के लगभग भारत की पर्दा-प्रथा को प्रकट करते हैं।

ईरान प्रथम अनेक सरदारों में विभक्त था। वे परस्पर लड़ते और एक दूसरे की सुन्दरी स्त्रियों को छीन कर उन्हें कड़े पहरे में क़िलों में रखते थे। धीरे-धीरे ये क़िले हरम बन गए। ख़ोजों की उत्पत्ति भी ईरान से हुई है। यह बात मुहम्मद साहब के जन्म से पहले की है।

प्रसिद्ध इतिहासज्ञ बुख़ारी का कहना है कि अरब में पर्दा न था—उसका चलन चङ्गेज़ ख़ाँ ने चलाया, मङ्गोल था और बौद्ध मतवादी था। टर्की में भी मङ्गोल के कारण पर्दा चला। मङ्गोलों ने अरब, ईरान से स्पेन तक अपने राज्य क़ायम किए थे।

मिश्र की स्त्रियाँ नाक के नीचे मुँह ढकती थीं। बातें सबसे करती थीं। जापान और इङ्गलैण्ड में शताब्दी पूर्व तक स्त्रियों के पर्दे का ख़्याल था जाता था।

वेद का मत भारतीय दृष्टि से सबसे बड़ा रखता है। वेद आर्यों के प्रारम्भिक उत्कर्ष का द्योतक ऋग्वेद से यह पता लगता है कि उस काल में आर्य नहीं करते थे। विवाह-काल में वर-वधू स्वयम् आबद्ध होते थे। विवाह-पद्धति इस विषय की साक्षी पर भारत में पर्दा दो हज़ार वर्ष के लगभग से किसी किसी रूप में रहा है, यह बात हम स्वीकार करते हैं। बात हमें स्वीकार करनी पड़ेगी कि कवि ने अपनी में यदि किसी प्राचीन कथा का वर्णन किया है, तो उसने अपने काल की सभ्यता का पुट तो अवश्य ही है। जैसे कालिदास शकुन्तला को घूँघट में लिखता है, जिससे प्रकट होता है कि उस समय पर्दा-प्रथा का अस्तित्व था। उपनिषदों, और महाभारत में हमें इस बात के भी यथेष्ट मिलते हैं कि यद्यपि स्त्रियाँ एक प्रकार से अन्तःवासिनी होती थीं, पर वे आजकल की तरह पिंजरे की बन्दिनी न थीं! ब्रह्मवादिनी गार्गी का याज्ञवल्क्य से कैकेयी का घोर युद्ध में जाना, सीता का वन विराट का भरी सभा में द्रौपदी का परिचय इस द्योतक है। शङ्कराचार्य ने स्त्रियों से शास्त्रार्थ किया मेगस्थनीज़ ने भी स्त्रियों को युद्ध करते और घूमते देखा था।

उपरोक्त सारी बातों पर विचार करने पर हम तथ्य पर पहुँचते हैं कि स्त्रियों के प्रति तुच्छता के उत्पन्न होने पर, तथा पुरुषों के उन्हें अपनी सम्पत्ति झने के कारण, उनकी रक्षा के लिए जो-जो उपाय पड़े—पर्दा उनमें से एक है। वर्त्तमान पर्दा-काल में कि कुछ स्त्रियाँ बिना पर्दे के दीख पड़ती हैं, प्राचीन में भी ऐसा ही हाल था।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

बागाँ में चाली

नवल बन बागाँ में चालो । बागाँ में की दाख चरोरी थारे सैंया ने बाँटो ।
दरजी भँवर जी को भायलो जी कई सुई कतरनी हाथ ।
आछी सींवजो काँचली जी कई फरे भँवर जी को हाथ जीर ङ्ग रसिया भँवर जी ।
जयपुर जाओ तो घेवर लावजो ।
म्हारी घणी प्यारी जी, घेवर जीमो तो सजी आवजो ।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

जननी जीवन

स्त्रियों के लिए अनमोल पुस्तक

पुस्तक की उपयोगिता नाम ही से प्रकट है। इसके सुयोग्य लेखक ने यह पुस्तक लिख कर महिला-जाति के साथ जो उपकार किया है, वह भारतीय महिलाएँ सदा स्मरण रक्खेंगी। घर-गृहस्थी से सम्बन्ध रखने वाली प्रायः प्रत्येक बातों का वर्णन पति-पत्नी के सम्वाद-रूप में किया गया है। लेखक की इस दूरदर्शिता से पुस्तक इतनी रोचक हो गई है कि इसे एक बार उठाकर छोड़ने की इच्छा नहीं होती। पुस्तक पढ़ने से "गागर में सागर" वाली लोकोक्ति का परिचय मिलता है।

इस छोटी सी पुस्तक में कुल २० अध्याय हैं; जिनके शीर्षक ये हैं :—

(१) अच्छी माता (२) आलस्य और विलासिता (३) परिश्रम (४) प्रसूतिका स्त्री का भोजन (५) आमोद-प्रमोद (६) माता और धाय (७) बच्चों को दूध पिलाना (८) दूध छुड़ाना (९) गर्भवती या भावी माता (१०) दूध के विषय में माता की सावधानी (११) मल-मूत्र के विषय में माता की जानकारी (१२) बच्चों की नींद (१३) शिशु-पालन (१४) पुत्र और कन्या के साथ माता का सम्बन्ध (१५) माता का स्नेह (१६) माता का सांसारिक ज्ञान (१७) आदर्श माता (१८) सन्तान को माता का शिक्षा-दान (१९) माता की सेवा-शुश्रूषा (२०) माता की पूजा।

इस छोटी सी सूची को देख कर ही आप पुस्तक की उपादेयता का अनुमान लगा सकते हैं। इस पुस्तक की एक प्रति प्रत्येक सद्गृहस्थ के घर में होनी चाहिए। साफ़ और सुन्दर मोटे काग़ज़ पर छपी हुई इस परमोपयोगी सजिल्द पुस्तक का मूल्य केवल १।); स्थायी-ग्राहकों से ॥।≡) मात्र!

'चाँद' कार्यालय, इलाहाबाद

घरेलू चिकित्सा

[ले० अनेक सुविख्यात डॉक्टर, वैद्य और हकीम]

'चाँद' के प्रत्येक अङ्क में बड़े-बड़े नामी डॉक्टरों, वैद्यों और अनुभवी बड़े-बूढ़ों द्वारा लिखे गए हज़ारों अनमोल नुस्ख़े प्रकाशित हुए हैं, जिनसे सर्व-साधारण का बहुत-कुछ मङ्गल हुआ है, और जनता ने इन नुस्ख़ों की सचाई तथा इनके प्रयोग से होने वाले लाभ की मुक्त-कण्ठ से प्रशंसा की है। मोटे चिकने काग़ज़ पर छपी हुई पुस्तक का मूल्य केवल ॥।) है। स्थायी-ग्राहकों से ॥-) मात्र!

उपयोगी चिकित्सा

[ले० प्रोफ़ेसर पं० धर्मानन्द जी, शास्त्री आयुर्वेदाचार्य]

इस पुस्तक को आद्योपान्त एक बार पढ़ लेने से फिर आपको डॉक्टरों की ख़ुशामदें न करनी होंगी—इस पुस्तक में रोगों की उत्पत्ति का कारण, उसकी पूरी व्याख्या, उनसे बचने के उपाय तथा इलाज भी दिए गए हैं। रोगी की परिचर्या किस प्रकार करनी चाहिए इसकी भी भरपूर व्याख्या आपको मिलेगी। स्त्रियों के लिए तो यह पुस्तक बड़े काम की है। सजिल्द पुस्तक का मूल्य केवल १॥) रु०; स्थायी ग्राहकों के लिए १=)

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

परन्तु हमारे विचार का तो यह विषय ही नहीं। उपरोक्त विवरण हमने सिर्फ़ इसलिए दिया है कि जिससे हमारे पाठकों को इस बात की कुछ धारणा हो जाय कि किस तरह स्त्रियों को इस अत्याचार के लिए राज़ी किया गया है। आज नौबत यहाँ तक आई है कि स्त्रियाँ स्वयं इस क़ैद और अपमान को त्यागने में सङ्कोच करती हैं!

आज पृथ्वी की उन जातियों ने पर्दा फाड़ फेंका है, जिन्होंने इसे पृथ्वी पर प्रचारित किया था। पर्दे को फाड़ते ही तुर्कों की प्रचण्ड शक्ति उदय हो गई है। मिश्र इस पर्दे के पाप से अपनी महिलाओं का उद्धार करके उन्हें नवीन जीवन दे रहा है। अफ़ग़ानिस्तान के साहसी राजा ने पीढ़ियों से पर्दे की अभ्यस्त महारानी को सारे यूरोप में स्वच्छन्द वायु लगने के लिए उन्मुक्त करके संसार को चकित कर दिया और उस सिद्धान्त के लिए पैतृक सिंहासन को भी लात मार दी। चीन और कोरिया की स्त्री-समाज ने पर्दा चीर कर देश की स्वाधीनता के युद्ध में बराबरी का भाग लेना शुरू कर दिया है। सीरिया में सहस्रों वर्ष की पिछड़ी जातियों ने पर्दे की विनाशकारी कुप्रथा को कुचल डाला है। फिर भारतवर्ष की माताओं पर यह ज़ुल्म कब तक? बालिकाओं पर यह ज़ुल्म कब तक? पत्नियों और बहिनों पर यह ज़ुल्म कब तक होता रहेगा?

भारतवर्ष में हिन्दू-मुसलमान सभी जातियों में पर्दे का रिवाज है। परन्तु मुसलमानों ने पर्दे में भी एक सौन्दर्य, व्यवस्था और पद्धति निकाल ली है। हिन्दुओं में भी अन्य जाति की स्त्रियाँ जो पर्दा करती हैं, उनमें एक सलीक़ा होता है। परन्तु हमें दुःख से कहना पड़ता है कि मारवाड़ी-परिवारों में पर्दा भी ऐसा भद्दा है कि ईश्वर ही रक्षा करे। पाठक इस अङ्क में पर्दे की बीसों बानगी देखेंगे। बहुधा मारवाड़ी-माताएँ और बहिनें बारीक धोतियाँ पहनना पसन्द करती हैं। धोतियों की खपत उत्तर भारत में मारवाड़ी-जाति को छोड़, शायद ही किसी जाति में इतनी अधिक हो। ऐसी बारीक धोती पहन कर आम-घाटों पर नहाना, स्टेशन के प्लेटफ़ॉर्मों पर नहाना बहुत ही लज्जास्पद है। फिर मारवाड़ी-महिलाएँ प्रायः चोली या काँचली ही पहनना यथेष्ट समझती हैं, उसके ऊपर कोई ऐसा वस्त्र, जो भुजाओं तथा कमर, पेट आदि अङ्गों को ठीक-ठीक ढक ले, नहीं पहनतीं। प्रायः ऐसा होता है कि जो महिलाएँ बहुत बारीक साड़ियाँ पहनती हैं, वे भीतर मोटे कपड़े का पेटीकोट, क़मीज़, ब्लाउज़ आदि अवश्य पहनती हैं। इन भीतरी वस्त्रों का मारवाड़ी-महिलाओं में बहुत कम रिवाज है। फलतः बारीक वस्त्र में से समस्त शरीर दीखता रहता है। रङ्गीन वस्त्रों और गोटे आदि चमकीली सजावटों का प्रचार भी मारवाड़ी-समाज में बहुत अधिक है। इस प्रकार का भड़कीला वेश, तिस पर बारीक वस्त्र, वास्तव में किसी भी प्रतिष्ठित महिला के लिए दोषपूर्ण समझा जाना चाहिए।

मारवाड़ी-समाज में मुँह पर कपड़ा डाल लेना ही यथेष्ट समझा जाता है—पेट या कमर यदि उघड़े रहें तो परवा नहीं। प्रायः मारवाड़ी-महिलाओं के पेट अनायास ही उघड़े रहते हैं और दृष्टि को अतिशय असभ्यतापूर्ण प्रतीत होते हैं।

प्रसिद्ध मारवाड़ी घाघरा इस बीसवीं शताब्दी में जीवित है—यह देख कर आश्चर्य की सीमा नहीं रहती! इतना भारी, इतना बेढब, इतना बड़ा, फिर लम्बाई में इतना ऊँचा कि आधी टाँगें साफ़ दीख पड़ें!! वास्तव में बड़े-बड़े नगरों में, जहाँ महिलाएँ सभ्य पुरुषों की दृष्टि में आदर की वस्तु समझी जाती हैं, हास्यास्पद है।

इस घूँघट के बीच से बोलना, गालियाँ गाना, पर-पुरुषों से हँसी करना इस पर्दे का दूसरा रुख़ है। हमने अजमेर में स्वयं यह लीला देखी है। वहाँ सील-सप्तमी का मेला होता है, जिसमें प्रातःकाल ही से सहस्रों स्त्रियाँ भिन्न-भिन्न प्रकार के खाने के सामान लेकर एक ख़ास बाज़ार में दूकानों और मकानों के चबूतरों पर टिड्डी-दल की तरह आ बैठती हैं। बाज़ार रङ्गीन हो जाता है। थोड़ी देर के बाद सगे-सम्बन्धी या ग़ैर-आदमी भी टोलियाँ बना कर, सज-धज कर, पान कचरते हुए जा पहुँचते हैं—और खड़े हो जाते हैं। स्त्रियाँ गालियाँ गाती हैं और वे सुनते हैं—प्रसन्न होते हैं। एक बार पुष्कर-महाक्षेत्र में हमने देखा कि ऐसे ही एक दल में शामिल एक प्रतिष्ठित दीवान-बहादुर सेठ, जिनकी उम्र ७५ वर्ष की थी, मेले पहुँचे और खड़े-खड़े गालियाँ गवाने लगे। अकस्मात् पोते जी भी अपने दल-बल सहित वहीं पहुँच गए और 'अरे उठे दादा जी साब ऊभा छे' कह कर दूसरी ओर को खसक गए!

मेवाड़ में हमने देखा है कि जब कोई मेहमान—ख़ास कर जमाई—आता है, तब उसे बाग़ में ले जाकर

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

ठण्ढाई पिलाई जाती है। वहाँ गाजे-बाजे के साथ १०-२० स्त्रियाँ और १०-२० पुरुष जाते हैं। भङ्ग पीकर ढोल की ताल पर स्त्रियाँ नाचती हैं—सहस्रों लोग देखते हैं। बीच चौक में प्रतिष्ठित घरों की महिलाओं को नाचते हमने मालवे के क़स्बों में देखा है। यह सब पर्दे और घूँघट के भीतर ही होता है—इस घूँघट और पर्दे पर लाख बार धिक्कार है!

यदि कोई ग़ैर-मारवाड़ी सज्जन मारवाड़ी भाइयों की शादी या ग़मी की जीमनवार (दावत) में पहुँच जायँ तो देखने योग्य दृश्य दीख पड़ता है। जगह-जगह से दस-दस, पाँच-पाँच स्त्रियाँ गीत गाती आती हैं और झुण्ड बना कर बैठ जाती हैं। न वस्त्रों का ख़्याल है, न आबरू का। नवयुवक उन्हें परोसते समय मज़ाक़ करते हैं—मज़ाक़ भी फ़ोश—और मज़ा लूटते हैं। परसने वाले का प्रश्न होता है—"घालूँशा?" अर्थात्—साहब! डाल दूँ। 'घालू' शब्द का अर्थ प्रवेश कराना भी है; और 'शा' शब्द प्रायः स्त्री-पुरुष सभी के लिए प्रतिष्ठा-सूचक है। उपरोक्त द्विअर्थक बात सुन कर स्त्रियाँ मुँहतोड़ जवाब देती हैं—"आगला तो उठवा द्यो!" अर्थात्—आगे का तो उठने दो। नमूने के लिए यही काफ़ी है।

इन उदाहरणों से यह बात बिना सङ्कोच के मान ली जा सकती है कि इस पर्दे के बीच में लज्जा का प्रश्न नहीं है—रीति-रिवाज का प्रश्न है। लोग प्रायः यही कहते हैं कि यह छुट कैसे सकता है? कैसे ग़ैर-मर्दों के सामने हमारी स्त्रियाँ निकलेंगी? लोग क्या कहेंगे? गुण्डे और लुच्चों की बन आवेगी। इन भाइयों को हमारा यह उत्तर है कि यदि स्त्री तेजवती हो और उसमें स्वावलम्बन हो तो लुच्चे-गुण्डों की मजाल उसका अपमान करने की नहीं हो सकती। एक स्त्री, जो घूँघट काढ़े चुपचाप मूढ़ की तरह चली आ रही है, गुण्डे यदि उसे छेड़ें तो वह सिवा इसके कि सब कुछ चुपचाप सहे जाय, कुछ नहीं कर सकती। परन्तु हमारा तो यह कहना है कि हमें अपनी स्त्रियों का घूँघट ही नहीं उघाड़ना है, बल्कि उनकी कलाइयों में से भारी-भारी गहने भी उतारने हैं—और उनके स्थान पर एक मज़बूत चाबुक देना है। इस चाबुक की उन्हें ज़रूरत है। किसी गुण्डे द्वारा अपमानित होने पर प्रत्येक महिला को यही उचित है कि शपाशप चाबुक उसके मुँह पर जड़ दे और विश्वास रक्खे कि सहस्रों पुरुष फिर उसके साहस तारीफ़ करेंगे। रही यह बात कि घर के और बाहर लोग देखेंगे, यह केवल मानसिक दुर्बलता है—देखते हैं ही, पर कुछ देखते हैं कुछ नहीं। इस देखने में क्या है—यह सोचना चाहिए।

पर्दा तन्दुरुस्ती का कितना घातक है, इसे यदि मान् विचार कर देखेंगे तो समझाने की ज़रूरत पड़ेगी। प्रत्येक पुरुष, हकीम-डॉक्टरों का ग़ुलाम हो है—हिस्टीरिया, ख़ून का पतला पड़ना, मन्दाग्नि, सीर, प्रदर, प्रसूत आदि अनेक रोगों की जड़ पर्दा पर्दे के रहते स्त्रियाँ पनप नहीं सकतीं!

अधिक उम्र की स्त्रियों को तो घूँघट की आदत जाती है, पर बालिकाएँ विवाहिता होकर जब बहू के ससुराल जाती हैं तब एकदम घूँघट का भयानक घोट पींजरा उनके लिए जान लेने वाला बन जाता शायद लोगों को यह पता नहीं कि मारवाड़ी-समाज नई बहुएँ सास के सामने भी घूँघट निकाल कर हैं तथा बोलने का भी हुक्म उन्हें नहीं होता। कैसे और अविचार की बात है कि माता-पिता के घर को कर कच्ची अवस्था की बालिकाएँ सास-ससुर के घर हैं, तब उचित तो यह था कि सास उन्हें पुत्री के स्वच्छन्दता, प्यार और स्वाभाविक तौर से रक्खे। विरुद्ध मुँह और वाणी पर ताला जड़ दिया जाता बेचारी गूँगी-बहरी बनी रहती हैं। प्रश्न का उत्तर टचकारे से देना पड़ता है। वृद्धा स्त्रियाँ और पुरुष सब हैं कि घूँघट उठा दिया जाय तथा बोलने की स्वाधीनता जाय तो मर्यादा नष्ट हो जायगी। यदि पुत्रियाँ अपने बाप के सामने खुले दिल से बातें करती हैं तो क्या मर्यादा नष्ट हो जाती है। इस मर्यादा के भी अद्भुत पैर हैं। भी बात का, चाहे कितनी भी नम्रता से जवाब दें मर्यादा टूट जाती है। भोजन करते समय कोई ससुर आगया, तो घूँघट चाहे जितना लम्बा हो, पर आगन्तुक को भेड़िया या सिंह समझ कर तत्काल सिकोड़ लिया तो मर्यादा भङ्ग हो गई! मार्ग चलते पहचान का कोई व्यक्ति मिल जाय तो घूँघट चाहे लम्बा हो, पर पीठ फेर कर खड़ी न हुई तो मर्यादा परन्तु घर के कहारों, धीवरों, नौकरों के सामने नहाना, उनसे शरीर पर पानी डलवाना, घाटों पर

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

जैसी अवस्था में नहाना, बिसाती, चूड़ी वाले, फेरा वाले, आदि से मुँह खोल कर चुहल करना—इनमें मर्यादा भङ्ग नहीं होती। यह कैसी अद्भुत सभ्यता है कि किसी बात के पूछने पर यदि मुख से उत्तर दिया जाय तो असभ्यता, पर पाँच सेर का सिर हिला दिया जाय, या हाथों से सङ्केत कर दिया जाय तो सभ्यता के अनुकूल!

कहाँ तक कहा जाय, यह तो मानना पड़ेगा कि मारवाड़ी-मांहलाओं का प्रवास करने से दूसरे प्रदेश की महिलाओं पर बड़ा प्रभाव पड़ा है—और पर्दे का वह रूप अब नहीं रह गया है, जो अब से १५-२० वर्ष प्रथम था। बम्बई-कलकत्ता में देखा गया है कि प्रायः मारवाड़ी-पगड़ी को देख कर ही घूँघट काढ़ा जाता है—अन्य पुरुषों से नहीं! हम देखते हैं कि समय अपना काम कर रहा है। जाति के बुद्धिमानों को यह बात सोच कर अपना कर्त्तव्य प्रथम से ही स्थिर कर लेना चाहिए।

ऐ देश के बुद्धिमान् पुरुषो! यदि तुम देश की रक्षा करने वाले फ़ौलादी बच्चों की नस्ल चाहते हो, तो उन बच्चों की इन पर्दे की बेड़ियों में बँधी स्त्रियों से आशा न करो। तुम्हारे बच्चों के सिर की चोटियाँ उड़ कर माथे की माँगें बन गईं; वीर युवक ज़नाने होगए; बढ़िया धुली क़मीज़ पहन कर, चुनी बारीक धोती लटका कर, सूखे गालों को तेल से चिकना करके वे पतली छड़ी लेकर निकलते हैं। यही देश के युवक हैं? यही हिन्दू-जाति के वृक्ष के बीच का गूदा हैं? इन्हीं के बल पर तुम संसार की आँधी और तूफ़ानों के झोंकों को सहने की हिम्मत रखते हो

यह माँग, यह ज़नाने फ़ैशन के कपड़े, यह नज़ाकत की चाल, यह भावपूर्ण बातों के ढङ्ग, यह मग़ज़ में घुसी हुई आँखें, यह निस्तेज चेहरा, यह मुर्ग़ी जैसी पतली गर्दन, यह पिचके गाल, यह आब रहित दाँत, यह मुर्दे जैसी सूखी छाती, और यह नली जैसी बाहें! ऐ देश के बुज़ुर्गो! बूढ़ो! पिताओ! भले आदमियो! सोते हो या मर गए हो? जीते हो या कुछ शक्ति बची है? कुछ ग़ैरत हो तो इन बच्चों की सूरत देखो। ये ज़नाने-जवान तुम्हारे घरों में क्या शोभा दे रहे हैं?

इसी हवा-मिट्टी में, इसी सूरज-चाँद के प्रकाश में, इसी आकाश की छाया में, इसी पुण्य-धरती पर, अब से कुछ प्रथम जो जवान उत्पन्न हुए थे उनका कुछ और ही नक़्शा था। नाहर जैसी छाती, तप्त अङ्गारे जैसी आँखें, सूर्य के समान मुँह, व्याघ्र के समान कमर और हाथी जैसी चाल थी।

वैसे बच्चे क्या तुम उन औरतों से पैदा कराना चाहते हो, जिन्हें तुमने बम्बई-कलकत्ते के घृणित, अँधेरे, गन्दे जेलख़ानों में जीवन भर के लिए बन्द कर रक्खा है—जो दो पतली चपातियाँ तब हज़म कर सकती हैं, जब डॉक्टर का डेढ़ रु० का नुस्ख़ा पी लें? भाइयो, तुम्हारे वंश-नाश के लिए तो बाल-विवाह ही काफ़ी था—इन बचपन में ज़बरदस्ती पाल में पकाई हुई अभागिनी स्त्रियों की, जिन्हें निर्दयता और मूर्खता से इन बड़े शहरों की जेल-जैसी हवेलियों में बन्द कर दिया गया है, क्या आवश्यकता थी? यह तो मानो समस्त जाति के आत्मघात की तैयारियाँ हैं!!

इस सम्बन्ध में महात्मा गाँधी का एक ज़ोरदार लेख, जो अभी उनके 'यङ्ग इण्डिया' में प्रकाशित हुआ है, अत्यन्त उपयोगी होने से यहाँ दिया जाता है:—

"मद्रास की सुप्रसिद्ध समाज-सेविका डॉक्टर मुथु-लक्ष्मी रेड्डी ने मेरे आन्ध्र देश वाले एक भाषण के बारे में एक लम्बा पत्र लिखा है। उसमें से नीचे लिखा उपयोगी अंश यहाँ दिया जाता है।

'बैजवाड़ा से गुन्तूर तक के अपने प्रवास में आपने समाज-सुधार की तात्कालिक आवश्यकता के बारे में, और साथ ही हम लोगों की रात-दिन की आदतों के आवश्यक सुधार के बारे में जो बातें कही हैं, उसका सचमुच मुझ पर गहरा असर पड़ा है। मैं आप से नम्रतापूर्वक निवेदन करती हूँ कि एक डॉक्टरी धन्धे के अनुभव-प्राप्त व्यक्ति की हैसियत से मैं आपके साथ पूरी तरह सहमत हूँ। मगर साथ ही नम्रतापूर्वक यह भी कहना चाहती हूँ कि अगर शिक्षा द्वारा समाज-सुधार, स्वच्छता और जनता का आरोग्य आदि शुभ परिणामों की आशा रक्खी जाती है, तो कहना चाहिए कि स्त्री-शिक्षा ही इसकी सफलता का एकमात्र उपाय है। क्या आप यह अनुभव नहीं करते कि वर्तमान सामाजिक स्थिति में बहुत कम स्त्रियों को शिक्षा का, शरीर और मन के सम्पूर्ण विकास का और अपने व्यक्तित्व को प्रकट करने का मौक़ा दिया जाता है?

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

'क्या आप यही मानते हैं कि सामाजिक रूढ़ियों के भार से स्त्रियों के व्यक्तित्व को निर्दयतापूर्वक कुचल दिया जाता है? क्या बाल-विवाह द्वारा उनका शारीरिक, बौद्धिक और आध्यात्मिक—तात्पर्य सब तरह का विकास मूल में ही नहीं रोक दिया जाता है? क्या बालिका-बहुओं और बालिका-माताओं की वेदना का, क्या विधवाओं और त्यक्ताओं के अपार दुःखों का शीघ्र ही कोई उपाय करने की आपको ज़रूरत नहीं मालूम पड़ती? क्या हिन्दू-समाज की उस रिवाज को क़ायम रहने देना या उसकी उपेक्षा करना उचित है, जिसके कारण निर्दोष हिन्दू-बालाएँ पतन की ओर ढकेल दी जाती हैं?

'प्राचीन भारतवर्ष की मैत्रेयी, गार्गी और सावित्री जैसी महिलाओं में शूरता और धैर्य का जो तेज था, स्वतन्त्र विचार करने और ज़िम्मेदारी के कामों को हाथ में लेने की जो शक्ति थी, और जो शक्ति आज भी ब्रह्म-समाज, आर्य-समाज अथवा थियोसफ़ी जैसे उदार सम्प्रदायों की (इन सम्प्रदायों से मतलब उस हिन्दू-धर्म से है, जो निरर्थक रूढ़ियों और विधि-विधानों के झन्झट से मुक्त हो चुका है) बहुतेरी स्त्रियों में पाई जाती है, वह तेज और वह शक्ति कतिपय अपवादों को छोड़ कर, भारत की शेष सारी स्त्रियों में इन सामाजिक अत्याचारों के कारण ढूँढ़े नहीं मिलती—उसका एकदम लोप हो गया है। क्या आप इसे अनुभव नहीं करते?

'क्या इस हालत में इन तमाम सामाजिक कुरीतियों के, जो हमारी राष्ट्रीय निर्बलता और हमारे वर्तमान अधः-पतन की मूल कारण हैं, नाश या सुधार का कोई मार्ग बहुत शीघ्र ही ढूँढ़ निकालने की लगन, हमारे राष्ट्रीय दल के लोगों में—मेरा मतलब महासभा के सदस्यों से है—नहीं होनी चाहिए? क्या उनका यह भी कर्तव्य नहीं है कि लोगों को समझाएँ कि मर्द, स्त्रियों को ग़ुलामी के बन्धनों से, जिनमें आज वे जकड़ी हुई हैं, मुक्त करें, जिससे स्त्रियाँ पूरी तरह अपने शारीरिक, मानसिक, नैतिक और आध्यात्मिक विकास की सिद्धि के लिए प्रयत्न कर सकें और शूरता तथा ज्ञान के उदाहरण पेश कर सकें। और इससे भी आगे बढ़ कर पुत्रियों और माताओं के नाते भारत के भावी शासकों की आदतों और उनके चरित्र को सुसंस्कृत बनाने, उसका निर्माण करने और उनकी रहनुमाई करने का अपना कर्तव्य पूरी और तरह पाल सकें?

'अगर महासभा के सदस्य स्वतन्त्रता को सा का और फलतः व्यक्ति-मात्र का जन्मसिद्ध अधिकार हों और चाहे जो क़ीमत देकर भी इस अधिकार का वे निश्चय कर चुके हों, तो क्या यह उनका नहीं है कि वे स्त्रियों को उन कुरीतियों के बन्धन से करें, जो उनके सर्वाङ्गीण विकास में बाधा डालता है जिसे वे स्वयम्, अगर चाहें, भली-भाँति कर सक हमारे कवियों, सन्तों और ऋषियों ने बार-बार इसी पर ज़ोर दिया है—इसी का गुण-गान किया है। विवेकानन्द ने एक जगह कहा है कि—जो राष्ट्र जनता स्त्रियों का सम्मान नहीं करती, वह न कभी हुई है, न भविष्य में होगी!

'आपकी सन्तान जिस बदतर हालत में है, ख़ास वजह यह है कि आप शक्ति की इन सजीव माओं के प्रति ज़रा भी आदर-भाव नहीं रखते। जो जगन्माता की साक्षात् मूर्तियाँ हैं, अगर आप उद्धार नहीं करते हैं, तो याद रखिए कि आपके का कोई दूसरा मार्ग है ही नहीं। तामिल प्रान्त के शाली स्वर्गीय कवि भारती के विचार भी इन्हीं नाओं से गूँज रहे हैं। अतएव आशा है, आप प्रवासों में पुरुषों को स्वातन्त्र्य का यह सीधा और मार्ग ग्रहण करने का उपदेश देने की कृपा करेंगे।'

डॉक्टर मुथुलक्ष्मी को पूरा-पूरा अधिकार है कि महासभा वालों से इस ज़िम्मेदारी को उठा लें आशा रक्खें। बहुतेरे महासभावादी इस ओर व्यक्ति या सामुदायिक प्रयत्न कर भी रहे हैं और अच्छे बड़े पैमाने पर कर रहे हैं। लेकिन इस बुराई की ऊपर से देखने में जितनी दिखाई देती है, उससे ज़्यादा गहरी है। इसमें अकेले स्त्री-शिक्षा का ही नहीं है, हमारी सारी शिक्षा-प्रणाली में ही सड़ गई है। किसी एकाध रीति-रिवाज को दोष देना काफ़ी नहीं है। जिस कुरीति को दूर करने की दीपक के समान स्पष्ट है, उसके विरुद्ध खड़े होने, घोषणा करने से जो जड़ता हमें रोकती है, मना करती वह जड़ता ही हमारी बड़ी से बड़ी बैरिन है। उ में जो दोष गिनाए गए हैं, वे सिर्फ़ मध्यम-श्रेणी के

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

में, यानी नगर-निवासियों में—भारत के करोड़ों निवासियों में से मुश्किल से १५ फ़ी सदी लोगों में—है। देहात में बसने वाली जनता में न बाल-विवाह है, न विधवा-विवाह का निषेध है। यह सच है कि उनके विकास में बाधक होने वाली दूसरी बुराइयाँ उनमें ज़रूर हैं। जड़ता तो दोनों में एक सी है। वास्तविक आवश्यकता तो यह है कि देश की शिक्षा-प्रणाली में सम्पूर्णतः कायापलट कर दी जाय और एक ऐसी शिक्षा-प्रणाली तैयार की जाय, जो करोड़ों की संख्या में बसने वाली प्रजा के लिए अनुकूल हो। जिस प्रणाली में बड़ी उम्र के मनुष्यों की तालीम को बालकों की तालीम के समान ही महत्व नहीं दिया गया है, वह प्रणाली निरर्थक कही जा सकती है। और जिस प्रणाली में देश-भाषाओं को उनका जन्म-जात अग्रस्थान नहीं मिला हो, कहना चाहिए कि उसने इस समस्या को छुआ तक नहीं है। यह काम हमें आज-कल के शिक्षित-वर्ग की मदद द्वारा ही करना है, फिर भले ही यह वर्ग चाहे जैसा क्यों न हो। अतएव बड़े पैमाने पर सुधार करने के पहले शिक्षित-वर्ग की मनोदशा के बदलने की ज़रूरत है। और मैं डॉक्टर मुथुलक्ष्मी को कह देना चाहता हूँ कि भारत में जो थोड़ी-बहुत पढ़ी-लिखी बहिनें इस समय हैं, उन्हें पाश्चात्य सभ्यता की चोटी से भारतवर्ष के मैदानों में उतर आना पड़ेगा। पुरुषों ने स्त्रियों की जो उपेक्षा की है, उनका जो दुरुपयोग किया है, उसके लिए उन्हें दोष देना ज़रूरी है, मगर सुधार का रचनात्मक कार्य तो उन्हीं बहिनों को करना पड़ेगा, जो भ्रम को त्याग चुकी हैं और जिन्हें इस बुराई का ख़्याल हो आया है। आप स्त्रियों की आज़ादी, उनके उद्धार का प्रश्न लीजिए; देश की स्वतन्त्रता, अस्पृश्यता-निवारण और जनता की माली हालत के सुधार आदि किसी सवाल को उठाइए; आख़िर ये सब एक सवाल में मिल जाते हैं। और वह सवाल है ग्राम-प्रवेश। देहात में जाकर रहना और ग्राम्य-जीवन की पुनर्घटना करना, नहीं, सच पूछा जाय तो उसकी कायापलट करना!

* * *

कलकत्ते के हेल्थ-ऑफ़िसर डॉक्टर फ्रेक ने सन् १९२३ की वार्षिक रिपोर्ट में बताया था कि १५ से २० वर्ष की अवस्था की लड़कियाँ यक्ष्मा-रोग से लड़कों की अपेक्षा पाँच गुना अधिक मरती हैं। उनका कहना है कि लड़कियाँ पर्दे की क़ैद में हवा न मिलने से मर जाती हैं। डॉक्टर फ्रेक की इस रिपोर्ट पर 'मॉडर्न रिव्यू' ने लिखा था—"डॉक्टर फ्रेक ने कोई नई बात नहीं कही है। आप उनसैकड़ों में से एक हैं, जो ऐसा ही अरण्य-रोदन करते हैं और जिनकी सचाई की धर्म और परमात्मा के पवित्र नाम पर अवहेलना की जाती है! यद्यपि भारत में ऐसे आदमी कम मिलेंगे जो किसी भलाई, सचाई, या आदर्श के लिए अपने जीवन की आहुति दे सकें, किन्तु उन लोगों की कुछ कमी नहीं है, जोकि बेहूदा रूढ़ि और व्यर्थ के रिवाजों को बनाए रखने में सदा आगे रहते हैं। लोगों से कहिए कि आओ मिल कर देश को सुखी करें, और समृद्ध बनावें।.....ऐसा यत्न करें जिससे देश में छोटी आयु के विवाह न हों, बाल-विधवा न हों, मनुष्य अछूत न रहें, परमात्मा से रहित केवल ईंट-पत्थर और मिट्टी के मन्दिर न हों, किसी के प्रति अन्याय, अत्याचार न हो, देश में वे बुराइयाँ न रहें, जिनसे राम और अशोक की भूमि वारन हेस्टिङ्ग्स की भूमि बन गई है। इसके उत्तर में लोग मज़ाक़ करने लगेंगे और वक्ता को अकेला छोड़ देंगे। हाँ, यदि अपने पूर्वजों के नाम से कोई बात कही जाय, तो लोग आँखें मूँद कर व दिमाग़ को ताला लगा कर पीछे हो लेंगे और जहाँ कहोगे, चल देंगे। समय के साथ किए गए इसी असहयोग ने, और हमेशा पीछे की ओर देखने की इसी वृत्ति ने, हम भारतीयों को उन्नति की दौड़ में पछाड़ दिया है। आश्चर्य नहीं, अस्पताल के चीर-फाड़ के कमरों की सफ़ाई भी गाय के गोबर और मूत्र से करना ही ये लोग पसन्द करें .....।"

'मॉडर्न रिव्यू' के इस कथन को कौन सुनेगा? प्यारी माताओ और बहिनो! ये मर्द कहते हैं कि तुम स्वयं पर्दे को छोड़ना नहीं चाहती हो—क्या यह सच है? तुम किस अपराध में जन्म-क़ैद भुगत रही हो? किस पाप के बदले ज़बान रहते गूँगी बनी हो? उठो, तुम देश के बच्चों की माँ हो। देश चाहता है तुम नाहर बच्चे पैदा करो, देश को नाहर बच्चों की ज़रूरत है। तुम इस पर्दे को स्वयं चीर कर फेंक दो—अपना अधिकार स्वयं प्राप्त करो। नया जीवन, नया रूप, नई भावना लेकर—ओ मारवाड़ की माताओ! तुम फिर उसी रूप में खड़ी हो जाओ, जिस रूप में तुमने प्रतापी मुग़ल-साम्राज्य के

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

घाव खाने के लिए अपने बच्चों की छातियों की दीवार बनाई थी !!!

* * *

वैवाहिक कुरीतियाँ

बाल-विवाह, वृद्ध-विवाह और कन्या-विक्रय आदि ऐसे दोष हैं जो जगत्-विख्यात हैं—किन्तु मारवाड़ी-समाज में कुछ ऐसी कुरीतियाँ विवाह-सम्बन्धी और भी हैं, जिनका पता शायद संसार को नहीं है। यह तो स्पष्ट है कि जहाँ मूर्खता, स्वार्थ, अन्ध-परम्परा और रूढ़ियों की दासता होती है, वहाँ जो कुछ अनर्थ न हो, वह थोड़ा है। यद्यपि ये बातें पाठकों को विनोद-जैसी प्रतीत होंगी, पर वास्तव में हैं लज्जा के योग्य। सुनिए —

विवाह के पहले १५-२० दिन तक वर-कन्या अपने-अपने घर घोड़े पर चढ़ कर नगर-परिक्रमा बाजे-गाजे के साथ करते हैं। आगे-आगे वर या कन्या (अपने-अपने घर) घोड़े पर या अन्य वाहन पर सवार होते हैं, पीछे-पीछे स्त्रियाँ गीत गाती चलती हैं। गैस के हण्डों की रोशनी, अङ्गरेज़ी बाजा आदि साथ रहता है। इस अनावश्यक और भद्दी रिवाज में सबसे अधिक दोष तो फ़ज़ूलख़र्ची का है। साथ ही स्त्रियों को व्यर्थ में जो नगर-प्रदक्षिणा करनी पड़ती है उसको तो क्या कहें !

प्रायः विवाह बिलकुल अवैदिक रीति से होते हैं। अधिकांश में पुरोहित 'पढ़-पत्थर' होते हैं—और वे भिन्न-भिन्न प्रकार के नाज तथा अन्य पदार्थ, रङ्ग-बिरङ्गी मिट्टी की हाँडियों में भर कर रख देते हैं। उनके नाम भिन्न-भिन्न देवताओं पर रक्खे जाते हैं। अबोध बालिका को वस्त्रों में लपेट कर और वर को सिर के ऊपर एक ताज़िया (?) रख कर तथा मुख पर घोड़े के जैसा तोबड़ा लटका कर, बैठाया जाता है। वर की अन्य पोशाक भी किसी ज़नख़े-जैसी विचित्र, रङ्गीन, गोटा लगी हुई होती है। हल्दी-रोली से उसका मुँह लीप-पोत कर बाक़ी कसर और पूरी कर दी जाती है। उन कल्पित देवताओं के सम्मुख वर-कन्या को हाथ में हाथ देकर बैठा देते हैं। हाथ में हाथ देने की पद्धति में भी विचित्रता है। मेंहदी गीली करके उस पर दोनों का हाथ जमा देते हैं। फिर पुरोहित बड़-बड़ाते हैं, और बीच-बीच में चिल्लाते हैं—'कन्यादान रहा है साहब !' लोग, इष्ट-मित्र, स्त्री-पुरुष यथासामर्थ्य करते हैं। कभी-कभी तो यह क्रिया घण्टों में समाप्त है। सङ्कोचशील बेचारी कन्याएँ दम घोट कर, बड़ी कठि से बैठी रहती हैं। लुच्चे साथियों की सलाह से वर, के हाथ को कभी-कभी इतने ज़ोर से दबा देता है कि तलमला उठती है। शाखोच्चार, गोत्रोच्चार, दान-दक्षि आदि की ऐसी भड़-भड़ पड़ जाती है कि कुछ समझ नहीं आता। भीख माँगने वाले स्त्री-पुरुष, जिनमें आ की अधिकता रहती है, और जो पास-पड़ोस के गाँव आ इकट्ठे होते हैं, बड़ा भारी हो-हल्ला मचाते रहते प्रायः विवाह आधी रात के बाद शुरू होता है। अकारण इतनी देर कर दी जाती है। चौधरी, पञ्च बढ़-बढ़ कर बनाते हैं—वर-कन्या के पिता भीगी बिल्ली या अ की तरह चुप बैठे रहते हैं !

सबसे अनोखी बात तो यह होती है कि बारात भोजन कराना या आतिथ्य करना बेटी वाला अ कर्तव्य नहीं समझता। बेटे वाले को बारात के भोजन स्वयम् प्रबन्ध करना पड़ता है। बारात प्रायः व्यर्थ कई दिन तक पड़ी रहती है। बिदा करने के लिए मर्दे होती रहती हैं—तब कहीं बिदा की जाती है।

तरफ़ कन्या का पिता बारात का आतिथ्य अपना कर्तव्य नहीं समझता, वहाँ उसे और बेचारे वाले को भी तमाम ग्राम की बिरादरी को एक भोज देने पड़ते हैं। इन भोजों में ५-५ हज़ार तक इकट्ठे हो जाते हैं। जिस दिन यह भोज हो फिर उस दिन कोई अपने घर चूल्हा नहीं जलाता।

विवाह का यह तो उद्देश्य ही नहीं है कि वर-क समान गुण, कर्म तथा स्वभाव वाले हों—वहाँ यह जाता है कि अच्छा घराना है, अच्छा दान-दहेज आ जाति में इज़्ज़त बढ़ जायगी। बालक-बालिकाओं जन्म-पत्रियाँ अलबत्ता बड़ी गम्भीरता से 'जोशी बा द्वारा मिलवा ली जाती हैं। बाबा जी मीन-मेष-कुम्भ—ऊँगली पर गिन कर, मेल मिला कर 'घणो छै' कह देते हैं। उसी आधार पर विवाह हो जाता वर-कन्या को देखने की ज़रूरत शायद ही पड़ती है। दिखाना तो कन्या के पिता के लिए अतिशय जनक बात है। धनी घर के बालक के लिए धनी

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

LIBRARY
Jangamawadi Math, Varanasi
Acc. No. 3079

खोजी जायगी—गुण से कोई वास्ता नहीं। हमारे एक मित्र, जो अजमेर-निवासी हैं, युवक हैं और विचारशील प्रतीत होते थे—घण्टों मग्ज़ चाटते थे। जब उनकी पत्नी की अपमृत्यु गृह-कलह के कारण हुई तो हमने सलाह दी कि अब अधिक नहीं तो योग्य कन्या तो तलाश करो, जिससे जीवन सुखी हो। फलतः यह कार्य हमें ही सौंपा गया। एक योग्य सुशिक्षिता विदुषी कन्या मिल भी गई। देखने गए—कन्या सामने आ बैठी। पर वह सम्बन्ध न हो सका। कारण, लड़की का घर वर के योग्य धनी घर न था। वे कहीं गाँव से एक उजड्ड बच्ची को बाँध लाए, एक ही वर्ष में उसे अन्त्र-क्षय हो गया और चल बसी! सेठ जी फिर तीसरी ले आए! हाल ही में हमने सुना कि उन्होंने अपनी सुशील पुत्री का ब्याह, जिसकी आयु १५ वर्ष की है, ४० वर्ष के तीजुआ चपरग़ट्टू के साथ कर दिया। जब हमने पूछा तो निलज्जता से अपनी कठिनाइयों के क़िस्से गा दिए। ऐसा घर कहाँ मिलेगा—यह सबका निचोड़ था।

ग़रीब लड़के का व्याह मारवाड़ में एक भयानक समस्या है। चार-पाँच हज़ार हुए बिना विवाह कैसा? कन्या के घर का पानी पीने में इन लुच्चे पिताओं का धर्म बिगड़ता है। पर हज़ारों की थैली चुपचाप गटक जाते हैं! मारवाड़ में जहाँ धनी बूढ़े दूल्हा बने फिरते हैं, वहाँ निर्धन युवक क्वारे बहुत बड़ी संख्या में देखे जाते हैं!!

प्रथम तो ग़रीब के यहाँ सम्बन्ध होता ही नहीं। यदि हो गया और कहीं वह एकाएक ग़रीब हो गया तो आफ़त है। विवाह तो उसे उसी शान से करना ही पड़ेगा—चाहे शरीर का मांस बेच कर करे। ज़रा किसी नेगाचार में कमी हुई—दान-दायजा कम हुआ—कपड़े-लत्ते पसन्द के न दिए—तो उसके ख़ूब ही धुर्रे उड़ाए जाते हैं!

सगाई वास्तव में वाग्दान का रूप है। नियमानुसार तो वचन देने के सिवाय इसमें कुछ और आडम्बर न होना चाहिए। पर सगाई होते ही वर-पक्ष वाले कन्या-पक्ष को अपना क़र्ज़दार समझते हैं—हर बहाने कुछ झाँसने की कमीनी ताक में लगे रहते हैं। फिर भी सदैव कृतघ्नता और बुराई! विवाह और सगाई के बीच में जितना अधिक समय रहता है, उतना ही अधिक ख़र्च समझना चाहिए।

सगाई की रस्म इस प्रकार है—प्रथम 'मुद्दा'—जिसमें कोई ख़र्च नहीं, फिर 'टीका'—इसके साथ बहुत सा धन, वस्त्र, सामान दिया जाता है। राजा-महाराजाओं के यहाँ तो टीके का ख़र्च लाख, दो लाख तक पहुँचता है, जो प्रथम ही तय कर लिया जाता है। सगाई हुई कि लेन-देन शुरू—ज़रा कहीं कमी हुई कि "कचोला" निकाला गया।

सगाई के बाद लड़की वाला लड़के वाले के पास 'हरा-भरा' भेजता है। इसमें फलादि होते हैं। पहले इसमें दो-चार आने के साग-पात होते थे, पर अब तो सैकड़ों रुपए के फल दिल्ली-कलकत्ते से मँगाए जाते हैं और साथ ही नगद-नारायण भी होते हैं। इसके बाद 'आँगी-मेवा' का बेढब मामला है। इस कम्बख़्त 'आँगी' में ३-४ हज़ार तक ख़र्च हो जाता है। सैकड़ों फ़ालतू वस्त्र, आभूषण, खिलौने, जो बक्सों में पड़े सड़ते हैं, इस अवसर पर दिए जाते हैं। यह काम नाक की रक्षा के भय से सदा हैसियत से बढ़ कर किया जाता है। नहीं तो बेचारे की नाक झट से कट कर नीचे आ पड़े! बेटी वाला गहनों का ठेका तो साफ़-साफ़ शब्दों में ठहरा लेता है। इन गहनों को वह कल्प-वृक्ष समझता है। बचपन से इस गहने के प्रेम ने मारवाड़ी-स्त्रियों को गहने का अत्यन्त दास बना दिया है!!

सम्बन्ध होने पर दोनों समधी एक दूसरे के शत्रु हो जाते हैं! यदि प्रथम वे मित्र थे—ख़ूब मिलते-जुलते थे—तो अब मिलना-जुलना क़तई बन्द; क्योंकि मिलने का मूल्य देना-लेना पड़ता है। एक गाँव, एक मुहल्ले में रहने पर भी कभी-कभी जब मिलते हैं, फ़ीस चुकानी पड़ती है। यदि फ़ीस के रुपए जेब में नहीं, तो मुँह फेर कर चल देंगे—'जय गोपाल जी की' भी न करेंगे। यदि समधी की मिलनी न हो तो वह समधी से बात न करेगा—उठ कर चल देगा। विवाह के अवसर को छोड़ कर—न विवाह से पहले और न पीछे—बेटे का बाप बेटी के पिता के घर भोजन नहीं कर सकता। लड़की के सम्बन्धी मिलने पर बालक का पल्ला भरते हैं। बारम्बार यह रीति होती रहती है।

अब विवाह का श्रीगणेश होता है। प्रथम विवाह 'हाथ लेना' की रीति से कार्य शुरू होता है। इसमें विवाह-ख़र्च का खाता खोल दिया जाता है। फिर लड़के-लड़की को हल्दवान चढ़ाते हैं—ख़ैर, यह तो भारत-व्यापिनी

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

रीति है और इसका सम्बन्ध वैद्यक-शास्त्र से भी है। पर इस अवसर पर मारवाड़ियों में कुछ कुरीतियाँ भी होती हैं। वर को हँसली पहनाई जाती है और उसके हाथ में लोहे का छल्ला पहनाया जाता है, जो भूत-प्रेत से उसकी रक्षा करता है। प्रायः विवाह से प्रथम वर का पिता लड्डू बनवा कर नगर में बटवाता है। तराज़ू लेकर लड्डू तोलते समय का दृश्य देखने योग्य होता है; क्योंकि यदि किसी के पास कम पहुँचा तो वह बड़ी अकड़ के साथ उसकी चर्चा करेगा। यही काम कन्या वालों को भी करना पड़ता है!

प्रायः ऐसा होता है कि धनी ज़्यादा दिन का हल्द-वान करते हैं—ग़रीब कम दिन का। इसका कारण ख़र्च की आफ़त है। धनियों के घर उन दिनों उनके सगे-सम्बन्धी भोजन करते हैं। और भी बहुत से भोजन-भट्ट इकट्ठे हो जाते हैं। इस बीच में कोई-कोई वेश्या का नाच, सिनेमा, नाटक आदि करवाते हैं, (अब यह प्रथा कम हो रही है) जिसमें भयानक फ़ज़ूलख़र्ची होती है!

वर की वेश-भूषा का ज़िक्र तो हम कर ही चुके हैं। 'काजल' प्रायः भाभियाँ दिया करती हैं, जिसमें प्रायः अश्लील व्यवहार हो जाते हैं। भाभियाँ प्रायः निर्लज्ज-हास्य के साथ देवर के काजल लगाती हैं। देवर उससे भी ज़्यादा निर्लज्ज ढङ्ग से उसे भाभी के घाघरे से पोंछने का प्रयत्न करता है। अनेक स्थानों पर वर को हाथी-घोड़े पर चढ़ाने से प्रथम गधे पर चढ़ाने का नियम है, पर अब प्रायः गधे को लात से छू देते हैं। बारात को अधिक से अधिक संख्या में ले चलने के लिए बड़ी चेष्टा की जाती है। साथ में बागबहारी, आतशबाज़ी की वाहियात फ़ज़ूलख़र्ची का ज़िक्र करना व्यर्थ है।

उधर कन्या के घर पर इस तरह विवाह होता है, पीछे से वर के घर पर स्त्रियाँ बारात बनातीं, वर-वधू बनातीं, नाचतीं-गातीं और इतने अश्लील अभिनय करती हैं कि थू-थू! सास, बहू, बेटी, पोती, वहाँ सब एक रङ्ग में ग़र्क़ होती हैं। 'नेगाचारों का वर्णन' तथा 'पाण्डे जी के वाक्य' आदि को हम नहीं समझ सकते, कैसे कोई भले घर की स्त्री कानों से सुन सकती है?

जाति-भोज का ज़िक्र प्रथम कर चुके हैं। वह केवल कन्या के घर ही नहीं होता, लड़के वाले को भी करना होता है। विवाह के बाद 'सिरगँथी' का नम्बर आता है। इसमें एक प्रकार का जुआ होता है—जो निन्दनीय प्रायः वधू का जूता वर से पुजवाया जाता है।

अन्त में 'पातल-पल्ला' की नौबत आती है। जि कमीने, जितने वर-पक्ष के जानकार होते हैं, सब पक्ष लेनदार—पल्ला बिछा-बिछा कर लड़ते हैं। यह घृणित और तुच्छ प्रतीत होता है। फिर दुशाला, कटोरा, परात, थान दिए जाते हैं। कहाँ तक कहें, फ़ख़र्ची और मूर्खता की हद है!

यह हुई विवाह की बात। अब प्रथम बार सुरा जाना भी मारवाड़ी-समाज में एक बड़ी आफ़त की है। रीति-रस्म और हँसी-मज़ाक़ सबने मिल का भयानक कुरीति का रूप दे दिया है। प्रथम बार जाने मुकलावा या गौना कहते हैं। उसमें कोई बड़ा आ नहीं जाता है। परन्तु अपनी इज़्ज़त (?) के अनु पाँच-सात जोशी, नाई, ग्वाले, भाई, भतीजे साथ हैं। यह प्रसङ्ग इतने महत्व का है कि इसकी गाइड-बु भी तैयार हो गई हैं। एक पुस्तक में लिखा है:—

"ससुराल में जमाई को सभ्यता से रहना चाहि बच्चों के मुँह लग कर ज़्यादा धूम मचाने से उल्लू (?) समझा जाता है। दो-चार आदमी पास हों तो घर, विध या रोज़गार की बात करनी चाहि ज़्यादा अश्लील (!) बातों से आदमी की क़द्र जाती भाँग, गाँजा, माजूम बहुत कम खाना चाहिए।... चार दिन से ज़्यादा वहाँ न ठहरना चाहिए, क्यों इससे अधिक पूर्ण सत्कार हो नहीं सकता। साथ इलायची आदि ले जाना चाहिए—ये औरतों को (स आदि को) देना पड़ती हैं। बिदा होते समय नाई रसोइया आदि को कुछ—चार-आठ आना—देना चाहि ..... रङ्ग-गुलाल के लिए गुलाब-जल ले जाना चाहि लुगाइयों का जहाँ आना-जाना हो वहाँ बेधड़क सोना चाहिए; क्योंकि लुगाई हँसी में काजल टीकी लगा देती हैं। जब बैठे तो आगे-पीछे ध्यान कि लड़कियाँ घाघरा-चूनरी ऊपर न डाल दें, या पलँग से न बाँध दें।"

एक ग्रन्थकार अपने ग्रन्थ-रत्न में इस प्रकार हैं:—

१—जवाई सासरे जावे हैं जद पेली पोत बखत तोरण पर वींद जावे जद सब नेग सासु जी

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

बीकानेर का राजवंश

ART PRINTING CO. ALLAHABAD
CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

क्रान्तिकारी चाँद पत्रिका

का

कनौजिया-अङ्क

आगामी मई का 'चाँद'—पाठकों को जान कर प्रसन्नता होगी 'कनौजिया-अङ्क' के नाम से एक बृहत् विशेषाङ्क प्रकाशित होगा। 'तीन कनौजिया तेरह चूल्हा' वाली लोकोक्ति का प्रत्यक्ष अनुभव करना चाहते हैं तो शीघ्र ही ग्राहकों की श्रेणी में नाम लिखा लीजिए, नहीं तो पछताना पड़ेगा। यह विशेषाङ्क नहीं,

बम का गोला

होगा, जो समाज के वक्षस्थल पर चोट करेगा, कनौजियों के गौरव की उन्हें याद दिलाएगा, उनमें प्रचलित सामाजिक रूढ़ियों के मस्तक पर पाद-प्रहार कर, उन्हें सर्वनाश की ज्वाला से—जो उन्हें एक बार ही निगल कर प्रकृति की आज्ञा का पालन करना चाहती है—उन्हें सचेत कर अपने औचित्य का पालन करेगा। आप इस अङ्क में विधवाओं का करुण-क्रन्दन तथा नवयुवतियों की मूक-वेदना सुनेंगे—इसे स्मरण रखिए। विजयानन्द (दुबे जी) ने अभी से इस बृहत् विशेषाङ्क के लिए चिट्ठी लिख कर दिल के फफोले फोड़ने का निश्चय कर लिया है! आप जानते हैं इस अङ्क का सम्पादन कौन महाशय करेंगे

?

हिन्दी के प्रतिष्ठित लेखक

पं० विश्वम्भरनाथ जी शर्मा, कौशिक

यही इस अङ्क की सफलता का एक तुच्छ प्रमाण है। इस महत्वपूर्ण अङ्क के लिए लेख तथा चित्रादि जो कुछ भी भेजना चाहें, इस पते से भेजने की कृपा करें :—

श्री० विश्वम्भरनाथ जी शर्मा, कौशिक

बङ्गाली मोहाल, कानपुर

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

काजल आँजने की बखत नाक खींच लेवे हैं सो ध्यान राखजो।

२—ब्याव हुआ फेर दो-तीन दिना पछे भैरू भोपाल दई-देवता पुजवाने जावे जद लुगायाँ अवसर पाकर केवें के ये भैरू जी हैं धोक देवो—नारेल चढ़ावो—सो खूब देख-समझ कर धोक दीजो, क्योंकि लुगायाँ पगरखी पर कपड़ा लपेट सिंदूर लगा कर धोको देवे छें।

३—ससुराल में जीमवाने जद जावो जदाँ गादी के नीचे देख कर बैठजो, क्योंकि लुगायाँ गादी के नीचे पापड़ रख दिया करे छें।

४—याद राखजो ; लुगायाँ खाणे-पीणे की जिनसों में कई रकम की चालाखी करें छें, सो बहुत हुसियारी राखजो।

५—जँवाई जाय जदाँ सालियाँ पाणी प्यावें तो पाणी में निमक न्हाक देवें सो पाणी पीती बखत थोड़ो पानी जीभ पर गेर कर देखजो और फेर पीजो।

६—ध्यान राखजो जणा थे जीमवाने पाटा पर बैठो तो पहला निगे कर लीजो, कारण लुगायाँ पाटा के नीचे सूत लपेट दिया करें छें।

७—पीछे थे जीमन लागो जद पुड़ी तथा बड़ा देख कर खाजो। भूल कर गड़बड़ में खावोला तो हाँसी करा-लेसो, क्योंकि उनमें कपास मिला दिया करें छें।

... ...

ससुराल जाते ही जमाई बेचारे को कितने ही नेगाचार करने पड़ते हैं। नाई या नौकर एक थाली में जल-दूब लेकर पैर धोता है। उस थाली में टैक्स डालना पड़ता है। दो-चार सेर लड्डू-बताशे, बच्चों के कपड़े और कुछ नक़द रुपए भीतर भेजने पड़ते हैं। इसे 'थालोड़ी' कहते हैं। ससुराल के मुख्य बालक की गोद फल और नक़दी से भरी जाती है। अन्य बच्चों को भी एक-दो रुपए बाँटने पड़ते हैं।

भोजन करने पर थाली में एक-दो रुपए छोड़ने पड़ते हैं। स्त्रियाँ जमाई को घेर कर बैठती हैं और लड्डू माँगती हैं। जमाई लड्डू फेंक-फेंक कर मारता है। छोटी सालियाँ जूतियाँ छिपा देती हैं—बिना टैक्स लिए नहीं देतीं।

इस अवसर के लिए धोखे के खाद्य पदार्थ इस प्रकार बनाए जाते हैं :—

रूई की पूरी—आटे की लोई में रूई भर कर बेल कर सेंक ली जाती है। ऊपर से कुछ पता नहीं लगता—तोड़ने पर ही पता लगता है।

रायता—बकरी की मेंगनी को खाँड़ में पाग लिया जाता है—फिर गाढ़े दही में सब मसाले मिला कर उनका रायता तैयार किया जाता है।

गोबर के दही-बड़े—मूँग या उर्द की पीठी को अच्छी तरह पीस कर बीच में गोबर की टिकिया दबा कर घी या तेल में बड़े सेंक लेते हैं। उनको पानी में भिगो कर दही में डाल देते हैं। मसाला तेज़ डालते हैं जिससे पता न लगे।

मेंहदी की चटनी—हरी मेंहदी और गोबर में हरा धनिया, हरी मिर्चें और मसाला डाल कर चटनी बनाते हैं।

मेंगनी का शाक—बकरी या ऊँट की मेंगनी लेकर उन पर बेसन लपेट कर सेंक लेते हैं। फिर गरम पानी में भिगो कर घी में छोंक देते हैं। दही का झोल डाल कर गढ़े साग कह कर परसते हैं।

काग़ज़ के पापड़—पीले काग़ज़ के पापड़ गोल काट कर उन पर मूँग का आटा वा मसाला मिला कर पानी में फेंट कर लेप कर देते हैं। पीछे उन्हें कढ़ाई में तल लेते हैं। यह पहचाने नहीं जा सकते।

इसके सिवा भाँग का हलुआ, बिनोलों का साग, बबूल की चटनी आदि बहुत पदार्थ बनाए जाते हैं। पानी में नमक मिलाया जाता है, इलायची में रङ्ग भर दिया जाता है, और ऊपर वर्क़ लगा दिया जाता है, पान में भी हीराकसीस या रङ्ग डाल देते हैं। बीड़ियों में भी रङ्ग भर देते हैं।

इसी प्रकार के और भी बहुत से बेहूदे काम किए जाते हैं। इस अवसर पर अनेक पहेलियाँ, मुकरनियाँ, कहानियाँ, कूट-प्रश्नों आदि के करने का रिवाज पड़ गया है। ये चीज़ें अत्यन्त अश्लील होती हैं—और स्त्रियाँ बेख-टके ये गन्दी चीज़ें कहती और पूछती हैं। नमूना सुन लीजिए :—

स्त्रियाँ कूट-प्रश्न पूछा करती हैं—"कँवर जी पेलवाई पोत (प्रथम बार) सासरे जाओ जद काँई मारो?" उत्तर—"तोरण।"

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

"थे (आप) पेलवाई पोत नीचा बैठो जद धरती पर काँई टेको ?" उत्तर—"दृष्टि।"

"थारे आगाने और पीछाने काँई ?" उत्तर—"स्त्रियाँ।"

"थारा बाप को लाँवो और माको चौड़ो के ?" उत्तर—"बाप को पेच (पगड़ी) माँ का घाघरा।" इत्यादि-इत्यादि।

इस बीच में गालियाँ भी गाई जाती हैं। बात तो बहुत फ़ोश है, पर सुनानी तो पड़ेगी। गाली सुनिए :—

बोल्यो रे बोल्यो मा चोद गँडिया बोल्यो,
जीजी का यार बोल्यो, खरबूजा खाणाँ बोल्यो,
छोरा चोदी का बोल्यो, गाल्याँ का भूखा बोल्यो,
तने कुण कह्यो छे बोल्यो·····"

अब वर या उसके साथी स्त्रियों से प्रश्न करते हैं—

"थाँका घाघरा में काँई ?"

"थारी आँग्या (चोली) में काँई ?" इत्यादि।

मारवाड़ में ससुराल जाने पर वर-वधू रात्रि को एकत्र कर दिए जाते हैं। स्त्रियाँ बालिका को ले जाती हैं और द्वार बन्द करके बाहर बैठ कर दोहरे पढ़ती हैं। उसका एक नमूना सुनिए :—

बातीका रणका नहीं, ना पेंजन झनकार।
म्हें थाने पूँछा हे युगल, थामें कौन गँवार॥

... ...

छोटी छूँजी बालमा, बड़ी होन द्यो भोय।
नारङ्गी को फाँक ज्यूँ, चखूँ वगादूँ तोय॥

... ...

कुच कठोर कर नरम है, प्यारे समझ मरोर।
मोंहि डर लागे कुचों का, निकस जाय ना फोर॥

* * *

अब पहेलियाँ भी सुनिए, जो स्त्रियाँ वर के सामने कहतीं हैं :—

आई थी उम्मेद सूँ, बैठी गोड़ा मोड़।
बैठी केई घाल दियो, ऊभी होय पपोल !!

... ...

मूँधी सूँ सीधी करी, दिया घसड़ा चार।
अपनो काम निकाल के, ऊँधी दीनी मार।

... ...

तले फोड़ी ऊपर फोड़ी, फोड़म-फोड़ मच
घर का धनी सूँ ना फूटी तो पीसा देर फु

... ...

आई थी घलाय के, जाऊँ हूँ कढ़ाय के
देखो टाँग उठाय के, काढ्यो थूक लगाय

* * *

स्त्रियाँ बारहखड़ी गाकर सुनाती हैं, उसका भी लीजिए :—

काली हाँड़ी जो जरी, जी में भरी गुलाल
मूरख के पाले पड़ी, कहे न काटे गाल॥

... ...

खूँटी ऊपर जेवड़ी, टँगी-टँगी बल खाव
लानत ऐसे यार पर, जो आँगन से फिर

... ...

गागर ऊपर गागरी, गागर ढुल-ढुल जाव
कहजो म्हारा पीव ने, गोनो कर ले जाव

मुकरनियों के भी एक-दो नमूने सुनिए :—

जब मैं ऊपर बैठूँ जाय,
ढीलो करे हिलाय-हिलाय।
लगे मचड़का ऊँला-सूँला,
क्यों सखि साजन—ना सखि

... ...

आप हले और मोहि हलावे,
बाको हलवो मोहि सुहावे।
हाल-हूल कर होय निसङ्का,
ए सखि साजन—ना सखि

... ...

मैं सूती मेरे ऊपर आयो,
आय उड़ादड़ खेल मचायो।
टवका गेस्या भीजी देह,
ए सखि साजन—ना सखि

उमराव का प्रसिद्ध गीत, जो बड़े चाव से गाया जाता है, एक-दो मिसरे उसके भी सुनिए :—

उमराव शाकी सूरत म्हाने,
प्यारी लागे मोरी जान।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

बगण तो काचा भला,
पाका भला अनार।
साजन तो पतला भला,
मोटा जाट गँवार।
उमराव थारी लचकत चाल,
पियारी लागे मोरी जान॥
सेज रमावो सायवाँ,
मोसुँ गरीणा पीव।
थाँ बिन एजी सायवाँ,
म्हारो पलक न लागे जीव।
उमराव थारी चन्द्रवदनी,
हाजिर मोरी जान।
... ...

कहाँ तक इस ख़ुराफ़ात को लिखा जाय। क्या हम मारवाड़ी-समाज से आशा करें कि ये कुरीतियाँ अति शीघ्र दूर होंगी?

* * *

विधवा-विवाह

विधवा-विवाह का प्रश्न यों तो समस्त भारत के लिए बड़े महत्व का और गम्भीर है, पर मारवाड़ियों के लिए यह दूसरी जाति वालों की अपेक्षा कहीं अधिक विचारणीय है। क्योंकि मारवाड़ी-समाज स्वभाव से ही अपरिवर्त्तनशील और रूढ़ियों का अन्ध-भक्त है, और वर्तमान युग में भी, जब कि सभी दूसरी जातियों में विधवा-विवाह की प्रथा न्यूनाधिक परिमाण में प्रचलित हो गई है, मारवाड़ी-जाति के मुखिया और उसका अधिकांश भाग इस परमोपयोगी सुधार का विरोध ही करता दिखाई देता है। दुर्भाग्यवश बाल और वृद्ध-विवाह की कुरीतियों के कारण बाल-विधवाओं की संख्या भी मारवाड़ी-जाति में, दूसरी जातियों की अपेक्षा कहीं अधिक है। विधवा-विवाह का रिवाज न होने के कारण इन ग़रीब विधवाओं को अनेक अनुचित और गुप्त उपायों का अवलम्बन करना पड़ता है, जिनकी चर्चा हम पहले कर चुके हैं। अब हम विधवा-विवाह के गुण-दोष और औचित्य तथा अनौचित्य के सम्बन्ध में कुछ विशेष रूप से विवेचन करना चाहते हैं; जिससे यह समस्या स्पष्ट हो जाय और मारवाड़ी भाई ही नहीं, वरन् हिन्दू-मात्र इस पर विवेकपूर्वक विचार करके इस सत्या-नाशी और कलङ्कपूर्ण अन्याय से मुक्ति पा सकें।

पाठक जानते ही हैं कि भारत में ढाई करोड़ से अधिक विधवाएँ हैं, जिनमें क़रीब १८ हज़ार तो ५ वर्ष से भी कम उम्र की हैं, और डेढ़ लाख ३०-३५ वर्ष तक की जवान उम्र की हैं। इन सबकी परिस्थिति भिन्न-भिन्न प्रकार की है। प्रायः समस्त विधवाएँ घर के स्त्री-पुरुषों के सिर पर बोझ होकर रह रही हैं—घर के लोग और पड़ोसी तथा सम्बन्धी सब उनके प्रति निष्ठुर और अपमानपूर्ण भाव रखते हैं। पति के मर जाने पर जहाँ अभागिनी लड़की घोर दुःख में पड़ जाती है, वहाँ उल्टा उसे ही लोग तरह-तरह के कुवाच्य कहते हैं, और कठोर तानों से जलाते हैं—"इसी ने मेरे लाल को खा लिया! यह ऐसी डायन आई! इस अनैसी मनहूस का मुँह काला करो! अब इस हथनी को छाती पर रख कर कौन जन्म भर खिलावेगा! आठ को साठ करते कितने दिन लगेंगे! यही न मर गई! देखो कैसा रँड़ापा चढ़ा है! साँड़नी बन गई है! राँड़ होकर सिङ्गार-विहार करती है!" इत्यादि नाना प्रकार के हृदय-भेदी वाक्य हमने स्वयं भिन्न-भिन्न परिवारों में विध-वाओं को अकारण सुनते सुना है। जिस घर में कोई विधवा होकर बैठ जाती है, उसका सच्चा सुख तो उसी समय नष्ट हो जाता है। लोगों के कलेजों पर ज़ख़्म हो जाता है, और उसे देख कर सब दुःखी रहते हैं। बहुधा ऐसी दशाओं में परस्पर ईर्षा, कलह भी उत्पन्न हो जाती हैं—तब तो मानों गृह-सुख ही मिट्टी में मिल गया। परन्तु इससे भी अधिक भयङ्कर एक बात होती है कि विध-वाएँ—बहुधा दुर्व्यवहार से तङ्ग आकर, या प्रलोभनों में फँस कर, अथवा दुर्दम्य इन्द्रिय-वासनाओं के वश में होकर गुप्त-व्यभिचार कराती हैं—गर्भ गिराती हैं। धीवर, नाई, नौकर, मुसलमान या किसी भी नीच पुरुष के साथ भाग खड़ी होती हैं—जोकि उसे थोड़े दिन चूस कर बाद में छोड़ देता है। तब उन्हें लाचार होकर वेश्या बन कर या अतिशय निकृष्ट दशा में जीवन व्यतीत करना पड़ता है।

मध्य-काल में विधवाओं को मृत-पति की चिता पर जीता जला देने की रीति हमारे देश में बहुत दिन तक

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

जारी रही। हिन्दू लोग उसे एक परम पवित्र कार्य कहते और मानते रहे। पर जिन यूरोपियन यात्रियों ने उस रोमाञ्चकारी दृश्य को देखा है, उन्होंने वर्णन किया है कि अपनी इच्छा से आग में जल मरने को बहुत कम स्त्रियों में धीरज और साहस होता था। अधिकांश स्त्रियाँ बलपूर्वक जलाई जाती थीं। कुछ निर्दयी ब्राह्मण उन्हें श्मशान तक पकड़ लाते थे, उनको बलपूर्वक शृङ्गार कराया जाता था, कोई-कोई स्त्री छुड़ा कर भागने की चेष्टा करती थी, कोई रोती-चिल्लाती थी, कोई चिता को जलती देख कर बेहोश हो जाती थी—उन्हें बल-पूर्वक चिता पर बैठा देते थे और फिर ज़ोर-ज़ोर से ढोल पीटते और चिल्लाते थे !! क्या यह धर्म था ? पवित्र कर्म था ? हम तो समझते हैं कि यह एक पैशाचिक लीला थी। अन्य भी बहुतेरी जङ्गली जातियों में जीती स्त्रियाँ मृत-पति के साथ धरती में गाड़ी जाती थीं। परन्तु हम केवल हिन्दू-धर्म से ही यह प्रश्न करते हैं कि इसका क्या अर्थ था ? यह; कि अगले जन्म में भी उसे वही पति मिले ! क्यों ? क्या विवाह के किसी वेद-मन्त्र में ऐसी प्रतिज्ञा है कि स्त्री-पुरुष जन्म-जन्मान्तर के लिए मिलते हैं ? और यह क्या सम्भव भी हो सकता है कि किसी पुरुष की कोई स्त्री मृत्यु के बाद अगले जन्म में भी उसी पुरुष को प्राप्त कर सके ? इस बात का क्या ठिकाना है कि मरने के पीछे उस जीव को, जो पुरुष के शरीर में था, क्या योनि मिले, और स्त्री-शरीर वाले जीव को क्या योनि मिले ? क्योंकि दर्शन-शास्त्र कहते हैं कि योनि, आयु और भोग, पूर्व-कृत कर्मों के फल-स्वरूप हैं। कल्पना करिए, अपने पूर्व कर्मों के कारण पुरुष को सर्प, सिंह, चीता, आदि भयङ्कर जन्तु का शरीर मिला, और स्त्री को गाय, हिरनी, चुहिया या अन्य किसी कीड़े-मकोड़े का शरीर मिला, तो ये दोनों प्राणी क्या फिर स्त्री-पुरुष बनेंगे ? फिर इसका भी क्या ठिकाना है कि कौन जीव किस अवस्था और किस देश में जाकर क्या योनि धारण करता है। कुछ जीव मुक्त हो जाते हैं, कुछ स्वर्ग-नरक में पड़े रहते हैं, कुछ को भूत-प्रेत की योनि मिलती है—इत्यादि अनेकों अज्ञेय और भ्रम-मूलक बातें मृत्यु के पश्चात् वाले जीवन के विषय में संसार कहता है। पर किसी तरह यह तो सिद्ध होता ही नहीं कि इस जन्म के स्त्री-पुरुषों का वर्त-मान सम्बन्ध अगले जन्म में भी साथ देगा; या स्मरण रहेगा। सब लोगों के पूर्व-जन्म हो चुके हैं, प का भी बिना खाए पेट भर गया हो—या कोई चित व्यक्ति उन्हें कुछ लाभ पहुँचा गया हो तो कुछ पूर्व-जन्म की बातों पर प्रकाश पड़े। कुछ स्त्रियाँ अपने पूर्व-पति या पत्नी की स्मृति में जो या आजन्म व्रती रहती हैं, उसका कारण व्यक्तिगत प्रेम है। परन्तु इस सम्बन्ध में पति-पत्नी कर रखने की कोई सामाजिक या धार्मिक आज्ञा इसलिए जिस प्रकार पुरुष स्वतन्त्रता से दूसरा वि लेते हैं, उसी प्रकार स्त्रियों को भी विधवा होने प विवाह की स्वाधीनता देना चाहिए।

कैसे आश्चर्य की बात है कि जो पुरुष स्त्री के म तत्काल दूल्हा बन जाते हैं—और बुढ़ापे तक सि बाल रँग कर दूल्हा बन, पोतियों की उम्र की ल को ब्याहते रहते हैं—वे भी निर्लज्ज होकर विधवा संयम से बैठे रहने का उपदेश देते हैं ! बहुधा देखा कि कन्या की अवस्था १०-१२ वर्ष की होते ही उसके ब्याह की चिन्ता हो जाती है। पास-पड़ो यह कहते हैं कि भाई कलियुग का ज़माना स्यानी बहू-बेटी अपने घर ही रहे, यही ठीक है। लिए झटपट उसका ब्याह कर देते हैं। परन्तु कन्या १५-१६ वर्ष की उम्र में एकाएक विधवा है तब कहते हैं—इसका भाग्य फूट गया, इसके में यही लिखा था, अब इसे ब्रह्मचर्य-व्रत चाहिए। हम पूछते हैं कि कलियुग और ज़माने प्रभाव जो उस अबोध १०-१२ वर्ष की बालि पड़ता था, वह इस जवान लड़की पर क्यों नहीं और जब तुम नित्य नई शादियाँ करते, गुलछर्रे और तरह-तरह के खुले व्यभिचार करते हो, तब संयम से रहेंगी ? प्राणी का जो स्वभाव है—जो आकांक्षा है—वह कैसे मिट सकती है ? क्या कि प्राचीन काल के बड़े-बड़े सिद्ध महर्षि लोग भी से विवाह करके गृहस्थ बन कर रहते थे ! आजन्म संयम से नहीं रह सकते थे—और भी पुरुष क्यों संयम से नहीं रहते हैं ? पुरुषों तरह-तरह के काम का बोझ, चिन्ता और भार है—फिर उन्हें गुप्त रीति से स्त्रियाँ मिल भी अनेक सरल उपाय हैं; फिर भी वह स्त्री के

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

दूसरा विवाह करना चाहते हैं। तब स्त्रियाँ, जिनमें आठ गुणा काम अधिक है—और जो घरों में प्रायः ख़ाली पड़ी रहती हैं, कैसे संयमी रह सकती हैं? यह सर्वथा असम्भव है। यह गुप्त व्यभिचारों का मूल है, जिसमें असंख्य पाप, छल और लज्जाजनक बातें छिपी हुई हैं। इससे अच्छे-अच्छे प्रतिष्ठित घरानों की नाक कट गई; इज़्ज़त बिगड़ गई; अच्छे-अच्छे परिवारों की बरबादी हो गई—भ्रूण-हत्या और गर्भ-स्राव के उदाहरणों की कमी ही नहीं है।

यूरोप में, जहाँ की जन-संख्या बहुत थोड़ी है, और जहाँ स्त्रियों को पुनः व्याह करने की पूरी स्वतन्त्रता है—गुप्त-व्यभिचार और उसके फल-स्वरूप पाप-सन्तान की बड़ी अधिकता है। सन् १९०४ से १९०९ तक कुल ६ वर्षों में इङ्गलैण्ड में सवा दो लाख से ऊपर; फ़्रान्स में सवा चार लाख से ऊपर; और जर्मनी में क़रीब दस लाख (?) बच्चे गुप्त-रीति से जने गए। जब इङ्गलैण्ड, फ़्रान्स और जर्मनी की कुल ६॥ करोड़ स्त्रियाँ लगभग १६॥ लाख बच्चे केवल गुप्त-व्यभिचार से उत्पन्न करती हैं (गर्भ गिराने और विवाहिता स्त्री-पुरुषों की सन्तान के सिवा), तब भारत की १४ करोड़ स्त्रियों में से गुप्त-व्यभिचार कराने वाली स्त्रियों के गुप्त-प्रसवों की संख्या कितनी होगी, इस रोमाञ्चकारी बात पर पाठक विचार करें। और यह भी समझ लें कि इङ्गलैण्ड, जर्मनी और फ़्रान्स की तरह उन गुप्त-बच्चों के पोषण का यहाँ कुछ भी प्रबन्ध नहीं है। ऐसी दशा में ये गुप्त-व्यभिचार के फल-स्वरूप लगभग ४० लाख बच्चे—या तो कच्चे गर्भ गिरा कर या पैदा होते ही दम घोट कर मार डाले जाते हैं!!! यहाँ पवित्र, दयावान् हिन्दू-धर्म का पर्दाफ़ाश होता है—यह पाप का वृक्ष हिन्दुओं ने धर्म के नाम पर अपने घर में लगा रक्खा है। लानत सहते हैं, फ़ज़ीहत सहते हैं, बर्बाद होते हैं—और डूबने लायक़ पाप की गठरी सिर पर लादते हैं—पर उदारता और दयालुता से विधवाओं का विवाह नहीं कराते—जो भयङ्कर व्यभिचार से रक्षा करने वाली एक बड़ी महत्वपूर्ण बात है। विधवाओं का व्याह होने पर इन ढाई करोड़ अभागिनियों का दुःख दूर होगा, और इन्हें किसी भी तरह का पाप करने की ज़रूरत न रहेगी। साथ ही ढाई करोड़ पुरुषों को—जो स्त्री न मिलने के कारण अनेक स्थानों पर बिगड़ते फिरते हैं—सुधार होकर गृहस्थ बनने का अवसर मिलेगा। हिन्दू-धर्मशास्त्र विधवाओं के विवाह की पूरी-पूरी आज्ञा देता है। विवाह के मन्त्रों में जो प्रतिज्ञाएँ हैं उनका अभिप्राय यही है कि ये स्त्री-पुरुष इस जन्म में जीते जी कभी अलग न होंगे। विवाह के मन्त्रों में एक स्थान पर स्त्री को 'देवृकामा' होने की आज्ञा दी गई है। उसका अर्थ है पति के मर जाने पर दूसरे पति की इच्छा करने वाली स्त्री—जैसा कि आगे के प्रमाणों से स्पष्ट होगा।

कुहस्वाद्दोषा कुहवस्तो रश्विना
कुहाभिपित्वं करतः कुहोषतुः।
को वा शयुत्रा विधवेव देवरं
मर्यं नयोषां कृणुत सधस्थआ॥
(ऋ० मं० १०, सू० ४०, मं० २)

"हे दम्पति! जैसे विधवा देवर से और विवाहिता पति से एकत्र होकर सन्तान उत्पन्न करते हैं, वैसे तुम रात्रि और दिन में कहाँ बसे थे? तुम्हारा शयनागार कहाँ है? कब कहाँ बसे, कहाँ से किस वस्तु की प्राप्ति की?"

उदीर्ष्व नार्यभि जीवलोके गतासुमेत मुवशेष एहि।
हस्तग्राभस्य निधि षोस्तवेदम्पत्युर्जनित्वमभि संवभूथ॥
(ऋ० मं० १०, सू० १८, मं० ८)

"हे स्त्री! इस मृत-पति की आशा को छोड़। शेष जीवित पुरुषों में से दूसरा प्राप्त कर। और समझ ले कि इस पुनः पाणिग्रहण करने वाले पति द्वारा जो पुत्र होगा, वह तेरा और इस पुरुष का कहावेगा। ऐसा निश्चय जान।"

अदेवृध्न्य पतिघ्नी दैधि शिवा पशुभ्यः सुयमाः सुवर्चाः
प्रजावतीवीर सूर्देवृकामा स्योनेममग्निंगार्हपत्यं सपर्य॥

"हे पति और देवर को कष्ट न देने वाली स्त्री! तू इस घर में पशुओं के लिए कल्याणदायिनी, अच्छे प्रकार धर्म में चलने वाली, रूप और गुणों से युक्त, वीर पुत्रों को जनने वाली, देवर की कामना करने वाली, और सुख देने वाली होकर इस गृह-सम्बन्धी अग्नि को व्यवहार में ला।"

यहाँ पर बार-बार वेद-मन्त्रों में 'देवर' शब्द आया है, उससे बहुत लोगों को यह भ्रम हो सकता है कि देवर का अर्थ पति के छोटे भाई से है। परन्तु नहीं, निरुक्त

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

अ० ३, खं० २५ में देवर का अर्थ इस प्रकार लिखा है—'देवर कस्मात्? द्वितीयोवर उच्यते'—अर्थात् देवर का मतलब दूसरे वर से है।

यह हुए वैदिक प्रमाण। अब स्मृति-शास्त्रों के प्रमाण सुनिए:—

साचेदक्षतयोनिः स्याद् गत प्रत्यागतापि वा।
पौनर्भवेन भर्त्रा सा पुनः संस्कारमर्हति॥

"यदि उसका पति से सहवास न हुआ हो, वह यदि पति के घर जाकर भी आगई हो, तो उसका दूसरे पति से अवश्य फिर विवाह हो जाना चाहिए।"

तामनेन विधानेन निजो विन्देत देवरः।

"उसे इस विधान से उसका देवर ही वरे।"

प्रोषितोधर्मकार्यार्थं प्रतीक्ष्योऽष्टौनरःसमाः।
विद्यार्थंषड्यशोर्थंवा कामार्थं त्रींस्तुवत्सरान्॥
वन्ध्याऽष्टमेधिवेद्याब्दे दशमेतु मृतप्रजा।
एकादशे स्त्री जननी सद्यस्त्वप्रियवादिनी।

(मनु० अ० ९, ७६-८१)

"स्त्री का पति यदि धर्म-कार्य के लिए विदेश गया हो तो आठ वर्ष; विद्याध्ययन या यश को गया हो तो छः वर्ष, और धन के लिए गया हो तो तीन वर्ष तक उसकी प्रतीक्षा करे। और उसी प्रकार स्त्री बाँझ हो तो आठ वर्ष बाद, बच्चे होकर मर जाते हों तो दस वर्ष बाद, कन्या ही कन्या हों तो ग्यारह वर्ष बाद, और अप्रिय बोलने वाली हो तो तत्काल ही दूसरा ब्याह पुरुष कर ले।"

नष्टे मृते प्रव्रजिते क्लीवे च पतिते पतौ।
पञ्च स्वापत्सु नारीणां पतिरन्यो विधीयते॥

(पाराशर-स्मृति)

"पति एकाएक लापता हो गया हो, मर गया हो, संन्यासी हो गया हो, नपुंसक हो, जाति-समाज से च्युत हो गया हो, तो इन पाँच विपत्तियों में पड़ कर स्त्रियों को दूसरा विवाह करने में कुछ दोष नहीं है।"

इन शास्त्र-वचनों के सिवाय—महाभारत, पुराण और रामायण में हमें इस प्रकार के अनेक उदाहरण मिलते हैं। तारा का बाली की मृत्यु के पीछे सुग्रीव से ब्याह करना, मन्दोदरी का विभीषण से ब्याह करना, कुन्ती, चित्रवीर्य, विचित्रवीर्य की स्त्रियों के वर्णन तथा अन्य घटनाओं के उदाहरणों से पता लगता है कि उस काल में स्त्रियों पर इतनी निर्दयतापूर्वक कठोर शासन होता था। इसलिए यह अत्यन्त आवश्यक है कि विवाह जारी कर दिया जाय, जिससे कि व्यभिचार मात्रा बहुत अंशों में घट जाने की पूरी-पूरी आशा हो सकती है। साथ ही इससे हिन्दू-समाज की भीतरी वेदना शान्त हो जायगी और आबरू बचेगी।

* * *

मारवाड़ियों के गुणावगुण

मारवाड़ी-समाज में कुछ ऐसे गुण हैं, जो किसी जाति को महान् बनाने की यथेष्ट शक्ति हैं। इस जाति का सबसे बड़ा गुण धर्म-भीरुता है। भारतवर्ष की कोई ही जाति शायद इतनी धर्म निकले। आचार-विचार, खान-पान, रहन-सहन इतनी विशुद्धता भारत की और किसी हिन्दू-जाति शायद ही देखने में आती है। इस धर्म-भीरुता ब्राह्मणों का मारवाड़ी-जाति पर असाध्य अधिकार ब्याह-शादी तो बड़ी बातें हैं, छोटी-छोटी बातें भी भावना के ख़्याल से की जाती हैं। और यही कारण कि मारवाड़ी-समाज का यह स्वाभाविक गुण वास्तव गुण के दर्जे से गिर गया है।

इस धार्मिकता में एक ख़राबी यह है कि उसमें की जगह रीति और विचार की जगह रूढ़ि की प्रबलता है। दूसरी बात यह है कि यह सभी धर्म-भ नक़द नहीं, उधार है। इन दो बातों ने एक तो स्व दर को बहुत गिरा दिया है, दूसरे लक्षावधि स्त्री को ग़लत समझ रहे हैं। दया धर्म का लक्षण है मारवाड़ी-समाज की दया बड़ी टेढ़ी-तिरछी है। वाड़ी दया-भाव से प्रेरित होकर सड़क के किनारे टियों को आटा-शक्कर जिमावेगा, पर वे कुचली इसकी परवा नहीं। मारवाड़ी कबूतरों को मनों बाजरा डलवा देगा, किन्तु पशु-चिकित्सालय की ओर उसका ध्यान न जायगा। बधिक-ध्यान

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

पत्नी पकड़ लाते हैं और मारवाड़ी-सज्जन पैसे देकर उन्हें छुड़ा देते हैं। फलतः उन लोगों ने मुसलिम रोज़गार यही बना लिया है। मारवाड़ी पिंजरापोल बनाने को दाम देगा—वहाँ रोगी, बूढ़ी, ग़रीब गाएँ अपने मौत के दिन बुरी तरह पूरा करेंगी। पर वह डेरीफ़ार्म खोल कर दूध-घी की नदी बहाने की बात नहीं सोच सकता! वह भूखे-नङ्गे भिखारियों—मुस्टण्डे साधुओं—की जमात को तर माल खिलावेगा, पर ये भिखारी क्यों पैदा होते हैं, यह बात नहीं विचार सकता। इसका कारण क्या है? यही कि मारवाड़ी धर्म को नक़द वस्तु नहीं समझता—उधार समझता है; वह उसे इस लोक की वस्तु नहीं समझता—परलोक की वस्तु समझता है। मारवाड़ी समझता है कि धर्म के नाम पर जितने कृत्य किए जावेंगे, उनका फल यहाँ इस जीवन में नहीं—वहाँ परलोक में मिलेगा।

परन्तु धर्म क्या है—हम इस स्थान पर इस बात की विवेचना करना आवश्यक समझते हैं। मनु महाराज कहते हैं—धीरज धरना, पराए अपराध क्षमा करना, इन्द्रियों को और मन को वश में रखना, पराई वस्तु पर मन न ललचाना, पवित्र रहना, बुद्धिमानी से प्रत्येक कार्य करना, विद्या पढ़ना, क्रोध न करना, हिंसा न करना—ये धर्म के लक्षण हैं। परन्तु जब हम व्यवहार की कसौटी पर मनु के इन सिद्धान्तों को कसते हैं, तब हमें बहुत सी बातें विचारने के योग्य देख पड़ती हैं। मनु कहते हैं—"सत्य बोलना धर्म है।" इसमें तनिक भी सन्देह नहीं कि सत्य बड़ा भारी तप है, परन्तु यदि सत्य बोलने से पापियों को लाभ हो और धर्मात्मा का नाश हो तो? तब भी क्या सत्य बोलना धर्म है? हम कहते हैं—नहीं। उदाहरण लीजिए—एक हरिण आपके सामने से निकल गया—शिकारी भरी हुई बन्दूक़ लेकर पीछे-पीछे आ रहा है। वह आपसे कहता है—क्या इधर से हिरन गया है? न बताना असम्भव है—आप क्या कहेंगे? ज़रा सा झूठ बोल कर हिरन की जान बचावेंगे या सत्य बोल कर उसे मरवा देंगे? एक चोर रात को आपकी छाती पर आ सवार हुआ। कहा—जो है, धर दो। आपकी तलाशी लेकर उसने दो हज़ार रु० वसूल कर लिए। परन्तु पाँच हज़ार रु० आपके किसी गुप्त-स्थान पर और धरे हैं। क्या आप उससे कह देंगे कि उन्हें भी खोद कर ले जाओ? यदि धर्म का यही रूप है तो वह धर्म नहीं; क्योंकि धर्म तो वही है जिससे सज्जनों का लाभ और दुर्जनों का नाश हो। वह धर्म किस काम का, जिसमें अधिकारी की हानि और दुष्टों को आनन्द हो। क्या आप इस बात पर विचार करेंगे कि भगवान् कृष्ण ने किस विचार से लोहे का भीम धृतराष्ट्र के सम्मुख कर दिया था; किस लिए युधिष्ठिर ने हाथी को अश्वत्थामा कहा था? क्या आप श्रीकृष्ण के जीवन में सत्य की उपेक्षा होते नहीं पाते? फिर क्या किसी को पृथ्वी पर आज तक साहस हुआ कि श्रीकृष्ण को मृषा कह सके?

वास्तव में धर्म की व्याख्या दर्शनकार बता गए हैं "यतो अभ्युदय निश्रेयस सिद्धिः स धर्मः।" अर्थात्—जिससे अभ्युदय और निश्रेयस की सिद्धि हो वही धर्म है। अभ्युदय का अर्थ—इस संसार का सर्वोच्च सुख, अर्थात् सामाजिक और राजनैतिक पूर्ण स्वाधीनता एवं तृप्तिमय सुखी जीवन है। और निश्रेयस का अर्थ है मुक्ति-अर्थात् पारलौकिक उच्च आनन्द की पूर्ति। ये दोनों बातें जो व्यक्ति साथ-साथ प्राप्त करता है, वही धर्मात्मा है। हमारी सम्मति में परलोक के लिए ऐहिलौकिक सुखों को त्यागने वाला और ऐहिलौकिक सुखों में डूब कर परलोक को भूल जाने वाला व्यक्ति पूर्ण धर्मात्मा नहीं। यही धर्म का गम्भीर तत्व है। पृथ्वी भर के किसी भी पुरुष ने, चाहे वह कितना ही महान् ऋषि क्यों न हो गया हो, धर्म-संस्थापक होने का दावा नहीं किया। धर्म-संस्थापक होने का दावा केवल श्रीकृष्ण भगवान् ने किया है। धर्म का आचरण मारवाड़ी-समाज नीति और विवेक के आधार पर नहीं, रूढ़ि और रीति के आधार पर करता है। इसीलिए ७-८ साल की बालिकाओं का अनमेल ब्याह उनकी दृष्टि में कोई अधर्म नहीं, परन्तु विधवा होने पर उनका फिर विवाह कर देना अधर्म है। मारवाड़ी-समाज इन विधवाओं को संयम से रख ही नहीं सकता, यह बात वह अच्छी तरह जानता है। निरपराध, ग़रीब, असहाय बालिकाएँ कितना दुःख पाती हैं, दयालु मारवाड़ी से यह छिपा नहीं! वह उनके दुःखों पर आँसू बहावेगा, जान दे देगा—पर उसका फिर विवाह करने का साहस न करेगा!

भगवद्भजन एक बड़ा पवित्र काम है—मारवाड़ी स्त्री-

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

पुरुष, स्नान-ध्यान तथा भगवद्भजन में अबाधित रूप से समय देते हैं, परन्तु इन पवित्र कामों के भीतर भयानक व्यभिचारों के भण्डाफोड़ गोविन्द-भवन जैसे हो जाते हैं। यदि मारवाड़ी-समाज धर्म में विवेक और नीति को स्थान दे, धर्म को नक़द चीज़ समझे—यह समझे कि धर्म से हमारा वर्तमान जीवन पवित्र, सुखी और निर्भय बनता है; परलोक की बात तो पीछे है—तो मारवाड़ी-समाज आज धार्मिक जीवन में पृथ्वी भर की जातियों से बाज़ी मार कर ले जाय। मारवाड़ी-समाज को समझना चाहिए कि धर्म वह है जिससे लोक-हित हो—धर्म वह है जिससे सबका भला हो। यदि झूठ बोलने से किसी का कल्याण होता है, पर हानि किसी की नहीं होती तो हमारी राय में वह झूठ ही धर्म है। स्वार्थ को दूर रख कर, परार्थ बुद्धि से, जगत् के कल्याण के लिए जो तन-मन-धन अर्पण करते हैं, वे ही धर्मात्मा हैं, वे धन्य हैं।

धर्मात्मा वे हैं, जो संसार में रह कर, संसार की यातनाओं का नाश करके, संसार के लिए सुख, कल्याण, शान्ति और आनन्द के मार्ग निर्माण करते हुए, साथ ही अपनी आत्मा के कल्याण के लिए मुक्ति के साधन ढूँढ़ लेते हैं। यही सच्चा धर्म है, जो बहुत गहन है।

हम ईश्वर का भय करें, पाप से बचें, स्वार्थ को त्यागें, दया, प्रेम, वीरता और आत्म-शक्ति का अभ्यास करें, और तब लोक-सुख की चाहना करें—यही सत्य-धर्म है।

× × ×

मारवाड़ी-समाज का दूसरा गुण है दानशीलता, जो मारवाड़ी-जाति की नस-नस में समाई हुई भावना है। ग़रीब और अमीर चाहे भी जैसा मारवाड़ी व्यक्ति होगा, अपनी हैसियत और बुद्धि के अनुसार वह बराबर दान करता रहेगा। परन्तु दान करना बड़ा नाज़ुक काम है। किसी व्यक्ति से परिश्रम कराके कुछ देना उस व्यक्ति के आत्म-सम्मान का द्योतक है। वह समझ सकता है कि मैंने परिश्रम किया और धन प्राप्त किया। परन्तु अकारण ही, अनायास किसी को कुछ दे डालना, ज़रा भी असावधानी से सहस्रावधि लोगों को विपत्ति में डाल सकता है—उनको सुस्त, काहिल, आवारागर्द और बेग़ैरत बना सकता है।

मारवाड़ी-समाज की दानशीलता में टक्कर लेने वाली पृथ्वी में अमेरिकन जाति है, जहाँ के एक-एक कुबेर ने १५-१५ करोड़ रुपयों की सम्पत्ति एकमुश्त दान दिया है! मारवाड़ी समुदाय में भी की रक़म एकमुश्त दान देने वालों की कमी नहीं उस दान का सदुपयोग होता है—यह बात बहुत लोग समझते हैं। हम मोहता-बन्धु, बिड़ला-बन्धु जमनालाल बज़ाज जैसे आधुनिक दाताओं का ज़िक्र करते। हम उन पुराने ढङ्ग के दानी पुरुषों के विचार करते हैं, जो धर्मशाला बनवाने, कुँआ मन्दिर बनवाने आदि कार्यों में लाखों व्यय कर हमें मालूम है कि उनकी अधिकांश धर्मशालाओं, और अन्य चीज़ों का प्रायः दुरुपयोग ही होता है— में दुरुपयोग हो रहा है।

भगवान् कृष्ण गीता में कहते हैं :—

दातव्यमिति यद्दानं दीयतेऽनुपकारिणे।
देशे काले च पात्रे च तद्दानं सात्विकं स्मृतम्॥
यत्तु प्रत्युपकारार्थं फलमुद्दिश्यवा पुनः।
दीयते च परिक्लिष्टं तद्दानं राजसं स्मृतं॥
अदेश काले यद्दानमपात्रेभ्यश्च दीयते।
असत्कृतमवज्ञातं तत्तामसमुदाहलम्॥

"देश, काल और पात्र का विचार करके, बदले की त्याग कर, जो दान दिया जाता है वही सच्चा दान है। जो फल की कामना से, कष्ट से दिया जाता राजस-दान है। और बिना देश, काल और पात्र का विचार किए जो दान तिरस्कारपूर्वक दिया जाता तामसी है।"

केवल बड़े-बड़े दान करके मारवाड़ी दानशील कहे जा सकते। इन लोगों के लाखों रुपयों के दानों को हम आदर की दृष्टि से नहीं देख सकते। पाप की कमाई है, जो सट्टा, सूद, हरामीपने और के पसीने से निचोड़ी हुई है। हम इसे पिछले ज़माने की उस रिश्वत से मिसाल देते हैं, जोकि के डाकू लोग राजा को दिया करते थे, और वह पाकर राजा लोग उनके कुकर्म की तरफ़ से आँख लेते थे। इस धन के देने वाले तो पापिष्ठ हैं ही, स्वीकार करने वालों को भी हम पापी समझते हैं। शास्त्रों में यह विवेचन अच्छी तरह दिया हुआ

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

बूँदी का राजवंश

परिचय अन्यत्र देखिए

FINE ART PRINTING COTTAGE ALLAHABAD

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

६००० कॉपियाँ हाथोंहाथ बिक चुकी हैं !!

८३६ प्रकार की खाद्य चीज़ों का बनाना सिखाने वाली अनमोल पुस्तक। दाल, चावल, रोटी, पुलाव, मीठे और नमकीन चावल, पुलाव, भाँति-भाँति की स्वादिष्ट सब्ज़ियाँ, सब प्रकार की मिठाइयाँ, नमकीन, बङ्गला मिठाई, पकवान, सैकड़ों तरह की चटनी, अचार, रायते और मुरब्बे आदि बनाने की विधि इस पुस्तक में विस्तृत रूप से वर्णन की गई है।

पाक-चन्द्रिका

इस पुस्तक में प्रत्येक प्रकार के अन्न तथा मसालों के गुण-अवगुण बतलाने के अलावा पाक-सम्बन्धी शायद ही कोई चीज़ ऐसी रह गई हो, जिसका सविस्तार वर्णन इस बृहत् पुस्तक में न दिया गया हो। प्रत्येक चीज़ के बनाने की विधि इतनी सविस्तार और सरल भाषा में दी गई है कि थोड़ी पढ़ी-लिखी कन्याएँ भी इनसे भरपूर लाभ उठा सकती हैं। चाहे जो पदार्थ बनाना हो, पुस्तक सामने रख कर आसानी से तैयार किया जा सकता है। प्रत्येक तरह के मसालों का अन्दाज़ साफ़ तौर से लिखा गया है। पृष्ठ-संख्या ६००, मूल्य केवल ४) स्थायी ग्राहकों से ३) रु० मात्र! चौथा संस्करण प्रेस में है, ६,००० प्रतियाँ हाथों-हाथ बिक चुकी हैं !!

व्यवस्थापिका 'चाँद' कार्यालय,

चन्द्रलोक, इलाहाबाद

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

धर्मात्मा को किस-किस व्यवसायी का अन्न और आतिथ्य स्वीकार नहीं करना चाहिए। तेजस्वी लोग कभी अन्यायी का दान और आतिथ्य नहीं स्वीकार करते। महापुरुष कृष्ण ने कैसी वीरतापूर्वक दुर्योधन का राजसी स्वागत और आतिथ्य अस्वीकार करके धर्मात्मा विदुर का दरिद्र-आतिथ्य स्वीकार किया था! वे लोग कृष्ण-भक्त नहीं हैं, जो कृष्ण के उस आचार का अनुकरण नहीं करते!

हमारी समझ में देश को ऐसे पुरुषों का दान नहीं स्वीकार करना चाहिए, जब तक वे पिछली पाप-कमाई का प्रायश्चित्त करके, देश के साथ न हो जायँ। प्रायश्चित्त का एक ही ढङ्ग है, जिसके लिए रूस देश के ऋषि टॉल्सटॉय को हम आदर्श समझते हैं। ये लोग अपने सत-मञ्जिले रहने के मकानों को सामने खड़े होकर ढहा दें। ठाट-बाट के कपड़ों और सजावट की चीज़ों पर मिट्टी का तेल डाल कर आग लगा दें। ज़ेवर, रत्न, किराए की जायदाद—सर्वस्व देश को भेंट कर दें, एक कौड़ी न बचा रक्खें, और भविष्य में देश के साथ मजूरी करके खायँ, जैसा कि देश खाता है—वैसे घरों में रहें जैसों में देश रहता है—और निर्वाह के बाद देश के साथ कन्धे से कन्धा मिला कर आगे को बढ़ें—मरें, कटें, जीएँ और फूलें-फलें।

ऐसा बिना किए इनका पैसा पवित्र नहीं समझा जा सकता। करोड़ों रुपए सट्टे में पैदा करके लाख-पचास हज़ार देश की झोली में डाल कर गर्वित होने वालों को जितना अपमानित किया जाय, थोड़ा है। महाभारत में एक सुन्दर कथा का उल्लेख है। जिस समय सम्राट् युधिष्ठिर ने राजसूय-यज्ञ समाप्त किया और विश्व भर की सम्पदा को दान कर दिया तब उन्हें कुछ गर्व हुआ और वे कृष्ण से कहने लगे कि महाराज! अब मैं सार्वभौम पद का अधिकारी हुआ। भगवान् कृष्ण कुछ न कह पाए थे कि इतने में एक अद्भुत मामला हुआ। सबने देखा, एक विचित्र न्योला, जिसका आधा शरीर सोने का और आधा साधारण है, किसी तरफ़ से आकर यज्ञ के पात्रों में लोट रहा है। सब लोग परम आश्चर्य से इस जीव को देखने लगे। तब कृष्ण ने कहा—हे कीट-योनिधारी, तुम कौन हो? यक्ष हो कि पिशाच, देव हो या दानव—सत्य कहो। और किस अभिप्राय से पवित्र यज्ञ-पात्रों में लोट रहे हो?

सबको चकित करता हुआ वह जीव मनुष्य-वाणी से बोला—"हे महाराज! मैं न यक्ष हूँ, न देव—मैं वास्तव में क्षुद्र-कीट हूँ। बहुत दिन हुए, एक महान्-पात्र के अवशिष्ट जल में मुझे स्नान करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ था। उस पवित्र जल से मेरा आधा शरीर भीगा था। उतना ही वह सोने का हो गया। मैंने सुना था कि सार्वभौम चक्रवर्ती महाराज युधिष्ठिर ने महायज्ञ किया है। मन में विचारा कि चलो, मरती-जीती दुनिया है—एक बार लोट कर बाक़ी का आधा शरीर भी स्वर्ण का बना लूँ। इसी इरादे से आया था। परन्तु यहाँ तो ढाक के तीन ही पत्ते दीखे—नाम ही था। मेरा इतने दूर का प्रवास व्यर्थ ही हुआ। मेरा शरीर तो वैसा ही रहा।" यह बात सुन कर युधिष्ठिर सन्न हो गए। उन्होंने उत्सुकता से पूछा कि भई! वह कौन सा महान् राजा था, जिसने ऐसा भारी यज्ञ किया था? दया कर उसका आख्यान सुना कर हमारे कौतूहल को दूर करो।

न्योले ने शान्त-वाणी से कहना शुरू किया—एक बार देश में भीषण दुर्भिक्ष पड़ा, बारह वर्ष तक वर्षा न हुई। पशु-पक्षी सब मर गए। वृक्ष-वनस्पति जल कर राख हो गए। मनुष्यों के नर-कङ्कालों के ढेर लग गए। वृक्षों की पत्ती, जड़ और छाल तक लोग खागए। मनुष्य, मनुष्य को खाने लगा। ऐसे समय में एक छोटे से ग्राम में एक दरिद्र ब्राह्मण-परिवार रहता था। उसमें चार आदमी थे। एक ब्राह्मण, दूसरी उसकी स्त्री, तीसरा उसका पुत्र और चौथी पुत्र-वधू। इस धर्मात्मा का यह नित्य-नियम था कि भोजन से पूर्व वह किसी अतिथि को पुकारता। इस काल में अतिथि की क्या कमी थी—कोई न कोई उसका आहार खा जाता था। एक दिन पन्द्रह दिन के पीछे कुछ साधारण खाद्य-द्रव्य मिला। जब चार भाग करके चारों खाने बैठे, तब फिर उसने किसी भूखे को पुकारा और एक बूढ़े ने आकर कहा—मैं भूख से मर रहा हूँ, ईश्वर के लिए मुझे भोजन दो। गृहस्थ ने आदर से उसे बुलाया और अपना भाग उसके सामने धर दिया। खा चुकने पर जब उसने कहा कि अभी मैं और भूखा हूँ, तब गृहिणी ने और उसके पीछे बारी-बारी से पुत्र और पुत्र-वधू ने भी अपने-अपने भाग दे दिए। इतने पर अतिथि ने तृप्त होकर आशीर्वाद दिया और हाथ धोकर वह अपने रास्ते लगा। वह धर्मात्मा ब्राह्मण-परिवार भूख से जर्जरित होकर मृत्यु के मुख में गया। उस

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

अतिथि ने अपने जूठे हाथ धोए थे। उस पानी से जो उस महात्मा का घर गीला हो गया था उसमें मैं सौभाग्य से लोटने को गया। उस पुण्य-जल में मेरा आधा ही शरीर भीगा, उतना ही स्वर्ण का हो गया। अब शेष आधे के स्वर्ण होने की कोई आशा नहीं है। आधा शरीर चर्म का लेकर ही मरना होगा।

क्षुद्र जन्तु की यह गर्वीली कथा सुन कर युधिष्ठिर की गर्दन झुक गई और अपने तामसिक कर्म तथा गर्व पर उन्हें बड़ी लज्जा आई।

संसार क्षणभङ्गुर है और मनुष्य अनाचार से कभी सुखी नहीं हुआ। परोपकार के लिए शरीर की बोटियाँ कटाने में जो मज़ा आता है, वह मज़ा स्वार्थ के लिए किसी भी भोग को भोगने में नहीं आता।

वीर प्रताप के मन्त्री वैश्य भामाशाह ने ऐसी ही आपत्ति के समय अपनी समस्त सम्पत्ति प्रताप के चरणों में रख दी थी। और उसी से मेवाड़ का उद्धार हुआ—उसका नाम अमर रहा। न प्रताप रहे, न भामाशाह, न वह सम्पत्ति।

महाप्रभु बुद्ध भगवान् के जीवन में एक पवित्र, किन्तु तेजोमयी घटना का वर्णन है, जो इस प्रकार है :—

"गौतम वैशाली में आए, जोकि गङ्गा के उत्तर प्रबल लिच्छवि लोगों की राजधानी है। वे अम्बपाली नामक एक वेश्या की आम की बाड़ी में ठहरे। जब उस वेश्या को मालूम हुआ तो वह उनकी सेवा में गई और उन्हें भोजन के लिए निमन्त्रित किया। गौतम ने उसका निमन्त्रण स्वीकार कर लिया। अब वैशाली के लिच्छवि लोगों ने सुना कि बुद्ध वैशाली में आए हैं और अम्बपाली की बाड़ी में ठहरे हैं, तो उन लोगों ने बहुत सी सुन्दर गाड़ियाँ तैयार कराईं और उन पर बैठ कर वे वहाँ गए। उनमें कुछ काले रङ्ग के, कुछ सफ़ेद रङ्ग के उज्ज्वल वस्त्र पहने हुए थे। अम्बपाली युवा लिच्छवियों के बराबर, उनके पहिए के बराबर अपना पहिया और उनके धुरे के बराबर अपना धुरा और उनके जोते के बराबर अपना जोता किए हुए रथ हाँक रही थी। लिच्छवि लोगों ने अम्बपाली वेश्या से पूछा कि अम्बपाली! यह क्या बात है कि तू हम लोगों के बराबर रथ हाँक रही है?

"उसने उत्तर दिया—मेरे प्रभु! मैंने बुद्ध और उनके साथियों को कल भोजन के लिए निमन्त्रित किया है।

"उन लोगों ने कहा—हे अम्बपाली! हम लोग एक लाख रुपया ले ले और यह भोजन हमें कराने दे।

"वेश्या ने कहा—'मेरे प्रभु! यदि आप मुझे वैशाली तथा उसके अधीन का राज्य दे दें, तब भी ऐसा कीर्ति का जेवनार नहीं बेचूँगी।' तब लिच्छवि लोगों ने यह कह कर हाथ पटके कि—हम लोग अम्बपाली से हरा दिए गए—यह हमसे बढ़ गई। यह कह कर वे बाड़ी तक गए।

"वहाँ उन लोगों ने गौतम को देखा और कल का निमन्त्रण दिया। परन्तु बुद्ध ने उत्तर दिया—'हे लिच्छवियो, मैंने कल को अम्बपाली का भोजन स्वीकार कर लिया है।' अम्बपाली ने उन्हें और उनके साथियों को मीठे चावल, चपातियाँ आदि खिलाईं और स्वयं खड़ी रही। यहाँ तक कि भगवान् ने कहा—'अब नहीं खा सकते।' और तब उसको शिक्षा और उपदेश किया। अम्बपाली ने कहा—'हे प्रभु! मैं यह बाड़ी और सम्पत्ति भिक्षुओं के लिए देती हूँ, जिनका मैं बुद्ध है।' और वह दान स्वीकार किया गया।"

× × ×

तीसरा महान् गुण जो मारवाड़ी-जाति में आता है, वह स्वजाति-पोषण है। ग़रीब-अमीर भी व्यक्ति हो, विदेश में यदि कठिनाई में पड़ा मारवाड़ी भाई के पास पहुँचेगा तो उसको सब की सहायता मिलेगी। हमें ऐसे उदाहरण मारवाड़ी धोती-लोटा लेकर जो व्यक्ति कलकत्ता गए, जाति के सहयोग से श्री-सम्पन्न हो गए। कठिन समय को विजय करना, और अन्त में श्रीमान् इसी सहायता और सहयोग का फल है। यह एक ऐसा गुण है कि जिसके विरुद्ध कोई बात कही जा सकती।

मारवाड़ियों का चौथा गुण व्यापार-दक्षता, उद्योग, रुख़ पहचानना, धीरज, मितव्ययता ये गुण हैं जिन्होंने मारवाड़ियों के व्यापार-गुण में चार चाँद दिए हैं। गुमाश्ते से मुनीम—मुनीम से सेठ की साधारण घटना है। हमारे एक मित्र सेठ जी के मुनीम की कलकत्ते की दूकान के लिए आवश्यकता अनेक मुनीम आए, पर सेठ जी ने कुछ समय बाद करके सबको चलता कर दिया। कई आदमी

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

सामने आए—परीक्षा में योग्य, बुद्धिमान् सभी प्रतीत हुए—पर एक ही बात में सेठ जी बिदक जाते थे। सेठ जी वेतन तक तय करके अन्त में एक प्रश्न करते थे। वह यह कि क्या तुम्हें पेशगी कुछ रुपए-पैसे की ज़रूरत है? प्रायः लोग कुछ रुपया माँग बैठते थे—सेठ जी टरका देते थे। सेठ जी के इस ख़सीसपने पर कई बार हमने भी काफ़ी उलाहना दिया। अन्त में एक व्यक्ति मिला, जिसने अन्तिम प्रश्न के उत्तर में कहा—आपका नाम चाहिए, सिर्फ़ एक टिकट दिलवा दीजिए। उसे भेज दिया गया। मालूम हुआ कि कलकत्ते जाते हुए वह कानपुर, बर्दवान आदि उतर कर ठहरता तथा कुछ सौदा करता गया। कलकत्ते पहुँचते-पहुँचते उसने कई हज़ार कमा कर दिखा दिए।

एक और व्यक्ति को हम जानते हैं, जो कई वर्ष तक कलकत्ते में एक सेठ के गुमाश्ता थे। वेतन ३५) मिलता था। एक दिन उन्हें पृथक् कर दिया गया। वेतन के ३५) रु० जेब में डाल कर वे चिन्तित भाव से जेटी की तरफ़ चले गए। जेटी पर एक अङ्गरेज़ से साक्षात् हुआ। यह व्यक्ति किसी जहाज़ का कप्तान था। बहुधा इसी की मार्फ़त जहाज़ का माल ये व्यक्ति अपने मालिक के लिए ख़रीदते थे। उसने कहा—जहाज़ में बढ़िया माल है, तुमको किफ़ायत से दूँगा। इस साहसी ने सौदा करके जहाज़ का सब माल ख़रीद लिया। रुपयों के लिए स्वामी की साख थी—तिस पर उसने ७ दिन की मुहलत का वादा किया था। ३५) रु० वेतन के जो उनके पास थे, उसी समय उन्होंने मज़दूर आदि के लिए जेटी के दलाल को दे दिए और आप नगर में गुदाम की चिन्ता में आए। जिन सेठों से गुदाम की बातें चलीं, उन्हें भी मालूम न था कि यह व्यक्ति नौकरी से छूट गए हैं—वे समझे मालिकों के लिए माँगते हैं। पूछने लगे—क्या लिया, क्या भाव लिया, बेचोगे—क्या नफ़ा लोगे? इत्यादि। इस व्यक्ति ने बीजक सामने रख कर कहा—जो मुनाफ़ा देना चाहें, सेठ जी दे दें। सौदा पट गया—उसी रात में दस हज़ार जेब में डाल कर घर सोए। प्रातःकाल ही माल सेठ को मिल गया—रुपए पट गए। ये व्यक्ति भी अब एक प्रतिष्ठित सेठ हैं। इस प्रकार साहस और दूर-दर्शिता के बहुत उदाहरण मिल सकते हैं। परन्तु खेद इस बात का है कि व्यापार की इतनी उच्चकोटि की योग्यता होने पर भी हम देखते हैं कि अधिकांश मारवाड़ी भाई सट्टा, दलाली और ऐसी आमदनियों में फँसे रहते हैं जिनमें वास्तव में, व्यापार की प्रतिष्ठा नहीं मिलती। अनेकों ऐसे मारवाड़ी व्यक्ति हैं, जो लाखों रुपए का टोटा या नफ़ा सिरहाने रख कर सोते हैं—पर ऐसे व्यक्तियों की अशान्ति का पूछना क्या है? हम एक सज्जन को जानते हैं—बम्बई के प्रख्यात सटोरिए हैं—लाखों खोना-कमाना उनका नित्य का धन्धा है। कभी सौ-सौ के नोटों की सिगरेट बना कर पीते देखा गया—कभी मित्रों से घर साग-भाजी भेज देने को कहते सुना गया। एक बार हमने पूछा—आपको इस अशान्त जीवन में ऐसा क्या मज़ा आता है? उन्होंने जो जवाब दिया, वह भी लाजवाब था। कहने लगे—आप पढ़े-लिखे हैं, पढ़-लिख कर दिन काट देते हैं—दिल भी बहल जाता है। हम तो ऐसा कुछ पढ़-लिख भी नहीं सकते, हमारी स्त्रियाँ भी मूर्ख हैं और बच्चों की घिस-घिस में पड़ी रहती हैं। वहाँ रात-दिन रह कर मनोरञ्जन नहीं कर सकते। फिर कुछ न कुछ रोज़गार तो चाहिए ही—ख़ाली बैठे-बैठे तो काम चल सकता भी नहीं। और कोई धन्धा भी हमें आता नहीं। यही एक काम है। इसमें दुनिया नुक़सान समझती है, पर हमारी समझ में नहीं आता हमें क्या नुक़सान होता है। १०-५ मुनीम-गुमाश्ते हैं, सब मालिक समझते हैं—अपने को नौकर। इसमें हमारा नुक़सान क्या? नोटों के मुट्ठे यही ले आते हैं तो हम हुक्म दे देते हैं कि तिजोरी में रख दो। किसी को देना होता है तो कह देते हैं कि दे दो। ताश के पत्तों की तरह हम तो खेल खेलते रहते हैं। चार मोटरें—घर-बार सब चल ही रहा है; फिर आप कहिए इसमें क्या ख़राबी है?

उपरोक्त बात सुन कर हमें वास्तव में लाजवाब रह जाना पड़ा। परन्तु यह बात तो अवश्य विचारने के योग्य है कि व्यापार के पीछे इज़्ज़त-आबरू, स्वास्थ्य—सब नष्ट नहीं किया जा सकता। एक सज्जन को हमने देखा था, जो साधारण हैसियत से आकर दो-तीन वर्षों में ३-४ लाख के स्वामी बन गए थे। उनकी यह दशा थी कि चलते हुए गुनगुनाया करते और बड़बड़ाते रहते थे! रसोई जीमते समय यदि फुलका आने में देर होती तो थाली में उँगली से आँक फैलाने लगते थे। वे तीन साल बाद संग्रहणी में रोगी होकर देश गए और चार मास रोगी रह कर चल बसे। ऐसे उदाहरण एक नहीं, अनेक हैं।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

यह बात माननी पड़ेगी कि व्यापार का कला-कौशल से बड़ा घनिष्ट सम्बन्ध है। हमें यह देख कर दुःख होता है कि सिवाय रूई के इने-गिने पेचों के और किसी भी कला में मारवाड़ी-समाज का हाथ नहीं। यदि कला-कौशल और उद्योग-धन्धों में मारवाड़ी-बन्धु सट्टे की जोखिम के सौवें हिस्से जोखिम में भी अपने को डालें तो मारवाड़ी-समाज के हाथों इस उत्थान के नवयुग में भारत के मरे हुए सच्चे व्यापार का उदय हो सकता है।

× × ×

मारवाड़ियों का पाँचवाँ गुण है परिश्रम-प्रियता। यह उन लोगों का भूषण है। क्या स्त्री और क्या मर्द—ग़रीब-अमीर सभी को कठिन परिश्रमी पाया जाता है। मारवाड़ी-मज़दूर अन्य प्रान्तों के दो मज़दूरों के बराबर होता है। दिल्ली शहर में जो लक्षावधि मज़दूर हैं, उनमें प्रायः ६० फ़ी सदी जयपुर, अलवर के मारवाड़ी हैं। स्त्री-पुरुष दोनों कमर कस कर जो सुबह जाते हैं, तो शाम को टोलियों में गीत गाते आते हैं। परिश्रम-शीलता किसी भी मनुष्य-जाति को ज़िन्दा रख सकती है। हमने बड़े-बड़े मारवाड़ी-परिवारों में स्त्रियों को घर के साधारण धन्धे करते, जैसे गेहूँ बीनते, पापड़ बेलते पाया है। उनका सदा सर्दी, गर्मी, बरसात में गङ्गा-जमुना तक ३-४ मील बड़े तड़के जाना और पैदल लौटना कम से कम, हमारे जैसे आलसियों के लिए तो आश्चर्यजनक है। फिर भी यह कह सकते हैं कि परिश्रम का ठीक विभाग नहीं है। एक दलाल यदि धन्धे के काम में दिन भर में दस मील घूमे तो उससे वह स्वास्थ्यकर परिश्रम नहीं प्राप्त हो सकता, जो सायं-प्रातः भ्रमण करने वाले को मिलता है। एक लुहार या सुनार के भुजदण्ड दिन भर हथौड़ा चलाने पर भी उतने सुन्दर नहीं बन सकते, जितने कि एक डम्बल उठाने वाले के। स्त्री और पुरुष जितने ढीले-ढाले, पिलपिले, बेडौल मारवाड़ी-समाज में हैं, शायद ही कहीं हों। इतने भारी शरीर को लेकर परिश्रम करना है तो तारीफ़ की बात—परन्तु परिश्रमी होकर भी बेडौल होना हास्यास्पद है!

वैधव्य-वेदना

[पं० सूर्यनाथ जी तकरू]

तुझे सुनाऊँगी कल प्रात—
मैं अपने सोने के गीत,
मेरा वह सुवर्ण-संसार—
खो गया, अब हो गया अतीत!

जब मदिरा यौवन की उतरी वीराना पा
मैंने उनकी चिता-भस्म में दीवाना पा

अरी प्रेम की वे सब बातें,
वे मृदु चुम्बन के आघात!
अरी! कहूँ मैं क्या-क्या तुझसे—
'वह मादक स्वप्नों की रात!'

सभी उठ रहीं जले-हृदय में घन बन कर बरसे
छन्दों की मालाएँ टूटें—घटाटोप उमड़ें

चाँदनी में भर मदिरा-पात्र,
मुझे दे देता था निशिवर!
दिवस में यह सौन्दर्य अपार,
मुझे तब देता था दिनकर!!

बाल-रवि माथे पर
किया करता था क्रीड़ा
तुझे बतला दूँगी कल
प्रेम की दुनिया के व्यवस

तभी तू जानेगी हे सजनि!
हमारा सुख था कैसे हाय!
लूट विधवा का विधि ने मुझे—
कर दिया क्यों इतना निरुपाय!!

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

ओसर

[श्री० विश्वम्भरनाथ जी शर्मा, कौशिक]

एक छोटे से मकान के कमरे में चारपाई पर एक प्रौढ़ावस्था के मारवाड़ी सज्जन पड़े हैं। उनका शरीर कृश हो रहा है, आँखें गड्ढों में चली गई हैं, मुख पर मुर्दनी छाई है। रह-रह कर तीव्र वेग से उठने वाली खाँसी इस बात की सूचना दे रही है कि यह व्यक्ति रोगी है। उनके पास ही थोड़ी दूर पर एक प्रौढ़ावस्था की स्त्री एक छोटे से खरल में कोई औषधि घोट रही है। उसके पास ही एक तीन वर्ष का बालक बैठा है। बालक रह-रह कर खरल में उँगली डालता है—स्त्री उसे हटक देती है। बालक कुछ क्षणों के लिए फिर निश्चल हो जाता है। परन्तु कुछ ही क्षणों पश्चात् उसकी बालोचित उत्सुकता उसे पुनः खरल में उँगली डालने के लिए विवश करती है। वह स्त्री की ओर देखता हुआ धीरे-धीरे खरल में उँगली डालता है। स्त्री उसे पुनः डाँट बताती है—बालक जीभ बाहर निकाल कर लज्जा तथा भयपूर्ण हँसी के साथ उँगली हटा लेता है। इसी प्रकार जब दो-तीन बार स्त्री ने बालक को डाँट बताई तो चारपाई पर पड़े हुए व्यक्ति ने कराहते हुए कहा—लड़के ने (को) क्यँ डाँटे है ?

स्त्री ने कहा—खरल में उँगली गेरे (डाले) है।

"बहू ने बुला के दे दे, उठीने ले जाके खिलावे।"

"बहू न्हावे है।"

"तो छोरी ने बुला ले।"

रोगी की साँस फूल गई और वह खाँसने लगा।

स्त्री ने पुकारा—छोरी, ए छोरी !

स्त्री के पुकारते ही मकान के एक ओर से एक आठ-नौ वर्षीया बालिका अपनी चुनड़ी सँभालती हुई आई और बोली—के है (क्या है) भाभी ?

स्त्री ने कहा—निपूता ने उठीने लेजा, नाक माँ दम कर रक्ख्यो है।

छोरी बालक से बोली—आ भइया, देख—बन्दर को नाच !

यह कह कर बालिका ने बालक को गोद में उठा लिया और चली गई।

स्त्री ने दवा तैयार करके रोगी को पिलाई। दवा पिलाने के पश्चात् स्त्री ने कहा—दवा ने कुछ फायदो तो कियो नहीं।

रोगी ने कहा—फायदो के करेगी ?

इसी समय ज़ीने पर से किसी ने पुकारा—माम्मी ! पण्डत जी आवे हैं।

"आ जाओ।" कह कर स्त्री ने अपनी धोती का आँचल सुधार लिया और सिर का पल्ला माथे पर खिसका लिया। इसी समय एक मारवाड़ी नवयुवक और उसके पीछे एक वैद्यराज भीतर आए। चारपाई के पास एक टूटी हुई कुर्सी रक्खी थी—वैद्यराज उसी पर बैठ गए और बैठते ही बोले—"के हाल है ?"

रोगी ने वैद्यराज को बड़ी करुणापूर्ण दृष्टि से देख कर कहा—वैसो ही हाल है पण्डत जी !

"अच्छा ! खाँसी कम नहीं हुई ?"

रोगी ने सिर हिला कर बताया कि कम नहीं हुई। स्त्री बोल उठी—रात भर खाँसी आवती रही—बारह बजे सेती (से) तो बड़ो भारी जोर रहो।

"हूँ" कह कर वैद्यराज ने हाथ बढ़ाया और बोले—बुख़ार कैसा रहा ?

रोगी ने अपनी कलाई वैद्यराज के हाथ में पकड़ाते हुए कहा—बुख़ार भी वैसो ही है।

वैद्यराज चुपचाप नाड़ी देखते रहे। दोनों हाथों की नाड़ी देख चुकने के पश्चात् बोले—इस समय तो ज्वर बहुत कम है।

स्त्री बोली—इस बखत तो रोज कम हो जाय है।

"हाँआँ, वह कमी और है और यह कमी और है। भगवान ने चाहा तो दो-चार दिन में ज्वर का पाचन हो जायगा।"

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

इसके पश्चात् वैद्यराज ने अपनी जेब से एक डब्बा निकाला और उसमें से कुछ पुड़ियाँ बना कर दीं और बोले—यह दवा दो-दो घण्टे पश्चात् शहद और अदरख के रस में देना।

दवा देकर और फ़ीस लेकर वैद्यराज चलते बने। उनके चले जाने के पश्चात् स्त्री ने युवक से कहा—इस वैद्य की दवा तो कुछ फायदो नहीं करे है।

युवक बोला—तो साँझ कूँ किसी होर (और) बैद ने लाऊँ?

रोगी ने कहा—के करेगो होर बैद ने लाके। मैं अब बचूँगो नहीं।

"ऐसी बात्ताँ क्यूँ करो हो—जब तक साँस तब तक आस!"

स्त्री बोल उठी—इन्हें तो बस—अब के कहूँ। तू साँझ कूँ किसी होर बैद ने दिखा।

रोगी ने कहा—अरी राँड, क्यूँ रुपयो बरबाद करे है—मूँने (मुझको) कोई दवा फायदो नहीं करेगो।

"रुपए सौहरे (ससुरे) को के जिकर है। राम जी रक्खो, तुम अच्छे हो गए तो रुपयो बहुत हो जायगो।" युवक ने मुँह बना कर कहा।

रोगी ने इसका कोई उत्तर न दिया। उसके मुख पर खिन्नता का भाव प्रस्फुटित हुआ। स्त्री कमरे के बाहर चली गई। युवक कुर्सी पर बैठ गया।

२

लाला बन्नामल का स्वर्गवास होगया। लाला बन्नामल के परिवार में इस समय केवल चार प्राणी हैं। उनकी विधवा स्त्री, एक तीन वर्ष का बालक, एक बालिका और एक अष्टादश वर्षीया विधवा पुत्र-वधू। लाला बन्नामल किसी समय में धन-सम्पन्न आदमी थे। पाँच वर्ष हुए उनका दिवाला हो गया था। तब से उनकी आर्थिक दशा उत्तरोत्तर बिगड़ती ही गई और जिस समय उनका देहान्त हुआ उस समय उनकी आर्थिक दशा बहुत ही गड़बड़ थी। उनकी अन्त्येष्टि क्रिया उनके भानजे ने की।

अन्त्येष्टि क्रिया से निवृत्त होने के पश्चात् एक दिन बन्नामल का भानजा अपनी मामी से बोला—मामी, आज सेठ हुलासीराम मिले थे, वह पूछते थे ओसर करोगे।†

बन्नामल की स्त्री ने कहा—यहाँ खाने का ठिकाना है ही नहीं, ओसर कहाँ से करें?

युवक कुछ क्षणों तक मौन खड़ा रहा, बोला—ओसर तो मामी करना ही पड़ेगा, नहीं कट जायगी।

"हाँ, यह मैं भी जानती हूँ, पर बेटा जब नहीं तो ओसर कहाँ से होगा? साधारण ओसर किया जाय तब भी चार-पाँच सौ रुपए चाहिए। चार-पाँच का ठिकाना भी नहीं है!"

युवक पुनः मौन हो गया। और कुछ क्षण विचार करने के पश्चात् बोला—तुम जानो, मेरा का काम था, सो कह दिया।

"मेरे ऊपर तो ऐसी मुसीबत पड़ी है कि किसी बैरी पर भी न डाले। रुपया-पैसा चला गया, लड़का न रहा, आदमी न रहा—लड़की ब्याहने है; जवान बहू विधवा बैठी है। एक मुसीबत कहूँ। ऊपर से लोग ओसर करने को कहते हैं कहते लाज भी नहीं लगती।"

"लोग क्या करें, वे तो चलन की बात कहते"

"ऐसे चलन को आग लगे। सारा चलन है, जब समाई ही नहीं तो चलन को लेकर क्या चूल्हे में धर दूँ? बिरादरी वाले तो खाने भर के बड़े धन्ना-सेठ तो बैठे हैं—लावें हज़ार-पाँच सौ ओसर कर दूँ।"

"इस तरह करने में कौन ख़ूबी है?"

"मुझे ख़ूबी नहीं चाहिए। मेरी सारी ख़ूबी लड़के और आदमी के साथ चली गई। अब अपने बच्चों का और राँड़ बहू का पेट पालना है।"

---

* मारवाड़ियों में मृत्यु के पश्चात् भाई-बिरादरी भोज दिया जाता है। इस भोज को 'ओसर' कहते हैं।

†पाठक कदाचित् मारवाड़ी-भाषा से ऊब उठें, हम पात्रों का वार्त्तालाप मारवाड़ी-भाषा में न लिख बोली में लिखेंगे।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

"पेट तो ख़ैर पल ही जायगा। भगवान् सबको मुट्ठी भर अन्न देता है।"

"देता होगा, मुझे और मेरे बच्चों को दे तो जानूँ।"

"सो तो देगा ही, कुछ भूखों थोड़ा ही मरेंगे?"

"बिरादरी वाले तो भूखों मारने की फ़िक्र में लगे हैं।"

"वे बेचारे क्यों लगे हैं?"

"क्यों, लगे क्यों नहीं हैं? ओसर करने को कह रहे हैं। इसका मतलब तो यही है कि मेरे पास जो कुछ दो-चार सौ की पूँजी है, वह मैं उन्हें खिला दूँ और मेरे बच्चे भूखों मरें।"

"तो ओसर नहीं करोगी?"

"मैं तो सब कुछ करूँ, पर पास कुछ हो भी तो।"

युवक ने इस पर फिर कुछ न कहा। चार दिन पश्चात् बिरादरी के पञ्च महाशय आए और बोले—क्यों सेठानी जी, क्या बात है। ओसर नहीं करोगी क्या?

सेठानी कमरे के भीतर से बोलीं—ओसर करने को रुपए कहाँ से लाऊँ पञ्च जी?

"रुपए चाहे जहाँ से लाओ, ओसर तो करना ही पड़ेगा। सभी करते हैं।"

"जिनके पास पैसा होता है वह करते हैं।"

"नहीं सेठानी जी, यह बात नहीं है, ग़रीब से ग़रीब भी करता है।"

"ग़रीब हो चाहे अमीर, बिना पैसे के, बातों से तो ओसर होता नहीं। ओसर तभी होगा जब पैसा होगा।"

"बन्नामल ने तो कुछ रक़म छोड़ी ही होगी।"

"उन्होंने छोड़ा होता तो मैं अपने आप कर देती, तुम्हें कहने के लिए यहाँ न आना पड़ता। जब से रोज़गार बन्द हुआ तब से बैठे-बैठे खाया—जो बचा-खुचा था वह बीमारी में ख़र्च हो गया।"

"ऐसे क्या दो-चार सौ भी न छोड़े होंगे?"

"पहली बात तो यह है कि उन्होंने कुछ नहीं छोड़ा और मान लो दो-चार सौ छोड़े भी हों, तो उनसे मैं अपने बाल-बच्चों का पेट पालूँगी। ओसर के लिए मेरे पास एक कौड़ी भी नहीं है।"

"तो हमें क्या करना है। तुम्हारा ही नुक़सान है। भाई-बिरादरी में आना-जाना बन्द हो जायगा। लड़की-लड़के का ब्याह न होगा।"

"तो जो बिरादरी वाले ऐसे ही मरमुक्खे हैं तो हम चार जीव हैं, इन्हीं को पका कर खा लें।"

"राम-राम! तुम भी क्या बात कहती हो।"

"तो और क्या कहूँ पञ्च जी! मेरे पास इतना रुपया नहीं जो बिरादरी वालों को लड्डू-कचौड़ी खिला सकूँ। मेरा और मेरे बच्चों का मांस है—वही खा लें।"

"यह तो ठीक है, पर एक-दो हों तो उन्हें समझावे—सारी बिरादरी को कौन समझावे?"

"तुम समझाओ, तुम्हें तो मेरे घर का सारा हाल मालूम है।"

"मेरे समझाए कोई समझता है?"

"न समझें तो मौज करें, मेरे भाग में जो बदा होगा वह भुगत लूँगी। उनको मरे इतने दिन हुए—किसी निपूते ने यह आकर न पूछा कि तुम्हारी गुज़र कैसे चलती है। लड्डू-कचौड़ी खाने को मुँह पसारे बैठे हैं!"

पञ्च जी किञ्चित् बिगड़ कर बोले—तुम्हारे लड्डू-कचौड़ी का भूखा कोई नहीं बैठा है। सब लोग चलन की बात कहते हैं।

"ऐसे चलन पर गाज पड़े। भगवान् इस चलन को चलाने वाले की पैड़ मिटावे, ऐसा भी चलन क्या, जो ग़रीब-अमीर न देखे।"

"ख़ैर, हमने तुम्हें चेता दिया है। तुम जानो तुम्हारा काम। अभी तुम्हें नहीं जान पड़ेगा; पर जब कल को लड़के-लड़की का ब्याह करोगी तब जान पड़ेगा।"

"मैंने तो कह दिया कि जो भाग में बदा होगा वह देखूँगी।"

३

बन्नामल की पत्नी बेचारी इस समय बड़े असमञ्जस में थी। पास-पल्ले कुछ था नहीं और इधर बिरादरी वाले 'ओसर'-'ओसर' की रट लगाए हुए थे। बेचारी अपने भविष्य से भी डरती थी। सोचती थी कि यदि ओसर न होगा तो कोई शादी-ग़मी में सम्मिलित न होगा। अपनी जीविका तो वह किसी न किसी प्रकार चला रही थी। रात में दोनों सास-पतोहू धनी मारवाड़िनों के घर जाती थीं और घण्टे दो घण्टे उनकी सेवा और ख़ुशामद करके खाने भर को ले आती थीं। वहाँ भी स्त्रियाँ उसे ओसर के लिए ताने दिया करती थीं। बेचारी का जीवन

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

दूभर हो रहा था ! रात-दिन इसी चिन्ता में घुली जाती थी।

एक दिन दोपहर के समय पञ्चायती नाई की पत्नी उसके पास आई और कुछ देर तक इधर-उधर की बातें करके बोली—सेठानी जी, लड़की की सगाई कहीं लगी कि नहीं ?

"अभी सगाई करने की बात कहाँ, पहले ओसर तो हो ले। बिना ओसर हुए सगाई कौन लेगा।"

"जो मेरी बात मानो तो ओसर भी हो जाय और लड़की की सगाई भी हो जाय।"

सेठानी प्रसन्न होकर बोली—इससे अच्छी और कौन बात है, बताओ।

"सेठ पँचकौड़ीमल को तो तुम जानो हो।"

"हाँ, हाँ। वह तो राम जी रक्खो बड़े धनी आदमी हैं।"

"हाँ, उनसे जो तुम लड़की की सगाई कर दो तो तुम्हारा सब काम बन जाय।"

सेठानी नेत्र विस्फारित करके बोली—सेठ पँचकौड़ीमल से ! वह तो पचास बरस का बुड्ढा है।

"न कहीं, अभी चालीस के तो हैं ही, देखने में बुड्ढे लगते हैं, पर उमर चालीस से अधिक नहीं है।"

"वह चालीस ही सही ! लड़की तो अभी नौ ही बरस की है—और वह चालीस के ! भला ऐसी सगाई भी कहीं होती है ?"

"होने की न कहो—होने को तो इससे भी अधिक उमर वालों का ब्याह होता है।"

"होता होगा, पर मैं तो ऐसा ब्याह करूँगी नहीं। मेरी एक तो बच्ची है, उसे आँखों देखते आग में ढकेल दूँ। यह तो मुझसे कभी न होगा।"

"तुम तो बावली हो। ऐसा मौक़ा कोई चूकता है। वह कहते हैं कि जो लड़की की सगाई कर दो तो वह ओसर करने को रुपए दे देंगे और लड़की के ब्याह का सारा ख़र्च भी दे देंगे। इससे अधिक और क्या चाहती हो ?"

"हाँ, है तो यह बहुत-कुछ; पर पँचकौड़ीमल की उमर बहुत है। इससे जी बिचकता है।"

"ख़ैर, तो तुम जानो। मैंने तुम्हारे भले की कही।"

"हाँ भले की तो कही; पर मैं ऐसा नहीं करूँगी।"

"तुम्हारी मर्ज़ी !"

नायन इतना कह कर चली गई। क्रमशः यह नौबत पहुँची कि जिनके यहाँ वह अपने उदर-पोषण सेवा-टहल के लिए जाती थी, वे भी उसका अपमान तिरस्कार करने लगे। इसका कारण केवल यही था लाला बन्नामल का ओसर नहीं हुआ था। जो स्त्री पति का ओसर भी नहीं कर सकी, वह भले आदमी के घरों में आने-जाने के भी अयोग्य समझी गई। तो बेचारी विधवा का आसन डोल गया। जब जीने ही का द्वार बन्द हुआ जा रहा है तो रह क्या उसने बहुत-कुछ सोचा, बहुत ग़ौर किया; पर ओसर गाँठ सुलझाने का कोई उपाय दिखाई न दिया। बेचारी चारों ओर से निराश होगई और इधर के बादल गहरे होने लगे तो अन्त में उसकी दृष्टि कन्या पर पड़ी। बस केवल वह बालिका ही एक थी जो उसकी मँझधार में पड़ी हुई नौका को किनारे लगा सकती थी। पर अपनी मुसीबत टालने के एक अबोध बालिका को बलिदान करना उचित है नहीं, उचित तो नहीं है, पर इसके अतिरिक्त और भी तो नहीं।

बेचारी रात भर अपनी कन्या को छाती से रोती रही। माता को रोते देख, बालिका भी रही। उसे क्या पता कि माता क्यों रोती है। रोती है—माँ को कुछ कष्ट है, यही समझ कर भी रोती थी। अबोध कन्या को रोते देख को और अधिक रोना आता था। कन्या का क्रन्दन ऐसा प्रतीत होता था मानो कन्या अपने क्रन्दन माता से यह कह रही है कि—"माँ, मैं तुम्हारी हूँ। माँ, तुमने मुझे कितने लाड़-प्यार से पाला है। मैं पितृहीन हूँ, तुम्हारे अतिरिक्त मेरी रक्षा करने कोई नहीं। मुझे क्यों आग में झोंकती हो ? क्यों गला काटती हो ? मैंने तुम्हारा कौन अपराध किया माँ, मुझे बचाओ, मेरी रक्षा करो।"

आह ! बेचारी का हृदय विदीर्ण हुआ जा रहा आँखों से आँसू नहीं, हृदय का रक्त टपक रहा था। यह दशा होते हुए भी जब उसे अपनी विवशता आता था; जब वह अपने सिर पर सर्वनाश की

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

॥ चौपड़ ॥

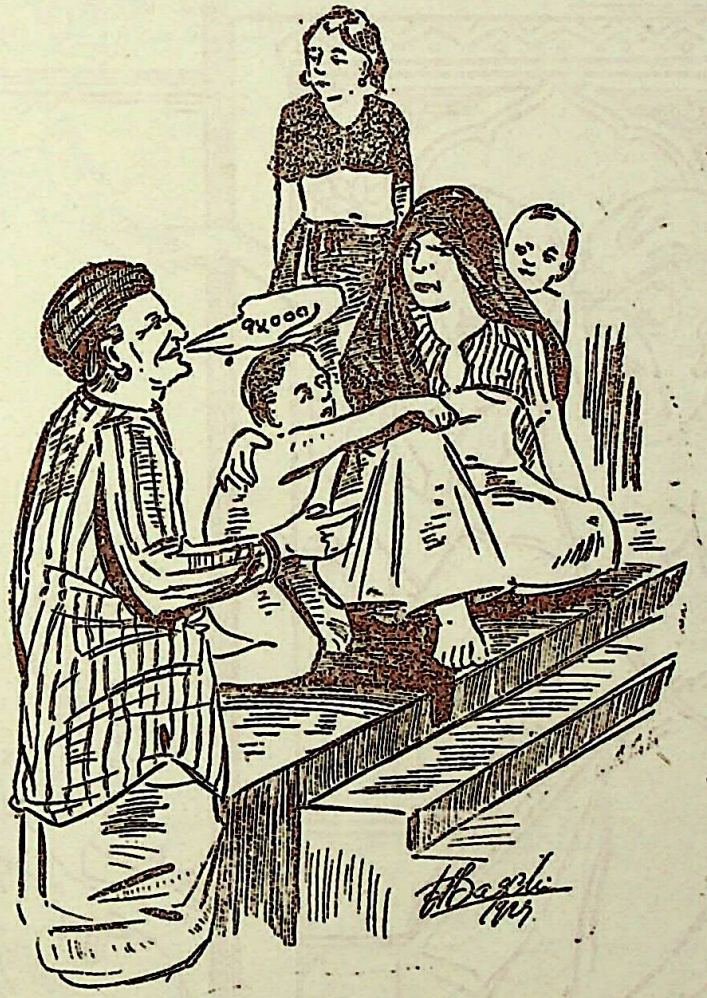

ओसर-सन्देश

चौधरी—पन्दरा हज्जार सूँ कम में काम कोनी चालसी !

विधवा—इतरो कठे सूँ आशी ! म्हारो गेणो पातो वीं की बीमारी में बिक गयो। आ घर है; ईने वेचयूँ तो ऊभा होवाने ठौर कोनी ? कच्चा-पक्का टावर कठे जाशीं ?

चौधरी—थे टावरो ने देखल्यो क इज्जत ने, सेठ जी की कितरी इज्जत ही की कमायाडो तो वीं कोई है, वीं केई काज में कजियो !!!

विधवा—जैसी पञ्चों की मर्जी, हवेली बेचयो और काम चलाओ !

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

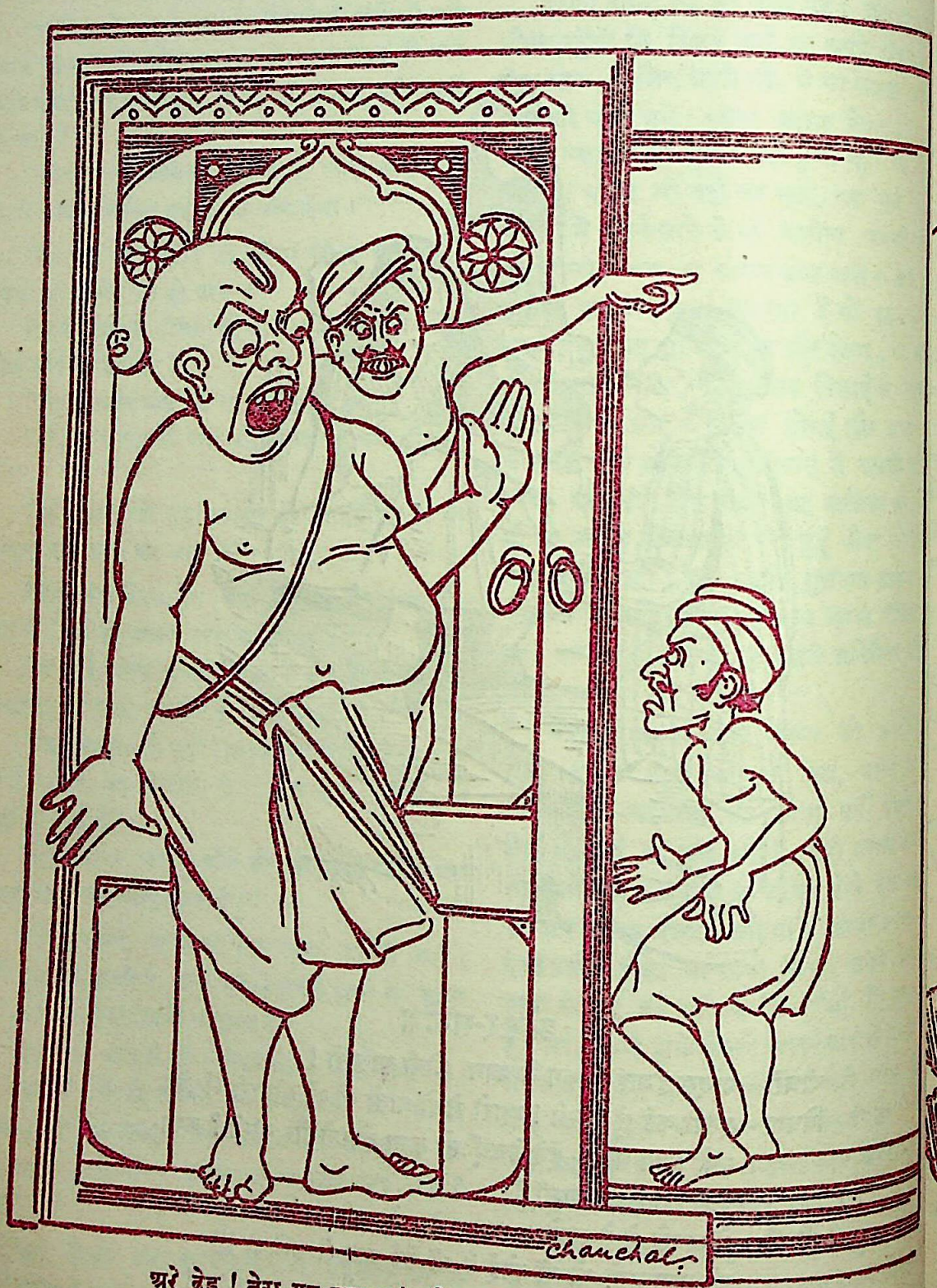

अरे ढेड़ ! तेरा यह साहस ! मन्दिर की सीढ़ियों पर चढ़ आया !!

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

राम ! राम !! हरा पेड़ काटे है, नर्क में पड़सी ।

रूढ़ि की चक्की !!!

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

सिफ़ारिश

सेठानी—काँई हुयो, बापड़ा गरीब नौकर पे इतरो गुस्सो काँई करो हो ?

सेठ जी—वीं पाजी ने नईं रखणो है, आज वीं को हिसाब कर देश्यूँ। काम-चोर गद्धा, म्हारो रुआब मानेई नहीं। म्हें काई काम ने कहूँ तो ऊभो-ऊभो हँसवो करे, थे जाणो हो म्हारो गुस्सो गजब रो है.....

सेठानी—जावाद्यो पुराणो नौकर है, वीं के बिना म्हारो काम कैयाँ चालसी ? बापड़ा हुक्म सागे म्हारो काम करे है। आख्यादिन पिलवो करे है—काँई मशीन है !

सेठ जी—मने, आ बात ई तो सोच है, म्हारी बात सुणे कोनी, थारी खिदमत में रात-दिन हाजर—आ काँई बात ?

सेठानी—(कटाक्ष फेंक कर) उने म्हें समझा देश्या, अबार तो वीं ने माफ करद्यो, गरीब घणोई ईमानदार नौकर है।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

घटा को प्रतिक्षण अधिक घना होते हुए देखती थी; जब वह यह सोचती थी कि जीविका के सब द्वार बन्द हो जाने पर यह बालिका और घर के अन्य प्राणी क्या खाकर जीवित रहेंगे तो वह उस रोती हुई बालिका को उसी दृष्टि से देखती थी जिस दृष्टि से कि क़साई बन्धनों से जकड़ी हुई और प्राणों के भय से आर्त्त-चीत्कार करती हुई एक बकरी को देखता है! इस समय उसकी प्यारी बेटी उसके लिए उतनी ही उपयोगी थी, जितना उपयोगी कि एक दुर्भिक्ष की मारी हुई क्षुधातुरा आकण्ठप्राणा स्त्री के लिए उसकी गोद का बच्चा होता है! जिस समय उसका ममत्व, उसका वात्सल्य कन्या के प्रति उसके हृदय में एक अजेय करुणा का भाव उत्पन्न करता था, उसी समय रूढ़ियों के दास, नर-पिशाचों की काल्पनिक मूर्त्तियाँ उसके चारों ओर ताण्डव-नृत्य करती हुई 'ओसर-ओसर' की चीत्कार करती प्रतीत होती थीं। उस समय बेचारी विधवा-ज्ञानहीन हो जाती, विवेक-शून्य हो जाती थी और इस घोर कष्ट से मुक्ति पाने के लिए उसकी दृष्टि अपनी प्यारी अबोध कन्या पर पड़ती थी!!

४

उपर्युक्त घटना के एक सप्ताह पश्चात् बन्नामल की स्त्री नायन से कह रही थी—पँचकौड़ीमल से कह देना, मैं लड़की की सगाई करने को तैयार हूँ। परन्तु सगाई अभी नहीं, ओसर हो जाने के पश्चात् होगी।

"सो तो होगी ही, ओसर के पहले सगाई कैसे हो सकती है। ख़ाली तुम वचन दे दो—बस सब काम ठीक हो जाय।"

"हाँ, मैं वचन देती हूँ।"

"अच्छी बात है, मैं आज उनसे कह दूँगी। उनकी इच्छा होगी तो अपने आप आकर बात कर लेंगे।"

नायन चली गई। दूसरे दिन सेठ पँचकौड़ीमल स्वयम् आए और बन्नामल की स्त्री से इस सम्बन्ध में बातचीत की। उन्होंने कहा—देखो, पीछे बदल न जाना। आजकल समय बड़ा ख़राब है।

बन्नामल की स्त्री बोली—लाला जी, मैं जो ज़बान से कहूँगी उसे पत्थर की लीक समझो। मैं उनमें नहीं हूँ जो कहते कुछ और करते कुछ हैं।

"बस हमें इतना इतमीनान करा दो तो फिर हमें कोई उजर नहीं है।"

"मैं तो कह रही हूँ, और कैसे इतमीनान होगा। ओसर के पहले सगाई करना ठीक नहीं, नहीं तो अभी सगाई करके तुम्हारा इतमीनान करा देती। जो बेईमानी करूँगी तो उसका देखने वाला भगवान् है।"

"सो तो हई है।"

"जो लिखा-पढ़ी से तुम्हारा इतमीनान हो तो लिखा-पढ़ी करा लो। मैं वह भी करने को तैयार हूँ।"

"लिखा-पढ़ी की कोई ज़रूरत नहीं, ख़ाली तुम्हारी बात काफ़ी है।"

"बात काफ़ी है तो बस फिर क्या ज़रूरत है।"

"अच्छा तो सगाई कब करोगी?"

"ओसर होने के बाद जब तुम ठीक समझो तभी कर दूँगी। ओसर हो जाने दो, फिर जब और जो-जो तुम कहते जाओगे, मैं करती चली जाऊँगी। जो कुछ भी चीं-चपड़ करूँ तो दोगली समझना।"

"तो बस, अब मुझे विश्वास हो गया। ओसर के लिए कितने रुपयों की ज़रूरत है?"

"अब यह मैं क्या बताऊँ। मैंने तो कभी किया नहीं, तुम मर्द मानुष हो, तुम जितना ठीक समझो।"

"एक हज़ार से कम क्या लगेंगे।"

"जो कुछ लगें।"

"अच्छा, तो कल मैं तुम्हारे पास एक हज़ार रुपए तो ओसर के लिए भिजवा दूँगा और दो सौ रुपए और भेजूँगा। लड़की को ख़ूब खिलाओ-पिलाओ, जिसमें जल्दी सयानी हो जाय—समझीं?"

बन्नामल की स्त्री एक दीर्घ निश्वास छोड़ कर बोली—हाँ, समझ गई।

* * *

पँचकौड़ीमल से बातचीत होने के तीन दिवस पश्चात् बन्नामल की स्त्री ने पञ्च जी को बुलवाया और बोली—मैं ओसर करने को तैयार हूँ, पर सारा प्रबन्ध तुम्हें करना पड़ेगा, मेरे घर में कोई मर्द मानुष है नहीं—मेरी ननद का लड़का था वह भी आज महीना भर हुआ अपने घर चला गया।

पञ्च जी की बाछें खिल गईं कि अब क्या है, पाँचों घी में हैं। प्रसन्नता के मारे गद्गद-कण्ठ होकर बोले—प्रबन्ध तो मैं ऐसा कर दूँगा कि देखने वालों का जी

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

ख़ुश हो जायगा। आख़िर मेरी बात तुम्हारी समझ में आ ही गई। चलो अच्छा हुआ, नहीं तो बड़ी बदनामी हो रही थी। रुपया तो हाथ का मैल है, पर नेकनामी बहुत कठिनता से मिलती है। अच्छा यह बताओ, कितना रुपया ख़र्च करोगी?

"अब जितना तुम उचित समझो। ऐसा करो कि अधिक ख़र्च भी न हो और काम भी हो जाय।"

"हाँ, ऐसा ही लो, परन्तु फिर भी कम से कम हज़ार-बारह सौ रुपए तो ज़रूर लगेंगे।"

"तो बस मैं हज़ार रुपए ख़र्च करने को तैयार हूँ। इससे अधिक मेरे पास एक कौड़ी का ठिकाना नहीं है।"

"काफ़ी हैं, बल्कि मैं तो नौ सौ निन्नानबे में ही तुम्हारा काम कर दूँगा। मेरा प्रबन्ध कोई ऐसा-वैसा थोड़ा ही रहेगा। ज़रा देखना तो।"

"तो ओसर का दिन कौन रक्खोगे?"

"आज के पन्द्रहवें दिन हो जायगा।"

"अच्छी बात है।"

पञ्च जी महाराज प्रसन्नतापूर्वक बिदा हुए। उसी दिन उन्होंने बिरादरी भर में ढोल पीट दिया कि बन्नामल का 'ओसर' होगा और उनका प्रबन्ध रहेगा! एकाध व्यक्ति ने कहा—"जान पड़ता है, तुम्हीं ने ज़ोर डाल कर करवाया है।"

पञ्च जी महाराज ने अकड़ कर उत्तर दिया—और नहीं क्या, बड़ी मेहनत की है। वह सहल ही थोड़ा राज़ी हो जाती। मैंने तमाम दुनिया भर का ऊँच-नीच समझाया, तब बड़ी कठिनता से राज़ी हुई।

"परन्तु वह तो कहती थी कि उसके पास कुछ है ही नहीं—अब कहाँ से आ गया?"

"इसलिए कहती थी कि बच जाय तो बच ही जाय। अपना पैसा बचाने की चेष्टा सभी करते हैं। परन्तु भाई, मैं तो आप जानिए, एक ही घाघ हूँ। समझ गया कि रुपया दाबना चाहती है। बस पीछे पड़ गया और उगला कर ही छोड़ा। यह समझ लो कि बालू में से तेल निकाला है।"

पञ्च जी का यह कथन सुन कर लोग उन्हें करने लगते। उस समय पञ्च जी और अकड़ जाते और मूँछों पर ताव देने लगते।

* *

ठीक पन्द्रह दिवस पश्चात् ओसर हुआ। लड्डू-कचौड़ी पर ख़ूब हाथ साफ़ किए। लहँगों में लड्डू-कचौड़ी चुरा-चुरा कर ले गईं!

इधर पञ्च जी महाराज ने चुरा-चुरा कर बीसि अपने घर भिजवा दीं, और ख़र्च में से कतर-ब नक़द सैकड़ों रुपया बचाया सो अलग।

परन्तु बन्नामल की स्त्री ने उसमें से तक अपने मुँह में नहीं डाला। उसने उस अपने हाथ से भोजन पका कर खाया। जि मारवाड़ी लोग भोजन कर रहे थे, उस समय स्त्री खड़ी देख रही थी और अपनी कन्या के स्मरण करके ठण्ढी साँसें भर रही थी। उसे हो रहा था कि लोग लड्डू-कचौड़ी नहीं खा रहे उसकी कन्या का हाड़-मांस खा रहे हैं! उस के बलिदान ही से तो यह भोज हुआ है। ऐसे उस भोज की सामग्री वह कैसे खा सकती तक कि बचा हुआ सामान भी उसने अपने रक्खा—सब इधर-उधर बटवा दिया।

* *

ओसर होने के पश्चात् निश्चित समय पर की स्त्री ने अपनी कन्या का विवाह पँचकौ कर दिया। इस पर भी मारवाड़ी भाइयों ने कोई नहीं की। पँचकौड़ीमल के समान धनी विरुद्ध कुछ कहने का साहस किसमें था। सबने पूर्वक विवाह में योग दिया।

विवाह के दो वर्ष पश्चात् ही पँचकौ असार संसार से चल बसे और इस प्रकार बालिका मारवाड़ी भाइयों की मूढ़ता, अज्ञानता तथा रूढ़ि-प्रियता की बलिवेदी पर बलिदान हो

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

हमारे कुछ विचित्र विश्वास

[श्री० मोहनलाल जी बड़जात्या]

विचित्र विश्वास या अन्ध-विश्वास

भारत में अन्धविश्वासों का बड़ा ज़ोर है। यदि यह कहा जाय कि पृथ्वी पर शायद ही ऐसा कोई देश हो जहाँ अन्ध-विश्वासों का इतना साम्राज्य हो, तो भी कुछ अनुचित नहीं होगा। नीचे जिन बातों का वर्णन किया जायगा सम्भव है वे सब इस नाम के अन्तर्गत आने योग्य न हों, तो यह भी हो सकता है कि कड़ी निगाह से देखने वाले इन्हें अन्ध-विश्वासों के सिवा और कुछ कहें ही नहीं। इसीलिए मैंने अन्ध-विश्वास न कह कर विचित्र विश्वास ही कहना अच्छा समझा। मान लिया जाय कि ये अन्ध-विश्वास नहीं हैं और इनकी तल में कुछ न कुछ तथ्य है, पर यह तो निश्चयपूर्वक कहा जा सकता है कि इन बातों के पालने व मानने से भारत का अहित एवं हमारे दिलों में कमज़ोरी लाने के सिवा और कुछ भी लाभ नहीं हुआ है। यदि ये बातें सच्ची भी हों तब भी इनसे लाभ की आशा तभी की जा सकती है जब इनके विषय का सच्चा ज्ञान हो। जिन ऋषियों ने इन बातों का निर्णय किया, सम्भव है उन्होंने सच्चे आधार पर इन्हें गठित किया हो, पर वह सच्चा ज्ञान दिन-दिन क्षीण व लुप्त हो जाने पर, इनके विषय की सच्ची जानकारी बिना ही इन्हें माने जाना सिवा नुक़सान के और क्या कर सकता है?

मुहूर्त

मुहूर्त के बिना पाँव न धरने वाले एवं इसी को सफलता की कुञ्जी मानने वाले चट से कह देंगे कि इसका विधि-विधान हमारे शास्त्रों में मिलता है; एवं कई स्वतन्त्र ग्रन्थ भी इस विषय पर रचे हुए हैं, तब इसे झूठा कैसे मानें। इस पर पूछना पड़ेगा कि यह सब होने पर भी आज इसके सच्चे समझने वाले कितने हैं? आपका मुहूर्त ठीक शास्त्र के कथनानुसार निकाला जाता है या जो आपके ज्योतिषी जी कह देते हैं वही बस सर्वाङ्ग सुन्दर मुहूर्त है! आज हमारे जीवन में ऐसी कौन सी बात है जिसके लिए मुहूर्त की आवश्यकता न हो! छोटी से छोटी बात के लिए भी इसकी आवश्यकता पड़ेगी। बुलाओ जोषी जी (ज्योतिषी जी) को। महाराज पञ्चाङ्ग लेकर आएँगे और कुछ गुनगुना कर पूछे हुए आवश्यक कार्य के लिए ऐसा मुहूर्त बताएँगे जो इधर का न उधर का, अर्थात् जो किसी भी प्रकार सुविधा-जनक नहीं। पर किया क्या जाय, हमें अपनी सुविधानुसार कार्य सम्पन्न करने का और मुहूर्त की ग़ुलामी न मानने का साहस भी तो हो। महाराज से ही फिर कहना पड़ता है—"महाराज, कुछ जल्दी का बताइए।" महाराज फिर कुछ देख-भाल कर कहते हैं—"हाँ, एक अमुक तिथी-बार और बेला (समय) का और है।" ऐसा जान पड़ता है मानों ये सब बातें और मुहूर्त के नियम एक रबर की नली में पिरोए हुए हैं, जिन्हें चाहे जहाँ तक बढ़ा लो, सिकुड़ा लो। यह बात भी ध्यान देने योग्य है कि महाराज को मुहूर्त दिखाई की फ़ीस (नारियल या रुपया) आपसे मिलेगी, न कि उस शास्त्र या शास्त्र के प्रणेता से, और फिर यह भी कौन जानता है कि शास्त्र का और शास्त्र में कहे हुए नियमों का उन्हें ज्ञान ही कितना है। उन्हें तो आपको राज़ी रखना है, इसीलिए कह देते हैं "हाँ यजमान, एक आषाढ़ शुक्ला ३ रविवार ३ घड़ी ९ पल चढ़े दिन का बनता तो है।" "बनता तो है सो नहीं, ठीक से बताइए।" "ठीक है, सब बात मिलती है, सिर्फ़ चन्द्रमा ठीक नहीं है सो उस दिन रविवार है, इसलिए उसका कुछ दोष नहीं, यही ठीक रहेगा।" अन्त में इस तरह से खींच-तान कर बताए हुए मुहूर्त पर कार्य किया जाता है। भली-भाँति निपट जाने पर तो मुहूर्त निकालने वाले महाराज की वाह-वाही है और यदि कुछ विघ्न हुआ तो महाराज को कहने के लिए जगह है कि क्या करें, मुहूर्त तो ठीक नहीं था, पर आवश्यकता-वश बताया गया।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

मुहूर्त दिखाना हर एक काम के लिए ज़रूरी है। ऐसा कौन सा काम है जो मुहूर्त बिना किया जाता हो? विवाह-शादी एवं धार्मिक मेला, प्रतिष्ठा आदि कार्य, बालक का नामकरण, जनेऊ, विद्यारम्भ, विवाह आदि संस्कार, इधर राज्य-तिलक आदि ऐसी कौन सी बात है जो मुहूर्त बिना की जाती हो। इस भाँति सामाजिक, धार्मिक एवं राजनीतिक—सभी बातों में इस मुहूर्त का दौर-दौरा है, यहाँ तक कि जीवन के साधारण से साधारण काम भी इस विषय के विचार बिना नहीं किए जाते। नया कपड़ा पहनना या सिलने को देना है तो विचार आएगा, आज तो वार अच्छा नहीं है, किसी आवश्यक विषय या काम-धन्धे की कोई बात का विचार करना है, तो कल करेंगे, आज दिन ठीक नहीं है। इसी भाँति स्त्रियाँ चूड़ी पहनने, सिर गुँथवाने के लिए भी शुभ और अशुभ वार को अवश्य देखेंगी।

मुहूर्त की बात सच्ची मान लेने पर यह बात तो ज़रूरी है कि इसके निकालने का सच्चा ज्ञान हो। इसके बाद सच्चा ज्ञान और अच्छा या बुरा मुहूर्त किसे कहा जाय? सच्चे ज्ञान की तो बात यह है कि पुराने ज़माने में तो इस शास्त्र के ज्ञाता ज़रूर रहे होंगे। जब प्रत्येक बात उन्हें पूछ-पूछ कर उनके बताए हुए मुहूर्त पर की जाती थी, फिर यह बात कैसे है कि उस समय भी बुरी और भली सब तरह की घटनाएँ होती थीं। राज्य-दरबारों में भी इसके जानकार विद्वानों की कमी न थी, फिर भी क्या बात है कि भारतीयों पर बाहर वालों ने विजय पाई और भारत यों पराधीन हो गया? अच्छे मुहूर्त की इन्तज़ारी में बैठे रहना और वह आएगा तभी कोई काम किया जायगा, यह कितनी बुरी बात है और इससे सिवा हानि के और क्या हो सकता है! यह बात कहने पर मुहूर्त-शोधक ज्योतिषी जी चट से कह देते हैं—"क्या हर्ज है, अच्छे मुहूर्त से कार्य किया जायगा तो वह तत्काल हो जायगा। बिना मुहूर्त परदेश जाने और बेकार रहने से तो मुहूर्त के साथ चाहे वह २-४ महीने बाद हो, जाना और काम लग जाना अच्छा है।" पर ऐसी शक्ति इन मुहूर्तों में हो तब न!

महायुद्ध के समय जब कलकत्ता-बम्बई में व्यापार की धूम मची, तब बाहर से आने वालों को नौकरी भी मिल जाती थी एवं उस समय बहुतों ने लाखों-करोड़ों रुपए भी कमा लिए। उस समय जिस भाँति लोग मुहूर्त आते थे उसी तरह अब भी मुहूर्त देखना बन्द नहीं है, फिर क्या बात है, आज चाहे जिस मुहूर्त में वह धन की नदी कहाँ है; और तो क्या, साधारण मिलना भी कठिन हो जाता है। एक बात और होते हुए भी भवितव्य और प्रारब्ध की बात नहीं? 'कर्म-गति टारे नाहिं टरे' वाली बात या नहीं? तभी कहा है :—

मुनि वशिष्ठ से पण्डित ज्ञानी, रुचि-रुचि लग
सीता हरण मरण दशरथ का, बन में विप

ऐसा होने पर अच्छे और बुरे मुहूर्त से विदेशी, जो आज यहाँ गुलछर्रे उड़ा रहे हैं, दिखा-दिखा कर नहीं आते। ईस्ट इण्डिया कम्पनी मुहूर्त दिखा कर आई और आज ये जहाज़ मुहूर्त देख कर छोड़े जाते हैं? मुहूर्त बिना पाँव वाले भारत की आज यह दशा और मुहूर्त का न जानने वाले कर्मवीर विदेशियों का यह अमृ दोनों का थोड़ा सा मिलान करने पर मालूम हो कि हमारे लिए यह मुहूर्त का भूत क्या है! इ के आश्रित हो जाना, उसकी इन्तज़ारी में बैठे को नष्ट करना और जब मुहूर्त आएगा तभी कहना कहाँ की बुद्धिमानी है? आज दिशाशूल जायँगे, पर कल चन्द्रमा ठीक नहीं है, परसों अच्छी नहीं है, ये शिकायतें मुहूर्त देखने वाल से बहुधा सुनी जाती हैं, क्योंकि उन्होंने यह रक्खा है—

दिशाशूल ले जावे बायाँ, राहु योगिनी
सम्मुख लेवे चन्द्रमा, लावे लक्ष्मी

इस तरह एक मुहूर्त में न जाने कितनी जाती हैं, तब कहीं जाकर ज्योतिषी जी महाराज हैं कि अमुक मुहूर्त है। इसी भाँति विवाह के लिए जिसे 'सहारग' 'साहासावा' आदि कहते हैं कितनी बातें देखी और विचारी जाती हैं। कभी तक विवाह का मुहूर्त ही नहीं निकल सकता। में विवाह करना चाहे जितना आवश्यक हो, सकेगा। १३ महीने का सिंहस्त लगता है, विवाह नहीं होता, एवं वर्ष में कुछ ही ऐसे

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

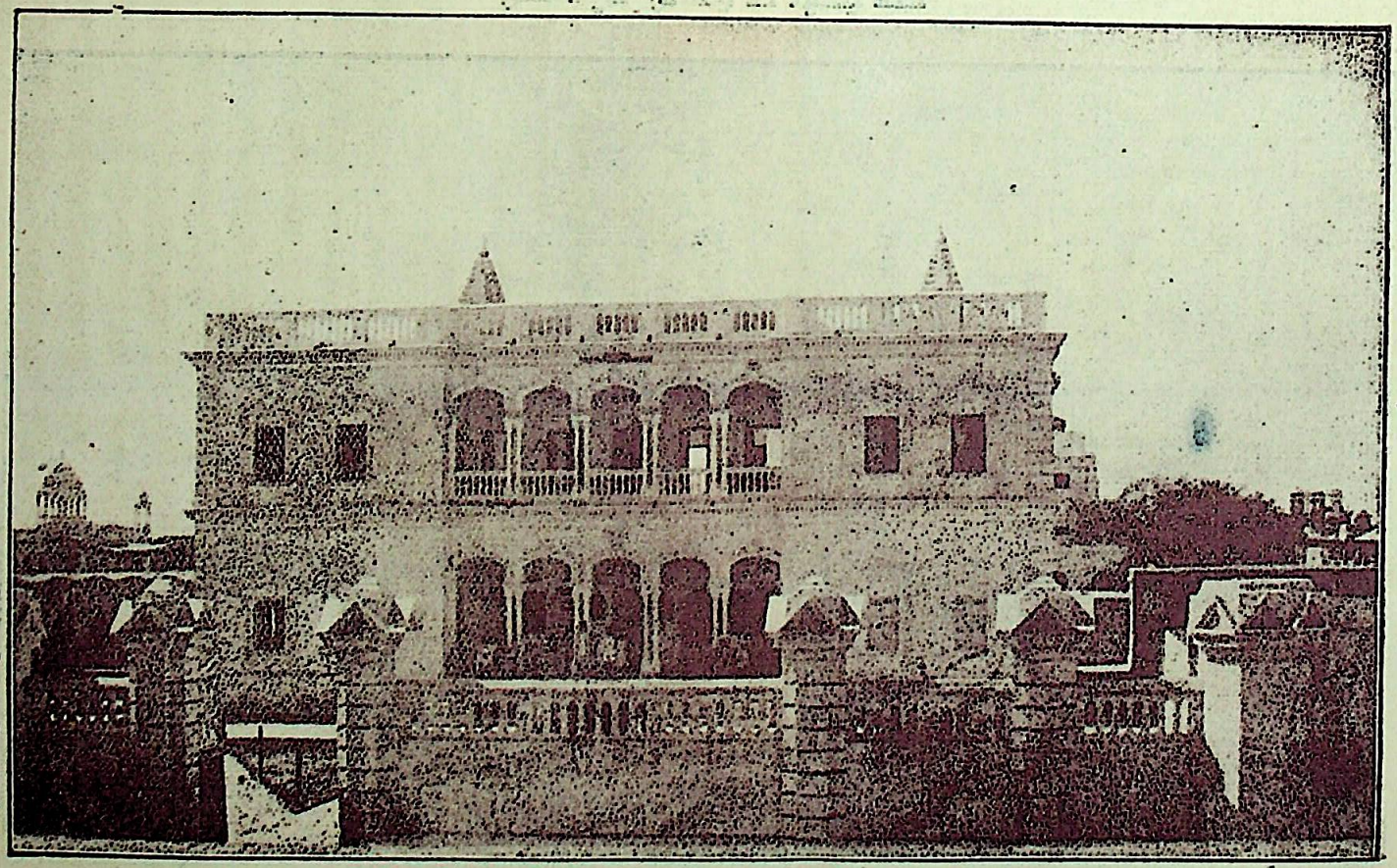

बिड़ला हाई स्कूल, पिलानी

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

श्री० ब्रजभूषण शर्मा जी त्रिलोगिया (बपलीक)

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

जिनमें विवाह हो सकता है। उस समय चाहे सुविधा हो या नहीं, मौसम कड़ा हो, कड़ाके की ठण्ढ पड़ती हो या गर्मी हो, वर के परीक्षा के दिन नज़दीक हों, जिससे उसकी पढ़ाई में हर्ज होना अच्छा न हो, यहाँ तक कि किसी निकट सम्बन्धी के मरे बहुत कम दिन हुए हों और उसका शोक भी अभी तक नहीं मिटा हो * पर विवाह तो बताए हुए मुहूर्त के समय पर ही करना होगा। वह इधर-उधर नहीं हो सकता! इस झञ्झट के कारण बहुत से विवाह असमय में ही कर लिए जाते हैं। विवाह की भाँति विदेश-गमन के लिए भी कभी-कभी दो-चार महीने तक मुहूर्त नहीं निकलता। जिसने पहले कभी विदेश-गमन न किया हो और पहले-पहल विदेश को जाता हो, उसके लिए श्रावण मास में जाना मना है। स्त्री के लिए वर्षा-ऋतु में, एवं तारा लग जाने पर आवा-गमन बन्द रहता है।

मुहूर्त की तैयारी

मुहूर्त के साथ काम किए जाने पर भी और कई बातों की देख-रेख की जाती है। विवाह मुहूर्त से तो होता ही है, पर उसमें भी वह भली प्रकार निबट जाय, इसके लिए न जाने और कितने प्रकार के उपचार किए जाते हैं। विदेश-गमन के मुहूर्त के दिन लकड़ी की भारी घर में मोल न ली जाय और जाने वाले की स्त्री रजस्वला न हो। बिना मौसम के छींटें भी न पड़ें अर्थात् यदि वर्षा-ऋतु नहीं है और छींटें पड़ जायँ तो उस दिन का मुहूर्त सध नहीं सकेगा। उस दिन जाने वाले को भात करके खिलाए जायँगे एवं उसकी थाली में गुड़-दही आदि मुख्यतया परोसे जायँगे। मुहूर्त की घड़ी आ जाने पर ज्योतिषी जी पूजा करावेंगे और अपनी दक्षिणा लेंगे। तब किसी सौभाग्यवती स्त्री द्वारा जाने वाले के तिलक किया जाता है और विदा में नारियल और एक रुपया या उससे अधिक दिए जाते हैं; तब वह उठ कर विदा होता है। जूते में पहले दाहिना पाँव देना होगा और घर के बाहर सौभाग्यवती स्त्री (जाने वाले की पत्नी हो या अन्य कोई) कलश लिए खड़ी रहेगी। इस क्रिया को 'कलश मनाना' कहते हैं। विदेश-गमन के समय राह में खाने के लिए घर से रोटी लेना, एवं छत्ता, तेल, कङ्घा आदि भी न जाने कितने पदार्थ साथ में लेना मना है। गमन के तीन दिन पूर्व ही हजामत करा लेना होगा। जहाँ जाना है, उस नगर में प्रवेश भी मुहूर्त देख कर होगा। यदि दिन ठीक नहीं है तो बाहर ही कहीं रहना होगा और दूसरे या तीसरे दिन जब समय ठीक होगा तब प्रवेश करना होगा। कहाँ तक कहा जाय, मुहूर्त आदि के ये सब झगड़े-टण्टे कई प्रकार के हैं। और यही नहीं कि ये सब बातें केवल विदेश-गमन के समय देखी जाती हों—विदेश से अपने घर लौटते समय भी बहुत सी बातों का पालन किया जाता है। कलकत्ते से सोम, बृहस्पति और शनिवार को ही जाना होगा, अन्य वारों को नहीं। इसीलिए इन तीन दिनों में रेलगाड़ियाँ बुरी तरह भर जाती हैं। भीड़ के कारण बहुत-कुछ तकलीफ उठानी पड़ती है, पर जाना इन्हीं तीन दिनों में होगा। इसीलिए मेरे एक बङ्गाली मित्र का कहना है कि वे जिस दिन मुहूर्त-भक्त मारवाड़ी नहीं जाते, उस दिन बड़े आराम से थर्ड क्लास में जाते हैं।

मुहूर्त में रियायत

मुहूर्त के सम्बन्ध में इतना पचड़ा होते हुए भी इसके लिए कई रास्ते भी निकाले हुए हैं। विवाह का मुहूर्त ठीक नहीं सूझता हो तब भी महाराज निकाल तो देंगे, पर साथ में कह देंगे कि 'एक पूजा बृहस्पति की करनी होगी।' मुहूर्त न निकलता हो और जाना ज़रूरी हो तो एक आवश्यकीय मुहूर्त निकाल दिया जाता है, जिसे 'दुघड़िया' कहते हैं। इसी भाँति निकाले हुए मुहूर्त के समय किसी कार्यवश जाना न हो सकता हो तो प्रस्थान रख दिया जाता है और फिर तीन दिन तक चाहे जब जा सकते हैं। यह कर देने पर फिर कुछ बाधा नहीं रहेगी, क्योंकि प्रस्थान करके पीछे जाना मुहूर्त से जाने के बरा-बर कहा जाता है। यह प्रस्थान की क्रिया इस प्रकार है कि गमनकर्त्ता मुहूर्त के समय जा नहीं सकता हो तो वह अपने एक डुपट्टे में पाँच मङ्गल द्रव्य यथा सुपारी, मूँग, हल्दी की गाँठ, धनिया, गुड़ और एक चाँदी का सिक्का यथा दुअन्नी, चवन्नी आदि में से कोई बाँध कर, जिस तरफ़ जाता हो उस तरफ़ अपने घर से दूर रख दे, फिर तीन दिन तक जब चाहे इस डुपट्टे को साथ लेकर

* शोक मिटाने की निश्चित अवधि और क्रिया-प्रणाली होती है।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

गमन करे। इन तीन दिनों में जिस तरफ़ डुपट्टा रक्खा है, उस ओर उस स्थान से आगे नहीं जा सकता चाहे उसकी दूसरी दिशा में वह कितनी ही दूर क्यों न चला जाय। आजकल लोग अपने पास डुपट्टा नहीं रखते हैं, इसलिए डुपट्टा नहीं हो तो प्रस्थान रूमाल में ही बाँध कर रख दिया जाता है!

मुहूर्त से जाने वाले सभी लोग करोड़पती-लखपती नहीं हो जाते तो बिना मुहूर्त जाने वाले भूखों भी नहीं मरते, फिर इस मुहूर्त से क्या लाभ है? यह हृदय में दृढ़ता और उत्साह भरने का कुछ साधन भले ही हो; इसीलिए अङ्गिरा ऋषि ने तो यह भी कह दिया है कि जिस समय हृदय में उत्साह हो वही समय सबसे अच्छा मुहूर्त है; कहा है—"अङ्गिरा च मनोत्साहं।" इन महात्मा ने सब बात के बदले में मनोत्साह को पूर्ण प्रधानता दे दी, और अच्छा तो यही हो यदि इस वाक्य के अनुसार किया जाय। अफ़सोस है कि उत्साह या साहस का इतना लोप हो गया कि महाराज को पूछे एवं मुहूर्त बिना कुछ कार्य नहीं किया जा सकता और मुहूर्त के अनुसार चलना इतना आवश्यकीय हो गया है कि चाहे मुहूर्त आधी रात का हो, उस समय कोई रेल नहीं मिलती हो, यहाँ तक कि चाहे १०-१२ घण्टे बाद भी रेल का समय क्यों न हो, पर घर से विदा उस निर्णीत मुहूर्त पर ही होगी। इससे असुविधा के साथ-साथ समय कितना नष्ट होता है, यह विचारणीय बात है।

शकुनों का साम्राज्य

इस मुहूर्त तक ही बात का अन्त हो, सो नहीं है; इसके पश्चात् शकुनों का साम्राज्य चलता है। बात-बात में शकुन और अशकुन देखे जाते हैं। कभी-कभी तो इस विषय में बड़ी विचित्रता देखी जाती है और कई पक्के और दृढ़ विचार वाले भी इन शकुनों के आश्रित पाए जाते हैं। कहा जाता है कि कोटा के महाराजा ज़ालिमसिंह जी उल्लू के बोल जाने के कारण महलों का निवास छोड़ कर बाहर खेतों में रहने के लिए चले गए। इसी प्रकार जयपुर-नरेश ने वृन्दावन में जो सुन्दर मन्दिर बनवाया उसे कुछ अशकुन के ही कारण अधूरा छोड़ दिया! विदेश-गमन या यात्रा के समय शकुनों को बहुत देखा जाता है। विद्यार्थी अपनी परीक्षा के लिए भी शकुनों को देखते हैं। चोर चोरी करने जाने पर भी पहले शकुन विचार करेगा। मुहूर्त की भाँति शकुनों पर में उल्लेख पाया जाता है। कौन शकुन शुभ अशुभ, इसका वर्णन विस्तारपूर्वक किया गया मुख्यतया पक्षियों की बोली और उड़ने आदि से समझे जाते हैं, पर और भी पदार्थ, पशु और जाति के मनुष्यों का मिलना और इसमें भी दिशा ओर का भेद आदि शकुनों के शुभ और अशुभ कई लक्षण और भेद हैं। शकुनों को समझना और इनके पूर्ण ज्ञाता हुए बिना इन पर आश्रित सिवा हानि के और क्या कर सकता है? पक्षी बोली से यह अर्थ नहीं है कि उनकी बोली जाय। पूर्व समय में पक्षियों की बोली समझे भी रहे हों और उससे भविष्य का हाल जान रहा हो, पर आज यह ज्ञान कहीं किसी में नहीं जाता। पक्षी क्या बोल रहा है, इस सरोकार न होते हुए केवल यही देखा जाता वह किस ओर बैठा बोल रहा है; अर्थात् दाहिने या बाँई। हाँ, उल्लू की बोली समझे शायद कुछ लोग हों; क्योंकि उसकी बोली में बहुधा यह कहा जाता है कि भरी बोली ख़ाली? वह रात्रि के समय मकान की छत न बोल जाय, इसके लिए मकान-मालिक रहते हैं और कई स्थानों में छतों पर लकड़ी कपड़ा आदि इस तरह से लटका दिया जाता रात्रि को उल्लू उसके डर से मकान पर आकर

मुहूर्त की भाँति शकुनों पर आश्रित हो कहना होगा कि सिवा कमज़ोरी के और क्या सकता है। पग-पग पर शकुनों का देखना वशीभूत हो जाना आगे चल कर अकर्मण्यता धारण कर लेता है। शकुनों का सोच-विचार भालना राजपूताना में अधिक है और सबसे वाड़ में। कहा भी जाता है कि 'मारवाड़ मर अर्थात् मारवाड़-निवासी विचार ही विचार में हैं, करने-धरने को कुछ नहीं। सच ही है, वहाँ का झगड़ा बड़ा भारी है और उस पर फिर मुहूर्त सबसे अच्छा निकाला गया, पर शकुन हुए तो बस बैठे रहिए, किया-कराया सब घर से बिदा होकर निश्चित स्थान पर पहुँचने

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

को देखते जाना होता है। कुछ भी वहम हुआ कि वापस लौट आए या चले भी गए तो कुछ दिन रह कर यह कहते हुए कि अब की वार मुहूर्त या शकुन ठीक नहीं हुए इसलिए एक बार मुहूर्त फेरना है—जल्दी ही वापस आगए!

इस तरह से दिल में इन बातों का न जाने कितना विश्वास और कमज़ोरी घुसी हुई है। देश में मेरे एक न्यायतीर्थ मित्र हैं, जो वैद्यक अच्छी जानते हैं, पर उन्हें इन मुहूर्त और शकुन आदि में विश्वास नहीं है। एक बार पास के किसी ग्रामपति ठाकुर साहब का बुलावा आया। वैद्य जी ने ऊँट वाले से ज़ीन कसने को कहा और रवाना हो गए। राह में ऊँट वाले ने कहा—"महाराज! शकुन तो भले नहीं हैं, क्योंकि तीतर दाहिने बोल रहा है।" वैद्य जी ने कहा—"कुछ भय नहीं, शीघ्रता से चले चलो, तीतर के बोलने का क्या, वह तो जहाँ बैठा होगा वहीं बोलेगा"। थोड़ी दूर आगे जाने पर ऊँट का पाँव उखड़ गया, बस ऊँट वाला बन गया सिद्ध! चट से बोल उठा—"मैंने कहा था न महाराज, कि शकुन अच्छे नहीं होते।" वे बोले—"क्या हुआ, बेचारा जानवर है, क्या मनुष्य के पैर के ठोकर नहीं लग जाती?" वैद्य जी ने न उस ऊँट वाले के कहने की, या तीतर के बोलने की, न कुछ ऊँट के ठुकराने की ही परवा की और गाँव को ठीक समय पर पहुँच गए। वहाँ ठाकुर साहब के पुत्र का इलाज किया और ५००) रु० घर लेकर लौटे।

अच्छे और बुरे शकुन

शकुनों के अच्छे और बुरे का वर्णन बहुत बड़ा है। उनके अच्छे और बुरेपन की पहचान कर लेना आसान नहीं। घर से गमन के समय यदि साग-भाजी या फल मिलें तो शुभ समझा जाता है। पानी के भरे घड़े मिलें तो अच्छा, ख़ाली मिलना अच्छा नहीं। दही मिलना शुभ, पर दूध और घी का मिलना अशुभ। रोटियाँ मिलना शुभ, पर आटा मिलना बुरा कहा जाता है। मुर्दा मिल जाना भी शुभ बताया जाता है। सौभाग्यवती स्त्री भले ही मिले, पर विधवा नहीं। भङ्गी भले ही मिल जाय और सो भी हाथ में अपनी टोकरी लिए हुए हो तो और भी अच्छा, इसलिए किसी के गमन की ख़बर सुन कर भङ्गी घर के बाहर आ जुटते हैं और उनको पैसे बाँटे जाते हैं। सुनार का मिलना बड़ा अशुभ माना जाता है। कहा भी है :—

आटा साटा घी घड़ा, खुलाँ केशाँ नार।
डावाँ भला न जीवणा, ल्याली जरक सुनार॥

अर्थात्—"आटा, घी का घड़ा, खुले सिर वाली स्त्री, ल्याली, जरक (एक तरह के जानवर हैं) और सुनार, इनका किसी भी तरफ़ मिलना अच्छा नहीं।" गधा बाँईं ओर और सर्प दाहिनी ओर मिलना शुभ माना जाता है, यथा—'खर दायाँ विष जीवणा'। तीतर का बाँईं ओर और सोन चिड़िया का दाहिनी ओर बोलना शुभ माना जाता है। काने पुरुष का मिलना अशुभ है। कहा है :—

तीन कोस तक मिले जो काना।
घर लौटे वह परम सयाना॥

कितनी दूर बाद एक मिले हुए शकुन का प्रभाव मिट जाता है, इसका उल्लेख नहीं मिलता। पर कई शकुन तत्काल फल देने वाले माने जाते हैं। यदि गमन के समय कोई नाँ कर दे कि क्यों जाते हो, अभी मत जाओ, अथवा पूछ बैठे कि कहाँ जाते हो, अभी क्यों जाते हो, तो गमन स्थगित कर दिया जाता है। यदि शकुन-विधान सच्चा माना जाय तो भी यह कहना होगा कि जो शकुन बिना किसी प्रकार के आयोजन के अपने आप स्वतः मिलते हैं, वही अच्छे या बुरे फलदाता हो सकते हैं; पर आजकल इन शकुनों का इतना प्राबल्य हो गया कि इनके लिए प्रबन्ध कर दिया जाता है। मालूम नहीं, इस प्रकार आयोजित शकुन क्या फल दे सकते हैं?

देवी-देवताओं से शकुन

देव-मूर्त्तियों से भी शकुन माने और समझे जाते हैं। मूर्त्ति पर पुष्प रख दिए जाते हैं और उनके दाहिनी या बाँईं ओर गिरने से शकुन के शुभ-अशुभ की धारणा कर ली जाती है। भिन्न-भिन्न देशी राज्यों में भिन्न-भिन्न देवताओं का इष्ट और राज्यदेवी का मन्दिर होता है। यथा आकोट की शला देवी, बीकानेर में करणी माता, जयपुर के गोविन्ददेव जी, उदयपुर के एकलिङ्ग जी, नैपाल के पशुपतिनाथ आदि। बहुत प्राचीन काल से किसी बात के करने के पूर्व अपनी राज्यदेवी या देवता से उस बात की जाँच कर लेने की रीति चली आती है। चाहे इस तरह

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

किया हुआ निर्णय कुछ तथ्यकारी हो या नहीं, पर कार्य-विधान निर्णयानुसार ही किया जाता है। साधारण घरों में भी देवताओं के नाम पर धूनी से शुभ-अशुभ की परीक्षा की जाती है। इस क्रिया में अग्नि पर घी या नारियल की गिरी डाली जाती है और अग्नि के भभक उठने पर, जिसे लौ जग जाना या जोत आ जाना कहते हैं, शुभ समझा जाता है। इसी भाँति छोटी जातियों में विवाह के पूर्व शकुन देखा जाता है। इसकी कई विधियाँ हैं। एक में वर के मस्तक पर तेल ढाला जाता है, वह यदि सीधा नाक पर लुढ़क कर आ गिरे तो शकुन शुभ समझा जाता है और यदि गालों की ओर लुढ़क जाय तो इससे वधू का मर जाना या उसका पतिभक्ता होने की सूचना समझी जाती है। विवाह में सभी जातियों में एक नहीं, कई प्रकार के टोने-टोटके, यन्त्र-मन्त्र और शकुन-विधान किए जाते हैं।

सर्प और छिपकली से शकुन

सर्प से कई तरह के शकुन माने जाते हैं। दो साँपों को लड़ते हुए देखना, अपने घर वालों से झगड़ा होने की सूचना समझी जाती है। दो साँपों को एक ही ओर जाते देखना दारिद्रय लाता है और एक सर्प का दूसरे को निगलना अकाल-सूचक समझा जाता है। सर्प को हरे वृक्ष पर चढ़ते देखना इतना अच्छा कहा जाता है कि देखने वाला निश्चय ही सम्राट्-पद को प्राप्त कर लेता है। राजा के लिए सर्प को पेड़ से नीचे उतरते देखना अशुभ है। सोते हुए, सर्प का आकर सिर पर फण कर लेना बहुत अच्छा कहा जाता है। घर में सर्प को प्रवेश करते देखना मकान-मालिक के लिए धन-सूचक और घर से जाते हुए देखना अशुभ-सूचक बताया जाता है। फैलाए हुए फण और उठी हुई दुम वाले सर्प को बाँईं ओर से दाहिनी ओर जाते देखना शुभ-सूचक, और केवल फण उठाए हुए हो तो अच्छे भोजन की प्राप्ति सूचक होगा। भूमि पर मरे हुए सर्प को देखना किसी की मृत्यु-सूचना का आना बतलाता है। कृषक बीज बोते समय फण उठाए हुए सर्प को देख ले तो अच्छी फसल का सूचक होगा।

छिपकली से भी बहुत से शकुन माने जाते हैं। मनुष्य की देह पर ६५ भिन्न-भिन्न स्थान हैं, जिन पर छिपकली का पड़ना या छू जाना शुभ-अशुभ की सूचना का द्योतक बताया जाता है। सिर के बीच में बीमारी या लड़ाई-झगड़े का सूचक, दाहिने अँगूठे पर पड़ने से धन-सूचक आदि कई तरह के भिन्न अङ्गों के साथ इसका सम्बन्ध बताया हुआ जाता है।

प्रातःकाल का शकुन

प्रातःकाल सोकर उठने के समय भी बहुत धानी से काम लिया जाता है। बहुत लोग इस पूरा ध्यान रखते हैं कि उठते समय पहले-पहल दृष्टि, शुभ पदार्थों ही पर पड़े और कोई अशुभ न हो जाय। चन्दन, काँच, अँगूठी या देखना शुभ समझा जाता है। बहुधा अपनी को रगड़ कर देख लिया करते हैं। हथेली के दर्शन में कहा जाता है :—

कराग्रे वसते लक्ष्मी कर मध्ये सरस्वती,
करपृष्ठे च गोविन्दा प्रभाते कर दर्शनं।

कई उठते हैं तब आँखें मींच कर पहले दाहिने आगे रख कर चलते हैं और जहाँ देवता की मूर्ति जाकर उसके सामने अपनी आँखें खोलते हैं, इस देव का इतना विचार नहीं रहता, जितना इस कि दिन शुभ निकले। वह दिन दर्शन अच्छा निकले लिए ये सब विधान किए जाते हैं और दिन में जाने पर बहुधा यह कहा जाता है कि "अरे आज मुँह देखा था!" पर यह बात ध्यान में नहीं रखते कि किसी का भी मुँह देखो, सब दिन अच्छे होते, तो सभी बुरे भी नहीं होते। हुमायूँ के दिल धड़का था कि वह राजसिंहासन पर बैठने में सफल या नहीं, पर उसने जब 'मुराद, दौलत और सलामत' तीन व्यक्तियों को क्रमशः देख लिया, तब उसके दृढ़ता आगई। कहने की आवश्यकता नहीं कि आयोजन उसके दोस्तों द्वारा किया गया था। भी अपने आप होने वाले शकुनों की अपेक्षा शकुन बना लिए जाते हैं।

छींक के शकुन

शकुन-विचार में छींक एक बहुत प्रधान मान जाती है। विवाह की क्रिया के समय छींक होना अवाञ्छनीय है, इसीलिए विवाह में प्रधान

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

सुविख्यात बिड़ला-बन्धुओं के सौभाग्यशाली पिता

राजा बलदेवदास जी बिड़ला

FINE ART PRINTING COTTAGE ALLAHABAD

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

शैलकुमारी

[ले० पं० रामकिशोर जी मालवीय]

यह उपन्यास अपनी मौलिकता, मनोरञ्जकता, शिक्षा, उत्तम लेखन-शैली तथा भाषा की सरलता और लालित्य के कारण हिन्दी-संसार में विशेष स्थान प्राप्त कर चुका है! अपने ढङ्ग के इस अनोखे उपन्यास में यह दिखाया गया है कि आजकल एम० ए०, बी० ए० और एफ़० ए० की डिग्री-प्राप्त स्त्रियाँ किस प्रकार अपनी विद्या के अभिमान में अपने योग्य पति तक का अनादर कर उनसे निन्दनीय व्यवहार करती हैं; किस प्रकार उन्हें घरेलू काम-काज से घृणा उत्पन्न हो जाती है।

मूल्य केवल २); स्थायी ग्राहकों से १॥); नवीन संस्करण अभी-अभी प्रकाशित हुआ है।

व्यवस्थापिका 'चाँद' कार्यालय,
चन्द्रलोक, इलाहाबाद

गौरी-शंकर

आदर्श-भावों से भरा हुआ यह सामाजिक उपन्यास है। शङ्कर के प्रति गौरी का आदर्श-प्रेम सर्वथा प्रशंसनीय है। बालिका गौरी को धूर्तों ने किस प्रकार तङ्ग किया, बेचारी बालिका ने किस प्रकार कष्टों को चीर कर अपना मार्ग साफ़ किया, अन्त में चन्द्रकला नाम की एक वेश्या ने उसकी कैसी सच्ची सहायता की और उसका विवाह अन्त में शङ्कर के साथ कराया। यह सब बातें ऐसी हैं, जिनसे भारतीय स्त्री-समाज का मुखोज्ज्वल होता है। मूल्य केवल ।॥); स्थायी ग्राहकों से ॥-) मात्र।

उमासुन्दरी

[ले० श्रीमती शैलकुमारी देवी]

इस पुस्तक में पुरुष-समाज की विषय-वासना, अन्याय तथा भारतीय रमणियों के महान स्वार्थ-त्याग और पातिव्रत्य का ऐसा सुन्दर और मनोहर वर्णन किया गया है कि पढ़ते ही बनता है। सुन्दरी सुशीला जैसी पति-परायणता स्त्री के होते हुए भी सतीश का कुमार्गगामी होना और अन्त में उमासुन्दरी नामक युवती के उपदेशों से उसका सुधार होना बहुत ही सुन्दर घटना है। मूल्य केवल ।॥); स्थायी ग्राहकों से ॥-) मात्र!

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

समय बाजा बजाया जाता है, जिससे यदि कोई छींक दे तो सुनाई न पड़े ! एक छींक का होना बुरा समझा जाता है, पर दो या उससे अधिक छींक हो जाने पर कुछ भय नहीं रहता। छींक के बाद कफ आना भी अच्छा माना जाता है। खाते-पीते या सोते समय छींक आना अच्छा समझा जाता है। कहा है—"छींकत खाना छींकत पीना, छींकत रहना सोय।" पर कहीं जाते समय छींक हो जाने से बहुत आदमी तत्काल रुक जाते हैं। कहते हैं कि पीठ-पीछे छींक होना बुरा नहीं होता, इसी भाँति तमाखू के सूँघने से, या मिर्च की धाँस से या ज़ुकाम आदि के होने से जो छींक आती है, उनका शकुन-विचार से कोई सम्बन्ध नहीं होता

दृष्टि-दोष अर्थात् नज़र लगना

दृष्टि-दोष या नज़र लग जाने की बात एवं उस पर विश्वास बड़ा विचित्र है। भारतीय जीवन में ऐसी कौन सी बात या पदार्थ है कि जिस पर नज़र न लग जाय? कहते हैं कि नज़र ऐसी कड़ी चीज़ है, जिससे पत्थर भी फट जाते हैं एवं मकान गिर पड़ते हैं। मनुष्य-देह के लिए जन्म-काल से अर्थात् बचपन ही से इसका डर आरम्भ होता है। विवाह-काल के समय इसका और भी विशेष ध्यान रक्खा जाता है एवं बड़ी उम्र में भी इसका भय नहीं छूटता है। डाकण और चुड़ेल की बात या उसकी नज़र लग जाने का डर तो है ही, पर यहाँ तो यह नज़र चाहे जिसकी लग सकती है। चाहे कोई मित्र, हितैषी या कुटुम्बी ही क्यों न हो, यहाँ तक कि बच्चे को उसकी माँ की भी नज़र लग जाना बड़ी बात नहीं। नज़र न लगे, इसके लिए कई उपचार हैं, उसी भाँति लग जाने पर उसके दोष को मिटाने के लिए भी कई उपाय और साधन माने गए किए जाते हैं। इसके उपचारों का वर्णन करना सुगम नहीं। माता अपने बच्चे का मुँह धोकर जब उसकी आँखों में काजल लगाती है, तो ललाट पर भी काजल का बिन्दु या अर्द्ध-चन्द्र बनाना न भूलेगी, जोकि उस बालक को किसी की नज़र न लगने का एक उपचार माना जाता है। विवाह के समय कई उपचार किए जाते हैं एवं वर की छोटी बहिन या किसी कन्या द्वारा नोन-राई की प्रथा भी इस नज़र के बचाव के लिए ही है। मकानों पर भी कई तरह के चिन्ह अङ्कित किए जाते हैं कि जिससे वह मकान इस नज़र-रूपी बला का शिकार न हो जाय। नज़र का डर किसी भी सुन्दर या साफ़-सुथरे उज्ज्वल पदार्थ के लिए विशेष रहता है।

नज़र लगने की जड़ क्या है, क्यों और कैसे लगती है, यह कोई निश्चय रूप से नहीं बता सकता। पर इसका विश्वास भारत की ऐसी कौन सी जाति है, जिसमें नहीं माना जाता हो? किसी पदार्थ के लिए हवस या डाह नज़र का कारण माना जा सकता है, जैसे कोई अन्धा या अन्य किसी अङ्ग-दोष वाला किसी पूर्णाङ्ग पर डाह की दृष्टि से देखे तो इस तरह देखे जाने वाले के लिए भय का कारण हो जायगा; या किसी पदार्थ के लिए किसी का बेहद लालायित होना, जैसे कोई बहुत भूखा हो और उसकी दृष्टि किसी खाद्य-पदार्थ पर पड़े तो यह उस पदार्थ के खाने वाले के लिए अच्छा नहीं। पर इसकी जड़ यहीं तक मानी जाती हो और इस नज़र का डर यहीं तक रहता हो, सो नहीं है। बिना हवस या डाह के भी किसी पदार्थ को सराह देना, जैसे कैसा सुन्दर बालक है, या किसी को हुलक देना, जैसे अमुक कितना खाता है, यह भी भय से ख़ाली नहीं। वैसे तो बड़ी उम्र वालों को भी बहुधा नज़र लगने का वहम हो जाता है, पर बच्चों के लिए माताएँ इस बात से अत्यन्त अधिक चौकन्नी रहती हैं और पग-पग पर इसको रोकने अर्थात् न लगने के लिए हर समय टोटके और साधन करती रहती हैं। जब बालक १२ दिन का होता है और उसका नामकरण होता है, तभी उसकी भूआ उसकी कमर, हाथ आदि में, यहाँ तक कि उसके पलने को भी बालक की रक्षा के निमित्त डोरा बाँधती है। बालक चिरञ्जीवी हो, यह भावना बुरी नहीं और इस भावना से यह करना कुछ बुरा नहीं, पर यहाँ तो किसी की नज़र न लग जाय, इसके लिए कलाइयों पर डोरा बाँधा जाता है और कभी-कभी लोहे के पतले कड़े भी हाथ में पहनाए जाते हैं!

पुत्र-इच्छा और उसकी रक्षा के पीछे हमारे यहाँ की माताएँ पगली हो जाती हैं। बच्चा न होने पर क्या-क्या किया जाता है एवं होकर जीते न रहने पर कई अच्छे-बुरे उपाय काम में लाए जाते हैं। ऐसी रक्षा में बालक के जन्म होने पर लोहे की कड़ी डाल दी जाती है और इस पर उसे 'नथमल' या 'नाथ्या' कहते हैं। यह कड़ी उस बालक के विवाह में उसकी सास ही खोल सकती है। इसके पहले अन्य कोई नहीं खोल सकता। किसी

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

के बालक होता न हो या होकर मर जाता हो तो ऐसी स्त्री किसी अन्य बालक के बाल या उसका कोई कपड़ा कतर लेती है और जब उस बालक की माता को इसका पता लग जाता है तो न जाने कितनी कलह और उत्पात मचाया जाता है। न जाने इन सब अन्ध-विश्वासों का नाश कब होगा! कहना होगा कि सन्तान के लिए इस तरह की बुरी चाह उसकी रक्षा का कारण न होकर, अधिकतर नाश का ही कारण होती है। बालक को साफ़-सुथरा रखना और उसे साफ़ कपड़े पहनाना माताएँ बालक के लिए बड़ा भारी भयङ्कर समझती हैं। वह सुन्दर दिखने से कहीं नज़र का शिकार न हो जाय, इस-लिए उसके ललाट पर काजल पोतने के सिवा उसे मैला-कुचैला रखना एवं मैले वस्त्र पहनाना ही उसके लिए हितकर समझा जाता है। इसीलिए बच्चों के टिकारती एवं भद्दे से भद्दे नाम रखने की चेष्टा की जायगी; यथा फकीर्‌या, गुदड़्या, लट्टूर्‌या, पूर्‌या आदि। हमारे यहाँ बच्चे के रूप या उसके शारीरिक गठन की प्रशंसा करना एक गुनाह समझा जाता है। बच्चे की माँ के सामने कोई कभी यह नहीं कह सकता कि कैसा सुन्दर बालक है! वह चाहे सुन्दर हो या कुरूप, मोटा-ताज़ा हो या दुबला-पतला, उसकी माँ का हर समय दूसरों को सुनाने के लिए यही रोना होगा—"कैसा बालक है, एक दिन भी तो अच्छा नहीं रहता।" किसी के द्वारा सराह लिए जाने पर ही उसकी माँ उस बच्चे के लिए विपत्ति का पहाड़ टूटा हुआ समझ लेगी और इस पर न जाने क्या-क्या उपचार करेगी। बीमार हो जाने पर भी बहुधा नज़र का ही दोष समझा जाता है और रोग का इलाज न होकर, नज़र के उपचार किए जाते हैं। लाल मिर्चों की धूनी दी जाती है, देवी-देवताओं के चरणामृत लाकर पिलाए जाते हैं, झाड़ा-फूँकी की जाती है, घर के कड़ी-काँटियों का धोया हुआ पानी एवं घर के लोगों की आँखों का धोया हुआ पानी पिलाया जाता है, जिसे आँखें खोल कर पिलाना कहते हैं।

हमारे यहाँ बच्चे की सराहना करना पाप समझा जाता है, वैसा अङ्गरेज़ों में नहीं है। उनमें बच्चे की सराहना से माता का घबराना तो दूर रहा, स्वयं माँ अपने बच्चे की प्रशंसा करते कुछ भय नहीं लाती। सुन्दर बच्चे को देख कर आप बेधड़क उसकी माँ के सामने उसके रङ्ग की तारीफ़ कर सकते हैं। वह यह सुन कर अत्यन्त प्रसन्न होगी। थोड़े दिनों की बात है, मैं एक अङ्गरेज़ मित्र से मिलने उनके घर गया। वह घर पर नहीं थे। उनकी मेम ने कहा—बैठिए, मिस्टर टॉमसन अभी आ जाते हैं।

मैंने पूछा—आपका बच्चा मज़े में है?

उसने कहा—वह अभी सो रहा है, आप धीरे-धीरे आवें तो मैं आपको दिखाऊँ।

मैं दबे पाँव दूसरे कमरे में गया और देख कर लौट आया। मैं नहीं समझ सका कि उस समय उससे क्या कहूँ। वह मुझे चुप देख कर बोली—आपको बच्चा पसन्द तो आया। वह कैसा सुन्दर और सुहावना है!

स्वयं माता के मुँह से यह सुन कर मैं समझ गया कि इनके यहाँ बच्चे की प्रशंसा करना पाप नहीं समझा जाता और न माँ ही प्रशंसा सुन कर घबड़ाती है। मैंने कहा—हाँ, वह निश्चय ही बड़ा सुन्दर और नीरोग है। साल भर का होगा?

मेम ने कहा—नहीं, वह सिर्फ़ ५ महीने का है।

कुछ भी हो, जहाँ के बालकों को केवल सराहे जाने पर ही उनका इष्ट-अनिष्ट सम्भव हो वे आगे क्या कर सकते हैं और उनसे क्या आशाएँ की जा सकती हैं? शिक्षित समुदाय में ऐसे अन्ध-विश्वास कम हो गये हैं पर अभी यह नहीं कहा जा सकता कि बिलकुल मिट गये हैं। कहना होगा कि शिक्षा-प्रचार ही इनके मिटाने का प्रबल साधन होगा!!

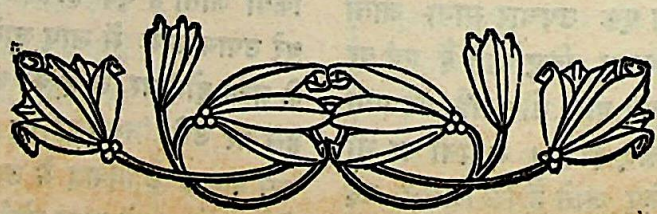

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

मारवाड़ की भौतिक और साम्पत्तिक दशा

[श्री० जगनलाल जी गुप्त, मुख़्तार]

'माड़वाड़ी' शब्द का अर्थ

'माड़वाड़ी' शब्द से वही अभिप्राय है जो 'राजस्थानी' शब्द का होता है। इसका अर्थ है उतना भू-भाग जो 'माड़' से 'मेवाड़' तक विस्तृत है। 'माड़'—जयसलमेर का दूसरा नाम है, और 'वाड़'—मेवाड़ के अन्तिम अक्षर हैं। इस प्रकार के भौगोलिक नाम भारतवर्ष में और भी पाए जाते हैं। जैसे पञ्जाब में 'सिस' का अर्थ है सिन्धु और सतलज के मध्य का भूखण्ड। यह शब्द उक्त दोनों नदियों के प्रथम अक्षरों को मिला कर बनाया गया है। इसी प्रकार 'झेच'—झेलम और चनाब नदियों के मध्य का भाग; 'रेचना'—रावी तथा चनाब नदियों का मध्यवर्ती भाग कहलाते हैं। दूर जाने की आवश्यकता नहीं है; इस प्रान्त के दूसरे पड़ोसी काठियावाड़ को ही ले लीजिए—यह शब्द 'काँठ' और 'वाड़' का संयुक्त है, जिसका अर्थ 'काँठ' (समुद्र-तट) तथा मेवाड़ के मध्यवर्ती देश का होता है। अस्तु 'राजपूताना' शब्द जिस देश को राष्ट्रीय दृष्टि से व्यक्त करता है, उसी देश को 'माड़वाड़' शब्द भौगोलिक तथा समाज-संस्कृति के विचार से व्यक्त करता है। जितने प्रान्तों में मारवाड़ी या राजस्थानी भाषा बोली जाती है, एवं रहन-सहन तथा खाने-पीने आदि में एक विशेष प्रकार का सामान्य सम्बन्ध पाया जाता है—जिसे हम मारवाड़ी लोगों में विशेषता से देखते हैं—वह सब 'माड़वाड़' या 'माड़वाड़ी प्रान्त' कहलाता है। यह जुदी बात है कि राजनैतिक भूगोल में मारवाड़ स्वयं एक ही है, एवं ऐतिहासिक दृष्टि में इस शब्द की परिभाषा समय-समय पर जोधपुर की राज्य-सीमा के परिवर्त्तन के साथ बदलती रही है। किन्तु मानव-तत्व सम्बन्धी भूगोल में, भूगर्भ-शास्त्र में, सामाजिक इतिहास की दृष्टि से, आर्थिक और सामाजिक परिस्थिति में, और संक्षेप में राष्ट्रीय कल्पना के विचार से—इस शब्द की परिभाषा आज भी वही है जो कभी संस्कृत-साहित्य में इस देश के 'मरुधन्व' या केवल 'मरु' नाम से समझी जाती थी।

जिस प्रकार 'राजस्थान' राजनैतिक भूगोल का एक शब्द है तथा 'मरु' प्राकृतिक भूगोल का एक पारिभाषिक शब्द है; उसी प्रकार 'मारवाड़' या 'माड़वार' साहित्य का एक ऐसा शब्द है जिसके द्वारा उतने भूभाग का बोध होता है, जिसमें मारवाड़ी सभ्यता, भाषा तथा संस्कृति पाई जाती है।

मारवाड़ का विस्तार

इस समान संस्कृति और सभ्यता वाले मारवाड़ का विस्तार १,२८,९८७ वर्ग-मील है, जिसमें २,७११ वर्ग-मील अजमेर-मेरवाड़ा का क्षेत्रफल मिला देने से सम्पूर्ण राजस्थान का क्षेत्रफल १,३१,६९८ वर्ग मील तक पहुँचता है। सम्पूर्ण भारत के क्षेत्रफल का यह १३.८६ वाँ भाग है। हैदराबाद और मैसूर का संयुक्त क्षेत्रफल या काश्मीर और ग्वालियर का संयुक्त रक़बा राजस्थान के लगभग बराबर बैठता है। किन्तु आबादी में यह प्रान्त सम्पूर्ण भारत के इकत्तीसवें भाग से भी कम है। अर्थात् सम्पूर्ण राजपूताने की आबादी १ करोड़ से भी कम है—लगभग ९८॥ लाख है।

सीमा

इस वीर-भूमि के पश्चिम में सिन्ध-प्रान्त; पश्चिमोत्तर में बहावलपुर की मुसलमानी रियासत; उत्तर और उत्तर-पूर्व में पञ्जाब-प्रान्त; पूर्व में संयुक्त-प्रान्त तथा ग्वालियर का राज्य; और दक्षिण में मध्यभारत के राज्य, बम्बई प्रेज़िडेन्सी तथा काठियावाड़ के राज्य हैं। दक्षिण-पश्चिम में एक स्थान पर, जहाँ लूनी और सूकरी नदी समुद्र से मिलती हैं, यह प्रान्त समुद्र से छूता है, जो खम्भात की खाड़ी का एक भाग है।

मुख्य मुख्य राज्यों की भौगोलिक स्थिति

मारवाड़ देश के मध्य में अङ्गरेज़ी प्रान्त अजमेर और मेरवाड़ा दो भागों में विभक्त है। इसके पूर्व और

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

दक्षिण-पूर्व में जयपुर, भरतपुर, धौलपुर, करौली, बूँदी, कोटा और झालावाड़ की रियासतें हैं। दक्षिण में प्रतापगढ़, बाँसवाड़ा, डूँगरपुर तथा उदयपुर हैं। दक्षिण-पश्चिम में सिरोही का राज्य तथा जोधपुर-राज्य विस्तृत है, जो लूनी के द्वारा समुद्र से मिला है। पश्चिम में जयसलमेर तथा जोधपुर के राज्य हैं; और उत्तर में बीकानेर का जाङ्गल स्थान है। पूर्वोत्तर में शेखावाटी और अलवर स्थित हैं। किशनगढ़ राज्य तथा शाहपुरा और लावा की जागीरें एवं टोंक की नवाबी के कई भाग मध्य राजपूताने में ही समझे जाते हैं।

भौतिक परिस्थिति

राजपूताने की भिन्न-भिन्न प्रकार की भौगोलिक परिस्थिति ने यहाँ की प्रजा पर क्या प्रभाव डाला है एवं इसके विकास तथा संस्कृति को क्यों इस प्रकार का बनाया है, यही बातें इस लेख में दिखाई जायँगी। तब यहाँ की आर्थिक और मानव-तत्व-सम्बन्धी परिस्थिति का कारण, कार्य तथा शृङ्खलायुक्त वर्णन पाठकों के सम्मुख देना उचित होगा। अतः आरम्भ में इस प्रान्त का भौतिक भूगोल दिया जाता है। अस्तु—

सम्पूर्ण राजस्थान को अर्बुदाचल या अरावली पहाड़, जिसे मारवाड़ी-भाषा में 'आड़ावला' कहते हैं, दो भागों में बाँटता है, एक पश्चिमोत्तर प्रान्त और दूसरा दक्षिण-पूर्वीय प्रान्त।

पश्चिमोत्तर राजस्थान सम्पूर्ण राजपूताने का लगभग ⅔ भाग है। यह नितान्त रेतीला, निर्जल, बञ्जर और सत्य अर्थों में मारवाड़ "मार" अर्थात् मृत्यु का द्वार है। पश्चिम में सिन्धु नद से आरम्भ होकर यह बालुकामय भूखण्ड प्रायः दिल्ली तक चला जाता है, जहाँ यमुना की बालू में मिल जाता है। इस रेगिस्तान को दो भागों में बाँटा गया है। पहला भाग 'बृहन्मरु देश' है, जो कच्छ के रण से लूनी नदी के दाहिने किनारे की ओर उत्तर को चला गया है। सम्पूर्ण जयसलमेर, बीकानेर तथा जोधपुर का पश्चिमी और पश्चिमोत्तरीय भाग, इसी बृहद् बालुका-समुद्र के भाग हैं। इसके पूर्व में अरावली पर्वत तक का मरु-देश 'लघु-मरु' कहा जाता है। यह उसकी अपेक्षा कुछ कम भीषण, अधिक सजल तथा उपजाऊ है। राजस्थान की पश्चिमोत्तर सीमा से ज्यों-ज्यों दक्षिण-पूर्व को बढ़ते त्यों-त्यों रेगिस्तान की भीषणता कम होती जाती जल की सुविधा बढ़ती जाती है, भूमि उपजाऊ दिखाई लगती है, तृण-हीन प्रदेश की अपेक्षा हरी-भरी भूमि देखने में आती है, शुष्क और रेतीले मैदानों या पर्वतों का स्थान सुन्दर और तृण-सङ्कुलित उद्यान ग्रहण लगते हैं। यहाँ तक कि अन्त में आबू की उपत्यका पर पिछली दशा से बिलकुल उल्टे प्रकार का देश दिखाई पड़ने लगता है। इस मरु-प्रान्त में आबादी भी बहुत कम है। ग्राम कभी अधिक समय तक एक स्थान पर नहीं रहते, क्योंकि रेत के टीलों के कारण उन्हें सदैव स्थान बदलना पड़ता है। जल प्रायः ३०० से ५०० की गहराई तक खोदने से निकलता है, और ये कुएँ सूख कर अथवा रेत से भर कर ख़राब होते रहते इस तरह कुँओं की दशा के परिवर्त्तन के साथ-साथ की दशा भी बदलती रहती है। प्रायः वर्षा में भी खोद कर, अथवा पक्के तालाबों में पीने का जल कर लेते हैं—क्योंकि देश भर में एक भी प्राकृतिक जल की झील या बारहमासी नदी नहीं है। रेत के दो मील लम्बे तथा पचास-पचास और सौ-सौ फ़ीट टीले समानान्तर रेखा में सर्वत्र फैले दिखाई देते इन टीलों के मध्य भाग की भूमि में, जिसे रेगिस्तान पहाड़ियों की घाटियाँ कहा जा सकता है, प्रायः आबादी देखी जाती है।

लूनी नदी से पूर्व और उत्तर का भाग अरावली पर्वत माला के पश्चिमी ढाल के जल से सिञ्चित होने कारण मीलों तक सुन्दर चरागाहों से व्याप्त देख पड़ता है। यद्यपि इस छोटे मरुस्थल का भी उत्तरी भाग अधिक अच्छा नहीं है, किन्तु अजमेर तक यह प्रान्त अंशों में सन्तोषजनक है।

अरावली पर्वत-माला सिरोही-राज्य की दक्षिणी से अजमेर तक एक शृङ्खला में चली गई है, जिसके से दोनों तरफ़ भी कई टीले स्थान-स्थान पर गए हैं। किन्तु अजमेर से आगे इसकी शृङ्खला है और खेतड़ी तक चली गई है। ज्यों-ज्यों यह उत्तर को बढ़ता गया है, त्यों-त्यों नीचा होता यहाँ तक कि आगे चल कर राजपूताने को विभक्त

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

वाली यह प्राकृतिक सीमा अदृष्ट हो गई है—यद्यपि ज़मीन का उठाव वहाँ भी जल के बहाव के द्वारा इस विभाग को व्यक्त करता है। हिमालय से नीलगिरी तक के विस्तृत भूखण्ड में विन्ध्याचल के होते हुए भी, सबसे अधिक ऊँची चोटी इस अरावली पहाड़ की ही है, जो 'आबू' के नाम से प्रसिद्ध है। यह समुद्र की सतह से ५,६५० फ़ीट ऊँची है।

अरावली पर्वत का पूर्वीय भाग, जो सम्पूर्ण राजपूताना का लगभग ⅔ है, नदी, नद, वन और पर्वतों से व्याप्त है। इसकी सुन्दर घाटी, हरे-भरे चरागाह और सुरम्य मैदानों ने दिल्ली के यवन शासकों को सदैव अपनी ओर लुब्ध बनाए रक्खा था। दक्षिण-पूर्व में विन्ध्य पर्वत के जल से चम्बल, बनास, सिन्ध तथा और भी कई छोटी-मोटी नदियाँ सिंचाई करती हैं। अरावली के पार्श्व पर्वत डूँगरपुर, बाँसवाड़ा, मण्डलगढ़, बूँदी, झालावाड़ के उत्तर, कोटा के उत्तर तथा धौलपुर तक फैले हुए हैं, जो आगे बढ़ कर 'पठार' के रूप में ग्वालियर राज्य में समाप्त होते हैं। यहाँ वर्षा भी यथेष्ट होती है। तथा थोड़ी वर्षा में भी अच्छी फ़सल उपजती है, क्योंकि यहाँ की बालू में पानी छन कर नीचे को नहीं चला जाता, किन्तु भूमि के ऊपरी भाग में रह कर ही फ़सल को तैयार करता है। दक्षिण-भाग की काली ज़मीन का मैदान और आगे बढ़ कर मालवा की उपत्यका को बनाता है, जो अफ़ीम, कसूम, तिल, गेहूँ, रूई आदि की उपज के लिए भारतवर्ष में विख्यात है।

नदियाँ

पश्चिमी राजपूताने में लूनी तथा उसकी सहायक सूकड़ी, बाँदी आदि छोटी-छोटी नदियाँ दक्षिणी भाग को सींचती हैं। लूनी पुष्कर से निकलती है। शेष नदियाँ बरसाती हैं, जिनके द्वारा अरावली पर्वत का जल लूनी में बहता है। लूनी खारी नदी है, किन्तु वर्षा की बाढ़ के पश्चात् इसके किनारे की भूमि अत्यन्त उर्वरा हो जाती है, जिसमें जौ और गेहूँ उत्तम परिमाण में पैदा होते हैं। उत्तर में कोई नदी नहीं है। यह भाग इतना ख़ुश्क और रेतीला है कि बाहर से आने वाली हाकरा आदि एक-दो नदियाँ यहाँ आकर रेत में विलीन हो जाती हैं।

पूर्वीय राजपूताने में बानगङ्गा, मौरल, बनास, दूसरी बनास, बेरच, चम्बल, पार्वती, काली, सिन्ध आदि अनेक छोटी-बड़ी नदियाँ हैं, जो अरावली और विन्ध्य का जल लेकर इस देश की सिंचाई करती हैं।

भूगर्भ

भूतल की रचना के विचार से राजपूताना के दो भाग किए जाते हैं—पूर्वार्द्ध, जिसमें अर्बुद पर्वत-माला भी शामिल है, और पश्चिमार्द्ध। अरावली पर्वत-माला के सम्बन्ध में भूगर्भ-वेत्ताओं का विचार है कि किसी समय यह पर्वत वर्तमान की अपेक्षा बहुत ऊँचा था, जो अब अग्नि, जल और वायु की साङ्घातिक शक्तियों के कारण छिन्न-भिन्न होते-होते इस रूप में रह गया है। जब भारत का दक्षिण प्रायद्वीप समुद्र-गर्भ में ही था और वहाँ की बलुई चट्टानों का रचना-क्रम चल रहा था, तब उस इतिहासातीत काल में भूगोल की अन्तराग्नि से वर्तमान पर्वत-माला का उद्गमन हुआ था। इसकी रचना में चमकदार अणु वाले पत्थर, कङ्कड़ तथा अत्यन्त कठोर पिण्ड पाए जाते हैं। चूने के पत्थर की चट्टानों, स्लेट-पत्थर तथा क्वार्ट्ज नामी पिण्डों की भी कमी नहीं है। पृथ्वी के केन्द्रीय आग्नेय कार्यों से इन पिण्डों के स्तरों का क्रम अब बहुत-कुछ बदल चुका है। इसीलिए इन बलुए पिण्डों के साथ-साथ आग्नेय पिण्ड भी मिलते हैं। प्रायः सब जगह चूने और स्फटिक जाति के पत्थर मिलते हैं, जिनमें बलुई चट्टानों के स्नायु-जाल भी व्याप्त हैं। इस भाग में ये बलुई चट्टानें रासायनिक हेतुओं से सफ़ेद हो गई हैं, जो सङ्गमर्मर के नाम से अभिहित होती हैं। इसके अतिरिक्त और भी कई प्रकार की कङ्कड़-पत्थर तथा घोंघे आदि की चट्टानें पाई जाती हैं।

पश्चिमी भाग में अधिकतर बलुआ पत्थर की चट्टानें हैं। कहीं-कहीं रेतों में आग्नेय और बलुआ कङ्कड़ की चट्टानें भी देखी जाती हैं। जालौर के पास अभ्रक तथा अन्य आग्नेय पिण्ड मिलते हैं। रेतीले मैदानों में हिमकालीन स्तरों की बहुतायत है। पिण्डों की रचना भी विन्ध्याचल की रचना के पीछे की है। और अधिक पश्चिम में परिवर्त्तित जलीय पिण्ड तथा भूरे और लाल रङ्ग के पत्थर पाए जाते हैं। सफ़ेद रङ्ग का मुलायम चमकदार तथा छोटे दाने का पत्थर भी इधर मिलता है। इस भाग में रेत के नीचे कुएँ खोदते समय कोयला के स्तर भी मिलते हैं। अनेक स्थानों पर मुल्तानी मिट्टी के स्तर भी दूर तक फैले हुए हैं।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

प्राकृतिक उपज

जङ्गलों में प्रायः ढाक, धाय, जामुन, गूलर, करैया, सेमल, तेंदू, आम, महुआ तथा बाँस के छोटे-छोटे पेड़ दिखाई देते हैं। यों तो आबू की चोटी को छोड़ कर, इस प्रान्त में घने जङ्गल हैं ही नहीं, और प्राकृतिक दशा को देखते हुए हो भी नहीं सकते, तो भी मेवाड़ के दक्षिण-पश्चिम में मीलों तक घने जङ्गल हैं। बाँसवाड़ा, डूँगरपुर तथा प्रतापगढ़ घने जङ्गलों में ही आबाद हैं। यहाँ तो सागौन तक उत्पन्न होता है। बूँदी, कोटा, अलवर तथा करौली में भी काफ़ी जङ्गल हैं। धामन, खेजड़ा, झड़बेरी, केसी, कूमट, पीलू, बहेड़ा, आमला, बबूल, नीम, इमली करौंदा आदि के पेड़ों के जङ्गल भी जहाँ-तहाँ पाए जाते हैं। किन्तु पश्चिमोत्तर जङ्गल प्रायः इन सबसे शून्य हैं। सफ़ेद मूसली, कौंच, मतीरा आदि और भी कई उपज हैं, जो राजपूताने की स्थावर सम्पत्ति को बढ़ाती हैं।

खनिज पदार्थों में पत्थर की गणना सर्व-प्रथम होनी उचित है। ताजमहल का सब पत्थर इसी राजपूताने की मकराना की खान का है। जोधपुर, सोजत, नागौर और मेड़ता में पत्थर की बड़ी-बड़ी खानें हैं, जिनसे प्रायः पटाव के काम की पट्टियाँ बाहर भेजी जाती हैं। जयसलमेर में बाद और तलचर की खानें, मैलानी का पत्थर, बारमेट (जोधपुर), गजमेर (बीकानेर) आदि और भी कई प्रसिद्ध खानें हैं, जिनसे लाखों रुपए का पत्थर बाहर को जाता है। लगभग ८६ हज़ार रुपया वार्षिक कर की आय तो इन खानों से अकेले जोधपुर-राज्य को ही है। किन्तु इन सब बड़ी-बड़ी खानों पर आधिपत्य है प्रायः यूरोपियन ठेकेदारों का। मकराना की प्रसिद्ध खान भी एक अङ्गरेज़-ठेकेदार के ही पास है!

खेतड़ी, सिङ्घाना, साजत, पाली तथा जोधपुर में भी सैकड़ों पहाड़ियों पर पुराने समय में ताँबा निकाले तथा शोधे जाने के चिन्ह मिलते हैं। इन्ही पत्थरों से तूतिया और फिटकरी भी बनाई जाती थी। अलवर की प्रसिद्ध दरीबा नामक खान में ताँबा और सङ्खिया मिश्रित लोहा मिलता है। लोहे की खानें जयपुर, अलवर, कोटा और उदयपुर में पाई जाती हैं। किसी समय केवल उदयपुर को ही सीसा, ताँबा और जस्त की खानों से तीन लाख वार्षिक की आय थी! कोबाल्ट (एक प्रकार का खनिज द्रव्य, जो धातु पर मीनाकारी का काम करने के काम में लाया जाता है) खेतड़ी की खानों से निकाल जाकर सेहता के नाम से जयपुर और दिल्ली के बाज़ार बिकता है। अरावली की पहाड़ी खानों में अभ्रक तथा अग्निस्तम्भक द्रव्य 'एस्बस्टस' पाया जाता है, जिस सहायता से फ़ायरप्रूफ़ तिजोरियाँ बनाई जाती हैं। जोधपुर की कितनी ही खानों में खड़ी नामक खनिज प्राप्त होता है, जिसकी सहायता से ५०-५० मन के केवल १ सेर मसाले से जोड़े जा सकते हैं।

इसी प्रकार से 'बोलफ़ॉम' नाम की एक भक्ष्य जाने वाली वस्तु भी पाई जाती है, जिससे बारूद जाती है। इसकी खान भी एक अङ्गरेज़-ठेकेदार पास है।

कहने का अभिप्राय यह है कि राजपूताना सम्पत्ति में यथेष्ट धनी है, किन्तु यहाँ की प्रायः खानें—सोना, चाँदी, ताँबा आदि से लेकर कोयला मुल्तानी मिट्टी तक—या तो बन्द हैं और उनसे माल निकाला जाता, या उन पर अङ्गरेज़-व्यापारियों का कार है। हमारा ख़्याल यह है कि राजपूताने के महाराजा अपने देश की खनिज सम्पत्ति को इसीलि छिपाए हुए हैं कि यदि वह प्रकट हो गई तो अङ्गरेज़ दारों के हाथ में चली जावेगी और राज्य तथा प्रजा को कुछ भी लाभ न होगा!!

राजपूताना की एक सबसे प्रधान उपज नमक है, साँभर झील से निकाला जाता है। साँभर झील लगभग एक करोड़ मन नमक प्रतिवर्ष निकाला है, जिसके निकालने का ख़र्च एक आना प्रति मन से अधि नहीं पड़ता, किन्तु वह १।) रु० से २) रु० मन तक बि है और यह सब लाभ अङ्गरेज़-सरकार को ही होता जयपुर और जोधपुर-राज्यों को, जिनकी वास्तव में यह है, क्रम से १० और २५ लाख से अधिक किसी प्रकार नहीं मिलता। यह भी ध्यान देने की बात है कि रा पूताने में, यद्यपि पचपदरा, डींडवाना, फालोदी, कचोर, रिवासा, लूनकरण, कानोड़ आदि अनेक स्थ में नमक बन सकता है, किन्तु अङ्गरेज़ी सरकार आज्ञा के कारण कहीं भी नहीं बनाया जा सकता। दशा और भी खनिजों की है!

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

खाद्य-सामग्री

ज्वार, बाजरा, गेहूँ, चना, जौ, तिल, कपास और मक्का के अतिरिक्त, मारवाड़ की भूमि में अफ़ीम भी उत्पन्न होती है। किन्तु सबसे अधिक महत्व बाजरा और ज्वार का ही है, क्योंकि सर्वसाधारण का मुख्य भोजन भी यही है और सबसे ज़्यादा उत्पन्न भी ये ही पदार्थ होते हैं। यद्यपि एक प्रकार से इसे 'बाजरे का मुल्क' ही कहना चाहिए, किन्तु यहाँ के गेहूँ की भी विशेष प्रशंसा की जाती है। तो भी अकाल के दिनों में यहाँ की प्रजा की बड़ी दुर्दशा हो जाती है। नित्य का साधारण भोजन बाजरे की रोटी, छाछ में घोला बाजरे का आटा, बाजरे की खिचड़ी, मक्के या बाजरे का दलिया अथवा घाँट और ज्वार, अमचूर, पीलू, कीकड़ आदि की उबाली हुई फलियों का शाक है! किन्तु अकाल के अवसर पर तो झरबेरी का बिरचुन (बेर-चूर्ण), गूलर, टीबरू आदि वृक्षों की छाल, बहेड़े के बीज, महुए के फल, बबूल की फली, नीम के फल, इमली के चिएँ आदि न मालूम क्या-क्या यहाँ के रहने वाले खा जाते हैं। यहाँ तक कि मुल्तानी मिट्टी और घिया मिट्टी तक खा लेते हैं !!!

पशु

अरब की नाईं ऊँट ही इस मारवाड़ की प्रधान पशु-सम्पत्ति है। अनेक स्थानों में इसे अपने बच्चे की तरह पालते हैं। इसे खेत में हल चलाने, सिंचाई करने, बोझा ढोने, यात्रा करने, पानी लाने, आदि अनेक कामों में बर्तते हैं। इसका दूध पीते हैं, ऊन का वस्त्र बनाते हैं तथा बेचते हैं और मरने के पीछे घी और तेल के कुप्पे भी इसी की खाल से बनते हैं। ये ऊँट रात भर में मार्ग भी १०० मील तक चल लेते हैं। जयसलमेर, जोधपुर और बीकानेर ऊँटों के ही मुल्क हैं। किन्तु मलानी या बालोचा और जालौर के खेत घोड़ों के लिए भी उसी प्रकार प्रसिद्ध हैं। यहाँ के ये पशु बड़े डीलडौल के, चुस्त और अधिक समय तक बिना खाए-पिए रहने वाले होते हैं।

मारवाड़ का देश भेड़ों के लिए भी विख्यात है। दूध के अतिरिक्त ऊन के लिए भी ये पाली जाती हैं। सच बात तो यह है कि ऊन भी यहाँ के व्यापार की एक विशेष वस्तु है। ये भेड़ें बाहर की प्रजा के भोजन के लिए भी इस देश से यथेष्ट संख्या में भेजी जाती हैं। विशेष कर जयसलमेर की भेड़ें अपने अत्युत्तम मांस के लिए ही पसन्द की और ख़रीदी जाती हैं। बीकानेर की भेड़ें, जहाँ की लोई प्रसिद्ध है, भारत भर में सबसे बड़ी होती हैं।

इसी पश्चिमी-दक्षिणी भाग में गाएँ भी अधिक दुधार होती हैं, जो दस सेर तक दूध देती हैं और दो सौ रुपए तक बिकती हैं। नागौर का बैल प्रसिद्ध है। इसका शरीर ऊँचा और बड़ा, सींग और खुर ठोस तथा कोहान ऊँचे और बड़े होते हैं। इसका मूल्य तीन सौ रुपए तक होता है। पशु-सम्पत्ति के विचार से राजपूताने की प्रजा कम भाग्यशाली नहीं समझी जा सकती।

भू-सम्पत्ति

राजपूताने में दो प्रकार की भूमि है—ख़ालसा अर्थात् दरबार की एक मात्र सम्पत्ति, और जागीर। जागीर से मतलब है इनाम, भूम, शासन, मुआफ़ी, धर्मादा आदि भिन्न-भिन्न नामों से ऐसी भूमि का, जिस पर सरकार का सार्वजनिक रूप से अधिकार है एवं सार्वजनिक तथा सरकारी सेवाओं के कारण, जिसका स्वामित्व बदलता रहता है। जिस राज्य में जितना ही 'सरदार-मण्डल' या ठाकुर आदि राजवंशधरों का सङ्गठन बलवान् है, उसमें ख़ालसा भूमि उतनी ही कम तथा सार्वजनिक भू-क्षेत्र अधिक है। जोधपुर-राज्य में सम्पूर्ण क्षेत्र का लगभग सातवाँ भाग ही ख़ालसा है; उदयपुर में चौथाई, जयपुर में ४० प्रति सैकड़ा, कोटा में ७४ प्रति सैकड़ा भूमि ख़ालसा है। किन्तु अलवर और भरतपुर में रुपए में चौदह आने भूमि ख़ालसा हो चुकी है, सार्वजनिक सम्पत्ति केवल दो आना भर रही है। इसका अर्थ यह है कि जहाँ-जहाँ सार्वजनिक सम्पत्ति कम है, वहाँ के शासक अधिक स्वतन्त्र और स्वेच्छाचारी हैं एवं अपने हाथ में सब प्रकार की शक्ति ले चुके हैं। इसीलिए वे सार्वजनिक सम्पत्ति को धीरे-धीरे ख़ालसा करते रहे हैं। तो भी अलवर, धौलपुर, बीकानेर के कुछ भाग तथा झालावाड़ को छोड़ कर, शेष सम्पूर्ण देश में ज़मींदारी प्रथा नहीं है। अर्थात् ख़ालसा ज़मीन का कर (या लगान) राजा स्वयं वसूल करता है। या ज़मीन प्रायः कच्चे और पक्के पट्टे पर उठाई जाती है। कच्चे पट्टे की ज़मीन पर से किसान को कभी भी बेदख़ल किया जा सकता है, वे प्रायः खेती के काम के लिए ही दी जाती हैं। किन्तु पक्की ज़मीन मौरूसी होती है और

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

काश्तकार दरबार की रज़ामन्दी से उसकी रहन और बै भी कर सकते हैं।

जागीर

जागीर की ज़मीन जीवन भर के लिए होती है। जागीरदार प्रायः राजपूत होते हैं और उन्हें इन जागीरों के बदले में राज्य की कोई सेवा करनी पड़ती है। कभी-कभी वे इसके बदले में सैनिक, घोड़े या घुड़सवारों के द्वारा राजा की सेवा करने की शर्त करते हैं। जागीरदार के मरने पर, या उसके किसी राजद्रोहात्मक आचरण के लिए या शर्त के अनुसार, या नियत शर्तबन्दी की सेवा न कर सकने की दशा में, ये जागीर ज़ब्त हो जाती हैं। किन्तु उसके वारिस को नज़राना देने, हुज़ूर में हाज़िर होने तथा ख़िलअत लेने की दशा में फिर दे दी जाती है। प्रायः अपने मुसाहबों या इष्ट-मित्रों पर प्रसन्न होकर भी राजा-महाराजा ऐसी जागीर दे देते हैं तथा उन्हें दरबार में सदैव या दरबार की इच्छानुसार हाज़िर होने के अतिरिक्त और कुछ सेवा नहीं बजानी पड़ती। किसी-किसी जागीरदार को सिपाही आदि के बदले में कुछ रुपया ही प्रति वर्ष देना पड़ता है, जो प्रायः नियत सिपाहियों की संख्या के वेतनादि ख़र्चे के बराबर होता है। जागीरदारों को समय-समय पर दरबार की भेंट भी देनी पड़ती है; जैसे 'वार्षिक भेंट' 'दरबार की भेंट' 'राज्याभिषेक की भेंट' आदि-आदि। जागीरें बेची नहीं जा सकतीं, यद्यपि रहन कर दी जाती हैं।

'भूम' और इनाम आदि

भूमिया वे कहलाते हैं जो राज्य से शुद्ध, किन्तु नाम-मात्र कर पर ज़मीन लेकर जोतते-बोते हैं। ये ज़मीन 'भूम' कहलाती हैं। इन भूमियों को चौकीदारी आदि के सामान्य काम भी करने पड़ते हैं और जब तक वे ऐसी सेवा करते रहते हैं, तब तक वे भूमि के अधिकारी बने रहते हैं। भूमिया अधिकतर राजपूत हैं।

इनाम, शासन, मुआफ़ी, धर्मादा की ज़मीन केवल एक जीवन भर के लिए दी जाती है। इनामदार आदि को इस प्रकार की ज़मीन प्रायः गुज़ारे के लिए, किसी राज-सेवा की तनख़्वाह या पेन्शन के रूप में, अथवा ब्राह्मण, चारण आदि को वृत्ति के रूप में, या मन्दिर आदि के ख़र्चे के लिए दी जाती हैं। मन्दिरों को दी हुई ज़मीन बेची नहीं जा सकती तथा वह सदा के लिए होती है।

लगान आदि

इस तरह यह स्पष्ट है कि राजपूताने में ज़मींदार लगान नहीं देना पड़ता, किन्तु सीधा राजा को ही कर देना पड़ता है, और यह कर ज़मींदारी की अत्यन्त कम होता है। जहाँ यह कर उपज के भाग रूप में प्राचीन पद्धति के अनुसार दिया जाता है, कभी-कभी बारहवें भाग तक होता है, किन्तु आधे से अधिक कभी नहीं होता। जहाँ बटाई का स्थान लगान ने ले लिया है, वहाँ डेढ़ आना प्रति एकड़ (पक्का बीघा) से बीस रुपए एकड़ तक की शरह जाती है। यह पिछली शरह सर्वोत्तम और आबी की है।

कला-कौशल और व्यापार

इस लेख के अन्त में एक विस्तृत सूची में राजस्थ के भिन्न-भिन्न स्थानों की कारीगरी का विवरण देकर बताया गया है कि किस स्थान में कौन सी वस्तु तैय होती है। ये चीज़ें मामूली नहीं बनतीं, किन्तु अपने की बहुत बढ़िया और आदरणीय होती हैं। तो भी रास्ते, माल ढोने तथा व्यापार की राजकीय सुविधा होने के कारण वे अधिक दूर तक बिकने नहीं जातीं यथेष्ट मार्केट न मिलने के कारण ये कारीगरियाँ प्रायः होती जा रही हैं !!

यह आश्चर्य की बात है कि संसार की एक अ तथा भारतवर्ष की मुख्य व्यापारिक जाति अर्थात् मा वाड़ी अपने देश के व्यापार को ही उन्नत नहीं कर हैं। हम ऊपर कह चुके हैं कि राजपूताने के प्रायः खनिज पदार्थ यूरोपियन व्यापारियों के हाथों में हैं। पर सरकार का क़ाबू है और इन कारीगरियों की मरणासन्न है !!!

आर्थिक दशा

इस विवरण से स्पष्ट है कि राजस्थान में, जहाँ वर्ष एक तक्की का साल, तथा आठवें वर्ष भयङ्कर आता रहता है, जहाँ की भूमि अनुर्वरा और रेतीली भूमि का मूल्य कुछ अधिक नहीं है। वहाँ की उपज घट गई है; ऊन और पशु-सम्पत्ति की उपज भी फलप्रद नहीं; कारीगरी प्राणान्त दशा तक आ चुकी

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

एक सेठ के दो रूप

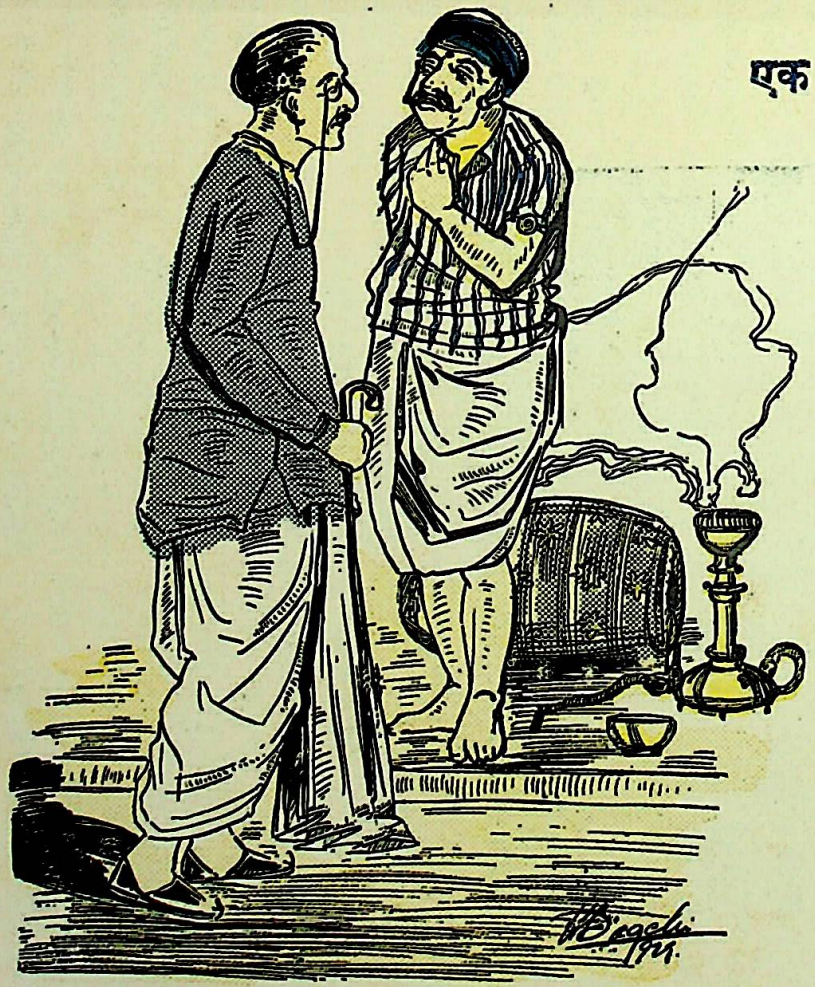

रूपक नम्बर १

"कहिए सेठ साहब ! ऐसे फटे हाल क्यों रहते हो ?"

"काँई कराँ, गरीब बाँणियाँ हाँ, फाटका में रुपैया लाग गया, ने अबार ज्जगार मद्दम है ।"

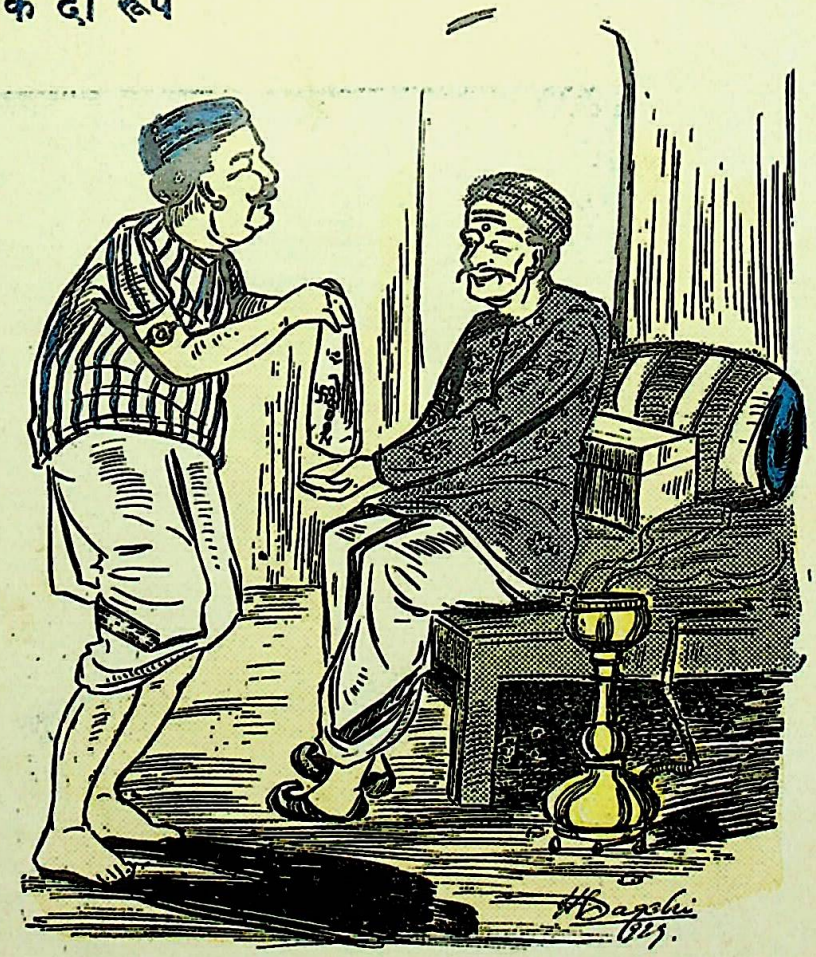

रूपक नम्बर २

बीस हज्जार ल्यो शा ! अब तो हाँ करो, थारी छोरी म्हारी हुई का !

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

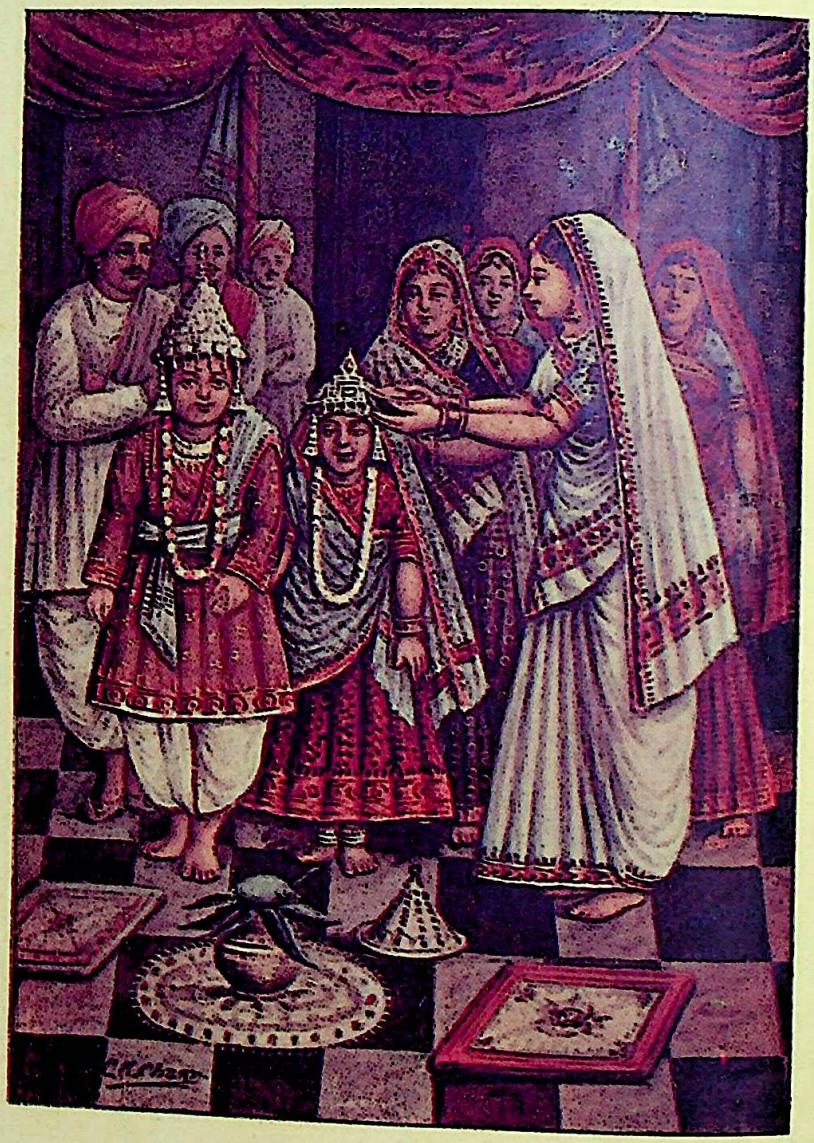

छोटो दूल्हो सदा सुहाग

जवाँई आया सासरे, कर पूरो सिणगार ।
आगे गाल्याँ गावसी, हाँसी करसी नार ॥

ART PRINTING WORKS ALLAHABAD

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

प्रजा को अकाल के समय मुल्तानी और घिया मिट्टी तक से पेट भरना पड़ता है ! अतः मारवाड़ी-प्रजा सामान्यतः कष्ट में जीवन व्यतीत करती है। यही कारण है कि आए दिन तनिक भी वर्षा न होने की दशा में बागड़ी, मारवाड़ी आदि अन्य प्रान्तों में चले आते हैं। उन्हें इसीलिए अपने देश से अधिक प्रेम भी नहीं रहता और उनका जीवन स्थिर न होने के कारण उत्तम वृत्तियों का विकास भी वे नहीं कर सकते। कलकत्ता, बम्बई और नागपुर आदि में बड़ी-बड़ी कोठियों वाले मारवाड़ी सेठ, जो अपनी व्यापार-कुशलता दिखाते हैं, वह वास्तविक व्यापार-कुशलता नहीं है, किन्तु विदेशी माल की दलाली मात्र है !! हमारे इस कथन का प्रमाण यही है कि उनके अपने स्वदेश का व्यापार और कला-कौशल प्रायः नष्ट हो चुका है।

यहाँ की प्रजा की आर्थिक दशा के सम्बन्ध में आज से २० वर्ष पहले अङ्गरेज़-सरकार ने अपना मन्तव्य इस तरह प्रकट किया था :—

"नगर में प्रजा की साधारण आर्थिक अवस्था सन्तोषजनक है तथा ३०-४० वर्ष पहले की अपेक्षा वर्तमान रहन-सहन बहुत ऊँचे दर्जे का हो गया है। मध्यम-श्रेणी के मुनीमों को स्वच्छ वस्त्र पहनने, सुख से खाने-पीने और अपनी सन्तान को अङ्गरेज़ी शिक्षा देने के ख़र्च के लायक़ आमदनी हो जाती है; उनका घर भी, यदि उसमें साधारण सामग्री हो, तो आराम से रहने का स्थान होता है; और प्रायः वे अपनी निजी सेवा के लिए सेवक भी रख सकते हैं। किन्तु इसके विरुद्ध ग्रामों की प्रजा के रहन-सहन में कुछ भी अधिक परिवर्त्तन नहीं हुआ है। प्रत्युत किन्हीं राज्यों में तो उनका और अधिक अधःपतन हुआ है। विशेष कर पिछले अकाल के कारण केवल अपनी किफ़ायतशारी तथा अनावश्यक बातों में व्यय न करने के (स्वाभाविक) गुणों के कारण ही वे अपनी गुज़र कर रहे हैं। सब मिला कर किसानों के पास न घर ही है और न यथेष्ट वस्त्र। उनको यदि पर्याप्त भोजन मिल भी गया तो वह घटिया क़िस्म का अनाज (या कदन्न) होता है।"

सच बात तो यह है कि देश के किसी न किसी भाग में सदैव अकाल पड़ता रहता है। यदि आज कहीं अन्न-काल है, तो दूसरे स्थान में तृणकाल, तीसरे स्थान में जल-काल और चौथे स्थान में त्रिकालात्मक सर्वकाल ! यही कारण है कि प्रजा दरिद्र और दीन है। तिस पर कई प्रकार की नौत आदि की कुरीतियाँ उसे अधिक दरिद्रता में फँसाए रखती हैं। राज्यों तथा ठाकुरों और सरदारों की नित्य की भेंट-बेगार वैसे ही कुचलती रहती है। शिक्षा के अभाव और आने-जाने के मार्गों की कठिनता ने देश की जो कुछ भी कारीगरी है, उसके विस्तार को रोक रक्खा है। यह दूसरी बात है कि बीकानेर, चूरू, उदयपुर, जयसलमेर आदि कुछ नगर इस मरु-समुद्र के बीच में, समुद्रस्थ दूर-दूर पर बसे हुए छोटे-छोटे टापुओं की तरह अपनी उच्च और प्रस्तर-निर्मित उच्च इमारतों से सुशोभित हैं, जहाँ बड़े-बड़े सम्पत्तिशाली तथा धनिक मिल सकते हैं। किन्तु इन थोड़े से पूँजीपतियों के अस्तित्व से साधारण प्रजा को कुछ भी लाभ नहीं। क्योंकि ये भी ग़रीब प्रजा को आवश्यकता के समय असाधारण व्याज पर क़र्ज़ देकर उसी का रक्त पीते हैं। शताब्दियों से बालू की कठिनता के कारण शत्रु का नाशक और हरणकर्त्ता हाथ इन स्थानों तक नहीं पहुँच सकने से ही यह धन संग्रह हो सका है ! अन्यथा मैदानों के नगरों की सम्पत्ति और आपत्ति को देखते हुए यह धन-भण्डार कुछ भी नहीं है।

संक्षेप में देश की खनिज सम्पत्ति एक प्रकार से व्यर्थ पड़ी है और जो कुछ निकाली भी जाती है उस पर विदेशियों का अधिकार है। किन्तु राजस्थान में इसकी कमी नहीं।

पशु-सम्पत्ति का उपयोग उलटी तरह से होता है। भेड़ें ऊन के लिए पालने की अपेक्षा, बाहर मांस को भेजने के लिए पाली जाती हैं।

कृषि-सम्पत्ति का महत्व कुछ भी नहीं। न बाहर को कुछ भेजा जाता है और न इतना उत्पन्न ही होता है कि बाहर को भेजा जा सके। शक्कर तो देश भर में कहीं भी नहीं उत्पन्न होती।

मज़दूरी या कला-कौशल का विस्तार अधिक नहीं है, और न कच्चा माल तैयार करके देश से बाहर भेजने के साधन या सुविधाएँ हैं।

देश दरिद्र है; प्रजा अयोग्य है, व्यापारी विफल हैं,

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

राजा निर्बल हैं, रोज़गार-धन्धों का अभाव है; लोगों की जीवन-परिस्थिति अस्थिर है। मारवाड़ी-जीवन में से यदि ब्रिटिश-भारत का जीवन निकाल दिया जावे, तो वह निस्सार, निर्वीर्य और निस्तेज है!

राजस्थान की प्रसिद्ध कारीगरी

अलवर

अलवर—चीरे, लहरिए।

किशनगढ़, त्रिपालपुर, गड़बसई—छींट

बहादुरगढ़—हुक़्क़े के नैचे।

मादले—पत्थर के प्याले।

राजगढ़—रङ्गीन छड़ी

हरसोरा—तोशक, ज़ाजिम।

उदयपुर

उदयपुर—लकड़ी का ख़रादी काम; सुनहरी छपाई; मिट्टी की गणेश की मूर्तियाँ।

ऋषभदेव जी—काले पत्थर की रकाबी और प्याले।

जाजपुर—लकड़ी का ख़रादी काम।

भीलवाड़ा—ताँबे; पीतल और क़लई के बर्तन; हुक़्क़े की कली; कटोरा; गिलास वग़ैरा बर्तन।

करौली

करौली—छींट; तथा लकड़ी-पत्थर का काम।

किशनगढ़

किशनगढ़-राज्य—छींट; सेलखड़ी के प्याले; पङ्खे; सुराही; गिलास।

कोटा

इटावा—हाथीदाँत के खिलौने; क़लमदान।

इन्द्रगढ़—लकड़ी के रङ्गीन खिलौने।

किशनगञ्ज—सागौन के पाए।

कोटा—मख़मल; महमूदी डोरिया; पगड़ी; दुपट्टे; धोती।

बाँरा—चूँदड़ी।

जयपुर

जयपुर—क़लमी तस्वीर; पत्थर और मिट्टी के खिलौने; देव-प्रतिमाएँ; लाख की चूड़ी; पीतल, काँसे के बर्तन (सादे और नक़्क़ाशीदार); कसूम की रँगाई का काम; हथियार; सोने-चाँदी के जड़ाऊ और मीनाकारी के; गोटा-किनारी; कलाबत्तू; सलमे-सितारे का काम।

कोटाकासम—रेज़ी, दोहर।

झुनझुनू—हुक़्क़े और चिलमें।

दोसा—मूर्तियाँ और एक क़िस्म का कपड़ा, 'क़ायमख़ानी' कहलाता है।

बगरू—छपे चादरे और दुपट्टे।

बसवा—मिट्टी के खिलौने और बर्तन।

बैराठ—लकड़ी के क़लमदान, सन्दूक़चे और के थान।

खण्डेला—लकड़ी के सिङ्गारदान; डिब्बे; पाए; जूते।

खण्डार—ख़स के पङ्खे, पलँग के पाए; पारे के कङ्घे।

ज़ोरावरगढ़—भरत के हुक़्क़े; ताले; चाकू।

टोड़ाभीम—रेज़ी।

दतेभा—दाँता।

बोली—लोहे का काम और रँगाई।

पिण्डाणा—ख़स का अतर।

मालपुरा—ऊन के नमदे; आसन; ज़ीन।

हिण्डौन—बादशाही कपड़ा।

सवाई माधोपुर—काग़ज़; लकड़ी का ख़रादी; रँगे और छपे कपड़े; पत्थर के पानी पर तैरते खिलौने; क़लमदान, गञ्जीफ़ा।

साँगानेर—पक्की छपाई के कपड़े; रूमाल; धोती; साड़ी; चादर; छींट और काग़ज़।

सिंहाना—जूता और चमड़े का काम।

जयसलमेर

जयसलमेर—पत्थर की चमकदार रकाबी; खरल।

देवीकोटा—पत्थर का काम।

सागढ़—ज़ाजिम।

जोधपुर

आसोप—देसी जूट; ज़ाजिम; पलँगपोश; लुङ्गी; ताँगे; गाड़ियाँ।

ओसियाँ—ऊनी कम्बल और खेस।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

कुचामन—बन्दूक़; तमञ्चा; घड़ी; यन्त्रराज; ताले; पिचकारी; पानी चढ़ाने के बम्ब; तलवार के कब्ज़े; चक्कर-दार फ़र्शी पङ्खे; कङ्घे; लकड़ी के डिब्बे-डिबिया; रँगाई का काम; देशी छींट।

खेतासर—जूट अर्थात् ऊँट के बालों की दरी और फ़र्श।

जालौर—टुकड़ी।

जेतारन—घोड़े का साज़; पत्थर और लकड़ी पर रँगाई और खुदाई का काम; तलवार; बन्दूक़; उस्तरा; क़ैंची और चिमटी।

जोधपुर—टुकड़ी; काजलिया और समन्दरी लहर की रङ्गत; ज़री और पटवे का काम; पत्थर की खुदाई; हाथी दाँत के चूड़े; बटन; कङ्घे; कङ्घी; चाँदी-सोने के बर्तन; गहने; हुक़्क़े; तुर्रे; कलँगी; पगड़ी और चूँदड़ी।

डीडवाना—पीतल के बर्तन और पिचकारी।

नागौर—हाथी दाँत के खिलौने; बटन; पीतल के बर्तन; पक्के रङ्ग के ऊनी कम्बल; और खेस; सूती सफ़ेद और रङ्गीन कपड़े; दुसूती; पगड़ी; लुहारी; सुनारी; खातियों तथा सिलावटों के औज़ार।

नावाँ—सोजनी; गोंद की मिठाई।

पचपदरा—हाथी दाँत के फ़ब्वारे; बागवाड़ी; पङ्खों की डण्डी; सुरमेदानी; भरत के बर्तन और खिलौने।

पाली—हाथी दाँत के खिलौने आदि; देशी छींट; डुपट्टा; रज़ाई; तोशक और लाल कपड़े के थान।

पीपाड़—लुङ्गी; ज़ाजिम; पलँगपोश; मेज़पोश।

पोकरण—पक्के रङ्ग की चूँदड़ी; ओढ़नी; छींट; रामदेव के नाम की छपी धोती; और पगड़ी।

फलौदी—जूट के गद्दे और क़ालीन; जूट और सूत के भाकले; लोई और रङ्गीन ओढ़नी।

बड़गाँव—तलवार की मूँठ; बालीबाँस की टोकरी।

ब्रालोतड़ा—छपी चूँदड़ी।

बीलाड़ा—देशी कपड़ा; रेज़ियाँ; पगड़ी; धोती।

बीसलपुर—लोहे के चूल्हे; कढ़ाई; अँगूठी।

बूसी—ज़ाजिम; तोशक; रज़ाई; लुङ्गी।

बोराबड़—सोने का हल्का पतला काम।

भकरी—शतरञ्जी; पर्दे; फ़र्श।

भीनमाल—काँसी के छोटे बर्तन।

मकराना—पत्थर का काम; इमारत का सामान; रकाबी; प्याले; प्रतिमाएँ; खिलौने; मेज़; कुर्सी; मीरफ़र्श

मारोठ—देशी और विलायती सूत की पगड़ी, दुकड़ी।

मूँडवा—जाटनियों के बनाए क़सीदे के काम; ओढ़ने दामन; और धाबला वग़ैरा।*

मेड़ता—ख़स के पङ्खे; पङ्खी; क़नात; डेरे; रावटी; पर्दे; हुक़्क़े; सटक; रकाबी; प्याले; सुराही; ख़ासदान; बादला; गोधी; चकमा; निवाड़; शतरञ्जी; साबुन; मिट्टी और हाथी-दाँत के बटन; खिलौने; छल्ले; पङ्खे की डण्डी; और क़लम।

सथलाना—काँसे की थाली, कटोरी।

साँभर—नमक के खिलौने; पीतल-काँसी के बर्तन।

समदड़ी—चुँदरी, दुसूती,

रोहल—लोहे के बड़े-बड़े कढ़ाव।

झालावाड़

आवर—काले रङ्ग के डुपट्टे।

गङ्गार—आल की रँगाई का काम।

डिग—सरौते; बर्छे; कटारी; क़ैंची; चाक़ू।

टोंक

टोंक—बनाती जूते; ज़ीन; खोगीर।

पिण्डावा—सोने-चाँदी की लैस या गोटा।

सिरोञ्ज—ज़री के मन्दील; सेलें; और साड़ी।

शेष रियासतें

डूँगरपुर—लकड़ी का ख़रादी काम; काले पत्थर की मूर्तियाँ और बर्तन।

धौलपुर—लकड़ी और लोहे का काम तथा खजूर के पङ्खे।

प्रतापगढ़—मीना के काम का गहना।

बीकानेर—मिश्री; लोई; हाथी दाँत का चूड़ा; क़ालीन; ग़लीचा; पट्टू; धुस्सा; बूट।

बूँदी—गुले-अनार रङ्गत और कटारी।

भरतपुर—लकड़ी और पत्थर के प्याले; बर्तन; मिट्टी के बर्तन; और खिलौने।

सीकरी—मिठाई।

सिरोही—तलवार; छुरी; कटारी; चाक़ू; सरौते।

---

* यह काम इतना सुन्दर होता है कि यूरोपियन भी बड़े शौक़ से ख़रीदते हैं।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

ठकुरानी

[आचार्य श्री० चतुरसेन जी शास्त्री]

"अन्नदाता ! मैं ग़रीब ब्राह्मणी हूँ।"

"चुप लुच्ची, हाँ रे भूरासिंह क्या है ?"

"सरकार ! यही है वह !"

"तू प्याऊ पिलाती है ?"

"जी हाँ सरकार !"

"तेरा गाँव कौन सा है ?"

"गोराड़ा, महाराज, प्याऊ से कोस भर दूर है।"

"तेरे कोई है ?"

"सरकार ! मैं अकेली दुखिया हूँ।"

"तेरा नाम क्या है ?"

"रामप्यारी !"

"अच्छा ज़रा आगे को सरक के बैठ जा"—इतना कह कर ठाकुर साहेब ने अपना एक पैर उसकी छाती पर धर दिया।

ज्येष्ठ की दुपहरी जल रही थी। गर्म लू चल रही थी। मारवाड़ के.....ठिकाने के ठाकुर साहेब अपने सुनसान बैठकख़ाने में कुर्सी पर बैठे प्याले पर प्याले शराब उड़ेल रहे थे। उस गर्मी में उस भयानक मदिरा ने उनके माथे की नसों को तान दिया था, चेहरा और आँखें लाल हो गई थीं, आवाज़ फटे बाँस के समान निकल रही थी।

स्त्री की अवस्था २२ वर्ष के लगभग थी। साधारण सुन्दरता की झलक उसके समस्त शरीर पर थी—वह मैले वस्त्र पहने अतिशय भयभीत दृष्टि से भूमि पर पड़ी हाथ जोड़ कर ठाकुर साहेब से अर्ज़ कर रही थी। ठाकुर के हुक्म से ज्योंही वह आगे को सरकी कि ठाकुर ने अपना पैर उसकी छाती पर धर दिया। इसके बाद वह गिलास की शराब को गटागट पीकर बोले :—

"हाँ, रामप्यारी ! तुम हमारी भी प्यारी हो !"

"अन्नदाता ! दुहाई ! आप माँ-बाप हैं।"—इतना कह कर उसने धीरे से ठाकुर साहेब का पैर धरती पर रख दिया और आप पीछे को सरक कर अपने वस्त्र सँभाल कर बैठ गई।

ठाकुर साहेब तैश में आगए। उन्होंने मुँह ख़ा कर दो गिलास गटागट पीए और फिर अबला को हुए उठ खड़े हुए और गरज कर बोले—क्या देखता भूरासिंह ! उतार दे दस !!!

भूरासिंह ने अनायास ही उसे अपने बलिष्ठ हाथ उठा लिया और दूसरे कमरे में ले गया।

* * *

वह अर्द्ध-मूर्च्छितावस्था में ख़ून में लथपथ कराह रही थी। ठाकुर साहेब ने एक हलकी लात कर कहा—"क्यों ? ठिकाने आई ?" करुण-नेत्रों से चाप ताकते हुए अबला वेदना से तड़प रही थी। ने कहा—बोल ! मेरा हुक्म टालेगी !

अबला ने कहा—सरकार ! अब तो पत लुट जान बाक़ी है वह भी ले लो, आपको अख़्तयार है।

ठाकुर साहेब ने पैशाचिक हँसी हँस कर कहा छिनाल ! तब इतना नख़रा क्यों किया था ?

स्त्री चुप रही। ठाकुर साहेब धीरे-धीरे चल दिए।

२

"सरकार ! मेरे आपके बीच गङ्गा है !"

"बेवक़ूफ़ तुझे विश्वास नहीं आता !"

"ज़िन्दगी निबाहनी आपके हाथ है !"

"कह दिया न, कि रजपुरा गाँव का पट्टा तुझे दिया जायगा !"

"और मुझे ड्योढ़ियों में रहने को जगह मिलेगी"

"जब तक ठकुरानी नहीं आती तब तक तो और पर उसके सामने निबाह होना मुश्किल है—उस मिज़ाज बेढब है।"

"तब मैं कहीं की न रहूँगी ?"

"पर तुझे मालूम है कि मेरे सामने ज़िद किसी नहीं चलती, जो कहता हूँ उस पर भरोसा कर मौज कर।"

इतना कह कर ठाकुर ने स्त्री का हाथ पकड़ लिया मदिरा की गन्ध से स्त्री का सिर सिला गया और

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

बलपूर्वक घृणा को रोक कर कहा—आप तो सरकार मर्द हैं, पर मैं मुँह दिखाने लायक़ न रही, यह भी तो सोचिए !

"कम्बख़्त ! प्याऊ पर पानी पिलाने वाली से रानी बनी जाती है, राँड़ ! और नख़रे करे जाती है, क्या फिर भूरासिंह को बुलाऊँ ?"

"दया करो, नहीं मैं मर जाऊँगी !"

"मर कर अपनी ही जान से जायगी। जीती रहेगी और मेरी मर्ज़ी के माफ़िक़ काम करेगी तो मौज में दिन कट जावेंगे।"

"पर आप यह वादा करें कि आपकी नज़र तो न फिर जायगी ? आप मुझे दूध की मक्खी की तरह तो निकाल न फेंकेंगे ?"

"तब क्या बुढ़ापे तक मैं तुझे पोसे जाऊँगा ?"

"चार दिन बाद क्या होगा ?"

"नई-नई चिड़ियाँ फाँस-फाँस कर लाना, तेरा यही आदर-मान बना रहेगा।"

"हाय ! मुझे यह भी करना होगा ?"

"इसमें दोष क्या है ? तुझे इनाम कम मिला है ! निहाल हो गई—इसी तरह मैं उसे निहाल करता हूँ, जो मेरी मर्ज़ी के माफ़िक़ चलता है।"

"ख़ैर, तक़दीर में जो लिखा था वह हुआ। और जो होना है वह होगा—मैं आपके अधीन हूँ—आपसे बाहर नहीं।"

ठाकुर की बाछें खिल गईं, मद्य की बोतल उँड़ेली जाने लगी। अभागिनी नारी धीरे-धीरे मन की घृणा रोक कर एक गिलास पी गई। उसके बाद ? वह कुछ कहने योग्य नहीं।

३

शराब के घूँट गटागट करके ठाकुर साहब ने धरती में करबद्ध पड़े हुए एक युवक को लात मार कर कहा—क्यों रे ग़ुलाम ! मञ्ज़ूर करता है—चाबुक मँगाऊँ ?

युवक ने पैरों में सिर देकर कहा—सरकार माई-बाप हैं—चाहे बोटी काट डालिए—पर अन्नदाता ! यह कुकर्म मुझसे नहीं होगा।

"कुकर्म ! अरे हरामज़ादे, कमीने कुकर्म कहता है ! दो सौ रुपए तो ब्याह में नक़द दिए, सौ अब गौने में दिए ! किस लिए ? गाँव की बड़े-बड़े घरों की बहुएँ गौना होकर पहले यहाँ ढोक देती हैं—तू ऐसा नवाब-ज़ादा बन गया है।" इतना कह कर ठाकुर साहब ने एक लात युवक के जमा दी।

युवक ने गर्दन ऊँची करके, ज़रा करारे, किन्तु वेदना भरे स्वर में कहा—सरकार चाहे जान ले लें, पर जीते जी यह होने का नहीं। आबरू ग़रीब-अमीर सभी की है ! आबरू के सामने जान क्या चीज़ है।

ठाकुर ने गम्भीर गर्जन से पुकारा—भूरासिंह !

एक लठबन्द गुण्डा कमरे में आ हाज़िर हुआ। ठाकुर ने तत्काल आदेश दिया—दे, साले को गोला-लाठी दे !

देखते-देखते युवक के गोला-लाठी चढ़ा दी गई। ठाकुर ने कहा—कमीने कुत्ते ! तेरे सामने ही उस लुच्ची को नङ्गी करके बेआबरू करूँगा ! भूरासिंह ! उठा तो ला रे सुसरी को !

युवक की आँखें जलने लगीं। उसने तड़प कर कहा—"मालिक ! तुम्हारा नमक तो खाया है—पर यह याद रखना कि मुझे बनिया-बामन न समझना—यदि मेरी इज़्ज़त पर हरफ़ आया, तो मैं ख़ून पी जाऊँगा; इसे याद रखना। मुझे मारते-मारते आप चाहे टुकड़े कर दें, सब सह लूँगा, पर मेरी औरत पर जो हाथ लगा देगा, उसी को जान से मार डालूँगा—चाहे पीछे फाँसी ही लग जाय। मुझे सेठ लोगों की तरह अपनी जान इतनी प्यारी नहीं है !" इतना कह कर युवक ने इतने ज़ोर से अपना होंठ काट डाला कि ख़ून निकल आया।

ठाकुर युवक के भाषण से क्षण भर के लिए सहम गया। इसके बाद उसने खूँटी से चाबुक लेकर युवक की खाल उधेड़नी शुरू की। एक भयानक आर्त्तनाद से दिशाएँ काँपने लगीं। नर-पिशाच ठाकुर ने जब तक युवक बेहोश होकर न गिर पड़ा—अपनी मार बराबर जारी रक्खी।

इसके बाद उसने भेड़िए की तरह ग़र्रा कर कहा—"भूरासिंह। उठा ला उस बदज़ात को, देखें कौन उसे मेरे हाथों से बचाता है !" साक्षात् प्रेत-दूत की तरह भूरासिंह उधर को लपका।

* * *

रात्रि के गहन अन्धकार को भेद कर, दीए के धुँधले

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

प्रकाश में बढ़ते हुए नर-पिशाच भूरासिंह को लठ लिए भीतर घुसता देख कर वृद्धा नाइन और उसकी नवागता वधू के प्राण सूख गए। बेचारी सुबह से दोनों भूखी बैठी थीं—अन्न का दाना भी उनके कण्ठ से उतरा न था। प्रातःकाल ही से उसके लड़के को ड्योढ़ियों में बुला लिया गया था, और वह अब तक लौटा न था। उस पर क्या बीती होगी—इसकी दोनों असहाय नारियाँ भाँति-भाँति कल्पना कर रही थीं। नव-वधू का गौना होकर कल ही आया था—पति के उसने अच्छी तरह दर्शन भी नहीं किए थे। फिर भी वह अपढ़, देहाती, अबोध बालिका हृदय की धड़कन को रोक कर क्षण-क्षण पति की प्रतीक्षा कर रही थी। वृद्धा की बात तो कही क्या जाय, जिसने बीस वर्ष से उसी को देख कर ग़रीबी और बुढ़ापा काटा था। भूरासिंह को देख कर दोनों सकते की हालत में हो गईं। उसने घुसते ही कहा—"बहू ड्योढ़ियों में जायगी!" वृद्धा पर वज्रपात हुआ। उसने लपक कर बहू को छाती में छिपा लिया। जिस अनुनय और करुणा की दृष्टि से उसने वज्र-पुरुष भूरासिंह को देखा, उससे पत्थर भी पानी हो जाता; पर उसने अपने बलिष्ट बाहुओं से बालिका को खींच कर उठा लिया। उसी क्षण कदाचित् बालिका मूर्च्छित हो गई और एक शब्द भी उसके मुख से न निकला। वृद्धा पीछे दौड़ी, पर एक लात खाकर वह वहीं ढेर हो गई। भूत भूरासिंह अभागिनी, अरक्षिता बालिका को लेकर उसी अन्धकार में विलीन हो गया। पृथ्वी पर कौन उसका रक्षक था? लोग कहते हैं, परमेश्वर सबकी रक्षा करते हैं, पर इन नर-पिशाचों की नित्य की करतूतों को न जाने क्यों परमेश्वर हाथ पर हाथ धरे बैठा देखा करता है!!!

४

रात के ग्यारह बज गए थे। अभागिनी बालिका उस अँधेरे और सुनसान कमरे में धरती पर अत्यन्त उदास बैठी थी, जिसमें वह क़ैद की गई थी। उस अधेड़ औरत के सिवा—जो उसे दिन में दो बार खाना दे जाती थी—तीसरे व्यक्ति की सूरत उसे तीन दिन से देखना नहीं नसीब हुआ था। हर बार अच्छे खाने उसके लिए वह रख जाती थी—और फिर उठा ले जाती थी। बालिका इतनी भयभीत थी कि उसने न खाना छुआ और न पानी पिया, एक प्रकार से वह अधमरी पड़ी थी। रह कर चीख़ पड़ती थी।

ऐसे कमरे में बन्द होने का ख़्याल ही भयंकर है। वह कमरा मानो इन अभागिनी स्त्रियों को क़ब्र में गाड़ देने—दुनिया से एकदम किनारे लिए बनाया गया था। वहाँ न किसी के चिल्लाने की और न किसी अन्य प्रकार के गुञ्जाइश थी।

मनुष्य कामासक्त होकर कैसी बुराइयाँ है; लालसा कैसा खेल खिलाती है; और कैसे पागलपन के काम करा बैठती है—यह कम लोग जानते हैं।

धीरे-धीरे बालिका ने अपनी परिस्थिति करना शुरू किया। वह कभी ज़ार-बेज़ार रोने कभी सोच-विचार और चिन्ताओं से अधीर हो कभी वह साहस बटोर भागने की जुगत सोचती ब्याघ्र के मुख में फँसी हुई हिरणी के लिए यह सम्भव था। फिर भी वह साहस करके उठी अपने बिखरे हुए कपड़े सँभाले—और वह कमरे में चक्कर काटने लगी। उसने एक बार से चिल्ला कर देख लिया।

एकाएक पद-ध्वनि सुन कर उसने चौंक कर देखा—साक्षात् पिशाच-रूप ठाकुर खड़ा था। दोनों हाथ फैला कर आगे बढ़ते हुए कहा—"आ प्यारी कबूतरी.....।" बालिका अतिशय भयभीत इस तरह भीतर को भागी कि दीवार में टक्कर गिर पड़ी—रक्त की धार बह चली। वह मूर्च्छित गई और उसका सिर चकराने लगा। उस जैसे अँधेरे कमरे में एक विशाल-काय पिशाच को वह धरती से चिपट गई। कामान्ध पुरुष ने हाथों से उसे अनायास ही उठा लिया। उस समान, नव-वधू, मूर्च्छिता और रक्त में लथपथ अबला की उसने निश्शङ्क होकर पत लूट ली वहीं धरती में मूर्च्छित छोड़, चला आया।

५

"आप ऐसा नहीं करने पावेंगे!"

"तुम मेरी जोरू हो या मैं तुम्हारी जोरू हूँ!"

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

"यह तो आप जानिए, पर मैं आपकी विवाहिता पत्नी हूँ !"

"फिर मुझ पर हुक्म किस लिए चलाती हो ?"

"मैं हुक्म नहीं चलाती, सिर्फ़ कुमार्ग में जाने से आपको रोकना चाहती हूँ।"

"मैं लुगाई का ग़ुलाम नहीं हूँ !"

"ग़ुलाम तो मैं भी नहीं समझती !"

"तब रोज़-रोज़ का झञ्झट क्यों ?"

"आप सज्जन और आबरूदार रईस की तरह रहिए !"

"क्या तुम मुझे सज्जन बनाओगी ?"

"अवश्य ?"

"तुम्हारी इतनी मजाल ?"

"जी हाँ !"

"मैं दूध की मक्खी की तरह निकाल फेकूँगा !"

"आपकी ऐसी हैसियत नहीं है ?"

"मैं रियासत का मालिक हूँ !"

"हरगिज़ नहीं, आप उसके मुन्तज़िम हैं, मालिक रियाया है—जो पसीना बहाती है।"

"तो रियाया को ख़ज़ाना लुटा दूँ ?"

"अगर उसे ज़रूरत हो तो लुटा दो, पर अपनी मौज-बहार में नहीं लुटा सकते।"

"वाह, यह ख़ूब कही, यह तुम्हारे बाप का ख़ज़ाना नहीं है।"

"बाप के ख़ज़ाने में स्त्रियों का हक़ नहीं होता, यह मेरे पति का ख़ज़ाना है, और उस पर मेरा पूरा हक़ है।"

"ऐसी हक़ वाली बहुत देखी हैं !"

"अच्छी बात है, अब मुझे देखिएगा !"

"तुम्हें शायद अपने बाप का घमण्ड है।"

"मुझे किसी का घमण्ड नहीं है।"

"तुम इतनी मुँहज़ोर हो, ऐसा मालूम होता तो मैं तुम से ब्याह ही न करता।"

"आप ऐसे व्यभिचारी, लम्पट, शराबी और असभ्य हो, यह मेरे पिता को मालूम होता तो वे भी आपसे मेरा ब्याह हरगिज़ न करते।"

"मैं कहता हूँ कि सीधे-साधे घर की बहू-बेटी की तरह रहो, वरना छोड़ दूँगा—बाप को लेकर रहना।"

"बहू-बेटी की तरह ही रहूँगी—विश्वास रखिए। पर आपको भी इज़्ज़तदार रईस की तरह रहना चाहिए। रियाया की बहू-बेटियों को अपनी बहिन-बेटी समझना चाहिए। शराब को मूत्र समझ कर त्यागना चाहिए। पढ़ने-लिखने, रियासत की देख-भाल और गाँवों की उन्नति में मन लगाना चाहिए। तमाम लुच्चे-लुङ्गाड़े टुकड़-कुत्तों को पास से हटा देना चाहिए।"

"मैं कह चुका, मेरे जो मन में आवेगा वह करूँगा—मुझ पर तुम्हारा हुक्म नहीं चलेगा।"

"मैं भी तो कह चुकी हूँ कि आप मनमानी न करने पावेंगे ! आपको सभी बुरी बातें छोड़नी होंगी और आदतें बदलनी पड़ेंगी।"

"अगर मैं न छोड़ूँ तो क्या करोगी ?"

"जो उचित होगा।"

"क्या मुझसे लड़ोगी ?"

"अगर आवश्यकता हुई ?"

"मैं बड़ा ज़ालिम हूँ ?"

"आइन्दा ज़ालिम न रहने पाओगे !"

"मैं तुम्हारी चाबुकों से खाल उड़ा डालूँगा !"

"तब यही आपके साथ किया जायगा !"

"क्या कहा ?"

"यही कि आपकी खाल भी चाबुक से उड़ाई जायगी !"

"और यह काम कौन करेगा ?"

"मैं आज ही उसका बन्दोबस्त कर लूँगी।"

"तुम औरत हो या चण्डी ?"

"मैं आपकी धर्म-पत्नी हूँ।"

"मैं तुम्हें चुनौती देता हूँ ! जो कर सको, करो। देखूँ, कैसे औरत मुझ पर क़ब्ज़ा करती है !"

"जो आज्ञा, अब आप जा सकते हैं !"

६

"रामसिंह !"

"बाई जी राज !"

"अपने कितने आदमी यहाँ हैं ?"

"कुल सोलह हैं।"

"पिता जी को लिख दो, आठ मज़बूत विश्वासी

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

गोरखा और भेज दें। और प्रत्येक को छः महीने की तनख़्वाह पेशगी दे दें।"

"जो हुक्म !"

"और सुनो !"

"जी !"

"रामप्यारी हवेली के भीतर क़दम न रखने पावे, यदि आवे तो उसे नङ्गा करके चाबुकों से पिटवा दो और बाहर निकाल दो।"

"जो हुक्म !"

"सरकार का इस मामले में कोई हुक्म तामील न किया जाय।"

"बहुत अच्छा।"

"दो आदमी सरकार के पीछे हर समय रहें और वे कब क्या करते हैं, कहाँ जाते हैं—निगाह रक्खें।"

"जो हुक्म !"

"कोई और नई बात है ?"

"बात तो बड़ी सङ्गीन है—परन्तु....."

"फ़ौरन कहो !"

"अपना नाई...हाल में मुकलावा (गौना) करके लाया था। सरकार ने बहू को कल उठवा मँगाया—रात भर बड़ा हो-हल्ला मचा। नाई दो-तीन दिन बन्द रहा। उसे बहुत मारा भी गया है—वह ए० जी० जी० से फ़र्याद करने जा रहा था। उसे पाँच हज़ार रुपए देकर चुप किया है। सरकार ने हुक्म दे दिया है कि नाई के घर से हवेली तक पक्की सड़क बनवा दी जाय। वह दुमञ्ज़िला मकान भी उसे बख़्श दिया है। गाँव में इस बात की बड़ी चरचा है—सरकार की बड़ी बदनामी हो रही है।"

"हूँ, अभी ए० जी० जी० को मेरी तरफ़ से तार दे दो, मैं स्वयं उनसे मिलना चाहती हूँ।"

"आप स्वयं ?"

"हाँ, हाँ, सरकार कब तक लौटेंगे ?"

"अभी तीन-चार दिन तो लौटते नहीं। नाई वाला मामला ठण्ढा पड़ जाय तो आवेंगे।"

"अच्छी बात है, मेरी मोटर ठीक कर रक्खो और तार का जवाब आते ही ख़बर दो।"

"जो आज्ञा !"

"और सुनो, मेरे आगे-पीछे सरकार भीतर की हवेली में न घुसने पावें, पहरा बैठा दो। अगर घुसें तो गोली मार दो।"

"जो हुक्म !"

७

आबू के मनोरम शृङ्ग पर ए० जी० जी० एक कमरे में विचार-सागर में ग़ोता मारते टहल रहे उनके जीवन में यह अनहोनी घटना थी, रियासत पर्दानशीन रानी तत्काल उनसे मिलना चाहती है! कुछ भारी बात है। इतने में बैरा ने कहा..... रानी साहिबा हाज़िर हैं।

साहब एकदम बाहर निकल कर गाड़ी तक और आदरपूर्वक रानी को भीतर ले आए। रानी चुपचाप कमरे में आ गईं।

क्षण भर दोनों चुप रहे। रानी ने ही बात जनाब ! आपको इस मुलाक़ात पर आश्चर्य होगा!

"बहुत कुछ, मेरी ज़िन्दगी में यह पहला मौक़ा है। पर आपको ऐसी साफ़ अङ्गरेज़ी बोलते कर मैं और भी हैरान हो रहा हूँ। मैं नहीं जानता राजपूताने के सरदारों की महिलाएँ भी ऐसी होती हैं।"

"आप शायद मेरे पिता जी को जानते हों!"

"उनका नाम क्या है ?"

"दीवान बहादुर.....C. I. E.। वे .....के दीवान हैं ?"

"ओह, आप उनकी पुत्री हैं ? वे मेरे बड़े दोस्त मुरब्बी हैं। तब तो आपसे मिल कर मुझे बहुत हुई। अब आप मुझ पर उतना ही विश्वास कीजिए, अपने पिता जी पर। जो बात हो, बेखटके कहिए, जो कुछ बन सकेगा, करूँगा। कहिए, आपने कैसे किया है ?"

"धन्यवाद ! मैं जानती थी कि आप पिता मित्र हैं, उन्होंने आवश्यकता पड़ने पर मुझे सहायता लेने को कहा भी था। मैंने भरसक चेष्टा पर रियासत डूबा चाहती है—लाचार आपके पास हूँ—मेरी आपसे एक प्रार्थना है।"

"कहिए !"

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

"मैं चाहती हूँ कि रियासत 'कोर्ट ऑफ़ वार्डस' कर ली जाय।"

"वाह! यह कैसी बात? अभी तो ठाकुर साहब को अधिकार मिले हैं। कुल तीन साल हुए हैं!"

"पर इन्हीं तीन सालों में क्या कुछ नहीं होगया?"

"आप मुझे ख़ुलासा तो समझाइए।"

"बहुत सी बातें तो कहने के लायक़ ही नहीं—उनकी शराबख़ोरी, व्यभिचार और फ़ज़ूलख़र्ची में रियासत नष्ट हो रही है। सारा ख़ज़ाना ख़ाली हो गया। कई गाँव गिरवी रक्खे गए। तीन-चार लाख क़र्ज़ा हो गया है। तिस पर भी उनके वही रङ्ग-ढङ्ग हैं। लुच्चे-लफ़ङ्गे घेरे पड़े रहते हैं, रियासत भर में किसी की बहू-बेटी की आबरू बचनी मुमकिन नहीं। रोज़ ये कुकर्म होते हैं। रियाया तङ्ग हो गई। सब जगह बदनामी फैल रही है।"

"आपने समझाया नहीं?"

"बहुत कुछ, पर बात बहुत बढ़ गई है। आप जानते हैं, हिन्दू-स्त्रियों को हिन्दू-लॉ कुछ अधिकार नहीं देता, और रईसों के घर तो स्त्रियाँ पैर की जूतियाँ समझी जाती हैं। लोगों की नज़र में वे रानियाँ हैं, पर उनकी मिट्टी ख़्वार है। कदाचित् आप हमारी तकलीफ़ों को महसूस भी नहीं कर सकते। हमें छाती पर पत्थर रख कर इन रईसों के व्यभिचार आँखों से देखने पड़ते हैं—उनका प्रबन्ध तक करना पड़ता है।"

"यह आप कहती क्या हैं?"

"जनाब! बहुत सी बातें हैं, जिनका सीधा सम्बन्ध ब्रिटिश-गवर्नमेण्ट से नहीं है—इसलिए गवर्नमेण्ट उन पर विचार ही क्यों करने लगी। स्त्रियों पर रियासतों में जो ज़ुल्म होते हैं, उन्हें रोकने का तो कोई उपाय ही नहीं है। न क़ानून, न पिता का घर, न सुसराल उन्हें मदद देता है—वह सोलहो आना उस रईस की पिशाच-प्रवृत्ति पर निर्भर रहती हैं, जिसकी नस-नस में पाप-वासना, शराब और कमीनी हरकतें हैं। श्रीमान्! मैं आप ही से यह पूछती हूँ कि यदि कोई रईस ऐसा ही लुच्चा हो—उसमें ऐसी नीच आदतें हों, जिनसे सारी प्रजा तङ्ग आगई हो—पर आपके पधारने पर स्वागत-सत्कार ख़ूब कर दे, राजभक्त भी बना रहे, ख़िताब भी लेता रहे—तब आप उसे क्या बुरा समझेंगे? मुग़लों के ज़माने में भी बादशाह रईसों से सिर्फ़ अपनी वसूली का ख़्याल रखते थे; वे कैसा ज़ुल्म करते हैं, इसकी ओर उनका ध्यान न था।"

"रानी साहिबा! आपकी बातों का मुझ पर बड़ा असर हुआ है। मैं इस पर विचार करूँगा। परन्तु यह तो आप भी मानेंगी कि इन सब बातों को ज़ाहिर में नहीं लाया जाता—ख़ास कर स्त्रियाँ चुपचाप सहती रहती हैं—फिर गवर्नमेण्ट करे भी क्या? और आप अगर नाराज़ न हों तो मैं कहूँगा, यह विषय गवर्नमेण्ट पर निर्भर रहने का है भी नहीं। यद्यपि हिन्दू-लॉ स्त्रियों के अधिकारों में सङ्कुचित है, पर सन्तान के अधिकारों पर उसमें बहुत काफ़ी विचार किया गया है। अगर स्त्रियाँ हिम्मत करें, अपनी सन्तान का पक्ष लेकर ऐसे रईसों से लड़ें, तो उन्हें गवर्नमेण्ट बड़ी सहायता कर सकती है। कारण, रियासत हमेशा रईस के ख़ानदान की बपौती होती है। यदि गवर्नमेण्ट को यह यक़ीन हो जाय कि रईस की हरकत से वह रियासत इस तरह नष्ट हो रही है कि उसके ख़ानदानी हक़ों में ख़राबी आने का अन्देशा है, तो गवर्नमेण्ट निस्सन्देह हस्तक्षेप करेगी।"

"मैंने भी यही विचार किया है। मैं अपनी सन्तानों के पक्ष में आपसे अपील करती हूँ कि आप रियासत को 'कोर्ट ऑफ़ वार्डस' कर दें। ठाकुर साहब उसकी रक्षा के योग्य नहीं हैं।"

"आप मेरी पुत्री के समान हैं, आपके हित के सभी पहलुओं पर मैं विचार करूँगा। रियासत को 'कोर्ट ऑफ़ वार्डस' करने से रियासत का भला नहीं होगा। आप स्वयं ही सोचें कि आज़ादी एक चीज़ तो है। ब्रिटिश-गवर्नमेण्ट इस बात के पक्ष में भी नहीं है। इसलिए जब आप कहती हैं तो मैं कड़ी धमकी रियासत को 'कोर्ट ऑफ़ वार्डस' करने की दूँगा तो—पर वह कोरी धमकी ही होगी। मैं समझता हूँ इससे आपका काम सिद्ध हो जायगा, यदि आप ज़रा बुद्धिमत्ता से काम लेंगी।"

"आप पर मैं पूरा भरोसा करती हूँ। और मैं आपका बड़ा बल समझती हूँ। यह तो नामुमकिन है कि मैं अन्य स्त्रियों की तरह सब कुछ देखूँ। मैं इस रईस को ठीक करूँगी और रियासत को न नष्ट होने दूँगी। आप कृपा कर मेरे सदुद्देश्य का ख़्याल रक्खें।"

"अवश्य, मैं पूरा ख़्याल रक्खूँगा। आपसे मिल कर मैं बहुत प्रसन्न हुआ हूँ। आपसे मैं फिर कहता हूँ

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

कि आप अपने पिता की तरह ही मुझ पर विश्वास रख सकती हैं, आपके किसी भी काम आने पर मैं बहुत प्रसन्न होऊँगा।"

रानी साहिबा ने खड़ी होकर साहब को धन्यवाद दिया और बिदा हुईं।

पोलिटिकल एजेण्ट ने बन्दर के समान लाल मुँह को ऊपर उठा और बिल्ली के समान कञ्ची आँखों से घूर कर कहा—ठाकुर साहब, बैठ जाइए, बड़ी बुरी ख़बर है।

"ख़ैर तो है हुज़ूर! उस दिन पार्टी में भी तशरीफ़ नहीं लाए। बड़ी इन्तज़ारी थी—हुज़ूर के लिए सब तरह का ख़ास इन्तज़ाम....."

"मुझे इसका खेद है। परन्तु अभी तो जो बात मैं कह रहा था, उस पर ग़ौर करना होगा—यह ए० जी० जी० साहब का फ़र्मान आया है—उन्होंने लिखा है कि रियासत 'कोर्ट ऑफ़ वार्ड्स' कर ली जायगी।"

ठाकुर साहब की फूँक निकल गई। उन्होंने धम्म से कुर्सी पर बैठ कर कहा—किस क़सूर पर, सरकार!

"आपकी फ़ज़ूलख़र्ची और बदचलनी की शिकायत पहुँची है। रियासत आपके हाथ से ले ली जाय, इस बात की हिदायत है और मेरी राय पूछी गई है।"

"मगर हुज़ूर! शिकायत की किसने?"

"किसी ने भी की हो, झूठी तो नहीं है। मेरे ख़्याल में तो आपको सब लेखा-जोखा तैयार रखना चाहिए।"

"तब क्या हुज़ूर भी अपनी रिपोर्ट मेरे ख़िलाफ़ देंगे?"

"आप जानते हैं, मैं अपनी ज़िम्मेदारी पर कुछ भी नहीं कर सकता और इस बात से भी आप इनकार नहीं कर सकते कि मैंने आपको बारहा चेतावनी दी है।"

"तब क्या हुज़ूर ने ही शिकायत की है?"

"नहीं, ख़ास रानी साहिबा ने।"

"रानी साहिबा ने!"

"जी हाँ, वे ख़ुद आबू जाकर साहब से मिली हैं।"

"ख़ुद मिली हैं! आप कहते क्या हैं?"

"आश्चर्य तो यह है कि आपको अपने घर की इतनी बड़ी बात का पता नहीं, तब रियासत का भला क्या पता रखते होंगे?"

"यह तो बड़ा ग़ज़ब हुआ!"

"आप तैयार हैं?"

"आपको मेरी आबरू बचानी पड़ेगी!"

"मैं तो कह ही चुका हूँ—मेरी ताक़त से बा की बात है।"

"पर मैं आपसे किसी तरह बाहर नहीं हूँ" यह कह कर ठाकुर साहब कुर्सी से खिसक कर सा के पैरों पर गिर गए। और एक सङ्केत के बाद हाथ जोड़ कर खड़े हो गए।

साहब ने गम्भीर बन कर कहा—मैं कोशिश करूँ पर वचन नहीं दे सकता। आपको उचित है कि भी सावधान हो जायँ और रानी साहिबा से मेल लें, वरना पछतावेंगे।

"आपके कान में कोई बुरी बात न पड़ेगी"—कह और लम्बा सलाम कर ठाकुर साहब चले आए।

९

क्रोध और क्षोभ से पागल हुए, होंठ चबाते ठा साहब हवेली की तरफ़ चले। कमरे से भरा हुआ पिस्ट निकाल कर जेब में रक्खा और वे ड्योढ़ियों में लपके।

ड्योढ़ियों पर गोरखे सिपाहियों का पहरा था उनमें से एक ने आगे बढ़ कर अदब से कहा—सरकार लिए भीतर जाने का हुक्म नहीं है। आप बाहर दीवानख़ाने में विराजें।

"किसका हुक्म?"—क्रोध से अधीर होकर ठा साहब ने कहा।

"रानी साहिबा का।"

"मैं कौन हूँ, जानते हो?"

"जी हाँ सरकार, आप रईस हैं, मालिक हैं!"

"फिर यह गुस्ताख़ी!"

"गुस्ताख़ी कुछ नहीं हुज़ूर! रानी साहिबा के हुक्म की तामील है। हम लोग उन्हीं के नौकर तो हैं न!"

"हटो, दूर हो!"—इतना कह कर ठाकुर सा ज़बर्दस्ती भीतर घुसने लगे। गोरखा ने बन्दूक़ सीधी करके घोड़े पर हाथ रख कर कहा—इसी क्षण पीछे हटाइए, वरना गोली मारता हूँ, यही हुक्म है।

ठाकुर साहब अकचका कर पीछे हट गए। उन्हों होंठ काटते हुए कहा—अच्छा हुक्म ले आओ।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

"सरकार परचा लिख दें, जवाब आ जायगा।"

ठाकुर साहब ने परचा लिख कर भीतर भिजवा दिया। थोड़ी देर में वह वापस आ गया। पीठ पर लिखा था--तलाशी लेकर आने दो।

तलाशी का नाम सुन कर ठाकुर साहब पहले तो उबल पड़े, पर चारा ही क्या था? सुसराल की तनख़्वाह पर नौकर रखने का स्वाद अब मिला। विवश हो उन्होंने तलाशी दी। जेब से पिस्तौल बरामद करके गोरखे ने रानी साहिबा से अर्ज़ की। रानी ने रामसिंह को बुला कर कहा—सरकार को भीतर आने दो और पिस्तौल को ए० जी० जी० के सामने पेश करके सब माजरा बयान कर दो। दोनों गोरखों को बतौर गवाह साथ ले जाओ। सरकार का इरादा मेरा ख़ून करने का था—यह साबित करना होगा।

ठाकुर साहब भीतर पहुँचते ही स्त्री के क़दमों पर गिर गए और गिड़गिड़ा कर कहा—पिस्तौल की बात को यहीं रक्खो, वरना ग़ज़ब हो जायगा। मैं तुम्हारी मर्ज़ी के अनुसार करूँगा, मुझे माफ़ करो। तुम जो कुछ चाहोगी वही होगा—बल्कि 'कोर्ट ऑफ़ वार्डस' की जगह 'कोर्ट ऑफ़ रानी जी' बना दो। मैं रियासत से बाज़दावा देता हूँ—तुम जैसा चाहो, प्रबन्ध करो।

रानी ने कहा—मैं आपकी बात पर विश्वास करती हूँ। मैं आपको एक मास का अवसर देती हूँ—इस बीच में यदि मैं देखूँगी कि आप इस समय के वचन को पाल रहे हैं तो मैं इस पिस्तौल-काण्ड को दरगुज़र कर दूँगी। अभी रामसिंह इसे सील-मुहर करके और दोनों गोरखों के बयान लेकर अपने क़ब्ज़े में रक्खेगा।

अनेक ख़ुशामदें करके ठाकुर साहब बाहर निकले।

१०

"रथ वहीं रोक दो। इसमें कौन है?"

"रामप्यारी जी हैं!"

"उन्हें बाहर निकालो।"

"सरकार का हुक्म है कि···"

"रानी साहिबा का हुक्म है कि उन्हें जहाँ देखा जाय, नङ्गा करके कोड़े लगाए जायँ।"

"मगर सरकार···"

"उन्हें फ़ौरन बाहर निकालो"—इतना कह कर एक गोरखे ने पर्दा खींच लिया। रामप्यारी बढ़िया ज़री की पोशाक पहने बैठी थर-थर काँप रही थी। क्षण भर में उसे नङ्गा कर दिया गया और चाबुक की मार पड़ने लगी। अभागिनी नारी रोती-कलपती वहाँ से भाग गई।

११

"ठहरो, इस वक़्त सरकार कचहरी कर रहे हैं, मुलाक़ात नहीं होगी।"

रामप्यारी बदहवास, चोट और अपमान से नागिन की तरह चपेट खाकर कचहरी में बढ़ गई थी। नौकर के उपरोक्त वाक्य सुन कर उसने ज़ोर से नौकर का गला पकड़ कर दबा डाला और दाँत किटकिटा कर बोली—"तेरी और तेरे सरकार की ऐसी-तैसी। दुष्ट, हत्यारा, पापी—पहले इज़्ज़त उतारता है, पीछे यों छोड़ देता है। आज मैं उसका ख़ून पीऊँगी।" वह पहरेदार को धकेल कर कचहरी में घुस गई।

सब लोग हैरान थे। रामप्यारी ने उन्मादिनी की तरह पत्थर हाथ में लेकर दरवाज़ों के काँच फोड़ने, गालियाँ बकनी और मेज़-कुर्सी उलटनी शुरू कर दीं। पापी हृदय ठाकुर हक्का-बक्का हुआ देखता रह गया। उसने समझाने की चेष्टा की, तो वह उस पर टूट पड़ी। दाढ़ी और मूँछों के बाल उखाड़ लिए। ठाकुर साहब कचहरी छोड़ भागे—अमले लोग मेज़ के नीचे छिप गए। बड़ी मुश्किल से रामप्यारी को क़ब्ज़े में किया गया।

* *

रामप्यारी ने ए० जी० जी० के यहाँ मुक़दमा दायर कर दिया। ठाकुर साहब को दस हज़ार रुपए नक़द देना पड़ा। इस समय रानी जी ही रियासत की सर्वेसर्वा हैं!

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

चेतावणी का चूँगट्या

[देशभक्त राजस्थान-केसरी श्री० ठा० केशरीसिंह जी, बारहठ]

सन् १९०३ की पहली फ़रवरी ब्रिटेन और भारत के वर्तमान भाग्यों की भिन्न-भिन्न पोशाकें पहन कर आने वाली है। लॉर्ड कर्ज़न का औरङ्गज़ेबी दिमाग़, महीनों पहले से इसी बात में गुँथा है कि भारत में अभूतपूर्व, प्रभावशाली, महान् से महान्—वह शानदार "दिल्ली-दरबार" किया जाय कि जिसे देख-सुन कर ब्रिटेन के गौरव की जाज्वल्यमान प्रभा से संसार की आँखें चुँधिया जायँ और जिस चक्रवर्त्ती सिंहासन पर बैठने का सौभाग्य आज तक किसी बड़े से बड़े शहंशाह के भाग्य में भी नहीं आया, उस पर खुद बैठ कर अपनी अमर-कहानी छोड़ जायँ।

इस दरबार की सफलता में तिल-भर कसर न रहे, इसी सर्वाङ्गपूर्णता की कल्पना में, रात-दिन इतिहासों के शाही दरबारों के विविध वर्णनमय पन्ने घिसे जा रहे थे, फ़रमानों के काग़ज़ी-घोड़े दौड़ाए जा रहे थे, प्रत्येक बड़े देशी राज्य में स्वयं पहुँच कर, बिना त्योहार के ही जुलूस की सवारी निकलवा कर लॉर्ड-खिलाड़ी के दो लेन्सों में अङ्कित की जा रही थी, प्रत्येक नरेश कठपुतली की तरह नचाया जा रहा था। उस समय कर्ज़न का चिन्तवन था—दिल्ली-दरबार, स्वप्न था—दिल्ली-दरबार, बातचीत थी—दिल्ली दरबार, दिमाग़ था—दिल्ली-दरबार; प्रत्येक श्वास था—दिल्ली-दरबार !!

समय से बहुत पहले ही सफल "दरबार" हो चुका था काग़ज़ी संसार में; परन्तु वहाँ केवल एक ही जगह थी, जहाँ क़लम अटक जाती थी, नक़्शा टेढ़ा हो जाता था, केवल उसी स्थल पर उमङ्ग की तरङ्गों को ठेस पहुँचने से कर्ज़नी-क[illegible] का कोना व्यग्र हो उठता था। और वह [illegible] थी, हिन्दूपति महाराणा उदयपुर की स्वीकृति [illegible] आशङ्का ! कहीं वह वीर साँगा व प्रताप का [illegible] रक्त अकड़ बैठे तो सब काता-बीना कपास हो [illegible] "लेकिन" घुस जाने से राजसूय यज्ञ अधूरा [illegible] जाय, समर्थ अकबर के हृदय में बसी हुई [illegible] लता की हूक फिर लौट आए और कर्ज़नी [illegible] तो किरकिरा ही हो जाय। अतः साम, [illegible] भेद, दण्ड से, विविध प्रोत्साहन, हितोपदेश, [illegible] और मैत्री की दुहाई देकर भी जैसे बने, वैसे [illegible] प्रकृति महाराणा फ़तहसिंह को शानदार जुलूस [illegible] सवारी में अपने हाथी के पीछे चला लेना, [illegible] की सीढ़ी पर चढ़ा देना, पसारे हुए हाथों पर [illegible] नज़राना उठा कर बादशाह की सेवा में दीनता [illegible] दो शब्द भेजने की प्रार्थना सुन लेना, इतना [illegible] होना ही चाहिए !

इस सिद्धि के लिए लॉर्ड कर्ज़न अपनी [illegible] शक्ति उदयपुर के ऊपर लगा रहा था। सच [illegible] ही स्वाभिमानी महाराणा का हृदय अकड़ [illegible] था—"नहीं" कह चुका था। राजनैतिक तर्कों [illegible] दाव-घातों से मौखिक और काग़ज़ी मल्लयुद्ध [illegible] रहा था। क्योंकि यह महाराणा के लिए रहा-[illegible] भी खो देने का प्रसङ्ग था। अनन्त मेवाड़ के [illegible] हास पर काला छींटा ही क्या, समूची दावात [illegible] उलट देनी होगी ! मेवाड़ का प्रत्येक रक्त-[illegible] जहाँ कहीं भी था महाराणा की दृढ़ता पर [illegible] रख कर, गौरव से फूल रहा था। क्योंकि भारत [illegible] नक्षत्री सात सौ नरेशों ने हँसते, नाचते, [illegible] अपने सोने-चाँदी के दण्ड-कमण्डल और [illegible] दिल्ली में जा डाले थे। वे किस अदब से [illegible]

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

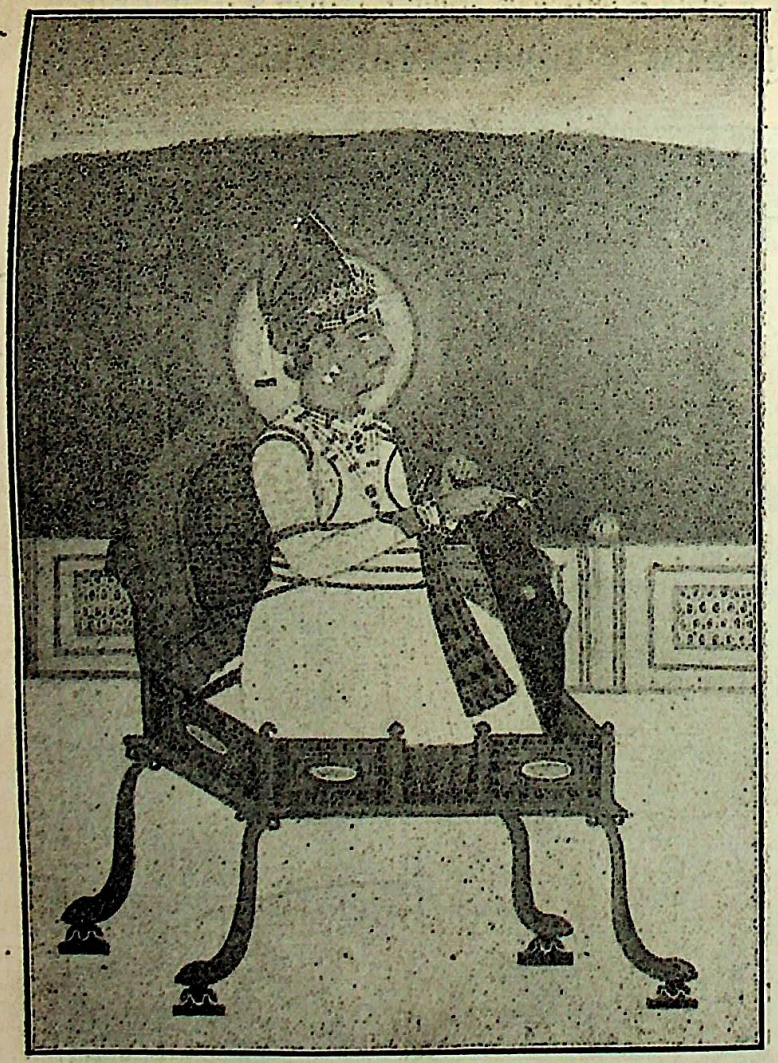

प्रसिद्ध वैद्यक-ग्रन्थ 'अमृतसागर' बनाने वाले विद्वान् राजा
श्रीमान् महाराजा प्रतापसिंह जी, जयपुर

बाबर-जैसे शक्तिशाली शासक से टक्कर लेने वाले
महाराणा संग्रामसिंह जी, मेवाड़

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

श्रीमान् राय रायन भण्डारी रुद्रनाथसिंह जी साहब, जोधपुर

स्वर्गीय महाराजा सर तहालीयार हैदराबाद

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

काबुल पर दृढ़ हाथों से शासन करने वाले

जयपुर के निर्माता तथा काशी, दिल्ली और जयपुर में वैद्यशाला निर्माण कराने वाले श्रीमान् महाराजा

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

जोधपुर के निर्माता महाराजा जसवन्तसिंह जी,
(द्वितीय) जोधपुर

श्रीमान् महाराजा सवाई माधोसिंह जी, जयपुर

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

श्रीमान् महाराजा अजीतसिंह जी, जोधपुर

[इन्होंने [illegible] की [illegible] बाई थी, [illegible]

जयपुर बसाने वाले

श्रीमान महाराजा सवाई जयसिंह जी

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

उठाएँगे और कैसे लटक करके सलाम करेंगे, इसकी परीक्षा पूरी करके सज-धज कर दिल्ली के लिए स्पेशल-ट्रेन की राह ताक रहे थे। परन्तु मेवाड़ में था केवल एक सन्नाटा, कहीं कुछ हल-चल नहीं।

परन्तु जहाँ पठान और मुग़ल-साम्राज्यों की लाखों तीर-बर्छों की अनियाँ निष्फल हुईं, वहाँ कूटनीति-पटु कर्ज़न की काले मुँह की धूर्त्त लेखनी की दुजिव्हा-नोक काम कर गई! कड़ाई के सामने वज्रवत् बन जाना महाराणा के रक्त-विन्दु में समाया था। अतः बन्दरघुड़कियों के आगे वे डटे रहे। किन्तु ज्योंही कल्पना से भी अधिक कर्ज़नी नम्रता ने उनके चरण चूमे, त्योंही वे ढीले हो गए, दिल्ली के लिए 'हाँ' कह दिया। चारों ओर बिजली-सी दौड़ गई, केवल मेवाड़ी-हृदय ही नहीं, प्रत्युत भारत का हिन्दू-हृदय मात्र दहल उठा, विश्वास की कमर टूट गई। परन्तु कोई क्या कर सकता था? निरङ्कुश नरेन्द्रों को रोकने का साधन कहाँ?

ज्योंही ख़बर मिली कि महाराणा आख़िर दिल्ली जाएँगे ही, क्षात्र-स्वातन्त्र्य के पुजारी एक चारण-हृदय पर असह्य चोट पहुँचना स्वाभाविक था। फ़लाफल की कल्पना, हानि एवं विडम्बना की विभीषिका को धक्का मार कर, उसका स्वजातीय कर्त्तव्य-भाव जाग्रत हो उठा, आन्तरिक ज्वाला की प्रेरणा हुई कि चाहे रुके या न रुके, महाराणा को क्षात्र-स्वरूप का ज्ञान कराना ही चाहिए!

इसी उद्देश्य को लेकर राजपूतों के लिए सुबोध और वीर-रस में प्रभावशाली डिङ्गल (मरु) भाषा में तेरह दोहे उदयपुर लिख भेजे गए। सत्य की ओजस्वी भाषा का प्रभाव कहाँ नहीं होता? सौ कोस से पत्र पहुँचने में कुछ देरी अवश्य हो गई। दिल्ली की स्पेशल में बैठ जाने पर और चित्तौड़ से कुछ आगे बढ़ जाने पर, स्पेशल ही में वह कविता महाराणा फ़तहसिंह जी के हाथ में पहुँची और पढ़ी गई। परम गम्भीर महाराणा के मुँह से सहसा निकल ही पड़ा कि—"यदि ये दोहे उदयपुर में मिल जाते तो हम वहाँ से रवाना ही नहीं होते। ख़ैर, बीच से लौटना ठीक नहीं, दिल्ली पहुँचने पर देखा जायगा।"

महाराणा ने क्या दिखाया, यह विश्व-विदित है। अभिमानी लॉर्ड कर्ज़न की जुलूसी सवारी और बड़ा दरबार महाराणा से ख़ाली था। कर्ज़नी कुचक्रों पर पानी फिर गया। उस पहली फ़रवरी के मध्याह्न में शहंशाह का प्रतिनिधि कर्ज़न सिंहासन पर बैठ कर भरे दरबार में महाराणा की ख़ाली कुर्सी को ताक रहा था। ठीक उसी समय उदयपुर की स्पेशल-ट्रेन महाराणा को हृदय में रख कर विजयनाद करती हुई स्वतन्त्रता की वेदी चित्तौड़ की ओर सन्नाटे से दौड़ रही थी!

सार्वजनिक विश्वास है कि हिन्दू-पति की इस गौरव-रक्षा में इस कविता ने प्रधान भाग लिया है। वे दोहे "चेतावणी का चूँगट्या" के नाम से प्रसिद्ध हैं और ये हैं:—

सौराष्ट्री दोहा (सिन्धु-राग)

पग-पग भम्याँ पहाड़, धरा छाड़ राख्यो धरम।
(इँशूँ) महाराणा र मेवाड़, हिरदै बशिया हिन्दरै ॥१॥
घण घलिया घमशाण, राण शदा रहिया निडर।
(अब) पेखन्ताँ फुरमाण, हलचल किम फतमल! हुवै ॥२॥
गिरद गजाँ घमशाण, नहचै धर माई नहीं।
(ऊ) मावै किम महाराण, गज दो शैरा गिरद में ॥३॥
ओराँने आशाण, हाकाँ हरबल हालणो।
किम हालै कुल राण, (जिण) हरबल शाहाँ हङ्किया ॥४॥
नरियन्द शह नजराण, झुक करशी-शरशी जिकाँ।
(पण) पशरेलो किम पाण पाण छताँ थारो फता! ॥५॥
शिर झुकिया शहशाह, शिंहाशण जिण शाँम्हनैं।
(अब) रलणो पङ्गत-राह, फाबै किम तोनें फ़ता! ॥६॥
शंकल चढावै शीश, दान-धरम जिणरो दियो।
शो खिताब बखशीश, लेवण किम ललचावशी ॥७॥
देखेला हिन्दवाण, निज शूरज दिश नेहशूँ।
पण तारा परमाण, निरख निशाशा न्हाँकशी ॥८॥

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

देखे अञ्जश दीह, मुलकेलो मन ही मनाँ।
दम्भी गढ दिल्लीह, शीश नमन्ताँ शीशवद ! ॥९॥
अन्तबेर आखीह, पातल जे वाताँ पहल।
(वे) राणा शह राखीह, जिणरी शाखी शिर जटा ॥१०॥
कठिण जमानो कोल, बाँधै नर हीमत विना।
(यो) बीराँ हन्दो बोल, पातल शाँगे पेखियो ॥११॥
अब लग शाराँ आश, राण रीत कुल राखशी।
रहो रहाय शुख-राश, एकलिङ्ग प्रभु आपरै ॥१२॥
मान मोद शीशोद ! राजनीत बल राखणो।
(इं) गवरमिण्ट री गोद, फल मीठा दीठा फता ! ॥१३॥

अर्थ

१—पाँवों-पाँवों पहाड़ों में भटकते फिरे, पृथ्वी छोड़ कर धर्म को बचाया, इसलिए ही "महाराणा" और "मेवाड़" ये दो शब्द हिन्दुस्तान के हृदय में बस गए हैं।

२—अनेक युद्ध हुए, तब भी महाराणा सदा निर्भय रहे। हे फ़तेहसिंह ! अब सिर्फ़ फ़रमानों को देखते ही यह हलचल कैसे मच गई ?

३—जिसके हाथियों के युद्ध की उड़ी हुई गिरद (धूलि) निश्चय ही पृथ्वी में नहीं समाती थी, वह महाराणा स्वयं दो सौ गज के गिरद (घेरे) में कैसे समा जायगा ?

४—दूसरे राजाओं के लिए आसान होगा कि वे हकाले जाने पर शाही सवारी में आगे बढ़ते रहें, चलते रहें, परन्तु जिस महाराणा-वंश ने अपने हरोल में (आगे) बादशाहों को हाँक लिया था (भगा दिया था), वह शाही सवारी में कैसे चलेगा ?

५—दूसरे सब राजा झुक-झुक करके नज़राना दिखाएँगे, यह उनके लिए तो सहज होगा। परन्तु हे फ़तेहसिंह ! तेरे हाथ में तो तलवार रहती है, उसके रहते हुए नज़राने का हाथ आगे फैलेगा ?

६—जिसके सिंहासन के सामने बादशाह सिर झुके हैं, फ़तेहसिंह ! अब पंक्ति में मिलकर तुझे कैसे फबेगा ?

७—जिसके दिए हुए "धर्म" के बल संसार सिर पर चढ़ा रहा है, वह (हिन्दू) ख़िताबों की बख़्शीश लेने के लिए कैसे चाहेगा ?

८—समस्त हिन्दू अपने 'सूर्य' की ओर पूर्वक ताकेंगे, परन्तु जब उनको तुम 'तारा' (स्टार ऑफ़ इण्डिया) दिखाई दोगे तो वे ही निश्वास डालेंगे।

९—हे शीशोदिया ! दिल्ली का दम्भी तुझे सिर झुकाते हुए देख कर मन ही मन और इस दिन को अपने लिए अभिमान का समझेगा।

१०—पहले महाराणा प्रताप ने समय में जो प्रतिज्ञाएँ की थीं, उनको आज सब महाराणाओं ने निभाया है और इसकी खुद तुम्हारे सिर की जटा है।

११—मनुष्य अपने में हिम्मत न होने ही यह सिद्धान्त बाँध लिया करता है कि "कठिन मुश्किल है"। इस वीर-वाणी के रहस्य को और प्रताप समझे थे।

१२—अब तक सबको यही आशा है महाराणा अपने वंश की रीति को रक्खेंगे। सुख राशि भगवान् एकलिङ्ग आपकी सहायता पर

१३—हे शीशोदिया ! फ़तेहसिंह ! प्रतिष्ठा और हर्ष को राजनीति-बल से रक्खा होगा। इस गवर्नमेण्ट की गोदी में मीठे देखे हैं ?

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

कुछ जानने योग्य बातें

[कुँवर जगदीशसिंह जी गहलोत, एम० आर० ए० एस०]

राजपूताने की प्रायः सभी रियासतों के निवासी, विशेष कर वैश्य अन्य प्रान्तों में मारवाड़ी कहे जाते हैं। इसका कारण यह है कि राजस्थानी लोग—चाहे वे जोधपुर, बीकानेर, जयपुर, जैसलमेर, बूँदी, कोटा आदि राजस्थान प्रान्त की किसी भी राजपूत रियासत के निवासी क्यों न हों—बहुधा पगड़ी-साफ़े बाँधे हुए देखे जाते हैं।

कई लोग 'मारवाड़ी' शब्द के वास्तविक अर्थ से अनभिज्ञ हैं; और उन्होंने मारवाड़ी का अर्थ मक्कार, धोखेबाज़, लुच्चा और बदमाश तक कर डाला है। ऐसे महापुरुषों में कोई श्रीधर गणेश वाझे नामक महाराष्ट्र ग्रेजुएट का नाम लिया जा सकता है, जिसने अपने "स्कूल-डिक्शनरी" नाम के मराठी-अङ्गरेज़ी कोष में ऐसा भद्दा अर्थ लिखा है। यद्यपि 'मारवाड़ी' शब्द से उस निर्जल और रेतीले भाग से अभिप्राय समझा जाता है जो जोधपुर-राज्य कहलाता है, परन्तु वास्तव में राजपूताने का सम्पूर्ण प्रान्त मारवाड़ ही है। कर्नल टॉड के मतानुसार प्राचीन समय में सतलज नदी से समुद्र तक का सारा भाग निर्जल होने के कारण मारवाड़ के नाम से प्रसिद्ध था, और यही अर्थ ठीक जँचता भी है। क्योंकि मारवाड़—मरुभूमि, बञ्जर और रेतीले मैदान को कहते हैं। राजपूताना वास्तव में ऐसा ही प्रान्त है। अतः इसके निवासियों को मारवाड़ी के नाम से पुकारते हैं। यह कहना युक्तिसङ्गत नहीं है कि इस रेतीले और निर्जल प्रान्त के लोग चालाक व लुच्चे हैं; प्रत्युत यह अवगुण तो दूसरे प्रदेशों में अधिक पाए जाते हैं। मारवाड़ी लोग चालाक नहीं, वरन् चतुर होते हैं; बदमाश नहीं, वरन् बुद्धिमान् और बहादुर होते हैं; मक्कार नहीं, बल्कि मिहनती होते हैं; धोखेबाज़ नहीं, बल्कि धीर होते हैं। इतिहास इसका साक्षी है। कोई कह सकता है कि राणा-प्रताप, भीमसिंह, गोरा, बादल, जयमल फ़त्ता, पद्मावती, दुर्गावती, मीराबाई, पृथ्वीराज, भामाशाह और दुर्गादास जैसे प्रातःस्मरणीय देवी-देवता मारवाड़ी नहीं थे? यहाँ तक कि छत्रपति शिवाजी भी एक राजस्थानी या मारवाड़ी वंश में ही उत्पन्न हुए थे।

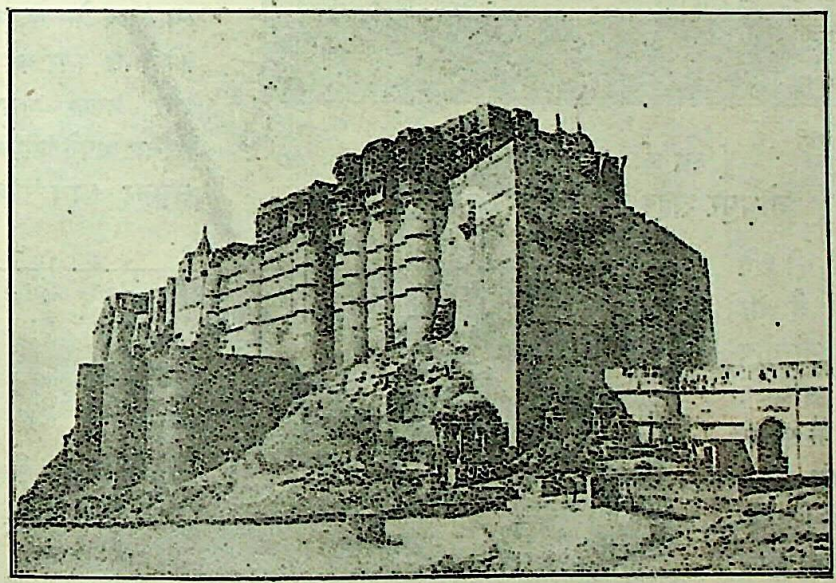

जोधपुर का क़िला (नज़दीक का दृश्य)
[आस-पास की भूमि से ४०० फुट ऊँची पहाड़ी पर बना हुआ है]

यह मारवाड़ (राजस्थान) प्रान्त भारतवर्ष में देशी राज्यों का एक मुख्य केन्द्र है, जहाँ पर प्राचीन सभ्यता,

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

रीति-नीति तथा आदिम आर्यक्षत्रियों की गौरवास्पद विभूति के अब तक दर्शन हो सकते हैं। इसीलिए तो

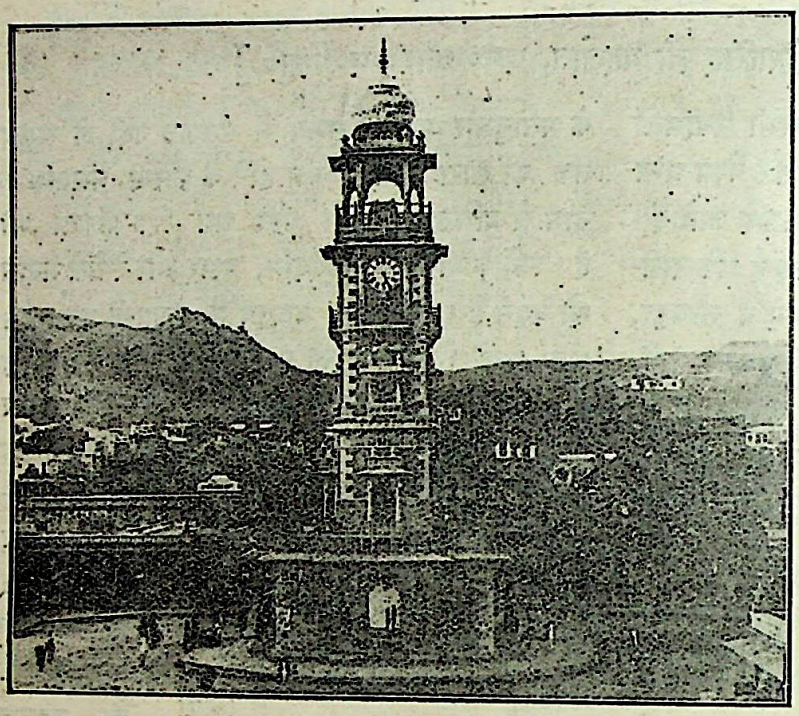

[९८ फ़ीट ऊंचा]
जोधपुर शहर का घण्टाघर

यह प्रान्त बड़े मान की दृष्टि से देखा जाता रहा है और समय-समय पर भारतीय सम्राटों ने अपने साम्राज्य की नींव दृढ़ बनाने में इसकी मित्रता का ही सहारा लिया है। यह वही प्रान्त है जिसको सुप्रसिद्ध इतिहास-वेत्ता कर्नल टॉड ने अपने राजस्थान के इतिहास में बड़े गौरव के साथ इस प्रकार लिखा है :—

"There is not a petty state in Rajasthan that has not had its Thermopolye and scarcely a city that has not produced its Leonidas."

अर्थात्—"राजस्थान (मारवाड़) प्रान्त में कोई सा राज्य भी ऐसा नहीं है कि जिसमें यूनान की थर्मो जैसी रणभूमि न हो और आ कोई ऐसा नगर मिले, जहां लियोनिडास-सा वीर पुरुष उ हुआ हो।"

आर्य-गौरव, सभ्यता व वीरता में यह प्रान्त किसी अपना सानी नहीं रखता था। देश जब स्वाधीनता और स का नाम भी नहीं जानते थे, समय भी वीरभूमि मारवाड़ (स्थान) के महाराणा प्रताप, दास राठौड़, उम्मेदसिंह हाड़ा अनेकों वीर पुरुषों ने देशभक्ति स्वातन्त्र्य प्रेम के कारण राज को लात मार कर जङ्गलों में और प्रबल शत्रुओं का स करना अपने जीवन का मुख्य समझा था। जब अछूत को गले लगाने का प्रश्न तक नहीं छिड़ा था, समय राजस्थान-शिरोमणि मेवाड़ के महाराणा ने

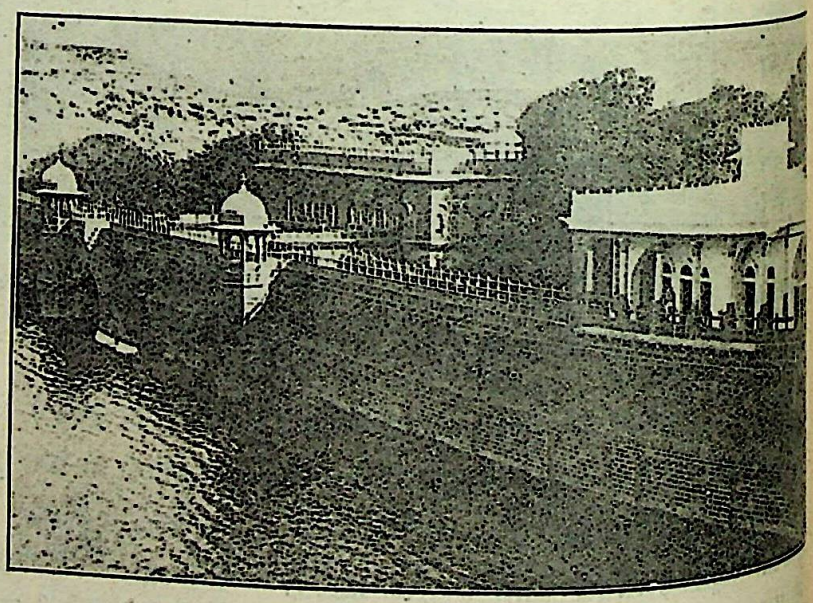

जोधपुर की बालसमर झील

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

Lib. Jangamwadi Math, VARANASI, Acc: No. 3585 10307

को अपनाया था और उन वीर भीलों की सहायता से अकबर-जैसे शक्तिशाली सम्राट् का सामना किया था; जिस समय काउन्सिल-निर्माण और प्रतिनिधियों के चुनाव की शैली प्रचलित नहीं हुई थी, उस समय भी जोधपुर, बीकानेर, जयपुर, उदयपुर, कोटा आदि राज्यों में अपने सभी अमीर-उमरावों की बिना सलाह के, न कोई नियम बनाया जा सकता था और न राज्य-सत्ता में कोई परिवर्त्तन किया जा सकता था। इस प्रकार सभ्यता और राज्य-प्रणाली की दृष्टि से यह प्रान्त सब प्रकार उन्नत था। यहाँ के शासक लोग जनता के हाथ में थे और उसके विरुद्ध कोई कार्य नहीं कर सकते थे। यहाँ तक कि प्रजा की भलाई और न्याय के लिए जागीरदार अपने राजा के विरुद्ध खड़े होकर राजा को सत्पथ पर लाते थे, जिस के अनेकों उदाहरण इतिहास में मिलते हैं। उदयपुर के महाराणा अमरसिंह की इच्छा युद्ध करने की न थी, परन्तु जनता ने उनको शत्रु का सामना करने के लिए विवश किया। वह मारवाड़ी प्रजा ही थी, जिसने जोधपुर-नरेश महाराजा गजसिंह के पाटवी राजकुमार अमरसिंह राठौड़ की स्वेच्छाचारी होने के कारण मारवाड़ के बाहर निकलवा दिया था और राव मालदेव राठौड़ के तीन ज्येष्ठ पुत्र होते हुए भी, छोटे पुत्र चन्द्रसेन को मारवाड़ के राजसिंहासन पर इसलिए बैठाया था कि वह योग्य और स्वतन्त्रता का उपासक था। प्रजा की इतनी निर्भीकता, स्वदेश-प्रेम और स्वाभिमान अन्य देशों में मिलना कठिन है।

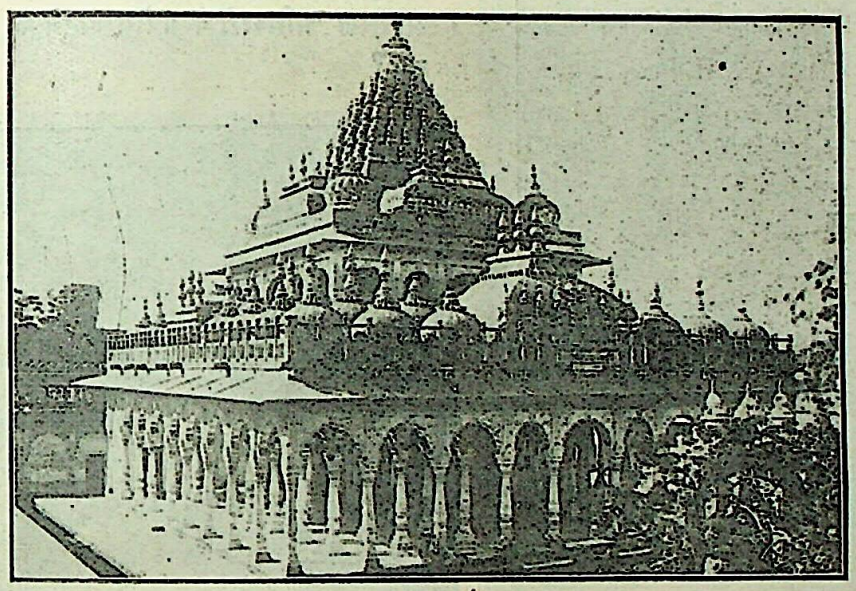

"महामन्दिर" के नाम से प्रसिद्ध जोधपुर के नाथों का जलन्धरनाथ मन्दिर

इस विवेचन से पाठक समझ गए होंगे कि इस प्रान्त के लोगों की सामाजिक दशा और रहन-सहन कैसा उच्च-कोटि का था। इतिहास के ज्ञाता उसे विशेष रूप से जानते हैं। पर वर्तमान काल में यहाँ के लोग किस प्रकार रहते हैं, उसका संक्षेप में दिग्दर्शन कराना इन पंक्तियों का उद्देश्य है, अस्तु।

मारवाड़ (राजस्थान) प्रान्त उन्नीस देशी रियासतों, लावा और कुशलगढ़ नामक दो ख़ुदमुख़्तार ठिकानों तथा अजमेर, मेरवाड़ा और आबू पहाड़ के ब्रिटिश-इलाक़ों को मिला कर राजपूताना कहलाता है। इसका क्षेत्रफल १,३१,६९८ वर्ग-मील है और १,०३,३९,६५५ मनुष्य इसमें बसते हैं। इस प्रान्त के निवासियों में हिन्दू, मुसलमान और ईसाई मुख्य हैं। हिन्दुओं में राजपूत, ब्राह्मण, वैश्य, चमार, कोली आदि अनेक जातियाँ हैं। इसी प्रकार मुसलमानों में भी शेख़, सैयद, पठान और नौ-मुसलिम, क़ायमख़ानी, मोहिल, सिन्धी, रङ्गड़, सिपाही, मेव, मेरात, घोसी, लोहार आदि हैं। इनके सिवाय हिन्दुओं में मीनें, भील, मिरासिए, साँसी, बावरी आदि कुछ जङ्गली जातियाँ भी हैं।

राजस्थान के देशी राज्यों में बोली जाने वाली ढूँढाड़ी, मेवाड़ी, बीकानेरी, बागड़ी, हाड़ोती, मेवाती आदि प्रान्तिक भाषाएँ सब एक मारवाड़ी-भाषा के विशाल नाम में आ जाती हैं। यह हिन्दी-भाषा की शाखाएँ हैं और सभी विभागों के लोग आपस में एक-

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

दूसरे की भाषा प्रायः समझ लेते हैं। क्योंकि मारवाड़ी भाषा के इन विभिन्न रूपों में विशेष अन्तर नहीं है। सब

पुराने जिरह-बख्तर पहने हुए योद्धा

लोगों की मूल—मातृ-भाषा हिन्दी ही समझनी चाहिए। मारवाड़ी-भाषा बोलने व सुनने में मीठी लगती है और उससे सभ्यता व शिष्टता झलकती है। इस भाषा की कुछ कहावतें नीचे दी जाती हैं, जिनसे पता लगेगा कि वे संक्षेप में होने पर भी, कितनी मीठी और उपदेश से भरी हुई हैं :—

१—अनी चुका बीसा हो—अवसर चूकने से पछताने के सिवाय और कुछ नहीं बनता।

२—ठगाया सू ठाकर बाजे है—एक बार धोखा खाने से आदमी दूसरी बार होशियार हो जाता है।

३—कलसुँ होवे जीको बलसूँ नहीं होवे—जो काम चतुराई से होता है वह पाशविक बल लगाने से नहीं हो सकता है।

४—रोयाँ बिनाँ तो माँ, ही बो-बो कोयनी ? बिना आन्दोलन (प्रार्थना) किए इष्ट की प्राप्ति नहीं सकती।

५—छाज बोले बूहारी बोले तूँ क्यों बोले थारे अठोतर बेज—गुणीजन तो चुप हैं और जो दूसरे के घर हैं वे ज्ञान छाँटते हैं।

६—ऊँठ लदन सूँ गयो, पदन सूँई गयो—काम के करने के मुख्य अधिकारों को त्याग देने पर साधारण अधिकारों के प्रयोग करने का हक़ भी रहा ?

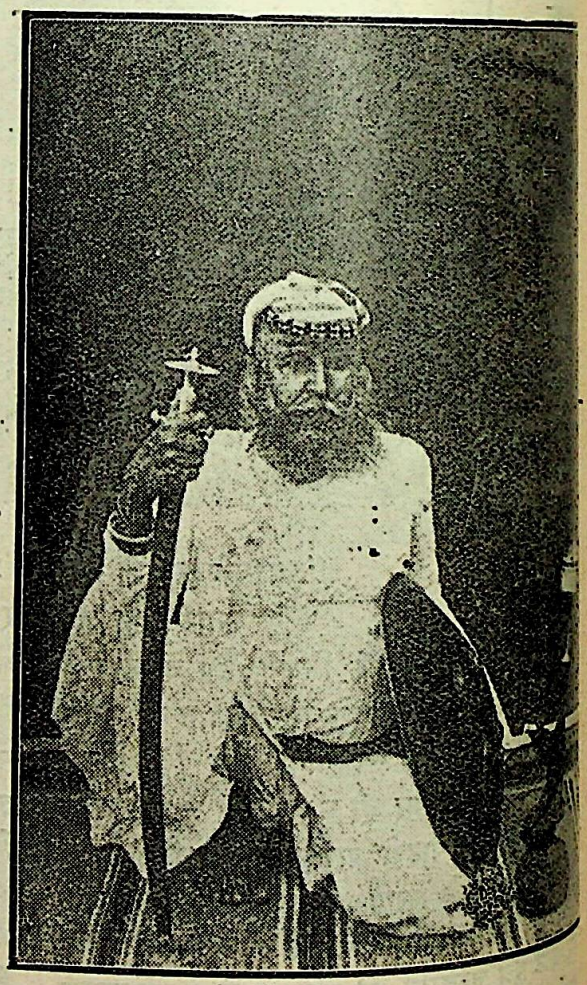

राठौर-राजपूत

७—ऊँठ खोड़ावे गधो डोभीजे—अपराध किसी और दण्ड कोई पावे।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

८—सीधे पर दोय चढ़े—सीधे आदमी को विशेष दुख दिया जाता है।

९—बाणियो मित्र न वैश्या सती, कागों हंस न बुगलो जती—वैश्य कभी सच्चा मित्र नहीं निकलता; वेश्या चाहे किसी के प्रति कितना ही प्रेम-भाव क्यों न दिखलावे, वह कभी सती अर्थात् एक ही को चाहती है, ऐसा नहीं समझना, बगुला नदी-तीर पर ध्यानावस्थित होकर बैठता है, परन्तु वह यती नहीं होता और कौवे कभी हंस नहीं होते।

१०—एक ननो सौ दुःख हरे—मौन-व्रत धारण करने से मनुष्य बहुत सी बुराइयों से बच जाता है।

पड़िहार वंश का राजपूत

११—ऊखल में माथो दिए पछे धमकाँरी कहीं गिनती—कार्यक्षेत्र में कूद पड़ने पर दुख-कष्ट से नहीं घबड़ाना चाहिए।

१२—मूँज बल गई, पर बट कोयनी बलिग्रो—वैभव नष्ट हो गया, अभिमान नहीं मिटा।

१३—आप व्यास जी बैगण खावे, दूजे ने परमोद

कछवाहा वंश का राजपूत सेन्टर

बतावे—आप बुरा कर्म करे, दूसरों को उसके न करने का उपदेश दे।

१४—माँ भठियारी पूत फतेखाँ—अयोग्य होने पर थोथी डींग मारना और बड़े-बड़े काम करने को उद्यत होना।

* * *

मारवाड़ी-भाषा की लेखन शैली विचित्र है। उसमें मात्राओं का ख़्याल प्रायः नहीं किया जाता। और एक ही पुरुष का लिखा हुआ कभी उससे भी नहीं पढ़ा जाता, और कभी कुछ का कुछ मतलब हो जाता है। महाजनी मुड़िया अक्षरों का तो हाल ही बेहाल है। कहा भी है :—

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

बनक पुत्र कागद लिखे, काना मात न देत।
हींग मिरच जीरो भखे, हङ्ग मर जर कर देत॥

जयपुर के नव-विवाहित दम्पति

इसका एक रोचक दृष्टान्त है। किसी ने लिखा—'कक अजमर गया है न कक कटे है।' अर्थात् काका अजमेर गए हैं और काकी (चाची) कोटा में हैं। मगर पढ़ने वाले ने इस तरह पढ़ लिया कि काका आज मर गया है, और काकी कटे है। इस प्रकार मारवाड़ी लिखावट साफ़ लिखी ही नहीं जाती। इसलिए एक कहावत चली आती है कि "आला बँचे न आपसू, सूखा बँचे न बापसूँ।" अर्थात् गीले अक्षर स्वयं लेखक नहीं पढ़ सकता, और सूख जाने पर, यानी कुछ समय बाद तो (वे अक्षर) उसके बाप से भी नहीं पढ़े जा सकते। मारवाड़ी-लिपि में शब्दों के बीच में अन्तर छोड़ना तो जानते ही नहीं। अलबत्ता अब कुछ लोग अङ्गरेज़ी व देवनागरी की देखा-देखी अन्तर छोड़ने लगे हैं। लिखावट व बोली में देवनागरी तथा हिन्दी का प्रभाव भी आने लगा है।

मारवाड़ी (राजस्थानी) स्त्री-पुरुषों का पहि अन्य प्रान्तों से कुछ भिन्न है। यहाँ के पुरुषों के घुटनों तक मोटे कपड़े की धोती, कमरी, अँगर कुर्ता, और पोतिया (पाग) है। देहात के किस लोग नङ्गे बदन रहते हैं और केवल रेजे (खादी) एक अँगोछा-सा पास रखते हैं।

कुछ वर्षों से लोग बण्डी या अँगरखे के बदले कफ़ों का कुर्ता पहिनने लगे हैं। महाजन (से लोग पैचा, पाग या पगड़ी, जो १८ गज़ लम्बी

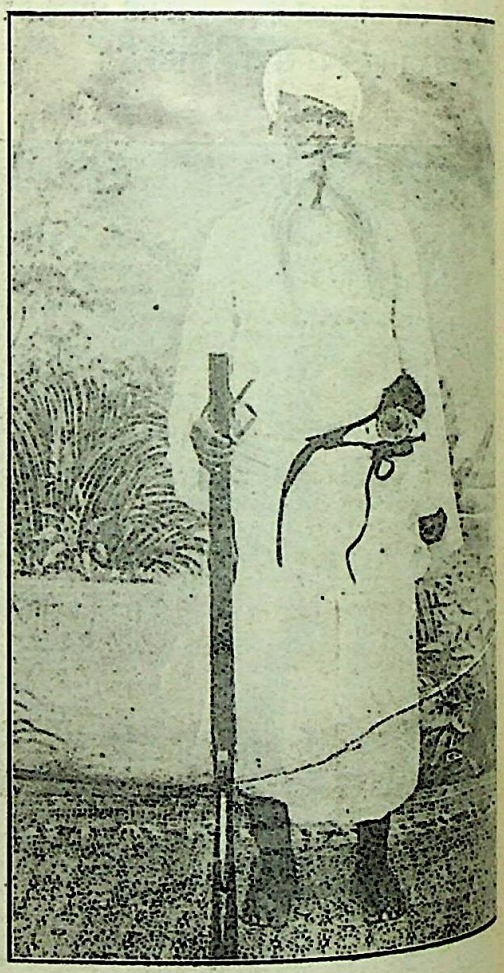

कछवाहा खाँप का राजपूत सेन्टर

६ इञ्च चौड़ी बारीक सूत के कपड़े की होती है जिसके किनारे पर ज़री का काम किया हुआ होता बाँधते हैं। इसको भिन्न-भिन्न उपजातियाँ भिन्न तरह से अपने सिर पर बाँधती हैं। सिर पर बाँधने पोशाक में चोचदार पाग राजपूताने भर में विख्यात

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

मारवाड़ी-समाज के चार रत्न

१—श्री० घनश्यामदास जी बिड़ला
२—श्री० रामेश्वरदास जी बिड़ला
३—श्री० जुगलकिशोर जी बिड़ला
४—श्री० ब्रजमोहनदास जी बिड़ला

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

उर्दू भाषा-भाषी सज्जनों तथा देवियों को यह सुन कर प्रसन्नता होगी कि ऐसे हज़ारों भाई-बहिनों की प्रेरणा और सहयोग से प्रेरित होकर हमने उनके प्यारे

اوردو ایڈیشن

'چاند'

का उर्दू-एडीशन

निकालने का निश्चय कर लिया है, अब तक हमारे पास कई सौ ग्राहकों की नामावली आ चुकी है। मुस्लिम भाई-बहिनों तथा पञ्जाब के अनेक प्रतिष्ठित मित्रों के प्रेमपूर्ण आग्रह का यह प्रत्यक्ष फल है, पाठकों को जान कर प्रसन्नता होगी कि 'चाँद' के उर्दू-एडीशन का सम्पादन करेंगे

मुन्शी कन्हैयालाल जी, एम० ए०, एल्-एल्० बी०;

प्रधान सम्पादक सहगल जी ही रहेंगे। इसी से उर्दू-संस्करण की सफलता का अन्दाज़ा लगाया जा सकता है!

इन दो सज्जनों के अतिरिक्त कई प्रतिष्ठित मुस्लिम भाइयों ने भी पूर्ण सहयोग का वचन दिया है। जो सज्जन ग्राहक-श्रेणी में नाम लिखाना चाहते हैं, अथवा नमूना मँगाना चाहते हैं, उन्हें शीघ्र ही अपना नाम रिजिस्टर करा लेना चाहिए। जनवरी से वर्षारम्भ होगा, किन्तु १५ दिसम्बर तक पहला अङ्क प्रकाशित हो जायगा। 'चाँद' के समस्त पाठकों से सादर प्रार्थना है कि मित्रों में हमारी इस सूचना की चर्चा कर दें, ताकि हम उर्दू भाषा-भाषी जनता की भी कुछ सेवा करने में समर्थ हो सकें। 'चाँद' के उर्दू-संस्करण में १२५ साफ़-सुथरे मनमोहक पृष्ठ, दो तिरङ्गे चित्र, ३-४ रङ्गीन चित्र (आर्ट पेपर पर) ५०-६० सादे चित्र और ८-१० कार्टून (व्यङ्ग चित्र) आदि-आदि रहा करेंगे! 'चाँद' के उर्दू-एडीशन का वार्षिक चन्दा ८) रु० और छः माही ५) होगा, नमूने की एक कॉपी का मूल्य १) रु० होगा!!

उर्दू की अनेक सुन्दर पुस्तकें प्रकाशित करने का भी हमने निश्चय कर लिया है। पत्र-व्यवहार इस पते से करें :—

मैनेजर 'चाँद' (उर्दू-एडीशन) चन्द्रलोक, इलाहाबाद

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

जिसकी विशेषता यह है कि इसके चारों तरफ़ एक पृथक् फ़ीता बाँधा जाता है, जिसको सादा होने पर "उपरनी"

मारवाड़ी देशी मुसलमान

और सोने-चाँदी के काम से खचित अर्थात् ज़रीदार होने पर "बालाबन्दी" कहते हैं। इस समय लोग सिर पर गाढ़े के पोतिया के बदले साफ़ा (फेंटा) बाँधने लग गए हैं, जो साधारणतः मलमल का होता है। कोई-कोई टोपी भी लगाने लगे हैं और कई अङ्गरेज़ी ढङ्ग के कोट-पतलून या ब्रीचेज़ तथा अङ्गरेज़ी हैट भी धारण करते हैं।

स्त्रियों का पहिनाव घाघरा (लहँगा), काँचली (जो केवल छाती को ढकती है और पीठ की ओर तनियों से बँधी रहती है) या अँगरखी और ओढ़नी है। यह ओढ़नी २॥ गज़ लम्बी और १॥ गज़ चौड़ी होती है, जो मस्तक और शरीर को ढँकती है। शहरों में आजकल साड़ी का प्रचार भी बढ़ता जाता है। कोई-कोई क़मीज़ और वेस्टकोट भी पहिनती हैं।

मुसलमान-पुरुषों का भी पहिनाव उपर्युक्त ही है; क्योंकि उनका रहन-सहन व रीति-रिवाज हिन्दुओं से मिलता है और वे अधिकांश में हैं भी नव-मुसलिम। केवल स्त्रियाँ कहीं-कहीं पर पाजामा, आधी बाहों का लम्बा कुर्ता और ओढ़नी पहिनती हैं। राजस्थान की प्रायः सभी जातियों का पहिनावा एक सा है।

* * *

भारतवर्ष के कई भागों की तरह यहाँ पर्दे की प्रथा नहीं है। राजपूत जागीरदार, जिनके यहाँ बाँदियाँ (डावड़ियाँ-दरोगनें) काम करने को होती हैं, उनके यहाँ अलबत्ता पर्दा होता है, किन्तु ग़रीब और हलखड़ कृषक राजपूतों की स्त्रियाँ कुएँ या तालाबों से पानी भर कर लाती हैं और अपने पुरुषों को रोटी देने खेतों में भी जाती हैं। यदि वे ऐसा न करें तो उनका काम कैसे चले? पर्दे का

मारवाड़ी वैश्य का पहिनाव

रिवाज मुसलमानी राज्य के समय से प्रचलित हुआ है; इससे पहले राजाओं की रानियाँ भी पर्दा नहीं करती

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

थीं। वे लड़ाई, शिकार और दरबार में भी खुले मुँह रहती थीं, और पुरुषों की भाँति अस्त्र-शस्त्र चलाती थीं। इसी से कई प्राचीन शिला-लेखों में रानियों का युद्ध में पकड़ा जाना वर्णित है।* यही नहीं, भारत-शिरोमणि उदयपुर, मेवाड़ राजवंश में महाराणा संग्रामसिंह द्वितीय के समय (सम्वत् १७६८) तक महाराणा अपनी पटरानी के साथ राजसिंहासन पर बैठते थे और पर्दा नहीं रक्खा जाता था।

मारवाड़ का नाजर (हिन्दू-नपुंसक)
[ये प्रायः रईसों के यहाँ रानियों की सेवा में रहते हैं]

* बीकानेर-राज्य के इतिहास के पृष्ठ २१ में लिखा है कि मण्डोवर (जोधपुर) के अधिपति राव टीडाजी राठौड़ (सम्वत् १४०१—१४१४) ने जब भीनमाल के राजा सोनगरा चौहान सामन्तसिंह पर आक्रमण कर उसे परास्त किया, तब उन्होंने सम्वतसिंह की स्वरूपवती रानी सवली सीसोदणी को रणक्षेत्र में पकड़ा। टीडाजी ने उसे अपनी भार्या बनाया, जिसके गर्भ से कान्हड़देव नाम का उत्तराधिकारी उत्पन्न हुआ।

आजकल लोगों में धन के साथ-साथ पर्दे की भी बढ़ती जाती है। देखने में आया है कि ज्यों

क़ायमख़ानी राजपूत (नव-मुसलिम)

आदमी ने चार पैसे कमाए या अच्छा ओहदा कि तुरन्त पर्दे का रोग उसकी जान पर सवार उसमें भी ख़ास कर मुसलमान इसमें शीघ्र और से फँसते हैं।

* * *

यहाँ के साधारण लोगों का भोजन गेहूँ जौ और मक्का है। शहरों में अधिकतर अमीर का ही प्रयोग करते हैं। परन्तु गाँवों में किसान स्थिति अच्छी नहीं है। वे लोग मिश्रित धान, सूखा दलिया, खीच, सोगरा आदि खाते हैं। एक मारवाड़ी कहावत से प्रकट है—

कूरा करसा खाय गेहूँ जीमे बाणियाँ।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

अर्थात्—किसान ख़ुद कूरा अनाज (घटिया अनाज) खाकर अपने क़र्ज़े के पेटे गेहूँ बोहरों (महाजनों) को देते हैं।

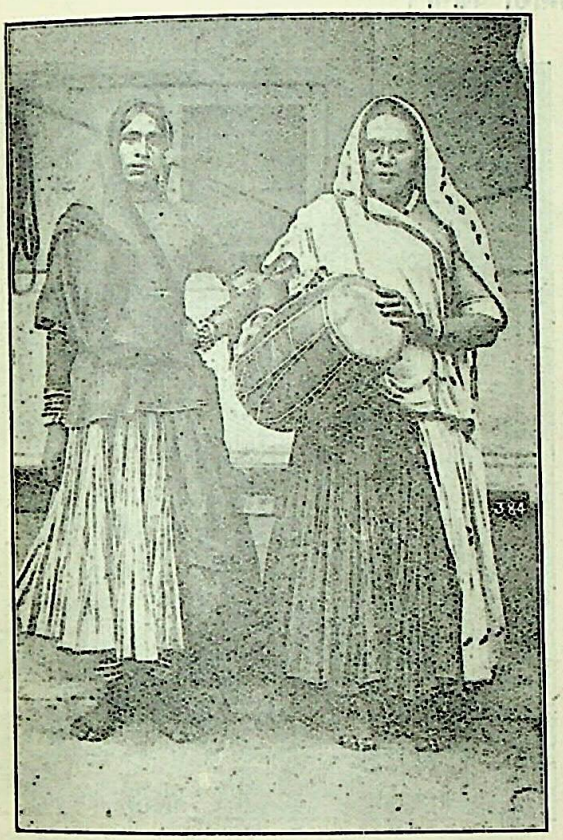

मारवाड़ के हीजड़े (मुसलमान)

तरकारी के लिए यह ग़रीब किसान लोग करे, कूमट, फोग, साँगरी, पीलू आदि बनैले पेड़ों की फलियाँ काम में लाते हैं। उनको गोभी, सलगम, आलू आदि नगर की वस्तुएँ कभी त्योहारों पर भी नसीब नहीं होतीं ! खाने को उनको चावल भी त्योहार ही पर मिलता है। उपरोक्त खाद्य पदार्थों की विशेष व्याख्या इस प्रकार है :—

सोगरा—बाजरे के आटे की मोटी सेंकी हुई सख़्त रोटी, जो कम से कम ७-८ तोले वज़न की होती है।

राब—छाछ में बाजरे का आटा घोल कर प्रातः या सन्ध्या को उबाला जाता है और दूसरे दिन खाया जाता है।

खीच—बाजरे को ओखली में कूट कर और उसका छिलका उतार कर चौथाई हिस्सा मोठ मिले पानी में पका कर गाढ़ा बनाया जाता है। इसमें कभी-कभी खाते समय धोई तिल्ली का तेल डालते हैं।

घाट—मक्का का मोटा दला हुआ आटा पानी में पका कर गाढ़ा बना लिया जाता है।

दलिया—यह बाजरे के आटे का घाट ही है; परन्तु यह पतला होता है। ग़रीब लोगों को यह भी पूरी तरह से नसीब नहीं होता !

अधिकतर लोग दिन में चार बार भोजन करते हैं। परन्तु उनका वह भोजन नाम-मात्र का ही होता है :—

सीरावन—सुबह का कलेवा।

रोटी—दस बजे दिन का भोजन।

दोपहरा—दो बजे दिन का भोजन।

ब्यालू—सन्ध्या का भोजन।

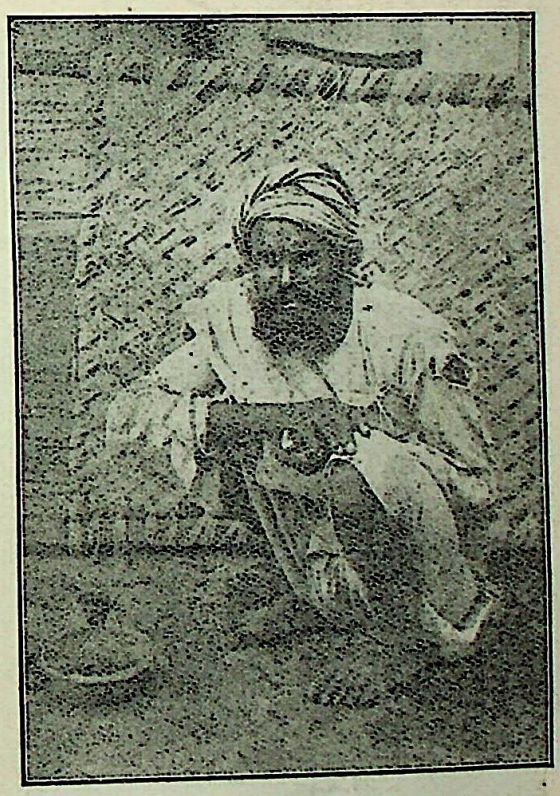

मेर लोग

[जिनके नाम से अजमेर का ज़िला मेरवाड़ा प्रसिद्ध हुआ]

यहाँ के किसान बड़े ही सन्तोषी, अपने व्यवहार में सच्चे, सादा जीवन रखने वाले, मितव्ययी और स्वभाव से मिहनती होते हैं।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

किसान जितना संसार का उपकार करता है, उतना अन्य किसी व्यवसाय या जाति से नहीं हो सकता। इस बात को राजा-महाराजा व देश के बड़े-बड़े नेता व विद्वानों ने भले प्रकार मान लिया है। इसीलिए इनको "अन्न-दाता" कहा जाता है। ग्वालियर के स्वर्गीय विद्वान् व आदर्श-नरेश हिज़ हाईनेस महाराजा सर माधवराव सेंधिया बहादुर ने ३० जनवरी, सन् १९२० ई० को अपने भाषण में ये महिमा-सूचक शब्द कहे थे :—

"आप किसान-ज़मींदार लोगों के साथ मुझे कोई परहेज़ नहीं है। इसलिए जैसे मैं आपको अपना समझता हूँ वैसे ही आपको मुझे अपना समझना चाहिए। मैंने आप साहबान को "अन्नदाता" का लक़ब दिया है। मेरे रिज़्क़ का दारोमदार, यानी मेरे जीवन का हश्र आपके

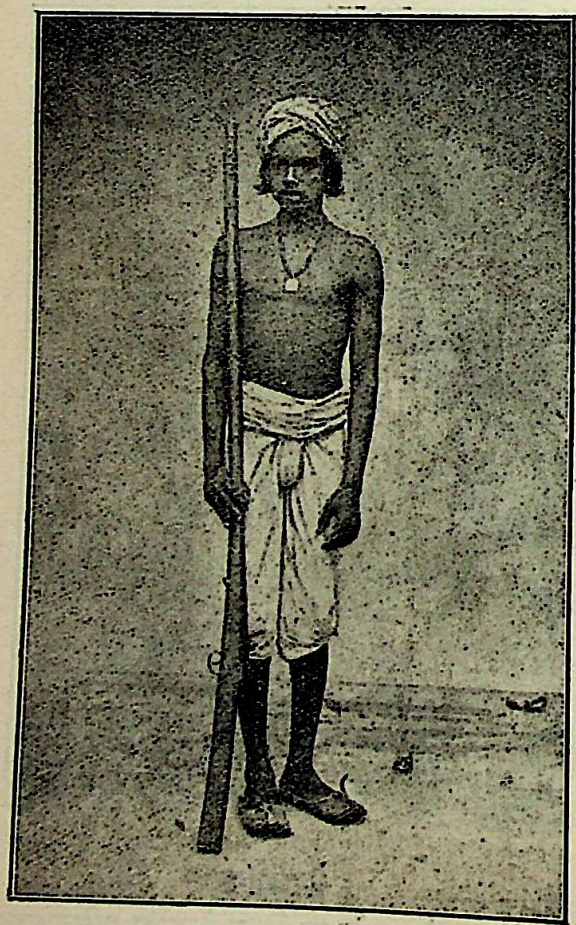

मारवाड़ की बागड़ी क़ौम का पुरुष

ऊपर है। और इसलिए लक़ब "अन्नदाता" इस्तेमाल करना मुझे बिलकुल दुरुस्त मालूम होता है। तुम मेरे अन्नदाता और मैं तुम्हारा ताबेदार—कमाऊ पूत हो! जब तुम कमाई करके दोगे तभी यह बाज़ीगर तमाशा चलेगा।"

मारवाड़ का दर्ज़ी

हाल में २१ सितम्बर, सन् १९१९ ई० को भोपाल नवाब साहब ने अपने राज्य की प्रजा-प्रतिनिधि-सभा पाँचवें अधिवेशन में कृषकों के विषय में यह कहा है:—

I wish to make a personal appeal to all nobles and subjects, who live in the cities, and to all the public servants, and it is this, that you should all learn to love and respect my peasants. They are the real backbone of the country. It is they who feed you by the sweat of their brow and as such, they do not deserve to be treated as people living on a lower plane than ourselves. I have all along given you the lead in this matter and therefore, I have a right to insist that you should go to them, be one of them in their sorrows and their pleasures, and always be

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

them to the utmost of your capacity. You will lose nothing by serving them in this manner, and

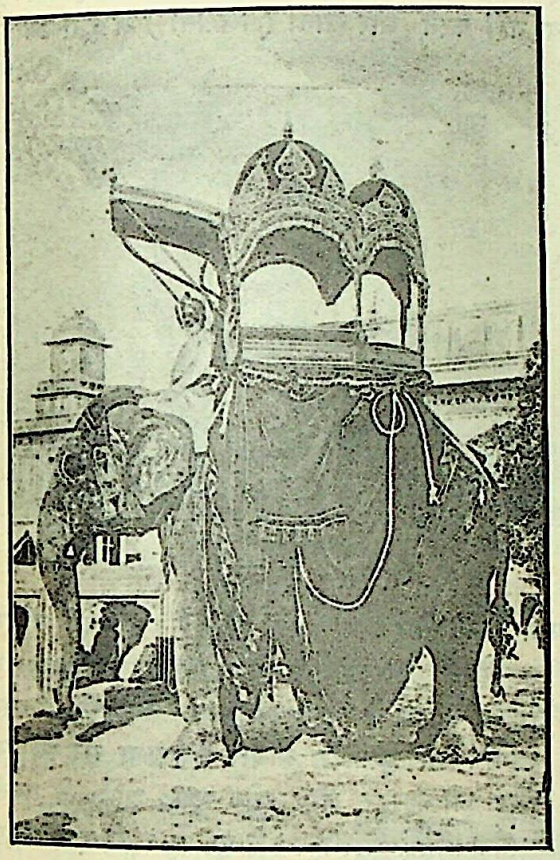

अम्बारी हौदे सहित दरबारी हाथी

in their turn, they are bound to love and respect you for it. Remember the lines :—

" . . . a bold peasantry, their country's pride,
When once destroyed, can never be supplied.

अर्थात्—"मैं अपने सरदारों से तथा नगरों में रहने वाली प्रजा और सभी राज-कर्मचारियों से एक व्यक्तिगत प्रार्थना करना चाहता हूँ। वह प्रार्थना यह है कि आप सब लोगों को मेरे किसानों से प्रेम करना सीखना चाहिए। वास्तव में किसान ही देश के प्राण हैं। वे अपने रक्त को पसीना बना कर आपके लिए भोजन उत्पन्न करते हैं। अतः आपको उन्हें अपने से किसी भी प्रकार तुच्छ न समझना चाहिए। इस विषय में अपने आचरण के द्वारा मैंने सदा आप लोगों के सामने एक आदर्श उपस्थित किया है। इसलिए मुझे अधिकार है कि मैं आप लोगों से यह अनुरोध करूँ कि आप उनके पास जाइए, उनसे मिलिए, उनके सुख और दुःख में उनके साथी बनिए और शक्ति-भर उनकी सहायता कीजिए। इस प्रकार की सेवा से आपकी कोई हानि नहीं हो सकती, उल्टे किसान आपसे इस सेवा के लिए प्रेम करेंगे। आप लोगों को प्रसिद्ध अङ्गरेज़-कवि गोल्डस्मिथ की यह उक्ति सदा याद रखना चाहिए कि—'किसानों की सम्पन्नता ही देश के गौरव का आधार है। एक बार यह आधार जहाँ नष्ट हुआ कि इसे पुनरुज्जीवित नहीं किया जा सकता।'

गुजरात के सुप्रसिद्ध विद्वान् श्रीमाली-ब्राह्मण-कुल-दिवाकर कवीश्वर पं० दलपतराम डाह्याभाई, सी० आई० ई० ने भी किसानों का गुणगान अपनी सरस कविता में

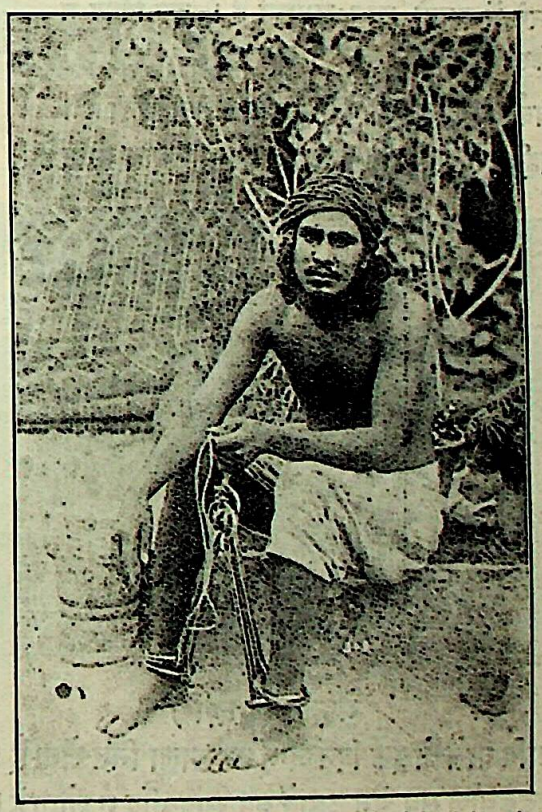

मारवाड़ का मीना या मैणा (जेल में)

[शरीर-सङ्गठन और दृष्टि पर ध्यान दीजिए]

इस प्रकार किया है और सर्व-सुखों का दाता किसान को मान कर उसे नमस्कार किया है :—

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

सर्वथी प्रथम जेणे सृष्टि माँ अनाज वाव्याँ।
जेना खेतरनुँ अन्न जुक्तिथी हूँ जमूँ छूँ ॥ १ ॥
उपजावे शेलड़ी ने स्वादिष्ट साकर खाँड़।
भोजन करीने हूँ सदैव सुखे भमूँ छूँ ॥ २ ॥
करे छे कपास पैदा कापड़ बने छे जेना।
सारो सजी सणगार रङ्ग भर रमूँ छूँ ॥ ३ ॥
करे छे खेतीनु काम कहे छे दलपतराम।
एवा एक कृषक ने नित्य-नित्य नमूँ छूँ ॥ ४ ॥

नागरिकों की दशा अवश्य कृषकों से अच्छी है, जो ऊपरी आडम्बरों और फ़ज़ूलख़र्ची में लिप्त हैं। इधर किसान पैसा न होते हुए भी क़र्ज़ लेकर, धूर्त्त मुखियों के लल्लो-चप्पो में आकर मृतकों की स्मृति में जातीय भोज के औसर, मौसर, नुकता* करने में अपनी शान समझते हैं। इस विषय में किसी राजस्थानी कवि ने ख़ूब कहा है :—

जेवर बेचे घर को बेचे नुकता करना होता है।
नहीं करें तो जाति-भाई का ताना सहना होता है॥

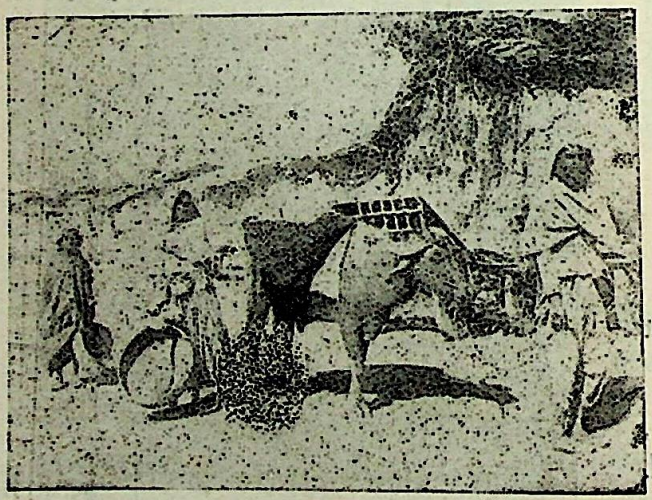

मेहतर (भङ्गी)

जाति वाले तो इक दिन जीमें घर वाला नित रोता है।
लड्डूबाज़ सब चैन उड़ावें वह सुख-नींद न सोता है॥

* नुकता—मारवाड़ियों में मृत्यु के पश्चात भाई-बिरादरी तथा ब्राह्मणों को भोजन कराना अनिवार्य होता है—चाहे वह ग़रीब हो या अमीर, पुरुष हो चाहे विधवा स्त्री। इसी राक्षसी प्रथा को नुकता या कारज; औसर, मौसर कहते हैं।

जब पास में पैसा नहीं रहता तो बोहरा [illegible] खड़ा रहता है। उस समय इनके खाने को अन्न [illegible] रहता। तब भी इन किसानों पर क़र्ज़ देने वाले ([illegible] दया नहीं करते और खातों (लिखतों) में दूना-[illegible]

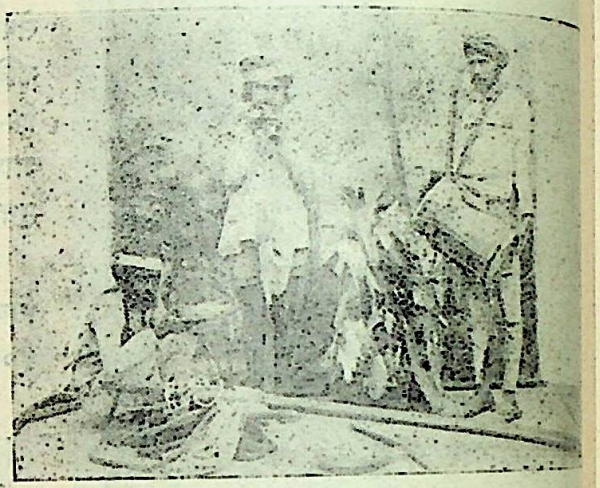

मारवाड़ के नट

व्याज लगाते और ऋण बढ़ाते रहते हैं। उनका [illegible] यह है कि कृषक लोग उनके चङ्गुल से कभी [illegible] निकल सकें। ये बोहरे अधिकतर कैसे होते [illegible] स्वर्गीय जोधपुर-नरेश श्रीमान् महाराजा सर [illegible] सिंह जी बहादुर, जी० सी० एस० आई० [illegible] पुस्तक "माई पालीटूर" के पृष्ठ १४१ में इस [illegible] लिखा है :—

हित में चित में हाथ में, खत में मत में [illegible]
दिल में दरसावें दया, पाप लिया सिर [illegible]

अर्थात् —"बोहरे की मित्रता में, मन में, [illegible] में, खत (लिखावट) में और उसके [illegible] धोखेबाज़ी भरी रहती है। वह दयावान् [illegible] बहाना करता है, परन्तु बड़ा पापात्मा होता [illegible] वह एक बार किसी किसान को अपने जाल में फ़ाँ[illegible] है तो फिर उसे नहीं छोड़ता।"

क़र्ज़दार की दशा किसी मारवाड़ी-कवि ने यों [illegible] है :—

निस-दिन निर्भय नींद स्वपना में आवे न [illegible]
दुनिया में नर दीन करजा सँवए किसा[illegible]

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

अर्थात्—"स्वप्न में भी गाढ़ी निद्रा और शान्ति उस मनुष्य को नहीं मिल सकती जिस पर ऋण है।"

लेणों भलो न बाप को साहेब राखे टेक।

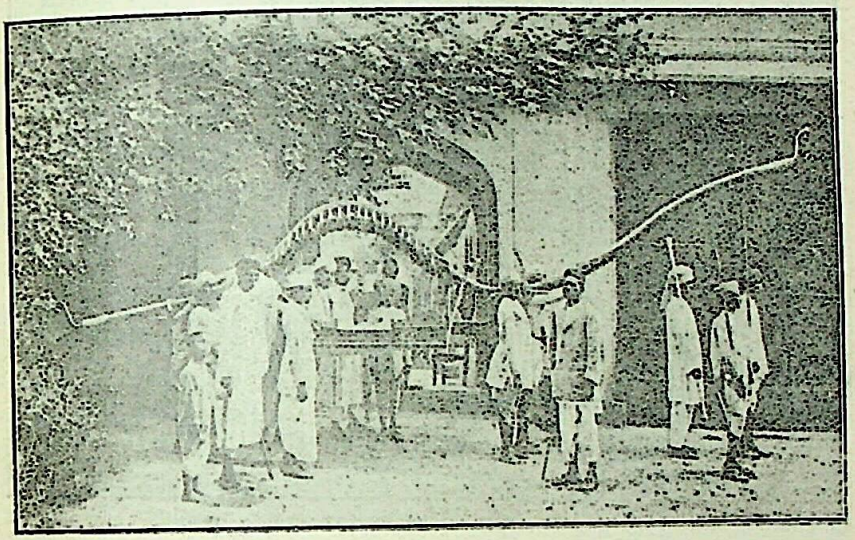

मारवाड़ की पालकी

अर्थात्—"क़र्ज़ अपने बाप का दिया भी भला नहीं, ईश्वर इससे बचावे।" इस संसार में क़र्ज़दार की दशा कितनी शोचनीय और दया के योग्य है।

अधिकांश बोहरे लोग क़र्ज़ देते और वापस लेते समय दोनों बार जनता को लूटते हैं। उनकी चालाकी का चित्र किसी चारण-कवि ने यों खींचा है :—

तोल साटे ताकड़ी,
लकड़ी ढेक लगावे।
अड़वा करे उधार,
बणज बवार ज्युँ बसावे॥
देताँ तो घटतो देवे,
लेता बधतो पावरी।
बणिया शिकार इण विध
रमें, बस्ती माँय बावरी॥

अर्थात्—"तकड़ी (तराज़ू) से तोलते समय बोहरे लोग अपनी कलाई से रेढ़ मार कर ग्राहकों को धोखा देते हैं। उनका क़र्ज़ा एक धोखे की टट्टी है। उनके व्यवहारों में सब जगह फन्दा है। इस प्रकार साहूकार क्या हैं, मानों महाजन के वेश में सचमुच निर्दयी पुरुष हैं।"

ये लोग "मुँह में राम बग़ल में छुरी" रखते हुए, आवश्यकता से दबे हुए लोगों से लाभ उठा लेने से नहीं चूकते। इसलिए इनके विषय में यह भी कहावत प्रसिद्ध है :—

बाणीयाँ थारी बाण,
कोई नर जाणे नहीं।
पाणी पीए छाण,
लोही अणछाणीयो पीए।

ऐसी धूर्त्तता पर यह बोहरे अपनी शेख़ी बघारते हैं और कहते हैं :—

ओछी-ओछी डाँडी राखाँ, लाँबी-लाँबी कणीया।
सेर रो तीन पाव तोलाँ, तो बणीयानी जणीया॥

अर्थात्—"हम तकड़ी की छोटी-छोटी डण्डी रखते हैं

मारवाड़ के थोरी लोग

और डोरी लम्बी रखते हैं। हमारा नाम असली बनिया तभी है, जब सेर-भर के बदले तीन पाव ही तोल कर दें।"

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

किसान लोग ऐसे बोहरों को यमदूत समझते हैं। एक कहावत प्रसिद्ध है कि 'बोरा को राम-राम, जम को सन्देशो है।' अर्थात्—यदि बोहरा राम-राम करे तो किसान समझता है कि मृत्यु का सन्देश आया है।

* * *

मारवाड़ के लोगों का धन्धा देहातों में खेती-बाड़ी और शहरों में नौकरी, मज़दूरी आदि का है। ९६ प्रतिशत लोग खेती-बाड़ी पर निर्भर हैं, और पशु-धन पाल कर निर्वाह करने वाले तीन प्रतिशत हैं। गाय, बैल, घोड़ा, ऊँट, भैंस, भेड़ और बकरे-बकरी यहाँ के अच्छे होते हैं। नागोर के बैल सूरत-शक्ल में अच्छे और तेज़ होते हैं, जो भारत भर में विख्यात हैं। गाएँ थली यानी रेगिस्तान के इलाक़े की अच्छी हैं। जोधपुर-राज्य के परगने साँचोर की गाएँ लगभग १५ सेर दूध देती हैं। नसल यानी औलाद के लिए नागोर और साँचोर की गाएँ उत्तम हैं। यद्यपि समय की हवा लगने से यह वाड़-देश भी नहीं बचा है और शहर व क़स्बों में

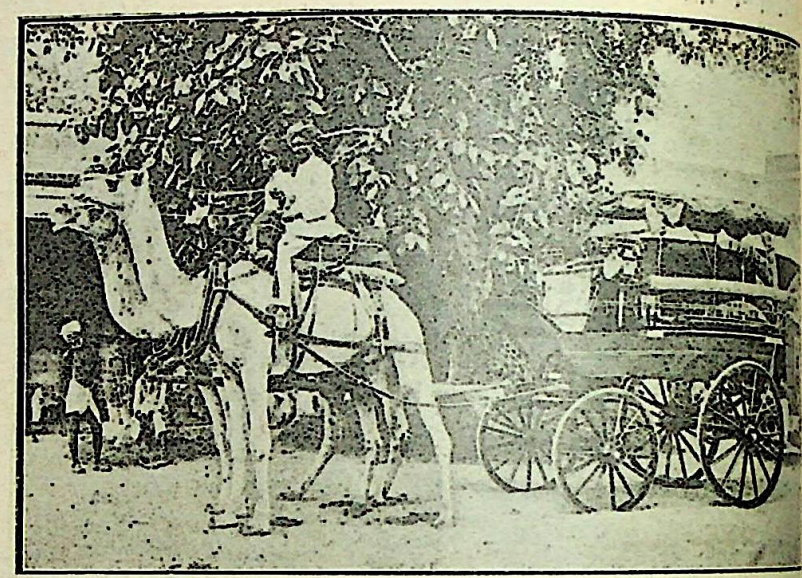

मारवाड़ की ऊँट-बग्घी या ऊँट-गाड़ी

कमी होने लगी है, तथापि गाँवों में अब भी बहुत घी और दूध मिलता है। बहुत से गाँवों में आज लोग दूध का पैसा लेना पाप समझते हैं।

ऊँट भी मारवाड़ में चलने वाले और मज़बूत हैं। सवारी का ऊँट कहलाता है, जो बात में दो सौ मील जा सकता किन्तु उसका मूल्य भी ६०० रुपए से कम नहीं है। ऊँट यहाँ का सर्वस्व किसी कवि ने ऊँट की का यों वर्णन किया है:

ऊँट सवारी देय,
ऊँट पानी भर लावै।
लकड़ी ढोवे ऊँट,
ऊँट गाड़ी लै धावै।
खेतै जोतै ऊँट, ऊँट पत्थर भी ढोवै।
जो न होय इक ऊँट, लोग कर्मों को

मारवाड़ के चमार

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

कवि कन्ह धन्य तुव साहिबी, जेसे को तेसो मिले।
विन जट्टरू उट्ट भुरट्ट में, कहो काम केसे चले॥

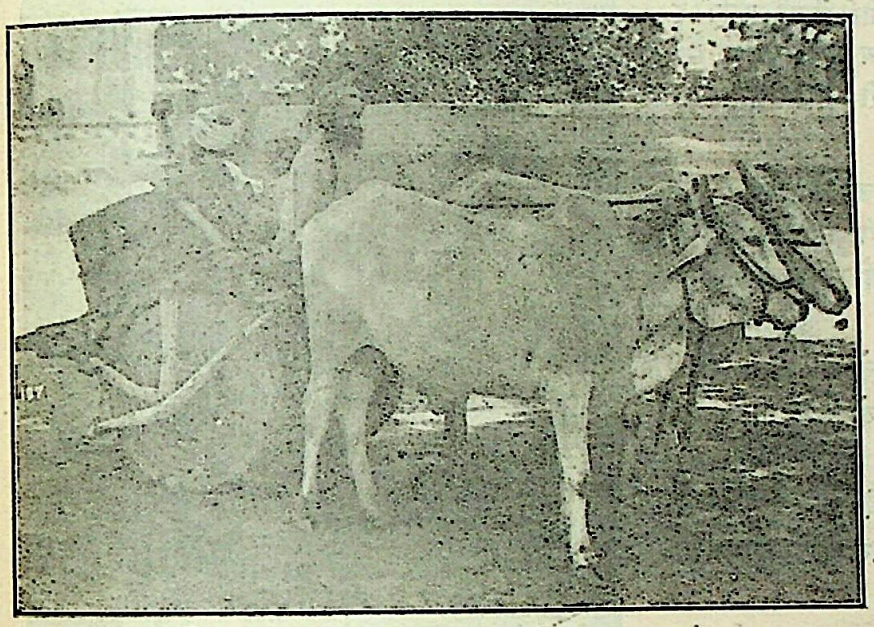

कृषक की बैलगाड़ी (माली)

मारवाड़ी घोड़े भी बहुत तेज़ और मज़बूत होते हैं। उनमें से कोई-कोई तो एक घण्टा में १५-१६ मील तक जा सकता है। सबसे अच्छी नसल के घोड़े जोधपुर रियासत के मालानी परगने में होते हैं। और उसमें भी नगर, गूढ़ा और राड़धड़े की ज़मीन इन घोड़ों के लिए प्रसिद्ध है। कहते हैं कि किसी बादशाह ने अपने अरबी घोड़ों के वास्ते अरब-देश की रेत जहाज़ों में मंगाई थी, जिसको एक लम्बी बनजारा बैलों पर लाद कर दिल्ली को लिए जाता था। जब वह राड़धड़ा नामक गाँव के पास पहुँचा, तब उसने बादशाह के मरने की ख़बर सुनी। इससे निराश होकर उसने सब रेत वहीं डाल दी। इसके ढेर से वहाँ रेत का टीला बना है। इस परगने के लोग घोड़ों के बछेड़ों को लाकर इस रेत में लोटाते हैं। यहाँ के घोड़ों में अरब के घोड़ों के समान ख़ासियत होने का कारण यही रेत समझी जाती है। राड़धड़े के रहने वाले अपनी जन्म-भूमि का बड़ा गौरव करते हैं, जैसा कि नीचे लिखी कथा से प्रकट होगा :—

"राड़धड़े की एक राजकुमारी का विवाह सिरोही के राजा सुरतान (सम्वत् १६२८—१६६४) से हुआ था। यह दोनों राजा-रानी पढ़े-लिखे थे और कभी-कभी कविता करके अपना जी बहलाया करते थे। एक

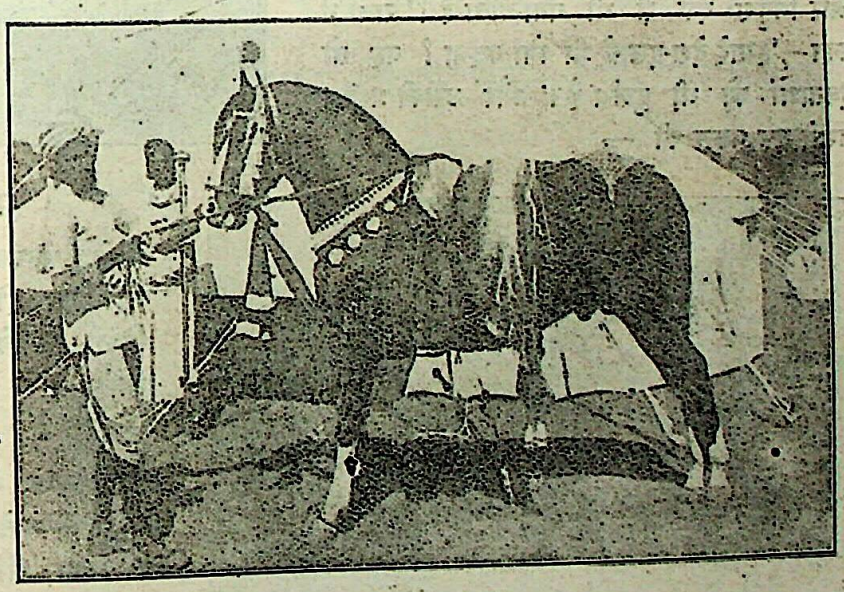

राजपूतों की मुख्य सवारी

दिन वसन्त-ऋतु में राजा ने अपने राज्य के सजल और सुरम्य आबू पहाड़ की अपूर्व छटा देख कर यह दोहा कहा :—

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

टूके-टूके तेकी झरने झरने जाय ।
अर्बुद की छबि देखताँ और न आवे दाय ॥

अर्थात्—'पहाड़ की चोटी-चोटी में तो केतकी है और पानी के झरने-झरने में जाय यानी चमेली है। आबू की यह छवि देख कर दूसरी जगह पसन्द नहीं आती है।'

तब रानी ने, जो पैदल चलने से थक गई थी और जिसके राज्य में सिरोही से अधिक गेहूँ उपजते थे, पति से सहमत न होकर उत्तर में यह कहा :—

जब खाणों भखणों जहर पालो चलनो पन्थ ।
आबू ऊपर बेसणों भलो सरायो कन्थ ॥

अर्थात्—'जौ खाने पड़ते हैं, ज़हर यानी अफ़ीम चखनी पड़ती है और पैदल चलना होता है। वाह कन्थ! आपने आबू पर बैठने को भला सराहा।'

राजा ने यह सुन दिल में कुछ बुरा माना और ग़ुस्से में रानी से पूछा कि—'क्या आबू तुम्हारे निर्जल और निर्गुण देश से भी गया-बीता है?' रानी ने कहा—'हमारे देश-इलाक़े का क्या कहना? वह तो देवताओं को भी दुर्लभ है।' और उसकी प्रशंसा उसने इस प्रकार की :—

मारवाड़ी नाई

घर ढाँगी आलम धणी परगल लूणी पास ।
लिखियो जिणने लाभसी राड़धड़ारो बास ॥

अर्थात्—'जहाँ पर ढाँगी नामक रेत के टीले हैं, जिसमें बढ़िया घोड़े होते हैं, आलम जी नामक

मारवाड़ी अहीर

धणी (संरक्षक-इष्टदेव) हैं और प्रबल नदी पास ही बहती है—ऐसे राड़धड़ निवास जिसके भाग्य में लिखा है, उसे मिलेगा।'"

* * *

मारवाड़ के लगभग ९७ प्रतिशत गाँवों में रहते हैं। ये किसान घोर दरिद्र मलिनता, औषधि का अभाव, अज्ञान मरी, अकाल, लगान की अधिकता, पटवारी, पटेल के अत्याचार और दबाव से यम-यातना भोगते हैं।

मारवाड़ में केवल २२४ कारख़ाने हैं। इनमें १९,१६५ मज़दूर हैं, जिनको १२ से १५ घण्टे प्रतिदिन

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

करना पड़ता है। इन मज़दूरों में ८८५ स्त्रियाँ और १,०२१ चौदह वर्ष से कम अवस्था के बच्चे हैं।

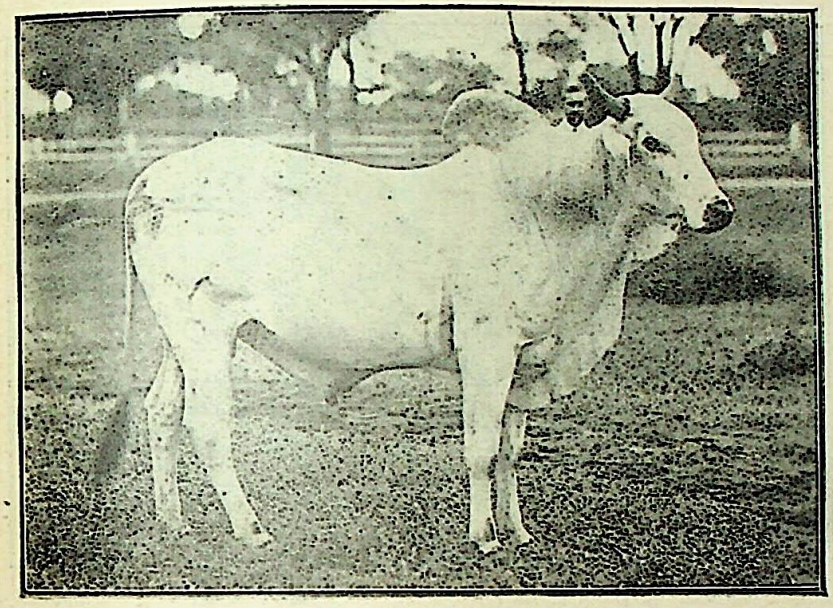

मारवाड़ का साँड़

यहाँ कई जातियाँ तो ऐसी हैं, जिनका कोई ख़ास धन्धा हो नहीं; वरन् उनकी गिनती आजन्म जरायम पेशा क़ौमों में की जाती है। ऐसी हिन्दू जातियाँ कञ्जर, साँसी, बावरी, मीना आदि हैं, जिनको एक गाँव से दूसरे गाँव में जाने-आने में भी पुलिस का परवाना लेना पड़ता है। यह लोग राजस्थान की सब रियासतों में आबाद हैं और इनकी संख्या क़रीब दस लाख है। इन्हें सभ्य नागरिक बनाने की ओर किसी का ध्यान नहीं जाता। प्रत्येक राज्य के सदर जेलघर में तथा इन लोगों के गाँवों में पाठशालाएँ खोली जाकर इनको पढ़ाया जाय तो भविष्य में ये जातियाँ सुधर सकती हैं। क्या रियासतों के उच्च राजकर्मचारी इस ओर ध्यान देंगे?

किसी भी राज्य के गाँव या बड़े क़सबे में म्युनिसिपैलटी की कौन कहे, साधारण प्रकाश और सफ़ाई का प्रबन्ध तथा सड़क और औषधालय की व्यवस्था तक नहीं है। यथासमय औषधि न मिलने से हज़ारों प्राणी प्रति वर्ष अकाल मृत्यु से मर जाते हैं, क्योंकि अच्छे अस्पताल केवल बड़े नगरों या राजधानी में होते हैं, और गाँव वालों को नीम हक़ीम या लालबुझक्कड़ जी की औषधि पर आधार रखना पड़ता है। मृत्यु या महामारी के आने पर या तो वे अपने कर्मों को कोसते हैं अथवा उस विपत्ति को दैवी समझ कर सहन करते हैं।

* * *

राजपूताने में शिक्षा बहुत पिछड़ी हुई दशा में है। अजमेर, मेरवाड़ा को छोड़ कर राजपूताने के देशी-राज्यों

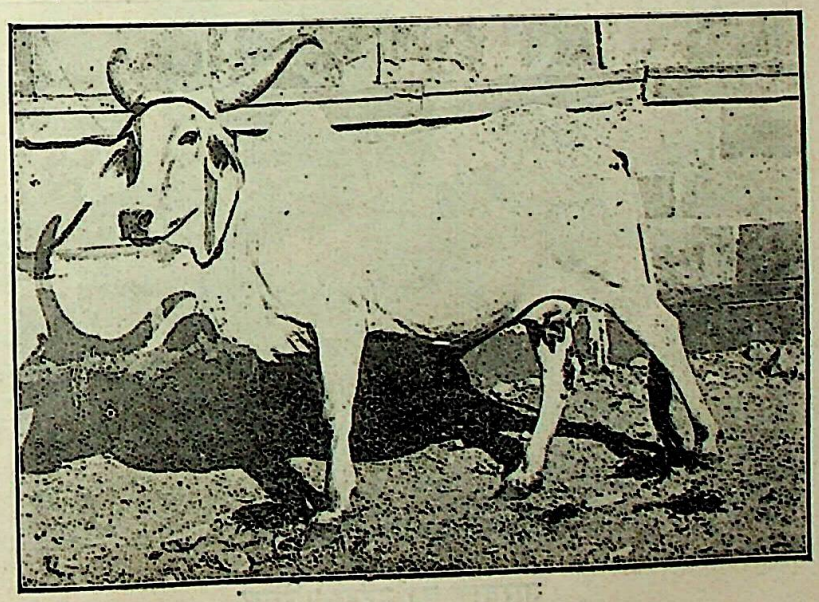

मारवाड़ की गाय

में इसकी बहुत ही कमी है। इसका कारण यही है कि जिस प्रकार अन्य राज-विभागों की ओर ध्यान दिया

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

जाता है, वैसा शिक्षा-विभाग की ओर नहीं दिया जाता। एक करोड़ की आबादी में से केवल तीन लाख आदमी अर्थात् ३ प्रति शत पढ़े-लिखे हैं। इनमें वे लोग भी सम्मिलित हैं, जो केवल हस्ताक्षर कर सकते हैं। स्त्री-शिक्षा का तो कहना ही क्या है। समस्त राजस्थान में केवल १७ हज़ार अर्थात् एक हज़ार में से दो स्त्रियाँ लिखना-पढ़ना जानती हैं। स्त्रियों की शिक्षा के लिए अङ्गरेज़ी स्कूल तो किसी भी राज्य में नहीं हैं। हिन्दी के साधारण सरकारी स्कूल भी एक-दो राज्यों के अतिरिक्त शायद ही कहीं हों। पुरुषों के वास्ते चार-पाँच राज्यों में दस-पाँच हाईस्कूल और कॉलेज हैं। देशी-राज्यों में और उनके अन्तर्गत छोटी-बड़ी जागीरों में राजा-रईस आदि अपनी फ़िज़ूलख़र्चियों में रुपया पानी की तरह बहाते हैं, परन्तु ऐसे कामों के लिए उदासीन हैं। रियासतों की सरकारी सालाना रिपोर्टें और बजट देखने से स्पष्ट प्रतीत होता है कि शिक्षा पर कितना ख़र्च किया जाता है और राज-कुटुम्ब का व्यय कितना है। बीकानेर, जोधपुर और अलवर राज्य में शि[illegible] व्यय क्रमशः १·५; ३ और १ प्रति सैकड़ा है और [illegible] कुटुम्ब का व्यय [illegible] ११,१६ और ५० प्रति [illegible] है।

मारवाड़ का मुख्य बाजा (नौबत-सैनाई)

मारवाड़ का ठठेरा-परिवार

प्रारम्भिक शिक्षा [illegible] दशा है कि अलवर-[illegible] ७,०११ मनुष्यों या [illegible] मील अथवा १७ ग्रामों [illegible] जोधपुर में १२,१०६ [illegible] मियों या २३० [illegible] अथवा २७ ग्रामों पीछे [illegible] बीकानेर में १[illegible] व्यक्तियों या ३६४ [illegible] अथवा ३३ ग्रामों पीछे [illegible] सरकारी स्कूल है। [illegible] भी ख़ास बात यह है [illegible] कई राज्यों में प्राइवेट ग़ैर-सरकारी शिक्षा को प्रोत्[illegible] नहीं किया जाता। अलवर, जयपुर और जोधपुर [illegible] राज्यों में स्वतन्त्र शिक्षा-संस्थाएँ राज्य की आज्ञा के [illegible]

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

क्षमा-दान

सेठ जी—साहेब ! मने माफ़ फुर्मावो ।

साहेब—यू मारवाड़ी, टुम डेखना नेई माँगा—साहेब लोक आटा हाय । हाम चालान करेगा ।

सेठ जी—हुजूर ! म्हें बाँई पटरी पर हो, थे गलत रास्ता.....

साहेब—बको मट, हाम को राइट-लेफ़्ट का परवा नेई ।

सेठ जी—अबार तो बक्स द्यो, म्हारा कपडा फाटीज गया, मने चोट भी घणींई लागी है ।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

चौभद्रा

पाषाणिक रूढ़ियों में ग्रसित मारवाड़ी-समाज प्रकाश-कोश की ओर—

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

बेचारी मारवाड़िन !!

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

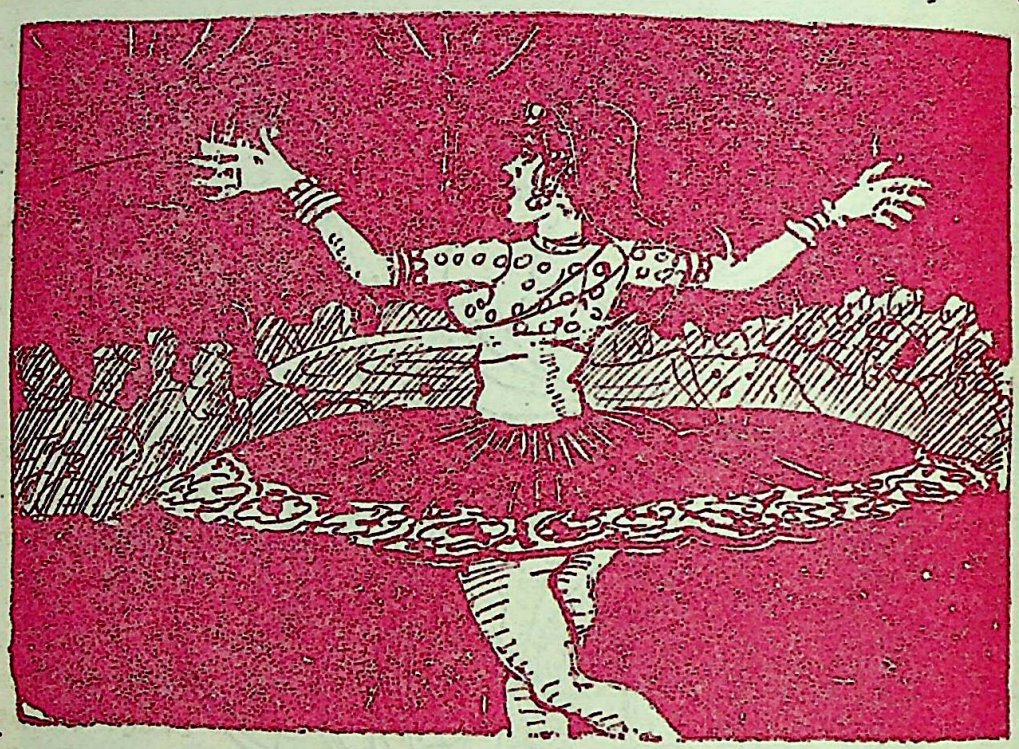

दीवा-बाती रो नाच

(स्त्रियाँ मारवाड़ में कहीं-कहीं ऐसा नाच करती हैं कि हाथ की उँगलियों में मसाल बाँध लेती हैं, क्या मजाल कि बुझ जाय ! पर घाघरा फैल कर बेपर्द भी हो जाती हैं—सैकड़ों लोग देखते हैं।)

लग्न-शोधन

पं० गपोड़ानन्द जी—जनमपतरी की विध तो ठीक मिल गई—पण ब्याव फागण में.....
सेठ जी—फागण में काँई आँट है, जदेई कर देश्याँ।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

नहीं खोली जा सकतीं। उधर बहुत से जागीरदारों का यह विचार है कि यदि प्रजा में शिक्षा का प्रचार बढ़ा तो

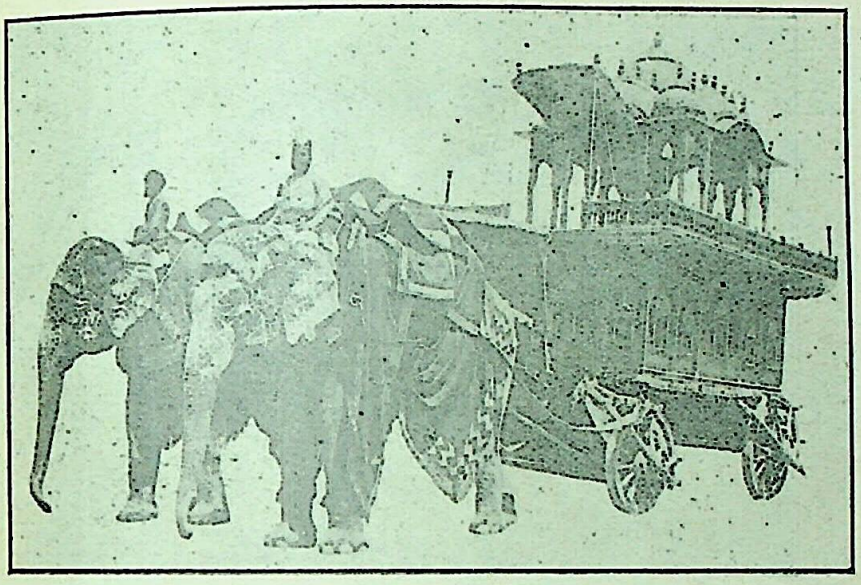

जयपुर-राज्य का इन्द्रबाण रथ

वे लोग अपने अधिकारों की माँग अधिक उपस्थित करेंगे। इसी भाव को लेकर जागीरदारों की जागीरों में विद्या-प्रचार है ही नहीं। जोधपुर-राज्य में भी यही दशा है, जैसा कि जोधपुर-दरबार की सन् १९२३-२४ की वार्षिक रिपोर्ट के पृष्ठ ६२ से पता चलता है:—

". . . Being themselves most'y uneducated, could unforunately, display little enthusiasm over the education of their Ryots. Indeed some of them had a lurking suspicion that education will make the Ryots think more of their rights than their obligations. Under the circumstances education in the Jagir area had not made any headway, and unless some solution were found of the difficulty, the backwardness of the state, as a whole, in the matter of education must remain."

हम यहाँ पर झालावाड़-नरेश की प्रशंसा किए बिना नहीं रह सकते, जहाँ शिक्षा-विभाग के लिए आमदनी के हिसाब से अधिक ख़र्च किया जाता है।

यह दशा केवल जनता की ही नहीं है, वरन् इन जागीरदारों और रईसों आदि की भी है। राजपूताने में राजपूतों की संख्या ६,०२,००४ है, जिसमें शिक्षित व्यक्ति केवल १२,-५३९ हैं। वे पढ़ने-लिखने में बिलकुल रुचि नहीं रखते। वे अधिक से अधिक अपना नाम लिख लेना यथेष्ट समझते हैं। इससे उनको बहुधा बड़ी हानि पहुँचती

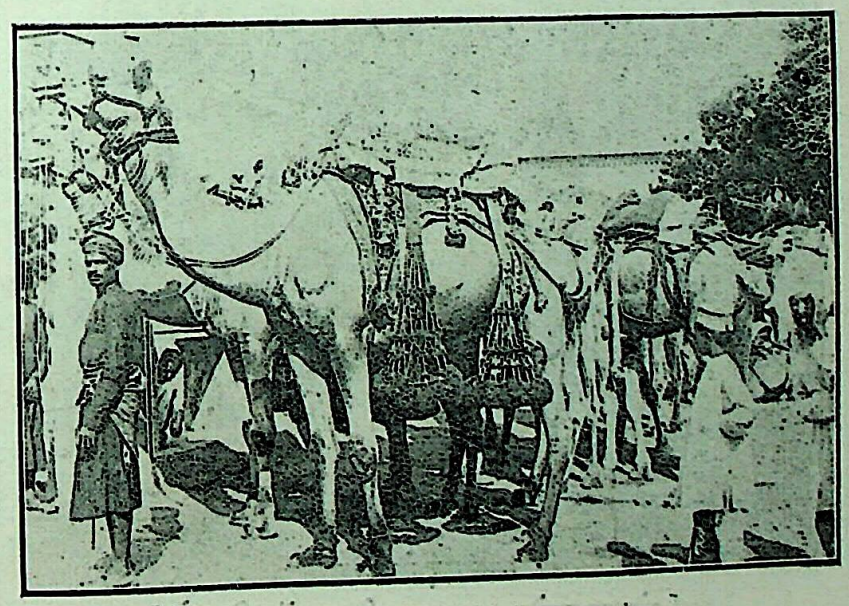

मारवाड़ की प्रसिद्ध सवारी (ऊँट)

है। किसी ठाकुर साहब से पूछा गया कि—"ठाकुराँ किता पड़िया ?" (ठाकुर साहब आप कितना पढ़े हैं ?)

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

उत्तर मिला—"हाथ सुँ करम फोड़ा जिता!" (अर्थात् हाथ से अपनी बरबादी कर सकें, उतना!) तात्पर्य यह है कि वे केवल बोहरों के लिखे काग़ज़ों पर हस्ताक्षर कर सकते हैं। विद्या न होने से इनके विचार भी समयानुकूल नहीं होते।

अधिकांश सरदारों की यह दशा देख कर कुछ वर्षों पहले अङ्गरेज़ विद्वान श्री० अबेरीव मैकी ने "दी नेशन्स ऑफ़ इण्डिया" नामक ग्रन्थ में राजपूत सरदारों का हृदय-द्रावक चित्र इस प्रकार खींचा है :—

"The children of the sun and moon, the children of the fire-fountain seem to have forgotten the inspiring traditions of their race, and have sunk into a state of slothful ignorance and debauchery that mournfully contrast with the chivalrous heroism, the judicious and active patriotism, the refined culture and the generous virtue of their ancestors . . . H... able to read or write his own language, i...

मारवाड़ के बावरी
[जीव-जन्तु मारने वाले शिकारी]

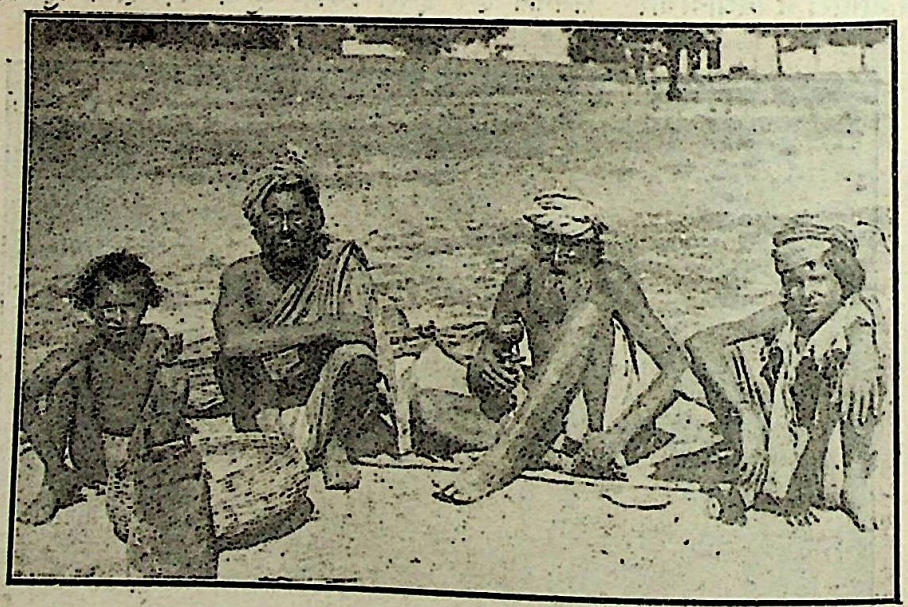

मारवाड़ के भील
[जो लूट-खसोट, डाका तथा मित्रता में प्रसिद्ध हैं]

of all pertaining ... race, pertaining ... State, pertaining ... sacred office as a ... of men—the petty ... put of the present ... often saunters aw... miserable existen... the society of ... nable creatures ... cast discredit on ... name of servant B... ted with spirits ... opium, dull, ... and wretched, he ... nothing of his ... and leaves every... to plundering "Managers" and "Deputy M... gers." He is generally hopelessly in debt... seldom cares for anything but the nearest ...

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

of his dignity, the ceremony with which he is treated. Of this he is insanely jealous. That all the honours due to royalty and Rajput blood should be paid to him ; that he should be saluted with guns, and received at the edge of carpets, and followed by escorts of cavalry, that his daughters should be married at an early age to princes of higher clans than his own; that his Thakurs should attend him at the Dassehra and perform the precise ritual of allegiance, all this is what he craves.

मारवाड़ के मिरासी (मुसलमान)

अर्थात्—"वे ही राजपूत, जो चन्द्र और सूर्य के वंशधर कहे जाते हैं और जो अग्निकुल से उत्पन्न हुए हैं, अब अपनी जाति-विषयक उत्साहवर्धक रूढ़ियाँ भूल सी गए हैं और मूर्खता तथा विलास-प्रियता के कारण ऐसे अकर्मण्य बन गए हैं कि जब उनके पूर्वजों की धर्मयुक्त वीरता, उनके बुद्धिमत्तापूर्ण व्यावहारिक देश-प्रेम, प्राचीन सभ्यता तथा उदार हृदयता का स्मरण करते हैं तो बड़ा शोक होता है। आजकल के राजपूत रईस अपनी मातृ-भाषा का लिखना-पढ़ना भी मुश्किल से जानते हैं। उन्हें अपनी जाति, राज्य तथा राज्योचित कर्त्तव्य के विषय में कुछ भी ज्ञान नहीं होता और वे अपना गृह्य-जीवन ऐसे घृणास्पद व्यक्तियों की सङ्गति में खो देते हैं, जो अपने दुर्गुणों के कारण सेवक शब्द को कलङ्कित करते हैं। राजपूत सरदार शराब और अफ़ीम के नशे में चूर होकर घृणास्पद आकृति और दरिद्रता की दशा में रहा करता है! उसे अपने काम-काज की कुछ भी सुधि-बुधि नहीं रहती! वह अपने चालाक, लोभी कामदारों तथा उनके सहायकों पर ही अवलम्बित रहता है। वह ऋण से भी बुरी तरह लदा

कपड़े के बँधेरे (चढवा नव-मुसलिम रङ्गरेज़)

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

रहता है। किन्तु उसे किसी बात की चिन्ता नहीं रहती। बस, कोरी शान-शौकत का उसे ध्यान रहता है। अर्थात् उसे इस बात की सदैव लालसा रहती है कि जब कभी कहीं वह जावे तो उसकी राजपूती कुलीनता के प्रति सम्मान-सूचना के रूप में तोपों की सलामी हो, ग़लीचों के पाँवड़े डाले जावें, उसके साथ घुड़सवार सैनिक हों, और उसकी यह भी हार्दिक अभिलाषा रहती है कि उसकी लड़कियाँ अल्पावस्था में ही अपने से ऊँचे राजकुलों में ब्याही जावें। यही नहीं, दशहरे के दिन वे यह आशा करते हैं कि अमीर-उमराव यथो-

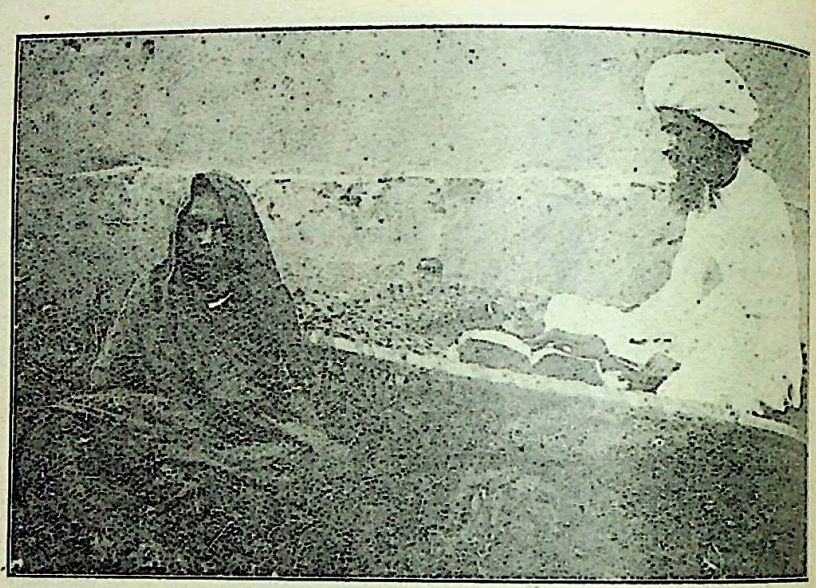

वंशावली रखने वाला वही-भाट

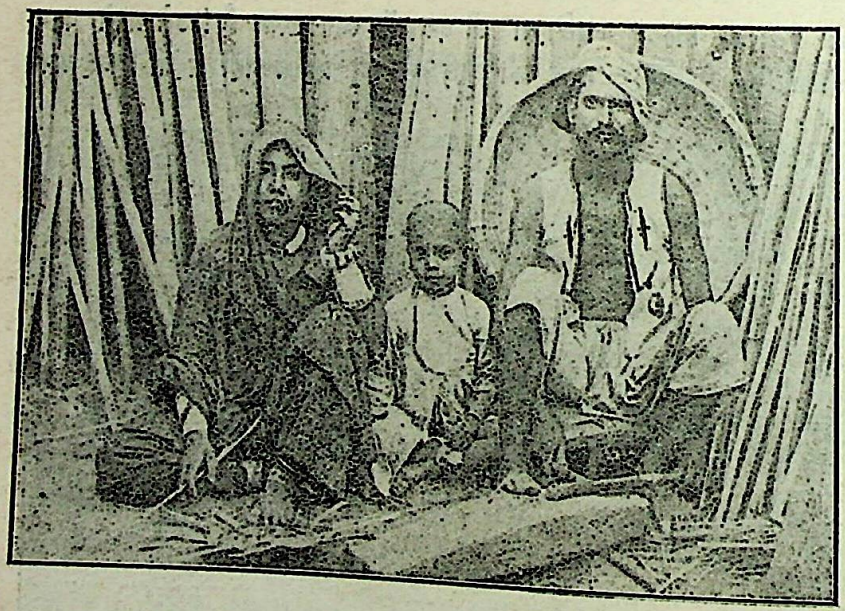

टोकरी बनाने वाला (गाँछा) सपरिवार

चित रीति से उनका आदर-सत्कार करें और अपनी राज-भक्ति का परिचय दें।

* * *

भारतवर्ष के अन्य प्रान्तों की भाँति राजपूताने में बाल-वृद्ध और अनमेल-विवाह (विशेष कर वैश्य जाति में) प्रचलित हैं। बाल-विवाह और विधवाओं की आहें राजस्थानियों के सुख को नष्ट करने वाली और घातक हैं। इनकी दशा अत्यन्त शोचनीय है। यहाँ की कुल स्त्रियों की संख्या ४९,५९,४९३ है। इसमें विवाहित स्त्रियाँ २१,२९,१५५ और विधवाएँ ८,८३,२८९ हैं। विवाहिता स्त्रियों में ४० प्रतिशत विधवाएँ हैं। बाल और युवती विधवाओं की संख्या एक लाख से अधिक है। बहुविवाह की कुरीति राजा-महाराजा अथवा जागीरदार और धनी-मानियों में अधिक पाई जाती है। राजस्थान में एक-दो नरेशों और कुछ जागीरदारों के सिवा सभी के अनेक पत्नियाँ हैं। राजपूतों के पतन के मुख्य कारणों में से यह घातक प्रथा भी एक है। दशरथ के बहु

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

विवाह का फल रामचन्द्र को भुगतना पड़ा। अशोक के अनेक विवाह करने के कारण ही मौर्य-वंश की शिथिलता आरम्भ हुई। प्रसिद्ध जयचन्द्र गहरवार के राज्य के विनाश का कारण भी बहुविवाह माना जाता है। मारवाड़ के राठौड़ रावचूँड़ा के राज्य का पतन भी अनेक रानियों के कारण गृह-कलह से हुआ।

राजकर्मचारी (मुसद्दी) प्रायः पासबान (उप-पत्नी) रखने में अपनी मर्यादा समझते हैं, जो नीति और धर्म-विरुद्ध प्रथा है। कुछ रियासतों में बाल-विवाह, वृद्ध-विवाह और कन्या-विक्रय को क़ानून से रोकने की चेष्टा की गई है। भरतपुर, कोटा और बीकानेर-राज्य ने यह नियम बना दिया है कि बालक का विवाह कम से कम १६ वर्ष और कन्या का १३ वर्ष में होना चाहिए। परन्तु इन क़ानूनी नियन्त्रणों का प्रभाव अभी बहुत कम पड़ा है। क्योंकि इसकी पाबन्दी कड़ाई के साथ नहीं होती। अन्यथा हज़ारों समाज-सुधारक व प्रचारकों का बल एक राज-सत्ता के बल के सम्मुख कम है। जो सामाजिक सुधार के काम टर्की के मुस्तफ़ा कमाल पाशा ने राज्य द्वारा क़ानून बना कर किए हैं, एक शताब्दी में भी सुधारकों द्वारा होने दुर्लभ थे। यह सब कुछ राजस्थान में भी सम्भव हैं, यदि हमारे देशी नरेश सच्ची लगन से सुधार की ओर ध्यान दें!

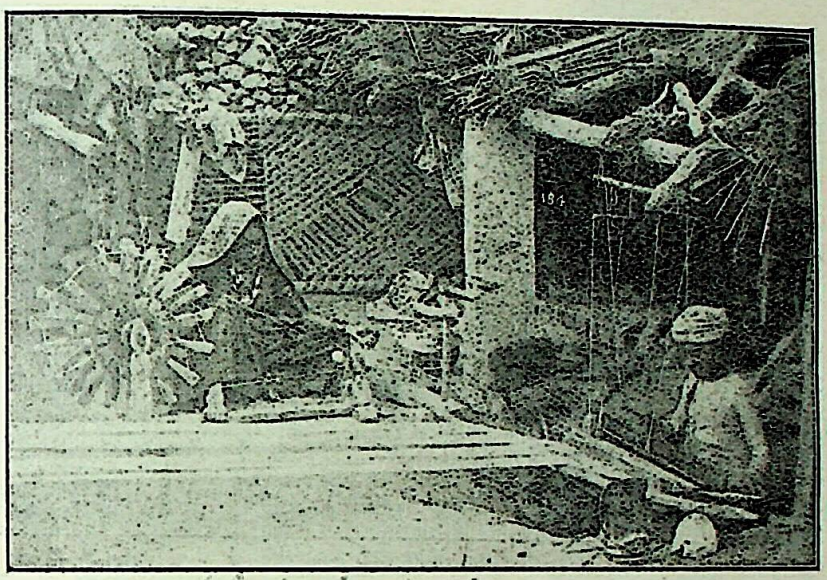

मारवाड़ के ग्रामीण-जीवन का एक दृश्य

[हिन्दू-जुलाहा—भाँबी-ढेंढ]

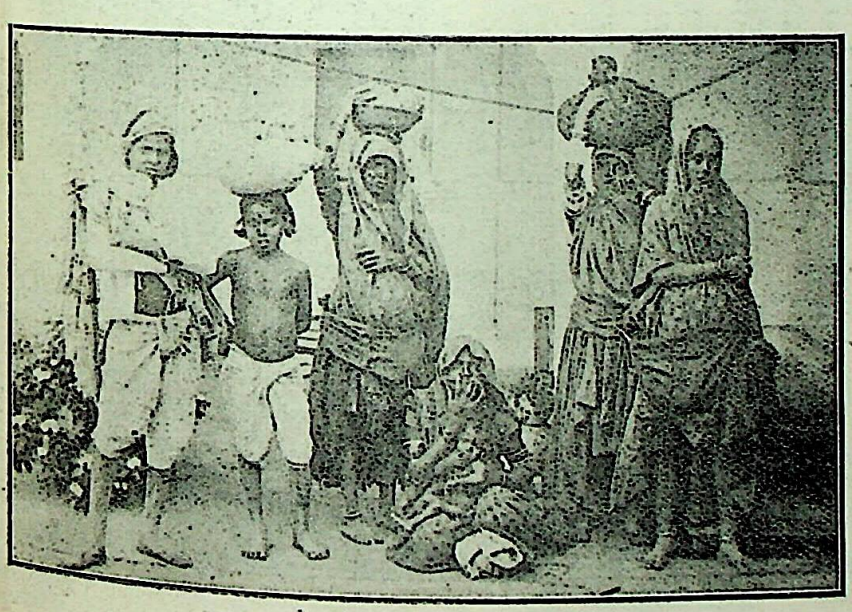

मारवाड़ का ग्रामीण-जीवन

राजपूतों में, विशेष कर बड़े जागीरदार व राजाओं में, यह प्रथा चली आती है कि कन्या का सम्बन्ध अपने से ऊँचे या बराबरी के धनी रईस घराने में किया जाय, इस बात की परवा नहीं की जाती कि वर की शारीरिक व विद्या-सम्बन्धी योग्यता ठीक है

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

या नहीं। यहाँ तक हठ किया जाता है कि कहीं-कहीं कन्याओं को आजन्म अविवाहिता रहना पड़ता है।

राजपूत-मजलिस (गहलोत वंश के)

और सम्बन्ध हुआ भी तो अनमेल, जिससे पासबानों (पड़दायतों) का पासा तेज़ रहता है।

इन राजपूतों के रीति-रस्मों को नियमपूर्वक चलाने और वहाँ की अनेक सामाजिक बुराइयों को दूर करने के लिए कर्नल वाल्टर (ए० जी० जी०) ने सं० १९४५ की चैत्र वदी १३ को अजमेर में एक सभा स्थापित की। दूसरे वार्षिक अधिवेशन पर १५ फ़रवरी, सन् १८८९ ई० को इस सभा का नाम उन्हीं के नाम पर "वाल्टर कृत राजपुत्र-हितकारिणी सभा" रक्खा गया। देश में अनेक राजा-महाराजाओं के होते हुए भी, राजपूताना के ए० जी० जी० उसके स्थायी सभापति होते हैं! इस सभा की शाखाएँ प्रत्येक राज्य में अब तक क़ायम हैं। परन्तु इस सभा का असर अधिक नहीं पड़ा और राजपूत-समाज में वैसी ही कुरीतियाँ घर किए हुए हैं। इन कुरीतियों के कारण ही विवाह आदि में ख़र्च करने को पैसा न होने से जाति के सैकड़ों बालक बालिकाएँ क्वाँरे हैं। अनेक कन्याएँ पूर्ण यौवन को पहुँच चुकी हैं, किन्तु उनके विवाह का पता नहीं। वे एक प्रकार से निराश हो चुकी हैं। बेमेल-विवाह के कारण सैकड़ों युवतियाँ असमय में ही विधवा बन कर समाज पर भार स्वरूप हो रही हैं। यदि उक्त सभा के अधिकारी नियमों की कड़ाई से

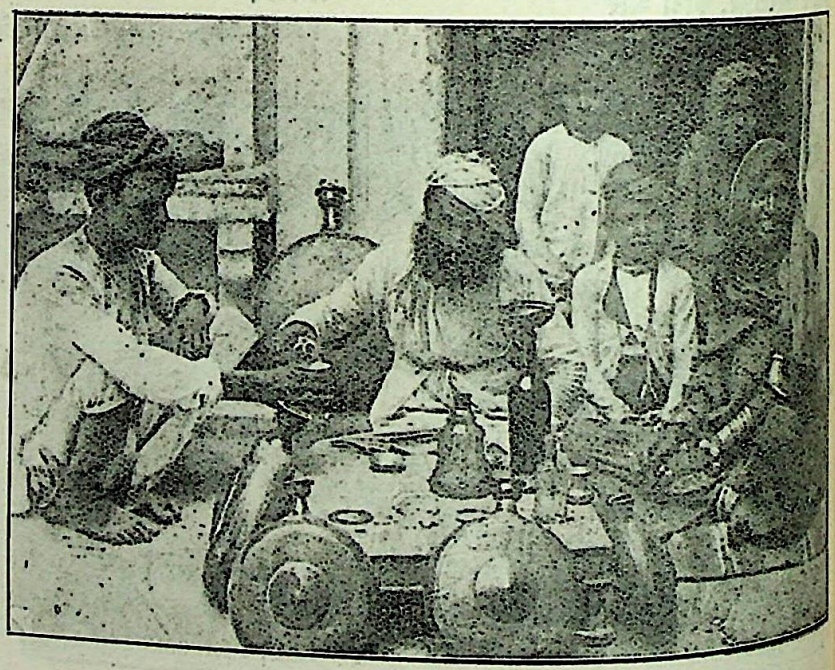

मारवाड़ी कलाल (कलवार) की दूकान

पूरा ध्यान रक्खें तो राजपूत-समाज की स्थिति में बहुत कुछ परिवर्त्तन हो सकता है। क्योंकि उसके पास साधनों की कमी नहीं है—केवल मार्ग-प्रदर्शन की आवश्यकता है।

* * *

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

राजपूतों में तम्बाकू और अफ़ीम (अमल) पीने की प्रथा बहुत अधिक है। आखातीज, होली, दिवाली और विवाह के अवसर पर पानी में घोल कर अफ़ीम मेहमानों को देते हैं। राजस्थान में अफ़ीम के नशे की बड़ी प्रशंसा है। किसी राजस्थानी कवि ने कहा है :—

अमल तूँ उदमादिया,
सेणाँ हन्दा सेण।
था विन घड़ी अन आवड़े,
फीका लागे नेण॥

अर्थात्—अफ़ीम तेरा नशा आने पर शरीर में चैतन्यता आ जाती है। तू मित्रों का मित्र है। तेरे विना मुझे पल भर चैन नहीं पड़ता और तेरे नशे के विना नेत्र फीके प्रतीत होते हैं।

ऐसे ही दोहे ख़ुशामदी लोग जागीरदार राजा-रईसों से कहा करते हैं और बैठे-बैठे तारीफ़ बघार कर समय बिताते हैं। जो शासक-जाति कभी शूर-वीरता के लिहाज़ से सर्वोच्च गिनी जाती रही है, उसी राजपूत जाति का समय व्यर्थ गपाष्टकों और दुर्व्यसनों में इस प्रकार बीते! इधर शराब का चस्का भी इस जाति को नष्ट कर रहा है

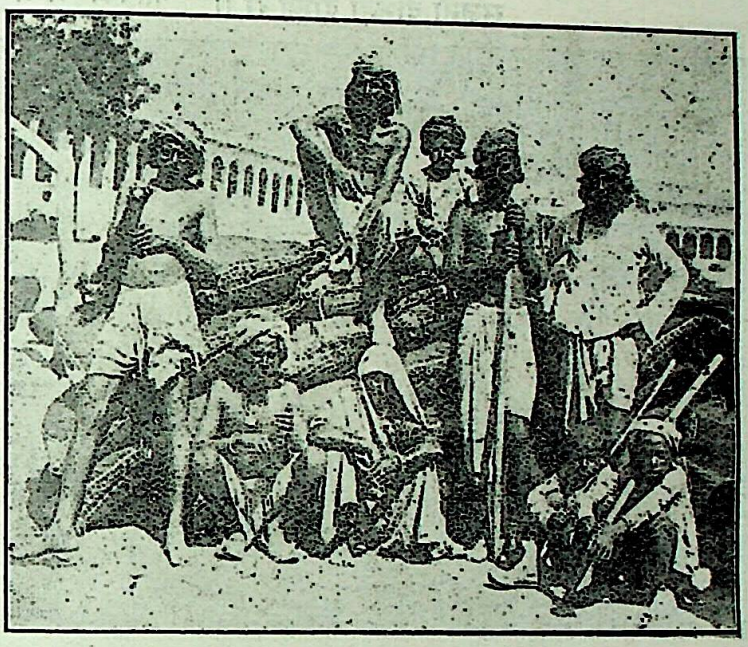

मारवाड़ के बनजारे

और शासकों की देखा-देखी प्रजा में भी इसका प्रचार बढ़ गया है। ढोली, डाढ़ी, रण्डी, भँड़वे आदि शराब की प्रशंसा के गीत गा-गाकर राजा-रईसों को नशे का चस्का लगा देते हैं और उन्हें दिनोंदिन प्रोत्साहित करते रहते हैं। जैसे :—

दारू पियो रङ्ग करो,
राता राखो नेण।
बैरी थारा जल मरे,
सुख पावेला सेण॥
दारू दिल्ली आगरो,
दारू बीकानेर।
दारू पियो साहिबा,
कई सौ रुपयारो फेर॥
दारू तो भक-भक करे, सीसी करे पुकार।
हाथ प्यालो धन खड़ी, पीओ राजकुमार॥

* * *

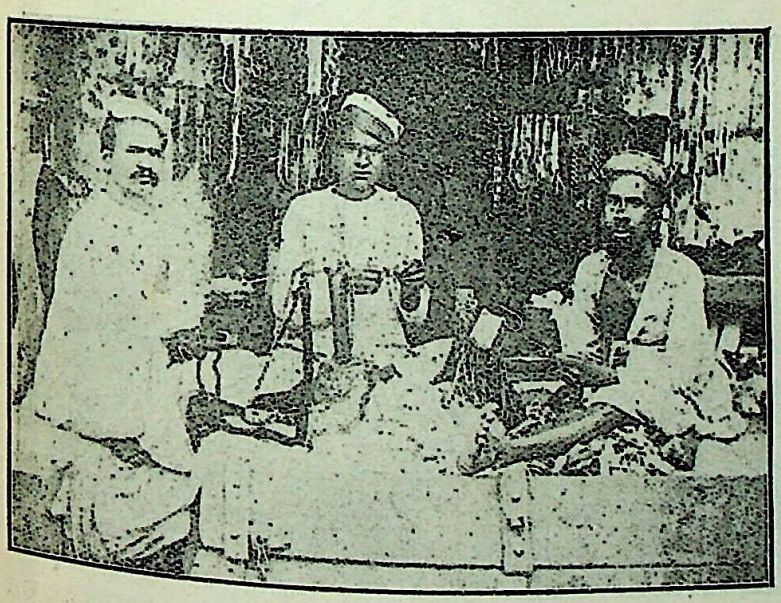

मारवाड़ के ओसवाल वैश्य (पटवे का काम करते हुए)

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

भरला रो सुघड़ सजनी, दारुड़ो दाखाँ रो।
पीवन वालो लाखाँ रो, भरला ऐ सुघड़
सजनी दारुड़ो दाखाँ रो ॥

"छल-बल करते हुए घोड़े, अलबेले सवार, मद छके हुए मारू (नायक) भले होते हैं, वैसे ही नखरीली नायिका भी अच्छी होती है।"

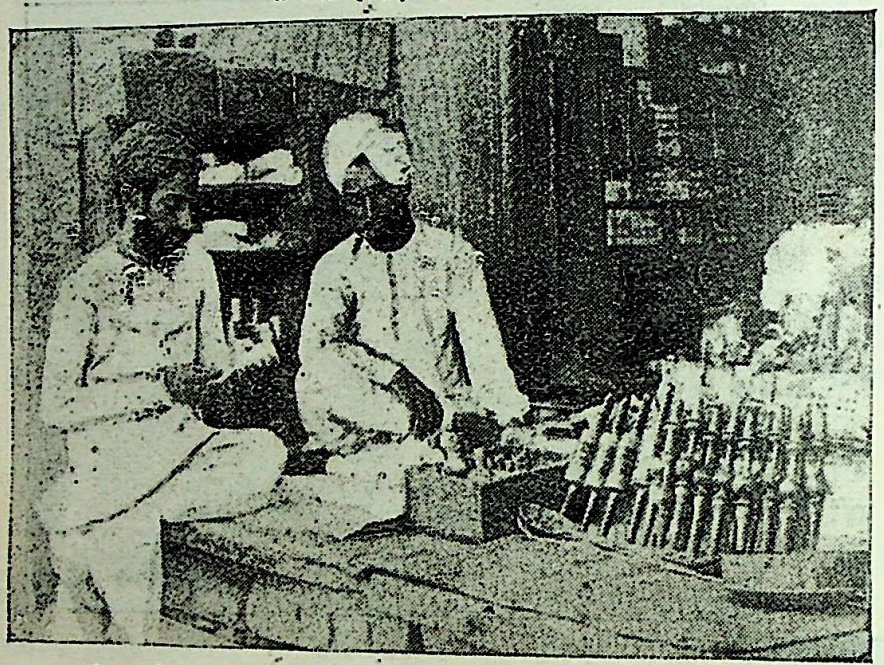

बिसाती (मनिहारी माल बेचने वाला मुसलमान-दूकानदार)

मारू मजलसिया भला
घोड़ा भला कुमेत।
नारी तो निबली भली
कपड़ो भलो सपेत॥

"मारू (मर्द) मजलिस रचाने वाला भला होता है, घोड़े कुम्मेत रङ्ग के भले होते हैं, नारी कोमलाङ्गी कामिनी भली होती है और कपड़ा सफ़ेद सुन्दर होता है।"

किस्तुरी काली भली,
राती भली गुलाल।
रसिया तो पतला भला
जाड़ा भला हमाल॥

"सजनि! अङ्गूरों की मदिरा भर कर ला, क्योंकि पीने वाला लाखों रुपए का असामी है।"

सोरठियो दोहो भलो,
भली मरवण री बात।
जोबन छाई धन भली,
ताराँ छाई रात॥

"जैसे सोरठ रागिनी का दोहा सुन्दर होता है और ढोला मारवण की बात (कथा) सुन्दर होती है, वैसे ही यौवन से भरी हुई कामिनी और तारों से छाई हुई रात भी भली प्रतीत होती है।"

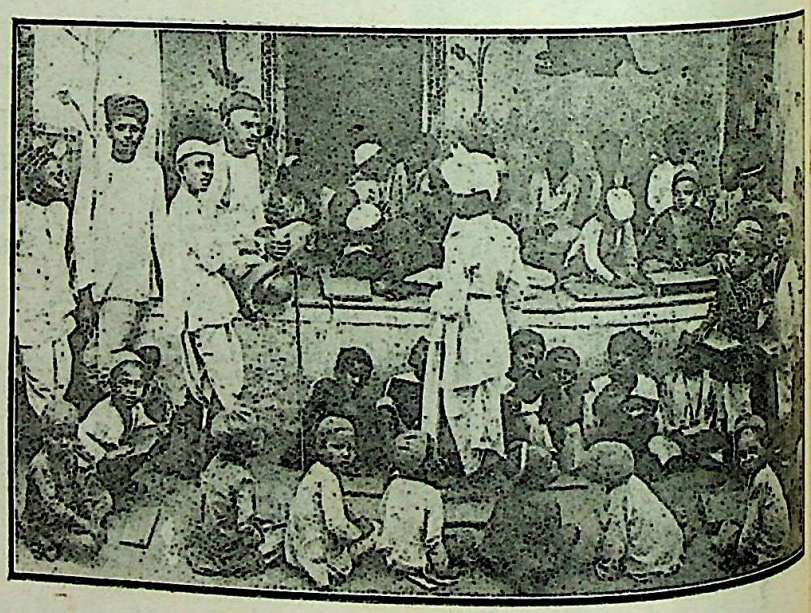

मारवाड़ की पोसाल (चटशाला)

[गुराँसा की कामच का मुलाहज़ा कीजिए, जिसके बल पर लड़के पढ़ाए जाते हैं]

छलबलिया घोड़ा भला, अलबलिया असवार।
मदछकिया मारू भला, मरवण नखरादार॥

मदछकिया महाराज, थाने किण पिलाई दारूड़ी।
बोले नी दारूरा मारू, पूछे थारी मारूड़ी॥

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

चाँद

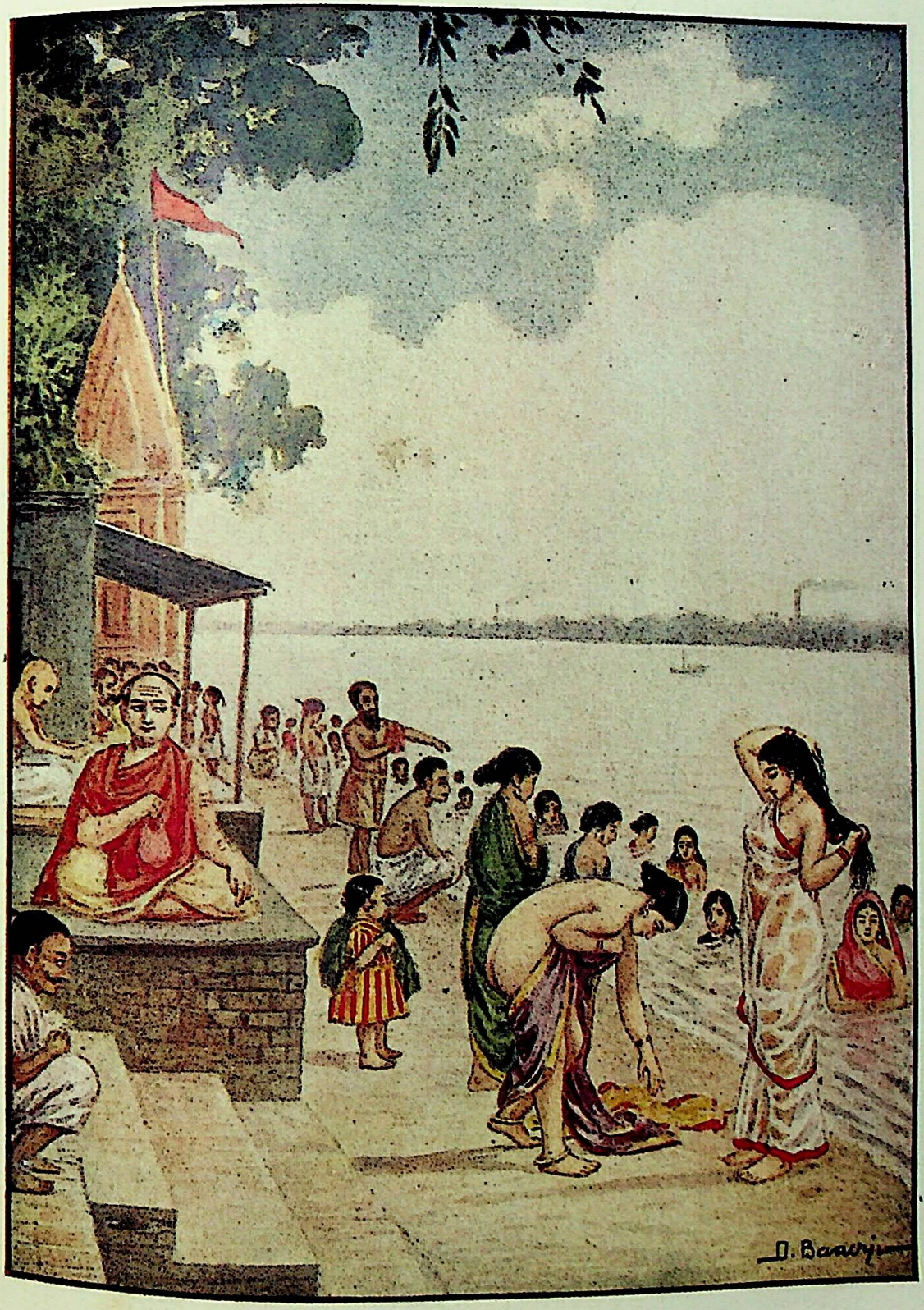

पर्व-स्नान

पैली चुभकी जल में दीधी सुसरा जी देव का पाया हो राम।
दूसरी चुभकी जल में दीधी सासु जी देव की पाया हो राम।
तीसरी चुभकी जल में दीधी बाप दिल्ली का राजा हो राम।

ART PRINTING CO. ALLAHABAD

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

छप गई !

प्रकाशित हो गई !

मिस मेयो की नई करतूत

समाज के वक्षस्थल पर भीषण प्रहार करने वाली पुस्तक

आग लगाने वाली तथा समाज को तिलमिला देने वाली १२ सामाजिक कहानियाँ

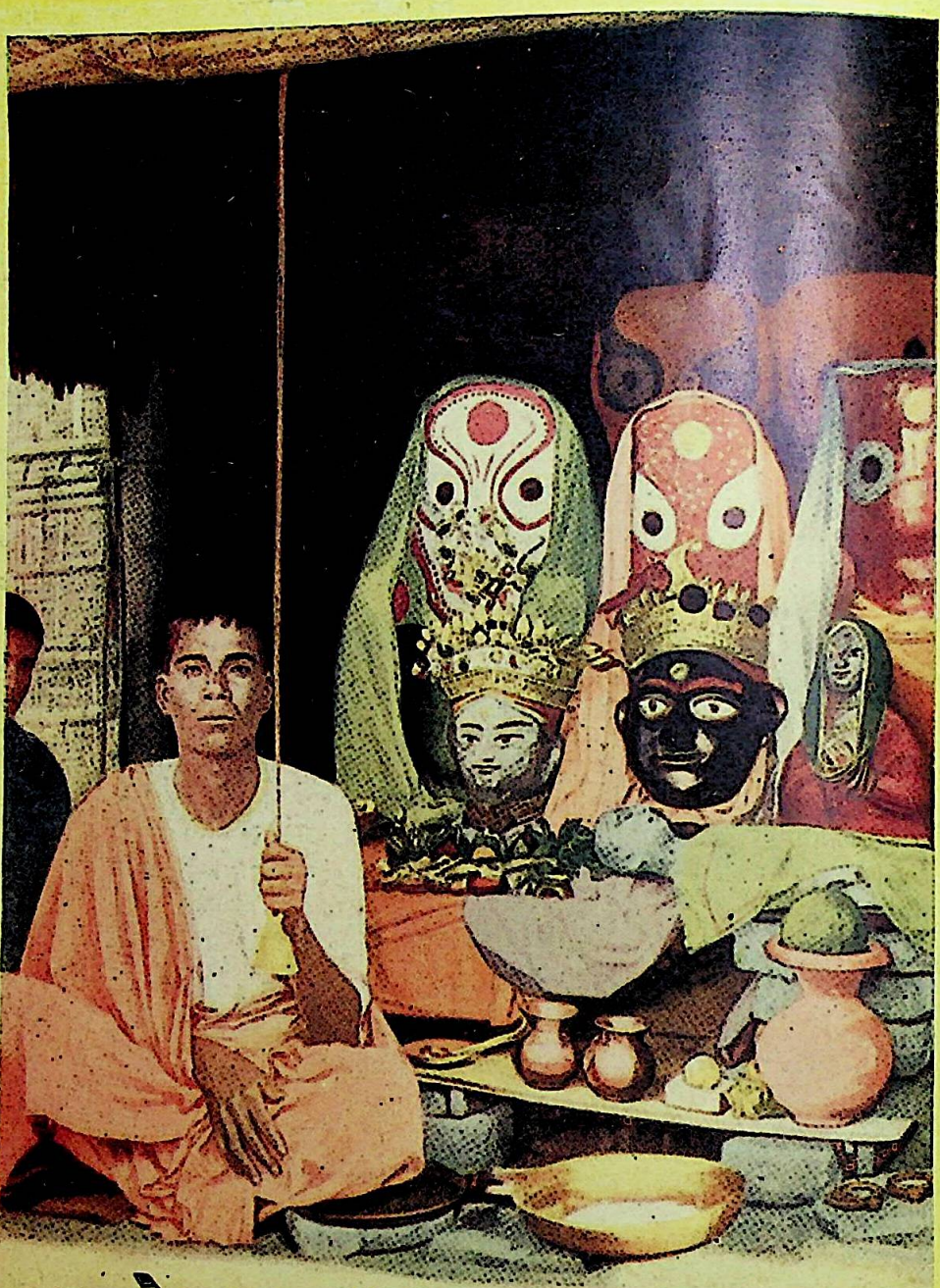

देवताओं के गुलाम

(SLAVES OF THE GODS)

का हिन्दी अनुवाद

पढ़िए और शर्म कीजिए ! पृष्ठ-संख्या लगभग ४००, दो तिरङ्गे चित्रों सहित प्रोटेक्टिङ्ग कवर तथा सुन्दर सजिल्द पुस्तक का मूल्य लागत मात्र केवल ३) रु० स्थायी ग्राहकों से २॥ रु० !

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

मारवण थारा तो नेणाँ रो पाणी लागणों।
हो प्यारी मारवण थारा नेणा रो पाणी
लागणों ॥
मैं कइयाँ जगाऊँ रे दारू को मारू सूतो नींद में॥

* * *

इस प्रान्त की राजनैतिक अवस्था का तो कहना ही क्या, यहाँ की प्रजा ब्रिटिश-भारत की प्रजा से बहुत पिछड़ी हुई है। भीरुता, दब्बूपन, अपने अधिकारों से अज्ञानता और अविद्या आदि अनेक त्रुटियाँ हैं। ऐसी दशा में यदि उन पर बेगू बिजोलिया और नीमूचाणा जैसे भीषण बर्ताव किए जायँ तो इस में आश्चर्य ही क्या है? जहाँ ब्रिटिश-भारत में भेंट-बेगार जैसी प्रथा को हटा दिया गया है, वहाँ राजपूताना और मालवा प्रान्त में यह चलन अभी तक वैसा ही बना हुआ है।

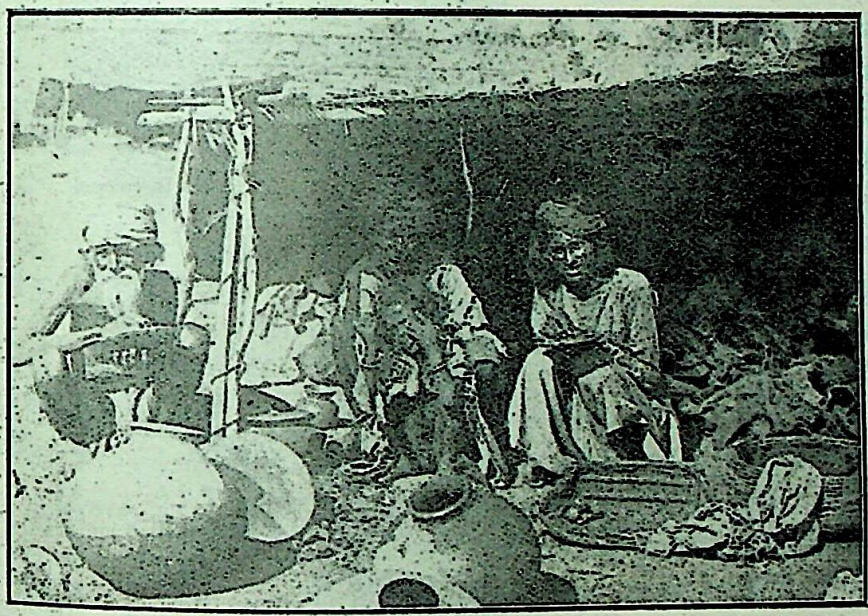

मारवाड़ के साँसी (कञ्जर)

यहाँ की सीधी व निर्धन प्रजा में से भाँबी, भील, सरगरा, चमार आदि छोटी जातियों से पारिश्रमिक दिए बिना ही काम कराया जाता है। ऐसे बेगारियों की संख्या १८,०३,६२६ अर्थात् कुल जन-संख्या में १८ प्रतिशत से अधिक बेगारी हैं। जागीरदार लोग, नाई, कुम्हार, खाती, जाट, माली, गूजर आदि जातियों के स्त्री-पुरुषों से भी बिना पारिश्रमिक दिए काम कराते हैं और वे इसको अपना जन्म-सिद्ध अधिकार मानते हैं! इस कलङ्कित प्रथा के अनुसार कोई भी राजकर्मचारी बिना कुछ दिए या थोड़ी मज़दूरी पर कुछ जातियों से हर समय और विशेष अवसरों पर मज़दूरी करा सकता है।

प्रत्येक गाँव में प्रतिदिन कम से कम दो-चार बेगार रहती ही हैं। पटवारी, अहलकार आदि यदि एक गाँव से दूसरे गाँव गए तो उनका बस्ता एक बेगारी ले जायगा। यहाँ तक कि छोटे-छोटे कामों के लिए भी वे बेचारे पकड़े जाते हैं। इन लोगों से किस प्रकार बेगार ली जाती है, उसके कुछ नमूने देखिए :—

भाँबी (बलाई-मेघवाल-ढेंढ) जाति के स्त्री-पुरुष तथा बच्चों से दाना दलाना, घास कटवाना, चमड़ों के साज़ों की मरम्मत कराना और ज़नाने-मरदाने मकानों को गोबर से लीपने-पोतने का काम बिना मूल्य कराया जाता है।

सरगरा-जाति के लोग क़ासिद का काम करते हैं। विवाह आदि में बाँकिए और थालीभी बजाते हैं। और अपनी अनुपस्थिति में उन्हें बदले में दूसरा एवज़ी रखना पड़ता है।

नाइयों से जागीरदार लोग बिना मज़दूरी दिए ही अपने घरों में रोज़ दिए जलवाते, भोजन तैयार कराते, धोती धुलवाते, जूठे बर्त्तन मँजवाते और रात में पैर दबवाते हैं, तथा उनको जलसों में राँड, भाँड़ की अरदली में मशाल पकड़े खड़े रहना होता है!!

इसी प्रकार कुम्हारों से घड़े मँगवा कर पानी भरवाया जाता है। कृषक जैसे जाट, माली, सीरवियों आदि से बैलगाड़ी, हल, दूध, दही, घास आदि वस्तुएँ अफ़सरों को दौरों के समय और जागीरदार की आवश्यकतानुसार ली जाती है। इनकी स्त्रियों को भी बेगार से नहीं छोड़ा जाता। उनसे विवाह, गोठ-गूगरी (प्रीति-भोज) आदि

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

के समय मनों आटा पिसवाया जाता है। लोहारों से और नहीं तो क़ैदियों की बेड़ियाँ बनवाना, पहिनाना और उसे निकालने का काम लिया जाता है। मैंणा (मीना) तथा गूजरों से पहरा दिलवाया जाता है। अनपढ़ ब्राह्मणों से अहलकारों के लिए भोजन बनवाया जाता है और शिक्षितों से पञ्चाङ्ग सुनाने और शान्ति-पाठ कराने का काम लिया जाता है। यहाँ तक कि महाजन (वैश्य) लोग भी इस अमानुषिक बेगार से मुक्त नहीं हैं!

राजस्थान में अनेक जातियाँ विशेष प्रकार के जाली, उजालदान, झरोखे, टोडे आदि रख कर मकान नहीं बना सकते, जिससे भीतर प्रकाश आ सके। वे विशेष प्रकार की सवारी भी नहीं रख सकते। यदि किसी जाति में कोई सम्पत्तिशाली होगया, और उसने घोड़ा-गाड़ी, बग्घी आदि सवारी रखनी चाही तो नहीं रख सकता। इनमें से बहुतेरी जातियाँ विशेष प्रकार के आभूषण और कपड़े नहीं पहन सकतीं, न सुन्दर भावपूर्ण नाम रख सकती हैं! वे विवाह, ग़मी आदि के समय विशेष प्रकार के भोजन तक नहीं बना सकतीं। विवाह के समय प्रत्येक जाति का दुलहा "बीद राजा" कहलाता है, परन्तु इन भाग्यहीन जातियों में जन्म लेने के कारण उस समय राजा कहलाए जाकर भी वह घोड़े पर सवार नहीं हो सकता। भाँबी (ढेंढ), सरगरे तथा मेहतर आदि निम्न जातियों का कहना ही क्या, वे तो पशु-योनि से भी गया-बीता जीवन बिताते हैं! इनको चाँदी के आभूषण तक पहनने नहीं दिया जाता। परन्तु कई राज्यों में अब जागृति होने लगी है और लोग अपने अधिकार समझने लगे हैं। अदालतों ने भी इसके पक्ष में निर्णय किए हैं, जैसा कि जोधपुर-राज्य के भाँबियों (चमारों) को सोने की मुरकियाँ कानों में और गले में फूल (देवमूर्ति) आदि गहना पहनने का अधिकार है। इस प्रकार का निर्णय चीफ़ कोर्ट, जोधपुर से सं० १९७९ वि० में हुआ है।

बेगार के पक्षपातियों का यह तर्क है कि बेगार से बहुत से सुभीते हैं और उसके उठ जाने से राज-कर्मचारियों को मज़दूर, सवारी अथवा सामान समय पर न मिल सकेगा। यह तर्क पोच है। जब पूरी मज़दूरी दी जाय तो प्रति क्षण प्रत्येक वस्तु ग़रीबों तक को मिल सकती है, राज्य की कौन कहे? वरन् पूरा मूल्य देने से सब तरह का सुभीता रहता है और ग़रीबों को भी कष्ट तङ्ग नहीं होना पड़ता। कई राज्यों से बेगार उठा दी गई है और कहीं असल मज़दूरी से पौनी, आधी और कहीं कम

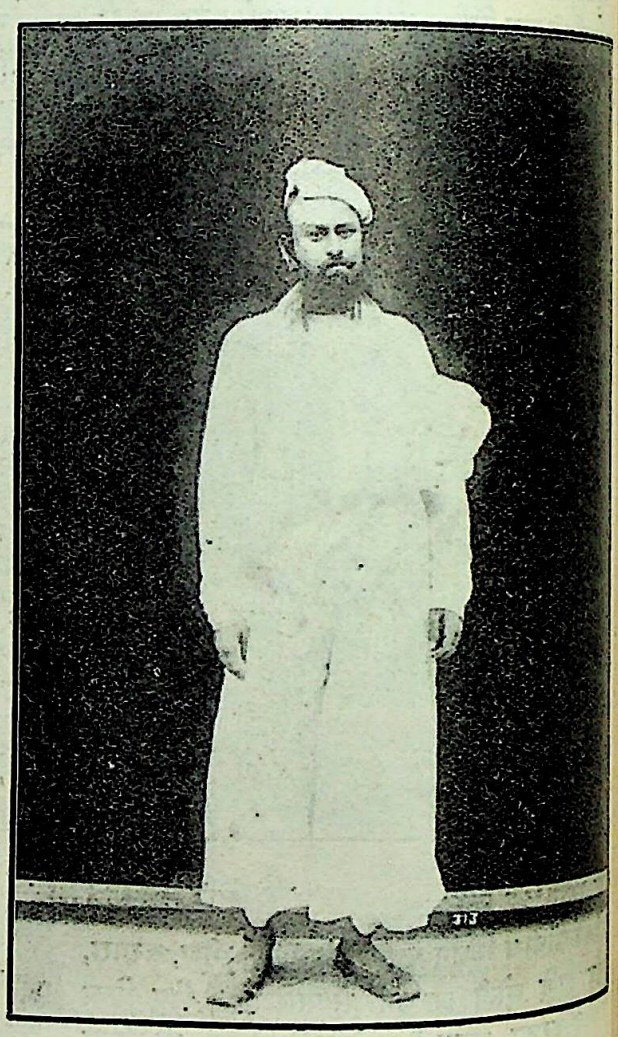

माहेश्वरी वैश्य

मात्र का मिहनताना स्थिर कर दिया गया है। परन्तु यह प्रायः ग़रीब बेगारियों के पल्ले न पड़ कर, स्वार्थी अहलकारों की जेब में ही चला जाता है। इससे बढ़ कर और की क्या बात होगी! बहुधा किराया की हुई सवारियों को उतार कर बेगारियों को बैल, ऊँट या घोड़े के साथ ले जाया जाता है; भोजन आदि दिए बिना रात-दिन उनसे काम लिया जाता है; और चलते समय लाद

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

लाल आँखें दिखा कर उन्हें टरका दिया जाता है। अङ्ग-रेज़-सरकार का ध्यान इस ओर कौन दिलावे। लाट साहब की स्पेशल-ट्रेन किसी राज्य में आती है या किसी राज्य से होकर गुज़रती है, तब उन्हें अपनी कोमल सुथरी सेज पर लेटे हुए क्या पता चल सकता है कि पौष की अर्द्ध-रात्रि की ठण्ढ अथवा ज्येष्ठ की कड़ाके की धूप में रेल की पटरी के दोनों ओर तार के प्रत्येक खम्भे के पास कोई प्राणी उनकी रक्षा के लिए खड़ा है!

* * *

होली, दिवाली, वर्षगाँठ आदि के दिन सब महाजनों को इकट्ठा होकर मुजरे के लिए कचहरी में जाना पड़ता है और पञ्चायत की ओर से कुछ भेंट देनी पड़ती है। दूसरी क़ौमों को भी ऐसा ही करना पड़ता है। जागीरदार या अफ़सर आने वालों की अमल (अफ़ीम) की मनवार किया कहते हैं! बहुत से रईसों का बर्ताव अपनी प्रजा के साथ अच्छा नहीं होता। जागीरदार के मकान में, जिसको कोट, गढ़ या कोटड़ी कहते हैं, वहाँ के निवासियों का सब कारबार हुआ करता है, और उसे इस कारण प्रजा की जगह (पब्लिक-स्थान) ही मानना चाहिए। परन्तु उस गढ़ में या उसके आस-पास सवारी पर अथवा छाता लगा कर या नङ्गे सिर कोई नहीं निकल सकता; न कुर्सी पर बैठ सकता है, न अँधेरी रात में लालटेन आगे को लेकर चल सकता है; और न चारपाई पर सो सकता है। बैठने-उठने का इतना बड़ा विचार है कि स्वयं तो गद्दी-तकिया लगा कर बैठते हैं, पर दूसरी छोटी क़ौमों के लोग इनके सामने आसन पर बैठ ही नहीं सकते। राजस्थान की प्रजा के लिए वह दिन गौरव का होगा, जब राजकोट, औंध और लीमड़ी की सी छोटी रियासतों के उन्नतिप्रिय नरेशों के समान यहाँ के नरेश भी बेगारें बन्द करेंगे।

बेगार के अतिरिक्त इन लोगों से अनेकों कर लिए जाते हैं। उदाहरण के लिए एक लाग की उत्पत्ति का उदाहरण यहाँ दिया जाता है :—

कोई जागीरदार अपनी घोड़ी को गाँव के चारों ओर दौड़ा रहा था। अकस्मात् एक चट्टान पर बने हुए चबूतरे से टक्कर खाकर घोड़ी गिर पड़ी और ठाकुर साहब भी गिरे। घोड़ी चट्टान पर गिरने के कारण वहीं मर गई। इस दुर्घटना की ख़बर सुन कर गाँव के बहुत से मनुष्य एकत्रित हो गए। ठाकुर साहब के भी पीड़ा हो रही थी। सँभलने पर भी बार-बार उनके मुँह से कराहने का शब्द निकल ही जाता था। लोगों ने समझा, घोड़ी के मरने का ठाकुर साहब को बहुत शोक हुआ है, अतः समझाना आरम्भ किया। परन्तु घोड़ी का शोक हो तब तो समझाने से शान्त हो। यहाँ तो बात दूसरी थी। अन्त में कुछ धनाढ्य मारवाड़ियों ने कहा, आप एक घोड़ी का इतना शोक क्यों करते हैं? ऐसी घोड़ी जितने में आज ही मिले, दूसरी ख़रीद लीजिए। ठाकुर ने कहा इतने रुपए कहाँ हैं? लोगों ने "राज-भक्ति" के जोश में आकर कह दिया, हम देंगे। अस्तु, ५००)

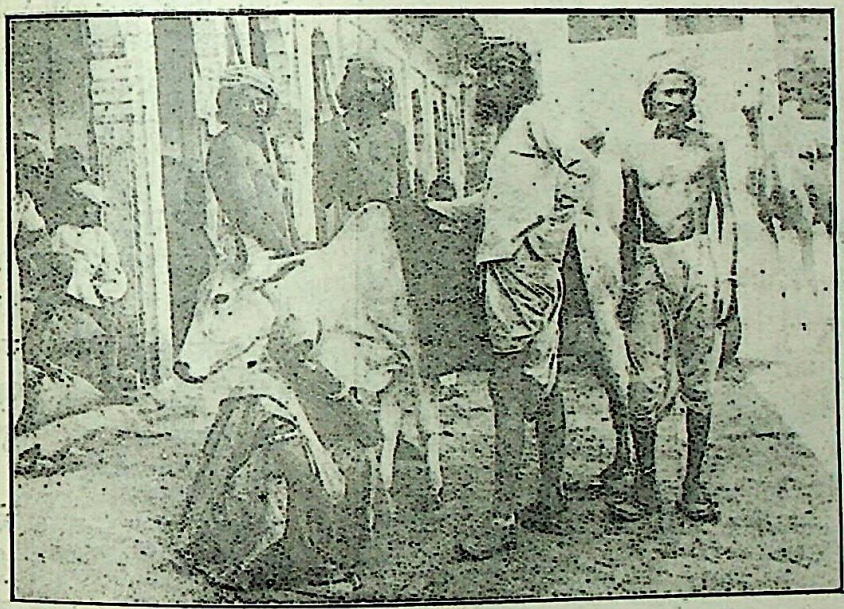

लोहाना बनिया
[गाँवों से माल लाने वाले]

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

में उसी दिन एक घोड़ी ख़रीदी गई। और गाँव के लोगों ने इस आशा पर ५००) रु० एकत्रित कर दिए कि ज़मीन का लगान लेते समय ठाकुर उनके रुपए भर देगा। परन्तु लगान के समय ठाकुर ने जवाब दिया कि, "तुम्हारे गाँव के चारों तरफ़ दौड़ाते हुए मेरी घोड़ी मरी, ऐसी हालत में उसका मूल्य देना तुम्हारा कर्तव्य था। साल भर व्यतीत होते ही ठाकुर के कर्मचारियों ने

सीरवी क्षत्रिय (कृषक)

"घुड़-पड़ी" की लागत के ५००) रुपए माँगे। लोग शिकायत लेकर ठाकुर के पास पहुँचे। जागीरदार ने कहा—"वह घोड़ी हर साल एक बच्चा ५००) रुपए का देती थी, इसलिए तुम्हें ये रुपए देने ही पड़ेंगे! यदि न दोगे तो काठ तैयार है।" अन्त में यह ५००) सालाना की लाग लग ही गई और वह आज तक वसूल होती है!

ऐसे ही शासनकर्त्ता के कुल में विवाह, ग़मी [illegible] के प्रसङ्ग आ जाने पर जो ख़र्च होता है उसकी रक़म [illegible] से अनाप-शनाप शरह से "नोता" के नाम से वसूल [illegible] जाती है। समय-समय पर ऐसी लागें लेने के सि[illegible] प्रजा से और भी कई प्रकार के लगान वसूल किए [illegible] हैं। ज़मीन की बिक्री पर "मुजराने" का तो कोई सि[illegible] ही नहीं है। ब्रिटिश-भारत में जहाँ ज़मीन की बिक्री [illegible] १॥) रु० सैकड़े लगान होता है, वहाँ [illegible] लिए देशी राज्यों में १०) रु० सैकड़ा [illegible] कहीं-कहीं ३३) रु० सैकड़ा तक मुजराना लि[illegible] जाता है। छोटे से छोटे जागीरदार [illegible] "मुजराना" वसूल करते हैं। इतना कड़ा [illegible] लेकर भी अधिकांश राज्यों में प्रजा के लि[illegible] कुछ नहीं होता!!

* * *

लाग-बाग (कर) और बेगार की [illegible] ही कलङ्कित दास-प्रथा भी राजस्थान में प्रचलि[illegible] है। यद्यपि संसार भर से सन् १८३३ ई० [illegible] २८ अगस्त को ग़ुलामी उठ गई, किन्तु [illegible] इसका बोल-बाला है! यहाँ बीसवीं सदी [illegible] भी मनुष्यों का एक समुदाय (१,६१,[illegible] स्त्री-पुरुष) ग़ुलाम बना रक्खा गया है [illegible] प्रदेश-भेद से इस जाति के अनेक नाम [illegible] यथा दरोगा, चाकर, हजूरी, रावण, [illegible] चेला आदि-आदि। इनकी बहिन-बेटियाँ [illegible] भी जागीरदार की ओर से दहेज में दे [illegible] जाती हैं। यही नहीं, इनका क्रय-विक्रय भी [illegible] सकता है और सुन्दर होने पर उप-पत्नी (ख़[illegible] बान) बना ली जाती हैं, इनको नाम[illegible] के लिए ब्याह दिया जाता है, परन्तु [illegible] पति-पत्नी की भाँति नहीं रह सकते। [illegible] बहुत थोड़ा और ख़राब अन्न-वस्त्र दिया जा[illegible] है। उन्हें जूठा खाना, पाख़ाने के बर्त्तन उठाना, [illegible] और बर्त्तन माँजना आदि सभी कार्य करने पड़ते हैं। उनको प्रभुओं की सेवा में दिन-रात हाज़िर रह[illegible] पड़ता है। उनके साथ ज़रा सी चूक पर गाली-ग[illegible] और मार-पीट होना मामूली बात है। जागी[illegible] और रियासतों में होने वाले गुप्त षड्यन्त्रों [illegible]

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

हत्या-काण्डों के लिए यही लोग सुलभ अस्त्र हैं ! अवस्था इतनी पतित हो गई है कि न वे इससे मुक्त होने की इच्छा ही करते हैं और न हो सकते हैं। जो लोग रियासतों में से भाग कर अङ्गरेज़ी इलाक़ों में चले जाते हैं, उन पर चोरियों के अपराध लगा, पकड़वा कर वापस मँगवा लिया जाता है। ब्रिटिश-अधिकारी वास्तविक स्थिति से आँख मींच कर एक्सट्रैडिशिन (Extradition) के क़ानून की आड़ में उन्हें उनके स्वामियों के हवाले कर देते हैं। वहाँ पहुँच कर उनके साथ जो व्यवहार होता है, वह पाठक

दरोगा जाति के अभागे प्राणी

स्वयं ही जान लें। इन बातों का परिणाम यह हुआ है कि यह समुदाय स्वाभिमान से सर्वथा ही हाथ धो बैठा है और निराश होकर यह समझ बैठा है कि हम इसीलिए पैदा हुए हैं।

इधर इनके स्वामियों का ध्यान अपने स्वार्थ निकलते रहने से इनकी दीन-हीन दशा की ओर बहुत कम जाता है। राजपूत-जागीरदारों में से केवल कुछ नई रोशनी के जागीरदार ज़बानी जमा-ख़र्च करते समय या कुप्रथाओं पर लेख लिखते समय इस "दास-प्रथा" की बुराई कर देते हैं। परन्तु इस दरोगा-जाति का भाग्य अब आशातीत प्रतीत होता है, क्योंकि नैपाल-सम्राट् ने जिस प्रकार सन् १९२५ ई० में दास-प्रथा का सदा के लिए अन्त कर दिया है, वैसे ही राजस्थान में कुछ देशी नरेश अग्रसर हुए हैं, जिन्होंने अपने राज्य में दास-प्रथा हटाने के लिए क़ानून बनाए हैं। जोधपुर के नवयुवक महाराजा साहब ने सन् १९१६ ई० का दास-प्रथा क़ानून सन् १९२६ की २१ वीं अप्रैल को रद्द कर दिया है। जोधपुर-स्टेट की काउन्सिल ने सन् १९१६ ई० की ११ वीं जुलाई को एक राज-नियम बना दिया था, जिसके अनुसार ठाकुर अपने यहाँ के दरोगों (रावणों) और उनकी स्त्रियों एवं सन्तान से उनकी इच्छा के विरुद्ध, न केवल काम ही ले सकते थे, वरन् ज़बरदस्ती दहेज तक में दे सकते थे ! पर अब कोई जागीरदार इस समुदाय के साथ बलात् उस प्रकार का व्यवहार नहीं कर सकता। अपनी इच्छा से दरोगे जागीरदार के यहाँ रहें तो रह सकते हैं। ऐसे परोपकारी आज्ञा के लिए जोधपुर के महाराजा साहब धन्यवाद और कृतज्ञता के पात्र हैं। साथ ही आशा है कि राजस्थान के अन्य राजा-महाराजा व उदार जागीरदार भी समय की गति को देखते हुए, अपने यहाँ की इस निन्दनीय दास-प्रथा को उठा कर, प्रजा के एक समूह को सुख-स्वच्छन्दतापूर्वक विकास करने का अवसर प्रदान करेंगे।

* * *

बेगार, लाग और दबी हुई प्रजा के साथ बहुत से राज्यों में न्याय अच्छा होना हो, यह सम्भव नहीं है। जिसका हाथ नरम है उसका काम निकल जाता है और जो रीते हाथ है वह बरबाद होकर न्याय से मुँह मोड़ लेता है। मुक़दमों में प्रायः ऐसी-ऐसी पेचीदगियाँ आ जाती हैं कि क़ानूनी चक्कर में कई बार झूठे का सच्चा और सच्चे का झूठा बन जाता है। अधिकांश राज्यों में घूसख़ोरी, अन्धेरशाही, पक्षपात और न्याय का दबाव है। राजस्थान में लम्बी त्रास के पश्चात् कहीं किसी ठिकाने ही प्रजा को सच्चा न्याय, और वह भी बड़ी लम्बी मुद्दत के बाद, मिलता है। उन्नत कहलाने वाली रियासतों तक में साधारण से मामलों में कई वर्ष निकल जाते हैं, फिर बड़े मामलों में तो युगों के युग निकल जाते हैं। सैकड़ों मिसलें ज़ेरतजवीज़ रहती हैं और इस

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

दीर्घ-सूत्रता में फ़रीक़ैन की एकाध पीढ़ी भी समाप्त हो चुकती है ! कई राज्यों में न्यायाधीश निरक्षर भट्टाचार्य हैं। ग़रीब और अमीर के साथ भेद-भाव वाला पक्षपाती न्याय अधिकांश राज्यों में आवश्यकता से अधिक बदनाम है। कई रजवाड़ों में वहाँ के ऊँचे-ऊँचे कर्मचारियों में प्रधानता प्राप्त करने के लिए दलबन्दियाँ होती हैं। वहाँ के न्याय और पुलिस-विभाग भी इन दलबन्दियों से ख़ाली नहीं रहते। जिस ओहदेदार का ज़ोर होता है, वह अपना सबसे पहला काम अपने विरोधी के पक्ष वालों या मित्रों को कष्ट पहुँचाना समझता है। इसी प्रकार अपने से विरुद्ध विचार रखने वालों को गुप्त धमकियाँ दी जाती हैं, झूठे-सच्चे मुक़दमे खड़े करके उनका दमन किया जाता है। यहाँ के प्रत्येक मामले में स्टैम्प फ़ी, कोर्ट फ़ी आदि भी बहुत बढ़ी हुई हैं।

* * *

सामाजिक भीतरी कुरीतियों को दूर करना तभी सम्भव है, जब स्वयं राजा-प्रजा दृढ़ता से कटिबद्ध हों, परन्तु राजस्थान में तो एक उलटा ही ढङ्ग देखने में आता है ! यहाँ के अधिकांश जागीरदार* अशिक्षित और दुर्व्यसनों में लिप्त हैं। क्योंकि वे प्रायः स्वेच्छाचारी तो होते ही हैं, तिस पर यदि उन्हें राज्य से न्यायालय (जुडीशियल) के अधिकार (सिविल और क्रिमिनल) भी मिल जायँ तो "करेला और नीम चढ़ा" वाली कहावत चरितार्थ होती है, और उनके ख़ुशामदी नौकर-चाकर उन अधिकारों का मनमाना दुरुपयोग करते हैं। और जब कोई साहस कर उसकी अपील करने जाता है तो ठाकुर अपनी सत्ता का दुरुपयोग कर, उसको हर प्रकार कष्ट दिया करता है। यदि इनकी कार्रवाइयों का निरीक्षण होता रहता तो भी कुछ ग़नीमत थी, लेकिन वह भी नहीं होता। फल यह होता है कि राज्य की प्रजा से अधिक जागीरदारों की प्रजा को ज़ुल्म सहने पड़ते हैं।

जागीरदारों ने दीन-दुखी प्रजा से मनमानी कर और बेठ-बेगारों के नाम से रुपया लेना अपना धर्म इस कठोरता से आई हुई सम्पत्ति को कुमार्ग में अपना कर्म समझ रक्खा है। रियासतों की लापरवाही इन जागीरदारों को और भी स्वेच्छाचारी कर दिया और ये निरङ्कुश होकर अपनी प्रजा पर अत्याचार करने कमी नहीं रखते। उचित है कि रियासतें अपनी प्रत्येक जागीर में एक पञ्चायत नियत करें, जो आय-व्यय का बनाए और वह बजट उस रियासत से प्रति वर्ष पास तथा उसके ही अनुसार प्रत्येक जागीर में कार्य हो।

* * *

कहीं कोई जागीरदार राजकुमार-कॉलेज में पढ़ गए तो वे मोटर, पोलो, शिकार आदि के शौक़ीन कर निकलते हैं, और प्रजारञ्जन की वास्तविक शिक्षा वञ्चित ही रहते हैं। क्योंकि कॉलेज में पाश्चात्य सभ्यता का अनुकरण करने, अङ्गरेज़ी-भाषा को अङ्गरेज़ों की बोलने के सिवाय कदाचित् ही कुछ सिखलाया जाता हो। अधिकांश विद्यार्थी वहाँ के शिक्षण से अपने वंश उच्चता और धर्म के महत्व को नहीं पहिचानते और इस प्रकार प्राचीन हिन्दू-आदर्श इनके सामने नहीं रहता। दस वर्ष के शिक्षण से वे नहीं सीखते कि अपनी प्रजा के प्रति, अपने देश के प्रति उनके क्या-क्या कर्त्तव्य हैं। प्रायः कई तो अनोखे दुर्व्यसनों में लिप्त हो जाते हैं, जिनका प्रभाव आजीवन बना रहता है। वहाँ की शिक्षा के विषय में ऐसा एक भी प्रमाण नहीं मिलता कि जिसमें राष्ट्र पूती झलकती हो। कितने राजकुमार लाठी, तलवार आदि चलाना जानते और कितने सदाचार से ब्रह्मचर्य व्रत का पालन करते हैं ? कितने राज-रत्नों और अमूल्य मुकुटधारियों ने विदेशी राजकुमारों की भाँति जहाज़ों में कोयला झोंक कर या मेहनत-मज़दूरी द्वारा अपनी कुसंस्कार वस्था और सुकुमार शरीर को कठोर बनाने का साहस किया है ? यदि सच कहा जाय तो वहाँ तो केवल अंग्रेज़ी पूर्ण दरबारी या एपीकूरियन क्लब का मेम्बर होना सीख पाते हैं—जैसा कि ग्वालियर के महाराजा साहब ने सन् १९१८-१९ की अपनी वार्षिक रिपोर्ट की आलोचना करते हुए इन जागीरदारों के विषय में कहा है :—

* इन जागीरदारों (ताल्लुक़ेदारों-इस्तमरारदारों) के चापलूस जी-हज़ूरिए इनको "नरेश" और इनकी जागीरों को "रियासत" शब्द से सम्बोधन करते हैं, जो भ्रम में डालने वाली बात है। वास्तव में 'नरेश' शब्द का अधिकारी वही गिना जाता है, जिसको शासन के न्याय और अपनी प्रजा के जान-माल की रक्षा के तथा अपहरण के सम्पूर्ण अधिकार प्राप्त हों। ऐसे ही नरेशों को भारत-सरकार से प्रायः तोपों की सलामी प्राप्त है, और उन्हीं की भूमि रियासत कहलाती है।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

"They are merely beautiful figures in the Durbars. We must have the aristocracy to work with the proletariat. Mark the results of such capacity in Europe."

अर्थात्—"जागीरदार लोग केवल दरबार के सुन्दर साज हैं, हमारा यह प्रयत्न होना चाहिए कि जनता के साथ योग देकर ये काम में लगें। ऐसा होने से यूरोप में कितना अच्छा परिणाम निकला है।"

ऐसी शिक्षा के प्रभाव से ही भावी शासकों और जनता के बीच एक दीवार खड़ी हो जाती है। इङ्गलैण्ड के शाही घराने के लोग और स्वयं प्रिन्स ऑफ़ वेल्स (इङ्गलैण्ड के बड़े महाराजकुमार) तक ऑक्सफ़र्ड और केम्ब्रिज के पब्लिक-विश्वविद्यालयों में पढ़ना अपनी शान के विरुद्ध नहीं समझते। फिर हमारे इन भू-स्वामियों को विशेष विद्यालयों में जाने की कौन सी आवश्यकता है? राज-घराने के विद्यार्थियों को मध्यम श्रेणी के शिक्षित लोगों से बुद्धि और चरित्र-सम्बन्धी विकास के बारे में बहुत-कुछ सीखने को मिल सकता है। यदि प्रजा के बालकों के साथ शिक्षा पाते हुए वे बड़े होंगे तो उनसे सुपरिचित होंगे, उनसे सहानुभूति रक्खेंगे, जब राज-भार को अपने हाथ में लेंगे तो सरलता से उनका योग दे सकेंगे, और साथियों की इच्छा, विचार और आवश्यकताओं को जानते हुए राज्य या जागीर का प्रबन्ध उनके लिए भार न होकर, एक सरल कार्य होगा। ये सब बातें इन राजकुमार-कॉलेजों में प्राप्त नहीं हो सकतीं!

मारवाड़ के प्राण (जाट कृषक)

अतः राज-कुटुम्बियों की शिक्षा सर्वसाधारण के विद्यालयों में ही होनी आवश्यक है। इस विषय में मालवा के सीतामऊ-नरेश हिज़ हाइनेस महाराजा सर रामसिंह बहादुर, के० सी० आई० ई० ने प्रचलित रूढ़ि की ओर ध्यान न देकर, अपने राजकुमारों को पब्लिक-विद्यालयों में उच्च-शिक्षा दिलवाई है और वहाँ के होनहार बड़े महाराजकुमार प्रिन्स रघुवीरसिंह राष्ट्रवर, गत वर्ष प्रयाग-विश्वविद्यालय से ग्रेजुएट हुए हैं।

* * *

परन्तु हम देखते हैं कि अधिकांश देशी नरेश, क्या शिक्षित और क्या अशिक्षित, प्रायः सभी खाना-पीना और मौज करना—बस इसी को अपने जीवन का उद्देश्य बना लेते हैं और अपनी विलायत-यात्रा, पेरिस के नाच-घरों की रङ्ग-रँगीली सैर, मोटर-ख़र्च आदि ऐश-आराम व फ़िज़ूलख़र्ची से ही नहीं ऊबते।* राज्य में शिक्षा-प्रचार और व्यवसाय-वाणिज्य एवं उद्योग-धन्धों की वृद्धि का तो कुछ उपाय किया नहीं जाता, जिससे प्रजा समृद्ध हो, राज्य की आय बढ़े; किन्तु ख़र्च अन्धाधुन्ध बढ़ते जाते हैं, जिनकी पूर्ति के लिए प्रजा पर मनमाने ढङ्ग से नए-नए कर बढ़ाए जाते हैं! उनका ध्यान भला वास्तविक उन्नति अथवा विद्या-प्रचार में कैसे लग सकता है, क्योंकि

* ग्वालियर-नरेश स्वर्गीय महाराजा सर माधव सींधिया के कथनानुसार राज्य की कुल आमदनी में से दो सैकड़ा राजाओं के निजी ख़र्च के लिए यथेष्ट है।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

वे तो स्वेच्छाचार की सीमा का उल्लङ्घन कर चुके हैं। वे यह सरासर देख रहे हैं कि रूस का ज़ार (सम्राट्) अपने अत्याचारों के कारण प्रजा के द्वारा ठुकराया गया, फ्रान्स का चौदहवाँ लुई अपना सर्वस्व खो बैठा तथा प्रजाप्रिय कमाल पाशा की टक्कर में टर्की के सुल्तान को अपनी मुँह की खानी पड़ी! देखिए, कल जो इसलाम का ख़लीफ़ा था, मुसलमानों का ताज था, जिसके इशारे पर भूमण्डल

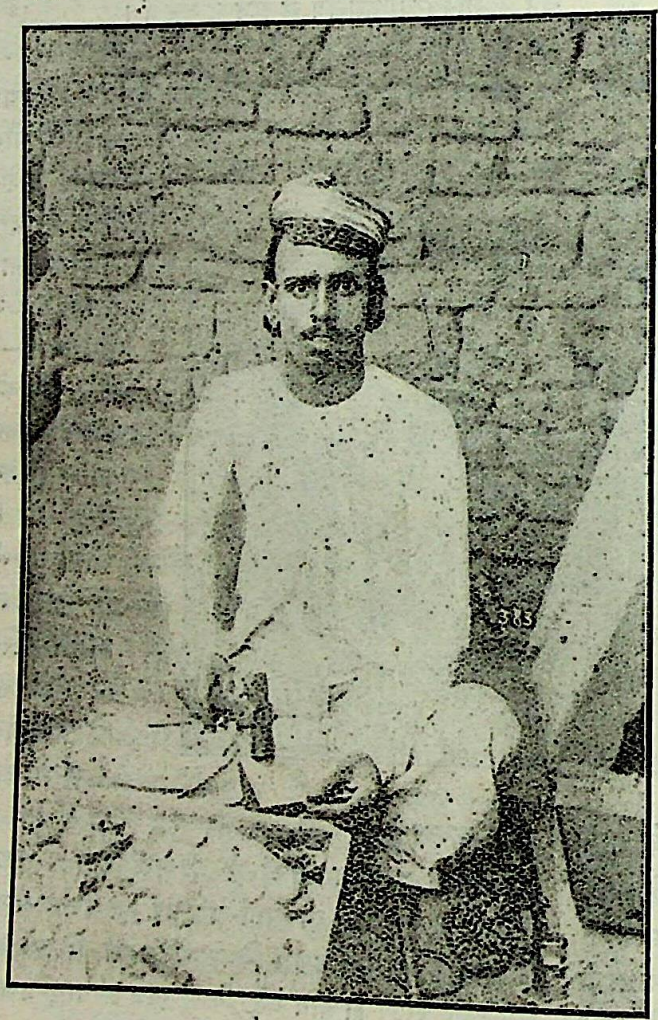

मारवाड़ का सुनार

के मुसलमान जहाद कर संसार में ख़ून की नदियाँ बहा सकते थे, आज वही अँधेरी रात में महलों के ऐश-आराम को छोड़ कर अपनी प्राण-प्यारी तक को दूसरों की रक्षा में सुपुर्द करता है और स्वयं दूसरों के हाथ बिक कर माल्टा टापू में शरण लेता है। यहाँ प्रश्न होता है कि यह क्यों? इसका उत्तर सुल्तान की आपाधापी (स्वेच्छाचारिता) ही है। सुल्तान अपनी स्वेच्छाचारिता के कारण मुसलमानों से अपनी सहानुभूति खो बैठा। उसने प्रजा की ओर ध्यान नहीं दिया। प्रजा की बात को उसने लात से ठुकराया। इसी कारण आज टर्की के सुल्तान का सर्वनाश हुआ। अतएव हमारे स्वेच्छाचारी नरेशों को इतिहास के पृष्ठ काले करने वाले और मनमानी करने वाले इन शासकों से शिक्षा ग्रहण करनी चाहिए।

फिर भी यह सन्तोष की बात है कि कुछ देशी नरेशों ने प्रजातन्त्र की शैली पर अपना शासन लाने का उद्योग करना आरम्भ कर दिया है। जैसा कि बीकानेर के नीति-कुशल महाराजा सर गङ्गासिंह बहादुर ने अपने राज्य में क़ानून बनाने के लिए प्रजा-प्रतिनिधि राज-सभा (लेजिस्लेटिव काउन्सिल) गत कुछ वर्षों से क़ायम कर रक्खी है, यद्यपि उसकी शक्ति बहुत कम है। बटलर-कमीशन से अन्य-अन्य राज्यों में भी प्रजा-प्रतिनिधि तथा राज-सभाएँ क़ायम होने की आशा है। देशी नरेशों का ध्यान अब समय के हेर-फेर से इस ओर प्रजा की भलाई के लिए अवश्य झुकेगा। जैसे ब्रिटिश-भारत में "स्वराज्य" हो के ही रहेगा, वैसे ही रियासतों में भी ज़िम्मेदार हुकूमत क़ायम होकर रहेगी।

* * *

राजस्थानियों की धार्मिक अवस्था के विषय में इतना ही कहना पर्याप्त होगा कि अधिकांश लोग अन्ध-विश्वास, जादू-टोना व अविद्या में फँसे हुए हैं। अलबत्ता कहीं-कहीं कुछ विद्या की रेखा दिखलाई देती है। उसका श्रेय उस जागती संस्था आर्यसमाज को है, जिसने हिन्दू जाति को चेता कर अपने कर्त्तव्य पर लाने का सफल उद्योग किया है। इसके प्रभाव से कई एक राज्यों में अच्छे-अच्छे सुधार हो चले हैं। उदयपुर तथा जोधपुर के वे नरेश धन्यवाद के पात्र हैं, जिन्होंने इस संस्था के प्रवर्तक स्वामी दयानन्द सरस्वती को सम्वत् १९३९-४० में निमन्त्रण दिया और कई मास अपने यहाँ उनका उपदेश करा कर लाभ उठाया है। वास्तव में स्वामी दयानन्द ने जैसा उपकार राजस्थान के लिए और विशेष देशी नरेशों के लिए किया

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

है, वह भुलाया नहीं जा सकता। क्योंकि स्वामी जी ने अपने दीर्घ काल के अनुभव से यह निश्चय किया था कि जिस मार्ग पर बड़े लोग जाते हैं, उसी पर साधारण जनता भी चलती है। इसी कारण उन्होंने राजपूताने के राजा-महाराजा तथा रईसों में धर्म-भाव व सुधार करने की ठानी थी। उस निर्भीक संन्यासी ने यह भी सोचा था कि यदि राजा-महाराजा सुधर जायँगे तो देश भर की दशा शीघ्र ठीक हो जाएगी, परन्तु कर्मगति के बलवती होने के कारण महर्षि का मिशन पूरा न हो सका और जिन राजस्थानी लोगों की भलाई के लिए प्रयत्न किया जा रहा था, उन्हीं में से कई नीच पुरुषों के षड्यन्त्र से जोधपुर में स्वामी जी को उनके ब्राह्मण रसोइया द्वारा दूध में विष दे दिया गया। इस प्रकार स्वामी जी मरुभूमि में बीज रूप से गल गए। इस महान् उपकार से राजस्थान-निवासी तभी उऋण हो सकते हैं, जब कि वे स्वामी के बताए हुए मार्ग पर चलें और हिन्दू-सङ्गठन, शुद्धि, अछूतोद्धार और स्वदेशी-प्रचार का कार्य पूरा करें।

कपड़े छापने वाले छींपा (नव-मुसलिम)

राजपूताना में जो कुछ सामाजिक सुधार आज दृष्टिगोचर होता है, उसकी नींव में स्वामी दयानन्द का सदुपदेश है! अब जो अछूतोद्धार, स्वदेशी-प्रचार, विधवा, अनाथ-रक्षा और शुद्धि-सङ्गठन की ओर हिन्दुओं की दृष्टि गई है, यह सर्वस्व-त्यागी ब्रह्मर्षि स्वामी दयानन्द का ही प्रभाव है।

* * *

सारांश यह है कि राजस्थान की सामाजिक अवस्था अभी परिवर्त्तनकालीन है। कई शक्तियाँ और कई प्रभाव भिन्न-भिन्न रूप से कार्य कर रहे हैं। जिस प्रकार ब्रिटिश-भारत की राजनैतिक अवस्था डाँवाडोल है, उसी प्रकार इस सामाजिक अवस्था को भी समझना चाहिए। राजनैतिक अवस्था के लिए तो सवाल ही नहीं उठ सकता, जहाँ अनेक रियासतों में आज भी थाने और तहसील नीलाम किए जाते हैं और राज-कर्मचारियों की ज़बान ही क़ानून है—चाहे जिस मनुष्य को, चाहे जिस अपराध में, चाहे जैसी सज़ा दे देना वहाँ साधारण बात है! ऐसे ही महाराजा साहब या उनके मन्त्री कोई आज्ञा निकाल दें, किसी बात को जुर्म क़रार दे दें, वे ही उसकी सज़ा भी स्थिर कर दें और किसी को भी न्यायाधीश (मैजिस्ट्रेट) बना दें, बिना मुक़द्दमा चलाए किसी को देश-निकाला या क़ैद की सज़ा दे दें, यह उनके बाएँ हाथ का खेल है। वहाँ न तो छापाख़ाना और अख़बार चलाने की आज्ञा है और न स्पष्ट बोलने-लिखने की। साधारण राजनैतिक सभाएँ करने तक की स्वतन्त्रता नहीं है। न वहाँ कोई निश्चित क़ानून है। जहाँ है वहाँ उनके बनाने में उन लोगों का कोई हाथ नहीं है, जिन पर वे लागू किए जाते हैं। यह भी नहीं कि उन क़ानूनों का सबके लिए समान रूप से पालन होता हो। तर्क से, न्याय से और क़ानून से सिद्ध बातें सत्ता और धन के लिहाज़ से झूठी क़रार दे दी जाती हैं।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

प्रायः ऐसा देखा जाता है कि कभी-कभी जिन बातों पर प्रजाजन को कठोर दण्ड दिया जाता है, उन्हीं में राज-कर्मचारियों को साफ़ छोड़ दिया जाता है ! उनकी सिफ़ारिश ही न्यायालयों के फ़ैसले बदल देती हैं। लोग जान-बूझ कर अज्ञानान्धकार में डूबे हुए और अपने जन्म-सिद्ध अधिकारों की ओर से सर्वथा अनजान रक्खे जाते हैं। जो थोड़े-बहुत लोग अपने ऊपर होने वाले अन्याय, अत्याचार आदि को समझते भी हैं, वे शासकों के भय से चुप हो रहते हैं। परन्तु अब लोगों में धीरे-धीरे आत्म-बल बढ़ रहा है—वे अपने अधिकारों को पहचानने लगे हैं। अपने जन्म-सिद्ध अधिकारों के लिए गिरफ़्तार होना, जेलख़ाना जाना, दण्ड पाना कोई नई बात नहीं समझते, क्योंकि उनके प्राचीन इतिहासों में महान् पुरुषों का अन्याय द्वारा दण्डित होना सिद्ध होता है। राम-दूत हनुमान का राक्षस-पुरी (लङ्का) में सीतादेवी की खोज में जाना और वहाँ गिरफ़्तार होना तथा राक्षसों (दुष्टों) द्वारा अनेक प्रकार से दण्डित होना, यह सब कुछ यही बताता है कि अन्यायियों द्वारा धर्मात्मा पुरुषों को कष्ट सहना ही पड़ता है। भगवान् श्रीकृष्णचन्द्र के पिता और माता अन्यायी कंस द्वारा वर्षों जेल में रहे और वहीं महात्मा कृष्ण का जन्म हुआ। यदि पाप के कारण या संसार के अपकार के कारण जेलख़ाना हो तो वह नरक है, किन्तु जो परोपकार के लिए और धर्म, देश व जाति के लिए जेलख़ाने जाते हैं, उनको वह स्वर्ग के समान प्रतीत होता है और वे शान्त चित्त से उसको तपोभूमि मानते हैं, जैसा कि एक अङ्गरेज़ कवि ने कहा है:—

Stone walls do not a prison make
Nor iron bars a cage.
Minds innocent and quiet take
That for a hermitage.

पत्थर की दीवारों से
क़ैदख़ाना बनता नहीं।
लोहे के शिकञ्जों से
पींजरा सजता कहीं ?
दोष-रहित शान्त व्यक्ति मानते
बन्दीगृह को तपोभूमि जान कर।

मारवाड़ का एक चारण

निस्सन्देह स्वदेश-प्रेम प्रत्येक प्राणी का स्वाभाविक धर्म है। यदि उसकी रक्षा के लिए शरीर को किसी प्रकार का दुख हो तो वह दुख नहीं, किन्तु सच्चा सुख है। उधर जन-साधारण की पहुँच अपने राजाओं तक

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

नहीं होती, जिससे वे अपनी दुःख-कहानी अपने भाग्य-विधाताओं को सुना सकें। इसका कारण यह है कि बहुधा नरेशों के पास स्वार्थी, ख़ुशामदी कर्मचारी रहते हैं, जो प्रजा के विषय में इस प्रकार की भावनाएँ उत्पन्न करते रहते हैं कि यदि वे जन-साधारण की बुराई स्वयं सुनने लगेंगे तो शासन-व्यवस्था न चल सकेगी और उनका दबाव प्रजा पर कम हो जायगा। परन्तु यह धारणा व्यर्थ है, क्योंकि भूतपूर्व ग्वालियर-महाराज तथा वर्तमान जोधपुर, झालावाड़, आलीराजपुर के एवं कई नरेश अन्य बातों में चाहे जैसे हों, किन्तु कर्मचारियों के विरुद्ध प्रजा की बुराइयों पर विशेष ध्यान देते हैं। ऐसा करने से उनके मार्ग में कोई कठिनाई कभी नहीं देखी-सुनी गई। कोटा, झालावाड़, सीतामऊ, प्रतापगढ़ और कई अन्य उन्नति-प्रिय राज्यों के नरेश सर्वसाधारण से भी मिलते-जुलते हैं, फिर भी शासन-सत्ता व मर्यादा में कोई हानि नहीं पहुँचती; बल्कि यह देखा जाता है कि राजा व प्रजा में उत्तरोत्तर प्रेम बढ़ता जाता है और अधिकारियों के अन्याय घटने लगते हैं। इस प्रकार आज बीसवीं शताब्दी में भी अनेक रियासतें सोलहवीं सदी के समान ही पिछड़ी हुई हैं। प्रजा अन्ध-विश्वास से एक लाठी से हाँकी जाती है और इसी में सन्तोष मानती है कि विदेशी राज्य से स्वदेशी राज्य अच्छा है। परन्तु समय की गति बतला रही है कि प्रजा में जागृति जिस प्रकार आरम्भ हुई है, वह बन्द नहीं हो सकती। मध्य-भारत के एजेण्ट गवर्नर जनरल ऑनरेबुल मिस्टर बेविल साहब बहादुर की यह भविष्य-वाणी सत्य निकलेगी कि—

"One thing is clear, the States cannot remain aside, the Reforms will react on them. Hitherto acts of the rulers of the States have been accepted without question but the time is coming when each ruler will have to give to subjects good reasons for his acts. He must learn to lead them and carry them with him along the road of reform, gradually taking them more and more into confidence and associating them with himself in the conduct of affairs."

—*Col. Beville, A. G. G. in C. I.*

अर्थात्—"अब रियासतें अलग नहीं रह सकतीं, बल्कि (ब्रिटिश-भारत के) नवीन सुधारों का उन पर भी बड़ा प्रभाव पड़ेगा। अभी तक तो रियासतों के नरेशों के काम पर कोई प्रश्न नहीं उठाया गया और वह जैसा था, मान लिया गया, परन्तु अब वह समय समीप आ रहा है, जब प्रत्येक शासक को अपने काम का यथोचित कारण प्रजा को बताना होगा। उसको चाहिए कि वह उनका नेता बने, उन्हें सुधार कर रास्ते पर ले चले, धीरे-धीरे उनको अपना अधिक विश्वासपात्र बनाए और काम करने में उनको अपने साथ रक्खे!"

हर्ष की बात है कि आज कर्नल बेविल की भविष्य-वाणी के पूरे होने के लक्षण दीख रहे हैं। हमारे राजस्थान के अनेक सुशिक्षित प्रजा-प्रिय नरेश प्रजा के कष्ट निवारण की ओर ध्यान देने लग गए हैं। वे अब धीरे-धीरे समझने लगे हैं कि राजा का कल्याण प्रजा की भलाई में है!

अन्त में हमारा यह अनुमान है कि एक न एक दिन राजस्थान फिर अपनी प्राचीन शान को प्राप्त होगा और इसके देशी नरेश महाराजा रामचन्द्र के सदृश होंगे, जिनके शासन-काल में प्रजा सब प्रकार से सुखी व सन्तुष्ट होगी, एवं राजा-प्रजा में किसी की कोई शिकायत न रहेगी। इस अवस्था को उपस्थित करना राजा-प्रजा दोनों का ही कर्त्तव्य है, परन्तु इस सम्बन्ध में राजाओं का उत्तरदायित्व प्रजा की अपेक्षा अधिक है। वह दिन अब दूर नहीं है, जब हम प्रजाजन उस अवसर से लाभ उठावेंगे।

सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामयाः
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चित् दुःख भाग्भवेत।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

पराजित पापी

[श्री० जनार्दनप्रसाद झा 'द्विज', बी० ए०]

मदन की माँ को मरे अभी तीन महीने भी नहीं हुए थे कि उसके पिता सेठ गनपतराय उसके लिए एक दूसरी अम्माँ ख़रीद लाए। ख़रीद लाए इसलिए कह रहा हूँ कि धनवन्ती ग़रीब माँ-बाप की बेटी थी और उसे अपने घर तक लाने में सेठ जी के हज़ारों रुपए ख़र्च हो गए थे! बेचारा मदन किसी तरह भी इस ब्याह में बाधा नहीं डाल सका, ग्लानि और क्षोभ के मारे स्वयं ही सिर झुका कर दूर हट गया!

धनवन्ती ने उस राजप्रासाद में पहुँच कर देखा, वहाँ वैभव के सिवाय और कुछ नहीं था। उस जगमगाते हुए प्रकाश में उसे अपने चारों ओर अन्धकार ही अन्धकार दिखाई पड़ने लगा! उसने बहुत खोजा, पर अपने कलेजे के भीतर छिपा रखने लायक़ उसे कोई चीज़ वहाँ न मिली!

सेठ जी दो-चार दिनों तक तो बराबर उसके पास आते-जाते रहे, पर उसके बाद से उन्हें फ़ुरसत नहीं मिलने लगी। धनवन्ती के जीवन का सूनापन प्रति पल बढ़ता ही गया, वह देखते ही देखते बेचैन हो उठी!

एक दिन उसने उस घर की दासी चुन्नी से पूछा—क्यों जी, वह लड़का इस घर से रूठ गया है क्या?

"रूठ न जाय तो और करे क्या बहिन?"—चुन्नी ने बड़े विषाद से उत्तर दिया।

"क्यों रूठा है?"

"बाप-बेटे में कुछ कहा-सुनी हो गई थी।"

"झगड़ालू स्वभाव का है क्या?"

"झगड़ालू स्वभाव का होता तो इस तरह चुपचाप अलग हट जाता? वही तो इस घर का दीपक था। जिस दिन से इसे सूना करके चला गया है, इसकी सारी रौनक़ ही चली गई है। मेरा तो यहाँ उसी दिन से मन भी नहीं लग रहा है, पेट के मारे पड़ी हूँ।"

"मन तो मेरा भी नहीं लगता है चुन्नी!"—धनवन्ती ने उदास होकर कहा—"जब वह इतना सुन्दर लड़का है तो उसे मना क्यों नहीं लाते?"

"उनसे कौन कहे बहिन! वे किसी की सुनें तब तो!"

"न हो, एक बार तुम्हीं मेरी ओर से जाओ न!"—धनवन्ती ने अनुनय-भरी वाणी में कहा।

"जाने को तो मैं चली जाऊँगी"—चुन्नी ने उत्तर दिया—"पर बच्चा जी इतनी आसानी से यहाँ लौट आवेंगे, ऐसा तो मुझे नहीं मालूम होता।"

"अच्छा, तुम एक बार जाओ तो सही।"

"जाऊँगी।"

"कब?"

"आज ही शाम को चली जाऊँगी, बग़ीचा कौन बहुत दूर तो है नहीं, जाने में क्या धरा है?"

"ज़रूर जाना, और चाहे जिस तरह हो, उसे मना लिवा लाना—अच्छा?"

"अच्छा"—कह कर चुन्नी उसके भोलेपन पर हँस पड़ी।

२

शाम को चुन्नी थाली भर मिठाई लेकर बग़ीचे पहुँची तो देखा, वहाँ का बँगला उदासी में डूबा हुआ है। वहाँ किसी तरह की चहल-पहल नहीं थी। उसने डरते-डरते बँगले के बरामदे में पैर रक्खा। इसी समय भीतर से बुंधुवा नौकर बोला—कौन है?

"मैं हूँ बुद्धू! बच्चा बाबू कहाँ हैं?"

"चुन्नी मौसी?"—कह कर बुद्धू बाहर निकल आया और उसे देख कर बोला—"आज कैसे भूल पड़ी मौसी?"

"भूल तो नहीं पड़ी हूँ बेटा!"—चुन्नी ने कुछ उदास होकर जवाब दिया—"जान-बूझ कर आई हूँ। बच्चा बाबू कहाँ हैं?"

"मालिक आज चार दिनों से बीमार हैं"—बुद्धू ने जवाब दिया—"चलो न, भीतर खाट पर पड़े हुए हैं।"

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

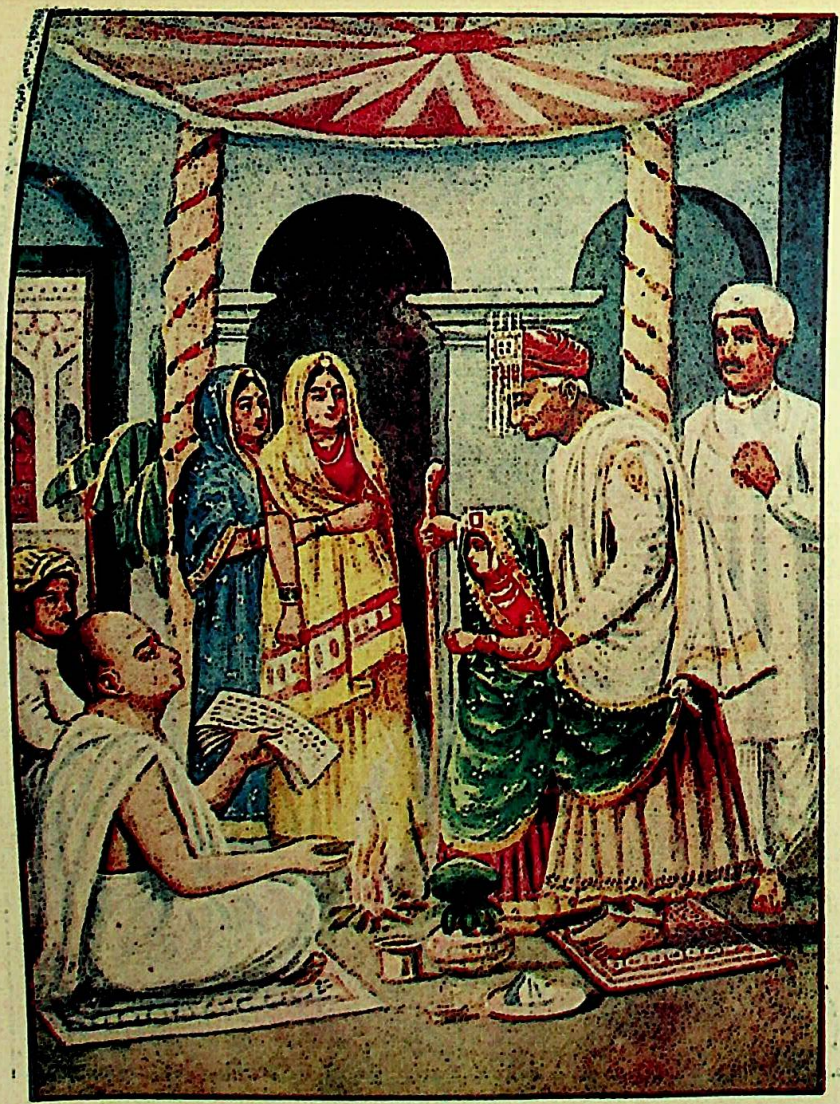

शुभ लग्न !!!

पहिले फेरे बाई काका जी री भतीजी। दूजे फेरे बाई मामा जी री भाणजी।
तीजे फेरे बाई भूआ री भतीजी। चौथे फेरे बाई हुई रे पराई.....!!

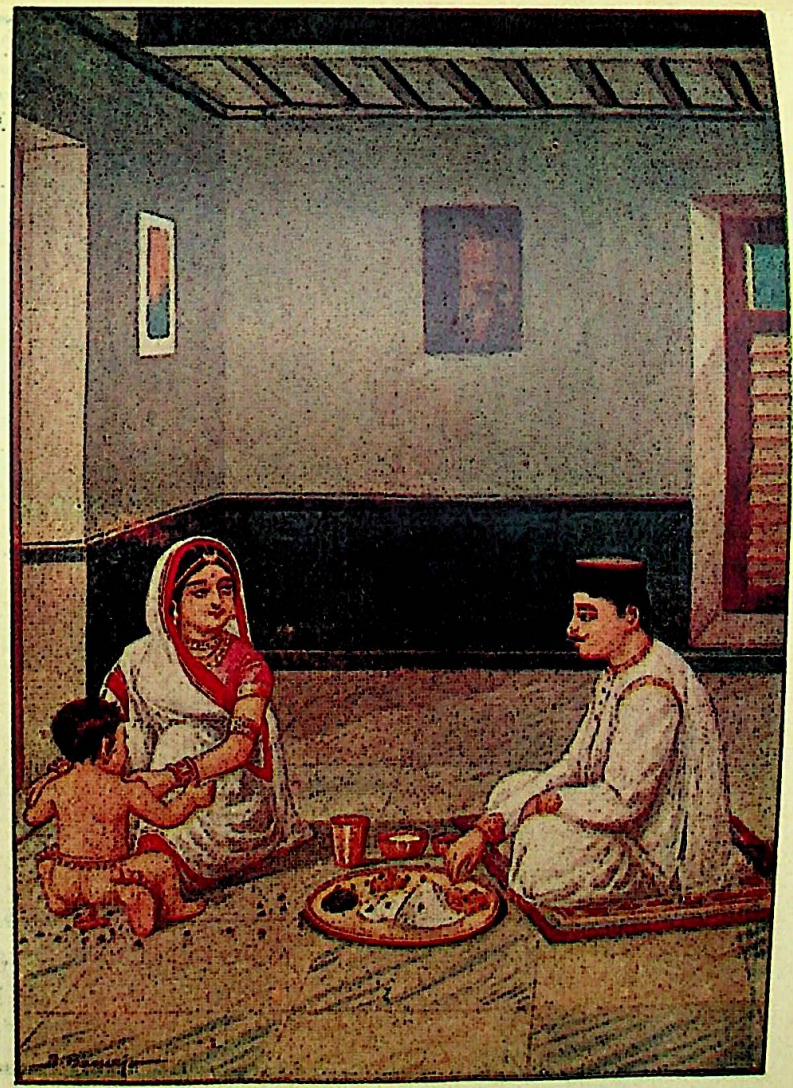

सेठ जी का भोजन

"अजी ! म्हाने जिमवातो यो, आगन्दगी पर की माख्या म्हारा थाल पर..."
"वाह रे, थाँकी गन्दगी....."

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

सुप्रसिद्ध हास्य-रस के लेखक

जी० पी० श्रीवास्तव की सर्वोत्कृष्ट रचना

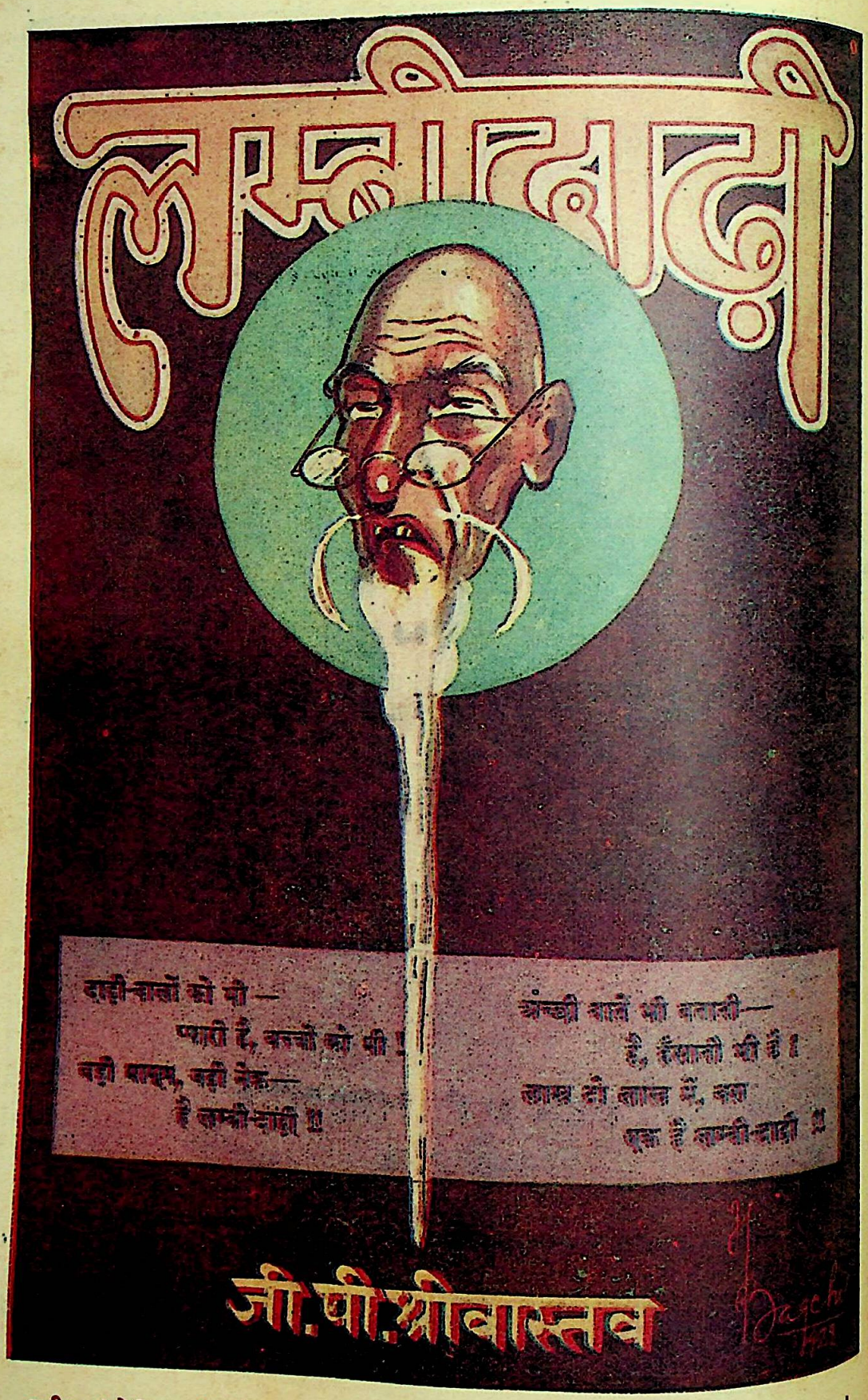

नवीन संशोधित परिवर्द्धित, सचित्र और सजिल्द पुस्तक का मूल्य लागत-मात्र २॥) रु० !

☞ व्यवस्थापिका 'चाँद' कार्यालय, इलाहाबाद

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

मदन को देख कर चुन्नी अपने दिल को क़ाबू में न रख सकी। वह उसकी माँ की दुलारी दासी थी। उसने मदन को पाल-पोस कर बड़ा बनाया था। उसके इस निर्वासित जीवन का दुख देख कर वह अधीर हो उठी। उसने आँखों में आँसू भर कर पूछा—बच्चा बाबू, यह क्या हालत बना रक्खी है?

मदन अपने हृदय का वेग रोक कर, मुस्कराते हुए बोला—कुछ नहीं, थोड़ा-सा ज्वर हो आया था चुन्नी मौसी, अब जी अच्छा है। कहो, क्या ख़बर है?

"सब ठीक है।"

"नई अम्माँ ख़ुश हैं?"

"आपको बहुत याद करती रहती हैं।"

"मुझे?"—मदन ने चौंक कर पूछा—"मुझे वे क्यों याद करती हैं? मुझे तो उन्होंने देखा भी नहीं।"

"नहीं देखने से क्या होता है? वे आपको देखने के लिए विकल हो रही हैं। ठीक उसी तरह मानती हैं, जिस तरह माँ अपने बेटे को मानती है। बहुत अच्छे स्वभाव की हैं।"

मदन कुछ नहीं बोला। उसकी आँखों से आँसू की धारा बह चली।

चुन्नी ने कहा—अपने हाथ से मिठाई बना कर भेजी है और मुझे क़समें दे रक्खी हैं कि चाहे जैसे हो, मैं आपको ज़रूर घर लिवा चलूँ। उनकी एक-एक बात से प्यार टपकता है।

मदन ने आँसू पोंछते हुए कहा—उन्हें मेरा प्रणाम कह देना।

"इससे काम नहीं चलेगा भैया!"—चुन्नी ने हाथ जोड़ कहा—"घर चलना होगा, नहीं तो मैं यहीं धन्ना देकर बैठी रहूँगी। जिस पौधे को अपने हाथों से लगाया है, उसे इस तरह मुरझाते नहीं देख सकती। आपकी यह हालत देख कर मैं इस समय आपे में नहीं हूँ। चलिए, मन न लगेगा तो फिर वापस चले आइएगा।"

"मन लगने और न लगने की बात नहीं है चुन्नी मौसी!"—मदन ने कहा—"मैं उस घर में पैर ही नहीं रखना चाहता। तुम मुझे अपने बेटे की तरह मानती हो, इसे मैं जानता हूँ; पर खेद है, मैं इस समय तुम्हारी बातें न मान सकूँगा। तुम जाओ, अम्माँ जी से कहना कि वे मुझे याद न किया करें। यह मिठाई भी लेती जाओ, मैं मिठाइयाँ नहीं खाता।"

चुन्नी ने दीन-स्वर में कहा—कम से कम मिठाई तो रख लीजिए। बड़ी साध से बना कर भेजी है।

मदन कुछ देर तक चुप रहा, फिर बोला—अच्छा, इसे रहने दो।

"तो मैं चली जाऊँ भैया?"—चुन्नी ने कातर-स्वर में पूछा।

"हाँ, तुम चली जाओ। तुम भी माफ़ करना और अम्माँ जी से भी माफ़ी माँग लेना। उनसे कहना, वे भूल कर भी मुझ अभागे को याद न किया करें।"—कह कर मदन ने करवट बदल ली और मुँह ढाँप कर बच्चों की तरह रोने लगा।

चुन्नी भी चुपचाप आँखें पोंछती हुई बाहर निकल गई।

३

दूसरे दिन सवेरे ही मदन के बग़ीचे में एक गाड़ी आ खड़ी हुई। उससे चुन्नी उतरी और उतरी उसके साथ ही एक परम सुन्दरी युवती! चुन्नी युवती का हाथ पकड़ कर उसे मदन के कमरे में ले गई। कमरे में घुसते ही उसने कहा—बच्चा बाबू, लीजिए, आपकी अम्माँ ख़ुद आपको बुलाने आई हैं।"

मदन हड़बड़ा कर उठ खड़ा हुआ और बोला—यह तुमने क्या किया चुन्नी? मुझे बदनाम करोगी क्या?

"इसमें बदनाम होने की कौन सी बात है बेटा!"—धनवन्ती ने काँपते हुए स्वर में जवाब दिया—"माँ अपने बेटे को मनाने आई है, इसके लिए बदनामी कैसी?"

मदन सहसा कोई उत्तर न दे सका। उसे ऐसा मालूम हुआ, जैसे धनवन्ती बरबस उसे अपनी ओर खींच रही है। वह सिर झुकाए चुपचाप खड़ा रहा।

धनवन्ती ने फिर कहा—बाप का अपराध हो और माँ दण्ड सहे, यह तो तुम्हारा अन्याय है मदन! भला मैंने कौन सा क़सूर किया है?

मदन को ऐसा मालूम हुआ मानों उसके आगे उसकी अपनी ही माँ खड़ी हो। कई प्रसङ्ग आगए थे जब वह भी उसे इसी तरह की बातें कह कर मना चुकी थी। वह क्षण भर के लिए वास्तविक परिस्थिति भूल गया और बोल उठा—अम्माँ!

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

"बेटा !"—कह कर धनवन्ती ने उसका हाथ पकड़ लिया और आँसुओं से उलझे हुए स्वर में कहा—"चलो, तुम्हारे बिना वह घर अच्छा नहीं लगता।"

घर का नाम सुनते ही मदन की सारी विस्मृति विलीन हो गई। प्रतिरोध के स्वर में उसने कहा—यह तो मुझसे न हो सकेगा, मैं वहाँ न जा सकूँगा अम्माँ !

"एक बार चले चलो बेटा !"—धनवन्ती ने गिड़गिड़ाते हुए कहा—"कम से कम तभी तक के लिए चलो, जब तक तुम्हारी तबीयत न अच्छी हो जाय। तुम यहाँ अकेले बीमार पड़े रहो और मैं वहाँ महल में सुख की नींद सोऊँ, यह किसी तरह नहीं हो सकता। तुम्हें मेरे साथ चलना होगा।"

"मैं वहाँ न जा सकूँगा अम्माँ ! आप मुझे इसके लिए माफ़ करें !"—मदन ने बहुत ही व्यथित स्वर में जवाब दिया।

"तुम्हें वहाँ चलना पड़ेगा बेटा !"—कह कर धनवन्ती उसके पैरों पर गिर पड़ी और रोती हुई बोली—"जिसे तुम अम्माँ कह कर पुकार रहे हो वही तुम्हारे पैरों पर गिर कर विनती कर रही है, इसका भी क्या तुम विचार न करोगे मदन ?"

मदन तड़फड़ा कर अपना पैर छुड़ाता हुआ बोल उठा—मैं चलूँगा अम्माँ ! आपने यह क्या किया ?

"कुछ तो नहीं"—धनवन्ती ने आँसू पोंछते हुए जवाब दिया—"अपने रूठे हुए बेटे को मनाया है।"

उसी समय धनवन्ती मदन को लेकर घर लौट गई। उसकी प्रसन्नता का ठिकाना नहीं था। पर मदन भी प्रसन्न था—ऐसा नहीं कहा जा सकता। उसे रह-रह कर अपनी माँ याद आ रही थी, उसका कलेजा टूक-टूक हो रहा था। साथ ही इस नई अम्माँ के कोमल व्यवहारों ने भी उसे बन्दी बना लिया था, वह उसके भीतर अपनी माँ का आभास देख कर मुग्ध हो रहा था। एक ओर उसके हृदय में विद्रोह की आँधी उठ रही थी, दूसरी ओर सन्धि की सुकुमार भावना। वह बहुत ही उदास था।

धनवन्ती ने दो ही दिनों में उसकी सारी उदासीनता दूर भगा दी। घर लाकर वह उसे हर तरह से ख़ुश करने की चेष्टा में लग गई, उसके सेवा-सत्कार में उसने अपने को इस तरह लगा दिया कि मदन सब तरह से पराजित हो गया।

मदन उसे 'अम्माँ' और 'आप' कह कर पुकार करता था। धनवन्ती बात ही बात में पूछ बैठी—अच्छा, यह तो बताओ मदन ! तुम अपनी माँ को कैसे पुकारते थे ?

"माँ कह कर !"—मदन ने जवाब दिया।

"और उन्हें भी क्या तुम 'आप' ही कहा करते थे ?"

"नहीं; 'तुम' कहता था।"—मदन ने ज़रा सकुचा कर उत्तर दिया !

"तो मुझे भी क्या तुम उसी तरह नहीं पुकार सकते बेटा ?"—धनवन्ती ने कुछ कातर होकर पूछा।

"अब से तुम्हें भी उसी तरह पुकारा करूँगा माँ !"—कह कर मदन ने सिर झुका लिया।

धनवन्ती ने गद्गद होकर कहा—अपनी इस अभागिनी माँ को कभी भूलना नहीं बेटा, यही विनती है।

"ऐसा कभी न होगा माँ !"—कह कर मदन ने उसके पैरों पर सिर रख दिया।

इसी समय सेठ गनपतराय कमरे में घुस आए और अपनी लाल-लाल आँखें नचा कर तुरन्त बाहर लौट गए ! धनवन्ती उनकी वे आँखें देख कर सहम उठी। उसने काँपते हुए स्वर में कहा—उठो बेटा ! भगवान तुम्हारी उमर बढ़ावें, मुझे तुम्हारा ही भरोसा है।

४

"तुम्हें घर के भीतर आने की कभी फ़ुरसत नहीं मिलती, क्यों ?"—धनवन्ती ने अपने पति से पूछा।

"हाँ, जान-बूझ कर फ़ुरसत नहीं निकालता हूँ, इस भय से कि कहीं तुम्हारे काम में बाधा न पड़े।"—सेठ जी ने उत्तर दिया।

"अपना दोष दूसरों के सिर क्यों मढ़ रहे हो ?"—धनवन्ती ने सावधान होकर कहा—"यह क्यों नहीं कहते कि बाहर ही इतने बझे रहते हो कि घर आने की फ़ुरसत ही नहीं आती—मैं सब जानती हूँ।"

"और मुझसे भी कुछ छिपा नहीं है"—सेठ जी ने भवें टेढ़ी करके जवाब दिया—"ज़रा अपनी ओर भी देख लो, तब बातें करो। यह न समझना कि तुम मुझे धोखे में डाल सकोगी।"

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

"इस तरह तुम मुझे गालियाँ क्यों दे रहे हो?"—धनवन्ती ने क्रोध के मारे अधर कँपा कर पूछा—"अपनी चादर तो काली है ही, अब दूसरों की भी क्यों मैली कर रहे हो?"

"चुप रह हरामज़ादी!"—सेठ जी ने डपट कर जवाब दिया—"मेरी चादर काली है और तुम्हारी सफ़ेद! मैं तुम्हारे सब खेल देख रहा हूँ।"

"तुम मेरे सब खेल देख रहे हो?"—धनवन्ती ने दाँत पीस कर जवाब दिया—"मेरे कौन से खेल तुमने देखे, बताओ!"

"तुम्हारा पैर पुजवाना भी तो एक खेल ही है न?"—सेठ ने आँखें तरेर कर पूछा।

"हाय रे अभागा।"—धनवन्ती ने सिर ठोंक कर जवाब दिया—"तुम्हारे पेट में इतना पाप है!"

"और यह पाप कैसे पल रहा है, तुम इसे भी जानती हो!"—सेठ ने उसी तरह गर्दन हिला कर, आँखें तरेर कर जवाब दिया।

"मैं नहीं जानती, माफ़ करो,"—धनवन्ती हाथ जोड़ती हुई बोली—"इस तरह अपने नरक को और भी गन्दा न बनाओ, कुछ भगवान् का भी भय करो।"

"भगवान् का भय तुम करो, जिसे अपने स्वर्ग के बचाए रखने की परवा है"—सेठ जी ने एक लम्बी 'आह' खींच कर कहा—"मुझे क्या? मैं तो नरक में रहता ही हूँ।"

"आख़िर, तुम्हें आज हो क्या गया है?"—धनवन्ती ने कातर-स्वर में पूछा—"क्या...तुम्हें सचमुच मेरे चरित्र में सन्देह है?"

"सन्देह ही नहीं, विश्वास भी"—सेठ जी ने उत्तर दिया।

"तुम्हारा विश्वास है कि मैं ख़राब चाल-चलन की हूँ?"—धनवन्ती ने अपनी लाल-लाल आँखें तरेर कर, ओंठ कँपाते हुए, बड़ी दृढ़ता के साथ पूछा।

सेठ जी थोड़ी देर के लिए सहम उठे। फिर उन्होंने बड़े प्यार से कहा—"नहीं, तुम उल्टा समझ रही हो। मेरा ऐसा विश्वास तुम्हारे लिए नहीं, बल्कि उसके लिए है, जो आज तुम्हारी सफ़ेद चादर को मैली बना रहा है।"

"जाओ, हटो, मेरे सामने से हट जाओ"—धनवन्ती नागिन की तरह क्रुद्ध होकर फुफकारती हुई बोली—"तुम्हारे जैसे पापी की छाया भी नरक है। अपने पुत्र के प्रति ऐसी बुरी भावना! भगवान् ही तुम्हारा भला करें! जाओ, हटो, मेरे सामने से हट जाओ।"

"अच्छी बात है"—सेठ ने जी भी दाँत कड़कड़ा कर जवाब दिया—"जाता हूँ, और फिर कभी तुम्हारा काला मुँह देखने नहीं आऊँगा। तुम आनन्द से विहार करो।"

"भगवान् तुम्हारे पापों का अन्त करें!"—कह कर धनवन्ती आँचल से मुँह ढाँप कर रोने लगी।

सेठ जी आँगन से बाहर निकल गए, तब चुन्नी धीरे-धीरे धनवन्ती के आगे आ खड़ी हुई और उसका हाथ पकड़ कर बोली—उठो बहिन, मदन को इस रोने की बात मालूम हो जायगी तो अनर्थ उठ खड़ा होगा। तुम्हें मेरे सिर की क़सम है, छाती को पत्थर बना लो।

धनवन्ती तुरन्त चुप हो गई। इसी समय मदन भी आ खड़ा हुआ और बड़ी गम्भीरता से बोला—तुम अच्छी तरह रो लो माँ! तुम्हारी तबीयत कुछ हल्की हो जायगी। जिस बात को छिपाने के लिए तुम ज़बरदस्ती चुप हो गई हो वह मुझसे छिपी नहीं है। मगर इस बार मैं कायर की तरह अलग नहीं हट जाऊँगा। जीवन की लड़ाई में लड़ूँगा—जीतूँगा या हारूँगा, इसकी परवा नहीं है।

धनवन्ती फूट-फूट कर रोने लगी। मदन ने हाथ पकड़ कर कहा—इसे मेरे सिर पर फेर कर आशीर्वाद दो माँ! मैं तुम्हारे लिए मौक़ा पड़ने पर जान भी दे सकूँ।

धनवन्ती ने प्यार से उसके सिर पर हाथ फेरते हुए उसी तरह रो-रोकर आशीर्वाद दिया—तुम युग-युग जीते रहो बेटा! मुझे तुम्हारा ही भरोसा है।

५

यारों की मजलिस लगी हुई थी। लोग प्याले पर प्याला उँड़ेलते जा रहे थे। उनमें से एक ने पूछा—आज बड़ी जल्दी छुट्टी मिल गई सेठ जी!

"आज तो ऐसी छुट्टी मिली है"—सेठ गनपतराय बोले—"कि फिर कभी जाने की ज़रूरत ही नहीं पड़ेगी।"

"सो कैसे?"—उनमें से किसी दूसरे ने पूछा।

"एक ऐसी बात कह आया हूँ कि अब उसे मेरी ओर देखने की हिम्मत ही नहीं पड़ेगी"—सेठ जी ने कहा।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

"ख़ूब डाँट-फटकार दिया होगा और क्या ?"—पहले सज्जन ने पूछा।

"एक तोहमत लगा आया हूँ !"—सेठ जी ने कहा—"यही एक शस्त्र था, जिसके सहारे मैं उसे घायल कर सका। धमकी दे आया हूँ कि अब कभी उसका मुँह भी नहीं देखूँगा।"

"लेकिन यह तो बताओ यार !"—दूसरे सज्जन ने पूछा—"तुम्हारी यह बीबी है कैसी ?"

"है तो बहुत ही ख़ूबसूरत यार !"—सेठ जी ने जवाब दिया।

"तब क्यों इस तरह मारे-मारे फिरते हो ?"—उनमें से एक तीसरा बोला।

"मारे-मारे फिरने के क्या माने होते हैं ?"—सेठ जी एक प्याला समाप्त करते हुए बोले—"ज़िन्दगी का लुत्फ़ लूट रहा हूँ कि मारे-मारे फिर रहा हूँ ? घर की चीज़ चाहे जितनी भी सुन्दर हो, बाहर की चीज़ को वह थोड़े पा सकती है ?"

"फिर उसे ब्याह कर लाए ही क्यों ?"—तीसरे ने पूछा।

"घर में लाकर एक रख छोड़ा है, आख़िर इस महल में भी तो एक चाहिए न ?"—सेठ ने दूसरा प्याला ख़ाली करते हुए जवाब दिया।

"तो मतलब यह कि अब आपको बीबी के पास जाकर रोज़ हाज़िरी नहीं देनी होगी, क्यों सेठ जी ?"—पहले ने पूछा।

"बिलकुल नहीं साहब, बिलकुल नहीं !"—सेठ जी ने मूँछों पर हाथ फेर कर जवाब दिया—"हाज़िरी बजाने की तो योंही फ़ुरसत नहीं मिलती थी और अब तो पूछना ही क्या है !"

"हो क़िस्मत वाले यार ! यहाँ हुलिया तङ्ग रहती है।"—वही सज्जन फिर बोले।

"तुम लोग भी कैसे मर्द हो, पता नहीं चलता"—सेठ जी ने अकड़ कर कहा—"औरत से इतना घबराते हो—और फिर अपनी औरत से ? उसे क़ाबू में लाना कौन मुश्किल है, एक कलङ्क लगा दो और सदा के लिए उससे छुट्टी मिल जायगी। फिर वह ज़बान तो खोल ही नहीं सकेगी—हुलिया तङ्ग करने की तो बात ही दूर रही।"

"मगर सभी ऐसा नहीं कर सकते सेठ साहब !"—कह कर धनवन्ती ने उसी समय कमरे में प्रवेश किया—"सभी आप ही की तरह साहसी बन जायँ तो साहस को पूछे ही कौन ?"

थोड़ी देर के लिए सबके सब अवाक् हो रहे। सेठ जी के ऊपर नशे का रङ्ग जम रहा था, धनवन्ती को देखते ही वह फीका पड़ गया। उन्होंने लड़खड़ाती ज़बान से पूछा...तु ..तुम ..यहाँ कै ..से ?

"पहले आप कृपा कर अपने इन दोस्तों को यहाँ से विदा कर लें, तब मैं आपसे बातें करूँगी"—कह कर धनवन्ती उन लोगों की ओर मुड़ कर बोली—"आप लोग कृपा कर यह कमरा छोड़ कर अभी चले जायँ, नहीं तो मैं पुलिस को बुलाने के लिए मजबूर हो जाऊँगी।"

"ख़बरदार !"—कह कर सेठ जी उठ खड़े हुए और बोले—"अपना भला चाहती है तो सामने से हट जा, नहीं तो × × ×"

"नहीं तो क्या ?"—कह कर इसी समय मदन उनके आगे कूद पड़ा और अपना तमञ्चा तान कर बोला—"इसी दम सब लोग यहाँ से भाग जायँ, वरना एक भी जीता नहीं रहने पाएगा।"

मदन का तमञ्चा देखते ही शराबियों की मण्डली खड़बड़ा उठी। सेठ जी को छोड़ कर सभी यार दम खिसक गए।

मदन भी कमरे से बाहर निकल आया।

धनवन्ती ने कहा—अब बताओ, किसकी चाल काली है ?

सेठ जी ने लाल-लाल आँखें गुड़ेरते हुए जवाब दिया—चुपचाप मेरे सामने से हट जाओ—मैं तुम्हारा मुँह नहीं देखना चाहता।

"यह कहने से छुट्टी नहीं मिलेगी"—धनवन्ती ने दृढ़तापूर्वक जवाब दिया—"मैं तुम्हें अपना मुँह दिखाने नहीं आई हूँ। जो पूछती हूँ, उसका जवाब देना होगा। बताओ, तुमने मेरे साथ शादी क्यों की ?"

"मेरे पास पैसे हैं, एक नहीं हज़ार शादियाँ करूँगा।"—सेठ जी गर्दन तान कर बोले।

"तुम्हारे पास पैसे हैं, इसीलिए तुम दूसरों के जीवन को नष्ट करना अपना हक़ समझते हो ?"—धनवन्ती ने कम्पित स्वर में पूछा।

'हाँ' कह कर सेठ जी दाँत पीसने लगे।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

चाँद

सुप्रसिद्ध सुधारक
और दानवीर
रावबहादुर सेठ
शिवरत्न जी मोहता
ऑनरेरी मैजिस्ट्रेट
कराची

सौभाग्यवती
सरस्वती देवी
मोहता
(धर्मपत्नी सेठ
शिवरत्न जी मोहता)
आप कराची के मारवाड़ी
समाज में, परदा-
प्रथा के मस्तक पर
पाद-प्रहार करने वाली
सर्व-प्रथम महिला रत्न
हैं

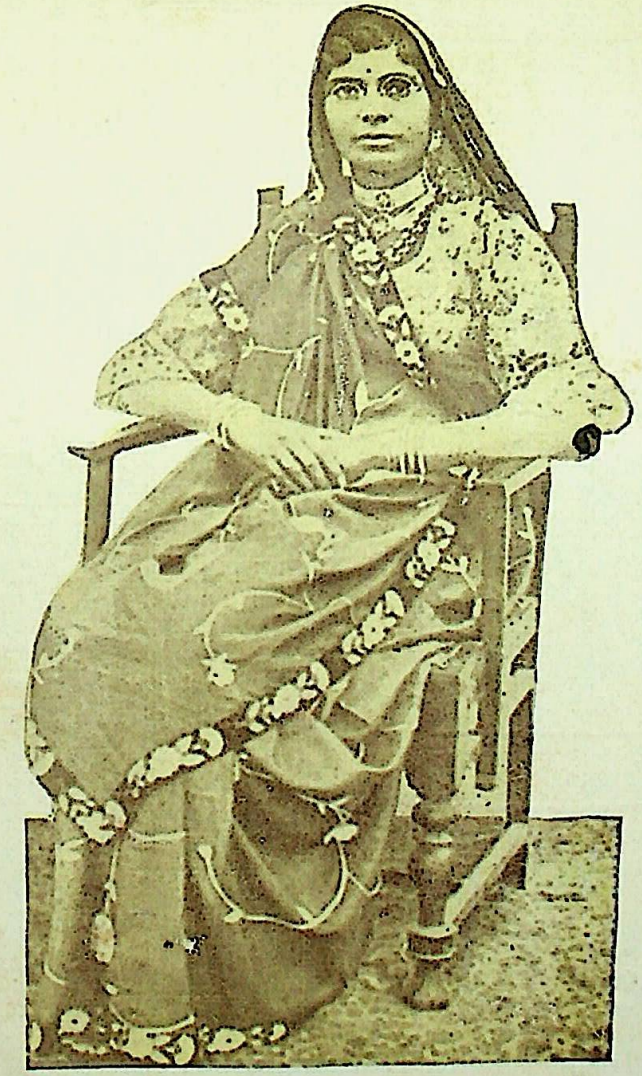

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

चाँद

की

क्रान्तिकारी योजना

कायस्थ-अङ्क

अपने प्रेमी पाठकों को हमें बतलाना न होगा कि उनके प्यारे 'चाँद' के जीवन का एक मात्र लक्ष्य भारतीय समाज को संसार की उन्नतशील जातियों के साथ कन्धा भिड़ा कर खड़ा देखना है, साथ ही उसका यह भी उद्देश्य है कि इस विशाल भारत की प्रत्येक मुख्य जाति एक-दूसरे से पूर्णतः परिचित हो, इसी सदुद्देश्य को सामने रख कर इस वर्ष कुछ खास विशेषाङ्क निकालने की बृहत् योजना की गई है। जिन लोगों ने 'चाँद' के किसी भी विशेषाङ्क का अवलोकन किया है, वह इस संस्था के प्रबन्ध में अविश्वास नहीं कर सकते। शीघ्र ही 'कायस्थ-अङ्क' के नाम से भी एक बृहत् विशेषाङ्क निकालने की योजना हो रही है। इस अङ्क के सम्पादन का समस्त भार लिया है, हास्य-रस के सुप्रसिद्ध लेखक, 'इन्दुभूषण' नामक स्वर्ण-पदक प्राप्त

श्री० जी० पी० श्रीवास्तव, बी० ए० एल्-एल्० बी०

महोदय ने। वे अभी से इस अङ्क को सफल बनाने की चेष्टा में लग गए हैं। किस मास का अङ्क 'कायस्थ-अङ्क' के नाम से प्रकाशित होगा। इस बात की सूचना शीघ्र ही प्रकाशित की जायगी, पाठकों को इसकी प्रतीक्षा करनी चाहिए। इस विशेषाङ्क सम्बन्धी लेख, कविताएँ, चित्र तथा कार्टून आदि निम्न-लिखित पते से भेजना चाहिए :—

श्री० जी० पी० श्रीवास्तव,

बी० ए०, एल्-एल्० बी० वकील,

गोंडा (अवध)

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

"किसी बाज़ारू औरत से ही क्यों नहीं ब्याह कर लिया ?"—धनवन्ती ने क्रोध के स्वर को कँपा कर पूछा।

"तुम अपने को कुछ और न समझना।"—सेठ जी ने निर्लज्ज भाव से जवाब दिया।

धनवन्ती सब कुछ सह सकती थी, पर यह आघात उसके लिए असह्य था। वह उसी समय सेठ जी के पैरों पर गिर पड़ी और रोती हुई बोली—तुम मुझे इस तरह मलिन क्यों बना रहे हो ? झूठ-मूठ मुझे क्यों तोहमत लगा रहे हो ?

सेठ जी इस पर सहसा कुछ बोल न सके। धनवन्ती ने उसी तरह कातर-स्वर में पूछा—मैं नहीं जानती थी कि तुम इतने गिरे हुए हो। याद रखना, तुम यह शराब की मस्ती नहीं लूट रहे हो, विष की बेचैनी बुला रहे हो ! जो कुछ पी रहे हो वह अमृत की घूँटें नहीं, हलाहल की बूँदें हैं। हाय ! मैं नहीं जानती थी कि तुम यहाँ तक पहुँच चुके हो !

"अब तो जान गई ?"—सेठ जी बोले।

"हाँ, अब जान गई हूँ"—धनवन्ती ने कहा—"और यही विनती करने आई हूँ कि अपने ऊपर दया करो।"

"आपका उपदेश सिर-आँखों पर"—कहते हुए सेठ जी खड़े हो गए और बोले—"अब आप ज़रा अपने ऊपर भी दया करें और चुपचाप मेरे सामने से हट जायँ।"

"नहीं, मैं किसी तरह भी तुम्हें नहीं छोड़ूँगी"—धनवन्ती ने पैर पकड़ कर कहा—"मेरे स्वामी ! मैं तुम्हें अपने लिए कुछ नहीं कहती, केवल तुम्हारे लिए कहती हूँ। मेरे भाग्य में तो दुख है ही, मगर तुम अपने दुखों को क्यों बढ़ाए जा रहे हो ? मेरी इतनी सी विनती मान लो, तुम अपने ऊपर दया करो।"

"तुम इस तरह मेरे पैरों की बेड़ी मत बनो"—सेठ जी ने पैर खींचते हुए कहा—"मैं कहता हूँ, मेरे आगे से हट जाओ। मैं मर्द हूँ, मेरे पास पैसे हैं, जो जी में आएगा वही करूँगा। तुम मेरे बीच में पड़ने वाली कौन होती हो ?"

"मैं तुम्हारी धर्मपत्नी हूँ"—धनवन्ती ने बड़ी दीनता से कहा।

"तुम मेरी ख़रीदी हुई बाँदी हो"—सेठ जी ने बड़ी निष्ठुरता से कहा !

"बाँदी ही सही, मेरे मालिक !"—धनवन्ती ने दीन-स्वर में कहा—"बाँदी की सेवा भी तो मर्द और पैसे वाले ही स्वीकार करते हैं। तुम मर्द हो, पैसे वाले हो, इसीलिए तो कहती हूँ कि मुझ ख़रीदी हुई बाँदी को भी कभी-कभी अपने पैरों की धूली दे दिया करो, मेरे लिए यही बहुत होगा।"

"तुम मुझे अब और तङ्ग न करो"—पैर छुड़ाते हुए सेठ जी ने कहा।

"मैं तुम्हें तङ्ग कर रही हूँ ?"—धनवन्ती ने करुण-स्वर में कहा—"पैरों पड़ने का अर्थ तङ्ग करना होता है ?"

"तुमने आज मेरा अपमान किया है"—सेठ जी ने आँखें तरेर कर जवाब दिया—"मेरे दोस्तों की बेइज़्ज़ती की है। मैं इस समय आपे में नहीं हूँ, सामने से हट जाओ।"

"तुम उन पापी दोस्तों को सदा के लिए छोड़ दो"—धनवन्ती ने हाथ जोड़ कर कहा—"तभी आपे में रह सकोगे। मैंने तुम्हारा अपमान नहीं किया, तुम्हारे अपमान को भगाया है। वे मित्र ही तुम्हारे अनर्थ के मूल हैं—उन्हें कृपा कर छोड़ दो।"

"उनके बदले तुम्हीं को छोड़ रहा हूँ"—सेठ जी बोले—"जाओ, मेरे सामने से हट जाओ।"

"नहीं हटूँगी, तुम्हें मुझे छोड़ने का कोई अधिकार नहीं है"—कह कर धनवन्ती दरवाज़ा रोक कर खड़ी हो गई।

"अधिकार क्या चीज़ होती है ?"—धनवन्ती को धक्का देकर गिराते हुए सेठ जी बोले—"मुझे सब करने का अधिकार है। मैं तुम्हें छोड़ दूँगा, उन्हें नहीं छोड़ूँगा।"

धनवन्ती ज़ोर से चिल्ला उठी और सेठ जी कमरे से बाहर निकल पड़े। आँखें तरेरते हुए मदन सामने आ खड़ा हुआ और कड़क कर बोला—अगर आप उन्हें नहीं छोड़िएगा तो जाकर उन्हीं के साथ रहिए भी। यहाँ आकर शराब की मस्ती बिखेरिएगा तो आपके सभी मित्रों को मैं मस्ती का मज़ा चखा दूँगा।

"तुम्हीं दोनों मेरे घर से निकल जाओ।"—सेठ जी ने गरज कर जवाब दिया।

"मुझे अफ़सोस है पिता जी !"—मदन ने तमञ्चा तान कर कहा—"अब मैं ऐसा नहीं कर सकता। आप इस समय मेरा ग़ुस्सा न बढ़ाइए, वरना अनर्थ कर बैठूँगा। जाइए, चुपचाप यहाँ से चले जाइए।"

सेठ जी डर के मारे काँप उठे। चुपचाप भीगी बिल्ली की तरह खिसकते बने।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

मदन ने धनवन्ती से जाकर कहा—माँ, चलो, कलक्टर साहब के पास चलें। उनका हिस्सा अलग करवा दिया जाय, नहीं तो हम लोग बड़ी विपत्ति में पड़ जायँगे।"

"जो चाहो वह करो बेटा,"—धनवन्ती ने निराशा भरे स्वर में बहुत ही व्यथित होकर जवाब दिया—"अब तो जी चाहता है अपने इन सारे कष्टों का एक साथ ही अन्त कर दूँ। जीवन से जी ऊब उठा है। अब इस संसार में मैं नहीं रहना चाहती।"

मदन ने उसका हाथ पकड़ कर कहा—माँ, तुम्हारे ही बल पर तो मैं लड़ रहा हूँ। तुम्हीं इस तरह हिम्मत छोड़ बैठोगी तो मैं क्या कर सकूँगा? मुझे आशीर्वाद दो। चलो, कलक्टर साहब के पास चलें।

"लोग क्या कहेंगे बेटा?"—धनवन्ती ने व्यथित स्वर में कहा।

"लोग क्या कहेंगे माँ!"—मदन ने दृढ़ता से जवाब दिया। "वे व्यभिचार के पीछे आज बारह वर्षों से रुपए बरबाद कर रहे हैं; इसी के पीछे वे मेरी माँ को मार चुके हैं; इसी के पीछे एक दूकान का दिवाला निकल गया है! अब यही दो-तीन कोठियाँ, एक दूकान और थोड़े से रुपए रह गए हैं। अगर लोक-लाज में पड़ कर शीघ्र ही कोई उपाय न करोगी तो कैसे काम चलेगा? वे इस तरह अपने को बरबाद किए जा रहे हैं, इस पर लोगों की नज़र नहीं है, और हम अगर अपनी भलाई के लिए कुछ करेंगे तो उस पर लोग बुरा-भला कहेंगे? कहेंगे तो कहा करें, इसकी परवा नहीं है।"

इसके आगे धनवन्ती कुछ न बोली। दोनों की राय एक हो गई।

६

कलक्टर साहब मदन को जानते भी थे और मानते भी थे। वह उनके पुत्र का प्यारा मित्र था। पहले तो उन्होंने सेठ गनपतराय को हर तरह से डराया-धमकाया, मगर उससे कोई विशेष लाभ न देख कर, उन्होंने उसके लिए जायदाद का एक हिस्सा अलग करवा दिया और बाक़ी हिस्से धनवन्ती तथा मदन को दिलवा दिए। अब सेठ जी अपने परिवार से बिलकुल अलग एक बग़ीचे वाली कोठी में रहने लगे। वहीं निश्चिन्त रूप से शराब और सङ्गीत की धारा उमड़ने लगी।

इधर धनवन्ती और मदन अपने-अपने कष्टों को छिपाए प्रेमपूर्वक जीवन बिता रहे थे। पर सच पूछो तो दो में से कोई भी सुखी नहीं था। अपनी-अपनी व्यथा तो थी ही, सेठ जी की यह कुत्सित जीवन-चर्या उनकी बची-खुची शान्ति को भी बहा रही थी। इतना ज़रूर था कि धनवन्ती अपने 'बेटे' के लिए सब कुछ भूल सकती थी और मदन अपनी 'माँ' को सुखी करने में ही अपना सुख समझता था। पर वह अभागा उसे सुखी बनावे भी तो किस तरह? उसे जो दुख था, उसकी दवा तो उसके पास थी नहीं!

इन दोनों माँ-बेटे को एक साथ ही सुखी बनाने वाली एक और भी थी। वह थी स्वर्णलता। वह मदन की सहपाठिनी भी थी और शीघ्र ही उसकी जीवन-सङ्गिनी भी बनने वाली थी।

एक दिन सन्ध्या-समय धनवन्ती ने चुन्नी से कहा—ज़रा जाओ तो चुन्नी दीदी! स्वर्णलता को तो बुला लाओ, इधर दो दिनों से वह आई नहीं है। मदन की तबीयत ख़राब रहने के कारण इधर वहाँ नहीं गया हो तो बुलाती आना।

घण्टे भर के भीतर ही चुन्नी लौट आई और घबराए स्वर में बोली—वह तो अपने घर में है ही नहीं। सेठ जी, उसके दास-दासी सब घबड़ाहट में हैं। कहते हैं, रात ही से वह ग़ायब है!"

"रात ही से ग़ायब है?"—धनवन्ती ने भयभीत होकर पूछा।

"कौन रात ही से ग़ायब है माँ?"—उधर से आते हुए मदन ने पूछा।

"अभी चुन्नी को उसे बुलाने भेजा था बेटा!"—धनवन्ती ने घबड़ाहट दिखा कर कहा—"सो आकर यह मालूम है कि स्वर्णलता रात ही से ग़ायब है! क्या वह कहीं बाहर गई है?"

मदन की छाती धड़कने लगी। उसने कहा—"अगर बाहर जाती तो हम लोगों से कह न जाती! मैं ही जाकर पता लगाऊँ क्या?

"हाँ बेटा, जाओ। न जानें क्यों मेरा जी बहुत घबड़ा रहा है।"—कह कर धनवन्ती ने अपने ललाट का पसीना पोंछा।

कपड़े पहन कर मदन कमरे से बाहर निकला ही

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

कि स्वर्णलता हाँफती हुई आई और धड़ाम से उसके आगे गिर पड़ी। उसके केश बिखरे हुए थे, कपड़े फट गए थे, शरीर क्षत-विक्षत हो गया था। उसने मुँह से ये ही शब्द निकाले—'मदन, मेरा सर्वनाश हो गया!"

"किसने तुम्हारा सर्वनाश किया बेटी!"—कह कर धनवन्ती दौड़ पड़ी और उसे उठाती हुई बोली—"तुम्हारी यह दुर्गत किसने की है? हाय! मैं यह क्या देख रही हूँ मदन? मालूम होता है, स्वर्णलता मौत के मुख से लौट कर आई है। क्या हुआ बेटी! बताओ, तुम कहाँ से आ रही हो?"

"मेरा सर्वनाश हो गया!"—कह कर स्वर्णलता रो पड़ी।

मदन को जैसे किसी ने पत्थर की प्रतिमा बना दिया। धनवन्ती उसे छाती से लगा कर बोली—किसने तुम्हारा सर्वनाश किया स्वर्ण?

"अपने भावी ससुर जी ने।"

"क्या कहा?"—धनवन्ती चौंक उठी!

"भावी ससुर जी ने? क्या कह रही हो..."—कह कर मदन इस तरह उछल पड़ा जैसे उसके पैर आग के अङ्गारों पर पड़ गए हों।

"हाँ, मेरे भावी ससुर ने मदन, तुम्हारे पिता जी ने मेरा सर्वनाश कर दिया!"—कह कर स्वर्णलता क्रोध से दाँत कटकटाने लगी।

"साफ़-साफ़ कहो स्वर्ण, बात क्या है?"—धनवन्ती ने भयभीत होकर पूछा। मदन क्रोध के मारे काँप रहा था।

"साफ़-साफ़ क्या कहूँ? हाय, मेरा सर्वनाश हो गया। मैं कल यहीं आ रही थी। रास्ते में वह पापी भी मिल गया। उसने मुझे ज़बरदस्ती मोटर में बैठा लिया और उस बग़ीचे वाले मकान में ले जाकर × × ×"

"तुम क्या कह रही हो स्वर्ण?"—धनवन्ती व्याकुल हो उठी।

"जो कह रही हूँ, वह बहुत ही कम है माँ!"—स्वर्णलता ने कहा—"बड़ी-बड़ी नारकीय यातनाएँ भोग कर आ रही हूँ। क़िस्मत अच्छी थी जो थोड़ा सा मौक़ा मिल गया, जान बचा कर भाग आई। नहीं तो वहीं × × × हाय! मेरा सर्वनाश हो गया!!"

मदन अब खड़ा न रह सका। बिजली की तरह दौड़ कर आँगन से बाहर निकल पड़ा।

धनवन्ती ने घबड़ा कर कहा—चुन्नी, तब तक स्वर्ण को नहलाओ-धुलाओ। मैं मदन को देखूँ, मालूम होता है, आज बड़ा भारी अनर्थ होगा।

स्वर्ण को चुन्नी के ज़िम्मे सौंप कर धनवन्ती भी उसी तरह दौड़ती हुई आँगन से बाहर निकल पड़ी।

७

"तुम सीधे से न मानोगी?"

"नहीं, चाहे तुम मेरे टुकड़े-टुकड़े कर दो!"

"क्यों जान गँवाने पर तुली हो, जो कहूँ मान लो।"

"जान गँवा दूँगी, तुम्हारी बात न मानूँगी।"

"अच्छा देखता हूँ,"—कह कर सेठ जी कुछ किया ही चाहते थे कि झनझना कर उनके कमरे का किवाड़ खुल पड़ा और देखते ही देखते कोई उनकी गर्दन पर सवार हो गया! बिलकुल बेबस होकर उन्होंने आक्रमणकारी की ओर गर्दन मोड़ी तो देखा, उन्हीं का बेटा मदन शेर की तरह लाल आँखें किए, तमञ्चा तान कर उन्हें जहन्नुम भेजने के लिए तैयार था। मृत्यु के भय से काँप कर वह कह उठा—"बेटा! इस बार माफ़ कर दो, अब कभी ऐसा न करूँगा।"

"ख़बरदार! मुझे बेटा कह कर न पुकारो"—मदन उसे गिरा कर उसकी छाती पर चढ़ बैठा और बोला—"अपने भगवान् को याद करो, मैं तुम्हें अब जीता न छोड़ूँगा.....!"

इसी समय किसी ने पीछे से दौड़ कर उसका तमञ्चा वाला हाथ पकड़ लिया और कहा—बेटा, अपनी माँ को विधवा न बनाओ।

मदन के हाथ से तमञ्चा गिर पड़ा! उसने एक बार कातर-दृष्टि से धनवन्ती की ओर देखा और कहा—"माँ!"

"छोड़ दो बेटा!"—धनवन्ती ने व्याकुल होकर कहा—"इन्हें जीता छोड़ दो। इनकी छाती पर से उतर आओ। मैं यह दृश्य नहीं देख सकती। हाय! मैं यहाँ आई ही क्यों!!"

मदन चुपचाप बाप की छाती पर से उतर आया। सेठ जी भी उठने की कोशिश कर ही रहे थे कि इसी समय कमरे में बहुत से हथियारबन्द सिपाही घुस आए।

"इन सबको गिरफ़्तार कर लो!"—इन्सपेक्टर ने आज्ञा दी।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

"नहीं, केवल इसी पापी को"—उस लड़की ने कहा—"और लोग तो मेरी रक्षा करने आ पहुँचे थे।"

सेठ जी गिरफ़्तार कर लिए गए। धनवन्ती वहीं अचेत होकर गिर पड़ी।

घर लौटते-लौटते धनवन्ती की तबीयत बहुत ही ख़राब हो गई। सात-आठ दिनों तक उसकी हालत बराबर बिगड़ती ही गई। आठवें दिन उसने बड़े कष्ट से पूछा—मदन, सच बता दो बेटा! उनका क्या हुआ?

मदन ने भर्राए हुए स्वर में कहा—सात साल के लिए जेल।

"जेल?"—धनवन्ती तड़फड़ा कर उठ बैठी—"सात साल के लिए? उफ़! अब नहीं × × ×"

वह खाट के नीचे गिर पड़ी। उसकी आँखें उलट गईं। मरते-मरते वह कह गई—"स्वर्ण को सुखी रखना बेटा! मैं अब जाती हूँ × × ×"

८

स्वर्ण को सुखी रखने का मौक़ा आया ही नहीं। वह सदैव यही कह-कह कर रोया करती—"हाय! मेरा सर्वनाश हो गया!" अन्त में जब उसकी पीड़ा असह्य हो उठी, तब उसनें वही किया जो वैसी अवस्था में वह कर सकती थी।

धनवन्ती के मरने के दूसरे ही दिन सवेरे जब मदन उठा तो देखा, स्वर्णलता की सेज सूनी है। वह व्याकुल होकर इधर-उधर ढूँढ़ने लगा। सहसा उसकी नज़र एक लिफ़ाफ़े पर जा पड़ी। काँपते हुए हाथों से उसे उसने उठाया। उसके भीतर एक चिट्ठी थी।

"मेरे मदन, मुझे माफ़ करना। मैं तुम्हारे लायक़ नहीं रह गई। मेरा सर्वनाश हो गया। तुम्हारी पत्नी बन कर मैं तुम्हें मलिन नहीं बना सकती। जाती हूँ, गङ्गा जी में डूब कर इस पापमय जीवन का अन्त कर दूँगी। फिर किसी दूसरे जन्म में मिलूँगी। तुम्हें मेरी क़सम है, तुम अपना ब्याह ज़रूर कर लेना। हाय! मेरा सर्वनाश हो गया, इसीलिए तुम्हें छोड़ कर जा रही हूँ। मुझे भूल जाओ।"

यह पढ़ते ही मदन पागलों की तरह गङ्गा-तट की ओर दौड़ पड़ा। पर वहाँ उसे मिले कौन? स्वर्णलता तो गङ्गा के गर्भ में लीन हो चुकी थी!

चुन्नी आई और पैरों पड़ कर मदन को घर लिवा गई।

९

मदन पागलों की तरह इधर-उधर घूमने लगा। कभी उसे चुन्नी की याद हो आती, वह घूमना बन्द घर लौट आता। स्वर्णलता की मृत्यु से वह बहुत व्याकुल हो उठा था, ऐसा मालूम होता था मानों दिन रात उसी को खोज रहा हो।

एक दिन वह इसी तरह बेख़बर होकर सड़क पर जा रहा था। सहसा उसे एक मोटर का धक्का लगा। गिर पड़ा, पर कोई विशेष चोट न पहुँची। मोटर हो गई। उससे एक लड़की और एक अर्द्धवयस्क मानस उतर पड़े। मदन को देखते ही लड़की बोल "बाबू जी, इन्हीं की मदद से मेरी इज़्ज़त और बची थी।"

उस अर्द्धवयस्क भलेमानस ने मदन के पास कर कहा—"मुझे माफ़ कीजिएगा, आपको कहीं चोट नहीं लगी? आपका नाम सेठ मदनलाल जी है न!"

"जी हाँ"—कह कर मदन ने उन्हें नमस्कार और कहा—"कोई हर्ज नहीं, मैंने चोट नहीं खाई।"

"तो आप इस तरह पैदल क्यों घूम रहे हैं?"—अर्द्धवस्यक भले आदमी, सेठ वंशीधर जी, ने बड़े स्नेह कहा—"चलिए, मैं आपको पहुँचा आऊँ।"

गाड़ी पर बैठते ही सेठ वंशीधर जी ने उस की ओर बताते हुए कहा—यह सुशीला, मेरी है। आप ही ने एक दिन इसकी जान बचाई है।

मदन लज्जा और सन्ताप के मारे झुक गया। आँखों से आँसू की धारा उमड़ पड़ी। उस की स्मृति के साथ उसके जीवन का सारा सन्ताप हुआ था। वह भीतर ही भीतर बेचैन हो उठा।

वंशीधर जी उसे घर तक पहुँचा कर लौटे तो पत्नी से बोले—तुम यह सम्बन्ध पसन्द करती हो?

"बड़ी ख़ुशी से। वे मान जायँगे?"—उनकी रामेश्वरी ने कहा।

"मनाने की कोशिशें की जायँगी"—वंशीधर जी

ब्याह की बातचीत होते-होते साल ख़तम हो सुशीला और मदन की घनिष्ठता बहुत अधिक थी। अवसर पाकर चुन्नी ने कहा—बचा बाबू! मर जाऊँगी तब बहू को घर लाओगे?

"ब्याह करने को जी नहीं चाहता चुन्नी मौसी!"

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

मदन ने उदास होकर कहा—"अरे, तुम रोने क्यों लगीं?"

"नहीं, भैया! मेरी यह विनती मान लो"—चुन्नी ने बहुत ही गिड़गिड़ा कर कहा—"तुम्हें अपनी गोद में खिलाया है, तुम्हारे सिर पर मौर भी देख लूँ, तब मरूँ। यही एक साध है, इसे पूरी कर दो।"

मदन का हृदय भर आया। उसने गद्गद स्वर में कहा—अच्छा मौसी, जाओ, तुम्हीं वहाँ जाकर कह आओ। मुझे मञ्जूर है।

चुन्नी को जैसे सारी सम्पदा मिल गई। उसी समय वह सेठ वंशीधर जी के घर जा पहुँची।

१०

मदन और सुशीला के व्याह के छः साल बाद की बात है। शाम का वक्त था। दोनों प्राणी कहीं बाहर जाने की तैयारी में थे। मोटर पर चढ़ने जा ही रहे थे कि सहसा एक तिरपन-चौव्वन वर्ष का क्षीणकाय आदमी आकर खड़ा हो गया। वह आँखों में आँसू भर कर मदन की ओर देख रहा था। मदन ने उसकी ओर से मुँह फेर लिया और मोटर की ओर क़दम बढ़ाया।

वह बूढ़ा घुटने टेक कर मदन के आगे बैठ गया और बोला—क्या अब मुझे पहचानते भी नहीं बेटा?

"ख़ूब पहचानता हूँ"—मदन ने अपने हृदय का वेग रोक कर जवाब दिया—"कृपा कर यहाँ से चले जाइए।"

"मेरे ऊपर दया करो बेटा!"

"यहाँ से चले जाओ!"

"अपने पापों का फल पा चुका बेटा, अब माफ़ करो!"

"यहाँ से चले जाओ!"

"अब मैं हर तरह से हार गया बेटा, कहीं ठिकाना नहीं है। अपनी शरण में रख लो।"

"यहाँ से चले जाओ!"

"अभी जेल से चला आ रहा हूँ बेटा! दिन भर का भूखा हूँ, कुछ खिला दो।"

"यहाँ से चले जाओ।"—इस बार मदन ग़श खाकर गिर पड़ा।

सुशीला ने कहा—चुन्नी, इन्हें तब तक भीतर ले जाकर कुछ खिला-पिला दो। मैं इनका उपचार कर रही हूँ।

आँखें खोलते ही मदन ने बड़ी बेचैनी से पूछा—कहाँ गया वह पापी?

सुशीला ने कोमल स्वर में जवाब दिया—अब उस पर दया करो। वह चारों ओर से पराजित होकर तुम्हारी शरण में आया है।

"मगर मैं उसकी सूरत नहीं देखना चाहता"—मदन ने कहा।

"अब तुम्हें ऐसा करना उचित नहीं है। पाप के बाद पुण्य का भी उदय होता है।"—सुशीला ने अपने स्वामी को समझाया।

"सुशीला!"—मदन ने कहा—"तुम वह दृश्य भूल सकती हो?"

"न भूलने से मनुष्यता का अपमान होता है"—सुशीला ने गम्भीरतापूर्वक कहा—"चलो, हम दोनों उनके पैरों पर गिरें। तुमने उन्हें बहुत ही क्लेश पहुँचाया है। लाख पापी होने पर भी वे अपने ही हैं। चलो, उनसे क्षमा माँगो।"

पत्नी की इस ऊँची भावना ने मदन को कुछ का कुछ बना दिया। वह बिना कुछ कहे-सुने मन्त्र-मुग्ध होकर सुशीला के पीछे-पीछे चल पड़ा।

भीतर पहुँच कर देखा, चुन्नी बड़े प्यार से अपने बूढ़े मालिक को खिला रही है। उन दोनों को अपनी ही ओर आते देख सेठ गनपतराय भय के मारे खाना छोड़ कर खड़े हो गए और गिड़गिड़ा कर बोले—मैं अभी चला जाता हूँ बेटा! थोड़ा सा और खा लेने दो।

मदन दौड़ कर उनकी छाती से लिपट गया और बच्चों की तरह बिलख-बिलख कर बोला—पिता जी! मुझे माफ़ कीजिए।

सुशीला ने घबड़ा कर कहा—चुन्नी, ज़रा उन्हें सँभाले रहो, देखती हूँ उनकी आँखें उलट गईं।

सचमुच, मदन के छाती से लिपटते ही बूढ़े के हृदय की गति बन्द हो गई। पता नहीं, भय के मारे या आकस्मिक सुख के धक्के से।

मदन ने फिर कहा—न माफ़ कीजिएगा पिता जी?

सुशीला ने रोते हुए कहा—अब इन्हें धीरे से लिटा दो, शव पकड़ कर कब तक खड़े रहोगे?

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

महाकवि चन्द के वंशधर

[प्रोफ़ेसर रमाकान्त जी त्रिपाठी, एम० ए०]

राजपूताना प्राचीन काल से हिन्दू-शौर्य तथा हिन्दू-संस्कृति का केन्द्र रहा है। मध्यकालीन युग में जब मुसलमानों ने भारत पर आक्रमण करना प्रारम्भ किया, तो उनका सामना राजपूत-नरेशों ने ही किया। यही नहीं, मुसलमानी सभ्यता का सङ्घर्ष वास्तव में हिन्दू-सभ्यता से राजपूताने में ही हुआ। यही कारण है कि भारतीय इतिहास के बड़े से बड़े वीर इसी वीर-प्रसवा भूमि ने उत्पन्न किए।

राजपूताना को केवल यही गौरव नहीं प्राप्त है कि उसने अगणित वीर नायकों को जन्म देकर, भारतीय इतिहास को समुज्ज्वल किया है, किन्तु उसमें हिन्दी-साहित्य के प्राचीनतम कवियों का आविर्भाव भी हुआ था। क्योंकि राजपूताना अधिकतर रण-शब्द से उद्घोषित रहता था और वहाँ के निवासियों की रग-रग में वीरता की स्फूर्ति रहती थी, इसीलिए वहाँ के रण-चर्चा-पूर्ण वायु-मण्डल में वीर-गाथाएँ रचने वाले कवियों का समादर होता था।

वैसे तो न जाने कितने ही वीर-गाथाएँ लिखने वाले कवि तथा चारण हो चुके हैं, पर महाकवि चन्द बरदाई का नाम तथा उनके बृहत् काव्य 'पृथ्वीराज रासो' का यश देश-व्यापी हो गया है। इसका मुख्य कारण यह है कि चन्द का सम्बन्ध महाराज पृथ्वीराज से था, जो भारत के अन्तिम सम्राट् कहे जाते हैं। यह स्वाभाविक है कि हिन्दू-जाति चन्द से पुरुष को तथा उनकी कृति को ऐसे आदर-भाव से देखे, क्योंकि, जैसी परम्परा से लोगों की यह धारणा चली आई है। वे सम्राट् पृथ्वीराज के राज-दरबार के साधारण कवि ही नहीं थे, वरन् उनके अभिन्न मित्र तथा अत्यन्त समादृत सहचर थे। इसके अतिरिक्त रासो एक विस्तृत काव्य है, जिसमें पृथ्वीराज की जीवन-लीला का वर्णन बड़े ही हृदयग्राही ढङ्ग से किया गया है। इधर कुछ समय से रासो की प्राचीनता के विरुद्ध श्रद्धेय गौरीशङ्कर ओझा सरीखे उद्भट विद्वानों ने छान-बीन की है और वे इस निष्कर्ष पर पहुँचे हैं कि रासो को अन्य चाहे किसी दृष्टि से पूज्य ग्रन्थ समझें, उसका महत्व ऐतिहासिक दृष्टि से न्यूनातिन्यून है।

अपनी कविता के बल पर मुर्दों को जिलाने वाले स्वर्गीय महाराणा पृथ्वीराज जी चौहान के

महाकवि चन्द बरदाई

प्रस्तुत लेख में उन सब प्रमाणों तथा युक्तियों का उल्लेख करना प्रसङ्ग से बाहर होगा, जिनके आधार पर रासो की प्राचीनता पर तथा उसमें दी हुई बहुत सी घटनाओं पर सन्देह किया गया है। इस लेख में यह समझ कर कि और न सही, कम से कम रासो हमारे देश की एक सुन्दर

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

साहित्यिक सम्पत्ति है, महाकवि चन्द बरदाई के प्रति इस नाते से श्रद्धा रखते हुए एक ऐसे सज्जन के जीवन-सम्बन्धी कुछ बातें कही जावेंगी, जो उनके वंशधर हैं।

इनका शुभनाम श्री० नेनूराम जी ब्रह्मभट्ट है। आप महाकवि चन्द से २७ वीं पीढ़ी में हैं। पाठकों की जिज्ञासा को सन्तुष्ट करने के लिए उन्हीं का दिया हुआ वंश-वृत्त नीचे उद्धृत किया जाता है, जो कई वर्ष पहले कलकत्ते की रॉयल एशियाटिक सोसायटी के जरनल में निकल चुका है * :—

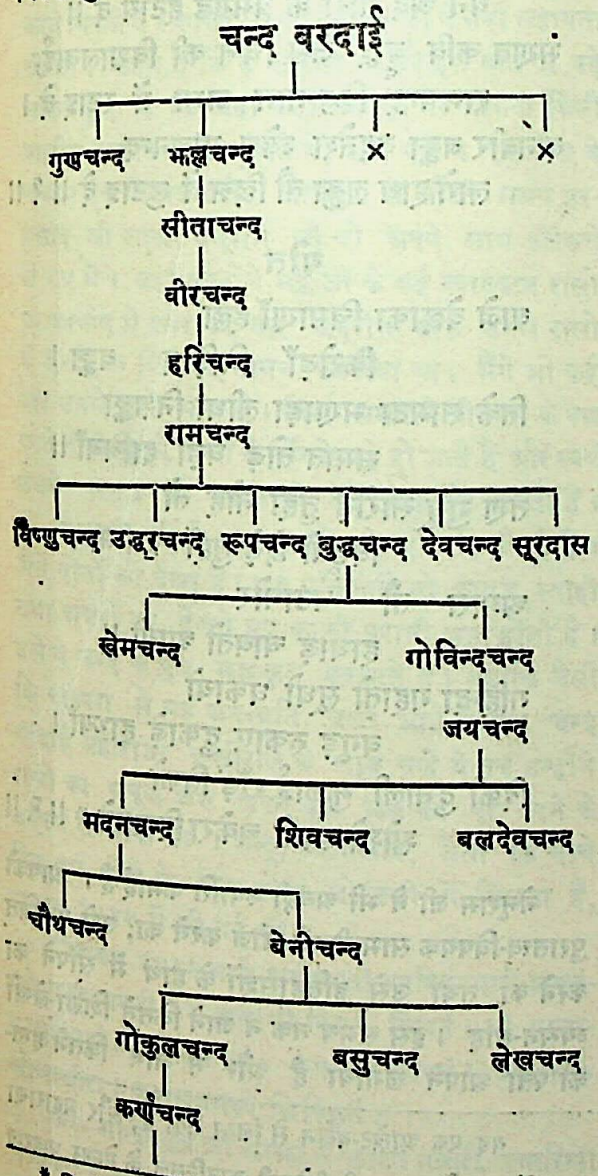

* Preliminary Report on the operation in search of Mss. of Barsic Chronicles, (1913)

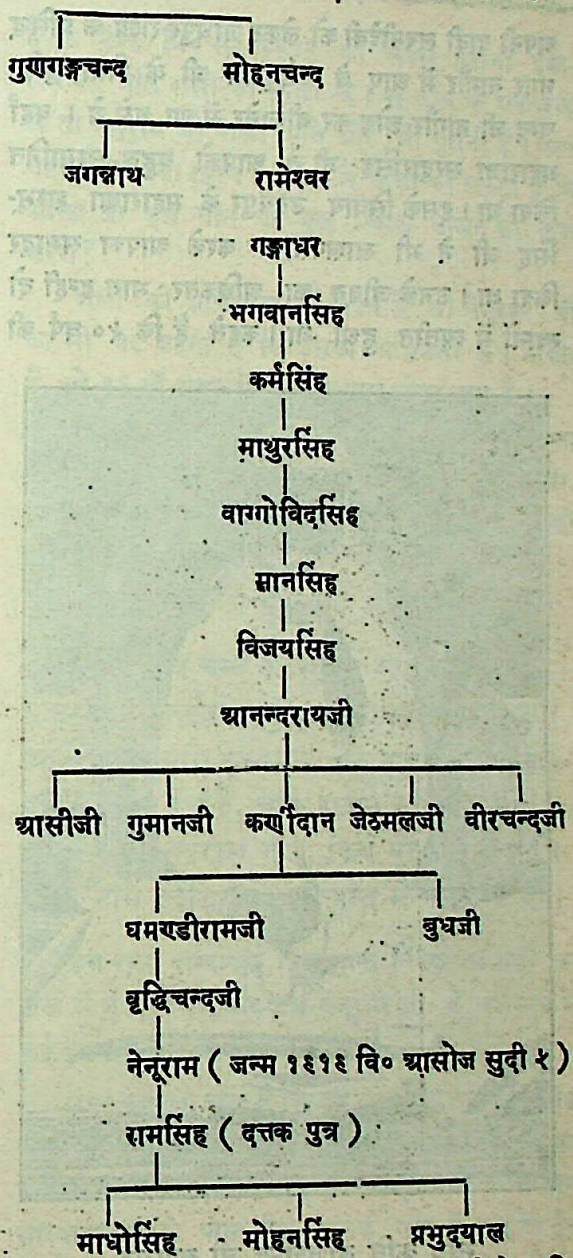

इस वंश-वृत्त को देख कर पाठकों को आश्चर्य होगा कि महाकवि सूरदास भी चन्द के वंशज थे। 'साहित्य-लहरी' से सूरदास जी का लिखा हुआ एक पद उद्धृत किया जाता है, जिसमें उन्होंने स्वयं अपने को चन्द बरदाई का वंशज बतलाया है।

नेनूराम जी ने अपने तथा अपने पिता जी के सम्बन्ध में कई बातें मुझे बतलाई हैं। उनका कहना है कि उनके पूर्व-पुरुष ग्वालियर-राज्य के अन्तर्गत एक ग्राम में रहते थे। सूरदास जी के भाई बुद्धचन्द और देवचन्द

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

अपनी दादी लक्ष्मीदेवी को लेकर जोधपुर-राज्य के प्रसिद्ध नगर नागौर में आए थे। नेनूराम जी के पिता वृद्धिचन्द जी नागौर छोड़ कर बीकानेर में आ बसे थे। वहाँ महाराजा सरदारसिंह जी ने आपको बहुत सम्मानित किया था। इसके सिवाय उदयपुर के महाराणा शम्भूसिंह जी ने भी लाखपसाव* करके आपका समादर किया था। उनके जीवन का अधिकतर भाग इन्हीं दो स्थानों में व्यतीत हुआ था। कहते हैं कि ५० वर्ष की

स्व० कवि वृद्धिचन्द जी ब्रह्मभट्ट

अवस्था में उन्होंने विवाह किया था। उनका जीवन-काल भी बड़ा लम्बा था, क्योंकि सम्वत् १९६० में १२० वर्ष की आयु में वे लोकान्तरित हुए थे। उनके नेनूराम जी से ज्ञात हुआ कि उनकी बनाई हुई कुछ रचनाएँ हैं। उनकी कविता के कुछ नमूने नीचे जाते हैं :—

कवित्त

दीपत दिकत तन दशो दिशा देश-देश,
थिरू वसुधा के मध्य स्वज्जस थटाय दे।
कर की उमङ्ग करे कवी निहाल केते,
घन अद तारों के घमण्ड हटाय दे॥
भणत कवि 'वृद्ध' जैसे चित्त की विशालता,
रामचन्द्र दिल्ल नाम जग्ग में रटाइ दे।
दानवीर बङ्का वदनेश ज्येष्ठ मालनन्द,
लागे हाथ लङ्का तौ छिन्न में लुटाइ दे॥

गीत

बाजे वेल्लाका चिमाणाँ हल्ला
किरोड़ाँ गिड़िन्द वङ्का।
तिके सामटा भणाड़ा लीधा निशङ्का
समात तोड़ घड़ाँ हाथियाँ॥
तेण गुघू सारोड़े तुही नोह तो
विड़तो छेड़े तुहीं पृथीनाथ।
अग्रास तौ घटाघोर
हाथाड़ चाबतो आयो॥
गहिन्दा गहातो सूधो धकायो
बगूड़ रुकाए दुकाड़े हाथ्याँ।
दिकी दुनाली भुकाई राँड़ें तिको
शोशो खातो चकेरा दिखायो*॥

नेनूराम जी ने भी अच्छी ख्याति कमाई है। [illegible] पुरातत्त्व-विषयक सामग्री की खोज करने का, उसे एकत्र करने का तथा उसे इतिहासज्ञों के हाथ में सौंपने का व्यसन-साह। इस समय तक न जाने कितने शिलालेखों का पता आपने लगाया है और न जाने कितने [illegible]

* लाखपसाव का अर्थ एक लाख रुपए के इनाम से है, जो भाट, चारणों को राजा-रईस देते हैं। यह पुरस्कार नकद रुपए में नहीं दिया जाता है, किन्तु हाथी, घोड़े, ऊँट, रत्न, ज़मीन व धान आदि के रूप में दिया जाता है। इन सबका मूल्य साधारणतया १५-२० हज़ार रुपए के लगभग होता है। लेकिन फिर भी यह "लाखपसाव" ही कहलाता है।

* यह एक आखेट-वर्णन से लिया गया है, और [illegible] शम्भूसिंह जी के समय की रीजेन्सी काउन्सिल के मेम्बर [illegible] वदन जी तँवर को लक्ष्य करके लिखा गया है।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

लिखित ग्रन्थों की खोज, राजपूताने की जल-शून्य मरुभूमि पर ऊँट पर चढ़ कर आपने की है। यही नहीं, मारवाड़ में प्रचलित अनेकानेक जन-श्रुतियों तथा गीतों का संग्रह भी आपने अच्छा किया है। इसमें से बहुत-कुछ मसाला आपने जोधपुर-निवासी, अपने परम मित्र स्वर्गीय मुन्शी देवीप्रसाद को सौंपा था।

सन् १९०९ में भारत के प्रसिद्ध इतिहासज्ञ महामहोपाध्याय हरप्रसाद शास्त्री वीर-गाथाओं तथा वीर-काल सम्बन्धी शिला-लेखों की खोज में राजपूताने का भ्रमण करने निकले थे। शास्त्री जी को नेनूराम जी ने बड़ी सहायता दी थी। कहते हैं कि वे नेनूराम जी की इस बात पर बड़े चकित हुए थे कि जहाँ कहीं पहाड़ों पर अथवा किसी प्राचीन इमारत में वे पहुँचते थे, वहीं एक न एक लेख वे अवश्य ढूँढ़ निकालते थे। जोधपुर से लौटते समय हरप्रसाद जी शास्त्री नेनूराम जी को अपने साथ कलकत्ते ले गए थे। वहाँ उन्होंने भट्ट जी के कई व्याख्यान रासो पर करवाए थे और कई बार अनुरोध करके उनसे रासो के छन्दों का विधिवत् गायन करवाया था। मैंने भी कई बार उनसे रासो सुना है। जिस समय वे वीर-रस के पद्य पढ़ते हैं तो सुनने वालों के रोंगटे खड़े हो जाते हैं और स्वयं उनके मस्तक पर पसीने की बूँदें झलकने लगती हैं।

नेनूराम जी के पास रासो की दो प्रतियाँ भी हैं। मैंने दोनों को देखा है। एक प्रतिलिपि तो काग़ज़, स्याही तथा अक्षरों को देखते हुए काफ़ी पुरानी ज्ञात होती है। उसे वे चन्द के पुत्र झल्ल-कृत बतलाते हैं। क्योंकि जैसी कि परम्परा से यह जन-श्रुति चली आई है, जब चन्द वरदाई महाराजा पृथ्वीराज के साथ चले थे तब उन्होंने रासो का अपूर्ण अंश अपने पुत्र झल्ल को पूरा करने के उद्देश्य से सौंपा था। अस्तु, प्रतिलिपि, जैसा कि नीचे दिए हुए लेख से ज्ञात होगा, जो उसी में मिलता है, सम्बत् १४५५ में की गई थी :—

"सम्बत् १४५५ वरषे शरदऋतौ आश्विनमासे शुक्लपक्षे उदयातघटी १६ चतुरथी दिवसे लिषतं। श्री षरतरगच्छाधिराजेः पण्डित श्री० रूप जी लिषतं। चेलः श्री० सोभाजीरा। कपासनमध्ये लिपिकृतं।"

श्री० गौरीशङ्कर जी ओझा ने 'काशी नागरी प्रचारिणी पत्रिका' (भाग १०, अङ्क १-२) में प्रकाशित अपने 'पृथ्वीराज-रासो का निर्माण-काल' शीर्षक लेख में लिखा है कि उन्हें वि० सं० १६४२ की सबसे पुरानी हस्तलिखित प्रति रासो की मिली है। पर ऊपर के अवतरण से तो नेनूराम जी वाली प्रति और भी पुरानी है। पता नहीं, इसमें क्या रहस्य है। क्या मैं आशा कर सकता हूँ कि ओझा जी इस बात पर कुछ प्रकाश डालने की कृपा करेंगे?

रासो की प्राचीनता के विषय में तो नेनूराम जी का भी यह कहना है कि उसका अधिकतर अंश प्रक्षिप्त है, जो १६ वीं शताब्दी के आस-पास जोड़ा गया है।

रही यह बात कि उसका कितना अंश चन्द का लिखा है और कहाँ तक झल्ल ने उसके बनाने में योग दिया, इसके विषय में भट्ट जी ने मुझे अपनी झल्ल-कृत रासो की प्रति में ये पद्य दिखाए थे :—

दोहा

दहति पुत्र कवि चन्द के, सुन्दर रूप सुजान।
एक झल्ल गुणबावरो, गुण समन्द सखिमान॥ १॥
आदि अन्त लगि भ्रन्तमन, बनि गुरनी गुनराज।
पुस्तक झल्लन हत्त दे, चलि राजन कविराज॥ २॥
उभै* सत्त नवरस्स गुण, किय पूरन गुरुतन्त।
रासौ नाम उदद्धियुत, गदौ मन्त मन सन्त॥ ३॥

इस रासो सम्बन्धी विवादग्रस्त विषय को यहाँ इस लेख में न छेड़ कर, अब हम नेनूराम जी के सम्बन्ध में कई अन्य बातों का उल्लेख करेंगे।

ऊपर कहा जा चुका है कि भट्ट जी को पुरातत्व-विषयक खोज की पूरी धुन है। इस प्रसङ्ग में उस शिला-लेख का उल्लेख करना आवश्यक है, जोकि सन् १९०९ के लगभग मारवाड़पाली के पास बीठू नामक गाँव में उन्होंने ढूँढ़ निकाला था। उसकी नक़ल इण्डियन एण्टिक्वेरी, जिल्द ४०, पृष्ठ १४१ में निकल चुकी है। इस शिला-लेख से मारवाड़-राज्य की नींव डालने वाले राव सीहाजी राठौड़ का पाली आने का समय निर्धारित हो जाता है। क्योंकि उस लेख में लिखा है कि सम्बत् १३३० में यवनों से युद्ध करते हुए राव सीहाजी ने वीर-गति प्राप्त की थी। इसकी पुष्टि पाली के आस-पास लोगों में प्रचलित निम्नलिखित पंक्तियों से हो जाती है :—

* उभै = २, सत्त = ७, नवरस = ९ = २+७; गुण = ३ = २१

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

दोहा

तेरह सौ तीस † में घणो रच्यो घमसान।
पाली छोड़ पधार्‌या पालीवान पिछमान॥
बारह सो बाराणबे † माया हदमाणी।
बीता बरस छत्तीस यों जुग सारे जाणी॥
नसूदीन नसीद ने फोजा फरराणी।
हिन्दू मलेछ भेड़ा होय ने मूछाँ हदताणी॥

मिले हुए शिला-लेख से सीहाजी के मृत्यु-सम्बन्ध का पता चलता है, और ऊपर दिए दूसरे पद से यह ज्ञात होता है कि १२९२ के लगभग नसीरुद्दीन और सीहाजी राठौड़ के बीच घोर युद्ध छिड़ा। एवं यह मत निश्चित कर सकते हैं कि शायद १२९२ या उसके इधर-उधर सीहाजी कन्नौज की तरफ़ से पाली में आए होंगे। अतएव उपर्युक्त शिला-लेख की खोज का तथा मारवाड़-राज्य के इतिहास की आदि शृङ्खला का पता लगाने का श्रेय ब्रह्मभट्ट नेनूराम जी को ही है।

यही नहीं, नेनूराम जी ने मारवाड़ के बाहर भी ऐतिहासिक सामग्री की खोज में उड़ीसा, भूटान तथा मानसरोवर तक दौड़ लगाई है। मुर्शिदाबाद-निवासी प्रसिद्ध जैन-विद्वान् श्रीयुत पूरणचन्द जी नाहर के साथ-साथ आप उस लम्बी यात्रा पर गए थे, और उन्हें जैन शिला-लेख संग्रह करने में बड़ी सहायता दी थी।

सन् १९०९ में, जब भारतीय पुरातत्व-विभाग के अध्यक्ष सर जॉन मार्शल (Sir John Marshall) जोधपुर आए थे तो उनके साथ डॉक्टर भाण्डारकर भी थे। उन्हें नेनूराम जी ने जोधपुर के आस-पास के समस्त ऐतिहासिक स्थल दिखाए थे और उन्हें बहुत सी बातें बतलाई थीं। इसका उल्लेख मार्शल साहब ने इन शब्दों में किया है :—

". . . Mr. Bhandarkar tells me that Brahmabhatta Nanoo Ram Jee has been of great assistance to him in collecting information about the antiquities in and around Jodhpur. . . . He has quite a remarkable knowledge of the subject."

मुझे नेनूराम जी ने स्वामी दयानन्द जी सरस्वती के विषय में भी कई बातें बतलाई हैं। इस लेख वाचकों को यह जान कर कुतूहल होगा कि नेनूराम उन तीन मुख्य जोधपुर-निवासी सज्जनों में से एक जो स्वामी जी को अजमेर से लेने गए थे। अन्य सज्जनों के नाम ऊमरदान जी तथा मास्टर दामोदर जी थे। ऊमरदान जी कवि थे। उनकी कविता का छप चुका है।

पण्डित नेनूराम जी ब्रह्मभट्ट

[महाकवि चन्द बरदाई के वर्तमान वंशधर]

इसके सिवाय जितने दिन स्वामी जी जोधपुर रहे, उतने दिन नेनूराम जी निरन्तर उनकी सेवा में उनके पास रहे। स्वामी जी के बल-पौरुष, उनकी निर्भीकता, उनकी वाग्मिता का सजीव चित्र भट्ट जी ने मुझे अपने शब्दों में दिया है। उनकी आँखों देखी है कि प्रातःकाल उठ कर तीन-चार मील तक बड़े वेग से चाल से वे बाहर जङ्गल में निकल जाया करते थे। व्यायाम करके वापस आते थे और कम से कम

† यह दोनों अवतरण 'पलीवाल परीक्षा' नामक हस्त-लिखित पुस्तक में मिलते हैं, जो १३०० में लिखी गई थी।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

तीन सेर दूध पी जाते थे। भोजन करते समय इसी परिमाण में वे हरे शाक खाते थे।

उनकी साधारण बोल-चाल की ध्वनि ऐसी गम्भीर और उच्च होती थी कि दूर से सुनाई देती थी। जब कभी सभा में वक्तृता देने खड़े होते तो लोग मन्त्र-मुग्ध से हो जाते। उनकी भाषा ऐसी जानदार होती, उनके बोलने की शैली ऐसी चुटीली होती कि जब चाहते श्रोताओं की आँखें आँसुओं से भर देते और कभी उन्हें हँसा देते। भट्ट जी का कहना है कि एक बार किसी व्याख्यान के बीच में स्वामी जी ने क़ुरानशरीफ़ से कुछ आयतें पढ़ीं। उनका उच्चारण स्वामी जी ने ऐसे अच्छे ढङ्ग से किया कि कई मुसलमान श्रोता यह चिल्ला उठे कि 'यह साक्षात् ख़ुदा का अवतार है।'

स्वामी जी के साथ जोधपुर-निवासी कई आततायी लोगों ने जो कुत्सित व्यवहार किया और उनकी जीवन-लीला का अन्त इतने शीघ्र कराया, उसके सम्बन्ध की घटना को इस लेख में दुहराना अनुचित होगा। केवल इतना कहना काफ़ी होगा कि इन दुष्टों में से एक का नाम कलिया था, जिसने एक दूसरे माली से मिल कर प्रसिद्ध वेश्या नन्हींजान के प्रोत्साहन से स्वामी जी को दूध के साथ विष पिला दिया था।

नेनूराम जी उस समय का पूरा वृत्तान्त देते हैं, जब स्वामी जी को आभास होने लगा था कि उन्हें विष दिया गया है। वे स्वामी जी के साथ-साथ आबू होते हुए अजमेर तक गए थे, जब विष-पान से अस्वस्थ हो जाने पर वे जोधपुर से प्रस्थान कर चुके थे।

उपसंहार में हम यह कहे बिना नहीं रह सकते कि नेनूराम जी, जिन्होंने इतनी ऐतिहासिक सामग्री इतने परिश्रम से एकत्रित करके इतिहासकारों के सम्मुख उपस्थित की है और जिन्होंने स्वामी दयानन्द ऐसे अवतारी पुरुषों का सत्सङ्ग किया है, वे स्वयं ऐतिहासिक जीव हैं। वे महाकवि चन्द के वंशधर होने के कारण उनके सजीव स्मारक हैं, जिनके दर्शन से तथा जिनके साथ वार्त्तालाप करने से हृदय में अद्भुत भाव उत्पन्न होते हैं। यह लेख इसी उद्देश्य से लिखा गया है कि जिससे इसे पढ़ कर हिन्दी-वाचकों का ध्यान इन चन्द बरदाई के वंशज की ओर आकृष्ट हो।

चेतावनी

[श्री० देवीप्रसाद जी गुप्त, 'कुसुमाकर' बी० ए०, एल्-एल्० बी०]

करो विधवाओं का उद्धार !
खो दोगे तुम उन्हें, करोगे यदि अब अत्याचार !

छोड़ो अब अगली बातों को,
समझो दुनिया की घातों को,
उन्हें विधर्मी खींच रहे हैं, अब भी हो होशयार !
दो करोड़ हिन्दू-विधवाएँ,
यदि उनमें जाकर मिल जाएँ,
निश्चय है हिन्दू-समाज का, कर देंगी संहार !

कहा करो तुम उनके मन का,
पुनर्विवाह करो तुम उनका,
उनको तुम लाचार करो मत, करने को व्यभिचार !
अब भी चेतो उन्हें सम्हालो,
छोड़ न जाएँ, गले लगा लो,
इसमें है कल्याण तुम्हारा, उनका है उद्धार !

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

कलकत्ते का सामाजिक जीवन

['एक बागड़ी']

दिल्ली के लम्बे-चौड़े प्लेटफ़ॉर्मों पर देखने से पता चलेगा कि मारवाड़ी भाई कितनी अधिक संख्या में कलकत्ते आते हैं। क़रीब-क़रीब आधा बीकानेर यहाँ आकर व्यवसाय करता है। यह ठीक-ठीक पता नहीं चलता कि सबसे पहले बीकानेर जैसे दूर देश के लोग कलकत्ते में कैसे और कब आए, परन्तु ऐसी धारणा है कि कुछ चीनी लोग बीकानेर की तरफ़ अफ़ीम आदि ख़रीदने गए और केवल व्यापार करने के लालच से वे लोग उन चीनियों के साथ कलकत्ते चले आए। यहाँ आकर इन लोगों ने व्यापार शुरू किया। जब कुछ धन कमा कर ये अपने घर वापस लौटे तो अन्य लोगों की भी इच्छा इधर झुकी और फिर धीरे-धीरे बीकानेर जैसे देश का कलकत्ते से एक अक्षय सम्बन्ध हो गया। यहाँ आने पर फिर तो उन्होंने और-और व्यापार भी शुरू किए और ग़रीब लोग लखपती बन कर कलकत्ते के धनी व्यापारी गिने जाने लगे। कलकत्ते में आज दिन जो लखपती सेठ हैं, उनमें से अधिकांश की यह सम्पन्नता इधर २० वर्षों के अन्दर ही अन्दर की है। किसी ने आकर २० रुपए पर नौकरी की थी—किसी ने १५ पर; और कोई १००-२०० रुपए का छोटा सा कारबार करते थे। धीरे-धीरे उन्होंने व्यापार किया। भाग्य से महायुद्ध शुरू हुआ और इसी अवसर पर इन लोगों ने व्यापार करके बहुत रुपया कमा लिया। आज, बीस वर्ष पहले के ग़रीब बीकानेरी, कलकत्ते के लखपती सेठ कहे जाते हैं। इनके मकान बहुत बड़े-बड़े ५-६ मञ्ज़िले बने हैं, जिनमें कई परिवार सुविधापूर्वक रह सकते हैं। यह मकान लोहे के गटर के सहारे पर बने हैं, इसी से इतने ऊँचे होने पर भी जल्दी ही गिर पड़ने का डर नहीं है। इनके कारबार का स्थान इनकी गद्दी होती है। एक-एक बिल्डिङ्ग में ५०-६० गद्दी भिन्न-भिन्न फ़र्मों की होती हैं। प्रत्येक फ़र्म का नाम दो व्यक्तियों के नाम पर होता है, पिता-पुत्र अथवा साझी के नाम पर। जैसे वीरभान [illegible] चन्द। यदि दो नाम पर फ़र्म का नाम न रक्खा [illegible] तो लेन-देन गड़बड़ में पड़ जाती है। गद्दी में दो [illegible] उन पर चाँदनी, तकिये, २-३ मसनद, एक तिजोरी [illegible] बही-खाते वग़ैरा होते हैं। सामान थोड़ा ही होता है [illegible] दलालों के ज़रिए हज़ारों की ख़रीद और बिक्री मुँहज़ [illegible] ही रोज़ मिति होती रहती है, और बही में सब [illegible] लिखा रहता है। सट्टा और फाटका इनका मुख्य [illegible] है। जूट और हैशियन के भाव मिनट-मिनट पर खुलते [illegible] हैं—अमेरिकन तारों के आधार पर। व्यापारी मुँहज़ [illegible] उसे ख़रीदते हैं, बेचते हैं और नफ़ा-नुक़सान [illegible] लेते हैं। प्रत्येक सोमवार को सबका हिसाब चुक्ता [illegible] दिया जाता है। इसी में लोग दिवालिए भी बनते हैं [illegible] धनी भी। बम्बई में तो रूई का व्यापार ज़ोरों पर [illegible] है, पर यहाँ जूट और हैशियन ख़ूब होता है। कलकत्ते [illegible] में रॉयल एक्सचेञ्ज प्लेस इस व्यापार का मुख्य [illegible] १० बजे से ५ बजे तक मोटर गाड़ियों की भीड़, [illegible] की भीड़, चपरासियों का आना-जाना बहुत ही [illegible] लगता है।

इसके अलावा इनके हाथ में कपड़े का व्यापार [illegible] है, और उन बाज़ारों में सारे दिन सौदे होते रहते [illegible] जिन लोगों का काम जम गया है उनकी ५-६ जगह [illegible] होती हैं और वे बड़े व्यापारी गिने जाते हैं। [illegible] रुपया कमा कर वे अपना लक्ष्य पूर्ण समझते हैं। [illegible] और भी अधिक रुपया होता है तो दो-चार मकान [illegible] डालते हैं, जिनका किराया ३-४ हज़ार रुपया [illegible] होता है। हैरिसन रोड के चीतपुर मोड़ पर एक [illegible] बाँगड़ बिल्डिङ्ग है। इसमें घूम आना आसान [illegible] है। चढ़ते-चढ़ते साँस फूल जाती है। इसी अकेली [illegible] का ३ हज़ार के लगभग महीने में किराया आता [illegible] इसमें कमेटी के नलों के भरोसे न रह कर, एक [illegible] जिसमें से पानी पम्प द्वारा खींच कर सर्वत्र लगे [illegible]

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

जाता है। बेतार का तार भी इसमें लगा है। व्यापारियों के प्रत्येक सुभीते का इसमें प्रबन्ध है और इसमें कोई १००-१२५ गद्दियाँ हैं। ऐसी ही और भी बड़ी-बड़ी इमारतें मारवाड़ियों के वैभव को बढ़ाती हैं।

जो परिवार कलकत्ते में बढ़ गए हैं और जिनकी काफ़ी जायदाद और कारबार यहाँ फैल गया है, वे ब्याह-शादी भी यहीं करते हैं, पर जो अकेले अथवा छोटे परिवार के साथ यहाँ रहते हैं वे ब्याह आदि करने अपने देश जाते हैं।

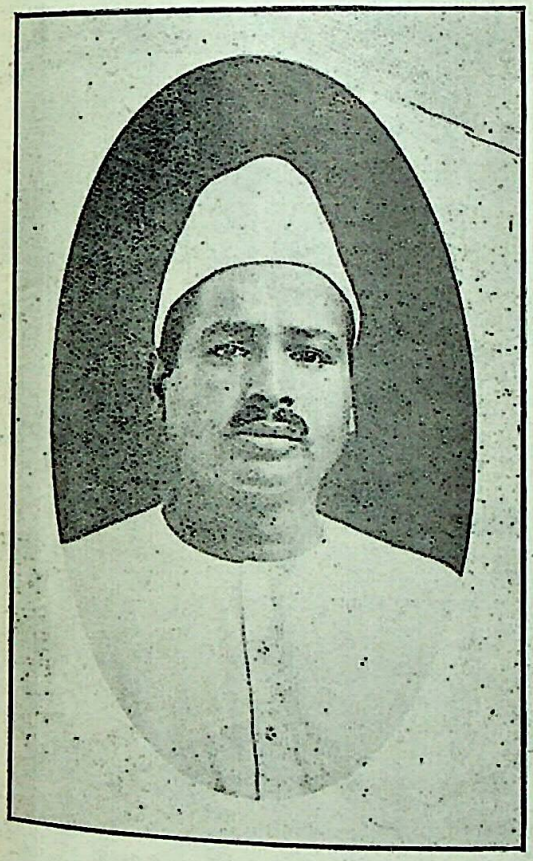

राजस्थानी नवजीवन-मण्डल के प्रधान मन्त्री और सुधारक
बाबू बसन्तलाल जी मुरारका

देश जाते समय की इनकी सपरिवार यात्रा कौतूहलप्रद होती है। कलकत्ते से ये जिस डब्बे में बैठेंगे, उसमें केवल मारवाड़ियों को ही बैठाने की उनकी पूरी चेष्टा होती है, अन्य यात्रियों को नहीं। डब्बे की खिड़कियों में, जिधर स्त्रियाँ और बच्चे बैठते हैं, रस्सी का बाँध लगा देते हैं, ताकि बच्चे खिड़की में से झाँकते समय नीचे न गिर पड़ें। स्त्रियों की तो दशा बहुत ही दयाप्रद होती है। बेचारी घूँघट खींचे एक ही स्थान पर जमी बैठी रहेंगी। भोजन भी करना होगा तो घूँघट के अन्दर ही अन्दर! प्रायः ऐसा देखा गया है कि बेचारी दो-चार ग्रास खाकर ही पानी पी लेती हैं और भरपेट भोजन शर्म के मारे नहीं कर पातीं! दूसरी बात इससे भी ग़ज़ब की यह है कि वे क़रीब-क़रीब दिन में तो शौच अथवा मूत्रादि के लिए उठतीं ही नहीं। रात्रि में भाग्य से सब सो जायँ तो शायद वे उससे निबटें। ऐसे कष्ट सह लेने का कारण है—कुछ तो लज्जा और कुछ उनका पहनावा। यदि लहँगा पहने हों तो उसे सँभालना और जिसमें भी घूँघट में। भीड़-भाड़ में भीड़ से बचें अथवा लहँगे के घूम-घाम को बचावें। यदि लहँगा न हो, साड़ी ही हो, तो बहुत बारीक कपड़े की होती है, जिसे यात्रा में पहनना सर्वथा अनुचित है। ग़रज़ यह कि पाख़ाने तक पहुँचने के लिए काफ़ी साहस और समेटने की आवश्यकता होती है, जिसे वे बहिनें नहीं कर सकतीं और लाचार होकर सारे दिन एक ही स्थान पर पार्सल की तरह बैठी रहती हैं। यदि दुर्भाग्य से बच्चे टट्टी फिर दें, तब तो बेचारियों को उठना ही पड़ता है और लाचारी हालत में उसे जाकर धुलाना और फिर अपने भी हाथ-पैर धोना पड़ता है। साथी यात्री इस दृश्य पर मुस्कराए बिना नहीं रहते।

ख़ैर, यह तो हुई रेल में बैठने की बात। दूसरी आफ़त जो उन्हें सफ़र में आती है, वह है क़ुलियों का पञ्जा। क़ुली, टिकट-चेकर, कलेक्टर—सभी उन्हें सुभीते का लालच देकर २-४ रुपए बना ही लेते हैं। क़ुली तो ख़ूब ही बनाते हैं। गाड़ी खड़ी होगी २ नम्बर पर, तो बतलाएँगे १० नम्बर चलना पड़ेगा सेठ जी! और फिर उसमें बैठाना। १० रुपए से कम का काम नहीं है। सेठ जी बेचारे तुन-तुन करने के बाद १० ही देते हैं—बल्कि और भी दो-चार। इसके साथ-साथ यह भी बात है कि इनका असबाब भी बहुत होता है। दो-चार खाने के बक्स और दो-चार कपड़ों के; दो-चार गाँठें तथा फुटकर चीज़ें—कम से कम १३ जगह असबाब होता है। क़ुली लोग भी, मारवाड़ी-यात्रियों की ही आशा लगाए रहते हैं। अन्त में बड़ी कठिनाई झेलते हुए बेचारे मारवाड़ी-परिवार अपने देश में पहुँच पाते हैं।

कभी-कभी ऐसा होता है कि सेठ जी को व्यापार से फ़ुरसत नहीं होती, और यदि सेठानी जी को देश जाना

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

ज़रूरी हो जाय अथवा कोई विधवा सेठानी ही हों और उन्हें देश जाना हो तो वे एक नौकर को साथ लेकर देश चल पड़ेंगी। उनके सम्बन्धी प्रायः इस विषय में कोई आपत्ति नहीं करते। रेलों में प्रायः देखा ही जाता है कि नौकर के साथ सेठानी देश जाती हैं। अब वह नौकर उस समय उनका कौन होता है? एकमात्र साथी। और उस साथी को वे किसी प्रकार भी तकलीफ़ नहीं सहने दे सकतीं। जैसा आप खायँगी वैसा ही उसे देंगी, बल्कि पहले उसे जिमा देंगी तब आप खायँगी। जैसे-जैसे नौकर कहेगा, उन्हें उसी प्रकार करते जाना पड़ेगा। और कभी-कभी जो दुर्घटनाएँ रास्ते में घटती हैं, वह छिपी नहीं हैं। यहाँ तक सुनने में आया है कि घर में जो वादा नौकर से हो जाता है, उसे रास्ते में किसी जगह उतर कर एकाध दिन धर्मशाला में ठहर कर पूरा कर दिया जाता है, और तब आगे देश को बढ़ती हैं।

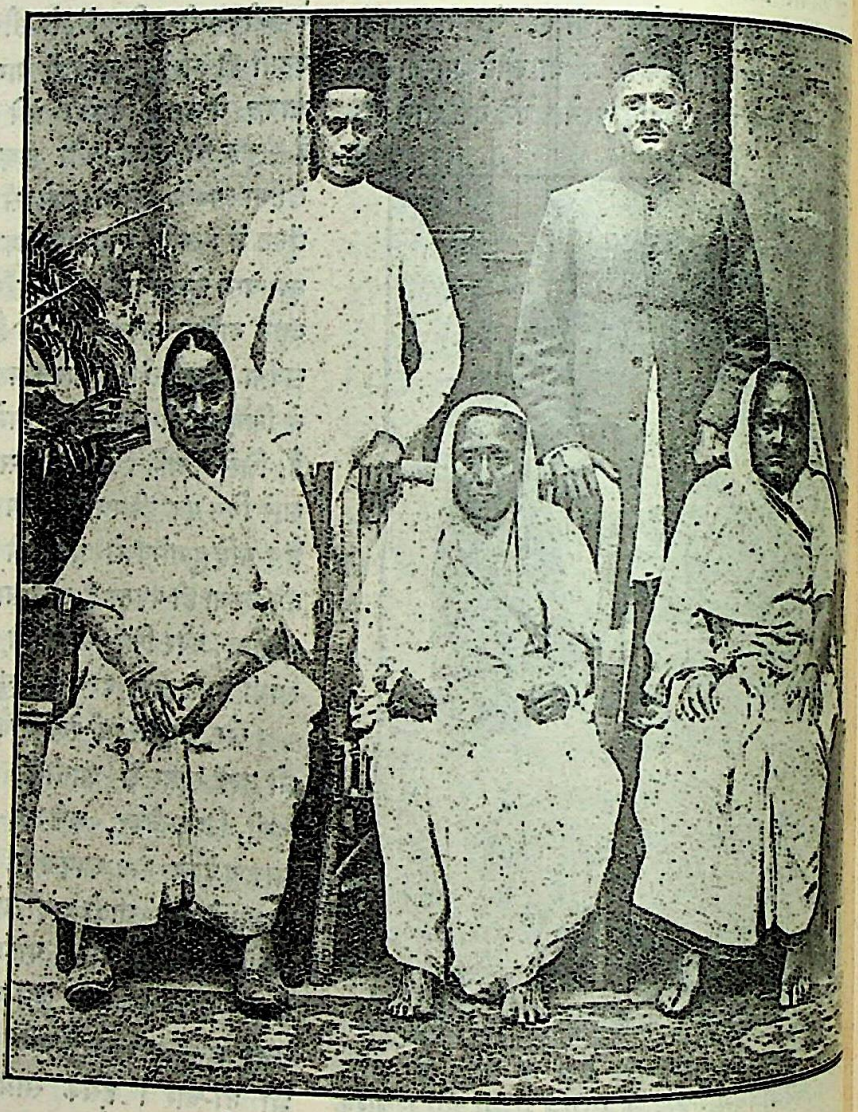

श्री० बालकृष्ण जी मोहता (सपरिवार)

[कलकत्ते के सर्व-प्रथम वीर, जिन्होंने पर्दा-प्रथा को तोड़ा और अब भी उसी प्रथा में लगे हैं। आप अपनी धर्म-पत्नी सहित जिस मनोयोग से सामाजिक सुधार का कार्य कर रहे हैं, वह सर्वथा स्तुत्य है।]

कलकत्ते में उनका घरू जीवन भी एक विचित्र चीज़ होता है। पुरुष रात-दिन व्यापार में रहते हैं। अनेक अपना भोजन तक गद्दी पर ही खा लेते हैं। घर में स्त्रियाँ सारे दिन व्यर्थ कामों में रहती हैं। बहुत सवेरे—अँधेरे में ही उठती हैं। गङ्गा-स्नान को गईं अथवा घर पर ही नहा लीं। नहा-धोकर अच्छे-अच्छे कपड़े पहन कर मन्दिर जाती हैं। मन्दिर के पट खुलने में देर हुई तो वहीं प्रतीक्षा में बैठी रहती हैं। किसी किसी मन्दिर में भागवत-कथा बँचती है, उसे सुनने लगती हैं। जब पट खुलता है तो दौड़ कर दर्शन कर लेती हैं और आस पास में जितने भी मन्दिर होते हैं, सब में दर्शन कर जाती हैं और क़रीब-क़रीब तीन घण्टे बाद अपने घर पहुँचती हैं। मन्दिरों में ५ बार पट खुलता है। और कोई भगतिनें तो पाँचों बार दर्शन करने जाती हैं। अधिकतर सवेरे और दिन छिपे—दो ही समय

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

करती हैं। केवल दर्शन करने और गङ्गा-स्नान में उनके चार घण्टे के लगभग लग जाते हैं। घर आकर रोटी बनाई और खा-पीकर आराम किया। कहीं आना-जाना हुआ तो वहाँ गईं अथवा घर पर ही रहीं और आपस की चक-चक अथवा सीने-पिरोने में दिन बिता दिया। पर सीना-पिरोना बहुत कम होता है, अक्सर उनका समय व्यर्थ ही नष्ट होता है। शाम हुई, रोटी बनाई और

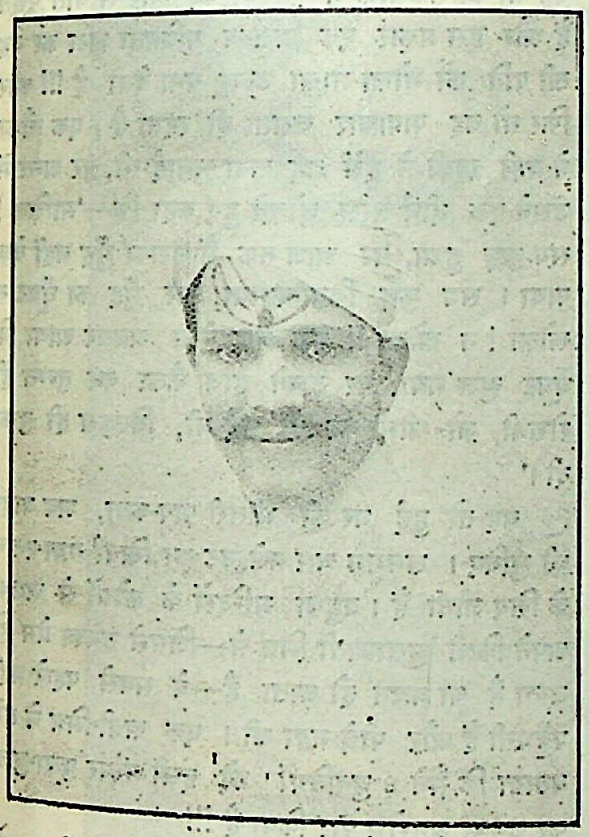

बाबू शिवकिशन जी भट्ट

[कलकत्ते की सुप्रसिद्ध फ़र्म, सर सरूपचन्द-हुक्मचन्द के मैनेजर—आप स्वतन्त्र विचार के सुधारक हैं।]

मन्दिर में चल दीं। वहाँ से आईं और ज़रूरी काम करके सो गईं। बस यही इनकी दिनचर्या होती है। इस हालत में वे सुधार-जैसी गहरी उलझन को कभी नहीं सुलझा सकतीं। लड़कियाँ तो अपना समय और भी अधिक व्यर्थ, सारहीन बातों में नष्ट करती हैं और उसका फल यह होता है कि वे रोगी और अशिक्षित स्त्रियाँ बनती हैं। बड़े घर की लड़कियाँ तो खेल-कूद और अपने बाल अथवा वृद्ध-पतियों की थोथी बातचीत और कल्पना में अपना दिन व्यतीत करती हैं। अब तो कुछ अच्छा भी है कि कन्याओं के लिए विद्यालय खुल गए हैं, पर उसमें छोटी-छोटी बालिकाएँ ही शिक्षा पाती हैं, बड़ी लड़कियाँ नहीं जा सकतीं। इस रीति द्वारा कोई भी कन्या पूर्ण शिक्षिता नहीं बन सकती।

बड़े और धनी मारवाड़ी-परिवारों की तो चर्चा ही क्या, उन्हें बढ़िया भोजन, बहुमूल्य कपड़े और जवाहराती गहने भरपेट मिल जाते हैं। आने-जाने के लिए मोटर तैयार रहती है, और यदि उन्हें परदा न रखना पड़े तो उन्हीं के इच्छित शब्दों में वे पूर्ण सुखी हैं। पर छोटे और ग़रीब परिवारों की दशा बहुत ही करुणा-जनक है। गन्दे, मैले, सड़ियल मकान की एक-दो कोठरी किराए पर लेकर वे रहते हैं। एक एक बिल्डिङ्ग में १५-१६ परिवार बसते हैं। उसी में एक स्थान पर सबके सम्मिलित २-३ नल और २-३ पाख़ाने होते हैं। बेचारे अपने-अपने नम्बर से शौचादि से निबटते हैं। पुरुष प्रायः दलाली का काम करते हैं और सवेरे से निकल कर रात को ८-९ बजे मकान वापस लौटते हैं। ३-४ रुपए जो कमा लाते हैं, वही उनकी जीविका है। इसी दलाली में किसी-किसी साल दो-तीन लाख रुपया वे पा जाते हैं। ५-६ महीने में सब कुछ चला जाता है और फिर ज्यों के त्यों रह जाते हैं। ऐसे परिवार दुखी और भारयुक्त होते हैं। उन्हें अपने जीवन से कोई प्रसन्नता नहीं होती और उनके बच्चे या तो वही करते हैं अथवा कहीं नौकरी करते हैं।

मारवाड़ी-युवक नौकरी करते बहुत थोड़ी संख्या में मिलते हैं। उनका ध्येय तो व्यापार होता है और उस व्यापार को भी उन्होंने सट्टा और फाटका में बदल डाला है। इसी की बदौलत कई लखपती सेठ भी अपने को दिल ठोक कर हमेशा को लखपती नहीं कह सकता। सारांश यह कि स्त्रियाँ घर में बहुत समय तक बिना पुरुषों के रहती हैं—सो भी रात के दस-दस, बारह-बारह बजे तक। पुरुष अपने काम में इतने व्यस्त होते हैं कि वे काफ़ी थके हुए घर लौटते हैं। नव-विवाहित लड़के और युवक भी सैर-सपाटा करके रात होने पर ही घर सोने के लिए आते हैं। अब जो युवतियाँ उमङ्ग-भरी होती हैं और जिनके पति घोर

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

प्रतीक्षा दिखाने के बाद भी उन्हें प्रसन्न नहीं कर सकते, वे एक उत्तम कौशल रचती हैं। उनके घरों में जो नौकर होते हैं, उनमें से जो सबसे अच्छा होता है उसे वे चुन लेती हैं और उससे अपना काम अधिक कराने लगती हैं। काम करने से वह दुखी हो तो उसे अच्छा-अच्छा भोजन देने का लालच देती हैं और फिर देने भी लगती हैं। पूरी-मिठाई, घी-भरे शाक आदि-आदि उसे चुपचाप खिलाने लगती हैं। १५-२० दिन की चराई के बाद वह नौकर निखर जाता है। अब वे उसे छेड़ने

अपनी सुधार-प्रियता के अपराध के कारण
मारवाड़ी-समाज से बहिष्कृत
श्री० बासुदेव जी सर्राफ़
(आजकल आप विलायत में हैं)

लगती हैं। ३-४ दिन तक यह भी करने पर अब वे अवसर देखती हैं। किसी भी समय अवसर मिला तो झट पैर में दर्द का बहाना करके लेट जाती हैं और नौकर को पैर में तेल मलने की आज्ञा करती हैं। नौकर तेल मलता है, और घुटने तक नौबत आ जाती है। जब घुटने तक बात पहुँची तो वे मुस्करा कर कहती हैं—अरे देखो नहीं—गुदगुदी होती है। बस यह मुस्कराना दोनों की स्वीकृति होती है और नौकर को एक दुर्लभ चीज़ मिल जाती है !!! सब कुछ हो चुकने पर नौकर चला जाता है और सेठानी जी और भी अधिक दर्द का बहाना बना कर वहीं पड़ी रहती हैं। रात को पति आते हैं तो बहू जी को तकलीफ़ में देख कर बड़े प्यार से बातें पूछते हैं और इस प्रकार एक अलभ्य पवित्रता लुटा कर स्त्री पति को भोला-भाला उल्लू बना देती है !!! और फिर तो वह पापाचार चलता ही रहता है। एक नौकर ने बड़ी ख़ूबी से हमें यह कथा सुनाई थी, पर अन्त में उसने एक दीर्घ साँस छोड़ते हुए कहा कि—'मालिक! सब कुछ हुआ, पर आज तक मैं उसका मुँह नहीं देख पाया। सब कुछ किया-कराया, पर मुँह का घूँघट न खोला ! न खोला !! एक बार ऐसा अवसर आया कि घूँघट खुल गया, पर उसने हाथ फैला कर तुरन्त ही रोशनी, जो धीमी कर दी गई थी, बिल्कुल ही बुझा दी।'

यह तो हुई घर की भीतरी पाप-कथा, अब बाहर की सुनिए। लगभग चार बजे उठ कर स्त्रियाँ गङ्गा-स्नान के लिए जाती हैं। बहुधा मन्दिरों के लोगों से अथवा अपने किसी मुलाक़ाती मित्र से—जिससे उनका प्रेम हो जाता है या वचन हो जाता है—वे सबसे पहले वहाँ पहुँचती हैं और पीछे गङ्गा जी। एक खत्री-मित्र ने हमें बताया कि मैंने ४ युवतियों को इसी प्रकार बुला-बुला कर उनका अनुरोध पूरा किया है !!!

अभी कोई १२ दिन हुए कि चार स्त्रियाँ बड़े बाज़ार के रास्ते से गङ्गा-स्नान को जा रही थीं। काफ़ी अँधेरा था। जब वे एक सुनसान स्थान पर पहुँचीं तो वहाँ चार आदमी बैठे थे। स्त्रियों को देखते ही वे उठ खड़े हुए और अनायास ही चारों ने एक-एक को पकड़ लिया। और उनके × × × × सबसे अधिक आश्चर्य तो यह था कि स्त्रियाँ चिल्लाईं नहीं। उधर से कुछ लोग भी गङ्गा-स्नान को जा रहे थे। उन्हें देख कर उन चारों पुरुषों ने स्त्रियों को छोड़ दिया और लम्बे क़दम रखते हुए एक गली में जा दाख़िल हुए। उस दिन यह बात दो-चार मारवाड़ियों में फैली, पर अपना ही मुँह काला

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

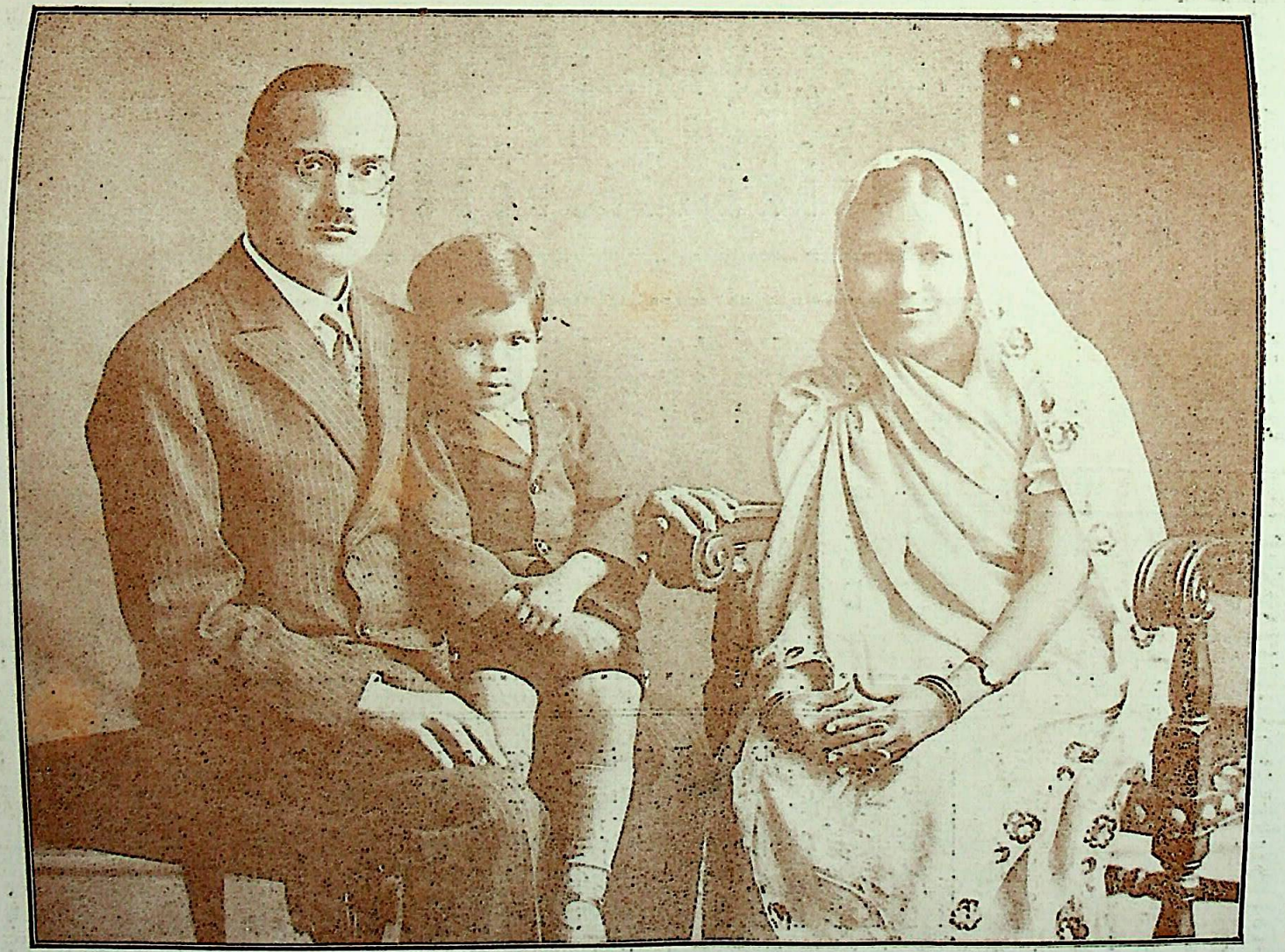

धर्मपत्नी सहित सर्व-प्रथम यूरोप-यात्रा करने वाले कलकत्ता के सुप्रसिद्ध सुधारक

श्रीयुत बाबू देवीप्रसाद जी खेतान

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

मनोहर
ऐतिहासिक कहानियाँ

[लेखक—अध्यापक श्री० ज़हूरबख़्श जी 'हिन्दी-कोविद']

इस पुस्तक में पूर्वीय और पाश्चात्य, हिन्दू और मुसलमान स्त्री-पुरुष—सभी के आदर्श छोटी-छोटी कहानियों द्वारा उपस्थित किए गए हैं, जिससे बालक-बालिकाओं के हृदय पर छुटपन ही से दयालुता, परोपकारिता, मित्रता, सचाई और पवित्रता आदि सद्गुणों के बीज अङ्कुरित करके उनके नैतिक जीवन को महान्, पवित्र और उज्ज्वल बनाया जा सके !

इस पुस्तक का सभी कहानियाँ शिक्षाप्रद, और ऐसी हैं कि उनसे बालक-बालिकाएँ, स्त्री-पुरुष—सभी लाभ उठा सकते हैं। लेखक ने बालकों की प्रकृति का भली भाँति अध्ययन करके इस पुस्तक को लिखा है। २५० पृष्ठों की समस्त कपड़े की जिल्द-सहित पुस्तक का मूल्य केवल २) रु०; स्थायी-ग्राहकों से १॥) मात्र !

शान्ता

इस पुस्तक में देश-भक्ति और समाज-सेवा का सजीव वर्णन किया गया है। देश की वर्त्तमान अवस्था में हमें कौन-कौन सामाजिक सुधार करने की परमावश्यकता है; और वे सुधार किस प्रकार किए जा सकते हैं, आदि आवश्यक एवं उपयोगी विषयों का लेखक ने बड़ी योग्यता के साथ दिग्दर्शन कराया है। शान्ता और गङ्गाराम का शुद्ध और आदर्श-प्रेम देख कर हृदय गद्गद हो जाता है। साथ ही साथ हिन्दू-समाज के अत्याचार और षड्यन्त्र से शान्ता का उद्धार देख कर उसके साहस, धैर्य और स्वार्थ-त्याग की प्रशंसा करते ही बनती है। मूल्य केवल लागत-मात्र ॥।) स्थायी ग्राहक के लिए ॥-); पुस्तक दूसरी बार छप कर तैयार है।

मनोरंजक
कहानियाँ

[लेखक—अध्यापक श्री० ज़हूरबख़्श जी 'हिन्दी-कोविद']

श्री० ज़हूरबख़्श जी की लेखन-शैली बड़ी ही रोचक और मधुर है। आपने बालकों की प्रकृति का अच्छा अध्ययन किया है। यह पुस्तक आपने बहुत दिनों के कठिन परिश्रम के बाद लिखी है। इस पुस्तक में कुल १७ छोटी-छोटी शिक्षाप्रद, रोचक और सुन्दर हवाई कहानियाँ हैं, उनको पढ़ते ही हृदय आनन्द से उमड़ पड़ता है। हरेक कहानी को जितनी बार पढ़ा जाय, उतनी ही बार एक नया आनन्द प्राप्त होता है। बालक-बालिकाएँ तो इन्हें बड़े मनोयोग से सुनेंगे। बड़े-बूढ़ों का भी मनोरञ्जन हो सकता है। शीघ्र ही मँगाकर लाभ उठाइए।

पृष्ठ-संख्या १५० से अधिक; छपाई-सफ़ाई अच्छी; सजिल्द पुस्तक का मूल्य केवल १॥) स्थायी-ग्राहकों से १=)

व्यवस्थापिका 'चाँद' कार्यालय, इलाहाबाद

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

होते देख वे चुप हो गए और किसी से भी न कहने की प्रार्थना करके उन्होंने हाथ जोड़ दिए !!!

कलकत्ते में आए-दिन ऐसी पाप-घटनाएँ होती ही रहती हैं। पर बन्द होने का कोई उपाय नहीं है। गङ्गा-स्नान और मन्दिर-दर्शन के पीछे प्रायः उनकी पवित्रता नष्ट होती है। पर उन दो बातों को वे छोड़ भी नहीं सकतीं। उनके विचार ये दो बातें करने के लिए इतने अधिक दृढ़ कर दिए जाते हैं कि वे लाख विपत्तियों का सामना करके भी उसे ज़रूर करें। और जो कोई उन्हें इससे रोके तो वह अधर्मी कहलाता है। कलकत्ते में मन्दिर बहुत हैं। ख़ास एकान्त मन्दिर होने के अलावा घरों में भी दूसरे-तीसरे तल्ले तक में मन्दिर हैं, जहाँ धूम-धाम से आरती होती है, और स्त्रियाँ इतनी ऊँचाई चढ़ कर भी दर्शन करती हैं। प्रायः ऐसे जो मन्दिर हैं उनमें चुप-चाप पाप होता है। मकान के मनचले स्वामी बड़े-बड़े घर की लड़कियों को, औरतों को ख़ास तौर से अपने मन्दिर का निमन्त्रण देते हैं और आने पर उन्हें बहका लिया जाता है !

बुलाने का मुख्य बहाना सावन-भादों में लगता है। इन महीनों में प्रत्येक मन्दिर में नई झाँकी, झूलन और रास-लीलाएँ होती हैं। सेठ लोग आठ-आठ, दस-दस रोज़ तक रासलीला कराते हैं और इस अवसर पर अपने इष्ट-मित्रों को सपत्नीक पधारने का निमन्त्रण देते हैं। औरतें अलग बैठती हैं और पुरुष अलग, और इन्हीं मौक़ों पर उन स्त्रियों से उनकी पाप-प्रार्थना स्वीकृत हो जाती है। रासलीला में कोई महत्वपूर्ण बात नहीं होती, नाचना-गाना और ऊल-जलूल क्रियाएँ होती हैं।

ख़ास एकान्त मन्दिरों में कभी-कभी पाप होता है। एक दिन एक घटना हमने स्वयं अपनी आँखों से देखी थी। रात की आरती हो रही थी, एक ओर स्त्रियाँ खड़ी थीं—दूसरी ओर पुरुष। मन्दिर के एक प्रबन्धकर्त्ता पुरुष और स्त्रियों के बीच दीवार-स्वरूप खड़े थे। एक स्त्री पर उनकी नज़र थी। आज वे कुछ करने की प्रतीक्षा में थे। जब सबका ध्यान ठाकुर जी की छबि देखने में लगा था, तो उस अधिकारी ने अवसर देख कर उस स्त्री की छाती की ओर हाथ बढ़ाया। उसके एक साथी स्विच के पास खड़े थे। अधिकारी का हाथ बढ़ते देख उन्होंने स्विच दबा दी। बिजली एकदम बन्द हो गई, और कोई आध मिनट बाद ही जल भी गई। सबमें हलचल मच गई—बत्ती क्या हुई? बत्ती क्या हुई? पर काम इतनी सफ़ाई से हुआ कि किसी को पता भी नहीं चला और अधिकारी ने हाथ हटा ही लिया !!! इतना होने पर भी उस स्त्री का दर्शन के लिए आना बन्द न हुआ। हाँ, किनारे खड़ी न होकर, स्त्रियों के बीच में खड़ी होने लगी और दर्शन समाप्त होने पर शीघ्र ही चलने की तैयारी कर देती।

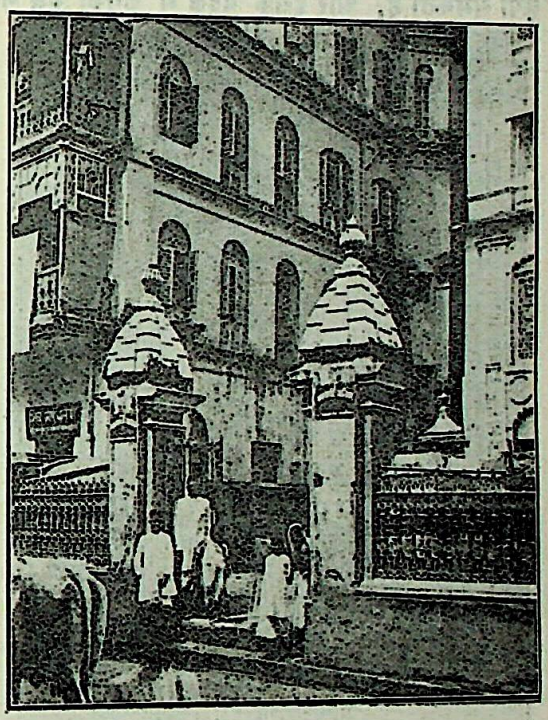

कलकत्ते का सङ्कठित नरक "गोविन्द-भवन"
(२९ बाँसतल्ला लेन)

इसके अलावा मन्दिरों में लुच्चे पुजारियों तथा अन्य कर्मचारियों द्वारा बहका कर अथवा फुसला कर मन्दिर के अँधेरे कमरों में भगतिनों पर कभी-कभी जो बलात्कार होते हैं, सो अलग। मन्दिरों में अँधेरा काफ़ी रहता है। बेचारी स्त्रियाँ घूँघट के कारण कहीं ठोकर खाकर रास्ते में गिर भी पड़ती हैं। मन्दिर के दरवाज़े से लेकर मूर्त्ति तक पहुँचने के रास्ते में छेड़छाड़ का अवसर मिल जाता है। और दर्शन करके रात को जब भीड़ लौटती है तो मनचले थोथे युवक भोली-भाली स्त्रियों को छेड़ते जाते हैं, और प्रायः एकाध महीने में उनका प्रयास पूरा हो ही जाता है !

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

कहीं-कहीं ऐसा है कि मन्दिरों में किराए पर रहने के लिए कमरे भी मिलते हैं। ये कमरे मन्दिर-भाग से हट कर होते हैं। और इनमें गृहस्थ लोग कम भाड़े के लालच में और सुभीतेपूर्वक दर्शन के लोभ में पड़ कर रहते भी हैं। मन्दिर के अधिकारी लोग इन घर की स्त्रियों को ठाकुर जी का प्रसाद भेज-भेज कर फुसला लेते हैं। बेचारी सरल भगतिनें इसे पुजारी जी की विशेष कृपा समझती हैं, और इसके बदले में उनको कुछ भेंट

गोविन्द-भवन के श्री १५३ भगवान् ?
व्यभिचार-शिरोमणि हीरालाल गोयनका
(एक स्त्री को तार्वज़ का बहाया हुआ चित्र)

आदि अथवा त्योहारों पर थाल भर-भर कर पकवान भेज देती हैं। धीरे-धीरे यही क्रम चलता रहता है और समय मिल जाने पर अधिकारी जी अपना मतलब साध लेते हैं। भला पुजारी जी को मना कौन करे ? ठाकुर जी नाराज़ हो जायँ तो ? पुरानी बूढ़ी भगतिनें कह-कह कर अपनी बेटियों व पतोहुओं को पुजारी जी की सेवा में भेजती हैं। एक बार एक स्त्री पर अधिकारी जी और एक पड़ोसी किराएदार साथ ही साथ मोहित हुए। अन्त में मामला बढ़ा और अधिकारी जी ने किराएदार से मकान छोड़ कर चले जाने को कहा। उसने जाते-जाते उस स्त्री की बात उड़ानी चाही तो उसकी माँ आग्रह में गिड़गिड़ाने लगी और कहा—'बाबू! क्यों झगड़ा करते हो! दया करो। मालूम पड़ जाने पर बिरादरी में हलचल मच जायगी।' आख़िर वे चुपचाप ही मकान ख़ाली करके चले आए। पर उस स्त्री को न पाने का मलाल उन्हें बहुत दिनों तक रहा !!!

गोविन्द-भवन की पाप-लीला तो सब जानते ही हैं। वह भण्डा फूट जाने से मारवाड़ियों में कुछ कुछ समझ आती जा रही है। पापी हीरालाल ने कैसी युक्ति से जाल फैलाया कि छोटी-बड़ी, ग़रीब-अमीर, सुलभ और दुर्लभ—सब कोई मछली के समान उसमें बूझ कर प्रसन्नता से फँसीं। रुपया लुटाया, समय लुटाया और अन्त में अपना सतीत्व भी लुटाया !!! हीरालाल ने गीता की कथा बाँचनी शुरू की और फिर धीरे-धीरे मारवाड़ी-अख़बारों में गीता-विषयक कुछ उपदेश लिखने शुरू किए। साथ ही साथ उसने यह आन्दोलन भी उठाया कि मारवाड़ी-स्त्रियाँ मुसलमानों के पास बच्चे को फुँकवाने न जावें, बल्कि मन्दिरों में श्रीकृष्ण की उपासना करें। भगवान् सब कुछ करेंगे। मारवाड़ियों की श्रद्धा उस पर बढ़ी और ख़ूब बढ़ी। झुण्ड के झुण्ड लोग कथा सुनने आते। सम्भव है, हीरालाल का ख़ास लक्ष्य अब पाप करने का न रहा हो, पर जब उसने देखा कि स्त्रियाँ विशेष भाव से कथा सुनती हैं और चाहे जिस समय भी आ सकती हैं, तो उसने कथा का विस्तार बढ़ाया और दिन में कई बार कथा होने लगी और फिर रासलीला भी प्रारम्भ कर दी गई। रासलीला में हीरालाल स्वयं ही कृष्ण बनता था। बड़े-बड़े सेठ अपनी स्त्रियों को हीरालाल की सेवा में भेजने लगे! अच्छी से अच्छी स्त्री जब उसकी सेवा में हर समय तत्पर रहने लगी तो हीरालाल बच न सका। उसकी छिपी हुई पाप-वासना जागी और उसने छिपी रासलीला शुरू की। इसमें ख़ास-ख़ास स्त्रियाँ ही उसके साथ होती थीं। और फिर तो बहुत सुभीते से पाप-लीला चली। साथ अपनी विवाहिता बहुओं को श्रीकृष्ण का प्रसाद पाने के लिए वहाँ भेजते और प्रसाद मिल चुकने पर साथ ले जातीं! हीरालाल के एक मित्र कहते थे कि उसे इतनी बार स्त्रियों से

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

करना पड़ा कि आख़िर वह घृणित रोगी हुआ, और बहुत रुपया ख़र्च करके उसने कुश्ते आदि खाकर अपने शरीर को उस लीला यं ग्य बनाए रक्खा। वह तो एक आकस्मिक मौक़े की बात हो गई थी कि एक विधवा को गर्भ रह गया, पर हीरालाल में इसकी शक्ति ही नहीं रह गई थी। हम तो यही कहेंगे कि असल में हीरालाल को व्यभिचारी बनाने का सारा दोष मारवाड़ी-पुरुषों पर ही है। उन्होंने क्यों अपनी स्त्रियों को उसकी सेवा करने भेजा और उड़ती हुई ख़बरें सुनने पर भी कुछ ध्यान न दिया। पर जब मामला स्पष्ट रूप से खुल ही गया तो उन्होंने करवट बदली और अपनी भूल को पञ्चायत करके सुधार लिया। मारवाड़ी-समाज की शक्ति तो इसी से प्रकट है कि वह उस पापी का कुछ भी न कर सकी और योंही चले जाने दिया। भगतिनों की हीरालाल पर कितनी श्रद्धा थी, इसका अनुमान इस मनोरञ्जक बात से करिए। बच्चों के गले में अथवा अपने ही गले में स्त्रियाँ श्रीनाथ जी की छोटी सी मूर्त्ति को तावीज़ में लगवा कर पहन लेती हैं। इससे कोई प्रेत-बाधा नहीं लगती। पर उन श्रीनाथ जी की जगह उस तावीज़ में स्त्रियों ने हीरालाल की तसवीर लगवानी शुरू कर दी, और सबके गले में, वक्षःस्थल पर हीरालाल ही हीरालाल रहने लगे। जब यह भण्डाफोड़ हुआ और अख़बार वालों को हीरालाल के चित्र की आवश्यकता हुई, तब 'हिन्दू-पञ्च' को पता चला कि एक मारवाड़ी-फ़ोटोग्राफ़र के पास उसका चित्र ज़रूर मिलेगा। फ़ोटोग्राफ़र ने उन्हें वह तावीज़ दिखलाया कि—देखिए यही तो नहीं है? अन्त में 'हिन्दू-पञ्च' सम्पादक उसे पहचान कर ले आए और बड़े साइज़ में करा कर अपने अख़बार में छाप दिया। 'हिन्दू-पञ्च' की वह कॉपी बहुत बिकी और दूने पैसों में बिकी। फ़ोटोग्राफ़र का कहना है कि एक मारवाड़ी मेरे पास उस तावीज़ को लाया और वैसे ही छोटे-छोटे कई चित्र बना देने को कहा। पीछे यह काण्ड हो गया और वह अपना तावीज़ भी लेने नहीं आया। वही तावीज़ मैंने 'हिन्दू-पञ्च' वालों को दे दिया। इस घटना से इस समाज के अन्ध-विश्वास का भली प्रकार बोध होता है। और यह अन्ध-विश्वास तभी दूर हो, जब कि कोई दैवी शक्ति उनके मन में सत्य बुद्धि जगा दे।

यह तो हुई मन्दिरों के पीछे व्यभिचार की बात, अब हमें उनके निजी व्यवहार भी देखने चाहिएँ। बड़े घर की स्त्रियों को कहीं थोड़ी दूर पर ही जाना हो तो एक नौकर उन्हें पहुँचाने जाता है। ठीक उसी प्रकार, जैसे कि एक ग्वाला लाठी लेकर गाय को चराने जाता हो। गलियों में, बाज़ारों में यह दृश्य देखने को मिलता है। यह बात तो दीखती ही नहीं कि मालकिन का अपने नौकर पर कुछ भी प्रभुत्व है! जिधर को वह ले जायगा,

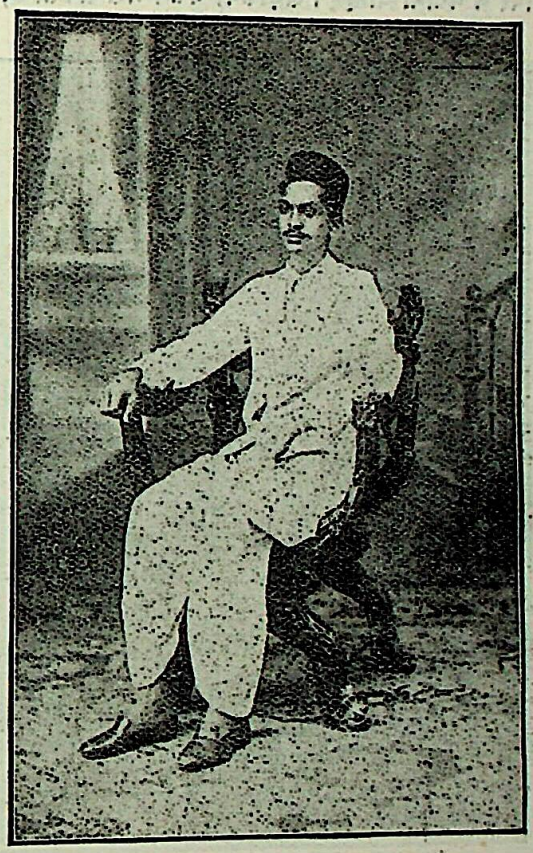

श्री० सत्यनारायण जी डालमिया

[आप कलकत्ते के बहुत बड़े धनी व्यक्तियों में से हैं]

वे जायँगी। अच्छा हो यदि पुरुष अपनी स्त्रियों को स्वयं ही पहुँचा आया करें—इसमें लज्जा की क्या बात है? आजकल बाहर निकलने का पहनावा प्रायः एक सा ही है। साड़ी के ऊपर चादर ओढ़ कर स्त्रियाँ आती-जाती हैं। साड़ी का कपड़ा बारीक मलमल होता है, जिसमें शरीर भले प्रकार छिपा नहीं रहता—पेट तो उघड़ा रहता ही है। जल्दी से चलने में टाँग पर से साड़ी का छोर उड़ जाता है तो घुटने तक का अङ्ग दिखाई दे जाता है; पर

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

उन्हें कोई ख़ास ध्यान नहीं रहता। हाँ, ध्यान इसी का रहता है कि घूँघर न बिगड़ जाय। १० सेर के घाघरे से यह साड़ी का पहनावा आरामदेह ज़रूर है, पर इसमें भी सुधार होना ज़रूरी है—कम से कम मोटा कपड़ा तो हो।

इसी के साथ-साथ हम उनका ध्यान उनकी सन्तान की ओर भी खींचना चाहते हैं। लड़कियों को पढ़ाना चाहिए और व्यर्थ की बातों में उनके हृदय को भीरु, कायर न बनाना चाहिए। लड़कियाँ बर्त्तन मल सकती हैं,

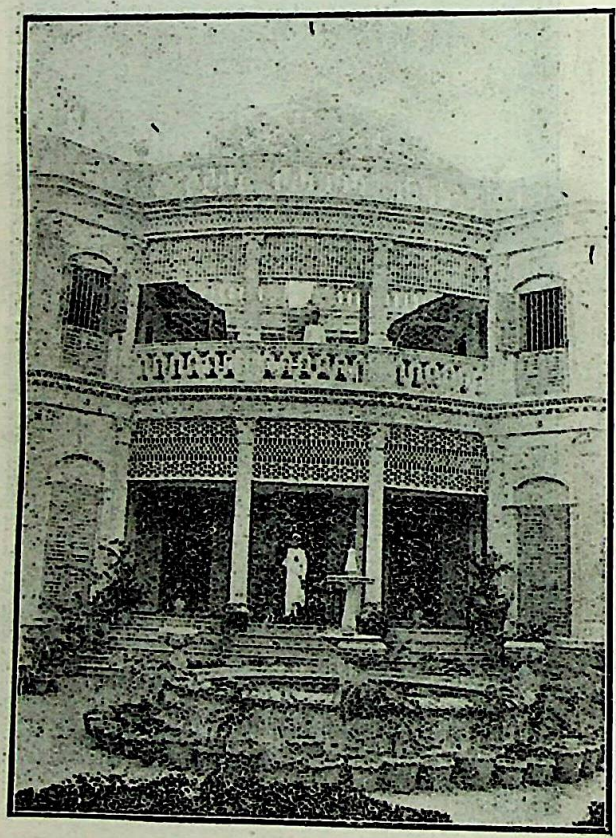

कलकत्ते के श्री० सत्यनारायण जी डालमिया का शहर से बाहर बग़ीचे में विनोद-भवन

पर उसे चमका भी तो देती हैं। उनकी शक्ति यदि विकसित होने दी जाय तो पुरुषों को वे नचा दें। छोटे-छोटे लड़के पाठशालाओं में जाते हैं और अपनी पुरानी पद्धति से गुरु जी के आगे बैठ कर महाजनी इत्यादि सीखते हैं। कोड़ों की मार खाएँ और गाली सुनें। इस शिक्षा का असर यह होता है कि वे सिवाय महाजनी के और कुछ नहीं सीख पाते, और जो कुछ सीख भी पाते हैं—अक्सर पढ़ना सीख लेते हैं—तो उसका दुरुपयोग करते हैं। कलकत्ते की लाइब्रेरियों में प्रायः मारवाड़ी-युवक तिलस्मी अथवा कुचेष्टापूर्ण उपन्यास पढ़ते दीखेंगे। अपनी शिक्षा में वे स्वतन्त्र रहते हैं। १४-१५ वर्ष की आयु तक कोई बच्चा अपने पिता की आज्ञा उस विषय में नहीं मान सकता। और इसी उम्र में उनका विवाह भी तो कर दिया जाता है! भला विवाह की बातें वे जानें कैसे? कलकत्ते में हिन्दी-पुस्तकों की दूकान पर जाकर देखिए तो पता चले कि १४-१५ वर्ष के नव-विवाहित फूल-से बच्चे आकर कोकशास्त्र ख़रीद कर ले जाते हैं। उनकी इतनी हिम्मत तो होती नहीं कि ऐसी पुस्तक वे स्वयं बेधड़क घर में रक्खें। इसके साथ वे नौकर को मिलाते हैं और नौकर उस पुस्तक को छिपा कर दूकान से ले जाता है और उनके निवास-स्थान में रखता है। उन बेचारों को जब अवसर मिल गया तभी चुपचाप छिप कर उसे पढ़ जाते हैं, और इस प्रकार कोकशास्त्र पढ़ कर वे अपनी सोई हुई वासना को कच्ची ही जगा कर सोहाग-रात की तैयारी करते हैं। और फिर २-४ महीने पीछे उनके सुन्दर गुलाबी मुखड़े चिन्ता-ग्रस्त पीले-पीले दिखाई देते हैं। यह है इस जाति के बच्चों का पतित मार्ग !!! नौकर लोग कई कामों में सहायक होते हैं। रात को थिएटर-बायस्कोप में उन्हीं की सहायता से बच्चे जाया करते हैं अथवा किसी दुराचारी बड़े आदमी के प्रलोभन में पड़ कर।

धीरे-धीरे समय आता है और वे रात में घूमने निकलते हैं। वेश्याओं के यहाँ पहुँचने पर उन्हें वही घृणित रोग मिलते हैं, जिसे होना कोई सभ्य व्यक्ति नहीं सह सकता। रोगी होने पर वे वैद्यों डॉक्टरों से मरम्मत कराते रहते हैं। कलकत्ते के गली-कूचों में और ख़ास तौर से मारवाड़ी-युवकों में गर्मी-सूज़ाक और बाघी के 'शर्तिया चिकित्सक' बैठे डॉक्टर छोटी-छोटी दूकानों में बैठे मिलेंगे। कोई विज्ञापन द्वारा, कोई जड़ी-बूटी से और कोई अपनी पेटेण्ट औषधि से उन रोगों को खोने का दावा करते हैं। इन वैद्यों की जीविका अधिकतर मारवाड़ी-युवकों की उसी प्रकार की चिकित्सा करने पर चलती है। इन युवकों के अतिरिक्त युवतियाँ भी बहुत ही छिपे तौर से उनके यहाँ पहुँचती हैं और उन्हीं रोगों की औषधि माँगती हैं। कलकत्ते

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

मारवाड़ी-वेश्याएँ कम हैं, पर जो हैं वे ही ग़ज़ब ढाने के लिए काफ़ी हैं। उनके अड्डे ऐसे होते हैं मानों इन मकानों में कोई गृहस्थ रहता है। घूँघट काढ़ कर बच्चे को गोदी में रख कर खेलाती रहेंगी और अपने शिकार को उँगली के इशारे से ऊपर बुला लेंगी। वहाँ कई स्त्रियाँ रहती हैं। पसन्द कर लो और २-३ रुपए देकर पाप कमा लाओ !!! सुना गया है, कलकत्ते में कहीं-कहीं ऐसे अड्डे हैं, जहाँ गृहस्थ की विधवाएँ अथवा वृद्ध या बालक की जवान बहुएँ रात को वहाँ देव-दर्शन का बहाना करके पहुँचती हैं और बिना कुछ पैसे लिए ही अपना मुँह काला करके घर लौटती हैं। इसी प्रकार की और भी छिपी बातें हो सकती हैं, जिन्हें हम अब तक नहीं पा सके हैं। बेचारी स्त्रियाँ जल्दी ही क्यों बहकती हैं—इसका ख़ास कारण है पुरुषों की अथक चेष्टाएँ। कलकत्ते में एक ऐसे धनी व्यक्ति को हम जानते हैं, जो करोड़पती हैं और अपना बहुत सा धन इसी बात में ख़र्च करते हैं कि सद्गृहस्थों की नई-नई बहू-बेटियों को बिगाड़ें। बड़े-बड़े घरों की सुन्दर स्त्रियों को उन्होंने अपने पास बुलवा मँगाया और अपनी इच्छा पूरी की। इसी व्यक्ति ने एक ब्राह्मण-विधवा के पास अपने नौकर द्वारा ५००) रुपए भिजवाए थे और प्रार्थना की थी कि कम से कम मुँह देखने की तो इजाज़त दे दी जाय। पर उस विधवा ने वे रुपए वापस लौटा दिए थे। उसी विधवा के पास एक और सज्जन ने २००) भेजे थे कि सिर्फ़ एक ही बार मुलाक़ात कर लीजिए, पर उसने उससे भी इन्कार कर दिया। कुछ दिनों बाद उस विधवा का एक नौकर उसके नाम से चुपचाप १००) माँग लाया। पीछे पता चला कब, जब कि उस व्यक्ति ने अपना एक नौकर 'वह दिन' नियत करने को पूछने भेजा !! इसी प्रकार की भीतरी बुराइयाँ बहुत दिखाई जा सकती हैं—पर हमारी प्रार्थना है कि इतना सुन कर ही वे अपने सम्मान को फिर वापस लाएँ।

कलकत्ते के सुधारक नवयुवक और पुराने कार्यकर्त्ता बराबर सुधार-पथ पर अग्रसर हैं। पर उनके मार्ग में अन्ध-रूढ़ि ऐसी जमी है कि वे सच्चा सुधार कर नहीं सकते। बड़े से बड़े सुधारक को हम बतला सकते हैं कि कोई सच्चा महत्वपूर्ण सुधार उनके लिए कितना कठिन है। उनकी शक्ति पञ्चायत में बँधी है और वे सुधार-पथ से हट जाते हैं। हाँ, इतना ज़रूर है कि वे अपना सुधार अवश्य कर लेते हैं। पर फिर भी उनसे जहाँ तक बन पड़ता है, अपने हाथ-पैर बचा कर वे सामाजिक सुधार के प्रयत्न में लगते हैं। क़रीब एक महीना हुआ, मारवाड़ी बालिका-विद्यालय का वार्षिकोत्सव हुआ था। उसकी सभानेत्री बनाई गईं श्रीमती घनश्यामदास जी लोयलका। 'चाँद' के एक प्रतिनिधि ने सोचा, चलो मारवाड़ी-अङ्क के लिए एक लेख लिखने की उनसे प्रार्थना करें। कम से कम कुछ नहीं तो जब उन्होंने पुरुषों के

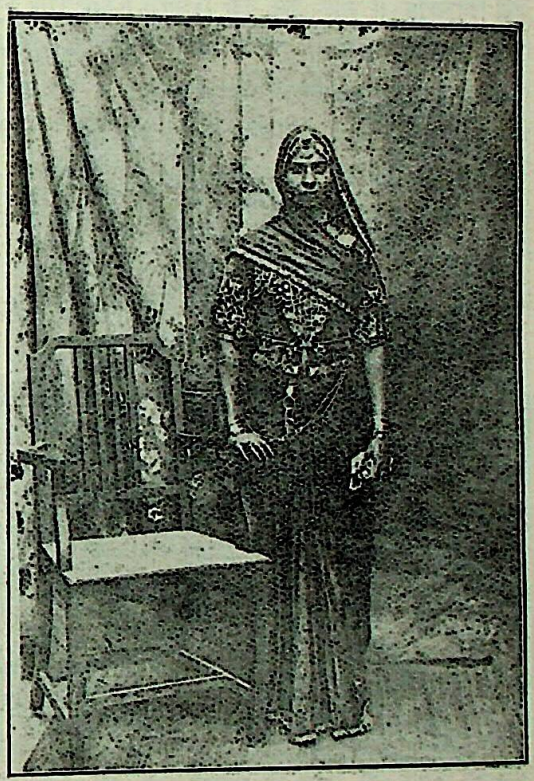

कलकत्ते में मारवाड़ी-वेश्याओं या रखेली स्त्रियों का दिन के समय का पहनावा

बीच में पर्दा तोड़ा है, तो वे अवश्य पर्दा-विरोधी कोई लेख तो स्त्रियों के लिए देंगी ही। वे इसी आशा पर उनके बँगले पर पहुँचे, पर देवी जी तो नहीं मिलीं—उनके पति महाशय मिले। उन्होंने उन्हें नमस्कार किया, बैठे और अपना मतलब कह सुनाया। छूटते ही वे बोल उठे—'नहीं, नहीं! हम तो इसके पक्ष में ही नहीं हैं। हम तो न लेख दे सकते हैं, न फ़ोटो।' बहुत-कुछ समझाया गया, पर वे अपनी ज़िद पर डटे ही रहे और प्रतिनिधि महाशय को निराश लौटना पड़ा!

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

एक बार एक साधु-महिला मारवाड़ी-स्त्रियों के बीच मोटर में बैठी देखने में आईं। 'चाँद' के प्रतिनिधि ने समझा, कोई सुधारक देवी हैं। दूसरे दिन वे उन्हें अकेली मिलीं और उनसे 'चाँद' के एक दूसरे प्रतिनिधि ने एक लेख की प्रार्थना की। बातचीत चली, और अन्त में उन्होंने कहा—हम वास्तव में ऐसे पढ़े-लिखे नहीं, इसी आडम्बर द्वारा हमें भोजन आदि इन लोगों से मिल जाता है, बस।

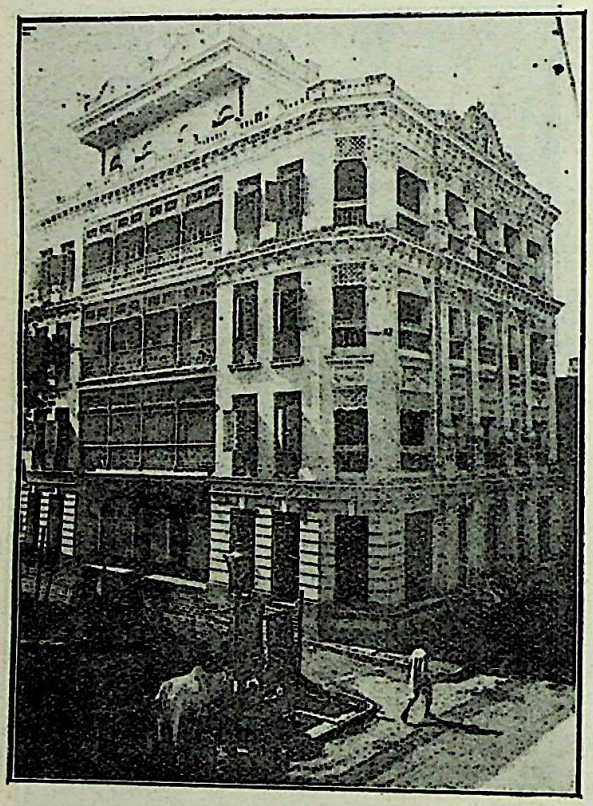

कलकत्ते में मारवाड़ियों की उच्च अट्टालिकाओं का बाहरी दृश्य

[कलकत्ते में प्रायः ऐसे ही मकान होते हैं]

यह दशा बड़े नामों की है। बिड़ला-बन्धु और खेतान-बन्धु ये दो परिवार मारवाड़ी-समाज में ऐसे हैं, जिन पर मारवाड़ी-समाज गर्व कर सकता है और जो बराबर उच्च पथ की ओर अग्रसर हैं।

मारवाड़ी-समाज और इसके सुधारकों के बीच एक कथा अच्छी तरह घटती है। चार अन्धे जा रहे थे। रास्ते में उधर से हाथी आ गया। लोगों ने कहा, हट जाओ—हाथी आ रहा है। अन्धों ने प्रार्थना की कि हमें [illegible] दिखा दो। हमने कभी नहीं देखा। आख़िर हाथी [illegible] गया और चारों को बारी-बारी से हाथी के पास ले [illegible] गया। पहले ने तो सूँड़ टटोली, दूसरे ने पेट, तीसरे [illegible] कान और चौथे ने टाँग। चारों टटोल कर सन्तुष्ट हुए [illegible] हमने आज हाथी देख लिया। अब उनमें विवाद चला [illegible] सूँड़ वाले ने कहा—हाथी तो लम्बा-लम्बा पतला-[illegible] होता है। ऊपर से मोटा और नीचे से पतला। दू[illegible] बोला—हाथी तो चबूतरे सा होता है। तीसरा बोला—हाथी तो पतला-पतला चौड़ा होता है। चौथा बोला—हाथी तो मकान के खम्भे-जैसा होता है। इस प्रकार [illegible] चारों में विवाद छिड़ गया। जिसने जो अटकल [illegible] वही उसने कहा। यद्यपि चारों का कहना ठीक था। [illegible] प्रकार मारवाड़ी-समाज की दशा है। सुधारक लोग [illegible] भेद लेकर झगड़ते हैं और अपने-अपने लक्ष्य से काम [illegible] करते हैं। पर वास्तव में वे सब ठीक हैं और एक ही वस्तु [illegible] भिन्न-भिन्न रास्तों से उन्नति कर रहे हैं। पर आपस की [illegible] से उनके उत्साह फीके पड़ जाते हैं। हमारी दृष्टि में [illegible] युवा ऐसे हैं, जो एकदम क्रान्तियुक्त सुधार मचा [illegible] हैं, पर जाति की रूढ़ि का उन्हें डर है और वे खुल्लम[illegible] सच्चा सुधार नहीं कर पाते। सामाजिक सुधार के [illegible] साथ एक दल ऐसा भी होना चाहिए जो घरों में घुस[illegible] कर भीतरी सुधार करे। जब तक घर साफ़ न हो, [illegible] ल्ला कैसे साफ़ कहलाएगा। इसलिए मारवाड़ी-[illegible] युवकों से हमारी प्रार्थना है कि वे अपने-अपने घरों में [illegible] फिर अपने पड़ोस की भीतरी सफ़ाई में लग जायँ। [illegible] को बतलाना चाहिए कि वे अपना समय कैसे बि[illegible] फ़ालतू समय में वे किताबें ले बैठती हैं। तोता-मैना [illegible] क़िस्सा, हातिमताई, बैरागिन आदि सारहीन [illegible] पुस्तकें उनके घरों में रहती हैं और उन्हीं को उठा [illegible] पढ़ने लगती हैं। एक बार एक स्त्री को हमने तोता-[illegible] का क़िस्सा पढ़ते देखा तो हमें दुःख हुआ। हमने वह [illegible] ले ली और सत्यार्थप्रकाश पढ़ने को दी। चौथे दिन [illegible] उनके घर गए तो देवर महाशय हमसे लाल-पीले [illegible] लगे और बोले—'तुम यह सत्यार्थ-प्रकाश क्यों दे [illegible] इस पुस्तक को तो हम लोग घर में आने भी नहीं [illegible] तुम क्या हमें बिगाड़ोगे ?' हम स्तम्भित हुए और [illegible] सत्यार्थ-प्रकाश लेकर लौट आए !!! कुछ दिन [illegible]

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

महाशय फिर मिले। हमने उन्हें समझाया कि—'देखो तोता-मैना का क़िस्सा पढ़ने योग्य पुस्तक नहीं है। अच्छी-अच्छी उपदेशपूर्ण पुस्तकें पढ़ो तो कुछ सीखो भी। उनकी रुचि हमने धर्म-ग्रन्थ पढ़ने की देखी थी तो हम सत्यार्थ-प्रकाश दे आए। पर तुमने तो उस पुस्तक को बहुत ही बुरी समझ लिया। ऐसा तो नहीं चाहिए।' इस पर वे बोले—'साहब! सो तो ठीक, पर उस पुस्तक की तो आपन लोगों में चाल ही नहीं। फिर हम कैसे उसे देते?' मारवाड़ी-युवको! हम तुमसे प्रार्थना करेंगे कि तुम सबसे प्रथम यही करो कि गन्दी पुस्तकों को हटा कर धार्मिक पुस्तकों की चाल प्रारम्भ कर दो। बहुत सी स्त्रियाँ ऐसी मिलेंगी, जो पढ़ना-लिखना और उच्च जीवन बिताने की इच्छुक हैं, पर समाज उन्हें उभरने नहीं देता और लाचार होकर उन्हें अनायास ही ऐसे साधन मिल जाते हैं, जिनसे वे कुरीतियों की ओर झुक जाती हैं। इसके उदाहरण के लिए हम एक बहिन की सच्ची आत्म-कथा वर्णन करते हैं :—

"मैं बीकानेर की रहने वाली हूँ। सात वर्ष की अवस्था में मेरा विवाह हुआ था। मेरे पति मुझे साथ लेकर व्यापार करने की ग़रज़ से कलकत्ते आए। एक-दो वर्ष में ही उनकी दूकान चल निकली और हम आनन्दपूर्वक रहने लगे। सब सुख तो धीरे-धीरे मिलने लगा, पर पति का सच्चा प्यार घटने लगा। पीछे पता चला कि वे बाज़ारू औरतों से शौक़ रखने लगे हैं। एक बार उन्होंने मेरे चिढ़ाने के लिए नया ढङ्ग किया। मुझे लेकर पहाड़ पर गए। वहाँ उनकी भेजी हुई एक वेश्या पहले से ही ठहरी हुई थी। तीन महीने तक हम वहाँ रहे और इस बीच में उन्होंने उसके साथ मेरे ही सम्मुख ..... किया। मेरे रिश्ते में एक बहिन थी। मुझसे भी अधिक सुन्दर और चञ्चल। कलकत्ता लौटने पर मेरे पति ने मुझसे अनुरोध किया कि अपनी बहिन को मैं अपने पास ही बुला लूँ। बेचारी वहाँ अकेली तकलीफ़ में रहती होगी। अभी उसका ब्याह नहीं हुआ था। मैंने उसे बुला लिया और हम दोनों बहिनें साथ-साथ रहने लगीं। मेरे पति ने उसकी रूप-राशि देख कर उस पर जाल फेंकने शुरू कर दिए और एक महीने के अन्दर ही उनका प्रयास सफल भी हो गया। पहले छिपे-छिपे और फिर मेरी जानकारी में ही उन दोनों का पापाचार चल निकला। मुझे ठेस लगी, बहिन को टोका भी, पर कलकत्ते में आकर तो उसकी चञ्चल और शौक़ीन प्रवृत्तियाँ जाग उठी थीं, वह न मानी और न मानी। एक दिन रोते-रोते मैंने पति महाशय से प्रार्थना की कि तुम उसे छोड़ दो और मुझे ही प्यार करो। मैं तुम्हारी विवाहिता पत्नी हूँ। पर उन्होंने न सुनी। आख़िर एक दिन दुखी होकर मैंने उसी के सामने क़सम खाई कि जाओ आज से मुझे तुम्हारी ही क़सम है जो तुमसे ज़रा सा स्पर्श तक भी करूँ। मेरी जगह मेरी बहिन तुम्हारी स्त्री हुई, और मैं नौकरानी की तरह तुम दोनों की सेवा करूँगी।" ऐसी प्रतिज्ञा करके मैं एक नर्स के पास गई और अपनी बच्चेदानी निकलवा डाली!!! कि कहीं इसका गर्भ मुझे न रह जाय!!!

"अन्त में अधिक विषय-वासना का फल मेरे पति को मिला—वे रोगी हुए और कुछ दिन रोगी रह कर मर गए। उनके मरने पर मैंने तो सन्तोष किया, पर मेरी बहिन २-४ दिन बाद ही विचलित हो उठी। उसे उनके मरने की चिन्ता न थी, वह तो इस सोच में थी कि अब मैं किसके साथ.....!!! उस बाड़ी में २०-२५ परिवार रहते थे। बग़ल के कमरे में एक अधेड़ मारवाड़ी रहता था। उसकी नज़र, पता नहीं, कब से मेरी बहिन पर थी। यह सुअवसर देख कर उसने मेरी बहिन के पास नज़रें भेजनी शुरू कीं और दूसरे दिन ही उसकी इच्छाएँ पूरी हो गईं। कुछ दिन तो यह चला, पर वह वृद्ध था—मेरी बहिन सन्तुष्ट न हुई। अब उसने और किसी को ढूँढ़ना शुरू किया। १५-२० दिन से एक जवान.....आकर उसी बाड़ी में रहने लगा था—मेरी बहिन ने उस पर आशा लगा दी और अपनी ही ओर से उससे प्रार्थना की। मनचले को मनचाही चीज़ मिली—तुरन्त ही दोनों में पापाचार चला। उस .....के पास रुपया नहीं था—रूप और जवानी थी। पर मेरी बहिन ने रुपए की चिन्ता नहीं की। वह कभी-कभी उस वृद्ध मारवाड़ी से भी मिलती रहती थी और वह मारवाड़ी उसे प्रसन्न रखने के लिए ख़ूब रुपया देता था। इसी रुपए से वह अपना और.....का ख़र्च चलाती थी!! आख़िर एक दिन उस वृद्ध को पता चल गया। कुछ नाराज़ी हुई, पर सिर्फ़ कभी-कभी देख लेने भर की इच्छा प्रकट करके उसने उसकी २००) रुपए महीने की पेन्शन बाँध दी। अब क्या था! २००) घर बैठे आने लगे और वह युवा जोड़ी सुख-

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

पूर्वक दिन बिताने लगी। एक साल बाद उस.....का काम चल निकला। उसने दलाली शुरू की थी। रूप और धन दोनों चीज़ें मेरी बहिन को मिलीं! वह सब कुछ भूल गई। मुझे भी भूल गई। और एक दिन रात को उसके साथ चुपचाप कहीं भाग गई! सवेरे ही उसे मैंने बिस्तर पर न पाया। खोज हुई। नौकरों में—पड़ोस में चर्चा चली, पर मैंने कह दिया कि वह देश गई है। मैंने चुपचाप खोज शुरू कर दी। ५ वें दिन उसकी चिट्ठी आई कि 'हम यहाँ कुशलपूर्वक पहुँच गए हैं। दो-चार दिन यहाँ रह कर वापस कलकत्ते आएँगे और अपना अलग मकान लेकर रहेंगे। तुम कोई चिन्ता मत करना। अब मैं इनको नहीं छोड़ सकती.....।'

"पन्द्रह दिन बाद वे लोग आए और अपना अलग मकान लेकर रहने लगे। अब भी मेरी बहिन उसी के साथ रहती है। कभी-कभी आकर मुझसे मिल जाती है। उसकी सम्मति है कि मैं भी किसी के साथ बैठ जाऊँ।"

यहाँ हम पाठकों को बता देना चाहते हैं कि उस .....युवक की पहली स्त्री अभी तक उसके घर पर है, पर वह उसे छोड़ कर उसके साथ कलकत्ते में रहता है।

इसके बाद उक्त बहिन ने अपने वैधव्य की बात सुनाई—"विधवा होने पर मैं कुछ चिन्ता में पड़ी। मेरी सास के सिवा मेरा और कोई ख़ास सम्बन्धी न था। सास थी देश में। जब मेरी बहिन भी मुझसे अलग हो गई तो मुझे बहुत कष्ट हुआ। पर किसी प्रकार सँभल कर मैंने दूकान का काम चालू रक्खा, जिससे आमदनी होती रहे और रोटी के लाले न पड़ें। मेरी सास आई और १५-२० दिन रह कर फिर देश चली गई। अब मैं अकेली ही रहती थी। मेरे यहाँ एक पुराना नौकर था। उसी को मैं अपने यहाँ रात में सुलाती थी। वह अलग कमरे में सोता था। इससे मुझे कोई डर न था। कई बार ऐसा हुआ कि कोई पापी रात को बारह-एक बजे आकर मेरे किवाड़ खटखटाता। मैं उससे कई सवाल करती। वह अपने को तार का हरकारा अथवा और कोई बताता, जिससे मैं तुरन्त किवाड़ खोल दूँ। पर फिर मैं नौकर को चिल्ला-चिल्ला कर जगा देती और वह पापी भाग जाता। इस प्रकार रहते-रहते मेरा विश्वास उस नौकर पर बहुत जम गया था। वही मेरा आश्रय भी तो था! मैं उसके भरोसे अपने कमरे के किवाड़ बन्द किए ही कभी-कभी सो जाती थी। एक दिन ऐसा हुआ कि मैं सो रही थी। एक बजा होगा। किवाड़ यों ही भिड़े थे कि वह नौकर कुछ नशा कि मेरे कमरे में आ गया। खड़खड़ से मेरी नींद उच्च और मैं सब समझ गई। वह मेरे बिस्तर के पास आ हुआ। कुछ देर खड़ा रह कर धीरे-धीरे मेरी टाँगों हाथ फेरना शुरू किया। मुझे अच्छा लगा। मैं न बोल फिर उसने मेरे शरीर पर हाथ फेरा—जाकट के खोले। अन्त में मैं डूबी.....वर्षों बाद यह सुख मि था—मैं मना न कर सकी। मैंने सहयोग दिया और ... ... !!!

"फिर तो उमङ्गें बढ़ चलीं—नियम टूट ही जुआ जब कभी इच्छा होती, निकट के सम्बन्धी खोज-ख़ लेने आते ही थे—उनमें कुछ युवा और सुन्दर थे—उ के साथ पाप-लीला चल निकली। पर मैंने आते ही ही उस नौकर को निकाल दिया। उसको नीच जाति समझ कर मुझे घृणा हो गई थी। मैंने सोचा, अगर करना ही होगा तो अच्छे से अच्छे आदमी मेरे आते हैं—उन्हीं में से किसी के साथ कर लूँगी। कई बाद वह नौकर मेरे पास फिर नौकरी करने आया, प नहीं रक्खा।

"दो-तीन बार मुझे देश जाने का अवसर मिला। अकेली आती-जाती थी। अकस्मात् दिल्ली के पास पर एक टिकट-चेकर ने मुझे एक बार देख लिया और पता भी चल गया कि मैं विधवा हूँ। कलकत्ते रहती मेरे रूप पर वह गिरा और उसने कई चिट्ठी मेरे भेजी कि कम से कम एक बार तो मेरा मेहमान और जब कभी देश आओ तो मुझे ख़बर करना। सदा तुम्हारे स्वागत को तैयार हूँ।"

उसके दो-चार पत्र इस बहिन ने हमें भी दि थे। फूलदार छपे हुए लेटर-पेपर थे। सुगन्ध में हुए और बड़ी ही सुन्दर लिपि में लिखे हुए। सम्बोधन बहुत ही अश्लील थे। हमने बहिन से कहा यह पत्र तो बहुत ही गन्दे हैं। इन्हें फाड़ फेंकना चाहि उसने मुस्करा कर उत्तर दिया—'.....जी! कभी मचलता है तो उठा कर पत्र पढ़ लेती हूँ! मुझे इ तो सन्तोष है कि कोई व्यक्ति मुझे ..... करके पत्र तो लिखता है।'

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

चाँद

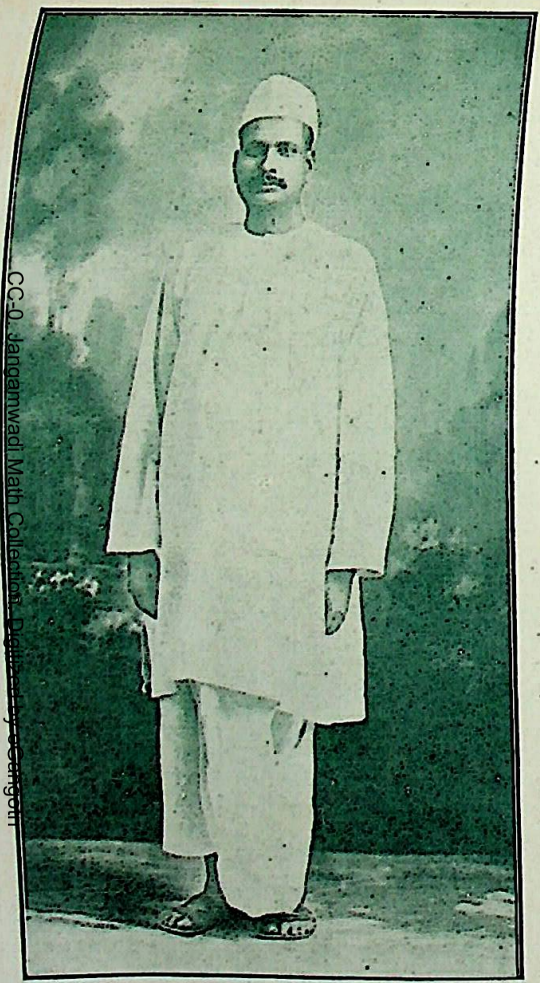

अछूतों के लिए अपने मन्दिर का द्वार उन्मुक्त करने वाले प्रसिद्ध सुधारक

सेठ जमनालाल जी बज़ाज

कलकत्ता के वयोवृद्ध सुधारक

श्री० पद्मराज जी जैन

कलकत्ता के प्रसिद्ध सुधारक तथा विगत माहेश्वरी महासभा के स्वागताध्यक्ष

सेठ रामकृष्ण जी मोहता

ART PRINTING WORKS ALLAHABAD

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

प्रेम-प्रमोद

[लेखक—श्री० प्रेमचन्द जी, बी० ए०]

यह बात बड़े-बड़े विद्वानों और अनेक पत्र-पत्रिकाओं ने एक स्वर से स्वीकार कर ली है कि श्री० प्रेमचन्द जी की सर्वोत्कृष्ट सामाजिक रचनाएँ 'चाँद' में ही प्रकाशित हुई हैं। प्रेमचन्द जी का हिन्दी-साहित्य में क्या स्थान है, सो हमें बतलाना न होगा। आपकी रचनाएँ बड़े-बड़े विद्वान् तक चाव और आदर से पढ़ते हैं। हिन्दी-संसार में मनोविज्ञान का जितना अध्ययन प्रेमचन्द जी ने किया है, उतना किसी ने नहीं। यही कारण है कि आपकी कहानियों और उपन्यासों को पढ़ने से जादू का सा असर होता है; बच्चे-बूढ़े, स्त्री-पुरुष—सभी आपकी रचनाओं को बड़े प्रेम से पढ़ते हैं। प्रस्तुत पुस्तक में प्रेमचन्द जी की उन सभी कहानियों का संग्रह किया गया है, जो 'चाँद' में पिछले तीन-चार वर्षों में प्रकाशित हुई हैं! इसमें कुछ नई कहानियाँ भी जोड़ दी गई हैं, जिनसे पुस्तक का महत्व और भी बढ़ गया है। प्रकाशित कहानियों का भी फिर से सम्पादन किया गया है। प्रत्येक घर में इस पुस्तक की एक-एक प्रति होनी चाहिए। जब कभी कार्य की अधिकता से जी ऊब जाय, एक कहानी पढ़ लीजिए, सारी थकान दूर हो जायगी और तबीयत एक बार फड़क उठेगी? कहानियाँ चाहे दस वर्ष बाद पढ़िए, आपको उनमें वही मज़ा मिलेगा। छपाई-सफ़ाई सुन्दर, बढ़िया काग़ज़ पर छपी तथा समस्त कपड़े की सजिल्द पुस्तक का मूल्य २॥) रु०; पर स्थायी ग्राहकों से १॥।=) मात्र!

निर्मला

[ले० श्री० प्रेमचन्द जी, बी० ए०]

इस मौलिक उपन्यास में लब्धप्रतिष्ठ लेखक ने समाज में बहुलता से होने वाले वृद्ध-विवाहों के भयङ्कर परिणामों का एक वीभत्स एवं रोमाञ्चकारी दृश्य समुपस्थित किया है। जीर्ण-काय वृद्ध अपनी उन्मत्त काम-पिपासा के वशीभूत होकर किस प्रकार प्रचुर धन व्यय करते हैं; किस प्रकार वे अपनी वामाङ्गना षोडशी नवयुवती का जीवन नाश करते हैं; किस प्रकार गृहस्थी के परम पुनीत प्राङ्गण में रौरव-काण्ड प्रारम्भ हो जाता है, और किस प्रकार ये वृद्ध अपने साथ ही साथ दूसरों को लेकर डूब मरते हैं; किस प्रकार उद्भ्रान्ति की प्रमत्त-सुखद कल्पना में उनका अवशेष ध्वंस हो जाता है—यह सब इस उपन्यास में बड़े मार्मिक ढङ्ग से अङ्कित किया गया है। सुन्दर सजिल्द पुस्तक का मूल्य केवल २॥); स्थायी ग्राहकों से १॥।=) मात्र!

व्यवस्थापिका

'चाँद' कार्यालय, चन्द्रलोक,

इलाहाबाद

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

हमें इस शोचनीय दशा पर दुःख हुआ। आगे उसने फिर कहना शुरू किया—"यहाँ (कलकत्ते में) कई व्यक्ति मेरे पीछे हैं। सौ-सौ रुपए सिर्फ़ मुँह दिखाई के पेशगी भेजते हैं। मैं अभी निश्चय नहीं कर पाई हूँ कि मुझे वह भी स्वीकृत करना चाहिए अथवा नहीं। देखो, सामने वाले लोग पुर्ज़े लिख-लिख कर, गोली बना कर, पान के महकदार बीड़े ऐसे तान कर यहाँ फेंकते हैं कि मेरे पास ही आकर पड़ते हैं। पर उन पर भी मैं अभी विचार कर रही हूँ। अभी हाल में ही मेरी सास यहाँ आई थी। कहने लगी—'बेटी, अब तुम सिर के बाल कटवा डालो। यह शृङ्गार करना छोड़ो और भगवान् की याद में जीवन बिताओ। मेरे साथ देश को चलो।' उसकी बात सुन कर मैंने मुस्करा दिया और ८ दिन में ही उसे देश भेज दिया। अब मैं सोच रही हूँ कि क्या करूँ? पर मेरी आन्तरिक इच्छा तो यह है कि कोई सुन्दर युवक मेरा विवाह करके मुझे यहाँ से ले जाय और घूँघट आदि का झञ्झट छुड़ा कर, मुझे ख़ासी मेम बना कर रक्खे। मेरी रुचि पढ़ने की भी है। रोटी बनाने में मुझे आलस्य है, पर दो व्यक्तियों का भोजन तो ख़ुशी से बना लिया करूँगी।"

विलास-नगरी कलकत्ते का प्रसिद्ध रॉयल एक्सचेञ्ज प्लेस
[जहाँ दिन-दहाड़े करोड़ों का 'सट्टा' और 'फाटका' (जिसे यदि शिष्ट-भाषा में 'जुआ' कहा जाय तो अनुचित न होगा) होता है !!]

यह बहिन मारवाड़ी-ब्राह्मण है। उसका हठ है कि अपने मन-पसन्द सुन्दर युवक से ब्याह करे। पर उसे देख कर हम कह सकते हैं कि कोई सुन्दर युवक उससे

(शेष मैटर २२१ पृष्ठ के पहले कालम में देखिए)

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

अजी सम्पादक जी महाराज,

जय राम जी की !

आख़िर आप न माने—मारवाड़ी-अङ्क निकालने की ठान ही ली। मुझे भय है कि कहीं मारवाड़ी लोग एका करके आपके पत्र का बॉयकाट न कर दें। यदि ऐसा हुआ तो बहुत बुरा होगा। खामख़ाह 'आ बैल मुझे मार' वाली कहावत क्यों चरितार्थ करते हो ? यद्यपि यह भी मैं जानता हूँ कि मारवाड़ी भाई बड़े भोले हैं। थोड़ी देर के लिए प्रवाहित धारा में बह जाते हैं, परन्तु फिर जब गोविन्द-भवन की तरह कोई घटना सामने आती है तो पछताते हैं और कहते हैं—'चाँद बड़ो अच्छो पत्र है, ख़ूब ठीक बात्ताँ लिखे है।" इसके अतिरिक्त एक बात यह भी है कि इन लोगों का बॉयकाट ही क्या—दस-पाँच दिन गपड़-शपड़ करके बैठ रहेंगे। सत्यता का बॉयकाट कितने दिन चल सकता है ? उन्हें यह उत्सुकता भी तो पैदा होगी कि देखें 'चाँद' ने हम लोगों के सम्बन्ध में क्या लिखा है। ऊँहूँ, यह सब ढकोसला है, यह बॉयकाट नहीं चलेगा। ऊपर से चाहे मारवाड़ी भाई बॉयकाट का ढोल पीटें, पर जब उनके पेट में उत्सुकता प्रसव-पीड़ा की तरह ज़ोर बाँधेगी तो चुरा-छिपा कर, उसी प्रकार चुरा-छिपा कर जिस प्रकार भले आदमी शराब पिया करते हैं, 'चाँद' का अङ्क ख़रीदेंगे, पढ़ेंगे, झल्लाएँगे—दाँत किटकिटाएँगे और फिर पढ़ेंगे ! उत्सुकता बड़ी बुरी वस्तु है। विशेषतः यह उत्सुकता कि हमारी बाबत क्या कहा गया है ! भगवान् इस उत्सुकता से मारवाड़ी भाइयों की रक्षा करे। यार चाहे तुम मानो या न मानो, पर मारवाड़ी-जाति बड़ी उन्नत जाति है। किसी भकुए से किसी बात में कम नहीं है। उनकी ओर से मैं संसार भर को चुनौती देता हूँ कि कोई सामने आ जाय और उनसे मुक़ाबला कर ले ! सबसे पहले व्यापार ही को लीजिए। मारवाड़ी भाई माँ के पेट में ही अद्धे, पौने, ड्योढ़े, सवाए सब सीख लेते हैं। पढ़े-लिखे कुछ नहीं, बातचीत करने का सलीक़ा नहीं, मगर लाखों का व्यापार करते हैं। बेवक़ूफ़ी से लोगों को हानि होती है, परन्तु मारवाड़ी भाई बेवक़ूफ़ी से भी लाभ उठाते हैं। लोग इन्हें बेवक़ूफ़ कहा करते हैं, पर ये अपना मतलब निकाल ही लेते हैं। कहिए, संसार की किसी और जाति में ये यह गुण हैं ?

यात्री भी बड़े विकट होते हैं। लोटिया-डोर लेकर रेंगते और माँगते-खाते हुए हज़ारों कोस चले जाते हैं। संसार के किसी भी देश में जाइए—मारवाड़ी भाई बहुत टइयाँ-से मौजूद मिलेंगे। लोग कहते हैं कि यूरोपियन लोग बड़े यात्रा-साहसी होते हैं, परन्तु उनका यात्रा-साहस इतना प्रशंसा के योग्य नहीं। बन्दूक़ और पिस्तौल बाँध कर तो एक व्यक्ति कहीं भी जा सकता है। परन्तु मारवाड़ियों को देखिए—केवल अपनी पगड़ी के बल पर, न जाने कहाँ-कहाँ पहुँच जाते हैं। पिस्तौल और बन्दूक़ की ऐसी-तैसी ! जहाँ किसी ने कुछ आँख

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

बदलीं, चट से पगिया पैरों पर आ गई ! उधर उसकी निगाह पगिया पर गई, इधर मारवाड़ी भाई ने उल्लू की लकड़ी उसके सिर पर फेर दी—बस फिर वह आँखें बदलना भूल गया और लगा मारवाड़ी भाई की हाँ में हाँ मिलाने।

जाति-वत्सलता भी इनमें बहुत है। किसी एक स्थान पर एक मारवाड़ी पहुँच गया तो बस फिर थोड़े ही दिनों में वहाँ मारवाड़ी ही मारवाड़ी दिखाई पड़ेंगे। जैसे सिर में एक भी जूँ कहीं से आ गई, बस फिर थोड़े दिनों में जुएँ ही जुएँ हो जाती हैं, उसी प्रकार मारवाड़ी भाई भी बढ़ते हैं—भगवान् जाने कहाँ से आ जाते हैं। अक़्ल हैरान हो जाती है। और जातियों में एक को देख कर दूसरा जला जाता है; परन्तु मारवाड़ी भाइयों में यह बात नहीं। जहाँ कोई मारवाड़ी आया, बस सबने चन्दा करके उसे दूकान खुलवा दी—फिर क्या है, थोड़े ही दिन में वह भी 'सेठ जी' कहलाने लगे। अन्य किसी जाति में इतनी जल्दी कदाचित् ही कोई सेठ जी बन सकता होगा। ईसामसीह की बाबत यह कहा जाता है कि जहाँ वह किसी से यह कह देते थे कि तू ऐसा हो जा, बस वह वैसा ही हो जाता था। यह गुण आजकल मारवाड़ियों में प्रत्यक्ष देख लीजिए। जहाँ उन्होंने किसी लँगोटीबाज़ मारवाड़ी को अपने मुखारविन्द से सेठ कह दिया, बस वह सेठ हो गया—कमाल है !

सेठ लोग धार्मिक भी बड़े होते हैं—यदि उन्हें नित्य एक नया देवता मिलता रहे, तब भी देवताओं का पिण्ड न छोड़ें। यदि मिट्टी-पत्थर के देवता न मिलें, तो आदमी ही को देवता बना कर अपनी पिपासा शान्त करें। शालिग्राम की बटिया और तुलसी-वृक्ष के विवाह में हज़ारों रुपए फूँक देते हैं। धार्मिकता की पराकाष्ठा है। हालाँकि थोड़ी बेवक़ूफ़ी के साथ है—यह मुझे मजबूरन मानना पड़ रहा है। दानशील भी बड़े होते हैं। इसके सम्बन्ध में अधिक कुछ कहने की आवश्यकता नहीं। उनकी दानशीलता के झण्डे गड़े हुए हैं—अखाड़े खुदे हुए हैं, मन्दिर बने हुए हैं, धर्मशालाएँ बनी हुई हैं—और न जाने क्या-क्या बना हुआ है।

मितव्ययी इतने हैं कि एक पैसे की विधि न मिले तो उसके मिलाने में चार पैसे का तेल फूँक दें ! जब विधि मिल जाती है तो यह सोच कर प्रसन्न होते हैं कि चलो चार पैसे का तेल जला उसमें से एक पैसा वसूल हो गया—तीन ही पैसे की हानि हुई। क्या कही है ! एक पैसे के आलू में दो सेर पानी और पाव भर मिर्चें छोड़ दीं, बस घर भर के लिए साग तैयार है। वह भी खाए नहीं चुकता—क्यों ? बहुधा मिर्चें अधिक हो जाती हैं। किसी ने कभी कहा कि—"सेठ जी, मलाई खाया करो।" तो बोले—"मलाई सौहरी तो कब्ज करे है।" यदि इस पर कोई बोला—"तो दूध पिया करो।" तो उत्तर मिला—"दूध सौहरा दस्त लावे है।" चलिए छुट्टी हुई—एक क़ब्ज़ करती है, दूसरा दस्त लाता है—दोनों से फ़ुरसत मिल गई। अपने राम की यह सलाह है कि मलाई खाने के पश्चात् कास्टर ऑयल पी लिया करें और दूध पीने के पश्चात् माशा भर अफ़ीम खा लिया करें तो हिसाब-किताब बराबर रहे। लेकिन मुफ़्त कमबख़्त की सलाह मारवाड़ी भाई मानने क्यों लगे; क्योंकि कास्टर ऑयल तथा अफ़ीम के लिए अधिक ख़र्च कहाँ से आएगा ?

मितव्ययी आदमी अमितव्ययी कभी नहीं हो सकता; परन्तु यह विरोधाभास भी हमारे मारवाड़ी भाइयों में मौजूद है। एक तरफ़ तो यह क़िफ़ायत कि पेट में खा न सकें, शरीर पर पहन न सकें, दूसरी तरफ़ इतनी फ़िज़ूल-ख़र्ची कि ब्याह-शादी में, मृत्यु में हज़ारों रुपए पानी की तरह बहा देते हैं और सच मानिएगा बिलकुल व्यर्थ !!

ईमानदार इतने होते हैं कि अपना एक पैसा भी नहीं छोड़ते और बेईमानी करते हैं तो डङ्के की चोट—दिवाला निकाल कर।

ग़मख़ोरी तो इस जाति से हार गई। आप मुँह पर गालियाँ दिए जाइए, परन्तु मारवाड़ी भाई हँसते ही रहेंगे। ग़ुस्सा तो इन्हें प्राप्त ही नहीं और कभी-कभी आ भी जाता है तो अपने ही ऊपर अथवा अपने से निर्बल पर। ग़ुस्सा है भी बुरी चीज़ ! ग़ुस्से में अधिकतर अपनी ही हानि होती है। मारवाड़ी भाई लाभ को छोड़ कर हानि के पास नहीं फटकते। यही कारण है कि वे ग़ुस्से को अपने से दस क़दम की दूरी पर रखते हैं। यदि किसी ने दो-चार खरी-खोटी सुना दी तो उससे क्या होता है, परन्तु यदि उन्होंने किसी को कुछ कह दिया और उसे क्रोध आ गया तो वह ज़रा ख़तरनाक हो जाता है ! इस कारण मारवाड़ी भाई हाथ-पैर बचाए रहते हैं। इनकी स्त्रियाँ

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

कैसी होती हैं—बस कुछ न पूछिए। 'अबला' शब्द यदि किसी पर लागू नहीं होता तो मारवाड़ी स्त्रियों पर! वे इतनी सबला होती हैं कि पुरुषों की उनके सामने नानी मरती रहती है। क्या मजाल जो पुरुष उनके किसी काम में हस्तक्षेप तो कर लें। सेठानी जी का जितना हुक्म चलता है, उसके देखते हुए सेठ जी का दशांश भी नहीं चलता। घर में सेठ जी आते हैं तो दबी बिल्ली बन कर। सेठानी जी के कहार की जो शान रहती है वह सेठ जी के बाप की भी नहीं होती; क्योंकि कहार सेठानी जी का परम आज्ञाकारी सेवक होता है—कभी किसी बात से इन्कार नहीं करता। इधर सेठानी जी की आज्ञा पालन करने में सेठ जी की रूह फ़ना होती है। क्योंकि सेठ जी को दूकान सम्बन्धी कामों को छोड़ कर, सेठानी जी के शौक़ सम्बन्धी कामों में बिलकुल दिलचस्पी नहीं होती। इसलिए सेठ जी भी अपना भार कहार के सिर पर डाल कर निश्चिन्त हो जाते हैं! इसी कारण बहुत सी बेगारों से उनके प्राण बचे रहते हैं। सेठानी जी ठहरीं गृह-लक्ष्मी। अतएव सेठ जी दूर ही से उन पर पत्र-पुष्प चढ़ाते रहते हैं—पास बहुत कम फटकते हैं, उसमें ख़तरा जो है। ख़तरे का काम सेठ जी नहीं करते। वह सब कहार राम के लिए छोड़ दिया जाता है।

सेठानी जी भी प्रत्येक समय अस्त्र-शस्त्रों से सुसज्जित रहती हैं। मोटे-मोटे कड़े, कङ्गन, चूड़ियाँ और न जाने क्या अल्लम-गल्लम पहने रहती हैं—यही उनके अस्त्र-शस्त्र हैं। यदि किसी भलेमानुस की खोपड़ी पर साधारणतया भी कलाई धर दें तो भेजा झन्ना जाय। इस कारण सेठ जी और भी अलग रहते हैं! सेठानी जी के अस्त्र-शस्त्रों का जितना बोझ होता है, उतना बोझ एक अभ्यस्त पल्लेदार ही उठा सकता है—मामूली आदमी का काम नहीं है। उतना बोझ राममूर्त्ति व्यायाम के समय ही उठाते होंगे—प्रत्येक समय नहीं। फिर भला उन्हें अबला कहना धृष्टता नहीं तो क्या है? जिस समय मारवाड़िनें चलती हैं, उस समय यदि आँखें बन्द करके सुनिए तो यही मालूम होगा कि क़ैदियों की टोली जा रही है। हालाँकि वे क़ैदी बिलकुल नहीं होतीं—वे बिना किसी की रोक-टोक या इजाज़त के स्वच्छन्द और स्वतन्त्र घूमा करती हैं!

स्त्रियों में पर्दा इतना है कि क्या मजाल जो कोई उनका मुख देख लें—असम्भव है। हाँ, पेट शौक़ से देख लीजिए। उसके देखने के लिए कोई रोक-टोक नहीं है। पेट है भी ऐसा पापी कि यह किसी के वश का नहीं है। स्वयम् इसने संसार को वश में कर रक्खा है। तब बेचारी मारवाड़िनें भला उसे किस प्रकार अपने वश में कर सकती हैं। जब से पर्दे के विरुद्ध आन्दोलन उठा है, तब से मारवाड़िनों ने लहँगा पहनना कम कर दिया है, क्योंकि उसमें आवश्यकता से अधिक पर्दा रहता था। अब उन्होंने मलमली किनारे की धोती पहनना आरम्भ किया है। इसमें सब तरह की सहूलियत है। न तो पर्दा ही है और न पूरी बेपर्दगी ही। बहुधा स्टेशनों के प्लेटफ़ॉर्मों पर स्नान करते समय वे इस बात का प्रयत्न करती हैं कि महीन धोती से जितना पर्दा हो सकता है, वह भी दूर हो जाय तो अच्छा। बहुत ज़्यादा पर्दा बुरा है, यह सभी मानते हैं। इसलिए मारवाड़िनों का यह उद्योग भी प्रशंसनीय ही समझा जाना चाहिए। हालाँकि कुछ लोग इस पर नाक-भौं चढ़ाते हैं, पर यह उनकी भूल है। मारवाड़ी पुरुष लोग बड़े समझदार हैं। वे पर्दे के कट्टर विरोधी हैं; इसीलिए तो वे अपनी स्त्रियों के इस सदुद्योग पर कभी चूँ तक नहीं करते!

सम्पादक जी! मारवाड़िनों का गाना कभी सुना है? वाहवा! क्या कहना है! बस यही प्रतीत होता है कि वेद की ऋचाएँ गाई जा रही हैं। मामूली लियाक़त का आदमी तो उनका एक शब्द नहीं समझ सकता। हाँ, मौक़ा लगे तो अवश्य सुनिएगा, परन्तु जितना अधिक दूर से सुनिएगा उतने ही मज़े में रहिएगा।

सम्पादक जी, कहाँ तक कहूँ। मारवाड़ियों का गुण-गान करना मेरी लेखनी की सामर्थ्य के बाहर की बात है। यदि लेखनी सहस्र-जिह्वा होती तो कदाचित् कर सकती। परन्तु इतना मैं अवश्य कहूँगा, बार-बार कहूँगा—प्रसन्न न होते हुए भी कहूँगा—हालाँकि ऊपर मैं बहुत से प्रमाण दे चुका हूँ—कि मारवाड़ी-जाति बड़ी उन्नत जाति है। आपको इस जाति में सब बातें मिलेंगी। संसार की कोई जाति इस जाति का मुक़ाबला नहीं कर सकती।

भवदीय,

विजयानन्द (दुबे जी)

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

मारवाड़ी-स्त्रियाँ

["एक मारवाड़ी"]

मारवाड़ी-स्त्रियाँ तीन भागों में विभाजित की जा सकती हैं। एक व्यापारी-वर्ग की स्त्रियाँ, दूसरी शिल्पी मज़दूरों और किसानों की स्त्रियाँ और तीसरी मुफ़्तख़ोरों की स्त्रियाँ।

व्यापार वर्ग में अगरवाल, ओसवाल, दिगम्बर, जैनी और माहेश्वरी आदि कई जाति की स्त्रियाँ हैं। इनमें अगरवाल और माहेश्वरी जाति में आचार-सम्बन्धी कोई भेद नहीं है। ओसवाल लोग श्वेताम्बर और स्थानकवासी जैन हैं और पर्दे का बड़ा ख़्याल रखते हैं। क्योंकि ये लोग राजपूताने के राज्यों में मुलाज़मत भी करते हैं और अच्छे-अच्छे ओहदों पर प्रतिष्ठित हैं, इसलिए पर्दे आदि के विषय में राजपूती आचार-व्यवहार को काम में लाते हैं। दिगम्बर जैन केवल व्यापारी हैं, पर्दे की कड़ाई इन लोगों में उतनी नहीं है, मगर व्रत, उपवास और भूखे रहने की प्रवृत्ति इन लोगों में बहुत है; हर तीसरे-चौथे दिन कोई न कोई व्रत, उपवास बना ही रहता है।

इन जातियों में बाल्यावस्था से ही बच्चा सोने-चाँदी के गहनों से लाद दिया जाता है। गले में कई प्रकार के कठले, पैरों में नेवरी, साँकला आदि सेर-आध सेर चाँदी, जैसी उमर हो, पहना दी जाती है। हाथों में भी कई गहने होते हैं। इस प्रकार बच्चे, बच्चियाँ चलने-फिरने और खुल कर खेलने-कूदने से मजबूर, प्रायः सुस्त, बदहज़मी की शिकायत लिए हुए और व्याकुल देखे जाते हैं। माता-पिताओं में मूर्खता के संस्कार होने के कारण बीमारी में प्रायः झाड़ा-फूँकी, जन्तर-मन्तर, गण्डा-तावीज़ से ही बहुत काम लिया जाता है। आख़िरी वक़्त में ही वैद्य, डॉक्टर टटोले जाते हैं, इसलिए अधिकांश में बच्चे मर जाते हैं। जो अधिक सशक्त होते हैं, वे ही जीवित रहते हैं।

विवाह थोड़ी ही उम्र में हो जाता है, क्योंकि ये सब व्यापारी-वर्ग के लोग धार्मिक मामले में बड़े भारी पुराणपन्थी हैं। आठ से लेकर ग्यारह-बारह वर्ष तक की लड़कियों का व्याह इनमें हो जाता है! इससे वे लोग भी नहीं बचते जो अच्छे शिक्षित हैं। इनमें कितने ही वकील हैं, वे भी इसी बीमारी में मुब्तला हैं, उनके अन्दर भी यह साहस नहीं कि बच्चों को वयस्क हो जाने पर व्याहें। सुधारवादी अगरवाल-सभा के प्रधान और मन्त्री को भी छोटी ही लड़कियों का विवाह करते देखा जाता है। मेरे पड़ोस में एक वकील साहब रहते हैं, उन्होंने अपनी लड़की का व्याह दस वर्ष की आयु में और छोटे भाई का चौदह-पन्द्रह वर्ष की आयु में कर दिया था। लड़की का हाल तो मालूम नहीं, पर भाई आजकल कॉलेज में पढ़ता है, शकल पर बारह बज रहे हैं—पीला चेहरा, गाल अन्दर घुसे हुए, गालों की हड्डियाँ ऊँट के कोहान की तरह उभरी हुई हैं। एक दिन हमने पूछा—कहो कुँवर साहब, मिज़ाज कैसा है, कुछ तबीयत ख़राब है क्या? वे बोले—नहीं तो, बहुत अच्छा हूँ।

बात यह है कि राजपूताने में विवाह होते ही प्रसङ्ग शुरू हो जाता है—उसी रात से। उमर का कोई ख़्याल नहीं, क्योंकि आप जानते ही हैं "मज़हब में अक़्ल को दख़ल नहीं।" विवाह-सम्बन्ध में राजपूतों की नक़ल की जाती है, उनके यहाँ यही रिवाज है। चतुर्थी-कर्म विवाह के पश्चात् तत्काल ही कन्या-पिता के घर पर ही किया जाता है। परन्तु राजपूतों में बच्चों का विवाह कदापि नहीं होता। पूर्ण समर्थ युवक-युवती का ही विवाह होता है। इसलिए उनके यहाँ यह रस्म हो तो उससे कुछ भी हानि नहीं, उसका औचित्य समझ में आता है, परन्तु इन व्यापारी-वर्ग के लोगों का तो यह काम समझ से बाहर ही मालूम होता है। बाल-विवाह जारी करने वाले आचार्यों ने इसके साथ ही एक द्विरागमन (गौने) की रस्म जारी की थी। उसका पालन यू० पी० की तरफ़ इस प्रकार होता है कि विवाह तो छोटी उमर में हो जाता है, परन्तु जब तक कन्या पूर्ण युवती न

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

हो जाय, तब तक गौना नहीं किया जाता और लड़की अपने पिता ही के घर पर बराबर रहती है। ऐसा होने से बाल-विवाह के दोष का कुछ परिहार अवश्य हो जाता है। परन्तु यहाँ राजपूताने में गौने की रस्म इस प्रकार उपयोग में नहीं आती, हाँ दहेज़ बराबर चलता है। इसका परिणाम यह होता है कि ब्रह्मचर्य और वीर्य की रुकावट से होने वाला लाभ इन लोगों के बच्चों को नहीं मिलता और हीन शरीर-सम्पत्ति लेकर ही ये संसार-यात्रा में प्रवृत्त हो जाते हैं!

'व्यापारे वर्धते लक्ष्मीः' यह अर्थ-शास्त्र का वाक्य अब भी उतना ही सत्य है, जितना प्राचीन काल में था, वरन् अब तो यह अपने पूर्ण तेजस्वी रूप में चमकने लगा है। संसार के धन का आधे से बहुत ज़्यादा भाग व्यापारियों के पास है। बाक़ी आधे से बहुत कम शिल्पी, मज़दूरों और किसानों के पास! मारवाड़ियों का व्यापारी-वर्ग भारत के सब वैश्यों से व्यापार-कला में अधिक कुशल, बड़ा होशियार और पूरा चाणाक्ष है, और तन, मन, धन से इस काम में जुता है। व्यापार का कोई फ़न इनसे छिपा हुआ नहीं। दूसरे देश के व्यापारियों से इनके सीधे सम्बन्ध हैं। नई ईजाद सबसे पहले इनके पास आती है और ये भरपूर फ़ायदा उसके व्यापार से उठाते हैं। यही कारण है कि ये सब व्यापारी बड़े धनी हैं। बङ्गाल, बिहार, यू० पी०, बम्बई, मद्रास, सी० पी० आसाम, ब्रह्मदेश, सिंहापुर आदि के सब बड़े-बड़े व्यापारी नगर मारवाड़ी दूकानों और कोठियों से भरे हैं और सम्पत्ति की ख़ूब वृद्धि इन लोगों में हो रही है। सम्पत्ति की वृद्धि से ऐश-आराम और भोग-विलास का घनिष्ठ सम्बन्ध है। दोनों सदा साथ रहते हैं। इसके अनुसार मारवाड़ी-व्यापारी धनी भी होकर, बहुत-कुछ ऐयाश हो गए हैं। रण्डीबाज़ी इनमें बढ़ गई है और उससे पैदा होने वाले रोग आतशक, सूज़ाक की बीमारी इन लोगों में बहुत फैली है। कलकत्ते, बम्बई आदि बड़े शहरों के डॉक्टर, जो इन रोगों का अच्छा इलाज करते हैं, मारवाड़ी रण्डीबाज़ों की बदौलत मालामाल हो रहे हैं। ये पुरुष अपनी बीमारी अपनी स्त्रियों को भी सौगात में देते हैं।

इसके सिवा एक और भी बात है। धनी मारवाड़ी की स्त्रियाँ हाथ में काम नहीं करतीं। इनका समय विलास में बीतता है। ऐश्वर्य पलँगों पर लोटने और अपने गपशप में इनमें से लिखी-पढ़ी है तो न्यास पढ़ने में वक़्त गुज़ारती है। इसका नतीजा हुआ है कि इनके शरीर बेडौल हो गए हैं, पेट को घड़ा सा निकला रहता है, भुजदण्ड और मांसल अङ्ग बेहिसाब मोटे होते हैं, चेहरे का सौन्दर्य नष्ट होकर, एक अजब तरह का बेडौल आकार हो जाता है। तिस पर सेर दो सेर सोने और चार-मन चाँदी से लदी हुई यह बेडौल मूर्त्ति देखने वालों के हृदय में अद्भुत-रस का सञ्चार करती है। बाल-बच्चे प्रायः से अधिकांश को नहीं होते। धनी मारवाड़ी प्रायः सुख से वञ्चित रहता है और लड़का गोद लेकर परम्परा जारी रखता है।

शहरी गृहस्थ-स्त्रियों का पहिनाव

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

दूसरी तरफ़ मन्दाग्नि, अजीर्ण, बवासीर, तपेदिक़ आदि भी यथावकाश दौरा करते रहते हैं। धनियों की स्त्रियों में स्वास्थ्य-सौन्दर्य और प्रफुल्लता क्वचित् ही देखने को मिलती हैं।

अलबत्ता साधारण मारवाड़ी व्यापारी की स्त्री स्वस्थ दशा में पाई जाती है। उसके चेहरे पर स्वास्थ्य-जन्य सौन्दर्य की झलक है। कारण स्पष्ट है, वह अपना कुल काम हाथ से करती है—घर की सफ़ाई, भोजन बनाना, पानी लाना, आटा पीसना आदि-आदि। ये स्त्रियाँ बाल-बच्चों वाली भी होती हैं।

जैनियों के उपवास-बाहुल्य का या न मालूम किसी और बात का यह परिणाम होता है कि ये लोग और इनकी स्त्रियाँ दुर्बल हैं, इनके बच्चे कम होते हैं और ये गत तीन मर्दुमशुमारियों में बराबर घट रहे हैं। ईसाई-मुसलमान तो ये होते नहीं, क्योंकि इनमें धार्मिक कट्टरता बड़ी भारी है। इसलिए यही नतीजा निकलता है कि ये लोग बेऔलाद मर रहे हैं और इस प्रकार दिनों-दिन घटते जा रहे हैं।

शिल्पियों, किसानों और मज़दूरों की स्त्रियाँ शारीरिक दशा में इतनी हीन नहीं हैं। वे अपना सब काम अपने हाथ से करती हैं - घर का काम, पशुओं की टहल, खेती-बाड़ी में अपने मर्दों की सहायता। ये सब ऐसे काम हैं, जिनसे काफ़ी व्यायाम हो जाता है और शरीर सशक्त, फुर्तीला और चुस्त रहता है। बाल-बच्चों की इन स्त्रियों में कोई कमी नहीं है। यद्यपि बाल-विवाह इन सब में भी जारी है, सिवाय राजपूतों के।

राजपूत-स्त्रियाँ पर्दे का विशेष ध्यान रखती हैं, परन्तु वे घर में सब काम करती हैं। बाहर जाने का काम हो तो उसे रात में करती हैं, जैसे पानी भरना हो तो रात में जाकर कुएँ से भर लाएँगी, दिन में सबके सामने न जाएँगी। खेती के काम में भी वे इसी तरह सहायता करती हैं।

गढ़पतियों या गाँव के ठाकुरों की स्त्रियाँ हाथ से कोई काम नहीं करतीं।

जो गाँव शहरों के पास हैं, उनकी स्त्रियाँ दूध, दही, शाक, अन्नादि का उत्तम भाग शहर में बेच आती हैं। चाहे वे स्वयं अथवा उनके पुरुष यह काम करते हैं। स्वयं निकृष्ट अन्न जौ, चना आदि खाती हैं, गेहूँ बाज़ार में बेचती हैं। छाछ स्वयं पीती हैं, घी-दूध बाज़ार में बेचती हैं! पैसा इनके पास आता है, परन्तु शहर के चाह-पानी और मिठाई वाले कुछ पैसे इनसे ज़रूर छीन लेते हैं। कभी-कभी शराब वालों की मुट्ठी गरम होती है।

देहात में कारीगरों की हालत कुछ अच्छी नहीं है। हल, बकवर और रेज़ी के कपड़े के सिवाय वहाँ किस चीज़ की क़दर है? ये लोग वक़्त का बहुत बड़ा हिस्सा

बीकानेर की स्वाभाविक पोशाक में एक मारवाड़िन युवती

बेकारी में ही बिताते हैं। यही हाल इनकी स्त्रियों का है। कोई काम नहीं तो पैसा कहाँ से आए। और बिना पैसे के अच्छा खाना, अच्छा कपड़ा कहाँ से नसीब हो?

देहात में कुछ ब्राह्मण और सेवक लोग भी रहते हैं। ये प्रायः मूर्ख होते हैं, या अटक-अटक कर दस-पाँच पंक्तियाँ पढ़ने लायक़ इनकी योग्यता होती है। देहाती लोगों का अण्ट-सण्ट ब्याह-सम्बन्धी मन्त्र पढ़ देना और

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

पीर-पूजन

पीर जी थाँरा डीअर चढ़ताँ काँटो चुभायो जी।

ART PRINTING CO. ALLAHABAD

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

पैदा होने, मरने आदि की धार्मिक रस्में अदा करा देना यही इनका धन्धा होता है। इसी निमित्त से कुछ दान-दक्षिणा इनको मिल जाती है, उसी से गुज़र होती है। इनकी स्त्रियाँ बहुत करके ठाकुरों और वैश्यों के घरों में काम-काज और सेवा में लगी रहती हैं।

कुल मिला कर देहाती स्त्रियों की दशा साधारण है। नस्ल बराबर अवनति कर रही है। माँ से बेटी क़द और डील-डौल में छोटी और हीन है। खाने-पीने और दूध-घी की कमी है। माताओं के स्तनों में अब दूध कम उतरता है, इसलिए बच्चों की भारी हानि हो रही है। हवा अलबत्ता साफ़ और खुली हुई मिलती है।

शहरों के शिल्पियों और किसानों की स्त्रियाँ अपेक्षाकृत कुछ अच्छी दशा में हैं। काम करती हैं, पैसा पैदा करती हैं, अच्छा खाती हैं, अच्छा पहनती हैं, गहना-गाँठी और कुछ पूँजी भी रखती हैं। कितनी ही स्वयं कारबार चलाती हैं, बहुत करके पुरुषों की ग़ुलाम नहीं हैं।

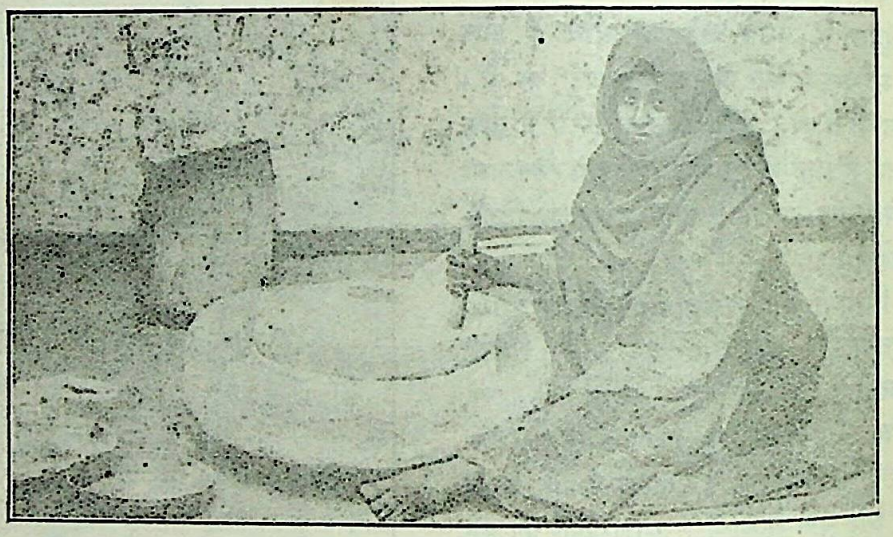

आटा पीसते हुए मारवाड़ की एक अभागिनी विधवा

सामाजिक दशा

बाल-विवाह का राजपूताने में ज़ोर है। जैसा कि हम ऊपर लिख चुके हैं, कन्याओं को चाहे जिसके गले मढ़ दिया जाता है। वैश्य-सम्प्रदाय बहुत करके पैसे वाले धनी के लड़के के साथ विवाह करना पसन्द करता है। इसमें वह इस बात पर विचार नहीं करता कि वर-वधू की शरीर-सम्पत्ति कैसी है। हमारे पड़ोसी एक सेठ साहब ने अपने ग्यारह वर्ष के लड़के का सम्बन्ध १५ वर्ष की लड़की से स्वीकार कर लिया! कारण यही था कि कन्या का बाप अमीर आदमी था, दहेज मिलने की ज़्यादा उम्मीद थी और बड़े घराने से सम्बन्ध जुड़ता था। लड़की के बाप की विचार-परम्परा यह होती है:—

"काँई है, चार वर्ष में लड़को मोट्यार हो जासी, सब सँभाल लेसी। इशो सगपण मिलणो कठ्ठ है, कठै पड़्या है, मालदार घर छै बाई को खाणे-पीणे, पहरवा कीं तकलीफ़ नहीं रहसी। खूब मौज करसी, भीड़ वखत में आपणे काम आसी" इत्यादि।

लड़के का बाप यों सोचता है:—

"काँई है, बीन्दणी चिनी बड़ी छै तो। 'बड़ी बड़ो भाग, छोटी लाड़ी घणों सवाग'।"

परिणाम में व्यभिचार की वृद्धि हो रही है, [illegible] मान से रखते हैं, अच्छा कपड़ा, ख़ूब गहना, खाना-पीना इसमें कोई कमी नहीं होने पाती। दावतों में पहले [illegible] जिमाई जाती हैं, पीछे पुरुष। इस प्रकार स्त्रियों को [illegible] प्रकार प्रसन्न रखने और उनकी प्रतिष्ठा बढ़ाने की [illegible] मारवाड़ी-समाज पूर्ण रूप से करता है।

गहने

गहने का मारवाड़ी-स्त्रियों को बड़ा शौक़ है। [illegible] भारी गहने पैरों में, गले में, हाथों में पहनती हैं; [illegible] पहन कर चलना या हाथ उठाना कठिन होता है। [illegible] पहन कर जल्सों और दावतों या मेले-ठेलों में ही [illegible] हैं; घर पर सादी रहती हैं। गहने की अधिकता [illegible] प्रायः इस समाज में बड़ा मान है। अच्छे सम्बन्ध या [illegible]

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

पीर-पूजन

पीर जी थाँरा डीअर चढ़ताँ काँटो चुभायो जी।

ART PRINTING CO. ALLAHABAD

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

अबलाओं का इन्साफ़

नवीन संशोधित और परिवर्द्धित संस्करण के तिरङ्गे Protecting Cover का नमूना

स्मरण रहे, यह उसी क्रान्तिकारी पुस्तक का नया संस्करण है, जिसने मारवाड़ी-समाज को तिलमिला दिया था, और जिसके विरुद्ध इतना प्रभावशाली आन्दोलन उठाया गया था कि पुस्तक

मीनाई पहली संस्करण से दूनी, मू० ३) रु०, स्थायी ग्राहकों से २)

व्यवस्थापिका 'चाँद', कार्यालय, चन्द्रलोक, इलाहाबाद

खरीद-खरीद कर जला दी गई थी !!

पर जब से गोविन्द-भवन जैसी नारकीय संस्था का इसने भण्डाफोड़ किया, तब से मारवाड़ी-समाज का सारा जोश ठण्डा हो गया और आज वह स्वयं इसका प्रचार चाह रहा है। अनेक शिक्षित मारवाड़ी-भाइयों के अनुरोध से ही यह नवीन संस्करण प्रकाशित हुआ है।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

दारी का मिलना और समाज में प्रतिष्ठा का क़ायम रहना, गहने की अधिकता और बहुमूल्यता पर निर्भर है। इसलिए मारवाड़ी चाहे जितना क़र्ज़दार हो, स्त्रियों की सजावट और गहने में बिलकुल कमी नहीं करता, और अड़े वक़्त में चाहे दिवालिया होने की दरख़्वास्त देनी पड़े, परन्तु स्त्री के गहने पर कदापि हाथ नहीं डालता।

कभी-कभी भारी नुक़सान भी गहने की बदौलत उठाना पड़ता है। मारवाड़ के गाँवों की बैलगाड़ी और ऊँटों के सफ़र में प्रायः स्त्रियाँ लूटी जाती हैं। पिछले दिनों एक मुक़द्दमा चल रहा था, जिसमें दस हज़ार के गहने लूटने की बात थी। गहना पहने हुए बच्चे भी काफ़ी तादाद में मारे जाते हैं। हमारे पड़ोसी एक सेठ के मुनीम जी ने ज्योतिषी जी को जन्म-पत्र दिखाया और लाभ का समय पूछा। ज्योतिषी जी महाराज ने बहुत गणित करके और हिसाब लगा कर फ़र्माया कि इसी महीने में, बल्कि इसी सप्ताह में आपको बहुत अच्छा लाभ होगा, अनायास रुपया मिलेगा। मुनीम जी ने प्रसन्न होकर एक रुपया ज्योतिषी जी को दक्षिणा दे डाली! शाम को उनका परिवार बिरादरी की एक दावत में गया और उनकी पुत्र-वधू की तीन सौ रुपए की एक पहुँची कहीं खो आई। तीन दिन तक मुनीम जी के घर सियापा पड़ा रहा, खाना नहीं पका। आख़िर सब रो-पीट कर बैठ रहे, पहुँची नहीं मिली। ज्योतिषी जी की वाणी पूर्ण-रूप से विपरीत फलादेश में सफल हुई!

मनोरञ्जन

सिवाय खाने-पीने और विवाह-शादी के जल्सों के और किसी काम में स्त्रियों का हाथ नहीं देखा जाता। विवाह की रस्म में साधारण गाने-बजाने के सिवाय गाली या सीठने गाने का रिवाज मारवाड़ी-स्त्रियों में, सब प्रान्तों से अधिक है। स्त्रियों की कोई टोली सड़क पर, कोई भजन या गीत गाती जा रही है और सामने से उनका कोई रिश्तेदार, समधी, जमाई, बहनोई आदि आता हुआ मिल जाय तो उस गीत को छोड़, फ़ौरन फ़ड़का (गाली) गाना शुरू कर देंगी। जैसे—"जय गोपाल जय गोपाल पकड़ूँ चोटी काटूँ .....।" दावत के वक़्त की गालियाँ इतनी फ़ोश और अश्लील होती हैं कि सुनना नामुमकिन है। मगर मारवाड़ी-समाज उन्हें ही ख़ास तौर पर फ़र्माइश करके गवाता है, और बड़ा आनन्दित होता है!!

विवाह से हफ़्ते दो हफ़्ते पहले घर में नाच की महफ़िल लगने लगती है। इसमें ढोली ढोल की गत बजाता है और स्त्रियाँ नाचा करती हैं—कभी एक, कभी दो-चार। यह नाच घूँघट निकाल कर होता है और कुछ गाया भी नहीं जाता। हाथों का अभिनय और घूमना यही दो गति होती रहती हैं। कभी-कभी सिर पर जलती

अभागिनी मारवाड़ी-महिला की पोशाक का एक नमूना

हुई अग्नि का पात्र रख कर और उसे हाथों से न सँभाल कर भी यह नृत्य होता है। इस नाच में पुरुष-स्त्री सब शामिल होते हैं, किसी के लिए कोई रोक-टोक नहीं होती। घर के भीतर आँगन में काफ़ी जगह न हो तो बाहर सड़क पर भी यह नाच रात-रात भर हुआ करता है।

गाँवों में ग्रामीण स्त्रियाँ बेहिसाब गाना-बजाना

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

करती हैं। उनके कोई-कोई गीत बड़े भावपूर्ण होते हैं। बिच्छू का, देवर-भौजाई का आदि कितने ही गीत उनके बहुत प्रसिद्ध हैं। राजपूताने में हर मौसम के अलग-अलग गीत स्त्रियाँ गाती हैं। शीत-काल में सियाला, ग्रीष्म में उनाला या तावड़ा, वसन्त-ऋतु में होली-पिचकारी। बरसात की रङ्गरेलियों की तो कुछ बात ही न पूछिए। बरसात का राजपूताने में भारी स्वागत होता है। एक मुहल्ले की या हवेली की स्त्रियाँ काम-काज से फ़ुरसत

एक मारवाड़ी गृहस्थ-स्त्री पानी भर कर ला रही है

पाकर इकट्ठी होकर गीत गाने बैठ जाती हैं। पपीहा, बादली, लहरिया, ननदल बाई आदि कितने ही भावपूर्ण रसीले गीत गाए जाते हैं। बरसात में भारी मनोरञ्जन होता है—गोटें (गोष्ठियाँ) होती हैं; स्त्री-पुरुषों के समूह बाहर कहीं पहाड़ पर या किसी सुन्दर नदी या तालाब के किनारे या बाग़-बग़ीचे में जाकर खाना-पीना करते हैं। भोजन में प्रायः दाल, बाटी, चूर्मा बनता है। गाना-बजाना होता है, स्त्रियाँ बीच में बैठी 'रसिया' रहती हैं, पुरुष चारों तरफ़ बैठे सुना करते हैं, और हित करते रहते हैं। शाम को या रात पड़े उसी गाते-बजाते, ढोल-डमाके और गैस की रोशनी में में प्रवेश करते हैं। ये गोटें चन्दे से हुआ करती हैं। रिवाज सब जातियों में है। अपनी-अपनी जाति अलग-अलग होती हैं। सब जातियाँ शामिल-गोट नहीं करतीं। कभी-कभी एक-एक पेशे के लोग भी करते हैं, परन्तु उनमें स्त्रियाँ नहीं होतीं।

राजपूत-स्त्रियों का मनोरञ्जन अन्य स्त्रियों से है। वे जब कभी स्वयं गावेंगी या ढोलनियों से गवा तब सदा शराब और कलाली के गीत! मस्ती मस्ती के सामान का यशोगान! शराब वे स्वयं न पिएँ, गाने में यही मज़मून उनको पसन्द है:—

भरला ए सुघड़ कलाली! दारुड़ो दाखाँरो,
कलाली भरला री प्याला,
सेज पर आया मतवाला।

दूसरे गीत भी गाए जाते हैं, पर यदा-कदा। उनमें भी इसी मज़मून का पुट प्रायः रहा करता है। सौभाग्यवती राजपूत-स्त्रियाँ बराबर शराब पीती हैं इसे सुहाग का चिन्ह मानती हैं। विधवा होने पर राजपूतनी शराब और मांस को कभी नहीं छूतीं।

त्योहार या उत्सव के दिन राजपूत स्त्री-पुरुष सब जने एक ही थाल में भोजन करते हैं—पुत्र, पुत्री, स्त्री, पुरुष, सास, बहू, ननद, देवरानी, जिठानी सब एक थाल में। यही प्रेम-भावना और एकाग्री भाव का सिद्धान्त उनके यहाँ माना जाता है।

दरोगा

राजपूत-ठिकानों में एक दरोगा नाम की जाति है। उसकी स्त्रियों की हालत बड़ी ख़राब है। ये वे लोग हैं जो रोज़गार नष्ट हो जाने से राजाओं, ठाकुरों या ठिकानेदारों की चाकरी करते हैं। सपरिवार राजघरानों में रहते हैं और इनके कुल ख़र्चे का भार ठिकाने के सिर रहता है। स्त्रियाँ ज़नाने महलों में सेवा-कार्य करती हैं, पुरुष बाहर। सब प्रकार की सेवा ये लोग तन-मन से करते हैं। एक प्रकार से ये लोग क्रीत-दास की भाँति होते हैं। स्वामी चाहे जिस प्रकार से इस्तेमाल करो, कुछ भी उज़्र नहीं

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

राजपूत-इतिहास के प्रसिद्ध विद्वान् श्रीमान् महामहोपाध्याय रायबहादुर पण्डित गौरीशङ्कर हीराचन्द्र जी ओझा की सम्मति है कि ये लोग 'राजपूत' ही हैं, इनका रिज़्क़ (ज़मीन-जायदाद) नष्ट हो जाने के कारण राजपूती शान-बान नष्ट हो गई है और ये अपने स्वामियों के आश्रय में ही दिन बिताते हैं। सम्पत्ति नष्ट हो जाने के कारण इन लोगों में राजपूतों की भाँति पर्दा नहीं रहा, क्योंकि घर के प्रत्येक काम के लिए स्त्रियों को बाहर निकलना पड़ता है और हर किसी से बातचीत करनी पड़ती है। इसके सिवा ज़मीन-जायदाद नष्ट होने से ऊँची रिश्तेदारी भी नहीं मिलती। विधवा को सम्पत्ति-विहीन हो जाने के कारण से पुनर्विवाह या नाता भी करना पड़ता है। इन सब हेतुओं से ये लोग प्रतिष्ठा और आत्म-गौरव से हीन हो गए हैं। मगर ये लोग बड़े स्वामि-भक्त हैं। राजपूत-राजाओं या ठिकाने के ठाकुरों का सब कुछ इनके अधीन है। खाना-पीना, स्त्री, बाल-बच्चे, रुपया-पैसा, ज़र-ज़ेवर, पोशाक—सब इनके अधीन है। रईस और रानी या ठकुरानी इन पर पूरा विश्वास करके निश्चिन्त रहते हैं। इनसे किसी प्रकार का परहेज़ या पर्दा नहीं। ये हर हालत में शरीक रहते हैं। इनकी वफ़ादारी की बहुत सी कथाएँ हैं। उदयपुर घराने की पन्ना धाय, जिसने अपना लड़का राजकुमार के बदले में क़त्ल होने दिया था, बहुत प्रसिद्ध है। इस प्रकार के कितने ही उदाहरण ये लोग स्वामि-भक्ति के उपस्थित कर चुके हैं; जो इतिहास के पन्नों पर शायद न आए हों, परन्तु सर्वसाधारण की ज़बान पर हैं। इनका स्वामी बर्बाद हो जाय, उसकी जीविका नष्ट हो जाय, तो ये उसे छोड़ कर कदापि भाग न जाएँगे। आप कमा कर लाएँगे और ठाकुर-ठकुरानी और उसके बाल-बच्चों की परवरिश करेंगे।

ये लोग किसी-किसी रियासत में ठिकानेदार भी हैं, जो युद्धों में बहादुरी और सिर कटाने के पुरस्कार-स्वरूप इन लोगों को मिले हैं। कहीं-कहीं रईसों के एडिकॉङ्ग और मर्ज़ीदान भी हैं। कोई-कोई पोलो के बहुत अच्छे खिलाड़ी हैं। इसलिए रईसों के प्रीति-पात्र बने हैं और प्रतिष्ठापूर्वक जीवन बिताते हैं, लेकिन यह सब व्यक्तिगत है; और उसका असर सब बिरादरी पर कुछ भी नहीं। वह राजपूतों से बराबर हीन समझी जाती है।

परन्तु अब स्थिति में परिवर्तन हो रहा है। जैसे ही इन लोगों ने अपने को राजपूत घोषित किया, अपनी सभाएँ कीं और अख़बार निकाला, वैसे ही इनके स्वामी सरदार लोग बिगड़ खड़े हुए हैं और इनको दबाने की अनेक युक्तियाँ सोच रहे हैं। इनको भय यह हो रहा है कि अगर ये राजपूत मान लिए गए और हमारे पञ्जे से निकल गए, तो हमारी सेवा-चाकरी कौन करेगा? और हम जो मुफ़्त में मज़ा उड़ा रहे हैं वह कैसे क़ायम रहेगा;

जयपुर, बीकानेर के तरफ़ की अभागे दरोगा (गोला) जाति की एक स्त्री
[जागीरदार ठाकुरों की ग़ुलामी ही जिनका एकमात्र व्यवसाय है!]

क्योंकि इस वक़्त ये लोग दरोगों को मन भर जौ, जुवार और एक रुपया हाथ-ख़र्च के लिए देते हैं। इस तनख़्वाह में इन्हें बाहर का कोई ऐसा नौकर नहीं मिल सकता, जो स्त्री-सहित हर वक़्त इनकी सेवा में हाज़िर रहे! इसलिए ये लोग इन्हें छोड़ना नहीं चाहते। अगर कोई स्त्री या पुरुष चोरी-छिपे से, इनके अत्याचारों से सताया हुआ

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

शरणार्थ अङ्गरेज़ी राज्य में चला जाय, तो चोरी का अभियोग लगा कर उसे पकड़वा मँगाते हैं और भाँति-भाँति से तङ्ग करते हैं !!

इनमें शिक्षा का बिलकुल अभाव है और ये लोग पैसे-पैसे के मुहताज हैं ! क्योंकि इनके पास सिवाय उस ग़ुलामी के, स्वतन्त्र जीविका का कोई साधन नहीं ! ये पशुओं की भाँति बिलकुल अपने स्वामी के आश्रित हैं। इनकी स्त्रियों की बहुत बुरी हालत है। वे अपनी रक्षा किसी प्रकार भी इन लोगों से नहीं कर सकतीं। इसलिए इनके चाल-चलन का स्टैण्डर्ड भी बहुत नीचा हो गया है, जिसकी ज़िम्मेदारी इनके मालिकों पर ही आती है। ये लोग सर्वथा ज़रख़रीद ग़ुलामों की तरह बर्ते जाते हैं और दहेज़ में पशुओं की भाँति बिना मर्ज़ी और इच्छा के भी दे दिए जाते हैं ! माँ रोती रह जाती है और लड़की दहेज़ में दे दी जाती है ! आश्चर्य यह है कि इतने पर भी अन्तर्राष्ट्रीय सभा में राजा लोग यह घोषणा करते हैं कि हमारे यहाँ ग़ुलामी की प्रथा बिलकुल नहीं है !!!

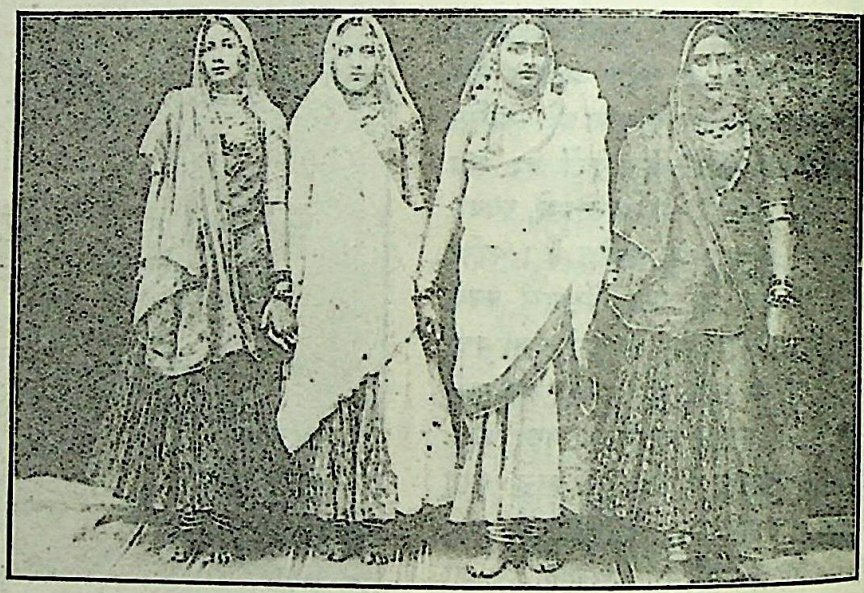

सामाजिक कुरीतियों का शिकार

[मारवाड़ की अभागिनी वेश्याएँ]

वेश्याएँ

राजपूताने में वेश्याएँ काफ़ी हैं। इनका व्यवसाय जैसा भारत के अन्य भागों में ज़ोरों से चल रहा है, यहाँ भी मज़े का है। मारवाड़ (जोधपुर) की वेश्याएँ राजपूताने की अन्य वेश्याओं के लिए आदर्श हैं—गाने-बजाने में, पोशाक में, रहन-सहन और व्यवहार में। मारवाड़ी-वेश्याएँ उन सब शहरों में पहुँच गई हैं, जहाँ मारवाड़ी-व्यवसायी पहुँचे हैं। क्योंकि मारवाड़ी अपने देशी भाई को बहुत चाहता है। मारवाड़ी-नौकर, मारवाड़ी-सेवक, मारवाड़ी-मुनीम, मारवाड़ी-गुमाश्ते की भाँति मारवाड़ी-वेश्या को ही मारवाड़ी पसन्द करता है। क्योंकि वह उसकी आदत, अख़लाक़, रीति-रिवाज, बोली-चाली सब में उसे अच्छी तरह पहचानती है, वह उसकी हमराज़ है।

मारवाड़ के जोधपुर, पाली और नागौर में वेश्याओं की आबादी अधिक है। वेश्याओं की कई जातियाँ हैं। भगत, पातर, साहिबा, आदि वेश्याओं में सम्मान, लड़कियाँ का धन करती हैं। लड़ाई तो जाति लड़कों उसका कर दिया जाता है। बहू का काम कभी नहीं करती। मुसलमान-वेश्याएँ काफ़ी तादाद में हैं।

क़रीब चार वर्ष हुए, हम श्रीयुक्त देशभक्त श्री चाँदकरण जी शारदा के छोटे भाई श्रीयुक्त विजयकरण जी शारदा की बारात में एक गाँव में गए। गाँव में दिलचस्पी का सामान क्या था ? सर्दी का मौसम था, दोपहर का वक़्त, हम अपना डण्डा उठा एक तरफ़ को चल पड़े। इस अभिप्राय से कि जङ्गल में ही कुछ देखें-भालें। राजपूताने की वीरभूमि का प्रत्येक स्थान वीरों के रक्त से सींचा हुआ है, इस में भी कुछ वीरों की, जो युद्ध-भूमि में जूझ कर

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

गए थे और कुछ सती देवियों की, जो उन वीरों का सिर गोद में रख कर देव-लोक को प्रयाण कर गई थीं, छतरियाँ बनी हुई थीं। हम उन्हीं की तरफ़ चल पड़े। पास पहुँच कर उन्हें नमस्कार किया और उन पर के शिला-लेख बाँचने की कोशिश करने लगे। इस काम से छुट्टी पाकर हम नीचे के चबूतरे पर आ बैठे, जो ग्राम्य पग-डण्डी के पास बना था। इतने में एक अधेड़ स्त्री आई और मार्ग चलने से थक जाने के कारण उसी चबूतरे पर दम लेने लगी। कौतूहलवश उसके ग्राम्य जीवन की कुछ बातें जानने के लिए हम उससे बातचीत करने को उत्सुक हुए। हमने दो-चार बातें पूछ कर उससे पूछा—"आपके घर में क्या काम-काज होता है?" उसने साफ़ और स्पष्ट शब्दों में कहा—"हम कसब कमाती हैं।" हमने कहा—"छोटे से गाँव में यह तुम्हारा कसब का धन्धा क्या चलता होगा?" वह बोली—"नहीं, हमारा काम चलता ही रहता है। गाँव के जवान, जिनकी शादी नहीं हुई; कभी-कभी फ़ौज के सिपाही, जो नौकरी से छुट्टी पर आते हैं; कभी कोई राह-चलता मुसाफ़िर इत्यादि आ ही जाते हैं। इस तरह नित्य ही हमें आमदनी होती है; कभी कम और कभी ज़्यादा" उसने इन बातों को बहुत ही लम्बे पैराए में और बड़ी स्पष्टता से बयान किया, जिसे सुन कर हमें बड़ा आश्चर्य हुआ। उसने अपनी जाति का कोई नाम बताया था, जो अब याद नहीं रहा। इससे इस बात पर प्रकाश पड़ता है कि मारवाड़ के छोटे-छोटे गाँवों में भी वेश्या-वृत्ति कामयाबी से चलती है और कितनी ही जातियाँ यह रोज़गार करती हैं! नटों (बाँस पर कसरत दिखाने वालों) की स्त्रियाँ भी यह काम करती सुनी जाती हैं। यह सब अविद्या का फल है।

हमारी यह राय सुन कर एक महाशय फ़र्माने लगे—वाह! क्या विद्वान् लोग रण्डीबाज़ी नहीं करते? मैंने कितने ही एम० ए०, बी० ए० जेण्टिलमैनों और शास्त्री-पण्डितों को रण्डियों की चौखट पर सिजदा करते देखा है। रण्डियाँ तो इसे अपना रोज़गार समझ कर करती हैं और इसे बुरा नहीं समझतीं। उन्हें आप मूर्ख या अविद्या-ग्रस्त नहीं कह सकते। वे प्रायः पढ़ी-लिखी होती हैं और कोई-कोई तो हिन्दी, उर्दू, फ़ारसी, अङ्गरेज़ी आदि कई भाषाएँ जानती हैं। देवता को पूजती हैं, ईश्वर को मनाती हैं और उसके आशीर्वाद से अपने रोज़गार में बरकत चाहती हैं। फिर ये अविद्या-ग्रस्त कैसे हुईं?

जोधपुर रियासत में सर कर्नल प्रतापसिंह जी के बड़े भाई श्रीमान् महाराजा जसवन्तसिंह जी के ज़माने में रण्डियों की बड़ी उन्नति हुई थी। स्वामी दयानन्द सरस्वती जी की घातक नन्हींजान उन्हीं की आशना थी! अब भी जोधपुर में क़रीब २०० मकान रण्डियों के हैं। इनमें से कितने ही बहुत अच्छे और बड़ी लागत के हैं। जोध-

मारवाड़ी (शहरी) स्त्री का पहिनाव

पुर रियासत के जागीरदार, जो चाकरी देने जोधपुर राजधानी में जाते हैं, उनकी बदौलत इनका कारबार गुलज़ार रहता है। किसी रईस का कोई एडीकॉङ्ग, मुलाज़िम या फ़ौजी सिपाही अगर जोधपुर होकर गुज़रे तो दो रात के लिए वह अवश्य जोधपुर ठहर जायगा और जो कुछ तनख़्वाह साथ लेकर घर जा रहा होगा, वह यहाँ की वेश्याओं के सुपुर्द करके सूखे हाथ घर पहुँच जायगा! यह हाल

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

जोधपुर-निवासी हमारे एक बहुत प्रामाणिक मित्र का सुनाया हुआ है।

जयपुर की रण्डियाँ दरिद्र हैं। एक बड़े रईस की बारात में, जो सवारी जौहरी बाज़ार में होकर निकल रही थी, उसी को देख कर हमने यह अनुमान किया है। इस जलूस में पन्द्रह रण्डियाँ स्थान-स्थान पर नाच रही थीं, परन्तु किसी के भी बदन पर सही-सलामत और उम्दा पोशाक न थी, न बढ़िया गहना ही था। एक जानकार ने हमें उनकी दरिद्रता का हेतु घरेलू व्यभिचार बताया था !!

मानसिक दशा

मानसिक दशा के बारे में अब इतना पढ़ लेने के बाद जानने योग्य बात ऐसी कुछ नहीं रही। स्त्रियों में अविद्या का पूर्ण साम्राज्य है। रियासतों में लड़कियों के स्कूल या तो हैं ही नहीं और कहीं-कहीं हैं भी तो वे नाम लेने लायक़ नहीं। अध्यापिकाएँ थर्डक्लास, प्रबन्ध बिलकुल रद्दी ! ऐसी दशा में मानसिक या आत्मिक विकास कैसे हो ? नतीजा यह है कि जितना अन्ध-विश्वास, ख़ुराफ़ात और भेड़ियाधसान राजपूताने की स्त्रियों में है, उतना हिन्दुस्तान के किसी भी प्रान्त की स्त्रियों में नहीं है। भूत-प्रेत, पीर-क़बर की पूजा, जादू-टोना, जन्तर-मन्तर और झाड़-फूँक में ये स्त्रियाँ बड़ा विश्वास रखती हैं। ओझा, भैरों, भोपा, पीर, मुजावर और स्याने, मुल्ला आदि का इन पर हाथ साफ़ करना, ज्योतिषियों और डाकौतों के फ़रेब में आकर ठगी जाना, ये नित्य की बातें हैं ! आजकल एक मुक़दमा चल रहा है जिसमें एक डाकौत ने एक स्त्री को राहु, केतु और शनीश्चर की दशा उसके पुत्र पर बता कर दो-तीन बार में क़रीब ग्यारह सौ रुपए ऐंठ लिए ! लड़के को जब यह घटना मालूम हुई, उसने फ़ौरन डाकौत पर फ़ौजदारी केस दायर कर दिया। डाकौत ज़मानत पर छूटा है, मुक़दमा चल रहा है। इन मारवाड़ी-स्त्रियों ने इस अवस्था में बाहर जाकर भी कुछ उन्नति नहीं की। अपने देश में जो कुछ संस्कार साथ ले गई हैं, वह वहाँ सब क़ायम है !!

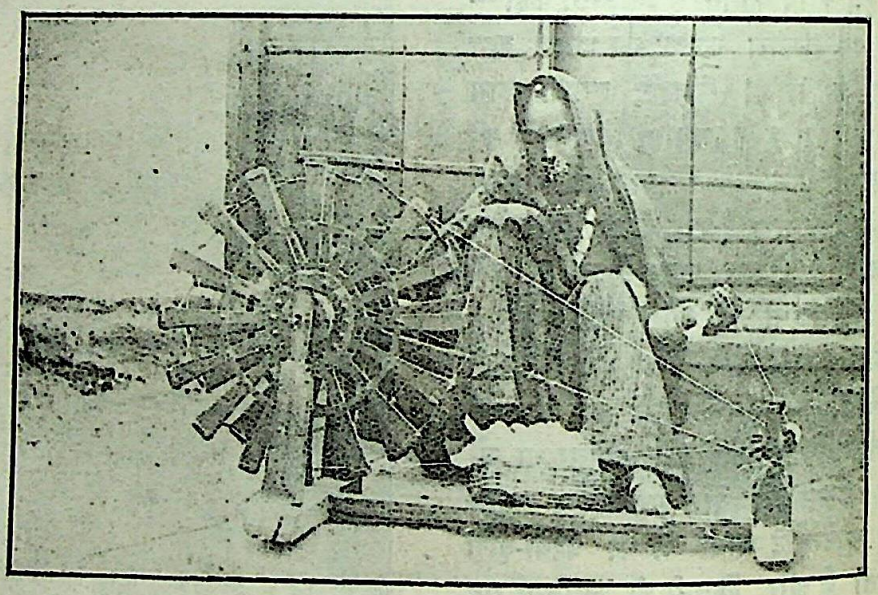

अभागिनी विधवाओं का व्यवसाय

काफ़ी प्रकाश पड़ता है ! इनमें जो सद्बुद्धि-सम्पन्न और योग्य व्यक्ति हैं, उन्होंने अपने द्रव्य को उचित स्थान में लगाया है। झुँझनू वाले सेठों की तीर्थों और रेल्वे स्टेशनों की सुप्रबन्धयुक्त धर्मशालाएँ, बिड़ला-बन्धुओं और मोहता-बन्धुओं का विद्या-प्रचार और अन्य उत्तम कार्यों में लाखों रुपयों का दान, उनकी सद्बुद्धि और विवेक शक्ति का परिचायक है। परन्तु साधारण मारवाड़ी पात्रापात्र का विचार नहीं करता, वह रूढ़ि-परम्परा के अनुरोध से दान-धर्म करता है और विवेक को बहुत कम में नहीं लाता। यही हाल इनकी स्त्रियों का है।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

पास काफ़ी पैसा रहता है और वे समय-समय पर दिल खोल कर दान-धर्म किया करती हैं। परन्तु पात्रा-पात्र का कुछ भी विचार नहीं होता। इसलिए कितने ही धूर्त लण्ठाधिराज इन्हें बहका कर माल खींचा करते हैं।

इस उन्नति और विकास के युग में प्रत्येक दूरदर्शी मारवाड़ी भाई का कर्त्तव्य है कि वह अपने घर को सबसे पहले ठीक करने का प्रबन्ध करे, एक आदर्श परिवार अपनी छोटी-सी झोपड़ी पर विलास-नगरी कलकत्ते का सारा वैभव न्योछावर कर सकता है, केवल धन-प्राप्ति इस दुर्लभ जीवन का आदर्श कदापि न होना चाहिए !!

मारवाड़ी

[श्री० छैलबिहारी जी 'कण्टक']

(१)

वीरों की सन्तान, मान पर जो मरते थे;
करते थे शुभ-कर्म, धर्म-धीरज धरते थे।
भरते थे नव-भाव, दीन का दुख हरते थे;
कभी स्वप्न में भी न टेक से जो टरते थे।
डरते थे जो पाप से, आज पाप की खान हैं !
गुण-गौरव से हीन हो, जीवित मृतक समान हैं !!

(२)

आजीवन जो रहे, धर्म की बेल बढ़ाते;
गो-रक्षा, वाणिज्य, कृषी का पाठ पढ़ाते।
समय-समय पर समुद आत्म-बलिदान चढ़ाते;
सब प्रकार जो रहे सुयश-गढ़ स्वयं गढ़ाते।
लिखे हुए इतिहास में, जिनके कोटि कमाल हैं !
आज मारवाड़ी वही, बस, बनिएँ-बक्काल हैं !!

(३)

जो स्वदेश के लिए जान पर खुल कर खेले;
हँस-हँस सङ्कट सदा करोड़ों सर पर झेले।
पता नहीं वे हुए किस गुरू के अब चेले;
प्राण लिए फिर रहे वीर जो थे अलबेले।
जिन्हें न जीवन भर रही, कभी कामना काम की !
डुबो रहे नैया वही, मारवाड़ के नाम की !!

(४)

ऐसा कौन कुकर्म, न उनका हो जो जाना
पापों का अब रहा उन्हीं के यहाँ ठिकाना।
भूल गए सद्धर्म-कर्म करते मनमाना;
पड़ता है हर जगह इसी से ठोकर खाना।
अपतित होकर पतित अब, हो कुलीन अकुलीन हैं !
हाय, दैव असहाय हो, पराधीन बल-हीन हैं !!

(५)

करते हैं व्यापार नीच, कम तोल रहे हैं;
मिथ्या बिना विचार, व्यर्थ ही बोल रहे हैं।
बस, पैसे के लिए, हर जगह डोल रहे हैं;
बहुत बढ़े तो यही, दिवाले खोल रहे हैं।
दिखलाते हैं दीनता, मानो वे मायूस हैं !
कौड़ी-कौड़ी के लिए, बेढब मक्खीचूस हैं !!

(६)

उन्हें फाटका-सट्टा ही, व्यापार हुआ है;
देखो तो, किस तरह जुए से प्यार हुआ है।
यह अक़्ल अजीर्ण हुआ, बुद्धि-व्यभिचार हुआ है;
इसीलिए धन सब समुद्र के पार हुआ है।
मन्त्र जानते जो कहीं, वे उन्नति-उत्कर्ष का !
तो फिर सहज न डूबता, बेड़ा भारतवर्ष का !!

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

(७)

बेच विदेशी माल आप कङ्गाल हुए हैं ;
देश दूसरे हमसे मालामाल हुए हैं।
करनी ऐसी कुटिल देश के काल हुए हैं ;
परदेशों के खुले आम दल्लाल हुए हैं।
वस्त्र-विदेशी बनस्पति-घी,स्वधर्म को धो रहे !
निर्धन-निर्बल हाय ! हम, आज उन्हीं को रो रहे !!

(८)

सपने में भी उन्हें राष्ट्र का ज्ञान नहीं है ;
अपने भाषा-भेष-देश का मान नहीं है।
मरे हुए हैं हृदय, तनिक भी जान नहीं है ;
स्वाभिमान-सम्मान-शान का ध्यान नहीं है।
मौज करो, खाओ-पियो, भोजन भक्ष्याऽभक्ष्य है !
इस असार-संसार में, उनका यही सुलक्ष्य है !!

(९)

हैं वे विषयाधीन काम के ग्रास हुए हैं ;
'इन्द्र-सभा' की पूर्ण परीक्षा पास हुए हैं।
मद्य, मांस के अब घर-घर में वास हुए हैं ;
वेश्या-कुल के हाय ! आज वे दास हुए हैं।
दुर्व्यसनों में लीन हो, रहा-सहा धन फूकते !
लाज नहीं लगती उन्हें, नर-नारी सब थूकते !!

(१०)

देखो, हैं ये मर्द, पड़ रहे हैं मुख पीले ;
शक्ति न है कुछ शेष अङ्ग के बन्धन ढीले।
चलें लचकती चाल गर्व से हो लचकीले ;
करते मत्त प्रलाप न हैं कुछ और वसीले।
रोगों की पुड़िया बने, स्वास्थ्य-धर्म से दूर हैं !
जब देखो अलमस्त तब, किसी नशे में चूर हैं !!

(११)

हो अबोध अज्ञान, दुखों से घिरते जाते ;
कैसा भीषण-पतन दिन-ब-दिन गिरते जाते।
भूल गए हैं थाह, राह किस बिरते जाते ;
लक्ष्य-भ्रष्ट हो, इसीलिए तो फिरते जाते।
रोम-रोम में रम गए, ढोंग, दम्भ, व्यभिचार हैं
घड़ी-छड़ी-चश्मा हुए, अब इनके हथियार हैं।

(१२)

हे करुणामय, पुनः कृपा की कोर दिखाओ ;
उनको भूला हुआ वही सत्कर्म सिखाओ।
सोते से हरि ! एक बार फिर इन्हें जगाओ ;
धरें ध्येय का ध्यान वही फिर लगन लगाओ।
छोड़ ईर्ष्या-द्वेष को, मोह तोड़, मुँह मोड़ लें
शिथिल प्रेम-बन्धन पुनः, प्रभो ! परस्पर जोड़ लें

(१३)

बहुत हुआ, बस, बान व्यसन की त्यागें, त्यागें ;
कुम्भकर्ण की नींद छोड़ फिर जागें, जागें।
बढ़ें ज्ञान-विज्ञान मूर्खता-दुर्गुण, भागें ;
यही विशद-वरदान विश्वपति से सब माँगें।
पट परिवर्त्तन हो पुनः, परिवर्तित संसार हो
फिर तो एक प्रयत्न में, ही बस बेड़ा पार हो

(१४)

एकत्रित फिर करें शक्तियाँ बिखरी सारी ;
बढ़ें—हाँ, बढ़ें युवकवृन्द नवजीवन कारी।
उमड़े प्रलय-पयोधि क्रान्ति की हो तैयारी ;
सुलगा दें सानन्द नाश की वह चिनगारी।
मूढ़ रूढ़ियाँ भस्म कर, ज्वाला परम प्रचण्ड हो
गुरुडम का गढ़ नष्ट हो, खण्ड-खण्ड पाखण्ड हो

(१५)

सुनें, सुनें, नवयुवक काम कुछ तो कर जाएँ ;
बढ़ें, अगाड़ी चलें, न कष्टों से डर जाएँ।
फिर समाज में आज भाव ऊँचे भर जाएँ ;
धर्म-धरोहर जोड़-जोड़ कर हाँ, धर जाएँ।
थर्राए संसार सब, अब ऐसा बलिदान हो !
जिससे जाग्रत जाति हो, फिर स्वदेश-सम्मान हो !!

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

कलकत्ते का खेतान-परिवार

बैठे हुए बाईं ओर से—१—श्री० लक्ष्मीप्रसाद जी खेतान २—श्री० देवीप्रसाद जी खेतान ३—श्री० कालीप्रसाद जी खेतान।

खड़े हुए बाईं ओर से—१—श्री० भगवतीप्रसाद जी खेतान २—श्री० दुर्गाप्रसाद जी खेतान

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

दाम्पत्य जीवन

[लेखिका—श्रीमती सुशीलादेवी जी निगम, बी० ए०]

इस पुस्तक के सम्बन्ध में प्रकाशक के नाते हम केवल इतना ही कहना काफ़ी समझते हैं कि ऐसे नाज़ुक विषय पर इतनी सुन्दर, सरल और प्रामाणिक पुस्तक हिन्दी में अभी तक प्रकाशित नहीं हुई है। इसकी सुयोग्य लेखिका ने कामविज्ञान (Sexual Science) संबंधी अनेक अङ्गरेज़ी, हिन्दी, उर्दू, फ़ारसी तथा गुजराती भाषा की पुस्तकें मनन करके इस कार्य में हाथ लगाया है। जिन अनेक पुस्तकों से सहायता ली गई है, उनमें से कुछ मूल्यवान् और प्रामाणिक पुस्तकों के नाम ये हैं :—

(1) Motherhood and the Relationship of the Sexes by *C. Gasquoine Hartley* (2) Confidential Talks with Husband & Wife by *Layman B. Sperry* (3) Youth's Secret Conflict by *Walter M. Gallichan* (4) The Threshold of Motherhood by *R. Douglas Howat* (5) Radiant Motherhood (6) Married Love and (7) Wise Parenthood by *Dr. Marie Stopes.*

जिन महत्वपूर्ण विषयों पर प्रकाश डाला गया है, उनमें से कुछ ये हैं :—

(१) सहगमन (२) ब्रह्मचर्य (३) विवाह (४) आदर्श-विवाह (५) गर्भाशय में जल-सञ्चय (६) योनि-प्रदाह (७) योनि की खुजली (८) स्वप्न-दोष (९) डिम्ब-कोष के रोग (१०) कामोन्माद (११) मूत्राशय (१२) जननेन्द्रिय (१३) नपुंसकत्व (१४) अति-मैथुन (१५) शयन-गृह कैसा होना चाहिए ? (१६) सन्तान-वृद्धि-निग्रह (१७) गर्भ के पूर्व माता-पिता का प्रभाव (१८) मनचाही सन्तान उत्पन्न करना (१९) गर्भ पर तात्कालिक परिस्थिति का असर (२०) गर्भ के समय दम्पति का व्यवहार (२१) यौवन के उतार पर स्त्री-पुरुष का सम्बन्ध (२२) रबर-कैप का प्रयोग (२३) माता का उत्तरदायित्व आदि-आदि सैकड़ों महत्वपूर्ण विषयों पर—उन विषयों पर, जिनके सम्बन्ध में जानकारी न होने के कारण हज़ारों युवक-युवतियाँ बुरी सोसाइटी में पड़कर अपना जीवन नष्ट कर लेती हैं—उन महत्वपूर्ण विषयों पर, जिनकी अनभिज्ञता के कारण अधिकांश भारतीय गृह नरक की अग्नि में जल रहे हैं; उन महत्वपूर्ण विषयों पर, जिनको न जानने के कारण स्त्री पुरुष से और पुरुष स्त्री से असन्तुष्ट रहते हैं—भरपूर प्रकाश डाला गया है। हमें आशा है, देशवासी इस महत्वपूर्ण पुस्तक से लाभ उठाएँगे। पृष्ठ-संख्या लगभग ३५०, तिरङ्गे Protecting Cover सहित सुन्दर सजिल्द पुस्तक का मूल्य २॥) रु०; 'चाँद' तथा पुस्तक-माला के स्थायी ग्राहकों से १॥।=) मात्र ! पुस्तक सचित्र है !!

केवल विवाहित स्त्री-पुरुष ही पुस्तक मँगावें !

व्यवस्थापिका 'चाँद' कार्यालय,

चन्द्रलोक, इलाहाबाद

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

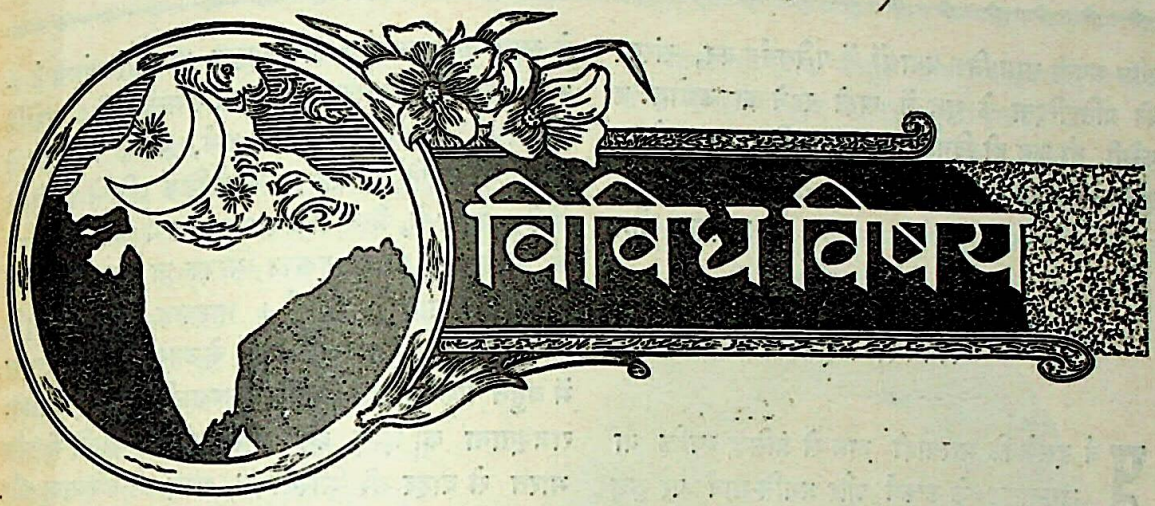

मारवाड़ी-समाज

संसार के अन्य समाजों के साथ-साथ मारवाड़ियों को भी अपनी सामाजिक प्रथाओं में परिवर्त्तन करना होगा। यदि वे सामाजिक, आर्थिक, व्यापारिक और राजनैतिक पुरानी रूढ़ियों को तोड़ कर, अन्य समाजों की समता न कर सकेंगे, तो इस प्रतिद्वन्दिता के युग में उनका अस्तित्व नहीं रह सकेगा। अब ऊँटों की सवारी पर चलने की प्रवृत्ति काम न देगी। यद्यपि मारवाड़ी-समाज में अभी तक अनेक सुधारों की आवश्यकता है, तो भी कुछ सुधार तो ऐसे अनिवार्य हैं कि वे यदि शीघ्र न किए गए तो समाज को बड़ी भारी हानि का सामना करना पड़ेगा। जैसे रहन-सहन और स्त्रियों के पहनावे में परिवर्त्तन। साथ ही अब सब देशों में और अन्य समस्त समाजों में स्त्री-शिक्षा का कोई विरोध न रहते हुए भी, इस समाज में स्त्री-शिक्षा का प्रचार जैसा होना चाहिए, वैसा नहीं हो रहा है। यह एक ख़ास कारण है कि जिससे सामाजिक रूढ़ियों को तोड़ने में अस्वाभाविक विलम्ब हो रहा है।

मारवाड़ी-समाज के पुरुषों में भी वर्तमान प्रणाली की शिक्षा की बहुत कमी है। शिक्षितों की संख्या अँगुलियों पर गिनी जा सकती है। यही कारण है कि उन्हें प्रत्येक रूढ़ि के तोड़ने में धर्म डूबने का डर लगा रहता है। विधवा-विवाह जैसे सामान्य सामाजिक सुधार भी अभी तक मारवाड़ी-समाज में धर्म डूबने के नाम पर रोके जाते हैं! समाज में स्त्रियाँ अब भी पाँव की जूती समझी जाती हैं। और इसीलिए एक स्त्री के मरने के बाद दूसरा, तीसरा और छठा-सातवाँ तक विवाह करने में भी लोग नहीं हिचकते! परन्तु किसी बाल-विधवा के विवाह का नाम सुन कर, उनका सारा धर्म डूब जाता है!

आज भी यह समाज विलायत-यात्रा के नाम से चौंकता है। एक समय था, जब कि महाराष्ट्र और गुजरात के हिन्दुओं ने विदेश-यात्रा के विरुद्ध आन्दोलन किया था। परन्तु जब उन्होंने समय की गति विपरीत देखी तो बहुत शीघ्र अपना रुख़ परिवर्त्तन कर दिया। आज गुजराती और महाराष्ट्रों के मार्ग विदेश-यात्रा के लिए अबाधित खुले हुए हैं। अरब के उपकूलों में, इटली और फ्रान्स के टापुओं में, पूर्वी अफ्रीका, ईजिप्ट और अमेरिका के बन्दरगाहों में गुजराती व्यापारियों का प्राधान्य देखने में आता है। फ्रान्स में यदि हिन्दुस्तानी कोट्याधीश कोई है तो वे मोती के व्यापारी गुजराती ही हैं। इसी तरह चीन और जापान में सिन्धी व्यापारियों का ज़ोर है। परन्तु मारवाड़ियों के लिए बम्बई से आगे जाना ही पाप है! इस मूर्खता का जैसा परिणाम होना चाहिए था, वैसा आज हो रहा है!

प्रकृति के नियमों को कोई रोक नहीं सकता। प्राकृतिक परिवर्त्तन मारवाड़ियों के लिए ठहर नहीं सकते। यही कारण है कि आज मारवाड़ियों में बेकारी का प्रश्न सब समाजों से अधिक सामने आ रहा है। यह समस्या और भी विकटतर होने वाली है। परन्तु दुःख इस बात का है कि अब भी धर्म की दुहाई देने वाले समाज को सचेत होने नहीं देते! यदि मारवाड़ी-जाति बहुत ही

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

शीघ्र अपनी सामाजिक प्रथाओं में परिवर्त्तन कर, संसार की प्रतिद्वन्दिता के युद्ध में खड़ी रहने का उद्योग न करेगी, तो कुछ ही दिनों बाद इस जाति का नाम केवल इतिहासों में पाया जायगा।

—पद्मराज जैन

* * *

सत्परामर्श

पूर्व इसके कि मारवाड़ी नाम से प्रसिद्ध व्यक्ति वा जन-समूह के उत्कर्ष और प्रगति-मार्ग पर कुछ कहा जाय, मैं 'मारवाड़ी' शब्द और इसके द्योतक अर्थ

कैप्टेन ठाकुर केसरीसिंह जी, देवड़ा

[आप मारवाड़ के राजपूतों में सुधार का बड़ा प्रयत्न करते रहते हैं और इस विषय में कुछ पुस्तकें भी लिखी हैं।]

एवं भाव की व्याख्या—जैसी कि शिक्षित वा अशिक्षित दोनों ही प्रकार के वर्ग में प्रचलित है, और जिसकी विशेषता को ही लक्ष्य में रख कर अत्र-तत्र—सर्वत्र मारवाड़ियों के साथ जन-साधारण का व्यवहार वा बर्ताव होता है, स्पष्ट शब्दों में कर देना आवश्यक समझता हूँ। 'मारवाड़ी' न तो किसी ख़ास धर्म, पन्थ, सम्प्रदाय लोगों की जाति है, और न भौगोलिक दृष्टि से ही किसी विशेष भूमि के, जैसा कि राजपूताना में मारवाड़ के, निवासियों पर ही इसका व्यापक वा संग्रहसूचक व्यवहार में लागू हो रहा है। मारवाड़ अर्थात् मरु के सम्बन्ध से तो मारवाड़ी शब्द के उपयोग और व्यवहार में बहुत अंशों में अतिव्याप्ति दिखलाई दे रही है! राजपूताना को छोड़ कर भारतवर्ष की समष्टि में भारत से बाहर भी 'मारवाड़ी' शब्द की परिभाषा मारवाड़ियों की पहचान जिस प्रकार होती है, वह है कि जो लोग, ईस्ट इण्डिया कम्पनी और ब्रिटिश राज्य-काल में, मारवाड़, राजपूताना और मध्य के किसी भी स्थान से अपना घर छोड़ कर धन के ही उद्देश्य से ब्रिटिश-भारत में वाणिज्य-व्यापार गए हों और तीक्ष्ण वणिक-बुद्धि तथा परिश्रम से धन-सञ्चय करके अपने व्यापार-स्थान में बस गए हों जिनके मस्तकों पर अधिकतर चपटी वा किसी के सिर पर खूँटेदार पगड़ी दिखलाई दे; जो प्रायः धमकी और डर दिखाने से, 'म्हें तो आपका ही महाराज, जावा द्यो आप तो जिस्या बड़ा छोरा रहो' कह कर दबक जाते हों; जो धन और धन-मान आगे विद्या तथा धनेतर उच्च मानव-विकास के गुणों लेश भी महत्व न देते हों; जो युक्ति, प्रमाण, सद्वि वा हक़ को डाँट-डपट वा एकाध धौल जमाने से ही सकते हों, वा मानने को तैयार होते हों; जो वित्त वित्त ही के लिए संग्रह करने में यहाँ तक अमानुषीय जायँ कि मराठी के कोपकार को 'मारवाड़ी' शब्द पर्यायवाची, शेक्सपियर के नाटक का प्रसिद्ध रक्त सूदख़ोर, शाईलाक के सिवा और कोई शब्द ही मिले; जो 'दारान् रक्षेद्धनैरपि' के विपरीत बहू-बेटियों इज़्ज़त के सामने धन-रक्षा की ही पहले फ़िक्र करें; जिन स्त्रियाँ सोने-चाँदी के ज़ेवरों और भारी-भारी गोटे के कपड़ों से लदी हुई घूँघट की ओट में, क्या घर में क्या सरे बाज़ार, अश्लील से अश्लील गीत गा जिनके घरों में नौकर, ब्राह्मण, ग्वाले और दरबान इतना असर और साम्राज्य बर्दाश्त हो सके कि मुसलि

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

में प्रचलित लोकोक्ति "महमूद के रहे, मसऊद के अण्डे दिए" का यथार्थ व्यावहारिक प्रमाण बिना कठिनाई के मिल सके; और इन सब बातों के अतिरिक्त, जो तत्व-शून्य, धर्म-भीरु, रूढ़ि-प्रेरित दानशील व उदार भी हों !!

मारवाड़ियों की उपर्युक्त शिनाख़्त और पहिचान एवं जन-साधारण में उनके विषय में इस प्रकार के परिचय से मारवाड़ी नाम का गौरव क्या है, मारवाड़ियों की भावी सन्तान अपने को मारवाड़ी कहलाने में क्या अभिमान करेगी, अथवा मारवाड़ियों का वह कौन सा इतिहास है, या आगे बनेगा, जो मारवाड़ी-युवकों तथा उनके उत्तराधिकारियों को पूर्वजों की सम्पत्ति-रूप परम्परा से पहुँचे, यह प्रत्येक मारवाड़ी के लिए बहुत ही गम्भीरतापूर्वक विचारणीय विषय है। क्योंकि मानव-उत्थान व मानव-विकास के अनुशीलन में दक्ष और तत्वज्ञों का यह स्पष्ट निर्णय है कि चाहे व्यक्तिगत हो, चाहे वर्गगत, मनुष्य अपने पूर्वजों के कार-नामों, उनकी गौरव-गाथा व ख्यातियुक्त गुण-ज्ञान को लेकर ही आगे बढ़ता है, व अपना भविष्य बनाता है।

'Thinking backward and looking forward, (भूत काल का मनन करना और भविष्य पर दृष्टि रखना) यह नियम मनुष्य-जाति की सभ्यता के इतिहास में पद-पद पर अङ्कित है। अतः मारवाड़ी लोगों को समझ लेना चाहिए कि जो कुछ उनका पूर्वकालीन इतिहास है, वह क्या राष्ट्र की दृष्टि से और क्या उनके वर्ग-समूह की दृष्टि से, नितान्त ही अवाञ्छनीय और विस्मृत के सागर में डुबो देने के क़ाबिल है। मारवाड़ियों को यह निश्चित रूप से हृदयङ्गम कर लेना चाहिए कि उनकी लाखों और करोड़ों की गद्दियाँ, उनकी सोने-चाँदी के ज़ेवरों में जकड़ी हुई समय-विवेक-शून्य रमणियों के झुरमुटों की नुमाइश और कानों में बाली, हाथों में कड़े और गले में तौक़ पहने हुए उनके मूर्ख 'कन्या-नुमा' छोकरे एवं उनके बनियाशाही लीडरों के धन-सत्ता-प्रदर्शक जलूस और जय-जयकार, प्रगतिशील संसार में कुछ भी वज़न नहीं रखते !

अब धन-सत्तावाद के पाँव उखड़ चुके हैं। शक्ति (Power) ज्ञान (Knowledge) और सङ्गठन (Organisation)—जीवन के ये तीन साधन हैं और ये

पण्डित माधवप्रसाद जी शर्मा, एम० ए०, एल्-एल्० बी०, सॉलिसिटर, बम्बई

[आप मारवाड़ी-ब्राह्मण-समाज के बड़े योग्य और प्रसिद्ध कार्यकर्ता हैं। इस वर्ष गोंदिया (सी० पी०) में होने वाली अ० भा० मारवाड़ी-ब्राह्मण महा-सभा के आप सभापति निर्वाचित हुए थे।]

तीन ही जीवन के द्योतक हैं। और इनके लिए मारवाड़ियों को अपनी पैतृक भूमि राजस्थान की ओर वापस देखना होगा ! उनको चाहिए कि वे अपने मारवाड़ी नाम को त्याग कर "राजस्थान और राजस्थानी" का प्रान्तीय सङ्गठन मज़बूत करें, राजस्थान में श्मशान-

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

तुल्य विशाल महल-मकानों को आबाद करें, रियासतों में शासनाधिकार लें और राजस्थान की मिट्टी के गुण-गौरव को शिर पर रख कर परिवर्त्तनशील संसार के उस क्षेत्र में आ डटें कि जहाँ योगेश्वर कृष्ण और धनुर्धर पार्थ के एकीभूत कर्म-कौशल से यथार्थ श्री, विजय और विभूति प्राप्त होती है !

जब तक मारवाड़ी लोग प्रान्तीयता के कवच से सुरक्षित होकर जीवन-संग्राम में प्रान्तीय गुण-विकास के लिए युद्ध न करेंगे, तब तक इनमें स्वाभिमान, मानवोचित वीरता, साहस, विद्या, कला-कौशल, स्वशासन के गुण आदि प्रादुर्भत न होंगे ! मेरी भावना है कि मारवाड़ी लोगों के हृदय में मेरा यह सत्परामर्श गहरी जगह कर ले, और अब कभी भी किसी को 'मारवाड़ी' नाम से विशेषाङ्क वा इसके सदृश पत्रादि निकालने का मौक़ा ही न मिले !

—अर्जुनलाल सेठी

* * *

मारवाड़ी घिस-घिस

श्रीमान् सकल गुण-निधान मारवाड़ी शान और आन का बखान करने वाले श्री० चतुरसेन जी महाराज !

जय श्री सैन-भक्त जी की !

आपके दो कृपा-कार्ड आए और मेरे लिए यह असमञ्जस लाए कि "सींग झड़े और खुर घिसे पीठ न बोझा लेत, ऐसे बूढ़े बैल को कौन बाँध भुस देत ?" सो बाबा राम-राम कहो, 'चवनप्राश' को चखा 'मोटाड़ा छाँटा को मेह' बरसाने वाले, तनहीन, मन-मलीन, मरु-देश के मुरदार मनुष्यों को कान्ति-कुञ्ज में ले जाकर, इस वर्षा-ऋतु में मल्लार सुना कर कहाँ तक मर्द बना सकोगे ? आजकल तो बक़ौल आपके, मरु-भूमि में "रँगीले नामर्दों का दौर-दौरा है।" अपना तो आख़िरी सवेरा है। यह तो आपने सुना ही होगा कि—"मारवाड़ मनसूबे डूबी, पूरब डूबी गाने में। खानदेश ख़ुर्दों में डूबी दक्खिन डूबी दाने में।" सो महाराज, लोग सभा-सोसाइटियों के चाहे जितने ताने-बाने तनें और सैकड़ों समाचार-पत्रों और पोथियों को भनैं, यहाँ तो "सूरदास की काली कमलिया चढ़ै न दूजो रङ्ग" वाली कहावत चरितार्थ हो रही है।

मारवाड़ियों का दृढ़-निश्चय इस वाक्य पर हो गया कि—"ना कुछ देखा राम-भजन में, ना कुछ देखा पोथी में। कहत कबीर सुनो भाई कँगलो, जो कुछ देखा रोटी में।" यदि कोई पण्डित बनने का यत्न करे तो यह वाक्य सुनाया जाता है—"पण्डिताई पावै पड़ी, ओ पूरा पाप।" यदि महाराणा, साँगा, प्रताप, जयमल, आदि के यश की गाथा गाओ तो यह सुनाया जाता है—"दारू में मारू सूना नींद में मैं किया जगाड़ा।" यदि मैनचेस्टर और लिवरपूल के रूई के व्यापार के

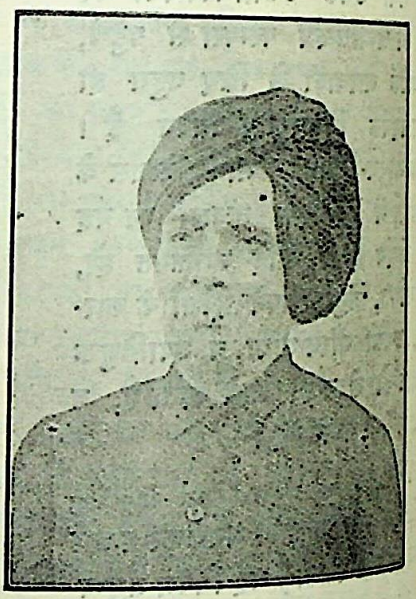

रावसाहब रामविलास जी शारदा

[ऑनरेरी मैजिस्ट्रेट व म्युनिसिपल कमिश्नर, अजमेर

अपार लाभ का ब्योरा बतलाया जाय तो यह गीत गाया जाता है—"रूई तणो व्यापार फेर मत करज्यो जी, रूई तणो व्यापार फेर मत करज्यो जी, रूई का व्यौपारी स्वामी हो गया।" यदि फ़ौज या अन्य किसी महकमे में नौकरी की सलाह दी जाय तो मारवाड़ी-ललनाएँ यह कजली सुनाती हैं—"नौकरी मत जाओ सरदार, नौकरी है खाँडे की धार, कमर पर कसी ढाल-तलवार डूपट्टा जरी-किनारीदार।"

सो महाशय, आपने 'तीन लोक से मथुरा न्यारी' की कहावत तो सुनी ही होगी, परन्तु इसकी निराली छटा मारवाड़ियों में ही देखी होगी। चाहे सैकड़ों वर्ष बीत

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

में गए हुए हो गए हों, झोपड़ियों और खपरेलों की जगह महलों और कोठियों का निवास हो गया हो, रेगिस्तानी सूली के बदले फ़िटन और मोटर मिल गई हों, चूतड़-फाड़ टाट के स्थान पर मख़मल के तकिए और मसनदें क्यों नहीं लग गए हों—परन्तु डागा जी के विचार का पागा वहाँ का वहाँ ही कीचड़ में धँसा है! और ख़ूबी यह है कि दुनिया भर के अनर्थ करते हुए धर्मध्वजी के धर्मध्वजी बने हुए हैं! ख़ूब माल उड़ाते हैं। शर्म पास नहीं लाते, स्टेशनों और कचहरियों में बेइज़्ज़ती करवाते हैं—स्त्रियों तक को धक्के खिलवाते हैं!

द्रव्य और व्यवसाय के लिहाज़ से जो इज़्ज़त और आबरू मारवाड़ियों की होनी चाहिए, उसे ख़ाक में मिला, बम्बई के बाज़ारों में नीची श्रेणी के आदमियों की भाँति "ओ मारवाड़ी! ओ मारवाड़ी!" शब्द की दुर्गति करवाते हैं! व्यभिचार बढ़ाते हैं—गर्भपात कराते हैं—अधर्म कमाते हैं! तनिक भी नहीं लजाते हैं, वरन् ऊपर से ग़ुर्राते हैं!! सदाचारी धर्मात्माओं को अपनी हठधर्मी और वाचालता से अधर्मी और दुराचारी ठहराते हैं! भला ऐसी जाति का उद्धार और दुष्टता का सुधार कैसे हो सकता है? यह सम्भव है, केवल विद्या-प्रचार और पाखण्डियों के तिरस्कार से—चाहे वह धनाढ्य ही क्यों न हों।

हे नवयुवको! यदि जो दुर्दशा मारवाड़ी-समाज की हो रही है, उससे तुम्हें लज्जा आती है; और अपनी माँ-बहिनों की जो बेइज़्ज़ती स्थान-स्थान पर हो रही है और वे विधर्मियों के चङ्गल में पड़ रही हैं, उससे तुम्हारा सिर नीचा होता है तो कमर कस के खड़े हो जाओ। इन निर्लज्ज, स्वार्थी, टकाधर्मी लोगों की कुछ परवा न करो। अन्त में 'सत्यमेव जयति' होगी!!

—(रावसाहब) रामविलास शारदा

* * *

मारवाड़ी-नवयुवकों से दो बातें

आप क्या अपना सब प्रकार का दुख मिटाना चाहते हैं और सब तरह का आनन्द भी चाहते हैं? क्या आप मनुष्य-मात्र का दुख मिटाना चाहते हैं? क्या आप सब तरह से सबको सुखी देखना चाहते हैं? यदि आप सचमुच ही ऐसा चाहते हैं तो ध्यानपूर्वक नीचे की कुछ लाइनों को पढ़ जाइए। अगर ठीक जँच जाय तो उसी रोग को देश, काल, वस्तु और अपनी शक्ति अनुसार मिटाने की कोशिश कीजिए। गीता में एक जगह अर्जुन ने प्रश्न किया है:—

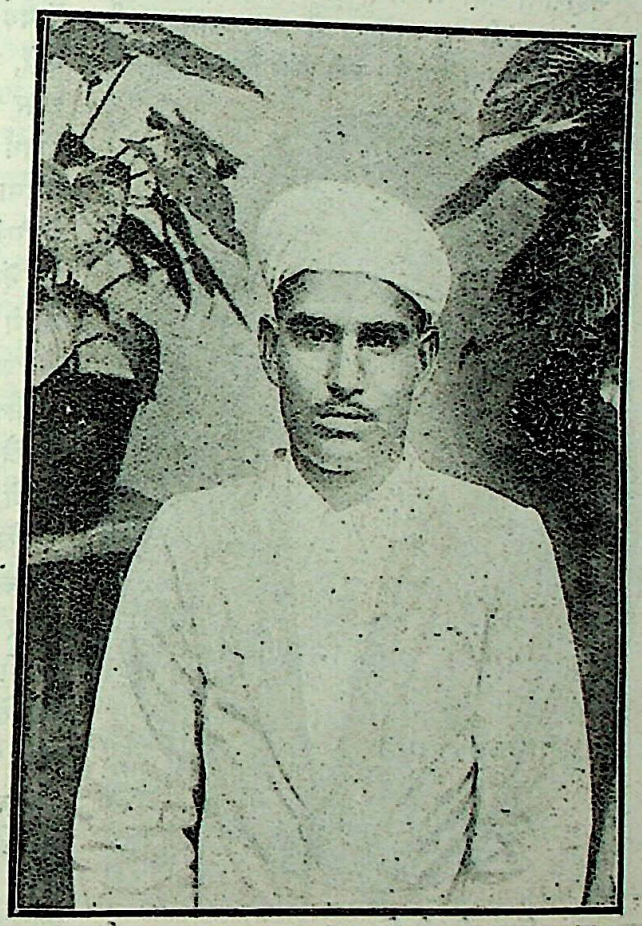

पं० भालचन्द्र जी शर्मा
[प्रधान मन्त्री, अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी-ब्राह्मण-सभा]

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

अथः केन प्रोक्तयं पापं चरति पुरुषः ।
अनिच्छन्नपि वार्ष्णेय वलदिव नियोजित ॥

अर्थात्—"मनुष्य को पाप आचरण करने को कौन बाध्य करता है। जैसे बैल को अनिच्छा होते हुए भी गाड़ीवान जोत देता है।" इसका उत्तर भगवान् देते हैं :—

काम एव क्रोध एव रजोगुण समुद्भवः ।
महाशना महा पाप्मा विद्धयेमिह वैरिणम् ॥

अर्थात्—"जो यह रजोगुण से प्रकट काम, यानी कामना है, वही बड़ा पाप है। यही अति विषय सेवन-रूप

ठा० युगलसिंह जी खीची, एम० ए०, एल्-एल्० बी०
[आप बीकानेर के नोबल्स हाईस्कूल के प्रिन्सिपल तथा बड़े उत्साही कार्यकर्ता एवं सुधारक हैं]

बड़ा आहार करने वाला क्रोध-रूप होता है। इसको ज्ञान विषय में बैरी जानो।"

अब देखिए! हमारा बैरी काम और क्रोध है। क्रोध की उत्पत्ति तो काम पूरा न होने पर ही होती है। इसलिए मूल कारण हमारा बैरी काम है। काम कहो अथवा कामना कहो। कामना का अर्थ है अप्राप्त पदार्थ को प्राप्त करने की इच्छा। जब इच्छा उत्पन्न हुई तो उसको प्राप्त करने का पुरुषार्थ शुरू हुआ। साधारण पुरुषार्थ से इच्छा की पूर्त्ति नहीं हुई तो ज़्यादा पुरुषार्थ किया है। उस पर भी पूर्त्ति नहीं हुई तो येन-केन-प्रकार पूर्त्ति करना, ऐसी भावना पैदा होती है और इससे से नाना प्रकार का पाप किया जाता है!

इतना जान लेने पर प्रश्न होता है, कामना अप्राप्त पदार्थ के कारण होती है? अप्राप्त पदार्थ में पड़ोसी के प्राप्त पदार्थ हैं। क्योंकि जो किसी के नहीं, उनकी इच्छा साधारण आदमियों को नहीं अगर आप कहें, भाई पदार्थ बहुत प्रकार के हैं, पदार्थ किसी के होगा और किसी के नहीं होगा। कहना ठीक है, किन्तु आप यह तो मानेंगे ही कि पड़ोसी के पास ख़र्च या आवश्यकता से अधिक पदार्थ तो देखने वाले को उनकी कामना होगी या नहीं? कहेंगे कि अधिक कहाँ हैं, अधिक हों तो अवश्य से मैं आपसे बिल्कुल सहमत हूँ। शौक़ीनी के अधिक नहीं हैं, किन्तु जीवन के मुख्य-मुख्य पदार्थ तो हैं, जैसे अनाज, कपड़ा, मकानात—ये तो बहुत हैं। कहेंगे, बहुत हैं, तो उनके हैं वे दूसरों को क्यों दें, वे मालिक हैं। भाई साहब, थोड़ा विचार तो कीजिए इनको मालिक किसने बनाया? आप कहेंगे, वे अपनी और शक्ति से बने। मैं कहूँगा नहीं, बदमाशी से बने उसी को बुद्धि और शक्ति का जामा पहना दिया, मालिक बन कर 'यह हमारा है, यह हमारा है।'—'मत छुओ।'—'सब अपना-अपना रक्खो।'—'दूसरे चीज़ मत छूना।'—'दूसरे की चीज़ लेना अन्याय है।'—'भूखे मर जाना अच्छा, किन्तु की चीज़ लेना बुरा।—इसी तरह के अनेक कर अपनी लूट को धर्म का जामा पहना कर बुद्धि शक्ति से अत्याचार करने लगे! इसी तरह से के पदार्थों पर कुछ मनुष्यों ने क़ब्ज़ा कर लिया। करने से यह हुआ कि एक के पास तो पदार्थ हो गए और दूसरे के पास बिलकुल नहीं रहे। प्रकृति तो इतना ही पदार्थ उत्पन्न करेगी या जितना ख़र्च होगा। अब इसमें से कुछ आदमी ले लेंगे तो अवश्य ही दूसरे को कमी पड़ेगी।

अब आप समझ गए होंगे कि एक आदमी जीवन के ख़ास पदार्थों (अनाज, कपड़ा और

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

ज़्यादा होने से, दूसरों को अभाव रहेगा और इसी अभाव के कारण उनको प्राप्त करने की इच्छा होगी। इस इच्छा की पूर्त्ति के लिए वे पुरुषार्थ शुरू करेंगे। जब तक वे ईमानदारी के साथ पुरुषार्थ करेंगे, तब तक वे लोग उनके मार्ग में बाधक रहेंगे, जिन्होंने ज़्यादा पदार्थ इकट्ठे कर रक्खे हैं। अन्त में क्या होगा? वही होगा कि मरता क्या न करता। लूट-खसोट, जुवा-चोरी, बदमाशी, झूठ-कपट सब उपाय किए जाने लगेंगे और परिणाम में दुख उत्पन्न होगा। इधर ज़्यादा पदार्थ रखने वाले उनकी रक्षा करने में दुःख पाएँगे। नाना प्रकार का छल-कपट करेंगे। वे कुछ आदमियों को ज़्यादा पढ़ा कर अपनी रक्षा और पाप-कर्म में सहायक बनाएँगे तथा धर्म और ईश्वर के नाम पर शास्त्र रचा कर झूठ और अन्याय का प्रचार कराएँगे। कभी-कभी उनके ही जैसा कोई दुष्ट मिल जायगा तो आपस में पहलवानों की तरह तेज़ी और मन्दी की लड़ाई करेंगे! उनमें से एक हार जायगा तो दूसरा उसे हड़प लेगा। जो हारेगा वह फिर लड़ेगा और नाना प्रकार की जालसाज़ी रचेगा। ये लोग कुछ आदमियों को मुफ़्त में खिला-खिला कर अपनी रक्षा भी कराते हैं और भोले आदमी इनकी दम-पट्टी में आकर इन मुट्ठी भर आदमियों की रक्षा करते हैं और ग़रीबों की जान लेते हैं तथा आप भी मरते हैं।

अब आप समझ गए होंगे कि हमारे दुखों को उत्पन्न करने वाले और सुखों के नाश करने वाले एक-मात्र जीवन के आवश्यक पदार्थों पर व्यक्तिगत सत्ता जमाने वाले ही हैं और जब तक इस तरह का व्यवहार दुनिया में जारी रहेगा, अथवा हम ऐसी बातों को चुपचाप होने देंगे, तब तक दुःख मिटना और सुखी होना स्वप्नवत् समझिए।

मनुष्यों के कष्टों का एक ज़बरदस्त कारण और भी है, और वह है "धर्म व ईश्वर के नाम पर ठगबाज़ी।" पर स्थानाभाव के कारण अभी इस विषय पर कुछ प्रकाश नहीं डाला जा सकता। अवसर मिला तो फिर कभी इसकी चर्चा की जायगी।

इन दोनों कारणों के पोषक हैं बनिए यानी व्यापारी। व्यापारियों में वे सभी शामिल हैं, जोकि व्यापार का पेशा करते हैं। वे हिन्दुस्तानी हों या अङ्गरेज़; एशियाई हों या यूरोपियन—सबको ही समझ लेना चाहिए! किन्तु यह 'चाँद' का मारवाड़ी विशेषाङ्क है और मारवाड़ी-जाति में मुख्यता मारवाड़ी व्यापारियों ही की है, इस-लिए मैं मारवाड़ी-नवयुवकों से यह निवेदन करता हूँ कि अगर आप यह अनर्थकारी व्यक्तिगत सत्तावाद के मिटाने की इच्छा कर लें, तो आप इस कार्य को सहज ही में

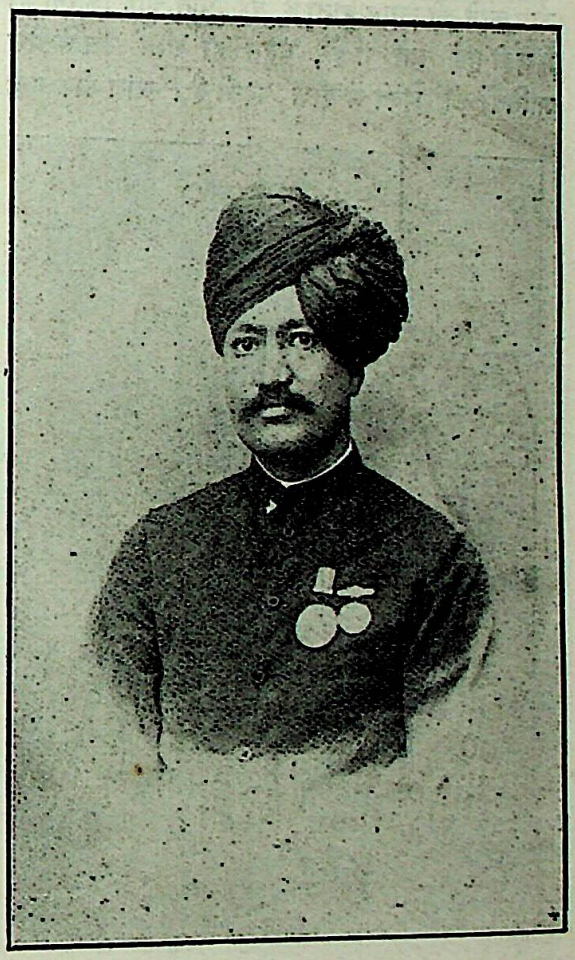

पण्डित विश्वेश्वरनाथ जी रेऊ
[आप जोधपुर के पुरातत्व-विभाग (आर्कियालॉजिकल डिपार्टमेण्ट) के अफ़सर और इतिहास तथा साहित्य के विद्वान् हैं।]

बहुत-कुछ पूरा कर सकते हैं। वर्तमान समय में संसार के दुःखों के कारण आप बने हैं। अगर आप ऊपर लिखे काम कर दिखावें तो सुखों के कारण भी बन जायँ।

—बालकृष्ण मोहता

* * *

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

कलकत्ता का सुधारक मारवाड़ी-समाज

किसी भी देश, समाज या जाति का उत्थान अधिकतर उस जाति के नवयुवकों के ऊपर ही निर्भर रहता है, जिस जाति के नवयुवकों में उत्साह, उमङ्ग और काम करने की लगन होती है, वह जाति चाहे कितनी ही पिछड़ी हुई क्यों न हो, बहुत ही शीघ्र उन्नतिशील जातियों की श्रेणी में दीख पड़ती है। आज ठीक यही

पं० निरञ्जननाथ जी गुर्टू, एल० एम० एस०
[आप मारवाड़ के एक सुप्रसिद्ध डॉक्टर हैं]

दशा मारवाड़ी-समाज की है। इसमें कोई शक नहीं कि देश के कई कोनों में अभी तक यह धारणा बैठी हुई है कि मारवाड़ी उन्नति की दौड़ में सभी जातियों से पीछे हैं। किन्तु खोज करने पर ऐसी धारणा रखने वालों को महान् आश्चर्य होगा कि जिस मारवाड़ी-समाज को अन्य समाज के लोग पिछड़ा हुआ समझ रहे हैं, वह मारवाड़ी-समाज आज कई उन्नतिशील समाजों से आगे बढ़ा हुआ है। मारवाड़ी-समाज के अन्दर सुधार की [illegible] बिजली के समान फैल रही है। इस जाति को इतनी [illegible] सफलता मिलने का एक कारण यह मालूम पड़ता है [illegible] इसके अन्दर सुधारों का विरोध करने वाले भी इतने [illegible] अधिक कट्टर हैं, जितने कि सुधारों के पक्षपाती। [illegible] मानी हुई बात है कि कोई भी आन्दोलन बिना [illegible] के आगे बढ़ नहीं सकता। जिस आन्दोलन का [illegible] नहीं होता, उसके पनपने में बहुत देर लगती है।

इस समय मारवाड़ी-समाज की सभी जातियों [illegible] दो दल काम कर रहे हैं। एक दल तो वह है, [illegible] पुरानी रूढ़ियों का पोषक, 'बाबा-वाक्यं प्रमाणं' [illegible] मानने वाला है। अपनी आन पर उसने लाखों [illegible] को पानी की तरह बहा दिया और बहा रहा है। [illegible] दल का प्रधान कार्य प्रत्येक प्रकार के सुधारों [illegible] विरोध करना ही है, चाहे वह सुधार देश के [illegible] भी जाति या कोने में क्यों न होता हो। इन्हीं [illegible] भावों के अर्थ के प्रभाव से कूपमण्डूक पण्डित [illegible] वाले कुछ लोग आज बाल-विवाह और वृद्ध-[illegible] तक का समर्थन करते तनिक भी नहीं सकुचाते। इतना ही तक नहीं, देश के चुने-चुने नेताओं तक [illegible] इस दल से पेट पालन करने वाले पण्डित [illegible] जीव खुल-खुल कर गालियाँ तक बकने और [illegible] में नहीं सकुचाते! लिखने का अभिप्राय यह [illegible] एक दल की दशा यह है। दूसरा दल ठीक [illegible] विपरीत है। वह दल नवयुवकों का दल है, [illegible] उग्र से उग्र—प्रत्येक प्रकार के सामाजिक, [illegible] तथा राजनैतिक सुधारों का पक्षपाती है। इस [illegible] के वीर-युवक प्राणपण से, तन-मन-धन से [illegible] काल का साथ देते हैं। इस दल ने गत १० [illegible] इतनी अधिक उन्नति की है कि उसको देख कर [illegible] करना पड़ता है। स्त्री-शिक्षा, पर्दा-निवारण, [illegible] विवाह करना इस दल ने अपना प्रधान उद्देश्य बना [illegible] है। साथ ही साथ देश की स्वतन्त्रता की लड़ाई में [illegible] दल का ख़ासा हाथ है। कट्टरता के गढ़ मारवाड़ी-[illegible] में इन सुधारक वीरों की विजय वास्तव में एक [illegible] की विजय है। जहाँ पर 'सुधार' शब्द से लोगों के [illegible] खड़े हो जाते थे, उस समाज में आज सैकड़ों [illegible] विधवा-विवाह करने के लिए तैयार बैठे हैं।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

एक अच्छी तादाद ने पर्दा की कुप्रथा को दूर हटा फेंका है; स्त्री-शिक्षा के लिए कई बालिका-विद्यालय खुल गए हैं, जहाँ पर उचित तरीक़े से भावी मातृ-जाति को शिक्षा दी जा रही है। मारवाड़ी-समाज की उन्नति का सूर्योदय हो गया है। सूर्य की किरणें धीरे-धीरे उग्र रूप धारण करती चली जा रही हैं। अब वह दिन दूर नहीं दीख पड़ता, जब मारवाड़ी-जाति थोड़े ही दिनों में उन्नतिशील गिनी जाने वाली जातियों में अपना स्थान प्रथम रक्खेगी। कारण, समाज-सुधारक समाज की बुराइयों को गिन-गिन कर समाज से बाहर निकाल फेंकने की भरपूर चेष्टा कर रहे हैं।

अन्ध-परम्परा के विचार, कूपमण्डूकता के विचार धीरे-धीरे हट रहे हैं, किन्तु सफ़ाई के साथ। आज कितने ही मारवाड़ी-नवयुवक विदेशों में शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं, कितने लौट आए हैं, कितने वहाँ पर व्यापार करते हैं और कितने ही जाने की तैयारी में हैं। सामाजिक क्रान्ति इस समाज के अन्दर उथल-पुथल मचा रही है। नवयुवक मारवाड़ी-समाज रात-दिन इसी चिन्ता में रहता है कि किस प्रकार उनकी जाति आगे बढ़े। उन्नति की लालसा से व्यग्र और उतावले होकर मारवाड़ी-नवयुवक अपनी जाति के नौनिहालों के लिए अपना सर्वस्व निछावर करने के लिए इस समय तत्पर मिलेंगे।

इस जाग्रति का सारा श्रेय कलकत्ता को है। मारवाड़ी-समाज के अन्दर सुधार और विरोध दोनों प्रकार के आन्दोलन यहीं से प्रारम्भ हुए हैं। कलकत्ते के सुधारक देश भर में अपनी जाति के अन्दर सुधार का अमृत भाइयों को पिलाने के लिए मुस्तैद हो गए हैं। इसके लिए वे अपना सारा समय, तन-मन-धन, सदैव अर्पण करने के लिए तैयार हो गए हैं। इसमें तनिक भी सन्देह नहीं है कि मारवाड़ी-समाज के अन्दर जो आज सुधार-लहर लहराती हुई दीख पड़ती है, इसमें कलकत्ता का विशेष हाथ है।

कलकत्ते के सुधारकों के अगुवा हैं बा० घनश्यामदास जी बिड़ला। बिड़ला जी के नाम से आज सारा देश परिचित है। बिड़ला-परिवार का परिचय आज किसी को भी देने की आवश्यकता प्रतीत नहीं होती। बिड़ला जी देश के लिए जो कुछ दान देते हैं, वह सर्व-विदित है।

स्वर्गवासी रावबहादुर ठाकुर मङ्गलसिंह जी, सी० आई० ई०
[आप जोधपुर-राज्य की काउन्सिल के एक प्रभावशाली मेम्बर थे]

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

आप मारवाड़ी-जाति की उन्नति के लिए अपनी हानि भी बर्दाश्त कर लेते हैं। कलकत्ते में सुधारकों की संख्या प्रतिदिन बढ़ने का कारण आपका प्रेम भी है। आप राजनीति में माननीय मालवीय जी के अनुयायी हैं। हिन्दुओं के लिए आपके कोष से काफ़ी रक़म प्रति मास बाहर निकलती है। यदि अत्युक्ति न समझी जाय तो हम कह सकते हैं कि आपके पूज्य जेष्ठ भ्राता बा० युगलकिशोर जी

बाबू रामेश्वरलाल जी सर्राफ़, एम० एल० सी०

[आप बिहार की काउन्सिल के मेम्बर हैं। देवघर ज़िले के आप प्रधान नेता हैं। आप देश-हित के सभी कामों में भाग लेते रहते हैं]

बिड़ला के सम्बन्ध में जो यह कहा जाता है कि आप हिन्दुओं ही की नींद से सोते और जागते हैं—यह सोलहो आने ठीक है। युगलकिशोर जी उन महापुरुषों में से हैं, जोकि काम करना जानते हैं, नाम नहीं। दूसरे नेता हैं बाबू पद्मराज जी जैन। जैन जी जैन-शास्त्र तथा हिन्दी-अङ्गरेज़ी के अच्छे विद्वान् हैं। आप उग्र-सुधारकों में से एक हैं। आप हिन्दू-महासभा तथा हिन्दू-अनाथालय एवं अनाथालय के मन्त्री हैं। सामाजिक बन्धनों की भी चिन्ता न करते हुए, आप विलायत-यात्रा कर हैं। आपके घर में पर्दे की कुप्रथा एकदम नहीं राजनीति में आपका कहना है कि आप भगवान् को अपना गुरु मानते हैं। तीसरे हैं बा० प्रभुदयाल हिम्मतसिंहका एम० एल० सी०। आप कलकत्ता कोर्ट में प्रेक्टिस करते हैं। आप पर दोनों दलों विश्वास है। सुधारक दल के तो आप प्राण हैं। राजनीति आप स्वराजिस्ट पॉलिसी के मानने वाले हैं। वर्षों आप नज़रबन्द भी रह चुके हैं। सुधारक दल आपकी सलाह के कोई काम नहीं करता। जानकारों कहना है कि बा० घनश्यामदास जी बिड़ला अभिन्न-मित्र हैं और बिड़ला जी आपसे अपने बहुत अधिक सलाह लिया करते हैं। बा० प्रभुदयाल जी बहुत ही मिलनसार तथा मिष्टभाषी हैं। आप कमाई का अधिकांश देश-सेवा तथा देश-सेवकों लिए ख़र्च कर देते हैं। आप कितने ही बालकों गुप्त छात्रवृत्ति देकर, उनको शिक्षित बना रहे हैं। वाड़ी-समाज में बढ़ते हुए शिक्षा-प्रचार का अधिकांश आपको है। आपमें सबसे बड़ा जो गुण है, वह यह कि आप इस बात को अच्छी तरह से जानते हैं कि का साथ कैसे दिया जाता है। मारवाड़ी-जाति के युवकों का उत्थान हो, इसके लिए आप सदैव करते रहते हैं और बराबर उनको प्रोत्साहन देते रहते अखिल भारतवर्षीय नवयुवक मारवाड़ी-समाज के होने योग्य जो गुण चाहिए, वह सब आप में मौजूद

आप लोगों के सहायक बा० बसन्तलाल मुरारका बा० नारायणदास बाजोरिया, बा० भागीरथमल कानोडिया, बा० सीताराम सेखसरिया, बा० गुप्त, बा० रामकुमार जालान, बा० दुर्गाप्रसाद बा० रामकृष्ण जी मोहता, बा० मोतीलाल लाठ, गणपतराय विमाणी आदि प्रमुख हैं। बा० बसन्तलाल जी सुधारों में बहुत आगे बढ़े हुए हैं। इनके विचार उग्र हैं। बा० नारायणदास जी बाजोरिया, बी० सनातनी सुधारक हैं। आप विलायत-यात्रा कर चुके हैं आप संसार की क्रान्ति का स्वागत करते हैं। अफ़ग़ानिस्तान के क्रान्तिकारी सुधारक अमीर अमानुल्ला

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

ख़ाँ को आपने उनकी विपत्ति के इस अवसर पर दस हज़ार रुपए की सहायता भेजी है! हिन्दू-अनाथालय को भी आपने बीस हज़ार की सहायता दी है। आप सामाजिक क्रान्ति का स्वागत धार्मिक ढङ्ग पर सदैव करते रहते हैं। बा० भागीरथलाल कानोडिया सुधारकों की संस्थाओं के आर्थिक प्राण हैं। आप शरीर से तो कम, किन्तु अर्थ से बराबर मदद करते रहते हैं। आप बिड़ला-ब्रदर्स के हिस्सेदार तथा मैनेजर हैं। बाबू दुर्गाप्रसाद खेतान, खेतान-परिवार के उठते हुए सुधारक हैं। इधर आपने सुधार-सम्बन्धी कामों में बहुत भाग लेना प्रारम्भ कर दिया है।

बा० रामकृष्ण जी मोहता मारवाड़ी-समाज के कर्णधार हैं। आप ऐसे रत्नों को पाकर मारवाड़ी-समाज ही क्या, हिन्दू-समाज अपना गौरव समझता है। आप बहुत बड़े गुप्त दानी तथा चुपचाप काम करने वाले हैं, आप साधु-हृदय हैं। बा० जगन्नाथ गुप्त पुराने समाज-सेवक हैं। बा० गणपतराय विमाणी और बा० मोतीलाल लाठ उठते हुए उग्र-सुधारकविचार के हैं।

इस दल के अतिरिक्त एक नरम सुधारक-दल और है, जिसका उद्देश्य धीरे-धीरे सुधार करना है। इस दल में बा० रङ्गालाल जी नाजोदिया, बा० तुलसीराम सरावगी, बा० बैजनाथप्रसाद देवड़ा, बा० ईश्वरदास जातन, बा० मगनमल जी कोठारी आदि हैं। सुधारकों के अन्दर ही एक और दल है, जिसका नेतृत्व बा० महावीर-प्रसाद जी पोद्दार करते हैं। यह दल खद्दर का प्रचार ज़ोरों के साथ करने की तैयारी कर रहा है। इसमें प्रमुख भाग बा० सीताराम सेखसरिया तथा बा० बैजनाथ केड़िया का है।

इन सबों के अतिरिक्त कलकत्ते के सुधारकों में दो सुधारक ऐसे और हैं, जिनको भूल जाना न्यायसङ्गत नहीं होगा। उनमें से एक हैं बा० बालकृष्ण जी मोहता। आपके विचार मारवाड़ी-समाज के सुधारकों ही से क्या, हिन्दू-समाज भर में बहुतों से आगे बढ़े हुए हैं। आप विचार-स्वातन्त्र्य के मानने वाले हैं। आपकी धर्मपत्नी भी आपके कामों में अच्छा हाथ बटाती हैं। आपके विचार बड़े ही क्रान्तिकारी हैं। स्त्रियों की स्वतन्त्रता के पीछे आप पागल-से हो रहे हैं। आप जाति-भेद के मिथ्या ढकोसले को नहीं मानते, और मनुष्य-मात्र की एक जाति है, ऐसा आपका विश्वास है। आप-सरीखे उग्र-सुधारक मारवाड़ी-समाज की बात तो अलग रही, देश भर में बहुत ही कम हैं। जो कुछ आप कहते हैं, वह स्वयं करते भी हैं, यह आपमें एक महान् गुण है।

दूसरे हैं बा० गङ्गाप्रसाद जी भोतिका; एम० ए०, बी० एल०, काव्यतीर्थ। आप देवता हैं। अपने विचारों और सिद्धान्तों के बहुत ही पक्के सुधारक हैं। आप इस समाज के एक रत्न हैं, इतना ही लिखना पर्याप्त होगा।

दानवीर रायबहादुर सेठ कुन्दनमल जी, कोठारी
[ऑनरेरी मैजिस्ट्रेट ब्यावर (राजपूताना)]

कलकत्ते के मारवाड़ी सुधारक-समाज के अन्दर भी सिद्धान्त का थोड़ा-थोड़ा मतभेद अवश्य है। किन्तु जाति के उत्थान का जब प्रश्न आता है, तब सब आपस के छोटे-छोटे सैद्धान्तिक मतभेदों को भूल कर, एक हो जाते हैं। यह बात इसका प्रमाण है कि मारवाड़ी-जाति उन्नति के पथ पर अग्रसर होती जा रही है। उसकी जाति के नेताओं और कार्यकर्त्ताओं को अपनी जाति की उन्नति के सामने अपने सैद्धान्तिक मतभेद छोड़

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

देना सदैव वाञ्छनीय रहता है। इस समाज के कार्य-कर्त्ता जाति की उन्नति के लक्ष्य को सामने रख कर सारा कार्य करते हैं। कलकत्ते का मारवाड़ी सुधारक-समाज बहुत ही अधिक सुसङ्गठित तथा अपनी लगन में दत्त-चित्त है—यही कारण है कि कलकत्ता आज देश भर के मारवाड़ियों का नेतृत्व कर रहा है।*

—रामदहिन ओझा

* * *

हमारा प्यारा राजस्थान

वीरभूमि राजस्थान का प्रत्येक निवासी 'मारवाड़ी' कहलाता है। मारवाड़ी नाम सुनते ही मेरे हृदय में प्रेम की धारा बह निकलती है। इस नाम में जादू है। क्योंकि 'मारवाड़ी' शब्द सुनते ही राजस्थान-निवासियों का—राजा से लेकर रङ्क, भीलों तक का—प्राचीन गौरव स्मरण हो आता है और उनके अपूर्व स्वार्थ-त्याग और देश पर बलिदान होने के भाव-चित्र आँखों के सामने खिंच जाते हैं। मारवाड़ी-वीरों की प्रसविनी राजस्थानीभूमि के सपूतों की वीरता और देश-भक्तिकी प्रशंसा—इसके कट्टर से कट्टर शत्रु सम्राट् अकबर से लेकर अत्याचारी औरङ्गज़ेब तक—सकल मुग़ल-सम्राट् कर गए हैं। मारवाड़ी-वीरों की हिमालय-सदृश दृढ़ता बड़े-बड़े प्रतापी सम्राटों के ललाटों में सिकुड़न उत्पन्न करती थी। मुसलमानों के हृदयों पर मारवाड़ियों की वीरता, निर्भयता तथा दिलेरी की गहरी छाप थी। मारवाड़ का सिक्का मुग़लों के हृदय-पटल पर सदा बैठा रहता था। महाराणा प्रताप, जयमल और फ़त्ता की वीरता और देशभक्ति की प्रशंसा सम्राट् अकबर स्वयं कर गए हैं। मारवाड़ी-वीर अमरसिंह की कटारी के भय से महलों में भागने वाला शाहजहाँ बादशाह, राजपूतों की भूरि-भूरि प्रशंसा कर गया है। आगरे के क़िले का अमरसिंह-दरवाज़ा और अमरसिंह का घोड़ा आज तक उस वीर मारवाड़ी की इस वीरता को पुकार-पुकार कर बतला रहे हैं। अकेला मारवाड़ी-वीर अपनी निर्भयता से किस प्रकार बादशाही सल्तनत हिला सकता है। वीरवर दुर्गादास राठौड़ ने मुसलमान-सम्राट् की ख़ास राजधानी दिल्ली में लाखों मुग़ल-सेना के दाँत खट्टे कर, मार-धाड़ करते हुए अपने महाराजा अजीतसिंह को दिल्ली से लाकर मारवाड़ के तख़्त पर बिठाया। उन्होंने वर्षों युद्ध किया पर निराश कभी न हुए! उन्होंने सारे राजस्थान में

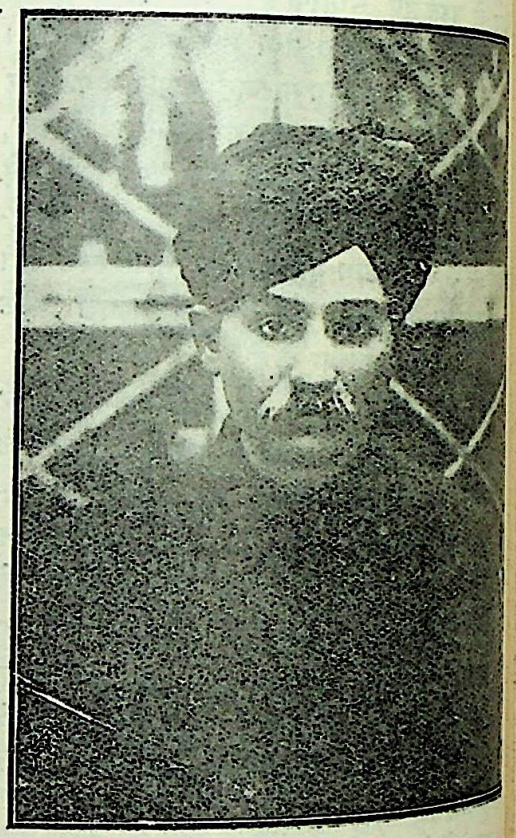

वैद्यराज ठा० कल्याणसिंह जी वर्मा
[आप अजमेर के एक सुप्रसिद्ध वैद्य एवं सुधारक हैं]

हिन्दू-सङ्गठन किया और औरङ्गज़ेब के छक्के छुड़ा दिए यहाँ तक कि औरङ्गज़ेब का शाहज़ादा अकबर * तक उनसे आ मिला था और औरङ्गज़ेब उनसे सन्धि की भिक्षा माँगता था। औरङ्गज़ेब उनको मारवाड़ के मूल्यवान प्रदेश

* उस सर्वशक्तिमान् परमात्मा से हमारी प्रार्थना है कि इस लेख की प्रत्येक बात सत्य सिद्ध हो।

—सं० 'चाँद'

* औरङ्गज़ेब के अन्तिम शाहज़ादे का नाम भी 'अकबर' था। पाठकों को भ्रम न होना चाहिए।

—सं० 'चाँद'

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

देता था, परन्तु इस वीर मारवाड़ी ने इन सब पर लात मार दी और साधारण सिपाही का जीवन व्यतीत कर अपने देश की रक्षा करने में ही गौरव समझा।

मारवाड़-निवासी सच्ची स्वतन्त्रता के पुजारी होते हैं। ये भारतीय सभ्यता की रक्षा में प्राण अर्पण करने वाले, उद्देश्य की पूर्त्ति के लिए कष्ट उठाना धर्म समझने वाले, शत्रुओं के प्रहार से मैदान न छोड़ने वाले, दुष्टों के आक्षेपों और उपहासों से न डरने वाले, कभी भी रण-भूमि से पग पीछे न हटाने वाले, कठिन तपस्या और कठोर व्रत रखने वाले, शरीरों से हृष्ट-पुष्ट और महान् पराक्रमी होते थे। मारवाड़ी वीर, एकान्त में बैठ कर बरसों तक तपस्या करने से स्वर्ग प्राप्त करने के स्थान में रणभूमि में जूझ कर ख़ून की नदियाँ बहा कर, तुरन्त ही स्वर्ग प्राप्त करते थे! मारवाड़ी-देवियाँ खड्ग हाथ में लेकर, अपने पतियों के साथ घोड़ों पर बैठ कर रणभूमि में तलवारों से शत्रुओं के समूहों के सिर धड़ से उड़ाती हुई वीर-गति को प्राप्त होती थीं, या रण में काम आए पति के साथ सती हो जाती थीं, या जलती हुई चिताओं में सतीत्व-रक्षार्थ हँसती हुई कूद पड़ती थीं और स्वर्ग प्राप्त करती थीं। यदि कोई मुझसे पूछे कि संसार के इतिहास में कौन सी ऐसी जाति है, जो ऊँचा मस्तक कर कह सकती है कि उसकी देवियों ने केसरिया बाना पहिन कर, नग्न खड्ग हाथ में लेकर, घोड़े पर सवार होकर, रण-चण्डी को चेताया, तो उत्तर मिलेगा कि वह राजपूताना की वीर मारवाड़ी-जाति है। यदि कोई जाति छाती फुला कर कह सकती है कि हमने राक्षसों, पिशाचों और विधर्मियों का मर्दन किया तो वह मारवाड़ी है। मारवाड़ियों के शरीर में स्वदेश-प्रेम, स्वार्थ-त्याग और धर्म-प्रेम का ज्वार-भाटा उठता रहता था।

आज भारत पराधीनता की ज़ञ्जीर में बँधा है। और इसके अधःपतन के साथ-साथ राजस्थान सर्वथा ग़ुलाम-देश बना हुआ है। परन्तु जैसे बरसात में राजस्थान की प्रशस्त मरु-भूमि में हरी-हरी घास और कलकल नाद करते हुए झरने और नाले अति सुहावने मालूम होते हैं, वैसे ही इस भयङ्कर अविद्यान्धकार में ग़र्क़ ग़ुलाम-देश में इसके कुछ स्वार्थ-त्यागी सपूतों से इसका सम्मान है। घनघोर काले बादलों में रजत-रेखा के समान मारवाड़ी-सेठों की दानवीरता, उनके बनाए विशाल मन्दिर और बड़ी-बड़ी धर्मशालाएँ और देश की राजनैतिक, सामाजिक और धार्मिक संस्थाओं को उनका प्रचुर दान, मारवाड़ियों का नाम सार्थक कर रहा है। मारवाड़ी-वीर जिस प्रकार रण में अकेला ही जूझता था, उसी प्रकार वह आज भी अकेला ही लाखों रुपए पुण्य

राजपूताने के प्रसिद्ध सार्वजनिक कार्य-कर्ता और समाज-सुधारक
कुँवर चाँदकरण जी शारदा बी० ए०, एल्-एल्० बी०

कर हिन्दू-जाति के लिए वह महान् कार्य कर जाता है, जो लाखों बाबुओं के चन्दे से नहीं हो सकता।

दुःख है कि भारत में कुछ पश्चिमी सभ्यता के प्रेमी हरेक बात में यूरोप की नक़ल कर अपनी असली भाषा, भाव और भेष को छोड़ रहे हैं! परन्तु मारवाड़ी आज भी, इस गई-गुज़री हालत में भी, धर्म पर आरूढ़ हैं। यूरोप की रमणियाँ लज्जा से मुख नीचा कर लेती हैं, जब वह

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

पढ़ती हैं कि राजस्थान की देवियाँ पातिव्रत्य-धर्म का इतना पालन करने वाली होती थीं कि वे दहकती हुई चिताओं में प्रसन्न-मुख सज-धज के साथ जल मरती थीं, परन्तु पर-पुरुषों को अपना अङ्ग स्पर्श नहीं करने देती थीं! और पति भी पद्मिनी के पति भीमसिंह के समान होते थे, जो स्वयं मर मिटते थे, पर स्त्री की आन रखते थे और उसके सतीत्व की रक्षा करते थे। इन मारवाड़ियों की

ब्यावर (राजपूताना) के सुप्रसिद्ध दानवीर श्रीमान् सेठ कुन्दनमल जी ऑनरेरी मैजिस्ट्रेट के पुत्र

श्रीमान् लालचन्द जी

जन्मभूमि राजस्थान ही को यह गौरव प्राप्त है कि यहा की देवियाँ अपने पुत्रों और पतियों को अपने हाथों से अस्त्र-शस्त्र बाँध कर रण-भूमि में मातृभूमि के रक्षार्थ भेजती थीं और बड़ा उत्सव मनाती थीं। वे अपने पतियों के वीरोचित युद्ध करते हुए मारे जाने पर हर्षित होती थीं और उनसे जल्दी मिलने के लिए सती हो जाती थीं अथवा विजयी होकर लौटने पर उनकी आरती उतारती थीं। संसार के इतिहास में ऐसी वीर-[illegible] मिलना कठिन है।

पर हा! अब मारवाड़ी-जाति का वह ओज, तेज, [illegible] कहाँ? अब तो 'मारवाड़ी' शब्द का अर्थ कायर, [illegible] देने वाला, कञ्जूस, सूदख़ोर समझा जाता है! कौन [illegible] ठोंक कर कह सकता है कि मैं वीरता के गुण वाला [illegible] वीर मारवाड़ी हूँ? कौन ऊँचा मस्तक कर कहने को [illegible] है कि दुष्ट, अन्यायी, अत्याचारियों का मैं नाश करूँ[illegible] कौन धन की अपेक्षा स्वाभिमान और हिन्दू-गौरव [illegible] मूल्य अधिक समझता है? कौन अपने अनुपम धैर्य, साह[illegible] पराक्रम और त्याग से मातृभूमि के अभिमान और [illegible] के रक्षार्थ प्रयत्नशील है? गहरी साँस लेने के बाद [illegible] मिलता है—हाँ! राजस्थानी वीर मारवाड़ी फिर [illegible] अब भी अतीतकाल के मारवाड़ी-वीरों की स्मृति से [illegible] भीतर स्फूर्त्ति आती है और आवेगी! क्या प्रचण्ड [illegible] और दुर्दमनीय देश-भक्ति अब भी मारवाड़ी-युवकों [illegible] प्रज्वलित होगी? क्या राजस्थान के क्षात्र-तेज, स्वदेश[illegible] मान, अविरल पराक्रम के बखान करने वाले हमारे [illegible] भाट, चारण और साहित्य के बड़े-बड़े महारथी हमें [illegible] कमर कस कर खड़े होने के लिए उत्साहित करेंगे? [illegible] मिलता है—हाँ! अवश्य देश उठेगा! परमात्मा [illegible] कि 'चाँद' का "मारवाड़ी-अङ्क" मारवाड़ियों के हृदय [illegible] निराशा को काफ़ूर कर दे। यह अङ्क निराशा के अन्धकार [illegible] में ग़र्क़ राजस्थान में उज्जवल आशा की किरण बन [illegible] बिना जाति-पाँति के भेद के राजा से रङ्क तक [illegible] मारवाड़ी के घर को जगमगा दे। और अर्वली पर्वत [illegible] तलहटियों में फिर वही भारतीयता का जय-जयकार [illegible] स्वातन्त्र्य का ननाद गुञ्जायमान् हो! फिर मारवाड़ी-[illegible] प्रिय राजस्थान की घाटी-घाटी, दर्रे-दर्रे और वन-वन [illegible] असहनीय कष्ट झेलते हुए अशान्वित और प्रोत्साहि[illegible] होकर देश-प्रेम की रण-भेरी बजावें। तभी वीर-पूजा [illegible] भावों वाले प्रत्येक व्यक्ति के लिए 'मारवाड़ी' शब्द [illegible] पूजनीय, आदरणीय और अनुकरणीय रहेगा। [illegible] वीर-भूमि राजस्थान-निवासी तथा प्रवासी मारवाड़ी-[illegible] की जय!

—चाँदकरण शारदा, बी० ए०, एल्-एल्० बी०

* * *

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

मारवाड़ी-जाति में समाज-सुधार

देश में आज जिस वेग से परिवर्त्तन हो रहा है, उसका असर अभी तक मारवाड़ी-समाज पर नहीं के बराबर हुआ है। वर्षों से सभाएँ स्थापित हैं, प्रति वर्ष बड़ी शान-शौकत और धूमधाम से अधिवेशन किए जाते हैं, परन्तु प्रस्ताव अभी यही पास हो रहे हैं कि विवाह के समय कन्या की आयु बारह और लड़के की आयु सोलह होनी चाहिए! इससे कुछ और आगे बढ़े तो बताशों के बाँटने में या नाई-ब्राह्मणों के पैसे-टके देने में कमी-बेशी की गई या बाज़ारों में सीटने अथवा गाली न गाई जाने का प्रस्ताव पास किया गया!!

यह तो हुई सुधारक-पार्टी की बात। अब इन सुधारों से तङ्ग आकर कुछ लोगों ने महा-पञ्चायतों की स्थापना और की है। इन महा-पञ्चायतों का ध्येय समाज को सौ वर्ष पीछे ले जाना है! अर्थात् वह फिर से पञ्च-चौधरियों के औरङ्गज़ेबी शासन को स्थापित करना चाहती हैं, जिनके हुक्म के पहले ही सिर पर जूतों की गठरी लाद कर ख़ुशामद व आजिज़ी करनी पड़ती है!

इस सुधार की घुड़दौड़ में प्रत्येक जाति अपना सुधार करने को अग्रसर हो रही है। क्या अग्रवाल, क्या खण्डेलवाल, क्या माहेश्वरी, क्या बीजावर्गी, क्या ओसवाल, क्या पोरवाल—सभी जातियों में प्रतिवर्ष महासभा और महापञ्चायतों के अधिवेशन किए जाते हैं। पर असली सुधार कुछ नहीं हो रहा है। बहुत से उपयोगी प्रस्ताव पास करने पर भी, वास्तव में समाज का कुछ भी सुधार नहीं हुआ। अब भी पुरानी रूढ़ि के अनुसार मारवाड़ी-स्त्रियाँ अपनी सहेलियों के साथ सभ्यता के विरुद्ध गीत गाती हुई निकलती हैं, और गुण्डों की टोली साथ में इशारेबाज़ी और आवाज़ाकशी करती चलती है! इस दृश्य को देख कर लज्जा को भी लज्जा आती है!! इनकी समझ में यह बाप-दादों की लकीर है और इसमें किसी तरह का परिवर्त्तन होना इनके धर्म में आघात पहुँचाता है। एक तरफ़ स्वतन्त्रता की वेदी पर सहस्रों मनुष्य सब कुछ अर्पण करने को तैयार हैं, दूसरी तरफ़ समाज को ग़ुलामी में जकड़ने के लिए महापञ्चायतों की स्थापना में थैलियों पर थैलियाँ ख़र्च की जा रही हैं! समझ में नहीं आता कि इन लोगों के दिल-दिमाग़ किस वस्तु के बने हुए हैं?

इसमें तो कोई शक नहीं कि मारवाड़ी रुपया कमाने में कमाल ही करते हैं। इन्हें रुपयों के सामने किसी बात का भी ध्यान नहीं रहता। मिसाल के तौर पर एक मारवाड़ी-सेठ पचास-साठ वर्ष की अवस्था में बारह वर्ष

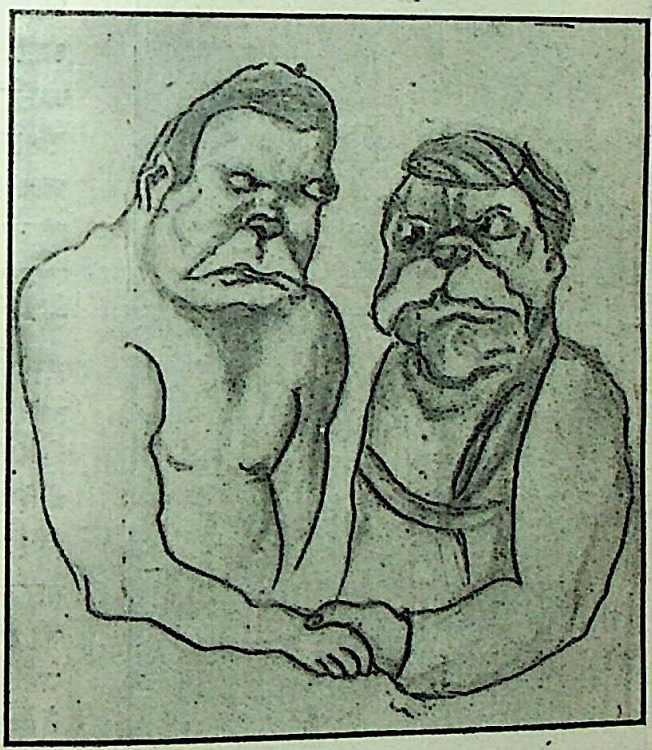

बेटी-बेचा दलाल चौधरी

[पण यार थे जाणा क म्हें, तीसरा को अठे काम कोनी]

की लड़की के साथ विवाह का नाटक रचता है और उसके साथ में सब पञ्च-चौधरी रङ्ग-मञ्च पर जाकर उसका साथ देते हैं! परन्तु इनके दिमाग़ में यह बात नहीं आती कि क्या बारह वर्ष की बाल-विधवा 'हरे राम; हरे कृष्ण' कह कर अपनी ज़िन्दगी का बेड़ा पार कर लेगी? इस विषय में सोचने के लिए न तो इनका धर्म ही आज्ञा देता है, न दिमाग़ ही इजाज़त देता है!

मुझे खण्डेलवाल-महासभा के मन्त्री का कार्य

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

करते हुए अनुमानतः पन्द्रह वर्ष हो गए। जो कुछ अनुभव मुझे इस मारवाड़ी-जाति के एक अङ्ग का हुआ है, वह मैं आपके सामने पेश करता हूँ। लगातार पन्द्रह वर्ष के निरन्तर प्रचार और महासभा के अधिवेशनों के होने पर भी मैंने तो कोई भी सुधार की बात नहीं

वेटी-वेचा

[पैंतालीस सौ को सौदो करो है, अब धूमधाम सूँ आपणों व्याह करसूँ।]

देखी। प्रस्ताव पास करने में बहुत गरमा-गरमी और बड़ी बहस हुई, लेकिन समाज-सुधार का अमली काम एक भी नहीं हुआ। आज भी वही बाल-विवाह, अनमेल-विवाह और वृद्ध-विवाह हो रहे हैं! कन्या-विक्रय जैसा महासभाओं के पूर्व था, वैसा ही अब भी है! मौस (नुकते) भी वैसे ही हो रहे हैं! समाज में मनुष्यों की क्षति बड़े वेग से हो रही है! ३०० गाँवों की जन-गणना करने पर हम इस नतीजे पर पहुँचे हैं कि मारवाड़ी समाज अब बहुत दिनों तक इस संसार में जीवित रह सकेगा! मैं जिस खण्डेलवाल वैश्य-जाति की बात कह रहा हूँ, वह एक मारवाड़ी-जाति की ही उपजाति है। इनकी सरकारी जन-गणना की संख्या यदि आप ध्यान देकर पढ़ेंगे, तो मेरी बात की सत्यता आपको भली प्रकार से मालूम हो जायगी। सन् १९०१ की जन-गणना में यह जाति एक लाख पाँच हज़ार थी; सन् १९११ की जन-गणना में ७२ हज़ार रही; और सन् १९२१ में घट करके ५७ हज़ार रही; दो वर्ष बाद जो जन-गणना होने वाली है उसमें हमारा अनुमान है कि ३० हज़ार से अधिक इनकी संख्या न निकलेगी! आप ही विचार लीजिए कि ३० वर्ष में इस जाति में हज़ार की कमी हो गई। अगली दो जन-गणनाओं में क्या आश्चर्य है कि यह जाति बिलकुल ही साफ़ हो जाय! इस घटी के कारण बहुत ही स्पष्ट हैं। जिन मनुष्यों में से ६० फ़ी सदी के सन्तान पैदा ही नहीं होती, शेष में से २५ फ़ी सदी के यहाँ लड़कियाँ ही होती हैं; और बाक़ी १५ फ़ी सदी के लड़के लड़कियाँ होते हैं। इस जाति में विवाहित स्त्रियों की संख्या से विधवाओं की संख्या अधिक है! इसका ख़ास कारण बाल, अनमेल और वृद्ध-विवाह है! विवाह के समय की शारीरिक अवस्था पर कुछ भी ध्यान नहीं दिया जाता। ९० फ़ी सदी विवाह वरों के साथ न होकर थैलियों के ही साथ किए जाते हैं!! प्रायः देखा जाता है कि लड़के की अवस्था से लड़की की अवस्था अधिक होती है और यह बड़ा ऐब है कि एक मारवाड़ी मसल 'बड़ी लड़की बड़ा भाग' में छिप जाता है। इस हिसाब से जाति में सन्तानों की पैदाइश बहुत कम हो रही है। हमें बड़े दुःख के साथ लिखना पड़ता है कि मारवाड़ी-समाज का ध्यान तनिक भी इस ओर नहीं जा रहा है।

वह मारवाड़ी-जाति, जिसके व्यक्ति एक पाई की बेशी होने पर बारह-बारह बजे रात तक बैठ कर हिसाब पूरा करते हैं, ईश्वर जाने अपनी इस भयङ्कर क्षति की तरफ़ क्यों नहीं ध्यान देती!!

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

इन्दौर के वर्तमान नरेश

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

दुबे जी की
३४ चुनी हुई चुटीली चिट्ठियों का सुन्दर संग्रह

पृष्ठ-संख्या लगभग ५००, सजिल्द पुस्तक का मूल्य लागत मात्र केवल ३) रु०, स्थायी ग्राहकों से २) रु०

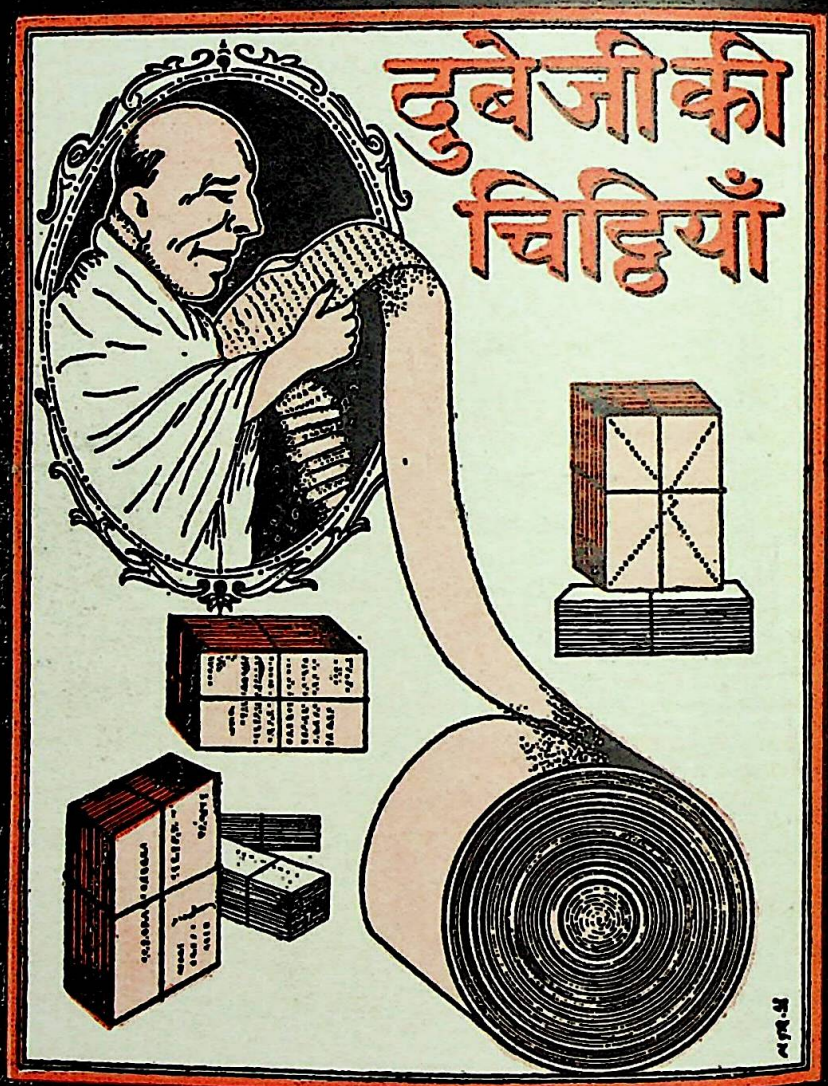

ले ख क—
श्री विजयानन्द दुबेजी

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

हमें पूर्ण आशा है कि अब हमारे मारवाड़ी-भाइयों का ध्यान इस विषय की तरफ़ अवश्य जायगा और वे 'चाँद' के इस "मारवाड़ी-अङ्क" से पूरा लाभ उठावेंगे।

—गुलराजगोपाल गुप्त

* * *

मारवाड़ियों के गहने और कपड़े

वैसे तो दुनिया में शायद ही कोई ऐसा समाज होगा कि जिसमें किसी न किसी क़िस्म की बुराई न पाई जावे। लेकिन अन्य समाजों के साथ मिलान करने से मालूम होता है कि हमारे मारवाड़ी-समाज में बहुत अधिक बुराइयाँ हैं, और बहुत प्रकार की हैं। आजकल वह समय नहीं है कि दूसरों की बुराइयाँ देखा करें और अपनी ओर ध्यान ही न दें। इस समय तो बुद्धिमत्ता इसी बात में समझी जाती है कि पहले अपने समाज की बुराइयों को निकाल कर दूर फेंक दे और फिर दूसरे समाज की तरफ़ उँगली उठावे।

हमारे मारवाड़ी-समाज में एक बहुत बड़ी बुराई यह है कि ज़ेवर और कपड़े में अनुचित तरीक़े से धन ख़र्च किया जाता है और साथ ही उसके द्वारा स्त्रियों के स्वास्थ्य का नाश किया जाता है। मारवाड़ी-समाज में स्त्रियाँ जितने आभूषण पहनती हैं, वह सब जिस समय बने होंगे, उस समय किसी ख़ास मतलब से और किसी ख़ास तकलीफ़ को दूर करने के लिए बने होंगे। पर आजकल उनको केवल शृङ्गार की चीज़ समझा जाता है और लोगों से उन्हें छोड़ने को कहा जाय तो वह बहुत चिढ़ते हैं।

इन ज़ेवरों में सबसे पहला स्थान "बोर" का है। यह वह ज़ेवर है जो मारवाड़ी-स्त्रियाँ सिर पर पहनती हैं। पहनती क्या हैं, यों कहना चाहिए कि सिर के साथ एक ख़ास क़िस्म की रस्सी (जिसको कि नाला या कलावा कहते हैं, परन्तु मैं इसको रस्सी ही लिखूँगी) के सहारे ख़ूब कस कर बाँध या जकड़ देती हैं। इसमें कोई सन्देह नहीं कि माथे पर वेणी बाँधने का रिवाज बहुत पहले से है और ज़्यादातर फूलों की वेणी बना कर माथे पर बाँधी जाती थी। सिर्फ़ साधारण घरानों में ही नहीं, बल्कि राजघरानों तक में फूलों की वेणियाँ बना कर राज-परिवार की कुमारियाँ और स्त्रियाँ मस्तक पर धारण करती थीं। परन्तु यह रिवाज जहाँ तक मैं समझती हूँ, बीकानेर, जोधपुर, सिन्ध, मध्य-भारत आदि मरु-भूमि में स्थित स्थानों में प्रचलित न था। इसका कारण वहाँ पर पानी की कमी होना है, जिसकी वजह से वहाँ फूल पैदा नहीं हो सकते!

यह मैं नहीं कह सकती कि यह बोर प्रथम कब बना और इसे किसने बनाया। परन्तु यह निश्चय है कि

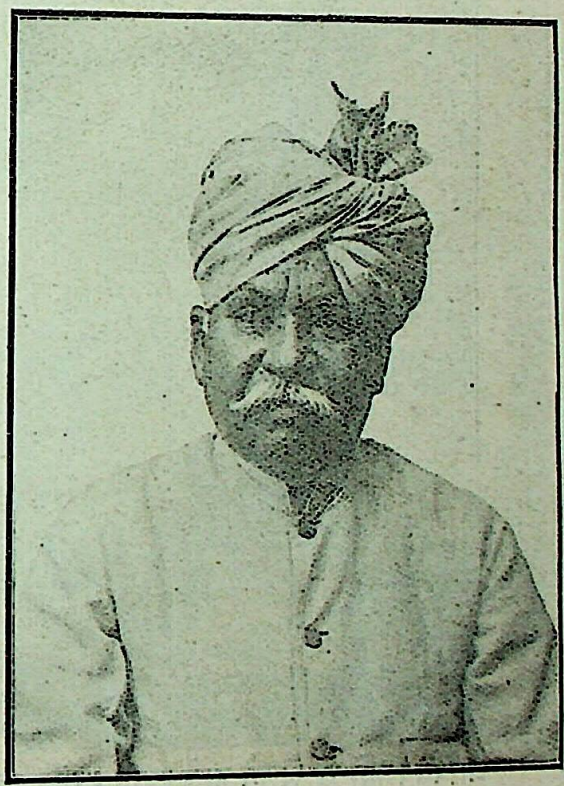

स्वर्गीय उदयराम जी कुम्भावत, जयपुर

[आप राजपूताने के प्रसिद्ध चित्रकार थे, जो अपने बाहु-बल से एक प्रसिद्ध व्यक्ति और लखपती बन गए।]

मरु-भूमि में पानी की कमी के कारण स्त्रियों का रोज़ सिर के बालों को धोकर साफ़ करना कठिन ही नहीं, असम्भव था। सिर के बालों को बग़ैर धोए हुए ज़्यादा दिन खुले रखने से बाल कड़े हो जाते हैं और तकलीफ़ देने लगते हैं। इसलिए सिर के बालों को एक ख़ास तरह

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

की रस्सी के साथ गूँथ कर ख़ूब कस कर बाँधने का रिवाज जारी हुआ, ताकि महीनों तक भी सिर के बालों को खोल कर धोने की आवश्यकता न हो। इसी रीति के कारण इस बोर का आविष्कार हुआ होगा। क्योंकि जब सिर को इस तरह कस कर बाँधा जाता है, तो सिर के बीच होकर एक रस्सी माथे के मध्य तक आती है। उसमें किसी मोटी चीज़ को उसे अटकाए रखने के लिए बाँध देना आवश्यक होता है। उसी मोटी चीज़ की जगह बोर का शुभागमन हुआ। इस बोर का नाप पौन इञ्च से लेकर, पाँच इञ्च तक देखा गया है! इसके साथ सिर के बालों को उपरोक्त रस्सियों के सहारे बाँध दिया जाता था, और इधर-उधर के छोटे-छोटे बालों को, जो बँधने में नहीं आ सकते, मोम से चिपका दिया जाता था!

आजकल भी इस बोर को बाँधना एक ख़ास श्रृङ्गार और सौभाग्यसूचक चिन्ह समझा जाता है, हालाँकि अब ईश्वर की कृपा से अधिकांश मारवाड़ी-समाज शहरों में रहने लगा है और उनकी मरु-भूमि तक में नहर वग़ैरह पहुँचा कर पानी की बहुतायत कर दी गई है; इस क कहीं भी अब पानी की इतनी कमी नहीं है कि तो सिर के बालों को धोकर, अच्छी तरह साफ़ करना समझा ज । आजकल यह सिर के बालों को बाँधना केवल हानि ही का कारण है।

लड़कियाँ तीन या चार साल की हुई कि सिर में बोर बाँध कर बालों को जकड़ना शुरू कर जाता है। इससे सिर के तमाम बाल छोटे जाते हैं और बालों में वास्तविक ख़ूबसूरती आ

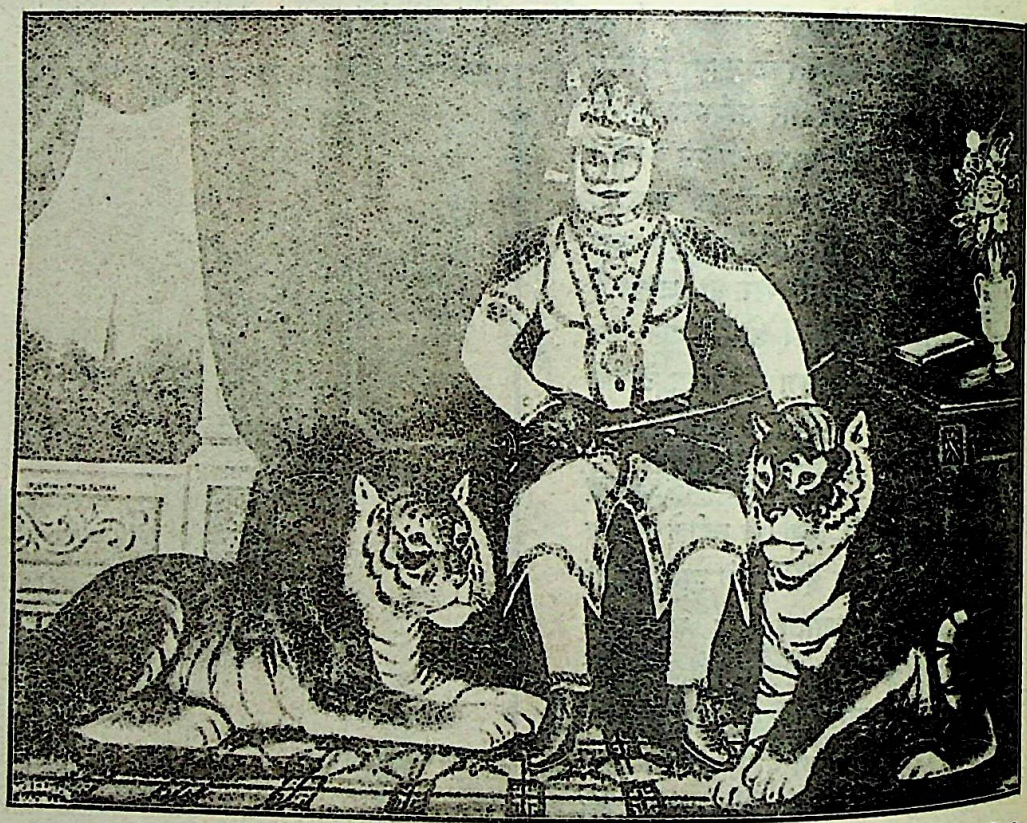

जीवित-सिंहों से खेलने वाले स्वर्गीय महाराजा सर भँवरपाल जी साहब बहादुर, करौली

पाती, सिर में जगह-जगह बालों के खिंचने से हो जाती हैं और जहाँ चार-पाँच दिन सिर बँधा कि सिर में बदबू आने लगती है। मैं तो वहीं पाती कि महीनों तक सर के बालों को बिना कैसे उन स्त्रियों को चैन पड़ता होगा?

बाज़-बाज़ मौक़े पर तो कसे हुए बालों में जाती हैं और उससे जैसी तकलीफ़ होती है, उसका भव वही स्त्रियाँ कर सकती हैं, जो सिर के बालों को

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

वाती हैं—खुशी से या घर की बड़ी-बूढ़ी औरत के दबाव से—और जँ पड़ जाने पर सिर खुजाते-खुजाते ख़ून निकाल डालती हैं। मैं तो जहाँ तक समझती हूँ, शायद ही कोई ऐसी स्त्री होगी, जो बोर को पसन्द करती हो और ख़ुशी से इसे बाँधती हो। वास्तव में समाज में इसका रिवाज होने के सबब से और घर की बड़ी-बूढ़ी औरतों के दबाव की वजह ही से सबको सिर में बोर गुँथाना पड़ता है। अगर मारवाड़ी-समाज इस ओर ध्यान देकर इस रिवाज को दूर कर दे तो सचमुच स्त्रियाँ उसकी बड़ी कृतज्ञ हों।

इसके बाद कानों की बालियों, मुरकियों और नाक की नथ को देखिए। इस नथ को तो स्त्रियाँ बिलकुल पतिदेव के प्राण ही समझ बैठी हैं, चाहे वह लटक-लटक कर नाक के छेद को नीचे तक काट ही क्यों न डाले! भला यह तो सोचिए कि ईश्वर ने जब शरीर को सब तरह से सुडौल और सब तरह से ठीक बना कर पैदा किया है, तो उसके बनाए किसी अङ्ग-विशेष में चलनी की तरह छेद करके क्षत-विक्षत कर देना, शरीर को सुन्दर बनाना है, या कुरूप बना कर उस अङ्ग का नाश करना है?

इसी तरह हाथ के ज़ेवरों को देखिए। बचपन से ही हाथों में ज़ेवर पहनाना शुरू कर दिया जाता है, जिससे बच्चों के पहुँचे और कोहनी में रक्त का प्रवाह ठीक तरह से होने में बाधा पड़ती है और वे पतले पड़ जाते हैं, और अन्त तक वैसे ही रहते हैं।

अब ज़रा पैरों के ज़ेवरों की तरफ़ ध्यान दीजिए। यह तो बिलकुल चाँदी की बेड़ियाँ कहने के ही योग्य हैं। विचार किया जाय तो जितने ज़ेवर, बालियाँ, नथ, गलसरी, हाथ के टड्डे, बन्द वग़ैरह हैं—सभी ऐसे मालूम होते हैं, गोया किसी ज़माने में औरतों को क़ैद रखने के लिए हथकड़ी और बेड़ी की जगह काम में लाए जाते थे! घर में जिस वक़्त शादी होकर नववधू आवे तो आप देख सकते हैं कि पूरी ३॥ सेर चाँदी की बेड़ियाँ और हथकड़ियाँ ज़ेवर के नाम से हर पैर में पड़ी होंगी, जिसकी वजह से बेचारी लँगड़ा-लँगड़ा कर चलती है! एक तो पहले ही बचपन से कड़ी वग़ैरह पहनते-पहनते पैर बिलकुल पतले पड़ जाते हैं, और उनमें गड्ढे पड़ जाते हैं, इस पर इतना वज़न एक साथ पैरों में डाल दिया जाता है! ऐसी दशा में अगर वह बेचारी रुक-रुक कर लँगड़ाती हुई चले तो इसमें उसका क़ुसूर ही क्या है?

आजकल तो मोती और हीरों के ज़ेवरों की भरमार है, जिनको ख़रीदते वक़्त हज़ारों देने पड़ते हैं और ज़रूरत के वक़्त बेचने पर कुछ नहीं मिलता! इन ज़ेवरों के पहनने में सदा मोतियों के टूट कर गिर पड़ने का भय रहता है। इसलिए उनको आलमारी में बन्द करके रक्खे रहना, और सिर्फ़ हिफ़ाज़त करनी पड़ती है।

मारवाड़ प्रान्त की ५० लाख स्त्रियों में प्रथम सब-एसिस्टेण्ट सर्जन महिला

लेडी डॉक्टर (मिस) गहलोत

अपने समाज की कितनी ही स्त्रियों को मैं जानती हूँ, जो वास्तव में इन सब ज़ेवरों से तङ्ग आ गई हैं और इनको छोड़ना चाहती हैं। लेकिन मजबूरन ऊपर वालों के दबाव में आकर पहनती हैं। क्या मारवाड़ी-समाज इस ओर ध्यान देकर स्त्रियों को इस कष्ट से छुटकारा दिलाएगा और साथ ही अपने इस अनुचित रूप से व्यर्थ नष्ट होते

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

हुए धन को बचा कर किसी सुकार्य में लगाने की चेष्टा करेगा ?*

अब ज़रा कपड़ों पर ग़ौर करिए। हमारे यहाँ विवाहादि अवसरों पर लड़की को, बहुओं को और बहिन-बेटियों आदि को देने के लिए कितने बढ़िया-बढ़िया और नायाब ओढ़ने, धोती, लहँगे वग़ैरह, जिनमें एक-एक की लागत

अजमेर की 'गुलाबदेवी कन्या-पाठशाला' की संस्थापिका और सामाजिक-सुधार की अनन्य पक्षपातिनी

श्रीमती गुलाबदेवी जी

५-५ और ७-७ सौ रुपए तक होती है, बनाए जाते हैं। लेकिन वह किस लिए बनते हैं ? सिर्फ़ इसलिए कि एक दफ़ा पहन लिए जावें और जिस तरह स्त्री कुल में क़ैद रहती है, उसी तरह उन कपड़ों को भी बक्स में क़ैद कर दिया जावे ! बनाने का शौक़ इस होता है कि जब-जब शादी होगी तब-तब नए-नए और नए-नए फ़ैशन के कपड़े, बाँकड़े, जाल, मोती लगा कर बनवाए जायँगे। परन्तु वह सिर्फ़ रखने होते हैं, क्योंकि पहनने के लिए मौक़े ही मिलते हैं ? किसी विवाहादि के अवसर पर दफ़े पहनने का मौक़ा मिलता है। ये नए-नए और बढ़िया-बढ़िया पोशाकें, जिनके लिए समाज का करोड़ों रुपया सालाना विलायत जाता है, आलमारी और बक्सों में सड़ा या उनको दीमक खा जाते हैं, या गल तब या तो वह ब्राह्मणियों को धर्मार्थ दिए या विवाहादि अवसरों पर नाइन, मेहतरानी को बख़शीश के तौर पर दे दिए जाते हैं। जानती कि इस विषय में मारवाड़ी-समाज सोता रहेगा। जिस देश के किसानों और को पेट भर खाने को न मिलता हो, उस किसी एक विशेष समाज का इस तरह दुरुपयोग करना, अपने देश, जाति और पतन के गहरे गर्त में पहुँचाना है।

जिस मारवाड़ी-समाज पर इस समय की दया से लक्ष्मी महारानी की पूर्ण कृपा है, समाज को उचित है कि अपने इस धन का पयोग करके अपने देश, जाति और सहायता करे, उसे ऊँचा उठाने की चेष्टा कि इसके विरुद्ध, देश की जड़ पर कुठार कर, उसे पतन के गहरे गढ़े में ढकेलते हुए शियों को मदद दे !*

—कमलादेवी भा

* * *

* यह कार्य पुरुषों की अपेक्षा स्त्रियाँ स्वयं बहुत आसानी से कर सकती हैं, यदि वे इस ओर ध्यान देने की कृपा करें।

—सं० 'चाँद'

* इस विचारपूर्ण लेख के लिए इसकी सुयोग्य बधाई की पात्र हैं। हमें आशा है, हमारी मारवाड़ी पर ठण्डे दिल से विचार करेंगी।

—सं०

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

LIBRARY
Jangamawadi Math, Varanasi
Acc. No. 3079

मद्रास में मारवाड़ी

मद्रास-प्रान्त राजपूताना (मारवाड़) से सैकड़ों मील दूर होते हुए भी मारवाड़ियों से शून्य नहीं है। मद्रास शहर में तो मारवाड़ियों की घनी आबादी है ही, लेकिन इस प्रान्त के मुख्य-मुख्य शहर और क़स्बों में भी प्रायः पाए जाते हैं।

मद्रास शहर में मारवाड़ी इतनी अधिक संख्या में होते हुए भी परस्पर एकता से रहित हैं। इन लोगों का मद्रासियों से भी प्रेम नहीं है। मद्रासियों और मारवाड़ियों में एक तरह की खींचतान सी रहती है। यहाँ के निवासी मारवाड़ियों को घृणा की दृष्टि से देखते हैं। इसका प्रधान कारण यह है कि अधिकांश मारवाड़ी यहाँ पर सूद का व्यापार करते हैं। यह ग़रीब मद्रासियों की वस्तुओं को गिरवी रख कर रुपया उधार देते हैं। साधारण दृष्टि से प्रतीत होता है कि मारवाड़ी अपने मद्रासी भाइयों की इस प्रकार बड़ी सहायता करते हैं। परन्तु वस्तुतः सच्चाई कुछ और ही है। यह उनकी सहायता नहीं, बल्कि दुर्दशा करना है। सौ रुपए की वस्तु गिरवी रख कर ३०) या ४०) रुपए उधार दिए जाते हैं, और सूद इसमें से पहले ही निकाल लिया जाता है। सूद की दर एक आना से दो आना रुपया तो साधारण-सी बात है। इस पर भी सूद दर सूद चढ़ता ही चला जाता है। परिणाम यह होता है कि मूल-ऋण चुकाना दूर रहा, सूद चुकाना ही बेचारों के लिए दुश्वार हो जाता है। इसके फल-स्वरूप वह बेचारा गिरवी रखी हुई वस्तु से हाथ धो बैठता है। सैकड़ों मद्रासी इसी तरह मारवाड़ियों के पञ्जे में फँस, दुर्दशा को प्राप्त होते हैं। इसीलिए मद्रासी यहाँ के मारवाड़ियों को, चाहे वह सूद का व्यापार करते हों या न करते हों "रूपा की रण्ड आना वड्डी" अर्थात्—रुपया पर दो आना ब्याज लेने वाले के नाम से पुकारते हैं। कभी-कभी सभी उत्तर भारतवासियों को मारवाड़ी समझ, घृणा की दृष्टि से देखा जाता है। मारवाड़ियों को इसी कारण यहाँ पर यहूदी और शाइलॉक भी कहा जाता है।

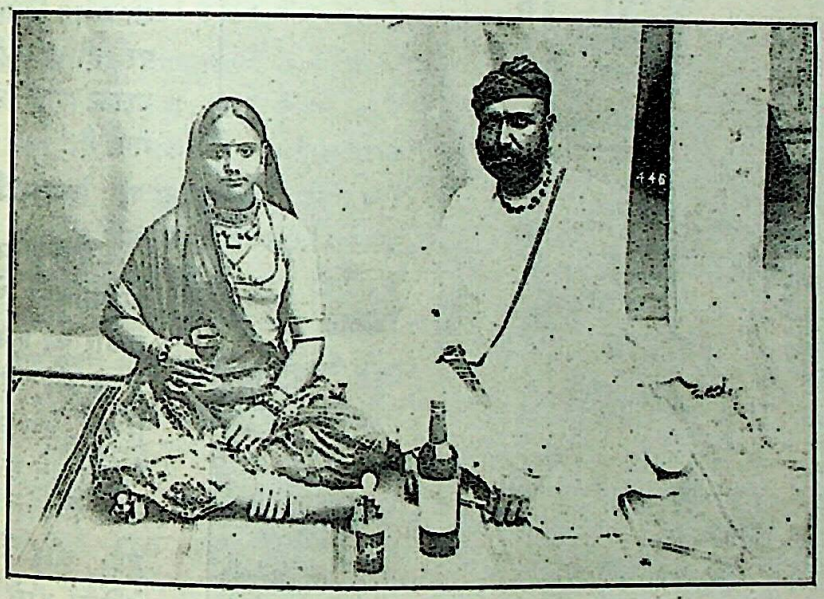

"शीन-काफ़" तथा प्रेमिका-सहित एक मारवाड़ी जागीरदार
[मारवाड़ के जागीरदारों में ऐसी उप-पत्नियाँ रखना किसी प्रकार का सामाजिक ऐब नहीं समझा जाता।]

इधर के मारवाड़ियों में अधिकांश जैन-मतावलम्बी हैं, जिनका आदर्श 'अहिंसा परमोधर्मः' है। वे शायद यह समझते हैं कि रात्रि में भोजन न करने से, कन्द-मूल न खाने से, खटमल और मच्छरों के न मारने से ही उनके धर्म का पालन हो जाता है। शायद उनकी समझ में ग़रीबों का ख़ून चूसने और उनकी गाढ़ी कमाई को मुफ़्त में लूट लेने में कुछ भी हिंसा नहीं है। भला इस प्रकार यहाँ के मारवाड़ी और मद्रासियों में कैसे भ्रातृ-भाव पैदा हो सकता है?

शिक्षा

मद्रास के मारवाड़ियों की शिक्षा भी बहुत शोचनीय दशा में है। यदि उनके बालक मारवाड़ी-भाषा में बही-खाता लिखना और अङ्गरेज़ी में चिट्ठियों पर पता लिखना

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

सीख लें तो यही उनके लिए आवश्यकता से अधिक है। मद्रास नगर में धनी मारवाड़ियों की अच्छी संख्या होते हुए भी, उनका अपना एक भी हाईस्कूल नहीं है। दो जैन-प्रायमरी स्कूल हैं, जहाँ शिक्षा नहीं के बराबर है। एक सनातनधर्मी स्कूल है, जिसमें लगभग मिडिल तक

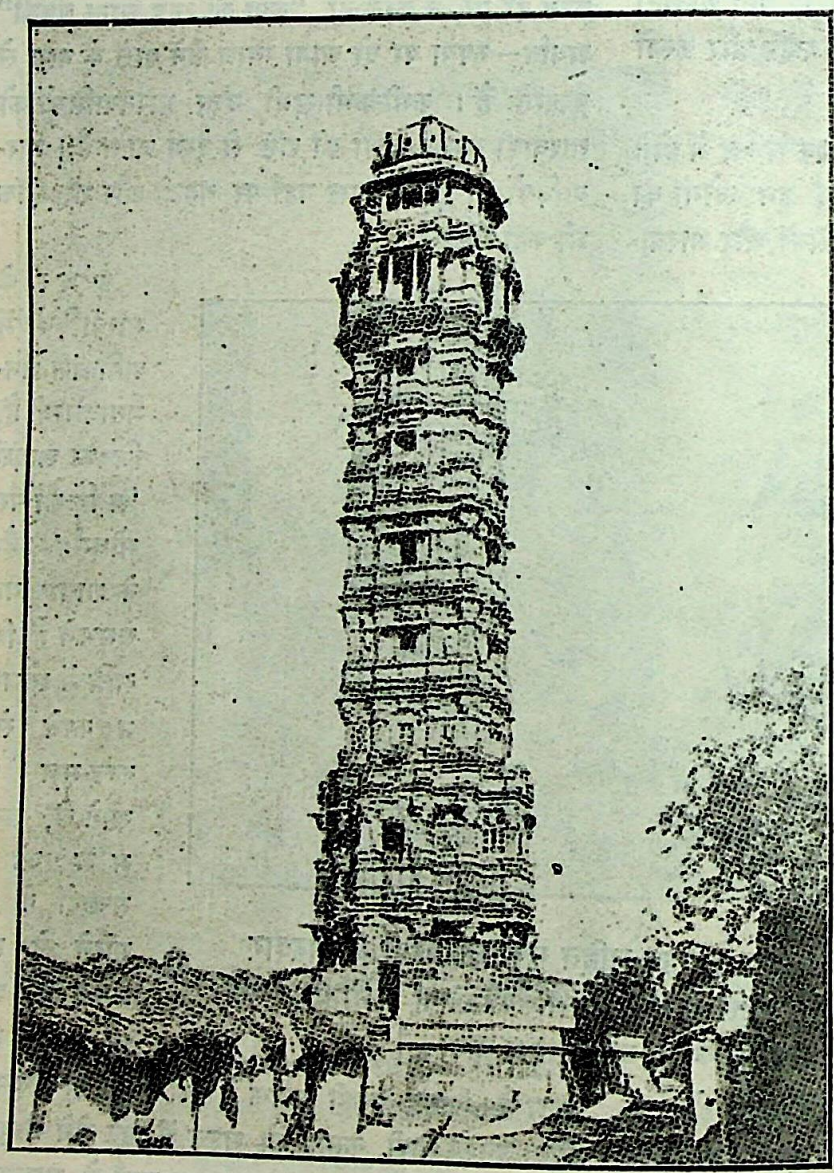

चित्तौड़ का कीर्ति-स्तम्भ

शिक्षा दी जाती है। लेकिन मारवाड़ी-समाज की उदासीनता के कारण यह भी गिरती-पड़ती हालत में है। जो विद्यार्थी हाईस्कूल अथवा कॉलेज की शिक्षा प्राप्त करना चाहते हैं, उन्हें अनेक कष्टों का सामना करना पड़ता है। बिना मद्रासी-भाषाओं के पढ़े, वे अपनी इच्छा पूर्ण नहीं कर सकते। यह कठिनता न केवल मारवाड़ी अपितु सभी उत्तर भारतीय छात्रों के लिए है। कारण है कि कठिनता से २-४ उत्तर भारतीय या मारवाड़ी विद्यार्थी, कॉलेज तक पहुँच पाते हैं। उन्हें भाषा हिन्दी का ज्ञान इतना हीन होता है कि वे हिन्दी में बातचीत भी नहीं कर सकते, लिखना तो दूर रहा। यह भी बता देना अनुचित होगा कि किसी भी हाईस्कूल अथवा कॉलेज में हिन्दी का प्रबन्ध नहीं है! मद्रास-विश्वविद्यालय ने अपने कोर्स में हिन्दी को स्थान दिया है, पर वह कागज पर ही है—क्रियात्मक रूप में उसका कोई प्रबन्ध नहीं किया गया है!

सामाजिक दशा

पर्दा-शून्य प्रान्त में रह कर मारवाड़ियों ने अपनी इज्जत लकीर की फ़कीरी नहीं छोड़ी। उनके भद्दे और हास्यजनक रिवाज, वेश-भूषा, रहन-सहन के त्यों बने हुए हैं। मुँह पर घूघट निकाले एक आँख से हुई; और पैरों तथा हाथों बेड़ियाँ डाले मारवाड़ी-महिला को बाज़ार में से गुज़रते स्वच्छन्द और खुले मुँह घूमने मद्रासी महिलाएँ तथा पुरुष हँसते और मारवाड़ियों का करते हैं। इधर इतना उधर कपड़े इतने हैं—और उनको इस से पहना जाता है कि जिससे देखने वालों को लज्जा मालूम होती है। मोटर में बैठ कर, बाहर पर उसे चारों तरफ़ से बन्द कर दिया जाता है। उत्सुक आँखें पर्दे में से बिना झाँके फिर भी मारवाड़ी-स्त्रियाँ घर से बाहर निकल शुरू

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

करना तो पाप समझती हैं, पर इलियट-बीच पर, जहाँ अङ्गरेज़ स्त्री-पुरुष स्नान व जल-क्रीड़ा करते हैं, जाकर उन्हें देखने में लज्जा व शङ्का बिलकुल नहीं करतीं !

विवाह, पुत्रोत्पत्ति या किसी अन्य त्योहार के अवसर पर मारवाड़ी-स्त्रियों का समुदाय जब बाज़ार की सड़कों पर भद्दे गीत गाते हुए निकलता है, तो भारत-भारती की ये पंक्तियाँ याद आ जाती हैं :—

रखतीं यही गुण वे कि गन्दे गीत गाना जानतीं,
कुल-शील लज्जा उस समय कुछ भी नहीं वे मानतीं।
हँसते हुए हम भी अहो वे गीत सुनते सब कहीं,
रोदन करो हे भाइयो ! यह बात हँसने की नहीं !!

उस समय इस प्रान्त के निवासियों के दिलों में मारवाड़ी-महिलाओं के लिए क्या भाव उत्पन्न होते होंगे—यह पाठक स्वयं सोच सकते हैं। मद्रास-प्रान्त का जलवायु गरम है, यहाँ पर मुसलमानों की संख्या भी बहुत कम है। यहाँ के निवासियों में पर्दा बिलकुल नहीं है, लेकिन यहाँ के मारवाड़ी, जिन्हें यहाँ रहते हुए कई वर्ष हो गए हैं और अधिकांश को कई पीढ़ियाँ हो गई हैं, वे अभी तक पर्दा तथा अन्य कुरीतियाँ छोड़ नहीं पाए हैं ! क्या इससे मारवाड़ियों की तर्क-हीन स्थिति-पालकता सिद्ध नहीं होती ?

मद्रास-प्रान्त में 'होली' नाम का कोई त्योहार नहीं होता। परन्तु यहाँ के रहने वाले उत्तर भारतीय इस त्योहार को मनाते ही हैं। उस अवसर पर मारवाड़ी लोग विशेष रूप से, बच्चों से लेकर बूढ़ों तक, माँ, बहिन, बेटियों के सामने ऐसे गन्दे और फ़ोश गीत बकते हैं कि कोई भद्र पुरुष लज्जा से सिर नीचा किए बिना नहीं रह सकता। उस अवसर पर साहूकार-पेट (मद्रास का मुख्य मारवाड़ी-बाज़ार) नरकमय प्रतीत होता है ! अपने इन असभ्य व्यवहारों के कारण मारवाड़ी मद्रासियों की दृष्टि में और भी गिर जाते हैं। यहाँ के कुछ भद्र-पुरुषों ने इन लोगों का ध्यान इस ओर खींचा और गत दो वर्ष से विशेष रूप से प्रयत्न किया कि यहाँ ऐसी गन्दी होली बन्द हो जाय, पर ये लोग कब मानने वाले हैं ? उल्टा समझाने वालों को गालियों का शिकार होना पड़ता है।

यह लेख स्थानीय मारवाड़ी भाइयों का दिल दुखाने तथा आक्षेप करने के लिए नहीं लिखा गया है, अपितु उनका ध्यान इन निर्बलताओं और कुप्रथाओं की ओर इसलिए खींचा गया है, ताकि वे उन्हें दूर करें और अपने पड़ोसी मद्रासियों के हास्य की वस्तु न बनें। इस प्रान्त में आकर और बस कर उन्हें यहीं की परिस्थिति के अनुकूल रीति-रिवाजों को अपनाने का प्रयत्न करना

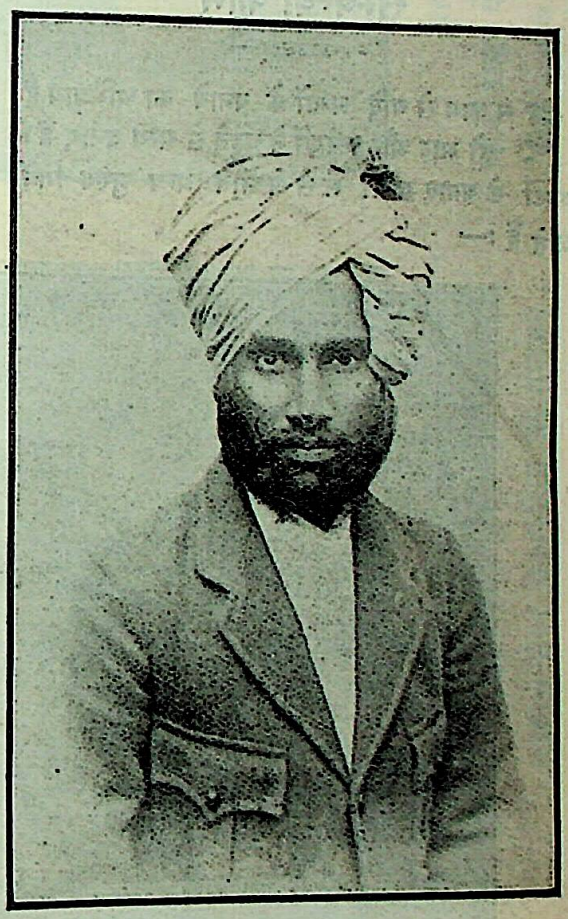

मरुभूमि राजस्थान की प्रजा में जाग्रति और बलिदान की भावना उत्पन्न करने वाले प्रभावशाली कार्यकर्ता
श्री० वी० एस० पथिक

चाहिए। उन्हें मद्रासियों के साथ ऐसा व्यवहार करना चाहिए कि जिससे वे उनके साथ घृणा न करें। मद्रास के उत्तर भारत से दूर होने के कारण यहाँ के हिन्दी-भाषा-भाषी और विशेषतः मारवाड़ी-समाज की कुरीतियों की ओर हिन्दी-समाचार-पत्रों में विशेष ध्यान नहीं दिया जाता। यदि हिन्दी-समाचार-पत्र तनिक इधर

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

की दशा को सुधारने की ओर भी ध्यान दें तो लाभ की सम्भावना है।*

—एक मारवाड़ी भाई

* * *

भाट और चारणों का हिन्दी-भाषा सम्बन्धी काम

इस काम से यदि ग्रन्थों के बनाने का अभिप्राय है तो भाट और चारणों ने बहुत से ग्रन्थ बनाए हैं। भाटों के बनाए ग्रन्थों में से ये तीन ग्रन्थ मुख्य गिने जाते हैं :—

(१) पृथ्वीराज रासा; (२) सूरसागर; (३) महाभारत, जो काशी में बना है।

इसके सिवाय और भी बहुत हिन्दी-ग्रन्थ भाटों ने बनाए—विजयपाल रासा, हमीर रासा, बगड़ावत रासा आदि हैं, जिनमें थोड़े तो प्रसिद्ध हैं और बहुत अप्रसिद्ध हैं। जो प्रसिद्ध हैं उनमें भी छपे बहुत थोड़े हैं। जो छपे हैं वे जगह-जगह बिखरे पड़े हैं, बहुत नष्ट भ्रष्ट हो गए हैं और बाक़ी हो रहे हैं। कोई उनका बचाने वाला नहीं है। हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन यदि कोई उपाय उनके बचाने का कर सकता है तो करे, जैसे काशी-नागरी प्रचारिणी सभा खोज और सूची का काम कर रही है।

भाटों के ग्रन्थों में अधिक शृङ्गार-रस के हैं और थोड़े वीर-रस के। चारण राजपूताने, और विशेष कर मारवाड़ में हैं, या गुजरात में। इनकी पुरानी कविता मारवाड़ी या गुजराती भाषा में है। मुसलमानी समय में खड़ी बोली की हिन्दी-कविता मुसलमानों के और सन्तों के प्रसङ्ग से, और फिर अकबर के राज्य में उससे कुछ पहले ग्वालियर और ब्रज की भाषा की कविता भी राजपूताने में आई, और औरङ्गज़ेब के समय हुए वल्लभ-सम्प्रदाय के गुसाइयों के आने और रहने

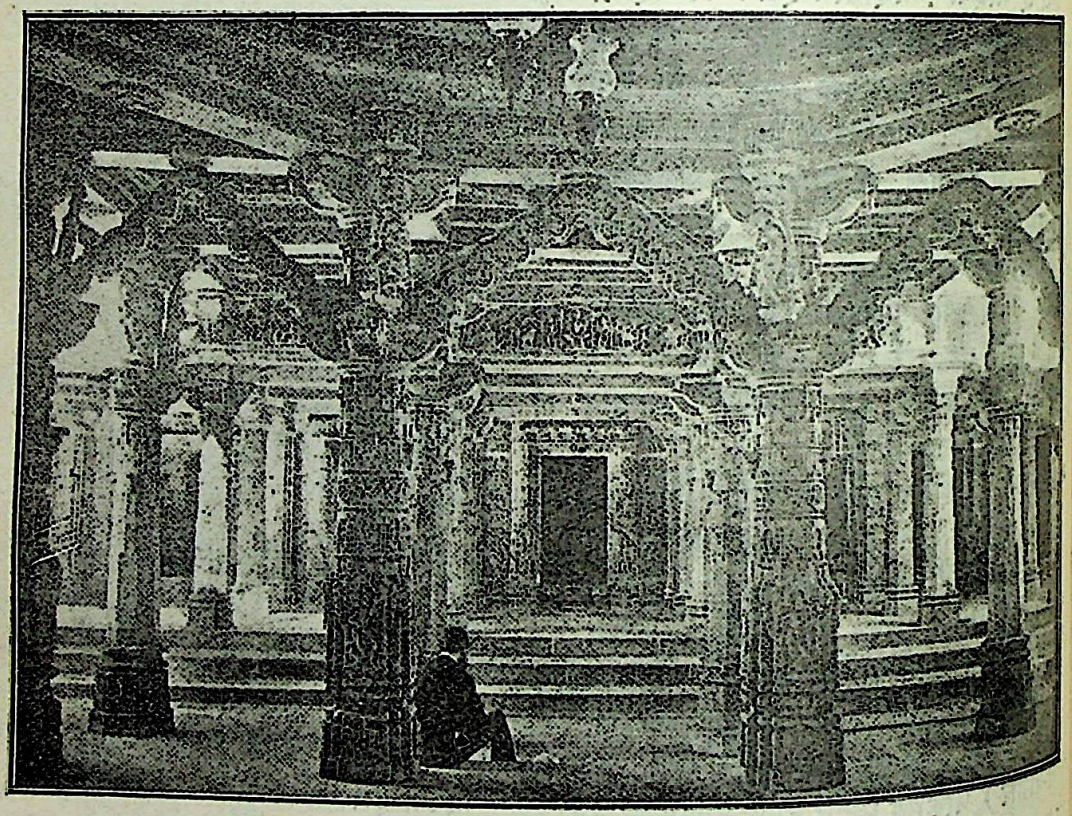

माऊण्ट आबू के सुप्रसिद्ध जैन-मन्दिर का बाहरी दृश्य

---

* पर यदि उन बेचारे पन्नों के भी बहिष्कार का फ़तवा दे दिया गया, तब क्या आप उनकी रक्षा करेंगे ?

—सं० 'चाँद'

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

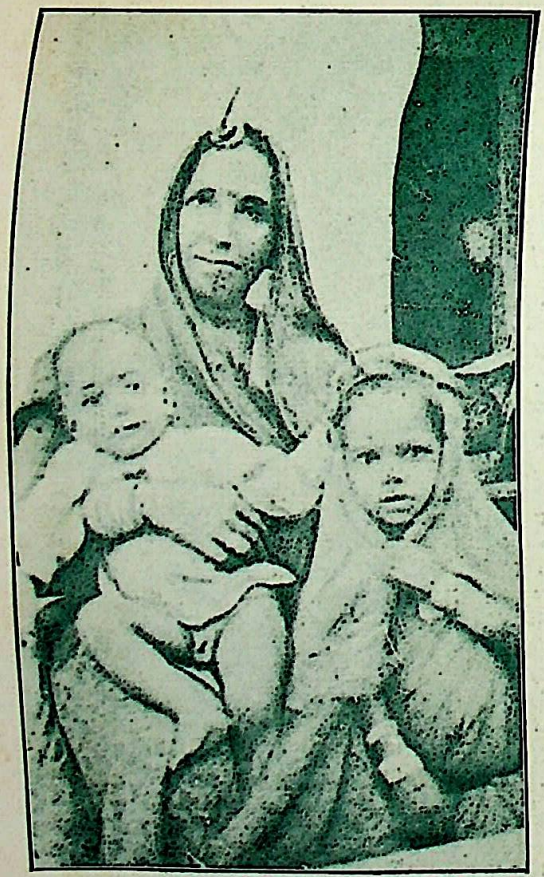

प्रताप-जैसे
देशभक्त पुत्र-रत्न की आदर्श-जननी
श्रीमती माणिकदेवी जी

देशभक्ति के अपराध में घुट-घुट कर मरने वाले
ठाकुर केशरीसिंह जी के पुत्र-रत्न
स्वर्गीय कुँवर प्रतापसिंह जी बारहठ

राजस्थान-केसरी
श्री० ठाकुर केशरीसिंह जी बारहठ
कोटा (राजपूताना)

ART PRINTING CO. ALLAHABAD

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

बाल-विज्ञानम्

इस महत्वपूर्ण पुस्तक के लेखक पाठकों के सुपरिचित, 'विष-विज्ञान' 'उपयोगी चिकित्सा' 'स्त्री-रोग-विज्ञानम्' आदि-आदि अनेक पुस्तकों के रचयिता, स्वर्ण-पदक प्राप्त प्रोफ़ेसर श्री० धर्मानन्द जी शास्त्री, आयुर्वेदाचार्य हैं, अतएव पुस्तक की उपयोगिता का अनुमान सहज ही में लगाया जा सकता है। आज भारतीय स्त्रियों में शिशु-पालन सम्बन्धी समुचित ज्ञान न होने के कारण सैकड़ों, हज़ारों और लाखों नहीं, किन्तु करोड़ों बच्चे प्रतिवर्ष अकाल-मृत्यु के कलेवर हो रहे हैं। धातृ-शिक्षा का पाठ न स्त्रियों को घर में पढ़ाया जाता है और न आजकल के ग़ुलाम उत्पन्न करने वाले स्कूल और कॉलेजों में। इसी अभाव को दृष्टि में रख कर प्रस्तुत पुस्तक लिखी और प्रकाशित की गई है। इसमें बालक-बालिका सम्बन्धी प्रत्येक रोग, उसका उपचार तथा ऐसी सहज घरेलू चिकित्सा तथा घरेलू दवाइयाँ बतलाई गई हैं, जिन्हें एक बार पढ़ लेने से प्रत्येक माता को उसके समस्त कर्तव्यों का ज्ञान सहज ही में हो सकता है और बिना डॉक्टर-वैद्यों की जेबें भरे वे शिशु-सम्बन्धी प्रत्येक रोग को समझ कर उसका उपचार कर सकती हैं। प्रत्येक सद्गृहस्थ के घर में इस पुस्तक की एक प्रति अवश्य होनी चाहिए। भावी माताओं के लिए तो प्रस्तुत पुस्तक आकाश-कुसुम ही समझना चाहिए। सजिल्द पुस्तक का मूल्य केवल २॥) रु० ; स्थायी ग्राहकों से १॥।=) मात्र !!

व्यवस्थापिका 'चाँद' कार्यालय, इलाहाबाद

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

उसकी उन्नति हुई। इससे चारण भी इन भाषाओं की कविता करने लगे। उन्होंने अपनी और परदेशी भाषाओं में भेद रहने से दोनों प्रकार की कविताओं का नाम डिङ्गल और पिङ्गल रख दिया है।

मारवाड़ी-भाषा में 'गल्ल' का अर्थ बात या बोली है। 'डीगा' लम्बे और ऊँचे को और 'पाँगला' पङ्गे और लूले को कहते हैं। चारण अपनी मारवाड़ी-कविता को बहुत ऊँचे स्वरों में पढ़ते हैं और ब्रजभाषा की कविता धीरे-धीरे मन्द स्वरों में पढ़ी जाती है। इसी लिए डिङ्गल और पिङ्गल संज्ञा हो गई—जिसको दूसरे शब्दों में ऊँची बोली और नीची बोली की कविता कह सकते हैं।

चारणों ने हिन्दी में भी बहुत ग्रन्थ बनाए हैं, पर उनकी दशा भी भाटों के ग्रन्थों से अच्छी नहीं है। इनमें वीर-रस के ग्रन्थ अधिक और शृङ्गार-रस के कम हैं! वीर-रस का सम्बन्ध प्रायः इतिहास से होता है, इसलिए इन ग्रन्थों में और चारणों के अन्य गीत-कविता * में इतिहास की सामग्री बहुत ज़्यादा है। यदि ये संग्रह किए जायँ तो हिन्दुस्तान के इतिहास की अँधेरी कोठरी में कुछ उजाला हो जाय। मैं भाट और चारणों के बहुत से ग्रन्थों के नाम उस सूची में दे चुका हूँ, जो हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन के वास्ते तैयार की गई थी और उसकी रिपोर्ट में छप भी चुकी है। चारणों के बनाए भी बहुत बड़े ग्रन्थ गिनती के ही हैं और उनमें मुख्य ये हैं :—

(१) अवतार-चरित्र; (२) वंशभास्कर; (३) वीर-विनोद; (४) यशवन्त यशोभूषण।

ये और इन जैसे सैकड़ों छोटे-मोटे ग्रन्थ चारणों के रचे कविता और वारता में हैं। ये लोग पद्य को कविता और गद्य को वारता कहते हैं। वारता-ग्रन्थ बचनका, बात और ख्यात कहलाते हैं। 'बचनका' और 'ख्यात' इतिहास के, और 'बात' क़िस्से-कहानी के ग्रन्थ हैं। इनमें गद्य-पद्य दोनों प्रकार की कविताएँ हैं। बचनका और ख्यात में बनावट का भेद होता है। बचनका में तुकबन्दी होती है, ख्यात में नहीं होती, और उसकी इबारत सीधी-सादी होती है।

'बात' के ग्रन्थों में ढोलामारूणी, पन्नावीर मदे, रतनाहमीर, सोरठबीजा, खीची अचलदास जैसी कहानियाँ हैं, और कुछ राजाओं और वीर पुरुषों के जीवन-चरित्र भी बिना संवत् और मिती के हैं।

सुप्रसिद्ध इतिहास-प्रेमी मुहणोत नैणसी
[जिनकी ख्यात मारवाड़ भर में प्रसिद्ध है]

बचनका ग्रन्थ बहुधा एक-एक चरित्रनायक की जीवनी के होते हैं, जैसे खीची अचलदास की बचनका, और रतन महेसदासोत की बचनका, वग़ैरा।

ख्यात में राजाओं की वंशावलियाँ और उनकी जीवनियाँ संवत् और मिती सहित होती हैं। ख्यातें मारवाड़ में ज़्यादा मिलती हैं। चारणों के सिवाय और लोगों ने भी ख्यातें बनाई हैं, परन्तु उनमें बनाने वालों के नाम

* गीत वह नहीं है, जिसकी बाबत पद्माकर ने एक कवित्त में कहा है—"गीत तो हमारी तन गावत लुगाई हैं।" ये गीत एक प्रकार के छन्द हैं।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

बहुत कम हैं और वे पीढ़ी दर पीढ़ी बनती रही हैं। ऐसी ख्यातें चारणों के सिवाय राज्य के मुत्सद्दियों (राज्य-कर्मचारियों) और जैन-जातियों में ज़्यादा मिलती हैं। मुत्सद्दियों की ख्यातों में मुहणौत-नैणसी की ख्यात ज़्यादा मशहूर है और काम की है, जो अब से २५० वर्ष पहले, संवत् १७२५ के आस-पास बनी थी।

चारण और भाटों के सिवाय डाढी जाति का भी हिन्दी से पुराना सम्बन्ध है। उनकी कविता चारणों से भी पुरानी गिनी जाती है। चारणों के ग्रन्थों से पुराने ग्रन्थ डाढियों के कहे जाते हैं। उनमें से एक 'वीरमायण' है, जिसमें राव वीरमजी राठौड़ का हाल है, जो संवत् १४४० में काम आए थे। फुटकर कविताएँ भी बहुत मिलती हैं, जैसे राव सीहाजी, मलीनाथ जी और रानी रुपाँदे जी आदि के छन्द। परन्तु डाढियों का दर्जा नीचा होने से उनको चारण-भाटों के समान राजाओं के दरबारों* में जगह नहीं मिलती, इससे उनकी हिन्दी-कविता उतनी मशहूर नहीं हुई है।

एक डाढी ने जोधपुर के बड़े महाराजा जसवन्तसिंह की ख्यात (इतिहास) का एक बड़ा ग्रन्थ पिङ्गल और डिङ्गल भाषा में 'जसवन्त-जस-प्रकाश' नाम का बनाया था। वह मैंने तो नहीं देखा है, मगर सुना है कि एक जाट महाराजा के साथ बहुत रहा करता था, उसीसे सब हाल सुन-सुन कर उस राजभक्त डाढी ने वह ग्रन्थ बनाया है।

—(मुंशी) देवीप्रसाद (स्वर्गीय)

* * *

* ऊदावत राठौड़ों में डोम या ढोलियों का चलन ज़्यादा था। यहाँ तक सुना है कि वे वहाँ चारणों के बराबर इज़्ज़त पाते थे, जैसा कि मशहूर है :—

चापा पालन चारणाँ ऊदा पालण डोम।

अर्थात्—चाँपावत राठौड़ तो चारणों को पालते हैं और ऊदावत डोमों को। डोम, डाढी और ढोली एक ही जाति के लोग हैं। वे अपनी उत्पत्ति देवताओं के गवैयों—गन्धर्वों से बताते हैं।

वीर-भूमि राजस्थान

भारतीय इतिहास के मननशील पाठकों के लिए राजस्थान का नाम कुछ नवीन नहीं है। इस वीर-प्रसविनी भूमि का दर्शन यात्री के मन-मन्दिर में धर्म एवं स्वाधीनता के निमित्त किए गए अनुपमेय आत्म-त्सर्गों की पावन-स्मृति को पुनर्जीवित कर देता है।

स्वतन्त्रता देवी के उपासकों द्वारा पवित्रीकृत इस प्रदेश में प्रथम प्रजारञ्जक सुराज्य का बीजारोपण हुआ था। यह पावन आर्यावर्त का वह भाग है, जहाँ की पुरुष, युवक तथा वृद्ध, धर्म—वास्तविक क्षात्र-धर्म—की रक्षा के लिए, स्वदेश की स्वाधीनता को अटल बनाए रखने के लिए, अपने प्राणों की आहुति देने में कभी भी नहीं हिचकिचाते थे। यह वह प्रान्त है, जहाँ की स्त्रियों ने अपने कुल-धर्म को अक्षुण्ण बनाए रखने में, अपने आत्म-सम्मान की रक्षा में पुरुष-वर्ग को भी पराजित कर दिया था; जिन्होंने अपने प्रियतम जीवन-धन को, अपनी आँखों के लाल को, अपने स्नेहशील भ्राता एवं पिता तक को क्षात्र-कर्तव्य के कण्टकाकीर्ण पथ में अग्रसर होने को उत्साहित किया था; जिन्होंने अपने कुल एवं देश की मर्यादा के लिए अपने प्रिय सम्बन्धियों को प्रत्यक्ष अग्नि-समराग्नि-कुण्ड में होम दिया था; जहाँ की स्त्रियों ने शत्रुओं के हाथ में पड़ कर अपमानित होने की अपेक्षा प्रचण्ड ज्वालामय अग्निदेव की गोद में बैठ कर मृत्यु का आलिङ्गन करना श्रेयस्कर समझा था। यह वह प्रान्त है, जहाँ युद्धक्षेत्र से विमुख व्यक्ति के लिए देश के किसी कोने में भी आश्रय-स्थल नहीं था! यदि हम विश्व के अन्य देशों के इतिहासों का अध्ययन करें, तो कदाचित् ही किसी देश के इतिहास में राजस्थान के क्षात्र-धर्म की महत्ता एवं वहाँ के असंख्य बलिदानों के तुलनात्मक दृष्टान्त का अवलोकन करने में सफल हों। भारत के मुस्लिम शासकों में अकबर ही प्रथम व्यक्ति था, जिसने राजपूतों के शौर्य एवं पराक्रम का अनुभव किया था। उसने यह अच्छी तरह समझ लिया था कि राजपूतों से युद्ध करना अपने सर्वनाश को निमन्त्रण देना है; किन्तु यदि उन्हीं राजपूतों को मित्रता-सूत्र में बद्ध कर लिया जाय तो वे भारतीय साम्राज्य के सुदृढ़ स्तम्भ-स्वरूप

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

जायँगे। अतएव अकबर तथा उसके वंशजों ने इसी नीति का अवलम्बन करके राजपूतों को साम्राज्य का प्रबल पोषक बना लिया था। उन्होंने साम्राज्य के अत्युच्च सैनिक एवं नागरिक पदों से राजपूतों को विभूषित किया था। यही नहीं, वे राजपूत-बालाओं के साथ पवित्र दाम्पत्य जीवन में आबद्ध होना अपना परम सौभाग्य समझते थे। अकबर के पश्चात् जितने मुग़ल-शासक हुए, उनकी नसों में राजपूत-रक्त का सम्मिश्रण था! उन्होंने धार्मिक उदारता की भित्ति पर ही राजपूतों का

वीर एवं पराक्रमी सैनिक, उदार एवं करुणाशील शत्रु—यही राजपूत की वास्तविक परिभाषा थी। उसे अपने शत्रु का सम्मान करने में अभिमान था। वह सहर्ष एक वीर योद्धा की भाँति सम्मुख-युद्ध में स्वदेश-गौरव के लिए प्राण विसर्जन करता था। उसका शौर्य ही उसका सर्वस्व था। उसको गीता के ईश्वरीय वाक्यों "स्वधर्मे निधनं श्रेयः परधर्मो भयावह" पर पूर्ण विश्वास था। अपङ्ग तथा जराजीर्ण शत्रु से युद्ध करना, अवरुद्ध शत्रुओं के अन्नाभाव या रक्षाभाव से अनुचित

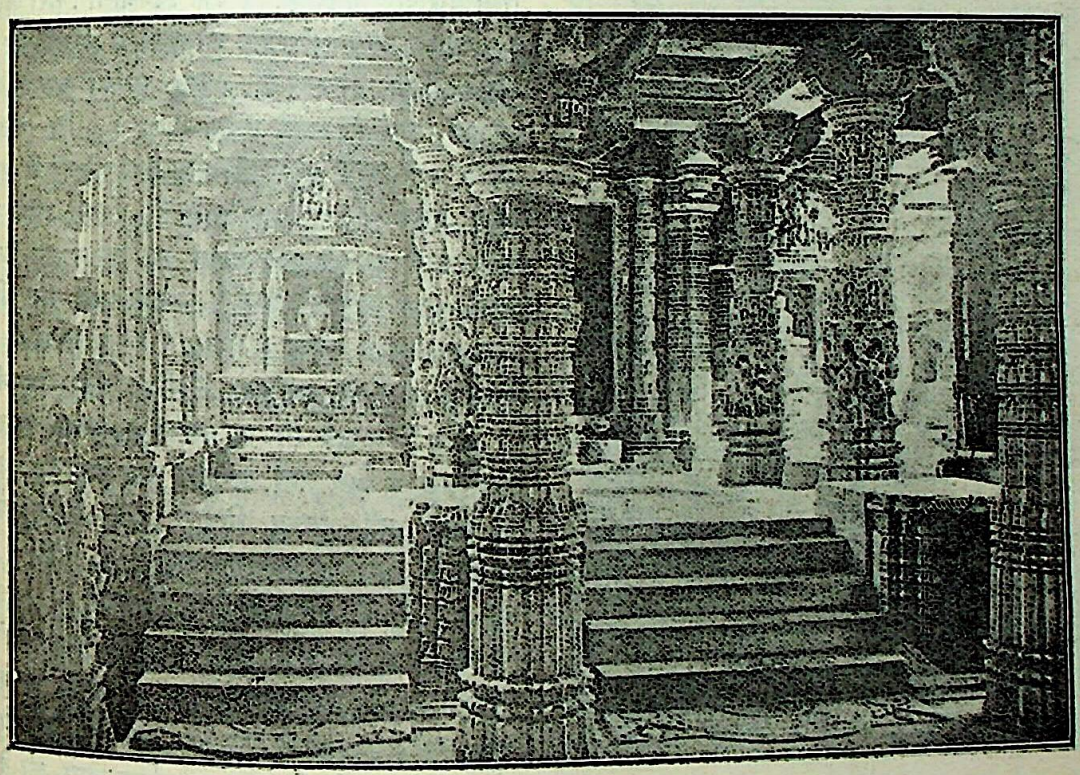

माऊण्ट आबू के जैन-मन्दिर का भीतरी दृश्य

साहाय्य प्राप्त किया था। किन्तु इस प्रतापी मुग़ल-वंश के अन्तिम सम्राट् ने जिस दिन से अपने पूर्वजों द्वारा संस्थापित राजपूत-वशीकरणकारी प्रेम-नीति को त्याग कर, कट्टर धर्मान्धता एवं दुरन्त दमन-नीति का अवलम्बन किया, उस दिन से उसने अपने तथा स्ववंश के सत्यानाश का बीजारोपण किया। मित्रता एवं सद्भाव से जो अकबर एवं उसके वंशजों ने प्राप्त किया था, औरङ्गज़ेब उसे धर्मान्धता एवं जातीयता के अति सङ्कीर्ण भावों से खो दिया। अस्तु—

लाभ उठाना, राजपूत-धर्म के प्रतिकूल था। वह एक दुर्धर्ष स्पार्टन सैनिक के समान वीर था, परन्तु कूट नहीं। उसका युद्ध धर्म-युद्ध था। किसी देश को दासत्व की श्रृङ्खला में जकड़ने के लिए उसका शौर्य नहीं था। वह उदार था, अनुदार नहीं। उस काल के राजपूत-योद्धा में तथा वर्त्तमान समय के शिक्षित सैनिक में आकाश-पाताल का अन्तर है। यदि राजपूत की पूर्णता में कुछ भी अपूर्णता थी, तो वह थी राजनीति की। वास्तव में राजनीतिक क्षेत्र में राजपूत-कला का प्रदर्शन नहीं के

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

बराबर था। सांसारिक सफलता की कुञ्जी राजनीति के कुटिल प्रपञ्चों से रहित राजपूत इस छलमयी दुनिया के जालों को नहीं समझ सका—इसी अज्ञानता के कारण राजपूत को भयानक दण्ड भोगना पड़ा।

इन सब विषयों को सोच कर एक इतिहास-प्रेमी के दिल से स्वभावतः एक दर्द-भरी आह निकल जाती है—"हाय! यदि राजपूत राजनीति में पारङ्गत होता तो आज भारत का इतिहास कुछ और ही होता।"

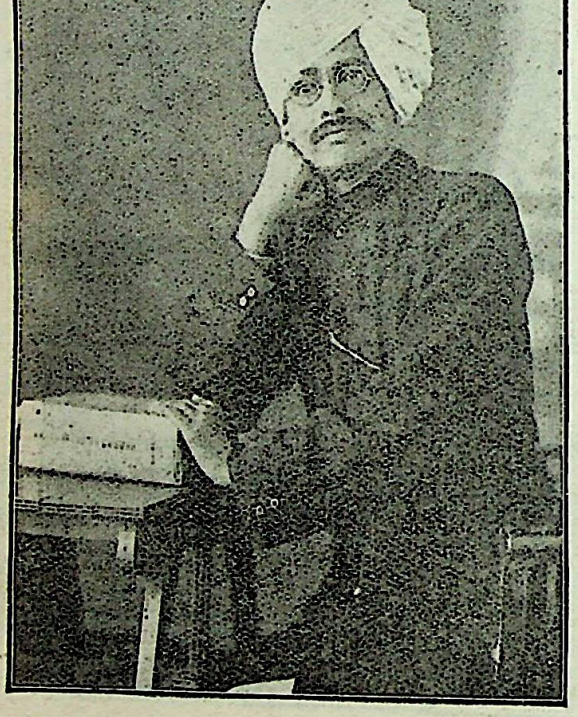

राजस्थान के प्रसिद्ध लेखक और 'किसान' मासिक पत्र के सम्पादक

श्री० सुखसम्पति राय जी भण्डारी

कौन आज चित्तौड़ और जोधपुर, मेवाड़ और उदयपुर के शुभ्र प्रासादों को देख कर स्थिर रह सकेगा? जिस राजस्थान की भूमि का प्रत्येक रज-कण वीर राजपूत-पुरुष एवं स्त्रियों के रक्त से मिश्रित होकर देश-प्रेम के पुजारियों के मस्तक की शोभा वर्द्धित करने वाला है; जहाँ की पद्मिनी, जौहराबाई तथा कर्णवती के अनुपमेय शौर्य-प्रकाशक कृत्य प्रेमी-हृदय में अमर रहेंगे; जहाँ के साँगा, भीमसिंह, प्रताप, अजीतसिंह, राजसिंह, जय-सिंह और दुर्गादास आदि असंख्य वीरों की चरित्र देश-प्रेम के अनन्य उपासकों के मन-मन्दिर में देश-प्रेम शुभ्र-प्रदीपों को प्रोद्भासित करती रहेगी; जिस राज्य का प्रत्येक भाग उन अलौकिक वीरों के अमर-कृत्य प्रतिध्वनित हो रहा है—उसी पुण्य-स्थल राजस्थान पुरुष और नारियाँ अब कहाँ हैं? इस संसार के क्षेत्र से दूर, अत्यन्त दूर, किसी पुण्यमय प्रदेश में! नर-सिंहों की सन्तान की आज यह अवनति, अपमान तथा घोर लज्जामयी दशा! उफ़! विधाता! तेरी लीला

यद्यपि उनके वंशजों की नसों में उन्हीं का रक्त प्रवाहित हो रहा है, परन्तु उनका वह शौर्य पराक्रम कहाँ? उनके वंशज वासना तथा विलास भोगी बन गए हैं। यद्यपि उनकी धमनियों में बप्पा एवं प्रताप का रक्त बाक़ी है, किन्तु उनके अब अपने देश के लुप्त-गौरव का पुनरुद्धार करने शक्ति तथा उत्साह कहाँ? उनके पास अब भी तथा तलवार है, परन्तु है केवल बाह्य आडम्बर के लिए वे राज्य करते हैं, पर प्रजा के लिए नहीं—अपनी के लिए! वे अब भी शूरवीरता का बाना पहनते युद्ध-स्थल के लिए नहीं, अन्याय तथा अनाचार को के लिए नहीं—परन्तु निर्बलों तथा निस्सहायों सताने के लिए, प्रजा के रक्त-शोषण के लिए!! वे भी रणक्षेत्र में अवतीर्ण होते हैं—धर्म के लिए स्वदेश-गौरव के लिए नहीं—केवल झूठी प्रशंसा लिए!!! हा! यदि आज इस अवनता, अपमान भारत-भूमि पर राणा प्रताप तथा राजसिंह जैसे वीर तो क्या वे जननी की इस अधःपतित दशा को देख शान्त रहते? नहीं, कदापि नहीं! वे जननी के दूर करने में, जननी को उन्नति-शिखर पर बैठाने के अपना तन, मन तथा धन विसर्जन कर देते!

जननी! राजस्थली! अपने इन गिरे हुए, मोह में सोए हुए, नर-सिंहों के कर्ण-कुहरों में वीरता का फूँक दे। उनके हृदय-भवन में स्वदेश-प्रेम की भव्य को भर दे। तथा ऐसे वीर—क्षात्र वीर—रत्नों को जो स्वदेश के लुप्त-गौरव का पुनरुद्धार करने में सफल

—द्वारकाप्रसाद लाखोटि

* * *

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

मारवाड़ी-जाति और व्यापार

आज से क़रीब २००-३०० वर्ष पहले की बात है, जब मारवाड़ी-जाति ने व्यापार में अग्रसर होना आरम्भ किया। उस समय मुसलमानों का राज्य समाप्त होकर अंग्रेज़-कम्पनी का राज्य स्थापित हो रहा था और देश में एक घोर क्रान्ति-सी हो रही थी।

मरु-भूमि जैसे प्रदेश में रहने के कारण उस समय यह जाति धनी नहीं थी, तथापि राजपूती आत्म-गौरव, साहस, सुदृढ़ और सुसङ्गठित शरीर का अभाव भी नहीं था। स्वभाव से यह जाति मिहनती, व्यापार-बुद्धि वाली, मितव्ययी, जोखिम उठाने वाली, कष्ट सहन करने वाली और बड़ी हिसाबी-किताबी थी और रही है। इन्हीं सद्गुणों के कारण यह अपना व्यापार देश के प्रत्येक कोने में सब तरह की अपत्तियाँ और कष्ट सहन करके, स्थापित कर सकी। इसकी ख़ास कमज़ोरियाँ रूढ़ियों का पोषक होना, अन्ध-विश्वास, व समय के साथ नहीं बदलना, इत्यादि हैं, जिनका हानिकारक परिणाम इसे आगे चल कर भोगना पड़ा। अस्तु—

राजपूताने से उठ कर पहले तो इसने अपने आस-पास के स्थानों में ही नित्य की आवश्यक वस्तुओं का कारबार आरम्भ किया और जैसे-जैसे साधन, सम्पत्ति और अनुभव बढ़ता गया, उसी मात्रा में कारबार का क्षेत्र भी बढ़ता गया। उन कारबारों में से मुख्य ये थे—अनाज, घी, कपड़ा, सोना, चाँदी आदि को पैदा-इश की जगह से ख़रीद कर, जहाँ आवश्यक हो वहाँ पहुँचा देना या बेचना। अनेक सिक्कों का चलन होने के कारण आस-पास के सिक्कों को बट्टे से ख़रीद कर बदले में चालू सिक्के देना। रुपया व्याज पर उधार देना व जमा करना। रुपया देश के दूसरे भागों में भेजने व मँगाने के सुभीते के लिए हुण्डी लेना और बेचना। राज्य की तहसील-वसूल करके ख़ज़ाने में भरना और दुर्भिक्ष, युद्ध व अन्य आवश्यक समय पर राज्य को रुपया उधार देना, इत्यादि।

इस प्रकार का कारबार बहुत दिनों तक चलता रहा। मगर इस बीच में समय बदल रहा था और विदेशी लोग अपना दख़ल भारतीय व्यापार पर जमा रहे थे। जो उस समय तक का एकदेशीय व्यापार था, वह अन्तर्देशीय व्यापार बनने लगा और इस कारण बन्दरगाह व्यापार के केन्द्र बनने लगे। इस परिवर्तन का लाभ मारवाड़ियों ने उठाया और अपना डेरा बम्बई, कलकत्ता, रङ्गून आदि स्थानों में जमा दिया। यहाँ पर ये लोग विदेशी व्यापारी लोगों के मुत्सद्दी, दलाल व एजेण्ट बन गए और व्यापार में इनका मुख्य हाथ हो गया। विदेशी व्यापारी भी यहाँ की रीति-रिवाज और भाषा आदि से पूर्ण परिचित नहीं थे, अतएव उन्हें भी एक ऐसी जाति की आवश्यकता थी, जो उनका माल यहाँ के बाज़ारों में बेच दे व यहाँ की पैदावार उन्हें ख़रीद कर दे। इसलिए इन जातियों ने भी मारवाड़ियों के साथ पूर्ण सहयोग दिखलाया, जिसके कारण दोनों का व्यापार ख़ूब चला।

इन कामों के अलावा रूई के जीन-प्रेस, जूट के प्रेस, तेल की मिलें, आटे की चक्कियाँ आदि छोटे-मोटे उद्योग-धन्धों में भी मारवाड़ियों ने हाथ लगाया, मगर समय के अनुसार आवश्यक विद्या का अभाव, विदेश-यात्रा को धर्म-विरुद्ध समझना, छुआछूत व जाति के झगड़ों को अत्यधिक महत्व दे देना आदि कारणों से इन कामों की उन्नति में एक प्रकार की रुकावट-सी आगई।

इधर अङ्गरेज़-सरकार का राज्य पूर्ण रूप से क़ायम हो गया, कलदार या चेहरेशाही सिक्का सारे भारत में चलने लगा, इसलिए जो सिक्कों की बदलाई में गुञ्जाइश थी वह निकल गई। बड़े-बड़े शहरों में बैङ्कें क़ायम हो गईं, इसलिए हुण्डावण का कस या व्याज-बट्टे का रोज़गार था, वह भी शिथिल पड़ गया। साथ ही साथ जो रक़म साहूकारों के पास जमा रहती थी, वह बैङ्कों में जमा रहने लगी। बैङ्कों का मुख्य काम विदेशी व्यापार की आर्थिक सहायता करना है, इसलिए यहाँ के कारबार के लिए बाज़ार में रक़म की प्रचुरता कम हो गई, जिसके परिणाम-स्वरूप यहाँ के वाणिज्य-व्यवसाय को बड़ा धक्का लगा।

इस तरह कारबार में परिवर्तन हो ही रहा था कि एक दैवी घटना घटी और यूरोप में महा-युद्ध आरम्भ हुआ। खाद्य-पदार्थ, वस्त्र, शस्त्र, युद्ध-सामग्री व धन, जन की माँग बढ़ी, जिससे सब चीज़ों की दर बढ़ गई, साथ ही व्यापारियों के माल की क़ीमत भी आप से आप दूनी-चौगुनी हो गई व बढ़ती हुई माँग के कारण चहल-पहल भी बढ़ गई। इस प्रकार कम परिश्रम से ही धन

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

बरसने लगा, जिससे स्वभावतः लोगों में अधिक ख़र्च करने की आदत पड़ गई, व साथ ही कम मिहनत की भी आदत लग गई। व्यापारी जाति की इस प्रकार एक साथ वृद्धि देख कर अन्य लोगों का ध्यान भी व्यापार की ओर खिंचा और इस प्रकार जो कई छोटे-छोटे व्यापार मारवाड़ियों के हाथ में थे या आ सकते थे, वे उन लोगों ने ले लिए।

यूरोप का युद्ध समाप्त हुआ। युद्ध में लगी हुई जातियों का ध्यान लड़ाई से हट कर अपने जातीय व व्यापारी सङ्गठन की ओर गया और वे चीज़ों की पैदाइश बढ़ाने में उद्यत हुए। संसार की करन्सियाँ पुनः गोल्ड-स्टैण्डर्ड (Gold Standard) पर आ गईं। ऐसा करने के लिए प्रायः सब देशों को सिक्के और नोट कम करने पड़े। रक़म की छूट कम हुई, जिससे सब माल की दर घटने लगी और माल का उलट-फेर भी कम होने लगा या दूसरे शब्दों में व्यापार में शिथिलता आने लगी। लोगों का नफ़ा या आमदनी भी साथ ही साथ घटने लगी। भारतवर्ष में रुपए का मूल्य १६ पेंस से १८ पेंस कर देने के कारण इसका असर विशेष पड़ा।

इसी समय जाति की जन-संख्या बढ़ी, ख़र्च भी बढ़ा। वह घटती हुई आमदनी के साथ घट नहीं सका, जिससे आपस के व्यापार में स्पर्धा बढ़ी और जिस व्यवसाय या स्थान में ५ दूकानों की आवश्यकता थी, वहाँ २५ हो गईं। नतीजा वही हुआ जो होना चाहिए था—रहा-सहा व्यापार भी प्रतिद्वन्द्विता में नष्ट होने लगा।

देशीय व्यापार का नफ़ा पहले ही कम हो चुका था; विदेश जाने में धर्म और समाज की अड़चन आती थी; देश में जो व्यापार के योग्य स्थान थे, वहाँ सब जगह मारवाड़ी-जाति पहले ही पहुँच चुकी थी; बैङ्किङ्ग, बीमा, नेविगेशन (Navigation) और उद्योग-धन्धे की शिक्षा का अभाव रहा, जिससे यह जाति इनमें से किसी में भाग नहीं ले सकी।

इधर विदेश वालों का व्यापार भी यहाँ काफ़ी तौर से सुदृढ़ हो चुका। वे यहाँ की रस्म-रिवाज, भाषा व आवश्यकताओं को बख़ूबी जान चुके, इसलिए यथा-सम्भव बीच में नफ़ा खाने वालों को हटाना चाहने लगे। रॉली ब्रादर्स और वालकृट ब्रादर्स इत्यादि ने जूट, तिलहन, रूई आदि की ख़रीद अब अपने निज के नौकर रख कर करना आरम्भ कर दी है। इस कारण से भी मारवाड़ी जाति को व्यापार में धक्का लगा व भविष्य में लगने की सम्भावना है।

मारवाड़ी-जाति की उन्नति रुकने के अन्य कारणों में फाटका भी एक प्रधान कारण है। फाटके में कई लोगों के लग जाने से जो शक्ति व धन व्यापार-वृद्धि में लगता वह अनुत्पादक मार्गों में व्यय हो रहा है!

इस दरम्यान में जिन मारवाड़ियों ने शिक्षा से लाभ उठाया है, आजकल के ढङ्ग पर व्यापारिक सङ्गठन किया है, अपने कारबार का क्षेत्र एकदेशीय न बना कर, सर्वदेशीय बनाया है। उनमें बिड़ला-परिवार, सर हुकुमचन्द आदि विशेष उल्लेखनीय और अनुकरणीय हैं। परन्तु इनकी संख्या बहुत कम है। साधारणतः मारवाड़ी इस बात को नहीं सोचते कि सबसे अच्छा व्यापार वह है, जिससे धनोपार्जन तो अवश्य हो, पर उसके साथ देश को लाभ पहुँचे, अधिक आदमियों को काम लगाया जाय, अपनी और देश की प्रतिष्ठा बढ़े। वे इस बात को नहीं सोचते कि जब पुराने ढङ्ग के काम में कठिनाई पहुँचने लगी तो नए ढङ्ग का अवलम्बन करना चाहिए। इस बात को अच्छी तरह से समझने के लिए मैं एक उदाहरण देता हूँ। ऐसे कई मारवाड़ी हैं, जिनके प्रत्येक करोड़ों या लाखों रुपए लोगों को व्याज पर उधार देते हैं। यदि वे उसी रुपए से बैङ्क आदि खोल कर काम करें तो उससे उनका लाभ और प्रतिष्ठा बढ़े, देश और समाज का उपकार हो और बहुत आदमियों को काम में लगा सकें। जन-संख्या बढ़ रही है, संसार में व्यापार के ढङ्ग बदल रहे हैं, उनके अनुसार मारवाड़ी-समाज को भी जीवित रहने के लिए अपना दायरा बढ़ाना होगा और नए ढङ्ग का अवलम्बन करना होगा।

—एक अध्ययनशील मारवाड़ी

* * *

राजस्थान की दरोगा-जाति

दरोगा या चाकर हिन्दुओं की एक जाति है। इस जाति के लोग राजपूताना की प्रत्येक रियासत में, प्रत्येक क़स्बे में और प्रत्येक बड़े

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

पाए जाते हैं। जहाँ कहीं भी राजपूत होंगे वहाँ ये दरोगा या चाकर भी अवश्य पाए जायँगे। उनकी जाति का सर्व-प्रथम नाम 'गोला' था। गोला संस्कृत भाषा के 'गोलक' शब्द का संक्षिप्त रूप है, जिसका अर्थ है 'उपपति द्वारा उत्पन्न किसी विधवा का पुत्र' (देखो अमर-कोष)। दरोगा लोग गोला कहे जाने से बुरा मानते हैं, क्योंकि यह घृणासूचक शब्द है और इससे उनके नीच वंश-जात की बात प्रकट होती है। आजकल ये लोग दरोगा, खवास, पासबान, चाकर, चेला, वजीर, धिकड़िया, खासे, रावणा के साथ का या 'रावणा' के नाम से पुकारे जाते हैं, और इनकी स्त्रियाँ दाउदी, ख़ालसाई दाऊदी, मानस, बदारन, गोली और दरोगन कही जाती हैं। इनको प्रायः गोला और चाकर कहके पुकारा जाता है, पर इनकी जाति ज़्यादातर दरोगा के नाम से ही मशहूर है। ये लोग मारवाड़ (जोधपुर) और मेवाड़ (उदयपुर) में रावणा, खालसाई, चाकर कहे जाते हैं। दरोगा-जाति के जो लोग राजाओं और राजवंश वालों की सेवा करते हैं, वे अपने को उन दरोगाओं की अपेक्षा, जो ग़रीब राजपूतों की सेवा करते हैं, अधिक ऊँचे दर्जे का मानते हैं। ये लोग आपस में एक-दूसरे को ठाकुर कह कर पुकारते हैं। ये अपने को राजपूत ज़ाहिर करते हैं और अपनी जाति चौहान, राठौड़, सोढ़ा, साओकला, पँवार, सोलङ्की, गहलोत, टाक, भाटी, तँवर, बड़गूजर, गौर, बघेल आदि बतलाते हैं। उनमें से कितने ही राजपूत पुरुषों और दरोगा या अन्य जाति की स्त्रियों के नाजायज़ सम्बन्ध से उत्पन्न हुई औलादों के वंशधर हैं। कितने ही महाजन और चारण भी, जो राजपूतों से अधिक सम्बन्ध रखते हैं और जो देशी राज्यों में ऊँचे पदों पर काम करते हैं, दरोगों को पैतृक या ख़ान्दानी नौकर की हैसियत से रखते हैं। पर राजपूतों के यहाँ रहने वाले दरोगा उनके साथ विवाह-सम्बन्ध करना अपमान-जनक समझते हैं। मेवाड़ में भील-स्त्रियों की सन्तान, जो उनके राजपूत-स्वामियों के औरस से पैदा होती है, दरोगों के साथ विवाह-सम्बन्ध करती है और दरोगा बन जाती है। मेवाड़ में कहावत है, कि भील-स्त्री की सन्तान तीसरी पीढ़ी में दरोगा बन जाती है, और राजपूत के बीर्य से उत्पन्न हुई दरोगा-स्त्री की औलाद तीसरी पीढ़ी में राजपूत बन जाती है। राजपूताने में वर्तमान समय में इस बात के कितने ही प्रसिद्ध उदाहरण मौजूद हैं कि दरोगा लोग राजपूत बन गए और राजपूतों ने भी उनको अपनी जाति का मान लिया। दूसरी तरफ़ शुद्ध-रक्त के राजपूत, जोकि दरिद्र हो गए हैं और राजपूतों की हैसियत से रह सकने में असमर्थ हैं, दरोगों की जाति में मिल जाते हैं और दरोगा बन जाते हैं!

अब समय की गति से धीरे-धीरे दरोगा लोग इज़्ज़त-दार राजपूतों के घर के एक आवश्यक अङ्ग बन गए हैं। उनके साथ घनिष्ट सम्बन्ध रहने का परिणाम प्रायः राजपूतों के लिए हानिकारक सिद्ध हुआ है। राजपूत घरानों के नौजवान लड़के प्रायः उनकी सङ्गति में पड़ कर बिगड़ जाते हैं, शराबी बन जाते हैं, और दरोगों की नवयुवती स्त्रियों से गुप्त प्रेम-सम्बन्ध स्थापित कर लेते हैं। ये ही स्त्रियाँ बाद में खुले तौर पर उनकी उप-पत्नियाँ बन जाती हैं और ख़वास जी, पर्दायत जी, बादारन जी आदि कहलाती हैं। उस दशा में वे पैरों में सुवर्ण का गहना पहन सकती हैं, और उनके भाई और बाप आदि 'पर्दायत जी' के भाई या बाप कहलाने में अपनी इज़्ज़त समझते हैं! जब कि दरोगों की स्त्रियाँ राजपूत-घरानों में बच्चों को दूध पिलाने का काम करती हैं, तो वे धावड़ जी कहलाती हैं और उनके लड़के धाभाई कहे जाते हैं।

तो भी जनता में गोला (दरोगा) लोग तुच्छ निगाह से देखे जाते हैं और उनके साथ बर्ताव भी सम्मानयुक्त नहीं किया जाता। एक कहावत प्रसिद्ध है कि—"सौ गोलही घर सूनो"—अर्थात् किसी घर में चाहे सौ गोला रहते हों तब भी वह सूना है। इसी तरह दूसरी कहावत है—"गोला किणसूँ गुण करे औगुण गुण आप"—अर्थात् गोला ख़ुद ही औगुणों से भरा होता है, वह दूसरे के साथ क्या भलाई कर सकता है? ये कहावतें प्रकट करती हैं कि सर्वसाधारण इन लोगों की कैसी क़दर करते हैं। राजिया नाम का कवि एक प्रसिद्ध सोरठे में राजपूतों को गोलों के साथ घनिष्ट सम्बन्ध न रखने के सम्बन्ध में इस प्रकार चेतावनी देता है :—

गोला घणा नजीक, रजपूता आदर नहीं।
उण ठाकर री ठीक, रण में परसी राजिया॥

अर्थात्—जो राजपूत गोलों को अपने बहुत पास

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

में रखते हैं, वे समस्त आदर-सम्मान को खो बैठते हैं। राजिया कहता है, जब उनको युद्ध-क्षेत्र में जाने का काम पड़ेगा तो उनको इसका फल भोगना पड़ेगा।

उपरोक्त कथन की पुष्टि में एक घटना वर्णन की जाती है, जो औवा (मारवाड़) के ठाकुर के सम्बन्ध में है। एक युद्ध में वह घायल होकर घोड़े से नीचे गिर गया। उसके साथ एक गोला था, जो उस घोड़े पर चढ़ कर घर लौट आया और ठाकुर के मरने की ख़बर सुनाई। ठाकुर की स्त्रियों ने चूड़ियाँ फोड़ डालीं और विधवाओं के वस्त्र धारण कर लिए। थोड़ी देर बाद घायल ठाकुर भी अपने राजपूत-साथियों की सहायता से रण-क्षेत्र से घर आ पहुँचा। उस समय से औवा में कोई गोला घोड़े पर सवार नहीं हो सकता।

उत्पत्ति

प्राचीन काल में तमाम श्रेणियों के हिन्दू स्वतन्त्र व्यक्ति थे। अब से ढाई हज़ार वर्ष पहले कौटिल्य ने अपने अर्थ-शास्त्र में, जोकि संस्कृत-साहित्य में राजनीति-विज्ञान का परम प्रसिद्ध ग्रन्थ है, लिखा है कि कोई भी आर्य (हिन्दू) दास नहीं बनाया जा सकता। इसके पश्चात् जब जाति-प्रथा का उसके वर्तमान स्वरूप में आविर्भाव होने लगा; भिन्न-भिन्न जातियाँ अपने पृथक् और एक-दूसरे से स्वतन्त्र समूह बनाने लगीं; भिन्न-भिन्न जातियों में शादी-विवाह का होना निषिद्ध माना जाने लगा और कितने ही कारणों वश स्त्रियाँ अधिकाधिक पर्दे और घर के भीतर बन्द रक्खी जाने लगीं, तो कितनी ही नई-नई सामाजिक आवश्यकताएँ, विशेषतः सैनिक जातियों में उत्पन्न होने लगीं, और उनकी पूर्ति के लिए हिन्दू-समाज के सङ्गठन में कितने ही नए परिवर्त्तन किए गए। राजपूत लोग युद्ध के लिए अथवा भारतवर्ष के दूरवर्ती भागों में नौकरी करने के कारण प्रायः घर से बाहर रहा करते थे, और उनकी स्त्रियाँ पर्दे के भीतर रहती थीं, इसलिए उनको ऐसे सेवकों के रखने की आवश्यकता पड़ी, जो हर तरह का काम करने को राज़ी हों और जो अपना हिताहित मालिक से भिन्न न समझें। इसलिए एक ऐसी नई श्रेणी की रचना और उत्पत्ति हुई, जिसके व्यक्ति वंशानुक्रम से अधीनता में रह कर घर का काम-काज करते रहें। इस समूह में उन लोगों को स्थान दिया गया है जोकि 'गोलक' या 'गोला' कहलाते थे और जिनके साथ जाति-च्युत लोगों के समान [illegible] होता था। इस श्रेणी को अपनी संख्या बढ़ाने के लि[illegible] वे बच्चे मिलते रहे, जोकि राजपूतों के औरस से [illegible] और अन्य नीच जाति की रखेली स्त्रियों के उत्पन्न [illegible] थे! इन लोगों ने एक सुधरे हुए रूप में गुलामी [illegible] स्वीकार किया और बदले में उनको जीवन-नि[illegible] की सामान्य सामग्री स्थायी रूप से मिलना नि[illegible] हुआ। काल-क्रम से उनमें से कुछ उत्तरदायित्व के [illegible] पर नियुक्त किए गए और वे दरोगा (किसी महक[illegible] मुखिया) कहलाए जाने लगे! इसके फल-स्वरूप [illegible] या चाकर लोगों की तमाम जाति ही दरोगा के [illegible] प्रसिद्ध हो गई, ठीक उसी प्रकार जैसे राजपूताने [illegible] कायस्थों का नाम पञ्चौली पड़ गया। (पञ्चौली [illegible] पाँचकुली का अपभ्रंश है) पाँचकुली किसी ज़माने में [illegible] ऐसी कमेटी के मेम्बर को कहा जाता था, जिसका [illegible] देशी रियासतों में कर (महसूल) वसूल करना [illegible] उसका प्रबन्ध करना होता था। इन कमेटियों में ब्रा[illegible] महाजन, गूजर आदि सभी लोग नियुक्त किए जाते [illegible] पर चूँकि कायस्थ लोग बहुत बड़ी संख्या में इनमें नि[illegible] किए जाते थे, अतः उनका नाम ही पञ्चौली पड़ गया [illegible] अब राजपूताने के सभी कायस्थ पञ्चौली कहलाते हैं।

दरोगा या गोला नौकर नहीं, वरन् चाकर [illegible] जाते हैं। नौकर वह कहा जाता है, जो अपनी [illegible] नौकरी कर सके और जब चाहे उसे छोड़ सके। पर [illegible] ऐसा नहीं कर सकता! इस प्रकार चाकर या गोला[illegible] का उद्भव हिन्दू-समाज के विकास में एक विशेष [illegible] वर्त्तन-सूचक घटना है।

मालिक और चाकर का सम्बन्ध

अपने स्वामियों के घर में दरोगों की वर्तमान [illegible] का सारांश इस प्रकार है :—

(१) मालिक गोलों को खाना-कपड़ा, [illegible] सम्बन्धी व्यय और दूसरे ज़रूरी ख़र्च देता है। [illegible] (किसी के मरने की दावत) का ख़र्च केवल [illegible] में उत्पन्न हुए गोलों) चाकरों के वास्ते दिया जाता [illegible]

(२) मालिक को अधिकार है कि वह किसी [illegible] से चाहे जिस प्रकार की सेवा करावे। चाकर मालि[illegible] नौकरी को छोड़ सकने को स्वतन्त्र नहीं होता।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

(३) दरोगों के बच्चों को भी खाना और कपड़ा पाने का अधिकार होता है, पर साथ ही वे मालिक की इच्छानुसार काम करने को बाध्य होते हैं।

(४) मालिक को अधिकार है कि वह अपनी बेटी के दहेज़ में दरोगों की किसी एक या ज़्यादा बेटियों को दे डाले। ये लड़कियाँ तब उस व्यक्ति की सम्पत्ति हो जाती हैं, जिसके साथ मालिक की लड़की का विवाह होता है। कभी-कभी इस प्रकार पूरे कुटुम्ब दे डाले जाते हैं।

(५) अगर कोई मालिक ऐसा समझे कि उसके चाकरों की संख्या उसकी आवश्यकता की अपेक्षा बहुत अधिक बढ़ गई है, तो वह अपनी इच्छानुसार कुछ को रख कर, बाक़ी से और कहीं जाकर रोजी तलाश करने को कह सकता है। पर उसे अधिकार होता है कि शादी इत्यादि के अवसर पर वह उनसे काम करा सके और उनकी लड़कियों को बुला कर अपनी बेटी के दहेज़ में दे सके।

(६) जबकि दरोगा की लड़की की शादी किसी दरोगा के साथ की जाती है, तो दूल्हा से 'रीट' के स्वरूप में जो धन मिलता है, उसे लड़की का स्वामी ले लेता है। कभी-कभी इसका आधा भाग लड़की के बाप को भी दे दिया जाता है।

(७) कोई चाकर अपने मालिक से केवल उसी दशा में पूर्णरूप से स्वतन्त्र हो सकता है, जबकि वह उस तमाम धन को चुका दे, जोकि मालिक ने उसके लिए ख़र्च किया है।

इस सम्बन्ध में मालिकों की तरफ़ से हमेशा यह दलील दी जाती है कि चूँकि वे चाकरों को खाना और कपड़ा देते हैं और उनके विवाह का ख़र्च भी बर्दाश्त करते हैं, इसलिए चाकर उनकी जायदाद बन जाता है—और न सिर्फ़ चाकर ही, वरन् उसके बच्चे भी। पर यह एकतरफ़ा दलील है। मालिक उस अकुण्ठित भाव से की हुई सेवा का कोई मूल्य ही नहीं लगाता, जोकि चाकर उस तमाम समय में करता रहता है, जब कि उसको खाना और कपड़ा दिया जाता है। मालिक प्रायः यह युक्ति भी देते हैं कि अपनी सन्तान के समान वे चाकरों को खिलाते हैं, उनकी देख-रेख रखते हैं। पर क्या उसकी सन्तान, उनकी अपनी सन्तान, उनकी उसी रूप में जायदाद बन जाती है, जिस रूप में चाकरों के सम्बन्ध में दावा किया जाता है?

यह प्रथा एक प्रकार की ग़ुलामी है। यह बात कि कुछ चाकर लोग आराम की ज़िन्दगी गुज़ारते हैं और उनको उत्तरदायित्व तथा विश्वास के काम सुपुर्द किए हुए हैं, इस प्रथा के स्वाभाविक दोषों को नहीं बदल सकती। यों तो सुल्तान ग़ोरी के ग़ुलाम, राज्य के सबसे ऊँचे पदों पर जा पहुँचे और उन्होंने देहली में ग़ुलाम-बादशाहों की सल्तनत क़ायम ही कर दी। ग़ुलामी क्या है—इसकी व्याख्या एन० डब्लू० पी० हाईकोर्ट के विद्वान् जजों ने सन् १८७१ में सिकन्दरबख़्त वाले मुक़दमे में इस प्रकार की थी:—

(क) किसी मनुष्य के साथ ग़ुलाम के समान व्यवहार होना उसको कहते हैं, जब कि दूसरे मनुष्य को पूर्ण रूप से यह अधिकार हो कि वह उसकी व्यक्तिगत स्वाधीनता में बाधा डाल सके और उससे उसकी मर्ज़ी के ख़िलाफ़ काम करा सके—सिवाय उन हालतों के, जब कि ऐसे अधिकार को क़ानून ने मान लिया हो, जैसे कि बच्चों पर माँ-बाप का और क़ैदियों पर जेलर का अधिकार।

(ख) कितने ही लोग बच्चों को उनके माँ-बाप से या ग़ैर लोगों से ख़रीद लेते हैं और उनसे नाम-मात्र की या बिना किसी प्रकार की स्वाधीनता दिए हुए, काम कराते हैं। ये बच्चे वास्तव में ग़ुलाम ही हैं और यह स्पष्ट है कि उनकी दशा ऐसी है जो कि अङ्गरेज़ी क़ानून के सर्वथा विरुद्ध है, ऐसे बच्चों को जो लोग घर में रोक कर रखते हैं, वे फ़ौजदारी क़ानून के अनुसार दण्डनीय हैं।

उपरोक्त उद्धरणों से दरोगा या चाकरों के दर्जे का स्पष्ट रीति से पता लग जाता है।

मुग़लों की बादशाहत के ज़माने में इस प्रथा की बहुत वृद्धि हुई थी। पर देश में अङ्गरेज़ी शासन के आगमन के साथ दशा बदलने लगी। इस प्रथा को क़ायम रखना उन सिद्धान्तों के प्रतिकूल था, जिन पर ईस्ट इण्डिया कम्पनी की सरकार प्रतिष्ठित थी। यह बात उन लोगों के दिमाग़ के, जिनको व्यक्तिगत स्वाधीनता प्राणों के समान प्यारी थी, प्रतिकूल थी। व्यक्तिगत स्वाधीनता का अधिकार और अपने जीवन को अपनी

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

इच्छानुसार बनाने का हक़—दूसरों को भी उसी प्रकार की स्वाधीनता देते हुए—स्वीकार किया गया और व्यवहार में लाया जाने लगा। इसलिए ईस्ट इण्डिया कम्पनी की सरकार ने चाकरों के ऊपर मालिकों का अधिकार मानने से इन्कार किया। उसने केवल इन स्वत्वों को अस्वीकृत ही नहीं किया, वरन् इस प्रकार के स्वत्व का उपभोग करना जुर्म क़रार दे दिया।

सन् १८४३ में ग़ुलामी की प्रथा के सम्बन्ध में एक क़ानून (एक्ट नं० ५) पास करके ईस्ट इण्डिया कम्पनी के अधीनस्थ राज्य में जारी किया गया, जिसमें कहा गया है :—

(१) कोई भी सरकारी कर्मचारी अदालत की किसी डिगरी या हुक्म की तामील करने के लिए, या महसूल और लगान-अदायगी के वास्ते, इस आधार पर कि कोई आदमी ग़ुलाम है, किसी शख़्स को न बेच सकता है, न बिकवा सकता है, न बेगार करा सकता है, और न उसकी सेवाओं को बेच या बिकवा सकता है।

(२) अगर कोई व्यक्ति किसी दूसरे व्यक्ति पर, इस आधार पर कि वह उसका ग़ुलाम है, किसी प्रकार का दावा करेगा तो वह ईस्ट इण्डिया कम्पनी के अधीनस्थ राज्य में किसी दीवानी या फ़ौजदारी क़ानून के अनुसार या किसी मैजिस्ट्रेट के द्वारा स्वीकृत न किया जायगा।

(३) अगर किसी व्यक्ति ने अपने परिश्रम से, अथवा किसी कला-कौशल, पेशे और रोज़गार के द्वारा अथवा उत्तराधिकार, वसीयत, भेंट के द्वारा कोई सम्पत्ति प्राप्त की हो, तो वह इस आधार पर कि वह ग़ुलाम है या जिससे सम्पत्ति मिली है वह ग़ुलाम है, उस सम्पत्ति से वञ्चित नहीं किया जा सकता और न उस पर क़ब्ज़ा करने से रोका जा सकता है।

(४) कोई भी काम, जो एक स्वतन्त्र आदमी के साथ करने पर दण्डनीय अपराध माना जाता है, वह काम यदि किसी व्यक्ति के साथ इस बहाने से किया जायगा कि वह ग़ुलाम है, तो वह समान रूप से दण्डनीय होगा।

इस प्रकार ब्रिटिश-भारत में चाकरों और दरोगों के ऊपर मालिकों का अधिकार रखने का दावा समाप्त हो गया और दरोगे क़ानून के अनुसार फिर से स्वाधीन बन गए। पर यह क़ानून उस भू-भाग में प्रचलित न किया गया, जोकि देशी राजाओं के अधिकार में था। पर यह प्रथा बराबर जारी रही। देशी रियासतों में और ज्ञान का प्रचार भी, जिसके द्वारा मनुष्य समझ है कि उसके भी कुछ जन्म-सिद्ध अधिकार हैं, ब्रिटिश की अपेक्षा बहुत कम हुआ है। इसलिए मालिक ऊपर लिखे हुए अधिकारों पर दृढ़तापूर्वक जमे रहे चाकरों के विरुद्ध उनको अमल में लाने में भी सफल होते रहे। और सच पूछा जाय तो इस प्रथा दावे का विरोध भी केवल उन्हीं लोगों ने किया, जिन ब्रिटिश-भारत की अपेक्षाकृत स्वाधीनतापूर्ण परिस्थिति में रहने का अवसर मिला था।

चाकर रखने की इस प्रथा को जारी रखना, घोषणा के प्रतिकूल है, जो हाल ही में लीग ऑफ नेशन्स में ब्रिटिश-डेलिगेटों ने की थी और जिसमें गया था कि ब्रिटिश-साम्राज्य से ग़ुलामी की प्रथा मिटाई जा चुकी है। अगर एक ऐसा नियम बना दिया जाय कि अदालतों में चाकरों के ऊपर मालिकों का कोई अधिकार या दावा स्वीकृत न किया जायगा, जैसे साधारण नौकरों के सम्बन्ध में स्वीकृत नहीं किया तो वर्तमान परिस्थिति का प्रतिकार हो सकना है। इससे परिस्थिति कुछ सुधर जायगी और आन्दोलन शान्त हो जायगा। यह प्रथा, पर्दा-प्रथा के जारी के फल-स्वरूप उत्पन्न हुई थी और उसके साथ लुप्त हो जायगी, पर वह दिन अभी दूर है!

—(राय साहब) हरविलास शारदा
(एम० एल० ए०

* * *

मारवाड़ियों की इच्छाएँ

प्रत्येक जाति, धर्म या समूह के लोगों में विशेष प्रकार की भावनाएँ देखने में आती हैं, जिनके विषय में किम्वदन्तियाँ या लोकोक्तियाँ प्रसिद्ध हो जाती हैं। इनसे उस गिरोह का मुख्य लक्षण (ख़ासियत) होती है। राजपूताने की भिन्न-भिन्न जातियों के विषय

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

भी इसी प्रकार की कहावतें प्रसिद्ध हैं। यद्यपि किसी अंश में ये कहावतें इन जातियों को कुछ चुभने वाली भी मालूम होती हैं, तथापि वे परम्परा से चली आती हैं, और सम्भवतः किसी अनुभव पर ही निर्भर हैं। अतः वे अप्रिय प्रतीत नहीं होतीं।

इन मारवाड़ी-लोकोक्तियों को उद्धृत करने से हमारा अभिप्राय किसी की निन्दा या स्तुति से नहीं है, प्रत्युत इनसे कुछ न कुछ शिक्षा ही मिलती है। पहले मारवाड़ी-ब्राह्मणों ही को लीजिए, जिनका फ़ोटो किसी चारण कवि ने इस प्रकार खींचा है :—

मरे कोई दोलतवान के बूढ़ो वाणियो।
द्वारे जाके जाय करै मन जाणियो॥
बारे दिन बेसाय गुरड़ बचावण।
इतरा दे किरतार फेर काईं चावण॥

अर्थ—यदि किसी धनवान् या बूढ़े बनिये की मृत्यु हो और उसके घर पर जाकर मैं मनमाना काम करूँ, बारह दिन तक गरुड़पुराण का पाठ करूँ, तो इससे बढ़ कर मेरे लिए कोई सौभाग्य की बात नहीं हो सकती।

इसी प्रकार ब्राह्मणों में श्रीमाली नामक जाति की यह इच्छा बतलाई गई है :—

जीमी-जीमी ने भले जीमूँ।
बीणी-बीणी ने भले बीणूँ॥

अर्थात्—श्रीमाली ब्रह्मदेव सदा अपने यजमानों के यहाँ भोजन जीमने की इच्छा करते हैं, और उनकी देवी गोबर-कण्डे (ईंधन) बीनना पसन्द करती हैं। किसी मुसलमान कवि ने इनकी उपयोगिता यों बतलाई है :—

दे ख़ुदा तू ऐसा नर, पीर बवर्ची भिश्ती खर।

अर्थात्—ऐ ख़ुदा! तू ब्राह्मण-जैसा शख़्स अता फ़रमा, जिससे चारों काम निकले। यानी जो पीर, बवर्ची, भिश्ती और बोझा ढोने वाला क़ुली भी हो।

क्षत्रियों में राजपूत-जाति की इच्छा किसी डिङ्गल कवि ने इस प्रकार कही है :—

मगरे काँठे बास, बाहरू बज्जणाँ।
नितरी आवे धाड़, कमराँ सज्जणाँ॥
बङ्का भड़ जूँझार, खला दल झोलणाँ।
इतरा दे किरतार, भले क्या बोलणाँ॥

अर्थात्—मेरा निवास-स्थान पहाड़ियों के बीच में हो और मुझे पकड़ने के लिए लोग पीछे लगे रहें और हमेशा ही मेरे हाथ लूट-खसोट का माल आया करे। दौड़-धूप और लड़ाई के लिए मेरी कमर सदा बँधी रहे। लड़ाई में सदा बहादुरी दिखाऊँ। कदाचित् शिर भी कट जाय तो भी लड़ता रहूँ और जुझार (रण-वीर) कहलाऊँ तथा शत्रु की फ़ौज को कम्पायमान् करता रहूँ। ऐसे अवसर यदि मिलते रहें, तो किसी अन्य चीज़ की इच्छा नहीं है।

राजपूतनी यह चाहती है :—

चाकर गोली होय, जमी बहे बारणे।
मदवो महलाँ माँय, प्यारी रे कारणे॥
कामेत्याँ करे काम, ढोली नित गावणा।
इतरा दे किरतार, फेर काईं चावणाँ॥

अर्थात्—ख़िदमत करने को दास और दासियाँ हों, भूमि मेरे पति के अधिकार में हो, महल में मेरे विलास के लिए ख़ूब शराब हो, काम-काज सँभालने को कामदार हो और हर समय गाना सुनाने को ढोली हो, तो फिर किसी चीज़ की इच्छा नहीं।

राजपूतों के कामदारों और बोहरों की इच्छा इस प्रकार बतलाई गई है :—

ठाकर बालक होय, हुक्म ठकराणियाँ।
गाँव दुसाखीयो होय, के बस्ती बाणियाँ॥
घरे ही न्याव पताव, घरासूँ तोलणाँ।
इतरा दे किरतार, फेर नहीं बोलणाँ॥

अर्थात्—ठाकुर बालक हो और ज़नाने की स्त्रियों (ठकुरानियों) का हुक्म चलता हो, गाँव में दो फ़सलें पैदा होती हों और महाजनों की बस्ती हो, अपने घर से ही सामान तोल कर दिया जाता हो, और घर पर ही हिसाब-किताब करने का—फ़ैसला करने का—अधिकार हो। यदि ये सब बातें हों तो फिर और किस वस्तु की आवश्यकता है?

वैश्य-जाति के लिए यह उक्ति चली आती है कि :—

अगम बुद्धि बाणियो पच्छम बुद्धि भट्ट।

अर्थात्—बनिया आगे की बात सोचने वाला होता है, परन्तु ब्राह्मण तीव्र-बुद्धि नहीं होता।

बाणीया थारी बाण, कोई नर जाणे नहीं।
पाणी पीरा छाण, लोही अण छाणो पिए॥

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

अर्थात्—हे बनिए! तेरा रहस्य कोई नहीं जान सकता; क्योंकि तुम यद्यपि पानी तो ख़ूब छान कर पीते हो, ताकि जीव-जन्तु से बचाव हो, परन्तु रक्त बिना छाना हुआ ही पी जाते हो! अर्थात् तुम बौहरे बन कर अपने असामियों को इतना कष्ट देते हो कि वे बेचारे अन्त में मर ही जाते हैं।

जाट, माली, सीरवी आदि कृषक यह चाहते हैं :—

नई मूँजरी खाट के नच्चू टापरी।
भेंस डल्याँ दो-चार के दूजे बापड़ी॥
बाजर हन्दा बाट दही में ओलणाँ।
इतरा दे किरतार फेर नहीं बोलणाँ॥

अर्थात्—नए बान से बुनी हुई खाट हो, वर्षा में न टपकने वाली झोपड़ी हो, दो-चार दूध देने वाली भैंसें हों तथा बाजरे के सोगरे (रोटी) और दही खाने के लिए हो। यदि परमात्मा हमको इतनी बातें दे, तो फिर गिड़गिड़ाने की कोई आवश्यकता नहीं।

किसान की कन्या यह चाहती है :—

उठे ही पीरो होय उठे ही सासरो।
आथूणों होय खेत चवे नहीं आसरो॥
नाडा खेत नजीक जठे हल खोलणाँ।
इतरा दे किरतार फेर नहीं बोलणाँ॥

अर्थात्—अपने पिता और श्वसुर का घर एक ही गाँव में हो, खेत पश्चिम में हो (जिससे सुबह रोटी लेकर खेत में जाऊँ और शाम को वापस लौटूँ तो सूर्य सामने न हो), झोपड़ी में वर्षा-काल में पानी न टपकता हो, तालाब खेत के पास हो, जहाँ पर बैल खोल दिए जायँ और बैलों को पानी पिलाने को दूर न ले जाना पड़े। इतनी बातें परमात्मा देवे, तो फिर और माँगने की आवश्यकता नहीं।

व्यवसाय-पेशा वाले लोगों—जैसे खाती, बढ़ई, माली, कुम्हार और नाई—के लिए यह कहावत प्रसिद्ध है :—

छोड़ा पाड़न बूँट उपाड़ण थपथपियो ने नाई।
इतरा ने मत मूँड गुराँ कुबुध करेलाँ काँई॥

चारण, पुरोहित (राजगुरु) और नाथ (दशनामी साधु) लोगों के विषय में यह उक्ति चली आती है :—

चारण मरसी जगतरा प्रोहित पड़सी पार।
निर्वंश जासी नाथड़ा, जद होसी निर्धार॥

अर्थात्—जब तमाम संसार के चारण मर जायँगे पुरोहित लोग भी नष्ट हो जायँगे और कनफटे नाथ (नाथ) ला-औलाद स्वर्ग-धाम सिधार जायँगे, तब न्याय की आशा की जा सकेगी, अन्यथा अन्धेर-गर्दी पोल-पट्टी और अन्याय रहेगा। क्योंकि इन लोगों को झूठी ख़ुशामद व लल्लो-चप्पो से रईस व अफ़सर प्रायः बिगड़ जाते हैं।

राजपूताना, मालवा और गुजरात प्रान्त के देशी राज्यों में एक बड़ा समूह उन लोगों का है, जो कुलीन से दरोगा, चाकर, रावणा, हजूरी खानाजाद, गोला, खवास, चेला, ढीकड़िया, दरबारी, दास, और लुन्दा आदि नामों से पुकारे जाते हैं। उनके लिए सदियों से दासता की ज़ञ्जीरों में बँधे रहने से हृदय सङ्कीर्ण हो गए हैं कि स्वतन्त्रता का नाम तक भूल गए हैं। वे लोग यह चाहते हैं :—

राज में पासो होय, परदे होवे धीवड़ी।
सुवण सुथरी सेज, नीर भरी दीवड़ी॥
पीवण चमड़ पोस, अमल नित खावणाँ।
इतरा दे किरतार, फेर काँई चावणाँ॥

अर्थात्—राज्य में मेरा वसीला हो, सरदार के घर में चढ़ी हुई पुत्री हो, सोने के लिए अच्छी सेज हो, पानी पीने को झारी हो, चमड़े का हुक्का सेवन करने को हो और हमेशा खाने को काफ़ी अफ़ीम हो। यदि ये सब वस्तुएँ देवे तो और कोई इच्छा बाक़ी नहीं है।

दरोगा (रावणा) की स्त्री की इच्छा यह है :—

रूप रङ्ग निधान जवानी बावला।
हाँडी डोई हाथ रसोड़ा रावला॥
सरदाराँ सूँ सेद माटी होवे मोलणाँ।
इतरा दे किरतार फेर नहीं बोलणाँ॥

अर्थात्—सौन्दर्य और गोरा रङ्ग ख़ूब हो, जवानी हो, सरदार के रसोई-घर (पाकशाला) में हो, सरदारों से मेरा प्रेम हो और पति मेरे वश में हो,

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

वीर दुर्गादास राठौड़

[जोधपुर राजवंश की रक्षा करने वाले]

राव अमरसिंह राठौड़

[सलावत ख़ाँ को भरे दरबार में बध करने वाले]

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

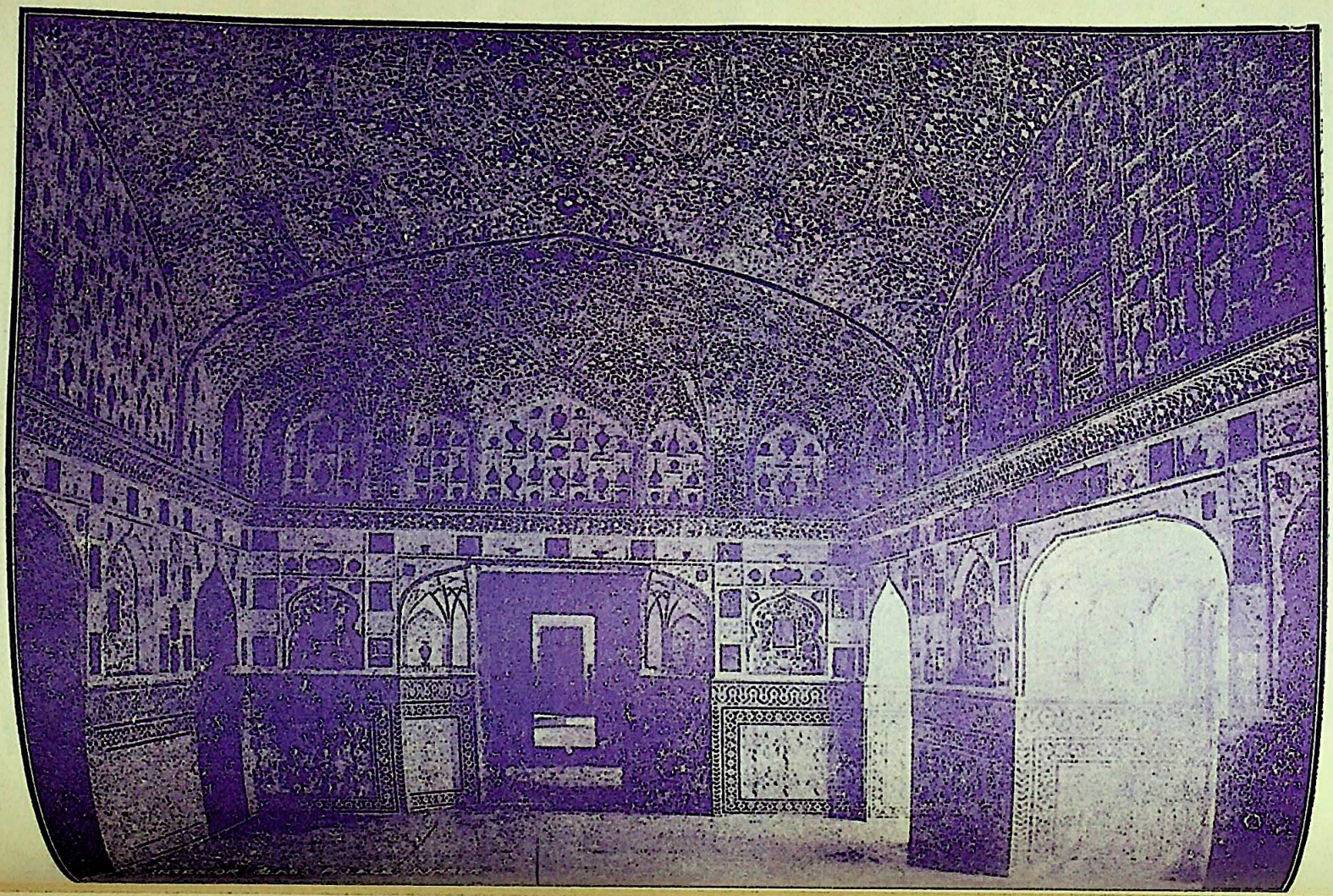

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

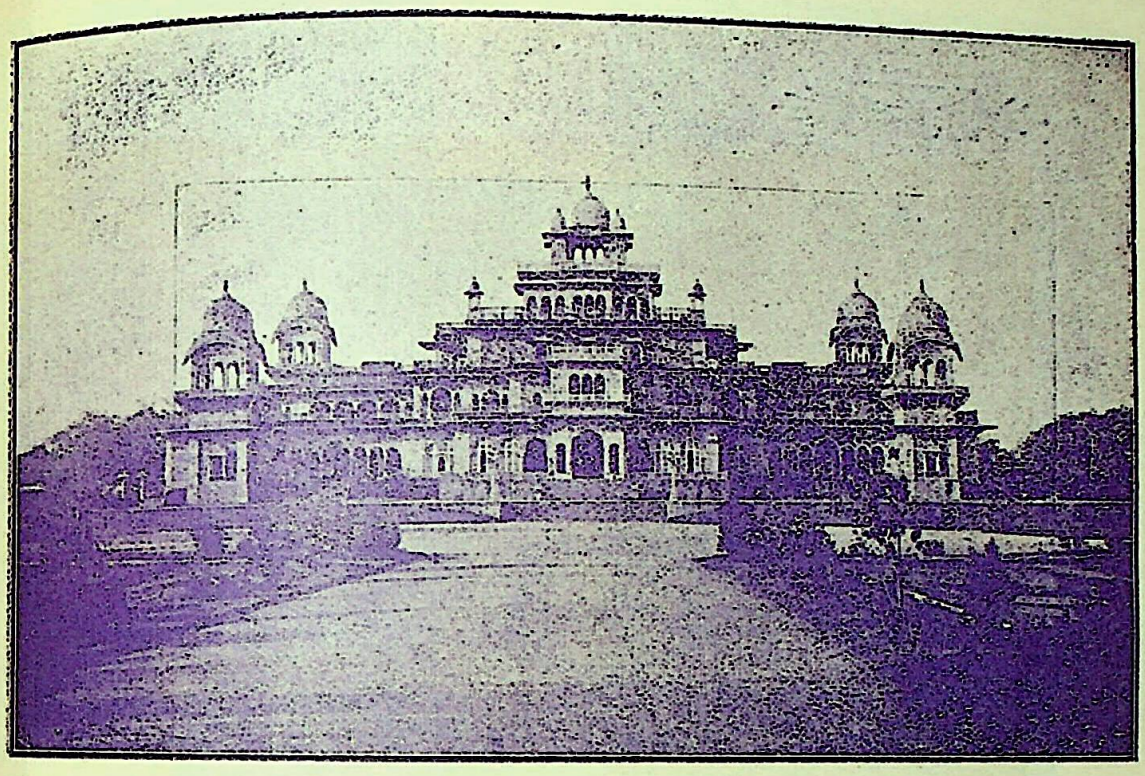

रामनिवास बाग़ में स्थित जयपुर का सुप्रसिद्ध म्यूज़ियम

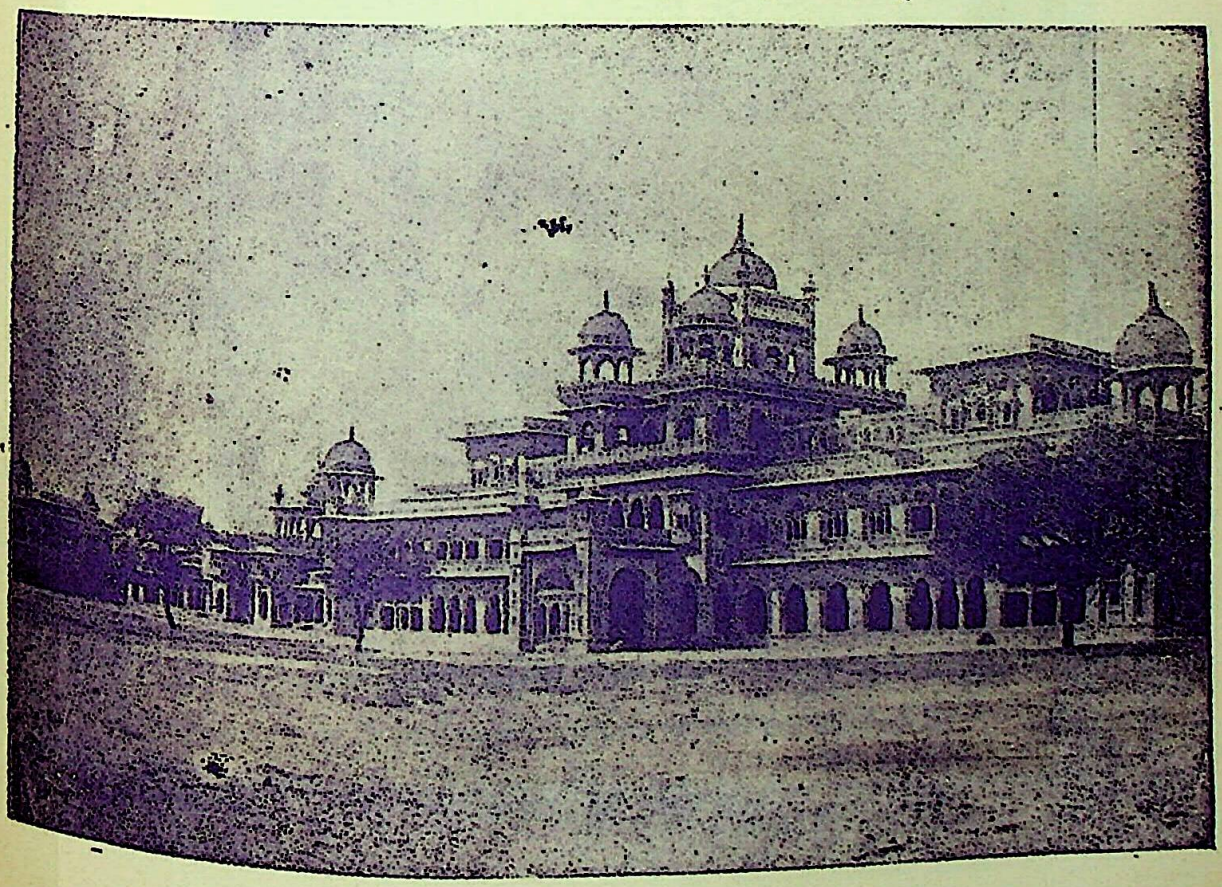

जोधपुर की सदर कचहरी

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

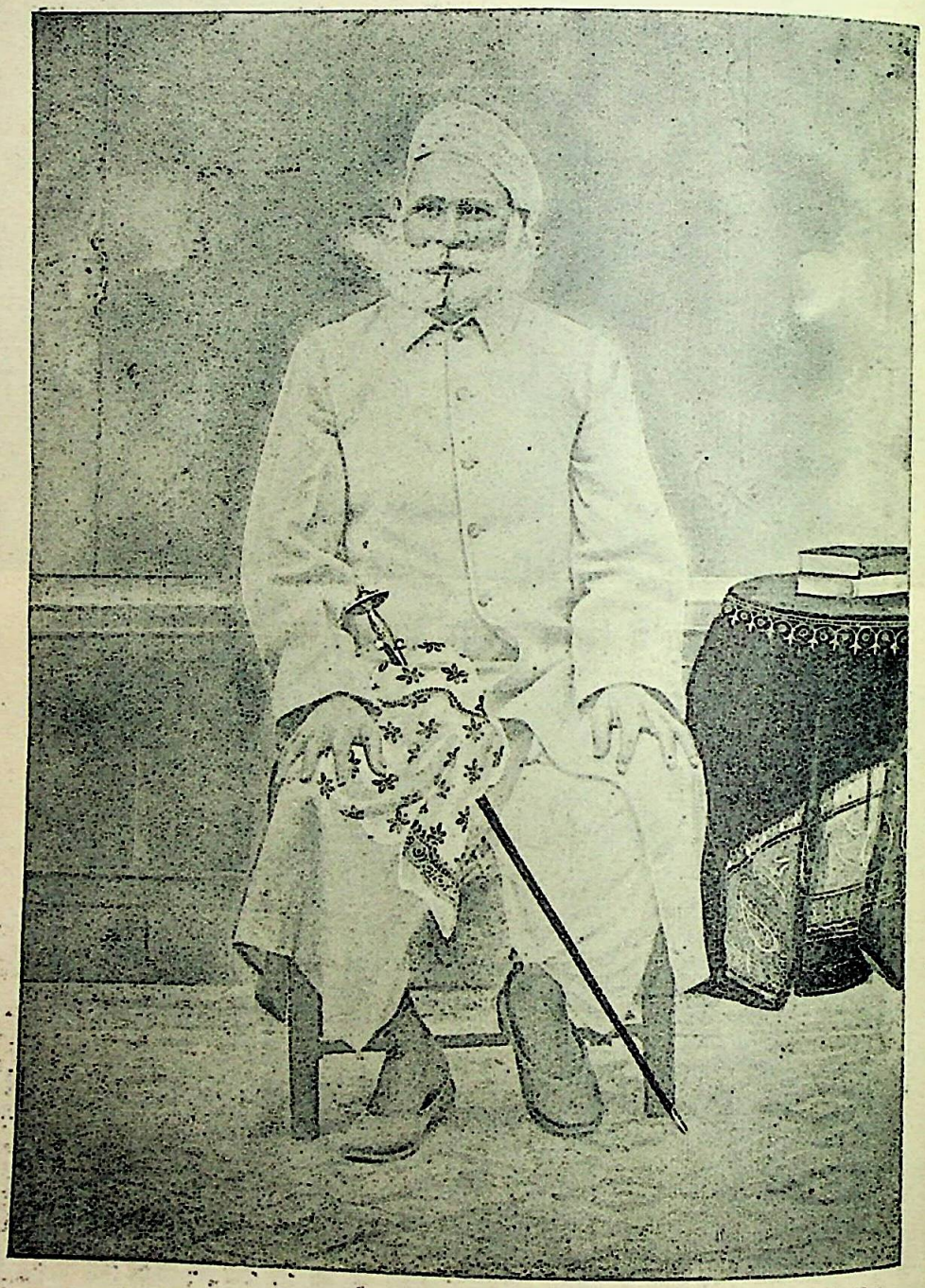

स्वर्गीय ठाकुर हीरासिंह जी पँवार, नसीराबाद छावनी

[अजमेर-मेरवाड़ा ज़िला के प्रबल समाज-सुधारक]

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

राजा उदयसिंह राठौड़, जोधपुर

कन्नौजपति जयचन्द गहरवार (राठौड़)

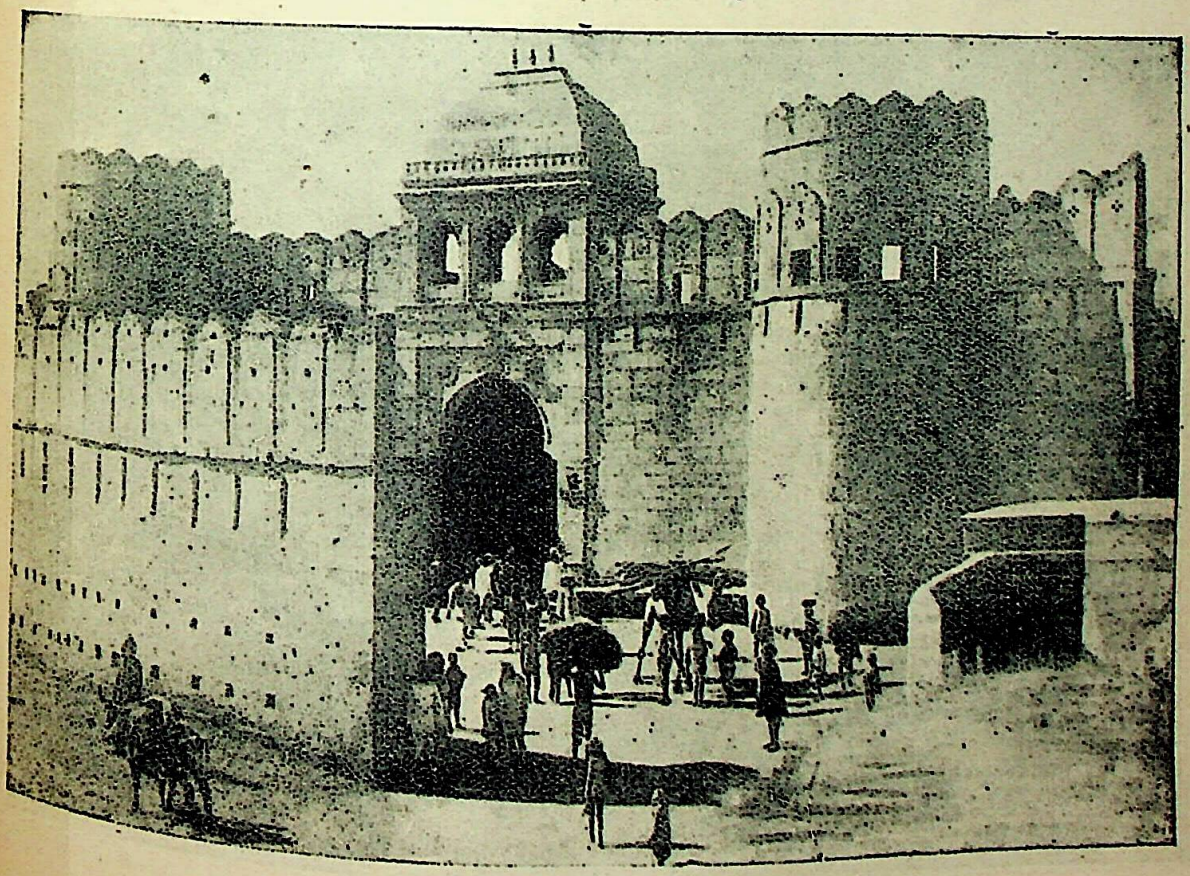

मेड़ती दरवाजा, जोधपुर (शहर के बाहर से)

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

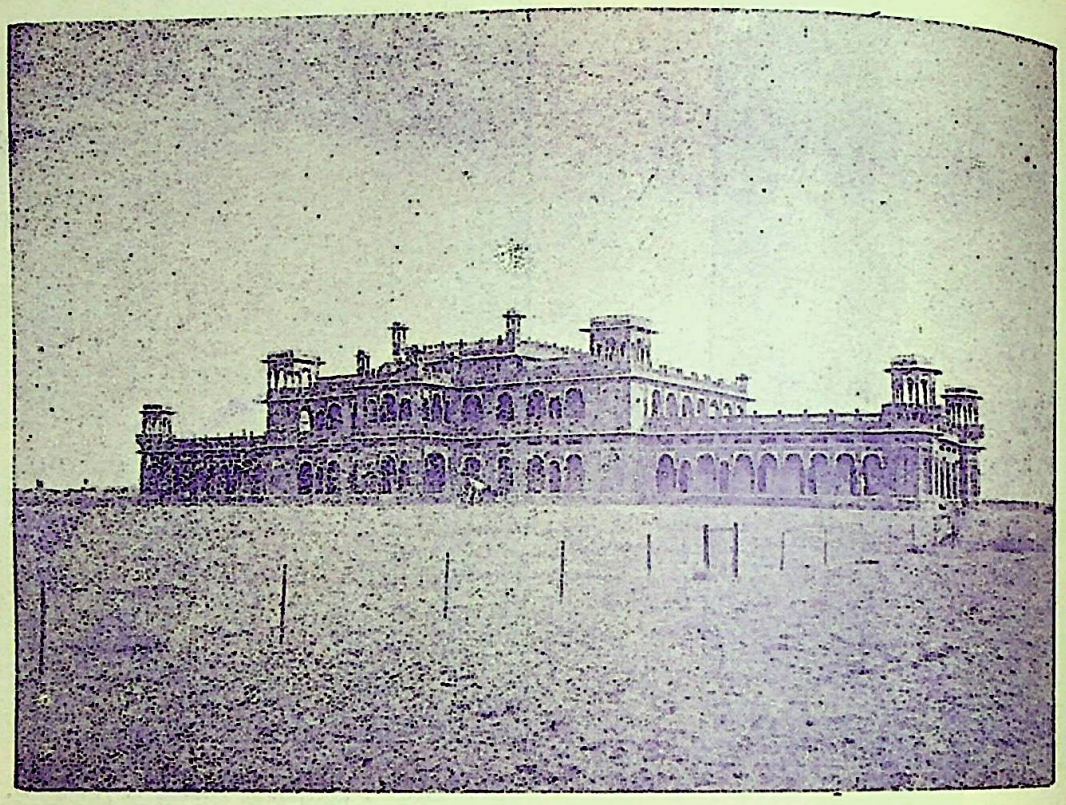

राजपूत हाईस्कूल, जोधपुर

फ़तेहसागर तालाब और जोधपुर का क़िला

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

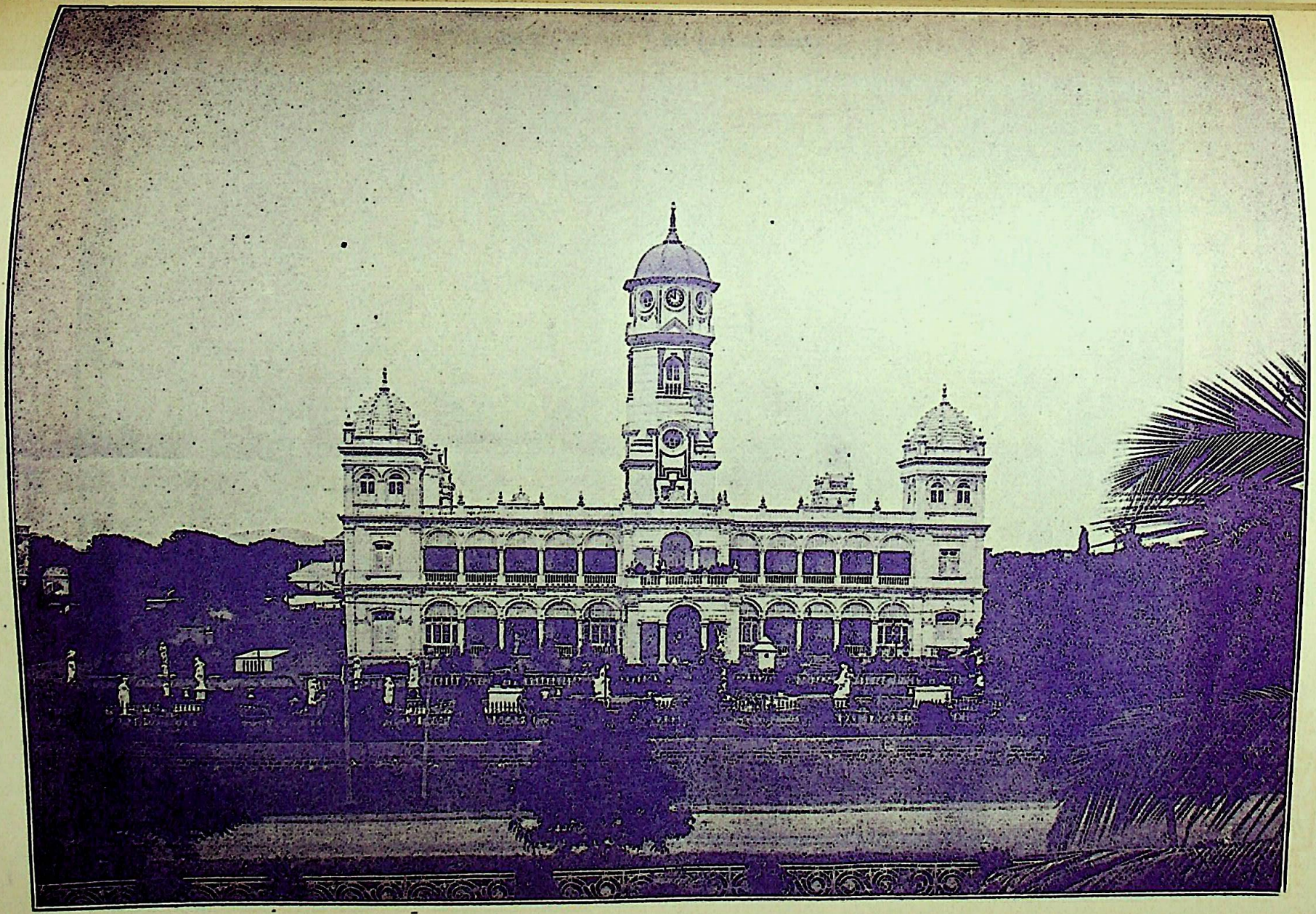

इन्दौर के धन-कुबेर सर हुकमचन्द जी का "इन्दभवन"

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

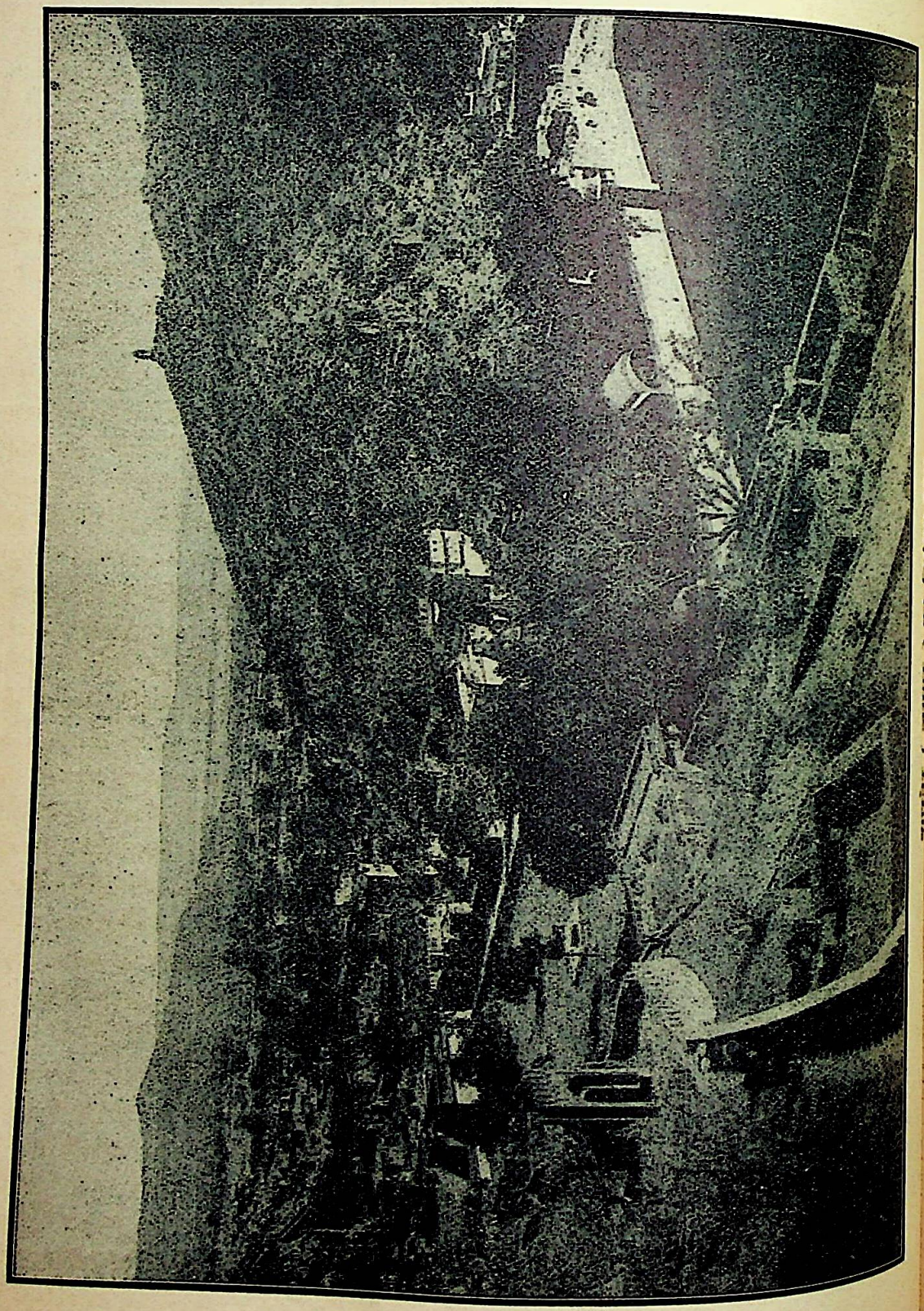

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

(जोरू-दास) हो। यदि ईश्वर ये इच्छाएँ पूर्ण कर दे तो फिर कुछ कमी नहीं है।

नाई जाति की, जिसके हाथ का बनाया हुआ भोजन राजपूत, ओसवाल महाजन, माली, जाट, चारण, पुरोहित आदि खाते हैं, इच्छा यह रहती है कि :—

नायण दायण होय, बिर्त होवे बाणियाँ।
बिणियाणियाँ बेवकूफ, कराँ मन जाणियाँ॥
मरण परण माल, मीठा नित खावणाँ।
इतरा दे किरतार, फेर काँई चावणाँ॥

अर्थात्—मेरी स्त्री दायी हो, बनियों के यहाँ मेरी यजमानी हो, बनियों की स्त्रियाँ मूर्खा हों, ताकि मैं मन-माना करूँ, और शादी तथा ग़मी के मौक़ों पर मिठाई ख़ूब हाथ आती रहे। बस, ईश्वर से यही प्रार्थना करता हूँ।

ढोली और दमामी (नक़ारची) आदि की इच्छा इस प्रकार कही जाती है :—

सोवाँ कोसाँ व्याव, जरूर जावणाँ।
सागे हो दो चार, तो आठ बतावणाँ॥
गुड़ घी मेदो बेच, काँदा छोलणाँ।
इतरा दे किरतार, फेर नहीं बोलणाँ॥

अर्थात्—चाहे सौ कोस पर भी विवाह रचा जावे, परन्तु हम लोग वहाँ ज़रूर जावें, हमारे साथ में यदि दो-चार आदमी हों तो यजमान को दुगुनी-तिगुनी संख्या बतावें। और उससे भोजन के लिए घी, गुड़, मैदा, आटा आदि सीधा लेवें, परन्तु इस सामान को काम में न लाकर, उसे बेच दें और प्याज़ से रोटी खाकर गुज़ारा कर लें। हे प्रभु, हमारी यही इच्छा है।

मुसलमानों का चरित्र इस प्रकार बखाना जाता है :—

मिले तो मीर, नहीं तो फ़क़ीर और मरे तो पीर।

यदि मुझे द्रव्य मिले तो मेरा नाम मीर साहब (ख़ाँ साहब) होगा, यदि मेरे घर में चूहे दण्ड पेलते हों तो औलिया (फ़क़ीर) बन जाऊँगा, और मरने के बाद पीर तो कहलाऊँगा ही।

—रामसुन्दर शर्मा

* * *

हमारा सनातन-धर्म

"हमें क्या काम दुनिया से"—कोई मरे या जले, हमें क्या? किसी का सत्यानाश हो तो हमें इससे क्या? हमारा उससे वास्ता! जिसकी मृत्यु ही आ गई होगी या जिसका सत्यानाश ही होना बदा होगा उसको ब्रह्मा भी नहीं बचा सकता। "विधि कर लिखा को मेटनहारा।" अरे भाई! भोंदू की माता भी नहीं होती! तुमने क्या नहीं सुना? भोंदू का हिमायती हमेशा हारा करता है—ठीक इसी प्रकार की बातें हम अपने अधिकांश मारवाड़ी भाइयों के श्रीमुख से सुनते हैं, जब कि उनके सामने हिन्दुत्व का क़ायल कोई भलामानुष धार्मिक एवं सामाजिक अत्याचारों की बर्बरता से कुचले हुए, विवाह के फल से दासता की बेड़ियाँ पहने हुए, दुःख-दारिद्र्य ग्रसित हिन्दू-समाज की वर्तमान दुर्दशा का करुणापूर्ण विवेचन करता है; जब उनसे कहा जाता है कि तुम हिन्दू हो, तुम हिन्दुस्तानी हो, इसलिए तुम्हारा फ़र्ज़ है कि तुम हिन्दुत्व के नाते अपने दीन-हीन, दुखी भाइयों की रक्षा करो, उन्हें राम और कृष्ण के सुन्दर दर्शन करने दो, अपने इन दीन-दुखी भाइयों को अपनाओ, क्योंकि तुम्हारे लिए, तुम्हारी मान-रक्षा के लिए, हिन्दुत्व के नाम के लिए, तलवार की धार पर अपने को बलि चढ़ाने वाले ये तुम्हारे सच्चे हितैषी हैं! अथवा जब उनसे अपनी भोली-भाली बालिकाओं को सुशिक्षा देने एवं यथोचित लालन-पालन करके, विवाह-योग्य वयस होने पर योग्य वर चुन कर उनका विवाह करने को कहा जाता है, अथवा अपनी विधवा बहू, बहिन और बेटियों की दयनीय दशा, सर्द आहों पर तरस खाने को, उनका पुनर्विवाह करने को, कहा जाता है, तो सहसा वे चौंक पड़ते हैं। मानो सहस्रों बिच्छुओं ने एक साथ ही डङ्क मारा हो। काटो तो ख़ून नहीं, बस एकदम तिल-मिला उठते हैं और कहने वाले की तरफ़ क्रोधित साँप की तरह ऐसे झपटते हैं कि मानो उसे जीता ही निगल जायँगे। भूखे व्याघ्र की नाईं उसे कच्चा ही चबा जायँगे। बस फिर क्या! एक साथ ही सहस्रों वाग्बाणों की वर्षा शुरू हो जाती है—"तुम नास्तिक हो, आर्यसमाजी हो, तुम ढेड़ों के साथ खाने वाले हो, पतित हो, आचार-भ्रष्ट हो,

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

म्लेच्छ हो, चाण्डाल हो, चलो हट जाओ हमारे सामने से! अगर ज़्यादा बक-बक की तो खोपड़ी तोड़ दी जायगी। हम सनातनधर्मी हैं और कट्टर सनातनधर्मी हैं। अछूतों की रक्षा करना, उन्हें मन्दिर-प्रवेश कर देव-दर्शन करने देना तो दूर रहा, उनको देखना तक घोर पाप है। वे अपने पूर्वजन्म के कर्मों से इस पाप-योनि को पाने के अधिकारी हुए हैं। अतः इससे उनकी कदापि मुक्ति नहीं हो सकती।"

कन्या का लालन-पालन कैसा? उसके भूमि पर गिरते ही शिर पर दो हत्थड़ मारा जाता है—'हाय! पत्थर आ पड़ा!' उसको राँड़, कर्कशा आदि कह कर सत्कार किया जाता है। उसका पढ़ाना महान् पाप एवं घोर विपत्ति का आवाहन करना है। वह पढ़-लिख कर क्या कोई नौकरी थोड़े ही करेगी? पढ़-लिख कर वह एकदम बिगड़ जायगी। हमारे शास्त्रों में तो लिखा है कि कन्या को पढ़ाने से वह जल्दी ही राँड़ हो जाती है; अतः जान-बूझ कर आफ़त मोल कौन ले? कन्या के लिए वर और वयस का क्या देखना! "अष्ट वर्षा भवेद् गौरी" की हमारे शास्त्रों की आज्ञा है। वर चाहे बालक हो, प्रौढ़ हो, लूला हो, लँगड़ा हो, गूँगा, बहरा, नपुंसक, अपङ्ग—यहाँ तक कि चाहे मरणासन्न बूढ़ा ही क्यों न हो, होना चाहिए वह गाँठ का पूरा और अक्ल का अधूरा! अगर दो पैसा पास होगा तो बेचारी बेवा होने पर सुख से दाल-रोटी खाएगी और चैन की वंशी बजाएगी! न किसी की ग़रज़ रहेगी और न किसी का भय ही। छिः छिः! कैसा घृणित व्यापार है! क्या विधवा का कभी पुनर्विवाह हुआ है? "तिरिया तेल हमीर हठ चढ़े न दूजी बार।" अतः यह शास्त्र-विरुद्ध है। इससे समाज में व्यभिचार बढ़ेगा!

ये हैं हमारे मारवाड़ी भाइयों के उपदेशामृत! ये ही हैं हमारे वर्तमान सनातन-धर्म के उसूल! पर वास्तव में ये बातें भी केवल कहने की हैं। दूसरे के कहने से और जान-बूझ कर ये लोग अछूतों के सुधार और उद्धार की तरफ़ ज़रा भी ध्यान न देंगे और हर तरह उनसे घृणा दिखलावेंगे, पर पुरानी रूढ़ि के अनुसार इन बातों के विपरीत काम भी सहज में कर लेंगे। शायद आप आश्चर्य करेंगे कि यह क्या, धर्म-भीरु मारवाड़ी उपरोक्त बाबा-वाक्यों के प्रतिकूल कैसे चल सकते हैं; यह तो किसी प्रकार सम्भव ही नहीं। अच्छा सुनिए, और ख़ूब ध्यान देकर सुनिए। तब आपको चलेगा कि हमारे मारवाड़ी भाई अछूतोद्धार किस प्रकार करते हैं? इनका अछूतोद्धार ऐसा बढ़िया है कि उसकी तारीफ़ ही मुँह से निकलती है!

हाँ, तो पाठक, हमारे साथ आइए और राजपूताने के इस मरुस्थल की सैर कीजिए। एक तो वर्षाऋतु है, फिर भादों का महीना! तिस पर भी अब की बार इन्द्र महाराज की काफ़ी कृपा हो चुकी है। "राजेश्वर" के जङ्गल में चारों तरफ़ हरियाली ही हरियाली दिखाई देती है। कटीली झाड़ियों की बहार तो एक अजब ही ला रही है—मानो नवयौवना का नवयौवन उभरा है। आज भादों सुदी ११ का दिवस है। रामदेव जी का मेला है। ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र सभी कोई यहाँ हज़ारों की संख्या में, बड़ी-बड़ी भीड़ में कोई पैदल तो कोई ऊँट पर, कोई बैलगाड़ी पर, कोई रेलगाड़ी पर—रामसा पीर की अटल श्रद्धा से नारियल चढ़ाने आए हैं। और आए हैं अपने भाइयों को गले लगाने, उनके प्रति अपना शुद्ध प्रेम प्रदर्शित करने! अच्छा तो चलिए पहले रामसा पीर का दर्शन कर लें, तब फिर मेला देखेंगे। हैं! क्या, कोई रामानन्दी तिलक धारण किए है, तो कोई त्रिपुण्ड्र लगाए है; कोई गले में तुलसी की माला, मस्तक पर कुङ्कुम का चीरवाँ तिलक काढ़े हुए परम वैष्णवता को झलका रहा है, तो कोई मस्तक केवल बिन्दी ही धारण किए हुए है। और यह सब ये मस्तक पर बिना चिह्न को धारण किए हुए, वही खादी (एक प्रकार की खादी) और खद्दर की अँगरखी, साफ़ा, पगड़ी पहने हुए तथा गले में श्रीरामदेव की मूर्ति पहने हुए एकदम साफ़-सुथरे लोग कौन हैं! यह तो रैगड़, चमार, बलई, ढेंढ़—सब अछूत ही हैं। यहाँ तो सब एक भाव है। भीड़ बड़ी प्रबल है और लोग एक दूसरे पर गिरे पड़ते हैं। किसी विशेष के गिर जाने पर फ़ौरन ही सब कोई उसको सँभालने के लिए उसकी ओर झुक पड़ते हैं और हाथोंहाथ उठा कर खड़ा कर देते हैं।

यह देखिए, एक परम वैष्णव वैश्य महाशय बाँह फोड़ कर तथा चार पैसे की रेवड़ियाँ लेकर श्रीरामदेव जी को चढ़ाने के लिए आगे बढ़ ही रहे थे कि एक विशेष

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

धारी ब्राह्मण देवता फ़ौरन ही उसको ढकेल कर आगे बढ़ गए और अपना नारियल का गोटा तथा रेवड़ियाँ और बताशे कामड़िए (पुजारी) के हाथ में दे दिए। उसने फ़ौरन ही आधा गोटा तो श्रीरामसा को चढ़ा दिया और आधे में श्रीरामदेव जी की रक्षा (भस्म) भर कर ब्राह्मण देवता के हवाले कर दिया। ब्राह्मण-देवता मारे ख़ुशी के सिर पर, पेट पर, मस्तक पर और आँखों पर भस्म लगाते हुए फूल कर कुप्पा हो गए और मन्दिर के बाहर आए। लगे नारियल की चिटकी (टुकड़े) बताशे और बाबे की रिक्षा सबको बाँटने। अभी वह चिटकी बाँट ही रहे थे कि इतने में वही वैश्य महोदय और उनके पीछे एक और ठाकुर साहब मन्दिर के बाहर आकर रेवड़ी तथा चिटकी और रिक्षा बाँटने लगे। अभी तक ये लोग चिटकी इत्यादि भीड़ को बाँट ही रहे थे कि इतने में एक अछूत भाई चिटकी, रेवड़ी और रक्षा लिए हुए आया और सबको बाबे का प्रसाद बाँटने लगा। सब ही ने बढ़-बढ़ कर हाथ पर प्रसाद लिया और ख़ुशी-ख़ुशी, बिना किसी प्रकार की हिचकिचाहट के फ़ौरन ही निगल गए। हाँ, तो भला यह तो बताइए कि ये कामड़िए (पुजारी) हैं कौन? ये हैं श्रीरामदेव जी बाबा के पुजारी अनन्य भक्त ढेंढ़, बलई, थोरी, रेंगड़ और चमार आदि अछूत! यदि कोई बाबा के दरबार में आकर उनके प्यारे इन अछूत भाइयों से परहेज़ करता है, तो वह अपङ्ग, कोढ़ी अथवा अन्धा हो जाता है! और जो कोढ़ी, अपङ्ग अथवा अन्धा यहाँ श्रद्धा-भक्ति से बाबा के दर्शन करने आता है, तो उसकी सारी आधि-व्याधि दूर होकर कञ्चन-काया हो जाती है! ठीक इसी ढङ्ग के मेले राजपूताने के प्रायः तमाम शहरों में हुआ करते हैं। पर सबसे बड़ा मेला यही होता है। क्योंकि यही बाबा का आदि समाधि-स्थान है!

देखा पाठक, कैसा वास्तविक और सच्चा अछूतोद्धार है। क्या इससे ज़बर्दस्त और कोई अछूतोद्धार हो सकता है? ठीक इसी प्रकार का वृत्तान्त श्रीगोगा जी के मेले का है, जिसे स्थानाभाव से एवं उपरोक्त मेले के समान ही वृत्तान्त होने के कारण, यहाँ देना अनावश्यक है। याद रहे कि गोगा जी के पुजारी भी हमारे अछूत-भाई ही हैं। अस्तु—

यह तो हुआ हमारे अछूतोद्धारक होने का वर्णन, अब सुनिए कन्याओं के पढ़ाने की बात। कन्या को हम पढ़ाते हैं अवश्य, मगर क्या? नारी-महत्व, गृहिणी-धर्म का ज्ञान? राम, राम! सीताराम! नारी का महत्व किस चिड़िया का नाम है? गृहिणी-धर्म किस बला को कहते हैं? उनको सिखलाया जाता है—घर की बड़ी-बूढ़ी, दादियों, माता और बहिनों द्वारा—ससुराल में जाकर सास-ससुर, पति-जेठ, ननद इत्यादि से लड़ना-झगड़ना तथा पति-देवता को नित नए फ़ैशन के कपड़े और गहने बनवाने को मजबूर करना, साथ ही तीज-त्योहार, मेले-ठेलों एवं विवाह इत्यादि में समधियों को भ्रष्ट एवं अश्लील, स्त्री-पुरुष के गुप्त अङ्गों के खुले नाम ले-लेकर गन्दी गालियाँ, डङ्का, सीठना, व गायन इत्यादि, जिनको सुन कर बेचारी लज्जा को भी लज्जा आ जाती है!

क्या इसके लिए हम अपनी कन्याओं को अपराधी ठहरावें, अथवा इन गायनों को सिखाने वाली हमारी बड़ी-बूढ़ी दादियों एवं माता, बहिन, बेटियों को दोषी क़रार दें? नहीं! अगर अपराधी हैं तो हम (पुरुष-वर्ग) ही हैं। यह स्वाभाविक है कि पुरुष जिस बात से ख़ुश होगा, स्त्रियाँ वही कार्य करेंगी। उनका धर्म भी उनको यही सिखाता है। यदि हम स्त्री-पुरुषों के गुप्त-अङ्गों का नाम ले-लेकर व्यभिचार की भावना-पूर्ण हँसी-दिल्लगी से उन्हें गन्दे एवं भ्रष्ट गीत गाने के लिए मजबूर न करें, और उनके "केसरिया पाग झाँट को तुरों" या "आज सगीजी रो नयो लटको, टाँग उठाय कर चित पटको" इत्यादि गीत गाने पर बेशर्म जाहिलों की तरह 'ही-ही' करके "सगीजी एक मजेदार और अवरण दो" की निर्लज्ज माँग न करें, तो वे कभी ऐसा करने को तैयार न हों। हम इतने से ही शान्त नहीं हो जाते, अपनी स्त्रियों के मुँह से गन्दे गीत गवा कर ही सन्तुष्ट नहीं हो जाते, बल्कि होली के अवसर पर मण्ड-लियाँ बना-बना कर हम स्वयं भी अपने मुँह से "ओहो; सामण साची रे, बाबे जी.....! लश्कर में सामण साची रे। अथवा चोदी रे चिणोरे खेत में" इत्यादि अनेक प्रकार के ज़हरीले पनाले (पिता-पुत्र, बड़े-छोटे सब एक साथ) अपनी बड़ी-बूढ़ी, माँ, बहिन, बेटियों के सामने उगल कर उनके समक्ष एक काला-आदर्श रखते हैं। होलिका-दहन के समय हम अपने बालकों को साथ लेकर "हो-हो होली रे, छोरा चोदे छोरी रे" का पवित्र मन्त्रोच्चारण करते हुए होली की परिक्रमा करते हैं! ध्यान रहे कि उस वक़्त भी

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

हमारी माँ, बहिन, बेटियाँ दर्शक-रूप में वहाँ हाज़िर रहती हैं। प्रभो! यह कैसा रौरव कृत्य है!

यह है कन्याओं की शिक्षा, जिससे न तो उनके बिगड़ने का भय है (?) और न उनके राँड़ होने का ही!

अब देखिए कन्या की विवाह-व्यवस्था! ज्योंही वह आठ वर्ष की हुई, उसका येन-केन-प्रकारेण—चाहे जैसा वर मिले, विवाह करने की फ़िक्र पड़ गई। अगर कोई मुँह पर ख़िज़ाब की कालिख पोतने वाला, आँखों का अन्धा और गाँठ का पूरा मिल गया, तब तो फिर क्या कहना—पौ-बारह हैं, बस पाँचो अँगुली घी में हैं। और यदि फूटी क़िस्मत से किसी को ऐसा वर नहीं मिला तो फिर जैसा कोई मिल गया, कन्या के हाथ पीले करके अपना पिण्ड छुड़ाया। चलो छुट्टी हुई, आफ़त गले से टली। कन्या का भविष्य बिगड़े या सुधरे, इससे हमें कोई प्रयोजन नहीं।

हम अपनी बेवा बहू-बेटियों पर तरस खाते हैं, और बहुत खाते हैं। और इसीलिए उनको अच्छे माल खिलाते हैं, फ़ैन्सी सिल्क एवं इकतारी अभरवाँ मलमल की साड़ियाँ पहनाते हैं। उनकी सर्द आहों पर घड़ों आँसू बहाते हैं, इसलिए कि वे हमारे सिर पर बोझ-रूप हो गईं—इसलिए नहीं कि उनके दुःख से हम दुखित हैं। उनका पुनर्विवाह क्यों किया जाय, जब बिना ब्याह ही काम चल जाता है! पुनर्विवाह हो जाने से तो वे एक ही की हो जायँगी। फिर वे सबके उपयोग में नहीं आ सकेंगी। ब्याह न करने से विधवा सार्वजनिक सम्पत्ति (Public Property) रहती है, हर किसी के उपयोग में आती है! यदि दैवयोग से कहीं गर्भ भी रह गया तो फूटा राँड़ का भाग, बाबा जी तो सिद्ध ही हैं। अगर किसी को मालूम न पड़ा तब तो चुपके से झट अधूरा ही गिरवा दिया, और अगर लोगों को मालूम हो गया तो राँड़ को व्यभिचारिणी का सर्टिफ़िकेट देकर चट से जाति बाहर कर दिया! बेचारी को दीन-दुनिया से नष्ट किया—पहले वैसे और अब ऐसे! दिया धक्का, जा भैंस पानी में! इस प्रकार न मालूम समाज द्वारा तिरस्कृत एवं अत्याचार-पीड़ित कितनी उच्च वंशीय मारवाड़ी-ललनाएँ विधर्मियों की बग़ल में बैठी हुई हमारे मारवाड़ी-समाज का मुख उज्ज्वल कर रही हैं!

यह तो हुई उनकी—नहीं, नहीं, हम कापुरुषों के पाप प्रकट होने की बात। परन्तु वे समाज में रहती हैं लुच्चे, लुङ्गाड़े, गुण्डे, बदमाश तथा व्यभिचारी कुटुम्बी देवर, जेठ व ससुर, यहाँ तक कि अपने चाचा-ताऊ छल, कपट, लोभ अथवा बलात्कार द्वारा भले ही की जाती रहें; आए-दिन भ्रूण-हत्याएँ कर, भले ही मुँह में कालिख पोतती रहें—इससे हमारा कुछ नहीं बिगड़ता; इससे समाज में व्यभिचार नहीं बढ़ता; व्यभिचार बढ़ता है विधवाओं का पुनर्विवाह करने से उन्हें किसी एक की कर देने में!!

हम स्वयं वैसे चाहे किसी अन्य जाति की स्त्री भले ही घर में डाल लें, अथवा हमारी विधवाएँ चाहे जिस क़ौम के व्यक्ति के साथ प्रेम-लीला करें, पर हम विधवा-विवाह तो कभी न करेंगे। नीच क़ौम की स्त्रियों को घर में डालना अथवा विधवाओं का नीच क़ौम के व्यक्तियों से प्रेम करना तो सदा से ही होते आए हैं। यह तो पहले होता था—यह कोई नई बात नहीं है! ओफ़! कैसी अमानुषिक चर्चा है! कितनी भयङ्कर बेहयाई है! नहीं नहीं, यही हमारा सनातन-धर्म है। बोल सनातन-धर्म की जय!!

—श्रीगोपाल

* * *

मारवाड़ की मरोड़

उर्दू-लिपि में जैसे कि एक नुक़्ते से किसी शब्द का मतलब ही ख़त्म हो जाता है, वैसे ही मारवाड़ में भी "नुकतों" की फ़िज़ूलख़र्ची की रीति ने घर जमाया है कि इससे कितने ही घर नष्ट हो गए परन्तु फिर भी इस शोचनीय दशा पर किसी का ध्यान नहीं जाता। जब तक दम में दम रहे, पास कौड़ी भी न रहे तो भी—"करजा करना, धरती धरणी मरणी मरना।" चाहे भूख से पीड़ित रहा जाय, बाल-बच्चों की दुर्दशा हो जाय, चाहे नीच काम करना पड़े, तो कोई हरकत नहीं, पर अपने घर का या जवान कोई भी मर जाय तो उसके पीछे बिरादरी को जिमाना या छन्यात करना आवश्यक हो जाता है। चाहे बाबा जी ने फ़ाक़े

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

हो दिन बिताएँ हों, पर अपना मान तो मरने वाले के पीछे बेमौत मरने ही में समझ रक्खा है। यदि किसी हमारे

(१६५ पृष्ठ का शेषांश)

विवाह करने को राज़ी न होगा। इस समय उसकी उम्र है ३५ के लगभग। हमने बहुत चेष्टा की कि किसी अपने ही जैसे आदमी से विवाह करो तो हम करा दें, पर वह नहीं समझती!

उपरोक्त कथा कैसी भयानक है, जिसे पढ़ कर रोम-रोम थर्रा उठता है, हृदय काँपने लगता है। ऐसी अनेक बहिनें खोज करने पर इस समाज में कलकत्ते में ही मिल सकती हैं। वे चाहती हैं कि हम उन्नति करें, पर मारवाड़ी रूढ़ियाँ—समाज के नियम ही ऐसे सङ्कीर्ण हैं कि उन्हें उस घृणित पथ में पड़े रहना पड़ता है।

स्त्रियों की दशा न भी अच्छी हो—पुरुष तो ज्ञान-वान् होने चाहिएँ! छोटी श्रेणी के मारवाड़ी-युवक तो एकदम साहसहीन होते हैं। दिन भर झूठ बोलेंगे—दलाली करेंगे, चोरी से सट्टा लगाएँगे और रात को मन्दिर में जाकर कान पकड़ कर अपराधों की क्षमा माँग लेंगे। ठाकुर जी के सामने इतने ज़ोर से आरती पढ़ते हैं, नाचते हैं, कीर्त्तन करते हैं कि मन्दिर गूँज उठता है। पर दुख तो यह है, उनमें आत्म-शक्ति किसी तरह नहीं आती और उनके युवा चेहरे पर कभी भी कान्ति नहीं झलकती!

कलकत्ते में बहुत थोड़े युवक ऐसे पाए गए जो विद्या-प्रेमी और समझदार हैं। इनसे हमने बातें कीं तो हमें बहुत ही प्रसन्नता हुई कि मारवाड़ी-समाज में यह छिपी आशा हमें दीख रही है।

अन्त में हम समस्त मारवाड़ी-समाज से प्रार्थना करते हैं कि वह अपनी बुराइयों को जड़ से दूर करने के लिए कमर कस कर तैयार हो जाय और प्रत्येक बालक-बालिका, स्त्री-पुरुष, वृद्ध-वृद्धा—सब कोई सच्चे धर्म और विश्वास की डोरी पकड़ें। वह समय बहुत जल्द आ रहा है, जब कि प्रत्येक व्यक्ति को लोहे जैसा सब तरफ़ से ठोस बनने की ज़रूरत है। न बाहर से पोला, न अन्दर से पोला—एकदम ठोस! कोई ऐब पकड़ ही नहीं सकता। आँच में भी तपा लो, लाल-लाल ज्योति बिखर पड़े। इसी प्रकार उत्तम बनने की समाज को प्रतिज्ञा करनी चाहिए। ईश्वर उसे सफलता प्रदान करें।

* * *

जैसे मूर्ख ने—अपनी दशा को देखते हुए—किफ़ायत से काम लेना चाहा या 'नुकता' न करना चाहा तो क्या वह बिरादरी में अपनी प्रतिष्ठा क़ायम रख कर अपने मृत-पुरुष को स्वर्ग-प्राप्ति का सर्टिफ़िकेट हासिल कराने में समर्थ हो सकेगा? कदापि नहीं! यदि नुकता नहीं किया गया तो बस नाक होते हुए भी कटी हुई ही समझी जायगी। यह है मारवाड़ी-समाज की बुद्धिमानी और अपने से कमज़ोर भाई के साथ सहानुभूति का नमूना! समाज के कई भाई इन्हीं औसर-मौसर की फ़िज़ूलख़र्चियों से हीन दशा में पहुँच कर दारिद्र्य देव के उपासक बन गए, पर नुकता घर से न टलने दिया! इसी से वे मिट्टी में मिल गए, उनके घर-बार नष्ट हो गए। अब वे ही लोग, जो इन्हें इस कार्य में उत्साहित करते थे, इनकी हीन दशा देख कर ख़ुश होते, ताली बजाते और हँसी उड़ाते हैं! देखिए इस देश की कैसी सराहनीय प्रथा है। यदि किसी भाई के घर पर किसी प्रकार की आफ़त आ जाय, बीमारी की हालत हो, और ऐसी दशा में किसी से सहायता के लिए याचना की जाय तो लाखों बहाने बनाएँगे, ख़ुद बीमार हो जायँगे। किसी अबला स्त्री ने कष्ट के समय सहायता के लिए याचना की तो अनेक प्रकार की टालमटोल बतला देंगे। यदि कोई अपना ग़रीब भाई मर जाय तो उसके लोका-चार में जाने में भी अनेक आपत्तियाँ और बहाने करेंगे। मृत-पुरुष के घर वालों को मदद देना तो दरकिनार रहा, बारहवें दिन लड्डू या सीरा-सम्मेलन का अधिवेशन मनाने के लिए उसे उत्साहित करेंगे—बिना बुलाए ही उसके घर पर पहुँच कर कहेंगे कि बाज़ार से सामान मँगवाया या नहीं? यदि न मँगवाया हो तो जल्दी मँगवाना चाहिए। घी बढ़िया और खाँड़ देशी व शुद्ध होनी चाहिए और रसोई बनाने वाला कारीगर भी नामी होना चाहिए, ताकि माल अच्छा बने और खाने वाले सराहना करें, तभी मृतक की सद्गति और उसे स्वर्ग प्राप्त हो सकेगा। क्या ख़ूब! अपने एक भाई के मरने पर शोक के स्थान में इस प्रकार प्रसन्नता और उत्साह प्रकट करते हैं, मानो घर से कोई आफ़त टल गई हो। इस बात को तो विस्मरण ही कर देते हैं कि इनके घर का संरक्षक, इनके घर की सँभाल रखने वाला, घर की ढाल आज चल बसा। उनको तो सीरे और लड्डू खाने

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

से मतलब होता है ! वाह भाई मारवाड़ियो, शाबाश तुम्हारी बुद्धि और नीयत पर ! हमने तो "गोकुल गाम का पैंड़ा ही न्यारा" वाली लोकोक्ति सुन रक्खी थी, पर इसे भी "मारवाड़ का पैंड़ा ही न्यारा" कहें तो क्या झूठ है ?

हमारे यहाँ की सब रीति-रिवाजें, मान-मर्यादाएँ आदि हमारे धनाढ्य भाइयों पर ही निर्भर रहती हैं। वे ही लोग अपनी शान और गुमान में फूले हुए, अनर्थ के कारण बन रहे हैं। वे जितने बड़े बने हुए हैं, उतने ही बड़े नुकते 'शहर-सारणी' (नगर-भोज) तक कर डालते हैं ! यह बतलाने के लिए कि हम बड़े हैं, हमारे जैसा क्या कोई कर सकेगा, अपनी शेख़ी बघारने के लिए, जाति में बड़ा बनने के लिए, धड़ाधड़ नुकते करने से नहीं चूकते। इसी को मरे के पीछे मरना कहते हैं। इस शान बघारने का अन्त में परिणाम यह होता है कि वे कङ्गाल होकर दर-ब-दर मारे-मारे फिरते हैं, और अनेक प्रकार की तानाज़नी सहते हैं। यह घर फूँक तमाशा देखना नहीं तो और क्या है ? किसी उर्दू शायर ने क्या ही अच्छा कहा है :—

फिर औरों की तकते फिरोगे सख़ावत।
न डालो सख़ावत की आदत ज़ियादा ॥

लोग इनकी ऐसी हीन अवस्था देख कर कहते हैं कि इनके बाप-दादा ऐसे थे, वैसे थे, अब ये निखट्टू ऐसे हुए कि कहीं रहने को जगह तक नहीं ; इतना धन था, न मालूम कहाँ चला गया ? चला कहाँ गया औसर-नुकतों द्वारा आप जैसे सीरा-प्रेमी भोजन-भट्टों के उदरों में चला गया ! आप कहेंगे कि तो क्या मरने वाले के पीछे कुछ भी नहीं किया जाना चाहिए ? किया क्यों नहीं जावे—दुःखी आत्माओं को पोषण करना चाहिए, न कि मरे को मारना। "जितनी ठौड़ उतनी सौड़" के अनुसार काम करना चाहिए, न कि अपनी शान दिखाने के लिए उम्र भर कष्ट उठाते रहने का सामान करना ! ऐसे लोगों को घर-बार गिरवी रख, देश छोड़, परदेश की राह लेना पड़ता है। जो यश उसने नुकते से कमाया, उसे कमर में बाँध, अपनी जड़ खोद नेस्तनाबूद होकर भागना पड़ता है। यदि एक अबला का पति मर जाय तो लोग आकर यही सम्मति देंगे कि अब तुम्हारे लिए सब ज़ेवर-आभूषण व्यर्थ हैं, इन्हें बेच-बाच कर औसर करना लाज़िमी है। यदि कुछ भी न हो तो घर ही बेचो, पर नुकता करो—ऐसा मौक़ा बार-बार नहीं मिलता ! यदि वह अबला कह दे कि मेरे पास कुछ नहीं है, और कुछ है भी तो उसके सहारे ही मैं अपना शेष जीवन का निर्वाह करूँगी, बाल-बच्चों का पालन-पोषण कर उनको लिखा-पढ़ा कर होशियार करूँगी, तो वे मिष्टान्न-प्रेमी क्रोधित होकर कहते हैं—यह तो जानी हुई बात है कि यह कुल-कलङ्किनी बन कर घर को, ख़ानदान को अपमानित करेगी ! बेचारी अबला डर कर इनके फाँसे में आ जाती है और उससे ये लोग नुकता (औसर) करा ही लेते हैं, और एक ही दिन में उस निस्सहाय अबला के शेष जीवन के भरण-पोषण के साधन को स्वाहा कर डालते हैं ! वह अबला बेचारी अपना पेट चक्की पीस कर, किसी के यहाँ रसोई बना कर या अन्य कार्य करके पालती है। यहाँ तक कि विवश होकर व्यभिचार भी करना पड़ता है ! उस वक़्त समाज के पञ्चों, भाई-बन्दों, कुटुम्बियों और उन मिष्टान्न-प्रेमियों की नाक नौ हाथ की बढ़ जाती है ! पर वे यह नहीं सोचते कि उस बेचारी अबला को पतन का रास्ता दिखाया किसने ? उन्हीं ने, जो पूर्ण धार्मिक, समाज के सरताज (पञ्चराज) और सनातनधर्मी बनने का दम भरते हैं !!

सच्चे सनातनधर्मी और समाज-सेवक तो वे हैं जिनके हृदय में रात-दिन समाज-सेवा की ही लगन रहती है ; जो इस काम में अपने शरीर और स्वास्थ्य तक की परवा नहीं करते ; जो लाखों रुपए अबलाओं की रक्षा के लिए बनिता-आश्रम बनाने में ; अनाथ बच्चों के लिए अनाथालय खोलने में ; रोगियों एवं पीड़ितों के लिए अस्पतालादि खोलने में ; पथिकों के आराम के लिए धर्मशालाएँ बनवाने में ; बच्चों की उच्च शिक्षा एवं ज्ञान-वृद्धि के लिए विद्यालय, पुस्तकालय, वाचनालय स्थापित करने में, असहाय अबलाओं, छात्रों और उन सफ़ेदपोशों को, जो किसी से सहायता माँगने में हिचकिचाते हैं, मुक्त-हस्त से गुप्त सहायता करने में ख़र्च करते हैं। और प्राचीन विद्याओं और कला-कौशल के उद्धार के लिए प्रयत्नशील रहते हैं, वे ही सच्चे सनातनधर्मी और आदर्श दानी हैं। हैं कुछ मन्द-बुद्धि अपनी ही और पक्षपात के कारण पथ-भ्रष्ट, नास्तिक, आर्यसमाजी

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

और समाज-विद्रोही कहते हैं। क्या ख़ूब ! बलिहारी है इस विचित्र बुद्धिमानी की !

अब मैं यह निर्णय पाठकों पर ही छोड़ता हूँ कि एक दिन के मिष्टान्न भोजन के लिए किसी के उम्र भर का नष्ट कर क्षण भर के लिए वाह-वाह करने वाले सम्बल सच्चे सुधारक, समाज-सेवी और सनातनी हैं या उपरोक्त रूप से सात्विक दान देने वाले और स्थायी रूप से मनुष्य-मात्र को लाभ पहुँचाने वाले ? पाठक स्वयं ही सत्यासत्य का विचार करेंगे ! अन्त में मेरा सब भाइयों से यही निवेदन है कि सभी कुरीतियों को नष्ट कर समाज का कल्याण करें। अब कुप्रथाओं का अन्त करने और इन विनाशकारी फ़िज़ूलख़र्चियों को मिटाने से ही समाज का अस्तित्व क़ायम रह सकता है ; नहीं तो अन्तिम परिणाम इन नाशकारी कुप्रथाओं का क्या होगा—यह किसी से छिपा नहीं है !!

—पन्नालाल शर्मा

* * *

मारवाड़ी-समाज के कुछ चित्र

वृद्ध केशव को ज्योंही चिता पर रक्खा, आग धधकने लगी। श्मशान प्रकाशित हो उठा। रात्रि का समय था, बादलों ने गगन-मण्डल को आच्छादित कर, अँधेरे को दुगना कर रक्खा था। चिता जलते ही रामदास चिल्ला उठा—'अरे मारवाड़ी-समाज जला जा रहा है।' लोगों ने उसे पागल समझा, पर रामदास सच बोला था। उसने समस्त समाज को एक १४ वर्ष की बालिका की आह में जलते देखा था। यह १४ वर्षीया बालिका उस वृद्ध की पत्नी थी। अभी ब्याह हुआ था। उधर चिता ने वृद्ध केशव को जला दिया, इधर उस बालिका की आह ने वृद्ध से गठबन्धन जोड़ने वाले मारवाड़ी-समाज को जला दिया। वास्तव में जल दोनों ही रहे थे !

२

कृष्णमोहन मन-चला नवयुवक था। उसने अपनी माहेश्वरी बिरादरी छोड़, अग्रवालों में ब्याह कर लिया। बस, आफ़त का पहाड़ उसके सिर पर टूट पड़ा। पञ्चायत भर गई। सरपञ्च का स्थान लाला कद्दूमल जी को मिला। कद्दूमल जी की उम्र अभी ५० वर्ष की ही थी। विवाह का कङ्कन उनके हाथ में बँधा था। हाल ही में उन्होंने एक तेरह वर्ष की कन्या का पाणिग्रहण कर अपने बन्द घर के पट खोले थे ! कृष्णमोहन की पेशी हुई। उस पर वर्णाश्रम-धर्म की सनातन-मर्यादा तोड़ने का अभियोग लगाया गया। उसने कहा कि मैंने विवाह एक वैश्य-कन्या से किया है, इसलिए मैंने वर्ण-मर्यादा नहीं तोड़ी। मेरी उम्र २५ वर्ष की है, इसलिए आश्रम-मर्यादा भी नहीं तोड़ी। सरपञ्च हैरान थे कि क्या उत्तर दें ? कारण, मनुस्मृति में चार वर्ण ही हैं। यदि कोई व्यासदेव जी पञ्चपुराण बना, उप-जातियों में विवाह का निषेध लिख देते, तो शायद दिक़्क़त न होती। सब पञ्चों ने सिर जुटाया और 'जो-हुक्मी-सूत्र' से सनातन-धर्म की मर्यादा तोड़ने की डिग्री दे कृष्णमोहन को ज़ात से ख़ारिज कर दिया ! कृष्ण के बान्धव दुःखी हुए, पर वह हँसने लगा। लोगों ने पूछा कि भाई, हँसते क्यों हो ? उसने उत्तर दिया कि ५० वर्ष की उम्र में ब्याह करने वाले, आश्रम-मर्यादा तोड़ने वाले, आज न्यायासन पर हैं—फिर न्याय कहाँ ? कौन कह सकता है कि वर्णाश्रम-मर्यादा कृष्ण ने तोड़ी थी कि कद्दूमल ने ?

३

सत्यवती थी विधवा, इसीलिए माला जपा करती है। जैसी ही वह भोली थी, वैसी ही वह स्वरूपवती भी थी। उसका भरण-पोषण उसके जेठ ही करते थे। जेठ जी ज़रा पञ्च-फ़ैशन के आदमी थे, इसीलिए 'विधवा-विवाह' का नाम सुनते ही वह गालियों की बौछार करते थे। सत्यवती अपना समय भगवद्-भजन में व्यतीत करना चाहती थी। पर थोड़े दिन से जेठ जी की उस पर विशेष कृपा होने लगी। वह सहम गई। जेठ जी ने बहुतेरे दाँव-पेच खेले, पर वह अपने सत्-मार्ग से न हटी। थोड़े दिनों में जेठ जी ने उसे भूखा मार कर और अनेक अत्याचार कर फँसाया। प्रसूति-काल आते ही जेठ जी ने उसे कुलटा, कुल-कलङ्किनी आदि शब्दों से सम्बोधित कर, घर से निकाल दिया ! लोग सत्यवती को बुरा कहने लगे, त्रिया-चरित्र की व्याख्या होने लगी। जेठ जी को ऐसी कुल-कलङ्किनी को निकालने पर बधाई मिली ! बेशक संसार की दृष्टि में सत्यवती पतित थी, पर भगवान् के यहाँ नराधम जेठ के लिए ही नरक तैयार हुआ !

* * *

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

"लड़की राँड़ कुलच्छनी है, पुस्तकें पढ़-पढ़ कर अपने पति को खा गई।"—औरतों के जमघट ने इस प्रकार पढ़ी-लिखी औरतों की ख़ूब निन्दा की। पर यह कौन कहे कि पतिदेव शराबी तथा व्यभिचारी होने से जल्दी कूच कर गए!

—आनन्दप्रिय, बी० ए०; एल्-एल्० बी०

* * *

मारवाड़ी-समाज की विचित्र नामावली

जब से हमारी षोड़श संस्कार-विधियों का लोप हुआ, तब से ही हमारे नामकरण संस्कार का दुरुपयोग हो रहा है। प्राचीन काल में ज्योतिष-शास्त्र से ग्रह-नक्षत्रादि के फलादेशानुसार ही नाम रक्खे जाते थे; किन्तु अब किसी के सन्तान न होने पर या होकर अल्पायु में ही मर जाने के कारण बालक के ऊट-पटाँग नाम रख दिए जाते हैं। नाम का भी मनुष्य के हृदय पर बहुत भारी प्रभाव पड़ा करता है। अतः जहाँ तक हो सके, नाम अच्छे और शुभ ही रक्खे जाने चाहिए। सन्तान होना और होकर जीवित रहना ऊट-पटाँग नाम रखने पर अवलम्बित नहीं है। यह तो सृष्टि-कर्त्ता और प्रकृति-देवी के अटल नियमों पर ही निर्भर है। ऐसे कुछ विचित्र नामों की सूची, जो कुछ जल्दी में प्राप्त हो सकी, 'चाँद' के पाठकों को पेश करता हूँ। मारवाड़ी-समाज की कई जातियों के नाम भी बड़े ही विचित्र हैं, जो कभी समय मिलने पर 'चाँद' के किसी आगामी अङ्क में पेश करूँगा :—

१ हथिया
२ भतिया
३ घोड़िया
४ गधिया
५ पाड़िया
६ कुतिया
७ कुत्तिडा
८ सींढ़ा
९ मींढ़ा
१० मिन्नी
११ मकड़ा
१२ मोरिया
१३ चिडिया
१४ चूँका
१५ कूकड़ा
१६ बूचा
१७ लङ्गूर
१८ लोंकू
१९ सूवा
२० सूसा
२१ कसारी
२२ कूकू
२३ खूखू
२४ कागा
२५ जागा
२६ पोया
२७ नोलिया
२८ तोतिया
२९ कीड़ीया
३० टीडी
३१ टीडा
३२ टेणी
३३ मेणी
३४ धींगड़िया
३५ चींधड़िया
३६ मटिया
३७ गटिया
३८ गोल-गटिया
३९ दूलिया
४० मूलिया
४१ बूलिया
४२ थूलिया
४३ गुलिया
४४ गूलिया
४५ गोलिया
४६ गोला
४७ होला
४८ दुडिया
४९ धूडिया
५० बालू
५१ कालू
५२ मालू
५३ जालू
५४ जालिया
५५ जालमिया
५६ लाली
५७ काली
५८ बद्धू
५९ लद्दू
६० मद्दू
६१ पद्दू
६२ बुग्ग
६३ गग्गा
६४ टुग्ग
६५ टपिया
६६ टेटा
६७ टोडा
६८ टरिया
६९ टेणीया
७० कचरिया
७१ ढचरिया
७२ पसरिया
७३ छसरिया
७४ नसरिया
७५ चतरिया
७६ जगड़िया
७७ नू
७८ नूना
७९ नागा
८० नागड़िया
८१ बागड़िया
८२ गट्टू
८३ पट्टू
८४ मट्टू
८५ मोट्टू
८६ गट्टा
८७ पट्टा
८८ फोजिया
८९ कोजिया
९० मोजिया
९१ तुहन्नड़
९२ कुहन्नड़
९३ चुहन्नड़
९४ गुड़ोल
९५ रेगारिया
९६ पिञ्जारिया
९७ नाइडा
९८ मोचीड़ा
९९ माली
१०० जाटिया
१०१ तैली
१०२ सुथारिया
१०३ धोलिया
१०४ कालिया
१०५ गोरिया
१०६ रत्तिया
१०७ लूणिया
१०८ मिरचिया
१०९ हल्दिया
११० धणिया
१११ सावनिया
११२ पोया
११३ [illegible]
११४ [illegible]
११५ [illegible]
११६ [illegible]
११७ [illegible]
११८ [illegible]
११९ [illegible]
१२० [illegible]
१२१ [illegible]
१२२ [illegible]
१२३ [illegible]
१२४ [illegible]
१२५ [illegible]
१२६ [illegible]
१२७ [illegible]
१२८ [illegible]
१२९ [illegible]
१३० [illegible]
१३१ [illegible]
१३२ [illegible]
१३३ [illegible]
१३४ [illegible]
१३५ [illegible]
१३६ [illegible]
१३७ [illegible]
१३८ [illegible]
१३९ [illegible]
१४० [illegible]
१४१ [illegible]
१४२ [illegible]
१४३ [illegible]
१४४ [illegible]
१४५ [illegible]
१४६ [illegible]
१४७ [illegible]
१४८ [illegible]
१४९ [illegible]
१५० [illegible]

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

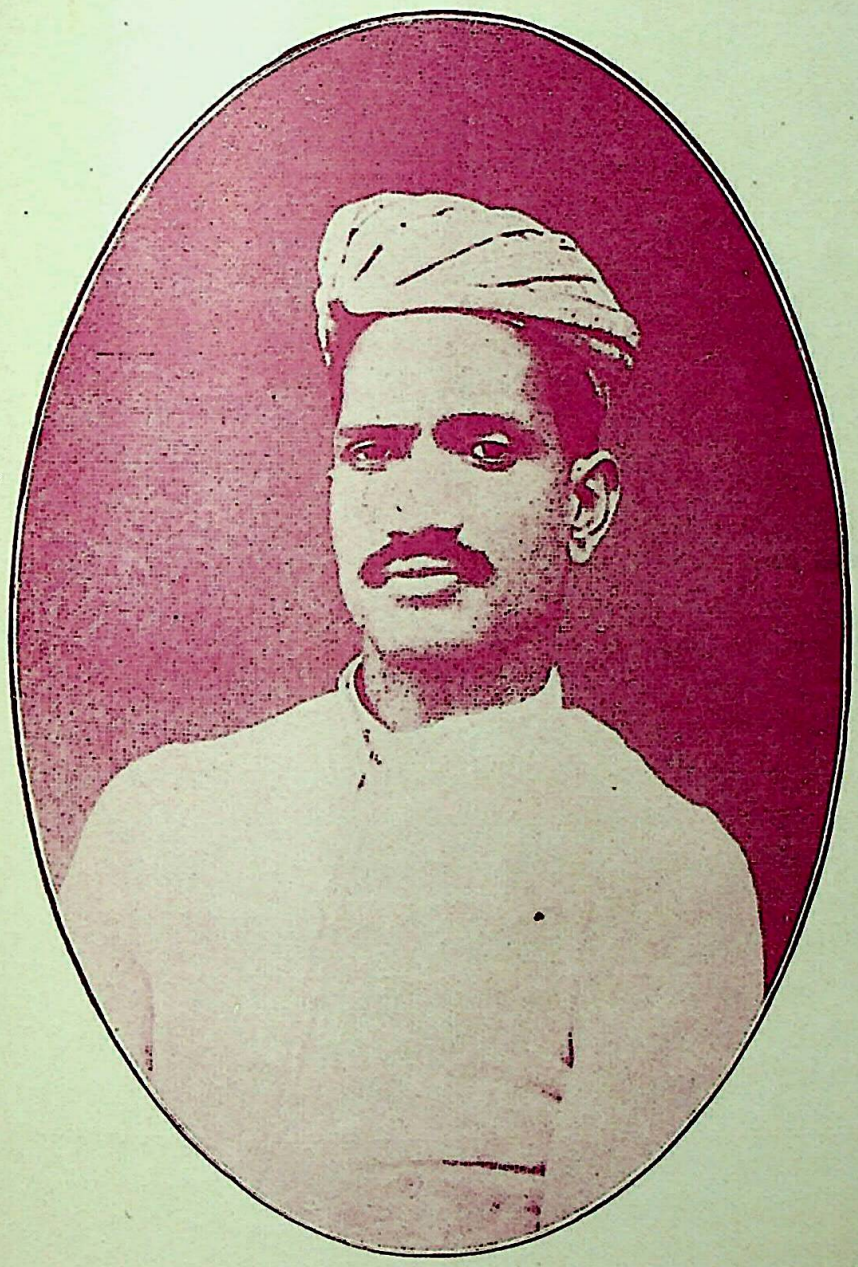

कलकत्ते के सनातनी, किन्तु सुधार-प्रिय नेता और सॉलिसिटर

बाबू प्रभुदयाल हिम्मतसिंह जी

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

निर्वासिता

[ले० "कैवर्त कौमुदी" सम्पादक श्री० अनूपलाल जी मण्डल, साहित्य-रत्न]

भूमिका लेखक—

सुप्रसिद्ध आलोचक श्री० अवध उपाध्याय जी

निर्वासिता वह मौलिक उपन्यास है, जिसकी चोट से क्षीणकाय भारतीय समाज एक बार ही तिलमिला उठेगा, अन्नपूर्णा का नैराश्यपूर्ण जीवन-वृत्तान्त पढ़ कर अधिकांश भारतीय महिलाएँ आँसू बहावेंगी। कौशलकिशोर का चरित्र पढ़ कर समाज-सेवियों की छातियाँ फूल उठेंगी। यह उपन्यास घटना-प्रधान नहीं, चरित्र-चित्रण-प्रधान है, निर्वासिता उपन्यास नहीं, हिन्दू-समाज के वक्षस्थल पर

दहकती हुई चिता है

जिसके एक-एक स्फुलिङ्ग में जादू का असर है। इस उपन्यास को पढ़ कर पाठकों को अपनी परिस्थिति पर घण्टों विचार करना होगा, आँसू बहाना होगा, भेड़-बकरियों के समान समझी जाने वाली करोड़ों अभागिनी स्त्रियों के प्रति करुणा का स्रोत बहाना होगा, आँखों के मोती बिखेरने होंगे और समाज में प्रचलित कुरीतियों के विरुद्ध

क्रान्ति का झण्डा

बुलन्द करना होगा, यही इस उपन्यास का संक्षिप्त परिचय है। सुप्रसिद्ध आलोचक श्री० अवध उपाध्याय ने अपनी भूमिका में पुस्तक की भूरि-भूरि प्रशंसा की है। छपाई-सफ़ाई दर्शनीय, पृष्ठ-संख्या लगभग ५००, सजिल्द पुस्तक का मूल्य केवल ३) रु; स्थायी ग्राहकों से २।) मात्र !!

व्यवस्थापिका 'चाँद' कार्यालय,
—इलाहाबाद—

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

१५१ सीला
१५२ बेली
१५३ भेली
१५४ फैनी
१५५ गूँगा
१५६ गेराला
१५७ चोरिया
१५८ मोरिया
१५९ मँगतिया
१६० मतीरा
१६१ मोडा
१६२ चौखा
१६३ बौखा
१६४ मोगरिया
१६५ घम्मा
१६६ डचिया
१६७ टुची
१६८ लुची
१६९ मछिया
१७० लछिया
१७१ पूट्टी
१७२ फाचर
१७३ किनारिया
१७४ खोता
१७५ कलकतिया
१७६ पाडी
१७७ फाडी
१७८ ता-मा
१७९ बाखी
१८० डम्मो
१८१ ममलो
१८२ ढेबो
१८३ चँधो
१८४ आँधो
१८५ हिंडाऊ
१८६ हिंडोल
१८७ छदामिया
१८८ दमड़िया
१८९ कोडिया
१९० कोडी
१९१ जेवा
१९२ झूँठा
१९३ लोटड़ी
१९४ कुल्हड़िया
१९५ भरतिया
१९६ भाँड़ा
१९७ हाँडा
१९८ कूँडा
१९९ तूम्बा
२०० लोटिया
२०१ खेली
२०२ घासिया
२०३ फूसिया
२०४ घोचा
२०५ कीला
२०६ खीला
२०७ डोका
२०८ चाडा
२०९ बिठिया
२१० पापड़िया
२११ होकला
२१२ बोगी
२१३ सड्डा
२१४ फब्ब
२१५ गूईया
२१६ फिदिया
२१७ फीड्डा
२१८ पद्दा
२१९ बद्दा
२२० फुड़कला
२२१ धेधा
२२२ बाँडा
२२३ चूचा
२२४ पींचा
२२५ रींछा
२२६ पुटिया
२२७ गुटिया
२२८ ओघड़िया
२२९ सैंतलिया
२३० कब्जी
२३१ त्रिपटिया
२३२ गूरिया
२३३ सूरिया
२३४ भाखर
२३५ मामा
२३६ फागू
२३७ भीला
२३८ मेजा
२३९ फमला
२४० गुटकिया
इत्यादि-इत्यादि

—एक नाम-सुधारक मारवाड़ी

* * *

इतिहास के कुछ पृष्ठ

प्रत्येक देश का इतिहास वहाँ की वीरात्माओं के देवोपम कार्यों की गाथाओं से ही शोभा पा सकता है। वही इतिहास देश के होनहार पुरुषों को पथ-प्रदर्शक का काम देता है, जीवन में नवीन स्फूर्ति उत्पन्न करता है, देश को अवनति के गर्त में गिरने से बचाता है एवं उसे उन्नति के उच्च-शिखर पर आसीन होने के लिए प्रोत्साहन प्रदान करता है। वीरों की आदर्श जीवनियाँ मानव-हृदय-पद्म को विकसित करती हैं और गिरी हुई जाति को उठाने में समर्थ होती हैं। इसीलिए कहा जाता है कि यदि तुम अपने देश और जाति को उन्नतावस्था में देखना चाहते हो, यदि उसे जीवन-संग्राम में विजयी बनाने की अभिलाषा रखते हो, तो वीरात्माओं की समाधियों को देव-मन्दिर समझो और उनके पवित्र कार्यों को रामायण मानो। यदि ऐसा नहीं करते हो तो देशोत्थान कठिन है!

सारे संसार का इतिहास सामने है। जिन-जिन जातियों का अधःपतन हुआ, उनका इतिहास सर्व-प्रथम विनाश को प्राप्त हुआ था। ऐसी जातियों में से बहुतों का तो नाम-निशान ही मिट गया और रही-सही अवनति के अथाह सागर में वे ग़ोते खा रही हैं। हमारे भारत के इतिहास की भी यही दशा हुई। हमारा सच्चा इतिहास, वीरों के देवोपम कार्य, हमारी उन्नति और उच्च संस्कृति के साथ ही साथ लुप्तप्राय हो गए। किन्तु सत्य कभी छिपाने से नहीं छिपता। आज हमारे इतिहास के जाज्वल्यमान् रत्न एक-एक करके हमारे सामने आते-जाते हैं, और इस प्रकार अपने सच्चे इतिहास का दिग्दर्शन हमें हो जाता है। इससे मनगढ़न्त और स्वार्थजनित बातों पर दिनोंदिन पानी फिरता जा रहा है।

यों तो भारत के किसी भी भाग का इतिहास महत्व और दिलचस्पी से रिक्त नहीं है, किन्तु वीर-भूमि राजस्थान का इतिहास स्वतन्त्रता का ऐसा इतिहास है, जो अनुपम है और स्वर्णाक्षरों में अङ्कित किए जाने योग्य है। राजपूतों ने अपनी तलवार के जो जौहर संसार को दिखलाए थे, प्राणों को हथेली पर रख कर उन्होंने जिस प्रकार अपनी मान-मर्यादा और मातृभूमि की रक्षा की थी, वह अब भी प्रत्येक मनुष्य को रोमाञ्चित किए बिना नहीं रह सकती। वीर रणबङ्का-राठौड़ों ने अनेक रण-स्थलों में जो वीरत्वपूर्ण कार्य किए थे, उन्हें स्मरण करते हुए जोधपुर में लॉर्ड इरविन ने गत वर्ष अपनी स्पीच में कहा था :—

". . . Here in Jodhpur the rose-red fort stands, a romantic and picturesque sentinel over

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

plains of Marwar. Its massive architecture reflects the stubborn spirit of its builder and every stone speaks of the brave deeds of your Highness' ancestors in the wars which fill so many pages in the history of this country side. . . ."

इसका सारांश यह है कि मारवाड़ के प्रत्येक शिला-खण्ड से राठौड़ों की वीरता का वह गौरवमय राग निकलता है, जो प्रत्येक दर्शक को सहज ही में अपनी ओर आकर्षित कर लेता है।

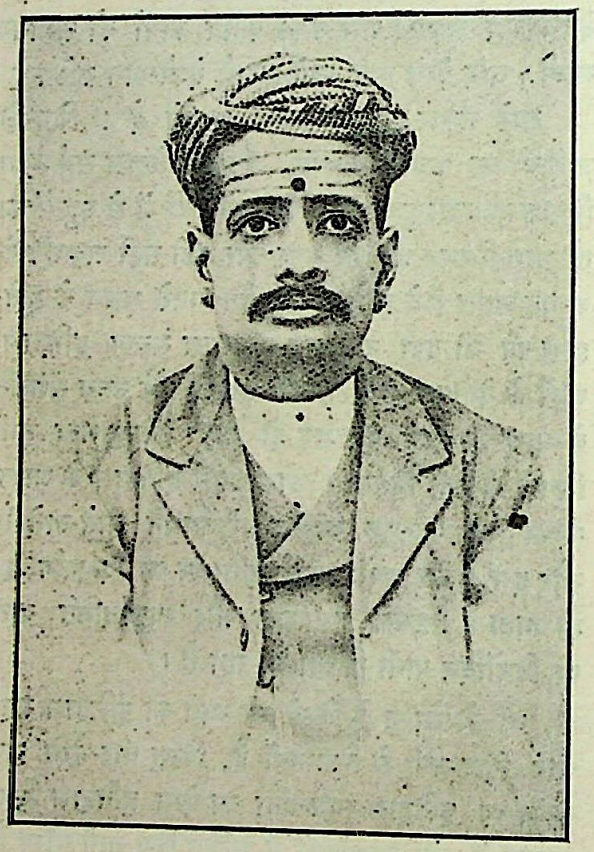

दिल्ली के एक सुप्रसिद्ध व्यापारी तथा एक स्वदेशी स्टोर के सञ्चालक, विधवा-विवाह के प्रचार और समाज-सुधार के लिए सदा प्रयत्न करने वाले
श्रीयुत एल० एन० गाडोदिया

आज हम प्रिय पाठकों की सेवा में दो ऐसे महापुरुषों की जीवन-सम्बन्धी घटनाओं को उपस्थित करना चाहते हैं, जो मारवाड़ के इतिहास में चोटी पर के वीरों में गिने जाते हैं।

जिन दिनों बादशाह शाहजहाँ का सितारा भारत में बुलन्द था, तख़्तताऊस की चमक-दमक से अनेक राजपूत-राजाओं की आँखें चौंधिया गई थीं, उन्हीं दिनों [illegible] पुर के गौरवशाली सिंहासन को महाराजा [illegible] सुशोभित कर रहे थे। वे बड़े पराक्रमी योद्धा थे। [illegible] बार उन्होंने युद्ध में हाथोंहाथ शत्रु का झण्डा छीन [illegible] था। अतएव सम्राट् जहाँगीर ने प्रसन्न होकर [illegible] "दलथम्भन" (सेना को रोकने वाले) की [illegible] दी थी।

महाराज गजसिंह के कई पुत्र थे, उनमें राव [illegible] सिंह ज्येष्ठ और राजगद्दी के अधिकारी थे। परन्तु [illegible] राव अमरसिंह की स्वेच्छाचारिता से प्रायः असन्तुष्ट [illegible] करते थे। एक समय किसी विशेष बात पर नाराज़ [illegible] उन्होंने अमरसिंह को देश-निकाले का दण्ड दे [illegible] वीर-शिरोमणि अमरसिंह ने इसकी कुछ भी [illegible] की। वे सीधे शाही दरबार में चले आए, जहाँ [illegible] शाहजहाँ ने उनका बड़ा आदर-सत्कार किया और [illegible] दर्जा प्रदान किया। बादशाह इनकी वीरता [illegible] ख़ुश था और इनको बहुत चाहता था। ये आगरे में [illegible] आनन्द से रहने लगे।

कुछ दिन बीतने पर बादशाह ने ख़ुश होकर [illegible] नागौर के परगने का स्वामी बना दिया और राव [illegible] पदवी प्रदान की। ये बड़े सुख से नागौर में निवास [illegible] लगे। कभी-कभी दरबार में जाते तो बड़ा [illegible] मिलता था। यह दशा देख अनेक दरबारी इनसे [illegible] करने लगे। उनमें सबसे बढ़ कर ईर्षालु और द्वेषी [illegible] वत ख़ाँ था, जोकि बादशाह का साला था। वह [illegible] का मुँहलगा सरदार था। एक दिन उसने चिढ़ [illegible] सभा में राव अमरसिंह को 'गँवार' कह दिया। बस [illegible] था, बारूद में आग लग गई। राव अमरसिंह के [illegible] का वारापार न रहा। उनकी भुजाएँ फड़क उठीं। [illegible] रक्तवर्ण हो गईं। वे अपने को न सँभाल सके। [illegible] तत्क्षण कमर से कटार खींच कर सलावत ख़ाँ के [illegible] में भोंक दी। उस बेचारे का काम तमाम हो [illegible] गँवार कहने का यथोचित पुरस्कार मिल गया। [illegible] अमरसिंह की विकराल मूर्ति को देख शाहजहाँ [illegible] ख़ाने में भाग गया और अन्य दरबारियों के भी [illegible] उड़ गए। उनमें से कई मारे गए और कई [illegible] भाग गए। वहाँ अनेक वीर बैठे थे, पर किसी [illegible] साहस न हुआ जो उनके सामने ठहर सके। [illegible]

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

अमरसिंह धन्य !! धन्य है उस वीर-प्रसविनी माता को, जिसने ऐसे लाल को जन्म दिया।

अमरसिंह जी शाही दरबार से सकुशल घर लौट आए। दुर्भाग्य से भारत में भाई ही भाई का दुश्मन हो जाता है। कहते हैं कि अर्जुन गौड़ नामक नर-राक्षस ने धोखे से अमर का शिर काट डाला और ख़ैरख़्वाही दिखाने के लिए दरबार में ले गया। भला शाहजहाँ इस नीचता पर क्यों प्रसन्न होने लगा। उसे स्वयं इस अनोखे महावीर के संसार से उठ जाने पर बड़ा शोक हुआ।

देश-गौरव अमरसिंह के पवित्र कृत्य का चित्र किसी कवि ने किस ख़ूबी से खींचा है :—

उन मुँह रो गग्यो कह्यो, इन कर लई कटार।
वार कहन पायो नहीं, जमधर हो गई पार॥

× × ×

वजन माँह भारी थी कि रेख में सुधारी थी,
हाथ से उतारी थी कि साँचे हूँ में ढारी थी।
सेख जी के दर्द माँह गर्द सी जमाई मर्द,
पूरे हाथ साँधो थी कि जोधपुर सुधारी थी॥
हाथ में हटक गई, गुट्टि सी गटक गई,
फेफड़ा फटक गई आँकी-बाँकी तारी थी।
शाहजहाँ कहे यार सभा माँह बार-बार,
अमर की कमर में कहाँ की कटारी थी॥

× × ×

साहि को सलाम करि मार्‌यो थो सलावत खान,
दिखा गयो मरोर सूर-वीर धीर आगरो।
मीर उमरावन की कचेड़ी धुजाय सारी,
खेलत शिकार जैसे मृगन में बागरो।
कहे पानराय गजसिंह के अमरसिंह,
राखी रजपूती मजबूती नव नागरो।
पाव सेर लोह से हलाई सारी पातसाही,
होती शमशेर तो छिनाय लेतो आगरो॥

वीर-शिरोमणि अमरसिंह के ओजमय वर्णन को पढ़ने के पश्चात् पाठकों की आँखें एक और वीर राठौड़ के कार्यों के ऊपर ठहर जाती हैं। यह इतिहास-प्रसिद्ध प्रातः स्मरणीय राठौड़-कुल-रत्नक वीराग्रगण्य दुर्गादास हैं, जिनके ऊपर प्रत्येक भारतीय को गर्व है।

महाराजा जसवन्तसिंह बड़े यशस्वी महाराज थे। उनकी तलवार से स्वयं दुर्दमनीय मुग़ल-सम्राट् औरङ्गज़ेब भी डरता था; किन्तु वह था बड़ा कूट-नीति का आचार्य। उसने महाराज को कभी अपने पास न रहने दिया। महाराजा जसवन्तसिंह के साथ अनेक देशभक्त सरदार थे, उनमें दुर्गादास सर्व-प्रधान थे।

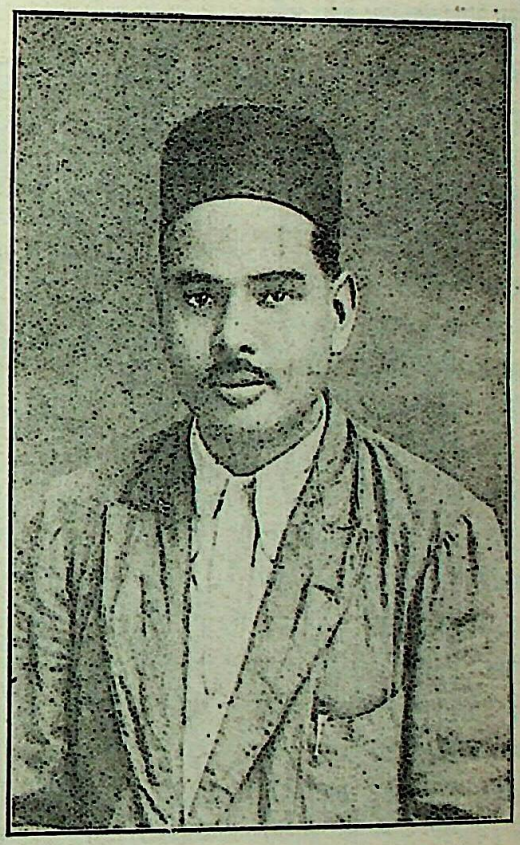

दिल्ली में बिड़ला-मिल के मैनेजर और दृढ़ समाज-सुधारक तथा पर्दे के विरोधी
श्री० चतुर्भुज जी डीडवानिया

वीर दुर्गादास का जन्म जोधपुर से थोड़ी दूर पर एक छोटे से गाँव में हुआ था। इनकी माता जी एक वीर-महिला थीं। उनके व्यक्तित्व का बहुत-कुछ असर दुर्गादास पर पड़ा था। जब महाराजा जसवन्तसिंह ने इस नर-रत्न को पाया, तो उन्होंने अपने आपको धन्य समझा।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

एक बार वीर दुर्गादास महाराज के साथ शिकार को गए। थके तो थे ही, वे एक पेड़ के नीचे सो गए। धूप इनके मुँह पर पड़ रही थी। महाराजा साहब ने स्वयं इनके ऊपर छाया कर दी। यह देख अन्य सरदार महाराज से कहने लगे कि हम लोगों के होते हुए आप ऐसा कार्य क्यों कर रहे हैं? यह सुन कर महाराजा ने उत्तर दिया कि आज मैंने इसके ऊपर छाया की है, एक दिन यह राठौड़-वंश पर छाया करेगा। आगे चल कर उनकी यह बात अक्षरशः सत्य हुई।

और यह प्रसिद्ध कर दिया कि महाराजा जसवन्त निस्सन्तान थे।

उधर महाराजा जसवन्तसिंह जी की दो रानियाँ गर्भवती थीं, जिनसे अजीतसिंह और दलथम्बन दो पुत्र उत्पन्न हुए। जिनमें से दलथम्बन तो मार्ग में काल-कवलित हुए, किन्तु वीर राठौड़ों के सुत्व से महाराजा अजीतसिंह कुछ समय पश्चात् जोधपुर सिंहासनारूढ़ हुए, जिसका वृत्तान्त इस प्रकार है:—

जब औरङ्गज़ेब के कुकृत्य का समाचार राजपूतों

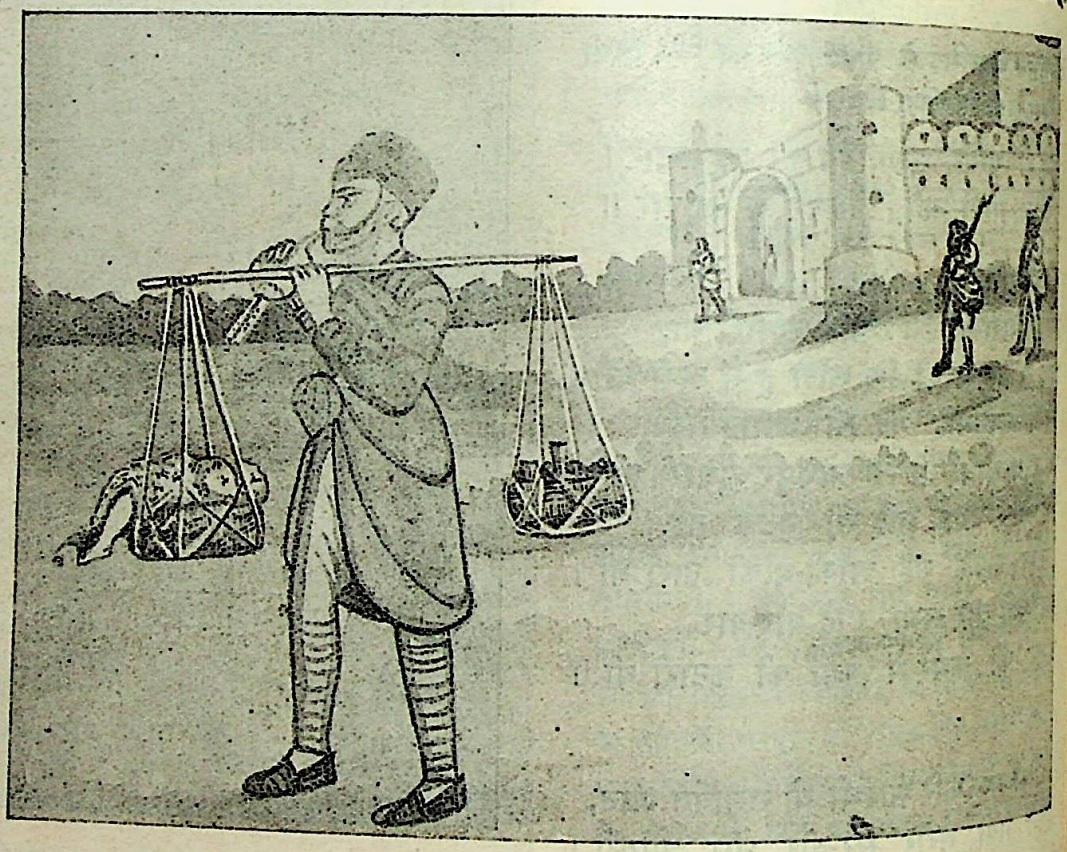

वीर मुकुन्ददास जी खीची

[सँपेरे के भेष में राजकुमार अजीतसिंह को मुग़ल-सेना के बीच में से छिपा कर लेजा रहे हैं]

काबुल के पठान महाराजा जसवन्तसिंह की तलवार की झनकार से काँपते थे। इसी हेतु औरङ्गज़ेब प्रायः इन्हें पठानों को दमन करने के लिए भेजा करता था। एक बार ये अपने सरदारों के साथ काबुल का प्रबन्ध करने को गए। दैव-दुर्विपाक से जमरूद के थाने में महाराज का देहान्त हो गया। यह समाचार पाते ही क्रूर-प्रकृति, दुर्दान्त औरङ्गज़ेब ने मारवाड़ का राज्य हड़प लिया

पहुँचा तो उनकी क्रोधाग्नि धधक उठी। वे बिना कहे ही वहाँ से रवाना हो गए और महाराज-कुमार को लेकर दिल्ली आए।

वीर दुर्गादास ने औरङ्गज़ेब को कहला भेजा कि महाराज-कुमार अजीतसिंह मौजूद हैं और मारवाड़ राजगद्दी के वे ही एकमात्र उत्तराधिकारी हैं। मारवाड़-राज्य वापस दे दीजिए। मुग़ल-सम्राट ने

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

कि यदि यह राजकुमार और महारानियाँ हाथ में आ जायँ तो काम बने। इसी हेतु उसने आज्ञा दी कि महाराज-कुमार को हमारे पास भेज दो।

दुर्गादास उसके कपट-जाल को ताड़ गए। उन्होंने कुमार को देने से साफ़ इन्कार कर दिया। थोड़ी देर में राजपूतगण क्या देखते हैं कि उनका निवास-स्थान शाही सेना से घिरा हुआ है। दुर्गादास ने इस समय बड़े धैर्य और बुद्धिमत्ता से काम लिया। उन्होंने अपने विश्वास-पात्र सरदार मुकुन्ददास खीची को सँपेरा बना कर और अजीतसिंह को एक पिटारे में लिटा कर रवाना कर दिया। वीर मुकुन्ददास ने कुमार अजीतसिंह को सिरोही पहुँचा दिया, जहाँ बड़ी सावधानी से उनका लालन-पालन होता रहा।

राव जोधाजी राठौड़

[जन्म—वैशाख वदी १४ सं० १४७२ वि०; मृत्यु—वैशाख सुदी ५ सं० १५४५ वि०]

इधर राजपूतों ने बचने की कोई सूरत न देख, केसरिया बाना पहना। कहते हैं कि उन्होंने सारी सामग्री एक कमरे में एकत्र की और बारूद भर कर कमरे के दरवाज़े में ताला लगा दिया। वीर-स्त्रियों ने अपनी मर्यादा की रक्षा के लिए प्रसन्न-वदन खिड़की के मार्ग से प्रवेश किया। एक वीर-राजपूत ने खिड़की का द्वार बन्द कर दिया और झरोखे से अग्नि की एक चिनगारी फेंक दी। बात की बात में कमरे का नाम-निशान तक मिट गया!!

अब वीर-राजपूत निश्चिन्त हो गए, उन्होंने अपनी ख़ून की प्यासी तलवारें खींच लीं। कहाँ तो मुट्ठी भर राजपूत और कहाँ वह असंख्य सेना, पर राजपूतों ने इसकी तनिक भी परवा न की। वे संग्राम-भूमि में इस प्रकार कूदे, जिस प्रकार भेड़िया भेड़ों के झुण्ड पर आक्रमण करता है। उन्होंने बात की बात में आस-पास की सारी पृथ्वी रुण्ड-मुण्डमय कर दी। राठौड़ों की वीरता देख मुग़लों के छक्के छूट गए!

नर-व्याघ्र वीर-केसरी दुर्गादास ने जो जौहर उस दिन दिखलाए, उन्हें यह लोह-लेखनी क्या ख़ाक वर्णन करेगी? घोड़े की रास को मुँह में दबाए हुए वह वीर एक

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

ओर अपनी लपलपाती, चमचमाती तलवार से शत्रुओं शिरों को गाजर-मूली की नाईं काट रहा था और दूसरे हाथ में बरछा लिए हुए अनेक वीरों के हृदय विदीर्ण कर रहा था। उसकी भैरव-विकराल मूर्ति को देख कर अनेक कायरों के कलेजे काँप गए। वीरों का वीरत्व लुप्त हो गया और धैर्यवानों का धैर्य जाता रहा। वीर-शिरोमणि दुर्गादास ने उस दिन सहस्रों को तलवार के घाट उतारा, परन्तु वहाँ तो असंख्य सेना थी। अनेक राजपूत मारे जा चुके थे। अतएव दुर्गादास ने वहाँ से हट जाना ही उचित समझा। वे पूर्णरूप से घायल हो चुके थे, किन्तु फिर भी वे मार्ग के अनेक कष्टों को झेलते हुए मारवाड़ आ पहुँचे।

यहाँ आकर क्या देखते हैं कि सर्वत्र शाही झण्डा फहरा रहा है, देश दुश्मनों के चङ्गुल में फँस चुका है। अतः उन्होंने प्रण किया कि जब तक दम में दम है, मारवाड़ का उद्धार करेंगे और मातृभूमि के ऋण से उऋण होंगे। वे वहाँ से चल कर सिरोही आए और सरदारों से मिल राजकुमार को देखा। वीर राठौड़ों में अपने बालक-स्वामी को देख, स्वामि-भक्ति और वीरता का समुद्र उमड़ पड़ा और वे अपनी मातृभूमि के उद्धारार्थ कटिबद्ध हो गए।

वीर दुर्गादास ने राजपूतों का नेतृत्व ग्रहण किया और वे एक-एक करके क़िले अपने हाथ में लेते गए। सौभाग्य से थोड़े ही समय में औरङ्गज़ेब की मृत्यु का समाचार भी सुनने में आया। अतः उन्हें मारवाड़ का उद्धार करते देर न लगी। उन्होंने कुमार अजीतसिंह को राजसिंहासन पर सुशोभित किया और मारवाड़ का निगला हुआ राज्य वापस ले लिया। इस अनुपम प्रयत्न के लिए वीर दुर्गादास का नाम इतिहास में सदा अमर रहेगा। उन्होंने एक मृतप्राय राजवंश को पुनरुज्जीवित और स्थायी कर दिया।

वे बहुत दिन तक मारवाड़ का सुप्रबन्ध करते रहे। किन्तु वृद्धावस्था में महाराजा अजीतसिंह इनके उपकारों को भूल, इनसे रुष्ट हो गए। अतएव ये उदयपुर चले आए, जहाँ पर महाराणा संग्रामसिंह (द्वितीय) ने इनका बड़ा आदर-सत्कार किया और इनको सर्व प्रकार की सुविधाएँ कर दीं। एक बार वे तीर्थयात्रा के लिए उज्जैन गए। वहीं शिप्रा नदी के किनारे इनका देहान्त हुआ। जिस स्थान पर भारतमाता के इस लाखों में अपनी जीवन-लीला समाप्त की, उस स्थान पर तक एक छत्तरी बनी है, जो 'राठौड़-छत्तरी' के प्रसिद्ध है।

वीर-शिरोमणि दुर्गादास की कीर्ति दिग्दिगन्त व्याप्त है। वह देश बड़ा सौभाग्यशाली है, जहाँ

दानवीर सेठ भरोंदान जी सेठिया

[आप कलकत्ते के बड़े प्रसिद्ध व्यापारी हैं। भारत में पहले आपने रङ्ग बनाने का कारख़ाना खोला था। आजकल आप अपना तमाम समय ओसवाल-जाति में शिक्षा-प्रचार करने में लगा रहे हैं।]

नर-रत्न जन्म धारण करते हैं। वीर दुर्गादास समय के अद्वितीय वीर थे। स्वयं औरङ्गज़ेब जितना डरता था, उतना अन्य किसी से नहीं। इनका चरित्र इतिहास के पन्नों में स्वर्णाक्षरों में लिखे योग्य है।

—गोकुलप्रसाद शर्मा, पाठक 'हिन्दी-

* * *

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

मारवाड़ का भीषण पाप

आर्यसमाज के इतिहास से परिचित महानुभाव 'नन्हीं भगतन'* के नाम से अपरिचित नहीं होंगे। महर्षि दयानन्द के चरित्र-सम्बन्धी अब तक की

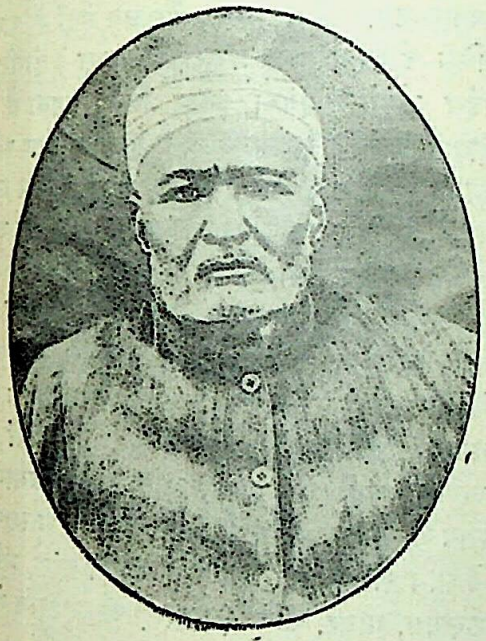

सेठिया-परिवार के एक उदार और सुधारक विचारों के सज्जन
स्वर्गीय अगरचन्द जी सेठिया

खोज करने वाले प्रत्येक चरित्र-लेखक का यही विचार है कि इसी नन्हीं भगतन के षड्यन्त्र से महर्षि का परलोक-वास हुआ। इसलिए देश-बन्धुओं को नन्हीं भगतन का परिचय कराना अनुचित न होगा।

"भगतन" राजपूताने में एक जाति का नाम है। इसकी उत्पत्ति रामावत साधुओं से कही जाती है। मारवाड़-राज्य में भगतन-जाति के प्रायः सौ डेढ़ सौ परिवार आबाद हैं। प्रसिद्ध है कि जोधपुर-नरेश महाराजाधिराज राजराजेश्वर महाराजा श्रीविजयसिंह जी साहब के राज्य-काल में संवत् १८२२ वि० में कई गृहस्थ रामावत साधुओं की कन्याओं ने गाना-बजाना सीख कर वेश्या का धन्धा शुरू किया था। इन्हीं से इस भगतन-जाति की सृष्टि हुई। इस जाति का विश्वास वैष्णव-सम्प्रदाय में है और इष्ट हनुमान जी का है। कन्याओं की सगाई नहीं होती। विवाह करने का नियम यह है कि गृहस्थ

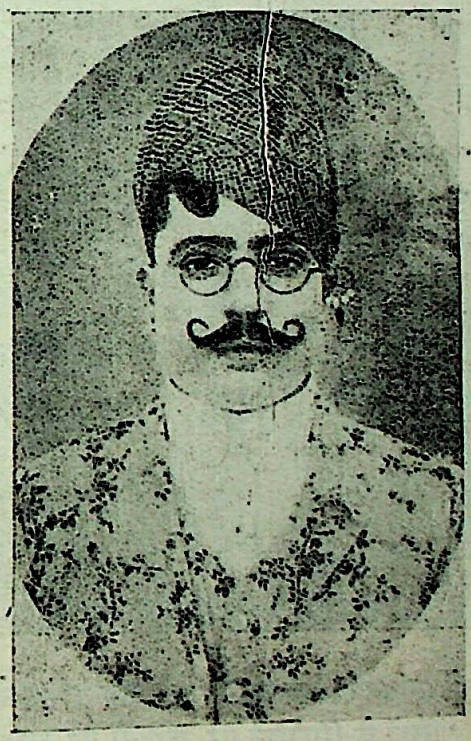

श्री० जेठमल जी सेठिया
[आप भैरोंदान जी सेठिया के सुपुत्र हैं और ओसवाल-जाति में शिक्षा-प्रचार के लिए बहुत परिश्रम कर रहे हैं।]

साधुओं के रीत्यनुसार विवाह-कार्य प्रारम्भ करके किसी ग़रीब गृहस्थ साधु के साथ, जो नौकरी या माँग करके खाते हैं, फेरे डाल देते हैं। उस साधु को पहले ही से

* नन्हीं भगतन उर्फ़ नन्हीं जी के नियुक्त होने के पूर्व महाराजा जसवन्तसिंह तख्तसिंहोत के पास जयपुर-राज्य के खेतड़ी ठिकाने की मुसलमान-वेश्या नन्हीं जान नाम की नौकर थी। महर्षि का बलिदान नन्हीं भगतन से सम्बन्ध रखता है, न कि मुसलमान नन्हीं जान से। बहुत से लेखक नन्हीं और 'नन्हीं जान' को एक ही समझते हैं, जो भूल है। इसी भूल को ठीक करने के लिए ही यह खुलासा किया गया है।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

रुपया आठ आना देकर इस बात पर राज़ी कर लेते हैं कि वह लड़की के लिए दावा न करे।

इस प्रथा को यहाँ "कुँवारपना उतारना" कहते हैं। साधु "हथलेवे" का पाप लेकर अपने घर चला जाता है। यदि कभी कोई साधु "कुँवारपना उतारने" के लिए नहीं मिलता तो गणेश जी के चित्र के साथ ही फेरे डाल कर कुँवारपना उतार देते हैं। इसी प्रकार से पातुरें, दूसरी जाति की हिन्दू-रण्डियाँ भी कुँवारपना उतारती

नन्हीं भगतन स्वर्गीय महाराजा जसवन्तसिंह के साथ
"सिंहों के सिंहासन पर कुतियों का राज्य"
[ऋषि दयानन्द का सिंहनाद]

हैं। पश्चात् पातुरों की तरह भगतनों में भी व्यभिचार (कसब) कराना शुरू किया जाता है। बिना कुँवारपना उतारे कोई "भगतन" या "पातुर" व्यभिचार नहीं कराती। यदि घर वाले कुँवारी छोकरी से व्यभिचार करावें तो वह जाति से बाहर कर दिए जाते हैं। विवाहिता स्त्रियाँ कसब नहीं करातीं, जिससे यह कहावत भी चल पड़ी है कि—"जाई कसब कमावे और आई नहीं कमावे।" वह अपने घरों में रहती हैं और गृहस्थी का काम-काज करती हैं। विधवा-विवाह यानी नाता (करेवा) इनमें नहीं होता। विवाह करते समय यह लोग अपना और अपनी माता का गोत्र छोड़ देते हैं!

भगतनों की गणना भारत के अन्य प्रान्तों की तवायफ़ों में है। क्योंकि भगतनें नाचने, गाने, बजाने और बनाव-शृङ्गार से रहने में और सब भेदों में पातुरों से अधिक होशियार और शऊरदार (सभ्य) होती हैं। रईस लोगों में इनका आदर विशेष रहता है। इज़्ज़तदार वेश्याएँ समझी जाती हैं। विशेषकर राजों का ही इनके यहाँ आवागमन रहता है। जिस प्रकार पातुरों के पिता-भाई "जागरी" कहलाते हैं और उनके विवाह-सम्बन्ध दरोगा (गोला-विदुर) जाति में होते हैं; उसी प्रकार भगतनों के पिता-भाई "भगत" कहलाते हैं और गृहस्थ रामावत व निम्बार्क साधु-जाति में विवाह करते हैं। यह भगत लोग उनके साथ तबला-सारङ्गी बजाया करते हैं। भगतनों का व्यवसाय व्यभिचार कराना ही है! ये मुसलमानों के साथ भी सम्बन्ध रखती हैं, किन्तु "पातरें" मुसलमानों के साथ संसर्ग नहीं करतीं। भगतनें मांस, मदिरा, शलगम, गाजर, काँदा (प्याज़) और लहसन से भी परहेज़ करती हैं।

मारवाड़ की सुप्रसिद्ध "नन्हीं भगतन" भी इसी भगतन-जाति की थी। उसकी माँ का नाम था "चुंदी भगतन"। कहा जाता है कि नन्हीं जब २०-२१ वर्ष की थी, तब उसके एक छोकरी पैदा हुई थी, किन्तु कुछ समय के पश्चात् वह मर गई। वह उस दिन नव्वाब जूनागढ़ (काठियावाड़) के किसी शाहज़ादे के पास थी। कुछ समय पश्चात् यह जूनागढ़ से वापस जोधपुर लौटी। तब इसकी अवस्था २२-२३ वर्ष की थी। उस समय महाराजा सर जसवन्तसिंह जी (इस्ट्रा) जी० सी० एस० आई० जोधपुर-नरेश ने इसे अपने यहाँ नौकर रख लिया और अपनी मृत्यु-पर्यन्त साथ ही रक्खा। वह उसे अलग नहीं छोड़ते थे। क्लिबे में भी जाते तब भी वह साथ ही रहा करती थी। वह पर्दा भी करती थी, तब भी महाराजा साहब ने उसके लिए सोना दे रक्खा था। कहा जाता है कि नन्हीं दिन में ६-७ बार अपनी रेशमी पोशाक बदला करती थी।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

समय वह अपने शरीर पर हीरे-माणिक के गहने पहने रहा करती थी।

नन्हीं भगतन के मरज़ीदान प्रायः मुसलमान थे। महाराजा ने इन्हें सेनापति आदि के बड़े-बड़े अधिकार दे रक्खे थे। ये लोग महाराजा साहब की और नन्हीं की प्रत्येक बात में हाँ में हाँ मिलाया करते थे !!

नन्हीं भगतन की मृत्यु सम्वत् १९६६ विक्रमी प्रथम श्रावण सुदी ७ (२४ जुलाई, सन् १९०९ ई०) को जोधपुर में हुई थी। उस समय उसकी आयु ६०-६१ वर्ष की थी। मृत्यु से ४-५ वर्ष पहले से ही वह भयङ्कर रोगों से पीड़ित थी। मारवाड़ में नन्हीं भगतन को "नन्हीं जी" कहते हैं। महाराजा साहब और अन्य राजपुरुष भी उसे इसी प्यार के नाम से सम्बोधन किया करते थे। नन्हीं भगतन के जो मरज़ीदान थे, उनकी भी मृत्यु के समय ऐसी दशा हुई कि वैसी ईश्वर किसी की न करे। महाराजा साहब के परलोकवास के पश्चात् मुसाहिब आला महाराज सर प्रतापसिंह जी ने उन सबको अधिकारों से च्युत कर दिया। सब भयङ्कर रोगों से पीड़ित रह कर, मृत्यु को प्राप्त हुए। मारवाड़-निवासियों ने इन व्यक्तियों की शिक्षाजनक मृत्यु से अपने धार्मिक विश्वासों को बहुत-कुछ दृढ़ कर लिया।

उन मुसलमानों की मृत्यु के पश्चात् उनका पाप से कमाया हुआ सब धन, जागीर, मकान आदि स्टेट द्वारा ज़ब्त कर लिए गए। स्टेट से उनके घर वालों को नियमित वेतन मिलना प्रारम्भ हो गया; जो अब तक बराबर मिलता है। लाखों रुपए के घोड़े-बग्घी, महल आदि सब ज़ब्त कर लिए गए। कहा भी है :—

रहै न कौड़ी पाप की, ज्यों आवे त्यों जाय।
लाखों का धन पाय के, मरे न कफ्फन पाय !!

महाराजा साहब की मृत्यु के पश्चात् नन्हीं भगतन ख़ुद की हवेली में रहने लगी थी। वह अपनी मृत्यु, यानी जुलाई सन् १९०९ ई०, तक इसी बड़ी हवेली में रही। यह विशाल हवेली रेलवे स्टेशन के रास्ते पर जोधपुर के रण्डी-मुहल्ले (चकले) में है। नन्हीं का कोई

मुन्शी पुरुषोत्तमप्रसाद जी गौड़

[आप सुप्रसिद्ध इतिहासवेत्ता मुन्शी देवीप्रसाद जी के पौत्र और उनके उत्तराधिकारी हैं]

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

सगा भाई आदि सम्बन्धी न था।* मामा के भाई आदि थे, जिनसे इसकी सदा अनबन रहती थी। यह बड़ी मक्खीचूस रण्डी थी। एक पैसा भी अपने पास से दान-पुण्य में नहीं देती थी। इसके सारे बाल सफ़ेद हो गए

जीवन जी चावड़ा के वीर्य से उत्पन्न हुई थी, जोकि एक छोटा जागीरदार था। नन्हीं की माँ उसकी रखेली थी। नन्हीं की मृत्यु के पश्चात् उसकी जायदाद राज्य में ज़ब्त की गई तो लगभग ६०० जोड़े तो रेशमी जूतों के ही

वर्धा का भैया-परिवार] [परिचय अन्यत्र देखिए

थे। यह चार-पाँच वर्ष तक भयङ्कर बवासीर के रोग से दुःखित रही। कहा जाता है कि नन्हीं किसी राजपूत

मिले थे! ८०० के क़रीब रेशमी घाघरे थे। और भी बहुत मूल्यवान् सामान था!! चीफ़ कोर्ट में कई महीनों तक सब चीज़ें नीलाम होती रहीं। लगभग १५-२० लाख रुपए की सब जायदाद नीलाम हुई थी!!!

कहा जाता है कि जिन दिनों महर्षि दयानन्द जी जोधपुर में धर्मोपदेश कर रहे थे, तो एक दिन अचानक ही नियत समय से कुछ पूर्व आप महलों (राई का बाग़) में महाराजा साहब से भेंट के लिए आ गए

* नन्हीं की एक सगी बड़ी बहिन "लाली" नाम की अब तक विद्यमान है। वह महाराजा जसवन्तसिंह जी के छोटे भाई स्वर्गीय महाराज किशोरसिंह 'कमाण्डर इन चीफ़' के पर्दे में बैठ गई। जब नन्हीं की बोलबाला की धूम थी, तब से वह "लालराय जी पड़दायत" कहलाती है।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

नन्हीं भगतन उस समय महाराजा साहब के पास बैठी थी। महर्षि के आने का समाचार महल के फ़र्राश से सुनते ही महाराजा ने जल्दी-जल्दी नन्हीं को पालकी में बिठला कर बाहर ले जाने की आज्ञा दी। शीघ्रता से उठाने के कारण पालकी एक ओर से कुछ झुक गई तो स्वयं महाराजा ने अपना कन्धा लगा दिया। महर्षि हाल तो सब सुन ही चुके थे, किन्तु आज यह सब कौतुक स्वयं अपनी आँखों से देख कर क्रोध को न रोक सके और बड़ी निर्भीकता के साथ सिंहनाद करके बोले :—

"सिंहों के सिंहासन पर कुत्तियों का राज !!! इन कुत्तियों से कुत्ते ही पैदा होंगे ???" महर्षि की गर्जना सारे महल में गूँज गई। पुराने शुभचिन्तकों का माथा ठनका। महाराज तो सुन कर चुप हो गए, किन्तु नन्हीं भगतन ने इन शब्दों को सुन कर अपनी बड़ी बेइज़्ज़ती समझी। भैया फ़ैज़ुल्ला ख़ाँ का ज़माना था, जिसको स्वयं महाराजा साहब भैया याने भाई सम्बोधन किया करते थे। वे यद्यपि साबिक़ दीवान थे, पर महाराजा के बड़े मुँह-लगे थे। पहले तो दोनों ने मिल कर महाराजा साहब को ही भड़काने का प्रयत्न किया, किन्तु महर्षि के अतुल यश और मान के भय से जब महाराजा को कुछ कर सकने में असमर्थ देखा, तो स्वयं ही षड्यन्त्र रचने लगे। नन्हीं ने अपने एक विशेष कृपा-पात्र व्यक्ति को लालच देकर उसके द्वारा महर्षि के रसोइए को बहकाया और दूध में काँच पीस कर स्वामी जी को दिला दिया। वह दूध पीने के कुछ देर बाद ही महर्षि के पेट में भयानक दर्द आरम्भ हुआ, और वह इतना अधिक बढ़ा कि डेढ़ मास तक महर्षि असाधारण रोग से पीड़ित रहे और अन्त में प्राण त्याग दिए ! ।वह रसोइया कलिया (कल्ला जी*) अभी ७-८ वर्ष ही हुए, मरा है। उसने अपने कौतुक का इक़बाल अन्तिम समय कर लिया था !

इस प्रकार महर्षि दयानन्द ने मारवाड़-प्रान्त में ही, और वहाँ के एक बड़े राज्य और राजा व प्रजा के सुधार के निमित्त अपना बलिदान किया। मारवाड़ी

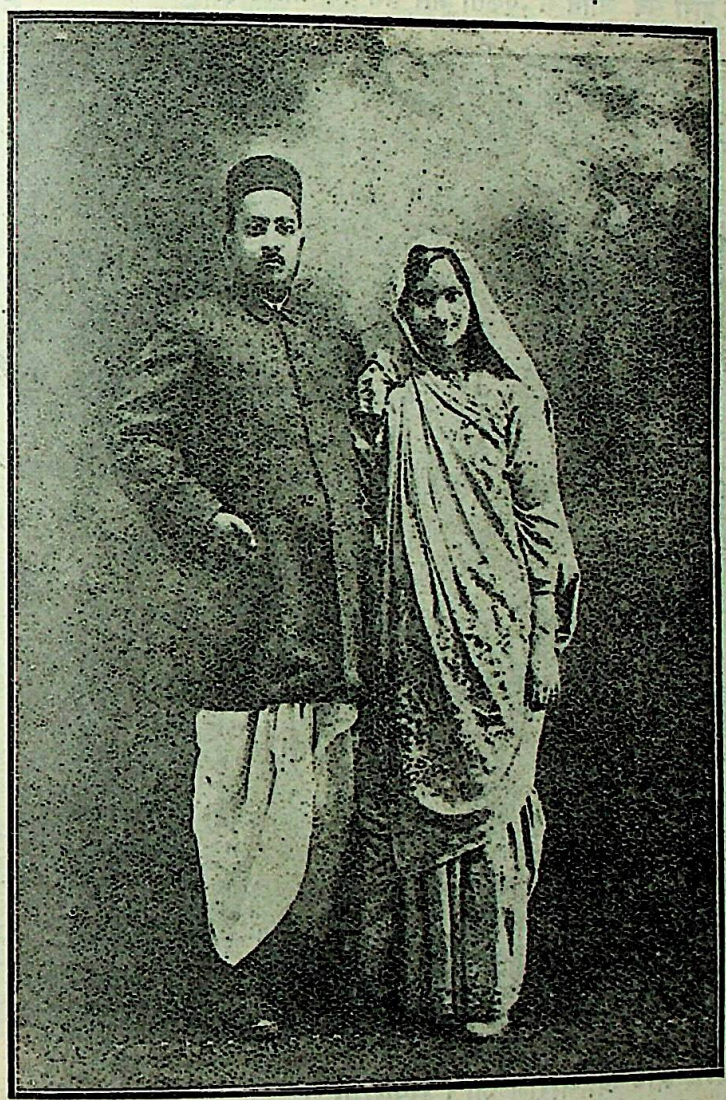

श्री० नवलकिशोर जी भरतिया (सपत्नीक)

[ये वही प्रख्यात दम्पति हैं, जिनके विधवा-विवाह ने कुछ समय पूर्व समस्त मारवाड़ी-समाज में हलचल मचा दी थी।]

भाइयो ! महर्षि के बलिदान से आपने क्या शिक्षा

* इसका बचपन का नाम 'जगन्नाथ' कहा जाता है।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

ग्रहण की ? क्या आपने कभी उस सच्चे संन्यासी के उपकार का स्मरण किया है ? महर्षि का व्रत था कि मारवाड़-प्रान्त और राजस्थान के सब कुकर्म दूर हो जायँ, वहाँ वैदिक धर्म का डङ्का बज कर सब में सदाचार का प्रचार हो, हिन्दू-सङ्गठन, गो-रक्षा, शुद्धि और अछूतोद्धार के द्वारा सब जाति में एकता और धर्म-प्रेम जाग्रत हो।

राज्यरत्न मा० आत्माराम जी (सपरिवार)] [परिचय अन्यत्र

ऋषि-ऋण से उऋण होने के लिए अब मारवाड़ियों को तैयार हो जाना चाहिए। *

—पुरुषोत्तमप्रसाद गौड़, 'नय्यर'

* * *

* इस लेख के लेखक राजपूताने के सुप्रसिद्ध इतिहासकार स्वर्गीय मुन्शी देवीप्रसाद जी के पौत्र हैं और उनको इस लेख

मारवाड़ियों में रोने की रीति

मारवाड़ी-समाज में किसी के घर यदि ऐसा कोई व्यक्ति हो (चाहे वह स्त्री हो या पुरुष) जो अत्यन्त वृद्ध हो, या अपङ्ग हो, या बहुत ज्यादा दि

की घटनाओं का पता स्वर्गीय मुन्शी जी से ही लगा था। इ लेख में महाराजा जसवन्तसिंह और नन्हीं भगतन का जो दि दिया गया है, वह हमें अपने एक आर्यसमाजी मारवाड़ी मि से प्राप्त हुआ है, जिन्होंने इसको बड़ी चेष्टा से जोधपुर से प्रा किया था।

—सं० 'चाँ

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

का रोगी हो, या कोई विधवा हो—मतलब यह कि कोई ऐसा व्यक्ति हो, जिसका जीवन सारे कुटुम्ब को

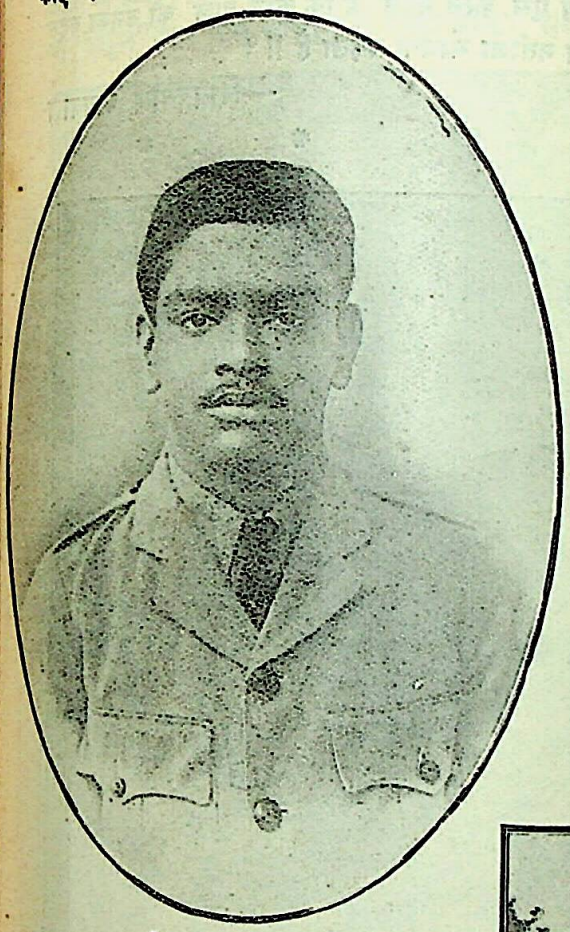

श्री० सतीदास जी

(आपने नागपुर से हिन्दी-भाषा में एक अर्द्ध-साप्ताहिक पत्र 'प्रणवीर' प्रकाशित किया था और उसके लिए अपना सर्वस्व अर्पण कर चुके हैं।)

भय-रूप मालूम हो, वे यह चाहते हों कि ईश्वर करे यह जल्दी मर जाय और बला टले; हमेशा ही ईश्वर से उसके मर जाने की प्रार्थना करते हों—ऐसा व्यक्ति भी यदि किसी के घर मर जाता है, तो भी मारवाड़ी-समाज लोगों को दिखाने के लिए रोने का बड़ा भारी पाखण्ड रचता है। उसके मरते ही घर में बड़े ज़ोरों का रोना शुरू हो जाता है। कुछ देर बाद मुहल्ले और पड़ोस के आदमी इकट्ठे होकर उस शव को मरघट ले जाते हैं। ये लोग जब तक मरघट से लौट कर नहीं आ जाते, तब तक घर की और बाहर से आई हुई औरतें रोती-चिल्लाती रहती हैं। मरघट से लौटने के बाद बाहर के आए हुए पुरुष और स्त्रियाँ चले जाते हैं। घर के आदमी घर का काम-काज करते रहते हैं। तीन दिन तक पुरुष लोग बाहर 'बैठका' करते हैं, उसमें गाँव के लोग, परिचित, रिश्तेदार और बिरादरी वाले बैठने को आते हैं। जब तक बाहर का आदमी कोई नहीं रहता, तब तक तो सब शान्त रहता है, पर जैसे ही बाहर का कोई आदमी आता हुआ दिखाई दिया, वैसे ही भीतर से औरतें चिल्ला-चिल्ला कर रोने लग जाती हैं। पुरुष लोग भी आए हुए से मर जाने वाले के लिए शोक प्रकट करते हैं। दस-पाँच मिनट बैठ कर यह लोग चले जाते हैं। फिर थोड़ी देर बाद दूसरे लोग आते हैं तो फिर बेचारी औरतों को ज़ोर से रोना पड़ता है! रोना मन से तो नहीं होता, पर मजबूरन लोगों को दिखाने तथा पुरतैनी रस्म अदा करने के लिए रोना ही पड़ता है! इस तरह कई घरों में तो तीन दिन तक रोने का रिवाज है और कई घरों में दस रोज़ तक रोते हैं। यदि किसी द्रव्यवान के यहाँ मृत्यु हुई तो फिर तीन दिन

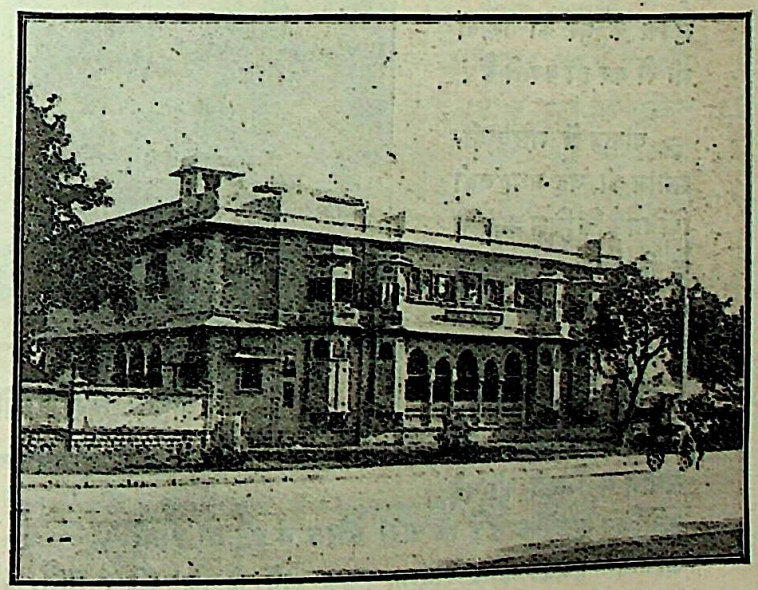

पुरोहित रामप्रताप जी का

३६ फ़ीट लम्बा और २४ फ़ीट चौड़ा राजपूताना आर्ट-स्टुडियो

तक ख़ूब ज़ोर-शोर से रोने का काम जारी रहता है। क्योंकि बड़े आदमी के यहाँ रास्ते चलता आदमी भी

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

शोक प्रकट करने के लिए आ बैठता है। इसलिए इन घरों की औरतों को तीन दिन तक बराबर रोना पड़ता है। उन बेचारियों का गला बैठ जाता है, बोला भी नहीं जाता। ऐसे मौक़े पर दूसरी औरतों को, जो बाहर से आई हुई रहती हैं, बदले में रोना पड़ता है। इतना अधिक रोते हैं कि कोई यह न कह सके कि फ़लाने के यहाँ फ़लाना आदमी मरा था तो उन्होंने उसका रोना भी नहीं किया। इस बीच में यदि दूसरे स्थान से कोई रिश्तेदार या मित्र मृत्यु पर शोक प्रकट करने के लिए आवे और यदि उनके साथ स्त्रियाँ भी हों, तो मृत्यु वाले का मकान एक या डेढ़ फ़र्लाङ्ग बाक़ी रह जाने पर उनके साथ की सब स्त्रियाँ ख़ूब ज़ोर से चिल्ला कर रोने लग जाती हैं। इन लोगों का स्वागत मृतक के घर की स्त्रियाँ भी रो कर ही करती हैं!

वास्तव में मारवाड़ी-समाज की यह प्रथा बड़ी विचित्र है कि जिस आदमी के लिए हमेशा मर जाने की कोशिश करते रहते हैं, उस आदमी के भी मर जाने पर इतना ढोंग किया जाता है! इस समाज में कितने ही बूढ़े इसीलिए शादी करते हैं कि अगर औरत न हुई तो हमारे मरने पर हमको कौन रोएगा। इस रोने के लिए ही दस-दस हज़ार रुपए ख़र्च कर देते हैं; और विवाह करते हैं। उनकी समझ में मरने के पीछे रोना ही एक ऐसी बात है, जिससे आदमी स्वर्ग में पहुँच जाता है। यही क्यों, इस समाज में इस तरह की कितनी बातें हैं, जो सिर्फ़ लोगों को दिखाने को ही की जाती हैं। मारवाड़ी-समाज की इच्छा न होते हुए भी, बहुत से कार्य ऐसे करने पड़ते हैं कि करने वाले को उनका कुछ बुरा नतीजा भोगना पड़ता है!! †

—शिवदयाल अग्रवाल

* * *

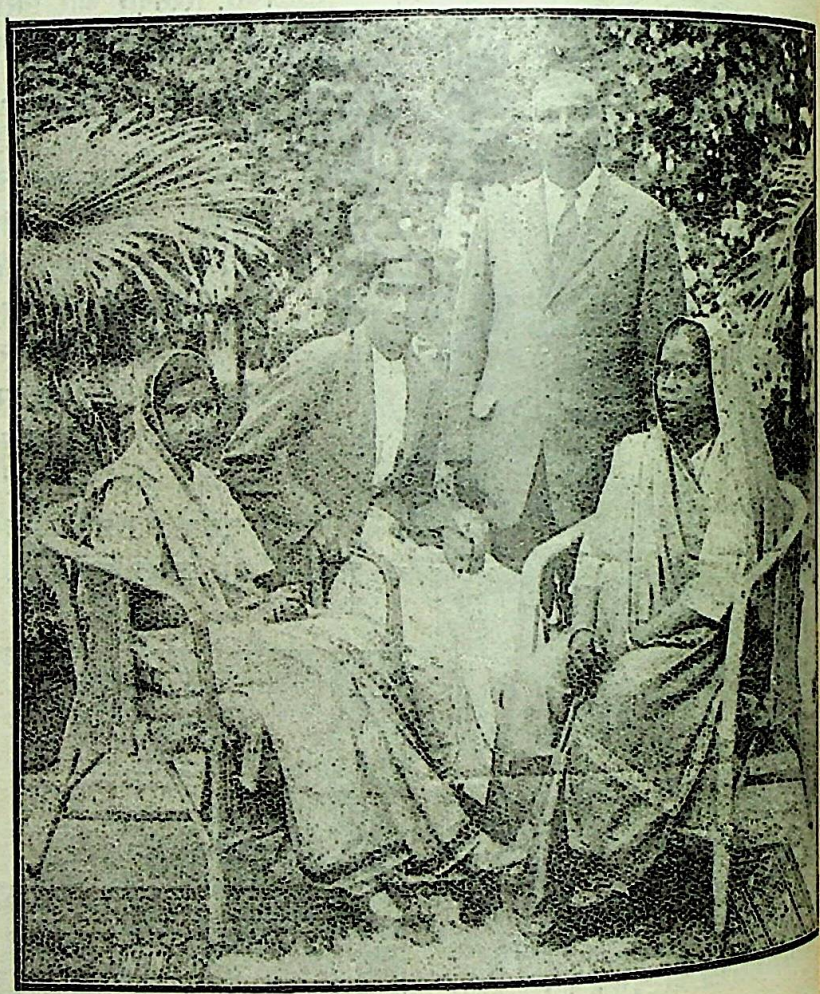

श्री० गुलराज गोपाल जी (सपरिवार)

(परिचय अन्यत्र देखिए)

[† यह कुप्रथा केवल मारवाड़ी-समाज में ही नहीं, "लम्बी नाक" वाले खत्री-समाज में भी भयङ्कर रूप से प्रचलित है, ख़ास तौर से पञ्जाबी खत्रियों का 'स्यापा' मशहूर है। जो रोने-पीटने का ढङ्ग मारवाड़ी-समाज में बतलाया गया है, लगभग ठीक इसी प्रकार के रोने की प्रथा खत्रियों में

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

प्रचलित है। एक विचित्रता यह है कि खत्रियों में बहुत से क़वायद-परेड भी कराए जाते हैं। "नाईन" या "भट्टन" एक उँचे स्थान पर खड़ी होकर मरने करती हैं कि सड़क पर चलते हुए लोग, जो इस पैतरे से अनभिज्ञ होते हैं, यह समझते हैं कि किसी नए मकान की पक्की छत कूटी जा रही है। पूरबी खत्रानियाँ ऐसे अवसरों पर, कोनोंमें मुँह डाल कर "बुढ़िया-पुराण" के आदेशों का पालन करती हैं। यदि नज़दीकी रिश्ते की स्त्रियों की छातियों से पीटते-पीटते खून न निकल पड़े अथवा कम से कम नील न पड़ जाय तो उसकी चर्चा बिरादरी में होने लगती है! इस क़वायद के अलावा मरने वाले के रिश्ते के हिसाब से ६ मास, एक साल और प्रायः ४ वर्षों तक विधवा-स्त्री को दिनभर उपवास करना पड़ता है, केवल शाम को सूर्य डूबने के बाद एक बार भोजन करने की आज्ञा होती है, जिसे खत्रानियों की भाषा में 'लङ्घन' कहते हैं और इस चार वर्ष के समाज-सृजित उपवास की प्रथा को 'चौबरसी' कहते हैं!! इन सब बातों का सचित्र और विस्तृत वर्णन 'चाँद' के "खत्री-अङ्क" में किया जायगा।

—सं० 'चाँद']

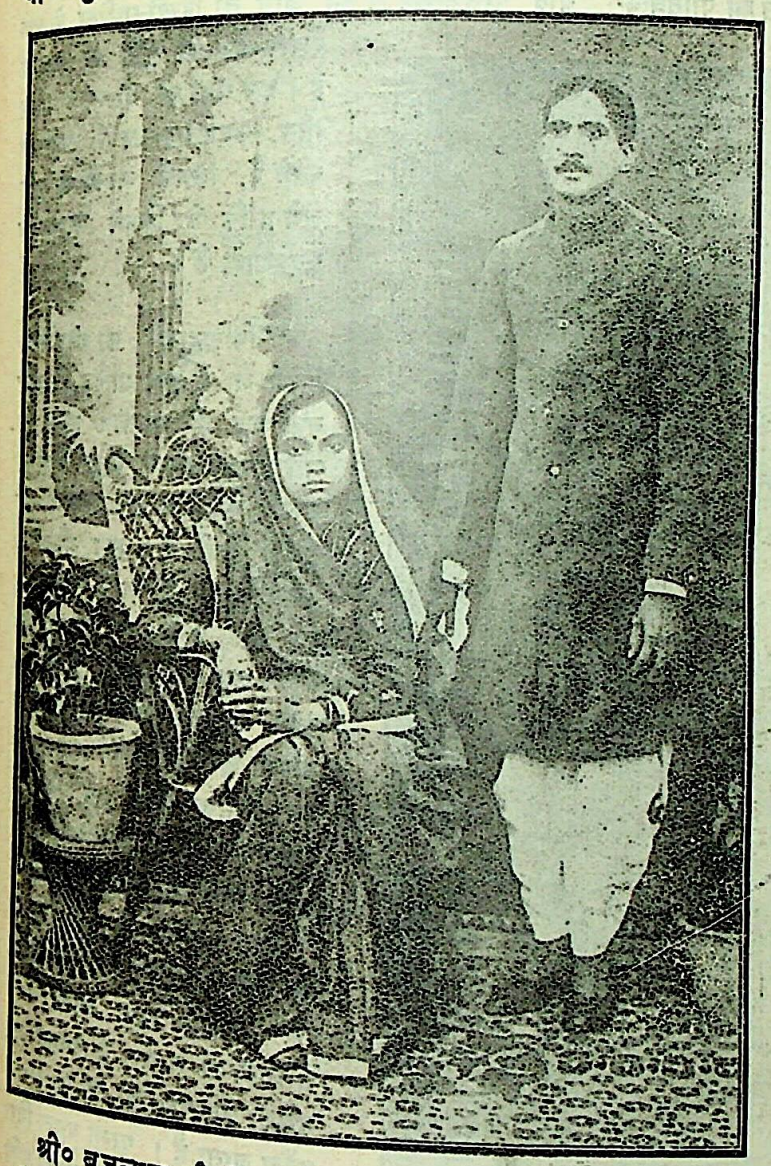

श्री० बृजलाल जी वियाणी, एम०एल० सी० (सपत्नीक)
[आप अकोला (बरार) के रहने वाले एक पक्के समाज-सुधारक और स्वाधीनचेता युवक हैं। आप अ० भा० माहेश्वरी-सभा और राजस्थानी नवजीवन-मण्डल के मन्त्री हैं।]

वाले या वाली का गुण-गान करती है और ठीक एक निश्चित अन्तर पर, चारों ओर गोल चक्कर बना कर खड़ी स्त्रियाँ, जो छातियाँ खोल कर खड़ी रहती हैं, छातियों को इतने ज़ोरों से पीटना शुरू

* * *

मारवाड़ के गीत

जिस प्रकार संसार के अन्य भागों में मनुष्यों के प्रेम, वीर व हास्य-रस के स्वाभाविक उद्गारों का संग्रह कवियों, भाटों, चारणों आदि द्वारा हुआ करता है, उसी प्रकार मारवाड़ी-स्त्रियों के गीतों में पुरानी

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

सभ्यता का मनोहर चित्र अब तक चला आता है। गाँव की साधारण स्त्रियाँ भी शादी, मेले, जन्मोत्सव आदि मङ्गल-अवसरों पर ऐसे गीत गाती हैं, जिनमें करुणा व मधुरता भरी पड़ी है, और जिनसे स्त्री-जाति को पातिव्रत्य-

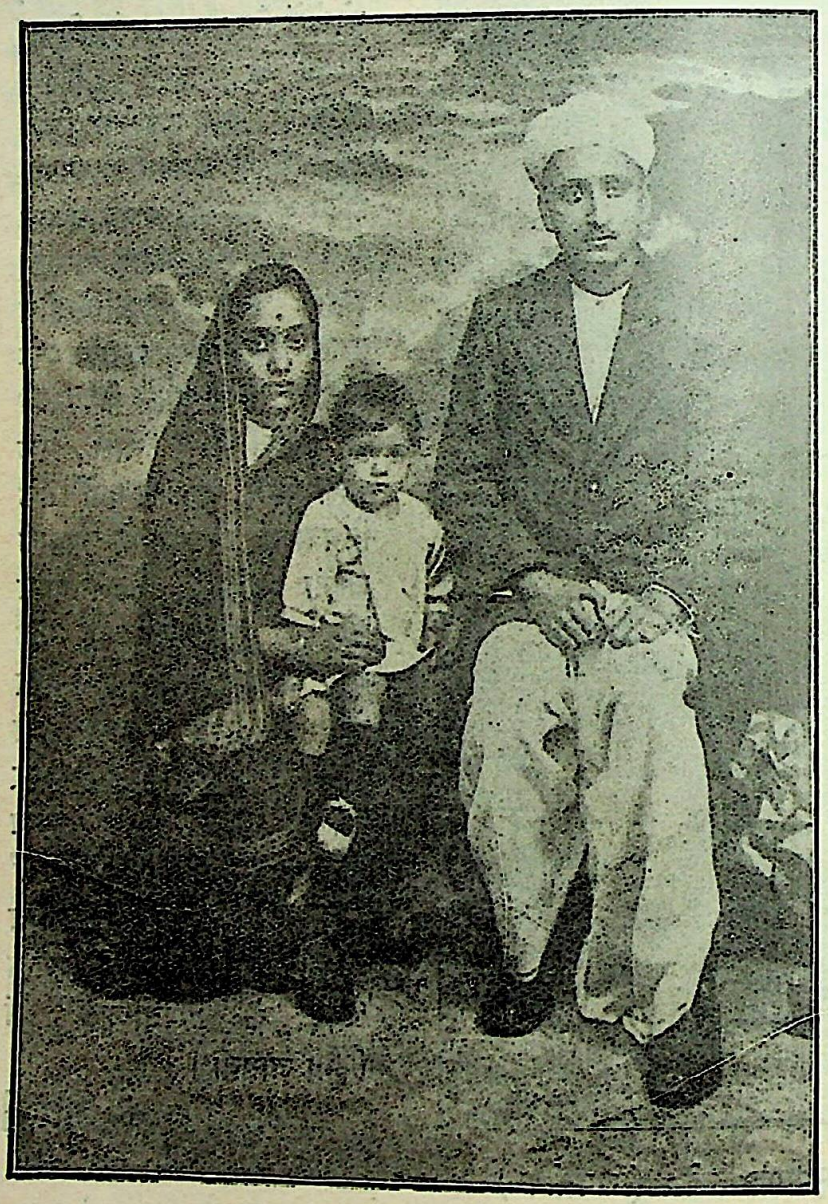

श्री० मदनमोहन जी शारदा (सपरिवार)

[यह एक दृढ़-सुधारक परिवार है, जो धूमधाम और ख्याति से दूर रह कर चुपचाप आत्म-सुधार में लीन है।]

धर्म, वियोगिनी के कर्त्तव्य आदि की शिक्षा मिलती है। आजकल लोगों का प्रायः यह विचार है कि ग्रामीण-गीत किसी काम के नहीं और वे जितनी जल्दी नष्ट हो जायँ उतना अच्छा है। क्योंकि इनमें प्रायः अश्लील भरी रहती है। परन्तु यह विचार नितान्त सत्य नहीं है। मारवाड़ी-भाषा में कितने ही ऐसे गीत प्रचलित हैं, जो यदि पुस्तक-रूप में आ जायँ तो हिन्दी-साहित्य के रोचक-अङ्ग की पूर्ति हो सकती है। हम यहाँ पर दो-एक ग्रामीण गीत, उदाहरण-रूप में उपस्थित करते हैं, जिनसे पाठकों को पता लगेगा कि वे कितने सरस और हृदयग्राही हैं।

"पिणिहारी" का गीत राजपूताने भर में ख़ूब प्रसिद्ध है; जब वर्षा-ऋतु के आगमन होते ही मारवाड़ी-ललनाएँ मधुर स्वर में उमङ्ग के साथ उसे गाती हुई सुनाई देती हैं। इस गीत का भावार्थ बड़ा सुन्दर है। एक स्त्री का पति परदेश गया हुआ है। सावन का महीना आ पहुँचा है। नदी, तालाब सब भर चुके हैं। उसकी अन्य सहेलियाँ सारे श्रृंगार कर छमाछम करती हुई, सिर पर गागर रक्खे हुए, रिमझिम में पानी लेने जा रही हैं। परन्तु नायिका वियोगिनी की भाँति बिना टीकी, काजल लगाए पानी भरने उनके साथ जाती है। सौभाग्य से तालाब के पनघट पर उसका प्रवासी-पति ऊँट पर सवार पहुँच जाता है। परन्तु बहुत दिन बीत जाने से नायिका अपने पति को नहीं पहचान सकी। परन्तु अपनी स्त्री से उदासीनता का कारण पूछा। उसने बतलाया कि मेरे पति परदेश में हैं और इस दशा में स्त्री के लिए श्रृङ्गार करना निषेध है। इस पर पति ने नायिका को अपने साथ चलने को कहा। परन्तु नायिका उत्तर देती है कि ऐसी ज़बान निकालने वाले

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

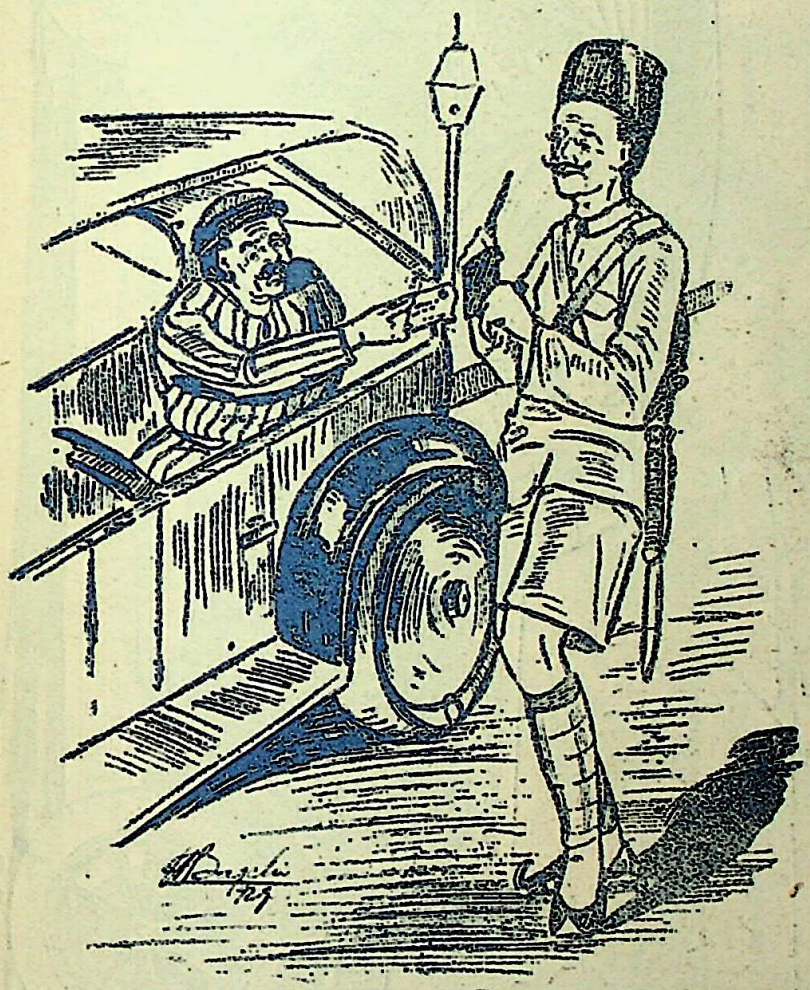

चालान

सिपाही—नाम बताओ नाम, बत्ती क्यों नहीं जलाई.....

सेठ जी—ज ज...जमा...दार जी! माफ़ करो (पाँच रुपए का नोट निकाल कर) पान-तमाखू के लिए.....

सिपाही—तुम्हारी ख़ातिर अभी छोड़ते हैं। ख़बरदार—फिर.....

SRI JAGADGURU VISHWARADHYA
JNANA SIMHASANA MANDIR
LIBRARY
Jangamwadi Math, VARANASI.
Acc. No.....

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

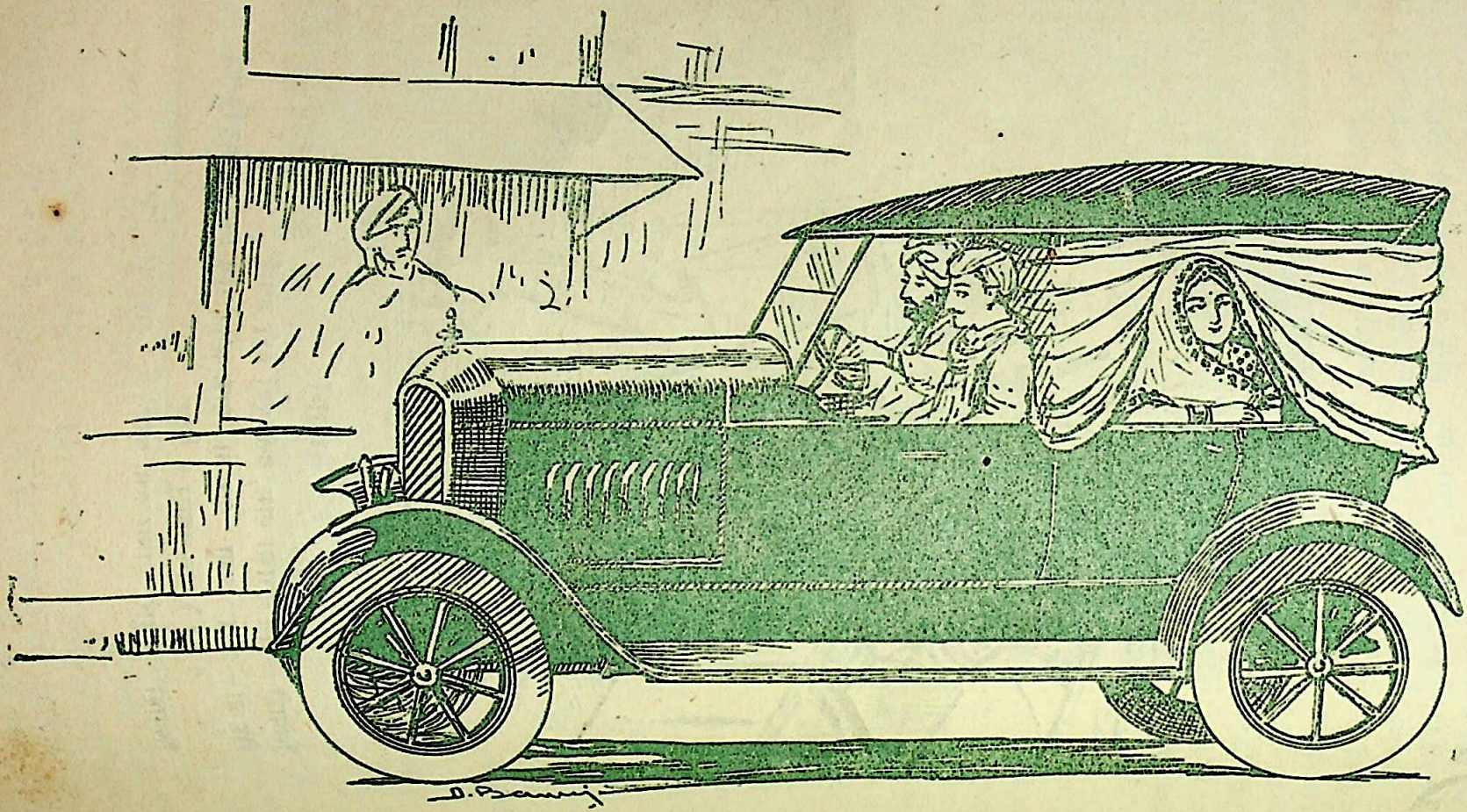

आजकल के पर्दे का स्वरूप

कौं के भीतर से भी सो, दिख सकता है सब संसार !

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

नाम ही से पुस्तक का विषय इतना स्पष्ट है कि इसकी चर्चा करना व्यर्थ है। एक-एक चुटकुला पढ़िए और हँस-हँस कर दोहरे हो जाइए, इस बात की गारण्टी है। एक विशेषता इस पुस्तक में यह है कि सारे चुटकुले विनोदपूर्ण और चुने हुए हैं। कोई भी चुटकुला पढ़ कर अगर दाँत बाहर न निकल पड़ें तो मूल्य वापस। बच्चे-जवान, बड़े-बूढ़े—

[लेखक—श्री० कैलाशचन्द्र जी भटनागर, एम० ए०]

सभी समान आनन्द उठा सकते हैं—यह इस पुस्तक की एक विशेष विशेषता है। पृष्ठ-संख्या लगभग १२५, काग़ज़ ४० पाउण्ड एण्टिक, छपाई-सफ़ाई दर्शनीय, पुस्तक सजिल्द है, ऊपर सुन्दर Protecting Cover चढ़ा है, फिर भी मूल्य क्या? केवल १) रु०; स्थायी तथा 'चाँद' के ग्राहकों से ।।।) मात्र !!!

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

प्लेटफ़ॉर्म का दृश्य

पर्दा न करने पर !

पर्दा करने पर !!

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

साँप क्यों नहीं डस जाय। वह घर आकर अपनी सास को सारा वृत्तान्त सुनाती है। तब सास ने कहा कि जिस आकृति के पुरुष का तुम वर्णन करती हो वही तुम्हारे सौभाग्य का सूर्य और भाल का तिलक प्रिय-पति है। अब असली गीत का आनन्द लूटिए :—

पिणिहारी (राग मल्हार)

आज धूराऊ धँधलौ हे, पिणिहारी हे लो।
मोटोड़ी छाँटारो बरसे मेंह, बालाजी हो ॥ १ ॥
किणजी खुदाया नाडा नाढियाँ हे, पिणिहारी हे लो।
किणजी खुदाया हे तलाव, बालाजी हो ॥ २ ॥
सासूजी खुदाया नाडा नाढियाँ, पिणिहारी हे लो।
सुसरोजी खुदाया हे तलाव, बालाजी ओ ॥ ३ ॥
सात सहेल्याँ रै झूल रै, पिणिहारीजी हे लो।
पाणिड़े ने गई रे तलाव, बालाजी ओ ॥ ४ ॥
घड़ो न डूबै बेवड़ो, पिणिहारी हे लो।
ईडाणी तिर-तिर जाय, बालाजी ओ ॥ ५ ॥
ओराँ रे तो काजल टीकियाँ, पिणिहारी हे लो।
थारोड़ा है फीका नैण, बालाजी ओ ॥ ६ ॥
ओराँ रा पीवजी घर बसै, लज्जा ओठि हे लो।
म्हारोड़ा बसै परदेश, बालाजी ओ ॥ ७ ॥
घड़ो तो पटक दैनी ताल में, पिणिहारी हे लो।
चालै नी ओठीड़े री लार, बालाजी ओ ॥ ८ ॥
बालूँ ने जालूँ थारी जीभड़ी, लज्जा ओठी रे लो।
डस जा थने कालो नाग, बालाजी ओ ॥ ९ ॥
एक ओठी म्हाने इसो मिल्यो, म्हारा सासूजी ओ।
पूँछी म्हारे मनड़ेरी बात, बालाजी ओ ॥ १० ॥
देवर जी सरीसो डीगो पातलो, म्हारा सासूजी ओ।
नणदल बाहरो आवे उणियार, म्हारा बालाजी ओ ॥११॥
थे तो म्हारा बहूजी भोला घणा भोला बहूजी ए लो।
थे तो है थारा ही भरतार म्हारा, बालाजी ओ ॥ १२॥

एक और नमूना लीजिए। इसको मारवाड़ी में 'जलो' कहते हैं। इसमें भी पतिव्रता का सुन्दर चित्र खींचा गया है। नायिका का पति उदयपुर नौकरी पर गया हुआ है। उसकी अनुपस्थिति में तेलिन तेल लाती है, श्रृङ्गार के लिए मालिन फूल लाती है और तमोलिन पान लाती है। परन्तु ये सब वस्तुएँ उसके मन को आकर्षित नहीं कर सकतीं। पति के बिना संसार उसे सूना दिखाई देता है। उदासीन, वियोग-व्यथित और पति-दर्शन को आतुर नायिका इस प्रकार कहती है :—

जलो

जलो म्हारी जोड़ रो उदियापुर माले रे।
वीरो भोली नणद रो म्हारो हुक्म न उठावे रे ॥ टेक ॥
म्हैं थने जलोजी बरजियो तूँ उदियापुर मत जाय।
उदियापुर री काँमणी छैला राखैला विलमाय।
जलो म्हारी जोड़ रो फौजाँ रो माँझी रे।
वीरो म्हारी नणद रो म्हारो कहयो न माने रे ॥ १ ॥
साँझ समै दिन आँथवे रे छैला तेलण लावे तेल।
कहिं ऐ करूँ थारे तेल ने हे तेलण कहि हे करूँ थारे तेल ने।
हे म्हारे आलीजे बिना किसो खेल।
छैलो म्हारी जोड़ रो उदियापुर माले रे ॥ २ ॥
साँझ पड़े दिन आँथवे रे, जलो ! खातण लावे खाट।
कहिं हे करूँ हे थारी खाट ने म्हारे मारूड़े बिना किसो ठाट।
छैलो म्हारी जोड़ रो म्हारे घर नहीं आयो रे ॥ ३ ॥
साँझ पड़े दिन आँथवे रे छैला मालण लावे फूल।
कहिं हे करूँ हे मालण ! फूल ने हे। म्हाने आलीजे बिना लागे शूल।
जलो म्हारी जोड़ रो उदियापुर माले रे ॥ ४ ॥
साँझ पड़े दिन आँथवे रे जला तम्बोलण लावे पान।
कहिं हे करूँ थारा पान ने हे म्हारे आलीजे बिना किसी आन।
जलो म्हारी जोड़ रो उदियापुर माले रे ॥ ५ ॥
मस्त महीनो आवियो रे जलो अब तो खबर म्हारी लेइ।
तो बिन घड़ियन आवड़े रे छैला जीव उठे इत देह।
जलो म्हारी जोड़ रो सेजाँ रो सवादी रे ॥ ६ ॥

एक और बानगी लीजिए ! यह गीत भी वर्षा-ऋतु में मेघ-मलार के स्वरों में गाया जाता है। वियोगिनी नायिका अपने पति के प्रति सम्बोधन करके अपनी दशा का वर्णन करती है कि तुम तो दूर देश नौकरी पर चले गए, इधर सुन्दर सावन का समय आया है। अँधेरी रात में मेरा जी डरता है। मुझे आपके दर्शनों की उत्कट इच्छा है। चाहती हूँ कि आप ऐसी नौकरी करें कि दिन भर काम करके शाम को घर चले आवें। इसलिए हे मृगनयनी के ढोला ! हे प्रिये ! अब जल्द आ जावो; क्योंकि ऐसा सुहावना समय बार-बार नहीं आता।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

निहाल दे सोढा का गीत

सावण तो लागो पिया, भादवो जी काँहि बरसण लागो।
बरसण लागो जी मेह, हो जी ढोला मेह।
अब घर आय जा गोरी रा रे बालमा हो जी ॥ टेक ॥
छपर पुराँणा पिया पड़ गया रे कोई तिड़कण लागा।
तिड़कण लागा बोदा बाँस, हो जी ढोला बाँस।
अब घर आय जा बरसा रुत भली हो जी ॥ १ ॥
बादल में चमकें पिया, बीजली रे कोई मेलाँ में डरपै।
मेलाँ में डरपै घर री नार, हो जी छोटी नार।
अब घर आय जा, फूल गुलाब रा हो जी ॥ २ ॥
गोरी तो भीजे ढोला गोखड़े जी।
आलीजो भीजे जी फौजाँ माँय।
अब घर आय जा आसा थारी लग रही हो जी ॥ ३ ॥
एक तो अँधियारी ढोला ओरड़ी रे पिया।
दूजी हो अँधियारी रात।
अब घर आय जा बरसालू बादला ओ जी ॥ ४ ॥
कूवो तौ व्है तो पीया ढाक लूँ जी ढोला।
समदर ढाकियो, समदर ढाक्यो न जाय, हाँ जी ढोला न जाय।
अब घर आय जा फूल गुलाब रा हो जी ॥ ५ ॥
कागद तो व्है तो ढोला बाँच लूँ जी।
करम न बाँच्यो, करम न बाँच्यो जाय।
अब घर आय जा आसा थारी लग रही हो जी ॥ ६ ॥
टाबर तो व्है तो पीया राख लूँ जी ढोला।
जोबन राख्यो, जोबन राख्यो न जाय।
अब सुध लीजो गोरी रा सायबा हो जी ॥ ७ ॥
नेड़ी-नेड़ी करो पीया चाकरी जी छैला।
साँझ पड्याँ घर, साँझ पड्याँ घर आव, हो जी ढोला आव।
अब घर आय जा बरसा रुत भली हो जी ॥ ८ ॥
थाने तो प्यारी लागे चाकरी जी ढोला, म्हाने तो प्यारा लागो।
म्हाने तो प्यारा लागो आप, हो जी ढोला आप।
अब घर आव मृगा-नेणी रा बालमा हो जी ॥ ९ ॥
असीने टका री ढोला चाकरी रे कोई लाख मोहर री नार।
लाख मोहर री भोली नार, हो जी ढोला।
अब घर आय जा गोरी रा रे बालमा हो जी ॥ १० ॥
दोरी तौ दिखण री ढोला चाकरी रे।
दोरो है नरमदा रो, दोरो है नरमदा रो घाट।
अब घर आय जा गोरी रा सायबा हो जी ॥ ११ ॥
घोड़ो तो भीजे पिया नवलखो रे कोई भीजे रे बनाती।
भीजे रे बनाती रे साज, हो जी ढोला साज।
अब घर आय जा गोरी रा बालमा हो जी ॥ १२ ॥
अङ्ग में नहीं मावे काँचली जी, ढोला हिवड़े नहीं मावे।
हिवड़े नहीं मावे हार, हो जी ढोला।
अब घर आय जा गोरी रा बालमा ओ जी ॥ १३ ॥
आवण-जावण कह गयो रे ढोला, कर गयो कवल अनेक।
कर गयो कवल अनेक।
अब घर आय जा बरसा रुत भली हो जी ॥ १४ ॥
दिनड़ा तो गिण-गिण ढोला, घिस गई मारी आँगलियाँ।
काहीं आँगलियाँ री रेख, हो जी ढोला।
अब घर आय जा फूल गुलाब रा हो जी ॥ १५ ॥
तारा तो छाई रातड़ी जी ढोला फूलड़ा छाई।
फूलड़ा छाई सेज, हो जी ढोला सेज।
अब घर आवो गोरी रा बालमा हो जी ॥ १६ ॥
बिरछा बिलूँबी बेलड़ी पिया।
नराँ बिलूँबी नार हो जी ढोला।
अब घर आय जा गोरी रा बालमा हो जी ॥ १७ ॥
हूँ तो मरूँ छूँ पिया एकली जी, मरूँ कटारी खाय।
हाँ मरूँ कटारी खाय।
अब घर आय जा बालमा हो जी ॥ १८ ॥
नरवर गढ़ पर पड़जो ढोला बीजली रे।
राव जी ने खाइजो, राव जी ने खाइजो काळो नाग।
अब घर आय जा, धण रा बालमा हो जी ॥ १९ ॥

इससे मिलता-जुलता एक गीत और है। उसे भी सुनिए :—

ब्याय चल्या छा भँवरजी ! पीपीली जी।
हाँ जी ढोला ! हो गई घेर घुमेर।
बैठाँ री रुत चाल्या चाकरी जी।
ओ जी म्हारी सास सपूती रा पूत।
मत ना सिधारो पूरब री चाकरी जी ॥ १ ॥
ब्याय चल्या छा भँवरजी ! गोरड़ीजी !
हाँ जी ढोला ! हो गई जोध जुवान।
विलसण की रुत चाल्या चाकरी जी।
ओ जी म्हारा लाल नणद रा वो वीर।
मत ना सिधारो पूरब री चाकरी जी ॥ २ ॥
कुँण थाणाँ घुड़ला भँवरजी ! कस दिया जी।
हाँ जी ढोला ! कुँण थाने कस दिया जीण।
कुण्या जी रा हुकमा चाल्या चाकरी जी।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

ओ जी म्हारे हीवड़े रा जीवड़ा !
मत ना सिधारो पूरब री चाकरी जी ॥ ३ ॥
बड़े वीरे बुढ़ला गोरी ! कस दिया जी ।
हाँ ए गोरी ! साथीड़ा कस दिया जीण ।
राणाजी रा हुकमा चाल्या चाकरी जी ॥ ४ ॥
रोक लीजो भँवरजी मैं बणूँ जी ।
हाँ जी ढोला ! बण ज्याऊँ पीली-पीली म्होर ।
सीर पड़े जद भँवरजी ! वरत ल्यो जी ।
ओ जी म्हारी सेजाँ रा सिणगार !
पियाजी ! प्यारी ने सागे ले चलो जी ॥ ५ ॥
कदे न ल्याया भँवरजी ! सीरणी[1] जी ।
हाँ जी ढोला ! कदे न करी मनुवार ।
कदे न पूछी मनड़े री बारता जी ।
ओ जी म्हारा लाल नणद रा वो वीर !
वाँ बिन गोरी ने पलक न आवड़े जी ॥ ६ ॥
कदे न ल्याया भँवरजी ! सूतली जी ।
हाँ जी ढोला ! कदे वी बुणी नहीं खाट ।
कदेय न सूत्या रलमिल सेज में जी ।
ओ जी पियाजी ! अब घर आओ ।
थारी प्यारी उड़ीके[2] महल में जी ॥ ७ ॥
थारे बाबा जी ने चाए भँवरजी ! धन घणो जी ।
हाँ जी ढोला ! कपड़े री लोभण थारी माय ।
खेजाँ री लोभण उड़ीके गोरड़ी जी ।
थारी गोरी उड़ावे काग ।
अब घर आओ जी कवाई थारी नोकरी जी ॥ ८ ॥
अब के तो ल्यावाँ गोरी ! सीरणी ए ।
हाँ ए गोरी ! अब करस्याँ मनुवार ।
घर आय पूछाँ मनड़े री बारता जी ॥ ९ ॥
अब के ल्यावाँ गोरी सूतली जी ।
हाँ ए गोरी ! आय बुणाँगा खाट ।
कदे सोस्याँ रलमिल थारी सेज में जी ॥ १० ॥
चलो तो ले ल्यूँ भँवरजी ! राँगलो जी ।
हाँ जी ढोला ! पीड़ो ३ लाल गुलाल ।
चलो तो ले ल्यूँ जी भँवरजी ! बीजलमार को जी ।
ओजी म्हारी जोड़ी रा भरतार ।
ल्यो मँगाल्यूँ जी क बीकानेर की जी ॥ ११ ॥

म्होर-म्होर की कातूँ भँवरजी ! कूकड़ी जी,
हाँ जी ढोला ! रोक रुपए रो तार ।
मैं कातूँ थे बैठा बिणज ल्यो जी ।
ओ जी म्हारा लाल नणद रा वो वीर !
जल्दी घर आओ प्यारी ने पलक न आवड़े जी ॥ १२ ॥
गोरी री कुमाई खासी राँडिया रे !
हाँ ए गोरी ! के गाँधी के मणियार ।
म्हें छा बेटा साहूकार का जी ।
ए जी म्हारी घणी ए पियारी नार !
गोरी री कुमाई से पूरा ना पड़े जी ॥ १३ ॥
साँवण खेती भँवरजी ! थे करी जे ।
हाँ जी ढोला ! भादुड़े करयो जी नीनाण ।
सीटाँ री रुत छाया भँवरजी ! परदेश में जी ।
ओ जी म्हारा घणाँ कमाऊँ उमराव ।
थारी पियारी ने पलक न आवड़े जी ॥ १४ ॥
ऊजड़ खेड़ा भँवरजी फेर बसे जी ।
हाँ जी ढोला ! निरधन के धन होय ।
जोबन गए पछे कना बावड़े जी ।
ओ जी थाने लिखूँ बारम्बार ।
जल्दी घर आओ जी क थारी धण एकली जी ॥ १५ ॥
जोबन सदा न भँवरजी ! थिर रहे जी ।
हाँ जी ढोला ! फिरती-थिरती छाँय ।
पुल का तो बाया जीक मोती नीपजै जी !
ओ जी थारी प्यारी जी जोवे बाट ।
जल्दी पधारो देश में जी ॥ १६ ॥

—जगदीशसिंह गहलोत

१—मिठाई ; २—बाट जोहना ; ३—पीड़ा, चौकी

* * *

राजपूताने की कविता और उसका चमत्कार

राजपूताने की वीर वसुन्धरा से जैसे वीर-रत्न उत्पन्न होते रहे हैं, वैसे ही यहाँ की कविता भी वीरत्व की जननी है, जिससे वीर राजपूतों और राजपूतनियों के रुधिर में शूर-वीरता का सञ्चार होने लगता है। अब तो राजपूतों में अगली-सी वीरता नहीं रही है, परन्तु जब थी तो एक छोटा सा दोहा, जो उन्हीं की सीधी-सादी भाषा

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

में होता था, बिजली के प्रभाव का सा काम कर जाता था। राजपूताने के कवि ठेठ से वीर-रस की ही कविता करते रहे हैं, शृङ्गार-रस उनकी कविता में बहुत कम है और जो कुछ है भी, तो वह अन्य कविताओं के कैंडे का नहीं है, जिससे सदाचारी नर-नारियों के भी चरित्र बिगड़ जाने का भय रहता है।

एक बालक ठाकुर को ब्रजभाषा की कविता पढ़ाई जाती थी और काशी जी के एक कवि ख़ूब अठला-अठला कर उसका अर्थ करते थे। एक दिन ठाकुर की माँ ने सुना कि उसका लड़का यह आधा दोहा पढ़ रहा है :—

मृगनयनी के बयन तैं गयन अयन मन होय।

कवि जी इस दोहे का अर्थ बड़े मज़े से कर रहे थे, यह उसको इतना बुरा लगा कि किसी लौंडी-बाँदी के द्वारा न कहला कर आप ही भीतर से कह उठी कि पण्डित जी, मेरे बेटे को यह क्या पढ़ाते हो, जो मैं कहूँ वैसे दोहे पढ़ाओ और उनका अर्थ समझाओ। उसने यह दोहा पढ़ा :—

सोढे[1] ऊमर कोटरो, यौं बाही अब यट्ट[2]।
जाने बेहू भाइए, आथ[3] करी बे बट्ट[4]॥

पण्डित जी सुन कर हैरान रह गए। ठकुरानी की बात और इस दोहे का अर्थ कुछ नहीं समझ सके। तब एक देशी कवि ने उनको समझाया कि माँ जी की यह मन्शा है कि ठाकुर साहब को वीर-रस की कविता पढ़ाओ, जैसा कि यह दोहा है। इसका यह अर्थ है—"ऊमर कोट के सोढा ने ऐसी तलवार चलाई कि जिससे बैरी के दो-दो टुकड़े ऐसे समतुल्य हो गए, जैसे दो भाई पैतृक धन को तोल कर बराबर दो भागों में बाँट लेते हैं।" इस दृष्टान्त से यह सिद्ध होता है कि अगली वीर माताएँ अपनी सन्तान को वीर बनाने में कैसी तत्पर रहती थीं और उनको किस प्रकार की कविता सिखाती और पढ़ाती थीं। अब कुछ अन्य दृष्टान्त इस वीर-कविता के लिखे जाते हैं।

× × ×

मारवाड़ के राव मालदेव की भटियाणी रानी ऊमादे जी, जो रूठी रानी के नाम से विख्यात हैं, विवाह की रात ही को राव जी की एक अनुचित बात देख कर रजपूती की ग़ैरत से रूठ गई थीं और पति से जीवन-पर्यन्त रूठी रहीं, मुँह से भी नहीं बोलीं। परन्तु जब सुना कि पति का मरण हो गया है तो ५० कोस दूर बैठी ही पति की पगड़ी को गोद में लेकर सती हो गईं। उस समय उन्होंने कहा था कि अब मैं किससे रूठूँगी। जिसने अब तक मेरा मान अखण्ड रक्खा, रूप और यौवन के अत्यन्त लोभ में अपने जीव को दबा-दबा कर मुझे पूरी और सच्ची मालिन बनाया, जब वही संसार में नहीं रहा तो मैं अकेली रह कर क्या करूँगी? इस लोक में तो मेरा मान बिगड़ गया, अब उस लोक में जाकर उससे मान नहीं करूँगी। संसार का सुख तो क्षणभङ्गुर था, उसका लाभ तो मैंने ले लिया, पर अब सती-लोक के लाभ से विमुख नहीं रहूँगी।

ऐसी परम मानिनी को ईसरदास नामक एक बड़े चतुर चारण ने एक बार मान छोड़ने और पति से मेल कर लेने पर राज़ी कर लिया था और वह उनकी बातों में आकर अजमेर से जोधपुर को आती थीं। जिस दिन उनकी सवारी जोधपुर में पहुँचने वाली थी, आसा जी बारहठ ने उनकी सौतों से, जो स्वार्थ के वश उनका और राव जी का मेल होना नहीं चाहती थीं, सूक (शिक्षा) लेकर चलती सवारी में मुजरा मालूम करा कर यह दोहा पढ़ा :—

मान रखे तो पीव तज, पीव रखे तज मान।
दोय गयन्दन बन्धिए, एकण खम्भूठाण[1]॥

अर्थात्—"जो मान रखना है तो पति को तज दे और जो पति को रखना है तो मान छोड़ दे। क्योंकि एक गजशाला में दो हाथी नहीं बँध सकते हैं।"

रूठी रानी ने इस दोहे के सुनते ही सवारी लौटा दी और गाँव कोसाने में जाकर रह गईं, और आसा जी को बहुत सा इनाम देकर कहा कि तुमने ख़ूब किया, जो अपने भतीजे ईसरदास के जाल से मुझे छुड़ा लिया। मैं कभी अपना मान नहीं छोड़ूँगी, जिसको बचपन से मैंने पाला है और साँप के मणि के समान अपने सिर पर रख छोड़ा है।

फिर ईसरदास ने बहुत सिर मारा और जोधपुर चलने के वास्ते लाख हा-हा खाए, पाँव पड़े, पर

१ एक जाति के राजपूत; २ तलवार; ३ धन; ४ दो भाग।

१ गजशाला या हाथी का थान।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

बड़ी व्यवस्थापिका सभा के प्रभावशाली सदस्य तथा बाल-विवाह-बिल (अब क़ानून) के विधायक और मारवाड़ी-समाज के कट्टर सुधारक

रायसाहब हरविलास जी शारदा

ALLAHABAD

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

केवल विवाहित स्त्री-पुरुष ही इस पुस्तक को मँगावें

सन्तानशास्त्र

[ले० विद्यावाचस्पति पं० गणेशदत्त जी गौड़, 'इन्द्र']

भूमिका-लेखक—

श्री० चतुरसेन जी शास्त्री

जो माता-पिता मनचाही सन्तान उत्पन्न करना चाहते हैं, उनके लिए हिन्दी में इससे अच्छी पुस्तक न मिलेगी। काम-विज्ञान जैसे गहन विषय पर यह हिन्दी में पहली पुस्तक है, जो इतनी कठिन छान-बीन करने के बाद लिखी गई है। सन्तान-वृद्धि-निग्रह का भी सविस्तार विवेचन इस पुस्तक में किया गया है। बालपन से लेकर युवावस्था तक, अर्थात् ब्रह्मचर्य से लेकर काम-विज्ञान की उच्च से उच्च शिक्षा दी गई है। प्रत्येक गुप्त बात पर भरपूर प्रकाश डाला गया है, प्रत्येक प्रकार के गुप्त रोग का भी सविस्तार विवेचन किया गया है। रोग और उसके निदान के अलावा, प्रत्येक रोग की सैकड़ों परीक्षित दवाइयों के नुस्ख़े भी दिए गए हैं। पुस्तक सचित्र है—५ तिरङ्गे और २५ सादे चित्र आर्ट पेपर पर दिए गए हैं। छपाई-सफ़ाई की प्रशंसा करना व्यर्थ है। पुस्तक समस्त कपड़े की जिल्द से मण्डित है, ऊपर एक तिरङ्गे चित्र सहित Protecting Cover भी दिया गया है। इतना होते हुए भी प्रचार की दृष्टि से मूल्य केवल ४) रु० रक्खा गया है। 'चाँद' तथा स्थायी ग्राहकों से ३); माँगें अधिक होने के कारण रात-दिन लग कर ५ महीने हुए, नया परिवर्धित और संशोधित संस्करण प्रकाशित हुआ था, वह भी समाप्त हो गया अब तीसरा परिवर्धित संस्करण प्रेस में है। शीघ्र ही मँगा लीजिए, नहीं तो पछताना पड़ेगा। पुस्तक के अब तक तीन संस्करण हो चुके हैं !!

व्यवस्थापिका 'चाँद' कार्यालय
इलाहाबाद

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

रक्खी, परन्तु वह मानिनी न मानी सो न मानी[1]! क्योंकि आसाजी ने उसका मनचाहा मन्त्र सुना कर उसके मानी मन को पहले से भी अधिक अचल कर दिया था।

× × ×

मारवाड़ के राठौड़ राव चन्द्रसेन बड़े मानी राजा थे, जो मेवाड़ के महाराणा प्रतापसिंह के समकालीन थे। जोधपुर छूट जाने पर भी जीवन-पर्यन्त अकबर बादशाह से लड़ते रहे। परन्तु उनके पोते राव कर्मसेन जहाँगीर बादशाह के अधीन हो गए थे। बादशाह ने अपनी उदारता से उनको अपने पास रख लिया था और मिनाय का परगना जागीर में दिया था। एक दिन बादशाह हाथी पर सवार हुए तो चँवर लेकर उनकी खवासी में (पीछे) बैठने के लिए कर्मसेन से कहा गया। बादशाह के पीछे चँवर करने को बैठने में बड़े-बड़े अमीर अपना गौरव मानते थे, इसलिए कर्मसेन भी राज़ी होकर बादशाह के पीछे चँवर करने को बैठ गए। तब एक चारण ने, इसमें जोधपुर के राजवंश की क्षति समझ कर, यह दोहा पढ़ा :—

कीधा कर करतार किरमर[2] कारण करम सी।
सह[3] देख संसार चमर हलावस[4] मुँ[5] चवी॥

अर्थात्—"हे कर्म सेन! करतार ने तो दो हाथ तलवार के वास्ते ही बनाए हैं, तू कैसे चँवर हिलाएगा। यही तो सब संसार देख रहा है, जो मैं कहता हूँ[6]।"

कर्मसेन यह सुनते ही चँवर छोड़ कर हाथी से कूद पड़े और तलवार लेकर घोड़े पर सवार हो गए। तब समझदार बादशाह ने भी बात बना कर कहा कि कर्मसेन, मुझे भी तुझसे तलवार का ही काम लेना है। यह मेरी ग़लती थी जो तुझे चँवर करने को बैठाया।

× × ×

१ मानो वही बात थी जो इस गीत में कही गई है—
"मनावत रैन गई, मानिनी अजहूँ न मानी।"
२ तलवार; ३ सब; ४ मैं; ५ कहता हूँ।
६ इस विषय का यह दोहा और भी है :—
करमा उमसेन रो तो जननी बलिहार।
चमर न झले साहरा तू झले तरवार॥
कहते हैं यह दोहा कर्मसेन की माँ ने कह कर भेजा था।

प्रायः पचास वर्ष पहले की बात है कि मारवाड़ में एक व्यक्ति मूलजी नाम का केसरी सिंहोत जोधा राठौड़-वंश का था, जो गाँव मेडकिया का रहने वाला था। वह बीकानेर के वीदा राठौड़ों के हाथ से मारा गया। इस पर जोधा और वीदा राठौड़ों में बैर हो गया और यहाँ तक बात बढ़ गई कि कई वर्षों तक दोनों में लड़ाई-झगड़ा होता रहा, जिससे जोधा-वीदा बैर की कहावत चल निकली। राज्य में भी कई मिसलें बन गईं, परन्तु कुछ नबेड़ा न हुआ। जोधा मारवाड़-राज्य की उत्तरी सीमा पर और वीदा बीकानेर की दक्षिणी सीमा पर रहते हैं और भाई-भाई होने के सिवा दोनों पड़ोसी भी हैं। परन्तु मूलजी के बैर से एक-दूसरे के ख़ून के प्यासे हो गए। उनकी ख़ून-ख़राबी और लूट-मार से प्रजा की भी हानि होती थी, इसलिए गवर्नमेण्ट से जोधपुर और बीकानेर की रियासतों को उनका झगड़ा मिटाने की ताकीद होती रहती थी। निदान दोनों रजवाड़ों के हुक्म से लाडणू और लेडी के जोधा ठाकुर भैरोंसिंह और पेमसिंह; और वीदासर वग़ैरह ठिकानों के वीदावत सरदार, कोलाद जी में, जो एक प्रसिद्ध तीर्थ बीकानेर-राज्य का है, इकट्ठे हुए। मिसलें पढ़ी जाने लगीं और आपस में सन्धि और शान्ति कर लेने का विचार होने लगा। एक चारण ने यह रङ्ग-ढङ्ग देख कर उच्च स्वर से यह दोहा सुनाया :—

तीखा भाला तोल, बैर सचो जो बाल जो।
मिसलाँ माँडे मोल, मूला रो कर जो मती॥

अर्थात्—"तीक्ष्ण भाले तोल कर सराहने योग्य बैर लेना, मिसलें लिख-लिख कर मूलजी का मोल मत कर देना। अर्थात् रुधिर के बदले द्रव्य मत ले लेना।"

दोनों ओर के पञ्च यही विचार रहे थे। परन्तु इस दोहे के सुनने से मूलजी के निरपराध मारे जाने की याद करके भैरोंसिंह और पेमसिंह को ऐसा जोश आया कि तुरन्त तलवार पर हाथ रख कर उठ खड़े हुए और वहाँ से चले आए। पञ्चायत अधूरी रह गई और यही ख़ैर गुज़री कि वीदावतों को जोश न आने से तलवार नहीं चली, नहीं तो आपस में कट-मरने की तैयारी इस एक दोहे से हो चुकी थी।

—मुंशी देवीप्रसाद (स्वर्गीय)

* * *

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

मारवाड़ी-समाज में पर्दा

यों तो इस देश में बहुत सी जातियों में पर्दे की असभ्य प्रथा न्यूनाधिक पाई जाती है। परन्तु हमारे मारवाड़ी-समाज में इसकी जैसी बहुतायत है और दुरुपयोग हो रहा है, वैसा शायद भारतवर्ष के किसी भी कोने में नहीं मिलेगा।

इस पर्दा-प्रथा के अन्दर जितने घृणित और निन्दनीय कर्म छिपे रहते हैं, उनको यदि विस्तारपूर्वक वर्णन किया जाय तो एक पोथा तैयार हो जाय। यह प्रथा बिलकुल इसी तरह है, जैसे कोई आदमी भगवा कपड़ों से अपने शरीर को ढक कर साधु के रूप में चाहे जैसे काम चोरी, डकैती, ख़ून और व्यभिचार करता रहे और उन भगवा कपड़ों की ओट में पूजनीय और प्रतिष्ठित भी बना रहे। इसी तरह पर्दे के भीतर स्त्रियाँ जो चाहें, कर सकती हैं, उनकी तरफ़ कोई उँगली नहीं उठा सकता। क्योंकि हमारे समाज में जो स्त्री जितना अधिक पर्दा करती है, उतनी ही अधिक सती-सावित्री समझी जाती है। अधिकांश पुरुषों को यह अन्ध-विश्वास है कि स्त्री जितनी ज़्यादा पर्दे में रहती है, उतनी ही सांसारिक बातों से अनभिज्ञ रहने के कारण किसी पाप-जाल में नहीं फँस सकती। वे इस बात को कभी नहीं सोचते कि इस पाप-पङ्क में फँसने का मुख्य कारण उनकी सांसारिक से अनभिज्ञता ही है।

इस बात को सभी जानते हैं कि जो स्त्रियाँ निकाल कर बाहर जाती हैं, उनके पैरों के झनकार स्वतः ही उनकी ओर ध्यान आकर्षित है। फिर गुण्डे और बदमाश तो इस ताक में ही हैं। वे लोग इस बात की चेष्टा हैं कि किसी तरह के अन्दर से के दर्शन हो जायँ। आवाज़ाकशी तक बाज़ नहीं आते। ने स्वयं देखा है ५-७ स्त्रियाँ जा और दो-चार मिल कर स्त्रियों बग़ल से निकलते पीछे से कपड़ा लेते हैं और घंटा जाता है। उनकी बग़ल से अश्लील शब्द निकल जाते हैं यहाँ पर लिख भी सम्भव नहीं है।

श्रावण के महीने जहाँ देखिए वहीं की झुण्ड औरतें से अपने झुण्डों हुए मन्दिरों की लपकी हुई रही हैं। वहाँ पर इस पर्दे का कैसा सदुपयोग यह देखने से ही पता लगता है। बदमाशों को करने का अवसर अधिकतर वहीं मिलता है। परन्तु समाज को क्या? उनका घूँघट तो क़ायम है। बेचारी तो बोल ही क्या सकती हैं। वे पलती हैं वातावरण में हैं, जहाँ ज़रा कुछ बोलना, घूँघट

आगामी अङ्क से

तीन धारावाही लेख प्रारम्भ होंगे

बार विशेषाङ्क होने के कारण कई महत्व-पूर्ण लेख प्रकाशित नहीं हो सके। आगामी अङ्क से हास्य-रस के समर्थ लेखक श्री० जी० पी० श्रीवास्तव, बी० ए०, एल्-एल्० बी० का सुप्रसिद्ध लेख "लतखोरीलाल" का दूसरा खण्ड प्रारम्भ होगा; श्री० "पागल" महोदय का "दिल जले की आग" तथा प्रोफ़ेसर चतुरसेन शास्त्री का "विधवा" उपन्यास धारावाही रूप से प्रकाशित किया जायगा। इसके अतिरिक्त अन्य भी कई लेख-मालाएँ शुरू की जायँगी। नए होने वाले ग्राहकों को इसी अङ्क से ग्राहकों की श्रेणी में नाम लिखा लेना चाहिए, नहीं तो पछताना होगा। 'चाँद' के पुराने अङ्क ५०) रु० व्यय करने पर भी नहीं मिलते, यह सभी जानते हैं। जिन नए ग्राहकों को प्रस्तुत मारवाड़ी-अङ्क कमी के कारण न मिल सके, उन्हें दिसम्बर से ग्राहकों की श्रेणी में नाम लिखा लेना चाहिए। इस वर्ष अन्य कई जातीय विशेषाङ्क प्रकाशित करने की विशाल योजना हो रही है!

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

और दुनिया भर की दूसरी अच्छी बातें पाप समझी जाती हैं।

प्रायः ऐसा देखा जाता है कि मामूली घरों की तो बात ही क्या, बड़े-बड़े घरों तक की स्त्रियाँ, जो पर्दे की चहारदीवारी में बहुत हिफ़ाज़त से रक्खी जाती हैं, अपने पुरुषों के दूकानों अथवा नौकरी पर चले जाने पर, चूड़ीगर, विलायती, रँगरेज़ या इसी तरह के अन्य सौदा बेचने वाले सौदागरों को सौदा लेने के लिए घर में बुला लेती हैं और सौदा लेते वक़्त पैसे-पैसे के लिए इस क़दर छीना-झपटी करती हैं कि सर पर से साड़ी सरक जाती है। चीज़ को एक तरफ़ सौदागर खींचता है, दूसरी तरफ़ स्त्रियाँ छीनती हैं। पाठक ही सोचें कि जिन औरतों का यह व्यवहार उन सौदागरों से साथ होता है, जो घरों में सौदा बेचने को ज़रा देर के लिए आते हैं, तो दिन भर घर में रहने वाले नौकरों के साथ कैसा व्यवहार होता होगा। लेकिन इसका पता किसको लगे? जब घर के लोग आते हैं, तब तो बाक़ायदा पर्दा हो जाता है।

हम तो यह निश्चयपूर्वक कह सकते हैं कि मारवाड़ी पुरुष-समाज कभी भी उन्नति नहीं कर सकता, जब तक कि स्त्रियों की उन्नति की कोशिश नहीं की जाती। और स्त्रियों की उन्नति होना तभी सम्भव है, जब कि यह पर्दा-प्रथा हमारे समाज में से जड़ से खोद कर मिटा दी जावे और इसका नामोनिशान तक न रहे। अभी तक मारवाड़ी-समाज का नियम यही है कि स्त्रियों का पर्दा दूर करने वालों को बड़ा हेय, तुच्छ और घृणित समझते हैं और जाति-बहिष्कृत करने की चेष्टा करते हैं। यद्यपि वे जानते हैं कि वे लोग, जिन्होंने पर्दा-प्रथा को तोड़ दिया है, दुनिया की निगाह में हेय नहीं हैं, और जो लोग इस नाशकारी प्रथा के अनुयायी हैं, तिरस्कार और घृणा की दृष्टि से देखे जाते हैं। स्त्रियाँ मनुष्य-समाज का आधा अङ्ग हैं, और वे पर्दे के कारण निरक्षरा और रूढ़ियों की ग़ुलाम रह कर मनुष्य-जीवन को व्यर्थ खो देती हैं। बहुत से मारवाड़ियों का यह विश्वास है कि यदि स्त्रियाँ पर्दा नहीं करेंगी तो वे भ्रष्ट और कुलटा हो जावेंगी। उनको चाहिए कि वे दुनिया भर की सभ्य समाजों पर दृष्टिपात करें। अपने ही देश में गुजरातियों, पारसियों, मद्रासियों और दूसरी कितनी ही जातियों को देखें, जिनमें पर्दा नहीं होता। क्या उनमें इतना व्यभिचार है? हम तो यही कहेंगे कि नहीं, और कभी नहीं। इस पर शायद यह कहा जा सकता है कि वे स्त्रियाँ शिक्षिता होती हैं। पर क्या हमारे मारवाड़ी-समाज की स्त्रियाँ शिक्षिता नहीं हो सकतीं? अवश्य हो सकती हैं, लेकिन तभी, जब कि उन्हें पर्दे के बन्धन से मुक्त कर दिया जाय।

अब इस पर्दे के द्वारा होने वाले शारीरिक पतन की ओर ध्यान दीजिए। आज मारवाड़ी-समाज में संग्रहणी, तपेदिक़ आदि साङ्घातिक रोगों में ग्रसित स्त्रियों की कमी नहीं है। इन सबका मुख्य कारण पर्दा है। इस सम्बन्ध में कलकत्ते के हेल्थ-ऑफ़िसर ने लिखा है कि कलकत्ते में १५ से २० वर्ष तक की आयु के जितने व्यक्ति मरते हैं उनमें स्त्रियों की संख्या पुरुषों से छः गुनी होती है। इसका कारण बतलाते हुए वे कहते हैं :—

I am convinced that it is the retention of the Purdah System in the densely populated gullies of a congested city that leads so many young girls to an early death from tuberculosis. In a great city, it is difficult to secure absolute privacy without shutting out light and air, as houses in narrow lanes and gullies are almost certain to be over-looked. Consequently the Zenana is usually situated in the inner portion of the house, ill-lighted and ill-ventilated, but effectually screened from observation.

इसका सारांश यही है कि लड़कियों और नवयुवतियों के इस रोग का शिकार होने का मुख्य कारण पर्दा करना और स्वच्छ हवा तथा रोशनी से वञ्चित रह कर घरों के भीतर बन्द रहना ही है।

प्रत्येक स्त्री और पुरुष के लिए शारीरिक शक्ति प्राप्त करना परम कर्त्तव्य है। परन्तु बेचारी स्त्रियाँ छोटी अवस्था से ही पर्दे में रक्खी जाती हैं, जहाँ वे कोमल कली की तरह मुरझा कर पीली पड़ जाती हैं। आशा है, मारवाड़ी-समाज शीघ्र से शीघ्र इस कुप्रथा की ओर ध्यान देने की कोशिश करेगा।

—रामसरूप भालोठिया

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

[श्री० जी० पी० श्रीवास्तव, बी० ए०, एल्-एल्० बी०]

पकौड़ीमल

अङ्क—१

दृश्य—१

(सेठ पकौड़ीमल के द्वार के सामने)

(केशवविहारी आता है)

केशव—(सेठ पकौड़ीमल का द्वार खटखटा कर) अजी सेठ जी !...ओ सेठ जी! अरे! भई लाल पकौड़-मल! (अलग) बोलते ही नहीं। अब क्या करूँ? (प्रकट) अजी लाला जी! ओ सेठ जी! (अलग) धत् तेरे की! पुकारते-पुकारते गला बैठ गया! बहुत दिनों से इनसे भेंट हुई। आज ज़रा योंही मिलने चला आया तो द्वार ही नहीं खोलते। अब कौन चिल्लाए, मारो गोली। अच्छा एक दफ़े और पुकार लूँ। (प्रकट) अजी सेठ जी! तो क्या मैं चला ही जाऊँ? आप ही की मतलब की बात कहने आया था। अच्छा जाता हूँ।

पकौड़ी—(मकान के भीतर से) नहीं-नहीं, ठहरो-ठहरो। अभी आया। क्या है? कौन है?

केशव—(अलग) ओहो! अपने मतलब का नाम सुन कर कितनी जल्दी चौंके।

पकौड़ी—(हाथ में लोढ़ा लिए मकान से बाहर निकल कर) कौन है? बाबू केशवबिहारी? ओहो! गोपाल की! जै गोपाल की। कहिए-कहिए, क्या है? इस रात्रि के समय कैसे पधारे?

केशव—तब और किस वक्त आता? दिन भर तो आप दूकान पर रहते हैं। वहाँ बात करने की आपको फ़ुरसत कहाँ? इस वक्त आऊँ तो तीन घण्टे तक आपके द्वार पर सर फोड़ने पर भी दरवाज़ा नहीं खुलता।

पकौड़ी—क्षमा कीजिए, मैं ज़रा मसाला पीस रहा था। इसीलिए.....

केशव—मसाला?

पकौड़ी—हाँ, देखते नहीं हाथ में लोढ़ा आप के लिए हूँ। परन्तु वह मतलब वाली बात.....

केशव—क्यों? आप इतने बड़े लखपती सेठ होकर क्या एक नौकर भी नहीं रख सकते? दमड़ी के चमड़ी की ऐसी बेक़दरी? तभी तो आप लोगों में कोई .....

पकौड़ी—वाह! रखा है क्यों नहीं? हाथ में रक्खा है।

केशव—तो क्या उसे सूरत देखने के लिए रक्खा है?

पकौड़ी—नहीं जी, वह सेठानी जी के पाँव दबाने है। बेचारी थकी-माँदी अभी पीहर से आई हैं.....

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

केशव—पाँव दबा रहा है ! सेठानी जी के ? कौन, वह ग्वाला ?

पकौड़ी—हाँ-हाँ वही। इसमें हर्ज ही क्या है ?

केशव—कुछ भी नहीं।

पकौड़ी—और ग्वाले होते किस दिन के लिए हैं, आप ही बताइए !

केशव—जी हाँ, मैं अब सब समझ गया।

पकौड़ी—हम लोगों के यहाँ की स्त्रियाँ भाई बड़ी सुकुमार होती हैं। उस पर हमारी सेठानी जी तो ऐसी फूल की कली हैं कि जब तक उनके पैर न दबाए जायँ, तब तक उन्हें नींद ही नहीं पड़ती।

केशव—मगर·····मगर·····

पकौड़ी—क्या ? क्या ? कहिए !

केशव—कुछ नहीं, यही कि पहले तो शायद उनमें यह आदत न थी। क्योंकि और कभी तो आपके यहाँ कोई नौकर न देखने में आया और न सुनने में। बल्कि आप ख़ुद ही कहते थे कि सब काम तो वही कर लेती हैं, बेकार नौकर रख कर तनख़ाह क्यों दूँ ?

पकौड़ी—अरे ! क्या आपको ख़बर ही नहीं ? अजी वह सेठानी जी तो लुढ़क गईं। तभी तो इस बार देश जाकर मुझे फिर सगाई करनी पड़ी। पूरे चौबीस हज़ार देकर यह सोलह बरस की छोरी लाया हूँ। हमारे यहाँ बड़े दाम ख़र्चने पर फिर कहीं स्त्री का मुख देखना नसीब होता है। परन्तु वह बात·····

केशव—अरे ! आपने फिर शादी की ? और इस अवस्था में ? अब तो मुझसे बिना कहे रहा नहीं जाता। अजी लाला जी, आपके दो-दो जवान लड़के कचौड़ीमल और पचकौड़ीमल हैं ही। उस पर आपके कर्मों पर रोने के लिए शायद एक जवान विधवा लड़की भी है। तब भला आपको शादी करने की ऐसी क्या पड़ी थी ?

पकौड़ी—अजी, लड़के तो ससुरे मेरे लड़कपन में ही पैदा हो गए थे। इसमें मेरा क्या दोष ? अभी मेरी उमर ही क्या है—केवल उड़नचास बरस की है; और उनसे हमें प्रयोजन ? वह अपना अलग कार-बार करते हैं। छोरी भी भक्तिन होकर भक्तराज जी की सेवा करती है और उन्हीं के यहाँ धर्म-कर्म में अपना जीवन सुधार रही है। चलो उस राँड़ से भी छुटी मिली। ऐसी दशा में बिना सगाई किए यह गृहस्थी का बोझ भला हमारे अकेले उठाए कहीं उठ सकता था ?

केशव—लड़की भक्तराज जी के यहाँ रहती है ?

पकौड़ी—और नहीं तो क्या ? उनकी वह भक्तिन ही जो ठहरी। गोपी बन कर वहाँ उनके साथ रास-लीला करती है। बड़े-बड़े घरों की स्त्रियाँ उस रास-लीला में सम्मिलित होना अहोभाग्य समझती हैं ! और क्या ? क्योंकि भक्तराज जी कहते हैं कि युवा स्त्री के लिए यही एक मुक्ति का मार्ग है। सधवा हो या विधवा, इसका कोई भेद नहीं। तभी तो हमने अपनी छोरी को उनकी शरण में भेज दिया ! किसी तरह उसका परलोक तो बने भाई ! धर्म ही साथ जाता है, कुछ चोला नहीं।

केशव—सीताराम कहो भाई, सीताराम !

पकौड़ी—सीताराम-सीताराम ! परन्तु हमें तो कृष्ण भगवान् का नाम अधिक प्रिय लगता है। हाँ, वह बात तो कहिए जो कहने आए थे।

केशव—आख़िर यह भक्तराज जी हैं कौन बला ?

पकौड़ी—बला ? वाह जी ! वाह ! आप लोगों को अपने धर्म का भी ज्ञान नहीं ? छिः ! छिः ! तभी तो देश में अब धर्म-कर्म कुछ भी नहीं रहा। यह आप ही लोगों की बदौलत। अजी भक्तराज जी कुछ ऐसे-वैसे हैं ? वह साक्षात् कृष्ण भगवान् के अवतार हैं। उन्हीं के ऐसा मनोहर रूप है। वैसी ही सुन्दर छटा और वैसे ही बाँके-बिहारी हैं। क्यों न हो, आख़िर उन्हीं की तो आत्मा उनमें दमकती है। जिस समय वह मुकुट और पीताम्बर पहन कर और मुँह पर रोग़नी मल कर गोपियों के सङ्ग रासलीला करते हैं, अहाहा ! उस समय तो मेरा भी यही जी चाहता है कि मैं भी ओढ़नी ओढ़ कर उनके साथ नाचने लग जाऊँ।

केशव—हाय ! हाय ! तब नाचे क्यों नहीं ? अपनी लड़की के बदले आप ही उनकी भक्तिन बन कर अपना जीवन सुफल करते। वह बेचारी तो इस 'बॉल-डान्स' से दूर रहती ! और तब आपको भी गृहस्थी के चक्कर में पड़ कर यह शादी न करनी पड़ती। नाहक़ ही तो आपने इन दोनों देवियों के जीवन सत्या·····!

पकौड़ी—परन्तु यह धर्म का द्वार युवा-स्त्रियों ही के लिए है। यही तो मुशकिल है। दूसरे हमारे पास इतना समय कहाँ था ? तब हमारा कारबार कौन देखता ? यह

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

भी तो सोचिए ! कारबारी गृहस्थों के लिए मुक्ति का मार्ग ही दूसरा है। वहाँ बिना स्त्री के किसी की पैठ हो नहीं सकती। शास्त्र खोल कर देखिए तो। तभी तो हमने यह सगाई की। धर्म-कर्म ही की ख़ातिर भाई। आप लोगों की तरह कुछ अपनी ख़ातिर नहीं।

केशव—धर्म-कर्म की ख़ातिर ?

पकौड़ी—और नहीं तो क्या ? जब सीता जी को त्याग देने के बाद श्रीरामचन्द्र का भी बिना स्त्री के काम न चला और उनको अश्वमेध यज्ञ करने के लिए सोने की स्त्री बनवानी पड़ी, तब हम लोगों के काम बिना सेठानी जी के कैसे चल सकते हैं ? आप ही बताइए ! वह ईश्वर थे, उन्हें मुक्ति की ज़रूरत न थी, उन्हें जीवन भर में केवल अपने नाम के लिए बस यही एक यज्ञ करना था। और हमें तो नित्य ही पूजा-पाठ करना पड़ता है। क्योंकि यही अवस्था धर्म-कर्म और पूजा-पाठ के लिए है। और संसार में अब भी कहीं धर्म है तो हमी लोगों में। परन्तु हम ऐसे नादान नहीं थे कि लाख दो लाख रुपए सोने की स्त्री बनवाने में फेंकते—जब केवल चौबीस हज़ार में जीती-जागती, चलती-फिरती हीरा सी अनमोल स्त्री मिल सकती है। सस्ता दाम और चोखा माल। अब ईमान से आप ही कहिए, मेरा सौदा अच्छा रहा या उनका ?

केशव—क्या कहना है, आप व्यापार के कीड़े हैं। आपका सौदा न अच्छा होगा तब भला किसका होगा ? आपको भला कौन ठग सकता है ? आप नित्य ही दूसरों को मूँड़ते होंगे ; क्योंकि आप तो तीन-तीन दिवाला निकाल कर सेठ हुए हैं।

पकौड़ी—पक्की कही—सोलहो आने पक्की। अजी यह गुर तो हम माँ के पेट ही से सीख कर पैदा हुए हैं। हम भला कहीं ठगे जा सकते हैं ? तभी तो जैसे ही हमारे ममिया ससुर हमारी सगाई की बातचीत के समय उधर से अगुवा बन कर सेठानी जी का भाव करते हुए कहने लगे कि 'केवल दस-दस हज़ार की तो बाई की एक-एक आँख है' वैसे ही मैंने कहा कि मुझे एक ही आँख चाहिए—एक आँख उसकी आप निकाल ले जाइए। बस उनका पचास हज़ार का सारा हिसाब गड़बड़ा गया। और तब चट मैंने चौबीस हज़ार में सौदा पटा लिया और उसमें भी मैंने छ हज़ार दलाली और कमीशन अलग काट लिए, और क्या ? ससुर जी को ससुर ही बना कर छोड़ा और पचास हज़ार का माल [illegible] हज़ार में ऐंठ लिया। इस तरह पूरे बत्तीस हज़ार [illegible] मुनाफ़े में रहे कि नहीं—ईमान से बोलिए।

केशव—धन्य हैं आप सेठ जी ! आप लोग [illegible] भी लेते होंगे तो मुनाफ़ा ही समझ कर। ईश्वर [illegible] आप इन सेठानी जी के द्वारा दोनों हाथों से [illegible] लूटें, और आपकी मुक्ति की भी मनोकामना [illegible] पूर्ण हो।

पकौड़ी—आहा हा हा ! आपके मुँह में [illegible]

केशव—(अलग) और आपकी अक्ल पर पत्थर।

पकौड़ी—अरे वह बात तो रह ही गई। आप [illegible] सुनते जाते हैं और अपनी कुछ नहीं कहते। हाँ-हाँ, [illegible] कहिए, वह शुभ समाचार तो सुनाइए ! क्या सेठ [illegible] मल की सोने-चाँदी वाली दूकान टूट गई या सेठ [illegible] राम कहीं मोटर से दब गए। कुछ बताइए तो, [illegible] ने ऐसा भाव बिगाड़ रक्खा है कि.....

[ग्वाला का मकान से बाहर निकलना]

ग्वाला—अजी सेठ जी, चार पैसे तो दे दीजिए।

पकौड़ी—चार पैसे—एकदम चार पैसे ? [illegible] क्या है ?

ग्वाला—वही तो माँगता हूँ।

पकौड़ी—काहे के लिए ?

ग्वाला—सेठानी जी के सर में लगाने के लिए [illegible] का तेल चाहिए।

पकौड़ी—तो बाप रे बाप ! चार पैसे का तेल [illegible] होगा ? क्या उसमें तू उनको डुबोएगा या उससे [illegible] स्नान कराएगा ? जा एक पैसे का ले आ ! और [illegible] माँग लेना धाता ! भूलना मत। समझे ?

ग्वाला—पैसा तो दीजिए।

पकौड़ी—पैसा ?

ग्वाला—हाँ।

पकौड़ी—अरे ! जा उधार ले आ।

ग्वाला—उधार ही लेना है तो चार पैसे का [illegible] आता हूँ।

पकौड़ी—अरे ! नहीं-नहीं। ले लोटा पकड़। [illegible] पैसा निकालता हूँ। (ग्वाला ज्योंही लोटा पकड़ता है [illegible] त्योंही वह उसके हाथ से छूट कर गिर पड़ता है [illegible]

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

सेठ जी चिल्ला उठते हैं) हाय ! बाप रे बाप ! लुट गया ! हाय ! हाय ! यह क्या किया तूने पाजी ।

ग्वाला—बस, ज़बान सँभाल के बोलिए, नहीं बात न बनेगी ।

केशव—क्या हुआ सेठ जी ? क्या पैरों में चोट लग गई ?

पकौड़ी—नहीं जी, लोढ़े में अभी मसाला लगा हुआ था। इसने इसे ज़मीन पर गिरा कर सब चौपट किया। कम से कम धेले का घाटा कर दिया। हाय ! (सेठ जी लोढ़ा उठा कर मुँह से उसकी गर्द फूकते हैं)

केशव—(अलग) धत् तेरे की ! अट्ठारह हज़ार फेंकने में दम न निकला और धेले में नानी मर गई। वाह री फ़ज़ूलख़र्ची और वाह री कञ्जूसी। तब क्यों न कोई इन्हें आँख दिखाए ? राम ! राम ! इन्हीं ऐसे उल्लू देश और समाज दोनों के मुँह काले करते हैं। राम ! राम !

ग्वाला—अजी सेठ जी, पैसा दीजिए पैसा। हमें देर हो रही है। लोढ़ा बेकार फूकते हैं। उसमें कुछ था नहीं।

पकौड़ी—था कैसे नहीं ? यह देख सब मिट्टी में मिल गया कि नहीं ?

ग्वाला—अच्छा लाइए पैसा तो दीजिए ।

पकौड़ी—पैसा ?.....ला कुप्पी मुझे दे। मैं तेल ले आऊँगा ।

ग्वाला—बहुत अच्छा। यह लीजिए ।

[ग्वाला कुप्पी देकर भीतर जाता है]

केशव—यह कौन था सेठ जी ?

पकौड़ी—यही तो मेरा ग्वाला है। परन्तु.....

केशव—अरे ! यही सण्डा-मुसण्डा, चिकना-चुपड़ा, छैल-छबीला गबरू जवान ? धत् तुम्हारे की ! मैं समझा कि शायद यह सेठानी जी का कोई भाई-भतीजा है, जो इतना ताव दिखा रहा है ।

पकौड़ी—अजी हम लोग बरोबर मिहनती आदमी छाँट कर रखते हैं। जिसकी देह-दसा अच्छी न होगी, वह भला क्या मिहनत करेगा ?

केशव—जी हाँ, तभी आपको ख़ुद मसाला पीसना और ख़ुद ही तेल लाने बाज़ार दौड़ना पड़ता है ।

पकौड़ी—अजी मसाला पीसना ठट्ठा नहीं, महीन काम है—सब कोई इसे नहीं कर सकता। उस पर ग्वाले तो आधा माल सिल-बट्टा में लगा ही छोड़ देते हैं। इसी तरह सौदा-सुलुफ़ करना भी हमीं लोग जानते हैं। नौकरों के हाथ में पैसा देना, अपने को लुटा देना है। क्योंकि एक पैसा में वह एक धेला अपनी टेंट में रख लेते हैं।

केशव—जब आप एक पैसा का भी एतबार अपने ग्वाले पर नहीं कर सकते, तो पचास हज़ार का माल आपने किस बिरते पर उसे सौंप रक्खा है ?

पकौड़ी—पचास हज़ार का माल कौन ?

केशव—अरे वही आपकी सेठानी जी ।

पकौड़ी—आप सेठानी जी को कहते हैं ? आहा ! आप नहीं जानते, यह उनकी बड़ी ख़िदमत करता है। जान तोड़ कर। यही तो इसमें बड़ी ख़ूबी है। इतनी सेवा उनका सगा बेटा भी नहीं कर सकता, और मैं भी नहीं कर सकता। इसीलिए तो मैं इसे इतना मानता हूँ और इसकी बातों को चुपचाप सह लेता हूँ। बेचारा नित्य सुबह को उन्हें पीहर पहुँचा आता है और रात्रि में जाकर ले आता है। फिर उनके घण्टों हाथ-पाँव दबाता है और कभी-कभी रात-रात भर तक उनके सिरहाने बैठे पङ्खा झला करता है। भला ऐसा कौन कर सकेगा ?

केशव—कोई भी नहीं। मगर आपकी सेठानी जी का मैका तो आपके देश में होगा। तब यह सुबह-शाम का आना-जाना कैसे होता होगा भाई ?

पकौड़ी—देश में तो मेरी ससुराल है ही, परन्तु यहाँ भी रिश्ते में मेरे एक ससुर जी निकल पड़े। उन्हीं के यहाँ जाया करती हैं।

केशव—क्यों ? क्या उनके यहाँ कोई बीमार है या कोई काम-काज ठना है ?

पकौड़ी—नहीं जी ! हमारे यहाँ यही रिवाज है कि दिन भर वह मैके में रहे। ईश्वर भला करे इस रिवाज को, जिसकी बदौलत रात्रि में उनके दर्शन तो हो जाते हैं, नहीं तो वह पीहर छोड़ कर भला यहाँ क्यों आतीं ?

केशव—ओहो ! यह तो बड़ा अच्छा रिवाज है ।

पकौड़ी—अच्छा तो है ही। इसमें खाने की पूरी बचत होती है। क्योंकि सेठानी जी दोनों वक़्त वहीं खा लेती हैं, केवल रात भर सोने के लिए यहाँ आती हैं।

केशव—जय सीताराम की ! जैसे किराए पर रात भर

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

के लिए नौकर के सङ्ग बीबियाँ बुलाई जाती हैं, क्यो? आहाहा!

पकौड़ी—क्या कहा ?

केशव—कुछ नहीं। भगवान् का नाम ले रहा हूँ।

पकौड़ी—भगवान् का नाम ही लिया कीजिएगा या कुछ कहिएगा भी! हाँ, वह बात तो फिर रह गई। ऐसा बातों में आपने उलझा लिया कि मैं उसका पूछना ही भूल गया। कहिए कहिए.....!

[एक कॉन्सटेबल के साथ एक लकड़हारे का लकड़ी का बोझ लिए आना और आते ही बोझ पटक देना।]

कॉन्सटेबल—(लकड़हारे की तरफ़ घूम कर) क्यों बे सुअर के बच्चे, अभी घर पहुँचे भी नहीं और तूने बोझ यहीं पटक दिया ?

लकड़हारा—दयु जाने तोहार कौने मुलुक माँ घर है। चलत-चलत तो थक गएन। हमार दाम देयो आपन लकड़ी जस बन पड़े, वस लै जाव। हमार कीन होई।

कॉन्सटेबल—(लकड़हारे को मारता हुआ) जानता नहीं साले, हम पुलिस के आदमी हैं। सीधे-सीधे इसे उठा कर ले चल, नहीं मारते-मारते कचूमड़ निकाल लूँगा।

[सेठ जी के दोनों हाथों से तेल की कुप्पी और लोढ़ा छूट पड़ते हैं और मारे डर के ख़ुद थरथर काँपते हैं।]

केशव—(अलग) भई वाह! मार पड़ी उस पर, और भवानी आई इन पर! वाह री आपकी हिम्मत!

लकड़हारा—कसत उठाई? रसरिया तो टूट गवा।

कॉन्सटेबल—रस्सी टूट गई? तब? (चारों तरफ़ आँखें फाड़-फाड़ कर देखता है। जैसे ही उसकी नज़र सेठ जी पर पड़ती है, वैसे ही सेठ जी झुक कर उसे सलाम करते हैं।)

पकौड़ी—सलाम हजूर!

केशव—(अलग) वाह! वाह! वाह रे लखपती जीव! अपनी हैसियत की कितनी अच्छी इज़्ज़त की।

कॉन्सटेबल—(सेठ जी से) आहा, आप ख़ूब मिले। ज़रा एक रस्सी हो तो दीजिए। नहीं रहने दीजिए। इसी से काम चल जाएगा। (सेठ जी के सर से पगड़ी उतार कर लकड़हारे की तरफ़ फेंकता है) ले बे लकड़ी वाले, इसी से लकड़ी बाँध ले।

केशव—अरे! अरे! यह क्या बेहूदापन?

कॉन्सटेबल—आपसे मतलब? आप क्यों बोलते हैं? मुद्दई सुस्त गवाह चुस्त। देखिए सेठ जी, इनको कीजिए, नहीं बात बनेगी नहीं।

पकौड़ी—(केशव से) हाँ-हाँ, आप न बोलिए। हजूर पुलिस के सिपाही हैं, (कॉन्सटेबल से) परन्तु मेरे पास यही एक पगड़ी है। साढ़े चौदह बरस हुए इसे ढाई रुपए में मोल ली थी। और एक बार भी धोबी को नहीं दिया कि कहीं साला मार न ले जाय। इसलिए हजूर हाथ जोड़ता हूँ, इसे आप ले लेंगे तो के चरणों पर रखने के लिए पगड़ी कहाँ से लाऊँगा?

कॉन्सटेबल—हाँ-हाँ, घर पर आकर ले जाइएगा। (लकड़हारे से) चल बे!

पकौड़ी—हजूर का बेटा जीए, मैं अभी चलता हूँ। (कॉन्सटेबल के साथ लकड़हारा पगड़ी से लकड़ी बाँध कर ले जाता है।)

पकौड़ी—(लोढ़ा और कुप्पी उठा कर) हजूर, मैं आपके पीछे ही हूँ। (उन्हीं लोगों के पीछे जाता है।)

केशव—(अकेला) भई वाह, यह मार्के की धत् तेरे की! ऐसे लोगों की क्या ख़ाक इज़्ज़त सकती है? इन्हीं अक़्ल के दुश्मनों की करतूतों पर मुल्क की इज़्ज़त भी बेचारी रो रही है। अफ़सोस, जाने इनकी कब आँखें खुलेंगी।

[प्रस्थान]

* * *

सेठ जी ग़म खा गए

'रामप्रसाद शिवदयाल लकड़वाले' फ़र्म के स्वामी श्रीयुत् सेठ शिवदयाल जी को 'रामजीमल प्रेमसुख दास' वालों पर आज दस हज़ार का दावा दायर है। अर्ज़ीदावा टाइप कराके तैयार कर लिया गया है। वकील साहब ने कह दिया है कि क़रीब डेढ़ बजे बजे में आप मुझसे मिलें, उसी वक़्त दावा दायर कर दिया जायगा। तब तक मैं और मवक्किलों से निपट लूँगा, उसके बाद सिर्फ़ आपका ही काम बाक़ी रह जायगा और बहुत इतमीनान से इसे सरअंजाम दूँगा और मैं कहे देता हूँ कि डिगरी कराके छोड़ूँगा।

बारह बजे के क़रीब सेठ साहब दावे का काग़ज़

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

बूढ़े बाबा करें विवाह, मौत के मुँह में जाने वाले !

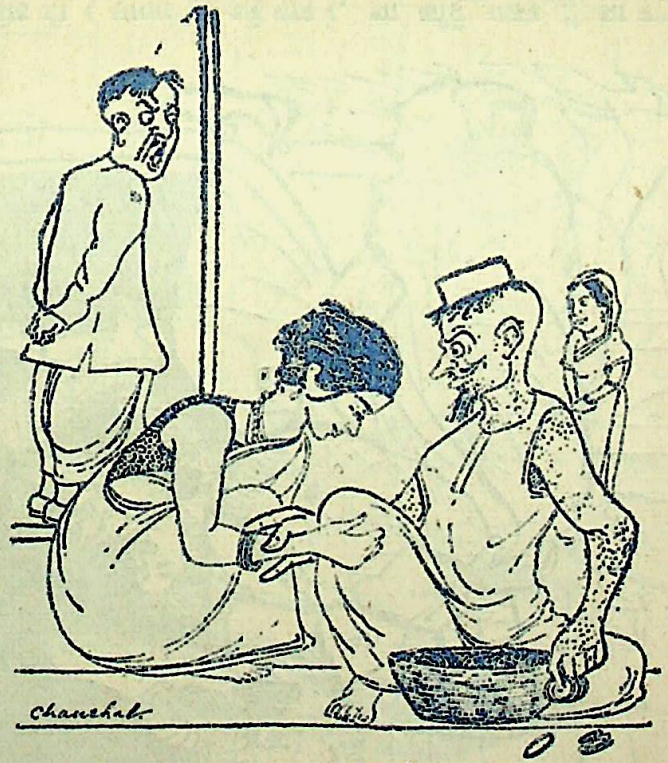

मियाँ मनिहार के पौबारह !

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

सेठ जी ग़म खा गए !

सेठानी—अबार थे आया, अबार ई चाल्या, म्हे कोनी जावा देश्यूँ शा, म्हारो एकली को जीव एकला बैठा-बैठा कैयाँ लागे ! कोनी जावा देश्यूँ ।

सेठ—म्हारी घणीज प्यारी जी ! आज मने अदालत में काम छै, १० हजार को मुकदमो छै, म्हारो जीव भी वामें अटको रयो छै, पण काँई करूँ, काम-काज भी जरूरी—नाँकि ?

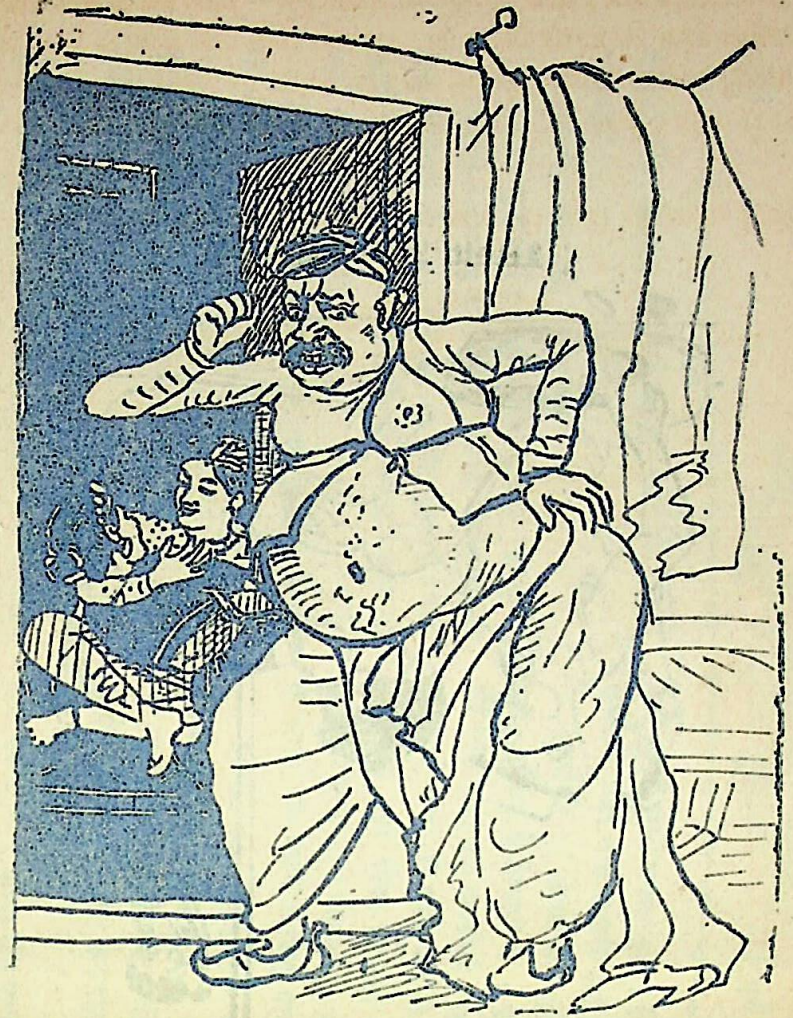

सेठ जी (स्वगत)—अरे बाप रे, आ काँई गजब !! आ बाप-खाओ रङ्गरेज को छोरो अहमद ?? उतर गी, म्हारी इज्जत तो उतर गी, काँई इंने मार नाख्यूँ, तलवार सूँ इंको टूकड़ा-टूकड़ा कर यूँ । नमक हराम—म्हारे सू अड़ाल में रुपैयो लेर रुजगार करे और म्हारे घर में ही.....इंको खून कर देश्यूँ, आ छोरी ने भी मोटो धमाक पर बाबर कर देश्यूँ.....काँई करूँ ? म्हारो [illegible]

पर, गम खाओ, मने सोचवा थो, आगो-पीछो सोच के काम करणो चाहीजे। जो ईंने म्हें मार नाख्यूँ, घर माँय खून रो पनालो बह जासी, पास-पड़ोस में बात छानी रहे कोनी, हल्ला मच जासी, पुलिस आसी, गिरफ्तार कर ले जासी, जेल में रहणो पड़सी, हाकम फाँसी को हुकम··· अरे बाप रे! म्हारो तो कारबार-रुजगार चौपट हो जासी, घणीज बद-नामी पल्ले पड़शी। काँई करूँ, घराणों बदनाम हो जासी, इज्जत धूण में मिल जासी। लाखाँ रुपिया को गरो हो जासी। आ लुगाई सब माल-टाल की मालक बन मौज करसी, उतावला सो बावला, अबार तो दूकान चालें, घण्टा दो घण्टा में आ कमीनो आप ही चलो जासी। जद देख लेश्याँ !!

मुनीम जी—अहमद रङ्गरेज रे नामें दो हजार रुपैया आज री मिती में माण्ड दियो है, ब्याज काँई टीपूँ?

सेठ जी—(ग्रुश होकर) आ काम घणोई चोख्यो हुओ। अब देख लेश्यूँ। सवा रुपैया को ब्याज दरब्याज माँड्यो मुनीम जी! अर वीं को आगण-पाछण हिसाब देख ब्याज दरब्याज लगा दावो ठोक्यो। आ शाला रङ्गरेज का बर्तन-भाण्डा नीलाम करा ने दम लेश्यूँ—ईंने मसल नाखहँ हाँ, बच्चू! अब कठे·····

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

खुली हवा का स्वास्थ्य ! पर्दे का स्वास्थ्य !!

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

हाथ में लिए रसोई जीमने पहुँचे। घर पहुँच कर काग़ज़ तो ताक़ में रख दिया और आप हाथ-मुँह धोकर रसोई आरोगने के लिए बैठ गए। सेठानी जी ने बड़े आदर और प्रेमपूर्वक भोजन कराया, कई चीज़ें बारम्बार अनुरोध करके परोसीं और अपने प्रेम, पति-भक्ति और पाति-व्रत-धर्म की छाप सेठ जी के हृदय पर मज़बूती से लगा दी।

सेठ जी आनन्दपूर्वक भोजन जीम कर उठे, हाथ-मुँह धोया और सेठानी जी ने हँसते-हँसते पान का बीड़ा हाथ में दिया। सेठ जी के हृदय की कली खिल गई और बड़े प्रेमपूर्वक जल्दी में केवल कपोल-स्पर्श मात्र पर ही सन्तोष करके घर से बाहर हुए। दूकान पर आए, मुनीम जी को कुछ ज़रूरी बातें समझा कर गाड़ी में बैठ कर कचहरी को रवाना हुए। ठीक दो बजे वकील सरजूप्रसाद जी सेठ साहब की तरफ़ मुख़ातिब हुए, बोले लाइए अर्ज़ी-दावा साहब आ गए हैं; यही ठीक वक़्त है। सेठ साहब ने जेब में हाथ डाला, दूसरी जेब में डाला, फतुई की जेब टटोली, काग़ज़ नदारद! इधर-उधर देखने लगे, जेब में से कहीं गिर तो नहीं गया, पर काग़ज़ गिरा हो तो मिले। आख़िर मुँह मींच कर, आँखें ऊपर चढ़ा कर सोचने लगे और चमक कर बोले—"अरे वकील साहब! अब याद आया, काग़ज़ तो मैं घर भूल आया। रोटी खाने गया था, अर्ज़ीदावे का काग़ज़ ताक़ में रख दिया था, चलती बार याद न रहा, वहाँ से यहाँ चला आया। सोचा था अँगरखे की जेब में काग़ज़ है। बस बड़ी भूल हुई. ख़ैर अभी लाता हूँ। पास ही तो घर है... यह कह कर सेठ जी पैदल ही लपके। बात यह थी कि गाड़ी उन्होंने पहले ही लौटादी थी और कोचवान को कह दिया था कि तीन बजे गाड़ी ले आना। किराए के इक्के में पैसे ख़र्च करना नहीं चाहते थे, इसलिए पैदल ही लपके। दस-पन्द्रह मिनिट के रास्ते पर तो सेठ साहब की हवेली थी ही। रबड़-सोल का पम्प शू पहने हुए तेज़ी से शपाशप चलने लगे।

घर पहुँचे, साँकल खुट-खुटाने की ज़रूरत नहीं पड़ी। किवाड़ बन्द थे, पर साँकल नहीं लगी थी। आहिस्ता से किवाड़ खोला, क्योंकि उन्हें अपनी धर्मपत्नी के आराम का बड़ा ख़्याल था। वह सोती होगी—जेठ का महीना—दोपहर का वक़्त—गर्मी की शिद्दत—आग बरस रही है। सेठानी नीचे वाले ठण्डे कमरे में शयन कर रही हैं। यही सब सोच कर आहिस्ता से रसोई घर के सामने के बराण्डे के ताक़ में से काग़ज़ उठा लिया। फिर ज़रा खड़े होकर सोचने लगे, इस समय यहाँ कोई नहीं है, टहलनी भी घर गई है—ज़रा प्राण-प्यारी के सोते समय की मुख-छबि तो नयन भर देख लें। अब उनका ध्यान अर्ज़ीदावे की तरफ़ से हट कर इधर ही लग गया, सोचने लगे—इस समय अवश्य देखना चाहिए, कितनी मुश्किलों से इसे प्राप्त किया है, ७०००) रुपए नक़द दिए हैं और ऊपर से दलालों और कितने ही लफ़ङ्गों को हज़ारों चटा दिए, तब काम फ़तह हुआ! बदमाश लौंडों ने कैसे-कैसे विघ्न खड़े किए थे—कितना हल्ला मचाया था—अख़बारों में नोटिस तक छपा दिए थे—खाना, पीना, सोना तक हराम कर दिया था—मगर वाह रे! रुपए की ताक़त!! सब सालों को परास्त कर दिया, सबके मुँह कुचल दिए। थानेदार ने वह हण्टर जमाए कि याद करेंगे और फिर कभी समाज-सुधार का नाम तक न लेंगे। आगए 'दाल-भात में मूसलचन्द' बनने के लिए! मगर वाह रे कोतवाल भगतसिंह! क्या इन्तज़ाम बाँधा है! रुपए तो एक हज़ार लिए, मगर किसी बदमाश को नहीं फटकने दिया। सबने मुँह की खाई। आख़िर यह माल, यह चाँद का टुकड़ा, यह परी मेरे हाथ लगी। क्यों न लगती? मेरे ही लिए पल रही थी—मेरे ही लिए ब्रह्मा ने निर्माण की थी—रत्न सुवर्ण में ही जड़े जाते हैं। यह सोचते हुए सेठ जी की छाती फूल उठी और देखने की अभिलाषा और बढ़ गई। आख़िर आगे बढ़ कर धीरे से उन्होंने कमरे का दरवाज़ा ज़रा सा खोल कर और धीरे से झाँक कर देखा, और एकदम पीछे हट गए।

'अयँ!! यह क्या?' कह कर आहिस्ता से पोल (दहलीज़) में आकर खड़े हो गए, सिर घूमने लगा। थोड़ी देर में सावधान होकर सोचने लगे—अयँ! यह साला अहमदिया रङ्गरेज़ का छोकरा, जिसकी सात पुश्तें हमारे टुकड़ों से पलती रही हैं, यह हमारे घर में..... अरे राम क्या होगा?

"अरे राम काँईं होशी! अब मैं काँईं करूँ! अब मनै काँईं करणो चाहिए—काँईं ईं साला नै मार नाखूँ—एक के दो करद्यूँ। तलवार तो खूँटी पर ही टँकी है—वह चाँदी की मूठ वाली, जीं पर हरा मख़मल की

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

ध्यान चढ़ी है—दाँतला ठाकुर साहब धर्मसिंह जी राठौड़ की ड्योढ़ी—मित्रता की निशानी—वीं नेऊँ बखत फर्मायो भी थो कि ईं से दुश्मन को सिर उतारनो चाहिजे ईं को उपयोग अय ही है। अब ईं दुष्ट से बड़ो दुश्मन म्हारो ण होसी—बस यही बखत है, ईं नीच नै बिना मारे नहीं छोरणों। बस अब ही ठीक है!"—यह सोचते-सोचते उन्होंने यही निश्चय किया कि इस रङ्गरेज़ के छोकरे को यहीं इसी वक्त ख़त्म कर दो।

परन्तु ऐन वक्त पर साथ ही उनके मन में दूसरी बात (बणिक-बुद्धि) पैदा हुई। सोचने लगे—"पण ठैरो सोच लेबाद्यो—बिना सोचे-समझे कोई काम करणो मूरखता है। जो मैं ईं दुष्ट ने मारनाख्या—एक के दो कर दिए तो मूँड उठे पड़सी, धड़ पिलङ्ग पर रहसी—ख़ून को पनालो बह जासी—थोड़ी ही देर में हल्ला मचसी—पुलिस आजासी—सारा शहर अठै ही भेला हो जासी—अन्त को तन्त म्हें पकड़ीज जासी—पहली परथम हवालात होसी—पछे जेल खाणों जाणो पड़सी—मुकदमों चलसी, वकील बालिस्टर करने पड़सी—पहले तो पुलिस वाला ही किशा-किशा विकट सवालात करसी—हिन्दी की चिन्दी निकालसी—काईं काँईं बाताँ बणासी—मेरी आ औरत भी थाणा में जासी ईं से भी भाँत-भाँत का परसन होसी—अय रङ्गरेज का छोकरा काँईं काम आया था—थारे पिलङ्ग पर थारे साथ काँईं कर रहया था—व्यभिचार—अरे राम!! अरे बाप रे!!! किशी बे-हुरमती की बात होसी—किशो निर्लज्जता को मामलो चलसी—म्हाके घराणे की, बड़-बडेराँ की प्रतिष्ठा लोप हो जासी—सात पुश्त की नाक कट जासी—जमारा में धूल पड़ जासी और रुपया पैसा की कित्ती हाणत होसी—हज़ारों-लाखों तो वकील-बालिस्टर ही झटक लेसी—पुलिस वाला अलग मुँह फाड़सी—नहीं तो पूरा तङ्ग करसी—उधर जेलखाना का दारोगा साहब और उनके सिपाही—अरे राम लाखों पर पाणी फिर जायलो। लाख को घर खाक में मिल जायलो—सवली दुकानदारी डूब जायली—मैं तो उठे जेल में सड़ूँलों—डेढ़-दो बरस से कम में तो मुकद्दमों काँईं ख़तम होवे—अदालत वाला हाकम धीरे-धीरे बैठा-बैठा मक्खियाँ मारा करे है—रोज देखूँ हूँ कि जरा-जरा सी बात ने छोटा-छोटा मुकद्दमा ने बरसों टालै है—ऐ ख़ून को मुकद्दमों काँईं जल्दी निपटसी—पूरो दो बरस लागसी। मैं तो जेल में रहूँ और पछै मुनीम—गुमास्ता खुल खेलसी—सामने तो आख्याँ में धूल झोके है, पछै तो जो न करे सो थोड़ा—एक पैसा खर्च करसी और पाँच बही में लिखसी—सब अपनी अन्टी में लगासी—लाखों की उगाही सब पड़ जायली—अभी लोग नादिहन्दी पर कमर कस रहे हैं पछै तो कुण दिवाल है। और मैं—म्हारो काँईं होसी—मनै जरूर फाँसी लागसी—किसी भाँत नहीं बचूँ—मुकद्दमा को सबूत पक्को हो जासी—चाहे जित्ता रुपया ख़र्च करूँ—और यह मेरी औरत जिसे अभी ब्याह कर लाया हूँ, इस साल भर भी नहीं हुआ, पछला मँगसिर की तो बात ही है—दिन जाते काँईं देर लगे है—कल की सी बात है—हाय! अरे बारे—छाती पर सेल चल रही है—ईं को काँईं होशी—ईं ने कुछ सजा-वजा तो होणे से रही—सुलह राजी के मामले में कुछ नहीं होता, यह किसके हाथ पड़ेगी, मेरे घर में तो फिर कैसे रह सकेगी। जरूर ही यह मुसलमानी हो जासी और किसी मुसलमान के हाथ पड़सी—वह इसे मजा में अपने घर में रखशी—मौज करेला और म्हारी छाती पर मूँग दलसी। ओफ़ ओ कितरो भारी अनर्थ होसी। पहले जेल पछे फाँसी—जेल को खाणो धर्म-भ्रष्ट। काँईं-काँईं बाताँ पर विचार करूँ, यह तो अनर्थ परम्परा है!" यह सब हानि-पक्ष सोचते-सोचते उनका सिर चकराने लगा। वह वहीं माथा पकड़ कर बैठ गए। (सारे मनोभाव व्यङ्ग-चित्र में देखिए)

फिर उन्होंने सोचा—"जो मैं इसे न मारूँ, यहाँ से चुपचाप चला जाऊँ तो यह सब आफ़त न होगी। यह साला घड़ी-आध घड़ी में यहाँ से चला ही जायगा—ज़्यादा देर तो ठहरने से रहा। भय तो इसे भी होगा ही—कोई आ न जाय, बेहतर यही है कि मैं दुकान चला जाऊँ—इस वक्त गम खाना ही अच्छा है। कचहरी जाना ठीक नहीं। न मालूम वहाँ वकील साहब या हाकिम के सामने मेरे मुँह से घबराहट में क्या निकल जाय। और जवाब न दे सकूँ। अर्ज़ीदावा आज नहीं, तो कल होगा ही जायगा। उसमें क्या है—आफ़त तो टलेगी—बदनामी से तो बचूँगा। अब तो कौन जानता है? मैं, मेरी औरत और यह बदमाश अहमदिया, फिर तो सारा जगत जान जायगा। ओफ़ ओ! साले ने कहाँ सेंध मारी है—किस हाँडी में खाया उसी में छेद किया—इन मुसलों का

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

में घुसाना बहुत बुरा ! मैं क्या जानता था कि ऐसा हो जायगा। रज़ाई के कपड़े लेने आता था। हज़ारों बार आया था—कभी ऐसा नहीं हुआ था। नहीं बाबा ! ईं लोगाँ को इतबार नहीं, ऐ साला घणा बदमाश छै—बखत पर चचा-ताऊ की बेटी-बहण नैही परण लेवै—घर में डाल लेवै—तो हमारी हिन्दुओं की बहू-बेटियाँ नै क्याँ छोड़ै। इसके मार डालने पर तो पूरी बदनामी और घर का सत्यानाश हो जासी। आपणै बाणियाँ हैं—इशो काम नहीं करणो, इज्जत नहीं गवाँणी—और बणो बणाय घर को सत्यानाश नहीं करणो। आगे की आगे देखी जासी—आगलो बन्दोबस्त पछै करशुँ। ईं बखत तो आफ़त टलै।"

ग़रज़ यह सब सोच-समझ कर ऊँच-नीच, फ़ायदा-नुक़सान, भलाई-बुराई—सब बातों की पूरी विवेचना करके सेठ साहब ने यही निश्चय किया कि इस वक़्त यहाँ से चुपचाप खिसक जाओ, इसी में भलाई है—बाक़ी फिर देखा जायगा।

यह सब सोचने में उन्होंने चन्द सेकण्ड ही लगाए। उनकी हानि-लाभ-विवेचनी बुद्धि ने फ़ायदे-नुक़सान का कुल नक़शा बिजली की तरह उनके दिमाग़ में चमका दिया और उन्हें समझने में कुछ भी बाक़ी न रह गया।

अहमद को कमरे का दरवाज़ा कुछ खुलने से थोड़ा सन्देह ज़रूर हुआ था, परन्तु बाहर बराण्डे में किसी को न देख कर, उसने समझा हवा से ऐसा हुआ है और यही उसने सेठानी को समझा दिया।

अगले दिन कचहरी जाते हुए वकील सरजूप्रसाद ख़ुद ही सेठ साहब की दूकान पर आकर पूछने लगे—मैं चार बजे तक आपका इन्तज़ार करता रहा।

सेठ साहब—क्या बताऊँ वकील साहब ! घर आकर जो देखा तो घर में बड़े ज़ोर का बुख़ार चढ़ा हुआ था, बड़ी तक़लीफ़ हो रही थी, न मालूम लू लग गई कि क्या हो गया—मैं घबरा गया और उनकी सेवा-शुश्रूषा में लग गया। सोचा, दावा आज नहीं तो कल दायर हो जायगा, इन्हें आराम पहुँचना चाहिए। अब आज हाज़िर हूँगा।

वकील साहब—अब तो तबीयत ठीक है, सेठानी साहिबा की ?

सेठ—आपकी कृपा से अब तो सब आनन्द है।

—एक सेठ का भतीजा

मारवाड़ी

[पण्डित रामनरेश जी त्रिपाठी]

बुद्धि पगड़ी सी बड़ी टीबों सा अनन्त धन,
कोमलता भूमि सी स्वभाव बीच भरिए।
देशी कारबार में चिपकिए भरूँट ऐसा,
ऊँट ऐसी हिम्मत सहनशक्ति धरिए॥
दम्पति में प्रीति-रीति रखिए कबूतर सी,
मोर की सी छबि निज कीरति की करिए।
मारवाड़ी भाइयो ! मतीरे के समान आप,
ताप-परिताप निज भारत का हरिए॥

थोड़े में गरम, फिर शीतल सहज ही में,
रेत का सा अस्थिर स्वभाव मत करिए।
रखिए सदैव गुणियों के अनुकूल मन,
कूप के समान दूर दान मत धरिए॥
बाजरे सा नीरस कटीले हो न कीकर सा,
काचरे सी कटुता न मुख से उचरिए।
मारवाड़ी भाइयो ! किसी के जो न काम आवे,
ऐसा जन्म टीबड़े सा लेकर न मरिए !!

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

मारवाड़ के साधु

['एक साधु-भक्त']

वर्तमान समय में समस्त भारतवर्ष में पण्डे-पुजारी व पुरोहितों का आडम्बर और अपव्यय हिन्दू-समाज को नष्ट कर रहा है। मारवाड़ में भी इन साधुओं के ऐसे कुछ फ़िरक़े मौजूद हैं। इनमें अधिकांश बगुला-भगत हैं और उनका एकमात्र पेशा गृहस्थों की गाढ़ी कमाई को हरण करना, खाना-पीना, मौज उड़ाना, गृहस्थ-स्त्रियों में व्यभिचार फैलाना और लोगों में अनेक व्यसनों का प्रचार करना है। यह लोग धेले का गेरू और एक पैसा सिर-मुड़वाई का ख़र्च करके झट साधू बन बैठते हैं। इन लोगों में अधिकांश दादू-पन्थी, रामसनेही, कबीर-पन्थी, निरञ्जनी आदि हैं। इन लोगों के बड़े-बड़े मठ तथा रामद्वारे हैं, जिनमें हज़ारों रुपए की सम्पत्ति लगी हुई है। इन बगुला-भगतों का बहुत बड़ा प्रभाव भी है। मारवाड़ी-समाज की अग्रवाल, महेश्वरी, खण्डेलवाल आदि जातियों में छोटे-बड़े सब प्रकार के घरानों की विधवाओं को अपने माया-जाल में फाँस कर यह लोग बड़ी बुरी तरह से पथ-भ्रष्ट करते हैं। इन्हीं नीच और पाखण्डी साधुओं की करतूत से हज़ारों की तादाद में भ्रूण-हत्याएँ सदा हुआ करती हैं। यह लोग प्रायः परिश्रमी एवं कृषक जातियों में से ही भर्ती होते हैं। साधु लोग जाट, माली, गूजर, सीरवी, बिसनोई और कलबी (कुरमी) लोगों को अधिकतर चेला मूड़ते हैं और ये लोग भी साधु होने में बड़ा आराम समझते हैं। मेहनत से छूट जाते हैं और बौहरों के क़र्ज़े से बच कर दूसरों के माल से स्वयं सेठ बन जाते हैं। इस सम्बन्ध में यह कहावत मशहूर है :—

माथा मुँडाया तीन गुण गई माथे री खाज।
मलवा छोड़ा चोधर्‌याँ हासल छोड़ा राज॥
माथा मुँडाया तीन गुण गई माथे री खाज।
पहिलाँ माथे काढ़ता अब बोरन लागा ब्याज॥

अर्थात्—पहले तो जीविका उपार्जन में बड़ा परिश्रम करना पड़ता था, परन्तु अब साधु हो जाने से घर बैठे अच्छा खाने-पहनने को मिलता है और बाबा जी या महाराज की पदवी भी मिल गई है। इससे राज्य के कर से छुटकारा हो जाता है और शिर मुड़ाने से खाज मिट जाती है।

इन साधुओं की दिनचर्या सिवाय राम-राम भजने, बड़ी-बड़ी मालाएँ फेरने और दोनों वक्त अच्छे भोजन-प्रसाद जीमने के और कुछ नहीं है। किसी मारवाड़ी कवि ने ठीक कहा है :—

बाम-बाम बकता बहे, दाम-दाम चित देत।
गाम-गाम नाखे गिंडक, राम नाम में रेत॥

इनके चरित्र के विषय में एक कवि कहता है :—

खल तिणरी खोटी करे, पापी अन-जल पाय।
मोको लागाँ मोडिया, चेली सूँ चिप जाय।

अर्थात्—वह पुरुष दुष्ट है, जो यजमान का अन्न-जल खाकर उसकी बुराई करता है, जैसा कि इन साधुओं का हाल है। यजमान की बहिन-बेटियों व पुत्र-बहुओं को कण्ठीबन्द चेली बना कर मौक़ा लगने पर उन्हीं से दुराचार करते हैं।

किसी अङ्गरेज़ विद्वान ने इनका सब रहस्य समझ कर इन लोगों को "इटेलियन स्टेलियन" कहा है। अर्थात् नरों में यह साँड हैं, जिनके द्वारा विधवाओं और बलहीन गृहस्थों की स्त्रियों में व्यभिचार फैलता है। इन लोगों में जो कोई थोड़ा-बहुत पढ़ जाते हैं, वे अपने को 'अहं ब्रह्मास्मि' कहते हुए अपने ही समान सबको ब्रह्म ही समझने लगते हैं। वे अपने शिष्य-शिष्याओं को सदा यही उपदेश करते रहते हैं कि "ब्रह्मणी ब्रह्म लगनम्"—स्त्री भी ब्रह्म और पुरुष भी ब्रह्म, तो ब्रह्म से ब्रह्म लगा—मिला, इसमें कोई दोष नहीं है। प्रायः देखा गया है कि निरक्षर, पाखण्डी और ढोंगी लोग अपने कुकर्मों पर इसी प्रकार पर्दा डाला करते हैं। बेचारे शिष्य-शिष्याओं को यह उपदेश बुरा तो मालूम

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

जयपुर का राजवंश

परिचय अन्यत्र देखिए

FINE ART PRINTING COTTAGE ALLAHABAD

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

साहित्यिक दुनिया में हलचल मचाने वाली कहानियों का
अनुपम संग्रह

मालिका

जिसके रचयिता हैं—
हिन्दी-संसार के सुपरिचित
कवि और लेखक—पं० जनार्दनप्रसाद झा 'द्विज' बी० ए०

यह वह 'मालिका' नहीं जिसके फूल मुरझा जायँगे, यह वह 'मालिका' नहीं जो दो-एक दिन में सूख जायगी; यह वह 'मालिका' है जिसकी ताज़गी सदैव बनी रहेगी। इसके फूलों की एक-एक पँखुरी में सौन्दर्य है, सौरभ है, मधु है, मदिरा है। आपकी आँखें तृप्त हो जायँगी, दिमाग़ ताज़ा हो जायगा, हृदय की प्यास बुझ जायगी, आप मस्ती में झूमने लगेंगे।

आप जानते हैं द्विज जी कितने सिद्ध-हस्त कहानी लेखक हैं। उनकी कहानियाँ कितनी करुण, कोमल, रोचक, घटनापूर्ण, स्वाभाविक और कवित्वमयी होती हैं। उनकी भाषा कितनी वैभवपूर्ण, निर्दोष, सजीव और सुन्दर होती है। इस संग्रह की प्रत्येक कहानी करुण-रस की उमड़ती हुई धारा है, तड़पते हुए दिल की जीती-जागती तस्वीर है। आप एक-एक कहानी पढ़ेंगे और विह्वल हो जायँगे; किन्तु इस विह्वलता में अपूर्व सुख रहेगा।

इन कहानियों में आप देखेंगे मनुष्यता का महत्व, प्रेम की महिमा, करुणा का प्रभाव, त्याग का सौन्दर्य! आप देखेंगे वासना का नृत्य, मनुष्य के पाप, उसकी घृणा, क्रोध, द्वेष आदि भावनाओं का सजीव चित्रण! कहानियों के चरित्र इतने स्वाभाविक हैं कि आप उनमें अपने को, अपने परिचितों को ढूँढ़े बिना ही पा जायँगे। आप देखेंगे कि उनके अन्दर लेखक ने किस सुन्दरता और सचाई के साथ ऊँचे आदर्शों की प्रतिष्ठा की है।

इसलिए हमारा आग्रह है कि आप 'मालिका' की एक प्रति अवश्य मँगा लीजिए नहीं तो इसके बिना आपकी आलमारी शोभाहीन रहेगी। हमारा दावा है कि ऐसी पुस्तक आप हमेशा नहीं पा सकते। अभी मौक़ा है—मँगा लीजिए!

व्यवस्थापिका 'चाँद' कार्यालय, इलाहाबाद

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

होता है तो भी 'हरे नमः बाप जी' कह देते हैं। एक बार एक धूर्त शिष्यने अपने ऐसे ही गुरुदेव की कृपा-पात्र

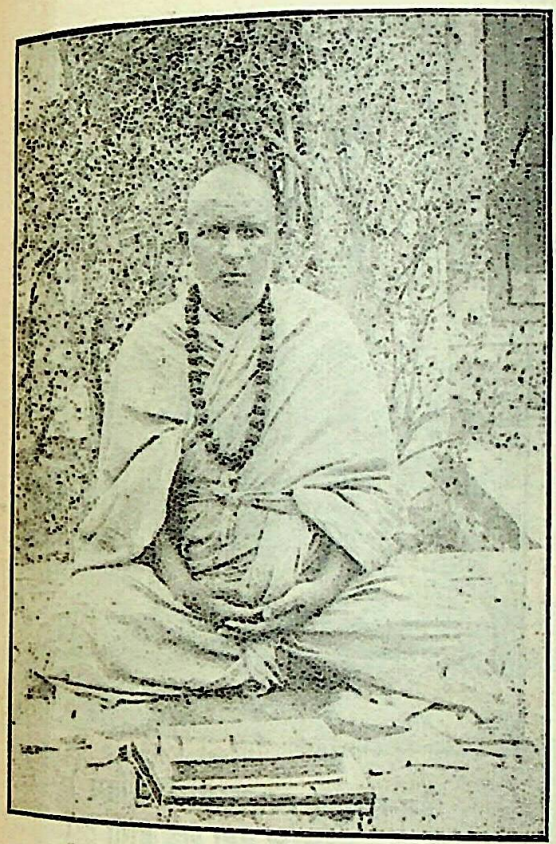

महात्मा उत्तमनाथ जी महाराज

[आप मारवाड़ के सुप्रसिद्ध महात्मा और दर्शन-शास्त्र के धुरन्धर ज्ञाता हैं।]

चेली (रामकी) पर उपर्युक्त (एक्सपेरीमेण्ट) का दिखाया। साधु जी ने देख लिया और बहुत ही रुष्ट होकर कहने लगे—तू बड़ा ही पामर है।

शिष्य ने कहा—महाराज! मैंने तो बक़ौल आपके ब्रह्म से ब्रह्म मिलाया है। अगर इसमें भी मैं बड़ा पामर हूँ तो आप न जाने कितने बड़े पामर होंगे, जो रोज़-मर्रा ऐसा ही करते रहते हैं। साधु जी चुप। चुप तो होगए, मगर मन में यह मलिनता अवश्य ही बनी रही कि कभी न कभी मैं भी इसके साथ ऐसा ही करूँ। आख़िर एक दिन मौक़ा मिल गया और साधु जी ने अपने शिष्य की स्त्री को जबरन् गुरु-मन्त्र सुना ही दिया। इतने ही में शिष्य भी आगया, और जूता हाथ में ले, लगा साधु जी की चाँद की खाज मिटाने। सिर से ख़ून बह निकला। जब साधु जी रोने लगे, तब शिष्य बोला—"महाराज! चर्मनी चर्म लगनम्, ब्रह्मनी लगनम् किम्—जूता भी चमड़े का और सिर भी चमड़े का, इसलिए चमड़े से चमड़ा लगा, ब्रह्म को क्या लगा? आप क्यों रोते हो? क्योंकि जैसा 'ब्रह्मनी ब्रह्म लगनम्' वैसा ही 'चर्मनी चर्म लगनम्' है। अतएव आपको रोना नहीं चाहिए", इत्यादि। इन भोंदू साधुओं में इसी प्रकार की व्यभिचार-लीलाओं का बाज़ार गर्म रहता है।

इन साधुओं में एक विशेष समूह ऐसा है, जिसको धन व स्त्रियों की अधिक चाहना रहती है। यह कहलाते

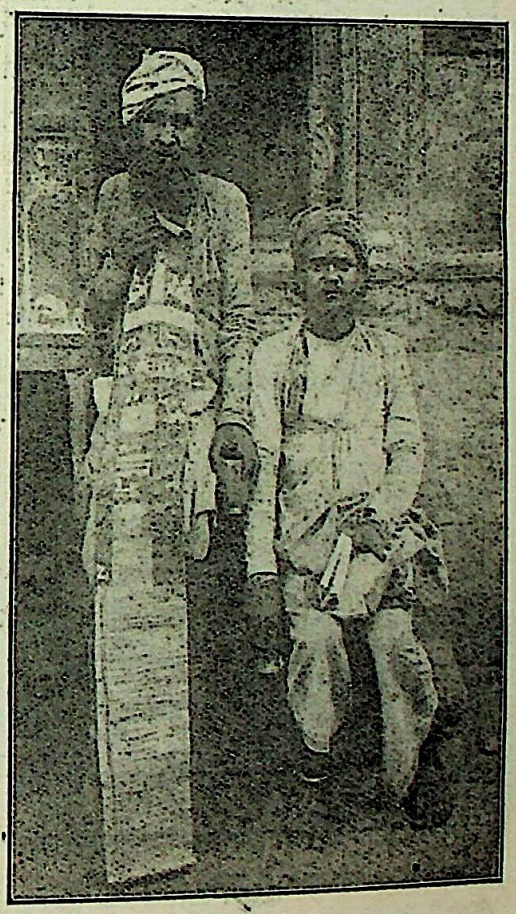

अशिक्षित जनता से अनुचित लाभ उठाने वाले

मारवाड़ के डाकोत (शनिपूजक)

तो हैं साधु, परन्तु गृहस्थों से चार क़दम बढ़ कर माया में डूबे रहते हैं। इनके लिए कहावत प्रसिद्ध है :—

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

जो तूँ चाहे धन और माया, दादू-पन्थी होजा भाया।
जो तूँ चाहे इन्द्रियाँ को भोग, जा खेड़ापै लेले जोग।
जो तूँ चाहे निन्दा को कोड़, शाहपुरे को होजा मोड़।
जो तूँ चाहे बिनज-बिनजणी, तो गढ़े को होजा निरञ्जणी।
जो तूँ चाहे भोजन खाया, होज़ा रामसनेही भाया।

मारवाड़ के चिर-परिचित महाकवि ऊमरदान 'लालस' ने इनका चित्र इस प्रकार खींचा है :—

घर-घर आटा माँगने वाले और "ब्राह्मण-भोजन" की ताक में घूमने वाले

श्रीमाली ब्राह्मण

साँडा ज्यूँ ये साधड़ा, भाँडा ज्यूँ कर भेस।
राँडा में रोता फिरे, लाज न आवे लेस॥

× × ×

बिदर[1] सहेल्याँ बीच में, हस-हस मारे होड।
चेली सूँ चूके नहीं, मोको लागा मोड॥

जैन-साधु (स्थानकवासी ढूँढिए)
[इनका आचरण बड़ा शुद्ध होता है]

और सुनिए :—

मारवाड़ रो माल, मुफत में खावे मोडा।
सवग जोसी सेंग, गरीबाँ दे नित गोडा।
दाता दे वित दाँन, मोज माँणें मुरसणा।
लाखाँ ले धन लूट, पूतली-पूजक परणा।
जटा कनफटा जोगटा, खाखी परधन खावणा।
मरुधर में कोड़ा मिनक, करसा एक कमावणा।

* * *

इस बात के मानने से किसी को इन्कार नहीं हो सकता कि इन कहावतों और पद्यों में साधुओं का जो वर्णन किया गया है, उसमें किसी प्रकार की अतिशयोक्ति या झूठ नहीं है। आजकल अधिकांश साधु इसी श्रेणी के देखने में आते हैं। यह सच है कि

१—दासी

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

साधुओं में कुछ लोग बड़े सज्जन, परोपकारी और विद्वान भी पाए जाते हैं, पर दुर्भाग्यवश मुस्टण्डे साधुओं

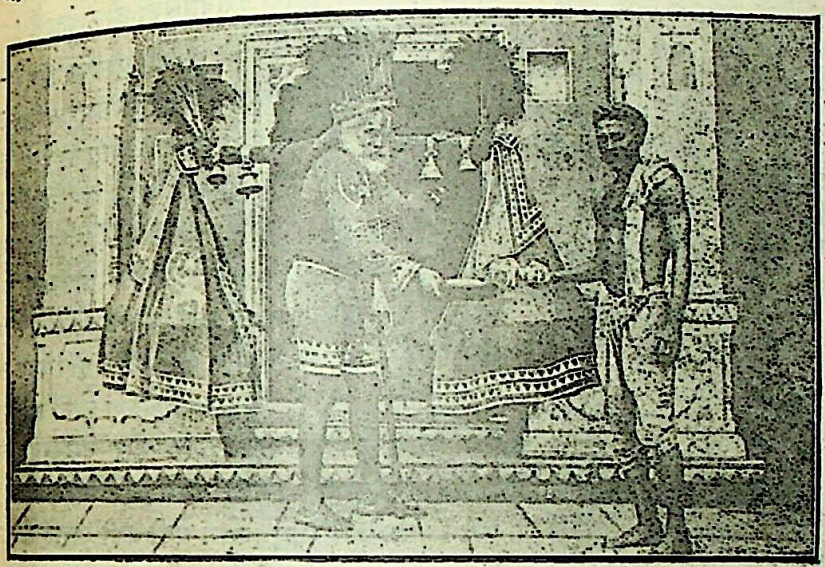

मारवाड़ के बैरागी साधु
[काँवर लेकर घर-घर माँगना-खाना ही इनका व्यवसाय है]

की अपेक्षा उनकी संख्या इतनी कम है कि उनको अपवाद-स्वरूप ही मानना पड़ता है। उदाहरणार्थ इस लेख में जिन तीन महात्माओं—श्री० उत्तमनाथ जी, श्री० देवदान जी, श्री० परमानन्द जी—के चित्र दिए गए हैं, उनकी साधुता में किसी को सन्देह नहीं हो सकता। पर ऐसे साधु समस्त राजस्थान में कितने मिलेंगे? बड़ी कोशिश करने पर शायद दस-बीस मिल सकें। पर यदि व्यभिचारी, ढोंगी और धन कमाने वाले साधु ढूँढ़ना चाहें तो उसके लिए कहीं दूर न जाना पड़ेगा। जिस शहर या क़स्बे में आप चाहेंगे, इस प्रकार के पतित जीव पचासों मिल जायँगे! जब चाहे परीक्षा करके देख लीजिए!

इसलिए साधुओं पर आक्रमण या आक्षेप करना, चाहे किसी को कैसा भी बुरा क्यों न लगे, वह समाज और देश के लिए भलाई का ही काम है। ये साधु लोग बिना किसी प्रकार का परिश्रम, चिन्ता, फ़िक्र किए सर्वसाधारण की कमाई पर आराम से जीवन व्यतीत करते हैं। अगर वे उसके बदले में सर्वसाधारण का कुछ प्रत्युपकार न करें, उनकी हित-कामना न करें तो उनको बिना सङ्कोच के हरामख़ोर कहा जायगा। इतने पर भी जब यह देखा जाय कि वे बजाय प्रत्युपकार और भलाई के जनता का अहित करते हैं, लोगों को ठग कर ज़मीन-जायदाद के मालिक बनते हैं, भले घरों में गुप्त-व्यभिचार फैलाते हैं, लोगों को गाँजा, सुलफ़ा, भङ्ग

मारवाड़ की प्रचण्ड शक्ति
[जयपुर के नागाओं की सेना के कुछ वीर। यदि इन सुविख्यात योद्धाओं में सङ्गठन और नेतृत्व का अभाव न हो तो ये क्या नहीं कर सकते?]

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

आदि हानिकारक नशों का चस्का लगाते हैं, तो उनको

आबू वाले स्वामी परमानन्द जी

[राजपूताने के प्रबल समाज-सुधारक, 'साधु' शब्द को सार्थक करने वाले कर्मवीर संन्यासी]

सिवाय नराधम के कुछ नहीं कहा जा सकता। ऐसे लोगों से सहज ही में यह प्रश्न पूछा जा सकता है कि जब तुम काम, क्रोध, लोभ में इतने लिप्त हो, जब तुम्हारी भोग-लिप्सा इतनी बढ़ी हुई है, तो तुम गृहस्थ ही क्यों न रहे, साधू का वेश रख कर ढोंग क्यों किया? वे इसका कुछ जवाब नहीं दे सकते क्योंकि इनके कृत्य का एक-मात्र कारण यह है कि अगर वे गृहस्थ रह कर सुख भोगना चाहें तो उसके लिए पसीना बहाना पड़ता है, बीसियों तरह की ज़िम्मेवारी माथे पर लेनी पड़ती है, और अनेकों प्रकार के ख़तरों का सामना करना पड़ता है। पर साधुपने के ढोंग के द्वारा वे लोग बिना किसी तरह के झंझट के मौज उड़ाते हैं। इस बढ़ कर बदमाशी और नीचता क्या हो सकती है? हम जानते हैं, इसका कारण देशवासियों की मूर्खता है।

इन सब बातों के होते हुए भी एकाएक इस को कोई न कहना चाहेगा कि साधु-सम्प्रदाय देश से बिलकुल ही लुप्त हो जाय। ख़ासकर देश की वर्तमान दशा में तो साधुओं के समान स्थिति आदमी बहुत-कुछ काम ऐसा कर सकते हैं, जो साधारण लोगों के लिए बड़ा कठिन अथवा असम्भव है। साधुओं को न जोरू और बच्चों की फ़िक्र होती है, खाने-कमाने की, न लेने-देने की। सच पूछा जाय तो उनका जीवन बड़ा ही निश्चिन्त है अथवा होना चाहिए। ऐसे लोग यदि समाज-सुधार और देश-सुधार का निश्चय कर लें तो वे क्या करके नहीं दिखा सकते? पुराने ज़माने में साधु लोग बड़ी-बड़ी लड़ाइयाँ लड़ते हैं। जयपुर के नागा-साधुओं की सेना का रण अब तक प्रसिद्ध है। बङ्गाल के विद्रोही सन्यासी दल की बात भी अनेक लोग जानते होंगे, जिस आधार पर बङ्किम बाबू ने अपने प्रसिद्ध उपन्यास 'आनन्दमठ' की रचना की है। यदि सभी साधु और कुछ न करके अपना इस प्रकार का सैनिक सङ्गठन ही कर डालें, तो क्या वे देश के लिए

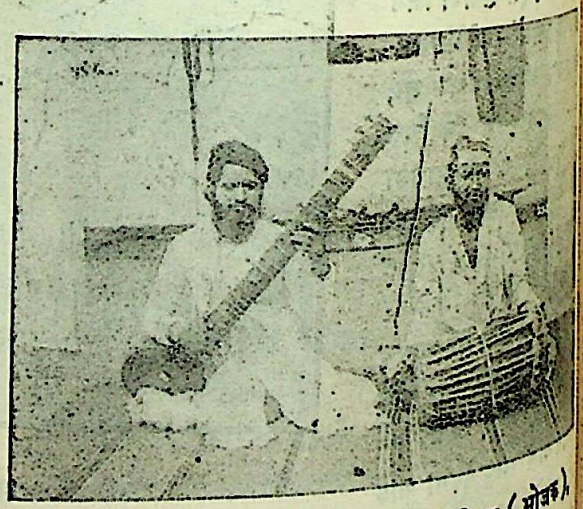

हरिभजन करते हुए जैन-मन्दिर के पुजारी सेवग (भोजक), जिन्हें शाकद्वीपी ब्राह्मण भी कहते हैं।

उपयोगी हो सकते हैं? वे इस रीति से समस्त देश को वीर बना सकते हैं और समय पड़ने पर उसकी रक्षा

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

सकते हैं। यदि गाँवों के आस-पास रहने वाली साधुओं की मण्डलियाँ, जो ग़रीब गाँव वालों से एक प्रकार का वार्षिक या छःमाही कर अथवा लाग वसूल कर आराम से गुज़र करते हैं, वहाँ की जनता की शिक्षा और रक्षा आदि का प्रबन्ध अपने हाथ ले लें तो क्या वे देश के एक बड़े अभाव को पूरा नहीं कर सकतीं ? यदि अकाल और हलचल आदि के समय, जब कि चोरी-डाकों की संख्या बढ़ जाती है, ये साधू स्वयं-सेवक बन कर गाँव के लोगों के जान-माल की हिफ़ाज़त करें तो क्या वे जनता के एहसान से उऋण नहीं हो सकते ? वास्तव में इन साधुओं की स्थिति ऐसी सुभीते की होती है कि वे जनता का अमित उपकार करके उसके ऋण से मुक्त ही नहीं हो सकते, वरन् अपने जीवन को सार्थक, आदर्श बना सकते हैं। हम जानते हैं कि और सब लोग बहुत बड़े महात्मा और पहुँचे हुए नहीं बन सकते, पर यदि गृहस्थी के जञ्जाल से ऊब कर या अन्य किसी कारण से घर-बार को त्यागने वाले व्यक्ति साधु बन कर सर्व-साधारण की सेवा ही करते रहें तो उनके सब वर्तमान दोष दूर हो सकते हैं और उनको देश के लिए एक प्रकार के अभिशाप के बजाय समाज का एक उपयोगी अङ्ग समझा जा सकता है। पर ऐसा होना निकट-भविष्य में सम्भव नहीं दिखाई देता। जब तक हमारे देशवासी—समाज को रसातल की ओर ढकेलने वाले जाहिल हिन्दू-गृहस्थ ऐसे निठल्लुओं का सामाजिक बहिष्कार करें, उनके कर्तव्य की ओर उनका ध्यान आकर्षित नहीं करेंगे, तब तक समाज को आर्थिक हानि के साथ ही साथ सदाचार-सम्बन्धी दिनों दिन बढ़ती हुई बुराइयों का भी शिकार होना पड़ेगा ! बीसवीं शताब्दी के इस उन्नति और विकास के युग से लम्बी नाक वाले हिन्दुओं को इस ओर ध्यान देना चाहिए !!

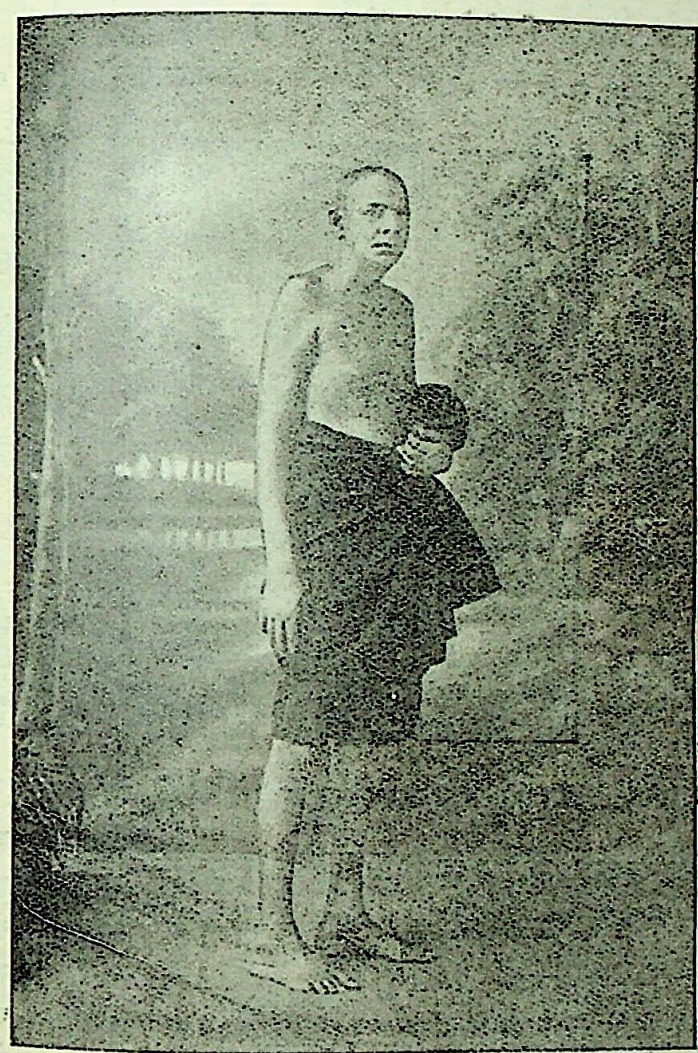

महात्मा देवीदान जी संन्यासी

[आप एक त्यागी महात्मा हैं, आप मारवाड़ में ख़ूब प्रसिद्ध हैं]

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

रामकी

[श्रीगोपाल जी कल्ला]

रामकी की अवस्था समय इस २२ वर्ष की है। वह एक धनवान व्यक्ति की लड़की है और एक ऐसे व्यक्ति को ब्याही है, जो उसके पिता से भी अधिक धनवान है। उसका ब्याह नौ वर्ष की अवस्था में ही हो गया था। ब्याह होने के एक साल बाद ही उसका सुहाग-सिन्दूर पोंछा जा चुका था। ब्याह होने के बाद चार-पाँच साल तक तो वह अपने पिता के घर ही रही।

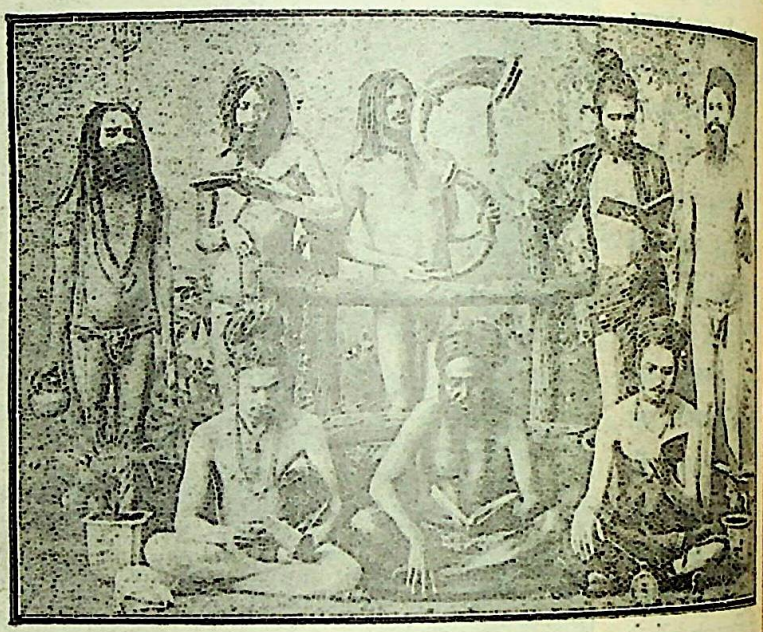

पाखण्ड रच कर हिन्दुओं को मूँड़ने वाले साधुओं की एक मण्डली

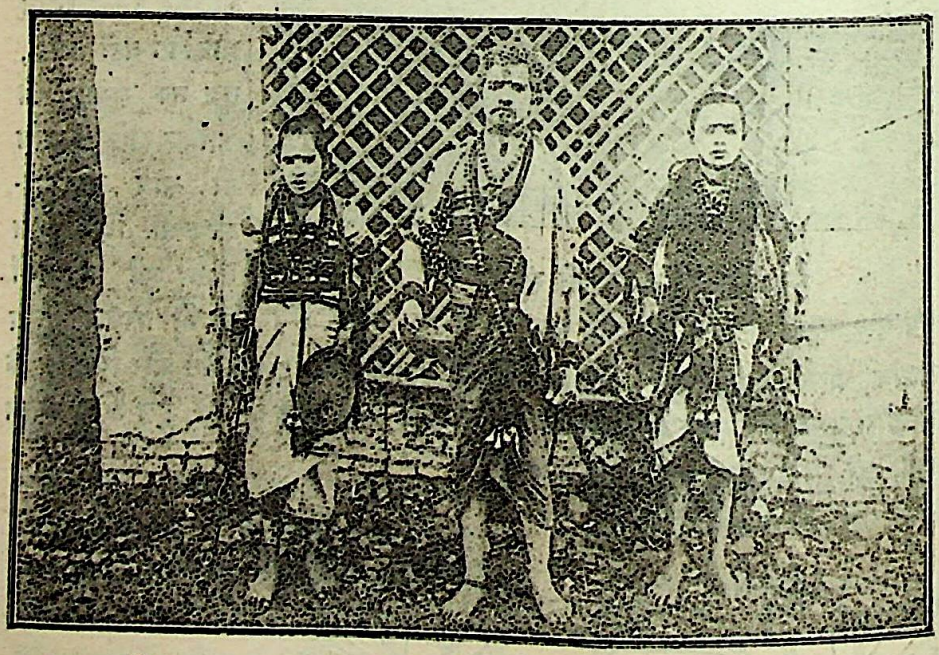

समाज में नाना प्रकार के अनाचार फैलाने वाले अलखधारी गोसाईं

परन्तु इस बीच में उसके माता-पिता का स्वर्गवास हो जाने से भाई-भौजाई से इसकी पटरी नहीं बैठी, तब वह ससुराल में रहने लगी। ससुराल में इस समय सिर्फ़ उसके श्वसुर ही हैं, जिनकी अवस्था क़रीब ७० वर्ष की होगी। इनकी दृष्टि में इस समय कम पड़ गयी थी, सिर्फ़ एक आँख से बहुत ही हलका-सा दिखाई देता था, जो क़रीब ... के बराबर था। वृद्ध महाशय दिन भर घर में बैठे राम-राम जप कर अपने दिन बिता रहे थे। रामकी ससुर की खूब टहल-चाकरी किया करती है। उसका रूप-रङ्ग अपना सानी नहीं रखता। वह जिस तरफ़ जाती

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

है, उधर ही चाहे कोई कैसा ही संयमी क्यों न हो—सहसा सबकी दृष्टि उसकी ओर गए बिना नहीं रहती। वह इस समय विधवा है उसका सुहाग-सिन्दूर बहुत काल पहले

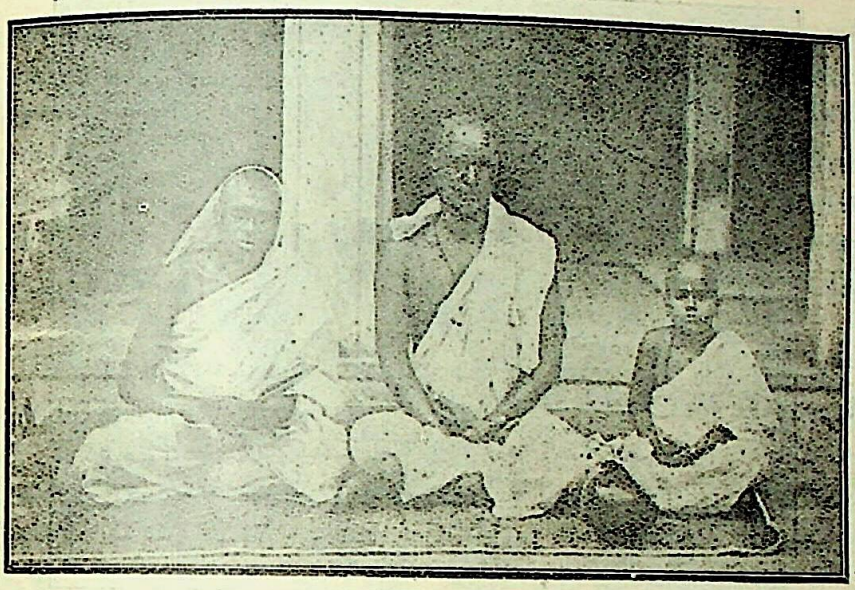

मारवाड़ में बहुत अधिक संख्या में पाए जाने वाले तथा सदाचार-सम्बन्धी दोषों को फैलाने वाले रामसनेही साधु

ही पोंछा जा चुका है। इसलिए वह रङ्ग-विरङ्गे कपड़े एवं आभूषणादि नहीं पहन सकती, उसे विधवोचित कपड़े पहनने पड़ते हैं।

माता-पिता के मरने के बाद जब से वह ससुराल

मारवाड़ का कबीर-पन्थी साधु

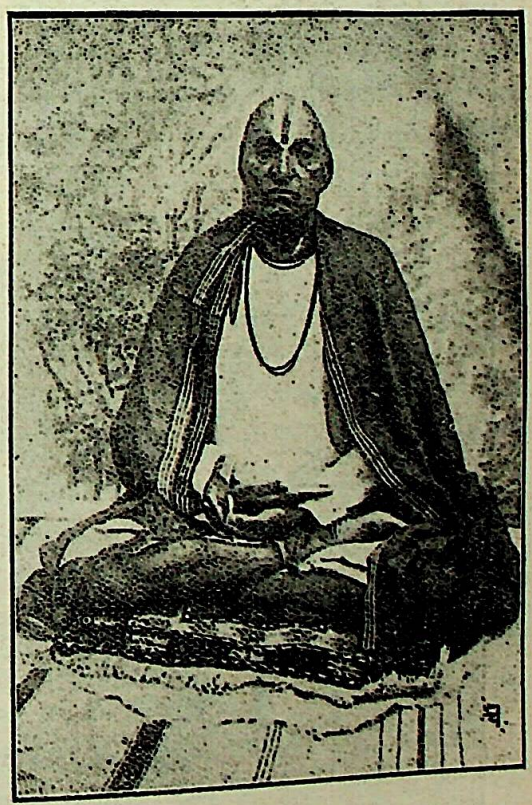

साधुता का ढोंग रचने वाले मारवाड़ के रामानुज-सम्प्रदाय का साधु

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

रहने लगी है तबसे वह कभी-कभी भाई-भौजाई के बुलाने पर पीहर जाया करती है और घड़ी-आध घड़ी भावज के पास बैठ कर वापस आ जाती है। इन दिनों उसकी भावज की तबीयत कुछ ठीक नहीं रहती है। इसलिए वह आजकल

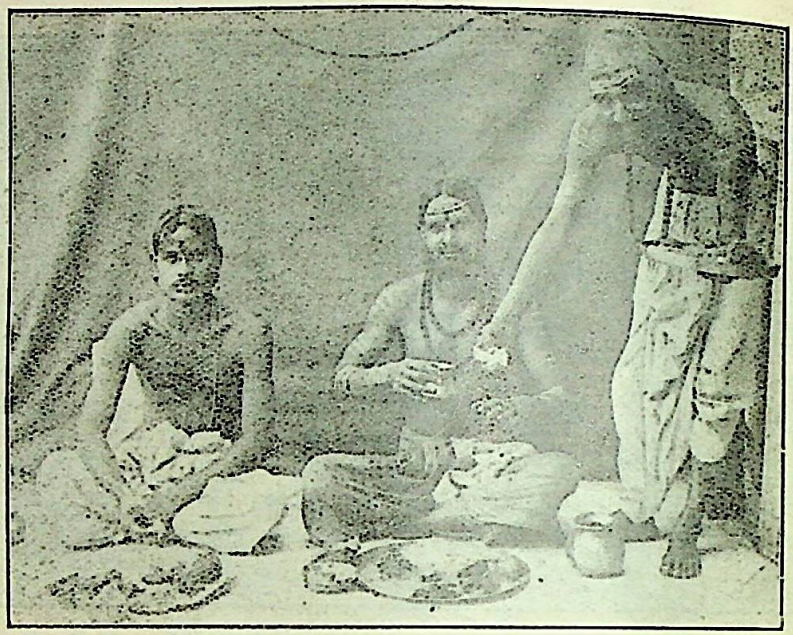

मारवाड़ का रक्त शोषण करने वाले मारवाड़ी भोजन-भट्ट

पीहर अधिक जाया करती है। और वहाँ जाकर दो-तीन, चार-चार घण्टे तक भावज के पास बैठा करती है। उसकी भावज का इलाज रामकृष्ण जी साध करते हैं, जो एक सा वैद्य तिवारी औषधालय के वैद्य हैं। ये रामकृष्ण रा म सनेही हैं और एक बड़े धनवान व्यक्ति हैं। इन्होंने अपने नाम से अच्छे-अच्छे मकान और बग़ीचिएँ बना ली हैं, और राजा-महाराजाओं के समान ठाठ से ख़ूब ऐश करते हुए ज़िन्दगी का मज़ा लूटते हैं। वैसे तो ये कोई उच्च श्रेणी के वैद्य नहीं हैं, पूरे लट्ठ-भारथी हैं, परन्तु शहर में इनकी वैद्यकी ख़ूब चलती है। भगवान जानें, इसमें असली रहस्य क्या है, परन्तु इनके यहाँ इलाज कराने वालों में स्त्रियों की संख्या ही अधिक रहा करती है।

भोग की चिता को दहकाने वाले मारवाड़ी जैनियों के जती

एक रोज़ रामकी अपनी भावज के पास बैठी हुई थी कि साधजी महाराज उसकी भावज को देखने आए। वे वहाँ रामकी को देखते ही चौंधिया गए। उसके खिले हुए यौवन को देख कर उनकी लार टपकने लगी। उन्होंने उसकी भावज से पूछा—क्यों काशीबाई, क्या यह (रामकी की तरफ़ इशारा करके) तुम्हारे यहाँ बैठी आई है ; क्या यह तुम्हारी कोई लगती है ? मैंने तो इसे तुम्हारे यहाँ पहले कभी नहीं देखा।

काशी—(हाथ जोड़ कर) राम महाराज ! यह तो उनकी (मारवाड़ियों में स्त्री के लिए पति का नाम लेना पाप समझा जाता है। उनका यह विश्वास है कि पति का नाम लेने से उसकी आयु घटती है, और पति का नाम लेने वाली स्त्री जल्दी ही राँड़ हो जाती है। इस विश्वास के कारण उसने अपने पति का नाम

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

लिया। और जैसा कि रिवाज है, उसने "उनकी" शब्द का प्रयोग किया) छोटी बहिन रामकीबाई है, (रोनी सूरत बना कर) आज दस-बारह वर्ष हुए पूर्व-जन्म के पापों के फल से बेचारी की यह दशा (रामकी के विधवा-वेश को लक्ष्य करके) हो गई है। हे भगवान्...! यह कहते हुए उसकी आँखों से आँसू टपकने लगे और वह एक लम्बी साँस लेकर रोनी सूरत बनाए हुए चुप हो गई।

रमादास जी—(हमदर्दी प्रकट करते हुए) राम! राम!! (आँख मटकाते हुए, रामकी को सम्बोधन करके) देख बाई—राम जी की जो मर्ज़ी होनी थी सो तो हो गई। अभी तू सयानी है, तेरी अवस्था नादान है, तेरी यह अवस्था कैसे निकलेगी। राम जी ही तेरी रक्षा करेंगे। (रामकी चुप रही, उसने कुछ जवाब नहीं दिया) राम-भजन किया कर, साधों के सत्सङ्ग से राम जी तेरे सब आनन्द हो जासी।

इस वार्तालाप के होने के बाद किसी ने कुछ न कहा; सब कोई चुप हो गए। कुछ क्षण के लिए वहाँ एकदम सन्नाटा हो गया। परन्तु बीच-बीच में रमादास जी महाराज एक लम्बी साँस अवश्य छोड़ रहे थे। क़रीब आध घण्टे के बाद महाराज जाने के लिए उठे और एक बहुत लम्बी साँस लेकर रामकी की ओर नेत्रों से कटाक्ष करते हुए यह कह कर चलते बने कि—अच्छा तो काशीबाई, मैं अब जाता हूँ। दवा टाइम पर ले लेना। सब ठीक हो जायगा।

महाराज चले तो गए, पर अपना कलेजा वहाँ रख गए। वहाँ से वे औषधालय न जाकर, सीधे राम-द्वारे गए और अपने शयनागार में जाकर लेट रहे। उनके मुँह से बहुत ज़ोर-ज़ोर से गर्म-गर्म श्वास छूटने लगे। मन ही मन वे विचारने लगे—"ओफ़, यह रूप! यह यौवन!! इतनी सुन्दरता!!! हाय, अब यह नवेली कैसे हाथ लगे, यह सोने की चिड़िया कैसे फँसे। इसके पाए बिना तो अब जीना ही दुश्वार है।" एकाएक उनके मुखमण्डल पर कुछ प्रसन्नता प्रकट होने लगी और साथ ही बड़े ज़ोर से उन्होंने अपने एक शिष्य को आवाज़ लगाई "ओ देवा! अरे, ओ देवा!! यहाँ आ।" उसी क्षण यह कहता हुआ कि—"आया महाराज" एक हट्टा-कट्टा पहलवान-सा युवा, जिसकी उम्र क़रीब २५ वर्ष के होगी, सिर्फ़ एक तीन इञ्च चौड़ी लँगोटी पहने हुए वहाँ आ उपस्थित हुआ और हाथ जोड़ कर एक किनारे खड़ा हो गया।

रमादास जी—"जा किसनकी को तो बुला ला। देख जल्दी से जाना, रास्ते में कहीं खड़ा मत हो जाना और उसे अपने साथ लेकर फ़ौरन ही वापस आना।" देवा वहाँ से चला गया। वह अभी रामद्वारे का फाटक खोल ही रहा था कि बाहर से किसी ने ज़ोर से आवाज़ लगाई—महाराज! राम महाराज!!

देवा एकाएक ख़ुशी से चौंक उठा। उसने आवाज़ पहचान ली। वह जिसे बुलाने जा रहा था, वह स्वयं ही वहाँ आ गई। उसने ख़ुशी से यह कहते हुए—"यह लो घर बैठे ही गङ्गा आ गई"—दरवाज़ा खोल दिया और किसनकी के भीतर घुसते ही, उसने उसे महाराज का ऑर्डर सुना कर शयनागार की ओर सङ्केत किया। किसनकी उसे कुछ जवाब दिए बिना ही धड़धड़ाती हुई सीधी महाराज के शयनागार में चली गई। ज्योंही उसने शयनागार में पैर रक्खा, महाराज पलङ्ग पर से उछल पड़े और उसका हाथ पकड़ कर उसे बग़ल में दबोचे हुए पलङ्ग पर जा बैठे और उसका मुँह पकड़ कर चूम लिया। कुछ क्षण तो दोनों चुप रहे और एक-दूसरे को प्रेम-भरी निगाह से देखते रहे। इस बीच में महाराज ने दो-तीन दफ़े उसका अधर-रस पी लिया।

किसनकी—"(शान्ति को भङ्ग करके) आज इस क़दर उतावली (जल्दी) क्यों हो रही है? कहीं कासीद नाखने जाना है क्या? (कुछ क्षण चुप रह कर) पर यह क्या महाराज! आपके चेहरे पर यह विषाद की रेखा क्यों दिखाई देती है? क्या कुछ गड़बड़ हो गई है? तबीयत तो ठीक है न? (महाराज के चेहरे को पुनः ग़ौर से देख कर और उसी क्षण मुस्कराते हुए व्यङ्गपूर्वक) मालूम होता है, आज किसी डाकण ने कलेजा काढ़ लिया।" इतना कह कर वह चुप हो गई और मुस्कराते हुए महाराज के चेहरे की तरफ़ ध्यान से देखने लगी।

रमादास जी—(एक गर्म श्वास छोड़ते हुए और पुनः उसका चुम्बन लेकर) प्यारी.. (कलेजे पर हाथ रख कर)।

किसनकी—(बीच ही में) बस-बस, मैं समझ गई कि आज फिर किसी नए बुलबुल पर नज़र जमी है। हाँ, अब यह तो बताओ, वह है कौन?

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

रमादास जी—(एक दीर्घ श्वास लेकर) काशीबाई की ननद (किसनकी को ज़ोर से दबा कर तथा उसके गालों को ज़ोर से काट कर सिसकारी भरते हुए) रा..... (धीरे से)..... की।

किसनकी—(कुछ मुँह बना कर) ऊँह ! कलेजा राँड़ डाकण ने काढ़ लिया और लगे बराबर खाने मुझे ! (पुनः मुस्कराते हुए) हाँ तो, बोलो क्या हुक्म होता है ?

रमादास जी—(प्रेम-भरी निगाह से) प्यारी क्या तू जान कर भी अनजान बनती है। (कुछ सँभल कर) बस जैसे बने वैसे उसको (पुनः प्रेम-भरी निगाह से देखते हुए) एक बार यहाँ लाओ, मैं तुम्हारा जन्म भर ग़ुलाम बन कर रहूँगा। तुझे अपनी आँखों की पलकों पर रक्खूँगा। (यह कह कर महाराज ने शयनागार का दरवाज़ा बन्द कर लिया) कुछ क्षण तक निस्तब्धता का साम्राज्य रहने के बाद किसनकी ने शान्ति भङ्ग की।

किसनकी—(कुछ रुखाई से) फोड़ लिया न कर्म ! अब तो पित्त शान्त हुए। अगर मैं न आती तो अभी क्या दीवार से कर्म फोड़ते। बस कोई आँखों के सामने आना चाहिए, फिर तो चिकनी-चुपड़ी बातें बना कर कर्म फोड़े बग़ैर आपको शान्ति कहाँ ! (पलङ्ग से नीचे उतर तथा जाने को उद्यत होकर) अच्छा तो अब मैं जाती हूँ, अभी नई साड़ी पहन कर आई थी, सत्यानाश कर दिया।

रमादास जी—(बीच ही में बात काट कर) क्या परवा है। क्या साड़ियों की कोई कमी है। अभी तुम जैसी साड़ी कहो, मँगवा दूँ। हाँ, तो तुम जाओ पर (पलङ्ग से उठ कर किसनकी की ओर प्रेम-भरी निगाह से देख कर) प्यारी..... । (पुनः सँभल कर) देखो मेरी बात को भूल मत जाना और जैसे बने, काम को बनाना। यह लो (कोट की जेब से १००) रुपए का नोट निकाल कर किसनकी के हाथ में देते हुए) सौ रुपए, और जितने चाहिए ले लेना और जहाँ तक बन सके, जल्दी ही सौदा पटाना।

किसनकी—(नोट को हाथ में लेकर) आप बेफ़िक्र रहें। यह बेचारी रामकी तो क्या चीज़ है, मैं अच्छी-अच्छी ख़ानज़ादियों को भी मिनटों में फँसा लाऊँ। वह तो बेचारी अभी तक भोली-भाली है, दुनिया की अभी उसको हवा ही नहीं लगी है। और तिस पर वह घर में अकेली है। सिर्फ़ एक बुड्ढा ससुर है, जो आँखों से अन्धा है। देखना मैं कितनी जल्दी उसे कर लाती हूँ। परन्तु हाँ इनाम क्या दोगे, बोलो (इतना कह कर वह चुप हो गई और महाराज के मुँह की ओर देखने लगी)।

रमादास जी—(किसनकी के साथ-साथ शयनागार से निकलते हुए) इनाम ! इनाम का क्या कहना, तुम मुँह माँगा पाओगी.....।

किसनकी—(बीच ही में बात काट कर) मुँह बताऊँ ! (मुस्कराते हुए महाराज के गाल पर एक सी चपत लगा कर शयनागार से लपक कर बाहर निकल गई और रामद्वारे के फाटक पर खड़ी होकर महाराज की तरफ़ देख कर ज़ोर से हँसने लगी)।

रमादास जी—(हँसते हुए शयनागार से बाहर निकल कर, किसनकी की तरफ़ देखते हुए) अच्छा याद रखना, अबकी दफ़ा एक के बदले दो गुलाब के फूल पर (दाँत भींच कर) गुलाब के फूल लगाऊँगा।

किसनकी हँसती हुई रामद्वारे के बाहर निकल गई।

२

किसनकी एक नीच जाति (मारवाड़ियों के मत-नुसार) की स्त्री है। इसकी जाति के पुरुषों का काम ब्राह्मण, क्षत्रिय और वैश्यों की टहल-चाकरी करना है और स्त्रियों का काम उच्च जाति की स्त्रियों की टहल-चाकरी करना, उनके सिर में तेल लगाना, पाँव चापना एवं उनको नहलाना-धुलाना इत्यादि है। जिन घरों में ये जाती हैं, वे उनकी "विरत" के घर कहलाते हैं। इनकी जाति स्वभाव से ही बहुत चञ्चल एवं धूर्त होती है। ये जिस घर में टहल-चाकरी करने जाती हैं, उस घर की जवान बहू-बेटियों को इधर-उधर ले जाकर पाप-पङ्क में डुबोना तथा उस घर के मालिक वग़ैरह को अन्य स्त्रियों के साथ खड्डे में उतारना—इनका एक मुख्य व्यवसाय होता है। क्योंकि ऐसा करने से उनको काफ़ी आमदनी रहती है और उस घर पर इनका पूर्ण अधिकार-सा हो जाता है। किसनकी ने भी अपनी "विरत" के मालिक किसनगोपाल जी को अपने ख़ुद के साथ दबोचा और तब फिर उनके लड़के की बहू को ले जाकर खड्डे में

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

उतारा। उस समय वह ख़ुद नादान थी, इसीलिए पहले आप डूबी, नहीं तो ये लोग बड़ी मुश्किल से अपने आपको किसी के झाँसे में आने देती हैं। हाँ, अपनी इच्छा से अपना मतलब गाँठने के लिए ये चाहे जो कुछ कर कसती हैं। किसनकी की अवस्था इस समय क़रीब तीस वर्ष की है, लेकिन चटक-मटक में वह सोलह वर्ष की बालिकाओं को भी मात करती है !

किसनकी ने उस रोज़ रमादास जी महाराज के यहाँ से आने के बाद ही दूसरे रोज़ से ही रामकी के घर आना-जाना शुरू कर दिया और साधुओं के सत्सङ्ग की मीठी-चुपड़ी बातें बना कर उसे अपने फन्दे में फाँस लिया। अब वह उसे महाराज के यहाँ ले जाने का उपयुक्त अवसर देखने लगी। एक दिन वह घर से ख़ूब बन-ठन कर निकली और रमादास जी महाराज के औषधालय में जाकर एक जुलाब की पुड़िया ले आई। वहाँ से वह रामकी के घर गई। रामकी उस समय खाकर उठी ही थी। उसने किसनकी को देखते ही पुकार कर कहा—आओ किसनकी, आज इस समय कैसे आई। क्या कोई काम है ?

किसनकी—(कुछ अनमने भाव से) नहीं तो, काम तो कुछ नहीं है, वैसे ही चली आई, (रामकी के डकार लेने पर) आज ये तुम्हें अपच की सी डकारें कैसे आती हैं। मुझे तो ख़ुद को आजकल कुछ अपच-सा रहता है. इसलिए अभी रमादास जी के औषधालय गई थी। यह देखो (जुलाब की पुड़िया दिखाते हुए) वहाँ से दवा लेकर आई हूँ। बहिन, मुझे तो इस दवा से बहुत ही लाभ हुआ। तुम भी आज इसे लेकर (रामकी के हाथ में दवा देते हुए) देखो कैसा फ़ायदा होता है।

रामकी—(पुड़िया न लेने के लिए हाथ खींचते हुए) नहीं बहिन, मुझे तो कुछ भी अपच नहीं है, मैं दवा-अवा नहीं लेती।

किसनकी—(उदासीन भाव से) देख बहिन, मैं तो तुम्हारे भले के लिए कहती हूँ, आगे तुम्हारी मर्ज़ी। जैसी तुम्हारी इच्छा हो, करो। परन्तु देखो, रोग बढ़ जायगा तो मेरी तरह तुम भी फिर अस्पताल के बाहर जूती फाड़ोगी। इससे तो अच्छा है कि इसी समय तुम इस दवा को ले लो। तुम्हें मेरी सौगन्ध है।

रामकी—(विवशता के भाव से) अच्छा तो लाओ, जब तुम्हारी यही इच्छा है तो मैं लिए लेती हूँ !

किसनकी ने ख़ुशी-ख़ुशी जुलाब की पुड़िया दे दी और रामकी ने उसके कहने के मुताबिक़ गर्म जल से उसे खा लिया। इसके बाद कुछ देर तक इधर-उधर की बातें होती रहीं और तब फिर किसनकी ख़ुशी-ख़ुशी अपने घर चली गई। उस रोज़ शाम को रामकी को बहुत दस्त लगे, जिससे वह घबरा गई और किसनकी को बुला कर सब हाल कहा। उसने उसे अपच से पेट में आँव होना कह कर रमादास जी महाराज के यहाँ चलने को और दवाई लाने को कहा। उस समय जाने को तो वह राज़ी नहीं हुई, परन्तु किसनकी के बहुत समझाने पर प्रातः-काल जाने की बात ठहरी।

३

रामकी की तबीयत आज कुछ सुस्त है। कल शाम को बहुत दस्त लगने की वजह से वह कुछ अशक्त हो गई है। आज उसने जल्दी-जल्दी सब काम कर लिए। वृद्ध ससुर को जिमा कर चौका-बर्तन करने लगी और बर्तनों को शीघ्रतापूर्वक माँज कर यथास्थान रख दिया। यह सब कर चुकने के बाद वह अपने कमरे में जाकर बैठ गई और किसनकी के आने की राह देखने लगी। उसे बैठे हुए क़रीब बीस मिनट हुए होंगे कि किसनकी आ गई। कमरे में प्रवेश करते ही किसनकी की सबसे पहले नज़र उसके कपड़ों पर पड़ी। उसने रामकी के कपड़ों की ओर देख कर कहा—बहिन रामकी, तू अभी कैसी निरी भोली है कि महाराज के यहाँ चलना है और कपड़े तूने तेलियों के से पहन रक्खे हैं। जल्दी से उठो और आदमी की तरह कपड़े बदल लो।

यह कहते हुए वह उत्तर की प्रतीक्षा में उसके पास जा बैठी। रामकी ने कुछ भी उत्तर न दिया। और वह वे ही कपड़े पहने चलने के लिए उठ खड़ी हुई। परन्तु किसनकी को यह कब मञ्ज़ूर था। उसका तो उद्देश्य ही कुछ और था। अतः उसने रामकी को बहुत ऊँच-नीच समझाना शुरू किया। आख़िरकार आध घण्टे की माथा-पच्ची के बाद रामकी ने कपड़े बदलने मञ्ज़ूर किए। उसने एक नई सफ़ेद धोती और एक सफ़ेद कोट निकाला और उसे पहन कर किसनकी के साथ जाने को तैयार हो गई। वे दोनों घर से निकल पड़ीं। रामकी किसनकी के साथ चल तो पड़ी, परन्तु उसकी छाती धड़कने लगी।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

वह ज्यों-ज्यों पैर बढ़ाती जाती थी, त्यों-त्यों उसकी छाती अधिक धड़कती जाती थी। किसी अदृष्ट अनिष्ट के होने की आशङ्का से उसे रह-रह कर मर्म-वेदना हो रही थी।

कुछ दूर तक तो किसनकी ने उससे कुछ नहीं कहा, चुपचाप चलती रही, परन्तु जब आधा मार्ग तय कर चुकी तब उसने रामकी से इधर-उधर की बातें शुरू कीं। बातों ही बातों में उसने रामकी को समझा दिया कि महाराज के पास प्रथम बार जाने वाली स्त्री से महाराज क्या-क्या बातें पूछा करते हैं और उसके साथ कैसा प्रेम-व्यवहार करते हैं। उसने यह भी बतलाया कि उन बातों को बिना किसी प्रतिकार के उसको क्या-क्या जवाब देना होता है। और वैसा न करने वाली स्त्री को घोर पाप होता है। रामकी ने उसकी सब बातें सुनीं और तोते की तरह अक्षरशः याद कर लीं। पर उसे यह पूछने की बिलकुल हिम्मत ही न हुई कि महाराज को ये सब बातें पूछने तथा वैसा व्यवहार करने का क्या प्रयोजन है? किसनकी की बातें ख़त्म होते-होते रामद्वारा आ गया और वह चुप हो गई।

जिस समय उन दोनों ने रामद्वारे के भीतर पैर रक्खा तो किसनकी मारे ख़ुशी के फूले न समाती थी। पर रामकी की दशा उसके बिलकुल विपरीत थी। वह बहुत अधिक दहल गई और चक्कर खाकर गिरने लगी। पर तुरन्त किसनकी ने उसे थाम लिया और सीधे महाराज के शयनागार में ले गई।

आज शयनागार की छटा कुछ निराली ही है। विलायती इत्रों की सुगन्धि से सारा कमरा महक रहा है। रामकी वहाँ के झाड़-फ़ानूसों, बड़े-बड़े शीशों एवं मख़मली गद्देदार पलङ्ग को देख कर भौंचक सी रह गई। अब उसे अपने सर्वनाश की आशङ्का प्रत्यक्ष दृष्टिगोचर होने लगी। रमादास जी महाराज पलङ्ग के पास बिछे हुए गद्दे पर बैठे थे। उस पर दूध के समान सफ़ेद चाँदनी बिछी हुई थी। रामकी और किसनकी के शयनागार में प्रवेश करते ही महाराज उनकी अगवानी के लिए उठे और चाहा ही था कि रामकी का हाथ पकड़ उसे गद्दे पर ले जावें, परन्तु वह किसनकी के पीछे होकर दीवार के साथ सट गई, और मन ही मन यहाँ आने के लिए पछताने लगी। मगर अब तो वह फँस चुकी थी। अतः किसी तरह चुप रही। महाराज यह देख कर वापस गद्दे पर जा बैठे और इस प्रकार मुँह बना कर बैठ गए कि मानो उन्हें यह पता ही नहीं कि उनके शयनागार में कोई दूसरा व्यक्ति भी है। कुछ क्षण तक तीनों चुप रहे। अन्त में महाराज बोले—

"आ कुण! रामकी आ, बाँई आ" (प्रथम-मिलन के समय पति, पत्नी को अपने बाएँ अङ्ग में आकर बैठने को कहा करता है कि "बाँई आ"—"अर्थात् मेरी बाईं अङ्ग में आकर बैठ। इसी प्रकार ये साधु भी अपने दुष्ट-भाव से "बाई" शब्द की ओट में "बाँई आ" कहा करते हैं) रामकी चुप रही, तब रमादास जी ने किसनकी की ओर कुछ इशारा किया और उसने रामकी का हाथ पकड़ कर उसे महाराज के पास बैठा दिया।

रमादास जी—(हँस कर तथा मुँह बना कर) "अहहहा, आ कुण? रामकी! आ तो साधों रे काम की। साधों बुलाई रात की और आई तूँ क्यूँ परभात की।" यह कह कर रमादास जी ने उसका हाथ पकड़ लिया और तब उसका अन्धे की तरह अङ्ग टटोलने लगे।

रमादास जी—(रामकी का हाथ पकड़े हुए तथा आँखों को मटकाते हुए उसके अङ्ग-प्रत्यङ्गों को एक हाथ से छू-छू कर) रामकी!

रामकी—(कुछ घबराई सी होकर) राम महाराज!

रमादास जी—(रामकी की पहुँची पकड़ कर उसी प्रकार आँखें मटकाते अङ्ग-प्रत्यङ्गों को छूते हुए) ओ के ए, बाई तेरे।

रामकी—(कुछ खिसियानी सी होकर) राम महाराज! ओ तो महाराज म्हारो पूँचों (कलाई)।

रमादास जी—(अट्टहासपूर्वक) ओ तो साधों को मन ऊँचो। (रामकी के हाथ में चूड़ी और कानों में बालियाँ न देख कर) ओ के ए रामकी! तेरे बिलियाँ वाली कोनी के?

रामकी—(असमञ्जस के साथ) राम महाराज! हूँ विधवा हूँ, महाराज!

रमादास जी—(पुचकारने के लिए मुँह बना कर) आछो! आछो! बाई आछो! राम जी भली करी बाई! राम जी तेरे राजी हैं ए बाई! साधों के आया कर! साधों की सत्सङ्ग व सेवा किया कर। साधों की भाव-भक्ति ही सार है भोली। (कुछ क्षण चुप रहने के बाद) रामकी!

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

रामकी—राम महाराज ! जी महाराज !

रमादास जी—(उसी प्रकार आँखें मटकाते और अङ्ग-प्रत्यङ्ग टटोलते उसके स्तनों पर हाथ लगाते हुए) ए के है बाई तेरे ! ए गोल-गोल अनारों जिस्यों क्या है बाई तेरे ?

रामकी—(मन्त्र-मुग्धवत्) आ तो महाराज म्हारी छाती है।

रमादास जी—(भोलेपन का भाव दिखाते हुए हँस कर आहहहा, आ तो साधों के मन भाती। (पुनः कुछ क्षण शान्त रह कर) रामकी !

रामकी—(तोते की तरह) राम महाराज !

रमादास जी—(मुँह बनाते हुए हाथों से कपोलों को छूते हुए) ए के है रामकी तेरे ?

रामकी—(उसी प्रकार मन्त्र-मुग्ध की तरह) ऐ तो महाराज म्हारा गाल है।

रमादास जी—(मुँह में पानी भर कर) आछो, बाई आछो। ए तो साधों काई माल। साधों के आया कर, साधों ने माल खवाया कर ; राम जी राजी होजासी ए तेरे भोली। (पुनः कुछ क्षण चुप रह कर) रामकी !

रामकी—राम महाराज !

रमादास जी—(अङ्ग-प्रत्यङ्गों को टटोलते हुए कमर में हाथ डाल कर) आ काँई ए बाई तेरे ?

रामकी—(तोते की तरह) ओ तो महाराज म्हारा आसो-पासो।

रमादास जी—(उसकी कमर पकड़ कर अपनी जङ्घा-पर बैठाते हुए) जणे तो बाई साधों के मन भासो। जणेई तोथे साधों के नित आसो। (थोड़ी देर चुप रह कर पुनः) राम-भजन किया कर, रामकी साधों के आया कर, साधों री सेवा और मिले मिसरी-मेवा।

रमादास जी ने किसनकी की ओर इशारा किया, वह शयनागार के बाहर चली गई और शयनागार का दर-वाज़ा बन्द कर दिया। कुछ क्षण तो रोने की आवाज़ आई, परन्तु धीरे-धीरे शान्त हो गई।

४

उस रोज़ की घटना के बाद दो महीने तक रामकी को बहुत पश्चात्ताप रहा। इस बीच में किसनकी अक्सर उसके यहाँ आया करती और हर तरह से उसको समझा कर उसे शान्त किया करती।

पहले तो वह कई दिनों तक उससे बोली तक नहीं। परन्तु फिर उसकी मीठी-मीठी बातों में आकर, उसकी हम-दर्दी भरी बातों से जी बहलाने लगी। दो महीने के बाद रामकी महाराज के यहाँ पुनः जाने-आने लगी। अब तो दो वर्ष हुए वह नित्य नियमपूर्वक उनके यहाँ जाया-आया करती है। इस बीच में उसके एक बार पाप प्रकट हुआ, जिसे रमादास जी महाराज ने अपनी पेटेण्ट दवा से तुरन्त ही ठिकाने लगा दिया। परन्तु इससे उसके स्वास्थ्य को बहुत हानि पहुँची।

५

रामकी आजकल साधों की अनन्य भक्त है। राम-द्वारों में होने वाले प्रत्येक जागरण और उत्सवों में उसकी उपस्थिति अनिवार्य है। सिर्फ़ यहाँ ही क्यों, दादू-पन्थी, दम्भदास जी, सावधान राम जी के रामद्वारों में भी तो वह रामायण की कथा सुनने तथा प्रत्येक पूर्णमासी के रोज़ जागरण करने जाया करती है। कथा में वह सबसे अधिक भेंट चढ़ाया करती है।

हालाँकि रमादास जी को रामकी के अन्य रामद्वारों में जाने, जागरण करने तथा कथा में भेंट चढ़ाने से कोई व्यक्तिगत क्षति नहीं थी। परन्तु उनसे सौतियाडाह नहीं सहा गया और उस रोज़ जब वह दम्भदास जी के यहाँ कथा सुनने गई तो दूसरे रोज़ सुबह ही उनकी आपस में तकरार हो गई। वास्तव में तकरार होनी भी चाहिए थी। क्योंकि रामकी उस रात को कथा समाप्त होने के बाद दम्भदास जी के यहाँ ही रह गई थी।

दम्भदास जी वैसे तो बहुत सीधे दीखते हैं, परन्तु वे जब कथा बाँचते हैं तो श्रोता स्त्रियों को लक्ष्य कर-करके श्रृङ्गार-रस वर्णन करने में भर्तृहरि और कालिदास को भी मात कर देते हैं। इसीलिए तो उनकी कथा सुनने अधिकांश स्त्रियाँ ही आया करती हैं ! पुरुष तो उँगलियों पर गिनने लायक़ आते हैं। वे भी अधिकांश में वैसे ही लुच्चे-लबाड़े या गुण्डे-बदमाश होते हैं। हाँ, कुछ छोटी जाति के बूढ़े भलेमानुष भी आ जाया करते हैं। इनकी ख़ास कथा सुनने वालियों के लिए कथा-भवन के ऊपर के कमरे (जो हर तरह से ऐश के सामानों से सजे रहते हैं) रिज़र्व रहते हैं। कथा समाप्त होने पर वे प्रत्येक

(शेष मैटर २८१ पृष्ठ के पहले कॉलम में देखिए)

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

मारवाड़ का रंग और तराज़ू

[खरवा-नरेश श्रीमान् गोपालसिंह जी राष्ट्रवर]

मारवाड़ देश के अनेक विरद हैं, जिनमें से एक विरद "नराँ समुद्र" है। यानी जैसे समुद्र का नाम रत्नाकर इसलिए है कि उसमें रत्न उत्पन्न होते हैं, इसी प्रकार मारवाड़ को भी यह उपमा इसलिए दी गई है कि यह नर-रूपी रत्नों का आकर था। यह विरद इस प्रान्त का बहुत प्राचीन है, जोकि यहाँ के प्राचीन साहित्य में इसके लिए उपयोग किया गया है। परन्तु खेद है कि यहाँ का साहित्य ही अन्धेरखाते में पड़ा हुआ है। क्योंकि उन नर-रत्नों की वर्तमान पतित सन्तान राजपूत लोग जब अपने उन पूजनीय पूर्व-पुरुषों का नाम भी भूल गए, तो उनसे उस साहित्य को प्रकाश में लाने की आशा कैसे की जा सकती है? इसलिए यह विरद सर्वसाधारण की जानकारी में कम आया, परन्तु इसमें सन्देह नहीं कि एक समय यह विरद इस प्रान्त के लिए पूर्ण रूप से घटता था। इस प्रान्त के "नराँ समुद्र" विरद के प्रमाण देकर लेख को बढ़ाने की आवश्यकता नहीं है, क्योंकि यह इतिहास-प्रसिद्ध मत है कि इस प्रान्त में ऐसे अनेक प्रातः स्मरणीय पुरुष हो चुके हैं कि जो मनुष्य-जाति के यश-रूपी मुकुट में मूल्यवान् उज्ज्वल रत्नों के समान सदा चमकते रहे हैं और जब तक मनुष्य-जाति का इतिहास रहेगा, सदा चमकते रहेंगे।

देश-काल-पात्र के अनुसार जिस कर्त्तव्य के पालन करने की आवश्यकता है, उसी को पालन करके जो उच्च मनुष्यत्व का परिचय देते हैं, वे ही पुरुष उच्च नर-रत्नों की गिनती में आते हैं। जिस समय वे नर-रत्न उत्पन्न हुए थे, उस देश-काल-पात्र में और वर्तमान देश-काल-पात्र में बड़ा अन्तर है। यह समय सर्वथा उसके विपरीत है। उस समय अधिकांश में विश्वासघात, धूर्त्तता और व्याज-व्यवहार रहित प्रत्यक्ष और क्रियात्मक जातीय सङ्घर्षण मुसलमानों और हिन्दुओं के बीच में चलता था। उस समय जाति-सङ्घर्षण में विजय पाने के लिए [illegible] सांसारिक मोह-माया को तृणवत् त्याग कर, प्राणों [illegible] हथेली पर रख कर, दृढ़-हस्त से खड्ग पकड़ [illegible] क्षेत्र में आगे पैर बढ़ाना ही सर्वोच्च कर्त्तव्य था। [illegible] कर्मवीर महापुरुष इस कर्त्तव्य का पालन कर गए, [illegible] उस महा कठिन और घोर विपत्ति के समय में आर्य-[illegible] आर्य-धर्म और आर्य-देश की रक्षा की।

कोई माने या न माने, परन्तु चार वर्ण की [illegible] किसी एक देश व जाति के लिए ही नहीं बनाई [illegible] किन्तु वास्तव में यह आर्य-सिद्धान्त पृथ्वी पर [illegible] के लोगों पर घट सकता है और इसी के अनुसार [illegible] व्यवस्था चल रही है। ब्राह्मण-कर्म, क्षात्र-धर्म [illegible] सबमें प्रधान हैं, जिनके आधार पर मनुष्य-जाति [illegible] व्यवस्था और उन्नति निर्भर है। जब तक भारतवर्ष [illegible] इन दोनों धर्मों का प्राबल्य रहा, तब तक यह देश [illegible] में शिरोमणि होकर रहा। इन दोनों धर्मों ने इस [illegible] महत् कार्य सम्पादन किए! पर परिवर्त्तनशील संसार [illegible] परिवर्त्तन-चक्र में देश-काल-पात्र के अनुसार सदा एक [illegible] धर्म की प्रधानता नहीं रहती। देश-काल के अनुसार [illegible] लोगों के सामने नवीन कार्य-क्षेत्र खुल जाता है और [illegible] समय वही धर्म और उसके मानने वाले प्रधानता [illegible] कर लेते हैं। अथवा यों कहना चाहिए कि जिस [illegible] धर्म-पालन के लिए देश-काल-पात्र अनुकूल हैं और [illegible] से ही जो लोग उसके अनुयायी हैं, वे ही उस [illegible] प्रधानता प्राप्त कर लेते हैं।

जब ज्ञान-विज्ञान के विकास के अनुकूल देश-[illegible] तो यहाँ के पूजनीय ब्राह्मणों ने वे आविष्कार [illegible] कार्य कर दिखाए जिनकी समानता संसार [illegible] तक कोई नहीं कर सका। परन्तु आज के समय [illegible] देश में वास्तविक और समयोचित विद्या की [illegible] विकास के लिए सुअवसर प्राप्त नहीं है। [illegible] विशुद्धानन्द जी, सर जगदीशचन्द्र वसु, सर [illegible] राय और सर रमण आदि विज्ञानवेत्ताओं [illegible]

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

अपनी विद्या और विज्ञान के विकास के लिए वह सुभीते और सामग्री इस देश में प्राप्त नहीं हैं, जो यदि वे यूरोप में जन्म लेते तो वहाँ उनको प्राप्त हो सकते। यदि इन लोगों ने यूरोप में जन्म लिया होता तो इनका यश संसार के एक सिरे से दूसरे सिरे तक फैल जाता।

क्षात्र-धर्म की जब इस देश में प्रधानता थी तब ब्राह्म-धर्म भी उन्नति पर था और उस समय क्षात्र-धर्म के अनुयायियों ने इस देश को सर्वोपरि बना दिया था। उस समय बर्मा की पूर्वी सीमा से लेकर अफ़ग़ानिस्तान की पश्चिमी सीमा तक के समस्त प्रदेश भारतवर्ष के अन्तर्गत थे और आर्यों ने बैबिलन और कुस्तुनतुनिया तक को अपना उपनिवेश बना लिया था। पर परस्पर की फूट और विदेशियों के आक्रमणों से भारतवर्ष गिरते-गिरते मुसलमानों के आधिपत्य में आ गया और यहाँ उनका राज्य स्थापित हो गया। इस देश की धार्मिक, सामाजिक, राजनैतिक स्वतन्त्रता की रक्षा के लिए हिन्दुओं का मुसलमानों के साथ घोर संग्राम होने लगा। हिन्दू-जाति के लिए यह बड़ी विपत्ति का समय था, परन्तु उस समय हिन्दू-जाति वर्त्तमान समय की भाँति क्षात्र-धर्म से शून्य नहीं हो गई थी। मुसलमानी राज्य-काल के आरम्भ से लेकर अन्त तक (अङ्गरेज़ी-राज्य आरम्भ होने तक) सैकड़ों वर्षों तक राजपूताने ने हिन्दू-जाति की धार्मिक, सामाजिक, राजनैतिक, स्वतन्त्रता के लिए आत्मत्याग, वीरता, साहस और बलिदान के अतुलनीय कार्य कर दिखाए। इन गुणों का जो श्रेय और यश राजपूताने ने प्राप्त किया है वैसा दूसरे प्रान्त प्राप्त नहीं कर सके। महाराष्ट्र प्रान्त में हिन्दू-जाति का पुनरुत्थान और भारतवर्ष से मुसलमानी साम्राज्य के उखाड़ने का श्रीगणेश करने वाले छत्रपति शिवाजी भी राजपूताने के राज्य-वंश के ही थे। यह वही समय था कि जिसमें उत्पन्न हुए नर-रत्नों के कारण ही इस प्रान्त को 'नरों समुद्र' का विरद प्राप्त हुआ। यह बात इतिहास से भली-भाँति सिद्ध है। उस समय यहाँ के राजपूतों ने उच्च उद्देश्य और सिद्धान्त को लक्ष्य में रख कर कर्त्तव्य-पालन के लिए सांसारिक वैभव को लात मार दी थी और अपने प्राणों की बलि देने में पराकाष्ठा कर दी थी। महाराणा प्रतापसिंह, राजसिंह, महाराजा जसवन्तसिंह, राव जयमल, वीर-शिरोमणि राव दुर्गादास राठौड़, अमरसिंह आदि का वर्णन इतिहास में प्रकट हो चुका है और इस कारण लोग उनको जानते हैं। परन्तु वर्तमान राजपूतों की अकर्मण्यता से उस समय के अनेक नर-रत्नों के महत्वपूर्ण आत्म-त्याग के चरित्र और इतिहास प्रकाशित नहीं हो सके हैं और इसलिए लोगों को उनके विषय में कुछ भी मालूम नहीं है। मुसलमानों के हाथ में गए हुए मेवाड़-राज्य के ऊँटाले नामक गढ़ को पुनः हस्तगत करने के लिए जो युद्ध हुआ था, उसमें देवगढ़ और भींडर के सरदारों ने बड़ा पराक्रम दिखाया था। कर्नल-टॉड साहब ने "टॉड राजस्थान" इतिहास में उनका जो उल्लेख किया है, वह देखने योग्य है। इस उल्लेख के अन्त में टॉड साहब ने लिखा है कि "इस प्रकार के उदाहरण मारवाड़ के वीरों के बहुत मिलेंगे।" टॉड साहब के उस कथन को स्मरण करके मैं भी एक उदाहरण यहाँ देना चाहता हूँ, जो कि परलोकवासी सुप्रसिद्ध इतिहासवेत्ता मुन्शी देवीप्रसाद जी ने मेरे पास लिख भेजा था।

मारवाड़-राज्य में प्रसिद्ध राव जयमल जी की सन्तान का भकरी नाम का एक ठिकाना (जागीर) है। वहाँ के ठाकुर साहब का नाम राठौड़ दानीदास जी था। दानीदास जी एक दिन घोड़े पर सवार होकर अकेले ही अपने गाँव से मील दो मील हवा खाने को गए थे। उस समय गुजरात से लौटती हुई बादशाही सेना वहाँ होकर दिल्ली जा रही थी। सारी सेना एक साथ नहीं थी, आगे-पीछे कुछ मीलों के अन्तर पर चल रही थी। दानीदास जी ने उस सेना की टुकड़ी के मुसलमान-अधिकारी और सैनिकों को यह बात करते हुए सुना कि—"इस देश (मारवाड़) में अब बादशाही तोपें ख़ाली कराने वाला कोई योद्धा नहीं मिला। हमारी तोपें यहाँ होकर भरी हुई वापस जा रही हैं। क्योंकि इस देश में तो बादशाह से विग्रह करने वाला अब कोई बचा ही नहीं है।" (मारवाड़ के राठौड़ों में से कोई न कोई चाहे जब बादशाह से लड़ बैठते थे) दानीदास जी को यह बात असह्य हो गई। उन्होंने सेना के अधिकारी को आगे न बढ़ने को कहा और बोले—"तुम यहीं ठहर जाओ, आगे मत जाओ। हम तुमसे लड़ेंगे। अपनी तोपों को आ जाने दो, हम ख़ाली करावेंगे।" उस सैनिक अधिकारी ने उस अकेले सवार की यह बात साधारण

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

समझ कर हँसी में उड़ा दी। दानीदास जी लौट कर अपने स्थान में आगए, जोकि एक छोटा सा क़िला था, और अपने आस-पास के राजपूतों को एकत्रित कर युद्ध की तैयारी करने लगे। यह देख कर उनके निकटवर्ती हितचिन्तकों ने कहा कि आप निष्प्रयोजन यह कार्य क्यों करते हैं, आप जीत न सकेंगे। अकारण सिर पर विपत्ति लेकर क्यों प्राणों को खोते और घर को बरबाद करते हो? परम कर्त्तव्यनिष्ठ आत्म-त्यागी वीर दानीदास जी ने उत्तर दिया कि—"यह निरर्थक और निष्प्रयोजन कार्य नहीं है, इसमें बड़ा अर्थ है और मारवाड़-देश का बड़ा प्रयोजन भरा हुआ है। हम राठौड़ सीधी तरह मुग़लों के ताबे नहीं हो गए हैं, किन्तु बहुत युद्ध होने के पश्चात् बादशाहों की अधीनता में आए हैं। परन्तु इसका यह अर्थ नहीं कि अपने देश और जाति का गौरव और महत्त्व हमने खो दिया है। इन मुसलमानों के चित्त में यदि इस प्रकार का भाव जम जाय कि—इस देश में बादशाह का सामना करने वाला अब कोई नहीं रहा है, अब हम मारवाड़ के लोग दीन-हीन और ग़रीब हो गए और हमारे भीतर राजपूती नहीं रही है, तो यह बहुत बुरी बात है। यदि यही भाव हमारे लिए बादशाह और मुसलमानों के चित्त में जमा रहे तो मुसलमानों की दृष्टि में हम गिर जायँगे, जिससे हमारे वंश और हमारे मारवाड़ का गौरव और महत्त्व कुछ भी न रहेगा। यदि मेरे प्राण और सम्पत्ति इस युद्ध में चले जायँगे तो मुसलमानों के हमारे प्रति जो बुरे विचार हैं, वे भी साथ-साथ चले जायँगे और मैं अपने प्राणों के एवज़ में अपने वंश और देश की बात रख लूँगा।" अपने आदमियों को यह समझा कर दानीदास जी ने बादशाही सेनापति से कहलाया कि—"आपको हमसे लड़ कर जाना होगा?" बादशाही सेनापति ने अकारण युद्ध करना उचित न समझ कर इस सन्देश को टाल दिया। तब दानीदास जी ने सौ-पचास सवार भेज कर बादशाही सेना की एक टुकड़ी पर धावा करा दिया जिससे युद्ध प्रारम्भ हो गया! इतने में पीछे से आने वाली दूसरी शाही सेना भी तोपों सहित आ पहुँची। दानीदास जी ने अपने क़िले से उस पर तोपें चलाना आरम्भ कर दिया और बादशाही सेना को मार भगाया। परन्तु पीछे से सेना बराबर आकर शामिल होती रही और युद्ध जारी रहा। जब क़िले में सामान न रहा तो वीर दानीदास जी ने स्वर्गीय की इच्छा से, प्रथा के अनुसार ऐसे अवसर पर किए जाने वाले पूजा-पाठ, दान-पुण्य आदि धार्मिक कार्य कर केसरिया वस्त्र पहने और चार सौ सवारों को लेकर बादशाही सेना पर धावा कर दिया। अन्त में वे अपने इष्ट प्रसिद्ध कृष्ण भक्त वीर-शिरोमणि राव जयमल जी के समान वीर-गति को प्राप्त हुए।

जब यह घटना दिल्ली के बादशाह और जोधपुर के महाराज को विदित हुई तो महाराज ने दानीदास जी के पुत्र को बुला कर ख़ातिर की और बहुत सी भूमि जागीर में दी। बादशाह ने कहा कि यदि दानीदास जैसा वीर मारा न जाता और मेरे सामने आ जाता तो उसके सब क़सूर माफ़ करके अपने पास रख लेता।

आज का राजपूताना वह राजपूताना नहीं है। इसमें और उसमें रात-दिन का अन्तर है। राजपूती रक्त क्षात्र-धर्म की दृष्टि से देखा जाय, तो मनुष्यत्व की रक्षा बढ़ाने में उस समय के राजपूताना के नर-रत्न राजमुकुटमणि थे तो वर्तमान राजपूताना के राजपूत रक्त विपरीत मनुष्यत्व-सम्पादन की दृष्टि से सड़क बनाने में उपयोगी होने योग्य कङ्कड़ के समान भी नहीं हैं। परन्तु इससे यह न समझना चाहिए कि राजपूताने का राजपूत समूह नितान्त निकम्मा ही बन गया है। अनेक राजपूत नर-रत्न वहाँ पर अब भी दबे हुए पड़े हैं, परन्तु उन्हें बाहर निकाल कर और कठोर सान पर घिस कर मोल रत्न बनाने का कोई अवसर और साधन आज नहीं मिल रहा है। इस समय राजपूत-समूह की जो दशा हुई है, उसका मुख्य कारण देश-काल-पात्र विपरीत अवस्था है। सैकड़ों वर्षों से जिस जाति के में उज्ज्वल कृपाण बनी रही, और जिसको रख के लिए कभी अवसर नहीं मिलता था, उस जाति के एकाएक शान्ति-नामधारी, मोह-निद्रा से मूर्च्छित वाला समय आ उपस्थित हुआ और समस्त पात्र विपरीत हो गए। ऐसी स्थिति में उन को उस पाषाण-ढेर में से निकालने के लिए अवसर न रहा और न कठोर सान पर घिसे उज्ज्वल होने का साधन रहा। यही परिस्थिति जिसने राजपूती को भुला कर आज के राजपूत उससे विपरीत बना दिया। वे विचार-भाव और

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

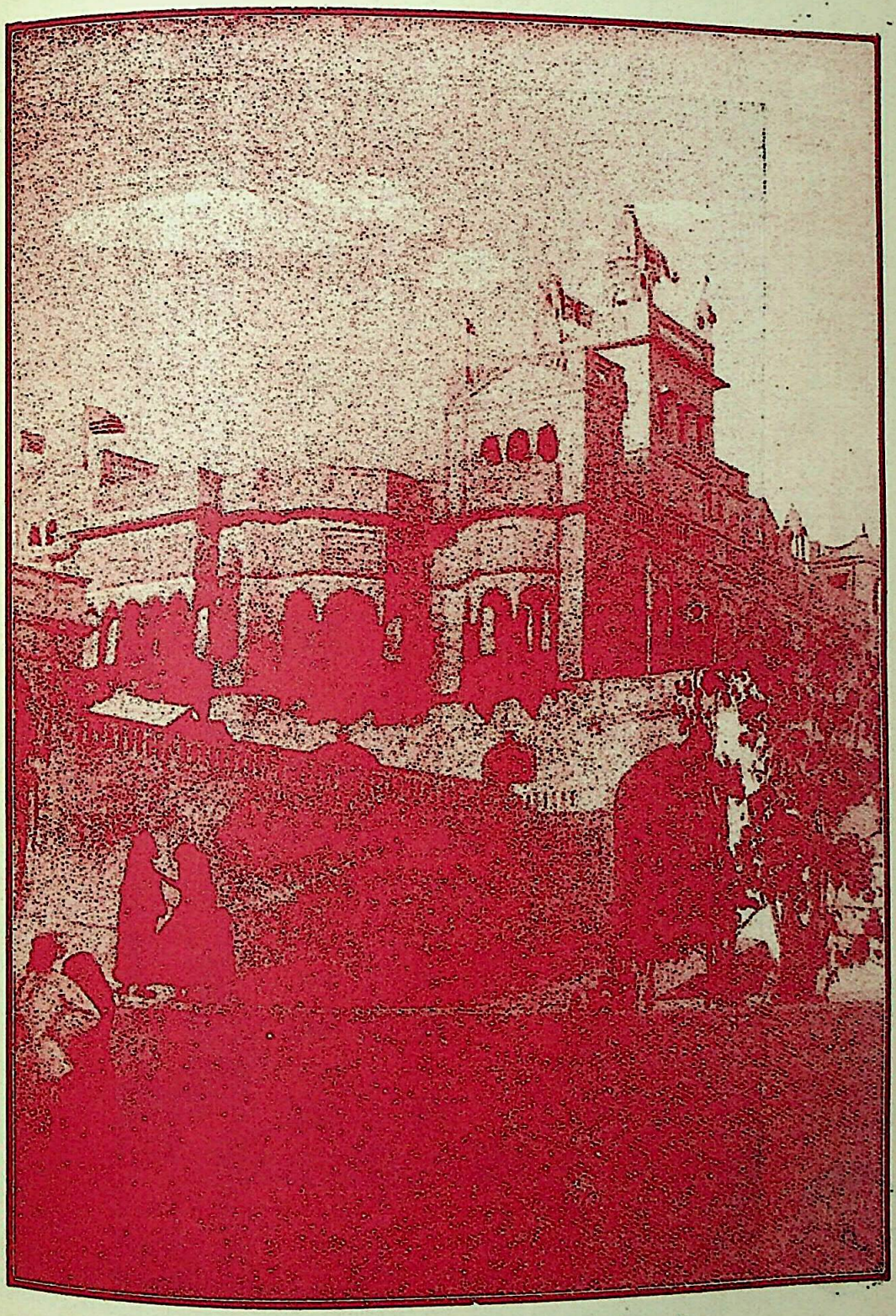

बिड़ला गैस्ट हाउस (अतिथि-गृह), पिलानी

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

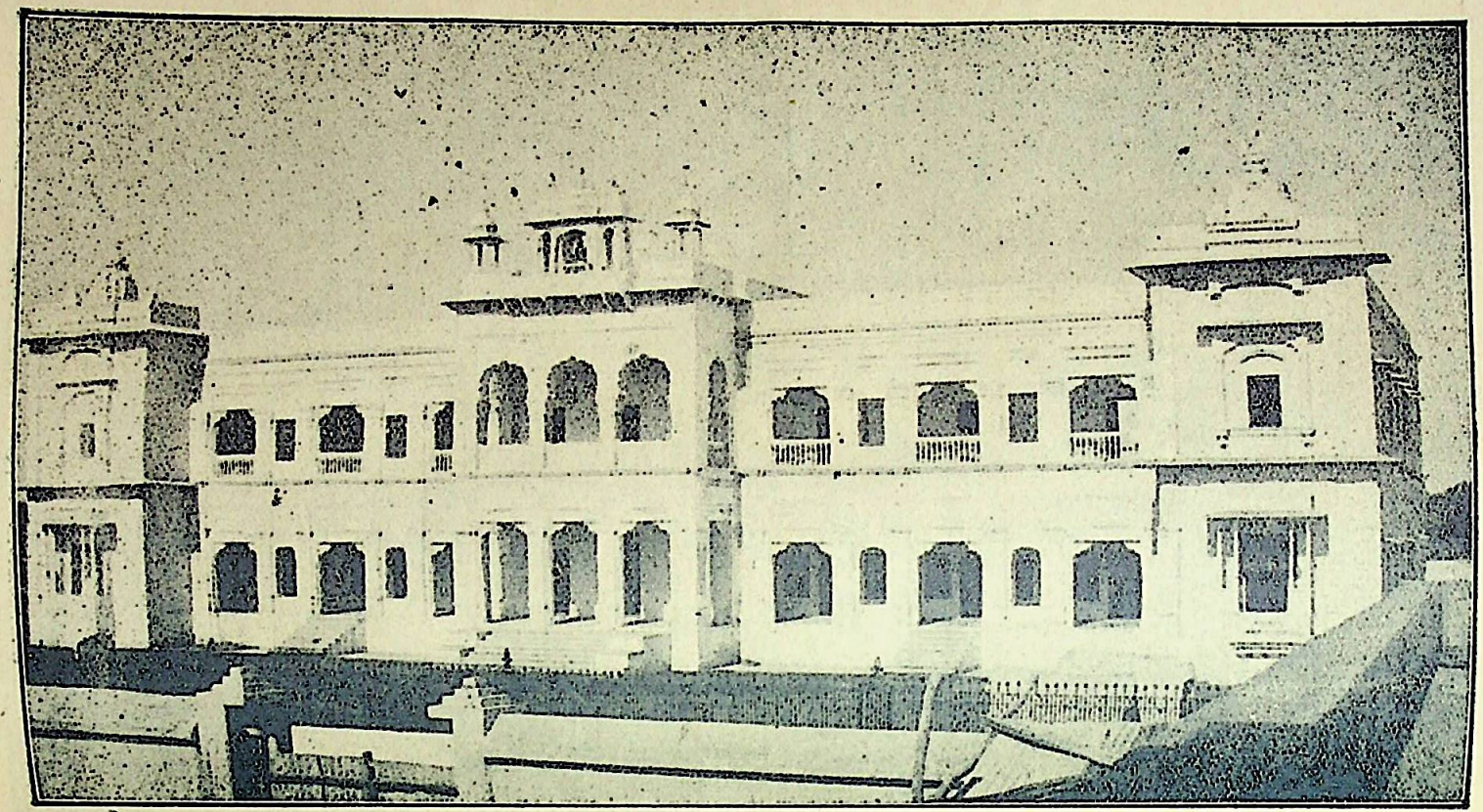

बिड़ला बोर्डिङ्ग हाउस, पिलानी

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

राजा गोविन्दलाल पित्ती (सपरिवार)

[आप बम्बई के प्रसिद्ध मारवाड़ी श्रीमन्त विद्वान्, सुधारक और रूढ़ियों के प्रबल विरोधी हैं। आप अनेकों संस्थाओं का सञ्चालन करके हिन्दू-समाज का हित-साधन कर रहे हैं।]

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

विलायत में गत चार वर्षों से व्यापार तथा गीता और शाकाहार का प्रचार करने वाले
सेठ रामेश्वर लाल जी बजाज

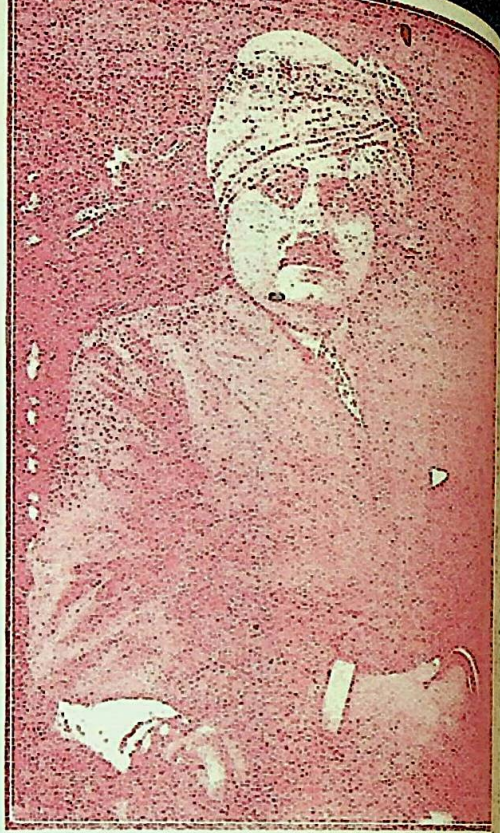

कला के अनन्य प्रेमी, जयपुर-राज्य के ताज़ीमी सर
और राजपूताना फ़ोटो आर्ट-स्टुडियो के संचालक
पुरोहित रामप्रताप जी

"मारवाड़ का इतिहास" के लेखक तथा क्रान्तिकारी सुधारों के पक्षपाती
श्री० जगदीशसिंह जी गहलोत

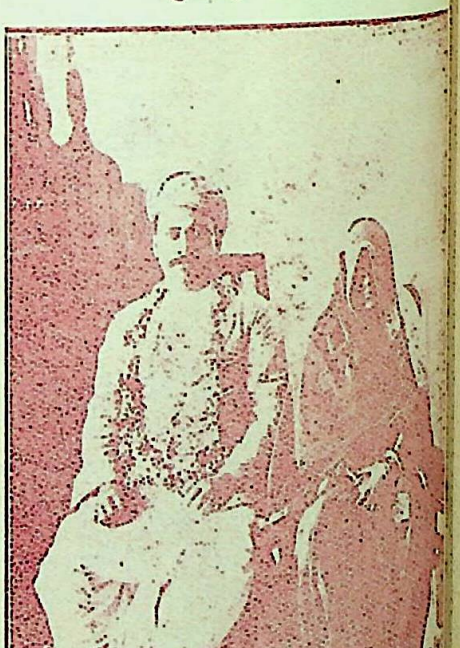

मारवाड़ी-अग्रवालों में विधवा-विवाह करने वाले प्रथम दम्पति
श्री० रामलाल जी लीलहा और सौ० जानकी

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

ही नहीं रहे कि जिनके आधार पर राजपूती बनी रहती। इतना ही नहीं, वरन् राजपूती यानी क्षात्र-धर्म भुला देने के लिए सारे विधानों की रचना कर दी गई—यह बात सभी विचारशील पुरुषों को भली-भाँति मालूम है। ऐसी दशा में आज के राजपूताने के राजपूत अपना स्वरूप, ज्ञान और कर्त्तव्य भूल कर कुछ और ही बन जायँ तो इसमें आश्चर्य ही क्या है? सुख-शान्ति के समय में क्षात्र-धर्म यानी राजपूती उन्हीं देशों में बनी रह सकती है कि जो स्वतन्त्र और स्वाधीन हैं और जहाँ पर सुख-शान्ति और लोगों को कर्त्तव्य-परायण बनाए रखने का उत्तरदायित्व अपने पर ही है। सब बातों में सर्वथा पराधीन और परतन्त्र देश में उस तरह राजपूती बनी नहीं रह सकती। और राजपूती बनी रहने की दशा में देश परतन्त्र रह ही नहीं सकता।

वर्तमान विपरीत समय क्षात्र-धर्म को भुलाने वाला और वैश्य-धर्म की वृद्धि करने वाला है। वैश्य-धर्म की दृष्टि से देखा जाय तो राजपूताना इस कार्य में दूसरे प्रान्तों से पीछे नहीं है, किन्तु कुछ आगे ही बढ़ा हुआ है। व्यापार-व्यवसाय में राजपूताना के वैश्य-समूह के लोग रत्नों के समान चमक रहे हैं। क्योंकि आजकल के देश-काल-पात्र उनके अनुकूल और उन्हीं के उपयोगी हैं। उस समय के देश-काल-पात्र पूर्णरूप से कृपाण उठाने वालों के अनुकूल थे, तो आज के देश-काल-पात्र शस्त्र छुड़ा कर तराज़ू हाथ में उठाने वालों के अनुकूल हैं।

आज के समय में प्रथम तो राजपूती के संस्कार ही मन से निकाल दिए गए हैं। और यदि किसी के मन में हैं तो उनके विकास के लिए अनुकूल क्षेत्र नहीं है। अस्त्र-शस्त्र अपनी इच्छानुसार कोई रख ही नहीं सकता। अस्त्र-शस्त्र की शिक्षा कहीं दी ही नहीं जाती। उच्च सैनिक-शिक्षा कोई प्राप्त कर ही नहीं सकता। विदेशों में जाकर सैनिक-शिक्षा प्राप्त करने का मार्ग आज तक सर्वथा बन्द था, अब बड़ी कठिनता से थोड़े से आदमियों के लिए थोड़ा मार्ग खुला है, पर उससे कोई बड़ा परिणाम निकलने की आशा नहीं है। सेना में भरती होकर कोई उच्च अधिकार प्राप्त नहीं कर सकता। यदि यह बातें न होतीं तो राजपूताने के राजपूतों में भी लॉर्ड रॉबर्ट, लॉर्ड किचनर, लॉर्ड हेग के समान वीरता दिखाने वाला कोई न कोई अवश्य निकल आता। इसके विपरीत वैश्य-धर्म के लिए आजकल मार्ग खूब खुला हुआ है। वैश्य-धर्म के उपयोगी संस्कार बनाने और शिक्षा प्राप्त करने में कोई बाधा नहीं है। व्यापार के लिए तराज़ू, काँटा, कल, कारख़ाने इत्यादि सभी प्रकार की सामग्री प्राप्त हो सकती है। व्यापार-व्यवसाय की शिक्षा प्राप्त करने के लिए मार्ग खुला हुआ है, भारतवर्ष और विदेशों में जाकर बड़ी से बड़ी शिक्षा प्राप्त कर सकते हैं। ब्रिटिश-राज्य के किसी भी भाग में रह कर मनमाना व्यापार-व्यवसाय कर सकते हैं और लखपती-करोड़पती होकर अपनी उन्नति कर सकते हैं।

इस समय इस देश के लिए धर्म-बल, विद्या-बल और खड्ग-बल—तीनों प्रकार के बलों का प्रयोग फलीभूत नहीं हो सकता। न तो अशोक के समान कोई अपने धर्म को वैसे फैला सकता है, न रामदास व गोविन्दसिंह के समान वैसी शिक्षा दे सकता है और न दुर्गादास और शिवाजी के समान खड्ग-बल से कार्य सिद्ध कर सकता है।

उस ज़माने में भले और बुरे अधिकांश कार्य बाहु-बल या खड्ग-बल से हो जाते थे। किसी की सम्पत्ति या भूमि यदि हरण की जाती थी तो कृपाण के बल से ही, और यदि अपनी भूमि और सम्पत्ति की रक्षा करते थे तो भी कृपाण के बल से ही। परोपकार और किसी अन्य का हित-साधन आदि बड़े-बड़े कार्य भी प्रायः खड्ग द्वारा ही सम्पादन होते थे। उन दिनों में बाहु-बल ही प्रधान था। यहाँ तक देखने में आता है कि खड्ग-बल से किए हुए डाकुओं और लुटेरों के काम, जिनमें सदुद्देश्य अथवा पुण्य का नामो-निशान भी नहीं, वे भी तलवार के बल से किए जाने के कारण प्रशंसनीय माने जाते थे। पुराने समय की बात तो दूर रही, किन्तु अभी अङ्गरेज़ी राज्य के समय में, विक्रम सम्वत् की वर्तमान शताब्दी के प्रथम भाग में, डूँगरसिंह जी और जुहारसिंह जी नाम के प्रसिद्ध डाकू शेखावाटी में हो गए हैं, जिनके कार्य में किसी प्रकार का परोपकार या सदुद्देश्य का भाव न था, तो भी आज तक उनकी प्रशंसा के गीत गाए जाते हैं।

वर्तमान समय उस समय से सर्वथा विपरीत है और इसके अनुसार कार्य करने की राजपूतों की प्रकृति नहीं है। व्यापार, व्यवसाय और ब्याज-बट्टे का काम करने की

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

प्रकृति राजपूतों में प्रायः न थी और न है। यह भी एक कारण इस समय उनकी अवनति का है। इस समय बल-द्वारा परोपकार का या कोई अन्य महत्वपूर्ण कार्य सम्पादन नहीं किया जा सकता। उस समय जो बल खड्ग में था, आज वह बल अर्थ (धन) में है। जो कार्य आज राजपूती नहीं कर सकती, खड्ग नहीं कर सकता, वह कार्य आज धन-द्वारा हो सकते हैं। आज धन के द्वारा धार्मिक संस्कार फैलाए जा सकते हैं, धर्म का प्रचार किया जा सकता है, विद्या-प्रचार किया जा सकता है। धन के द्वारा लोगों में राजपूती यानी वीरता के संस्कार उत्पन्न किए जा सकते हैं और वीरता की शिक्षा दी जा सकती है। धन के द्वारा अस्त्र-शस्त्र चलाना सिखाया जा सकता है। धन के द्वारा देश की कला-कौशल, खेती की वृद्धि की जा सकती है। इस समय सारे सुकार्य धन से सम्पादन हो सकते हैं। इस समय खड्ग-बल, या बाहु-बल से स्वार्थ-साधन करना या किसी की सम्पत्ति हरण करना दण्डनीय और महापाप है। परन्तु युक्ति और ब्याज-बट्टे द्वारा अथवा धन-बल द्वारा दूसरे का सर्वस्व हरण कि[illegible] जाने के लिए पूर्ण स्वाधीनता है और मार्ग खुले हुए [illegible] पाँच सौ रुपए [illegible] देकर, उससे दुगने [illegible] गुना ब्याज [illegible] और न्यायालयों [illegible] डिगरी प्राप्त [illegible] किसी की [illegible] सम्पत्ति हरण [illegible] सकती है। राज[illegible] यानी कृपाण-[illegible] प्राप्त की हुई [illegible] वर्षों से वंश-परम्परा[illegible] चली आती हुई [illegible] रियासतें, ठिकाने [illegible] कृषकों की भूमि [illegible] धन-बल-सम्पन्न [illegible] के हाथ में पड़ [illegible] इस समय [illegible] दिखा कर [illegible] किसी राजपूत [illegible] बीघा ज़मीन [illegible] का भी उदाहरण [illegible] मिलता, परन्तु [illegible] और धन-बल [illegible] हज़ारों बीघा भूमि [illegible] वैश्यों का [illegible] होता हुआ [illegible] देखने में आ रहा [illegible] स्वदेश में उत्पन्न [illegible] कच्चा माल सस्ते [illegible] पर ख़रीदा जाता [illegible] के लोभ से विदेश[illegible] को व्यापारी-वर्ग [illegible] ही बेचा जाता [illegible] विदेश से माल [illegible] कर अपने लाभ के लिए उसे इस देश में बेचने का [illegible] व्यापारी-वर्ग द्वारा ही किया जा रहा है। राजा[illegible]

The Bombay Chronicle

THURSDAY, MAY 30, 1929

STAND BY THE "CHAND"

We note, without surprise, that the Director of Public Instruction, U. P., has issued a circular to all Inspectors of schools in the province declaring that the well-known Hindi monthly, *Chand* "is no longer approved for use in schools and should not be purchased by any recognised school under you." The latest ban is no doubt a sequel to the proscription of the book, *Bharat Men Angrezi Rajya*, which was published by the *Chand* office. In a sense the ban is a tribute to the worth of the *Chand*. *In fact the CHAND is one of the best Hindi magazines in India and is by far the best devoted to the cause of Indian womanhood. It has therefore been a most popular magazine among Hindi-knowing people all over India. In common with various other journals we have had several occasions before to commend it to the public. We feel it necesary to say now that it is the duty of the public to help the magazine and prevent it from being victimised by Government.* The U. P. Government's ban may prevent not only Government schools but all recognised schools in the provinces, including even the unaided ones, from purchasing the magazine. But it shall not prevent the senior students and teachers and the public from continuing to read it.

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

स्वार्थपरता से किया हुआ अन्याय तो उनके राज्य की सीमा तक ही रहता है, परन्तु इस समय स्वार्थपरता से वैश्य-वर्ग द्वारा किए हुए अन्याय का प्रभाव राजा से लेकर ग़रीब तक सारे देश पर पड़ता है।

इसमें सन्देह नहीं कि उस समय राजपूती यानी खड्ग-बल से भला-बुरा जो कार्य किया जाता था, वह आज वैश्यों द्वारा धन-बल से किया जा रहा है। उस समय भू-सम्पत्ति सर्व-श्रेष्ठ और सर्व-प्रधान थी और उसी के साथ आधिपत्य, सत्ता, शक्ति, स्वत्व, अधिकार, प्रभाव आदि लगे हुए थे। परन्तु आज भू-सम्पत्ति नाम-मात्र के लिए लाभदायक रह गई है, और धन-सम्पत्ति ही सर्व-प्रधान तथा सर्व-श्रेष्ठ बन गई है और उपरोक्त सत्ता आदि सारी बातें धन-सम्पत्ति के साथ जा लगी हैं।

ऐसी दशा में मारवाड़ी-वैश्यों का कर्त्तव्य है कि जैसे मारवाड़ी-राजपूतों ने खड्ग-बल से उस समय कर्त्तव्य-पालन कर दिखाया था, वैसे ही वे लोग भी अपने धन-बल से देशोपकार का कार्य कर दिखावें। हमारे देश और जाति की आन्तरिक स्थिति देखी जाय तो इस समय राजपूत और वैश्य दो ही समूह प्रधान हैं। क्योंकि राजपूत तो हैं भू-पति और वैश्य हैं धन-पति, परन्तु राजपूत भू-पति होकर भी अधिकांश में निकम्मे बने हुए हैं। क्योंकि उनको अपने कर्त्तव्य और स्वरूप का ज्ञान ही नहीं रहा। भू-सम्पत्ति इस समय अधिक बन्धन का कारण हो रही है। आजकल एक तहसीलदार व पुलिस का थानेदार भी भू-स्वामी के विरुद्ध हो जाय तो उस पर ऐसी विपत्ति आ सकती है कि जिससे आजीवन पिण्ड छुटाना कठिन हो जाता है। इसके विपरीत व्यापार-वृत्ति इस समय अधिक स्वतन्त्र और अधिक लाभ देने वाली है। भू-सम्पत्ति-भोगी अधिकारी-वर्ग से जितने दबे हुए रहते हैं, व्यापारी-वर्ग को उतना दबना नहीं पड़ता। व्यापारियों का सम्बन्ध अपने नौकरों और दूसरे व्यवसायियों से ऐसा नहीं होता, जैसा कि भू-स्वामी और उनके इलाक़ों में रहने वाले लोगों का। भू-स्वामी अपने इलाक़े में रहने वाले लोगों के साथ का व्यवहार उस तरह से नहीं तोड़ सकते, जैसे कि व्यापार करने वाले वैश्य अपने साथियों या नौकरों से तोड़ सकते हैं। भू-स्वामियों की हानि और वृद्धि अधिकांश में बरसात पर निर्भर रहती है, जो कि मनुष्य के हाथ के बाहर की बात है। अच्छी वर्षा हुई तो पूरी आय हो जाती है, यदि दुर्भिक्ष हो जाय तो घोर विपत्ति का सामना करना पड़ता है। परन्तु वैश्यों के लिए यह बात नहीं है। उनकी अधिकांश आय प्रकृति के कार्यों पर निर्भर नहीं है। यदि दुर्भिक्ष पड़ जाता है तो अन्न का भाव महँगा करके लाभ उठा लेते हैं। ऐसे समय में क़र्ज़ देकर और ब्याज बढ़ा कर भू-स्वामी की भूमि हरण कर लेने का अवसर भी वैश्यों के हाथ आ जाता है। इस समय यदि भू-स्वामी के हाथ से भूमि निकल जाय तो फिर उसे प्राप्त कर सकना महा कठिन है। परन्तु वैश्य-वर्ग के लिए वैसी भयङ्कर बाधाएँ नहीं हैं। वे यदि एक व्यापार हाथ से निकल जाय तो दूसरा व्यापार कर सकते हैं; यदि एक स्थान में व्यापार करने में किसी प्रकार की क्षति पहुँचती है तो दूसरे स्थान में जाकर उन्नति कर सकते हैं; यदि बाप के नाम से दिवाला निकल जाय तो बेटे व भाई के नाम से, यहाँ तक कि बनावटी नाम से भी दूकान चालू कर सकते हैं।

इन थोड़े से उदाहरणों के लिखने से मेरा उद्देश्य यह सिद्ध करना है कि वर्तमान काल वैश्य-वर्ग के लिए ही है। इसलिए इस कर्म को करने वालों के लिए सब प्रकार की सुविधाएँ प्राप्त हैं। हमारा मारवाड़ी वैश्य-भाइयों से अनुरोध है कि वे इस अवसर से लाभ उठावें, अपने समाज में जो दोष हों उनको दूर करें, और अपनी युक्ति और धन-शक्ति का समयोचित उपयोग करके अपने मारवाड़-देश के यश को बढ़ावें।

उस समय मारवाड़ का यश था खड्ग-बल में, वर्तमान समय में यश है तकड़ी तोले (तराज़ू) में। जैसे कि वीर-कर्म साधन होता था खड्ग से, वैसे ही व्यापार-व्यवसाय साधन होता है तकड़ी तोले या तराज़ू से।

वर्तमान विपरीत समय के प्रभाव से राख के ढेर में दबी हुई राजपूती रूपी अग्नि ऐसे ही नहीं दबी रहेगी, किन्तु यह फिर प्रज्ज्वलित हो उठेगी और अपना तेज दिखावेगी।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

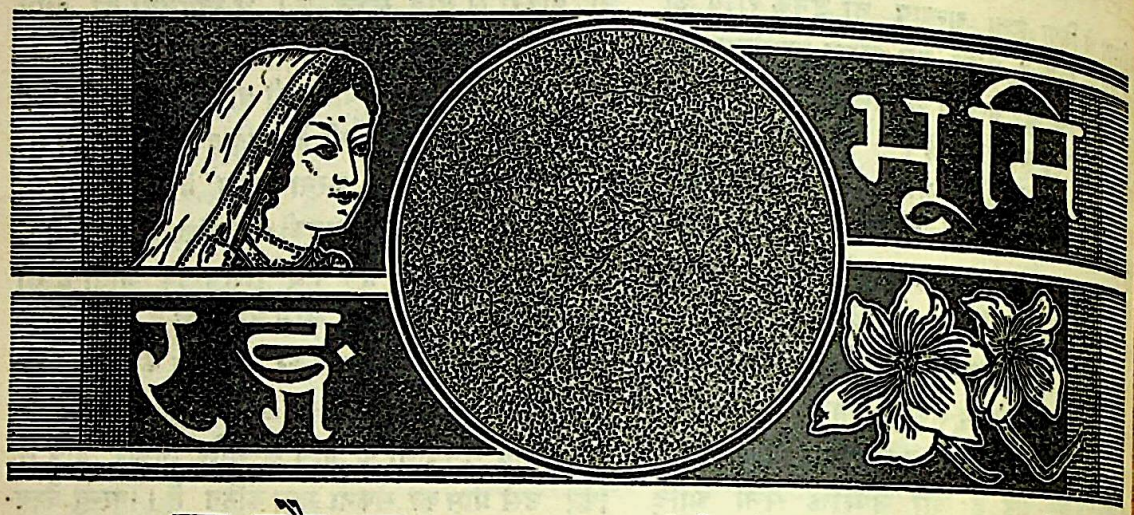

हम और वह

हमने अपने लिए सब कुछ किया, और मरते दम तक करते रहेंगे। पाप-पुण्य, धर्म-अधर्म की हमें परवा नहीं। हमारी यह अभिलाषा है कि हमारा धन बढ़े, नाम बढ़े इज़्ज़त बढ़े, और हम जितने बड़े बन सकें, बनें; जितने सुखी हो सकें, हों!!

यह सब हो गया, कुछ हमारी तक़दीर ने ज़ोर मारा; कुछ हमारे परिश्रम, सज्जनता, योग्यता ने मदद की; हम जो कुछ चाहते थे, मिला। हमारा बड़ा मान बढ़ा, राजदरबार में हमें कुर्सी मिलने लगी, बड़े-बड़े राजा और रईस हमारे मित्र हुए, लोग हमें सेठ और बड़े मानने लगे। हमने बड़ी भारी हवेली बनाई, हम करोड़पती हो गए, मोटरगाड़ी खरीदी। हमारी स्त्रियाँ हीरे-मोती से गुड़ियों की तरह सजीं। हमारे बेटे-पोते जज, बैरिस्टर और हाकिम बने। लोग हमें सरकार और हुज़ूर कह कर पुकारने लगे!

एक आदमी दुबला, मैला, नङ्गे पैर, फटे-हाल, वृद्ध, रोगी और दुःखी काँपता हुआ हमारी ड्योढ़ी पर आया। हमारे मग़रूर नौकर ने उसे धक्का देकर निकाल दिया। इज़्ज़तदार के द्वार पर बेइज़्ज़त का क्या काम? अमीर के द्वार पर ग़रीब क्यों आया? जहाँ राजा और रईस दावत उड़ाते हैं, वहाँ ग़रीब कैसे टुकड़े खाएगा?

मगर वह अभागा गया नहीं, बैठ गया। उसने धरना दे दिया, वह बिना मिले जाना नहीं चाहता था। नौकरों ने कहा—हुज़ूर! एक भिखारी सरकार से मिलने की ज़िद कर रहा है। हमारे घमण्डी बेटों ने [illegible] के जोश में कहा—उसे धक्के देकर निकाल दो। [illegible] ने सरौते के समान ज़बान चलाते हुए कहा—[illegible] पुलिस में भेज दो। हमने मेहरबानी से कहा—उसे [illegible] हाज़िर करो। वह आकर सीधा तन कर खड़ा हो [illegible] न सलाम न पैग़ाम, वह खड़ा रहा। हमने कहा—[illegible] कौन हो? उसने जवाब नहीं दिया। हमने कहा—[illegible] चाहते हो? वह न बोला। हमने कहा—बैठो, [illegible] रहा। लड़के हँस पड़े। एक ने कहा—गूँगा है, [illegible] कहा—पागल है, एक ने उसकी तरफ़ मुँह बिचका [illegible] उसने देखा, उसके होंठ हिले, वह और सीधा तन [illegible] खड़ा हुआ। मग़रूरी और निर्भयता उसकी [illegible] थी, वह इस तरह खड़ा था जैसे कोई बड़ा भारी [illegible] किसी अपनी रिआया के घर खड़ा हो। उसे [illegible] कपड़े और मैले वेश की परवा न थी। हमसे [illegible] गुस्ताख़ी सही न गई। हमने कहा—जो कहना है, [illegible] कहो, ज़्यादा हमें फ़ुर्सत नहीं है।

उसने ताने के स्वर में, किन्तु दृढ़ता से कहा—[illegible] आपको हुज़ूर कह कर पुकारूँ? हमने नाराज़ [illegible] कहा—तुम्हारी जो मर्ज़ी हो वही कह कर पुकारो। [illegible] कहा—आपके घर के नौकर-चाकर, ठाट और [illegible] को देखते, मैं ग़रीब अपनी मर्ज़ी के माफ़िक़ आपको [illegible] पुकार सकता हूँ। पर जब आप हुक्म ही देते हैं, [illegible] आपको 'तुम' कह कर और तुम्हारा नाम लेकर [illegible] रना चाहता हूँ।

ऐसी बेअदबी! हमारे सामने! जिसे [illegible]

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

भी कुर्सी देते हैं और हाथ मिलाते हैं। यह कँगला हमारा नाम लेकर पुकारेगा? ताव-पेच खाकर हमने कहा—तुम हो कौन? उसने अकड़ कर ज़रा करारे स्वर में कहा—मैं तुम्हारे बड़े भाई के जमाई का सगा बाप, तुम्हारा सम्बन्धी, तुम्हारे कुल का पूज्य हूँ। उम्र में तुम्हारे पिता से १० वर्ष बड़ा और उनका मित्र तथा रक्षक हूँ। वे मेरे पिता के मुनीम थे, उन्होंने ९ वर्ष उनकी चिलमें भरीं और धोती धोई थी। मेरे पिता ने उनका विवाह किया था और तुमने बहुधा मेरी माता से रोटी का टुकड़ा पाया है। आज भी तुम्हारे बड़े भाई की लड़की मेरे लड़के का जूठन खा रही है। तुम अब इस गद्दी पर गोद आकर ऐसे हो गए?

हमारा मुख पहले लाल और पीछे पीला और फिर सफ़ेद हो गया। हमने बहुत कोशिश की कि उसकी आँख से आँख मिलावें, पर हो न सका, हमारी आँखें नीचे को झुक गईं।

उसने एक बार हमारी हवेली को सिर उठा कर ऊपर-नीचे देखा, नौकरों की चमचमाती वर्दी को, मोटर और गाड़ियों को देखा। फिर एक नज़र अपने फटे वस्त्र पर डाल कर कहा—आज तुम्हारे ये ठाट हैं! आज तुम बड़े आदमी बने। उसका नतीजा यह हुआ कि तुम्हारे नौकरों ने मुझे धक्के दिए! इन फटे कपड़ों की बदौलत!! गाँव से आया था, सुना तुम बड़े आदमी हो गए हो। एक बार तुम्हारा मुख आँख भर कर देखने की इच्छा थी। हम ग़रीब, हमारा सात पुश्त ग़रीब, हमारा ख़ानदान ग़रीब, पर अनजान आदमी के कुत्ते को भी रूखी-सूखी रोटियाँ और ठण्ढा पानी आधी रात देश में हमारे घर हाज़िर रहता है। क्या तुम सदा से ऐसे थे? तुम्हारे बाप और दादे भी क्या ऐसे थे? मैंने तुम्हारे बाप को देखा है, उनकी ज़िन्दगी मेरे-जैसे कपड़े पहनते बीत गई। पर ये नौकर उन्हें भी धक्के मारते? ओफ़! कैसा बढ़िया बड़प्पन है—कैसी बड़ी आबरू है। तुम कैसे बड़े आदमी हो! यह कह कर वह खिलखिला कर पागल की तरह हँस पड़ा। हमसे न रहा गया। हमने खड़े होकर कहा—आइए, पधारिए, माफ़ कीजिए, हमने आपको पहचाना नहीं। उसने कहा, तुमने नहीं देखा कि यह ग़रीब आदमी है, बूढ़ आदमी है और किसी मतलब से हमारे पास आया है। तुम ग़रीबों की और बूढ़ों की इज़्ज़त नहीं कर सकते? यह जान कर भी कि तुम्हारे बाप भी ग़रीब और बूढ़े थे! तुम आँख के अन्धे, सिर्फ़ अपना महल, धन और टीम-टाम देखते हो?

हाय! मग़रूर हाड़-मांस के पुतले! तुझ पर धिक्कार, तेरी धन-दौलत पर धिक्कार! हज़ारों-लाखों रोते हुओं में तू हँसता है, हज़ारों भूख से छटपटाते हुओं में तू पेट भर माल उड़ाता है, हज़ारों नङ्गों में, जो चिथड़ों से लाज ढक रहे हैं, तू रेशम और तनज़ेब पहनता है। तुझे इन पर तरस नहीं आता, दया नहीं आती। तुझे अपने ऊपर शर्म भी नहीं आती? ओफ़! पत्थर के हृदय-हीन पुतले, धिक्कार!! धिक्कार!!!

अगर मैं अपने शरीर को चीर कर उसका ख़ून निकालूँ और तेरे शरीर के ख़ून में उसे मिला दूँ, तब तुझमें और मुझमें अन्तर क्या है? यह तुझे मालूम हो, तेरी पुत्री और मेरे पुत्र ने आत्मा को, अपने रक्त-मांस को मिला कर एक प्यारा पवित्र बच्चा बनाया है। क्या तू उसे देख कर लज्जित होगा?

हमारे सिर में चक्कर आ रहा था। हमने देखा, यह मैले वेश में देवदूत खड़ा है। यह महान् पुरुष परमेश्वर का अवतार है। उसका वृद्ध-शरीर मैले और फटे वस्त्रों में ऐसा सज रहा था, जैसे बादलों में चन्द्रमा। हमने कहा—पूज्यवर! मान्यवर विराजिए, इस घर को अपने चरणों से पवित्र कीजिए। इस दास का जन्म सफल कीजिए, अपने चरणों की धूल इस घमण्डी सिर पर दीजिए।

उसने कुछ न सुना। वह कह रहा था, जगत् में ऐसा कौन सा पशु है, जो अपने लिए सब कुछ न करता हो। पर औरों के लिए त्यागने वाले महात्मा कहाँ हैं? नदी बह रही है, दुनिया उसका मीठा जल पीकर प्यास बुझाती है, यही उसकी शोभा है। वृक्ष फलते हैं, लोग उनकी छाया में बैठते हैं, डाली तोड़ते हैं, पत्थर मार कर फल गिराते हैं; पर वृक्ष इनके बदले मीठे फल देते हैं। यह उनका बड़प्पन है। लकड़ी जल रही है, पर लोगों की रसोई बन रही है। दिया जल रहा है, पर लोगों के घर में उजाला हो रहा है। ये छोटी-छोटी वस्तुएँ—परमेश्वर के राज्य में अपना आपा खोकर, जल-मर कर औरों के काम में आती हैं। यह उनका बड़प्पन

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

है, पर तेरा बड़प्पन क्या है ? तूने अपने लिए महल और सवारियाँ बनाई हैं, तेरे लाखों देश-भाइयों को जन्म भर पैर में जूते मुअस्सर नहीं होते। वे झोपड़ों में जन्म गुज़ारते हैं। तू छत्तीस प्रकार के व्यञ्जन नित्य खाता है और तेरे वे भाई केवल सूखे टुकड़ों पर सन्तोष करते हैं। तू और तेरी सम्पदा किसी के मतलब की नहीं ! तेरे द्वार पर आकर तेरे भाई, तेरे मान्य, तेरे पूज्य व्यक्ति धक्के खाते हैं। मूर्ख तू अपने बड़प्पन पर फिर भी अभिमान करता है ? अभागे ! बदनसीब !!

वह देख ! तेरी चिता की लकड़ियाँ सूख रही हैं—वह देख ! मौत तेरी घात में है, तू अपने पत्थरों और सोने को देख-देख कर हँसता रह और वह अचानक तेरा गला आ दबाएगी। वह पहले तेरी आँखें छीन लेगी और तू इनमें से किसी को न देख सकेगा, जिन्हें देख कर तू इतरा रहा है। फिर वह तेरे कान छीन लेगी और तब अपने प्यारे बच्चों की आवाज़ भी नहीं सुन सकेगा। इसके बाद, धीरे-धीरे तेरी नस-नस में से प्राण खींचे जावेंगे। सब ठाट यहीं रहेंगे। तेरे प्राण यम-पाश में बँध कर महाप्रभु के चरणों में दण्ड की आज्ञा सुनने जावेंगे। और यह अधम शरीर, जिसमें सदा घृणित वस्तु भरी रहती है। इसे तेरे प्यारे, जिन पर तू भरोसा करता है, फूँक कर क्षार कर आवेंगे !!!

महाप्रभु तेरी आत्मा को कर्म-फल देंगे। सम्भव है, तुझे सर्प की योनि मिले और किसी अँधेरे तहख़ाने की गन्दी और सड़ी जगह में, किसी पुराने ख़ज़ाने की रक्षा करने का काम मिले। क्योंकि तू यहाँ भी ख़ज़ाने से प्रेम करता है। और चूँकि तू अपने भाइयों को नहीं देखता, सम्भव है तुझे अँधेरी सुरङ्गों का कोई अन्धा कीड़ा बना दिया जाय।

हमारा होश ठीक न था, हमने कहा—हे स्वामी ! क्षमा करो। हे प्रभु ! हे ज्ञानी ! सब समझ गया ! आँखें खुल गईं। रक्षा करो, रक्षा करो, हे महात्मन् ! मार्ग दिखाओ। मैं अधम-तुच्छ आदमी कदापि इस धन-दौलत का स्वामी नहीं। हमने धरती में गिर कर उस देव-पुरुष के चरण पकड़ लिए।

वह पुरुष शान्त, अचल, खड़ा कुछ देर देखता रहा ! फिर उसने अपने होठ हिलाए और चला गया। हमें कर्त्तव्य की रेखा दीख गई है। हमने प्रतिज्ञा की कि जब तक हमारा एक भाई भी दरिद्र और मूर्ख है, हम अपने को बड़ा आदमी नहीं समझेंगे। हम तुच्छातितुच्छ हैं। हमारा धन-दौलत, शरीर-प्राण—सब हमारी जाति के भाइयों का है। सर्व-शक्तिमान ईश्वर के सम्मुख हम यह प्रतिज्ञा करते हैं !!

* * *

विधवा

उस दिन एक स्त्री की अन्त्येष्टि में शरीक होने का अवसर मिला। मरने वाली की आयु ७५ वर्ष से भी अधिक थी। तीन मास से यह वृद्धा बीमार थी। एक बार यह मर गई थी। रात भर मुर्दा पड़ी रही। प्रातःकाल—जब कफ़न-काठी आ गया तब स्नान करते के समय श्वास चलने लगा, उसके बाद वह नौ दिन तक जीवित रही।

यह नौ दिन उसने कैसे काटे, यह मैंने बहुत अच्छी तरह से देखा। मैं प्रायः नित्य उसे देखने जाता था। उस दिन थोड़ी चेष्टा से उसे चेतना हुई। मैंने औषधि पीने को कहा। उसने हाथ जोड़ कर जवाब दिया, मेरा धर्म मत बिगाड़ो, मैं राम जी के यहाँ जा रही हूँ। एक दो दिन में चोला छूट जायगा। मैंने सबको दुख दिया, अब सब दुख दूर होंगे।

वृद्धा से मेरा सम्बन्ध था। अतएव मैं उसे खूब जानता था। यह अभागिनी अपने ब्याह के २॥ वर्ष बाद विधवा हुई। उस समय इसकी उम्र १५-१६ वर्ष की रही होगी। विधवा होते समय चार मास का गर्भ था। वह गर्भ पूरा उतरा, कन्या हुई। वह कन्या अब भी जीवित है। अन्तिम समय उसे अपनी पुत्री की बहुत लालसा थी। लड़की बुलाई गई। वह ४५ वर्ष के लगभग की है। उसे पाकर वृद्धा ने फिर प्राण त्यागे।

विधवा होने के बाद यह अभागिनी अपने भाई के घर रही। उसके बाद भाई के पुत्र के। उसके बाद पर भाई के छोटे पुत्र के। सब जगह चौका-बासन करना, घर झाड़ना, बच्चों के मल-मूत्र उठाना; प्रत्येक की आँख में बचे हुए जूठे टुकड़े खाना, या बासी, सड़ा-गला खाना; सबकी गाली और धमकी सहना; बच्चों के ख़राब तङ्ग की जाना, फिर भी मधुर वचन, अकपट

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

और शान्ति तथा सहनशीलता बनाए रखना—यह इसका जीवन था !

इस तरह इस तपस्विनी ने अपने ५० वर्ष धीरे-धीरे काट दिए। वह प्रथम जवान हुई, फिर प्रौढ़ा और फिर वृद्धा। सब तूफ़ान, सब तरङ्ग, जीवन के सब उतार-चढ़ाव इस वीर-नारी ने वीरतापूर्वक काट फेंके। यह भाग्यहीन, रूपहीन, सौभाग्यहीन, सुख और आनन्दहीन स्त्री अपने मैले वेश और महा अपवित्र जीवन में पवित्र बनी रही, शैतान को उसने इस कलिकाल में परास्त किया !

तन्दुरुस्त अवस्था में मैं उसे प्रायः देखता था। सोचता था—ओफ़ ! कैसा कुरूप मुख और कैसा मधुर भाषण है ! कैसा उदार-प्रेम और क्षमा से परिपूर्ण हृदय है ! मैं बहुधा अपनी पत्नी से कहता था—अपना थोड़ा रूप इस बुढ़िया को दे दो और बदले में इसकी मधुर वाणी थोड़ी सी अपने लिए ले लो। मरते वक़्त उस पर फूल बिछाए गए। मनों घृत-चन्दन और सुगन्धित द्रव्य के साथ वह जलाई गई।

शायद इन पचास वर्षों में आज उसे नई चूनरी और नए वस्त्र पहनने को मिले। वह ५० वर्ष तपस्या करके—फिर रङ्गीन चुनरी पहन कर—सुहागिन के वेश में परलोक को गई !

क्या परलोक कोई स्थान है ? वहाँ क्या उसका पति उसके लिए बैठा मिलेगा ? क्या इस दुःख, तपस्या और कठिन जीवन का उसे बदला मिलेगा ? उसे स्वर्ग प्राप्त होगा, उसके सञ्चित पुण्य का मूल्य मिलेगा ? मुझे इसी वृद्धा की बात का केवल विचार नहीं ! मैं कहता हूँ—ऐसी हज़ारों-लाखों अबलाएँ—बिना सींग की गाएँ, धर्म और शान्ति के नाम पर जी रही हैं। और हम मर्द लोग उन्हें इस नारकीय, मैले और अपमानित जीवन में ज़बरदस्ती ढकेल कर, उन पर जीवन भर ज़ुल्म करते हैं—फिर भी नहीं लजाते !

'विधवा' एक पवित्र नाम है। 'विधवा' शब्द हिन्दू-धर्म का भूषण है। हिन्दू-धर्म को छोड़ कर विधवा के लिए विशुद्ध जीवन जगत् की किसी जाति में नहीं। परन्तु यह पवित्र जीवन बल और ज़ोर-ज़ुल्म से नहीं बनाया जा सकता। हम यह जानते और कहते हैं कि हम मर्द लोग सर्व-श्रेष्ठ हैं—रूप, विद्या, ज्ञान, अधिकार में हम स्त्रियों से बहुत श्रेष्ठ हैं। स्त्रियाँ अधम हैं, मूर्ख हैं। सदैव दबा कर उन्हें रखना हमारा धर्म है—वे स्वतन्त्र होने के योग्य नहीं।

परन्तु हम इतना कहते हैं, फिर भी हम अपनी इन्द्रियों के दास हैं। काम, क्रोध, लोभ और मोह में हम डूबे हुए हैं। हमारी स्त्री के मरते ही श्मशान-घाट में सगाई और तेरही के दिन लग्न चढ़ जाती है !

शीघ्र ही हम नई दुलहिन को लेकर, सहधर्मिणी को, जिसे वेद और अग्नि की साक्षी देकर जीवन की सङ्गिनी बनाया था, भूल जाते हैं। हम इन्द्रिय-वासना में डूबते हैं। और उधर स्वर्ग से आत्मा रोती है। हम ऐसे नीच, ऐसे स्वार्थी, ऐसे पशु, ऐसे निर्दयी और कामान्ध मर्द हैं !

मर्द कौन है ? जो पृथ्वी भर की आपदाओं से स्त्री-जाति को अभयदान देता है। उनकी रक्षा करता है। मर्द कौन है ? जो पृथ्वी भर में स्त्रियों को सर्वाधिक पवित्र, पूज्य और श्रेष्ठ समझ कर उन्हें ऐसे यत्न से रखता है, जैसे माली धूप से फूल को रखते हैं !

स्त्रियाँ लता हैं और मर्द वृक्ष हैं—वृक्ष के सहारे लता खड़ी होती है। स्त्रियाँ—दया, प्रेम और कोमलता की मूर्त्ति हैं, और पुरुष ज्ञान और साहस की। पुरुष का कर्तव्य है कि वह स्त्री को साथ लेकर धर्म, अर्थ और काम—इन त्रिवर्ग की प्राप्ति करे !

परन्तु ऐसा दीखता नहीं। हम जहाँ बेहया बन कर दूसरी, तीसरी, चौथी शादी बुढ़ापे तक किए जाते हैं वहाँ निर्लज्ज बन कर छोटी-छोटी बलिका-विधवाओं को भी जन्म भर पवित्र जीवन से रहने का उपदेश देते हैं !!

अभागे मनुष्यो ! पवित्र जीवन किसे कहते हैं ? क्या तुम समझते हो ? क्या यह उचित नहीं है कि तुम जो अपने को सर्व-श्रेष्ठ समझते हो, स्वयं अपने जीवन को पवित्र बनाओ, जिन्हें देख कर स्त्रियाँ तुम्हारी नक़ल करें। क्योंकि वे मूर्ख, निर्बल और पतित हैं।

क्या यह भी सम्भव है कि तुम ज्ञानी होने पर भी इन्द्रियों के दास और पापात्मा बने रहो और स्त्रियाँ अज्ञानी बन कर भी पवित्र और धर्म को समझने वाली बनी रहें ? और यह भी क्या सम्भव है कि तुम पापी और व्यभिचारी बन कर भी श्रेष्ठ बने रहो और स्त्रियाँ धर्मात्मा और पवित्र बन कर भी, अधर्मी और नीच बनी रहें !!

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

क्या तुमने कोई ऐसा मर्द भी देखा है, जो ५० वर्ष तक इतने कष्ट, इतने दुख, इतने अपमान सह कर भी मधुर-भाषी, प्रेममय और क्षमावान् तथा इन्द्रिय और मन को मन-वचन-कर्म से जीतने वाला बना रहा हो। यदि नहीं तो धिक्कार है तुम्हारी श्रेष्ठता पर, मर्दपने पर और बड़प्पन की डींग हाँकने पर !!

हे मनुष्यो ! तुम अपने को मर्द कहते हो ; मर्दपने की लाज रखने की चेष्टा करो ! तुम अपने को सर्व-श्रेष्ठ समझते हो—श्रेष्ठता की प्राप्ति करो। तुम सबके स्वामी हो, सब तुम्हारे अधीन हैं। तुम पवित्र बनो, त्यागी बनो, इन्द्रिय-विजयी बनो, मनस्वी बनो, तपस्वी बनो !

स्त्रियाँ देवी कहाती हैं। तुम्हें देव-पद मिलेगा। पहले भी संसार ने तुम्हें देवता कहा है। तुम्हारी स्त्रियाँ अब भी देवी हैं—पर तुम देवता नहीं हो ! शोक है ! आश्चर्य है !! अफ़सोस है !!!

* * *

वृद्ध और बाल

यह बात हम जान गए हैं कि जाति के बूढ़े लोग उन्नति की दौड़ में हमारे साथ नहीं दौड़ सकते। वे अविद्या और रूढ़ि के अँधेरे गढ़े में पड़े हुए, अपने दुखदाई दिन काट रहे हैं ! यह अवश्य बड़े दुर्भाग्य की बात है, परन्तु इससे अधिक दुर्भाग्य की बात यह है कि वे मोह के कारण अपने बच्चों को भी उसी गढ़े में डाले हुए हैं। हमारी यह इच्छा है कि उनसे उनके बच्चे ज़बरदस्ती छीन लिए जायँ। उन्हें हम अपनी पीठ पर लाद कर उन्नति के मैदान में दौड़ें, उन्हें विद्या और उन्नति का मार्ग दिखा दें। हम यह समझें कि ये बच्चे हमारे बच्चे हैं, हमारी आत्मा के अंश हैं, हमारी आबरू के मोती हैं और हमारी तक़दीर के अमिट लेख हैं !

ये बच्चे इस्पात के खम्भे हैं, ये जितने मज़बूत और बढ़िया होंगे उतना ही मज़बूत और बढ़िया महल हम आगे चल कर बना सकेंगे। हम जो कुछ हैं, गए-बीते हैं—अब हम कुछ नहीं बन सकते—परन्तु इन बच्चों को बना सकते हैं। हमने जो भूल की है, जो तजुर्बे किए हैं, संसार में जो धक्के और ठोकरें खाई हैं, उनसे इन बच्चों को सावधान कर देना हमारा पवित्र धर्म है।

जो अपनी आँखों के सामने अपने प्यारे बच्चों की क़ुर्बानी करते हैं, जो उन्हें विद्या और आनन्द की गोद से उठा कर मूर्खता और दुःख में ढकेलते हैं, वे क्या बच्चों के पिता कहे जा सकते हैं ? कदापि नहीं !!

उन बच्चों के सच्चे पिता वे हैं—जो उन्हें प्यार करें, उन पर तरस खाकर, उनकी धूल पोंछ कर, उनके सर पर विद्या का मुकुट पहनावें; उन्हें योग्य, वीर, धर्मात्मा और बड़े आदमी बनावें; उनके ऊपर अपने तन, मन, धन को न्योछावर कर दें। निश्चय वे ही उन बच्चों के पिता हैं ! जन्म देने वाले माता-पिता तो केवल पाप के भागी हैं, जिन्होंने सिर्फ़ मोह या इन्द्रिय-वासना के वशीभूत होकर जीवात्मा को मनुष्य के चोले में क़ैद किया और उन्हें कीड़े-मकोड़ों और कौवे-कुत्तों की दर का बना छोड़ दिया, कि वे बड़ी कठिनाई और बेइज़्ज़ती से किसी तरह पापी पेट को भर सकें !

क्या आज मारवाड़ के वंश में ऐसे पुरुष पैदा हुए हैं, जो जाति के तमाम ग़रीब बच्चों के धर्म के माता-पिता बन सकें ; जो उनके दुःख पर दया करें; जो उन्हें विद्या का अमृत पिलावें और जो अपने गाढ़े पसीने की कमाई उन पर न्योछावर करें !!

ऐसे पुरुष, ऐसे देवता पुरुष !! क्या कोई है ? वे अपना नाम बोलें ! वे आगे बढ़ें !! आज मारवाड़ के लाखों बच्चे आँसू-भरी आँखों से, आशा भरे हृदय से उनकी ओर देख रहे हैं। क्या कोई वीर है, जो इन्हें दुःख से बचावे ?

* * *

स्त्रियाँ

स्त्रियाँ इस संसार की सबसे बड़ी विभूति हैं ! पुरुष अनेकों प्रकार की चिन्ताओं और परिश्रम से चकनाचूर रहते हैं। यदि जगत् में स्त्रियाँ न होतीं, तो पुरुष कभी इतना कष्ट सह कर जीवित न रहते। पुरुष हिम्मत और दिलेरी का पुतला है और स्त्री दया और प्रेम की पुतली है !

जैसे शरीर में मस्तिष्क और हृदय—ये दो यन्त्र हैं जिनसे सब ज़िन्दा रहते हैं, उसी प्रकार जाति में स्त्री हृदय है और पुरुष मस्तिष्क है। जिस आदमी में

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

पञ्चायत

फ़रियादी—पञ्चा सू म्हारी आ अर्ज है कि म्हें १४ मयनाँ तो अजमेर में रह्यो, ने ७ मयनाँ सुमई रह्यो, ने फेर म्हारी लुगाई रे टाबर की कर हो गयो ! हमें आप पञ्च-सरदार इनरो फेसलो करावें।

(पञ्चायत में शोर)—सुनो शा ! आँ काँई बात !! म्हारी सुणों शा ! खामोश ! हाका मत करो !! सुनो शा ! सुणो शा·····

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

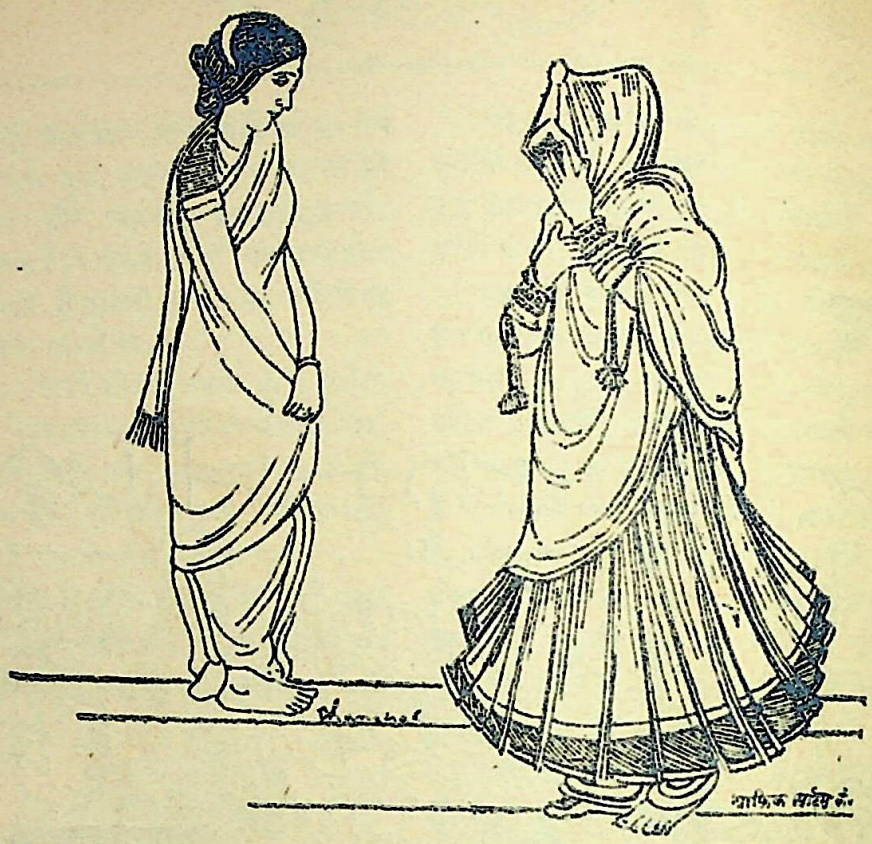

पर्दे की कुप्रथा को तिलाञ्जलि देकर !

पर्दे के पाप से लदी हुई !!!

सेठ-दम्पति

रेल से उतर कर घर की ओर

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

अधकचरे !!

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

अन्तस्तल को गुदगुदाने वाली ! हृदय की कली खिलाने वाली !!

अपूर्व ! अनोखी !! हास्य-रसपूर्ण पुस्तक !!!

[ले० श्री० प्रवासीलाल जी वर्मा, भूतपूर्व सम्पादक 'धर्माभ्युदय']

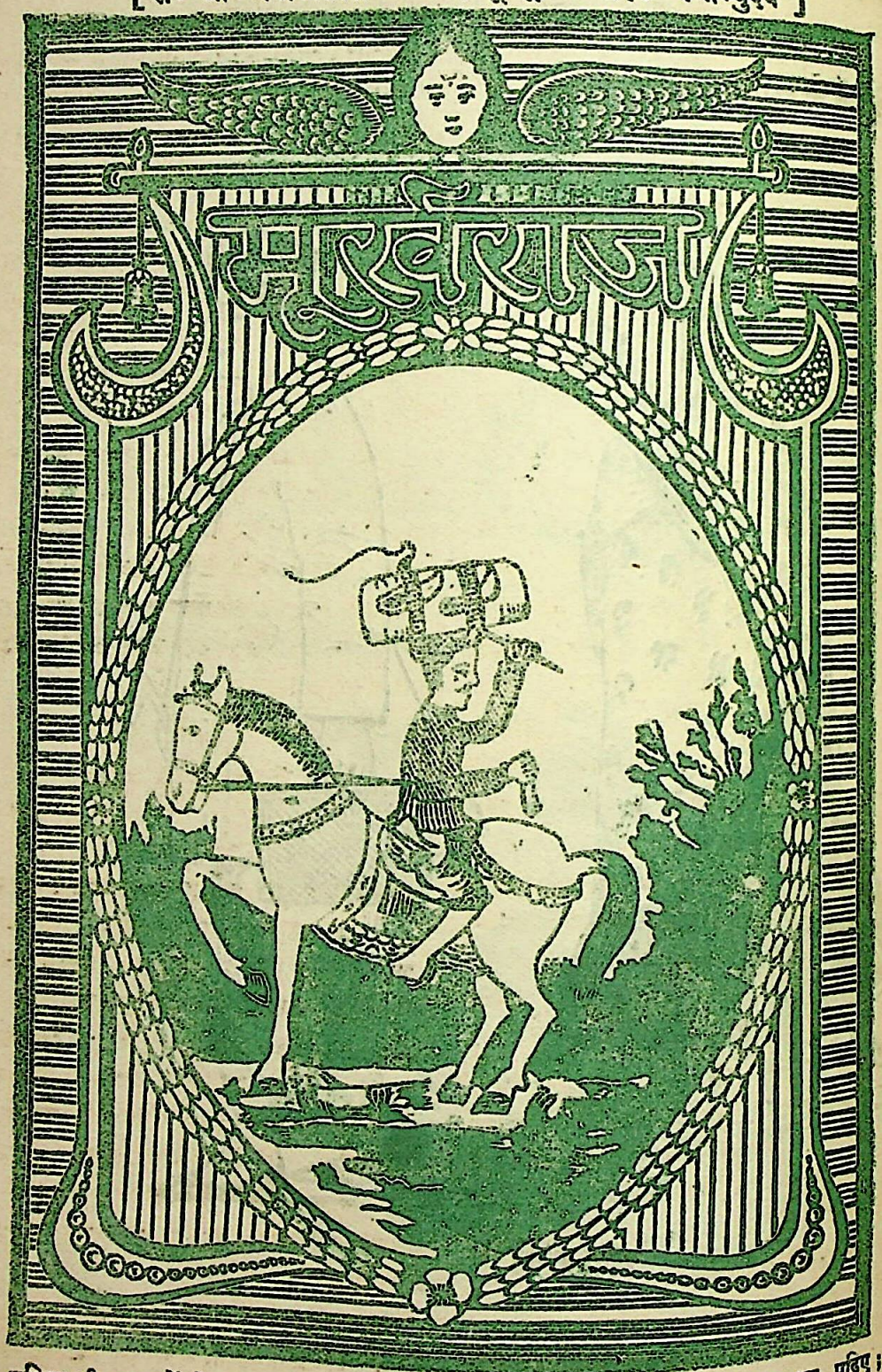

दुनिया की झन्झटों से जब कभी आपका जी ऊब जाय, आप इस पुस्तक को उठा कर पढ़िए; मुँह की सुर्दनी दूर हो जायगी। हास्य की अनोखी छटा छा जायगी। पुस्तक को पूरी किए बिना आप कभी न छोड़ेंगे यह हमारा दावा है। पुस्तक की छपाई और काग़ज़ के बारे में प्रशंसा करना व्यर्थ है। मूल्य सिर्फ़ २)

व्यवस्थापिका 'चाँद' कार्यालय, चन्द्रलोक, इलाहाबाद

CC-0. Nanaji Mata Collection. Digitized by eGangotri

मस्तिष्क कमज़ोर होता है, वह पागल होता है। और जिस आदमी का दिल कमज़ोर होता है, वह आदमी मुर्दा होता है। इसी प्रकार जिस जाति की स्त्रियाँ अयोग्य होती हैं, वह मुर्दा और जिसके पुरुष अयोग्य होते हैं वह पागल है।

पुरुष चाहे जैसा वीर हो—परन्तु स्त्रियों के आगे उसकी वीरता हार खाती है। जहाँ शास्त्रों में स्त्रियों को अबला कहा है, वहाँ स्त्रियों को चण्डिका-रूप भी दिया गया है। वास्तव में स्त्रियाँ जल के समान हैं—जो शान्त रहने पर अत्यन्त शीतल वृक्षों को तृप्ति देने वाली, मधुर और प्रिय होती हैं। पर जब जल में तूफ़ान आता है, तब ऐसा भयङ्कर हो जाता है कि बड़े-बड़े भारी जहाज़ भी टुकड़े-टुकड़े हो जाते हैं।

प्राचीन धर्म-शास्त्रों में स्त्रियों का बड़ा सम्मान किया गया है, स्त्रियों को देवी कहा गया है। उन्हें पुरुषों से श्रेष्ठ, पूज्य और सम्माननीय माना गया है। 'सीताराम' 'राधा-कृष्ण' 'गौरीशङ्कर'—आदि वाक्यों में देवताओं से प्रथम देवी का नाम है। मनु कहते हैं कि जहाँ स्त्रियों की पूजा होती है, वहाँ देवता वास करते हैं और जहाँ स्त्रियाँ दुःखी रहती हैं, वह वंश नष्ट हो जाता है!

स्त्रियाँ हमारी सन्तानों की माताएँ हैं, उन्हें बनाने की मशीनें हैं, वे ही बच्चों की गुरु हैं। यदि माताएँ योग्य न होंगी तो बच्चे योग्य नहीं हो सकते। बच्चे यदि अयोग्य हुए तो कुल, गोत्र, वंश-मर्यादा सब नष्ट होगी।

क्या हम कभी विचार करते हैं कि हमारी स्त्रियाँ कैसी हैं? और हमारे ख़ानदान के लिए कैसे बच्चे पैदा करती हैं? क्या यह सम्भव है कि हमारी स्त्रियाँ मूर्खा हों और हमारे पुत्र विद्वान् हो जायँ? हमारी स्त्रियाँ मैली हों और बच्चे स्वच्छ रहना सीखें? हमारी स्त्रियाँ झूठ बोला करें और बच्चे सत्यवादी बनें?

बच्चों के हृदय में नाना प्रकार के भूत-प्रेत के कुसंस्कार, रोने और मैला रहने की आदतें केवल अयोग्य माताओं के फल-स्वरूप हैं। अगर हम अपने बच्चों को ऐसा बनाना चाहते हैं कि वे अपनी उम्र में अपनी योग्यता से हमारे कुल और वंश को ऊँचा उठावें तो हमारा सर्व-प्रथम कार्य है कि हम स्त्रियों को योग्य बनावें—उन्हें पैर की जूती न समझें!

* * *

(२६९ पृष्ठ का शेषांश)

से "भरत-भेंट" किया करते हैं और जिसको वे अपनी प्रसादी के लिए अङ्गीकार कर लेते हैं, वह जीते ही स्वर्ग चली जाती है।

उस रोज़ उन्होंने रामकी को ही अङ्गीकार किया था और इसी से रमादास जी और रामकी में तकरार हुई और तब से उनका मिलना बन्द हो गया।

आजकल रामकी स्वतन्त्र है। साधों की ख़ूब सेवा किया करती है और दिल खोल कर ख़र्च करती है। अब वह पहले वाली रामकी नहीं रही। अब तो जिसकी ज़बान पर सुनो रामकी ही का नाम सुनाई देता है। कई लोग तो रमादास जी और रामकी के प्रथम मिलन के वार्तालाप की कविता भी गाते सुने जाते हैं!

बने फिरें राम-सनेही।
सरासर काम-सनेही॥
चलावें निशि भर चरखा।
माली जाट कुम्हार मोड बन, खूब शहद को परखा॥

* * *

नीच और ऊँच

मकान की मरम्मत करानी थी। एक राज और एक मज़दूर बुला कर काम शुरू कर दिया। राज साफ़-सुथरे कपड़े पहने हुए था, पर मज़दूर बड़ा गन्दा था। उसके वस्त्र फटे तो न थे, पर बड़े मैले और दुर्गन्धित थे! वह काम करने में भी सुस्त और बोल-चाल में बेहूदा था। राज की बोल-चाल सुसभ्य और उत्तम थी, वह नम्रता से बोलता तो था—पर उसकी नम्रता में दब्बूपन का भाव न था। थोड़ी-थोड़ी देर में वह मज़दूर पर बिगड़ता था, और जल्दी काम करने की ताकीद करता था। मज़दूर उसकी फटकार खाकर कुछ देर ठीक काम करता, पर फिर जी चुराता।

इस दृश्य को हम कुछ देर तक देखते रहे। वास्तव में यह कोई ऐसी घटना न थी कि जिस पर ध्यान दिया जाय। ऐसी घटनाएँ तो प्रायः होती ही हैं। परन्तु जब

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

कई बार फटकार खाने पर भी मज़दूर अपनी मूर्खता से बाज़ न आया, तब हमने नीचे उतर कर उससे कुछ कहना चाहा। पास जाकर देखा तो उसके कण्ठ में जनेऊ। हमने उससे पूछा—तू कौन ज़ात है? उसने कहा कि ब्राह्मण हूँ। सुन कर दिल पर चोट लगी। राज—ज़ात का अगरिया चमार था।

हमें एक बार ही चिन्ता के सागर में डूब जाना पड़ा। हमारी चिन्ता यह थी कि यह चमार इस ब्राह्मण पर कैसी आज्ञा चला रहा है? और इसे बोलने की ज़रा भी गुञ्जाइश नहीं। यह ब्राह्मण और यह चमार! पर वास्तव में इस वक़्त ऊँच कौन है? और नीच कौन है?

यह ऊँच और नीच का सवाल साधारण सवाल नहीं है। सभी जानते हैं कि गिरी से गिरी दशा का ब्राह्मण भी—चाहे वह कोढ़ी, पापी, मूर्ख, शराबी—कैसा ही क्यों न हो, अपने ब्राह्मणपने के ऊँचेपन को नहीं भूलता। हमें याद है, एक बार एक ब्राह्मण हमारे पास संस्कृत पढ़ने आया। आते वक़्त उसने दोनों हाथ फैला-कर आशीर्वाद दिया। फिर ज़मीन पर पढ़ने बैठ गया। यह देख कर हमें हँसी आ गई। हमने कहा—तुमने भाई! आशीर्वाद किस नाते से दिया, गुरु को आशी-र्वाद देना किस शास्त्र की शिक्षा है? ब्राह्मण ने कुछ लज्जित होकर कहा—महाराज! मैं मूर्ख हूँ, इसलिए चार अक्षर सीखने आया हूँ—पर ब्राह्मण तो हूँ ही—आप क्षत्रिय हैं, इसीसे आशीर्वाद दिया। अपराध हो तो क्षमा करें। हमने कहा—ब्राह्मण वही हैं, जो विद्वान्, त्यागी और सदाचारी हैं। तुममें ब्राह्मणत्व की कमी है—पर यदि तुम अपने जन्म के ब्राह्मणत्व को काफ़ी समझते हो, तो पढ़ने का ध्यान छोड़ दो। पढ़ने में ही क्या रक्खा है?

कुछ विवाद के बाद उसने क्षमा माँगी और प्रणाम किया। यह एक ऐसी घटना है, जो प्रायः हज़ारों मनुष्यों के सामने आती रहती है। इस विषय में सिर्फ़ यही बात नहीं है कि ब्राह्मण अपने को उच्च और दूसरों को नीच समझे। अगर ऐसा ही हो तो यह स्वाभाविक बात है; परन्तु मज़ेदार बात तो यही है कि अन्य जाति के लोग भी, चाहे जितने योग्य हों, अपने को महामूर्ख ब्राह्मण से नीचा ही समझेंगे। हमारे यहाँ एक चपरासी ब्राह्मण था, रसोइया ब्राह्मण रहा है। उस दिन मज़दूर ब्राह्मण था, जो चमार की अधीनता में काम कर रहा था। परन्तु इन सब में हमने ब्राह्मणपने का झूठा घमण्ड पाया। आनन्द की बात होती कि यह घमण्ड वीरतायुक्त होता और ये लोग उन्नत होकर नीच मज़दूरी से घृणा करते, परन्तु यह बात न थी। कमीने काम करने में जहाँ उन्हें लज्जा न थी, वहाँ ब्राह्मण कहाने में भी लज्जा न थी। इस यहाँ यह प्रश्न उठता है कि क्या यह नीच-ऊँच का झगड़ा अभी इसी तरह चलता रहेगा?

क्या यूरोप में भी ऐसा ही है? एक बार जब बम्बई के गवर्नर साहब अपना समय पूरा होने पर विलायत जाने लगे, तब शहर के लोगों ने उनकी विदाई की ख़ुशी में जलसा किया। उस समय उन्होंने कहा था कि मैं इतने अच्छे जूते बनाना जानता हूँ कि अगर मैं अब विलायत में जाकर यही काम करूँ तो एक जोड़ा जूता ३६ रु० से कम में न बिकेगा। लॉयड जॉर्ज, जो गत यूरोपियन युद्ध में अङ्गरेज़ी राज्य के प्रधान मन्त्री थे, एक चमार के लड़के हैं। पर चमार होने ही से क्या उनकी तरफ़ कोई निकम्मी दृष्टि डालता है? या उनका तिरस्कार कर सकता है? भारतवर्ष में ही क्या रैदास, कबीर और सदन नीची जाति में नहीं पैदा हुए? क्या आज लाखों नर-नारी इन धर्मात्माओं के चरणों में सिर नहीं झुकाते? कैसे खेद और अनुताप की बात है कि हम मूर्खतावश चुपचाप झुके चले जाते हैं। अधिकार और शक्ति दो बड़ी चीज़ें हैं। जो मनुष्य अपने अधिकार और शक्ति को जान जाते हैं, और उनकी रक्षा करना अपने जीवन का मुख्य कर्म समझते हैं—वे ज़रूरत पड़ने पर सर्वनाश होने पर भी अपने अधिकार की रक्षा करते हैं। राजपूतों के इतिहास इस बात के साक्षी हैं, मुसलमानों की तूफ़ानी शक्ति ने राजपूतों को कुचल डालने में कुछ कसर नहीं की, पर राजपूतों ने प्राण देकर, अधिकार की रक्षा की थी। इसमें सन्देह नहीं कि हिन्दू-समाज की दशा बड़ी शोचनीय है। सिर्फ़ ब्राह्मण ही इस बात के अपराधी नहीं हैं कि उन्होंने अन्य जातियों को अपने नीचे बनाए रखने के लिए अनर्थ किया है। हम तो कहेंगे कि प्रत्येक ऊँची जाति नीची जाति को दबाए रहती है। हम उच्च कही जाने वाली अनेक जातियों के व्यक्तियों से पूछना चाहते हैं कि क्या कुत्ते के पिल्ले हमारे घरों में गद्दों और कालीनों पर नहीं खेलते?

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

क्या हम नीच जाति के मनुष्यों को नीचे दबा कर अपना ही नाश नहीं कर रहे हैं? जब हम अपने से नीच-जाति के आदमियों को बराबरी का दर्जा न देंगे, तो हमसे ऊँची जाति के आदमी हमें कैसे बराबरी का दर्जा देंगे?

हम इस बात से घोर घृणा करते हैं कि केवल जातीय अभिमान के कारण कोई किसी को ऊँचा-नीचा समझे। ऊँचाई-निचाई विद्या और योग्यता की है। विद्वान् और सदाचारी जन ही सदा उच्च समझे जाने चाहिए, चाहे वे भङ्गी ही क्यों न हों। ऐसे पुरुषों की सदा से पूजा हुई है और होगी। किसी की सामर्थ्य नहीं, जो रोक सके। वह समय दूर नहीं है, जब कोई ब्राह्मण, केवल जनेऊ गले में डाल कर और अपने को शर्मा बता कर, आदर नहीं पा सकेगा। उसी प्रकार कोई आदमी घमण्ड से अपने को क्षत्रिय या वैश्य-कुल का धनी कह कर अकड़े और गुण उसके निकृष्ट हों, तो यह सम्भव नहीं कि वह क्षत्रिय या वैश्य कहला सके।

जन्म का माहात्म्य अब बद गया, अब गुणों का राज्य है। वीरता, साहस, हिम्मत और विद्या की हवा बह रही है। हमें चाहिए कि ऊँच-नीच की पुरानी परीक्षा करना छोड़ दें। न तो हमें अपने को उच्च कह कर नीच-जाति के भाइयों के सामने अकड़ना चाहिए और न हमें मूर्ख और पतित ब्राह्मणों के सामने सिर झुकाना चाहिए। "अविद्यो वा सविद्यो वा ब्राह्मणो मामकी तनूम्।"—यह एक प्रसिद्ध वाक्य है। इसका मतलब यह है कि ब्राह्मण चाहे मूर्ख हो या विद्वान् वह परमेश्वर का अंश है। हम यह नहीं मान सकते कि जो रसोईगीरी करके पेट पालते फिरते हैं, जो चमारों के अधीन रह कर गारा-चूना उठाते हैं, जो ग़ुलामगिरी की नौकरी-चाकरी करते हैं, वे बुद्धू ब्राह्मण हैं। वे ब्राह्मण नहीं, देवता नहीं, पूज्य नहीं, परमेश्वर के अंश भी नहीं। वे शूद्र हैं, सेवक हैं! ब्राह्मण वे हैं, जो धर्मात्मा, जितेन्द्रिय, सत्यवादी, त्यागी और धर्म-शास्त्र के ज्ञाता हैं। उन्हें पूज्य समझना प्रत्येक पुरुष का कर्तव्य है—चाहे वे किसी भी नीच-जाति में उत्पन्न हुए हों। महर्षि वाल्मीक भील होकर बड़े-बड़े महर्षियों द्वारा पूज्य माने गए। कवि कालिदास गडरिया होने पर पूज्य विद्वान् माने गए; रैदास, तुकाराम आदि सन्त चमार, डोम आदि होने पर भी सिद्ध कहलाए। व्यास धीवरी के पुत्र, वशिष्ठ वेश्या-पुत्र और पराशर भङ्गिन के पुत्र थे। इन सभी को पूज्य ऋषि-पद मिला है। जगत् में गुणों की पूजा है। आजकल अनेक नीच-जाति के सज्जन हाकिम बन जाते हैं, उनके सामने बड़े-

आर्यमित्र

आगरा, गुरुवार ता० १९ सितम्बर, सन् १९२९

'चाँद' पर सङ्कट

प्रयाग से प्रकाशित होने वाला सुप्रसिद्ध मासिक पत्र 'चाँद' कुछ दिनों से सरकार का कोप-भाजन बना हुआ है। पहले उसका 'फाँसी-अङ्क' ज़ब्त किया गया, फिर 'चाँद' कार्यालय द्वारा प्रकाशित 'भारत में अङ्गरेज़ी राज्य' जैसी अनमोल पुस्तक की बारी आई। इसके अनन्तर यू० पी० सरकार ने 'चाँद' का नाम स्कूल-कॉलिजों के लिए स्वीकृत पत्रों की सूची मे से काटा और अब सी०पी० सरकार ने भी अपनी शिक्षण-संस्थाओं से इसका बहिष्कार कर दिया। सरकार की इस कोप-दृष्टि के कारण 'चाँद' को हज़ारों रुपयों की आर्थिक हानि उठानी पड़ी है। परन्तु यह बात अब तक नहीं मालूम हुई कि 'चाँद' का अपराध क्या है, जिसके कारण उसे इस प्रकार सरकारी क्रोध का लक्ष्य बनना पड़ा है। अगर सरकार की दृष्टि में उसका फाँसी-अङ्क आपत्तिजनक था तो वह ज़ब्त कर लिया गया और वह मामला वहीं ख़तम हो जाना चाहिए था। परन्तु नहीं, सरकार तो चाहती है कि उसकी शिक्षा-संस्थाओं में उसका प्रवेश ही न हो। हम तो देखते हैं कि 'चाँद' के सञ्चालक और सम्पादक महाशय ने भारी आर्थिक हानि उठा कर भी 'चाँद' को बहुत उपयोगी बना दिया है। विशेषाङ्क निकालने में तो उसने कमाल किया है। सरकार 'चाँद' के सम्बन्ध में भले ही चाहे जो कुछ करे, परन्तु 'चाँद' के प्रेमियों का कर्त्तव्य है कि वह उसके प्रचार में बराबर सहायक बने रहें और उसे ग्राहकों की कमी के कारण आर्थिक कष्ट न उठाने दें।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

बड़े ब्राह्मण लम्बा सलाम करते हैं। ऐसी परिस्थिति में झूठा वंश का घमण्ड रखना हास्यास्पद नहीं तो और क्या है?

* * *

इज़्ज़त

लोग कहते हैं कि इज़्ज़त भी एक चीज़ है! वह कैसी है? कहाँ है? किस तरह मिलती है? लोग कहते हैं कि जान देकर भी इज़्ज़त बचानी चाहिए। जब जान ही चली जायगी तो इज़्ज़त किस काम आवेगी?

जान है तो जहान है, दुनिया के बड़े-बड़े पाप-पुण्य जान के लिए ही तो किए जाते हैं। जान देकर इज़्ज़त बचानी कहीं की बुद्धिमानी है?

परन्तु जिन्होंने सूअर और कुत्तों को पिट कर जान बचाते देखा है, गधों और बैलों पर चाबुक पड़ते और जान के भय से कड़ी से कड़ी मिहनत करते देखा है, जिन्होंने क़ैदियों की बात-बात पर खाल उड़ते देखा है, वे कह सकते हैं कि जीना तो वही, जो इज़्ज़त का जीना हो—बेइज़्ज़ती के जीने से तो मरना उत्तम है!

रोज़ किसी न किसी के आत्मघात करने के समाचार सुन पड़ते हैं। लोग अपनी इज़्ज़त के नाम पर बहुधा जान खो दिया करते हैं। जो सच्चे मनुष्य हैं, वे इज़्ज़त को एक बहुमूल्य वस्तु समझते हैं।

मारवाड़ के राजपूत, जो मृत्यु की दूकानें करते थे, इज़्ज़त को अपने ख़ून की बूँदों से ख़रीदते थे, आज उनकी सन्तान के सिर पर राजमुकुट हैं! सिर्फ़ इसलिए कि वे इज़्ज़त के नाम पर सदा मर-मिटने को तैयार रहे थे।

क्या फिर कभी मारवाड़ के रक्त में इज़्ज़त की गर्मी आवेगी? क्या अपमान और मूर्खता के कीचड़ में गिरे हुए प्राचीन मारवाड़ के वंशधर इज़्ज़त को जान से बढ़ कर मानेंगे?

* * *

जान-माल और आबरू

हमारी जान-माल सलामत रहे, यह हमारी सदा की अभिलाषा है। जान और माल ये—दुनिया की सबसे प्यारी चीज़ें हैं। मनुष्य से लेकर अधम सूअर तक अपनी जान बचाने का अभिलाषी है। लोग कहते हैं कि जान है तो जहान है।

परन्तु क्या यह सच है? जान-माल की सलामती क्या जगत् में बहुत बड़ी चीज़ है? इतिहास कहता है नहीं, जो जातियाँ जीवित हैं, वे आबरू को ही बड़ी चीज़ समझती हैं। आबरू के आगे जान-माल उनके लिए कुछ नहीं, वीर पुरुष क्षण भर में एक आबरू के नाम पर सौ बार जान-माल क़ुर्बान कर देते हैं!

गीदड़-स्यार को सबसे ज़्यादा जान का भय रहता है, पर वे ही सबसे जल्दी शिकार होते हैं। परन्तु सिंह वह है, जो गोली की गर्ज पर गर्ज करता है, और वीर की तरह निर्भय जीता और निर्भय मरता है।

मनुष्यों में भी गीदड़ों को जान-माल का ख़तरा लगा रहता है और जो शेर होते हैं, वे सदा निर्भय विचरण करते हैं। आबरू का अनमोल मोती जिसके पास है, वही जीवित है, वही धन्य है, उसी का जीवन सफल है। आबरू मनुष्य की अपनी सम्पत्ति है, अपनी वस्तु है। जो जाति जान से बढ़ कर आबरू को समझेगी, वह जगत् में बहुत बड़ी वस्तु बनेगी, पर जो सदा भयभीत रहेगी, उसका जीवन भी मृत्यु सदृश समझना चाहिए!

* * *

भाग्य

क्या यह सच है कि भाग्य मनुष्य को सब जगह के नाच नचाता है? जीवन, मरण, सुख, दुःख, मृत्यु, धन, स्त्री, पुत्र, आरोग्य—सब भाग्य के अधीन हैं? विधाता ने भाग्य में वे सब बातें अमिट अक्षरों में लिख दी हैं तो इस जन्म में होती हैं! वे नहीं हो सकतीं। जिसके भाग्य में धन नहीं—वह लाख परिश्रम करने पर भी निर्धन रहेगा। जिसके भाग्य में विद्या नहीं, यश नहीं, सन्तान नहीं, उसे ये वस्तुएँ किसी तरह नहीं मिल सकतीं।

ज्योतिषी लोग यही कहते हैं। सामुद्रिक-शास्त्री और मस्तिष्क-शास्त्री भी यही कहते हैं। ज्योतिषी लोग जन्म-कुण्डली बना कर उसके आधार पर जन्म भर का धन, स्त्री, सन्तान, आयु आदि सब भविष्य की बातें लिख

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

देते हैं। सामुद्रिक लोग हाथ की लकीरों को पढ़ कर हज़ारों बातें बता देते हैं। इसी प्रकार कर्म-रेखा अमिट है। प्रारब्ध प्रबल है—यह बात पृथ्वी भर के मनुष्यों में विख्यात है।

स्त्रियाँ और मूर्ख लोग तो सोलहो आना इसी अटल भाग्य-बल के विश्वासी दीख पड़ते हैं। साथ ही लाखों बुद्धिमान्, विचारवान्, विद्वान् भी इन बातों पर विश्वास रखते हैं। कुछ चमत्कारी ज्योतिषी और शकुन-शास्त्री ऐसा चमत्कार दिखाते हैं कि बुद्धि चकराती है।

मनुष्य का यह स्वभाव ही है कि जो बात समझ में नहीं आती, उसमें वह श्रद्धा करने लगता है और दैवी शक्ति की बात समझता है। एक समय था, जब सारी पृथ्वी पर जादूगर लोग बड़े शक्ति-सम्पन्न समझे जाते थे—पर ज्योंही विद्या का प्रचार हुआ कि जादू केवल खेल-तमाशे की वस्तु रह गया। प्रायः यही दशा ज्योतिषी और मन्त्र के जानने वालों की है। पहले उनकी बड़ी प्रतिष्ठा थी, परन्तु अब उनके प्रति उतना आदर नहीं है।

इस बात को छोड़ कर कि चमत्कार मन पर विश्वास पैदा करते हैं—इस बात पर विचार करना चाहिए कि भाग्य क्या वस्तु है, और क्या मनुष्य का परिश्रम, दान, तप, पुण्य—इनमें से कोई भी भाग्य में दख़ल नहीं दे सकता? क्या उद्योग से मनुष्य अपने भाग्य को नहीं हरा सकता?

हम ऐसी मिसाल दे सकते हैं कि मनुष्य अपने भाग्य-बल से नहीं—केवल परिश्रम और उद्योग-बल से उन्नत हुए। उद्योग से उन्होंने करोड़ों रुपयों की सम्पत्ति पैदा की, उद्योग से वे भिखारी से राजा हुए, उद्योग से उन्होंने संसार में अमर नाम पाया। तब क्या उद्योग ही सबसे बड़ी शक्ति है? यह बात भी मानने को तबीयत नहीं करती। क्योंकि हम बड़े-बड़े उद्योगशील पुरुषों को निराश और दुःखी देखते हैं, बड़े-बड़े धर्मात्माओं को शोक और चिन्ता में चूर देखते हैं। तब यह क्या गोरख-धन्धा है? भाग्य और उद्योग, तक़दीर और तदबीर में प्रबल कौन है—इसका भेद खुलना चाहिए?

शास्त्रों में लिखा है कि भोग तीन प्रकार के होते हैं—प्रथम सञ्चित, दूसरा क्रियमाण और तीसरा प्रारब्ध। सञ्चित-भोग तो वे हैं, जो जन्म-जन्मान्तरों से सञ्चित रहते हैं और जिनका समय पाकर उदय होता है। जैसे बीज समय पर हवा-पानी और काल पाकर उगते हैं, केवल हवा-पानी से ही नहीं। उसी प्रकार सञ्चित भोगों के उदय होने का जब समय आता है, तभी वे उदय होते हैं।

अचानक हम देखते हैं कि हमें धरती में गड़ा हुआ धन मिल गया, या किसी की सम्पत्ति मिल गई। इसी प्रकार अचानक हम पर कोई विपत्ति आ पड़ी। यह हमारा सञ्चित भोग था!

क्रियमाण वही है, जो किया जा रहा हो। जैसे चाकू से उँगली कटी और ख़ून निकल आया। यह भोग कर्म या उद्योग के नाम से पुकारा जा सकता है। एक मनुष्य किसी भी कार्य में उद्योग कर रहा है, फिर भी फल पाना उसके अधीन नहीं। उद्योग का फल भी चूँकि दैवाधीन है, इसलिए वह भी क्रियमाण भोगवाद है। फिर भी एक वस्तु है, जो मनुष्य में सर्व-श्रेष्ठ है; वह है विचार-शक्ति, बुद्धि और ज्ञान—इनके आधार पर वह अपने भोग और भाग्य को नियन्त्रण में रखता है।

वास्तव में भाग्य और भोग मनुष्य के लिए पैतृक-सम्पत्ति है। अर्थात् वह उसे जन्म के समय मिली है, फिर वह चाहे कैसी ही भली-बुरी हो। परन्तु उस सम्पत्ति को चौपट करना या आगे बढ़ाना उसके लिए सरल है। इस क्रिया को उद्योग कहते हैं।

जैसे लोहे की पटरी पर रेलगाड़ी चलती है, उसी तरह भाग्य की सड़क पर उद्योग चलता है। पातकी पुरुष भी उद्योग से सूखी रोटी पाते हैं। फिर साधारण भाग्यशील क्यों न पावेंगे? इसलिए बुद्धिमान् भाग्य को प्रबल मानते हुए भी उद्योग करते हैं। और सफल होने पर गर्व न करके, ईश्वर को धन्यवाद देते हैं और निष्फल होने पर शान्ति और सन्तोष रखते हैं। ऐसे ही पुरुष बुद्धिमान् और विचारशील एवं विवेकी कहाते हैं।

प्रारब्ध उन प्रधान कर्म-समूह को कहते हैं, जिसके आधार पर यह शरीर प्रदान किया गया है। संसार में अनेक अधम और उत्तम योनियाँ हैं। प्रत्येक योनि में जीव का वास है। ऐसी भी योनि हैं, जिनकी आयु हज़ार वर्ष की है, और ऐसी भी योनि हैं, जिनकी आयु केवल तीन मिनट है। तीन ही मिनट में बाल, युवा, वृद्धावस्था हो जाती है और दो-चार हज़ार बाल-बच्चे भी हो जाते

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

हैं! प्लेग के कीटाणु और अनेक जाति के सूक्ष्म जन्तु इसी प्रकार की योनि में हैं।

मनुष्य की योनि सर्वोत्तम है। मनुष्य पूर्ण स्वाधीन है, उसके शरीर में सम्पूर्ण अङ्ग हैं। वह जगत् के प्राणियों का राजा है।

प्रारब्ध ने उसे यह मनुष्य-शरीर दिया है, किन्तु सञ्चित और क्रियमाण-भोग उसे कभी-कभी पशु-पक्षियों से अधिक दुःखी, हीन और चिन्तातुर बना देते हैं। मनुष्य संसार के समस्त प्राणियों से अधिक रोगी रहता है। वह संसार के सब प्राणियों से अधिक असन्तुष्ट और व्याकुल है।

गृद्ध की दृष्टि, कुत्ते के कान, चिउँटी की नाक, सर्प का श्वास और लाखों जीवों की शारीरिक शक्ति मनुष्य से श्रेष्ठ है।

* * *

मृत्यु-भोज

"आपके माता, पिता, भाई, पुत्र-बधू आदि मर गए हैं, इसके उपलक्ष में आप हमें एक दावत दीजिए"—यह वाक्य यदि सभ्य-देश के किसी पुरुष से आप कहें तो निस्सन्देह वह आप पर मान-हानि का दावा ठोंक दे—और यदि किसी देहाती उजड्ड से कहें तो वह वहीं आपकी नक़द मरम्मत कर दे।

मरे हुए व्यक्ति के नाम पर भोजन एक ऐसी घृणास्पद बात है, जिसे कोई भी बुद्धिमान् विचार ही नहीं सकता। इष्ट-मित्रों का भोजन और आनन्द शुभ अवसरों पर करना-कराना एक स्वाभाविक सी बात है। हाँ कि मृतात्माओं के नाम पर यह काम भी बहुत कम किया जा रहा है।

कोई सभ्य पुरुष यह कल्पना भी नहीं कर सकता कि मरे हुए के नाम पर हज़ारों रुपए स्वाहा करने वाले [illegible] किसी जाति में किए जा सकते हैं! परन्तु [illegible] में ये मृत-भोज यदि दावतें मात्र ही रहतीं, तब भी [illegible] थीं। इस समाज में तो यह [illegible] कुप्रथा पाप-कर्म के रूप तक पहुँच गई है। [illegible] ४०-५० हज़ार तक का धन [illegible] में फेंक कर गुनाह करते हैं! परन्तु दरिद्रों, विधवाओं, अनाथ बच्चों को, जातीय पञ्च हथियार डाल कर, भय दिखा कर, जाति-बहिष्कृत करके उनका सर्वस्व बिकवा कर उन्हें, राह का भिखारी बना कर, जघन्य कुकर्म कराने को राज़ी करते हैं, तब हमारा कलेजा फटता है! हमने अपनी आँखों से ऐसी दुखियाओं को देखा है, जिनका पति मर गया—एक बच्चा गोद में है, एक पाँच वर्ष का है—जो पँजी थी, रोग में ख़र्च हो गई, पञ्च चौधरियों ने मकान बिकवा कर भोजन किया, विधवा को रहने की झोपड़ी न रह गई!! इस प्रकार भोजन करने वालों को राक्षस कहा जाय या मनुष्य? एक हमारे घनिष्ट मित्र ने हमें तार-द्वारा सूचना दी कि उनके २० वर्ष के जवान, एकमात्र पुत्र का देहान्त हो गया है, और उसकी १४ वर्षीया सद्यो-विधवा पछाड़ खाकर सिर फोड़ चुकी है तथा बेहोश है, उसके बचने की कम उम्मीद है, उसकी माता ने अन्न-जल त्यागा हुआ है! ऐसा हृदय-वेधक तार पाकर जाना हमारे लिए अनिवार्य था—हमने तैयारियाँ कीं और तीसरे दिन जब हम जाने को तैयार थे, पत्र मिला। पत्र में औसर की तिथि और उसमें सम्मिलित होने का हमारे लिए निमन्त्रण था। उसे देखते ही [illegible]रे बदन से चिनगारियाँ छूटने लगीं। हमने—सोचा [illegible]ह! कैसे नीच, दुरात्मा, पापिष्ठ, घृणास्पद ये लोग हैं, ये अपने ही बच्चों का मांस खाते और ख़ून पीते हैं। लड़के के समान जवान बेटे की चिता भी ठण्ढी नहीं हुई, [illegible] की धरती भी नहीं सूखी, घर में हाय और आँसू [illegible] रहे हैं, और ये पतित, जङ्गली लड्डू-कचौड़ी उड़ाने की तैयारी कर रहे हैं! हमने लिख दिया कि उस भाग्यहीन मरने वाले का मांस खाना और ख़ून पीना हमें स्वीकार नहीं। बिना बच्चे की माँ और बिना पति की बालिका विधवा के आँसुओं का आचमन तुम करो—तुम्हारे चौधरी करें, तुम्हारी ज़ात वाले, देश वाले, गाँव वाले करें, पर हम तुम-जैसे राक्षसों का छुआ जल भी पीने में घृणा करेंगे!

इन्दौर की एक घटना हमारी आँखों देखी है। एक मृत्यु-भोज में तमाशा दिखाने एक सज्जन हमें ले गए। बेअन्दाज़ स्त्री-पुरुष बेतरतीबी से बैठे थे—सभी [illegible] गुलाब लेकर आए थे। ऐसा जान पड़ता था, [illegible] किसी मुर्दे पर गृद्ध टूट पड़े हों! हमने एक कौतुक

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

देखा। दो पत्तलें ख़ाली रक्खी थीं। खाद्य-पदार्थ सभी परोसा जा चुका था, पर खाने वाला कोई व्यक्ति उन पर नहीं दीख पड़ता था। लोग पूछ रहे थे—इन पत्तलों के धनी कौन हैं? अरे इन पत्तलों पर कौन बैठेगा? ये प्रश्नकर्त्ता व्यक्ति वही थे, जिनके सङ्केत से वे पत्तलें रक्खी गईं थीं। अनेकों को यह रहस्य ज्ञात था, वे मुस्करा रहे थे। जब सबका ध्यान उन पत्तलों पर आकर्षित हुआ, तब एक मुँह-फट व्यक्ति ने ऊँची आवाज़ में कहा—"साहेब, ये पत्तलें .....साहेब के माता-पिता के लिए हैं, वे जीमने को आने वाले हैं! आप फ़िक्र मत करो—जीमो। ४० वर्ष से वे जीमते रहे, अब क्या छोड़ेंगे।" सुन कर तहलक़ा मच गया। बात यह थी कि यह दम्पति ८ वर्ष पूर्व मर चुके थे और उनके पुत्र वहाँ भोज में डटे हुए थे। बस चारों तरफ़ से लानत-मलामतें पड़ने लगीं। ४० वर्ष उन्होंने खाया, अब ८ वर्ष से ये खा रहे हैं, पर खिलाया आज तक नहीं। शीघ्र ही पञ्चायत की तैयारियाँ हुईं और निश्चय हुआ कि जब तक वे न खिलावें, तब तक जाति-बहिष्कृत समझे जायँ। अन्त में उन्हें भरी पत्तल से अपमानित होकर उठना पड़ा! क्या 'चाँद' के पाठक कभी कल्पना भी कर सकते हैं कि जिस समाज में गुरु-जन-स्त्री से व्यभिचार का अपराध क्षमा के योग्य है, जिस समाज में झूठ, दग़ा, सूदख़ोरी पाप नहीं, शराब पीना और वेश्यागमन क्षमा के योग्य है—उस समाज में यह अपराध क्षमा के योग्य नहीं? कहाँ तक इस पतन पर खेद प्रकाशित किया जाय!!

ये मृत्यु-भोज दो प्रकार के होते हैं, एक साधारण, जिनमें खाद्य और खाने वालों की परिमित संख्या होती है। दूसरे को 'हेड़ा' कहते हैं—यह हेड़ा बहुत बेढब है। इसमें यह आवश्यक नहीं कि निमन्त्रण देकर किसी को बुलाया जाय, तभी कोई आवे। समाचार मिल जाना ही काफ़ी है। चौधरी-पञ्च जो दुश्मनी रखते हैं, जी के फफोले फोड़ने को चार-आठ आने के कार्ड गाँठ से ख़र्च करके आस-पास के गाँवों को लिख देते हैं—अमुक तिथि को अमुक व्यक्ति का हेड़ा है, सबको ख़बर कर देना, और दो दिन पहले आ जाना। इसके फल से ऐसा कुप्रबन्ध रहता है, ऐसी हाय-हाय मचती है, भोजन ऐसा नष्ट होता है कि वह मृत्यु-भोज के सजने के योग्य ही है!

एक मज़ेदार घटना सुनिए। हम मालवे के एक क़स्बे में एक मित्र के यहाँ गए थे। बेचारे साधारण स्थिति के व्यक्ति थे। उनकी जाति में एक मृत्यु-भोज था, उस बदनसीब ने किसी अपराध पर इन्हें जाति-बहिष्कृत कर दिया था। बस इन्होंने ४-५ घरों को तोड़ कर गुट्ट बनाया और नया घड़ा बना डाला। उस घड़े में एक ऐसा भलामानुष आ फँसा जिसका कोई सम्बन्धी (?) २० वर्ष प्रथम मर चुका था। बस सबने सलाह दी कि तुम अब उसका कारज कर दो। १००-५० रुपए में ही हो जायगा—ऐसा अवसर कब मिलेगा? फलतः जहाँ सारी बिरादरी लड्डू उड़ा रही थी, वहाँ ये लोग भी तर-माल तोड़ रहे थे। इस प्रकार के उदाहरणों की कहाँ तक भरमार की जाय।

क्या बुद्धिमान् पुरुषों को इस बात पर विचार न करना चाहिए कि अनुचित बातों को त्याग देने का सत्साहस मनुष्य में उदय होना ही चाहिए। यह असभ्य और अनुचित रीति है, फिर वह चाहे कितनी पुरानी क्यों न हो, हमें त्याग देनी चाहिए। अगर हम अपने देश और धर्म की प्रत्येक कुरीति को शास्त्रों में ढूँढने लगें तो मांस-मद्य खाने और व्यभिचार करने के भी प्रमाण मिल जाएँगे! शास्त्रों के ही बल पर ब्राह्मण लोग पशुओं को काट-काट कर वेद-मन्त्रों द्वारा हवन करते थे और मांस-भक्षण को पवित्र समझते थे। शास्त्रों ही के मत पर जीवित स्त्रियाँ बलपूर्वक चिता पर जला दी गईं! परन्तु ज्यों-त्यों सभ्यता का विकास हुआ, धर्म और समाज का रूप बदला, सती होना और यज्ञ में पशु मारना बन्द हो गया। कोई कुप्रथा यह कह कर कि वह पुरानी है, जारी रखना ठीक नहीं। बुद्धिमान् को अच्छी बातें सीखने और बुरी बातें त्यागने को सदैव तत्पर रहना चाहिए। हमारे विचार स्पष्ट हैं:—

१—जाति-भोजन आनन्द और ख़ुशी के समय पर होने चाहिएँ, क्योंकि उत्तमोत्तम भोजन मिल कर करना आनन्द का चिन्ह है—शोक का नहीं।

२—जहाँ एक तरफ़ विधवा और अनाथ बच्चे मृतक के नाम पर रो रहे हों—शोक से उनकी छाती फटी जा रही हो—वहाँ दूसरी तरफ़ पकवान की कढ़ाई चढ़ना और भोजन होना हर हालत में असभ्यता है! मृत्यु होने पर तो पड़ोसी भी उपवास करते हैं!!

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

३—मृतक-अन्न खाना शास्त्र की दृष्टि से पतित करने वाला है। जो ब्राह्मण (आचार्य) मृतक का दान या अन्न खाते हैं, वे ब्राह्मणों में अधम समझे जाते हैं। और गया आदि के पण्डे जो मृतक के नाम से दान लेते हैं, निस्तेज बने रहते हैं।

४—प्रत्येक सभ्य जाति मृतक के नाम पर दान-पुण्य करती, और उपवास करती है। शास्त्रों में शोक, प्रायश्चित्त तथा अशौच में उपवास करना लिखा है।

५—व्यावहारिक दृष्टि से इस रीति में कितने ही अनाथ स्त्री-बच्चों को अपने मृत-पति या पिता की छोड़ी हुई सम्पत्ति इस काम में ख़र्च करके, पीछे भूखों मरना पड़ता है। जाति के बुज़ुर्गों का धर्म अनाथ स्त्री-बच्चों की मृत-व्यक्ति के पीछे सहायता करना होना चाहिए—यह उनका पवित्र पुण्य है!

* * *

सट्टा और फाटका

सट्टा जुए का ही एक प्रकार है। पृथ्वी की सारी जातियों में अत्यन्त प्राचीन-काल से जुए का प्रचार रहा है। ऋग्वेद में जुए की निन्दा में बड़ी ही मार्मिक तीन-चार ऋचाएँ हैं।

"यह मेरी स्त्री मुझे कष्ट नहीं देती थी। न कभी क्रोध करती थी। अपने परिजनों के साथ तथा मुझसे प्रेम करने वाली थी। जुए के कारण वह भी मुझे गँवानी पड़ी।"

—ऋ० १०-३४-२

"जुआ जिसका ज्ञान और धन नाश करता है, उसकी स्त्री का दूसरे ही उपभोग करते हैं। माता-पिता, भाई उसके विषय में कहते हैं कि हम इसको नहीं जानते, इसे बाँध कर ले जाओ।"

—ऋ० १०-३४-४

"ये जुए के पासे नीच होने पर भी ऊँचे हैं, इनके हाथ न होने पर भी ये हाथ वालों को हराते हैं। चौकी पर फेंके हुए ये पासे जलते हुए अङ्गार हैं। जो स्वयं शीतल होने पर भी हृदय को जलाते हैं।"

—ऋ० १०-३४-९

"जब जुआरी दूसरों की युवती-पत्नियों, महल, अटारियों और ऐश्वर्य को देखता है, तब उसे बहुत बड़ा सन्ताप होता है। जो जुआरी प्रातःकाल सब्ज़े घोड़ों की जोड़ी पर सवार होता था, वह पापी आर्त्तनाद कर रात काटता है।"

—ऋ० १०-३४-११

उपरोक्त करुण-भाव अत्यन्त प्राचीन-काल के जुआरी की दुर्दशा की खेदजनक दशा को प्रकट करते हैं। यदि गम्भीरतापूर्वक देखा जाय तो सट्टेबाज़ मारवाड़ी लाखों की संख्या में अतिशय खेदजनक दशा में पड़े हैं! हमें ऐसे पुरुषों से वास्ता पड़ा है, जो लाखों के वारे-न्यारे करते थे। पर वे कभी भी धनी न हुए। अलबत्ता बम्बई-कलकत्ते में ३-४ ऐसे प्रधान सटोरिए मिल जावेंगे, जिन्हें हानि का उतना भय नहीं। क्योंकि बाज़ार प्रायः उनके हाथ में रहता है; परन्तु विचार तो उन सहस्रों ग़रीबों का करना है, जो दिन-रात रोते हैं, पर हाथ कुछ नहीं आता! उद्योग और कला-कौशल एक बड़ी चीज़ है और व्यापारी के लिए वही प्रतिष्ठा के योग्य बात भी है। सट्टा-जैसा पाजी धन्धा किसी भी जाति को पनपने दे—यह सम्भव ही नहीं है।

सर हुक्मचन्द जैसे जगद्विख्यात सटोरिए ने, जब से सट्टा छोड़ा है, सुख की नींद सोते हैं! घुल-घुल कर मरते, विष खाकर मरते, अनेकों को हमने देखा है। दुःख की बात तो यह है कि सट्टे के सभी दोषों को ठीक-ठीक जानते हुए भी, लोग उससे अपना पिण्ड नहीं छुड़ाते! अकस्मात्, बिना प्रयास बहुत-सा धन टूट पड़े, यह तो सभी चाहते हैं, पर यह धन आसमान से नहीं गिरता! भाग्यहीन भाइयों की जेब से ही निकल कर गिरता है। और उन भाग्यहीनों की अवस्था पर उन भाग्यवानों की अपेक्षा अधिक ध्यान करना प्रत्येक व्यक्ति का कर्तव्य है। क्योंकि भाग्यवान् तो कोई ही बनता है, भाग्यहीन बहुत बनते हैं—और सट्टे में भाग्यहीन बनना ही अधिक सम्भव है!!

* * *

नौटङ्की और रास-लीलाएँ

मारवाड़ी-समाज में प्रायः नौटङ्की और रास-लीलाओं को बड़े भाव से देखा जाता है। इन निकृष्ट और मैले अभिनयों में धन का व्यय तो ऐसा महत्वपूर्ण विषय

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

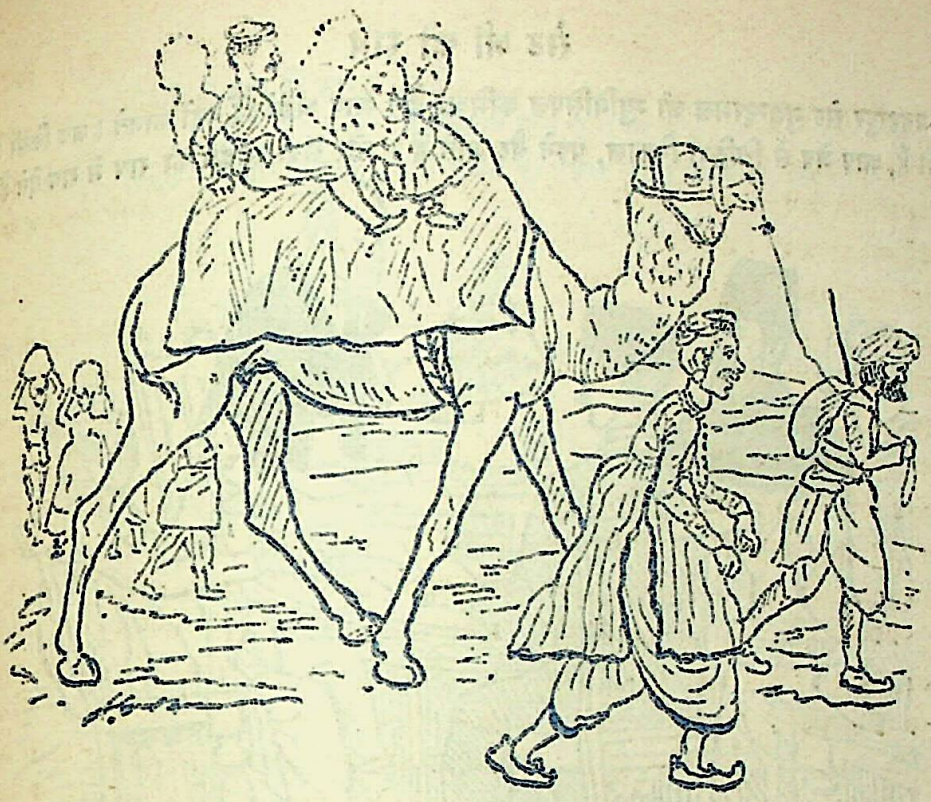

चींदणी री विदाई

ऊँट पर दूल्हन और भाई बैठे हैं, ऊँट के धचकोले पर गौर कीजिएगा !

महा-वैद्य

वैद्यराज—थे म्हारो माल जो बिगाड़ दियो। कुपथ्य कर लियो, म्हे थाने चन्द्रोदय की मात्रा री दी। वीं सूँ मुर्दों भी जी उठे है। वींकी मात्रा ज्यादी है। इसी की बँटी म्हे कबेड सूँ लाऊँ।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

सेठ जी की राय

रायबहादुर सेठ मुछन्दरमल जी म्युनिसिपल कमिश्नर हैं। आप अङ्गरेज़ी नहीं जानते। जब किसी प्रस्ताव पर बहस होती है, आप जेब से चिट्ठियाँ निकाल, पढ़ने बैठ जाते हैं। और सदा साहेब की राय में राय देते हैं।

साहेब प्रस्ताव पर राय ले रहे हैं, सेठ जी चिट्ठी पढ़ रहे हैं।

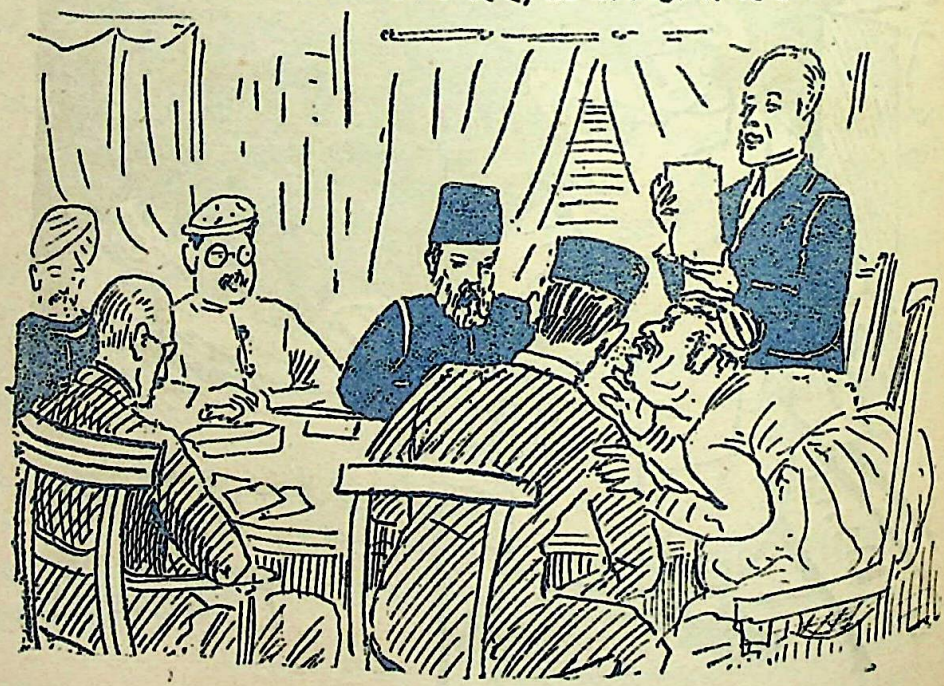

साहेब की काँई राय है ?

बकरीद के अवसर पर कितने बकरे काटे जायँ—१००० या ५०० यह प्रस्ताव था। प्रस्ताव पर साहेब राय ले रहे थे, सेठ जी चिट्ठियों में डूब रहे थे। जब आपसे पूछा गया—सेठ जी आपकी क्या राय है, तो घबरा कर मेम्बर के कान में पूछा—"साहेब की काँई राय है ?"

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

"म्हां की राय दो हज़ार की है।"

(प्रस्ताव पास होने पर)

मेम्बर—धिक्कार-धिक्कार ! जैनी होकर दो हज़ार बकरा काटने की राय दी !!

म्हारी राय दो हज़ार की है।

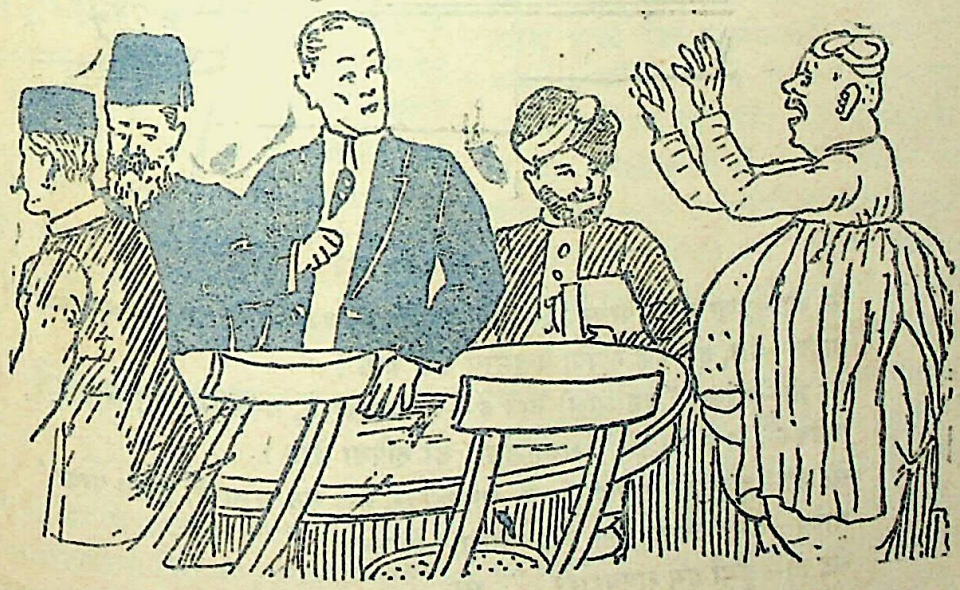

म्हारी राय कोनी—म्हारी राय कोनी।

सेठ जी—(घबरा कर) बकरा किशा ? किशा बकरा ??

मेम्बर—बकरीद पर काटने के लिए !

सेठ जी—म्हारी राय कोनी—म्हारी राय कोनी। म्हें तो रुपैया खरच की बात समझी ही।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

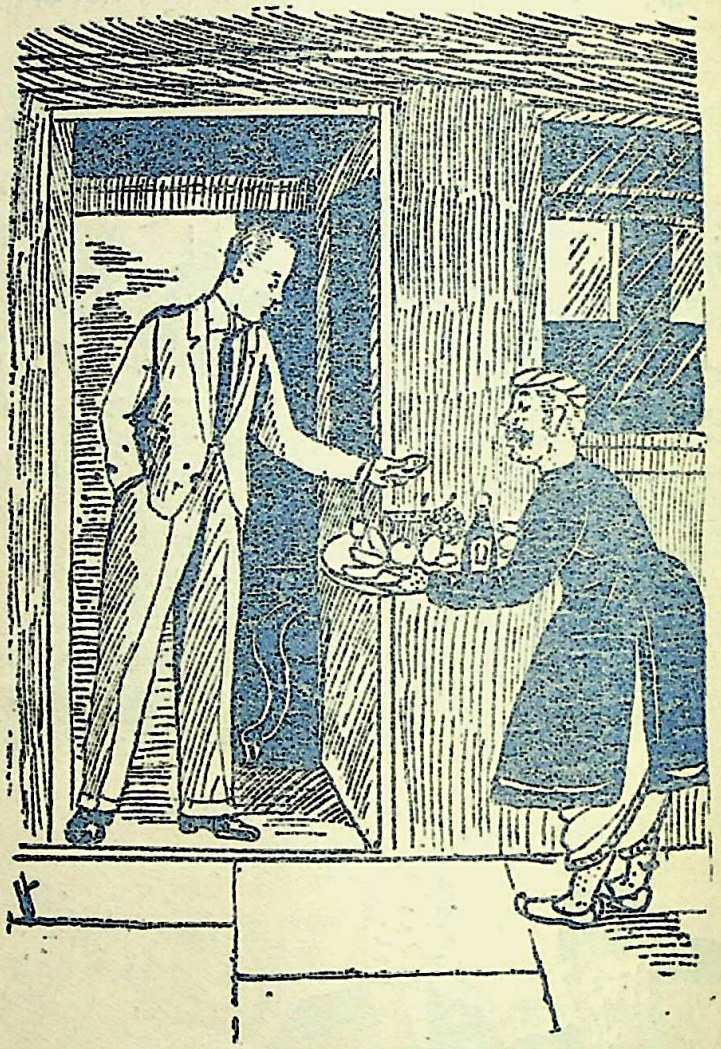

रायबहादुर

सेठ जी—हुजूर गरीब परवर ! सलाम बन्दगी, सरकार म्हारी डाली मञ्जूर फुर्मावें !

साहेब—वेल, हम एक रुपिया बखसीस डेटा हाय !

सेठ जी—सरकार ! हम माली नहीं हैं—रायबहादुर हैं, बखसीस नहीं लेगा।

साहेब—(न समझ कर) अच्छा-अच्छा, डो रुपिया डेगा।

सेठ जी—हुजूर हम रायबहादुर हैं, रायबहादुर, हम सेठ लोग हैं, गरीब परवर !

साहेब—डेम ! ज्यादा डेना नहीं माँगटा—ले जाओ।

सेठ जी—हुजूर हम रायबहादुर.....सेठ.....

साहेब—(ठोकर मार कर) यू रास्केल ! नेई माँगटा—नेई माँगटा—जाओ (जाने लगता है)।

खानसामा—हुजूर ! यह रईस सेठ है, माली नहीं है—रईस लोग बख्शीश नहीं लेता।

साहेब—ओ ! आई सी, यू आर बेझर ! (आगे बढ़ कर, हाथ मिला कर) सॉरी थैन्क यू—टुम डौलटमन्ट हाय।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

का विषय नहीं है ; पर उनका प्रभाव जो युवकों पर पड़ता है, वह कभी उपेक्षा से देखने के योग्य नहीं समझा जा सकता। हमने सम्पादकीय लेख में गन्दे साहित्य की तरफ़ मारवाड़ी-समाज का ध्यान आकर्षित किया है। ऐसा साहित्य ही युवकों में इन दृश्यों को देखने की कुरुचि उत्पन्न करता है और यह अभिनय उन पुस्तकों को पढ़ने के लिए लाखों युवकों को प्रोत्साहित करता है। यह बात ध्यान में रखने योग्य है कि नीच श्रेणी के रसोइए, कहार, ग्वाले आदि, जो इनमें सर्वाधिक दिलचस्पी लेते हैं, ज़्यादातर घर के धन्धे करते रहने के कारण स्त्रियों के अधिक निकट रहते हैं। और उनकी मनोवृत्तियों को गन्दी करने के लिए ही वे उन गन्दी किताबों को बहू-बेटियों की दृष्टि और कान तक पहुँचाते हैं। परिणाम बहुत ही भयानक होता है !

बहुधा ऐसे तमाशों में स्त्रियाँ भी आती हैं। और अभिनय में अत्यन्त गन्दी भाषा और भावों का दृश्य दिखलाया जाता है। स्त्रियों के लिए यह अत्यन्त भयङ्कर है, जबकि उनके पुरुष उनसे बहुधा पृथक् रहते और नीच नौकर हरदम घर में घुसे रहते हैं !!

इन तमाम बातों को भी छोड़ दिया जाय, तो भी युवा-बाल-वृद्ध किसी को भी उचित नहीं है कि ऐसी अश्लील बातों को देखे-सुने। यह शास्त्र की उक्ति है कि मनुष्य को मन-वचन-कर्म से इतना शुद्ध रहना चाहिए कि वह स्वप्न में भी धर्म-च्युत न हो। धर्म की प्रबलता केवल मन्दिर में दर्शन कर आने से ही नहीं सिद्ध हो सकती ; उसके लिए मन-वचन-कर्म से शुद्ध रहना अत्यावश्यक है। और यह तभी हो सकता है, जब वह शुद्ध बातों को देखें-सुनें और पढ़ें-लिखें !

* * *

विलायत-यात्रा

एक समय था, जब कि भारतवर्ष एक मज़बूत क़िले के समान चहारदीवारी से घिरा था। उसके निवासियों को अपनी आवश्यकता के लिए किसी वस्तु की दरकार न थी। वह अपनी आवश्यकता से वस्तुएँ बचा कर विदेशियों को देता था जो उसके द्वार पर खड़े रहते थे। परन्तु तब और अब में अन्तर है। इस समय वह मज़बूत दीवार ढह गई है, विदेशियों ने हमारी बग़लों में और हमारे सिर पर अपने पक्के मकान बना लिए हैं ! इसके सिवा खाने-पहनने से लेकर सामूहिक जीवन निर्वाह के लिए भी, हमें विदेश का मुहताज होना पड़ा है। ऐसी दशा में हम पृथ्वी की जातियों से पृथक् रह कर जीवित रह सकेंगे, यह सम्भव ही नहीं है। धर्म के झूठे ढकोसलों की आड़ लेना व्यर्थ है।

मारवाड़ी-समाज का व्यापारिक जीवन विदेश से बहुत सम्बन्धित है—उसे सच्चे व्यापारी बनने के लिए प्रबल-उद्योग से शिल्प, कला-कौशल की तरफ़ ध्यान देना होगा। हम इस बात के समर्थक नहीं कि देश के उद्धार के लिए महात्मा गाँधी के मतानुसार विधवा की तरह बैठे चरख़ा काता करें। हम यह चाहते हैं कि हमारे स्त्री-बच्चे भी हवाई जहाज़ों में आसमान में उड़ें और पृथ्वी की महाजातियाँ उसकी गर्द में छिप जायँ। ऐसी दशा में मारवाड़ी-समाज के प्रमुख उद्योगी युवकों को विलायत-यात्रा का ताँता बाँध देना चाहिए। नाना प्रकार के शिल्प तथा कला-कौशल का अध्ययन करना चाहिए। गुदगुदे गद्दों पर सुस्त पड़े-पड़े भावों की प्रतीक्षा करना और तोंद बढ़ाना भविष्य के उन्नत मारवाड़ी-बच्चे पसन्द नहीं करेंगे, ऐसा हमारा मत है। वे दलाल या एजेण्ट बनना अपने लिए अपमानकारी समझेंगे ! वे स्वयं अपनी करोड़ों की सम्पत्ति के सहारे महान् राष्ट्र के लिए उद्योग-धन्धों की सृष्टि करेंगे। विदेशी वस्त्रों की ग़ुलामी से, हम विदेशी कपड़ों की होली जला कर पिण्ड नहीं छुड़ा सकते—हमें उसी कोटि के स्वदेशी वस्त्रों से देश को पाट देना पड़ेगा। हम ढाके की मलमल पहनने वालों की सन्तानें क्यों खादी पहनेंगे ? हम क्यों न देश में ढाके की कला को आधुनिक मैशीनरी के ज़रिए चरम सीमा पर पहुँचावें ? अलबत्ता विदेशी मलमल पहनना हमारे लिए शर्म की बात है, पर स्वदेशी मलमल बिना बनाए मोटी खादी पहनना और भी शर्म की बात है। क्या हम जङ्गलियों, गँवारों, पशुओं अथवा असभ्यों की सन्तान हैं ? क्या हमें अपनी प्राचीन संस्कृति, शिल्प-वाणिज्य पर गर्व नहीं ? फिर हम धन, बुद्धि, शक्ति, उद्योग रहते सुस्त क्यों पड़े रहेंगे। हमें अधिकाधिक विदेशों में जाना, वहाँ के उद्योग-धन्धे सीखना और उन्हें नष्ट करके भारत में उन्हें मुठमर्दी से खड़े करना है।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

मारवाड़ के तेजस्वी युवक यह नहीं करेंगे तो समझिए वे मुर्दे हैं। धर्म के भय से विलायत-यात्रा त्यागना महा मूर्खता है। हम चैलेञ्ज दे सकते हैं कि विलायत-यात्रा में कोई धर्म-बाधा नहीं है। प्राचीन-काल के आर्यों ने बड़ी-बड़ी समुद्र-यात्राएँ की थीं। वेद, स्मृति, पुराण, इतिहास और पुरातत्व इस बात को प्रमाणित करते हैं। ये यात्राएँ बड़े-बड़े जहाज़ों द्वारा व्यापारिक और सामाजिक उद्देश्यों से की गई थीं। ऋग्वेद अ० १, सू० ४६, ऋ० ८ में लिखा है :—

"तुम लोगों का अत्यन्त विस्तीर्ण जहाज़ समुद्र के किनारे मौजूद है, भूमि पर रथ मौजूद है...।"

ऋग्वेद मं० १, अ० १७, सूत्र ११७, ऋ० ५ में और वाजसनेही संहिता में १०० पतवारों के जहाज़ का वर्णन है। इस जहाज़ का नाम "शतारिभ" है। यजुर्वेद में लिखा है—"समुद्र-यात्रा करो, आकाश-यात्रा करो, अभियान (इञ्जिन) द्वारा यात्रा करो।" ऋग्वेद मं० १, अ० १०।५६।२ और ४।५५।३ में धन-प्राप्ति के लिए समुद्र-यात्रा करने वालों का उल्लेख है। इसके सिवा बौद्धायन धर्म-सूत्रों में भी समुद्र-यात्रा का ज़िक्र है (बौद्धायन धर्म-सूत्र १।१।२०)। मनुस्मृति में नवें अध्याय के ३३१, ३३२ वें श्लोक में; और आठवें अध्याय के ११७ वें और ४०६ वें श्लोक और ७ सातवें अध्याय के १२० वें श्लोक में देश-देशान्तरों की भारी-भारी यात्राओं का वर्णन है। यवद्वीप, चीन और सुमात्रा जाने का पता वाल्मीकि-रामायण से लगता है, (किष्किन्धा-काण्ड ४० सर्ग और अयोध्याकाण्ड, सर्ग ६३, श्लो० ५४) महाभारत में भी सहदेव की जहाज़ी रण-यात्रा का उल्लेख है। मिताक्षरा से भी आर्यों के व्यापारी जहाज़ों का दूर-दूर यात्रा करने का पता लगता है। इसके सिवा समुद्री जहाज़ों का वर्णन वायु-पुराण, हरिवंश-पुराण, मारकण्डेय-पुराण, भागवत, हितोपदेश, शकुन्तला, रत्नावली, दश-कुमार चरित कथा, सरितसागर आदि अनेक संस्कृत-ग्रन्थों से मिलता है। मसीह के जन्म से प्रथम शताब्दी में जो पैशाचीभाषा की बृहद् पुस्तक 'बृहत्कथा' नाम की लिखी गई थी, जो मसीह के जन्म के बाद पाँचवीं शताब्दी तक मिलती रही—उसके आधार पर जो संस्कृत-ग्रन्थ कथासरितसागर लिखा गया है, उसके २५ वें और २६ वें तरङ्ग में बड़े-बड़े व्यापारी और रणपोतों ज़िक्र का है। इसी ग्रन्थ के पचासवें तरङ्गमें एक चित्ररथ नाम के मनुष्य का ज़िक्र है, जो दो बौद्ध भ्रमकों के साथ विदूर समुद्र को पार करके प्रतिष्ठान नामक नगर में पहुँचा था और वहाँ से ८ दिन में मुक्तिपुर पहुँचा था। बाराह-पुराण में भी समुद्र-यात्राएँ हैं। केवल ये शास्त्रीय प्रमाण ही नहीं, विदेशियों ने भी इस विषय पर प्रकाश डाला है।

यूरोप के प्रसिद्ध इतिहास-वेत्ता सल्लावो साहब ने लिखा है कि भारतवासी गङ्गा के मुहाने से समुद्र प्रवेश करते थे। वे जहाज़ द्वारा 'पालीबोथ्र' तक जाते थे। मैक्फ़र्सन के 'एनल्स ऑफ़ कॉमर्स' नामक ग्रन्थ में लिखा है कि भारतवासी अपना वाणिज्य-व्यापार दूर-दूर तक करते थे, यहाँ तक कि मिश्र देश के साथ भी जहाज़ों द्वारा उनका व्यापार चलता था। प्रसिद्ध ऐतिहासिक ग्रीन लिखता है कि छठी शताब्दी में भारत के व्यापारी फ़ारस के बन्दरों पर थे। रॉयल एशियाटिक सोसाइटी के जनरल का पाँचवाँ भाग पढ़ने से पता चलेगा कि प्रसिद्ध चीनी यात्री फ़ाहियान भारतीय कर्मचारियों द्वारा परिचालित जहाज़ से चीन को गया था। इस पर कुछ ब्राह्मण भी सवार थे।

'पेरी प्लस ऑफ़ दी एसीथ्रीयन्यसी' नामक ग्रन्थ में लिखा है कि ग्रीक और हिन्दू-व्यापारी सकोटा नामक उपद्वीप में व्यापार के लिए जाते और वहाँ ठहरते थे।

रोम के होसिटस नामक एतिहासज्ञ ने हिन्दुओं की समुद्र-यात्रा और उनके व्यापार के विषय में लिखा है :—

"मसीह से कोई ६० वर्ष प्रथम कुछ हिन्दू-व्यापारियों के जहाज़ तूफ़ान में पड़ कर जर्मनी के किनारे आ लगे। उस समय क्विण्टस-मेटेलस और लूसियस वहाँ के अधि-कारी वर्ग थे। इन्हें सलवियनस के राजा ने मेटेलस की सेवा में उपस्थित किया, जो उस समय गाल प्रदेश का गवर्नर था।"

प्लीनी का कहना है कि ये साहसी हिन्दू एटलाण्टिक महासागर में से 'केप ऑफ़ गुड होप' के रास्ते आए थे। और वहाँ से उत्तर समुद्र के रास्ते गए थे। अथवा उससे भी अद्भुत प्रकार से ये वीर लोग जापान और साइबेरिया के किनारे पर से कामरू, चाट्सका, जम्बाला द्वीपों में होते हुए लेपलेण्ड और नॉरवे के मार्ग से बाल्टिक समुद्र या जर्मन-समुद्र में पहुँचे थे।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

पुराने शिला में जहाज़ों के चित्र हमें देखने को मिलते हैं—साँची के स्तूपों पर दो, जगन्नाथपुरी में एक, भुवनेश्वर में एक और एजेण्टा की गुफ़ाओं में चार चित्र जहाज़ों के मिलते हैं।

हम कहाँ तक अफ़सोस करें। जब कि प्राचीन हिन्दुओं ने साधारण जहाज़ों पर पृथ्वी को पैरों से रौंद डाला था—आज यात्रा के ऐसे सुगम और निर्भय मार्ग होने पर हम धर्म-भय से चुप पड़े रहें, तो हमारे समान भाग्यहीन और मूर्ख पृथ्वी पर कौन होगा? क्या मारवाड़ के युवक साहस करेंगे? जैसे ज़िन्दा जाति के युवक किया करते हैं। क्या लिंडले नामक १९ वर्ष के अमेरिकन बालक का साहस वे नहीं देखते? क्या उन्हें यूरोप और अमेरिका के उठते युवकों के उद्यम, साहस, वीरता, एवं दृढ़ता को देख कर उनके मन में स्पर्द्धा नहीं पैदा होती? क्या वे मारवाड़ के नाम को उज्ज्वल न करेंगे?

खेतान-बन्धु और बिड़ला-बन्धु ने मारवाड़ी-समाज के लिए विदेश-यात्रा के मार्ग सुलभ कर दिए हैं। श्री० रामेश्वर जी बज़ाज लण्डन की छाती पर व्यापार करके मारवाड़ी-समाज का नाम ऊँचा कर रहे हैं। मोहता-बन्धुओं ने समुद्रीय यात्राओं को सुगम बनाने में करोड़ों रुपयों की सम्पत्ति लगा दी है। अब भी क्या मारवाड़ी-वीर बच्चे, झूठे पण्डितों के पोथी-पत्रों पर विश्वास करके जीवन नष्ट करते रहेंगे?

* * *

बाल-विवाह-निषेध क़ानून

शारदा-बिल या बाल-विवाह-निषेध बिल बड़ी व्यवस्थापिका सभा की विशेष समिति द्वारा संशोधित होकर, बड़ी व्यवस्थापिका सभा तथा राज्य-परिषद् से जिस रूप में पास हुआ है, और जिस पर हस्ताक्षर करके गवर्नर जनरल महोदय ने उसे क़ानून बना दिया है, उसका आशय इस प्रकार है :—

चूँकि बाल-विवाह का निषेध आवश्यक है, इसलिए यह क़ानून बनाया जाता है :—

(१) (क) यह क़ानून सन् १९२९ ई० का बाल-विवाह-निषेध क़ानून कहलाएगा।

(ख) यह समस्त ब्रिटिश-भारत पर मय ब्रिटिश-बलूचिस्तान और सन्ताल परगने के, लागू होगा।

(ग) यह क़ानून १ अप्रैल, सन् १९३० ई० से काम में लाया जायगा।

(२) इस क़ानून में—

(क) "बाल" का अभिप्राय १८ वर्ष से कम उमर वाले लड़के और १४ वर्ष से कम उमर वाली लड़की से है।

(ख) "बाल-विवाह" का अभिप्राय उस विवाह से है, जिसमें वर या वधू दोनों में से कोई भी "बाल" हो।

(ग) "नाबालिग़" का अभिप्राय १८ वर्ष से कम उमर वाले लड़के या लड़की से है।

(३) १८ वर्ष से अधिक और २१ वर्ष से कम अवस्था का कोई पुरुष यदि किसी बालिका (अर्थात् १४ वर्ष से कम उमर की लड़की) से विवाह करेगा, तो उस पर एक हज़ार रुपए तक का जुरमाना हो सकेगा।

(४) २१ वर्ष से अधिक अवस्था वाला कोई पुरुष यदि किसी बलिका से विवाह करेगा, तो उसे एक महीने तक सादी क़ैद या एक हज़ार रुपए तक जुरमाना या दोनों सज़ाएँ एक साथ दी जा सकेंगी।

(५) यदि कोई व्यक्ति बाल-विवाह करावेगा (पुरोहित आदि) या करने की आज्ञा देगा (वर-कन्या के माता-पिता, संरक्षक आदि), तो उसे एक महीने तक की सादी क़ैद या एक हज़ार रुपए तक जुरमाना, या दोनों सज़ाएँ साथ-साथ दी जा सकेंगी। किन्तु यदि अभियुक्त यह प्रमाणित कर सके कि उसे इस बात का कोई ज्ञान न था कि यह बाल-विवाह है, तो वह दोष-मुक्त कर दिया जायगा।

(६) (क) कोई नाबालिग़ व्यक्ति यदि बाल-विवाह करेगा और उसके माता-पिता या अभिभावक, जिनकी देख-रेख में वह व्यक्ति हो, उस विवाह को रोकने में अपने कर्तव्य की अवहेलना करेंगे या उस विवाह को करने की आज्ञा देंगे, तो उन्हें एक मास तक की सादी क़ैद या एक हज़ार रुपए तक जुरमाना

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

या दोनों सज़ाएँ एक साथ दी जा सकेंगी। स्त्रियों को क़ैद की सज़ा नहीं दी जा सकेगी।

(ख) बाल-विवाह करने वाले व्यक्ति के माता-पिता या अभिभावक की ओर से यदि प्रमाण न दया जा सकेगा, तो इस प्रकार से मुक़द्दमों में यह बात मान ली जायगी कि बाल-विवाह को रोकने के सम्बन्ध में उन्होंने अपने कर्तव्य की अवहेलना की है।

(७) अदालत को यह अधिकार न होगा कि वह इस क़ानून की धारा ३ के अनुसार, किसी अभियुक्त के जुरमाना न दे सकने पर, उसे क़ैद की सज़ा दे सके।

(८) प्रेज़िडेन्सी मैजिस्ट्रेट या ज़िला मैजिस्ट्रेट के अतिरिक्त, अन्य किसी भी अदालत को बाल-विवाह सम्बन्धी मुक़द्दमों पर विचार करने का अधिकार न होगा।

(९) इस क़ानून से सम्बन्ध रखने वाले किसी भी मुक़द्दमे पर कोई अदालत ऐसी दशा में विचार नहीं कर सकती, जब कि विवाह होने के एक वर्ष के भीतर ही मुक़द्दमा दायर न किया गया हो।

(१०) इस क़ानून सम्बन्धी किसी मुक़द्दमे की जाँच या तो अदालत स्वयं करेगी, या अपने अधीन किसी प्रथम श्रेणी के मैजिस्ट्रेट से करावेगी। इस प्रकार के मुक़द्दमों में पुलिस को हस्तक्षेप करने का कोई अधिकार न होगा।

(११) (क) मुक़द्दमा दायर करने वाले व्यक्ति का बयान लेने के बाद और अभियुक्त के नाम सम्मन जारी करने के पहले, अदालत मुक़द्दमा दायर करने वाले व्यक्ति से १०० रु० का मुचलका, मय ज़मानत के या बिना ज़मानत के, इसलिए ले लेगी कि यदि यह प्रमाणित हो जाय कि मुक़द्दमा केवल अभियुक्त को तङ्ग करने के अभिप्राय से दायर किया गया था, तो ऐसी दशा में अदालत अभियोग लगाने वाले व्यक्ति से अभियुक्त को हरजाना दिला सके। अदालत द्वारा निश्चित अवधि के भीतर यदि ज़मानत न दाख़िल की जायगी, तो नालिश ख़ारिज कर दी जायगी।

(ख) इस धारा के अनुसार लिया हुआ मुचलका फ़ौजदारी क़ानून के अनुसार लिया हुआ मुचलका समझा जायगा।

* * *

"स्वतन्त्र" की शिष्टता

हाल ही में, हमें विवश हो कर, एक कठोर-कर्तव्य का पालन करना पड़ा है। पाठकों को स्वीकार करना पड़ेगा कि वर्तमान परिस्थिति को देखते हुए हमने जो कुछ किया है, वह सर्वथा अनुचित नहीं कहा जा सकता। जनता के प्रति पत्र-पत्रिकाओं का कर्त्तव्य बहुत ही महान् है। यह प्रजातन्त्र का युग है; इस युग में पत्र-पत्रिकाएँ ही एकमात्र ऐसे प्रभावशाली साधन हैं, जिनके द्वारा लोकमत प्रकाशित होता है और साथ ही साथ वह पुष्ट भी होता है। पत्रों के बढ़ते हुए प्रभाव के कारण पत्र-सम्पादकों का उत्तरदायित्व पहले की अपेक्षा बहुत बढ़ गया है। हमें दुःख के साथ यह स्वीकार करना पड़ता है कि हिन्दी के अधिकांश पत्र-सम्पादकों को अपने इस गम्भीर उत्तर-दायित्व के पालन में यथोचित कर्त्तव्य-ज्ञान का परिचय अभी तक नहीं हो पाया है। हिन्दी की पत्र-पत्रिकाएँ तो उत्तरदायित्व-शून्यता के लिए एक प्रकार से उदाहरण-सी हो गई हैं! भारत के पतित वातावरण में जन-समूह के सुधार और पीड़ितों के उद्धार के लिए लिखने का मसाला सामान रहते हुए भी, हिन्दी की अनेक पत्र-पत्रिकाएँ द्वेष-भाव से प्रेरित होकर एक-दूसरे के विरुद्ध विष उगलने में प्रवृत्त हो रही हैं! यह देश का भीषण दुर्भाग्य नहीं तो और क्या है?

हम खरी समालोचना के विरोधी नहीं हैं, चाहे वह कटु से कटु क्यों न हो। निष्पक्ष समालोचक का कार्य उस चतुर माली के समान है, जो साहित्य-रूपी वाटिका से हानिकारक घास-फूस को उखाड़ कर फेंक देता है। परन्तु हमारी यह निश्चित-सम्मति है कि समालोचना होनी चाहिए सत्य और प्रामाणिक घटनाओं या बातों के आधार पर। कल्पित बातों के आधार पर और राग-द्वेष से प्रेरित होकर की जाने वाली समालोचना न तो लोक के लिए लाभदायक है और न इससे पत्र-सम्पादक

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

की ही सद्प्रवृत्ति का परिचय मिलता है। कुछ दिनों तक तुच्छे पाठकों की सहानुभूति उन्हें भले ही प्राप्त हो सके, पर इस उन्नति और विकास के युग में इस प्रकार की धाँधली अधिक दिनों तक सर्व-साधारण की आँख में धूल कदापि नहीं झोंक सकती। यही कारण है कि प्रायः नित्य ही हमें ऐसे दायित्वहीन पत्र-पत्रिकाओं की कुसमय मृत्यु का दुखदायी समाचार मिलता रहता है! क्या हिन्दी की पत्र-पत्रिकाएँ इन अकाल-बलिदानों से शिक्षा ग्रहण नहीं कर सकतीं?

हमें हाल में एक ऐसे ही नीचतापूर्ण आक्षेप के विरुद्ध न्याय की शरण लेनी पड़ी है। जब हमने अन्य किसी भी उपाय से न्याय की रक्षा होते न देखा, तभी दुःखद कर्तव्य समझ कर यह कार्य किया है। यदि हम ऐसा न करते तो हमारी व्यक्तिगत हानि तो होती ही; साथ ही हम निष्पक्ष समालोचना एवं कलुषित आक्षेपों को प्रश्रय देने के भी अपराधी समझे जाते।

पाठकों को याद ही होगा कि विगत मार्च में इस संस्था द्वारा प्रकाशित प्रसिद्ध प्रामाणिक ऐतिहासिक ग्रन्थ—'भारत में अङ्गरेज़ी राज्य'—किस प्रकार प्रकाशन के दो ही दिनों में यू० पी० सरकार द्वारा नाटकीय ढङ्ग से ज़ब्त कर लिया गया था! इसी सम्बन्ध में कलकत्ते के हिन्दी दैनिक पत्र "स्वतन्त्र" के विगत आषाढ़ कृष्ण ११ के सम्पादकीय स्तम्भों में "इस ज़ब्ती में क्या रहस्य है" शीर्षक अग्र-लेख प्रकाशित हुआ था। लेख के शीर्षक से यह भाषित होता है कि सम्पादक जी ने इसमें सरकारी नीति की निर्भय समालोचना की होगी! पर दुर्भाग्यवश बात इसके ठीक विरुद्ध थी। सम्पादक जी ने सरकारी नीति की समालोचना करने के बदले, प्रकाशक पर कई निराधार आक्षेप किए थे, जिन्हें पढ़ कर हमें दुःख हुआ। किन्तु हमने अपने दुःख की चर्चा न तो "स्वतन्त्र" के सम्पादक जी से की और न 'चाँद'-परिवार को ही यह दुःखद समाचार सुना कर उन्हें दुखी करना चाहा। हमने इस तुच्छ प्रसङ्ग को महत्व देना सौजन्य के अनुकूल न समझ कर, इसे भूल जाने की चेष्टा की; पर खेद है कि कई कारणों से इस कार्य में हमें सफलता न मिल सकी। इसका ख़ास कारण था।

उक्त लेख के प्रकाशित होने के कुछ ही रोज़ बाद हमारे पास इस सम्बन्ध में बहुत सी शिकायतें आने लगीं। हमारे सम्बन्ध में लोगों में कई प्रकार के भ्रम फैलने लगे। हमने यह भी अनुभव

नवीन वर्ष का स्वागत

इस विशेषाङ्क के साथ 'चाँद' अपने जीवन के ८ वें वर्ष में पदार्पण कर रहा है। विगत सात वर्षों में 'चाँद' के द्वारा मातृ-भूमि की सेवा करके हमें जो विपुल आनन्द प्राप्त हुआ है, तदर्थ हम अपने ग्राहकों, पाठकों, लेखकों एवं हितैषियों के प्रति कृतज्ञ हैं। इन सात वर्षों में हमने 'चाँद' को समाज के लिए उपयोगी, रोचक और सर्वजन-सुलभ बनाने का शक्ति-भर प्रयत्न किया है। इस प्रयत्न में हमें कहाँ तक सफलता मिली है—इसका निर्णय पाठकों पर ही छोड़ना उचित है। गत वर्ष हमारे ऊपर कई असाधारण विपत्तियों के आ जाने के कारण हम 'चाँद' को जितना उपयोगी बनाना चाहते थे, उतना नहीं बना सके, तथापि जनता को हमारी सेवाओं से सन्तोष और प्रसन्नता प्राप्त हुई है, इसमें हमें लेश-मात्र भी सन्देह नहीं। हम अपने हृदय का समस्त उत्साह और अपने ग्राहकों तथा अनुग्राहकों का सम्पूर्ण सद्भाव लेकर नवीन वर्ष का स्वागत करते हैं। मातृ-भूमि की उन्नति के पथ पर प्रेरित करने में परमात्मा 'चाँद' के सहायक हों!

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

किया कि हमारी आर्थिक अवस्था पर उक्त आक्षेपों का बहुत ही हानिकारक प्रभाव पड़ सकता है। जब हमें इस बात का दृढ़ निश्चय हो गया कि उक्त आक्षेपों का खण्डन करना हमारे लिए अत्यन्त आवश्यक है, तो हमने "स्वतन्त्र" के सम्पादक जी को पत्र लिख कर उनसे इस बात का अनुरोध किया कि कृपा कर वे ही एक वक्तव्य छापकर उन निराधार बातों का खण्डन कर दें, जो हमारे प्रति लोगों में भ्रम फैला रही हैं। पर यह जानकर हमारे दुःख का ठिकाना न रहा कि "स्वतन्त्र" के सम्पादक जी हमारे साथ इतना भी सौजन्य दिखाने के लिए प्रस्तुत न थे! उन्हें एक सुप्रसिद्ध बैरिस्टर श्री० आर० एस० पण्डित द्वारा इस सम्बन्ध में नोटिस भी दिलाया गया, पर नोटिस तक का उत्तर नहीं दिया गया! शिष्टता का यह दूसरा नमूना है!!

अन्त में विवश होकर हमें इलाहाबाद के ज्वाएण्ट मैजिस्ट्रेट की अदालत में "स्वतन्त्र" के सम्पादक, मुद्रक और प्रकाशक पर मानहानि का दावा दायर करना पड़ा। तारीख़ पड़ी। "स्वतन्त्र" के 'वयोवृद्ध' स्वनाम-धन्य सम्पादक पण्डित अम्बिकाप्रसाद जी वाजपेयी तथा प्रकाशक महोदय अदालत के सामने उपस्थित हुए। वे अपने लेख के समर्थन में कोई प्रमाण न दे सके! उन्होंने अपनी इस भयङ्कर भूल को स्वीकार करते हुए इन पंक्तियों के लेखक से क्षमा की भिक्षा खुले शब्दों में माँगी। यद्यपि हमें सुलह करने की कोई आवश्यकता न थी और यदि हम चाहते तो दीवानी मुक़द्दमा दायर करके "स्वतन्त्र" से भरपूर हरजाना भी वसूल कर सकते थे, तथापि हमने इस मुक़द्दमेबाज़ी को हिन्दी-संसार के लिए कोई गौरव की बात न समझ कर, तथा कई प्रतिष्ठित मित्रों के अनुरोध का सम्मान करते हुए "स्वतन्त्र"-सम्पादक की क्षमा-याचना को स्वीकार कर लिया और मुक़द्दमा उठा लिया गया॥

"स्वतन्त्र" के सम्पादक तथा प्रकाशक ने हमें मुक़द्दमे के ख़र्च का एक अंश १८०) रु० दिए तथा क्षमा-याचना के रूप में निम्न-लिखित वक्तव्य अपनी ओर से तारीख़ ८ अक्टूबर, १९२९ के "स्वतन्त्र" के सम्पादकीय स्तम्भों में प्रकाशित करके अपने अपराध का प्रायश्चित्त किया है:—

"भारत में अङ्गरेज़ी राज्य" के विषय में

स्वतन्त्र के गत आषाढ़ कृष्ण ११ बुधवार के अङ्क में "इस ज़ब्ती में क्या रहस्य है" शीर्षक जो अग्र-लेख प्रकाशित हुआ था, उससे यह ध्वनि निकलती है कि 'भारत में अङ्गरेज़ी राज्य' के प्रकाशक ने—

(१) संयुक्त प्रान्तीय सरकार के ऊँचे अफ़सरों से मिल कर "भारत में अङ्गरेज़ी राज्य" नामक पुस्तक, इसलिए ज़ब्त करा दी थी, ताकि ज़ब्ती के बाद वह अच्छे दामों में बिक सके।

(२) पुस्तक के लेखक श्रीमान् सुन्दरलाल जी को पुस्तक की लिखाई का पूरा पारिश्रमिक नहीं दिया।

(३) पुस्तक को ज़ब्त कराके उसके प्रकाशक महाशय ने अनुचित नामवरी ही नहीं कमा ली, बल्कि मुक़द्दमे की पैरवी के ख़र्च के लिए अपील की, जिससे उनके दोनों हाथ लड्डू रहे—इत्यादि।

(४) 'भारत में अङ्गरेज़ी राज्य' नामक पुस्तक की कॉपियाँ, जिसके दो भागों का मूल्य १६) रु० था, २०-२० रुपयों में बेची गईं।

हमें खेद है कि इस तरह की बातें प्रकाशित करने के पहले इनकी जाँच नहीं की गई थी और अब मालूम हुआ कि ये समस्त बातें असत्य और निराधार थीं। इस तरह की बातें छपीं, इसका हमें अत्यन्त खेद है।

हमारे उक्त लेख से पाठकों के मन में उक्त 'भारत में अङ्गरेज़ी राज्य' के प्रकाशक के विषय में यदि कोई घृणोत्पादक भाव उत्पन्न हुआ हो तो वे उसे दूर कर दें, और प्रकाशक महाशय से भी अपनी इस भूल के लिए हम सादर क्षमा-प्रार्थी हैं।

हमारे प्रति "स्वतन्त्र" का यह पहला ही आक्षेप था। इसके पहले भी जब एक बार मारवाड़ी-समाज हमारी एक सत्य समालोचना से चिढ़ कर 'चाँद' का

(शेष मैटर २९५ पृष्ठ के दूसरे कॉलम में देखिए)

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

आर्य

—०—

१५ सितम्बर, १९२९

चोट पर चोट

मालूम हो रहा है कि किसी अदृश्य-शक्ति की प्रेरणा से प्रान्तीय सरकारों ने प्रयाग के सहयोगी 'चाँद' को नेस्त-नाबूद करने का निश्चय कर लिया है। हमारी इस धारणा का हाल की एक और ताज़ी घटना है। सी० पी० के शिक्षा-विभाग के डाइरेक्टर ने भी स्वीकृत समाचार-पत्रों की सूची से 'चाँद' का नाम काट दिया है, इसके फल-स्वरूप 'चाँद' अब सी० पी० शिक्षणालयों में न प्रवेश पा सकेगा। यह ठीक है कि 'चाँद' का प्रचार इस उपाय से सी० पी० में नहीं रुक सकता—'चाँद' की हस्ती को मिटाने का यह प्रयत्न विफल होगा, इसमें भी सन्देह नहीं है। पर दीखता है, सरकार ने धीरे-धीरे 'चाँद' को भारतीय समाचार-पत्र-क्षेत्र से सर्वथा हटाने का निश्चय कर लिया है। आश्चर्य नहीं, यदि हम कल सुनें कि बिहार ने भी सी० पी० और यू० पी० की सरकारों के पद-चिन्हों पर चलने का निश्चय कर लिया है। सी० पी० सरकार का यह कार्य एक सोची-समझी नीति की श्रृङ्खला की एक कड़ी है। सरकारी चोटों का अन्त कहाँ जाकर होगा, यह 'चाँद' की सेवा की पवित्र भावनाएँ ही बताएँगी, पर सरकार जिस नीति को बरत रही है, उससे उसका मनोरथ सिद्ध नहीं होगा। शिक्षा-शालाओं द्वारा 'चाँद' चाहे विद्यार्थियों को न मिले, पर घरों में जाने से 'चाँद' को तो शिक्षा-विभाग नहीं रोक सकता! यदि इस प्रकार पढ़ने देने से ब्रिटिश-सत्ता कमज़ोर नहीं होती और ब्रिटिश फ़ौलादी पञ्जे की मज़बूती में अन्तर नहीं आता और ज़ङ्ग नहीं लगता तथा सम्राट् के प्रति राज्य-निष्ठा और सम्राट्-भक्ति में अन्तर नहीं आता—तो शिक्षा-शालाओं द्वारा विद्यार्थियों को 'चाँद' देने से कौन सी आपत्ति का पहाड़ टूट पड़ेगा, यह समझ में नहीं आता? 'चाँद' जनता की सेवा की भावना से प्रकाशित हुआ है। यह पवित्र भावना ही उसकी सब आपत्तियों से रक्षा करेगी। लोक-सेवा का पथ विदेशी शासन में कण्टकाकीर्ण है—पर विजय निश्चित है।

'चाँद' पर आई विपत्तियाँ हिन्दी-पत्रकारों और सञ्चालकों को सङ्गठित होने के लिए बार-बार प्रेरणा कर रही हैं। आज जो तलवार 'चाँद' पर गिरी है, कल वह अन्यों पर भी गिर सकती है। सङ्गठित सरकार जब कुचलने को आमादा ही है, तब क्यों न जनता के सेवक भी सङ्गठित होकर सेवा के लिए आगे बढ़ें? देश का, विशेषतः हिन्दी-भाषा-भाषी समाज का, कर्त्तव्य है कि इस समय 'चाँद' की सेवाओं की उपयोगिता को अनुभव करे और उसे अपनाए और सरकार की इस चुनौती का सक्रिय जवाब देकर सिद्ध कर दे कि जनता के प्रिय पत्र को, जनता की इच्छा और चाह को, सरकार नष्ट नहीं कर सकती; वहाँ सारे हथियार कुण्ठित हो जाते हैं। 'चाँद' की विजय लोकमत की विजय है।

* * *

(२९४ पृष्ठ का शेषांश)

बहिष्कार करने का आन्दोलन कर रहा था, तब भी "स्वतन्त्र" ने 'चाँद' के विरुद्ध एक लेख-माला ही प्रकाशित करके अपनी सङ्कीर्णता का परिचय दिया था। इस बार जब "भारत में अङ्गरेज़ी राज्य" जैसी प्रामाणिक पुस्तक के ज़ब्त हो जाने से हम दुःखी थे और हमें आश्वासन तथा सहानुभूति की सब से अधिक आवश्यकता थी, "स्वतन्त्र" ने हमें मर्मभेदी आघात पहुँचाने की चेष्टा की है। "स्वतन्त्र" हमारे साथ ऐसा व्यवहार क्यों किया करता है, इस बात का ज्ञान हमें नहीं है। किन्तु "स्वतन्त्र" जिस प्रकार सर्वथा निराधार और कल्पित बातें कह कर हमें बदनाम करने की चेष्टा किया करता है, इसे हम हिन्दी के एक "वयोवृद्ध" और "अनुभवी" सम्पादक के लिए प्रशंसा की बात नहीं समझते। ऐसे उत्तरदायित्वहीन लेखों का प्रकाशित होना—विशेषतः सम्पादकीय लेख के रूप में—हिन्दी पत्र-पत्रिकाओं के लिए वास्तव में बड़ी लज्जा की बात है!!

हम "स्वतन्त्र" के इन निन्दनीय हथकण्डों को उपेक्षा की दृष्टि से देखते हैं और आशा करते हैं कि 'चाँद' के ग्राहक, अनुग्राहकगण भी इन हथकण्डों को तुच्छ समझ कर, इन पर ध्यान न देंगे तथा "स्वतन्त्र" की इस भूल को क्षमा कर देंगे।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

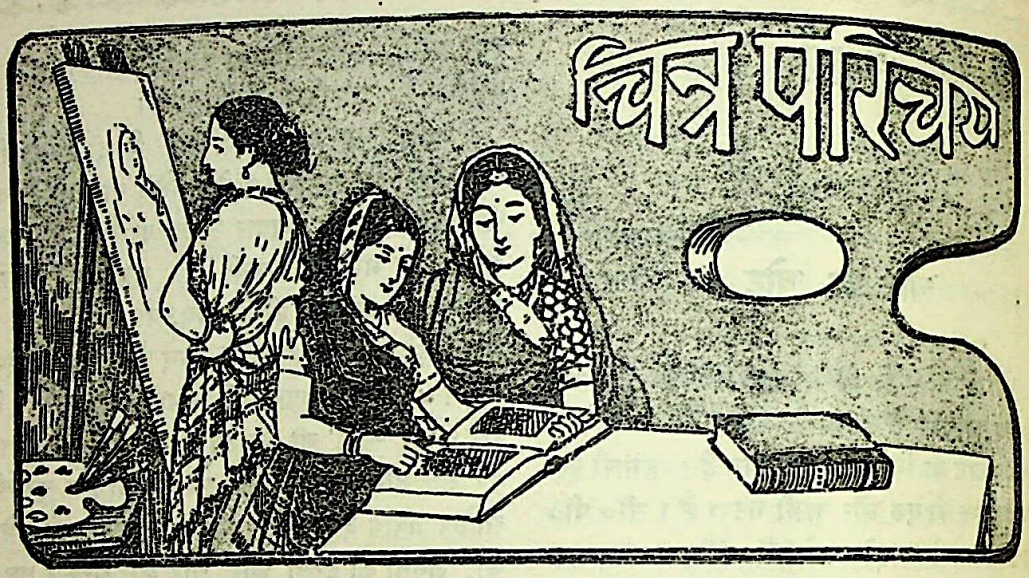

राजपूताना के राजवंश

राजपूताना के जिन राजवंशों के तिरङ्गे चित्र हमें प्राप्त हो सके और इस अङ्क में अन्यत्र दिए जा रहे हैं, उनका संक्षिप्त परिचय यहाँ दिया जा रहा है। इनमें बीच-बीच में जो कई राजे-महाराजे और गद्दी पर बैठे, उनके चित्र तथा परिचय बहुत चेष्टा करने पर भी हमें प्राप्त नहीं हो सके। जो चित्र प्रकाशित हैं, नीचे उन्हीं का परिचय और शासन-काल (जो हमें मिल सका) दिया जा रहा है :—

उदयपुर-राजवंश

१ महाराणा उदयसिंह		१५४१
२ महाराणा प्रतापसिंह		१५७२
३ महाराणा अमरसिंह		१५९७
४ महाराणा करनसिंह		१६२१
५ महाराणा जगतसिंह		१६२८
६ महाराणा राजसिंह		१६६१
७ महाराणा जयसिंह		१६८१
८ महाराणा अमरसिंह	(दूसरा)	१७००
९ महाराणा संग्रामसिंह		१७१६
१० महाराणा जगतसिंह	(दूसरा)	१७३४
११ महाराणा प्रतापसिंह	(दूसरा)	१७५२
१२ महाराणा राजसिंह	(दूसरा)	१७५५
१३ महाराणा अरसीसिंह		१७६१
१४ महाराणा हमीरसिंह		[illegible]
१५ महाराणा भीमसिंह		[illegible]
१६ महाराणा ज्वानसिंह		[illegible]
१७ महाराणा सरदारसिंह		[illegible]
१८ महाराणा सरूपसिंह		[illegible]
१९ महाराणा शिम्भूसिंह		[illegible]
२० महाराणा सज्जनसिंह		[illegible]
२१ महाराणा सर फ़तेहसिंह, जी० सी० एस० आई०		[illegible]

* * *

जोधपुर-राजवंश

१ राव शिवाजी		[illegible]
२ राव रीरमल		[illegible]
३ राव जोधाजी		[illegible]
४ राव शुजा	(राज्य नहीं किया)	[illegible]
५ राव उदयसिंह		[illegible]
६ राव गङ्गासिंह		[illegible]
७ राव मालदेव		[illegible]
८ राव उदयसिंह	(मोटा राजा)	[illegible]
९ राजा शूरसिंह		[illegible]
१० राजा गजसिंह		[illegible]
११ महाराजा यशवन्तसिंह	(पहला)	[illegible]
१२ महाराजा अजीतसिंह		[illegible]
१३ महाराजा अभयसिंह		[illegible]
१४ महाराजा रामसिंह		[illegible]

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

१५ महाराजा बख्तसिंह १७५१
१६ महाराजा विजयसिंह १७५३
१७ महाराजा भीमसिंह १७६४
१८ महाराजा मानसिंह १८०४
१९ महाराजा तख़्तसिंह १८४३
२० महाराजा जसवन्तसिंह (दूसरा), जी० सी० एस० आई० १८७३
२१ महाराजा सरदारसिंह १८९५

* * *

जयपुर-राजवंश

१ महाराजा पृथ्वीराज १५०३—२८
२ महाराजा पूरनमल १५२८—३४
३ महाराजा भीम १५३४—३७
४ महाराजा रतन १५४८
५ महाराजा आसकरन १५४८
६ महाराजा भारमल १५४८—७४
७ महाराजा भगवानदास १५७४—९०
८ महाराजा मानसिंह १५९०—१६१५
९ महाराजा भावसिंह १६१५—२२
१० महाराजा जयसिंह (पहला) १६२२—६८
११ महाराजा रामसिंह (पहला) १६६८—९०
१२ महाराजा बिसनसिंह १६९०—१७००
१३ महाराजा जयसिंह (दूसरा) १७००—४४
१४ महाराजा ईसरीसिंह १७४४—५१
१५ महाराजा माधोसिंह (पहला) १७५१—६८
१६ महाराजा पृथ्वीसिंह १७६८—७९
१७ महाराजा प्रतापसिंह १७७९—१८०३
१८ महाराजा जगतसिंह १८०३—१८
१९ महाराजा जयसिंह (तीसरा) १८१८—३५
२० महाराजा रामसिंह (दूसरा) १८३५—८०
२१ महाराजा सर माधोसिंह (दूसरा), जी० सी० एस० आई० १८८०—

* * *

बीकानेर-राजवंश

१ राव बीका
२ राव नारा
३ राव लूनकरन
४ राव जैतसी
५ राव कल्यानसिंह
६ राजा रायसिंह
७ राजा दलपतसिंह
८ राजा सुरसिंह
९ राजा करनसिंह
१० महाराजा अनूपसिंह
११ महाराजा सरूपसिंह
१२ महाराजा सजनसिंह
१३ महाराजा ज़ोरावरसिंह
१४ महाराजा गजसिंह
१५ महाराजा राजसिंह
१६ महाराजा प्रतापसिंह
१७ महाराजा सूरतसिंह
१८ महाराजा रतनसिंह
१९ महाराजा सरदारसिंह
२० महाराजा डूँगरसिंह
२१ महाराजा गङ्गासिंह (वर्तमान)

* * *

बूँदी-राजवंश

१ महराव सुरजन १५३३
२ महराव भोज १५८८
३ महराव रतन १६०७
४ महराव गोपीनाथ १६१४
५ महराव छत्रशाल (छतरसाल) १६३१
६ महराव भावसिंह १६५९
७ महराव अनरुद्धसिंह १६८२
८ महराव बुधसिंह १७४४ मृत्यु १८०४
९ महराव उम्मेदसिंह १७७१
१० महराव अजीतसिंह १७७२
११ महराव बिसनसिंह १८२१
१२ महराव रामसिंह १८८९
१३ महराव राजा रघुवीरसिंह

* * *

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

मारवाड़ के वीर पिता और पुत्र
ठाकुर केसरीसिंह जी

चारण-जाति सदा से क्षत्रियों के लिए, राजनैतिक-शिक्षा-गुरू, वीरता की प्रोत्साहक, विपत्ति में सहायक और पूज्य रही है। चारणों की ज्वलन्त वीरता के आदर्श से किसी राज्य का इतिहास ख़ाली नहीं। चारणों में भी ५०० वर्ष पूर्व निराश महाराणा हम्मीर का छूटा हुआ चित्तौड़ अपने बुद्धि-वैभव और बाहु-बल से फिर से दिलाने वाले, इतिहास-प्रसिद्ध वीरवर "सौदा बारहठ बारू" की सन्तान वीरता में आज तक सदा अग्रणीय रही है। उसी वीर-वंश की तेईसवीं पीढ़ी में ठाकुर केसरीसिंह जी हैं। मेवाड़ के अन्तर्गत शाहपुरा-राज्य में ठाकुर केसरीसिंह के पूर्व-पुरुषों की जागीर चली आती थी। और यह घर शाहपुरा-राज्य के प्रथम श्रेणी के उमराव सरदारों से भी अधिक सम्मानित रहा है। केसरीसिंह जी के पिता बारहठ कृष्णसिंह जी ने अपने बुद्धि-वैभव से राजपूताना के समस्त नरेशों से सम्मान प्राप्त किया और वे अपने समय में राजपूताना एवं मध्य-भारत में प्रधान राजनीतिज्ञ माने गए थे।

कृष्णसिंह जी के तीन पुत्र थे—केसरीसिंह, किशोरसिंह और ज़ोरावरसिंह। केसरीसिंह जी का जन्म वै० सम्बत् १९२९ के मार्गशीर्ष कृष्ण ६ को अपनी जागीर के गाँव देवपुरा में हुआ और जन्म से एक मास बाद ही जन्मदात्री का स्वर्गवास हो गया। ये भी अपनी तरुण अवस्था में ही बुद्धि-वैलक्षण्य से महाराणा उदयपुर के सलाहकारों की श्रेणी में पहुँच गए थे। वैशाख, सम्बत् १९५६ में वर्तमान कोटा-नरेश उम्मेदसिंह की गुण-ग्राहकता ने केसरीसिंह को खींचा और ये कोटा आ गए और वहीं पर रहने लगे।

केसरीसिंह जी अठारह-उन्नीस वर्ष की अवस्था से ही जातीय और सामाजिक सुधारों में उत्साहपूर्वक भाग लेते रहे थे और स्वदेश की पतित दशा का भी उनको ध्यान बना रहता था। सन् १९११ में उनकी ओर से "राजपूत-जाति की सेवा में अपील" निकलते ही भारत की नौकरशाही चौकन्नी हो गई। परन्तु केसरीसिंह जी शिक्षा और सङ्गठन का ही कार्य करते थे और उनकी "स्वतन्त्र छात्र-शिक्षा" व "छात्र-शिक्षा-परिषद्" का ढाँचा इतना मज़बूत था कि उसे डिगाना सहज नहीं था, क्योंकि स्वजाति-हित से प्रेरित होकर राजपूताना व मध्य-भारत के नरेश और बड़े-बड़े राजपूत उमराव और सरदार भी उसमें सम्मिलित थे। ऐसे कार्य को ख़तरनाक कैसे कहा जाय!

परन्तु जब सरकार ने देखा कि भारतीय सेना में जो राजस्थानी राजपूत सिपाही और अफ़सर हैं, वे भी अपने असहाय बालकों के शुभ-भविष्य और जाति-गौरव के पुनर्दर्शन की आशा से केसरीसिंह जी की सेवा को अमूल्य समझ कर उत्साहपूर्वक सहयोग देने लगे हैं, तो वह व्यग्र हो उठी। सत्य की न जाँच की, न पड़ताल! सन् १९१४ की ३१ मार्च के दिन शाहपुरा-नरेश को आगे रख कर सहसा केसरीसिंह जी को बिना कोई अभियोग लगाए गिरफ़्तार कर लिया, तीन मास तक इन्दौर की छावनी में भीलों की पल्टन के बीच बन्द रखा! उसी समय 'दिल्ली-षड्यन्त्र' 'आरा-केस' आदि चले, उन्हीं में किसी तरह फाँस देने की पूरी चेष्टा हुई, परन्तु निष्फल गई; क्योंकि वे क़ानूनी प्रान्त थे। तब यही उचित समझा कि सम्राट् का शासन उलट देने की नीयत के अभियोग पर राजस्थान के किसी राजा के हाथ से ही सज़ा दिलाई जाय, ताकि प्रत्येक नरेश काँप उठे और छात्र-शिक्षा का उद्योग छिन्न-भिन्न हो जाय। साथ ही राज्यों में सरकारी पुलिस का भी द्वार खुल जाय। राजद्रोह के साथ एक मर्डर (क़त्ल) का पुछल्ला जोड़ना तो कुटिल-सत्ता का सनातनधर्म है ही। कोटा को ही पसन्द किया गया, वहीं केस चला। प्रायः भारत के समस्त प्रान्तों के बड़े-बड़े अङ्गरेज़ पुलिस-ऑफ़िसर कोटा पहुँच गए, कई राज्यों के पोलीटिकल रेज़िडेण्ट भी कोटा में आए थे। 'पायोनियर' ने भी—अपना 'स्पेशल स्टॉफ़' यहाँ खोला। देखते ही देखते कोटा गौराङ्गों की छावनी बन गया। 'पायोनियर' और 'टाइम्स ऑफ़ इण्डिया' ठाकुर साहब के विरुद्ध आग उगल रहे थे। राजपूताना, मध्य-भारत के समस्त नरेशों की आँखें कोटा पर लगी हुई थीं, क्योंकि देशी राज्यों में यह अभूतपूर्व काण्ड था। राजद्रोह का कोई प्रमाण सरकार के हाथ में नहीं था, अधीन राज्य को घुड़की से मना देने की आशा थी; परन्तु केवल घुड़की से हाँ कह देने पर केसरीसिंह से सम्बन्ध रखने वाली सभी बड़ी रियासतें व्यर्थ आफ़त में पड़ती थीं। अतः साहसी कोटा-दीवान स्वर्गीय चौबे रघुनाथदास

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

जी ने, गला दबाए जाने पर भी, इस केस में राजनैतिक अपराध तो माना ही नहीं; अलबत्ता ठाकुर केसरीसिंह को बीस वर्ष की सज़ा ठोंक कर सरकार के आँसू पोंछ दिए!

सरकार तो ठाकुर साहब को भयङ्कर मानती ही रही। इसी से जगह-जगह खुले हुए राजपूत-बोर्डिङ्ग हाउस और सङ्गठन को बिखेर चुकने पर और केस के साथ ही विद्रोह भड़कने की आशङ्का मिटने पर, नौकरशाही ने ठाकुर केसरीसिंह जी को कोटे से माँग कर सुदूर हज़ारीबाग़ जेल में पहुँचा दिया!

ठाकुर साहब ने गिरफ़्तार होकर शाहपुरा छोड़ा। उसी दिन से अन्न न लेने की प्रतिज्ञा की! केवल दूध लेते थे। हज़ारीबाग़ पहुँचने पर कठिन परीक्षा शुरू हुई। वीरों को सङ्कल्प से विचलित करने में ही सरकार को मज़ा आता है। लङ्घन शुरू हुआ, निरन्तर २८ दिन निराहार बीते! जब अधिकारियों ने देखा कि कष्ट भोगने से पहले ही कहीं पक्षी उड़ न जाय, तब उन्तीसवें दिन थोड़ा सा दूध दिया गया। प्रतिज्ञा तो अन्न न लेने की थी, दूध ले लिया गया। एक सप्ताह बाद फिर लङ्घन शुरू हुआ, महीनों तक रबर की नली से पानी में थोड़ा सा चावल का माँड मिला कर पेट में ठूँसा जाता रहा। यह युद्ध अट्ठारह मास तक चला। इतनी अवधि तक काल-कोठरी से भी वे नहीं निकाले गए। आख़िर सरकार परास्त हुई। बिहार-उड़ीसा के जेलों के प्रधान अधिकारी (आई० जी०) ने आकर कहा कि केसरीसिंह! राणा प्रताप की हिस्ट्री से हम मेवाड़ के पानी की ताक़त को पहले ही जानते थे, शाबाश बहादुर! तुम जीत गए, सरकार हार गई, आज से दूध ही मिलता रहेगा। रहस्य दूध में नहीं, सङ्कल्प की अचलता में है।

सन् १९१९ में सरकार ने स्वयम् अपनी तरफ़ से केसरीसिंह जी से अपने केस की वायसराय के नाम अपील माँगी। जेल-अधिकारियों के अति आग्रह पर ही यह की गई और सन् १९१९ में जून के अन्त में ठाकुर साहब छोड़ दिए गए!!

* * *

वीर कुँवर प्रताप

जिस वीर का नाम आज भारत में विख्यात है, उस कुँवर प्रतापसिंह का जन्म राजपूताना की इतिहास-प्रसिद्ध वीर चारण-जाति में विक्रम सम्वत् १९५० की ज्येष्ठ शुक्ल ६ को उदयपुर में ठाकुर श्री० केसरीसिंह जी के घर माता श्री० माणिकदेवी की कुक्षि से हुआ। केसरीसिंह जी के कोटे आने पर प्रताप कोटे में शिक्षा पाता रहा। फिर दयानन्द एङ्गलो वैदिक स्कूल व बोर्डिङ्ग अजमेर में भेज दिया गया। मैट्रिक तक पढ़ा, परन्तु परीक्षा में नहीं बैठा, उसे सार्टिफ़िकेट की इच्छा नहीं थी, अङ्गरेज़ी पढ़ा ही इसलिए था कि इसके द्वारा भारत के किसी भी प्रान्त में सेवा कर सके और अपने को खपा सके। ठाकुर केसरीसिंह जी युनिवर्सिटी की शिक्षा को दासत्व का साँचा मानते थे। अतः प्रताप को पन्द्रह वर्ष की आयु में स्वतन्त्र शिक्षण के लिए जयपुर के प्रसिद्ध देशभक्त अर्जुनलाल जी सेठी के जैन बोर्डिङ्ग में रख दिया। वह जैन बोर्डिङ्ग जब जयपुर से उठ कर इन्दौर गया, तब प्रतापसिंह दिल्ली के प्रसिद्ध देशभक्त वीर अमीरचन्द जी के यहाँ रख दिए गए। प्रताप के संसर्ग में जो कोई भी आया, मुग्ध हो गया। ऐसी मोहिनी मूर्ति और दिव्य आत्मा क्वचित् ही मिलती है। अमीरचन्द जी के गिरफ़्तार होने से कुछ ही दिन पहले वह अपने पितुःश्री के पास आ गया था और पिता गिरफ़्तार हुए, उससे एक सप्ताह पहले अज्ञात-वास में चल दिया।

प्रताप ने अपने प्यारे चचा बलिष्ठ-वीर ठाकुर ज़ोरावरसिंह जी के साथ ही अपने शाहपुरा के विशाल प्रासाद को मार्च सन् १९१४ के तीसरे सप्ताह में अन्तिम प्रणाम किया। ३१ मार्च के दिन ठाकुर केसरीसिंह जी के समस्त पुरुष-परिवार पर वारण्ट निकले। चचा-भतीजे ढूँढ़े गए, ख़ूब ही ढूँढ़े गए, भारतीय सी० आई० डी० के दूतों ने राजपूताना और मध्य-भारत का घर-घर छान मारा, पर कहीं पता नहीं लगा।

ठाकुर साहब के मारवाड़ के भ्रमण-काल में, जिस पाँचेटिया ग्राम में पिता के चरणों में सिर रख कर प्रताप ने विदा ली, उस ग्राम के चारण व जागीरदारों से सरकार ने यह वादा लिखाया कि यदि कुँवर प्रताप इस ग्राम में कभी आ जायगा तो वे उसे गिरफ़्तार करा देंगे, वरना सर्वस्व खोवेंगे। जब सी० आई० डी० के पेटार्थी प्राणियों के पैर निराशा से ढीले हो चुके, तब एक दिन प्रताप सहसा इक़रार की कथा न जानने से, उसी ग्राम में जा खड़ा हुआ। सबके हृदयों में सन्नाटा छा गया।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

घुस-पुस होने लगी। किसी ने कहा दुःख है, परन्तु विवश हैं; दूसरे ने कहा, यह कभी हो सकता है कि हम प्रताप को आगे बढ़ कर सौंपें? प्रताप को मालूम होने पर उसने कहा, मेरे कारण किसी पर व्यर्थ विपत्ति आए, यह मुझे सह्य नहीं, मैंने अभी किया ही क्या है? मुझे कौन खाता है? चलो मैं तैयार हूँ, सरकार के सुपुर्द करके आप लोग बरी हो जायँ, यही मेरी प्रबल इच्छा है। अन्त में यह तय पाया कि हम प्रताप पर किसी तरह की सख़्ती सहन नहीं कर सकते। अधिकारी-वर्ग को कहा जाय कि यदि प्रताप के गिरफ़्तार होने पर जाँच तक हममें से कोई भी दो व्यक्ति निरन्तर उसके साथ रहने दिए जायँ, ताकि उस पर पुलिस का बेजा दबाव न पड़ सके, यहा शर्त स्वीकार हो तो हम उद्योग करके वह जहाँ होगा, वहाँ से लाकर पेश कर देंगे। क्योंकि हमारा विश्वास है कि वह सर्वथा निर्दोष है, नाहक़ छिप कर सरकार का सन्देह सिर पर लेने का बचपन करता है। यदि यह प्रार्थना स्वीकार हो जाय तो उसे सौंप दिया जाय, वरना फिर देखा जायगा। भारतीय पुलिस के उच्च गोरे अधिकारियों ने यह शर्त स्वीकार की और पहली बार प्रताप उनके हाथ में आया। कुछ दिन इधर-उधर घुमा कर कोटे ले जाकर छोड़ दिया गया।

प्रताप कोटा रह कर, कोटा-केस में अपने परम प्यारे पिता को कैसे-कैसे प्रपञ्चों की जाल में फाँसा जा रहा है, यह सब सजगता से देखता रहा। पिता की दृढ़ता और धैर्य उसके हृदय में आनन्द, गौरव और तेज भरते थे। देशभक्ति की आग से धधकते हुए हृदय-कुण्ड में पाशविक सत्ता के मदान्ध प्राणी अत्याचारों का पेट्रोल उड़ेल रहे थे। माता का निश्वास धमनी का काम दे रहा था। बन्धन में पड़े हुए पिता को प्रताप ने सन्देश भेजा—"दाता! (पिता को वह इसी शब्द से पुकारता था) कुछ विचार न करें, अभी प्रताप ज़िन्दा है।"

ठाकुर केसरीसिंह जी को आजन्म कारावास की सज़ा सुना दी गई। जलूस भी सब बिखर गया। एक दिन प्रताप ने जननी से कहा—"भाभा, धोती फट गई; कहीं से तीन रुपए का प्रबन्ध कर दो तो धोती लाऊँ, आज ही चाहिए।" माता के हाथ तो सर्वथा ख़ाली थे, कोशिश करने पर दो रुपए मिले और पुत्र के हाथ में दिए। प्रताप के लिए माता का दिया हुआ यही अन्तिम पाथेय था। बिना कुछ कहे, मन ही मन माता को अन्तिम प्रणाम कर सायङ्काल होते वह निकल पड़ा। शहर में पिता के एक मित्र के पास पहुँचे, कहा—जो कुछ भी तैयार हो, ले आओ, भोजन यहीं करूँगा। भोजन करते समय मित्र ने कहा—"कुँवर साहब! अब क्या इच्छा है?" प्रताप ने कहा—"शादी करना है।" "क्या कहते हो, शादी! आज तक स्वीकार न की, अब इस घोर विपत्ति में शादी! यह क्या सूझी?" "हाँ निश्चय ही शादी, लग्न भी आ गई है, उसी के लिए जाता हूँ।" "कहाँ?" "सब सुन लोगे"—यह कहते हुए ज़ोर से "वन्देमातरम्" का नारा लगाया और अदृश्य हो गया! उसके बाद प्रताप को किसी ने कोटे में नहीं देखा। बेचारा मित्र क्या समझे कि प्रताप की शादी क्या है। दूसरे दिन जब प्रताप घर नहीं लौटा, तो वही मित्र आए और शादी की बात कही। चतुर माता सब समझ गई और कहा—"ठीक है, परन्तु उसने मुझसे नाहक़ ही छिपाया। मैं उसे तिलक करके और चुम्बन लेकर बिदा करती।"

प्रताप कोटा छोड़ कर इधर-उधर भ्रमण करते हुए सिन्ध हैदराबाद पहुँचा और कुछ दिन वहाँ रहा। उसके साथ में उसका एक सच्चा बाराती चारण-जाति ही का वीर ठाकुर गणेशदान था। दुःख है, प्रताप के गिरफ़्तार हो जाने की ख़बर से इसके प्रेमी-हृदय पर ऐसी चोट पहुँची कि बलिष्ठकाय को भयङ्कर संग्रहणी एवं क्षय शीघ्र ही चाट गए। इधर-उधर छिपते-टकराते इस वीर का अवसान हो गया!

इससे पहले प्रताप ने कहाँ क्या किया, उसका आभास "बन्दी-जीवन" "पञ्जाबनूँ प्रचण्ड कावत्र" आदि पुस्तकों में एवं रासबिहारी बोस के संस्मरणों में मिलता है।

अन्त में फिर जब पञ्जाब को प्रताप की आवश्यकता हुई, तब आह्वान पाकर वह उधर लपका। हैदराबाद के कार्य को दूसरों के हाथ सौंप, गरमी, भूख और चार-चौथे दिन का जागरण सहता हुआ, रेल से जोधपुर होकर निकला। जोधपुर से अगले छोटे से रेलवे स्टेशन "आसा-नाडा" पर स्टेशन-मास्टर परिचित था। वहाँ ठहर कर कुछ आराम कर लेने, व कुछ नई बात हो तो जान लेने के विचार से, प्रताप वहाँ उतर पड़ा। उसे क्या मालूम था कि वह विश्वासघाती के चङ्गुल में जा रहा है। स्टेशन-मास्टर को इस बीच में पुलिस ने फोड़ लिया था। स्टेशन-

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

मास्टर ने प्रताप को देखते ही कहा—"पुलिस तुम्हारे लिए चक्कर लगा रही है, कोई देख लेगा, मेरी कोठरी में जा बैठो, कुछ खाओ-पियो।" वह प्रताप को कोठरी में ले गया। प्रताप ने कहा—"निद्रा सता रही है, सोऊँगा।" विश्वासघाती ने कहा—"निःशङ्क सो जाओ। ताला मार देता हूँ, ताकि किसी को भ्रम न हो।" गाढ़ निद्रा होने पर स्टेशन मास्टर ने कोठरी में से प्रताप का शस्त्र व दूसरी सब चीज़ बाहर निकाल ली, ताकि मुक़ाबले के लिए प्रताप के हाथ में कुछ न रहे। फिर उसने जोधपुर-पुलिस को टेलीफ़ोन कर दिया। बस फिर क्या था, पुलिस फ़ौजी रिसाला और दल-बल के साथ जा पहुँची। आसा-रावा घेर लिया गया, कोठरी के द्वार और खिड़कियों पर बर्छे और सङ्गीनें अड़ा दी गईं। चुपके से ताला खोल कर, सोते हुए प्रतापसिंह पर पुलिस टूट पड़ी और बेचारा गिरफ़्तार कर लिया गया।

उस समय प्रताप की उग्र मुख-मुद्रा, जोश-भरी लाल आँखें, फड़कते हुए होंठ और उलसते हुए बाहुओं को जिनकी आँखों ने देखा है, वे आज भी कहते हैं कि वह सच्चा वीर था, सँभल जाता तो अवश्य वीर-खेल बतलाता।

आज भी आँखों में पानी भर कर पुलिस के काले ऑफ़िसर मुक्त-कण्ठ से कहते हैं—"हमने आज तक प्रताप-जैसे वीर और विलक्षण बुद्धि का बालक नहीं देखा। उसे तरह-तरह से सताए जाने में कसर नहीं रक्खी गई, परन्तु वाह रे धीर! टस से मस न हुआ। ग़ज़ब का सहने वाला था। सर चार्ल्स क्लीवलैण्ड जैसे (भारत के डायरेक्टर ऑफ़ सी० आई० डी०) घाग का दिमाग़ भी चकरा गया, हम सब हार बैठे, उसी की दृढ़ता अचल रही।"

बनारस में केस चला और प्रताप को पाँच वर्ष की सख़्त सज़ा हुई। बनारस-जेल से बरेली-जेल में भेजा गया और वहीं विक्रम सम्वत् १९७५ (सन् १९१९) की वैशाखी पूर्णिमा को ठीक पच्चीसवें वर्ष की समाप्ति पर सदा के लिए ग़ुलामी के बन्धन तोड़ कर चला गया!!

* * *

अजमेर का शारदा-परिवार

इस विद्या-व्यसनी परिवार का पुराना निवास-स्थान तो मारवाड़ (जोधपुर स्टेट) में आलनियास ग्राम है, जो मेड़ते पट्टी में है। वहाँ से उठ कर क़रीब साढ़े तीन सौ वर्ष से यह अजमेर में आकर रहने लगा। इनके पुराने मकान गणपतपुरे में हैं, परन्तु अब आठ-दस वर्ष से दौलतबाग़ के उत्तर आनासागर झील के पास अपनी कोठी बना ली है और वहाँ ही रहते हैं। रायसाहब हरविलास जी ने कचहरी के उस तरफ़ एक और बँगला बनवा लिया है और वे उसमें निवास करते हैं।

रायसाहब बाबू रामविलास जी शारदा इस परिवार के मुखिया हैं। आपने बी० बी० सी० आई० रेलवे के कैरिजशॉप में बहुत अरसे तक असिस्टेण्ट चीफ़ क्लार्क के पद पर काम किया, अब रिटायर्ड हो गए हैं। आप क़रीब बीस वर्ष से म्युनिसिपल कमिश्नर हैं, और पाँच वर्ष से ऑनरेरी मैजिस्ट्रेट भी हैं। आजकल वे अपना कुल समय लोक-सेवा में ही लगा रहे हैं। अजमेर में जो आर्यसमाज की बड़ी-बड़ी संस्थाएँ और इमारतें हैं, उन सबके निर्माण में आपने अथक परिश्रम किया है। हिन्दी-भाषा के आप बहुत अच्छे विद्वान् हैं। आपने स्वामी दयानन्द जी का एक प्रामाणिक जीवन-चरित्र "आर्य धर्मेन्दु-जीवन" के नाम से निकाला है, और भी कई छोटे-छोटी पुस्तकें लिखी हैं। मुक़फ़्फ़ा इबारत (सानुप्रास) लिखने का आपको बड़ा शौक़ है और अच्छी लिखते हैं।

आपके चार पुत्र हैं। सबसे बड़े श्री० कुँवर सूरजकरण जी शारदा एम० ए०; एल्-एल्० बी० हैं। आप चुपचाप काम करने वाले व्यक्ति हैं। आजकल आप आर्य-प्रतिनिधि-सभा राजस्थान मालवा के मन्त्री-पद पर काम कर रहे हैं। आपके मन्त्रित्व-काल में सभा ने अच्छी उन्नति की है।

आप से छोटे कुँवर चाँदकरण जी शारदा, बी० ए०, एल्-एल्० बी० हैं। आप प्रसिद्ध ऑल इण्डिया लीडर हैं। लोक-हित का कोई काम हो, आप उसमें शरीक हैं। पिछले नानकॉपरेशन के दिनों में आप छः मास की जेल भी काट आए हैं। इधर आपको कॉङ्ग्रेस वालों की नीति नापसन्द हुई और उधर से हट कर हिन्दू-सभा में डट कर काम करने लगे। समस्त भारत का दौरा किया और हिन्दू-सङ्गठन और शुद्धि का प्रचार किया। आपने शुद्धि-सङ्गठन पर एक परमोत्तम प्रामाणिक ग्रन्थ भी लिखा है।

इनसे छोटे डॉक्टर दानकरण जी शारदा, बी० एस्-सी०, एम० बी०; बी-एस० हैं। आपकी डॉक्टरी अजमेर में बहुत अच्छी चल रही है। आप चुपचाप लोक-सेवा

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

करते हैं। कभी लेक्चर नहीं देते। इनसे छोटे कुँवर विजयकरण जी मैकेनिकल इन्जीनियर हैं और कलकत्ते की बिड़ला-मिल में काम रते हैं।

रायसाहब हरविलास जी शारदा बाबू रामविलास जी के चचेरे भाई हैं और उनसे दो-तीन वर्ष छोटे हैं। आप अङ्गरेज़ी भाषा और इतिहास के भारी विद्वान् हैं। इतिहास पर आपने कई ग्रन्थ लिखे हैं, यथा 'हिन्दू सुपिरियॉरिटी, महाराणा कुम्भा, महाराणा साँगा, अजमेर का इतिहास आदि प्रसिद्ध हैं।

आप वर्षों तक अजमेर में जज रहे। इस पद से रिटायर्ड होकर लोक-सेवा कर रहे हैं। दो बार आप अजमेर-मेरवाड़ा की तरफ़ से लेजिस्लेटिव एसेम्बली के मेम्बर चुने गए और वहाँ कई उपयोगी काम किए। अजमेर-मेरवाड़े में प्रारम्भिक शिक्षा अनिवार्य हो, इसके लिए आपका उद्योग जारी है। शिक्षा-कमेटी गवाहियाँ ले चुकी हैं और रिपोर्ट तैयार हो रही है। सबसे उपयोगी और महत्वपूर्ण आपका बाल-विवाह-निषेध-बिल है, जो २३ सितम्बर को एसेम्बली में और उसके बाद स्टेट-काउन्सिल में भी पास हो चुका है। गवर्नर-जनरल की मञ्जूरी मिल जाने पर आगामी एप्रिल सन् ३० से यह बिल क़ानून बन जायगा। इसके अनुसार १४ वर्ष से कम उम्र की किसी लड़की का और १८ वर्ष से कम उम्र के किसी लड़के का विवाह क़ानूनी जुर्म होगा और वैसा करने वालों को सज़ा मिलेगी। इस बिल का विस्तृत विवरण अन्यत्र प्रकाशित हो रहा है।

इस बिल के लिए आप कई वर्षों से बड़ी कोशिश कर रहे थे, आख़िर आपका परिश्रम सफल हुआ। आशा है, यह बिल भारतवर्ष में उन्नति का नया युग लाएगा। आपके एक पुत्र और दो पौत्र हैं।

* * *

श्रीमान् पुरोहित रामप्रताप जी

आप जयपुर रियासत के ताज़ीमी सरदार और जागीरदार हैं। आपकी जाति पारीक-ब्राह्मण है। आपने जयपुर-कॉलेज में शिक्षा पाई है और कुछ समय तक आप जयपुर की काउन्सिल में जुडिशियल तथा होम मेम्बर के पदों पर काम कर चुके हैं। हिन्दी-भाषा की उन्नति का आपको सदा ध्यान रहता है। कई पुस्तकें भी आपने लिखी हैं, जिनमें भगवद्गीता का अनुवाद, जिसका नाम 'श्रीकृष्ण-विज्ञान' है, बहुत प्रशंसनीय है। सम्पादक इस पुस्तक का नवीन संशोधित संस्करण शीघ्र ही चाँद कार्यालय द्वारा प्रकाशित हो सके।

* * *

राजपूताना फ़ोटो आर्ट-स्टूडियो

इस स्टूडियो की स्थापना सन् १९०७ में हुई थी। इसे जयपुर के प्रसिद्ध विद्वान् और प्रतिष्ठित ताज़ीमी सरदार श्री० रामप्रताप जी पुरोहित ने आर्ट की उन्नति के लिए अपने शौक़ की पूर्त्ति के लिए स्थापित किया था। पुरोहित जी को फ़ोटोग्राफ़ी और आर्ट का बेहद शौक़ है। इस काम में आपने हज़ारों रुपए व्यय किए हैं। जब इस काम से आपका शौक़ हटने लगा, तब आपने स्टूडियो को बन्द करने की अपेक्षा, उसे व्यावसायिक रूप देना ठीक समझा। कला-कौशलपूर्ण जयपुर शहर में इस संस्था के सञ्चालन करने वाले योग्य कार्यकर्त्ता भी मिल गए। अतएव यह स्टूडियो तब से नवीन सज-धज और सुधार के साथ अपनी उन्नति कर रहा है। इसमें फ़ोटोग्राफ़ी, चित्रकारी और ऑयलपेण्टिङ्ग का दर्शनीय काम होता है।

यहाँ के बने चित्र इतने सुन्दर और कलापूर्ण होते हैं कि जो उनको देखता है, मुक्त-कण्ठ से प्रशंसा करता है। ये चित्र विलायत के बने चित्रों से मुक़ाबला करने पर किसी प्रकार घटिया या हलके नहीं जान पड़ते।

* * *

श्रीयुत् गुलराज गोपाल जी गुप्त

आप बड़े विद्या-व्यसनी, समाज-सेवी और समाज-सुधारक हैं। आप खण्डेलवाल महासभा के प्रधान मन्त्री हैं तथा अजमेर के आर्यसमाज की संस्थाओं की आप हैं। आपकी धर्मपत्नी श्रीमती लीलादेवी जी भी आदर्श रमणी हैं। समाज-सुधार और स्त्री-शिक्षा के लिए आपने क्या कुछ नहीं किया है। आपके सुपुत्र देवराज गुप्त उच्च शिक्षा प्राप्त युवक हैं। आपका विवाह दिल्ली के प्रसिद्ध दानवीर स्वर्गीय सेठ रघूमल जी की इकलौती पुत्री से हुआ है। आपकी पुत्री विमलाकुमारी जूनियर कॉलेज में पढ़ रही हैं!

* * *

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

भैया-परिवार

वर्धा का यह भैया-परिवार मारवाड़ी माहेश्वरी जाति में प्रबल सुधारक है। इस परिवार की वृद्धा माता श्रीमती गङ्गाबाई, माताओं और दादियों की आदर्श हैं, जो अपने पुत्र-पौत्रों और वधुओं को उन्नति-मार्ग पर स्वयं चलाती हैं। आपकी पुत्री सौभाग्यवती सरस्वती देवी मारवाड़ी-महिलाओं में हर तरह अनुकरणीय देवी हैं।

* * *

राज्य-रत्न आत्माराम जी और उनका आदर्श परिवार

जिनकी जन्म-भर की विभूति बड़ौदा-राज्य में चमक रही है; बड़ौदा-महाराज से लेकर मेहतर तक जिनका आभारी है; जिन्होंने अपना जन्म सच्ची समाज-सेवा में व्यतीत किया है—वे ही पिता-पुत्र और देवियाँ इस चित्र में हैं। बीच में जो करारी मूँछों वाली सूरत दीख रही है, वे मारवाड़ के बाँके वीर कुँवर चाँदकरण जी शारदा हैं।

* * *

मारवाड़ी-अग्रवालों में पहला विधवा-विवाह

माघ शुक्ला १३, सम्वत १९८३, रविवार के दिन कलकत्ते में मारवाड़ी-अग्रवाल जाति में सर्व-प्रथम विधवा-विवाह हुआ। विधवा का नाम जानकीबाई था, जो हवड़ा-निवासी गौरीदत्त जी साह की पुत्री हैं। और वर थे नागरमल जी लीलहा, जो झरिया के निवासी हैं। इस विवाह में विरोधियों की ओर से बहुत-कुछ रुकावटें डाली गईं, पर फिर भी विवाह वैदिक रीति द्वारा धूम-धाम से सम्पन्न हुआ। उत्सव के अवसर पर कलकत्ते के प्रायः सभी सुधारक उपस्थित थे। सुनते हैं, देवी जानकी-बाई बचपन में ही विधवा हो गई थीं। युवावस्था में वैधव्य को पाल न सकने के कारण उन्होंने अपनी माता से स्वयं अपने विवाह की प्रार्थना की और क़रीब दो वर्ष की टालटूल के बाद उन्हें विवाह कर देना पड़ा। देवी जी की स्पष्टवादिता समाज की अन्य पीड़ित महिलाओं के लिए सर्वथा अनुकरणीय है।

* * *

भूल-सुधार

पाठक, नीचे लिखी अशुद्धियों को सुधार कर पढ़ें :—

पृष्ठ	कॉलम	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
३	२	१०	रियासतें	जागीरें
४	२	३१	भँवरपाल	भोमपाल
५	१	६	रघुनाथसिंह	रामसिंह

आवश्यकता

एक अनुभवी हिन्दी, अङ्गरेज़ी तथा तिरङ्गे चित्र की छपाई का ज्ञान रखने वाले सहकारी प्रेस-सुपरिण्टेण्डेण्ट की आवश्यकता है। प्रार्थना-पत्र व्यवस्थापक, दि फ़ाइन आर्ट प्रिण्टिङ्ग कॉटेज, २८ एड-मॉन्सटन रोड, चन्द्रलोक, इलाहाबाद—के पते से भेजना चाहिए।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

उत्थान और पतन

[श्री० शोभाराम जी धेनुसेवक]

[१]

समर्थक रूढ़ियों के मारवाड़ी, आज ना होते।
हो संरक्षक दलाली के, ये सट्टेबाज़ ना होते॥
पतनप्रद अन्ध-श्रद्धा का, सजाए साज ना होते।
तो कहता कौन है, ये देश के सरताज ना होते?

[२]

ठगों को मूँद करके, जिस तरह ये दान देते हैं।
नरक का कीट "हीरालाल", पर ज्यों जान देते हैं॥
लजा गोविन्द को, गोविन्द-गृह को मान देते हैं।
स्वयं गृह-देवियों को, हाथ से विष-पान देते हैं॥

[३]

अगर श्रम से कमाए द्रव्य का, सदव्यय इन्हें आता।
तो किस की शक्ति थी? अँगुली भी इनकी ओर दिखलाता।
अरे! ओ!! मारवाड़ी!!! कह, इन्हें जो आज धुड़काता?
वही कल मारवाड़ी के लिए, हो नम्र झुक जाता॥

[४]

धरम के नाम से जो द्रव्य, पानी-सा बहाते हैं।
धरम के ढोंगियों की नित, नई संख्या बढ़ाते हैं॥
इन्हें रख मूर्ख जो इनका, निरन्तर माल खाते हैं।
वही विषयान्ध इनके, धर्म की लुटिया डुबाते हैं॥

[५]

यही हालत है, गौ-रक्षा की इनमें चाह होती है।
दुखी गौ के लिए इनके हृदय में आह होती है॥
मरी या जी रहीं गौएँ, न ये परवाह होती है।
फ़क़त गौरक्षिणी के खोलने की डाह होती है॥

[६]

सहस्रों डेरियाँ ये चाहते तो खोल सकते थे।
बधिक क्या इनके रहते, गाय को ले मोल सकते थे॥
कभी को गाय माता की, विजय ये बोल सकते थे।
हलाहल-पूर्ण जीवन में, सुधारस घोल सकते थे॥

[७]

लड़कपन से अविद्या के करों में जो नहीं बिकते।
सुधारों से नहीं कँपते, अचल हो सामने टिकते।
तो इनमें सैकड़ों बिड़ला वो मोहता आजकल दिखते।
न जाने कितने जमनालाल का इतिहास हम लिखते।

[८]

रखेंगे जब तलक गृह-देवियों का कष्टमय जीवन।
लदेगा बाल-वधुओं पर, ज़बरदस्ती का विधवापन।
कुरीतों का करेंगी जब तलक वनिताएँ आराधन।
पतन का ही करेंगी तब तलक अनिवार्य आवाहन।

[९]

हमारे मारवाड़ी बन्धु अब मैदान में आओ।
समर्थक बन सुधारों के, कुरीतों के किले ढाओ।
तिमिर से नारियों को तार कर आलोक में लाओ।
प्रगति से ना रहें पीछे, समय के साथ में जाओ।

[१०]

न अब बेजोड़ ब्याहों से, विवश बहिनों को रोवें हम।
न "कूड़ा-पंथियों" को जाति में विष-बीज बोवें हम।
उठे उत्साह को आगे बढ़ाओ, अब न सोवें हम।
विभव के साथ विद्या को भी, विकसित आज होवें हम।

[११]

अगर है हानिकारी तो, ये परदा फाड़ कर फेंको।
नहीं पाखण्डियों के सामने, हो दीन शिर टेको।
ज़माने के प्रवाहों को दो बहने, भूल मत ढूँढो।
समय के साथ तुम भी, ले चलो निर्भीक अपने को।

[१२]

नहीं होगा कुरीतों से, कभी कल्याण, तुम समझो।
न आडम्बर से होगा, पारलौकिक त्राण तुम समझो।
नशेंगी रूढ़ियाँ सत्वर, इन्हें म्रियमाण तुम समझो।
बनो अब कर्मयोगी, कर्म को निज प्राण तुम समझो।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

विषय सूची

क्रमाङ्क	लेख	लेखक	पृष्ठ
१	अभाव की पूजा (कविता)	[श्री० जनार्दनप्रसाद झा 'द्विज', बी० ए०]	१२१
२	सम्पादकीय विचार		१२३
३	कलङ्क	['मुक्त']	१२८
४	नवीन मुस्लिम-संसार	[श्री० मथुरालाल जी वर्मा, एम० ए०]	१३७
५	ज़ेवर	[श्री० एफ़० एल० ब्रेनी, एम० सी०; आई० सी० एस०]	१४५
६	स्त्री-जाति और शिक्षा	[श्री० मोहनलाल जी महतो, गयावाल, 'वियोगी']	१५१
७	अभागा	[श्री० जनार्दनप्रसाद झा 'द्विज', बी० ए०]	१५७
८	विडम्बना (कविता)	[श्री० अयोध्यासिंह जी उपाध्याय]	१६८

* * *

विविध विषय

क्रमाङ्क	लेख	लेखक	पृष्ठ
९	परदा पाप है	[श्रीमती श्यामकान्तादेवी जी]	१६९
१०	स्त्रियों का स्वर्ग—रूस	[श्री० परिपूर्णानन्द जी वर्मा]	१७६
११	भारतीय वाद्ययन्त्र	[कुमारी विद्यावती जी भगत]	१७९
१२	मिश्र की एक महिला	[श्री० अजेन्द्रपाल जी शर्मा, बी० ए०]	१८२

३।×२। इञ्च साइज़ के केमरे
नं०१०१बक्सनुमा ८), नं०१०५, १६)
,, १११ फ़ोल्डिङ्ग सिङ्गिल लेन्स २८)
,, ११५ ,, डबल ,, ३७)
,, १२० आगफ़ा विली केमरा ३३)

अच्छे फ़ोटो उतारने के लिए

इन केमरों का व्यवहार कीजिए

हमारे यहाँ सब तरह के फ़ोटो का सामान बहुत सस्ता और किफ़ायत से मिलता है। एक बार अवश्य परीक्षा करें।

४।×२॥ इञ्च साइज़ के केमरे
नं० २०२ बक्सनुमा ... ११)
,, २११ फ़ोल्डिङ्ग सिङ्गिल लेन्स ३१)
,, २१५ ,, डबल ,, ४१)
,, २२१ आगफ़ा स्टेण्डर्ड केमरा f6.3 ८०)

ये कोडक कम्पनी से ख़ासतौर पर तैयार कराए गए हैं, व्यवहार में पूर्ण सन्तोषप्रद हैं, इनसे किसी की भी अच्छी फ़ोटो अपने हाथों से घर बैठे उतार सकते हैं।

५॥×३। इञ्च साइज़ के केमरे
नं०४११फ़ोल्डिङ्ग सिङ्गिल लेन्स ४७)
,, ४१५ ,, डबल ,, लेन्स ५६)
,, ४२१ ,, Anastigmat f6.3 लेन्स और Ilex शटर ... ६५)

केमरे के ख़रीदार को फ़ोटो की शिक्षा मुफ़्त देते हैं।

मँगाने का पता—प्रियालाल एण्ड सन्स
फ़ोटोग्राफ़र, आगरा छावनी

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

क्रमाङ्क	लेख	लेखक	पृष्ठ
१३	नारी-हृदय	[श्री० प्रफुल्लचन्द्र जी ओझा 'मुक्त']	१८३
१४	पति को ख़ुश कैसे रखना चाहिए ?	[सौ० सरस्वतीबाई देव]	१८५
१५	व्यभिचार क्यों फैला ?	[श्री० गङ्गाराम जी गुप्त]	१८५
१६	मध्य अफ्रिका की एक विचित्र प्रथा	[श्री० उमेशप्रसाद सिंह जी बख़्शी, बी० ए०]	१८६
१७	स्त्रियों पर अनुचित दबाव	[साहित्याचार्य 'मग']	१९१
	*	*	*
१८	कणिका (कविता)	[श्री० सोहनलाल जी द्विवेदी]	१९२
१९	परीक्षा	[श्री० विश्वम्भरनाथ जी शर्मा, कौशिक]	१९३
२०	यात्रा (कविता)	[श्री० रामनगीना जी चौबे]	१९९
२१	स्वास्थ्य और सौन्दर्य	[श्रीमती दयावती देवी जी गुप्ता]	२००
२२	विनोद-वाटिका	[स्वर्गीय बङ्किम बाबू]	२०१
२३	साहित्य-संसार	[आलोचक, श्री० अवध उपाध्याय जी]	२०१
२४	दिल की आग उर्फ़ दिल-जले की आह	["पागल"]...	२००
२५	सङ्गीत-सौरभ	[सम्पादक—श्री० किरण-कुमार मुखोपाध्याय (नीलू बाबू) ; शब्द-कार तथा स्वर-लिपिकार—पं० केदारनाथ जी 'चेकल' बी० ए०, एल० टी०] ...	२१०
२६	चिट्ठी-पत्री	... ...	२१५
२७	दुबे जी की चिट्ठी	[श्री० विजयानन्द दुबे जी]	२२१
२८	विश्व-वीणा	... ...	२२१
२९	विश्व-दर्शन	... ...	२२१
	*	*	*

ऐसा कौन है जिसे फ़ायदा नहीं हुआ

४० वर्ष से परीक्षित, तत्काल गुण दिखाने वाली ये दवाइयाँ सब दुकानदारों के पास मिलती हैं।

सुधासिन्धु

कफ़, खाँसी, हैज़ा, दमा, शूल, संग्रहणी, अतिसार, पेट-दर्द, क़ै, दस्त, इन्फ़्लूएंज़ा, बालकों के हरे-पीले दस्त और पाकाशय की गड़बड़ी से होने वाले रोगों की एकमात्र दवा। इसके सेवन में किसी अनुपान की ज़रूरत नहीं। मुसाफ़िरी में इसे ही साथ रखिए। क़ीमत ॥) आना।

ब्रह्मास्त्र

शरीर में तत्काल बल बढ़ाता है, क़ब्ज़, बदहज़मी, कमज़ोरी, खाँसी दूर करता है; बुढ़ापे के कारण होने वाले सभी कष्टों से बचाता है, नींद लाता है और पीने में मीठा व स्वादिष्ट है। क़ीमत तीन पाव की बोतल २), छोटी १) रु०, डाक-ख़र्च जुदा।

बालसुधा

बच्चों को बलवान, सुन्दर और सुखी बनाने के लिए यह मीठा "बालसुधा" उन्हें पिलाइए, क़ीमत ॥) आना

मिलने का पता—सुख-सञ्चारक कम्पनी, मथुरा

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

चित्र-सूची

१—विहार (तिरङ्गा)

आर्ट-पेपर पर रङ्गीन

२—श्रीमती कस्तूरीबाई गाँधी
३—श्रीमती सरोजिनी नायडू और श्रीमती विजय लक्ष्मी पण्डित
४—श्रीमती कमलादेवी चट्टोपाध्याय
५—श्रीमती सरोजिनी नायडू
६—श्रीमती रुक्मिणी लक्ष्मीपति

सादे

७—तुर्की के वर्तमान विधाता मुस्तफ़ा कमालपाशा
८—ईरान के वर्तमान सम्राट क्रान्तिकारी रिज़ाशाह
९—शाह अमानुल्ला और उनकी पत्नी श्रीमती सूर्या
१०—मोरक्को का बहादुर नेता अब्दुल करीम
११—तुर्की की आधुनिक महिलाएँ
१२—श्रीमती लतीफ़ा हानूम
१३—श्रीमती हालिदा अदीब हानुम
१४-१५—पुरुष-समाज (व्यङ्ग)—२ चित्र
१६—बाँद्रा व्यायामशाला का एक ग्रूप
१७—श्रीमती सुमतिबाई देव
१८—कुमारी जी० एन० श्रद्धा
१९—श्रीमती के० टी० आचार्य
२०—श्रीमती के० जे० आर० कामा
२१—श्रीमती एम० मरगठावल्ली अम्मल
२२—श्रीमती मैकफ़ेडिन
२३—श्रीमती इस्थरबालू अम्मल
२४—गुजरात की सत्याग्रही महिलाओं का जत्था
२५—काशी की सत्याग्रही महिलाएँ नमक बना रही हैं।
२६—श्रीमती स्वरूपरानी नेहरू
२७—स्थानीय मोतीपार्क में विद्यार्थियों की विराट सभा
२८—कुमारी ललिता पाठक, एम० ए०
२९—श्रीमती कमला नेहरू और कुमारी कृष्णा नेहरू (मर्दानी पोशाक में)
३०—तहसील हँडिया (इलाहाबाद) के नमक बनाने वाले सत्याग्रहियों को श्रीमती उमा नेहरू तिलक लगा रही हैं।

द्वारकिन के हारमोनियम

पचपन साल पहले हाथ से बजाने वाले हारमोनियम का आविष्कार द्वारकिन कार्यालय ने किया था और वर्षों से हिन्दुस्तान में वही एक हारमोनियम का कारख़ाना रहा है। आज हिन्दुस्तान में हाथ से बजाने वाले हारमोनियम के हज़ारों कारख़ाने हैं, किन्तु द्वारकिन के बाजे दुनिया में चारों ओर मधुर टोन, उम्दा कारीगरी और मज़बूती के लिहाज़ से सबसे अच्छे माने जाते हैं। जब आप द्वारकिन का हारमोनियम ख़रीदेंगे, आप केवल बाजे का ही दाम देंगे, किन्तु आपको हमारे अनुभव का लाभ मुफ़्त में ही होगा, जो सचमुच ही बड़ा मूल्यवान होगा। द्वारकिन के हारमोनियम के एक-एक इञ्च पर द्वारकिन कार्यालय के पुराने अनुभव की और उम्दा कारीगरी की मुहर पड़ी हुई है।

ख़ास ज़रूरत से सूचीपत्र मँगाइए—

द्वारकिन एण्ड सन्स, १२ स्प्लेनेड और ८ डलहौज़ी स्क्वायर, कलकत्ता

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

राष्ट्रीय गान

यह पुस्तक पाँचवीं बार छप कर तैयार हुई है, इसी से इसकी लोक-प्रियता का अनुमान हो सकता है। इसमें वीर-रस में सने हुए देश-भक्तिपूर्ण सुन्दर गानों का अपूर्व संग्रह है, इन्हें पढ़ कर आपका दिल फड़क उठेगा। सभी गाने हारमोनियम पर भी गाने क़ाबिल हैं। ये गाने बालक-बालिकाओं को कंठस्थ कराने के योग्य भी हैं। ५६ पृष्ठ की पुस्तक का दाम केवल ।) चार आने !! दो पुस्तकें एक साथ मँगाने से २०) रु०। एक पुस्तक वी० पी० द्वारा नहीं भेजी जाती। एक पुस्तक मँगाने के लिए ।-) का टिकट भेजना चाहिए।

ग्रह का फेर

[मूल-लेखक—श्री० गोपेन्द्रनाथ चौधरी, एम० ए०]

इस पुस्तक की विशेषता लेखक के नाम ही से प्रकट हो जाती है। यह बङ्गला के प्रसिद्ध उपन्यास का अनुवाद है। लड़के-लड़कियों के शादी-विवाह में असावधानी करने से जो भयङ्कर परिणाम होता है, उसका इसमें अच्छा दिग्दर्शन कराया गया है। इसके अतिरिक्त यह बात भी इसमें अङ्कित की गई है कि अनाथ हिन्दू-बालिकाएँ किस प्रकार ठुकराई जाती हैं और उन्हें किस प्रकार ईसाई अपने चङ्गुल में फँसाते हैं। पुस्तक पढ़ने से पाठकों को जो आनन्द आता है, वह अकथनीय है। मूल्य आठ आने, स्थायी ग्राहकों से छः आने मात्र!

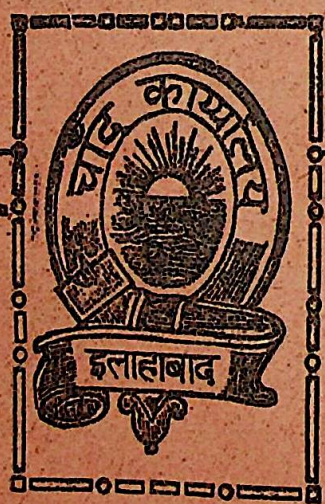

देवदास

[मूल-लेखक—बाबू शरच्चन्द्र चट्टोपाध्याय]

देवदास को उपन्यास न कह कर, यदि विविध अवस्थाओं के मानवी हृद्गत भावों का जीता-जागता चित्र कहें तो विशेष सार्थक होगा। देवदास पर पार्वती का अगाध प्रेम तथा धनी और निर्धन के कुटिल प्रश्न के कारण पार्वती का देवदास के साथ विवाह न होने पर भी उसका देवदास पर अपने पति से अधिक दावा देख कर दाँतों तले उँगली दबानी पड़ती है! पार्वती के वियोग के कारण देवदास का विक्षिप्तावस्था में करुणाजनक पतन पढ़ कर हृदय व्याकुल हो जाता है। सच्चे प्रेम के अद्भुत प्रभाव के कारण चन्द्रमुखी नाम की एक पतिता वेश्या का धर्ममय जीवन को अपनाते देख चमत्कृत हो जाना पड़ता है। मूल्य २) स्थायी ग्रा० से १॥) मात्र!

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

✝ महात्मा ईसा ✝

रजत-जयन्ती के सफल मन्त्री, रिसर्च स्कॉलर

श्री० प्रो० विश्वेश्वर जी, 'सिद्धान्त-शिरोमणि' लिखित

भूमिका-लेखक—श्री० पं० गङ्गाप्रसाद जी, एम० ए०, एम० आर० ए० एस०, चीफ़ जज

कुछ सम्मतियाँ

मैंने पुस्तक को पढ़ा। ईसा के जीवन-सम्बन्धी सभी मालूमात का संग्रह करने का यत्न सफलता के साथ किया गया है। पुस्तक दिलचस्प और पढ़ने लायक़ है। —नारायण स्वामी

हिन्दी-भाषा के बढ़ते हुए साहित्य में ईसाई-मत पर अनेक पुस्तकें छप चुकी हैं, परन्तु ईसा के जीवन पर कोई आलोचनात्मक पुस्तक आज तक देखने में नहीं आई। इस पुस्तक को लिख कर लेखक ने उस कमी को पूरा करने का यत्न किया है। लेखक श्री० विश्वेश्वर जी गुरुकुल वृन्दावन के योग्य स्नातक हैं। उन्होंने महात्मा ईसा के प्रति जो भाव दर्शाये हैं, वे प्रशंसनीय हैं। लेखक ने ईसा के उपदेशों की व्याख्या बड़ी ओजस्विनी भाषा में की है.....! —गङ्गाप्रसाद

मैंने श्री० विश्वेश्वर जी लिखित महात्मा ईसा नामक पुस्तक को आद्योपान्त पढ़ा। यह पुस्तक उन्होंने बड़ी खोज और परिश्रम के साथ लिखी है। उस पर विशेषता यह है कि अपने से भिन्न मत के आचार्य की जीवनी की आलोचना बड़े प्रेम और श्रद्धा से लिखी है। —पूर्णचन्द्र, वकील

मैंने श्री० विश्वेश्वर जी लिखित पुस्तक को आद्योपान्त पढ़ा।.....पुस्तक आलोचनात्मक शैली पर और बड़ी पूर्णता के साथ लिखी गई है। भाषा अत्यन्त मुहावरेदार, संस्कृत एवं हिन्दी कहावतों से पूर्ण और मनोहारिणी है।.....पुस्तक अनेक नवीन बातों का परिचय कराएगी, साथ ही पाठकों की अत्यन्त प्रशंसा-पात्र बन सकेगी। जहाँ तक मुझे मालूम है, मैं कह सकता हूँ कि हिन्दी-साहित्य में आज तक इस विषय पर इतनी सफलता के साथ कोई पुस्तक नहीं लिखी गई।

—आचार्य बृहस्पति

I have gone through the essay on Christianity and Jesus Christ. *The writer's thorough and masterly grasp of Jesus life, his sympathetic handling and scholarly treatment of the complex and intricate problems connected with Christianity and it's founder are unique and admirable.* The question of the historicity of Jesus Christ has well-nigh become a battle-ground for the contending scholars to enter. Above all this, his language and style are fascinating and charming. The use of the idioms and proverbial sayings interspersed with Sanskrit quotations add beauty to the composition.

Prof. Shivadayalu Singhal, Senior professor of
Comparative-study of religions. Gurukul Vishwa Vidyalay, BRINDABAN.

इस पुस्तक की कम से कम एक प्रति आपको अवश्य ख़रीदनी चाहिए। जयन्ती कैम्प में अनेक बुकसेलरों की दूकान पर आप ले सकते हैं अथवा जयन्ती कार्यालय में पूछिए।

प्रोटेक्टिङ्ग कवर सहित सुन्दर, सचित्र और सजिल्द पुस्तक का मूल्य केवल २॥) रु०!

☞ व्यवस्थापक 'चाँद' कार्यालय, चन्द्रलोक, इलाहाबाद

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

विहार

सघन कुञ्ज छाया सुखद, सीतल मन्द समीर।
मन ह्वै जात अजौ वही, या जमुना के तीर॥

—(कविवर) विहारी

(चित्रकार—श्री० मथुरादास जी गुजराती)

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

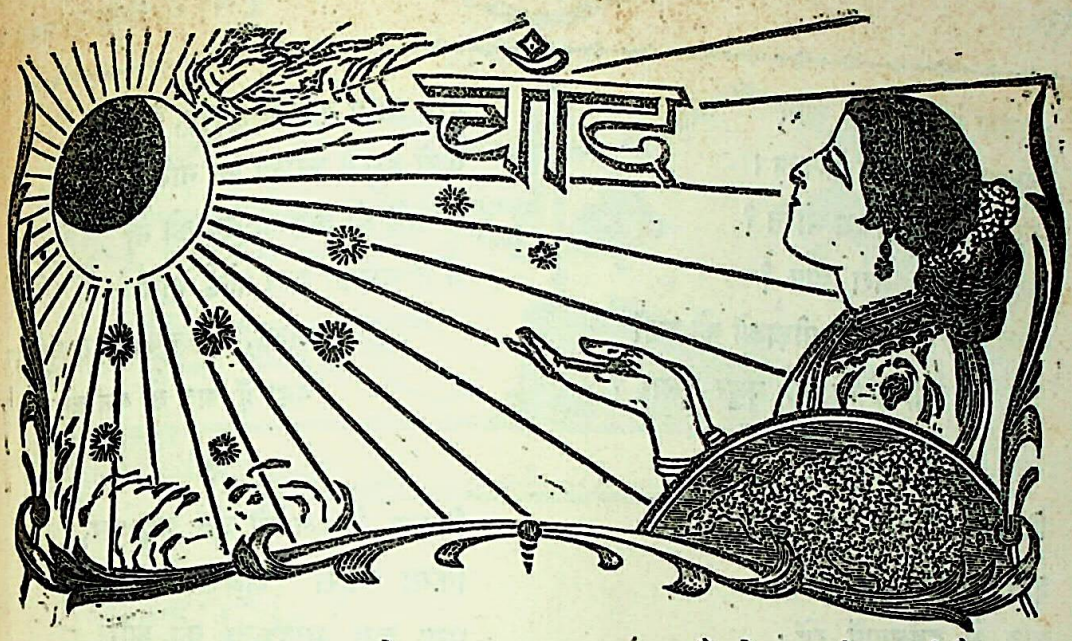

आध्यात्मिक स्वराज्य हमारा ध्येय, सत्य हमारा साधन और प्रेम हमारी प्रणाली है। जब तक इस पावन अनुष्ठान में हम अविचल हैं, तब तक हमें इसका भय नहीं कि हमारे विरोधियों की संख्या और शक्ति कितनी है।

वर्ष ८ खण्ड २ | जून, १९३० | संख्या २ पूर्ण संख्या ९२

अभाव की पूजा

[श्री० जनार्दनप्रसाद झा 'द्विज', बी० ए०]

जीवन के पहले प्रभात में,
मिला तुम्हीं से था मुझको
प्रिय, यह पावन उपहार—।

जिसे कहते तुम आज 'अभाव'
लिए नयनों में करुणा-नीर;
और करने को जिसका अन्त—
(व्यथित हो-होकर परम अधीर)
रहे हो मेरे चारों ओर
विभव की दारुण ज्योति पसार।

ज्योति यह दारुण है, हाँ, देव!
क्योंकि मैं हूँ चिर तम का दास;
सुखी रहता दुख ही में डूब,
कहाँ जाऊँ, किस सुख के पास?
सम्हाले सम्हलेगा भी कभी
किसी का मुझसे इतना प्यार?

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

वासना में विष है, है आग
लालसा में, सुख में सन्ताप।
पुण्य पालूँगा मैं किस भाँति ?
कहाँ जाएगा मेरा पाप ?
विश्व की पीड़ाओं को कहाँ
मिलेगा प्रश्रय, मधुर दुलार ?

विरति-पथ है कोलाहल-हीन ;
इसी पर चलने दो चुपचाप।
साथ में दुर्बलताएँ रहें ;
प्रलोभन का न मिले अभिशाप।
बहुत सुन्दर लगता है मुझे—
यही मेरा सूना संसार।

जनम भर तप करने के बाद
मिला है मुझको यही 'अभाव'।
इसी में है मेरा सर्वस्व,
न है कुछ पाने का अब चाव।
बिछा कर मोहक माया-जाल,
साधना का न करो संहार।

लिए जो हलचल अपने साथ
पधारे हो तुम मेरे पास—
उसे दे पाऊँगा किस भाँति
इसी छोटे से घर में वास ?
लूट लेंगे मुझको ये लोभ,
समेटो इनकी भीड़ अपार।

दाह अति शीतल है यह, है न—
कहीं इसमें ज्वाला का नाम ?
बरसने दो करुणा-घन को न,
न है उसका अब कोई काम।
जला, जल चुका बहुत, चुपचाप
पड़ा हूँ अब तो बन कर छार!

विकल, विह्वल थी जब मधु-धार,
किया प्यासे अधरों ने मान।
पुनः उस मादकता की ओर
करो उपक्रम ले जाने का न ?
लुढ़क जाऊँगा हो हत-चेत,
रहे रस क्यों बरबस यों ढार!

जगाओ अब न हिए की भूख,
न भड़काओ चाहों की प्यास।
इसी सूनेपन में है शान्ति,
तृप्ति, सुख, संयम, हर्ष, हुलास।
कहाँ अब वे आँखें हैं हाय!
निहारूँ जिनसे यह शृङ्गार ?

करो विचलित मत मुझको देव !
दिखा कर 'कुछ देने का चाव'।
साधना की वेदी पर बैठ—
पूजने दो यह 'अमर अभाव'।
इसी में हो तुम, हूँ मैं, और—
इसी में भरा तुम्हारा प्यार!!

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

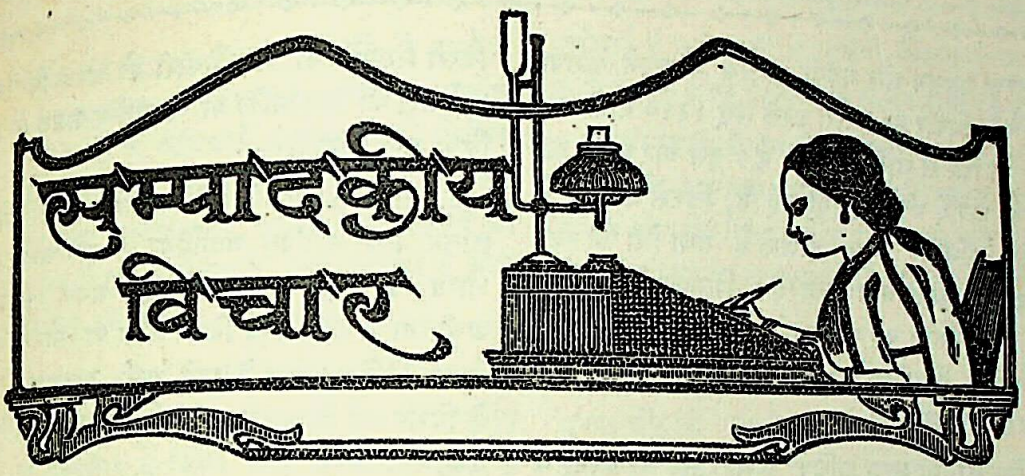

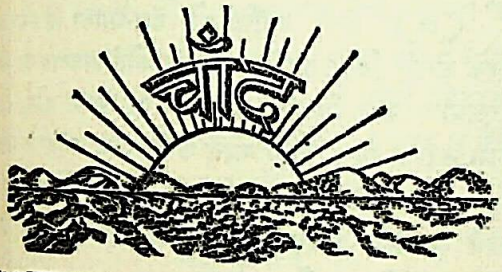

जून, १९३०

क़ानून या काल ?

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

वायसराय और गवर्नर जनरल ने अपने विशेषाधिकार का प्रयोग करके सन् १९१० वाले प्रेस-एक्ट को फिर से जारी कर दिया है। इस बार इसमें कई नवीन धाराएँ भी जोड़ दी गई हैं, जिनसे शासकों के भयङ्कर अधिकार बहुत बढ़ जाते हैं तथा प्रेस की स्वाधीनता पर कुठाराघात होता है। शिमला से प्रकाशित होने वाली विगत २७ अप्रैल की एक असाधारण विज्ञप्ति (Gazette Extraordinary) में इसका उल्लेख इस प्रकार किया गया है :—

प्रेस का नियन्त्रण अधिक अच्छी तरह से करने के लिए एक असाधारण क़ानून (Ordinance) एक असाधारण विज्ञप्ति द्वारा प्रकाशित किया गया है और इसका प्रयोग आज से होगा। इसकी प्रमुख धाराएँ क़रीब-क़रीब वही हैं जो सन् १९१० वाले क़ानून में थीं, किन्तु वर्तमान परिस्थिति का मुक़ाबला करने के लिए इसमें कई अन्यायपूर्ण धाराएँ जोड़ दी गई हैं। इस क़ानून में ऐसे अधिकार का विधान किया गया है, जिसके द्वारा कुछ ख़ास-ख़ास बातों को छापने वाले प्रेसों तथा उन्हें प्रकाशित करने वाले पत्रों के ज़मानत, यदि वे जमा किए गए हों तो, ज़ब्त कर लिए जा सकते हैं।

क़ानून का मुख्य अंश

क़ानून के मुख्य अंश (धारा ४) का आशय इस प्रकार है :—

जब कभी कोई प्रान्तीय गवर्नमेण्ट यह देखेगी कि किसी प्रेस में, जिससे इस क़ानून की ३ री धारा के अनुसार ज़मानत जमा कराई गई हो, कोई ऐसे समाचारपत्र, पुस्तक या लेखादि छापे या प्रकाशित किए जा रहे हैं, जिनमें ऐसे शब्द, चिन्ह अथवा चित्रादि हैं, जो अनुमान, सङ्केत, दृष्टान्त, उल्लेख, रूपक, लक्षणा-व्यञ्जना-ध्वनि द्वारा अथवा अन्य किसी प्रकार से, प्रत्यक्ष अथवा परोक्ष रूप में, ऐसी बात के लिए प्रेरित करते अथवा कर सकते हैं, जिससे

(क) हत्या अथवा विस्फोटक पदार्थ-विधान में बताए हुए किसी अपराध अथवा किसी हिंसात्मक कार्य के (जिसका सम्बन्ध शारीरिक हिंसा से हो) करने के लिए उत्तेजन मिले, अथवा—

(ख) सम्राट की जल, स्थल या वायु सेना के किसी सिपाही या पदाधिकारी को अथवा किसी पुलिस कर्मचारी को राजभक्ति या स्वकर्त्तव्य-पालन से विमुख किया जाय, अथवा—

(ग) सम्राट के प्रति अथवा ब्रिटिश भारत में क़ानून द्वारा स्थापित गवर्नमेण्ट के प्रति अथवा ब्रिटिश भारत के न्याय-प्रबन्ध के प्रति अथवा सम्राट की अधीनता में रहने वाले किसी नरेश या सामन्त के प्रति अथवा ब्रिटिश भारत में रहने वाली, बादशाह की प्रजा के किसी वर्ग वा समुदाय के प्रति घृणा या द्वेष का भाव फैले, अथवा—

(घ) किसी व्यक्ति को डरा-धमका कर या भय करके उससे किसी दूसरे व्यक्ति को कोई जायदाद या कोई मूल्यवान वस्तु दिलाई जाय अथवा उससे कोई ऐसा काम कराया जाय, जिसे करने के लिए वह क़ानूनन बाध्य नहीं है, अथवा उसे कोई ऐसा काम करने अथवा न करने के लिए प्रेरित किया जाय, जिसे करने का उसे क़ानूनन अधिकार है, अथवा—

(ङ) किसी व्यक्ति को क़ानून के अमल में अथवा क़ानून और व्यवस्था की रक्षा में हस्तक्षेप करने अथवा कोई अपराध करने अथवा कोई मालगुज़ारी, टैक्स, महसूल, कर या अन्य कोई रक़म या देन, जो गवर्नमेण्ट को या किसी स्थानीय अधिकारी को देय हो, अथवा कोई ज़मीन का लगान या दूसरी कोई ऐसी चीज़ जो उसके ज़िम्मे बाक़ी हो या जो ऐसे लगान के साथ दी जाने वाली हो, देने से इन्कार करने अथवा देने में विलम्ब करने के लिए उत्साहित या उत्तेजित किया जाय, अथवा—

(च) किसी सरकारी कर्मचारी या स्थानीय अधिकारी के नौकर को अपने पद सम्बन्धी किसी कर्तव्य को करने, न करने अथवा उसे करने में विलम्ब कर देने अथवा इस्तीफ़ा देने के लिए प्रेरित किया जाय, अथवा—

(छ) सम्राट की प्रजा के विभिन्न समुदायों के बीच दुश्मनी वा द्वेष के भाव बढ़ाए जायँ, अथवा—

(ज) सम्राट की किसी सेना में या पुलिस में लोगों की भर्ती के सम्बन्ध में विद्वेष फैलाया जाय अथवा किसी ऐसी सेना या पुलिस की तालीम, अनुशासन अथवा प्रबन्ध के प्रति विद्वेष फैलाया जाय—

ऐसी अवस्था में प्रान्तीय गवर्नमेण्ट उन शब्दों,

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

चिन्हों या चित्रादि का, जो उसकी सम्मति में उपरोक्त धाराओं के अनुसार आपत्तिजनक हों, वर्णन या उल्लेख करते हुए ऐसे प्रेस के अधिकारी (कीपर) को लिखित सूचना देकर उस प्रेस की ज़मानत के ज़ब्त कर लिए जाने तथा उस समाचारपत्र, पुस्तक या लेखादि की ब्रिटिश भारत में पाई जाने वाली सभी प्रतियों के ज़ब्त कर लिए जाने की घोषणा कर सकेगी।

व्याख्या—(ग) धारा में 'द्वेष' शब्द के अर्थ में राजभक्ति और शत्रुता के सब प्रकार के भाव गृहीत होंगे, पर गवर्नमेण्ट के किसी कार्य अथवा गवर्नमेण्ट के या किसी भारतीय नरेश या सामन्त के या ब्रिटिश भारत में न्याय-सञ्चालन के किसी कार्य या प्रबन्ध में वैध उपाय से सुधार कराने की ग़रज़ से की हुई कोई निन्दात्मक टीका, जिससे घृणा, तिरस्कार या विद्वेष का भाव न फैलता हो, (ग) धारा के अन्दर नहीं आवेगी।

नई धाराएँ

यहाँ यह बताया जा सकता है कि इस असाधारण क़ानून की उपरोक्त मुख्य धारा में (च) (छ) और (ज) उपधाराएँ एकदम नई हैं तथा (ङ) उपधारा में अधिकतर नए अपराध रक्खे गए हैं। दूसरी नई बात २३वीं धारा के साथ जोड़ गई है, जो इस प्रकार है :—

जब कि किसी प्रिन्टङ्ग प्रेस के अधिकारी (कीपर) से ३री धारा की (क) अथवा (ग) उपधारा या ५वीं धारा (जिसमें दोबारा ज़मानत दाख़िल करने का विधान है) के अनुसार ज़मानत माँगी गई हो, उस प्रेस में कोई समाचारपत्र, पुस्तक या लेखादि तब तक मुद्रित या प्रकाशित नहीं किए जा सकते जब तक ज़मानत दाख़िल न कर दी जाय, और यदि किसी प्रेस का उपयोग (क) उपधारा के विरुद्ध किया जायगा तो प्रान्तीय गवर्नमेण्ट ऐसे प्रेस के अधिकारी (कीपर) को लिखित सूचना देकर उस प्रेस अथवा उसके अहाते में पाए जाने वाले अन्य किसी प्रिन्टिङ्ग प्रेस के ज़ब्त कर लिए जाने की घोषणा कर सकेगी और ७ वीं धारा के अनुसार तलाशी का वारण्ट जारी किया जायगा।

इस क़ानून में यह भी विधान है कि ज़ब्ती के विरुद्ध हाईकोर्ट में अपील की जा सकेगी, जिसका विचार तीन जजों के एक ख़ास इजलास के सामने होगा!

ऐसी हालत में जब कि पहिली ज़मानत ज़ब्त कर ली गई हो, दूसरी बार पहिले से भारी ज़मानत माँगी जा सकेगी और जो प्रेस दूसरी बार अपराध करेगा उसकी नक़द ज़मानत के साथ-साथ उस प्रेस को भी ज़ब्त कर लिया जा सकेगा!!

इस क़ानून को जारी करते हुए गवर्नर जनरल ने एक लम्बा और जी उबाने वाला वक्तव्य भी प्रकाशित किया है। परन्तु उस वक्तव्य की सारी बातों पर ध्यान रखते हुए भी हम यह कहे बिना नहीं रह सकते कि इस क़ानून के रहते ईमानदारी के साथ किसी पत्र का सञ्चालन अथवा निर्भीकता के साथ किसी घटना या कार्य पर टीका-टिप्पणी कर सकना एकबारगी असम्भव हो गया है। भारत के दरिद्र पत्र-सञ्चालकों के लिए आए दिन भारी-भारी ज़मानतें देना और अन्त में प्रेस तक ज़ब्त करवा बैठना कोई साधारण साहस का काम नहीं है। सन् १९१० वाले क़ानून के अनुसार भारत के राष्ट्रीय पत्रों पर जो भीषण प्रहार और रोमाञ्चकारी अत्याचार किए गए थे, उनके घाव भारतवासियों की स्मृति में आज भी ताज़े हैं। उस अनर्थकारी क़ानून का प्रयोग करके सन् १९१९ में बम्बई के निर्भीक राष्ट्रीय दैनिक पत्र 'बॉम्बे क्रॉनिकल' की १०,०००) रु० की पहली ज़मानत ज़ब्त कर लेने के बाद उससे पुनः २,०००) रु० की दूसरी ज़मानत तलब की गई। और जब अधिकारी-वर्ग को इससे भी सन्तोष न हुआ तो उस पत्र के स्वनामधन्य सम्पादक श्री० हॉर्निमैन को देश-निर्वासन का दण्ड दिया गया। इसके साथ ही साथ पत्र का प्रकाशन भी बन्द हो गया। एक महीने बाद जब पत्र-सञ्चालकों ने पुनः उसे प्रकाशित करना चाहा तो उस पर सेन्सर बैठाया गया तथा उससे ५,००० रु०) की ज़मानत फिर ली गई। परन्तु फिर भी गवर्नमेण्ट को सन्तोष न हुआ और फिर उसकी ज़मानत बढ़ा कर १०,०००) रु० की कर दी गई।

उन्हीं दिनों 'अमृत बाज़ार पत्रिका' की ५,०००) रु० की पहिली ज़मानत ज़ब्त करके उससे दोबारा १०,०००) रु० की ज़मानत ली गई।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

लाहौर के 'ट्रिब्यून' से २,०००) की ज़मानत ली गई थी। परन्तु पञ्जाब के मार्शल लॉ के ज़माने में उसका प्रकाशन बन्द कर दिया गया, उसके सुयोग्य सम्पादक श्री० कालीनाथ राय पर मार्शल लॉ के अनुसार मुक़द्दमा चलाया गया तथा उन्हें २ साल की कड़ी क़ैद और १०००) रु० जुर्माने का दण्ड दिया गया!

इलाहाबाद के 'इण्डिपेण्डेण्ट' और 'भविष्य' के गौरवमय उत्सर्ग की कहानी से तो इन प्रान्तों का बच्चा-बच्चा तक परिचित ही है। 'इण्डिपेण्डेण्ट' से पहले २,०००) रु० की ज़मानत ली गई, फिर उसका पञ्जाब और बर्मा में जाना बन्द किया गया। इसके बाद जब शासकों की नृशंसता का सामना करना उस पत्र के लिए सर्वथा असम्भव हो गया तो वह साईकलोस्टाईल से छाप कर बहुत दिनों तक प्रकाशित होता रहा। अन्त में इसी प्रकार भारतीय स्वतन्त्रता के महायुद्ध में वीर की भाँति लड़ते-लड़ते भयङ्कर घाटा उठा कर उसका भी अन्त हो गया!

कर्मयोगी श्री० सुन्दरलाल जी सम्पादित हिन्दी दैनिक पत्र 'भविष्य' से पहले २,०००) रु० की ज़मानत ली गई थी। उसके ज़ब्त हो जाने के बाद उससे एकदम १०,०००) रु० की ज़मानत तलब की गई। इस मामले में उसके साथ यहाँ तक सख़्ती की गई कि उस पत्र की नीति के नम्र कर दिए जाने का विश्वास दिलाने पर भी उसकी ज़मानत ५,०००) रु० से कम न की गई। अन्त में यह निर्भीक राष्ट्रीय पत्र भी शासकों की नृशंसता के साथ युद्ध करते-करते ही मरा!!

इसी प्रकार उर्दू प्रेसों और पत्रों पर भी प्रहार हुआ। 'मेहरी मिमरोज़' प्रेस की १,०००) रु० की पहिली ज़मानत, वायसराय के नाम अली भाइयों का पत्र छापने और प्रकाशित करने के कारण, ज़ब्त कर ली गई। उसके बाद उस प्रेस से १०,०००) रु० की ज़मानत माँगी गई।

जलालपुर के 'ताज' नामक दैनिक पत्र के छापने और प्रकाशित करने वाले 'ताज' प्रेस से तो बिना कोई कारण बताए अथवा उसे पहिले से बिना कोई सूचना दिए हुए ही १,०००) रु० की ज़मानत ली गई!

इस प्रकार हम कितने प्रेसों, पत्रों और स्वार्थत्यागी सम्पादकों के नाम गिनावें, जिन्होंने उस ज़ुल्म और बर्बरता के ज़माने में भयङ्कर से भयङ्कर क्षति और कठोर से कठोर प्रहार सहन किए? सन् १९१९ में कुछ महीनों के भीतर ही भीतर मद्रास के 'हिन्दू', सिन्ध के 'हिन्दवासी', 'सिन्ध-समाचार', 'सिन्ध-एडवोकेट', मराठी दैनिक 'सञ्जय', तामिल दैनिक 'स्वदेश-मित्रम्', 'हिन्दू नासेन', 'देश बख़्तान', लाहौर के 'प्रताप', अङ्गरेज़ी दैनिक 'पञ्जाबी,' एक दूसरा अङ्गरेज़ी दैनिक 'यङ्ग पैट्रियट', हिन्दी दैनिक 'विजय', उर्दू दैनिक 'कॉङ्ग्रेस', कलकत्ते के 'राजशक्ति', लखनऊ के 'अख़्बूवत', तथा 'सङ्कल्प' आदि कितने ही पत्रों पर प्रहार किया गया, कितनों की ज़मानतें ज़ब्त की गईं, कई के सम्पादकों को सज़ाएँ दी गईं, कई पत्रों का प्रकाशन कुछ समय के लिए बन्द हो गया, तथा कई का तो सदा के लिए अन्त ही हो गया! और आज ११ वर्षों के बाद भारत के राष्ट्रीय पत्रों के जीवन पर ठीक उसी प्रकार का, बल्कि उससे भी बढ़ कर भयावह सङ्कट पुनः उपस्थित हुआ है।

इस असाधारण क़ानून के जारी होने के बाद दो ही एक दिनों के भीतर इसका प्रयोग इतनी सख़्ती के साथ

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

किया गया है कि दिल्ली के, जो भारतीय साम्राज्य की राजधानी है, सभी राष्ट्रीय अङ्गरेज़ी, हिन्दी, उर्दू पत्र बन्द हो गए हैं; कलकत्ता, जो ब्रिटिश-साम्राज्य का द्वितीय विशालतम नगर है, राष्ट्रीय पत्रों से सर्वथा शून्य है; बिहार प्रान्त में जितने भी हिन्दी या अङ्गरेज़ी के राष्ट्रीय पत्र निकलते थे, सभी बन्द हो गए हैं। और कौन कह सकता है कि भविष्य में और किन-किन पत्रों पर प्रहार होने वाला है, किन-किन के सम्पादकों और प्रकाशकों को सज़ाएँ दी जाने वाली हैं, कौन-कौन से प्रेस ज़ब्त किए जाएँगे तथा किन-किन अभागे पत्रों का प्रकाशन सदा के लिए बन्द हो जायगा?

ये पंक्तियाँ लिखते-लिखते समाचार मिला है कि इस काले क़ानून का प्रयोग संयुक्त प्रान्त की गवर्नमेण्ट ने भी बड़े ज़ोरों से करना प्रारम्भ कर दिया है; कानपुर के राष्ट्रीय साप्ताहिक सहयोगी 'प्रताप' तथा काशी के सहयोगी 'आज' के सुयोग्य सम्पादकों को बुला कर स्थानीय डिस्ट्रिक्ट मैजिस्ट्रेट ने इनसे इस बात का आश्वासन लेना चाहा कि भविष्य में वे अपने पत्र में सम्पादकीय लेख तथा टिप्पणियाँ न लिखेंगे। ऐसा आश्वासन देने से दोनों पत्रों के सम्पादकों ने साफ़ इन्कार कर दिया। फलस्वरूप उनसे क्रमशः ३ और ४ हज़ार की ज़मानतें माँगी गईं। ज़मानत देकर पत्र निकालना इन आत्म-सम्मानी सम्पादकों ने उचित न समझा; फलतः इन दोनों पत्रों का प्रकाशन भी बन्द हो गया!

एक ओर है प्रेस की स्वाधीनता का ऐसा रोमाञ्चकारी अपहरण और दूसरी ओर है शासकवर्ग तथा पुलिस की दिनोंदिन बढ़ती हुई अमानुषिक बर्बरता तथा धींगाधींगी। कहीं निरपराध महिलाओं पर पुलिस डण्डे और लाठियों से प्रहार करती है तो कहीं छोटे-छोटे अबोध बच्चों पर निन्दनीय नीचता और कायरता के साथ आक्रमण किया जाता है। ऐसी परिस्थिति में आवश्यकता तो इस बात की थी कि प्रेस को इन दुर्घटनाओं और दुराचारों की कड़ी से कड़ी आलोचना करने की स्वतन्त्रता दी जाती, और साथ ही उन आलोचनाओं पर अधिक से अधिक ध्यान देकर प्रजा के कष्ट दूर करने का प्रयत्न किया जाता, परन्तु उलटे हमारे देश के विदेशी शासकों ने एक असाधारण क़ानून बना कर प्रेस तथा समाचार-पत्रों को और भी पङ्गु बना डाला है। इस क़ानून के रहते किसी भी राष्ट्रीय पत्र के लिए सर्वथा निर्भीक भाव से किसी घटना या कार्य की टीका कर सकना एकबारगी असम्भव हो गया है।

संयुक्त प्रान्तीय गवर्नमेण्ट और उसके चीफ़ सेक्रेटरी चौबे (कुँवर) जगदीशप्रसाद जी की अब तक 'चाँद' और इस संस्था पर जो वक्रदृष्टि रही है, वह पाठकों को भली भाँति विदित है—बच्चा-बच्चा हमारे साथ किए गए ज़ुल्मों से पूर्णतः परिचित है। ऐसी परिस्थिति में किस दिन 'चाँद' पर नया वार हो जाय, यह कोई नहीं कह सकता। आम को आम और जामुन को जामुन कहना 'चाँद' की निश्चित-नीति है, अतएव वर्तमान परिस्थिति में भारतीय महिलाओं और बच्चों पर किए जाने वाले अपमान और अत्याचार को आँखें बन्द करके सह लेना—हम स्वीकार करते हैं, हमारी शक्ति के बाहर की बात है। हमारा यह दृढ़ विचार है कि संसार की किसी भी महत्वपूर्ण घटना पर निष्पक्ष और निडर टिप्पणी न करना, अपने पढ़ने वालों तथा अपनी आत्मा के साथ विश्वासघात करना है।

वर्तमान परिस्थिति—दुर्भाग्य से ऐसी दारुण परिस्थिति है, जिसमें अपने देश का शुभचिन्तक राजविद्रोही क़रार दिया जाता है और अन्याय का विरोध करना ही 'अराजकता' कहा जाता है!! अतः इस अनावश्यक और अनर्थकारी क़ानून के विरोध में हम इस मास के अङ्क से 'सम्पादकीय विचार' तथा 'रङ्गभूमि' आदि सम्पादकीय टिप्पणियाँ लिखना तब तक के लिए बन्द करते हैं, जब तक इस विषय में कोई उचित निर्णय न हो जाय।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

कलङ्क

['मुक्त']

जमुना के गहरे नीले रङ्ग के जल में, तट पर खड़े वृक्षों की छाया नाच रही थी। पास ही एक ऊँचा बुर्ज अपना उदास मस्तक झुकाए चिरकाल से खड़ा था। चञ्चल लहरें उसके पैरों पर लोट-लोट कर बिखर जाती थीं। पश्चिम क्षितिज में सूर्य अस्त हो रहा था।

मीना चुपचाप उसी बुर्ज पर बैठी थी। बुर्ज के नीचे से जमुना के तट तक ढालुवें ज़मीन पर गेहूँ के हरे-हरे पौदे लगे थे। डूबते हुए सूरज की पीली किरनें उन पर पड़ कर सोने की तरह चमक रही थीं। शहर के कितने ही भले-बुरे आदमी वायु सेवन के लिए छोटी-छोटी नावों पर जमुना के वक्षःस्थल पर बड़ी दूर-दूर तक अग्रसर हो गए थे। लेकिन मीना को इन सब बातों की ओर ध्यान देने का अवकाश कहाँ था? वह चुपचाप अपनी सूनी आँखों से उस पार की धूमिल हरियाली की ओर देख रही थी। उसके हृदय का आकाश सूना था, लेकिन शान्त नहीं था। अनेक प्रकार के विचारों का बवण्डर उसे अस्थिर कर रहा था। वह अस्थिर थी, अशान्त थी, विकल थी।

कमर तक लटकते हुए, उसके काले-काले घुँघराले बाल इधर-उधर बिखरे हुए थे। एक बार उसने उन्हें सँभाला, माथे पर से हटे हुए आँचल को ऊपर खींच लिया, फिर सोचने लगी—लोग क्या कहेंगे? मैं कलङ्किनी हूँ?? हाँ—यही तो, कलङ्किनी, कलङ्किनी—हज़ार बार कलङ्किनी!! इस कलङ्क में भी कितना सुख है, कितनी मधुरता! ओह! लोगों को जो कहना हो, वे कहें। मैं किस-किस का मुँह बन्द करती चलूँगी? लेकिन मेरे मन की बात अन्तर्यामी जानते हैं।

उसने अपने मन को सन्तोष देने की चेष्टा की, लेकिन उसे सन्तोष न हुआ। मालूम पड़ा मानो वह अपने आपको ठग रही है, धोखा दे रही है। ऊब कर उसने जमुना की ओर देखा। डूबते हुए सूरज की प्रभाहीन लालिमा जमुना के वक्षःस्थल पर फैल गई थी। प्रकाश, अन्धकार का आलिङ्गन कर रहा था। उस दृश्य में हृदय को हिला देने वाली उदासी थी। मीना उस दृश्य से प्रभावित हुई। उसने मन ही मन सोचा—मेरे हृदय में जैसी आग लगी हुई है, क्या जमुना ने भी अपने हृदय में उसी तरह की कोई ज्वाला छिपा रक्खी है?

गोधूलि की वेला धीरे-धीरे बीत गई। रात्रि का अन्धकार पृथ्वी पर घनीभूत हो उठा। लेकिन मीना अपने विचारों में पहले ही की भाँति लीन रही।

इधर कई दिनों से ही वह अपने मन में एक प्रकार की नवीनता का अनुभव कर रही थी। उस नवीनता में सुख नहीं था, पीड़ा थी; शान्ति नहीं थी, बेचैनी थी; स्थिरता नहीं थी, चञ्चलता थी। वह डगमगा रही थी, अधीर हो रही थी। वह अपनी इच्छा स्वयं ही कुछ न समझ पाती थी। बार-बार मचल उठने वाला उसका मन कुछ चाहता था, किन्तु क्या चाहता था, यह बात शायद उसे स्वयं भी न मालूम थी। मालूम पड़ता था, मानो उसने कुछ खो दिया हो, वह कुछ भूल गई हो, मानो अन्धकार से भरी हुई आधी रात में उसके हाथ से कोई उसका दीपक छीन ले गया हो, मानो वायु के चञ्चल थपेड़ों ने उसके आँचल में छिपे हुए प्रकाश के एकमात्र क्षीण आधार को एक हलकी फूँक मार दी हो। उसकी वह अवस्था कैसी दयनीय थी, कैसी करुणाजनक!

मन की हरारत का असर शरीर पर पड़ता ही है। मीना का मन अस्वस्थ था, शरीर भी अस्वस्थ रहने लगा। वह कमज़ोर होने लगी, उसके मन से उत्साह और प्रसन्नता जाती रही, आलस्य ने घर कर लिया। कुछ ही दिनों में वह पीली पड़ गई!

दूर की घड़ी ने टन्-टन् करके आठ बजाए। मीना घण्टे की आवाज़ सुन कर चौंक पड़ी। उसने पीछे फिर कर देखा—सारा शहर स्वर्ग के सपने की तरह स्वप्न मालूम पड़ता था। प्रकृति में एक अखण्ड शान्ति,

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

अनन्त शून्यता, अगाध नीरवता व्याप्त हो रही थी। रात्रि का अन्धकार सघन होकर धरित्री पर बिखर गया था। जमुना के गहरे नीले रङ्ग के कल्लोलित जल-तरङ्गों के साथ मिल कर, झिल्ली की झनकार—दूर से आती हुई सङ्गीत की क्षीण करुण ध्वनि के समान—कानों में गूँज रही थी। वह उठ खड़ी हुई। बोली—अरे! इतनी रात हो आई! मैं अभी तक यहाँ क्या कर रही थी?

उसने उठ कर वहाँ से जाना चाहा, मगर जा न सकी। उसके पैर उठते ही न थे, शरीर स्पन्दनहीन हो रहा था। उसे मालूम पड़ता था मानो उसने कुछ खो दिया हो, वह कुछ भूल गई हो। इसी प्रकार खोई-सी, भूली-सी, उस पार के सघन अन्धकार में आँख गड़ाए वह निस्पन्द खड़ी रही। उसके हृदय में अतीत की, दुख-सुख से भरी हुई अनेक स्मृतियों का तूफ़ान उठ रहा था। उसके आनन्द की, प्रसन्नता की, ख़ुशी की, ख़ुमारी दूर हो गई थी—वह निर्जीव, निश्चेष्ट, निरुत्साह होकर चुपचाप खड़ी रही।

खड़ी-खड़ी वह सोचने लगी—घर-बाहर कहीं भी उसे सुख और सन्तोष क्यों नहीं मिलता? क्यों नहीं संसार उसका थोड़ा सा भी सुख बर्दाश्त कर सकता? उसने क्या अपराध किया है? किस अपराध के लिए उसे नरक से भी भयङ्कर यातना दिन-रात भोगनी पड़ती है? वह दुनिया का कौन सा अनमोल वैभव छीन लेना चाहती है? अरे! वह केवल एक छोटा सा अपना अधिकार चाहती है। लेकिन संसार कितना कठोर है, कितना सङ्कीर्ण!! वह उसके इस तुच्छ अधिकार को भी सहन नहीं करना चाहता।

उस पार के सघन अन्धकार को भेदने की इच्छा से, अन्तहीन नीले आसमान में सहस्र-सहस्र तारे मुसकुरा उठे। मीना ने उनकी ओर उपेक्षा-भरी आँखों से एक बार देखा। सोचने लगी—मेरे हृदय के निविड़ अन्धकार में भी 'उसकी' स्मृति इसी प्रकार चमक उठती है। लेकिन यह प्रकाश कितना धुँधला, कितना क्षीण होता है! उससे क्या यह पुञ्जीभूत दुर्गम तिमिर-राशि नष्ट हो सकती है? असम्भव, ओः! बिलकुल असम्भव!!

एक साथ ही सहस्र-सहस्र भावनाओं के आलोड़न से उसका मस्तिष्क विक्षिप्त हो गया। उन्मत्त-सी होकर एक बार अपनी आकुल आँखों से उसने चारों ओर देखा—हाय! इस अकूल सागर में उसे सहायता देने वाला, उसकी रक्षा करने वाला कोई नहीं है? दुनिया इतने मोहक और अलभ्य पदार्थों से भरी हुई है, मगर उसमें उसका कुछ नहीं है—कुछ भी नहीं? वह कैसी अभागिनी है!!

उस नीरव निशीथ में सुदूर देश से आती हुई घण्टा की गुरु-गम्भीर ध्वनि फिर एक बार गूँज उठी। मीना ने उँगलियों पर गिना—एक, दो, तीन, चार..... दस बज गए!! अरे, आठ के बाद एकदम दस!! अवश्य ही, घड़ियाल बजाने वाला गहरी नींद से उठा है। उसकी नींद की ख़ुमारी अभी भी दूर नहीं हुई, नहीं तो ऐसी ग़लती वह करता ही क्यों—आठ के बाद एकदम दस? एक घण्टा बिलकुल ग़ायब??

लेकिन इन प्रतारणाओं से मन को सन्तोष नहीं होता। उसे आधार के लिए कोई ठोस वस्तु चाहिए। ये तो मन को भुलाने, धोखा देने की बातें हैं। उसने सोचा—अब यहाँ बिलकुल नहीं ठहरा जा सकता। अब लौटना ही पड़ेगा। हाँ, और कोई उपाय नहीं है, सिवा लौट जाने के।

उसने एक पैर आगे बढ़ाया—सहसा एक मानव-मूर्ति को सामने पाकर भय से, शङ्का से, आतङ्क से वह काँप उठी। "कौन"—उसने चौंक कर पुकारा—"कौन?"

"मैं बंसी हूँ।"—क्षीण कण्ठ से उत्तर मिला।

"सचमुच ही क्या तुम बंसी हो"—आश्चर्य, भय और आह्लाद से एक बार मीना फिर काँप उठी—"बंसी!"—उसने कहा—"तुम बंसी हो? यहाँ? इस समय?"

"हाँ मीना"—बंसी ने उत्तर दिया—"मैं इसी समय यहाँ आया हूँ और यह काम जान-बूझ कर ही मैंने किया है।"

"लेकिन अच्छा नहीं किया।"

"आज तक जो नहीं किया है उसे अब कैसे करूँगा?"

"तुम्हें इस समय न आना चाहिए था।"

"जो चाहिए था वही अगर मैं कर पाता मीना, तो आज मेरी यह दशा न होती। लेकिन नहीं करता, शायद कर ही नहीं सकता। जाने दो उन बातों को!"

"तुम्हें कुछ कहना है बंसी?"

"हाँ, तुम कहीं जा रही हो क्या?"

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

"हाँ।"

"कहाँ?"

"घर के सिवा और जाने की मुझे जगह ही कहाँ है?"

"लेकिन क्या मेरी एक बात सुनने का अवकाश तुम्हें नहीं है मीना?"

"अवकाश तो नहीं है, मगर सुन लूँगी। उसे सुने बिना शायद मैं रह नहीं सकती।"

"मीना!"

"हाँ।"

"तुम दिन पर दिन ऐसी क्यों हुई जा रही हो?"

"कैसी हुई जा रही हूँ बंसी?"

"ऐसी ही। पहले तो तुम इस तरह की बातें नहीं कहा करती थीं।"

"बंसी, तुम भी यह बात पूछते हो?"—मीना अपने को सँभाल न सकी, रो पड़ी। उसका रोना अन्धकार में बंसी को मालूम न हो सका। केवल उसकी भरी हुई आवाज़ उसने सुनी।

मीना खड़ी न रह सकी, वह थर-थर काँप रही थी, ज़मीन पर बैठ गई। बंसी भी उसके समीप ही बैठा। थोड़ी देर के बाद मीना ने कहा—इस तरह की बातों के सिवा और मैं कह ही क्या सकती हूँ बंसी?

"कुछ नहीं!"

"तब जाने दो। उसका ख़्याल न करो। ये बातें तो बहुत पुरानी हो चुकी हैं। तुम अपनी बात कहो।"

"क्या कहूँ मीना, कुछ समझ में नहीं आता।"

"लेकिन तुम कुछ कहना चाहते थे न?"

"चाहता तो था, किन्तु समझ में नहीं आता क्या कहूँ। बहुत सी बातें सोचता हूँ, किन्तु यहाँ आने पर सब भूल जाता हूँ। ऐसा क्यों होता है मीना?"

"मैं क्या कहूँ? लेकिन हाँ, होता ऐसा ही है।"

बहुत देर तक दोनों चुप रहे। उस अन्धकारमयी रात्रि में—जमुना के तट पर—दो आकुल हृदय किसी अज्ञात आशङ्का से काँप रहे थे। मीना सिर झुका कर अँगूठे से धरती खुरच रही थी, बंसी घुटनों पर सिर टेके गम्भीर चिन्ता में डूबा हुआ था।

सहसा बंसी ने सिर उठाया। उसके मुँह से एक ऊँची गहरी साँस निकल गई। उसने कहा—सचमुच ही अब समय नहीं है मीना! अब एक क्षण भी व्यर्थ की बातों में नहीं बिताया जा सकता। मैं अपनी बातें कह दूँ। फिर न जाने कभी समय मिले या न मिले!

बंसी की बातें सुनने के लिए मीना सजग हो बैठी। उसे जान पड़ा मानो वह कोई ऐसी बात सुनने के लिए तैयार हो रही है, जिसके सुनने की उसने कभी आशा नहीं की थी, जिस बात का उसे सपने में भी कभी ख्याल नहीं आया था।

बंसी ने कहा—मीना! बात बड़ी कठोर है, उसे सुनने के लिए न तो तुम तैयार हो, न कहने के लिए मैं, किन्तु क्या करूँ, कहना ही पड़ेगा। मीना, आज मेरा दम घुट रहा है।

मीना हतचेत सी होकर चुपचाप केवल बंसी की ओर ताकती रही।

बंसी कहता गया—आज चिरकाल के लिए तुमसे विदा लेने आया हूँ मीना! इसके आगे मैं और क्या कहूँ, कुछ कह नहीं सकता।

मीना की आँखों से आँसू की बूँदें टप-टप करके गिर पड़ीं। दोनो हाथों से ज़ोर भर अपना कलेजा दबा कर उसने कहा—अधीर न होओ बंसी, तुम्हें मज़बूत दिल का होना चाहिए। ऐसा करने से कैसे काम चलेगा!

कहने को तो मीना ने कह दिया, पर उसका हृदय जैसा हो रहा था, उसे वही जानती थी। उसके अतिरिक्त और जान ही कौन सकता था? बंसी के हृदय की ज्वाला भी उससे छिपी नहीं थी। उसके हृदय में एक आग धधक रही थी, एक तूफ़ान उठ रहा था, एक ज्वालामुखी सुलग रही थी, मगर वह विवश थी, शक्तिहीन थी, असहाय थी!

बंसी बोला—मीना! आज बीते हुए युग की एक-एक बात हृदय में सुई सी चुभ रही है। एक-एक स्मृति आज हृदय में बिच्छू के डङ्क की भाँति जलन पैदा कर रही है। जीवन में यह विप्लव, यह उथल-पुथल, किसने मचा दी है मीना? इसका परिणाम क्या होगा!

अत्यन्त गम्भीर होकर मीना ने कहा—सब मैंने ही किया है बंसी, सारे अनर्थों की जड़ मैं ही हूँ, लेकिन विवश हूँ। और कुछ कर ही नहीं सकती। नहीं जानती, इसका परिणाम अच्छा होगा या बुरा किन्तु जो कुछ भी हो, सब सहने के लिए मैं तैयार हूँ।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

"यह बातें सुनने का जी नहीं करता मीना, इन्हें रहने दो। तुमने मेरे लिए बहुत अन्याय-अत्याचार सहन किया है। नहीं जानता, हम लोगों का यह स्नेह, यह ममता, दुनिया की आँखों में इतना खटकता क्यों है!"

"शायद दुनिया हमारी अपेक्षा अधिक पापी है। पापी हम भी हैं, किन्तु दुनिया जितनी है, उतने नहीं। सम्भव है, दुनिया के साथ रह कर, उसके घात-प्रतिघातों में पड़ कर हम भी भविष्य में वैसे ही हो जायँ, पर आज नहीं हैं। होते अगर, तो हमारी यह दशा ही क्यों होती?"

"मीना! तुम देवी हो। तुमने हमारे लिए क्या नहीं किया? अपमान, अत्याचार, मिथ्या कलङ्क—सभी तो तुमने हमारी ओर देख कर ही हँसते-हँसते बर्दाश्त कर लिया है! अब, आज तुमसे सदा के लिए विदा होते समय मैं एक भीख माँगता हूँ। बोलो, दोगी?"

"क्या?"

"पहले वचन दो तो कहूँ?"

"तुम कहो बंसी, तुम्हें अदेय क्या है?"

"मीना! मुझे भूल जाने की चेष्टा करो। अपना जीवन सुखी बनाओ, मुझे इसी में सुख और सन्तोष होगा। तुमने मेरे लिए इतना किया है मीना, अब क्या यह न कर सकोगी?"

मीना रोने लगी। क्रन्दन का उच्छ्वसित आवेग जब कुछ कम हुआ तो उसने कहा—नहीं, मैं यह बात किसी तरह नहीं कर सकती, कोशिश करके भी नहीं। सच कहती हूँ बंसी, मैं ऐसा कर सकती होती अगर, तो बहुत पहले कर चुकी होती। तुम्हें कहने का मौक़ा न देती। लेकिन ज्यों-ज्यों भूलने का मनसूबा बाँधती हूँ, तुम्हारी स्मृति त्यों ही त्यों अधिक तीव्र वेग से मेरे मन-प्राण पर अधिकार कर लेती है। मैं क्या करूँ?

बंसी ने कहा—मीना, सचमुच ही तुम मनुष्य नहीं, देवी हो। आज भक्ति से, श्रद्धा से, आदर से और प्रेम के उन्माद से तुम्हारे चरणों पर मेरा मस्तक झुका जा रहा है। मुझे आज्ञा दो मीना, मैं तुम्हारे चरणों पर सिर रख कर एक बार अपने कलुषित जीवन को पवित्र बना लूँ।

"मैं इस योग्य नहीं हूँ बंसी! तुम अन्याय करते हो!"

किन्तु बंसी ने अन्याय ही किया। बलपूर्वक मीना के पैर खींच कर उस पर अपना सिर रख दिया। गरम-गरम आँसू की दो बूँदें उसके पैरों पर ढुलक पड़ीं। मीना का सारा शरीर एक बार सिहर उठा।

"मीना! मैं चला। शायद, सदा के लिए ही।"—बंसी के ये शब्द कुछ दूर सुन पड़े। फिर क्षण भर में ही वह अन्धकार में अदृश्य हो गया।

मीना मूर्च्छित होकर तट की गीली मिट्टी में गिर पड़ी।

रात आधी से अधिक बीत गई थी, लेकिन मीना की आँखों में नींद न थी। अपने सजे हुए अकेले कमरे में वह पलँग पर करवटें बदल रही थी। उसके हृदय में अनेक तरह की भिन्न-भिन्न भावनाएँ तूफ़ान की तरह उठतीं और आँसुओं की तरह गिर जाती थीं। वह उन्मत्त हो रही थी, विह्वल हो रही थी, किंकर्त्तव्यमूढ़ हो रही थी।

मीना सोचने लगी—बंसी कहाँ चला गया है? उसकी बातों का क्या मतलब था? वह मुझसे अन्तिम बार मिलने क्यों आया था? न जाने उसके मन में क्या है? वह क्या चाहता है, क्या करता है? मैं क्या कह कर अपने दिल को ढाढ़स दूँ?

उसने अपनी डायरी निकाली। अनेक पुराने पन्नों को उलटते-पलटते एक बार वह चीख़ मार कर रो उठी। रोते-रोते उसका हृदय फट जाने का उपक्रम करने लगा। उच्छ्वसित क्रन्दन का आवेग रोकने के लिए छाती से तकिया दबा कर वह पलँग पर लोट गई। हिचकियाँ ले-लेकर, अधीर होकर, विकल होकर, विह्वल होकर वह देर तक रोती रही। रोने से जी का भार जब कुछ हलका हुआ तो उसने एक नए पृष्ठ पर लिखा—

"उसे मेरे पास से गए एक घण्टे से कुछ अधिक समय हो गया। उसके चले जाने के बाद से तरह-तरह की शङ्काओं से चित्त डँवाडोल हो उठा है। कहीं जी नहीं लगता। पढ़ती हूँ, सोचती हूँ, अन्धकार में आँखें गड़ा कर देखती हूँ, मगर कहीं शान्ति नहीं मिलती, कहीं सन्तोष नहीं होता। न जाने मेरे हृदय में क्या हो रहा है! न जाने मेरा हृदय क्या चाहता है!! बड़ी निराशा, बड़ी वेदना, उफ़! बड़ी विकलता है! हृदय

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

में एक आग सी जल रही है, एक ज्वालामुखी सुलग रही है। लेकिन मेरे दुख से दुखी होने वाला कौन है? मेरी पीड़ा का अनुभव करने वाला कौन है?"

डायरी बन्द करके, आँखें मूँद कर बड़ी देर तक वह न जाने क्या सोचती रही। केवल डायरी लिखने से उसे सन्तोष नहीं हुआ। चिट्ठी लिखने का काग़ज़ लेकर वह अपने पति को पत्र लिखने लगी—

"जीवन-देवता,

किन अनपेक्षित घटनाओं ने हमारे जीवन के प्रकाश में अन्धकार की अजस्र धारा उड़ेल दी है? किन भूलों और भ्रमों ने हमारे सुख और शान्ति में दुख और विकलता और निराशा का तूफ़ान ला खड़ा किया है? वह कौन सा रहस्य है मेरे स्वामी, जो हमारे तुम्हारे बीच में मलिनता का, कलह का अभेद्य प्राचीर बन कर आ खड़ा हुआ है? मुझे बतलाओ मेरे सुख-दुख के विधायक, वह कौन सा जादू है, वह कौन सी माया है, जो दिन पर दिन तुम्हें मुझसे इतनी दूर लिए जा रही है? आज मेरा—नारी का—दुर्बल हृदय सौ-सौ प्रतिकूल भावनाओं के मन्थन से अधीर, विह्वल हो रहा है। इन दुर्वह परिस्थितियों का आघात वह अब सह नहीं सकता। मुझे प्रकाश दिखाओ मेरे स्वामी, मुझे रास्ता बताओ; भ्रम और अज्ञान के पथ पर बहुत दूर चली आई हूँ। अन्धकार से जी ऊब गया है। मेरी रक्षा करो, मेरा उद्धार करो। तुम्हारे सिवा अपने हृदय की यह दारुण पीड़ा मैं और किससे कहूँ?

"मेरे सर्वस्व, तुमने मुझे अविश्वासिनी समझा है, कलङ्किनी समझा है, लेकिन अच्छा नहीं किया। मैं सब कुछ हूँ, किन्तु कलङ्किनी नहीं हूँ। जीवन में आज तक मैंने ऐसा कोई काम नहीं किया—कर्म से, वचन से अथवा मन से—जिससे कोई मेरी ओर उँगली उठा सके, मुझ पर लाञ्छन लगा सके। लेकिन फिर भी संसार ने मेरी ओर उँगली उठाई, मुझ पर लाञ्छन लगाया, मुझे कलङ्किनी कहा! ऐसी अवस्था में, यदि मैंने संसार की उपेक्षा की, उसके कहने पर ध्यान नहीं दिया, तो क्या बुरा किया? जिस बात का कोई मूल नहीं है, कोई अस्तित्व नहीं, उस सारहीन निरर्थक बात को मानने के लिए मैं कैसे तैयार हो जाऊँ मेरे मालिक?

"दुनिया के उँगली उठाने की, उसके लाञ्छन लगाने की, मैं सचमुच ही बिलकुल परवा नहीं करती, किन्तु तुम्हारे द्वारा उपेक्षित होकर रहना तो एकदम असम्भव है। तुम्हारी आँखों में अपराधिनी, अविश्वासिनी और कलङ्किनी बन कर मैं क्षण भर भी जीवित नहीं रहना चाहती, लेकिन जो चाहती हूँ, हर समय वही तो होता नहीं। तुमने मुझ पर अविश्वास किया, मुझे कलङ्किनी समझा, लेकिन मैं पूछती हूँ, ऐसा क्यों किया? दुनिया कहती है तो कहने दो, किन्तु तुम ऐसी बात क्यों कहते हो? क्यों ऐसी बातों पर विश्वास करते हो? ऐसी बातें मन में ही क्यों लाते हो? दुनिया कहती है इसलिए कि वह मुझे नहीं जानती, लेकिन तुम तो मेरे स्वामी, मेरे हृदय की एक-एक धड़कन को जानते हो, मेरे जीवन के प्रत्येक श्वास-प्रश्वास से परिचित हो, फिर जान-बूझ कर ऐसी बात क्यों कहते हो? बोलो, मुझे जवाब दो।

"अनेक बार तुमने मुझसे पूछा है—तुम क्या चाहती हो? तुम्हारे मन में क्या है? लेकिन मैं तुम्हें क्या बताती? क्या बताती मेरे मालिक, कि मेरे मन में क्या है, मैं क्या चाहती हूँ? अनेक बार स्वयं मेरे ही मन में यह प्रश्न बड़ा विकट रूप धारण करके उठ खड़ा होता है। परन्तु बहुत सोचने-विचारने पर भी मैं इसका कोई छोर-किनारा नहीं देख पाती। मैं स्वयं ही नहीं समझ पाती कि मेरे मन में क्या है, मैं चाहती क्या हूँ! लेकिन हाँ, इतना जानती हूँ कि कुछ है ज़रूर, जो दिन-रात किसी अभाव की तरह मेरे हृदय में खटका करता है, काँटे की तरह चुभा करता है। लेकिन वह क्या है, कौन जाने!

"लोग समझते हैं कि मैं ज़्यादती कर रही हूँ, तुम्हारा शासन नहीं मानती, अपने अधिकारों का दुरुपयोग कर रही हूँ, लेकिन बात ऐसी नहीं है। तुम्हारा शासन मैं नहीं भी मान सकती, ऐसा करने के लिए मुझे कोई बाध्य करने वाला नहीं है, लेकिन मैं मानती हूँ, मानना पसन्द करती हूँ। मैं अधिकारों का दुरुपयोग भी नहीं करती, मेरे अधिकार ही क्या हैं? हाँ, केवल मैं बंसी को प्यार करती हूँ। किन्तु प्यार करना क्या कोई पाप है मेरे स्वामी? मैं बंसी को प्यार करती हूँ ज़रूर, लेकिन मेरे मन में पाप नहीं है, विकार नहीं है, वासना भी नहीं है। यह बात कैसे अपना हृदय चीर कर मैं तुम्हें दिखा दूँ? तुम मेरी बात पर अगर विश्वास कर सकते हो तो विश्वास करो। इस प्रेम में, इस ममता में सांसारिकता बिलकुल

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

ही नहीं है, होने का कोई कारण भी नहीं है। मुझे तो मालूम पड़ता है, इस स्नेह के अन्तराल में पूर्वजन्म का कोई रहस्य निहित है। तुम पूर्वजन्म पर विश्वास करो या न करो, क्योंकि स्वयं मेरी भी कोई विशेष आस्था उस पर नहीं है—लेकिन इतने अंश में तो तुम उसे ज़रूर ही मान लो। मैं बस उसे केवल प्यार करती हूँ, मेरे हृदय का प्रेम-निर्झर सहस्र-सहस्र स्रोतों में झरता हुआ उसके मस्तक पर आशीर्वाद की तरह, वरदान की तरह गिरता है। फिर यह चाहे दुनिया की नज़रों में पाप हो या पुण्य! मैं इसके लिए क्या करूँ? मैं कुछ नहीं कर सकती मेरे स्वामी, मैं नितान्त असहाय, असमर्थ और विवश हूँ।

"मेरे शरीर पर तुम्हारा अधिकार है, तुम उसके स्वामी हो, मेरा मन भी तुम्हारा ही है, लेकिन उस पर तुम्हारा एकाधिपत्य नहीं है, उस पर तो स्वयं मैं भी अपना पूरा अधिकार नहीं समझती। किन्तु जिस पर स्वयं मेरा भी अधिकार नहीं है, तुम उसी पर अपनी अनन्य प्रभुता स्थापित करना चाहते हो। तुम वैसा कर भी सकते हो, किन्तु क्या शत-शत धाराओं में प्रवाहित होने वाले मेरे प्रेम-निर्झर को रोक कर? नहीं प्रियतम, ऐसा करके यदि तुम मेरे मन को बाँध भी लो, तो उससे तुम्हारा या किसी का क्या लाभ होगा? नारी का हृदय तो प्रेम की रङ्ग-भूमि है, वह हमेशा ही सबको प्यार करेगी। प्यार करना उसका स्वभाव है, धर्म है; बिना प्यार किए वह रह ही नहीं सकती। एक बार वह माँ-बाप को प्यार करेगी, दूसरी बार भाई-बहिन को प्यार करेगी, तीसरी बार पति और पति के घर वालों को प्यार करेगी, चौथी बार अपने बच्चों को प्यार करेगी। वह तो चिर प्रेममयी है मेरे स्वामी! प्रेम तो उसके जीवन के साथ मृत्यु की तरह लिपटा हुआ है। यदि तुम उसके इस बहुमुखी प्रेम को रोक देने की चेष्टा करोगे, तो उसमें तुम्हारे प्यार करने की वस्तु ही क्या रह जायगी? क्या तुम हाड़-मांस के जड़-शरीर को प्यार करोगे, उस पर अपना अधिकार दिखा कर गर्व से फूले न समाओगे? क्या यही तुम्हें अपेक्षित है मेरे मालिक! तुम्हें यही पसन्द है? इस बात पर तो विश्वास करने को जी नहीं चाहता। कौन ऐसा निष्ठुर माली होगा जो रङ्ग-बिरङ्गे फूलों से भरी फुलवारी को उजाड़ कर, भाँति-भाँति के सुगन्धित फूलों को तोड़ कर, हरियाली-हीन धरती पर क़ब्ज़ा करने के लिए उतावला हो उठेगा? ऐसी निष्ठुर और अप्राकृतिक बात किसी ने कभी सोची है मेरे स्वामी! लेकिन तुम यही करने जा रहे हो। मेरे हृदय में जितनी भी कोमल भावनाएँ हैं, सबका संहार करके तुम उस पर अपना अनन्य अधिकार जमाना चाहते हो। पर इससे तुम्हें कौन सी तृप्ति मिल जायगी मेरे मालिक! अनेक बार तुमने यही अनहोनी करने की चेष्टा की है। इसी अमूलक आकांक्षा ने तुम्हारे मन में घर कर लिया है। किन्तु यह कितना उचित है, इसे एक बार तुम्हीं सोचो!

"मैं तो सभी को प्यार करती हूँ मेरे देवता! किसे मैं प्यार नहीं करती? प्रातःकाल की सुनहली धूप में खिल उठने वाले फूलों को मैं कितना प्यार करती हूँ? नीले अन्तहीन आकाश में उड़ने वाले रङ्ग-बिरङ्गे पक्षियों के प्रति भी मेरे मन में अगाध प्यार है। और क्या मैं तस्वीरदार पङ्खों वाली तितली को नहीं प्यार करती? दूर तक फैली हुई हरी-हरी घास, अन्तहीन नीलम-सा नीला आसमान, डूबते हुए सूरज की पीली और मलिन किरनें, धूल में सने हुए, सड़कों पर दौड़ने फिरने वाले बच्चे, सभी तो मेरे प्यारे हैं। तुम्हारे घर पर जो अतिथि आते हैं, क्या मैं उन्हें प्यार नहीं करती? क्या मैं उन्हें नहीं प्यार करती जो भीख माँगने के लिए मेरे दरवाज़े पर आ खड़े होते हैं? तुम्हीं देखो, मैं उस बिल्ली के बच्चे को कितना प्यार करती हूँ? लेकिन उससे तो तुम्हारे प्रति मेरे प्रेम में कुछ बाधा नहीं पहुँचती। फिर, अगर मैं बंसी को प्यार करती हूँ, तो तुम इतना क्यों विरक्त होते हो? क्यों बुरा मानते हो? क्यों मुझसे नाराज़ होते हो? तुम्हारे प्रति मेरे मन में जो प्रेम सञ्चित है, उससे बंसी के प्रति मेरे मन में उत्पन्न हुई अमायिक ममता का तो कोई सामञ्जस्य नहीं है। यह तो दोनों ही भिन्न-भिन्न दो लोकों की वस्तुएँ हैं, लेकिन कलुषित नहीं हैं, पवित्र हैं; अग्नि के समान पावन और प्रकाश के समान निर्मल हैं।

प्रेम में तो हिस्सा नहीं होता मेरे स्वामी, प्रेम तो शीतल और निर्मल जल का वह निर्झर है, जिसका स्रोत कभी सूखता ही नहीं, जिसका जल कभी चुकता ही नहीं। उस निर्झर के समीप आकर क्या कभी कोई प्यासा लौट जा सकता है?

बंसी के प्रति मेरे मन में कैसा आकर्षण है, कैसा प्रेम है, यह मैं स्वयं नहीं समझती, दुनिया तो इस बात

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

को समझ ही नहीं सकती। मैं चाहती भी नहीं कि पाप और मलिनता और सन्देह से भरी हुई दुनिया इसे समझने की चेष्टा करे। मैं उसे कुछ समझाना भी नहीं चाहती, उसके सामने कोई सफ़ाई पेश करना भी नहीं। मैं केवल तुम्हीं से कहती हूँ, बार-बार कहती हूँ और इसके कहने में मुझे कोई सङ्कोच नहीं है कि मैं बंसी को प्यार करती हूँ, मैं उसे प्यार करूँगी, इसलिए कि बिना उसे प्यार किए मैं रह ही नहीं सकती। वह मेरा है, मेरे अस्तित्व का एक अभिन्न अङ्ग है, मेरे वात्सल्य की जीवित प्रतिमा है, मेरा प्यारा है, मेरा सहोदर भाई है!

"बंसी हम लोगों से अलग होकर न जाने किस दूर देश में चला गया है। अब मेरे पास वह नहीं, केवल उसकी स्मृति शेष रह गई है। मेरा विश्वास है, ये पंक्तियाँ तुम्हारे मन में भरे हुए उस असत्य और निर्मूल अविश्वास को दूर करने में समर्थ होंगी, जो मेरे प्रति तुम्हारे हृदय में व्यर्थ ही भर गया है। बस।"

पत्र समाप्त करके मीना ने स्वयं उसे कई बार पढ़ा। पढ़ते ही पढ़ते कब वह गहरी नींद में सो गई, यह उसे मालूम न हो सका।

सवेरा होने में अभी देर थी। किरणकुमार की आँख सहसा खुल गई। स्वभाव-सन्दिग्ध अपना मन लेकर अकारण ही वे पत्नी के कमरे की ओर चल पड़े।

मीना के कमरे में दीपक जल रहा था। उसके सुन्दर लम्बे बाल इधर-उधर बिखरे पड़े थे। कपड़े अस्त-व्यस्त हो रहे थे। एक हाथ पलँग के नीचे लटक गया था। उस बिखरी हुई रूप-राशि को देख कर किरण विस्मित हुए। सोचने लगे—इतनी सुन्दरता में ऐसी कलुषता क्यों है, इस प्रकाश में अमावस का अन्धकार क्यों है, इस प्रेम-प्रतिमा में पाप का कीड़ा किधर से घुस आया है? हे भगवान! तुम्हारी यह कैसी माया है!!

सहसा उनका ध्यान बिखरे हुए उन कागज़ों की ओर आकर्षित हुआ, जो मीना की छाती पर और इधर-उधर फैले हुए थे। क्रोध से और ईर्ष्या से और जलन से वे तिलमिला उठे—अभागिनी! यह किसका पत्र पढ़ते-पढ़ते तूने सारी रात बिताई है? वे मीना के पलँग के पास चले गए।

कागज़ों को उन्होंने सँभाल कर एकत्रित कर लिया; दीपक के क्षीण प्रकाश में वे उन्हें ध्यान से पढ़ने लगे।

पत्र पढ़ कर जब उन्होंने सारा मर्म जाना, उस समय उनके मन की विचित्र अवस्था थी। मन ही मन उन्होंने कहा—मीना! तू मानवी नहीं, देवी है! तुझे मैं अभी तक समझ नहीं सका था। हाय! मैंने कितना घोर अपराध किया है? मेरे ही कारण तो यह सुन्दर सुमन आज सौरभ-हीन हो रहा है, मेरे ही कारण तो खिलने के पहले ही यह कली मुरझाई जा रही है। मीना! मीना!! तू मुझे क्षमा न करेगी?

स्वभाव से ही किरण का मस्तक मीना के चरणों पर झुक गया। उस समय मीना स्वप्न-लोक में विचरण कर रही थी।

कागज़ों को उसी प्रकार इधर-उधर फैला कर किरण द्रुतगति से कमरे से बाहर चले गए। क्षणभर में ही उनके जीवन में महान परिवर्त्तन हो गया, उनके जीवन की धारा ही पलट गई।

सवेरे जब मीना की नींद खुली, तो व्यस्त होकर उसने कागज़ों को समेट लिया और चुपचाप उन्हें अपने सन्दूक़ में बन्द कर आई। उन पंक्तियों का उसकी दृष्टि में और मूल्य ही क्या था? उन्हें क्या उसने किरण को देने के लिए लिखा था? अरे नहीं, वह तो केवल उसके हृदय का उबाल था, जो हृदय में नहीं अँट सका तो कागज़ के पन्नों पर छलक पड़ा। लेकिन उसे क्या मालूम था कि उसके अलक्ष्य में ही उन पंक्तियों का उद्देश्य पूरा हो चुका था!

तीन-चार दिन बाद, एक दिन सन्ध्या के कुछ पहले किरण ने मीना से पूछा—मीना! तुम्हारी तबीयत आजकल कैसी है?

"अच्छी तो है।"—झट से मीना ने उत्तर दिया। उसके स्वर में आश्चर्य था, विस्मय था, भय भी था। अपनी सूनी और उदास आँखों से, छिप कर, उसने एक बार किरण की ओर देखा।

"नहीं, अच्छी तो नहीं है।"

"क्यों? मुझे क्या हुआ है?"—एक बार उपेक्षा से अपने कृश और पीले शरीर की ओर मीना ने देखा, फिर सिर झुका लिया। उसका विस्मय उत्तरोत्तर बढ़ता जा रहा था, आज वे ऐसी बातें क्यों कर रहे हैं!

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

"यह बात मुझसे क्यों पूछती हो मीना, ख़ुद अपने से ही पूछो! आख़िर मुझसे छिप कर तुम कब तक रह सकोगी?"

किरण के स्वर में अनुताप था, वेदना थी। मीना सिहर उठी, काँप गई, पसीने से उसका शरीर भर गया। वह खड़ी न रह सकी, धम्म से ज़मीन पर बैठ गई। किरण ने उसे सँभाल लिया। बोले—मीना! इस तरह कब तक काम चलेगा? तुम्हें मेरी शपथ है, सच-सच बताओ, तुम्हें क्या हो गया है?

"मुझे कुछ नहीं हुआ, तुम्हारे पैर पड़ती हूँ, मुझे छेड़ो मत। सचमुच ही मुझे कुछ नहीं हुआ।"—गिड़गिड़ाते हुए मीना ने उत्तर दिया।

"तुम मेरे शपथ का भी ख़्याल नहीं करतीं मीना?"

मीना ने एक बार किरण की ओर देखा। बोली—मुझे ज्वर आता है।

"कब से?"

"एक महीना से।"

"लेकिन तुमने मुझसे तो यह बात कभी नहीं कही?"

"कहती क्या, थोड़ी सी हरारत हो जाती है, कुछ ज़ोर का बुख़ार तो आता नहीं।"

"यह तो और बुरा है; कब हरारत मालूम होती है?"

"कुछ ठीक नहीं, दिन-रात में कभी एक बार।"

किरण थोड़ी देर तक कुछ सोचते रहे, फिर बोले—मीना! तुम्हारी तबीयत यहाँ ठीक न होगी। चलो थोड़े दिन के लिए कहीं बाहर से घूम आवें।

मीना तुरत ही राज़ी हो गई। बोली—चलो!

"कहाँ चलोगी?"

"कहीं भी, यहाँ से बाहर!"

"यहाँ तबीयत नहीं लगती?"

"ना, बिलकुल नहीं।"

दूसरे ही दिन किरण मीना के साथ पुरी के लिए रवाना हो गए।

पुरी आने के बाद कई दिनों तक मीना की तबीयत अच्छी ही मालूम पड़ी, लेकिन एक दिन सहसा बड़े ज़ोर का ज्वर चढ़ आया और देखते ही देखते उसे सन्निपात हो गया। परदेश में—जहाँ न कोई हित, न मित्र, न कोई बन्धु, न बान्धव—मीना को लेकर किरण बड़े सङ्कट में पड़े। उन्हें कोई उपाय न सूझा, सिर पकड़ कर वे दरवाज़े पर बैठ गए। मीना उस समय ज्वर की बेहोशी में प्रलाप कर रही थी।

किन्तु किरण की उस आपत्ति में भी एक बन्धु आ ही जुटा। भीख माँगने आया था बेचारा, मीना का चीख़ना-चिल्लाना सुन कर बुरी तरह पकड़ा गया। वह एक संन्यासी था, गेरुआ वस्त्र धारण किए लम्बे-लम्बे रूखे केश और दाढ़ी बढ़ाए हुए, मलिन, उदास, निष्प्रभ।

संन्यासी ने किरण से सब हाल पूछा, फिर वह अपने को भूल कर मीना की सेवा करने लगा। उसकी तत्परता और उसका उत्साह देख कर किरण दङ्ग रह गए। एक दिन उनसे न रहा गया। उन्होंने पूछा—देवता, आप किस लिए इतना दुख-कष्ट हमारे कारण उठा रहे हैं? सच-सच बताइए, आप कौन हैं?

"मैं अपना परिचय क्या दूँ भाई? दुनिया से ठुकराया हुआ, तिरस्कृत, लाञ्छित, अपमानित, मैं एक अभागा पापी हूँ। किसी के दुख में अगर कुछ सहायता कर सकता हूँ, किसी के काम आ सकता हूँ, तो बड़ी शान्ति मिलती है, बड़ा सुख मिलता है। मालूम पड़ता है, मानो जीवन भर जितना पाप मैंने किया है, ऐसा करके, उसका कुछ बोझ मैं हलका कर सका हूँ। इसी विचार में सन्तोष है, सि है।"

आदर से, भक्ति से और कृतज्ञता से किरण का मस्तक स्वभावतः ही संन्यासी के चरणों पर झुक गया। मन ही मन उन्होंने सोचा—"यह कैसा पवित्र पापी है! पवित्रता से पाप का भी इतना घना सम्बन्ध हो सकता है, इसके पहले यह बात कौन जानता था? हे पापों की पवित्रता की साकार प्रतिमा, मैं तुझे बार-बार प्रणाम करता हूँ।" किरण मौन रहे, कुछ बोल न सके।

संन्यासी की कई दिनों की अनवरत सेवा-शुश्रूषा से मीना धीरे-धीरे अच्छी हो चली थी। एक दिन, जब सान्ध्य-सूर्य की पीताभ कनक-किरण-रेखाएँ दिगन्त से सिमट कर खुली हुई खिड़की के रास्ते मीना के बिछौने पर आ पड़ीं तो उसने संन्यासी को अपने पास बुलाया। कहा—बंसी!

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

बंसी एक बार चौंक उठा। घबरा कर उसने कहा—तुमने मुझे पहचान लिया मीना ?

मीना ने उसी प्रकार सरलता भरी आँखों से बंसी की ओर देखते हुए कहा—"मैं क्यों न पहचानूँगी बंसी ? कहीं रहो, किसी वेश में रहो, दुनिया में कोई तुम्हें पहचाने या न पहचाने, पर मीना तुम्हें पहचानने में ग़लती नहीं कर सकती! समझे ?" अतीत की अनेक मधुर, किन्तु करुण स्मृतियों ने मीना की आँखों से आँसू का प्रवाह ज़ारी कर दिया। छिपा कर उसने आँखें पोंछ लीं। आश्चर्य से बंसी उसकी ओर ताकता रह गया।

किन्तु मीना के बिलकुल स्वस्थ होते न होते ही बंसी ने चारपाई पकड़ ली। हफ़्तों के जागरण और दिन-रात के निरन्तर परिश्रम से उसका शरीर टूट गया था। वह अब अधिक सह न सका। थक कर, चूर होकर, वह खाट पर गिर पड़ा। किरण फिर रोगी की सेवा-सुश्रूषा और दवा-पानी की व्यवस्था में लगे।

किरण उस दिन घर में न थे। मीना बंसी की चारपाई के पास ज़मीन पर बैठी हुई थी। सहसा उसने पूछा—तुमने यह क्या पागलपन किया है बंसी ?

"क्या ?"

"यह गेरुआ वस्त्र, यह बढ़ी हुई जटाएँ, यह सब क्या हैं ? मुझे कुछ अच्छा नहीं लगता।"

"लेकिन मुझे तो लगता है।"

"मैं इन्हें काट दूँगी।"—बंसी की बढ़ी हुई जटाओं को हाथ में लेकर मीना ने कहा।

"लेकिन किस लिए ? अब यह खेल अधिक देर तक चल न सकेगा मीना ! शीघ्र ही समाप्त हो जायगा।"

"हुश् ! यह क्या बेक़ायदे की बात बोलते हो ? चुप रहो !"

कैंची लाकर मीना ने अपने हाथ से बंसी के बढ़े हुए बाल काट डाले। बंसी अपलक आँखों से उसकी ओर देखता रहा। धीरे-धीरे मुसकुराता रहा। मीना ने पूछा—क्या हँसते हो बंसी ?

"कुछ नहीं ; सोचता हूँ, मनुष्य कितना अज्ञान है, कितना मोही ! ओः !!"

"क्यों ? क्या हुआ ?"

"और क्या होगा ? यह जो मेरा श्रृङ्गार हो रहा है, उसी की बात सोचता हूँ। यह क्यों हो रहा है ? शायद चिता पर जाने के लिए ही।"

मीना ने अपने हाथ से बंसी का मुँह दबा लिया। उसी समय किरण ने कमरे में प्रवेश किया।

उस दिन रात को जब बंसी सो गया तो मीना ने किरण से पूछा—एक बात पूछती हूँ, बताओगे ?

"क्या ?"

"पहले बताने का वादा करो तो कहूँ।"

"कहो, वादा करता हूँ।"

"तुम एकाएक इस तरह बदल कैसे गए ?"

"कह दूँ ?"

"हाँ !"

"तुम्हीं ने मेरी आँखें खोल दीं।"

"किस तरह ?"

किरण ने उस दिन की सारी बातें एक-एक करके मीना को सुना दीं। सुन कर जब वह आश्वस्त हुई तो बोली—इस संन्यासी को पहचानते हो ?

"क्यों ? यह कौन है ?"

"बंसी को तुमने पहचाना नहीं, इतने दिन से साथ रहते हो ?"

"बंसी ! यह बंसी है ?" किरण उछल पड़े—"मैंने इसके प्रति बड़ा अपराध किया है मीना, सवेरे कैसे इसे मुँह दिखाऊँगा।"—कह कर किरण ने अपनी आँखें पोंछ लीं।

किन्तु दूसरे दिन किरण को मुँह दिखलाने के लिए कुछ शेष नहीं रह गया। रात्रि में ही सब समाप्त हो गया। बंसी की चिता समुद्र के तट पर अट्टहास करके लहक उठी।

बंसी का शवदाह करके जब किरण घर लौट आए तो मीना पछाड़ खाकर गिर पड़ी। ज़ोर से रोते हुए रोते वह चिल्ला उठी—आज तो मेरा कलङ्क सदा के लिए नष्ट हो गया।

उसी तरह रोकर किरण ने उत्तर दिया—लेकिन नष्ट होकर भी वह मेरे माथे पर कलङ्क की अमिट टीका लगा गया है मीना !

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

नवीन मुस्लिम संसार

[श्री० मथुरालाल जी वर्मा, एम० ए०]

एक समय था, जब स्पेन से ब्रह्मा तक तथा उत्तरी अफ़्रीका से मङ्गोलिया तक इस्लाम का दबदबा फैला हुआ था। इस्लाम के विजयी सैनिकों, प्रतापशाली सम्राटों तथा धुरन्धर विद्वानों और कट्टर विचारों ने संसार की सभ्यता को और का और ही कर दिया था। उस समय सम्पूर्ण जगत इस्लाम का लोहा मानने लगा था। लेकिन समय ने पलटा खाया और मुसलमानों का बल-वैभव छिन्न-भिन्न होने लगा। १८ वीं शताब्दी के अन्त तक भारतवर्ष से, उत्तरी अफ़्रीका और स्पेन से तथा पश्चिमी तुर्किस्तान से मुसलमानों का राज्य नष्ट हो चुका था। उस समय काबुल से क़ुस्तुन्तुनिया तक मुसलमानों का राज्य अवश्य था, परन्तु वहाँ भी पश्चिम की गोरी जातियाँ अपना प्रभाव जमाने लगी थीं। इन देशों पर उनका प्रभाव इतने वेग से फैला कि १९वीं सदी में तो एक भी मुस्लिम राज्य ऐसा न रह गया, जिस पर यूरोप के किसी न किसी राज्य का काफ़ी प्रभाव न हो। इस काल में अफ़ग़ानिस्तान को अङ्गरेज़ दो बार हरा चुके थे। ईरान में दक्षिण की ओर से अङ्गरेज़ तथा उत्तर की ओर रूसी बढ़ते चले जा रहे थे। तुर्की की अवस्था भी कुछ अच्छी न थी। फ़्रेञ्च, रूसी और यूनानी लोगों की दृष्टि में तुर्की सरकार की कोई प्रतिष्ठा न थी, यहाँ तक कि तुर्की राज्य "यूरोप का मरीज़" कहलाने लगा। मिश्र में फ़्रान्स और इङ्गलैण्ड का अड्डा जम चुका था तथा उत्तरी अफ़्रीका में मोरक्को आदि प्रदेशों पर फ़्रान्स और स्पेन का क़ब्ज़ा हो गया था।

यूरोपीय महासमर से पूर्व मुसलमानों की आबादी ब्रह्मा से स्पेन तक तथा उत्तरी अफ़्रीका से बेकाल की झील तक फैली हुई थी। इन देशों में इस्लामी सभ्यता का ज़बर्दस्त प्रचार था। लेकिन इस समय भी मुसलमानों की राजनीतिक शक्ति शून्य के बराबर थी। भारतवर्ष के मुसलमान निःशस्त्र तथा अङ्गरेज़ों के दास थे, स्पेन के मुसलमान स्पेनिश सरकार के अधीन थे। उत्तरी अफ़्रीका के देश छिन्न-भिन्न और अशिक्षित तथा फ़्रान्स और स्पेन से दबे हुए थे। अफ़ग़ानिस्तान, ईरान, तुर्की तथा दो-एक और छोटे-मोटे देश कहने को स्वतन्त्र अवश्य थे, लेकिन उनमें न कोई शक्ति थी न मज़बूत सङ्गठन। युद्ध आरम्भ होने के बाद जब तुर्की जर्मनी के साथ मिल गया और अङ्गरेज़ों ने मिश्र पर अपना क़ब्ज़ा जमा लिया तो संसार के बड़े-बड़े राजनीतिज्ञ यह अनुमान करने लगे कि महासमर का परिणाम और चाहे जो कुछ भी हो, परन्तु इसका यह परिणाम अवश्य होगा कि मुस्लिम-सत्ता पृथ्वीतल से नष्ट हो जावेगी। समर के अन्त में जब विजयी मित्रों ने तुर्की को पङ्गु बना कर एक ओर रख दिया और क़ुस्तुन्तुनिया पर अपना अधिकार जमा लिया तो राजनीतिज्ञों का पूर्वानुमान और भी दृढ़ हो गया। उस समय यूरोप के प्रायः सभी राजनीतिज्ञ समझने लगे थे कि "यूरोप के मरीज़" की क़ब्र तैयार हो गई, अब उसकी ज़िन्दगी के केवल गिनती के कुछ दिन बाक़ी हैं।

सन् १९०८ के आसपास तुर्की का राज्य बसरा से लेकर एक ओर युगोस्लाविया तक और दूसरी ओर ट्रिपोली तक फैला हुआ था। लेकिन युद्ध के पश्चात यह सङ्कुचित होकर केवल क़ुस्तुन्तुनिया से ईरान की उत्तर-पश्चिमी सीमा तक ही रह गया। ईराक़, सीरिया, पैलेस्टाइन और अरब को पहिले तो विजयी मित्रों ने स्वातन्त्र्य का लोभ दिखा कर अपनी ओर मिला लिया था, परन्तु जब युद्ध का अन्त हो गया तो उन्हें "रक्षित स्वतन्त्र राष्ट्र" कह कर उन लोगों ने उन्हें अपने ही क़ब्ज़े में बनाए रक्खा। विजेताओं के दबाव में पड़ कर अगस्त सन् १९२० में सेवर की सन्धि में तुर्की सरकार ने यह स्वीकार कर लिया कि सीरिया फ़्रान्स के, तथा ईराक़ और पैलेस्टाइन अङ्गरेज़ों के रक्षित राष्ट्र बना दिए जायँ। इसके अतिरिक्त तुर्की के अन्दर भी अरमेनिया का

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

एक पृथक राज्य खड़ा कर दिया गया और गेस तथा स्मरना के आस-पास का देश यूनान के सिपुर्द कर दिया गया। इस प्रकार जब मुसलमानों के सब से शक्तिशाली राज्य का अङ्ग-भङ्ग हो गया, और सम्पूर्ण इस्लामी जगत के सरदार ख़लीफ़ा ने यूरोपीय विजेताओं का लोहा मान लिया तो फिर मुसलमानों का रह ही क्या गया? मिश्र पर अङ्गरेज़ों ने पहिले ही से अधिकार कर लिया था, और ईरान तथा अफ़ग़ानिस्तान कोई उन्नत राज्य नहीं थे। इसके सिवा ईरान को एक ओर से अङ्गरेज़ों ने और दूसरी ओर से रूसियों ने दबा रक्खा था। अफ़ग़ानिस्तान भी इन्हीं दोनों शक्तियों के बीच में पड़ कर पिसा जा रहा था। भारत, स्पेन तथा उत्तरी अफ़्रीका के मुसलमान परतन्त्र होने के कारण किसी गिनती में ही नहीं थे। अतः यह प्रत्यक्ष जान पड़ता था कि संसार के भावी इतिहास के निर्माण में इस्लाम का कोई हाथ न रहेगा—जगतीतल पर इस्लाम के राजनीतिक जीवन की लीला समाप्तप्राय है।

परन्तु यह किसको पता था कि २५ करोड़ मुस्लिम जनता में एकाएक नवजीवन का सञ्चार हो जायगा और संसार के देखते-देखते ही मुस्लिम देशों में रूपान्तर होकर वे स्वतन्त्र, सभ्य, सुदृढ़ तथा प्रजासत्तात्मक राज्य बन जाएँगे। पिछले केवल ११-१२ वर्षों के भीतर ही भीतर मुस्लिम जगत का सम्पूर्ण रूपान्तर वैसा ही आकस्मिक और कल्पनातीत है, जैसे नेपोलियन का उदय और मराठों का अधःपतन। युद्ध समाप्त भी न होने पाया था, समर-भूमि में रक्त अभी सूखा भी न था कि विजेताओं का विजयोल्लास भली प्रकार प्रकट होने के पहिले ही क़ुस्तुन्तुनिया से अफ़ग़ानिस्तान तक, बल्कि इससे भी आगे कलकत्ता तक मुस्लिम जगत में आज़ादी के नारे सुनाई देने लगे। चार सौ वर्षों का मरीज़ इस्लाम एकाएक रुस्तम की भाँति संसार के सामने अपना पौरुष प्रकट करने के लिए खड़ा हो गया। परिस्थिति के अनुकूल उसका नवीन पौरुष कई रूपों में प्रकट हुआ। भारत में उसने निःशस्त्र ख़िलाफ़त आन्दोलन का रूप धारण किया तो अफ़ग़ानिस्तान में उसने सशस्त्र स्वातन्त्र्य घोषणा का आकार पकड़ा, ईरान में वह राज्य-सुधार की लहर बन गया तो ईराक़, सीरिया आदि में वह विदेशी शासकों के प्रति घोर असन्तोष के रूप में प्रकट हुआ। उसी नवीन पौरुष का फल था कि मोरक्को, अलजीरिया, ट्रिपोली तथा तुर्की ने स्वतन्त्रता की प्राप्ति और प्रजातन्त्र की स्थापना के लिए युद्ध आरम्भ कर दिया, मिश्र में नवीन विचारों की बाढ़ अङ्गरेज़ी सत्ता के बेड़े को डावाँडोल करने लगी। आश्चर्यचकित होकर यूरोप के राष्ट्र इस नवीन मुस्लिम संसार की ओर देखने लगे। मरीज़ क्यों उठ खड़ा हुआ, मुर्दे में जान कैसे आ गई, यही यूरोप के राजनीतिज्ञों की चिन्ता का सबसे प्रधान विषय बन गया।

मुस्लिम जगत के इस नवीन जागरण के तीन मुख्य स्वरूप थे—स्वाधीनताभिलाषा, सामाजिक सुधार तथा धार्मिक रूपान्तर; और इन तीनों ही अङ्गों पर पश्चिमीय विचारों का गहरा प्रभाव था। १९ वीं शताब्दी के अन्त तक मुसलमानों ने ईसाई सभ्यता, ईसाइयों की शासन-प्रणाली, उनकी भाषा तथा विज्ञान को घृणा की दृष्टि से देखा था, लेकिन २० वीं शताब्दी के आरम्भ से वे अनुभव करने लगे कि पश्चिमीय सभ्यता की उपेक्षा करना, सभ्यता की दौड़ में पिछड़ना है। इसलिए शासन-प्रणाली, आन्दोलन-शैली, सैनिक सङ्गठन, शिक्षा-प्रचार, समाज-सुधार आदि सभी क्षेत्रों में वे यूरोपीय सभ्यता का अनुकरण करने लगे। जापान की भाँति वे भी यूरोप को, यूरोप जैसा बन कर ही मात कर देने का प्रयत्न करने लगे; और कहना न होगा, इस कार्य में उन्हें आशातीत सफलता मिली। जिन मुस्लिम देशों में यूरोप का जितना ही अनुकरण किया गया, वे देश उन्नति और विकास की प्रभा से उतना ही प्रकाशमान हो उठे।

अगस्त सन् १९२० में क़ुस्तुन्तुनिया की त्रस्त सरकार ने तुर्की साम्राज्य के बटवारे को स्वीकार कर लिया। दूसरी ओर यूनान की सेनाएँ अपने कल्पित अधिकारों की प्राप्ति के लिए स्मरना की ओर बढ़ने लगीं। इन दोनों घटनाओं ने तुर्कों के जीवन में एक नवीन स्फूर्ति का सञ्चार कर दिया। क़ुस्तुन्तुनिया-सरकार की कायरता से मुस्तफ़ा कमालपाशा को बहुत ही दुःख हुआ। उन्होंने फ़ौरन जनता का नेतृत्व ग्रहण करके क़ुस्तुन्तुनिया-सरकार को दरकिनार किया, तथा अङ्गोरा में नवीन सरकार की स्थापना करके स्वतन्त्रता की घोषणा कर दी। जब उन्होंने आरमेनिया के नवीन राज्य को भी नष्ट कर दिया और

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

रूस के साथ पृथक सन्धि कर लो तो यूरोप की आँखें खुलीं। यूरोपियन शक्तियाँ सेवर की सन्धि में परिवर्त्तन करने की बात सोच ही रही थीं कि कमाल पाशा अपनी सेना के साथ पश्चिम की ओर बढ़े और सन् १९२२ के सितम्बर में यूनानी तथा अङ्गरेज़ी सेनाओं को हरा कर उन्होंने स्मरना पर अधिकार कर लिया। उसी मास में फ्रान्स तथा इटली की सेनाएँ युद्धक्षेत्र से वापिस लौट गईं तथा इसके एक मास बाद लोसान नगर में बाक़ायदा सन्धि-परिषद् की बैठक शुरू हो गई। इस प्रकार दो वर्षों के भीतर ही भीतर नवीन तुर्की ने यूरोप के छल और बल दोनों पर विजय प्राप्त कर ली।

तुर्की के वर्तमान विधाता मुस्तफ़ा कमालपाशा

सन् १९१९ से ईरान की सेना तथा सरकार अङ्गरेज़ों की अधीनता में थी। इस समय ईरान-सरकार की लगभग वही दशा थी जो क्लाइव के समय में मीरजाफ़र की और महादजी सेंधिया के समय में शाहआलम की थी। ईरान का बादशाह नाम मात्र का बादशाह था। राज्य अङ्गरेज़ों का था और नाम था बादशाह का। तुर्की के साथ ही साथ ईरान में भी स्वतन्त्रता की लहर उमड़ी और फ़रवरी सन् १९२१ में रिज़ा ख़ाँ के नेतृत्व में एक भारी क्रान्ति हो गई, जिसके फल-स्वरूप ईरान का नामधारी शाह ईरान को छोड़ कर यूरोप भाग गया और रिज़ा ख़ाँ ईरान के प्रधान सचिव बना दिए गए। कुछ दिनों के बाद उन्होंने सम्राट के सिंहासन

ईरान के वर्त्तमान सम्राट क्रान्तिकारी रिज़ाशाह

को भी सुशोभित किया। रिज़ा ख़ाँ भी मुस्तफ़ा कमाल पाशा की भाँति एक चतुर सैनिक तथा पश्चिमीय विचारों के अनन्य समर्थक सिद्ध हुए।

अफ़ग़ानिस्तान भी इस लहर से अछूता न रह सका। सन् १९१७ में उसके उत्तर-पश्चिमी सीमा पर रूस का कोई प्रभाव न रह गया था, लेकिन उसके पूर्वी भाग पर अङ्गरेज़ों का दाँत अभी लगा हुआ था। युद्ध के बाद जब अन्य मुस्लिम देशों में स्वतन्त्रता की लहर उमड़ी तो अफ़ग़ानिस्तान ही उससे अलग कैसे रह सकता था? सन् १९१९ में अमीर अमानुल्ला के राज्यसिंहासन पर बैठते ही अफ़ग़ानिस्तान की निर्बलता उन्हें अखरने लगी। उन्होंने शीघ्र ही युद्ध की तैयारी करना आरम्भ कर दिया।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

अफ़ग़ानिस्तान की स्वतन्त्रता का घोषणा-पत्र भी उन्होंने अपने देश तथा भारत में वितर करवाया। उसी साल ६ मई को अफ़ग़ानिस्तान की सेना भारत की ओर बढ़ी तथा उसने सीमाप्रदेश की कई जातियों को अधिकृत कर लिया। इस युद्ध में अङ्गरेज़ों ने वायुयान तथा अन्य वैज्ञानिक साधनों का उपयोग किया, अफ़ग़ानी सेना भी पश्चिमी ढङ्ग से लड़ी। सेनापति नादिरशाह ने खेल की घाटी में अद्भुत रण-पाण्डित्य तथा नेतृत्व-कौशल का परिचय देकर अङ्गरेज़ों को दङ्ग कर दिया। सैनिक विजय किसकी हुई यह कहना कठिन है, लेकिन सन् १९२२ की सन्धि में अङ्गरेज़ों ने अफ़ग़ानिस्तान का पूर्ण स्वातन्त्र्य स्वीकार कर लिया। इसके बाद से अफ़ग़ानिस्तान पर

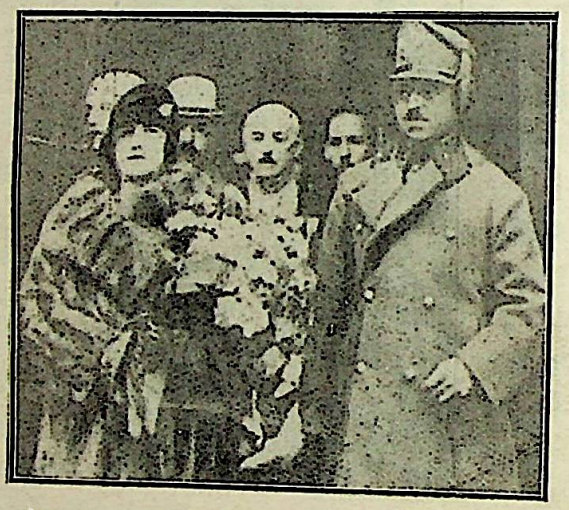

देशभक्त, सुधार-प्रिय शाह अमानुल्ला और उनकी सुयोग्य पत्नी श्रीमती सूर्या

किसी भी विदेशी शक्ति का प्रभाव न रह गया। हाल ही में अफ़ग़ानिस्तान में जो युद्ध हुआ है वह घरेलू युद्ध था और यदि उसका सम्बन्ध किसी विदेशी राज्य से रहा भी हो तो वह अल्प और परोक्ष था।

युद्ध के समय कूटनीतिज्ञ अङ्गरेज़ों ने धन तथा स्वतन्त्रता का लोभ देकर अरब के सरदारों को तुर्की के विरुद्ध भड़का दिया था और उनसे तुर्की साम्राज्य पर आक्रमण करवाया था। अरब के अमीर हुसेन और उसके पुत्र फ़ैज़ल तथा नज्द के अमीर इब्नसऊद—तीनों को अङ्गरेज़ सरकार ने तुर्की के विरुद्ध उपद्रव तथा युद्ध करने के लिए आर्थिक सहायता अर्थात भारी रिश्वतें दी थीं। इन दोनों सरदारों को अङ्गरेज़ों ने सब मिला कर लगभग साढ़े नौ करोड़ रुपए दिए थे। युद्ध के अन्त में जब अङ्गरेज़ सरकार से रुपया मिलना बन्द हो गया तो अमीर हुसेन और अमीर इब्नसऊद दोनों आपस में ही लड़ने लगे। सन् १९२४ में इब्नसऊद के आक्रमणों ने अमीर हुसेन को नितान्त अशक्त कर दिया। इब्नसऊद वहाबियों का सरदार था। इस युद्ध में वहाबियों ने मक्का पर भी गोलेबारी की और वहाँ के पवित्र स्थानों को तोड़ गिराया। भारत, जावा, मिश्र तथा अफ़्रीका के मुसलमान एक तो वहाबियों को यों ही कट्टर मुसलमान नहीं मानते, इस भयङ्कर गोलेबारी से इन लोगों के मन में वहाबियों तथा उनके नेता इब्नसऊद के प्रति और भी असन्तोष फैला। परन्तु इब्नसऊद ने अपनी नीतिज्ञता और चातुरी से इस असन्तोष को शीघ्र ही दूर कर दिया। सन् १९२५ में यात्रीगण पुनः मक्का की यात्रा करने लगे। इसके अगले साल सन् १९२६ में सब मुसलमान राज्यों ने एक स्वर से इब्नसऊद को हजाज़ का बादशाह स्वीकार कर लिया। इसी साल के जून महीने में मक्का में संसार भर के मुसलमानों की एक महती सभा हुई, जिसमें तुर्की, अफ़ग़ानिस्तान, मिश्र, भारत आदि देशों ने अपने-अपने प्रतिनिधि भेजे। केवल ईरान ने वहाबियों के कृत्यों को निन्दनीय समझ कर इस सभा में सहयोग नहीं दिया। इस सभा ने यात्रियों की सुविधा के लिए स्वास्थ्य सम्बन्धी साधनों, सड़कों, रेल आदि पर विचार किया। इसमें मुसलमान-जगत से दास-प्रथा को हटा देने के सम्बन्ध में भी एक प्रस्ताव पास हुआ। यह निश्चित हुआ कि मुस्लिम संसार की परिस्थिति पर विचार करने के लिए मक्का में प्रति वर्ष इस प्रकार की एक सभा की जावे। नाना देश-देशान्तर के मुसलमानों का अपने तीर्थ-स्थान में मिल कर अपनी परिस्थिति पर विचार करना इस्लाम के इतिहास में एक अपूर्व घटना थी। यह घटना बिना किसी सन्देह के मुस्लिम जगत के पुनरुज्जीवन की सूचना देती थी।

युद्ध की समाप्ति के बाद ईराक़, सीरिया तथा पैलेस्टाइन में भी घोर असन्तोष फैला। उन देशों में हलचल और असन्तोष का एक तूफ़ान आ गया। स्थान-स्थान पर उपद्रव होने लगे। ईराक़ के निवासियों को न तो अङ्गरेज़ों का सैनिक शासन ही सह्य था, और न वे यही सहन कर सकते थे कि अमीर फ़ैज़ल, जो अङ्गरेज़ों

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

के हाथ की कठपुतली मात्र था, राजसिंहासन पर बैठे। अङ्गरेज़ों के मसूलनगर पर अधिकार कर लेने से तो इस आन्दोलन में और भी एक नई जान आ गई। अन्त में अङ्गरेज़ों के साथ सन्धि की बातचीत शुरू हुई। बहुत दिनों तक बातचीत होने तथा कई बार सन्धि की शर्तों में उलट-फेर होने के बाद ईराक़ के मन्त्रि-मण्डल ने बहुमत से अङ्गरेज़ों की अधीनता तो मान ली, परन्तु जब मसूलनगर से अङ्गरेज़ी सेना हटने लगी तो वहाँ अनेक अङ्गरेज़ अफ़सरों को क़त्ल कर दिया गया। अब भी ईराक़ में अङ्गरेज़ों के विरुद्ध आन्दोलन जारी ही है। थोड़े दिन पहिले अङ्गरेज़ों की नीति से तङ्ग आकर तथा नामधारी बादशाह के दब्बूपन से परेशान होकर ही मन्त्रि-मण्डल ने त्याग-पत्र तक दे दिया था।

सीरिया और पैलेस्टाइन में युद्ध के बाद और भी अधिक असन्तोष और उपद्रव की ज्वाला धधकने लगी। वास्तव में ईराक़, अरब, सीरिया और पैलेस्टाइन केवल स्वतन्त्रता के लोभ से ही अङ्गरेज़ों तथा फ़्रान्सीसियों के भड़काने पर तुर्की के विरुद्ध उठ खड़े हुए थे। उनको यह पता न था कि फ़्रान्स अपनी प्राचीन नीति के अनुसार रूम सागर के पूर्वी तट पर कुछ अधिकार प्राप्त करना चाहता था, और इङ्गलैण्ड भारत के मार्ग को निष्कण्टक बनाने के लिए समुद्र-तट पर कुछ भूमि हड़प लेना चाहता था। संस्कृति, भाषा और धर्म के लिहाज़ से सीरिया और पैलेस्टाइन एक ही देश है, लेकिन फ़्रान्स और इङ्गलैण्ड ने इस देश के दो भाग करके आपस में बाँट लिए। दोनों भागों में ये देश अपने-अपने स्वार्थ के अनुकूल पृथक-पृथक नीति का अनुसरण करने लगे। इन देशों की मुसलमान आबादी को निर्बल तथा अपने पक्ष को सबल बनाने के अभिप्राय से सीरिया में फ़्रेञ्च सरकार यहूदियों को और पैलेस्टाइन में अङ्गरेज़ सरकार ईसाइयों को अनेक सुविधाएँ देकर बसने के लिए उत्साहित करने लगीं। जो यहूदी या ईसाई इन देशों में पहिले से बसे हुए थे उनको सहायता दी जाने लगी। यह स्वाभाविक बात थी कि इस नीति से इन देशों के बहुसंख्यक वास्तविक निवासियों में असन्तोष बढ़ता। परिणाम यह हुआ कि सीरिया में घोर उपद्रव हो गया, जिससे फ़्रान्स को फ़ौजी शासन की घोषणा करनी पड़ी, परन्तु जब इससे भी काम न चला तो दमसकस में वायुयान द्वारा गोले बरसाए गए और मशीनगन, टैङ्क आदि भीषण वैज्ञानिक अस्त्रों द्वारा हज़ारों नर-नारियों का संहार किया गया। कभी समझौता, कभी युद्ध, इस प्रकार कई साल तक यही स्थिति बनी रही। अन्त में फ़्रान्स के आतङ्क से दब कर सीरिया प्रत्यक्ष में तो शान्त हो गया, लेकिन विदेशी शासन के प्रति सीरिया-निवासियों के हृदय में घृणा का बीज मज़बूती से जड़ पकड़ गया है, आज़ादी की तमन्ना उनके दिलों में दिनोंदिन बढ़ती जाती है, और कौन जानता है कि यह तीव्र स्वाधीनताभिलाषा किस दिन भयङ्कर विभीषिका के रूप में प्रगट हो जायगी?

फ़्रान्सीसियों की भाँति अङ्गरेज़ों ने भी पैलेस्टाइन में यहूदियों की संख्या बढ़ाने और उनको नाना प्रकार की सुविधाएँ देकर मुसलमानों का पक्ष निर्बल करने की नीति ग्रहण की—यहाँ तक कि पैलेस्टाइन का प्रथम हाई-कमिश्नर भी एक यहूदी ही बनाया गया। यहाँ के अधिकांश मुसलमान सुन्नी सम्प्रदाय के हैं, जिनको एक यहूदी का शासन सहन न हो सका। इस कारण सम्पूर्ण देश में अशान्ति की लहर फैल गई। सन् १९२२ में जब इङ्गलैण्ड के उपनिवेश-शासन के ढङ्ग की एक व्यवस्थापिका सभा की योजना की गई और उसके लिए सदस्यों का निर्वाचन होने लगा तो मुसलमानों ने असहयोग कर दिया, जिससे वह निर्वाचन न हो सका। इसके बाद अङ्गरेज़ों ने कुछ रिआयतें देकर लोगों को शान्त करना चाहा, लेकिन इससे मुसलमानों को सन्तोष न हुआ। मुसलमानों ने यरूशलम और जफ़ा में फिर बलवे किए, जो शस्त्र-प्रयोग से ही दबाए जा सके। उसके बाद से अङ्गरेज़ों ने पैलेस्टाइन में नाममात्र के कई सुधार किए हैं। देश की आर्थिक दशा को भी सुधारने के ऊपरी यत्न जारी हैं; किन्तु इससे मुसलमानों को सन्तोष नहीं हो सका है। वे इस समय भी ग़ुलामी के जुए को उतार फेंकने के लिए उत्सुकता के साथ उपयुक्त अवसर की प्रतीक्षा कर रहे हैं।

पैलेस्टाइन के पास का एक छोटा सा भूभाग अब ट्रान्स जारडेनिया कहलाने लगा है। यह प्रान्त अमीर अब्दुल्ला के अधिकार में है। वहाँ के मुसलमानों का असन्तोष शान्त करने के लिए अङ्गरेज़ों ने अमीर अब्दुल्ला को वहाँ का शासक बना रक्खा है। यहाँ भी अङ्गरेज़ों का आधिपत्य काफ़ी प्रबल है, लेकिन अमीर

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

अब्दुल्ला की नीतिज्ञता तथा देश की अशिक्षा के कारण यहाँ अभी तक विशेष उपद्रव नहीं हुए हैं। परन्तु नवीन विचार-धारा वहाँ भी पहुँच गई है। वह दिन दूर नहीं मालूम होता जब यह विचार-धारा यहाँ भी विद्रोह और क्रान्ति के रूप में फूट निकलेगी।

एशियाई मुसलमानों की भाँति उत्तरी अफ्रीका की मुस्लिम क़ौमों में भी नवीन जागृति और स्फूर्ति के लक्षण दिखाई पड़ने लगे हैं। जिस समय तुर्की जर्मनी के साथ हो गया था, उस समय अङ्गरेज़ों ने भारत के जल-मार्ग की रक्षा के निमित्त मिश्र पर क़ब्ज़ा कर लिया और युद्ध की समाप्ति के बाद वे उस पर अपने प्रभुत्व को और भी मज़बूत बनाने का यत्न करने लगे। मिश्र में अङ्गरेज़ों के कई अमानुषिक कृत्यों के कारण पहिले से ही अशान्ति फैली हुई थी। युद्ध की समाप्ति होने पर जब राष्ट्रपति विल्सन ने अपने चौदह सिद्धान्तों की घोषणा की तो मिश्र-वासियों की स्वातन्त्र्य-पिपासा और भी भड़क उठी, और वे अपने देश से विदेशी शासन को मिटा देने की प्रबल चेष्टा करने लगे। समरभेरी बन्द होते ही ज़ग़लुल-पाशा मिश्र के राष्ट्रीय दल का प्रतिनिधि बन कर अङ्गरेज़ी सरकार के सामने मिश्र की माँगें उपस्थित करने के लिए इङ्गलैण्ड गए, लेकिन वहाँ उनकी किसी ने न सुनी। इससे आन्दोलन ने और भी ज़ोर पकड़ा। इस आन्दोलन को दबा देने के अभिप्राय से ज़ग़लुलपाशा को गिरफ़्तार करके माल्टा भेज दिया गया तथा और भी कई प्रकार की सख़्तियाँ की जाने लगीं। परन्तु जनता का असन्तोष निरन्तर बढ़ता ही गया। हज़ारों विद्यार्थियों ने आज़ादी के समर्थन में जुलूस निकाले, विदेशी सरकार ने उन पर गोलियों की वर्षा की; इसके बदले में अङ्गरेज़ी अफ़सरों का क़त्ल हुआ, जगह-जगह हड़तालें हुईं, बलवे होने लगे; मिश्रवासियों की स्वातन्त्र्याभिलाषा इतनी अदम्य हो गई कि सन् १९१९ में परिस्थिति की जाँच करने के लिए लॉर्ड मिलनर की अध्यक्षता में एक कमीशन नियत किया गया। मिश्र देश के दूरदर्शी राजनीतिज्ञों ने इस कमीशन का पूर्ण बहिष्कार किया। जब यह बहिष्कृत कमीशन इङ्गलैण्ड वापस लौटा तो मिश्र की राष्ट्र-परिषद् ने ज़ग़लुल के नेतृत्व में स्वराज्य की घोषणा कर दी। अन्त में सब तरह से हार मान कर सन् १९२२ में ब्रिटिश सरकार ने कुछ शर्तों के साथ मिश्र की स्वतन्त्रता स्वीकार की। संसार के सभी प्रसिद्ध राष्ट्रों को इस निश्चय की सूचना दे दी गई। परन्तु इतना होने पर भी अङ्गरेज़ों ने मिश्र पर से अपना सैनिक अड्डा नहीं हटाया। इससे वहाँ के राष्ट्रीय दल के असन्तोष ने एक बार फिर तीव्र रूप धारण किया और सन् १९२२-२३ में कई अङ्गरेज़ अफ़सर क़त्ल कर दिए गए। मिश्र के षड्यन्त्रकारियों ने १७ मास के भीतर १८ अफ़सरों को वध तथा लगभग ३० को ज़ख़्मी कर दिया। इस कारण षड्यन्त्रियों को पकड़-पकड़ कर फाँसियाँ दी जाने लगीं। साधारण लोगों पर सख़्ती बढ़ी। परन्तु इससे मिश्र की स्वाधीनता के आन्दोलन में ज़रा भी शिथिलता नहीं आई। सन् १९२३ के चुनाव में ज़ग़लुलपाशा के दल का ज़ोर पुनः बढ़ा और वह प्रधान मन्त्री बना दिए गए। उस समय इङ्गलैण्ड में मज़दूर-दल का शासन था। इससे उत्साहित होकर ज़ग़लुलपाशा ने मिश्र की पूर्ण स्वतन्त्रता को स्वीकृत कराने के लिए इङ्गलैण्ड जाकर यत्न किया; पर फल कुछ भी न हुआ। इसी बीच मिश्र में अङ्गरेज़ों के प्रधान सेनापति तथा गवर्नर जनरल सर लीं स्टेक का क़त्ल हो गया। इससे अङ्गरेज़ों ने मिश्र को ख़ूब रौंदा और अपराधियों को प्राणदण्ड देने के बाद देश से ७५ लाख रुपए जुर्माना भी वसूल किया। परन्तु इससे भी मिश्री स्वाधीनता के आन्दोलन की शक्ति में कमी न पड़ी। यद्यपि इसके बाद भी मिश्र में अङ्गरेज़ों की सेना रहती ही आई और एक प्रकार से आज भी मिश्र पर अङ्गरेज़ों का सैनिक प्रभाव ज्यों का त्यों ही बना हुआ है. परन्तु अभी हाल में मिश्र के साथ इङ्गलैण्ड की जो सन्धि हुई है, उसके अनुसार मिश्री जनता स्वाधीनता के मार्ग पर एक कदम और भी आगे बढ़ गई है और आशा की जाती है कि वह कुछ ही दिनों में पराधीनता के रहे-सहे बन्धन को भी उतार फेंकेगी।

मोरक्को, अलजीरिया तथा ट्यूनिस पर स्पेन और फ़्रान्स ने वर्षों से दाँत लगा रक्खा था। युद्ध समाप्त होते ही स्पेन और फ़्रान्स ने मोरक्को के दो हिस्से करके आपस में बाँट लिए। इन भागों पर अधिकार जमाने के लिए स्पेन तथा फ़्रान्स की सेनाएँ भेजी गईं और दोनों राष्ट्रों के सेनापति एक के बाद दूसरे जिले को जीतते हुए आगे बढ़े। मोरक्को आदि देशों के अधिकार

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

निवासी अधिकांश निर्धन किसान हैं, और जो इने-गिने लोग नवशिक्षित तथा सम्पन्न हैं वे भी यूरोपियनों के पीछे लगे रहते हैं। ऐसी दशा में मोरक्को की रक्षा हो ही कैसे सकती थी? परन्तु तो भी देशभक्त अब्दुल करीम ने राष्ट्रीय झण्डे के नीचे कुछ सेना एकत्र करके अकेले दो

मोरक्को का बहादुर नेता अब्दुल करीम

उन्नत राष्ट्रों का काफ़ी अर्से तक मुक़ाबिला किया। अब्दुल करीम का यह विराट प्रयत्न राष्ट्रीयता के इतिहास में सदा के लिए अमर रहेगा। एक ओर यूरोप के दो उन्नत राष्ट्रों की सुसज्जित सेनाएँ थीं और दूसरी ओर थी देश-भक्त अब्दुल करीम के झण्डे के नीचे खड़ी हुई, पहाड़ी मुसलमानों की एक छोटी सी फ़ौज। इसी छोटी सी फ़ौज के सहारे वीर अब्दुल करीम ने वर्षों तक स्पेन और फ़्रान्स दोनों के छक्के छुड़ा दिए थे; परन्तु विशाल सैन्य-समूह के सामने देशभक्तों की मुट्ठी भर फ़ौज कब तक ठहरती? सन् १९२६ में अब्दुल करीम को आत्म-समर्पण कर देना पड़ा। इसके बाद मोरक्को, अलजीरिया और ट्यूनिस में आततायियों का अनियन्त्रित शासन स्थापित हो गया।

इस समय इन देशों के मुसलमान भारतीय मुसलमानों की भाँति निःशस्त्र तथा असहाय हैं, परन्तु वे मुर्दा नहीं हैं। उनमें भी जागृति तथा जीवन आ चुका है।

इस महान राजनैतिक परिवर्त्तन के साथ ही साथ मुस्लिम जगत की परम्परागत शासन-प्रणाली, उसकी सामाजिक रूढ़ियाँ तथा शिक्षा-पद्धति में भी परिवर्त्तन हो रहा है। तुर्की में ख़लीफ़ा के शासन का अन्त करके प्रजातन्त्र की स्थापना हुई है। ईरान में रिज़ा ख़ाँ ने यद्यपि शाह की उपाधि धारण कर रक्खी है, तथापि वह निरङ्कुश शासक नहीं हैं। उनका राजकार्य एक प्रतिनिधि-मण्डल की सम्मति से होता है। अफ़ग़ानिस्तान में अमीर अमानुल्ला ने स्वयं एक जिरगा (प्रतिनिधि परिषद्) स्थापित किया था, जिससे शासन तथा व्यवस्था में परामर्श लिया जाता था। ईराक़, पैलेस्टाइन, सीरिया, मिश्र आदि देशों में भी अनियन्त्रित शासन

तुर्की की आधुनिक महिलाएँ

का ख़ात्मा हो चुका है। इस प्रकार किसी न किसी रूप में समस्त मुस्लिम जगत में प्रजासत्ता की स्थापना हो गई

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

है। शासन में प्रजा का हाथ होना इस्लाम के इतिहास में अपूर्व बात है और नवीन जागृति का चिन्ह है।

अफ़ग़ानिस्तान, ईरान तथा तुर्की की सेनाएँ भी पश्चिमी ढङ्ग पर सङ्गठित हुई हैं। वे आधुनिक शस्त्रों का प्रयोग करती हैं। उनकी वरदी और क़वायद भी पश्चिमी

कमालपाशा की सुयोग्य धर्मपत्नी
श्रीमती लतीफ़ा हानूम

ढङ्ग की ही होती है। इन देशों में कई सैनिक कॉलेज खुल गए हैं, जिनमें पश्चिमी ढङ्ग पर शिक्षा दी जाती है। फ़्रान्स, जर्मनी, रूस आदि देशों के रण-विशारद इन कॉलेजों में शिक्षक नियुक्त हुए हैं। अफ़ग़ानिस्तान, ईरान, तुर्की, मिश्र, इन सब देशों के अनेक विद्यार्थी विज्ञान तथा साहित्य की शिक्षा प्राप्त करने के लिए पश्चिमी देशों में जाते हैं। क़ुरान को बिना समझे कण्ठाग्र करना, अरबी के अतिरिक्त दूसरी भाषाओं से घृणा करना, धर्म के अतिरिक्त अन्यान्य उपयोगी विषयों की उपेक्षा करना—आदि बातें मुस्लिम जगत से धीरे-धीरे उठती जा रही हैं, और तुर्की से तो बिलकुल ही उठ गई हैं।

इस अर्से में मुस्लिम महिला-जगत में भी अद्भुत जागृति तथा क्रान्ति हुई है। एक समय तुर्की में स्त्रियों को परदे में बन्द रहना पड़ता था। बाहर जाते समय उनको एक भारी बुर्क़ा पहनना पड़ता था, जिससे उनके अङ्ग के आकार का पता न लग सके। सूर्यास्त के पश्चात कोई स्त्री बाहर नहीं रह सकती थी और न किसी पुरुष के साथ घूम सकती थी, बातचीत करने की तो बात ही क्या? इन नियमों का उल्लङ्घन होने पर उन्हें राज्य से दण्ड दिया जाता था। लेकिन अब स्थिति बिलकुल बदल गई है। तुर्की से परदे का तो नामो-निशान उठ गया है। वहाँ की स्त्रियाँ कॉलेजों में विविध

श्रीमती हालिदा अदीब हानुम
[आपने तुर्की में स्त्री-शिक्षा और स्त्री-स्वातन्त्र्य के सम्बन्ध में बड़ा काम किया है।]

विषयों का अध्ययन करती हैं, वे अनेक संस्थाओं में काम करती हैं, बाज़ारों में खुले मुँह आज़ादी से घूमती हैं, पश्चिमी पोशाक पहनती हैं, मित्रों से मिलती-जुलती हैं, दावतों में पुरुषों के साथ बैठ कर खाती हैं और नाच

(शेष मैटर १४६ पृष्ठ के पहले कॉलम में देखिए)

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

ज़ेवर

[श्री० एफ़० एल० ब्रेनी, एम० सी० ; आई० सी० एस०]

गाँव के अनेक बड़े-बूढ़े, सुकरात को घेर कर बैठे हुए थे, उसी समय उस रास्ते से दो औरतें गुज़रीं। एक के सिर पर पानी से भरा हुआ घड़ा था और दूसरी घास का गट्ठर सिर पर लिए जा रही थी। दोनों ही सिर से पैर तक ज़ेवरों से लदी हुई थीं, उन ज़ेवरों में एक-दो के सिवा सभी चाँदी के थे।

सुकरात ने गाँव वालों से कहा—भाइयो, ज़ेवरों के बारे में मैं आप लोगों के साथ कुछ विचार करना चाहता हूँ। मेरी तो बुद्धि काम नहीं करती। यह मामला कुछ समझ में नहीं आता।

गाँव वाले—क्यों बुद्धिमान्! आपकी उलझन क्या है?

सुकरात—मैं पूछता हूँ, आपकी औरतें गहना क्यों पहनती हैं?

गाँव वाले—आपका यह सवाल भी एक ही रहा! बनाव, गहना तो थोड़ा-बहुत हम सभी पहनते हैं—हम पहनते हैं, हमारे बच्चे पहनते हैं, लड़के-लड़कियाँ दोनों ही पहनते हैं। हाँ, औरतें कुछ ज़्यादा पहनती हैं।

सुकरात—माना, मगर क्यों?

गाँव वाले—इसके बहुत से कारण हो सकते हैं। पहली बात तो यह कि इसका रिवाज है, फिर यह देखने में अच्छा लगता है, इसके सिवा हम और हमारी स्त्रियाँ—दोनों ही, इसे पसन्द करते हैं।

सुकरात—तो आप इसे इसलिए पसन्द करते हैं कि इसका रिवाज है और अगर आप रिवाजों की पाबन्दी न करें तो लोग आपको हँसेंगे? लेकिन मेरा ख़याल है कि कोई चीज़ केवल इसीलिए अच्छी नहीं हो सकती कि उसका रिवाज है?

गाँव वाले—क्यों?

सुकरात—क्योंकि अगर कुछ गाँव वाले चोरी करने का रिवाज बना लें तो क्या आप यह कहेंगे कि चोरी करना अच्छा है?

गाँव वाले—हर्गिज़ नहीं।

सुकरात—तब किसी रिवाज को इसीलिए कि वह रिवाज है—अच्छा तो नहीं कहा जा सकता?

गाँव वाले—नहीं, हम मानते हैं, नहीं कहा जा सकता।

सुकरात—तब तो गहनों की उपयोगिता साबित करने के लिए केवल रिवाज का बहाना करने से काम नहीं चलेगा। दूसरा कोई अच्छा सा जवाब ढूँढ़ना पड़ेगा?

गाँव वाले—तब हम लोग इसे इसलिए पहनते हैं कि यह अच्छा दीखता है।

सुकरात—लेकिन ये औरतें जो अभी यहाँ से गई हैं, आप बता सकते हैं, उन्होंने कितने अरसे से नहीं नहाया था? उनके कपड़े कितने पुराने और गन्दे थे? उन कपड़ों से बढ़ कर पुराना और गन्दा कपड़ा शायद कोई हो ही नहीं सकता। और वह देखिए, वे बच्चे जो वहाँ खेल रहे हैं, उनके हाथ और पैर तो चाँदी के कड़ों से भरे हुए हैं, लेकिन पानी का मुँह उन्होंने कितने दिनों से नहीं देखा, यह बताना मुश्किल है। फिर, उनके कपड़े ही फटे-पुराने चीथड़ों के सिवा और क्या हैं?

गाँव वाले—चाहे कुछ भी हो, लेकिन गहनों से उनकी ख़ूबसूरती कुछ न कुछ ज़रूर ही बढ़ जाती है।

सुकरात—कैसे आश्चर्य की बात है! आप लोग स्वयं भी गन्दे रहते और चिथड़े पहनते हैं तथा अपने घर वालों को भी इसी तरह रखते हैं, जब कि सफ़ाई में कोई ख़र्च नहीं होता और कपड़ों की क़ीमत भी कुछ बहुत ज़्यादा नहीं है। और फिर आप इस गन्दगी को ख़र्चीले गहनों से ढकने की कोशिश करते हैं!

गाँव वाले—लेकिन आप ही कहिए, क्या गहने पहनने से वे सुन्दर नहीं दीखते?

सुकरात—(ग़ुस्से से चिल्ला कर) सुन्दर तो उन्हें ईश्वर ने बनाया है। और आप लोग ईश्वर की रचना को

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

गन्दगी और चिथड़ों से कुरूप बनाते हैं और फिर उसे गहनों से ढकने की कोशिश करते हैं।

गाँव वाले—आप साहब सचमुच ही हम लोगों को शर्मिन्दा कर देते हैं।

सुकरात—ईश्वर ने आप लोगों के कान में एक छेद किया, इसलिए कि उसके द्वारा आप सुनें और बुद्धि सीखें; लेकिन उसके नीचे बालियाँ पहनने के लिए आप एक दूसरा छेद बना लेते हैं और पहले छेद से जो कुछ सुनते और सीखते हैं, दूसरे से उसे बाहर निकाल देते हैं।

गाँव वाले—हम लोगों की इस तरह धज्जी न उड़ाइए जनाब, हम लोग अपने को सुधारने की कोशिश करेंगे।

सुकरात—और आप इन वाहियात गहनों को जितना ही पहनते हैं, उतनी ही जल्दी ये घिस भी जाते हैं?

गाँव वाले—ज़रूर!

सुकरात—और स्त्रियाँ जितना ही ज़्यादा इन्हें पहनती हैं, उतना ही इनके लिए वे एक-दूसरे से द्वेष करती हैं और अपने मर्दों से अधिक गहने बनवाने की फ़र्मायश भी?

गाँव वाले—ज़रूरी बात है!

सुकरात—तब तो निस्सन्देह जितना ही कम इन्हें पहना जाय, हर हालत में उतना ही अच्छा है?

गाँव वाले—बेशक!

सुकरात—और इन नफ़ीस गहनों को हरदम पहने रहना—घर में या खेत में काम करते समय गन्दे कपड़ों के साथ भी—सबसे बड़ी बेवक़ूफ़ी है। अच्छा तो यह होता कि आप लोग अपने ज़ेवरों को पर्व, मेला या उत्सवों के लिए रख छोड़ते और तभी इन्हें पहनते; तब आपका शरीर साफ़ होता और आपके कपड़े भी धुले हुए तथा स्वच्छ होते।

गाँव वाले—यह बात तो आपने ठीक कही।

सुकरात—और तब, यह मानी हुई बात है कि ये गहने सबसे अधिक शोभा देंगे?

गाँव वाले—देंगे तो; मगर हमारी औरतें तो हरदम इन्हें पहनना चाहती हैं और इनके लिए तक़ाज़ा करने से भी बाज़ नहीं आतीं।

सुकरात—लेकिन अगर वे ज़हर के लिए तक़ाज़ा करें तो क्या ज़हर आप उन्हें दे देंगे?

गाँव वाले—कभी नहीं; आप भी क्या बात कहते हैं!

सुकरात—लेकिन गहने तो वे जितना माँगती हैं, आप उतना ही दे देते हैं। इसका मतलब यह हुआ कि गहनों को आप भी उतना ही पसन्द करते हैं, जितना वे करती हैं?

गाँव वाले—अगर इसका यह मतलब हुआ तो हम मानते हैं; हम गहनों को पसन्द करते हैं।

सुकरात—तब इस भयानक फ़िज़ूलख़र्ची के लिए आप लोग स्त्रियों को क्यों दोष देते हैं?

गाँव वाले—फ़िज़ूलख़र्ची? इसमें फ़िज़ूलख़र्ची क्या है? गहने आख़िर हमारे ही घर में रहते हैं, ये हमारे घर की बहुमूल्य सम्पत्ति हैं।

सुकरात—अगर आप सौ रुपए के गहने बनवाएँ और फिर उन्हें बेचने ले जायँ तो आपको कितने रुपए मिलेंगे?

गाँव वाले—यह बात सोनार की ईमानदारी पर निर्भर है। यदि वह ईमानदार हुआ तो अस्सी रुपए के लगभग मिल जायँगे, नहीं तो साठ या सत्तर तो कहीं गए नहीं हैं!

सुकरात—फिर वे घिसते भी तो हैं? दस वर्ष में

(१४४ पृष्ठ का शेषांश)

घरों में जाती हैं। मिश्र देश की मुसलमान स्त्रियाँ भी तुर्की स्त्रियों की भाँति स्वतन्त्र हैं। अरब, ईराक़ और ईरान में अभी ऐसी स्वतन्त्रता का उदय नहीं हुआ है, लेकिन वहाँ भी स्त्रियाँ स्वतन्त्रता की ओर बढ़ रही हैं। परदा तो प्रायः सभी देशों में शिथिल होता दिखाई पड़ रहा है। अफ़ग़ानिस्तान में अमीर अमानुल्लाह ने न केवल परदे की प्रथा को तोड़ा था, बल्कि उन्होंने अफ़ग़ानी युवतियों को पश्चिमी देशों में शिक्षा ग्रहण करने के लिए भी भेजा था। इस जागृति में राष्ट्रपति कमालपाशा की सुयोग्य तथा सुशिक्षिता पत्नी श्रीमती लतीफ़ा हानूम, अफ़ग़ानिस्तान की महाराणी सूर्या, प्रसिद्ध तुर्की नेत्री हालिदा अदीब हानूम, तथा नूरहमद्राबे का बड़ा हाथ है।

* * *

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

बाद शायद उन ज़ेवरों की क़ीमत बीस ही रुपए रह जायगी ?

गाँव वाले—हाँ, घिसते तो ज़रूर हैं।

सुकरात—और अगर चोर आ जाय तो ? एक ही रात में सब सफ़ाई समझिए ?

गाँव वाले—आपका कहना बिलकुल सच है !

सुकरात—और अगर आपके पास गहने कुछ ज़्यादा हैं तो चोरों के डर से रात में आपको नींद भी नहीं आवेगी। इसी डर से आप लोग अपने मकानों में खिड़कियाँ भी नहीं रखते और इससे आपकी तन्दुरुस्ती बिगड़ जाती है। वाह ! आपके गहने कितने क़ीमती हैं !! अब मान लीजिए कि सौ रुपयों के गहने ख़रीदने के बदले, यदि यही रुपया आप को-ऑपरेटिव बैङ्क में जमा कर देते हैं तो दस बरस में वह कितना हो जायगा ?

गाँव वाले—लोगों का कहना है कि इतने समय में ये रुपए दो सौ के लगभग हो जायँगे ?

सुकरात—तो इसके मुक़ाबले में आपके ज़ेवर कहाँ क़ीमती साबित हुए ?

गाँव वाले—सचमुच ही सुकरात जी, हम लोग रिवाजों के ग़ुलाम हो गए हैं।

सुकरात—अच्छा, यह तो बताइए कि जिस समय आपके पास रुपए नहीं रहते और आपकी स्त्रियाँ गहना माँगती हैं, उस समय आप क्या करते हैं ?

गाँव वाले—क़र्ज़ लेते हैं !

सुकरात—इसका यह मतलब हुआ कि गहने जैसे-जैसे घिसते हैं, वैसे ही वैसे क़र्ज़ का पहाड़ लगता जाता है ?

गाँव वाले—हाँ सुकरात, आपका कहना सोलह आने सच है !

सुकरात—बड़े अफ़सोस की बात है—ऐ जाहिल गाँव वालो !—तुम लोग कब अक़्ल सीखोगे ?

गाँव वाले—लेकिन सुकरात जी, हमारा क्या दोष है ? हमारी स्त्रियाँ और बच्चे तो बिना गहना लिए एक दिन भी नहीं मान सकते।

सुकरात—मैं समझता हूँ, सुन्दर चीज़ों को हम सभी लोग पसन्द करते हैं और सभी सुखी होना भी चाहते हैं। यह हमारा स्वभाव है ; हमारे भीतर जिस स्वर्गीय सत्ता का निवास है, यह उसी की इच्छा है !

गाँव वाले—बस, बस, आपने हमारे मन की बात कह दी और इस तरह कही, जिस तरह हम स्वयं भी नहीं कह सकते थे।

सुकरात—और आप समझते हैं कि गहनों से आपकी यह इच्छा तृप्त हो जायगी ?

गाँव वाले—इसके सिवा देहात में हम और कर ही क्या सकते हैं ?

(इसी समय एक घोड़ी के साथ उसका बछेड़ा उछलता-कूदता उधर से होकर गुज़रता है।)

सुकरात—देखिए, ये दोनों ही ख़ूबसूरत हैं और ख़ुश भी हैं, और इन्होंने गहना भी नहीं पहना है; इतने पर भी मनुष्य जानवरों से श्रेष्ठ समझा जाता है ! क्यों ?

गाँव वाले—समझा तो ऐसा ही जाता है, लेकिन सुकरात जी, आपकी बातें सुन कर हम लोगों को इसमें भी सन्देह होने लगा है।

सुकरात—मेरा ख़्याल है कि आप लोगों के बच्चे हमेशा ख़ुश नहीं रहते ?

गाँव वाले—नहीं, वे खेलते तो ख़ूब हैं, लेकिन साथ ही साथ वे रोते भी ख़ूब हैं।

सुकरात—वह परिवार सुखी कैसे रह सकता है जो गन्दगी और रोग तथा दुःख और विपत्तियों से घिरा हुआ हो ? क्या आप बतला सकते हैं कि जानवर क्यों हमेशा सुखी और सुन्दर रहते हैं; लेकिन आपकी स्त्रियाँ और बच्चे प्रायः न तो सुन्दर रहते हैं और न सुखी ?

गाँव वाले—नहीं सुकरात जी, यह हम कैसे बता सकते हैं ?

सुकरात—तो क्या मैं बताने की कोशिश करूँ ?

गाँव वाले—हाँ, हाँ, यह बात दया करके ज़रूर बताइए।

सुकरात—भाई, मेरा विश्वास है, इसका पहला कारण यह है कि जानवर सफ़ाई से रहते हैं, सफ़ाई से स्वास्थ्य बढ़ता है और स्वास्थ्य से सुख मिलता है। वे खुली हवा में रहते तथा अपने और अपने बच्चों को बहुत ही साफ़ रखते हैं। आप लोग अपने गाँवों को गन्दा रखते हैं, वहाँ हर तरह के कूड़े-कचरे चारों ओर सड़ा करते हैं, जो हवा से उड़-उड़ कर आप लोगों के भोजन तथा पानी में पड़ते हैं और साँस के साथ वे आपके फेंफड़ों में भी पहुँच जाते हैं। इन ग़लीज़ों पर से उड़

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

कर मक्खियाँ आपके भोजन पर बैठती हैं और फिर वे आपके बच्चों की आँखों और ओठों पर भी बैठती हैं। आप ऐसे अँधेरे और बिना खिड़की के घरों में रहते हैं, जहाँ हवा और रोशनी का पहुँचना भी मुश्किल है। आपकी स्त्रियाँ न तो ख़ुद नहाती हैं और न अपने बच्चों को ही साफ़-सुथरा रखती हैं। आपका स्वास्थ्य कमज़ोर हो जाता है और आप आसानी से मौसमी बीमारियों के शिकार बन जाते हैं। सफ़ाई से रहिए, अपने बच्चों को साफ़ रखिए, कपड़ों को धोया कीजिए, मकानों में खिड़कियाँ बनवाइए, गाँवों की सफ़ाई कीजिए, सफ़ाई से रहने की आदत डालिए और तब आपकी स्त्रियाँ और बच्चे साफ़ रहेंगे, तन्दुरुस्त रहेंगे और इसलिए ख़ुश भी रहेंगे।

गाँव वाले—साहब, आप तो बड़े कठोर हैं। हम लोग एक साथ इतनी बातें नहीं कर सकते।

सुकरात—क्या मैंने कोई ऐसी बात कही है, जिसमें रुपया ख़र्च करना पड़ता है?

गाँव वाले—नहीं, बिलकुल नहीं।

सुकरात—इसके लिए तो केवल शक्ति और इच्छा चाहिए और यही आप लोगों में नहीं है।

गाँव वाले—हाँ सुकरात जी, आपका यह दोषारोपण बिलकुल सच है।

सुकरात—सच्ची बात तो यह है कि इस उपाय से आपके धन की बचत होगी, क्योंकि यदि आप हमारी सलाह मानेंगे तो आपको इन वाहियात गहनों की इतनी अधिक ज़रूरत ही न पड़ेगी।

गाँव वाले—हाँ साहब, यह बात तो आपने ठीक कही।

सुकरात—साफ़ और तन्दुरुस्त स्त्री-बच्चे बिना गहनों के भी उन गन्दी स्त्रियों और बच्चों के मुक़ाबले, जिनका शरीर गहनों से लदा हुआ हो, कहीं ज़्यादे अच्छे और सुन्दर दीखेंगे, या इसमें भी कोई सन्देह है?

गाँव वाले—नहीं, कोई नहीं।

सुकरात—और इस तरह जिस रुपए की बचत हो उसमें से कुछ रुपए आप अपने बच्चों को पढ़ाने-लिखाने, उनकी बीमारी में कुनैन और दवा ख़रीदने तथा बरसात में उनके लिए मसहरी बनवाने में क्यों न ख़र्च करें?

गाँव वाले—सुकरात जी, यह तो आपने ऐसी बात कही, जिसे जाहिल भी समझ जायँगे, लेकिन मुश्किल तो यह है कि औरतें हमेशा गहने ही माँगती हैं।

सुकरात—गहने उन्हें ज़रूर दीजिए, लेकिन उचित मात्रा में दीजिए और तब दीजिए जब उनके लिए आपको क़र्ज़ लेने की ज़रूरत न पड़े। भाइयो, मैं तो इन चीज़ों का विरोधी नहीं हूँ।

गाँव वाले—लेकिन इससे तो उन्हें सन्तोष न होगा।

सुकरात—क्यों?

गाँव वाले—क्योंकि वे बहुधा अपने घरों में कोई सुख नहीं पातीं, घर में उनका कोई अधिकार नहीं होता। ऐसी हालत में वे स्वभावतः ही यह सोचती हैं कि यदि वे गहनों से लदी रहेंगी तो उनका पति उनकी अधिक इज़्ज़त करेगा और उनके साथ अच्छा व्यवहार करेगा, क्योंकि ख़ाह-म-ख़ाह उसे इस बात का डर बना रहेगा कि ऐसा न करने से उसकी स्त्री भाग जायगी और अपने साथ ही गहनों को भी लेती जायगी। इसके सिवा, संयोग से यदि कहीं वह विधवा हो गई, तो ये गहने ही उसके जीवन के एकमात्र आधार होते हैं।

सुकरात—तब तो शायद स्त्रियों की एकमात्र सम्पत्ति उनके गहने ही हैं?

गाँव वाले—इसमें क्या शक!

सुकरात—तब इसीसे वे सोचती हैं कि जब, जो कुछ प्राप्त कर लिया जा सके उतना ही अच्छा है और इसीसे गहनों के लिए वे आपको तङ्ग भी करती हैं?

गाँव वाले—हाँ, बात तो यही है।

सुकरात—तब तो उनके गहने, उनके पतियों की नेकचलनी के लिए एक तरह की ज़मानत हैं?

गाँव वाले—माफ़ कीजिए सुकरात जी, आप तो आप हम लोगों को बहुत ही शर्मिन्दा कर रहे हैं।

सुकरात—तो शायद, आप लोग अपनी स्त्रियों की कुछ इज़्ज़त भी नहीं करते?

गाँव वाले—नहीं, हम क्यों करेंगे? वे हमारी इज़्ज़त करती हैं।

सुकरात—और शायद आप लोग स्त्रियों का कुछ अधिक महत्व भी नहीं समझते?

गाँव वाले—नहीं, बिलकुल नहीं।

सुकरात—आप लोग स्त्रियों से ही तो पैदा हुए हैं!

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

आपके बच्चे भी स्त्रियों से ही पैदा हुए थे और आपकी लड़कियाँ आपके नातियों की माताएँ होंगी ? क्यों ?

गाँव वाले—हाँ !

सुकरात—तब स्त्रियाँ आप लोगों का ही एक अंश हुईं न ?

गाँव वाले—हाँ !

सुकरात—और यदि वे सम्मान के योग्य नहीं हैं तो आप और आपके बच्चे और आपके नाती-पोते भी सम्मान के अधिकारी नहीं हैं ?

गाँव वाले—मालूम तो ऐसा ही पड़ता है।

सुकरात—अच्छा, यह तो बतलाइए, क्या आप अपने बच्चों को प्यार करते हैं ?

गाँव वाले—बहुत ज़्यादा !

सुकरात—और तब भी आप उस आदमी से घृणा और अपमान का बर्ताव करते हैं जिस पर आपके बच्चों की ज़िम्मेदारी है, जिसके द्वारा वे पाले-पोसे जाते हैं, जिससे उन्हें अपने जीवन की सबसे अधिक कोमल और महत्वपूर्ण अवस्था में शिक्षा मिलती है और उनके चरित्र का निर्माण होता है ? आप ही देखिए, आपका यह व्यवहार कितना मूर्खतापूर्ण है ? सच पूछिए तो आप जितने सम्मान के योग्य हैं, उससे कहीं ज़्यादा सम्मान और आदर के योग्य आपकी स्त्रियाँ हैं, क्योंकि आपके बच्चों के जन्म, उनके पालन-पोषण, आपकी जाति के निर्माण तथा घर के प्रबन्ध का सारा भार उन्हीं पर है।

गाँव वाले—आपका कहना सच है।

सुकरात—वास्तव में इन सभी कामों में वे आपका हाथ बटाती हैं और इसलिए आपके जीवन की सहधर्मिणी हैं।

गाँव वाले—ज़रूर हैं।

सुकरात—तब यदि आप उनके साथ सहधर्मिणी के जैसा व्यवहार करें, वे जिस आदर के योग्य हैं, उनका वैसा आदर करें और उन्हें शिक्षा दें, जिससे वे यह सीख सकें कि बच्चों का पालन-पोषण भली प्रकार कैसे करना चाहिए, तो शायद वे आपसे अधिक गहने न माँगेंगी, बल्कि अपने सुन्दर और तन्दुरुस्त बच्चों तथा सुखी परिवार को लेकर ही सन्तुष्ट रहेंगी।

गाँव वाले—सुकरात, आप जो कहते हैं, उसे हम अस्वीकार नहीं कर सकते।

सुकरात—क्या आप लोग यह समझते हैं कि आपके बच्चे तथा आपके जानवरों के बच्चे—ये ही दोनों चीजें ऐसी हैं जिन्हें ईश्वर ने सुन्दर बनाया है ?

गाँव वाले—नहीं, ईश्वर ने फूल भी बनाए हैं।

सुकरात—तब मैं समझता हूँ, आप लोगों के घर फूलों से भरे हुए होंगे, क्योंकि सुन्दर वस्तुओं से आप लोगों को बहुत प्रेम है, यहाँ तक कि उनके लिए क़र्ज़ लेने में भी आप सङ्कोच नहीं करते ?

गाँव वाले—(हँसते हुए) नहीं जी, हम लोग फूलों को लेकर क्या करेंगे ?

सुकरात—इसका तो यह मतलब हुआ कि आप लोग सुन्दर वस्तुओं से वास्तव में प्रेम नहीं करते ?

गाँव वाले—नहीं, हम करते तो हैं, लेकिन हम लोगों को फूल के पौधे लगाने का अवकाश ही नहीं मिलता और न हम यही जानते हैं कि फूल लगाए किस तरह जाते हैं तथा उनके बीज कहाँ मिलते हैं ?

सुकरात—अगर आपको अवकाश नहीं मिलता तो आपकी वे साथिनें जो घर के सभी कामों में आपका हाथ बटाती हैं, इस काम को क्यों नहीं सीखतीं ? मेरा विश्वास है कि फूल के कुछ पौधे लगा कर घर की शोभा बढ़ा देने के लिए उन्हें अवश्य ही समय मिल जायगा। किसी भी भली स्त्री को अपने घर को सजाने और सुन्दर बनाने के लिए काफ़ी समय मिल सकता है ! मैं आपको यह भी सलाह देता हूँ कि यदि इतने पर भी आपकी स्त्रियाँ और लड़कियाँ गहना चाहती हैं तो उन्हें लड़कपन में सिलाई और कसीदे का काम सिखाइए, जिससे वे अपनी लड़कियों को भी यह सब सिखा सकें। यदि आप ऐसा करें तो वे आपके रुपयों को गहनों में बरबाद करने के बदले, सिलाई और क़सीदे की सुन्दर चीज़ें बनाने और फूलों के सुन्दर पौधे लगाने में एक-दूसरे का मुक़ाबला करने लगें। और तब गाँव या मुहल्ले की औरतों का मुखिया वह स्त्री होगी, जो सबसे बुद्धिमान और प्रवीण होगी, न कि वह जिसके पति के पास सोनार का सबसे लम्बा हिसाब पहुँचा करता हो।

गाँव वाले—हे सुकरात, हम लोग ऐसा करने की कोशिश करेंगे।

सुकरात—इन सब बातों से परिणाम यह निकला कि आपको अपनी स्त्रियों को शिक्षा देनी चाहिए, उन्हें

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

इज़्ज़त के साथ रखना चाहिए, उनके साथ सहधर्मिणी के योग्य व्यवहार करना चाहिए, घर को सुन्दर तथा बच्चों को साफ़ और स्वस्थ रखने में उनकी मदद करनी चाहिए, उन्हें ऐसी कारीगरी सिखानी चाहिए जिससे वे स्वयं अपने को तथा अपने बच्चों को सुन्दर बना सकें। उन्हें घरों में फूल लगाना भी सिखाना चाहिए। आपको अपने गाँवों को स्वच्छ तथा आदमियों के रहने के योग्य बनाना चाहिए। तब आपको गहनों की बहुत कम ज़रूरत पड़ेगी और तब बजाय इसके कि एक ओर गहने घिसें और दूसरी ओर आप पर क़र्ज़ का पहाड़ लदता जाय, आप अपने बचे हुए रुपए बैङ्क में रख सकेंगे और उन्हें प्रति वर्ष बढ़ते हुए देखेंगे। इन सबका परिणाम यह होगा कि आपका और आपके परिवार का जीवन सुख और समृद्धि से भर जायगा।

गाँव वाले—महात्मन्, आपके उपदेश सचमुच बड़े उपयोगी हैं! हम लोग उनके अनुसार कार्य करने की कोशिश अवश्य करेंगे, लेकिन इसमें शक नहीं कि इन सब कामों को, लगातार कई वर्षों के निरन्तर परिश्रम के बाद भी, सफलतापूर्वक कर डालना बहुत आसान नहीं है।

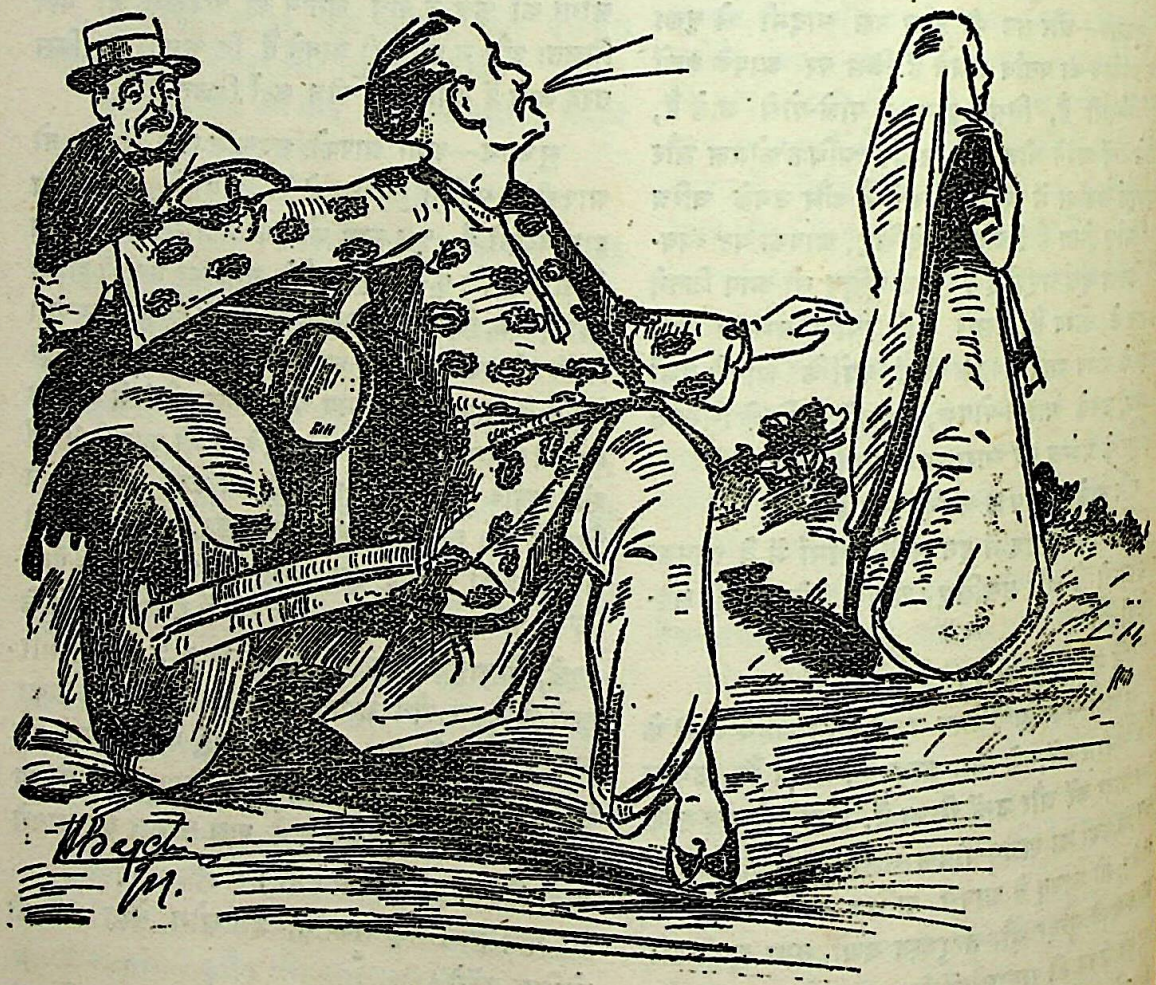

पुरुष-समाज

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

स्त्री-जाति और शिक्षा

[श्री० मोहनलाल महतो गयावाल, 'वियोगी']

A country needs nothing so much to promote its regeneration as good mothers.

—*Napoleon*

स्त्रियों की उन्नति या अवनति पर ही राष्ट्र की उन्नति या अवनति निर्भर है।

—अरस्तू

स्त्री-शिक्षा के विषय में अब तक मतभेद ही चला आ रहा है। अनेक महानुभावों की राय है कि स्त्रियों के शिक्षित होने से समाज की हानि है, क्योंकि स्त्रियाँ पढ़-लिख कर 'बिगड़' जायँगी, जिसके परिणाम-स्वरूप समाज में विप्लव हो जायगा। ऐसा कहने वालों का अभिप्राय यह होता है कि स्त्रियाँ पढ़-लिख कर पुरुषों को कुछ न समझेंगी, वे स्वाधीन हो जायँगी और बात-बात में अपने अधिकार के लिए पुरुषों से लड़ा करेंगी। इस प्रकार 'स्त्री-शिक्षा' के विरोधियों के अनेक बेसिर-पैर के तर्क हैं। किन्तु यह तो हुई एक पक्ष की बात। दूसरे पक्ष के महानुभावों का कहना है कि स्त्री-जाति को बिना शिक्षित बनाए देश का उद्धार हो ही नहीं सकता।

इस विषय पर अपनी ओर से कुछ कहने के पहले हम यहाँ कतिपय नए-पुराने उद्धरण उपस्थित करना चाहते हैं, जिससे इस सम्बन्ध में हमें भिन्न-भिन्न समय के विचारों का पता लग सके और हम स्वयं भी उन विचारों के प्रकाश में अपने लिए एक उदार दृष्टिकोण बना सकें।

वेदों में ऐसा वर्णन मिलता है कि पुरुषों की भाँति स्त्रियाँ भी वेद-सूक्तों की रचना करती थीं (ऋग्वेद—५। २९। ३) जिनका पाठ करके आजकल पुरुषगण अपने को धन्य समझते हैं।

इस सम्बन्ध में विदुषी विश्ववारा का, जिन्होंने अनेक सूक्त रचे थे, नाम विशेष उल्लेखनीय है। वेदों में स्त्रियों का ऐसा भी वर्णन आया है कि स्त्रियों को शिक्षिता होना चाहिए। अथर्ववेद (१४। २। ७२) में कहा है :—

प्रबुध्यस्व सुबुधा बुध्यमाना।
दीर्घायुत्वाय शत शारदाय॥

अर्थात्—"स्त्रियों को दीर्घायु और उत्तम विद्या प्राप्त करनी चाहिए।"

सनातनधर्मी स्वामी दयानन्द ने प्राचीन परम्परा का उल्लेख करते हुए 'सत्यार्थ-विवेक' में लिखा है :—

पुरा कल्पेतु नारीणां मौञ्जीबन्धनमीष्यते।
अध्यापनञ्च वेदानां सावित्रीवाचनं तथा॥

अर्थात्—"प्राचीन मर्यादानुसार स्त्रियों का भी उपनयन होता था, उन्हें गायत्री का उपदेश दिया जाता था और वे वेदों को भी पढ़ती थीं।"

वैदिक युग में स्त्रियों की दशा के सम्बन्ध में डॉक्टर एनीबिसेण्ट ने अपनी पुस्तक "Wake up India" में लिखा है—

In that age of splendid achievements and lofty sprituality women were equals of men; trained and cultured and educated to the highest point.

भावार्थ यह कि वैदिक काल में स्त्रियाँ सब प्रकार से पुरुषों के समान थीं; वे शिक्षा, सभ्यता और संस्कृति के सर्वोच्च सतह तक पहुँची हुई थीं।

महाभारत में द्रौपदी के वर्णन में 'पण्डिता' शब्द का प्रयोग हुआ है—प्रिया च दर्शनीया च पण्डिता च पतिव्रता (वनपर्व, अध्याय २७)।

रामायण में जानकी और अनुसूया की कथा लिखी है। अनुसूया का भाषण इतना पाण्डित्यपूर्ण है कि उसे पण्डिता कहने के लिए लाचार होना पड़ता है।

इतना ही क्यों, गार्गी, मैत्रेयी, लीलावती, मण्डन मिश्र की पत्नी और न जाने और कितनी ही विदुषी देवियों के चरित्र हमारे जातीय इतिहास की उज्ज्वलतम सामग्रियों में से हैं।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

पुराण में भी लिखा है—"कन्याऽप्येवं पालनीया रक्षणीयाऽति यत्नतः।"

अर्थात्—"पुत्र की तरह कन्या का भी यत्न से पालन करना और उसे शिक्षा-दान देना चाहिए।"

इन अनेक प्रमाणों से यह निर्विवाद सिद्ध होता है कि हमारे यहाँ स्त्री-शिक्षा का प्रचार आज से पहले—बहुत दिन पहले—भी था और अच्छी तरह था।

परन्तु खेद की बात है कि प्राचीन काल में हमारे देश में स्त्री-शिक्षा का जितना ही अधिक प्रचार था, आजकल उसका उतना ही अधिक ह्रास हो रहा है। इसे देश के दुर्भाग्य के सिवा और क्या कहा जा सकता है? लिखते दुःख होता है कि इस समय भारत में फ़ी हज़ार केवल छः स्त्रियाँ पढ़ी-लिखी हैं। भला इस पतन का भी कोई ठिकाना है!!! इससे बढ़ कर देश की दुर्दशा और हो ही क्या सकती है? सब से बड़े दुर्भाग्य की बात है कि इतने पर भी हमारा समाज चेतने का नाम नहीं लेता।

एक ओर है स्त्रियों की शिक्षा-विहीनता का यह भयावह दृश्य और दूसरी ओर है उनके उत्तरदायित्वों का विशाल समूह। भला ऐसी अवस्था में उनसे यह कैसे आशा की जा सकती है कि वे अपने गम्भीर उत्तरदायित्वों को यथोचित रूप से निभा सकेंगी? किन्तु अङ्गरेज़ी भाषा में स्त्री को पुरुष का उत्तमार्द्ध (Better half) कहते हैं। हमारे प्राचीन ग्रन्थों और शास्त्रों में भी इसी आशय के वचन पाए जाते हैं। दायभाग (११-११-१) में लिखा है:—

शरीरार्द्धं स्मृता जाया पुण्यापुण्य फले समा।

महाभारत (आदिपर्व, अध्याय ७४) में भी यही बात कही गई है—

अर्द्धं भार्या मनुष्यस्य भार्या श्रेष्ठतमः सखा।

मनुसंहिता में लिखा है—

द्विधा कृत्वाऽऽत्मनो देहमर्द्धेन पुरुषोऽभवत।
अर्द्धेन नारी तस्यां स विराज समृजत्प्रभुः॥

अर्थात्—"सृष्टि के समय परमात्मा ने अपने शरीर के दो भाग कर दिए, एक भाग पुरुष बन गया और दूसरा स्त्री, और पुरुष तथा स्त्री—दोनों में ही उनकी विराट् सृष्टि की लीला का विस्तार हुआ।"

उपरोक्त प्रमाणों से मालूम होता है कि पत्नी, पति का आधा शरीर है। ऐसी दशा में पति विद्वान और पत्नी मूर्ख हो, तो यही समझना चाहिए कि पुरुष का आधा अङ्ग सूख गया है। किसी अङ्गरेज़ विद्वान का कथन है:—

A fountain can not send forth at the same place both sweet water and bitter.

एक ही झरने से मीठा और खारा—दोनों प्रकार का पानी नहीं निकल सकता। बात बिलकुल सच्ची है। यदि हमारे मुँह की दाहिनी कोर में विद्वत्ता की स्फूर्ति हो और बाएँ में मूर्खता का शैथिल्य और ऐसी अवस्था में हम सुन्दर लच्छेदार भाषा बोलने का प्रयत्न करें, तो सम्भवतः हमारे मुँह से कोई शब्द ही स्पष्ट नहीं निकल सकेगा। हम ऊँट की तरह केवल बलबला कर रह जायँगे। क्योंकि ओंठ के दोनों सिरों का समान रूप से स्फुरित होना दोनों ओर की कोरों की उत्तेजना पर निर्भर है। यही दशा हमारे समाज की भी है। उसका आधा अङ्ग साफ़-सुथरा, परिष्कृत और तेज़ है, परन्तु दूसरा आधा, मलिन, दुर्बल और सुस्त। भला ऐसी अवस्था में सुधार की कहाँ तक गुञ्जायश होगी? जहाँ प्राचीन काल में स्त्रियाँ पुरुषों की अर्द्धाङ्गिनी थीं, वहाँ आजकल वे सुहागिनी मात्र रह गई हैं। जब तक हम स्त्रियों को सचमुच अर्द्धाङ्गिनी न बना लेंगे, तब तक हमारा अङ्ग पूर्ण कैसे होगा तथा उसमें यह क्षमता कैसे उत्पन्न हो सकेगी कि वह दूसरे आधे अङ्ग की किसी रूप में सहायता कर सके।

प्रकृति का कार्य-साधन दोनों के संयोग से होता है। तरल, तरल से बड़ी ख़ूबी से मिल सकता है, किन्तु ठोस और द्रव का कोई मेल नहीं है। इससे जो गुण हममें है, स्त्रियों में भी उसका विकास होना चाहिए। तभी संयोग पूर्ण होगा, अन्यथा यह तो दुर्योग का ही रूप धारण करेगा।

आठ मार्च, १९२३ ई० को अहमदाबाद में गुजरात राष्ट्रीय विद्यापीठ की नींव डालने के अवसर पर आचार्य प्रफुल्लचन्द्र राय ने भाषण देते हुए कहा था—"हमने स्त्रियों को शिक्षा न देकर भारी भूल की है। जिस कुल परम्परा के कारण अछूतों का प्रश्न हमारे सामने उपस्थित हो गया है, उसीके कारण स्त्री-शिक्षा का विरोध भी हो रहा है। यह अवस्था दुःखमय है। राष्ट्रीय शिक्षण

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

संस्थाओं में भी बालिकाओं की शिक्षा का प्रबन्ध अभी तक नहीं किया गया है, जो शीघ्र होना चाहिए। बिना स्त्रियों की शिक्षा के पुरुषों में पूर्णता आ ही नहीं सकती, न राष्ट्र का कल्याण ही हो सकता है।"

हर्ष है कि स्त्री-शिक्षा की आवश्यकता समझ कर विद्वत्समाज का ध्यान कुछ-कुछ इस ओर आकृष्ट होने लगा है। मगर आजकल स्त्री-जाति को जैसी शिक्षा दी जाती है, दूसरे शब्दों में आजकल स्त्री-जाति को शिक्षा देने में जो पद्धति काम में लाई जाती है, वह सर्वथा ज़हरीली है। उससे लाभ की अपेक्षा हानि की ही अधिक सम्भावना है।

कारण स्पष्ट है। पश्चिमी शिक्षा का अनोखा रङ्ग जब स्त्रियों पर चढ़ जाता है, तब उनके पैर ज़मीन पर नहीं पड़ते। यदि कोई भारतीय ललना सवेरे उठते ही कुर्सी पर बैठ कर चम्मच की सहायता से चाय पीने और बिस्कुट खाने लग जाय या बच्चों की सेवा-शुश्रूषा की ज़रा भी परवाह न कर तथा गृह-प्रबन्ध को "केवल समय नष्ट करने वाला झञ्झट" कह कर 'स्टैट्समैन' या 'लिबर्टी' के पन्ने उलटना प्रारम्भ कर दे तो हमारा गार्हस्थ्य जीवन कैसा हो जायगा? इसके अतिरिक्त हमारे माता-पिता ऐसी सर्वगुण-सम्पन्ना बहू पाकर कौन सा सुख पावेंगे? आजकल के कुछ स्त्री-पुरुष हमारी इस दलील को थोथी बतावेंगे और शायद इस प्रश्न के उठाने पर ही आपत्ति करेंगे, लेकिन हम उनसे भी एक बात कह देना चाहते हैं। पश्चिमी रहन-सहन हमारे देश से एकदम भिन्न है। उन्हें उनकी चाल शोभा देती है, हमें हमारी। हम भारतीय हैं। हमारा धर्म अलग; हमारे आचार-विचार भिन्न हैं। भला हमारे लिए पश्चिमीय सभ्यता और रहन-सहन कैसे उपयुक्त हो सकती है? अगर बन्दर के धड़ से गधे का सिर जोड़ दिया जाय तो वह विधाता के रचना-वैचित्र्य का परिचायक भले ही हो जाय, पर वह बन्दर नहीं कहा जा सकता। यदि धार्मिक दृष्टि से देखा जाय तो जिस समय हमारे पवित्र घरों में बी० ए०, एम० ए० पास गृहस्वामिनी के "लेडी शू मण्डित चरणद्वय" अपने धीर-मन्थर पदविक्षेप से इतस्ततः परिभ्रमण आरम्भ कर देंगे, उस समय घरों में निरन्तर वास करने वाले देवगण भयभीत होकर भाग खड़े होंगे। दूसरी बात यह है कि पश्चिम की ठण्ढी और स्वतन्त्र हवा में पली हुई, बी० ए०, एम० ए० की डिग्री-धारिणी देवियों में अभिमान की प्रचण्डता न हो, यह ज़रा मुश्किल से समझ में आने वाली बात है। और अभिमानिनी स्त्री परिवार को कहाँ तक प्रसन्न रख सकती है, यह विचारने की बात है।

भारतवर्ष की गृहस्थ रमणी को साधारणतः द्रव्योपार्जन नहीं करना पड़ता। अतएव वर्तमान शिक्षा-प्रणाली के अनुसार उनकी शिक्षा की व्यवस्था हानिकर और अनुचित है। किताबों का कीड़ा बनाने की अपेक्षा यदि उन्हें व्यावहारिक ज्ञान प्राप्त करने का अवसर दिया जाय, तो वे जीवन में कहीं अधिक सफल और सुगृहिणी हो सकती हैं। अधिकार और समानता के प्रश्न भावुकता से भरे हुए हैं। व्यावहारिक जीवन में न तो उनका कोई मूल्य है और न कोई उपयोगिता। पुस्तक का ज्ञान भी आवश्यक ही है, लेकिन हमारे देश में शिक्षा की जो वर्तमान प्रणाली है, वह हानिकर और दूषित है। वह किसी प्रकार वाञ्छनीय नहीं है। उसमें तो परिवर्त्तन होना ही चाहिए।

हाँ, स्त्रियों के हृदय में प्रचुर विद्या भर देनी चाहिए, क्योंकि "स्त्रियों के द्वारा ही प्रकृति पुरुषों के हृदय पर लिखती है—"

It is by ladies that nature writes upon the hearts of men.

जिस कुलाङ्गना के हृदय-पट पर विद्या की एक उज्ज्वल रेखा न होगी, वह भला दूसरों के हृदय पर टेढ़ी-मेढ़ी लकीरों के अतिरिक्त और लिख ही क्या सकती है? इसके सिवा यदि हमारी गृहस्वामिनी शिक्षित रहेगी तो उसकी सन्तान अपढ़ हो ही नहीं सकती।

यह समझना भारी भूल है कि सन्तान की शिक्षा का भार पिता के सिर पर है, हमारा यथार्थ शिक्षक—कम से कम चरित्र-गठन के विषय में—तो माता ही है। हमारी शिक्षा, पाठशाला में जाने के बहुत दिन पहले

माता की गोद से

ही शुरू होती है। माता का हर एक वाक्य और मुख-भङ्गी हमारे बचपन के कोमल हृदय में सदा के लिए नए-नए भाव अङ्कित कर देती है। इसके सिवा, स्वामी

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

के समग्र परिवार का सुख भी स्त्री के ऊपर ही निर्भर है। घर की बहू कुछ दिनों के बाद मालकिन या पुरखिन होती है। उसी की गृह-कर्म-निपुणता और सबसे मिल कर चलने के कौशल से गृहस्थ का कल्याण होता है।

यस्यास्ति भार्या पठिता सुशिक्षिता
गृह क्रिया कर्म सुसाधने क्षमा।
स्वजीविकां धर्म धनार्जनं पुनः
करोति निश्चिन्तमथो हि मानुषः॥

अर्थात्—"जिसकी भार्या अच्छी पढ़ी-लिखी और घर के कामों में चतुर होती है, वह पुरुष अपनी जीविका, धन और धर्म का संयम अच्छी तरह से कर सकता है।"

महाभारत की यह कथा प्रसिद्ध है कि एक समय युधिष्ठिर के यह प्रश्न करने पर कि माता और पिता इन दोनों में कौन बड़ा है, मार्कण्डेय ने कहा था—राजन्!

मातृस्तु गौरवं दत्ते पितनन्ये तु मेनिरे।
दुष्करं कुरुते माता विवर्द्धयति या प्रजा॥

अर्थात्—"कोई माता को बड़ा मानता है कोई पिता को, मगर मेरी सम्मति में माता सबसे बड़ी है, क्योंकि वह सन्तान को बढ़ाने का दुष्कर कार्य करती है।"

माता के द्वारा ही सन्तान का उत्कर्ष होता है। ऐसी दशा में यदि माता सुशिक्षिता हो तो सन्तान का उत्कर्ष और अच्छी तरह हो सकता है।

स्त्री-जाति चाहे कितनी भी स्वार्थ त्यागिनी तथा सत्यवती क्यों न हो, परन्तु पुरुष-समाज में उसका सम्मान नहीं होता। क्यों नहीं होता? इस महत्वपूर्ण प्रश्न का यही उत्तर है कि—"आपसे उसकी कोई समानता नहीं है।" जन्म से ही उसके अज्ञान न होने पर भी आपने उसे शिक्षा न देकर

अज्ञान के अन्धकार में

डाल दिया है। महाकवि शेक्सपियर ने भी स्त्री-जाति के मूर्ख रहने का पाप पुरुषों के सिर पर ही लाद दिया है। आपका कथन है कि—"यदि फूल मुरझा जाय तो उसका क्या अपराध है? यह अपराध तो ठण्ढी हवा और पाले का है, जिन्होंने उसे सुखा दिया। यदि स्त्रियाँ निर्बल और अशिक्षिता हैं तो यह अपराध पुरुषों का है। यदि उनमें बुराइयाँ हैं तो इसके उत्तरदाता पुरुष ही हैं। ये अभिमान के पुतले और आचार के शत्रु, अपनी निन्दनीय बुराइयों से उनके कोमल हृदयों को प्लावित कर देते हैं।"

कविवर शैरिडन (Sharidan) की राय है कि—"स्त्रियाँ हम पर राज्य करती हैं, इस कारण हम उन्हें जितना निपुण बनावेंगे, हम स्वयं उतने ही प्रवीण होंगे। अनेक बार ऐसा देखा गया है कि सुशिक्षिता पत्नी के कारण उसकी उच्च शिक्षा का प्रभाव उसके स्वामी पर भी पड़ा है।" हम ऊपर कह आए हैं कि प्रकृति स्त्रियों के द्वारा ही पुरुषों के हृदय पर लिखती है। उदाहरण के लिए गोस्वामी तुलसीदास की पावन कथा तथा महाकवि कालिदास का जीवन-चरित्र हमारे पढ़े-लिखे पाठकों से छिपा नहीं है। इन दोनों महानुभावों का प्रारम्भिक जीवन कितना अन्धकारमय था, यह बताना न होगा। साथ ही यह भी कहने की आवश्यकता नहीं कि यदि इनकी स्त्रियाँ इन्हें इतनी गरमागरम शिक्षा न देतीं तो शायद ये इस महान पद पर पहुँच भी न सकते। हमारे इतिहास के पृष्ठ के पृष्ठ ऐसे उदाहरणों से भरे पड़े हैं।

हमारे ग्रन्थों में सत्सङ्ग का अच्छा गुणगान मिलता है। महाराजा भर्तृहरि जी ने कहा है कि—अरे! और तुम्हें चाहे जो पसन्द हो, मगर मेरा तो यह दृढ़ विश्वास है:—

वरं पर्वतदुर्गेषु भ्रान्तं वनचरैः सह।
न मूर्खजन सम्पर्कः सुरेन्द्रभवनेष्वपि॥
—नीतिशतक॥

जनाब शेख़ सादी साहब ने भी ऐसा ही फ़रमाया है:—

पाए दर ज़ञ्जीर पेशे दोश्ता।
बहके वा बेगानगाँ दर बोस्ताँ॥
—गुलिस्ताँ

किसी ज़माने में अङ्गरेज़ों की गवाही बड़े काम की होती थी। अतः हम एक अङ्गरेज़ सज्जन की भी गवाही के लिए हाज़िर करते हैं:—

The company of fools may at first make us smile, but at last never fails of rendering us melancholy.
—Goldsmith

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

अर्थात्—"मूर्खों की सङ्गति आरम्भ में यदि हमें हँसा भी दे तो अन्त में वह हमें ग़मगीन बनाए बिना न रहेगी।"

बाइबिल में लिखा है :—

He that walketh with wise men shall be wise; but a companion of fools shall be destroyed.

जो बुद्धिमानों की सङ्गति करता है, वह निश्चय ही बुद्धिमान हो जायगा, किन्तु मूर्खों के साथ रहने वाला अवश्य ही नष्ट होता है।

ऊपर जितने महापुरुषों के 'स्वर्णवाक्य' उद्धृत किए गए हैं उनमें से एक ने भी यह नहीं कहा कि मूर्ख पुरुष की सङ्गति से मूर्ख पुरुष नष्ट होता है—स्त्री नहीं। बल्कि उक्त महानुभावों का कथन स्त्री-पुरुष दोनों जातियों पर बराबर—एक रूप से लागू है। अतः मूर्ख-सङ्ग सर्वथा परित्याज्य है। अब विचारणीय बात यह है कि यदि हमारी चिरसङ्गिनी भार्या मूर्ख हुई तो फिर हमारे सर्वनाश में क्या विलम्ब है?

इस संसार में जितनी वस्तुएँ हैं उनमें से बहुत सी हमारे व्यवहार में भी आती हैं। किन्तु विद्या-चक्षु के बिना इन चर्म-चक्षुओं के द्वारा हम उनका यथार्थ रूप नहीं देख सकते।

काग़ज़ को ही लीजिए। सोना-चाँदी के द्वारा कुछ इसका निर्माण नहीं होता, बल्कि उन फटे-पुराने चिथड़ों-लत्तों से होता है, जिन्हें आप अपने घरों से बाहर अनावश्यक समझ कर फेंक देते हैं! क्या यह काम विद्या का नहीं है? फिर यह कैसे कहा जा सकता है कि ऐसी "कल्पलतेव विद्या" स्त्री-जाति को बिगाड़ देगी? पर हाँ, स्त्रियों के अपढ़ रहने से हमारी हानि हो सकती है, होती भी है। मान लीजिए किसी का बच्चा बीमार है। उस रुग्ण बच्चे के लिए डॉक्टर साहब ने दवा भेजी है। दुर्भाग्यवश दवा ऐसी जगह रक्खी गई जहाँ पहले से टिञ्चर आइडिन की एक शीशी रक्खी है। इस दशा में अगर बच्चे की माँ अपढ़ हुई, तो दवा के बदले बच्चे को टिञ्चर पिला देने में उसे कितनी देर लगेगी? इसी प्रकार की, या इससे मिलती-जुलती घटनाएँ अनेक बार देखी गई हैं।

स्त्री-शिक्षा के शत्रुओं के अनेक बेसिर-पैर के तर्कों में से एक तर्क यह भी है कि "स्त्रियाँ लिख-पढ़ कर बिगड़ जाती हैं।" बिगड़ जाती होंगी! मगर हम नहीं समझते कि कैसे बिगड़ जाती हैं? विद्या का काम सुधारने का है, बिगाड़ने का नहीं। यदि फिर भी वे बिगड़ जायँ तो इसमें विद्या का क्या अपराध है और किस अपराध से उस निर्दोषी को स्त्री-हृदय से निर्वासित करने का दण्ड दिया जाय? यदि इस प्रकार की अर्थहीन बातें विचारणीय हो सकती हैं तो यही बात कहने और मानने में किसी को आपत्ति क्यों हो सकती है कि अङ्गरेज़ों की तरह शस्त्र रखने की स्वाधीनता पाने से भारतीय

अपना गला आप काट लेंगे?

ये दलीलें थोथी हैं। इनसे कुछ बनता-बिगड़ता नहीं। अमृत का गुण यदि जीवनाश हो तो उसे अमृत कहे कौन? जो लोग कहते हैं कि स्त्रियाँ पढ़-लिख कर बिगड़ जायँगी, उनसे हमें कहने दीजिए कि वे जानते ही नहीं कि "लिखना-पढ़ना" कहते किसे हैं? उन्होंने केवल "लिखना-पढ़ना" भर ही सुन रक्खा है।

केवल 'वर्णमाला' या गन्दे-गन्दे उपन्यासों को पढ़ लेना "लिखना-पढ़ना" नहीं कहा जाता। हाँ, यह हम ज़रूर मानते हैं कि न पढ़ने की अपेक्षा कम पढ़ना 'कोढ़ में खाज' का काम करता है। क्योंकि कम पढ़ी हुई स्त्रियाँ अच्छे-अच्छे ग्रन्थ न पढ़ ही सकती हैं, न समझ ही सकती हैं और पढ़ने का रोग लग जाने से वे बिना कुछ पढ़े-लिखे रह भी नहीं सकतीं। तब, वे मन लगने और समझ में आने वाली 'ग़ज़ल' और उपन्यास की पुस्तकें पढ़ने लगती हैं। यह स्पष्ट है कि गन्दे उपन्यासों के पढ़ने से चित्त वृत्ति अवश्य कलुषित हो जाती है। अगर हम यह मान लें कि "पढ़-लिख कर स्त्रियाँ बिगड़ जाती हैं" तो स्त्री-शिक्षा के विरोधियों को इस बात का प्रमाण देना होगा कि बेपढ़ी स्त्रियाँ ख़ूब सुथरी-सजाई हुई होती हैं।

इस खींचतान में हमारी दशा ठीक राजा त्रिशङ्कु की सी हो रही है, जो न स्वर्ग में हैं न पृथ्वी पर; बल्कि आकाश में लटके हैं। सो भी कैसे? सिर नीचे और पैर ऊपर—उलटे!

संसार की गति-विधि को देखते हुए इस समय हमें 'स्त्री-शिक्षा' पर गम्भीर विचार करना चाहिए। यह शताब्दी उन्नति का युग है। दुनिया भर की सारी जातियाँ इस समय उन्नति की दौड़ में एक-दूसरे से

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

आगे निकल जाने के विचार से स्पर्धापूर्वक दौड़ रही हैं। किन्तु कहते दुःख होता है कि इस

घुड़दौड़

में हमारा देश बहुत पीछे, यानी घोंघे की चाल से गणेश जी का नाम स्मरण करता हुआ दौड़ रहा है। साथ ही मज़ा यह कि इसने जो कुछ अपनी उन्नति भी की है वह भी एकाङ्गी। दूसरे देशों में सर्वाङ्गीण उन्नति होती है। वहाँ ऐसा क्यों होता है। इस प्रश्न का सबसे बढ़िया और सबसे छोटा उत्तर है :—

'स्त्री-शिक्षा' के अभाव के कारण।

तुला के दोनों पलड़ों में जब दो वस्तुएँ बराबर-बराबर भार की रक्खी जायँगी, तब दोनों पलड़े बराबर उठेंगे। यही दशा देश की उन्नति की है। स्त्री और पुरुष दोनों जातियाँ जब बराबर उन्नति करेंगी तब देश की सर्वाङ्गीण उन्नति होगी। हमारे देश में केवल पुरुष जाति ही उन्नति की चरम सीमा तक पहुँच जाती है। स्त्री-जाति ज्यों की त्यों बैठी झख मारती रहती है। यही कारण है कि हमारी उन्नति पूरी नहीं, अधूरी हो रही है। कवि के शब्दों में "हमारा भारत लोकालोक पर्वत की तरह अर्धालोकित तथा अर्धान्धकार परिवेष्टित है।"

हमारे यहाँ ऐसे उदाहरणों की कमी नहीं है कि भारतीय प्रोफ़ेसर साहब या साहित्याचार्य, महा-महोपाध्याय महोदय की स्त्रियों को लिखना-पढ़ना तो दूर रहा, हस्ताक्षर तक करना नहीं आता। प्रोफ़ेसर साहब तो कॉलेज के व्याख्यान-मञ्च पर खड़े होकर ललकार रहे हैं कि—चन्द्रमा, पृथ्वी से कई सहस्र गुना बड़ा एक हिमाच्छन्न लोक है। इधर आपकी प्रोफ़ेसराइन महोदया अपने बच्चे को "चाँद" मामू कह कर चन्द्रमा का परि-चय करा रही हैं। हाय रे हतभागा देश !!!

यह बात अत्यन्त महत्वपूर्ण तथा विवेचनीय है कि स्त्रियों के अपढ़ होने से ही हमारी राजनैतिक स्वाधीनता में भी बड़ी बाधा उपस्थित हो रही है। क्योंकि स्त्रियाँ अपढ़ और विवेकशून्य होने से अपनी बुराइयों के कारण कायर और नालायक़ बच्चे उत्पन्न करती हैं जो आगे चल कर हमारी राह के काँटे हो जाते हैं। अङ्गरेज़ विद्वान की राय है कि—

Two things are closely joined together, education, the training and development women; and the greatness of a Nation those women were the Indian mothers, and Rishies were born; and now out of mothers cowards and social pigmies come Cause and effect? Still in our power to change

मतलब यह है कि दो बातों का एक दूसरे घनिष्ट सम्बन्ध है—(१) स्त्रियों की शिक्षा, धार्मिक तथा शारीरिक उन्नति और (२) स्त्रियों (राष्ट्र) की उन्नति। जब भारत में योग्य माताएँ तब वे रत्नगर्भा होकर योद्धा और ऋषित्व उत्पन्न थीं। पर अब मूर्ख बाल-माताओं से प्रायः कायर कलङ्कित पुत्र उत्पन्न होते हैं। कारण और कार्य कितना घनिष्ट सम्बन्ध है? कारणों को सुधार कर सिद्ध करना अब भी हमारे हाथ है।

इङ्गलैण्ड की माता अपने बच्चे को सुलाते "सुत रे बबुआ" न कह कर ऐसी बात कहती है प्रत्येक अक्षर राष्ट्रीयता के उन्मादकारी, सरावोर रहता है। वे कहती हैं :—

रूल ब्रिटेनिया ! रूल दि वेव्ज।
ब्रिटेन्स शैल नेवर बी स्लेव्ज॥

"ऐ बरतानिया ! तू शासन कर। समुद्र की पर शासन कर। बरतानिया के बच्चे कभी गुलाम हो सकते।"

कैसे जोशीले वाक्य हैं !! जिस मनुष्य के उसके शैशवकाल से ही ऐसा विद्युच्छक्ति-सम्पन्न मृत पड़ेगा वह देश पर जान देने वाला और का अनन्योपासक होकर स्वाधीनता देवी की सर्वस्व निछावर कर देने वाला क्यों न होगा!

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

अभागा

[श्री० जनार्दनप्रसाद झा 'द्विज', बी० ए०]

दिवाकर के माँ-बाप उसी समय मर चुके थे जब वह पाँच या साढ़े पाँच साल का रहा होगा। तभी से वह अपने बड़े चाचा पं० भृगुनाथ चौबे का आश्रित था। वही उसे खाना-कपड़ा देते थे, उन्हीं की कृपा से वह लिख-पढ़ भी रहा था। अब उसकी अवस्था लगभग सोलह साल की थी। इन्ट्रेन्स में पढ़ रहा था। एक ओर वह अपनी परीक्षा की तैयारी में व्यस्त था, दूसरी ओर उसके चाचा उसे ब्याह करने को तङ्ग कर रहे थे। सब तरह से समझा-बुझा कर जब वे हार गए तब एक दिन उन्होंने डाँट कर उससे पूछा—बताओ, तुम मेरी आज्ञा का पालन करते हो या नहीं ?

"मैं अभी ब्याह नहीं करूँगा चाचा जी!"—लड़के ने अपने सजल स्वर में एक अद्भुत विनम्रता और दृढ़ता का उत्तर दिया।

"क्यों ?"

"मुझे अभी पढ़ने दीजिए।"

"ब्याह करके लोग नहीं पढ़ सकते ?"

"मैं डर रहा हूँ, शायद न पढ़ सकूँ !"

"क्यों, तुममें कौन सी ख़ास बात है ?"

"न खाने को अन्न है, न पहनने को कपड़ा, न रहने को घर।"

"तुम्हें खाना-कपड़ा नहीं मिलता ? तुम जङ्गलों में रहते हो ?"

"अभी तक तो किसी चीज़ की कमी नहीं है, पर अब एक से दो हो जाऊँगा तब हो जायगी। आख़िर आप कब तक हमारा भार सम्हाले रहेंगे ?"

दिवाकर की इन बातों ने चौबे जी के कलेजे पर चोट की। वे तिलमिला कर बोले—तो तुम मुझे सब तरह से पराया समझते हो, क्यों ?

"अपने-पराए की बात नहीं है चाचा जी !"—लड़के ने विनम्र भाव से उत्तर दिया—"यह तो दुनिया की रीति है। आदमी कमाने-खाने लायक़ हो तो वह पराए का भी अपना हो जाता है, नहीं तो अपने का भी पराया। अभी आपको केवल मेरा ख़र्च सम्हालना पड़ता है, इसी में आप तबाह रहते हैं। ब्याह के बाद आपका ख़र्च बढ़ जायगा, तबाही भी बढ़ जायगी। इसलिए जब तक मैं दो पैसे कमाने लायक़ नहीं हो जाता, ब्याह नहीं कर सकता।"

"यही तुम्हारा निश्चय है ?"

"जी हाँ।"

"तुमसे ऐसी आशा नहीं थी।"

"मुझे भी आशा नहीं थी कि यह दुखद प्रसङ्ग आ खड़ा होगा।"

"मैं कन्या-पक्ष वालों को वचन दे चुका हूँ।"

"इस ग़लती की ज़िम्मेदारी मेरे ऊपर नहीं है।"

"तुम्हारे ऊपर अपना अधिकार समझ कर ही मैंने ऐसा किया, नहीं जानता था कि इस तरह सिर नीचा करना पड़ेगा।"

"अधिकार मेरे ऊपर आपका अवश्य है, पर इसका यह अर्थ नहीं है कि आप जब चाहें मेरी इच्छा के विरुद्ध मुझे बेच डालें।"

"तो मैं तुम्हें बेच रहा हूँ ?"

"जी हाँ, थोड़े से रुपयों के लोभ में पड़ कर, मेरी इच्छा के विरुद्ध, मुझे ब्याह करने को विवश करना, बेच डालना नहीं तो और है क्या ?"

"तुम इस तरह मेरा अपमान करोगे ?"

"अगर यह अपमान है तो इसे आप स्वयं मोल ले रहे हैं।"

"जानता कि इतने बड़े कृतघ्न निकलोगे तो बचपन में ही नमक चटा कर मार डालता।"

"अब भी कुछ नहीं बिगड़ा है, विष पिला कर मार डालिए।"

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

"नहीं मालूम था, इस तरह धोखा दोगे।"

"अब से सतर्क हो जाइए।"

"अच्छी बात है, अब तुम मेरे सामने से हट जाओ।"

दिवाकर बिना कुछ बोले ही वहाँ से जाने लगा। चौबे जी ने कहा—अकड़ कर जा कहाँ रहे हो? मुझे तुमसे कुछ और भी कहना है।

"कहिए"—कह कर लड़का फिर उनके सामने आ खड़ा हुआ।

"अब मैं तुम्हें अपने घर में नहीं रख सकूँगा।"

"क्यों?"

"साँप को दूध पिलाने की मूर्खता अब नहीं करूँगा।"

"यही आपका अपनापन है?"

"हाँ, जो मेरा इतना अनादर कर सकता है, जिसमें इतनी कृतघ्नता भरी हुई है, उसे अपना बना कर रखने की क्षमता मुझमें नहीं है।"

"तो क्या सचमुच आप मुझे घर से निकाल रहे हैं?"

"अगर तुम मेरी आज्ञा नहीं मानते तो यही समझो।"

"समझूँ ही या सचमुच घर छोड़ना पड़ेगा?"

"मैं जो कहता हूँ वही करता हूँ।"

"तो शायद आप ही से मुझमें भी यह गुण आ गया है।"

"अच्छी बात है, देखता हूँ कब तक इस अकड़ में रहते हो।"

"जब तक भगवान की इच्छा।"

"जाओ, अपने रहने को जगह ढूँढ़ो।"

"अभी चला जाऊँ?"

"अभी तुरन्त; मुझे तुम्हारी सूरत से नफ़रत हो रही है।"

लड़के की आँखें डबडबा आईं। उसने करुणाभरी आँखों से अपने चाचा की ओर देखा। किन्तु रोष की चिनगारियों से भरी हुई उनकी आँखों ने उसे ममता की भीख न दी। उसकी नीरव याचना के उत्तर में चौबे जी ने कठोर स्वर में कहा—अब रोने-धोने की आवश्यकता नहीं, आप अपनी राह लीजिए।

लड़का उसी जगह बैठ गया और फूट-फूट कर रोने लगा! परिस्थिति उसे आज इतना असहाय बना देगी, वह बात ही बात में सम्बल-हीन बटोही बन जायगा, इसकी कल्पना भी उसने कभी न की थी।

चौबे जी ने उसका हाथ पकड़ लिया और कहा—चुपचाप उठ कर चले जाओ सामने से, नहीं तो घसीट कर अपने अहाते के बाहर फेंक दूँगा। तुम्हारे जैसे नमक-हरामों के आँसू का मेरे ऊपर कोई असर नहीं पड़ सकता।

दिवाकर उनके पैरों पड़ कर रोता हुआ बोला—मुझे क्षमा कीजिए चाचा जी!

"क्षमा की ऐसी-तैसी, अब मैं तुम्हें अपने घर में एक घड़ी भी नहीं रहने दूँगा। उठो, भागो यहाँ से।"

"मैं आप ही का पाला-पोसा एक अनाथ बालक हूँ"—दिवाकर ने बड़ी विनती के साथ कहा—"मुझे राह का भिखारी न बनाइए।"

"अपनी राह तुमने स्वयं तैयार की है, अब उसी पर चलना होगा"

"उस पर न चल सकूँगा चाचा जी!"

"मैं अब कुछ नहीं कर सकता।"

"मुझे क्षमा कर दीजिए।"

"मेरी बात मानते हो?"

"मेरी प्रार्थना पर ध्यान दीजिए।"

"पूछता हूँ, जो कहूँगा वह करोगे न?"

"आपके लिए आग में कूदने को तैयार हूँ, पर अभी मुझे ब्याह करने को विवश न कीजिए।"

"'प्रार्थना' और 'क्षमा' शब्दों की आड़ में छिप कर तुम मेरे साथ दिल्लगी कर रहे हो? मुझे उल्लू बना रहे हो? मेरी बात नहीं रखते तो मैं भी तुम्हें अपने घर में नहीं रहने दूँगा। जाओ, मेरे सामने से दूर हटो।"

दिवाकर का हृदय स्वाभिमान के धक्कों से प्रकम्पित हो उठा। वह उठ कर खड़ा हो गया और बोला—इस घर में मेरे बाप का कोई हिस्सा नहीं है चाचा जी!

"जी हाँ, है क्यों नहीं?"—चौबे जी ने क्रोध-कम्पित स्वर में व्यंग्य का विष भर कर कहा—"आपके बाप तो इतने बड़े पुरुषार्थी थे कि अपने उद्योग-धन्धों से उपार्जन करके मेरे ऊपर पूरे पाँच हज़ार का ऋण छोड़ गए हैं!"

"मैं जो पूछ रहा हूँ उसका यही उत्तर है?"

"नहीं, उसका असली उत्तर यह है"—कह कर चौबे जी ने उसे ऐसी धौल जमाई कि लड़का चीख कर

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

धरती पर गिर पड़ा। तरह-तरह की गालियाँ दे-देकर वे उससे पूछने लगे—"बोल, और भी बाप की कमाई का हिस्सा लेगा ?"

दिवाकर कुछ न बोला। उसी तरह धरती पर पड़ा-पड़ा सिसकता रहा।

चौबे जी ने फिर डपट कर पूछा—उठते हो या दो-चार लात और खाओगे ?

इस बार दिवाकर उठ कर खड़ा हो गया और चुप-चाप एक ओर चल दिया।

२

अपमान की ऐसी दारुण चोट दिवाकर को आज तक नहीं लगी थी। वह इसकी असह्य वेदना से व्याकुल हो उठा। चाचा के घर से निकल कर वह सीधे गङ्गा-तट पर पहुँचा। उसे अपने जीवन से घृणा हो आई। उसने गङ्गा के गर्भ में विलीन हो जाने का निश्चय कर लिया था। सहसा उसने देखा, उसका प्राणप्रिय मित्र गोपाल उसी की ओर लपका आ रहा है। उसका मृत्यु-सङ्कल्प ढीला पड़ गया। बिना प्रयास ही उसने अपने को गङ्गा में कूदने से रोक लिया। मृत्यु की कामना में जितना सुख है, अपने प्रेमपात्र को छोड़ कर मरने में उतना ही दुख। संसार में जितने भी असह्य दुख हैं, यह दुख उनकी अचूक दवा है। हृदय में इस दुख का प्रादुर्भाव होते ही मनुष्य अपने जीवन की समस्त यातनाओं को भूल कर एक बार फिर मृत्यु के मुख से बाहर निकलने की इच्छा करता है। इसी इच्छा का नाम माया है, और यह माया है ममत्व की सहोदरा। गोपाल के लिए दिवाकर के हृदय में अगाध ममता थी। इसलिए उस समय वह अपने को माया से मुक्त न कर सका। गङ्गा में डूबने के बदले वह अपने मित्र की छाती से चिपक गया और बच्चों की तरह फूट-फूट कर रोने लगा।

गोपाल इस रोने का रहस्य नहीं समझ सका। उसने व्याकुल होकर पूछा—बात क्या है दीबू ? इस समय यहाँ कैसे आए ?

"और तुम कैसे पहुँच गए गोपू ?"—दिवाकर ने अपना रोना बन्द करके पूछा।

"मैं तो बाबू जी के लिए गङ्गा-जल लेने आया था। तुम्हें दूर ही से देखा, तुम स्थिर भाव से तट पर खड़े होकर गङ्गा जी को देख रहे थे। जी में आया, ज़रा मिल लूँ और पूछूँ कि इस तरह उदास भाव से क्यों खड़े हो।"

"न आए होते तो फिर भेंट भी न होती।"

"क्यों ? अरे ! सचमुच तुम्हें हो क्या गया है दीबू ? अपने चेहरे की हालत तुमने कैसी बना रक्खी है ! चाचा जी से कुछ कहा-सुनी हो गई है क्या ?"

"अब मैं जीवित नहीं रहना चाहता।"

"तो क्या तुम गङ्गा जी में डूब कर मरने आए थे ?"

"हाँ।"

"यह तो बड़ी भारी कायरता है।"

"हो सकती है, पर मेरे लिए और कोई राह नहीं रह गई।"

"आख़िर इस वैराग्य का कारण ?"

"परावलम्बन और पेट।"

"मालूम होता है, चौबे जी से लड़ कर आए हो। ब्याह के बारे में कुछ बखेड़ा हुआ है क्या ?"

"उन्होंने मुझे पीट कर अपने घर से निकाल दिया।"

"क्यों ?"

"क्योंकि मैं उनकी इच्छा के अनुसार ब्याह नहीं कर सकता।"

"इसी बात पर घर से निकाल दिया ?"

"चुपचाप उठ कर चल न देता तो शायद घसीट कर सड़क पर फेंक देते।"

"तो इसके लिए डूब मरने की कौन सी ज़रूरत थी ?"

"ज़रूरत थी इस कष्टमय जीवन से छुटकारा पाने की।"

"तुम इतने दुर्बल विचार रखते हो ? आत्म-हत्या तो स्वयं एक पाप है। पाप से भी किसी को मोक्ष मिला है ? जीवन में कष्टों की अधिकता न हो तो इसकी सारी महत्ता ही चली जाय ! इतनी जल्दी घबड़ा उठे ? एक बार मुझसे मिलने की भी ज़रूरत नहीं समझी ?"

"मिलने की लालसा उमड़ रही थी, पर मिल न सका गोपू !"

"तो यह कहो कि भगवान ही ने मुझे इस समय यहाँ भेजा।"

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

"मैं भी यही समझता हूँ, पर थोड़ी सी भी देर हो जाती तो मुझे न पाते।"

"आह! तुम नहीं जानते, यह कितना बड़ा अनर्थ है!"

"इस तरह का मरना?"

"हाँ!"

"क्यों?"

"मृत्यु जीवन की अपेक्षा कहीं अधिक पवित्र और सुन्दर है। छोटी-छोटी बातों से ऊब कर उसका आह्वान करना उचित नहीं। जीवन-समर के प्राङ्गण में वीरता-पूर्वक लड़ते हुए मृत्यु की घाटी तक पहुँचना जितना गौरवपूर्ण, सुखद और मोक्ष-प्रदायक है, परिस्थिति के धक्कों से विचलित होकर, यातनाओं के दंशन से तिलमिला कर आत्म-हत्या कर लेना उतना ही गर्हित, दुखद और बन्धन-पूर्ण! इसीलिए जो आत्म-हत्या करते हैं वे अपना भी सर्वनाश करते हैं और दूसरों का भी!"

"तुम मेरी स्थिति में होते तो मैं भी तुमसे इसी तरह की बातें कहता।"

गोपाल की वाणी सहसा मूक हो गई। वह निस्तब्ध होकर दिवाकर की ओर ताकने लगा। दिवाकर की आँखें सजल थीं, उसके होंठ फड़क रहे थे। उसने थोड़ी देर के बाद फिर कहा—कल तक मैं भी आत्म-हत्या को पाप ही समझ रहा था; पर आज, जबकि मेरे जीवन में कष्टों के सिवा और कुछ रह ही नहीं गया है, जबकि मैं एक आश्रयहीन, अवलम्ब-हीन, सम्बल-हीन भिखारी बन कर घूम रहा हूँ, वही मेरे लिए सर्वश्रेष्ठ पुण्य है। मेरे इस पुण्य की 'फ़िलॉसफ़ी' मुझे छोड़ कर और कोई समझ नहीं सकता।

गोपाल की आँखों में आँसू उमड़ आए। उसने अपने व्यथित मित्र का हाथ पकड़ कर स्नेह-विगलित स्वर में कहा—मुझे क्षमा करना दीबू! मैं सचमुच तुम्हारी इस 'फ़िलॉसफ़ी' को समझने की क्षमता नहीं रखता। मैं मानता हूँ कि तुम्हारी परिस्थिति में पड़ कर मैं भी वही करता जो तुम करने जा रहे थे। किन्तु सत्य सदैव सत्य ही है, उसका रूपान्तर कभी सम्भव नहीं। मैंने तुम्हारे सामने कोई नई बात नहीं रक्खी है—यह मेरा उपदेश नहीं है। जीवन को महत्वपूर्ण बनाने के लिए इस प्रकार के प्रौढ़ विचार नितान्त आवश्यक हैं। इन्हें तुम भी जानते हो। इस समय बहुत ही अधिक विचलित हो उठे हो, इसी से ये बातें तुम्हें अच्छी नहीं लग रही हैं। फिर कभी इन पर विचार करना। इस समय यहाँ से चलो।

"कहाँ?"

"घर।"

"घर होता तो इस समय यहाँ आने की क्या ज़रूरत थी?"

"जिस घर में मैं रहता हूँ, वह क्या तुम्हारा नहीं है?"

"नहीं, तुम्हें कष्ट न दूँगा।"

"सच?"

"मुझसे यह न हो सकेगा।"

"इसका अर्थ यह है कि तुम मुझे ख़ूब कष्ट दोगे, ख़ूब रुलाओगे, ख़ूब सताओगे।"

"मेरी विपदाओं के साथ मुझे अकेले छोड़ दो।"

"तुम्हारे सुख में भी मेरा आधा हिस्सा है और दुख में भी। चाहे जैसे हो तुम्हें मेरे साथ चलना पड़ेगा। न चलोगे तो मैं भी तुम्हारा साथ न छोड़ूँगा।"

दिवाकर चकित होकर अपने मित्र का मुँह तक रहा था और गोपाल आँखों में आँसू, वाणी में विनय और हृदय में हुलास भर कर उसका हाथ पकड़े खड़ा था! वह बार-बार कह रहा था—मेरी इतनी सी प्रार्थना भी न स्वीकार करोगे?

दिवाकर ने गद्गद स्वर में कहा—दुर्भाग्य भी एक संक्रामक रोग है—मुझे तुम अपनी सुन्दर दुनिया से दूर ही रहने दो।

"जो अपना है, उसके दुर्भाग्य में हिस्सा बँटाना स्वयं ही एक सौभाग्य है—मुझे तुम यह सौभाग्य-भिक्षा देकर मेरी सूनी दुनिया को वैभवपूर्ण कर दो। चलो, तुम्हें मेरी ही क़सम।"

प्रतिरोध की धारा रुक गई। दिवाकर का हाथ पकड़े गोपाल अपने घर की ओर चला।

३

गोपाल के पिता पं० शोभाराम पाण्डेय ने अपने घर में आए हुए इस अतिथि के मुँह से जब दो-तीन दिन बीत जाने पर भी जाने का नाम न सुना तब उन्होंने अपने पुत्र से पूछा—इसे कब तक यहाँ रक्खे रहोगे?

"इसे तो यहाँ रखने ही के लिए मैं लिवा लाया हूँ।"

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

"आखिर इससे फ़ायदा ?"

"बच्चों को पढ़ाया करेगा, आप उसे दोनों वक्त भोजन और कुछ रुपए दे दिया कीजिएगा। मैं समझता हूँ, इससे आप भी घाटे में नहीं रहेंगे और इस बेचारे का भी काम चल जायगा। बच्चों को पढ़ाने के लिए एक आदमी तो रखना ही है, इसी को रख लीजिए।"

"हूँ"—कह कर पाण्डेय जी ने एक बेमन की स्वीकृति दे दी और थोड़ी देर तक अपनी मुखमुद्रा को गम्भीर बनाए रखने के बाद गोपाल से पूछा—यह घर से क्यों निकल भागा है ? स्वभाव का खोटा तो नहीं है ?

गोपाल को यह प्रश्न अच्छा नहीं लगा। ग्लानि और रोष के भावों को दबा कर उसने उत्तर दिया—अपने मित्र की प्रशंसा करना स्वयं अपनी ही प्रशंसा करना है। इसलिए इसके स्वभाव के बारे में तो मैं कुछ नहीं कहना चाहता। हाँ, इतनी प्रार्थना अवश्य है कि इसे भी आप अपने ही पुत्र की तरह विश्वासपूर्ण दृष्टि से देखें। वे माँ-बाप का असहाय लड़का है। घर में इसे अपना समझने वाला कोई नहीं है। इसके चाचा ने इसको घर से निकाल दिया है।

"अगर ऐसी बात है, तो फिर रहने दो"—पाण्डेय जी ने कुछ सहानुभूति का भाव प्रकट करते हुए कहा—"मुझे तो एक आदमी चाहिए ही, इसी को रख लेता हूँ।"

उसी घर में धीरे-धीरे एक वर्ष समाप्त होगया। अब दिवाकर और गोपाल कॉलेज में पढ़ने लगे। दिन बड़े आनन्द से बीते जा रहे थे। उस सुखी परिवार में हिल-मिल कर दिवाकर, जैसे अपना सारा अभाव भूल गया। गोपाल का तो कहना ही क्या, उसकी छोटी बहिन सुभद्रा भी उसे बहुत मानने लग गई थी। पहले ही दिन दिवाकर को देख कर उसके हृदय में जिस नूतन उल्लास का आविर्भाव हुआ था अब वह धीरे-धीरे उसी की अभिव्यक्ति कर रही थी। उसकी इस अभिव्यक्ति ने दिवाकर को मोह लिया था, ठीक उसी तरह जिस तरह अपने सुरभित उच्छ्वासों से सुमन भौंरे को मोह लेता है। प्रणय की उल्लास-भूमि अपने गर्भ में एक गम्भीर वेदना छिपाए रहती है—वह वेदना, जिसमें तड़पने की हविस रखते हुए भी कोई तड़प नहीं सकता, रोने की चाह रखते हुए भी रो नहीं पाता ! मनुष्य उदासीन द्रष्टा की तरह जब तक उस भूमि का सौन्दर्य दूर से निहारता रहता है तभी तक सुखी है, जहाँ उसने उसमें प्रवेश किया कि विश्व की समस्त यातनाएँ उससे ब्याह करने को अधीर हो उठती हैं—उसका सारा सुख, दुख के रूप में बदल जाता है। दिवाकर और सुभद्रा के बीच जब तक निस्पृह भाव से पारस्परिक उल्लास और हर्ष का आदान-प्रदान होता रहा, तब तक तो दोनों ही सुखी रहे। पर जब उनके हृदय में एक-दूसरे को पूर्ण रूप से अपना लेने की लालसा उमड़ आई तब उनकी सारी शान्ति, सारी स्थिरता, जाती रही—उनका आनन्द-कुसुम वासना के उत्ताप से झुलस उठा !

उनके पारस्परिक हेल-मेल में, बातचीत में बहुत अधिक स्वच्छन्दता आ गई थी। गोपाल इसके विरुद्ध नहीं था, पर उसके पिता इसे बहुत ही बुरा समझते थे। दोनों की गति-विधि पर वे सदैव अपनी सतर्क दृष्टि रखते थे।

एक दिन दिवाकर कॉलेज से कुछ पहले ही चला आया। आते ही आराम-कुर्सी पर लेट रहा। सुभद्रा ने झाँक कर देखा, उस समय वहाँ और कोई नहीं था। वह उसके पास जा खड़ी हुई और स्नेह-स्निग्ध स्वर में बोली—आज भैया कहाँ रह गए ?

"अभी उनका क्लास हो रहा है"—कह कर दिवाकर ने बड़ी बेचैनी के साथ करवट बदल ली।

सुभद्रा ने फिर कोमल स्वर में पूछा—जलपान ले आऊँ ?

दिवाकर ने इसके उत्तर में मुग्ध भाव से एक बार उसकी ओर देख कर आह खींचते हुए आँखें बन्द कर लीं।

इस आह के धक्के से सुभद्रा का अन्तस्तल डगमगा उठा। उसने कुछ और पास पहुँच कर काँपती हुई वाणी में पूछा—जी अच्छा नहीं है क्या ?

दिवाकर ने बेचैनी के साथ गर्दन हिला कर कहा—नहीं !

"कहीं दर्द हो रहा है ?"

"सिर में।"

"दवा ले आऊँ ?"

"कोई ठण्डा तेल नहीं है ?"

इसके उत्तर में सुभद्रा दौड़ कर अन्दर से चमेली का तेल ले आई। दिवाकर के सिर का दर्द और भी बढ़

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

गया। उसने रूमाल से सिर बाँध कर फिर आँखें बन्द कर लीं।

सुभद्रा ने घबरा कर पूछा—दर्द बढ़ रहा है क्या?

दिवाकर ने दर्द-भरी आँखों की भाषा में "हाँ" कह कर फिर एक आह खींची।

सुभद्रा ने पूछा—इसी पर लेटे रहोगे? चारपाई पर जाकर आराम से लेटो न? बिछा दूँ?

"उफ़! बड़ी पीड़ा है"—कह कर दिवाकर ने दोनों हाथों से अपना माथा पकड़ लिया।

पास ही चारपाई पड़ी थी। सुभद्रा ने चटपट बिस्तरा बिछा कर कहा—चलो, सिर में तेल मल दूँ।

दिवाकर चारपाई पर जाकर लेट रहा।

सुभद्रा ने उसके सिर का रूमाल खोलते हुए कहा—माथा तो बहुत गरम हो रहा है. कहीं ज्वर न आ जाय!

"देह में भी दर्द हो रहा है"—दिवाकर ने बड़े कष्ट से कहा।

तेल लगा कर सुभद्रा उसका सिर दबाने लगी। दिवाकर की आँखें छलछला आईं।

"यह क्या?"

"कुछ तो नहीं।"

"रोने क्यों लगे?"

"कह नहीं सकता।"

"पागल तो नहीं हो गए हो?"

"न हुआ हूँ तो होने में अब देर भी नहीं है। आह! मैं कैसा अभागा हूँ!"

"तुम्हें हो क्या गया है?"

"बता नहीं सकता सुभो!"—उसने कातर स्वर में कहा—"अब तुम जाओ, मुझे अकेले छोड़ दो।"

"कुछ देर और सर दबा दूँ, दर्द दूर हो जायगा।"

"नहीं, रहने दो।"

"क्यों?"

"मुझे तुमसे सेवा करवाने का कोई अधिकार नहीं है। मैं यह पाप कर रहा हूँ, मुझे क्षमा करो।"

सुभद्रा की आँखों से आँसू की बूँदें बरसने लगीं। वह उसी तरह चुपचाप उसका सर दबाती रही। वेदना से तपे हुए मस्तक पर उन बूँदों की चोट खाकर दिवाकर तड़प उठा। उसने सुभद्रा का हाथ पकड़ लिया और कहा—सुभो! तुम यह क्या कर रही हो?

सुभो का हृदय उमड़ रहा था, आँखें बरस रही थीं, शरीर काँप रहा था, वाणी स्तब्ध थी!

"सुभो! अब तुम अन्दर जाओ, मुझे चुपचाप सोने दो।"

सुभद्रा ने करुणा भरे स्वर में पूछा—आज तुम मुझसे इतने नाराज़ क्यों हो?

"ऐसा समझ कर तुम मुझ पर अन्याय कर रही हो सुभो!"

"फिर मेरा यह काम तुम्हें पाप-सा क्यों लग रहा है?"

"इसलिए कि मैं इसके योग्य नहीं हूँ, इसका अधिकारी नहीं हूँ।"

"यह तुमसे किसने कहा?"

"मैं स्वयं समझता हूँ।"

"ऐसा समझ कर तुम मेरे ऊपर अन्याय कर रहे हो।"

"आख़िर तुम्हारी इस सेवा का, तुम्हारे इस प्रेम का बदला भी मैं कभी चुका सकूँगा?"

"हाँ।"

"कैसे?"

"मेरे ऊपर अपनी कृपा रख कर, मुझे अपनी दासी समझ कर।"

"मगर सुभो! तुम जानती हो, मुझे इसका भी अधिकार नहीं है।"

सुभद्रा इसके उत्तर में कुछ कहना ही चाहती थी कि इतने में वहाँ गोपाल आ पहुँचा। वह चटपट अपना हाथ छुड़ा कर, घबड़ाए हुए स्वर में, बोली—कुछ पानी कम हुई?

"हाँ, अब तुम जाओ।"

गोपाल ने गम्भीर दृष्टि से एक बार अपनी बहिन की ओर देखा और फिर अपने मित्र के सिर पर हाथ रख कर उससे पूछा—ज्वर आ गया क्या?

सुभद्रा धीरे से खिसक गई।

दिवाकर ने कहा—सर में बहुत दर्द हो रहा था, अब कुछ कम है।

गोपाल ने एक गहरा निश्वास फेंक कर पूछा—कोई और शिकायत तो नहीं है?

"नहीं"—कह कर दिवाकर ने करवट बदल ली।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

"थोड़ी देर तो रहो"—कह कर गोपाल वहाँ से हट गया।

आँगन में जाकर उसने देखा उसके पिता जी सुभद्रा को बुरी तरह डाँट रहे हैं। लड़की धीरे-धीरे सिसक रही थी और वे उसे डपट कर कह रहे थे—अब तुम बच्ची नहीं हो, तुम्हें समझ से काम लेना चाहिए। लिखने-पढ़ने का यह अर्थ नहीं है कि तुम एकदम स्वतन्त्र हो जाओ। कम से कम मुझे तो यह स्वतन्त्रता पसन्द नहीं है।

गोपाल ने पूछा—हुआ क्या?

पं० शोभाराम जी एक बार कड़ी निगाह से अपने पुत्र की ओर देख कर चुपचाप आँगन से बाहर निकल गए। प्रश्न का कोई उत्तर न दिया।

सुभद्रा को एकान्त में ले जाकर गोपाल ने समझाया—बाबू जी इस तरह की स्वतन्त्रता बिल्कुल नहीं पसन्द करते, इसलिए उनकी डाँट-फटकार से घबराने की तो ज़रूरत नहीं है, पर इतना अवश्य ध्यान रखना चाहिए कि किसी वस्तु की अति न हो जाय। जीवन के प्रत्येक कार्य में संयम और साधना की आवश्यकता पड़ती है। जिसमें शान्ति और धैर्य का अभाव है, वह अपनी मर्यादा का पालन नहीं कर सकता। प्रेम मर्यादा का परिपालक है, संहारक नहीं।

"मैं ऐसा कौन सा काम करती हूँ जिससे आप लोगों की मर्यादा भङ्ग हो रही है?"—सुभद्रा ने रुदन-भरे स्वर में पूछा।

गोपाल ने अपनी सहोदरा को प्यारपूर्वक एक हलकी सी चपत लगा कर मुसकुराते हुए कहा—तू है निरी पगली ही। जा, अपना काम देख।

सुभद्रा का हृदय विक्षुब्ध महासागर की तरह विलोड़ित हो उठा। न जाने इस समय उसमें किन-किन भावनाओं की लहरें टकरा रही थीं! सिर झुका कर चुपचाप वह भाई के सामने से हट गई।

४

पं० शोभाराम ने अपने पुत्र से कहा—उसे कह दो, अब यहाँ से चला जाय, नहीं तो ठीक न होगा। मेरे कुल में कलङ्क लगना चाहता है।

"आप उस पर अन्याय कर रहे हैं बाबू जी!"—गोपाल ने बड़ी नम्रता से कहा।

"चाहे जो कुछ भी हो, मैं उसे अब अपने घर में न रहने दूँगा।"

"मगर सुभद्रा उसे प्यार करती है।"

"और तुम्हें इसके लिए कोई शर्म नहीं है?"

"सुभद्रा के हक़ में मैं यही अच्छा समझता हूँ कि उसे अपने मन के लायक़ पति मिल जाय।"

"यह विलायत नहीं है।"

"भारत के लिए यह कलङ्क की बात है कि यहाँ ब्याह के नाम पर बालक-बालिकाओं का सर्वनाश किया जाय।"

"यह तुम्हारे जैसे नास्तिकों का मत है।"

"हो सकता है; पर इस समय ऐसी आस्तिकता हमें नहीं चाहिए जो हमारे जीवन को नारकीय बना दे।"

"ख़ैर, मैं तुमसे बहस नहीं करना चाहता। उसे कह दो, अपनी राह ले।"

"मैं आपके पैरों पड़ता हूँ, उसे आप अपमानित न कीजिए। मैंने निश्चय कर लिया है, उसीको अपना बहनोई बनाऊँगा।"

"मेरे जीते जी ऐसा नहीं हो सकता, उस दरिद्र को मैं अपनी बेटी न दूँगा।"

"उसके साथ वह रानी बन कर रहेगी।"

"मैं उसके ब्याह की बातचीत ठीक कर चुका हूँ। तुम्हारा सपना सफल न हो सकेगा।"

"मेरी प्रार्थना है, आप यह ग़लती न कीजिए।"

"पागलों की तरह बातें मत करो। उस ज़मींदार के लड़के को छोड़ कर मैं एक ऐसे भिखारी को कन्या-दान दूँगा जिसके न घर है न द्वार? मैं अपना दामाद उसे बनाऊँ जो जाति में भी मुझसे कहीं छोटा है?"

"ख़ैर, मैंने अपना कर्त्तव्य-पालन किया"—गोपाल ने क्षुब्ध होकर कहा—"आपकी जो इच्छा हो, कीजिए। पर इसका परिणाम अच्छा न होगा।"

ये बातें आँगन में ज़ोर-ज़ोर से हो रही थीं। बाहर से दिवाकर सब सुन रहा था। वह खड़ा न रह सका। कटे हुए वृक्ष की तरह मूर्च्छित होकर धरती पर गिरने ही वाला था कि गोपाल ने दौड़ कर उसे सम्हालते हुए अपनी छाती से लगा लिया।

होश में आते ही दिवाकर ने कहा—गोपू! अब मुझे जाने दो।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

"कहाँ ?"—गोपाल ने आँखों में आँसू भर कर पूछा।

"चाहे जहाँ भी जाऊँ, यहाँ तो अब पल भर भी नहीं रह सकता।"

"जहाँ तुम्हारा अपमान हो रहा हो"—गोपाल ने वेदना-विद्ध वाणी में अथाह करुणा भर कर कहा—"वहाँ अब मैं स्वयं तुम्हें नहीं रहने दूँगा। पर दो-एक दिन और ठहर जाओ, कोई स्थान ठीक हो जाय तब चले जाना।"

"मेरे लिए स्थान की कमी नहीं है।"

"फिर वही पागलपन तो नहीं करने जा रहे हो ?"

"नहीं, अब आत्महत्या करने की चेष्टा नहीं करूँगा।"

"प्रतिज्ञा करते हो ?"

"हाँ।"

"मेरे माथे पर हाथ रख कर मुझे विश्वास दिला दो कि तुम दग़ा देकर भाग न जाओगे।"

"दग़ा न दूँगा। अब मैं अपने जीवन का रहस्य समझ गया हूँ। भगवान ने मुझे कष्ट ही झेलने को भेजा है। उनकी इच्छा पूरी करूँगा। गली-गली ठोकरें खाता फिरूँगा, पर अपने ही हाथों अपनी हत्या करने का प्रयास न करूँगा।"

गोपाल ने पूछा—मगर अभी तुम जाओगे कहाँ ?

इसका कोई जवाब न देकर दिवाकर तेज़ी के साथ कमरे से बाहर निकल गया।

इसी समय वहाँ सुभद्रा भी आ गई। उसने देखा, उसके भैया दोनों हाथों से अपना मुँह ढक कर बच्चों की तरह सिसक रहे हैं। वह कुछ बोल न सकी। आँखों में आँसू भर कर उसने एक बार बाहर की ओर देखा। पर जिसे देखना चाहती थी वह आँखों के ओझल हो चुका था !

५

सन्ध्या का समय था। पं० भृगुनाथ चौबे आँगन से बाहर निकले ही थे कि गोपाल ने उन्हें प्रणाम किया।

चौबे जी ने आशीर्वाद देकर पूछा—कहिए, आपके मित्र का क्या हाल-चाल है ?

"अच्छा नहीं है।"

"क्यों ? क्या हुआ है ?"

"आज तीन दिन से धर्मशाला में बीमार पड़ा हुआ है।"

"अब आपके यहाँ नहीं रहता ?"

"रूठ कर चला आया है, अब जाता ही नहीं।"

"तब ?"

"तब क्या ? उसे अपने घर ले आइए नहीं तो वह मर जायगा।"

"वह आए भी, या मैं ज़बर्दस्ती ले आऊँ ?"

"ज़बर्दस्ती।"

"तो जाइए, आप ही बुला लाइए—मुझसे तो वह आएगा नहीं।"

"प्यार से पुचकार कर कहिएगा तो आ जायगा। मुसीबतों ने उसे बहुत ही मुलायम बना दिया है। वह दुलार का स्पर्श चाहता है, शासन का आघात नहीं।"

"उसकी दुरवस्था से मैं स्वयं ही बहुत दुखी और लज्जित हूँ। पर करूँ क्या ? यह मेरा दुर्भाग्य है कि जिसे पाल-पोस कर बड़ा किया वही मुझसे, कच्चे धागे की तरह, छूते ही टूट गया। इससे बढ़ कर और क्या अच्छा हो सकता है कि वह घर लौट आवे ?"

"ईश्वर के लिए, आप उसे मना लाइए।"

"आप भी साथ चलिए।"

"चलिए।"

जिस समय वे दोनों धर्मशाला में पहुँचे, दिवाकर बुख़ार की बेहोशी में डूबा हुआ था। उसकी दशा देख कर पं० भृगुनाथ जी की आँखों में आँसू उमड़ आए। उन्होंने गोपाल से कहा—जल्दी से एक पालकी का प्रबन्ध कर दो भैया, किसी दूसरी सवारी पर ले जाने में इसे कष्ट होगा।

कुछ कहने-सुनने की आवश्यकता ही नहीं पड़ी। वह उठा कर पालकी के भीतर लिटा दिया गया।

आँखें खुलने पर उसने देखा, उसके चाचा जी उसे पङ्खा झल रहे हैं। उसके मुँह से अनायास ही निकल पड़ा—सपना तो नहीं देख रहा हूँ !

"नहीं बेटा !"—पं० भृगुनाथ चौबे ने उसके सिर पर हाथ फेरते हुए कहा—"यह सपना नहीं है। तुम अपने घर में हो। तुम्हें मेरे सिर की क़सम, अब बीती बातों का ख़्याल न करो। मुझे क्षमा कर दो, मैंने तुम्हें बहुत कष्ट पहुँचाया।"

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

दिवाकर कुछ बोल न सका। वह सजल नेत्रों से अपने चाचा का मुँह निहार रहा था, मानो उनके इस आकस्मिक भाव-परिवर्त्तन का रहस्य पढ़ रहा हो।

६

सुभद्रा का ब्याह एक ज़मींदार के लड़के से होगा। बातचीत तो पहले ही से ठीक हो गई थी, ब्याह की तिथि भी निश्चित हो गई।

गोपाल ने अपने पिता से कहा—बाबू जी! आप इस प्रश्न पर गम्भीरतापूर्वक विचार नहीं कर रहे हैं।

"अभी मुझे तुमसे सलाह लेने की ज़रूरत नहीं है।"

"वह लड़का सुभद्रा के योग्य नहीं है।"

"क्यों?"

"न तो वह लिखा-पढ़ा है और न उसका आचरण पवित्र है। पता नहीं, आप उसके किस गुण पर रीझ गए हैं!"

"तुम, लोगों के बहकाने में आ गए हो। इतने बड़े आदमी के घर से सम्बन्ध हो रहा है, इसका तो कुछ ख़्याल नहीं करते। लोग जो-जो कहते हैं, उसी पर विश्वास कर लेते हो। इतना भी नहीं समझते कि लोगों को मेरा यह सम्बन्ध अखर रहा है।"

"केवल धन से ही आदमी बड़ा नहीं होता।"

"जी नहीं, गाँधी टोपी पहनने और व्याख्यान देने से होता है?"

"बड़प्पन के लिए सबसे पहली चीज़ है चरित्र।"

"और वह केवल उन्हीं लोगों के पास है जो आपके-से विचार रखने वाले हों?"

"मैं यह नहीं कहता; मेरा कहना तो यह है कि आप सुभद्रा का ब्याह एक विलास के कीड़े से कर रहे हैं। धन की ढेरी पर रीझ कर आप एक अबला का सर्वनाश कर रहे हैं। मैं उस लड़के को जानता हूँ, वह शराबी है।"

"तुम्हारा दिमाग़ फिर गया है। जाओ, यहाँ से हट जाओ।"

"मैं जाता हूँ। मगर याद रखिएगा, यह विष आप ही के शरीर में व्यापेगा।"

"तुम बड़े बदतमीज़ हो गए हो।"

"आप ही ने बनाया है।"

"तुम्हारे जैसे पुत्र की अपेक्षा पुत्रहीन रहना अच्छा है।"

"पहले यही हो लीजिए तब बेटी का ब्याह कीजिएगा।"

"जाओ, भागो यहाँ से।"

"अच्छी बात है।"

गोपाल ने फिर अपने बाप से इस सम्बन्ध में कभी बातचीत न की। झगड़ा बढ़ाने की उसकी आदत नहीं थी। एकदम ख़ामोश हो रहा। पर उसका हृदय रह-रह कर रोया करता था, उसके प्राण प्रति पल कलपते रहते थे। वह दिन-रात अपने लिखने-पढ़ने वाले कमरे में बन्द रहता था।

ब्याह की तिथि आ गई। आज ही रात को बारात आएगी। घर भर में उत्सव का उल्लास छा रहा है। सब लोग सङ्गीत, वाद्य और विनोद में मस्त हैं। गोपाल आज सवेरे ही से कहीं चला गया। पं० शोभाराम जी को इसकी बिल्कुल परवा नहीं है। वे विवाह की तैयारी में व्यस्त हैं। हाँ, उनकी पत्नी को इस अवसर पर पुत्र का रूठ जाना अखर रहा है। वे रह-रह कर उसे याद कर रही हैं। पर इस बात को जानती हैं कि वह आज किसी तरह घर नहीं आवेगा।

बारात द्वार पर आ लगी। उसके वैभव-प्रकाश से सारा महल्ला जगमगा उठा। वर विवाह-मण्डप में लाया गया। मगर कन्या वहाँ नहीं थी। लोग अपने-अपने उल्लास में मग्न थे। किसी ने नहीं ख़्याल किया कि वह किस समय किधर को खिसक गई।

गोपाल की माँ ने कहा—कहीं जाकर सो न गई हो! उसे सोते देर नहीं लगती

लोग उसे घर में इधर-उधर ढूँढ़ने लगे। आख़िर वह एक कमरे में पड़ी हुई मिली। पर वह सुभद्रा नहीं, सुभद्रा की लाश थी। अभी-अभी उसने कलेजे में कटारी भोंक कर आत्महत्या कर ली थी। उसके पास ही एक काग़ज़ पड़ा मिला। उसमें लिखा था—"बाबू जी! जिसके ऊपर मैं अपने को निछावर कर चुकी थी, उसे आपने दूध की मक्खी की तरह निकाल कर बाहर फेंक दिया और आज आप मेरी इच्छा के विरुद्ध एक ऐसे आदमी के साथ मेरा ब्याह कराने जा रहे हैं जिसे मैं

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

जानती तक नहीं ! भैया ने मेरा हृदय खोल कर आपके चरणों पर रख दिया, किन्तु उसे भी आपने निष्ठुरता से कुचल दिया। धन की अधिकता और मूलगोत्र की श्रेष्ठता पर आप रीझ गए, मेरा कोई ख़्याल न किया। ऐसी अवस्था में मैं अपने लिए ब्याह की अपेक्षा मृत्यु को ही अधिक उत्तम समझती हूँ। मुझे क्षमा कीजिएगा।"

गोपाल की माँ बेहोश होकर वहीं गिर पड़ीं। पं० शोभाराम जी सिर धुन-धुन कर रोने लगे। देखते ही देखते उत्सव का सारा आलोक अन्धकार में खो गया !

७

पं० भृगुनाथ चौबे के ससुराल में एक धनी सज्जन थे। उन्हें अपनी एक कन्या का ब्याह करना था। बहुत दिनों से वे चौबे जी के पीछे पड़े हुए थे, उन्हें मुँह-माँगे रुपए दे रहे थे, दहेज में कुछ ज़मीन भी दे रहे थे। पर न दिवाकर विवाह के लिए राज़ी होता था, न उन्हें वे चीज़ें मिलती थीं। हाथ से सोने की चिड़िया उड़ी जा रही थी, अवसर भागा जा रहा था। दण्ड-नीति से उन्हें भयङ्कर असफलता मिल चुकी थी। अब उन्होंने नेह-नीति से काम लेना शुरू किया।

दिवाकर को उन्होंने एक दिन समझाते हुए कहा—देखो बेटा ! अब तुम ब्याह कर लो। आख़िर कभी न कभी तो करोगे ही ? फिर इतना सुन्दर अवसर क्यों खो रहे हो ? इतने रुपए मिल रहे हैं, ज़मीन मिल रही है। अब और क्या चाहिए ? आजकल जिसके पास दो पैसे नहीं उसे पूछता ही कौन है ? ब्याह से ही अगर ज़िन्दगी भर के कमाने-खाने की चिन्ता छूट जाय तो इससे अच्छी और कौन सी बात हो सकती है ? मैंने तुम्हारे लिए इतना किया और तुम मेरा एक भी अरमान नहीं पूरा करोगे ?

दिवाकर ने स्वीकृति का भाव दर्शाते हुए कहा—चाचा जी ! आप जैसा उचित समझिए, कीजिए ! मैं अब कुछ नहीं बोलूँगा।

ब्याह की बात पक्की हो गई।

* * *

ब्याह के बाद जब बारात लौटने लगी तो बेटी के बाप ने पं० भृगुनाथ चौबे से हाथ जोड़ कर विनती की—समधी जी ! मैं इस समय पूरी रक़म नहीं दे सकता। आपके कुछ रुपए मेरे यहाँ रह जाते हैं। इन्हें मैं जल्द ही सेवा में भेज दूँगा।

चौबे जी ने तमतमा कर कहा—यह तो मैं नहीं मानूँगा साहब ! चाहे जैसे हो, मेरे सब रुपए अभी दीजिए।

"अभी तो न दे सकूँगा।"

"यह तो सरासर दग़ा देना है।"

"आप बड़े ओछे विचार के मालूम होते हैं।"

"बेटी का ब्याह करा दिया, उसके बदले क्या गालियाँ दोगे ?"

"जैसा आपका व्यवहार देख रहा हूँ, वह कहीं मार-पीट की नौबत न ला दे !"

"कौन साला मुझे मारेगा ? आवे तो देखें।"—यह कह कर चौबे जी ने अपनी लाठी उठा ली।

"आप तो झूठ-मूठ गरम हुए जा रहे हैं।"—बेटी के बाप ने डपट कर कहा—"सचमुच मार खाने की इच्छा है क्या ?"

"असल बाप के होगे तो मुझे मारोगे।"—चौबे जी ने क्रोध में काँपते हुए कहा।

"असल बाप के होगे तो भागोगे नहीं"—यह कह बेटी-पक्ष वाले चौबे जी पर टूट पड़े। दोनों पक्ष के लोगों में पूरे पाव घण्टे तक युद्ध होता रहा। कितनों के सर टूटे, कितनों के पैर ! अन्त में बारात के लोग वर और कन्या को लेकर भाग चले।

दिवाकर अपनी क़िस्मत पर आँसू बहा रहा था !

* * *

प्रथम मिलन की सारी उत्कण्ठा, सारी लालसा और समस्त अभिलाषाएँ लेकर दिवाकर अपनी प्रेयसी के पास पहुँचा। बहुत देर तक वह पलङ्ग पर आकर बैठा रहा, पर बहू उसके पास न आई—वह एक कोने में सिकुड़ कर खड़ी थी। अपने धैर्य पर वह अधिकार न रख सका। उठ कर उसके पास पहुँचा और उसका हाथ पकड़ कर बोला—अभी तक तो मुझसे कोई अपराध हुआ नहीं है, फिर यह नाराज़ी कैसी ?

वह कुछ न बोली।

दिवाकर ने मुँह पर से घूँघट हटा कर देखा—वह की आँखों से आँसू की धारा बह रही है।

उसने घबरा कर पूछा—रो क्यों रही हो ?

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

इस बार बहू ने कातर दृष्टि से अपने पति की ओर देखा। उसके होंठ फड़क रहे थे।

दिवाकर ने कहा—कुछ बोलो भी।

इतना सुनते ही वह सिसकने लगी। उसकी आँखें अब भी पति के मुखड़े पर चिपकी हुई थीं। मालूम होता था, वे अपनी पलकों का गिराना ही भूल गई हों!

दिवाकर ने खीझ कर कहा—गूँगी हो क्या?

बहू ने सिर हिला दिया और दूने वेग से सिसकने लगी।

दिवाकर ने घबड़ा कर फिर पूछा—क्या सचमुच तुम गूँगी ही हो?

इस बार भी 'हाँ' द्योतक सिर हिला कर वह अपने पति के पैरों पर लोट गई।

दिवाकर उसे ज़ोर से ठुकराता हुआ तेज़ी के साथ कमरे से बाहर निकल गया। दौड़ कर वह अपने चाचा के पास गया और क्रोध-कम्पित स्वर में डपट कर बोला—रुपए के लोभ में पड़ कर आपने मेरा सर्वनाश कर दिया न?"

"हाँ, बेटा!" भृगुनाथ जी ने भयभीत होकर उत्तर दिया—"पीछे से मालूम हुआ कि लड़की गूँगी है। पूरे रुपए भी न मिले और धोखा भी खाया।"

"खूब किया आपने।"

"मैं तुम्हारा दूसरा विवाह करा दूँगा।"

"हाँ, ज़रा जल्दी कीजिएगा और इस बात का ध्यान रखिएगा कि लड़की अन्धी और लँगड़ी दोनों हो। रुपए पहले ही गिनवा लीजिएगा।"

"अब मुझे लज्जित न करो बेटा! फिर ऐसी ग़लती न होगी।"

"भला!"—कह कर दिवाकर उसी समय घर छोड़ कर निकल गया।

८

इसके दो साल बाद की बात है। सायङ्काल का समय था। गोपाल शहर की एक गली से होकर कहीं जा रहा था। उसने देखा, एक जगह दो-तीन शोहदे किसी औरत को घेरे खड़े हैं। वह एक गूँगी भिखारिणी थी। वे बुरी तरह तङ्ग कर रहे थे। वह बेचारी क़साइयों के चङ्गुल में फँसी हुई गाय की तरह छटपटा रही थी। अब उन लोगों ने उसे बहुत सताना शुरू किया, तब वह अस्फुट स्वर में चिल्लाने लगी। उस चिल्लाहट में अर्थ नहीं था, आर्त्तनाद था। उसे सुनते ही गोपाल दौड़ कर उसके पास जा खड़ा हुआ। शोहदे उसे देखते ही भाग गए और वह अबला उसके पैरों पर लोट-लोट कर रोने लगी।

गोपाल उसकी दुर्दशा देख कर रो पड़ा। उसने स्नेह भरे स्वर में पूछा—बहिन! तुम रहती कहाँ हो? चलो, मैं तुम्हें वहाँ तक पहुँचा दूँगा।

कृतज्ञता भरी दृष्टि से एक बार उसकी ओर देख कर भिखारिणी एक ओर को चल पड़ी। गोपाल उसके पीछे हो लिया।

आगे चल कर एक छोटा सा कच्चा मकान था। भिखारिणी उसी के पास जाकर खड़ी हो गई और आँखों में आँसू भर कर अपने त्राता की ओर देखने लगी।

गोपाल ज्योंही द्वार के पास पहुँचा, उसे भीतर से किसी के कराहने की आवाज़ सुन पड़ी। जेब से 'टॉर्च लाइट' निकाल कर वह तुरन्त घर के भीतर घुस गया। कराहने वाले ने एक बार अपनी आँखें खोल कर देखा। देखते ही वह कह उठा—गोपू!

गोपाल ने उसे लपक कर पकड़ लिया और व्याकुल होकर कहा—आह! तुम यह क्या हो गए दादू?

"कुछ पूछो मत"—उसने अत्यन्त क्षीण स्वर में उत्तर दिया—"यह गूँगी न मिल गई होती तो कब का चल बसा होता। तुम यहाँ कैसे?"

"यही ले आई है, नहीं तो मुझे क्या पता था?"

"इसे पहचान गए?"

"अब अधिक परिचय न दो। सब समझ गया।"

"मैं तो जा रहा हूँ, इसको ज़रा देखते रहना।"

"चलो, घर चलना होगा।"

"जाओ, गाड़ी ले आओ।"

गोपाल गाड़ी लाने को दौड़ा। लौट कर देखता है कि गूँगी दरवाज़े पर बैठी सिर धुन-धुन कर रो रही है। वह अपने मित्र को निकालने के लिए भीतर घुसा। पर हाय! उसका अभागा मित्र वहाँ से भी भाग चुका था—उसके स्थान पर केवल उसकी लाश पड़ी हुई थी।

गोपाल उसी से लिपट कर ज़ोर-ज़ोर से रोने लगा।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

खिड़कना

[कविवर श्री० अयोध्यासिंह जी उपाध्याय]

चौपदे

(१)

कण्टकित हो क्यों कुसुमित सेज,
बने क्यों अकलित कुसुम-कलाप ?
किसी की विलसित-ललित-उमङ्ग,
बने क्यों वेदन-वलित-विलाप ?

(२)

हटें क्यों अलकावलि का मान,
किसी के पलित पुरातन-केश ?
मधुरतम-स्वर लालायित-कान,
सुनें क्यों नीरस-कण्ठ-निदेश ?

(३)

दले क्यों कोई अमृदुल-वृत्ति,
किसी के कोमल कितने भाव ?
रोक दे क्यों सुख-सरस-प्रवाह,
मरु-महीतल सम शुष्क-स्वभाव ?

(४)

जरा-जित-मोह-राहु-अभिभूत,
रहे क्यों यौवन-मञ्जु-मयङ्क ?
हरे क्यों नवला-हृदय-विनोद,
किसी कङ्काल-भूत का अङ्क ?

(५)

सुनाते हैं यम का सन्देश,
श्वेत हो-होकर जिसके बाल।
विवश को क्यों लेवे वह बाँध,
ग्रन्थि-बन्धन का बन्धन डाल ?

(६)

कुचल दे क्यों कुसुमायुध-हीन,
किसी की विकच-कामना-वेलि ?
करे क्यों युवती-सुख का लोप,
किसी गत-यौवन-जन की केलि ?

(७)

काल-वलि-भूत मिलिन्द निमित्त,
कमलिनी का क्यों हो बलिदान ?
करे क्यों दलित-कुसुम के हेतु,
नवलतम-कलिका जीवन-दान ?

(८)

काठ उकठा क्यों हो उत्कण्ठ,
वनज-सम विकसित वदन विलोक ?
बने क्यों अतन-बाण से विद्ध,
गलित-तन-नूतन-तन अवलोक ?

(९)

राग क्यों हो विराग आधार,
रहे क्यों अनुरञ्जन से दूर ?
बने क्यों किसी भाल का काल,
असुन्दर हो सुन्दर सिन्दूर ?

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

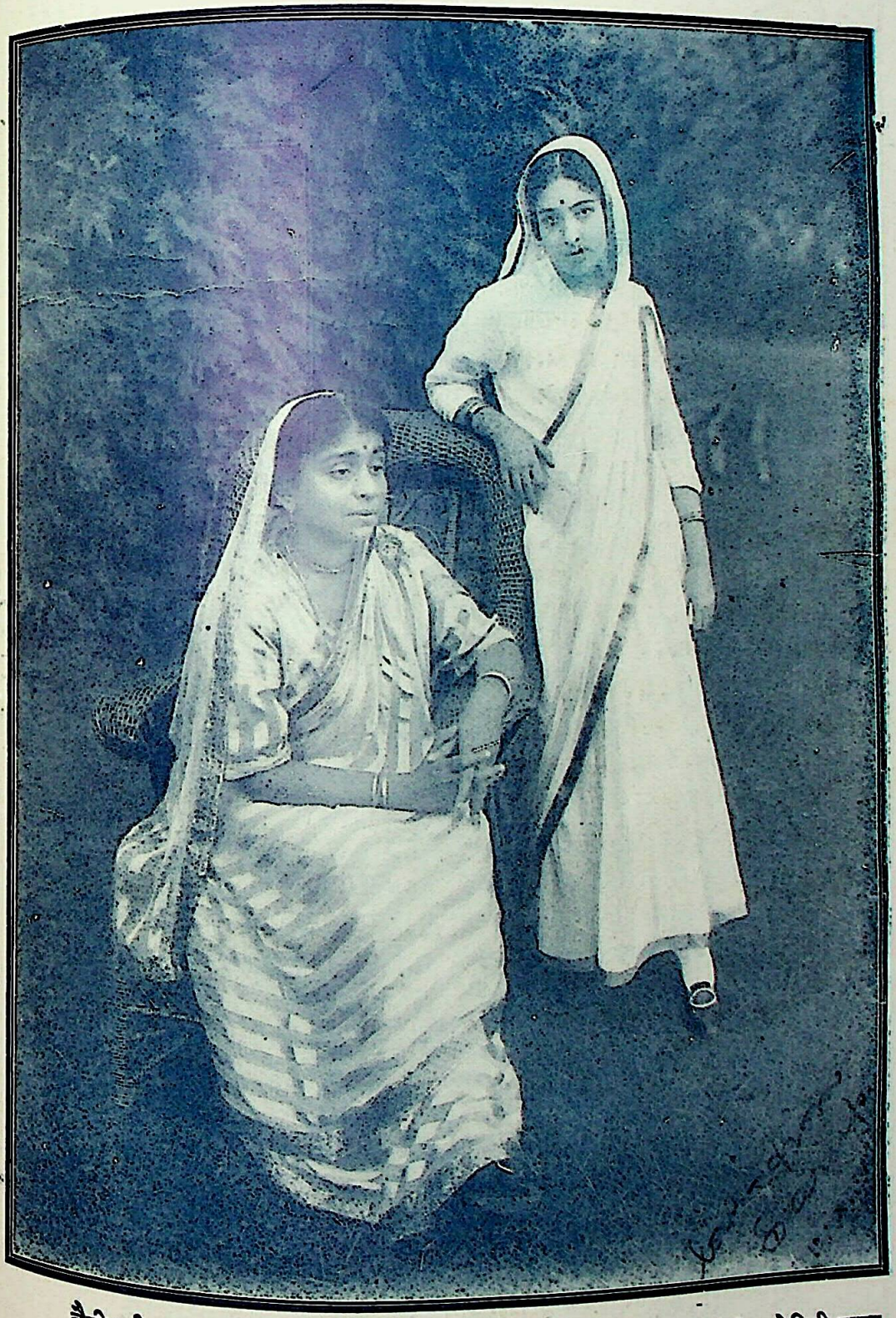

बैठी हुई—महात्मा गाँधी की स्थानापन्न कार्यकर्त्री भारत-कोकिला श्रीमती देवी सरोजिनी नायडू, जिन्हें ९ मास के सादी क़ैद की सज़ा दी गई है।

खड़ी हुई—पं० मोतीलाल नेहरू की पुत्री श्रीमती विजय लक्ष्मी पण्डित, जो इलाहाबाद में

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

हिन्दू-समाज के खँडहरों को नन्दन-भवन बनाने का सद्प्रयत्न !!

विवाह और प्रेम

समाज की जिन अनुचित और अश्लील धारणाओं के कारण स्त्री और पुरुष का दाम्पत्य जीवन असुख और असन्तोषपूर्ण बन जाता है एवं स्मरणातीत काल से फैली हुई जिन मानसिक भावनाओं के द्वारा युवक और युवती का—स्त्री और पुरुष का सुख-स्वाच्छन्नपूर्ण जीवन घृणा, अवहेलना, द्वेष और कलह का रूप धारण कर लेता है, इस पुस्तक में स्वतन्त्रतापूर्वक उसकी आलोचना की गई है और बताया गया है कि किस प्रकार समाज का यह जीवन सुख-सन्तोष का जीवन बन सकता है।

लेखक ने देशीय और विदेशीय समाजों की उन समस्त बातों का, जो इस जीवन में बाधक और साधक हो सकती हैं, चित्रण किया है! इसके साथ ही युवकों तथा पुरुषों के उन व्यवहारों एवं आचरणों की तीखी आलोचना की है, जिनसे विवाह की उपयोगिता, पवित्रता और मधुरता मारी जाती है! लेखक के भावों में जो विवाह युवक और युवती के, पुरुष और स्त्री के प्रेम-जीवन की रक्षा नहीं कर सकते, वे विवाह विवाह नहीं होते, प्रत्युत उनके पूर्व-जन्मों के दुष्कर्मों के प्रायश्चित्त होते हैं, जिनको वे कष्ट, घृणा और अवहेलना के साथ व्यतीत करते हैं !!

पुस्तक के अन्तर्गत प्रत्येक परिच्छेद के शीर्षक

१—क्या विवाह आवश्यक है?
२—विवाह
३—पत्नी का चुनाव
४—यौवन का सुख
५—विषयी कौन है?
६—श्रेष्ठ कौन है?
७—पति-पत्नी का संसार।
८—वासना और प्रेम
९—स्त्री का प्यार
१०—पति-पत्नी का सम्बन्ध-विच्छेद
११—काम-विज्ञान

पुस्तक में स्त्री और पुरुष के जीवन की अनेक इस प्रकार की विवादग्रस्त बातों का निर्णय किया गया है, जिनका कहीं पता नहीं लगता। पुस्तक में स्वतन्त्र देशों के उन प्रसिद्ध विद्वानों और लेखकों के विचारों के उद्धरण दिए गए हैं, जिन्होंने स्त्री-पुरुष के जीवन को सुख सौभाग्य का जीवन बनाने के लिए प्रयत्न किया है और जिनके प्रभावशाली विचारों ने शिथिल और स्वतन्त्र जातियों के स्त्री-पुरुषों में स्फूर्ति उत्पन्न कर दी है! सचित्र पुस्तक का मूल्य २) रु० मात्र!

☞ केवल विवाहित स्त्री-पुरुष ही इस पुस्तक को मँगाने की कृपा करें।

व्यवस्थापिका 'चाँद' कार्यालय, चन्द्रलोक, इलाहाबाद

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

परदा पाप है !

पाप की परिभाषा क्या है ? आवरण मात्र ही पाप है। परदा आवरण है, अतएव पाप है। हाँ, वह पाप ही तो है !

संसार प्रायः पाप को ही छिपाने की चेष्टा करते देखा गया है। पापी अपने कार्यों को संसार के सम्मुख रखने में लज्जित होता है, भीत होता है, ऐसा करने का उसे साहस नहीं होता। सत्य के प्रकाश में पाप की छाया ठहरती नहीं, शायद ठहर सकती ही नहीं।

झूठ बोलना पाप है; क्योंकि झूठ बोलने वाला यह नहीं चाहता कि लोग उसका झूठ जान जायँ। चोरी करना पाप है, चोर दिन के प्रकाश में चोरी नहीं करता, रात्रि के अन्धकार में करना है, अपने कार्य को छिपाने की इच्छा से; क्योंकि चोरी करना पाप है और वह प्रकाशित नहीं किया जा सकता। अज्ञान भी पाप है; इसलिए कि वह मानव-हृदय का आवरण है और आवरण मात्र ही पाप है।

इन तीन प्रकार के पापों के विरोध में सारा संसार एक स्वर से अपनी आवाज़ बुलन्द करता, इनके प्रतिकार की चेष्टा करता, लेख लिखता, व्याख्यान देता और न जाने क्या-क्या करता है। बड़े-बड़े धर्म-ग्रन्थों से लेकर बच्चों के पढ़ने की बाल-पोथी तक में इसके विरुद्ध प्रचार किया जाता है। बचपन से इस बात को हम प्रत्येक हृदय में अङ्कुरित कर देना उचित समझते हैं कि झूठ बोलना पाप है, चोरी करना पाप है, और मूर्ख रहना तो महापाप है।

झूठ बोलना, चोरी करना तो बुद्धि का आवरण है, मूर्ख रहना हृदय का आवरण है; लेकिन परदा ? वह क्या मानव-शरीर का आवरण नहीं है ? यदि है तो कितने लोगों ने उसके विरोध में अपनी आवाज़ उठाई है ? कितने लोगों ने उसके प्रतिकार की चेष्टा की है ? यदि नहीं की तो क्या उन्होंने एक पाप को प्रश्रय नहीं दिया ? उसे बढ़ने, फलने-फूलने और समाज में फैलने का अवकाश नहीं दिया ? हम नहीं समझते, उनका यह कार्य कहाँ तक युक्ति-सङ्गत और समाज के लिए हितकारी है।

मानव-शरीर के साथ ही साथ मनुष्य के हृदय की सत् और असत् प्रवृत्तियाँ भी बढ़ती हैं, विकसित होती हैं और मनुष्य के हृदय पर अपना अधिकार जमा लेती हैं। विकास की इसी प्रगति के साथ-साथ, मनुष्य के हृदय में पाप भी बढ़ते हैं। पाप के होने से ही आवरण होगा। उन्हें छिपाने की आवश्यकता पड़ेगी और इस प्रकार हमें शारीरिक और मानसिक परदा की आवश्यकता प्रतीत होगी।

बच्चा पैदा होता है तो उसके शरीर पर सूत का एक धागा भी नहीं होता, सिर पर शायद पूरे बाल भी नहीं होते। धीरे-धीरे वह बढ़ता है। जब तक उसके मन में कोई विकार नहीं है, जब तक वह भले बुरे को अलग-अलग पहचानने में समर्थ नहीं हुआ है, तब तक उसे किसी आवरण की ज़रूरत नहीं पड़ती, नङ्गा चारों ओर घूमता-

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

बाँद्रा व्यायाम शाला का एक ग्रूप

इस व्यायाम शाला में लाठी और लेज़िम की निःशुल्क शिक्षा, इसके सञ्चालक श्री० वाई० एम० मोकाशी के द्वारा दी जाती है। श्री० मोकाशी एक उत्साही और दक्ष नवयुवक हैं। इस समय इस संस्था में ७ से १२ वर्ष तक की बाईस लड़कियाँ और ७ से १५ वर्ष तक के २५ लड़के शिक्षा पा रहे हैं।

फिरता है; किन्तु यह दशा कब तक रहती है? शीघ्र ही वह बड़ा होता है, समझदार होता है, 'नङ्गा रहना तो ठीक नहीं।' यह पहली बार उसके मन में पाप का प्रादुर्भाव हुआ। उसने समझा कि नङ्गा रहना समाज के सदाचार के, शिष्टता के विरुद्ध है। उसे कपड़ा पहनने की ज़रूरत हुई। उसका मन पापी हुआ। उसने कपड़ा पहना।

उसके कुछ और बाद वह कुछ पढ़-लिख गया। सभ्यता और फ़ैशन का ज्ञान हुआ। औचित्य और अनौचित्य को समझने की शक्ति का विस्तार हुआ। भिन्न-भिन्न प्रकार के कपड़े, भिन्न-भिन्न समय में, भिन्न-भिन्न रूप से पहनना चाहिए। ऐसा नियम है, ऐसा औचित्य है, यह सारी बातें पाप ही तो हैं।

बातें बहुत साधारण हैं। रोज़-रोज़ होने और देखने के कारण, इनमें कोई विशेषता नहीं रह गई। ये बातें हमें आकर्षित नहीं कर पातीं, हम इन पर विशेष ध्यान नहीं दे सकते। शायद देने की ज़रूरत ही नहीं समझते। लेकिन क्या इन्हीं साधारणतम बातों में यह बात नहीं छिपी हुई है कि पाप ही परदा है! परदा ही पाप है!

हमारा समाज तो आज अन्धा हो रहा है। उसे अपना भला-बुरा, हित-अहित, कुछ सूझता नहीं। सूझता होता अगर, तो इस हानिकर और नाशकारी प्रथा को वह इतना प्रश्रय, इतना उत्तेजन न देता। पनपने के पहले ही उसे कुचल देता। किन्तु ऐसा क्यों किया गया? यह क्या सर्वनाश के लक्षण नहीं हैं!

हमारे देश में परदा का जन्म कब हुआ, क्यों हुआ, यह तो अनर्थक बातें हैं। इनकी दुहाई देने से कुछ बनता-बिगड़ता नहीं। किन्तु इस बात का समझना ज़रा मुश्किल है कि समाज ने इसे इस प्रकार फलने-फूलने का अवकाश देने की मूर्खता ही क्यों की? मान लिया, कभी इसकी उपयोगिता थी, इसका प्रचलन हुआ। लेकिन इसके क्या माने कि जो बात चल गई वह अन्त

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

श्रीमती सुमति बाई देव

आप कर्नल के० पी० कुकड़े आई० एम० एस० की विदुषी कन्या हैं। आप नागपुर में ऑनरेरी मैजिस्ट्रेट नियुक्त हुई हैं।

कुमारी जी० एम० श्रद्धा

आप हाल ही में चिटूर के डिस्ट्रिक्ट एजुकेशनल कौन्सिल की सदस्य निर्वाचित हुई हैं।

जन्मान्तर, पुश्त-दरपुश्त चलती ही जायगी! इस अन्धेर का भी कोई ठिकाना है?

सुनते हैं, यवनों के शासन-काल में परदा का जन्म हुआ था। उस समय परदा की कितनी आवश्यकता थी, यह बात बतलाने के लिए अनेक प्रकार की दलीलें पेश की जाती हैं। उनमें अनेक मान्य भी हैं। सब का तात्पर्य यह कि उस समय परदा अत्यन्त आवश्यक था। ठीक है। मानती हूँ। मानती हूँ कि बिना परदा के उस समय स्त्रियों का धन और धर्म अरक्षित था। इज़्ज़त और आबरू की रक्षा के लिए स्त्रियों को परदा में छिपा कर रक्खा गया। किन्तु वह समय तो बहुत दिनों तक रहा नहीं। शीघ्र ही उस ज़ारशाही का अन्त हो गया और ज़रूरी था कि उसके साथ ही परदा का भी अन्त कर दिया जाता, किन्तु ऐसा किया नहीं गया। परदा जो आकर स्त्रियों के शरीर पर जमा, तो उसने उस शरीर को अपना बपौती अधिवास समझ लिया। फिर टलने की उसने कभी बात ही नहीं सोची, शायद सपना तक नहीं देखा।

परदा तो देश की अक़्ल पर ही पड़ गया है। आज से नहीं, उस समय से जब से आत्मरक्षा के लिए इस घातक प्रथा का आश्रय लिया गया। बात समझ में नहीं आती कि परदा से रक्षा कैसे हो सकती है! परदा तो मनुष्य को और अधिक अरक्षित तथा असहाय बना देता है। आत्मरक्षा के लिए तो चरित्र और बहादुरी चाहिए। भला, हाथ भर घूँघट निकाल कर सड़क पर चलने वाली स्त्रियाँ क्या आत्मरक्षा कर लेंगी? ऐसी तो कोई घटना आज तक किसी के देखने-सुनने में आई

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

नहीं। इसके विपरीत, यह अक्सर देखा गया है कि परदे वाली स्त्रियाँ गुण्डों के द्वारा छेड़ी गईं, सताई गईं, अपमानित हुईं। अनेक बार रेल में, किसी उत्सव या मेला की भीड़ में परदे वाली स्त्रियाँ केवल परदे के कारण ही अपने सम्बन्धियों से बिछुड़ गई हैं। उसके बाद उन्हें कितनी ज़िल्लत, कितनी परेशानी उठानी पड़ी है और घर वालों के द्वारा भी कितना लाञ्छित और अपमानित होना पड़ा, यह बात कौन जाने!

श्रीमती के० टी० आचार्य

आप मद्रास प्रेज़ीडेन्सी में अनरेरी मैजिस्ट्रेट नियुक्त हुई हैं।

बुद्धि, सभ्यता और शिष्टाचार के विकास के साथ ही साथ, हमारे हृदय में पाप के साम्राज्य का विस्तार भी तो हो रहा है! परदा ने हमारे मन और मस्तिष्क दोनों ही को दुर्बल बना दिया है। दुर्बल मन और मस्तिष्क में सदाचार और सद्भावनाएँ कितनी देर तक टिक सकती हैं, यह बात विचारणीय है।

स्त्रियाँ तो मातृशक्ति हैं, जननी हैं न? संसार को उत्पन्न करने और उसका पालन-पोषण करने का महत्व-पूर्ण कार्य तो उन्हीं के ज़िम्मे पड़ा है न? स्त्रियों की ही जब यह दशा हो तो उनकी सन्तान कैसे स्वस्थ, सुन्दर और निर्भीक हो सकती है? ऐसी आशा रखना मूर्खता नहीं तो और क्या है? लेकिन हमारे देश में इस गुण की कमी नहीं है। यह तो यहाँ काफ़ी तादाद में मौजूद है।

परदा ने क्या नहीं किया है? उसने स्त्रियों का स्वास्थ्य नष्ट कर दिया, उन्हें आलसी, निरुद्यमी, कायर और तेजहीन बना दिया, उनका तेज और शौर्य खो दिया। यह सब चले जाने के बाद स्त्री में स्त्रीत्व ही क्या शेष रह गया? आमोद? विलास?? शृङ्गार??? छि:, यह सब तो घृणा के कारण हैं। भारत की मातृशक्ति की इस शोचनीय परिस्थिति पर किसे तरस न आवेगा?

स्त्रियों का दिमाग़ और रक्त-मांस तो परदा आत्मसात् कर चुका है। अब केवल सूखी हड्डियाँ शेष रह गई हैं। वह उत्साह के साथ, उन्हें भी चबाने की तैयारी कर रहा है। न जाने इसका परिणाम क्या होगा?

इन—शरीर और मन दोनों से ही—कमज़ोर स्त्रियों के बच्चे स्वभावतः भीरु, आलसी, शक्तिहीन, कर्त्तव्य-विमुख, कायर और निरुद्यमी होते हैं। ऐसे बच्चे आगे चल कर चरित्रवान होंगे, ऐसा नहीं कहा जा सकता। वे दुनिया में उन्नति नहीं कर सकते, दुनिया के सामने सिर नहीं उठा सकते, अपनी इज़्ज़त और देश की प्रतिष्ठा के लिए मर-मिटने की हिम्मत नहीं रखते। हमारे देश में क्या ऐसे बच्चों की, या बच्चों के बापों की कमी है? ओह! इनकी संख्या तो बहुत है, बेतादाद, बेशुमार!! ये भला अपने और अपने देश के लिए क्या कर सकेंगे?

किन्तु देश में कुछ जागृति के लक्षण दीख रहे हैं। मालूम पड़ता है कि निरन्तर इतने दिनों तक सोए रहने के बाद समाज की आँखें अब खुलने का उपक्रम कर रही हैं, नींद की ख़ुमारी दूर हो रही है और समाज अँगड़ाइयाँ ले रहा है। तिरस्कार, अपमान और पतन के ठोकर खाकर वह तिलमिला उठा है। वह उठना चाहता है, उठने की कोशिश करता है, किन्तु सदियों की नींद की ख़ुमारी क्या एक दिन में दूर होगी?

परदा के विरोध में, देश में जहाँ-तहाँ आन्दोलन होने लगा है। लोगों का ध्यान इस ओर आकर्षित हुआ है और वे क्रियात्मक रूप से इस आन्दोलन में भाग भी लेने लगे हैं। देश की बुद्धि यदि इसी तरह ठीक-ठिकाने

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

रही, तो सम्भव है, फिर हम अपना खोया हुआ सम्मान, शक्ति और अधिकार पुनः प्राप्त कर लें।

लेकिन यह तो सपने हैं। सपने हमेशा सच्चे नहीं हुआ करते। सच्चे हो सकते हैं, किन्तु होते प्रायः नहीं हैं। हमारा देश बड़ा भावुक है। किसी को छोड़ते हुए उसके दिल में बड़ा दर्द होता है। अच्छा हो या बुरा, एक बार जिसे आश्रय दिया, फिर उससे क्या नाता तोड़ना? सन्देह नहीं कि इन भावनाओं में भाव-प्रवणता और सहृदयता की पर्याप्त मात्रा है, किन्तु दुनिया में चलने और जीवित रहने के लिए केवल इन्हीं की ज़रूरत तो नहीं पड़ती। यहाँ तो युद्ध का, लड़ाई का जीवन है। कोमलता और सुकुमारता चाहे कम ही हो—न भी हो तो कोई चिन्ता नहीं—लेकिन बहादुरी, लड़ने का माद्दा और मरदानापन तो होना ही चाहिए। परदा कुप्रथा है ज़रूर, लेकिन मालूम पड़ता है, उसे छोड़ते हुए भी देशवासियों के दिल में दर्द होता है। ऐसी बात न होती अगर, तो कब का उसे उतार कर फेंक दिया होता! कौन बड़ा मुश्किल काम था?

हमारी बहिनों के दिल में तो परदा के प्रति अभी भी पूर्ण रूप से वितृष्णा उत्पन्न नहीं हुई है। और इसका कारण भी है। प्रारम्भ से ही समाज के नियामकों ने स्त्री-जाति को—जो पुरुष का आधा आवश्यक अङ्ग कही और शायद समझी भी जाती हैं—पीछे रखने, अपदस्थ करने और दबाने का प्रयत्न किया है। उनके इस अपत् प्रयत्न के अन्तराल में उनकी कौन सी अच्छी या बुरी इच्छा छिपी है, यह समझना तो पहेलियों की तरह आसान नहीं है, अधिक सम्भव है कि समझने की चेष्टा करते हुए हमें धोखा खाना पड़े, किन्तु यह बात तो मुक्त-कण्ठ से कहा जा सकती है कि उनके इस प्रयत्न का फल उन्हीं के लिए अधिक से अधिक हानिकर सिद्ध हुआ है।

किन्तु हम विषय से अलग जा रही हैं। हमारा अभिप्राय यह था कि सैकड़ों वर्षों तक परदे में रहने के बाद भी, जो स्त्रियाँ परदे का गुण-अवगुण नहीं जान सकी हैं, उसका कारण उनकी अशिक्षा के सिवा और कुछ नहीं है। और उनके अशिक्षित रहने का सारा दायित्व समाज के नियामकों पर ही है। उन्होंने ही तो स्त्रियों की शिक्षा की कोई व्यवस्था नहीं की? उसे उचित नहीं क़रार दिया, उसकी उपयोगिता नहीं स्वीकार की?

किन्तु यह तो विद्रोह का युग है न? क्या स्त्रियों का हृदय विद्रोही न हो उठेगा? क्या अपने ऊपर निरन्तर सैकड़ों वर्षों से होते आने वाले ज़ुल्मों और अत्याचारों के विरुद्ध वे बग़ावत का झण्डा न खड़ा करेंगी? यह असम्भव है!

उन्हें सब कुछ स्वयं ही करना होगा। उनके लिए उनका कोई नहीं है, अपने लिए उनका सभी कोई है। इसलिए, उन्हें तो अपने ही पैरों खड़ा होना पड़ेगा,

श्रीमती के० जे० आर० कामा
आप नागपुर (सी० पी०) में ऑनरेरी मैजिस्ट्रेट नियुक्त हुई हैं।

अपने लिए ख़ुद ही लड़ाई लड़नी होगी। तभी वे विजयी होंगी, तभी उनकी रक्षा होगी!

हर्ष की बात है कि कुछ बहिनों का ध्यान इधर गया है और वे सम्मिलित रूप से इस सम्बन्ध में कुछ उद्योग भी कर रही हैं। उनके अतिरिक्त देश में इधर-उधर भी परदे की अनुपयोगिता और अव्यवहारिकता हमारी बहनें समझ रही हैं और उससे अलग हो रही हैं, किन्तु अभी इस आन्दोलन की प्रगति अत्यन्त मन्थर है। इस गति से तो विशेष कुछ होता दीख नहीं पड़ता। इस विचार को

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

देश भर में आग की तरह लहक उठना चाहिए, जलप्लावन की तरह फैल जाना चाहिए। इस गति से कहीं कुप्रथाओं की सीमा से अलग हुआ जा सकता है?

इसमें सन्देह नहीं कि हमारी यह बात सर्वांशतः ठीक है, लेकिन इसके साथ ही यह बात भी तो है कि हमारे देश के पुरुषों में बर्दाश्त करने की शक्ति अब शेष

श्रीमती एम० मरगठावल्ली अम्मल

आप कराईकुडी के म्युनिसिपल कौन्सिल की सदस्या निर्वाचित हुई हैं। आप चेट्टी प्रान्त की किसी भी म्युनिसिपल कौन्सिल में निर्वाचित होने वाली प्रथम महिला-रत्न हैं।

नहीं रह गई है। वे असहिष्णु और क्रोधी हो गए हैं। हमारे इन आन्दोलनों को, उनमें से कितने ही पुरुष उचित समझते हैं ज़रूर, रूढ़ियों और कुप्रथाओं के विरुद्ध उनके विचार भी अग्निमय और क्रान्तिकारी होते हैं, दूसरों को उपदेश देने में भी उनकी ज़बान तलवार से कम तेज़ नहीं चलती, लेकिन जब मौक़ा आता है, काम करने की जब ज़रूरत पड़ती है, वे बग़लें झाँकने लगते, कन्नी काट जाते, मुँह छिपा लेते हैं। कुछ पुरुष नरम नीति के होते हैं। भई, परदा से हानि तो है, उसे हम रखते भी नहीं। लेकिन एक बात है, परदा से आज तो हम स्त्रियों को मुक्त कर दें। कल को वे तुमसे फ़र्माइश करें। अगले दिन अधिकारों में समानता चाहें। यह बात तो, भाई, ज़रा मुश्किल है। स्त्रियों को तो स्त्रियों की तरह ही रहना चाहिए। अब उनसे पूछिए भला, स्त्रियों की तरह रहने का क्या मतलब? क्या किसी ख़ास तरह से स्त्रियों को रक्खी जाने का हुक्म वे यहाँ से कोई हुक्मनामा पुरुष-जाति को मिला है? क्या उनका अभिप्राय है न कि सदा से वे कुचली जाती रही हैं, अपदस्थ की जाती रही हैं, उन पर ज़ुल्म और अत्याचार होते रहे हैं, अतः अब भी वे उन्हीं ज़ुल्मों को सहें, बर्दाश्त करें, उसी बेड़ी में जकड़ी रहें। लेकिन यह क्या उचित है? न्याय-सङ्गत है? मैं पूछती हूँ, उस पुरुष-जाति से, जिसने स्त्रियों के लिए इन क़ानून-अस्त्रों का निर्माण किया है!

इस बात से इन्कार नहीं किया जा सकता कि अपने हक़ और अधिकार को इच्छापूर्वक छोड़ देना कोई पसन्द नहीं करता। अङ्गरेज़ ही आज हिन्दुस्तान में राज कर रहे हैं, सारे देश ने उनके विरुद्ध बग़ावत का झण्डा खड़ा किया है, सारा मुल्क उनके ख़िलाफ़ अपनी सूर्ख आँखें गुरेर रहा है; लेकिन इसीसे क्या वे अपना अधिकार सहज में ही छोड़ देंगे? उहुँक्! इतनी बड़ी हुकूमत, इतना बड़ा अधिकार, यह क्या आसानी से छोड़ा जा सकता है? असम्भव!!

यह सब तो ठीक है, किन्तु यह तो न्याय की बातें नहीं हैं न! यह तो ज़ुल्म और अत्याचार है। ज़ुल्म है। और ज़ुल्म कब तक सहा जा सकता है? आख़िर एक न एक दिन ऐसा आवेगा ही, जब ज़ुल्म के विरुद्ध आवाज़ उठानी पड़ेगी, बग़ावत करना होगा। किसी बात की अति जब हो जाती है, तो ऐसा ही होता है। यह तो मानव-स्वभाव है।

लेकिन ये भले आदमी यह भी तो स्वीकार नहीं करते। ये तो कहते हैं, हमने बहुत किया। जो कुछ कर रहे हैं, वही क्या कम है? मीठी-मीठी बातें कह कर

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

बच्चों की तरह हमें भुला देना चाहते हैं—तुम तो गृहिणी हो, घर की स्वामिनी हो ! कौन कहता है पराधीन हो, दुखी हो ? सारे घर के शासन का सूत्र तो तुम्हारे हाथ में है। इच्छानुरूप तुम उसका सञ्चालन करती हो। यह अधिकार क्या किसी से कम हैं ? लेकिन मीठी-मीठी बातें सुनने का ज़माना तो अब नहीं रह गया। अब तो साफ़-साफ़ बातें हो जानी चाहिएँ। जो कुछ जैसा भी हो, उसका निबटारा हो जाना चाहिए। या तो पुरुष हमें अधिकार दें, हमारे साथ समानता का व्यवहार करें, अर्धाङ्गिनी कहते हैं, तो क्रियात्मक रूप से अर्धाङ्गिनी स्वीकार भी करें, और या फिर यही कह दें कि चाहे ज़ुल्म हो या अत्याचार हम तुम्हें अधिकार न देंगे। अपने बराबर आसन पर न बिठाएँगे। बस, फ़ैसला ही हो जाय ! या इधर या उधर !!

हमारे कथन में प्रतिहिंसा का भाव नहीं है। पुरुष ऐसा करते हैं, इसलिए हम भी ऐसा करें, यह कोई बात नहीं है। मैं इसे पसन्द भी नहीं करती। किन्तु हमारी बात तो यह है कि हमें ऐसा ही होना चाहिए, इसलिए ऐसा हो। परदा तो हमारे जीवन-मृत्यु का प्रश्न है। ऐसा न होता अगर, तो मैं उसके सम्बन्ध में कुछ न कहती। जैसे पुरुष जाति के और अनेक ज़ुल्म हम सहती हैं, वैसे ही इसे भी सह लेतीं, लेकिन दबने का फल—मैं देख रही हूँ—कुछ अच्छा नहीं हो रहा है। हम जितना ही दबती हैं, ग़म खाती हैं, सन्तोष करती हैं, उतना ही अधिक प्रबल वेग से समाज हमें दबाता है, कुचलता है, मिटा देने का प्रयत्न करता है। यह तो हमें अभीष्ट नहीं है। हम पुरुषों के लिए अपना अस्तित्व खो दे सकती हैं, अपने को मिटा दे सकती हैं। ऐसा करती भी हैं, किन्तु हम इसलिए मिटें कि वे हमें मिटा दे सकते हैं, वे समर्थ हैं, बलवान हैं, हम पर हुकूमत करते हैं, यह तो असह्य है। इसके प्रतिकार की चेष्टा तो करनी ही होगी। चाहे जैसे हो, इस ज़ुल्म का अन्त तो करना ही पड़ेगा !

तर्क और दलीलों का कोई मूल्य हमारी दृष्टि में नहीं है। इनका तो निर्माण ही शायद सच को झूठ और झूठ को सच बनाने के लिए हुआ है। हमारे लिए इनकी कोई उपयोगिता नहीं है, और ये हमारे पास हैं भी नहीं। यह सब तो पुरुष जाति को ही मुबारक हो ! हमारे पास तो अपनी सच्ची और सीधी-सादी बातें हैं और अपना अटल कार्यक्रम है। हमारा विश्वास है, विजयी होने के लिए इनके अतिरिक्त और किसी वस्तु की ज़रूरत हमें न पड़ेगी।

प्रकृति ने हवा, पानी, धूप और रोशनी का व्यवहार करने का सब को समान अधिकार दिया है, किन्तु हमारा समाज तो यह समानता भी नहीं देख सकता।

सी० पी० कौन्सिल की नवीन सदस्या
श्रीमती मैकफ़ेडिन

आप नागपुर युनिवर्सिटी के वाइस चान्सलर श्री० मैकफ़ेडिन की धर्मपत्नी हैं। आप नागपुर में ऑनरेरी मैजिस्ट्रेट नियुक्त हुई हैं। सी० पी० सरकार ने जिन महिलाओं की नियुक्ति की है, उनमें से एक आप भी हैं।

हमारे मुँह पर परदा डाल कर और सात तालों के अन्दर घर की कोठरी में हमें बन्द करके उसने हमें रोशनी और साफ़ हवा से तो वञ्चित कर ही दिया। अब हम यह सोचती हैं कि कल अगर वह कहीं कह दें कि साँस मत लो, पानी मत पिओ, रोशनी मत देखो तब ? तब हमारा क्या कर्त्तव्य होगा ? यह तो जीवन-मरण का प्रश्न है न ? यहाँ तो चुप नहीं रहा जा सकता।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

और रहा भी जा सकता है, बशर्ते कि समाज हमें लिख दे कि तुम मिट जाओ, तुम्हारी हमें कोई ज़रूरत नहीं है। ऐसा होने पर हम संसार के किसी दूसरे कोने में अपने लिए स्थान ढूँढ़ लेंगी। किन्तु अगर ऐसा नहीं है, तो हमें जीने दीजिए, सुख और शान्ति से ही जीने दीजिए। आपका तो इसमें कुछ बिगड़ता नहीं?

श्रीमती इस्थरबाल्लू अम्मल

आप "मेटरनिटी ऐण्ड चाइल्ड वेलफ़ेयर एसोसिएशन" की सुयोग्य धाय हैं। हाल ही में आपकी अमूल्य सेवाओं के लिए आपको एक स्वर्ण-पदक प्राप्त हुआ था जिसे आपने एसोसिएशन को ही दे दिया।

हमारी बातें तो यहाँ ख़तम होती हैं। मैं अपनी बहिनों से कहती हूँ, वे इस ओर विशेष ध्यान दें, इसका परिणाम सोचें और कार्य-पथ में अग्रसर हों।

हमारे सामने दो ही कार्यक्रम हैं। पहला, परदा को अत्यन्त अनावश्यक समझ कर उसे दूर कर देना और दूसरा, देश की स्त्रियों में शिक्षा का प्रचार करना। स्त्रियों की शिक्षा कैसी होनी चाहिए, इस विषय पर हम फिर विचार करेंगी। आज तो बस इतना ही बहुत है।

—श्यामकान्ता देवी

* * *

स्त्रियों का स्वर्ग—रूस

संसार में एक भी स्थान ऐसा नहीं है जहाँ महिलाओं का जीवन उतना सुखी है, जितना रूस में। क्रान्ति के बाद, बोलशेवी शासन के उदय के समय से ही, इन महिलाओं का जीवन इतना सुखी और सम्पन्न हो गया है कि समस्त संसार की स्त्रियाँ ईर्ष्यापूर्वक उनकी ओर देखती हैं। इंग्लैण्ड में इतना आन्दोलन करने पर स्त्रियों को मताधिकार मिला ज़रूर, किन्तु अब भी अनेक बार पुरुष उनकी 'समानता' स्वीकार करना पसन्द नहीं करते। ऐसे उदाहरणों की हमारे पास कमी नहीं है। पार्लामेण्ट में पुरुष सदस्यों ने पार्लामेण्ट के भोजनालय में स्त्रियों के साथ भोजन करना अस्वीकार कर दिया था। 'केवल पुरुषों के लिए' अनेक क्लब आदि आज दिन स्थापित किए जा रहे हैं। कहा जाता है कि संयुक्त राज्य अमेरिका में महिलाओं को बड़े-बड़े सरकारी ओहदे प्राप्त होते हैं, पर देखा जाता है कि वहाँ भी शान्ति और सुव्यवस्था नहीं दीख पड़ती। रोज़ ही एक न एक झगड़े उठते रहते हैं। एक बार एक प्रसिद्ध उड़ाकी स्त्री के पति ने समाचार-पत्रों में यह सूचना छपवा दी थी कि वे अपनी स्त्री के कर्ज़ के ज़िम्मेदार नहीं हैं।

किन्तु रूस में ऐसा नहीं हो सकता। वहाँ की स्त्रियों के अधिकार इतने ऊँचे हैं कि पाठकों को—विशेषकर भारतीय पाठकों को—उन्हें सुन कर आश्चर्य होगा! प्रथम हम राजनीतिक समानता से प्रारम्भ करते हैं। क्रान्ति के बाद से स्त्रियों को पूर्ण राजनीतिक स्वाधीनता प्राप्त हो गई है। इनको केवल मत देने का ही अधिकार नहीं प्राप्त है, किन्तु ये सर्वोच्च सरकारी पद भी ग्रहण कर सकती हैं! यद्यपि संयुक्त राज्य अमेरिका में इस तरह इन्हें वोट देने का उतना स्वतन्त्र अधिकार नहीं है

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

पर ग्रामों की स्त्रियों को तो उन्हीं के समान अधिकार प्राप्त है और आश्चर्य इस बात का है कि ग्रामीण महिलाओं को नगर की स्त्रियों से कहीं अधिक अधिकार प्राप्त हैं। संयुक्त राज्य अमेरिका में दो महिलाएँ दो राज्यों की गवर्नर चुन ली गईं, नौ महिलाएँ कॉङ्ग्रेस की सदस्य हो गईं! बस, यही बात उनके लिए अत्यन्त महत्व की हो गई और समाचार-पत्रों में इसकी शोहरत मच गई! इङ्गलैण्ड में पार्लामेण्ट की दस-बारह महिलाएँ सदस्य हो जाती हैं तो इस बात को बहुत ज़्यादा महत्व दिया जाता है, किन्तु रूस में यह इतनी मामूली बात हो गई है कि इसका कोई महत्व ही नहीं रह गया है।

राजनीतिक स्वाधीनता की पराकाष्ठा

वहाँ इतनी महिलाएँ ऊँचे ओहदों पर, सरकारी पदों पर तथा रूसी पञ्चायत (रूस की वास्तविक शासक संस्था) की सदस्या हैं कि यह एक साधारण सी बात हो गई है! न्यूयार्क के 'एशिया' नामक पत्र में भी मारिस हिन्दूज़ महाशय (Maurice Hindus in 'Asia' of New york) ने लिखा है कि—"जहाँ भी कोई जाता है वहीं ऊँचे पदों पर महिलाएँ मिलती हैं। रूस की मुख्य शासक संस्था अखिल रूसी पञ्चायत में आठ प्रतिशत सदस्याएँ स्त्रियाँ हैं। कोड़ियों स्त्रियाँ प्रान्तीय तथा नगर पञ्चायतों की अध्यक्षा होती हैं तथा हो चुकी हैं!" वास्तव में स्थिति इससे भी अधिक रोचक है! नित्य-प्रति शासन में महिलाओं का हाथ तना बढ़ता जा रहा है कि ऐसा प्रतीत होता है कि ग्रेटब्रिटेन वा संयुक्त राज्य की तरह रूस के पुरुषों को इस बात का भय ही नहीं है कि यदि यही हाल रहेगा तो एक दिन पुरुषों पर स्त्रियों का राज्य हो जायगा! अदालतों में महिला न्यायाधीश भी कम नहीं हैं। अधिकारियों का कथन है कि यदि इस विभाग में इनकी संख्या इसी तरह बढ़ती गई तो कुछ दिनों में पुरुष तथा स्त्री जजों की संख्या बराबर हो जायगी। स्त्रियों की स्वाधीनता के क्षेत्र संयुक्त राज्य अमेरिका में, जहाँ कम से कम बीस राज्यों में औरतों को जजों की अदालत में जूरी (पञ्च) बनाने की मुमानियत है, वहाँ रूस की प्रत्येक अदालतों में स्त्री पञ्चों की संख्या बेशुमार है! गत शताब्दि में नॉरवे (Narwoy) के पुरुषों के एक विश्वविद्यालय में सर्व-प्रथम महिला प्रोफ़ेसर होने वाली एक रूसी गणित-शास्त्र की पण्डिता सोफ़ी कोलावस्केया महिला थीं, उसी प्रकार इस शताब्दि में सर्व-प्रथम पर-राष्ट्र में राजदूत का पद ग्रहण करने वाली भी एक रूसी महिला ही हैं! देखा जा रहा है कि शिक्षा आदि सभी विभागों में महिलाएँ ही एक प्रकार से सर्वोच्च पदों पर हैं!

सामाजिक अधिकार की चरम सीमा

ग्रेटब्रिटेन तथा संयुक्त राज्य की तरह रूस में कोई भी ऐसा स्थान नहीं है जो केवल पुरुषों के लिए हो! यदि स्त्रियाँ किसी विशेष संस्था में अपनी भिन्न रुचि के कारण भाग न लें तो बात दूसरी है, अन्यथा कोई शक्ति उन्हें किसी बात में पुरुषों के बराबर बैठने से रोक नहीं सकती। वहाँ पुरुषों के लिए न तो ख़ास होटल है और न होटलों में "स्त्रियों के लिए सुरक्षित" मेज़ होते हैं। किसी क्लब में केवल पुरुष ही सदस्य नहीं हैं। खेल-कूद की संस्थाओं में सम्मिलित सदस्य हैं। शिक्षा एक साथ होती है और अलग विद्यालय नहीं हैं। व्यवसाय-सङ्घ या साम्यवादी दल में स्त्री-पुरुष बराबर की शर्तों पर मेम्बर हो सकते हैं। समाज के किसी भी नियम में स्त्री-पुरुष का भेद नहीं है। ग्रेटब्रिटेन की तरह यहाँ यह नियम नहीं है कि महिला अध्यापिकाएँ पुरुषों के साथ—पुरुष अध्यापकों के साथ—खुले-आम हँसें-खेलें नहीं! वे जहाँ चाहें सिगरेट पी सकती हैं (यद्यपि सिगरेट पीना अच्छी बात नहीं है), जिस तरह की पोशाक चाहें पहन सकती हैं! बिना किसी विरोध के यह स्वीकार कर लिया गया है कि औषधि—डॉक्टरी, इञ्जिनीयरिङ्ग, वकालत सब मुहकमों में औरतें पुरुषों के समान दक्षता प्राप्त करके पेशा ग्रहण कर सकती हैं। इस विषय में ग्रेटब्रिटेन तथा संयुक्त राज्य में बड़ा आन्दोलन मचा हुआ है!

उपर्युक्त बातों से पाठक समझ सकते हैं कि इनको स्वाधीनता की कितनी चरम सीमा प्राप्त है! क़ानूनी हक़ों में भी ये पुरुषों से किसी अवस्था में कम नहीं हैं! पाठकों ने देखा होगा कि अङ्गरेज़ी तथा जर्मन-प्रणाली के अनुसार विवाह के बाद कुमारी कन्या का नाम बदल कर पति के नाम के अनुसार हो जाता है और उसे पति का ख़ान्दानी नाम ग्रहण करना पड़ता है। किन्तु रूस में पतियों से यह अधिकार भी छीन लिया गया है। कोई पति विवाह के बाद अपनी स्त्री को अपनी राष्ट्रीयता अथवा नाम ग्रहण करने के लिए मजबूर नहीं कर सकता।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

यदि वह अपना स्थान बदलना चाहे तो अपनी पत्नी को भी अपने साथ स्थान बदलने के लिए मजबूर नहीं कर सकता। यदि पत्नी पति का साथ छोड़ दे और बाक़ायदा तलाक़ न दे दिया गया हो तो पति को कोई हक़ नहीं है कि वह समाचार-पत्रों में छपवा दे कि 'वह अपनी पत्नी के क़र्ज़ों का ज़िम्मेदार नहीं है।'

ठीक यही दशा सम्पत्ति के विषय में भी है! पुरुष तथा स्त्री के लिए सम्पत्ति के अलग उत्तराधिकार की कोई व्याख्या ही नहीं है! सबको बराबर अधिकार प्राप्त है! पुरुष मज़बूत तथा अधिक अधिकार वाला है और स्त्री कम अधिकार वाली अतः 'रक्षणीया' है, इस प्रकार की क़ानून के अन्दर कोई गुञ्जायश नहीं है। इसीलिए वहाँ "'प्यार की कमी' या 'वादा ख़िलाफ़ी'" के मुक़दमे नहीं होते। क़ानून के सामने स्त्री-पुरुष बराबर दण्डनीय हैं। हाँ, यदि स्त्री गर्भवती है तो बात दूसरी है।

रूसी महिलाओं की विशेषता

रूसी महिलाओं को काम करने तथा जीविकोपार्जन के काफ़ी साधन मौजूद हैं। सरकार की ओर से घर पर ही उनके लिए कारख़ाने व बच्चों के पोषण का प्रबन्ध हो जाता है। किन्तु सरकार यह आदर्श रखती है कि कारख़ानों में माता काम करे, उसके बच्चे के लिए वहीं पर प्रबन्ध रहे और वह सुख से पाला जाय! उनकी शिक्षा के लिए इतने साधन हैं, कारख़ानों में काम के बाद इतना अधिक समय मिलता है कि ये महिलाएँ खाने-पीने से सम्पन्न होने के साथ ही मानसिक शिक्षा भी ख़ूब पाती हैं।

संसार की महिलाओं से रूसी महिलाओं के जीवन में महान अन्तर है। ऊपर हमने यहाँ की महिलाओं के जीवन की तुलना ग्रेटब्रिटेन तथा संयुक्त राज्य अमेरिका से की है। इसका कारण केवल यह है कि इन्हीं दोनों देशों में सबसे अधिक स्त्री-स्वाधीनता समझी जाती है। हम समझते हैं कि यहाँ ही स्त्रियों का स्वर्ग होगा। किन्तु हमें रूसी महिलाओं के जीवन का पता ही नहीं है। बोल्शेविक शासन-प्रणाली से भले ही हम पूरी तरह सहमत न हों, किन्तु वस्तुस्थिति का अध्ययन एक अत्यावश्यक कार्य है। रूसी महिलाओं के जीवन का वृत्तान्त सुन कर चित्त प्रसन्न हो उठता है।

किन्तु संसार की महिलाओं में और रूसी महिलाओं में ज़मीन-आसमान का फ़र्क़ है। रूसी महिलाओं के कर्म ही इतने पवित्र हैं कि वे इस सुख की अधिकारिणी हैं। बर्लिन, पेरिस, लन्दन, दिल्ली, कलकत्ता जहाँ जाइए, आपको जहाँ एक स्त्री सड़क पर चिथड़ों में लिपटी भीख माँगती दीख पड़ेगी तो दूसरी हीरे-जवाहरात में सजी चमकती निकलेगी। किन्तु रूस में यह बात नहीं है। वहाँ सभी स्त्रियाँ सादी पोशाक में मिलेंगी। जवाहरात लापता हो गए हैं। अमीर-ग़रीब सब एक समान रहते, खाते-पीते हैं! गहनों से लदी भारतीय स्त्रियों को देखने का आदी वहाँ जाकर एक बार चकरा जायगा! पर जैसे आप वहाँ गहने और ठाट-बाट न देखेंगे उसी प्रकार सादे कपड़ों के साथ फटे कपड़ों का नामोनिशान भी न दीख पड़ेगा! समानता के पवित्र सङ्कल्प में अपनी बहिनों के लिए बड़प्पन को तिलाञ्जलि देने का पवित्र कार्य कितना सराहनीय है।

यह तो एक विशेषता है! दूसरा प्रश्न पाठक-पाठिकाओं के मन में यह उत्पन्न हो सकता है कि पुरुष अन्य देशों की भाँति स्त्रियों के इस बढ़ते हुए अधिकार-प्रचार को रोकते क्यों नहीं? किन्तु इसके दो कारण हैं। प्रथम तथा सर्व-श्रेष्ठ, सर्वोच्च तथा पवित्र कारण यह है कि रूसी स्त्रियाँ अन्य देशों की स्त्रियों की तरह कभी 'मताधिकार, सरकारी नौकरी व ओहदों' के लिए लड़ी नहीं। किन्तु क्रान्ति के समय, बोल्शेविक क्रान्ति के समय, ये पुरुषों के साथ कन्धे से कन्धा भिड़ा कर सब के सुख के लिए तथा ज़ार की क्रूरता के विरुद्ध लड़ी थीं। रूस में बोल्शेवी शासन की स्थापना के लिए जितना ख़ून पुरुषों ने बहाया है उतना ही स्त्रियों ने। किसी भी पुरुष-बच्चे को यह गर्व नहीं है कि वह यह कहे कि उसने—उसकी जाति ने, देश के लिए अधिक त्याग किया है। रूस में स्वतन्त्रता की लड़ाई में जितने दल थे—मेंशविक, बोल्शेविक, साम्यवादी, क्रान्तिकारी, उदार, सब में ही स्त्रियाँ बराबर संख्या में थीं। अतः किसी भी दल की सहानुभूति इनके विपरीत नहीं हुई। दूसरा कारण यह है कि इस सहचार तथा समान मात्रा में पीड़ा सहने का परिणाम यह हुआ कि उनमें पारस्परिक 'प्रतिस्पर्द्धा' की भावना नष्ट होकर 'सहचार' की भावना जाग्रत हो उठी। एक-दूसरे को साथी मानते हैं, अतः बड़प्पन की 'ब्रिटिश' होड़ उनमें नहीं है!

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

हमारी भारतीय बहिनें इन बातों को सुन कर कुछ सीख सकती हैं। प्रथम तो यह कि पुरुषों के समान अधिकार प्राप्त करने के लिए पहले आपस में समानता प्राप्त करना चाहिए। अपनी दरिद्र बहिन के लाभ तथा समानता के लिए अपने गहने की तड़क-भड़क अलग कर देनी चाहिए! दूसरी बात यह है कि देश में राजनीतिक अधिकार प्राप्त करने के लिए पुरुषों द्वारा प्राप्त राजनीतिक अधिकार में ज़बर्दस्ती साझा लगाने के लिए युद्ध न करके, उनके साथ राजनीतिक युद्ध में भाग लेना चाहिए। उस समय सहचार की भावना का जो उदय होगा वह स्थायी होगा तथा भारत में भी 'बड़े-छोटे' 'समान-असमान' का प्रश्न न रह जायगा।

—परिपूर्णानन्द वर्मा

* * *

भारतीय वाद्ययन्त्र

आदि काल से ही मनुष्य रोने और गाने का अभ्यासी रहा है। पहले-पहल जब मनुष्य की सृष्टि हुई तो संसार में उसे विनोद की, मनोरञ्जन की कोई सामग्री न दीख पड़ी। संसार उसे फीका मालूम पड़ने लगा। तब अपना जी बहलाने के लिए उसने गाना प्रारम्भ किया। किन्तु गाने से भी उसे विशेष तृप्ति न हुई, सन्तोष नहीं हुआ। उसे इसमें अपूर्णता जान पड़ी। वह इस अपूर्णता को दूर करने का उपाय सोचने लगा।

अन्त में, बहुत दिनों तक लगातार प्रयत्न करने के बाद उसने एक ऐसे यन्त्र का आविष्कार किया, जिसके सुर में सुर मिला कर वह गा सकता था। यह आविष्कार करके वह बड़ा प्रसन्न हुआ, किन्तु अभी इसमें भी कुछ अभाव था। क्रम से समय बीतता गया और यन्त्र में अनेक सुधार होते रहे। मनुष्य ने उस यन्त्र के सुर में सुर मिला कर, आनन्द-विभोर होकर गाया और उसकी मधुर किन्तु करुण रागिनी भूमण्डल में गूँज उठी। वह अपने गीत पर स्वयं ही मुग्ध हो गया, विह्वल हो गया। हर्ष से, प्रसन्नता से, तृप्ति से, उसका हृदय नाच उठा। वह उसकी सफलता का, विजय का पहला दिन था।

उसके बाद, मनुष्य जाति की सभ्यता और शिक्षा की अभिवृद्धि के साथ ही साथ वाद्ययन्त्रों में भी उन्नति होती रही। अनेक प्रकार के नए-नए यन्त्रों के आविष्कार हुए और क्रम से देश भर में इनका प्रचार हुआ। उस समय के आविष्कृत वाद्ययन्त्रों में से कितने तो समय के साथ ही नष्ट हो गए, किन्तु कितने अब तक अपने तीव्र-कोमल स्वर से देश के वायुमण्डल को गुँजाते चले आ रहे हैं।

धीरे-धीरे बंसी, मुरली, वीणा, अलगोज़ा, ढोल, मँजीरा, डफ़ली आदि कितने ही बाजों का आविष्कार हुआ और लोग इनके सहारे गाने-बजाने लगे। ढोल, डफ़ली, अलगोज़ा आदि का व्यवहार अशिक्षित और पहाड़ी लोग ही अधिकतर किया करते हैं। वे लोग इनकी गूँज में मस्त होकर उछलते-कूदते और नाचने लगते हैं। वे लोग बहुत संख्या में इकट्ठे होकर एक साथ गाते और बहुत शोर-गुल मचाते हैं। वास्तव में इन बाजों का स्वर होता भी बहुत उत्तेजक है। बंसी की मधुरता के सम्बन्ध में तो कुछ कहना ही नहीं है। द्वापर में जब भगवान श्रीकृष्ण ने अपनी बाँसुरी बजाई तो सारा संसार उसकी मधुर-ध्वनि से विह्वल, उन्मत्त हो उठा था।

इनके सिवा पटह, दुन्दुभि, शङ्ख, आडम्बर, बनस्पति नाम के बाजों का भी आविष्कार हुआ, जिनमें अनेक बाजों का तो अब केवल नाम ही शेष रह गया है।

वीणा

वीणा हमारे देश का सर्वोत्तम बाजा है। इसका आविष्कार तञ्जोर के एक गायक ने किया था। वीणा की बनावट भी अत्यन्त मनोहर है। यह बाजा प्रायः दो हाथ लम्बा होता है और इसके दोनों सिरों पर दो तूँबे लगे होते हैं। इसके बीच में एक भुजा होती है, जिसमें प्रायः चौबीस तार लगे रहते हैं। इसे लोहे या पीतल की एक अँगूठी से—जिसे मिज़राब कहते हैं—बजाते हैं, किन्तु जो लोग इसे बजाने में विशेष निपुण होते हैं, वे अपने नाखून बढ़ा लेते हैं और उन्हीं से बाजा बजाते हैं। वीणा का स्वर अत्यन्त मधुर और मोहक होता है। इसे सभी लोग पसन्द करते हैं। शायद इसके समान मधुर स्वर वाला दूसरा कोई बाजा संसार में नहीं है। हमारे देश में इसे बजाने वाले दो ही विशिष्ट व्यक्ति हैं। एक तो रामपुर के

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

राजा साहब और दूसरी हैदराबाद सिन्ध की मिसेज़ हामद अली।

सारङ्गी

वीणा के बाद सारङ्गी का नम्बर आता है। इसके आविष्कारक उज्जैन दरबार के एक गवैया हकीम साहब थे। आपका नाम मियाँ सारङ्ग था। उनकी इच्छा एक ऐसा यन्त्र बनाने की थी, जिसका स्वर और ढाँचा ठीक मनुष्य की तरह हो। किन्तु इस प्रयोग में, बहुत परिश्रम करने पर भी, इन्हें सफलता न मिली। हार कर, अन्त में इन्होंने वीणा की भाँति ही एक नया बाजा बनाया, जिसके तार मनुष्य की नसों के समान थे। इस बाजे का नाम इन्हीं के नाम पर सारङ्गी रक्खा गया। अभी भी भारत में कुछ ऐसे लोग हैं, जो सारङ्गी पर कुछ बोल ठीक मनुष्य की तरह निकाल लेते हैं। यह बाजा एक कमान (Bow) से बजाया जाता है। इसका स्वर बहुत मीठा होता है।

सितार

अलाउद्दीन ख़िलजी के दरबार में ख़ुसरो नाम का एक गवैया था। उसने एक ऐसा यन्त्र बनाया जो देखने में वीणा और सारङ्गी से बहुत-कुछ मिलता-जुलता था। इसमें सात से लेकर बारह तार तक होते हैं। इसके निचले हिस्से में केवल एक तूँबा लगा होता है। इसे भी अँगूठी (Plectrum) से बजाते हैं। जो लोग अधिक निपुण होते हैं, वे उँगलियों से भी इसे बजा लेते हैं। इसका स्वर भी बहुत मधुर होता है और इसे प्रायः भारतवर्ष के प्रत्येक प्रान्त के लोग बजाते हैं।

दिलरुबा और इसराज

इसके बाद दिलरुबा, इसराज और ताऊस आदि अनेक बाजों का आविष्कार हुआ। इन बाजों के निर्माण का श्रेय हम किसी ख़ास आदमी को नहीं दे सकते। समय-समय पर अपनी ज़रूरत और बुद्धि के अनुसार अनेक लोगों ने मिल-जुल कर ये बाजे बनाए। ये बाजे पुराने बाजों से भिन्न नहीं हैं, बल्कि पुराने बाजों में ही कुछ हेर-फेर और सुधार कर के उन्हें दिलरुबा और इसराज आदि नाम दिया गया है। इन बाजों का प्रचार सबसे अधिक पञ्जाब में है, क्योंकि पञ्जाबी लोग अक्सर इन्हीं पर गाते हैं। गान-विद्या के प्रसिद्ध प्रेमी और हितैषी पटियाला महाराज के दरबार में गुज्जरसिंह नाम के एक पञ्जाबी गवैया थे, जिनके मुक़ाबले दिलरुबा और इसराज के बजाने वाले बहुत कम लोग थे। दिलरुबा और इसराज को बङ्गाल और मद्रास के भी कुछ अच्छे गवैये बड़े चाव से बजाते हैं।

तम्बूरा

तम्बूरा बहुत प्राचीन और प्रसिद्ध यन्त्र है। इसकी चर्चा पुराणों तक में आई है। देवर्षि नारद सदा ही भगवद्भक्ति में मस्त होकर इस पर झनकार दिया करते हैं। स्वर्ग और मर्त्य की सभी यात्राओं में यह उनका सहचर और उनके विनोद की सामग्री रहा है। अभी भी इस देश में इसका अच्छा प्रचार है और पञ्जाब में यह बहुतायत से बजाया जाता है। यद्यपि इसके साथ गाया नहीं जा सकता, तथापि सुर भरने में इससे बड़ी सहायता मिलती है। इसमें पञ्चम और सिराज, दो स्वर निकलते हैं।

तबला

तबला, पखावज और मृदङ्ग का प्रचार आज भी हमारे देश में बहुतायत से है। ये बाजे प्रायः ताल की शुद्धि के निमित्त बजाए जाते हैं और भारतवर्ष के सभी प्रसिद्ध-अप्रसिद्ध गवैये इसे बजाते हैं। तबला का प्रचार सारे भारत में अधिक है, मृदङ्ग और पखावज के बजाने वाले प्रायः बङ्गाल और मद्रास में ही अधिक हैं। इसे बजाने वाले लोग हृष्ट-पुष्ट और तन्दुरुस्त होते हैं, क्योंकि इनके बजाने में बड़ा बल लगता और हमेशा ही व्यायाम होता रहता है।

हारमोनियम

हारमोनियम का नाम हिन्दुस्तान का बच्चा-बच्चा जानता है। जितना प्रचार इस बाजे का इस देश में हुआ, उतना शायद और किसी का नहीं। लेकिन इसका मूल-स्थान भारतवर्ष नहीं है। बात यह हुई कि मुसलमानों के शासन-काल में जब अङ्गरेज़ पहले-पहल यहाँ आए, तो उन्होंने बादशाह को एक ऑरगन (Organ) भेंट किया। उस समय तो वह बाजा सँभाल कर रख दिया गया, क्योंकि उसे बजाना कोई जानता ही न था। किन्तु उसके बाद बङ्गाल के गवैयों ने उसे देख-देख कर उसी के अनुरूप एक नए बाजे का आविष्कार कर डाला।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

पहले इस बाजे पर केवल ठुमरी, क़ौवाली आदि बजाया-गाया जाने लगा। फिर ज्यों-ज्यों इसका प्रचार बढ़ता गया, इसमें अनेक प्रकार के सुधार होते गए, लोग इस पर प्रत्येक राग-रागिनी सफलतापूर्वक बजाने लगे। अब तो इस बाजे का प्रचार इतना अधिक बढ़ गया है कि जिसे ही मुँह खोलना आया, वही हारमोनियम-मास्टर बन बैठा। किन्तु भारतवर्ष में हारमोनियम के बजाने वाले भी कुछ ऐसे प्रसिद्ध व्यक्ति हैं, जो इसके बजाने में अपना सानी नहीं रखते। हारमोनियम के प्रचार से गाने-बजाने में जहाँ इतनी सुविधा हो गई है, वहीं हमारे प्राचीन वाद्ययन्त्रों को इससे हानि भी बहुत पहुँची है। धीरे-धीरे लोग सितार और वीणा आदि को भूलते जा रहे हैं।

ऑरगन, पियानो आदि पश्चिमीय वाद्य-यन्त्रों का प्रचार भी हमारे देश में हो रहा है और वह दिन दूर नहीं जान पड़ता, जब प्रत्येक स्त्री-पुरुष के लिए गाने-बजाने का ज्ञान आवश्यक समझा जाने लगेगा।

—कुमारी विद्यावती भगत

* * *

मिश्र की एक महिला

मिश्र धन-धान्य से परिपूर्ण एक मनोरम देश है। वहाँ की राजधानी 'कैरो' संसार के सुन्दरतम स्थानों में एक है। उसे लोग दूसरा पेरिस भी कहते हैं। वह नाइल नामक एक अत्यन्त सुन्दर और रमणीय नदी के तट पर बसा हुआ है। नदी के किनारे होने के कारण नगर की शोभा और भी बढ़ गई है।

किन्तु कुछ समय पहले इस समृद्ध और सुन्दर देश की सामाजिक अवस्था कैसी थी, यह जान कर आश्चर्य होता है। सबसे बुरी दशा वहाँ स्त्रियों की थी। वे केवल पुरुषों के विषय-वासना की तृप्ति का साधन मात्र समझी जाती थीं और घरों में उनकी कोई इज़्ज़त न थी। वे दिन भर खेतों में जी-तोड़ परिश्रम किया करती थीं और पुरुष घर में बैठ कर आनन्दपूर्वक समय व्यतीत किया करते थे। सिर से पैर तक लटकता हुआ काला बुर्क़ा ओढ़ कर उन्हें घर से बाहर निकलना पड़ता था, जिसमें अनेक बार उनके पैर उलझ जाया करते थे। इनमें बहुतेरी स्त्रियों की गोद में और कन्धों पर दो-दो, तीन-तीन बच्चे लदे रहते थे और अपने साथ उन्हें एक गधा भी खींच कर ले जाना पड़ता था। यह दृश्य कितना वीभत्स, कितना करुणा-जनक होता था!!!

स्त्रियों को घर से बाहर पैर रखने की भी आज़ादी नहीं थी। साधारण लोगों की बात तो दूर रहे, शिक्षित और सम्भ्रान्त कुल के पाशा लोग भी इन रूढ़ियों की सख़्त पाबन्दी किया करते थे। वहाँ की स्त्रियाँ किसी पर-पुरुष से बातचीत करने का साहस भी नहीं कर सकती थीं। यदि किसी सड़क पर बिना बुर्क़े वाली, श्वेत वस्त्र धारिणी कोई रमणी दीख पड़ती थी, तो ताड़ने वाले तुरन्त ताड़ जाते थे कि यह शिक्षा और स्वतन्त्रता के लाड़ले पश्चिम देश की देवी है। इन आत्माभिमानी स्वतन्त्र रमणियों के बीच में, काला बुर्क़ा ओढ़ कर चलने वाली स्त्रियों के मन में कैसे-कैसे भाव उठते होंगे, यह कौन जान सकता है!

काले बुर्क़े से ढकी हुई ये असभ्य स्त्रियाँ ही मिश्र देश की और उसके धन-सम्पत्ति की जननी हैं, उस समय इस बात पर कौन विश्वास कर सकता था? उस समय क्या यह बात कोई मान सकता था कि इन्हीं स्त्रियों के कठोर और अथक परिश्रम से मिश्र को लाखों रुपए सालाना की आमदनी होती है? उस समय यदि उस देश की स्त्रियाँ क्षण भर के लिए भी बुर्क़ा उतार कर फेंक देने का विचार करतीं, तो मिश्र के सात पुरखों की नाक कट जाती। कदाचित इसका कारण यह था कि वे इस बात से डरते थे कि परदा हट जाने पर जब स्त्रियाँ सब कुछ देख पावेंगी, जब वे अपनी स्थिति से संसार की स्त्रियों की तुलना करेंगी, तो स्वभावतः ही उनके मन में असन्तोष होगा और वे अधिकार तथा समानता के लिए पुरुष जाति के प्रति विद्रोही हो उठेंगी। और वैसी अवस्था में, जबकि पुरुष इन अनपेक्षित आक्रमणों के लिए तैयार न होंगे, स्त्रियों का यह विद्रोह उनके सामाजिक और गार्हस्थ्य जीवन में अत्यन्त दुर्वह और कष्टकर हो उठेगा। चिर-काल से चली आने वाली व्यवस्थाएँ विशृङ्खलित हो जायँगी और अधिक सम्भव है कि पुरुषों के हाथ से बहुत से अधिकार छिन भी जायँ। इसीसे, शायद वे इस बात की कल्पना का आघात भी नहीं सह सकते थे, नहीं सहते थे।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

परन्तु अब उस देश की स्त्रियों की दशा वैसी ही नहीं है। अब उनकी कायापलट हो गई है। वहाँ की स्त्रियाँ अपने पति, पुत्रों और मित्रों के साथ बैठ कर बात-चीत कर सकती हैं, देश की दशा पर विचार कर सकती हैं और समाज तथा राष्ट्र की हितचिन्तना में समान रूप से भाग भी ले सकती हैं। किन्तु इतना होने पर भी मिश्र की सभी स्त्रियाँ सुशिक्षित और स्वाधीन हो गई हों, यह बात नहीं है। अभी भी कितनी ही स्त्रियाँ उसी प्रकार परदा करती हैं, उसी प्रकार के लम्बे-काले बुर्क़े में ढकी हुई सड़कों पर निकलती हैं, लेकिन ऐसी स्त्रियों की संख्या कम है और क्रमशः कम ही होती जा रही है।

स्त्रियों को यह स्वाधीनता कब और कैसे प्राप्त हुई, इसकी कथा बड़ी मनोरञ्जक है। मनोरञ्जन के साथ ही भारतीय रमणियों के सीखने और अनुकरण करने लायक़ बहुत सा मसाला भी उसमें है।

घटना उन दिनों की है, जब पराधीन, विवश और निःशस्त्र मिश्र के निवासियों ने परतन्त्रता की बेड़ी तोड़ डालने का निश्चय किया था, जब वे संसार के सामने चिल्ला कर कह देना चाहते थे कि हम मरे नहीं हैं। अभी भी हमारे शरीर में उष्ण-रक्त का सञ्चार हो रहा है। अभी भी हममें स्वतन्त्र का अभिमान शेष रह गया है। हम स्वतन्त्र हैं, जीवित हैं। उस समय समाज के विधि-विधान की ओर भ्रू-क्षेप करने का अवकाश किसी को नहीं रह गया था। स्वतन्त्रता के संग्राम में मातृभूमि की पुकार सुन कर स्त्रियाँ और पुरुष—दोनों ही—समान रूप से अग्रसर हुए। माता की पुकार सुन कर न तो स्त्रियाँ चुपचाप बैठी ही रह सकीं, और न आगे बढ़ने से पुरुष उन्हें रोक ही सके। स्त्रियों ने बड़ी मुस्तैदी और सफलता के साथ इस संग्राम में पुरुषों का हाथ बटाया। और इस प्रकार स्वयं ही उन्होंने पुरुषों के समीप अपने लिए एक स्थान बना लिया।

स्त्रियों ने अपना एक बड़ा भारी जत्था बनाया, जिसकी अधिनायिका रसडी पाशा की स्त्री मई होदा बनाई गईं। यह जत्था नावों पर सवार होकर वहाँ पहुँचा जहाँ अङ्ग्रेज़ों का कमिश्नर बैठा मिश्र की स्वाधीनता से खेल रहा था। इन रण-चण्डिकाओं का जत्था इस समय भी काले वस्त्र और काला बुर्क़ा ओढ़े-पहने हुए था। जब ये स्त्रियाँ अङ्ग्रेज़ों की रेज़िडेन्सी के समीप पहुँचीं तो एक गोरे सिपाही ने फकिया होसनी नाम की एक रमणी का बुर्क़ा उतार लिया और उसको टुकड़े-टुकड़े कर डाला। उस समय वह वीर रमणी अपना मुँह छिपाने के लिए वहाँ से भाग नहीं खड़ी हुई, किन्तु उसने वहीं खड़ी होकर एक रक्तोत्तेजक प्रभावशाली व्याख्यान दिया। पहली बार, इसी दिन मिश्र से पर्दे का प्रतिकार प्रारम्भ हुआ और आगे चल कर वह सफल होता गया।

ज़गलुलपाशा यदि मिश्र की स्वाधीनता के जनक हैं, तो उनकी स्त्री जननी हैं। स्वतन्त्रता के इस महायुद्ध में दोनों ही योद्धा जीवन का मोह छोड़ कर लड़े हैं और उन्होंने विजय प्राप्त की है। आज मिश्र का राष्ट्रीय जीवन सुख और सन्तोष से भर उठा है। किन्तु इसका श्रेय किसको है? इसी युगल दम्पति को न?

मिश्र में जाकर अन्य स्त्रियों के सम्बन्ध में किसी प्रकार की पूछताछ कीजिए, सबसे पहले आपको जो नाम सुन पड़ेगा वह मई शरोई का होगा। कैरो नगर की प्रधान सड़क के पीछे इस देवी का निवास-स्थान है। वह स्थान कस्र-इल-नील कहा जाता है। इस भवन में एक बड़ा सुन्दर बग़ीचा है, जिसमें प्रवेश करने का केवल एक ही फाटक है। इस देवी का रहन-सहन, खान-पान तथा विधि-व्यवस्था किसी भी यूरोपीय महिला से कम व्यवस्थित नहीं है। इनके मकान के एक कमरे में उच्च कोटि के ग्रन्थ क़रीने से आलमारी में सजाए हुए हैं। ये इनकी अध्ययनशीलता के परिचायक हैं।

राष्ट्र की स्वाधीनता की जननी यह देवी अपनी मन्त्रिणी श्रीमती मल्ली नानरोई के साथ अब सादे और काले रङ्ग के लम्बी आस्तीन वाले वस्त्र पहने, यूरोप की महिलाओं के हाथ में हाथ मिला कर घूमा करती हैं। उनके देशवासी जब कभी इनके सम्बन्ध में बातचीत करते हैं तो बड़ी इज़्ज़त और बड़े आदर के साथ इनका नाम लेते हैं। यद्यपि उन सभी के विचार इनके विचारों से बिलकुल मिलते हों, ऐसी बात नहीं है।

श्रीमती शरोई ने स्वतन्त्रता के युद्ध में जो प्रमुख भाग लिया और जिस प्रकार की योग्यता से राष्ट्र को स्वाधीन बनाया, इसके कारण, उनके देशवासी उनके किसी विचार या कार्य में बाधा देने का साहस नहीं कर सकते। और सच्ची बात तो यह है कि वे

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

विचार-व्यवहार में आधुनिक सभ्यता के भद्देपन की झलक भी नहीं आ पाई है। इन्होंने नई रोशनी की सभ्यता और अपने आचार-व्यवहार को इस प्रकार साध रक्खा है कि इनकी ओर उँगली उठाने का किसी को मौक़ा ही नहीं मिलता। इधर कई वर्षों से ये एक स्त्रियोपयोगी मासिक पत्रिका निकाल रही हैं। इस पत्र के अतिरिक्त स्त्रियों के लिए दूसरा कोई सामयिक और उपयोगी मासिक मिश्र में नहीं है।

आजकल ये मिश्र में बहु-विवाह की कुप्रथा के विरुद्ध आन्दोलन कर रही हैं। इनका ध्यान तलाक़ आदि आवश्यक प्रश्नों की ओर भी है। इनका विचार है कि किसी पुरुष को यह अधिकार नहीं होना चाहिए कि वह किसी स्त्री को पकड़ कर इच्छानुसार अपने घर में रख सके। मिश्र के पुरुष ऐसा प्रायः किया करते हैं। ये इसके विरुद्ध घोर आन्दोलन कर रही हैं।

इनके धार्मिक और सामाजिक विचार भी बड़े प्रबल और दृढ़ हैं। इनका कहना है कि पुरुषों के समान ही स्त्रियों का भी अधिकार होना चाहिए और इस बात को ये क़ुरान से भी साबित करती हैं। ये बताती हैं कि जो लोग स्त्रियों से दासियों तथा पशुओं का सा व्यवहार करते और सफ़ाई पेश करने के लिए मुहम्मद साहब का नाम लेते हैं, वे ग़लती करते हैं और इस्लाम की तौहीन करते हैं।

इसीलिए आज मिश्र में स्वतन्त्रता है। आज वहाँ की स्त्रियाँ सब प्रकार के वस्त्र पहन सकती हैं। उनके लिए काले बुर्क़ों का ओढ़ना अब बिलकुल आवश्यक नहीं रह गया।

मेडम शरोई की अवस्था इस समय लगभग ४२ वर्ष की है। किन्तु स्वास्थ्य अच्छा होने के कारण देखने में ये इतने दिन की नहीं मालूम होतीं। इनके जीवन का लक्ष्य केवल स्त्रियों की उन्नति का मार्ग प्रशस्त करना ही है और उसी के लिए तन, मन, धन से ये बराबर कार्य करती आ रही हैं। इतने ऊँचे विचार रखते हुए और संसार के आचार-व्यवहार से परिचित होते हुए भी ये अपने रस्म-रिवाजों पर लात मार कर नहीं चलतीं, उनका तिरस्कार नहीं करतीं। ये अब भी अपने देश की प्रथा के अनुकूल पोशाक पहनती हैं और समय-समय पर बुर्क़ा भी ओढ़ती हैं।

ईश्वर इन्हें चिरायु करे और ये कुसंस्कारों से भरे, रूढ़ियों के ग़ुलाम हमारे देश की स्त्रियों के लिए उदाहरण बन सकें। हमारा विश्वास है कि यदि हमारे देश की स्त्रियाँ उनके चरित्र पर एक प्रकाशमयी नज़र डालेंगी तो वहाँ उन्हें बहुत सीखने लायक़ बातें मिल सकेंगी।

—अजेन्द्रपाल शर्मा, बी० ए०

* * *

नारी-हृदय

नारी का हृदय प्रेम, करुणा, ममता और सहानुभूति की रङ्गभूमि है।

वह कोमलता और सुन्दरता की कल्पलता है।
वह उदारता और सहनशीलता की तपोभूमि है।
वह क्षमा और त्याग की क्रीड़ास्थली है।
वह उत्थान और पतन का केन्द्र है।
वह उत्कर्ष और अपकर्ष की सीमा है।
वह विभिन्न भावनाओं का एक आश्चर्य-सम्मिश्रण है।
किन्तु, वह क्या है?

नारी स्वभाव से ही प्रेममयी, करुणामयी, ममतामयी और सहानुभूतिमयी है। ये गुण उसके चरित्र और स्वभाव के साथ—सृष्टि के आदिकाल से—मिल कर एकाकार हो गए हैं। उसके हृदय की सहानुभूति अपने-पराए सभी पर सुधा की शत-शत धाराओं के समान बरस पड़ती है। उसकी आँखों के आँसू कभी सूखते नहीं, उसके ओठों की हँसी कभी मिटती नहीं, उसके अन्तर का प्यार कभी कम नहीं होता। वह चिर-सुन्दर है, चिर-कोमल। वह उदार है दूसरों के लिए, सहनशील है अपने लिए। वह अपने प्रिय के लिए अपने सर्वस्व का त्याग कर सकती है, अपने मान-अपमान और निन्दा-स्तुति की भी चिन्ता नहीं करती। वह बड़े से बड़े अपराधी को भी, अपना गुरुतर अनिष्ट करने वाले को भी, हँसते-हँसते क्षमा-दान दे सकती है। यही नारी का हृदय है, यही नारी का स्वभाव है।

किन्तु जहाँ वह उन्नत है, वहीं वह अवनत भी है। जहाँ उसका उत्कर्ष है, वहीं उसका अपकर्ष भी है। जहाँ उसका उत्थान है, वहीं उसका पतन भी है।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

मानव-स्वभाव ही पतनशील है। जीवन में वह उठता एक बार है, गिरता अनेक बार। शायद, एक बार उठने के लिए ही, वह अनेक बार गिरता है, पतित होता है। सृष्टि के आदि से ही मनुष्य फिसलन की उस सीढ़ी पर खड़ा है, जहाँ से ऊपर चढ़ने का प्रयत्न करने पर भी उसे नीचे ही गिरना पड़ता है; गिरना उसके लिए आसान और स्वाभाविक होता है, उठना मुश्किल और अस्वाभाविक; किन्तु उसे उठना ही है। गिरना उसका लक्ष्य नहीं, वह उठने का साधन है, पथ है। वह जीवन में अनेक बार, बार-बार, कभी-कभी तो जीवन भर, इसी आशा से गिरता रहता, फिसलता रहता और पतित होता रहता है कि एक बार वह उठेगा, उन्नत होगा! उठने से गिरने का नित्य सम्बन्ध है। उठने के लिए गिरना नितान्त अपेक्षित है!!

दो परस्पर प्रतिकूल तत्वों से शायद संसार का ही निर्माण हुआ है। अन्धकार न हो तो आलोक की कोई क़द्र ही क्यों करे? दुःख न हो तो सुख में मज़ा ही क्या रह जाय? वियोग न हो तो संयोग की कामना ही कोई क्यों करे?

किन्तु इस प्रतिकूलता में ही सृष्टि के आनन्द का रहस्य छिपा हुआ है। अभाव आकांक्षा का जनक है। अभाव, जीवन का चिन्ह है। अभाव से ही प्राणों में पूर्ति की इच्छा का उद्रेक होता है। अभाव में आकर्षण है, मोहकता है, पूर्ति की आकांक्षा है। यदि हमारे जीवन में कोई अभाव न हो, हमारा जीवन चारों तरफ़ से पूर्ण हो, तो सम्भवतः सबसे अधिक अप्रीतिकर और जी उबाने वाली बात जो हमारे लिए होगी, वह हमारे जीवन के अतिरिक्त और कुछ न होगी। भला, वह भी कोई जीवन है जिसमें न हलचल हो, न सुख-दुःख का द्वन्द्व हो, न आशा और निराशा का घात-प्रतिघात हो? सर्वदा एक भाव, एक रस रहने वाला जीवन कितना अप्रीतिकर, कितना अवाञ्छनीय होगा? ओः!

नारी के हृदय के सम्बन्ध में भी यही बात है। यदि एक बार वह प्यार कर सकती है, तो उपेक्षा से, घृणा से, तिरस्कार से, दूसरी बार वह ठुकरा भी सकती है। एक बार यदि वह सहनशीला हो सकती है, तो दूसरी बार घोर असन्तोषमयी होकर चण्डिका का रूप भी धारण कर सकती है। उपेक्षापूर्वक मुसकुरा कर यदि वह एक बार भयङ्कर से भयङ्कर अपराध को क्षमा कर सकती है, तो दूसरी बार उसे ही वह कठोर से कठोर दण्ड देने में भी सङ्कुचित नहीं होती। वह कोमल भी है, कठोर भी। वह सरल भी है, क्रूर भी। बूढ़ों की तरह वह विचारशीला भी है और बच्चों की भाँति अपरिणामदर्शिनी भी। किन्तु क्रूरता, कठोरता, कुटिलता, उसके स्वभाव नहीं हैं। परिस्थितियों की विषमता और संसार के निष्ठुर घात-प्रतिघात उसे ऐसा बनने के लिए बाध्य करते हैं। वह प्रेम करने के लिए ही ईर्ष्या करती है, वह क्षमा करने के लिए ही दण्ड देती है, वह सहन करने के लिए ही असहनशीला हो उठती है। उसके क्रोध में भी प्रेम है। उसके तिरस्कार में भी आदर है। उसकी उपेक्षा में भी उसके हृदय का आकुल आह्वान प्रतिबिम्बित रहता है। नारी का हृदय ऐसा ही है। किन्तु वह क्या है?

स्त्री और पुरुष, दोनों ही सृष्टि की महाशक्तियाँ हैं; किन्तु एक दूसरे के बिना दोनों ही अपूर्ण हैं, अधूरे हैं। पूर्ण होने के लिए दोनों का सहयोग अपेक्षित है। मिल कर, एकाकार होकर ही वे संसार में कुछ कर कर सकते हैं। दोनों में ही अभाव है, दोनों में ही अपूर्णता है, और इसी लिए उनमें एक-दूसरे से मिलने की आकांक्षा है, प्रवृत्ति है। पुरुष और स्त्री का पारस्परिक सम्मिलन आत्मा का सम्मिलन है। एक दूसरे के बिना अधूरा है।

संसार के एक प्रसिद्ध लेखक का मत है—पुरुष की क्षमता ऐश्वर्य में है और स्त्री की दरिद्रता में। जहाँ पुरुष दुर्बल है, वहीं स्त्री की शक्ति प्रकट होती है। पुरुष सर्वस्व प्राप्त कर सकता है और स्त्री सर्वस्व दे सकती है। पुरुष के लिए अप्राप्य कुछ भी नहीं है और स्त्री के लिए अदेय। पुरुष स्त्री को गिरा कर खड़ा रहता है और स्त्री गिर कर भी पुरुष की रक्षा करती है। अपने धर्म की रक्षा के लिए पुरुष स्त्री का परित्याग कर सकता है और परित्यक्त होकर भी स्त्री पुरुष के धर्म की रक्षा करती है। स्त्री पृथ्वी की कल्प-लता है। जब पुरुष अकिञ्चन हो जाता है, तब वह स्त्री से सर्वस्व प्राप्त कर सकता है।

—प्रफुल्लचन्द्र ओझा 'मुक्त'

* * *

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

महात्मा गाँधी की धर्मपत्नी

आदर्श रमणी-रत्न श्रीमती कस्तूरीबाई गाँधी

जिनके नेतृत्व में हज़ारों सुशिक्षित महिलाएँ गुजरात तथा बम्बई के विभिन्न स्थानों में शराब की दूकानों पर धरना दे रही हैं !

FINE ART PRINTING COTTAGE ALLAHABAD

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

मालिका

जिसके रचयिता हैं—हिन्दी-संसार के सुपरिचित

कवि और लेखक—पं० जनार्दनप्रसाद झा, 'द्विज' बी० ए०

यह वह 'मालिका' नहीं जिसके फूल मुरझा जायँगे, यह वह 'मालिका' नहीं जो दो-एक दिन में सूख जायगी; यह वह 'मालिका' है जिसकी ताज़गी सदैव बनी रहेगी। इसके फूलों की एक-एक पङ्खुरी में सौन्दर्य है, सौरभ है, मधु है, मदिरा है। आपकी आँखें तृप्त हो जायँगी, दिमाग़ ताज़ा हो जायगा, हृदय की प्यास बुझ जायगी, आप मस्ती में झूमने लगेंगे।

आप जानते हैं द्विज जी कितने सिद्ध-हस्त कहानी लेखक हैं। उनकी कहानियाँ कितनी करुण, कोमल, रोचक, घटनापूर्ण, स्वाभाविक और कवित्वमयी होती हैं। उनकी भाषा कितनी वैभवपूर्ण, निर्दोष, सजीव और सुन्दर होती है। इस संग्रह की प्रत्येक कहानी करुण-रस की उमड़ती हुई धारा है, तड़पते हुए दिल की जीती-जागती तस्वीर है। आप एक-एक कहानी पढ़ेंगे और विह्वल हो जायँगे; किन्तु इस विह्वलता में अपूर्व सुख रहेगा।

इन कहानियों में आप देखेंगे मनुष्यता का महत्व, प्रेम की महिमा, करुणा का प्रभाव, त्याग का सौन्दर्य! आप देखेंगे वासना का नृत्य, मनुष्य के पाप, उसकी घृणा, क्रोध, द्वेष आदि भावनाओं का सजीव चित्रण! कहानियों के चरित्र इतने स्वाभाविक हैं कि आप उनमें अपने को, अपने परिचितों को ढूँढ़े बिना ही पा जायँगे। आप देखेंगे कि उनके अन्दर लेखक ने किस सुगमता और सच्चाई के साथ ऊँचे आदर्शों की प्रतिष्ठा की है।

इसलिए हमारा आग्रह है कि आप 'मालिका' की एक प्रति अवश्य मँगा लीजिए नहीं तो इसके बिना आपकी आलमारी शोभाहीन रहेगी। हमारा दावा है कि ऐसी पुस्तक आप हमेशा नहीं पा सकते। अभी मौक़ा है—मँगा लीजिए!

व्यवस्थापिका,
'चाँद' कार्यालय
चन्द्रलोक
इलाहाबाद

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

पति को ख़ुश कैसे रखना चाहिए ?

जब तुम्हें अपना पति चुनने के लिए कहा जावे, तो तुम किसी धनी को मत चुनो। मनुष्य के पास जितना अधिक धन रहता है, उतनी ही अधिक उसके चरित्र के अपवित्र होने की सम्भावना रहती है। सिर्फ़ इतना ही नहीं, जीवन के सच्चे सुख के लिए यह आवश्यक है कि पति अच्छे स्वभाव का हो।

किसी भी कुटुम्ब में कलह या अशान्ति का होना सम्भव नहीं है, यदि स्त्री पति के सुख की सामग्री इकट्ठी कर सकती है और उनकी सेवा करके उन्हें प्रसन्न करने का तरीक़ा जानती है।

मैंने देखा है कि कई वैवाहिक बन्धन इसलिए तोड़ दिए गए हैं कि स्त्री को ठीक भोजन बनाना नहीं आता, अतएव स्त्रियों को पाक-शास्त्र का अच्छा ज्ञान होना ज़रूरी है। अच्छे भोजन से प्रकृति ठीक बनी रहती है और मन प्रसन्न रहता है। मन की प्रसन्नता पर ही जीवन का सुख निर्भर है।

तुम्हें यह मालूम होना चाहिए कि कब तुम्हें चुप रहने की ज़रूरत है। यदि पतिदेव नाराज़ हैं तो अपनी नाराज़ी उनके साथ मिला कर कलहाग्नि प्रज्वलित मत करो। तुम्हारे चुप रहने से सिर्फ़ कलह ही नहीं रुकता; परन्तु पति को भी अपनी नाराज़ी के लिए पश्चात्ताप होने लगता है।

यदि तुम अपने पति के दिल में यह बात जमाना चाहती हो कि मुझे एक स्त्री-रत्न मिला है, तो तुम्हारा यह कर्त्तव्य है कि तुम भी यह बात ज़ाहिर करो कि मुझे एक गुणी पुरुष-रत्न मिला है।

यदि तुम्हें चिढ़ने की आदत है तो उस पर शीघ्र ही विजय प्राप्त करो।

पति के सामने अधिक सोना ठीक नहीं है।

अपने पति के दुर्गुणों की ओर ध्यान न दो। परन्तु तुम्हारे हृदय में उनके लिए जो स्थान है उस पर पूरी तरह से प्रकाश डालो। तुम्हारा उनके प्रति जो कुछ प्रेम है उसे छिपा कर मत रक्खो। उसी सच्चे प्रेम को देख कर वे सन्तुष्ट हो सकेंगे। सन्तोष ही सुख की कुञ्जी है।

वे जो बात कहते हैं, उसे ध्यान देकर सुनो। इस बात की परवाह मत करो कि वह तुम्हारे मतलब की नहीं है। सारी बातों का अभिप्राय यह है कि अपने सब दुर्गुणों को हटाओ। इसका परिणाम यह होगा कि पति के दुर्गुण भी—यदि कोई होंगे तो—आप ही हट जावेंगे, तभी एक से दो हृदयों का मिलन होगा। तभी सच्ची सुख-प्राप्ति होगी।

—सौ० सरस्वतीबाई देव

* * *

व्यभिचार क्यों फैला ?

"व्यभिचार" शब्द सुनते ही मनुष्य के हृदय में घृणा, उपेक्षा और अप्रीति के भाव उठ खड़े होते हैं। यह स्वाभाविक है। किन्तु फिर भी हमारे देश में व्यभिचार की वृद्धि हो रही है। सबसे आश्चर्य की बात तो यह है कि हमारा देश वह देश है जहाँ भीष्म से ब्रह्मचारी पैदा हुए थे, लक्ष्मण से जितेन्द्रिय। जहाँ राम, कृष्ण और युधिष्ठिर ने जन्म धारण किया था। यद्यपि आज वे विश्व-वन्द्य पुरुष-पुङ्गव हमारे देश में नहीं रहे, लेकिन उनकी कीर्ति-कहानी आज भी हमारे कानों में गूँज रही है। आज भी उनके पुनीत कार्यों की स्मृति हमारे हृदय को बल, उत्साह और उत्तेजना से भर देती है। आज भी हम अपने पूर्वजों के नाम पर लाखों रुपए व्यय करते हैं, मन्दिर बनवाते हैं और उनमें स्थापित देवताओं की पूजा करके भगवान् रामचन्द्र व महात्मा श्रीकृष्ण के भक्त होने का दम भरते हैं; परन्तु इतना होने पर भी आज भारत-वर्ष में दिन-प्रतिदिन व्यभिचार की वृद्धि होती जा रही है !! इसका कारण क्या है ?

साधारण व्यक्तियों को जाने दीजिए, जो भगवान् के भक्त कहे जाते हैं, रामनामी दुपट्टा ओढ़ते हैं, लम्बे-चौड़े तिलक लगाते हैं, ठाकुरजी के सामने आड़े-तिरछे खड़े होकर प्रार्थना करते हैं और दिन-रात माला फेरा करते हैं, इतना ही नहीं, बल्कि उठते-बैठते, सोते-जागते जिनके मुँह में राम-राम की ही रट लगी रहती है, उनके व्यवहारों का भी जब पता लगाया जाता है, तो मालूम पड़ता है कि अमुक सज्जन ने अमुक स्त्री के गर्भ रख दिया और लोक-भय से गिरा दिया। अमुक सज्जन का अमुक स्त्री से अनुचित सम्बन्ध है। अमुक स्त्री का अपने श्वसुर

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

अथवा जेठ से ताल्लुक़ है! कहने का तात्पर्य यह कि दिन-प्रतिदिन व्यभिचार व भ्रूण-हत्या आदि की अधिकता होती जा रही है। कोई भी समाचार-पत्र ऐसा देखने में नहीं आता जिसमें भ्रूण-हत्या आदि के विषय में कुछ न कुछ समाचार न रहता हो। यह सब कुछ होने पर भी लोग अपने को ईश्वर-भक्त और धर्मात्मा समझे बैठे हैं, यह कितने आश्चर्य की बात है!!

इन सब बातों पर विचार करने से ज्ञात होता है कि आज भारतवासियों का अधःपतन वेद और शास्त्रों के पठन-पाठन छोड़ने के कारण हुआ है। आज लोगों ने भगवान् मनु के उपदेश को भुला दिया है; आज महर्षि पराशर जी के अध्याय ४ के २० और २१ वें श्लोक को लोग भूल गए हैं। यदि उन्होंने नीचे लिखे श्लोक को याद रक्खा होता, तो ऐसा अनर्थ करने का साहस उन्हें कदापि न होता। यदि आज लोगों ने "अनुज-वधू भगिनी सुत-नारी, सुन शठ कन्या सम ये चारी" वाली चौपाई पर ही विचार किया होता तो वे अपने घरों में व्यभिचार न करते। महर्षि पराशर जी कहते हैं :—

यत्पापं ब्रह्महत्यायां द्विगुणं गर्भपातने।
प्रायश्चित्तं न तस्यास्ति तस्यास्त्यागो विधीयते॥

अर्थात्—जो पाप ब्रह्म-हत्या का है, उससे दूना गर्भपात करने का है। गर्भपात करने वाले अथवा कराने वाली का प्रायश्चित्त कुछ नहीं है; किन्तु उसका त्याग ही कर देना चाहिए। इसके पूर्व और पश्चात महर्षि पराशर जी ने अनेक बड़े से बड़े पापों के प्रायश्चित्त बताए हैं; परन्तु गर्भपात करने वालों का कोई प्रायश्चित ही नहीं बतलाया। इसी प्रकार अन्य अनेक धर्म-ग्रन्थों में भ्रूण-हत्या करने वाले के समान पापी कोई नहीं ठहराया गया। परन्तु जब से पौराणिक धर्म का प्रचार हुआ है, तभी से इस देव-भूमि पर भ्रूण-हत्या और दुराचार व व्यभिचार की अधिकता हुई है। अब "अवश्यमेव भोक्तव्यं कृते कर्म शुभाशुभम्" के महत्वपूर्ण आदर्श को लोगों ने पैरों तले कुचल कर अपना ध्येय पुराण को बना लिया है। उन्होंने समझ लिया है कि यदि हम असंख्य पाप भी कर लें, तब भी एकादशी के व्रत करने से सब पापों से मुक्त हो जायँगे। गङ्गा-स्नान

गुजरात की सत्याग्रही महिलाओं का जत्था, जो श्रीमती कस्तूरीबाई गाँधी के नेतृत्व में शराब और विदेशी वस्त्रों के बहिष्कार का आन्दोलन कर रहा है।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

से हम सीधे स्वर्ग चले जायँगे। शिवरात्रि का व्रत तो हमें करोड़ों पापों से मुक्त कर देगा, इसलिए जब थोड़े से परिश्रम से ही हमें मुक्ति मिलती है—अनेकानेक पाप करने की आज्ञा मिलती है, तो हमें क्या आवश्यकता है जो हम "अवश्यमेव भोक्तव्यं" की ओर

अर्थात्—दस सहस्र राजसूय यज्ञ करने से जो फल प्राप्त होता है, वही फल इस व्रत के करने वाले को प्राप्त होता है। करोड़ों गौदान करने वाले को जो फल होता है, वही फल इस व्रत के करने से होता है। केवल इतना ही नहीं, आगे और भी हद कर दिया है :—

काशी की सत्याग्रही महिलाएँ नमक बना रही हैं

ध्यान दें? यही कारण है कि आज इस देश में पैशाचिक कृत्यों की भरमार हो रही है। कुछ समाचार-पत्र भी ऐसे हैं, जिनमें इन बातों का विशेष प्रतिपादन किया जाता है। हमें दुःख है कि इन समाचार-पत्रों के ऐसे लेखों से जनता में अन्धकार की वृद्धि होती जा रही है।

एक बार किसी पत्र में महा शिवरात्रि व्रत का माहात्म्य हमारे पढ़ने में आया था। लेखक महोदय ने माहात्म्य वर्णन करते हुए ये श्लोक उद्धृत किए थे :—

राजसूयायुतं यज्ञात् यत्फलं लभते नरः।
शिवरात्रि व्रतं कृत्वा तत्फलं समवाप्नुयात्।
कपिलादान कोटीनां कर्ता यल्लभते फलम्।
शिवरात्रि व्रतं कृत्वा तत्फलं लभते नरः॥
सप्त सागर संयुक्तां महीं दत्वा तु यत्फलम्।
शिवरात्रि व्रतं कृत्वा तत्फलं लभते नरः॥
सुरापान सहस्राणि भ्रूणहत्या युतानि च।
वीरहत्या सहस्राणि नश्यन्ति व्रत दर्शनात्॥
गवांहत्या सहस्राणि चाण्डाली गमनायुतम्।
शिवरात्रि व्रतं दृष्ट्वा तानि नश्यन्ति तत्क्षणात्॥

अर्थात्—सातों समुद्र सहित पृथ्वी के दान करने से जो फल होता है, वही इस व्रत के करने से प्राप्त होता है। सहस्रों बार मदिरा-पान करने से, दस हज़ार गर्भ नष्ट करने से, सहस्रों वीरों की हत्या करने से जो पाप लग गया हो, सहस्र गौ-हत्या, दस सहस्र बार चाण्डालिनी के प्रसङ्ग

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

करने से जो पाप हो गए हों, वे सब शिवरात्रि व्रत के करने से तथा उस महाव्रत के दर्शन-मात्र से उसी समय नष्ट हो जाते हैं। यदि ऊपर लिखे श्लोकों से संसार में पापों की वृद्धि न हो तो और हो ही क्या सकता है? ये श्लोक साफ़-साफ़ पापों को प्रश्रय देते और पाप करने के लिए मनुष्य को उत्तेजित करते हैं। इन श्लोकों को सत्य मानने और इन पर विश्वास रखने वालों की कमी हमारे देश में नहीं है, और पापों का विनाश तथा उनसे उद्धार पा लेना जब इतना आसान है तब पतनशील संसार में कौन एक बार बहती गङ्गा में हाथ धो लेने के लिए अधीर न हो उठेगा? क्योंकि उसे विश्वास है कि वह कैसा भी पाप क्यों न करे, फाल्गुन १४ का व्रत करने से उसके पाप नष्ट हो ही जायँगे। ऐसी अवस्था में हमारी राय तो यह है कि जेलख़ाने के समस्त क़ैदियों को छुड़वा कर उनसे शिवरात्रि का व्रत करा देना चाहिए। यदि वे न कर सकें तो दर्शन ही करा देना चाहिए और भारत-सरकार को भी चाहिए कि यह हमल इस्तकात् व अन्य धार्मिक और सामाजिक क़ानूनों, क़ानूनी दफ़ाओं को बन्द कर दे। क्योंकि शिवरात्रि व्रत करने वाले को किसी भी कानून की आवश्यकता ही न रह जायगी।

दुःख है कि इस पुण्यमयी भारत-भूमि पर ऐसे पाठों और माहात्म्यों के कारण दिन-प्रतिदिन पाप की वृद्धि होती जा रही है। इसी प्रकार गङ्गा-स्नान से सारे पापों का नाश होना बतलाया गया है :—

गङ्गा गङ्गेति यो ब्रूया-
द्योजनानां शतैरपि।
मुच्यते सर्व पापेभ्यो
विष्णुलोकं स गच्छति।
हरिर्हरति पापानि
हरिरित्यक्षरद्वयम्।
प्रातःकाले शिवं दृष्ट्वा
निशि पापं विनश्यति॥
आजन्म कृत मध्याह्ने
सायाह्ने सप्त जन्मनाम्।

अर्थात्—चार सौ कोस से गङ्गा-गङ्गा कहने वाला सारे पापों से मुक्त होकर सीधा विष्णु-लोक को चला जाता है। 'हरि' इन दो अक्षरों का नामोच्चारण समस्त पापों को दूर कर देता है और प्रातःकाल में जो मनुष्य शिव (मूर्ति) का दर्शन करे, तो रात्रि में किया हुआ, और मध्याह्न में करे तो जन्म भर का और सायङ्काल में दर्शन करे तो सात जन्मों का पाप छूट जाता है। यह दर्शन का माहात्म्य है!!

यह बात साधारण बुद्धि में भी आ सकती है कि यदि ऊपर लिखे अनुसार अनेक प्रकार के माहात्म्य न बने होते और पौराणिक मत का प्रचार न हुआ होता तो आज इस गौरवमयी भूमि पर पाप, दुराचार, अत्याचार और अत्याचार की इतनी भरमार न होती! यदि हमारा

श्रीमती स्वरूपरानी नेहरू

पं० मोतीलाल जी नेहरू की सुयोग्य धर्मपत्नी। आप राष्ट्रीय झण्डा लिए हुए स्थानीय म्युनिसिपल मार्केट (विदेशी कपड़े का बाज़ार) के दरवाज़े पर धरना दे रही हैं।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

लक्ष्य वेद और शास्त्रों के ऊपर होता—यदि हमारा ध्येय अपने कर्त्तव्य होते और हम ईश्वर को न्यायकारी व सर्वान्तर्यामी समझते तो निःसन्देह आज भगवान् रामचन्द्र और श्रीकृष्ण के योग्य वंशज होने का गौरव हमें प्राप्त होता और इस प्रकार अनाचार और भ्रूण-हत्या व व्यभिचार आदि की अधिकता भी न दीख पड़ती। हमारा उद्देश्य "अवश्यमेव भोक्तव्यं कृते कर्म शुभाशुभम्" का न रहा, इसी कारण भारतवर्ष में व्यभिचार फैला। यही इसका तात्पर्य है। आशा है, हमारी इस बात पर हमारी पाठक-पाठिकाएँ कुछ विचार करने का कष्ट उठावेंगी।

—गङ्गाराम गुप्त

* * *

मध्य-अफ्रिका की एक विचित्र प्रथा

अफ्रिका के एक प्रदेश के लोग अपनी वाग्दत्ता पत्नी के ओठों को काट कर विवाह की बात पक्की करते हैं। सारास-जिङ्गेस प्रदेश का कोई युवक जब किसी कृष्ण-वर्णा सुन्दरी के प्रेम-पाश में आबद्ध होकर अस्थिर हो जाता है, तब वह निम्न-लिखित रीतियों द्वारा उसके साथ विवाह स्थिर करता है। उस सुन्दरी के दोनों ओठों को समान भाव से आधे इञ्च के परिमाण में चौड़ा करके उसमें छेद कर देते हैं। किसी पेड़ के काँटा अथवा धारदार अस्त्र द्वारा यह कार्य सम्पन्न होता है। इसके बाद उन दोनों छिद्रों में दो पतली-पतली लकड़ियों के टुकड़े (१/८ इञ्च के व्यास वाले) भर देते हैं। कुछ सप्ताह के बाद बड़े माप की दो मोटी लकड़ियों के टुकड़े उन पतली लकड़ियों के स्थान में भर देते हैं। ये लकड़ियाँ ओठ की अपेक्षा लम्बी नहीं होतीं तथा दाँत के अन्तिम भाग को स्पर्श करती रहती हैं। यह कार्य समाप्त होते ही उस रमणी की गणना उस ग्राम की सुन्दरी स्त्रियों में होने लगती है।

यह क्रिया करने के समय उस स्त्री की वयस बहुत थोड़ी रहती है। उसको उस समय बालिका ही कहना उचित होगा। अफ्रिका की अनेक जाति के लोग अति अल्प वयस की बालिका को ही अपनी भावी पत्नी स्थिर कर लेते हैं। भावी पत्नी की अवस्था तीन-चार मास की भी होती है। बालिका की पाँच से दस वर्ष की अवस्था के भीतर ओष्ठ-छेदन क्रिया होती है।

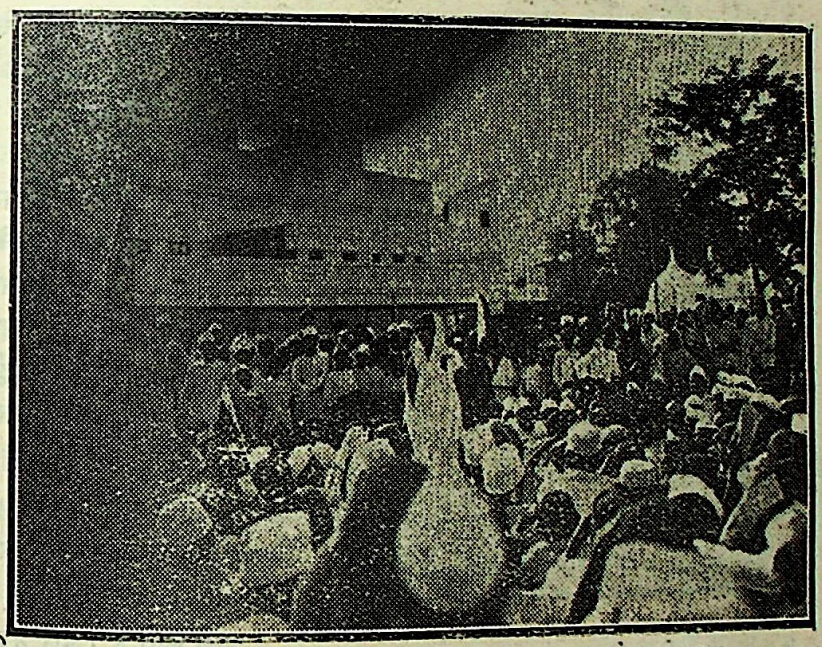

स्थानीय मोतीपार्क में विद्यार्थियों की विराट सभा
प्रयाग विद्यार्थी-मण्डल की सभानेत्री श्रीमती विजयलक्ष्मी पण्डित विद्यार्थियों को उत्साहित कर रही हैं।

इस 'सारास-जिङ्गेस' जाति को अनेक लोग भूल से 'सारास-कावास' कहते हैं। यह जाति याद झील के दक्षिण ओर, साहरि नदी के दक्षिण किनारे पर तथा अरब के सालामात प्रदेश के मध्य में निवास करती है। भूत-प्रेत की पूजा इनमें अधिक प्रचलित है। पुरुष अपने ही हाथ का बुना हुआ कपड़ा पहनते हैं और स्त्री पत्ते के बने छोटे-छोटे वस्त्रों के टुकड़े पहना करती हैं। इस प्रदेश की भूमि उर्वरा है, तथापि यहाँ के निवासी बहुत ही ग़रीब हैं। इस जाति के लोग जीवन-निर्वाह के लिए सिर्फ़ दो-

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

एक बहुत ज़रूरी फ़सलों को छोड़ कर और किसी चीज़ की खेती नहीं करते।

फ़्रान्सीसियों के आने के पूर्व यह स्थान वाडाई एवं अन्यान्य सुलतानों के क्रीतदास संग्रह करने का प्रधान केन्द्र था। वर्ष में एक बार सुलतान की सेना अस्त्र-शस्त्र लेकर इस जिङ्गेस जाति पर धावा करती थी तथा लूट-पाट मचाती थी। इस आक्रमण से डर कर उस जाति के लोग समय-समय पर उत्तर तथा पूर्व की ओर भाग जाते थे। रास्ते के कष्ट तथा क्षुधा और तृष्णा के कारण उन

कुमारी ललिता पाठक, एम० ए०

आप स्वर्गीय कविश्रेष्ठ पं० श्रीधर जी पाठक की कन्या हैं और इस वर्ष प्रयाग-विश्वविद्यालय से एम० ए० की परीक्षा में उत्तीर्ण हुई हैं।

लोगों को अन्त में पराजय स्वीकार करना पड़ता था। जो लोग इतना कष्ट सहन करने के बाद भी वश्यता नहीं स्वीकार करते थे उन्हें मिश्र देश में भगा दिया जाता था। ट्रिपॉली तथा टर्की में भी उन्हें कभी-कभी भगा दिया जाता था। इसी कारण 'सारास-जिङ्गेस' जाति सदा इन सब आक्रमणकारियों के भय से त्रस्त रहा करती थी। बहुत लोगों की धारणा है कि ओठ काटने की प्रथा का आविर्भाव इसी समय से हुआ था। वे लोग समझते थे कि इस प्रकार स्त्रियों का रूप विकृत कर देने से उन पर कोई अन्य जाति अत्याचार नहीं कर सकेगी तथा आक्रमणकारी भी अपने आक्रमण को कम कर देंगे। किन्तु इस मत के समर्थक बहुत कम लोग थे।

फ़्रान्सीसियों ने इस देश को दख़ल कर ओष्ठ-छेदन प्रथा को रद कर दिया। एक विशेषज्ञ व्यक्ति का कथन है—इस ओष्ठ-छेदन प्रथा का विकास स्त्रियों को पुरुष के बन्धन से मुक्त करने के लिए नहीं हुआ था—सम्भवतः उस प्रदेश की स्त्रियों ने सौन्दर्य-वृद्धि ही के लिए इस प्रथा का अनुसरण किया था। अपने मत के समर्थन में उनका कथन है कि—"दासत्व की प्रथा से मुक्ति पाने के लिए यदि यह प्रथा स्त्रियों में प्रचलित रहती तो पुरुष जाति भी इस प्रथा का अनुसरण अवश्य करती। कारण मुक्ति पाने की लालसा दोनों में प्रायः एक ही सी थी।" इस जाति को छोड़ कर अफ़्रिका के अन्य सभी अञ्चलों की असभ्य स्त्रियाँ अपनी सौन्दर्य-वृद्धि के लिए कष्ट सह कर अपने सभी अङ्गों को इसी तरह छेदवाती हैं। बहुत अनुसन्धान करने के बाद डॉ० मुराज (Dr. Muraz) ने यह आविष्कार किया कि बालिकाओं का विवाह स्थिर होते ही यह ओष्ठ-छेदन क्रिया की जाती है। कुछ काल अनन्तर यह प्रथा इस जाति में आभूषण-सम्मान के रूप में देखी जाने लगी।

इस प्रथा के विकास का कारण चाहे जो हो, किन्तु इसका फल अत्यन्त भयानक होता है। वे लोग ओठ के भीतर प्रविष्ट काठ के टुकड़े के आयतन में क्रमशः वृद्धि करते जाते हैं। इस प्रकार कुछ वर्ष के बाद ओठ के आयतन परिधि में इतने बढ़ जाते हैं कि देखने से वे दो तश्तरी के समान मालूम होते हैं। नीचे के ओठ का मांस तौल तथा परिधि में ऊपर के ओठ की अपेक्षा बड़ा होता है। सर्व-प्रथम ये दोनों ओठ सीधी तश्तरी के सदृश जान पड़ते हैं, किन्तु बाद में मांस का तौल बढ़ जाने पर वे झूलने लगते हैं। कुछ खाने अथवा पीने के समय इन मांस-तश्तरियों को सुविधानुसार पकड़े रहना पड़ता है। ऐसी अवस्था में स्त्रियाँ आपस में विशेष बातचीत नहीं कर पातीं। सङ्केतों द्वारा ही अनेक कार्य साधित होते हैं। मिट्टी के बने पाइप द्वारा ये लोग धूम्रपान करती हैं। इस जाति के पुरुष ओठ को छोड़ कर अपने शरीर के प्रायः सब अङ्गों को विशेष प्रकार के चिन्हों द्वारा चित्रित कराते हैं। तश्तरी के समान ओठ के ऊपर भी यह क्रिया

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

अनेक प्रकार की चित्रकारी बनाती है। जो स्त्री देखने में सर्वापेक्षा भीषण होती है वही अपने पति की दृष्टि में सब से अधिक सुन्दरी समझी जाती है।

फ्रान्सीसी लोग आजकल काङ्गो राज्य के एक प्रदेश में शासन करते हैं। विगत महायुद्ध के फल-स्वरूप यह उपनिवेश उन लोगों के हाथ लगा है। इस प्रदेश से नर-मांस खाने की प्रथा का मूलोच्छेदन करने की चेष्टा फ्रान्सीसी लोग कर रहे हैं। आशा की जाती है कि बहुत शीघ्र ही इस भयानक प्रथा की जड़ कट जायगी। अफ्रिका में एक प्रकार की असभ्य जाति है, वह मांस के लिए नरहत्या करती है। नर-रक्त उसे बहुत ही प्रिय है। इस जाति के लोग "Black Panthers" अर्थात् "काला चीता" के नाम से विख्यात हैं! वर्तमान फ्रान्सीसी सरकार इन समस्त भीषण प्रथाओं का मूलोच्छेद करने तथा वहाँ की असभ्य जनता में शिक्षा-प्रचार करने का भगीरथ-प्रयत्न कर रही है।

—बख्शी उमेशप्रसाद सिंह, बी० ए०

* * *

स्त्रियों पर अनुचित दबाव

न्याय सभी चाहते हैं—छोटे-बड़े, अमीर-ग़रीब, समर्थ-असमर्थ। जहाँ न्याय की प्रतिष्ठा और आदर नहीं, वहाँ पिशाचों का नग्न-नृत्य होता है। स्वार्थपरता की छत्र-छाया में रह कर मानव-समाज पैशाचिक आनन्द में विभोर हो उठता है। उसे इस बात की याद भी नहीं रहती कि अन्याय का आतङ्क शीघ्र ही नष्ट हो जायगा।

स्त्री-पुरुष का युग्म विश्व-स्रष्टा की श्रेष्ठ सृष्टि है, विमल विभूति है। दोनों के हाथों में सृष्टि-सञ्चालन का महान कार्य-भार सौंपा गया है। दोनों एक ही पथ के पथिक हैं और एक ही साधना के साधक। फिर भी समाज इन मामूली बातों को समझना नहीं चाहता और उनका विकास रोक कर अपना ही मार्ग कण्टकाकीर्ण बनाता है।

जहाँ प्राचीन समय में स्त्रियाँ "गृहिणी सचिवः सखी" कहलाती थीं, वहाँ अब वे पैरों की जूतियाँ और दासी कही जाने लगी हैं। जब समाज ने ही स्त्री-शिक्षा को ठुकरा कर नारियों का चिर-प्राप्त अधिकार छीन लिया—अर्थात् गृहिणी होने की आशा-लतिका को पनपने के पहले ही सुखा दिया—तब अज्ञान के गहरे गड्ढे में पतित सुकुमारियाँ सचिव किस प्रकार हों, और सखी कहलाने की ही योग्यता कैसे प्राप्त करें?

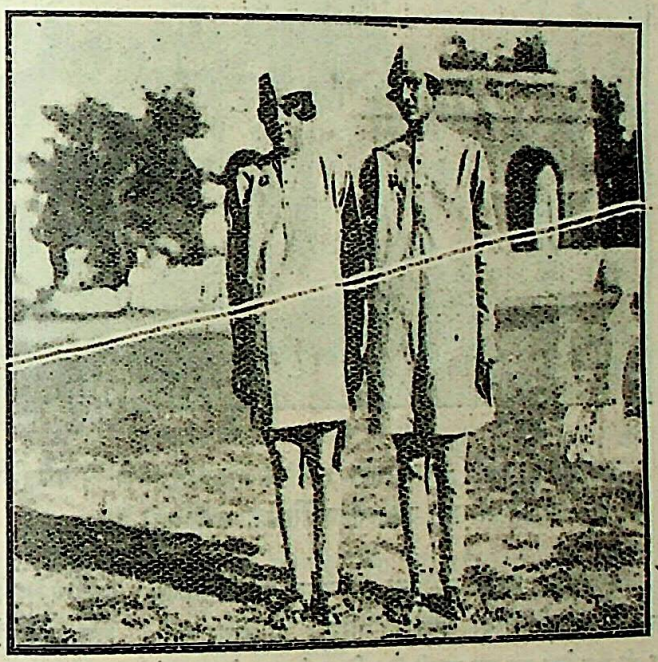

खद्दर की मर्दानी पोशाक में कॉङ्ग्रेस के स्वयंसेवक की हैसियत से कार्य करने वाली (दाहिनी ओर) पं० जवाहरलाल नेहरू की धर्मपत्नी श्रीमती कमला नेहरू तथा (बाईं ओर) पं० जवाहरलाल नेहरू की छोटी बहिन कुमारी कृष्णा नेहरू।

भला यह किस देश की सभ्यता है? जो हमारे लिए सब कुछ करने को तैयार है, प्राण तक न्यौछावर कर देती है, उसका सत्कार हम लाल आँखों और झिड़कियों से करें; जो हमारी मृत्यु के बाद असीम यातना झेलती और हमारी स्मृति में ही द्रौपदी के चीर-सा लम्बा जीवन सूने मन से बिता देती है, उसकी मौत के बाद हम दो बूँद आँसू गिराने के बदले नई दुलहिन पाने की ख़ुशी में फूले नहीं समाते! सुन्दरी, सुशीला और कार्य-

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

कुशला को भी घुल-घुल मरने के लिए छोड़ कर हम बार-वनिताओं के चरण चूमें और हमारे जैसे अहदी, कुरूप तथा नपुंसक के लिए भी वह अपने अमूल्य जीवन की माया छोड़ ज़हर का प्याला पिए ? ओः !

स्वार्थत्याग की मात्रा भी स्त्रियों में परले दर्जे की है। बचपन में ही वह माता-पिता की ममता को विसर्जित कर नूतन-भवन में या अजनबी-परिवार में केवल पति का ही मुँह देख कर रह जाती है। फिर भी बहू के स्वार्थी आत्मीय सर्वदा उसकी छोटी-छोटी भूलों को देख कर उसकी ताड़ना करते या अपशब्दों से उसका सत्कार करते हैं। वह भीगी बिल्ली बनी रहती है। सब्र का घूँट जोहा करती है।

इच्छा न रहते भी उसे पति का अनुगमन करना होता है। हविस मिटाने को जघन्य कार्य भी करने पड़ते हैं। प्रेम या अनुराग तो पारस्परिक होता है। इस पर किसी का भी दबाव नहीं रहता। किन्तु इन बेचारी अबलाओं को गला दबा कर प्रेम करने के लिए विवश किया जाता है। इनके पास तो आत्म-बल या आत्म-गौरव नाम की कोई वस्तु ही नहीं होती। क्या स्त्रियों का हृदय रक्त-पिण्ड का नहीं होता!

तहसील हँड़िया (इलाहाबाद) के नमक बनाने वाले सत्याग्रहियों को श्रीमती उमा नेहरू तिलक लगा रही हैं।

क़ैदी की दशा से तनिक भी अच्छी दशा इस देश में इनकी नहीं है। हाँ, है तो कुछ रूपों में भी बुरी है। क्योंकि उसकी तो अवधि निर्धारित है, उसके हो जाने पर वह मुक्त हो जाता, पर इनके कारागार का द्वार तो सदा के लिए बन्द है।

इन दिनों की सुकुमारियाँ तो सजीव मैशीन हैं, जो केवल बच्चा देतीं या अपने जीवन की शेष घड़ियाँ रो-धो या रोटी बना कर व्यतीत कर देती हैं।

भारत-भू के पवित्र हृदय-पटल पर गृह-देवियों के प्रति होने वाले इन दुःसह अत्याचारों का अन्त कब होगा भगवान्!!

—साहित्याचार्य 'भ'

कणिका

[श्री० सोहनलाल जी द्विवेदी]

पतन, पतन की सीमा का भी होता है कुछ अन्त !
उठने के प्रयत्न में लगते हैं अपराध अनन्त !!

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

परीक्षा

[श्री० विश्वम्भरनाथ जी शर्मा, कौशिक]

लो घनश्याम! क्या हो रहा है?"

"आओ भाई—अच्छे आए। मैं तुम्हारी प्रतीक्षा ही कर रहा था।"

शाम के पाँच बज चुके थे। घनश्यामदास अपने कमरे में बैठे हुए एक पुस्तक पढ़ रहे थे। इसी समय उनके मित्र बाबू मनोहरलाल ने कमरे में प्रवेश किया। घनश्यामदास विलायत की एक कम्पनी के एजेण्ट हैं। एजेन्सी से उन्हें ढाई-तीन सौ रुपए मासिक की आमदनी हो जाती है—यही उनकी जीविका है। घनश्यामदास पञ्जाबी खत्री हैं। उनके परिवार में वह तथा उनकी पत्नी के अतिरिक्त और कोई नहीं है। बाबू मनोहरलाल उनके सजातीय तथा परम मित्र हैं। मनोहरलाल एक बैङ्क में हेड क्लर्क हैं। घनश्यामदास दुबले-पतले तथा काठी के कमज़ोर हैं, मनोहरलाल हृष्ट-पुष्ट तथा बलवान काठी के आदमी हैं।

मनोहरलाल एक कुर्सी पर बैठते हुए बोले—घूमने चलोगे?

"हाँ-हाँ घूमने भी चलेंगे, ज़रा दम तो ले लो।"

"यह कौन पुस्तक पढ़ रहे हो?"—मनोहरलाल ने पूछा।

"यह एक उपन्यास है। बड़ा अच्छा है—मुझे बहुत पसन्द आया।"

"अच्छा! तब तो मैं भी पढ़ूँगा।"

"अवश्य पढ़ना! मैं इसे समाप्त कर चुका हूँ—केवल बीस-पचीस पृष्ठ और रह गए हैं। कल दे दूँगा।"

"प्लाट क्या है?"

"प्लाट बताऊँ? एक मित्र के विश्वासघात की कहानी है। दो व्यक्तियों में बड़ी घनिष्ट मित्रता थी। एक की स्त्री बड़ी सुन्दर थी। उसके मित्र ने स्त्री को फुसला कर उससे अनुचित सम्बन्ध कर लिया। कुछ दिनों पश्चात् ××× ।"

मनोहरलाल बोल उठे—रहने दो, बस आगे कहने की आवश्यकता नहीं, नहीं तो पढ़ने में आनन्द न आवेगा।

घनश्याम हँस कर बोले—हाँ यह तो ठीक है, प्लाट मालूम हो जायगा तो पढ़ने का आनन्द आधा रह जायगा।

"अच्छा अब पढ़ना-वढ़ना बन्द कीजिए और चलिए कहीं घूम आवें। हफ़्ते में एक दिन तो घूमने-फिरने का अवकाश मिलता है। तुम उस्ताद मज़े में हो, न किसी के नौकर न चाकर—जब जहाँ जी चाहा, चल दिए। यार मुझे भी कोई ऐसी ही एजेन्सी-वेजेन्सी दिलवा दो, तो मैं यह पिसौनी छोड़ दूँ।"

"यह पिसौनी है! क्यों नाशुकरी करते हो? आराम से कुर्सी पर बैठे रहते हो और महीने में तीन सौ रुपए फटकारते हो। यहाँ तो दिन भर दौड़ना पड़ता है और आमदनी निश्चित नहीं। आकाशी-वृत्ति है, रोज़ कुँआ खोदना पड़ता है तब कहीं पानी नसीब होता है।"

"कुछ भी करते हो, परन्तु स्वतन्त्र तो हो।"

"हाँ, बस यही कह सकते हो अन्यथा और कोई विशेषता नहीं है।"

"यह विशेषता थोड़ी है?"

घनश्याम कुर्सी से उठते हुए बोले—अच्छा तो मैं कपड़े पहन आऊँ।

"हाँ पहन आओ, लेकिन जल्दी आना।"

घनश्याम भीतर चले गए। मनोहरलाल ने उपन्यास उठा लिया और उसके पृष्ठ उलटने लगे।

दस मिनिट पश्चात् घनश्याम कपड़े पहन कर आ गए और कमरे में घुसते ही बोले—हर मेजिस्टी भी चलेंगी।

"अच्छा!"—इतना कह कर मनोहरलाल कुछ सङ्कुचित हो गए।

घनश्यामदास ने मुस्करा कर पूछा—क्यों, सन्नाटे में क्यों आ गए?

"यार क्या बताऊँ, औरतों के साथ होने से मुझे

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

बड़ा सङ्कोच होता है—खुल कर बातचीत नहीं करने पाता।"

"तो तुम्हें कौन से ऐसे विषय पर बातचीत करनी है?"

"यह ठीक है, परन्तु सतर्क तो रहना ही पड़ता है। निश्चिन्तता और स्वाधीनता नहीं रहती।"

"तुम अपनी पत्नी को पर्दे में रखते हो इसलिए तुम्हारे तो विचार ऐसे होने ही चाहिए।"

"कौन? मैं तो पर्दे में नहीं रखता। माता-पिता जिस तरह उसे रखते हैं उसी तरह उसे रहना पड़ता है। और आप यह भी नहीं कह सकते कि पर्दे में रखता हूँ। मेरी पत्नी खुले मुँह बाहर निकलती है।"

"तुम्हारे साथ तो मैंने उसे कभी खुले मुँह घूमते-फिरते देखा नहीं।"

"तो इसके अर्थ यह तो नहीं होते कि मैं पर्दे में रखता हूँ। मैं अपने साथ लेकर इसलिए नहीं निकलता कि माता-पिता नाक-भौं चढ़ाते हैं। उसे जहाँ कहीं आना-जाना होता है माता जी तथा भाभी साहबा के साथ हो आती है, मेरे साथ जाने की आवश्यकता ही नहीं पड़ती।"

"और मैं अकेला हूँ।"

"हाँ यही तो बात है।"

इसी समय घनश्यामदास की पत्नी वस्त्राभूषण से सुसज्जित होकर आ पहुँची। उसकी वयस १८-१९ वर्ष के लगभग होगी। दोहरा बदन, गौर वर्ण और नखशिख सुन्दर था। मनोहरलाल को देख कर उसने 'नमस्ते' कहा। मनोहरलाल ने भी उत्तर में 'नमस्ते' कह दिया। घनश्यामदास अपनी पत्नी की ओर देखते हुए बोले—तुम्हारे कारण मनोहरलाल कुछ झेंपते हैं।

पत्नी ने किञ्चित् मुस्करा कर पूछा—क्यों, झेंपने का क्या कारण है?

"यह तो इन्हीं से पूछो।"

"क्यों मनोहरलाल जी, क्या बात है?"—घनश्याम की पत्नी ने मनोहरलाल से पूछा।

"कुछ नहीं, यह तो व्यर्थ की बातें करते हैं।"—मनोहरलाल ने उत्तर दिया।

घनश्याम हँस कर बोले—अच्छा, अब ऐसी बातें करोगे? और अभी क्या कह रहे थे?

"कह रहा था तुम्हारा सर—अब चलोगे या यहीं की बातें बनाओगे?"

घनश्याम हँसते हुए बोले—चल तो रहे ही हैं।

"तो फिर चलो न।"

"चलिए!"

तीनों प्राणी मकान के बाहर निकले।

२

तीनों व्यक्ति घूमते-घामते पार्क में पहुँचे। इस समय यथेष्ट अँधेरा हो चुका था। एक ओर एकान्त में एक ख़ाली बेञ्च पर सब लोग बैठ गए।

थोड़ी देर तक वार्त्तालाप होता रहा। इसके बाद घनश्याम की पत्नी बोली—मुझे प्यास बड़े ज़ोर की लगी है। यहाँ कोई पानी वाला नहीं दिखाई पड़ता।

घनश्याम बोल उठे—हाँ, पानी वाला तो कोई नहीं दिखाई पड़ता।

मनोहरलाल ने कहा—यहाँ पानी वाला नहीं मिलेगा, मैं लपक कर बाज़ार से लिए आता हूँ।

घनश्याम बोले—उतनी दूर जाने की क्या आवश्यकता है, यहाँ पानी वाला होगा—मैं देखता हूँ।

यह कह कर घनश्याम उठ कर एक ओर चल दिए।

घनश्याम की पत्नी तथा मनोहरलाल चुपचाप बैठे रहे। पाँच मिनिट व्यतीत हो जाने पर घनश्याम की पत्नी बोली—कहाँ चले गए!

"पानी वाले को ढूँढ़ रहे होंगे। इस समय शायद मिलना कठिन है। मैं बाज़ार से लपक के ले आता।"—मनोहरलाल बोले।

दोनों पुनः मौन हो गए।

हठात् घनश्याम की पत्नी 'ओह' कह कर मनोहरलाल की ओर गिर पड़ी। मनोहरलाल ने उसका हाथ पकड़ कर सँभाला और बोले—क्या है?

घनश्याम की पत्नी बोली—किसी कीड़े की सरसराहट मालूम हुई थी।

मनोहरलाल ने झट जेब से दियासलाई की डिबिया निकाली और दियासलाई जला कर बेञ्च को भली भाँति देखा, परन्तु वहाँ कुछ न था। बेञ्च के नीचे भी देखा, पर वहाँ भी कुछ न दिखाई पड़ा। मनोहरलाल ने कहा—यहाँ तो कुछ दिखाई नहीं पड़ता।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

घनश्याम की पत्नी बोली—कहीं इधर-उधर हो गया होगा।

"या शायद भ्रम हुआ हो।"—मनोहरलाल बोले।

"भ्रम तो नहीं हुआ, या भ्रम ही हो गया हो। मुझे कुछ सरसराहट सी मालूम हुई थी।"

इसी समय घनश्याम हाथ में दो हुण्डे लिए हुए आ गए। मनोहर को दियासलाई जलाए हुए देख कर उन्होंने पूछा—क्या हुआ, कुछ गिर गया क्या?

"नहीं गिरा कुछ नहीं, इन्हें किसी कीड़े की सरसराहट मालूम हुई थी; परन्तु यहाँ तो कुछ दिखाई नहीं पड़ता।"

"होगा भी, हटाओ! पानी पियोगे?"

मनोहरलाल दियासलाई की डिबिया जेब में रखते हुए बोले—पहले श्रीमती जी को पिलाओ।

घनश्याम एक हुण्डा पत्नी के हाथ में देकर बोले—मैं एक हुण्डा फ़ालतू ले आया हूँ।

"पहले इन्हें पी लेने दो, सम्भव है एक हुण्डे से प्यास न बुझी।"

घनश्याम की पत्नी बोल उठी—नहीं, मेरे लिए इतना काफ़ी है, आप पीजिए।

मनोहरलाल घनश्याम के हाथ से हुण्डा लेकर बोले—बाज़ार चले गए थे?

"हाँ, यहाँ कोई मिला नहीं तो उधर चला गया।"

"मैंने पहले ही कहा था—तब न माने।"

"तो क्या हर्ज हो गया?"

"हर्ज कुछ नहीं, बात कही।"

तीनों व्यक्ति पुनः अपने-अपने स्थान पर बैठ गए। थोड़ी देर पश्चात् घनश्याम बोले—यार मनोहरलाल, तुम भी अपनी पत्नी को घुमाने लाया करो।

मनोहरलाल बोले—लाऊँ तो सब कुछ, परन्तु माता जी के मारे लाने पाऊँ तब न।

"तुम्हारे साथ भी नहीं आने देतीं, यह आश्चर्य है।"

"अब चाहे जो समझो।"

"ऐसा पर्दा किस काम का?"

"पर्दा भी तो नहीं है। यही तो आनन्द है। स्वयं साथ लेकर बेधड़क घूमती हैं, पर मेरे साथ नहीं आने देतीं। और तुमने तो मेरी पत्नी को देखा है।"

"हाँ एक बार देखा है—या दो बार देखा होगा। बस!"

"तो फिर पर्दा कैसे है? पर्दा होता तो तुम देख पाते?"

"हाँ यह मैं मानता हूँ कि उसे पर्दा नहीं कहा जा सकता; परन्तु है बेजा।"

घनश्याम की पत्नी बोल उठी—किसी दिन मैं ले आऊँगी। मेरे साथ तो माता जी आने देंगी कि नहीं?

मनोहरलाल बोले—हाँ आपके साथ तो शायद भेज दें!

"शायद!"—घनश्याम ने कहा।

"भेज देंगी। मैंने शायद इसलिए कहा कि किसी सनक में हों तो सम्भव है इन्कार भी कर दें।"

"यदि ऐसी बात है तो मैं न कहूँगी।"—घनश्याम की पत्नी ने कहा।

घनश्याम बोले—वाह! कहोगी क्यों नहीं, अवश्य कहना। इन्कार कर देंगी तो तुम्हारा क्या बिगड़ जायगा? जैसी इनकी माता वैसी हमारी माता। उनके इन्कार करने से तुम्हारा कुछ अपमान थोड़ा ही हो जायगा?

"अच्छा तो किसी दिन कहूँगी।"

घनश्याम बोल उठे—या ऐसा करो कि पहले अपने घर पर बुलाओ, फिर हम सब एक साथ घूमने निकलें।

घनश्याम की पत्नी प्रसन्न होकर बोली—हाँ, यह ठीक है। ऐसा ही करूँगी।

"परन्तु तुम्हारी श्रीमती जी मेरे साथ होने से कुछ भड़केंगी तो नहीं?"

"भड़कने का तो कोई कारण न होना चाहिए, मैं भी तो साथ रहूँगा।"

"और मेरी पत्नी भी तो रहेगी।"

"हाँ, इसलिए लेखा-ज्योढ़ा बराबर हो जाने के कारण नहीं भड़केगी।"

"अच्छा तो अगले इतवार को उन्हें बुलाया जाय।"

"जब चाहो बुला लो। तुम्हारे घर भेजने से कोई इन्कार नहीं कर सकता।"

३

मनोहरलाल प्रायः नित्य ही घनश्याम के घर जाते थे। चार बजे वह बैङ्क से लौटते थे। घर आकर कुछ

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

जलपान करने के पश्चात साढ़े पाँच और छः के बीच में वह घनश्याम के मकान पर पहुँच जाते थे।

एक दिन नियमानुसार वह छः बजे के लगभग घनश्याम के घर पहुँचे। घनश्याम का कमरा ख़ाली था। मनोहरलाल जाकर कमरे में बैठ गए। कुछ देर बाद घनश्याम का नौकर कमरे में आया। मनोहर ने पूछा—बाबू कहाँ हैं?

नौकर बोला—बाबू तो कहीं गए हैं।

"कुछ कह गए हैं, कितनी देर में लौटेंगे?"

"मुझसे तो कुछ नहीं कह गए, सायत बहू जी से कह गए हों?"—कहार ने उत्तर दिया।

"अच्छा, ज़रा बहू जी से पूछ आओ।"

नौकर चला गया। कुछ देर बाद नौकर आकर बोला—"बहू जी आती हैं।"

मनोहरलाल का कलेजा धड़कने लगा। अभी तक घनश्याम की पत्नी केवल घनश्याम की उपस्थिति में मनोहरलाल के समक्ष आती थी—अकेले कभी नहीं आती थी। अतएव इस नई बात को सुन कर मनोहरलाल कुछ घबराए। उन्होंने नौकर से कहा—मैंने बहू जी को तो बुलाया नहीं था, केवल बाबू के आने की बात पुछवाई थी।

"मैंने भी वही बात पूछी थी, पर बहू जी अपने आप ही बोलीं कि हम नीचे आती हैं!"

मनोहरलाल चुप हो गए। वह मन में सोचने लगे—आज घनश्याम की पत्नी मेरे पास क्यों आती है? विशेषतः जब कि घनश्याम घर पर नहीं हैं। परसों इतवार की शाम को वह पार्क में मेरे ऊपर गिर पड़ी थी। कीड़े की बात कही थी; परन्तु वहाँ तो कोई कीड़ा-वीड़ा था नहीं, मैंने ख़ूब अच्छी तरह देख लिया था। क्या बात है? कहीं × × ×।

इसी समय घनश्याम की पत्नी ने कमरे में प्रवेश किया। उसके हाथ में पान की तश्तरी थी। पान की तश्तरी मनोहरलाल के सम्मुख मेज़ पर रखते हुए वह बोली—वह तो कहीं काम से गए हैं।

मनोहरलाल तश्तरी में से पान उठाते हुए बोले—कितनी देर में लौटेंगे?

"यह तो वे कुछ बता नहीं गए।"—कहते हुए घनश्याम की पत्नी मनोहरलाल के पास ही दूसरी कुर्सी पर बैठ गई। मनोहरलाल के कलेजे की धड़कन पहले की अपेक्षा अधिक तीव्र हो गई।

कुछ क्षणों तक मौन रहने के पश्चात् घनश्याम की पत्नी बोली—आवेंगे तो जल्दी ही।

मनोहरलाल बोले—जब कुछ कह नहीं गए तो क्या पता कब आवें?

"यह तो आवश्यक नहीं है कि यदि कह नहीं गए तो देर ही से आवें—जल्दी भी आ सकते हैं। आपको और कहीं तो जाना नहीं है?"

मनोहरलाल बोले—नहीं, और तो कहीं नहीं जाना है—परन्तु × × ×।

"परन्तु क्या?"—घनश्याम की पत्नी ने पूछा।

"यही कि उनके आने की आशा न हो तो समय नष्ट क्यों करूँ?"

"अच्छा, तो क्या आपका समय नष्ट हो रहा है?"

मनोहरलाल ने आँखें ऊपर उठाईं—एक क्षण के लिए उनकी तथा घनश्याम की पत्नी की आँखें मिल गईं।

इच्छा न रहते हुए भी मनोहरलाल के मुख से निकल गया—"नहीं, जब आप बैठी हैं तो समय नष्ट कैसे हो सकता है?" परन्तु दूसरे ही क्षण उन्हें इन शब्दों के कहने पर पश्चात्ताप हुआ।

फिर दोनों मौन हो गए। मनोहरलाल सोच रहे थे कि किसी प्रकार यहाँ से खिसकना चाहिए। हठात् घनश्याम की पत्नी बोली—आज मेरा बदन टूट रहा है, कुछ हरारत भी मालूम होती है। आप नब्ज़ देखना तो जानते होंगे—ज़रा देखिए तो।

यह कह कर उसने अपना हाथ मनोहरलाल की ओर बढ़ाया। मनोहरलाल पहले तो कुछ सिटपिटाए, परन्तु फिर सँभल गए और उन्होंने नब्ज़ देखी। नब्ज़ देख कर बोले—हरारत तो नहीं मालूम होती।

घनश्याम की पत्नी बोली—तो मुझे भ्रम होगा, बदन टूट रहा था।

मनोहरलाल ने पूछा—दोपहर को आप सोती हैं?

"आदत तो नहीं है, परन्तु आज सो गई थी।"

"तो बस इसी कारण बदन टूट रहा है, हरारत वरारत कुछ नहीं है।"

दोनों फिर मौन हो गए। पाँच मिनिट तक चुप रहे

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

के पश्चात् मनोहरलाल बोले—घनश्याम न जाने कब आवें, इसलिए अब चलूँगा।

"बैठिए न, कहीं जाना है क्या ?"

मनोहरलाल बोले—जाना तो नहीं है, परन्तु इस प्रकार हमारा-आपका एकान्त में बैठना क्या उचित है ?

"क्यों, इसमें अनुचित क्या है ?"

"कुछ अनुचित नहीं है ?"

"मैं आप ही से पूछती हूँ, बताइए, क्या अनुचित है ?"

"ख़ैर, यदि अनुचित नहीं है तो ठीक है।"

"नहीं, यदि अनुचित हो तो बता दीजिए।"

"जब आप ही अनुचित नहीं समझतीं तो मैं क्या बताऊँ ?"

"मैं तो अनुचित नहीं समझती।"

इस वार्त्तालाप के तीन-चार मिनिट पश्चात् ही घनश्याम ने द्वार पर आकर नौकर को पुकारा। घनश्याम का कण्ठ-स्वर सुनते ही उनकी पत्नी शीघ्रतापूर्वक वहाँ से उठ कर चली गई।

घनश्याम द्वार पर अपनी साइकिल नौकर को सौंप कर भीतर आए और मनोहरलाल को बैठे देख मुस्करा-कर बोले—आप बैठे हैं ?

मनोहरलाल बोले—हाँ, बड़ी देर से बैठा हूँ।

"मैं भी यही सोच कर भागा हुआ आया हूँ।"

"तो फिर चलो चलें।"

"चलो ! परन्तु ज़रा 'हर मेजिस्टी' से भी पूछ लूँ, शायद वह भी चलें।"

मनोहरलाल ने कहा—और देर लगेगी।

"नहीं, देर का कौन काम, अभी चलता हूँ।"

यह कह कर वह भीतर चले गए। थोड़ी देर में आकर बोले—वह नहीं चलेंगी। आओ चलें।

दोनों चल दिए।

४

उपर्युक्त घटना से मनोहरलाल को विश्वास हो गया कि घनश्याम की पत्नी सच्चरित्र नहीं है। इससे उन्हें बड़ा क्लेश हुआ। घनश्याम को वह अपना परम मित्र समझते थे। ऐसी दशा में मित्र की पत्नी दुश्चरित्र हो—यह बात मनोहरलाल को दुखदाई प्रतीत हुई। उन्होंने सोचा कि कम से कम मित्र के नाते उनका यह कर्त्तव्य है कि वह मित्र को सचेत कर दें। परन्तु साथ ही वह यह भी सोचते थे कि कहीं ऐसा न हो कि घनश्याम उनकी बात पर विश्वास न करें। और यह भी है कि यदि विश्वास कर लिया तो उन्हें दुःख भी बड़ा होगा। और वह दुःख क्षणिक नहीं—स्थायी होगा। मनोहरलाल दोनों बातें नापसन्द करते थे। न वह यह चाहते थे कि घनश्याम उनका विश्वास न करे और न वह उनके सुखमय जीवन को दुखमय बनाना चाहते थे।

मनोहरलाल कई दिन तक इसी उधेड़-बुन में रहे, परन्तु कोई बात निश्चय नहीं कर सके और इतवार का दिन आ गया।

इतवार को सवेरे आठ बजे उन्हें घनश्याम का पत्र मिला। उसमें लिखा था :—

"प्रियवर,

आज मेरी पत्नी की ओर से तुम्हारी दावत है। खाना यहीं आकर खाना। तुम्हारी पत्नी को भी बुलवाया है। शाम को सब लोग इकट्ठे घूमने चलेंगे।

तुम्हारा,
घनश्याम"

पत्र पढ़ कर मनोहरलाल ने पत्रवाहक से पूछा—क्या और कोई चिट्ठी है ?

पत्रवाहक बोला—जी नहीं, चिट्ठी तो नहीं है; पर ज़बानी कहा है कि बहू को भेज दें।

"किससे कहा है ?"

"यह कहा था कि भीतर 'माँजी' से कह देना।"

मनोहरलाल बोले—बहू की तो तबीयत ख़राब है, वह नहीं आ सकेंगी—मैं आऊँगा।

पत्रवाहक "बहुत अच्छा" कह कर चला गया।

मनोहरलाल बोले—ऐसी स्त्री के पास मैं अपनी पत्नी को भेजूँगा ? हुँह ! मैं इतना बेवक़ूफ़ नहीं हूँ। ऐसी स्त्री की सङ्गति अच्छी नहीं। यह घनश्याम वज्र मूर्ख है। स्त्री जो कहती है वही करता है। मेरी दावत की है। न जाने मेरे पीछे क्यों पड़ी है ? जान पड़ता है, घनश्याम से मित्रता तोड़नी पड़ेगी।

मनोहरलाल बड़ी देर तक इसी प्रकार की बातें सोचते रहे।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

ग्यारह बजे के लगभग मनोहरलाल घनश्याम के मकान पर पहुँच गए। घनश्याम उन्हें देखते ही बोले—यार तुम्हारी श्रीमती जी की तबीयत आज ही ख़राब होनी थी? सारा प्रोग्राम नष्ट हो गया।

मनोहरलाल शुष्कतापूर्वक बोले—संयोग की बात है—और क्या बताऊँ?

"बड़ा अफ़सोस हुआ।"

"ख़ैर, फिर सही!"

"आज तो सारा मज़ा किरकिरा हो गया।"

मनोहरलाल सोचने लगे—मेरी पत्नी के न आने से इनका मज़ा किरकिरा हो गया! ख़ूब! यह अच्छी रही।

घनश्याम बोले—खाना तैयार है!

"अच्छी बात है। परन्तु भाई, मैं एक बात तुमसे कहना चाहता हूँ।"

घनश्याम बोले—कहो!

"मैं यह भी सोच रहा हूँ कि वह बात तुमसे कहनी चाहिए या नहीं।"

घनश्याम मुस्करा कर बोले—क्या कोई ऐसी बात भी है जो मुझसे छिपाने योग्य है?

"छिपाने योग्य तो कदापि नहीं है, परन्तु फिर भी यह सोचता हूँ कि कहूँ या न कहूँ।"

"नहीं कहनी थी तो उसका चर्चा ही न करते; परन्तु अब जब कि मेरे हृदय में उत्सुकता उत्पन्न कर दी है तो कह डालो।"

"मैं केवल इतना कहना चाहता हूँ कि तुम्हारी पत्नी के स्वभाव में अल्हड़पन बहुत है। उसे ज़रा सँभाले रहना।"

इतना सुनते ही घनश्याम ने अट्टहास किया। मनोहरलाल अवाक् होकर उनका मुँह ताकने लगे। वह समझ गए कि घनश्याम को उनकी बात पर विश्वास नहीं हुआ।

हँस चुकने पर घनश्याम ने पूछा—आख़िर आपको यह बात कहने की आवश्यकता क्यों पड़ी?

मनोहरलाल बोले—उनके सम्बन्ध में मेरी जो धारणा हुई वही मैंने तुमसे बताई, आगे तुम जानो तुम्हारा काम।

"उसकी ओर से आप निश्चिन्त रहिए। वह बहुत भली स्त्री है।"

मनोहरलाल सोचने लगे—घनश्याम या तो मोह का ग़ुलाम है और या फिर उस पर आवश्यकता से अधिक विश्वास करता है।

घनश्याम ने कहा—अच्छा चलो खाना खावें।

मनोहरलाल बोल उठे—हाँ, यह तो बताओ आज यह दावत कैसी?

"अब यह तो आप मेरी पत्नी से पूछिएगा।"

मनोहरलाल ने सोचा—न जाने यह कैसा आदमी है? मैं तो इसे ऐसा नहीं समझता था। स्त्री पर इतना विश्वास नहीं करना चाहिए।

हठात् घनश्याम बोले—अच्छा बता ही दूँ, तुम्हें अधिक परेशान करने से कोई लाभ नहीं। बात यह है कि मेरी पत्नी और मुझमें एक शर्त हुई थी। उस शर्त में यह था कि यदि मैं शर्त हार जाऊँ तो मैं तुमसे मिलना-जुलना छोड़ दूँ और यदि मेरी पत्नी हार जाय तो वह तुम्हारी दावत करे। सो ईश्वर की दया से मैं जीत गया, मेरी पत्नी हार गई।

मनोहरलाल चकित होकर बोले—ऐसी कौन सी शर्त थी जिसके हार जाने से तुम मुझसे मिलना-जुलना छोड़ देते?

घनश्याम ने कहा—घबराओ नहीं, सब बताए देता हूँ। जब पहले-पहल मेरी पत्नी तुम्हारे सामने आई तो उसको कुछ ऐसा प्रतीत हुआ कि उसने तुम्हें सच्चरित्र नहीं समझा। यह बात उसने मुझ से कही। मैंने उसकी बात का खण्डन किया। उसने कहा—"मैं तुम्हें यह साबित करके दिखा सकती हूँ कि मनोहरलाल सच्चरित्र नहीं है।" इसी पर आपस में हमारी शर्त हो गई। उसने कहा—"यदि मनोहरलाल सच्चरित्र प्रमाणित न हुए तो तुम्हें उनसे मिलना-जुलना बन्द करना पड़ेगा और यदि वह वैसे ही भले निकले जैसा तुम बताते हो तो मैं उनको सादर बुला कर उनकी दावत करूँगी।" सो जनाब, ईश्वर की दया से आप पूरे भले आदमी प्रमाणित हुए, इसलिए आपकी दावत की गई है।"

यह सुन कर मनोहरलाल सन्नाटे में आ गए। कुछ क्षणों तक चुप बैठे रहने के पश्चात् बोले—तो यों कहिए मेरी परीक्षा ली गई थी?

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

"अब इसे आप चाहे जो समझिए।"

"और मैं आपको आपकी पत्नी की ओर से सचेत कर रहा था।"

"यह आपकी नेकनीयती और मेरे प्रति आपका स्नेह-भाव था।"

"परन्तु तुमने तो मेरा गला कटवाने का ही प्रबन्ध किया था।"

"क्यों?"

"ऐसी कड़ी शर्त की थी—यदि मैं परीक्षा में फ़ेल हो जाता तो?"

"मुझे यह पूर्ण विश्वास था कि तुम फ़ेल नहीं होगे, इसीलिए मैंने शर्त की थी। मैं तुम्हें भली भाँति जानता हूँ मनोहरलाल!"

यह कह कर घनश्याम ने स्नेहपूर्वक मनोहरलाल के गले में अपनी बाँह डाल दी। मनोहरलाल बोले—और मैं तुम्हारे और तुम्हारी श्रीमती जी के सम्बन्ध में न जाने कितनी बुरी-बुरी बातें सोच गया।

"सोचना स्वाभाविक था, उसमें तुम्हारा अपराध नहीं।"

"मेरी परीक्षा के लिए तुम्हारी श्रीमती जी ने जो आचरण किए उससे मैंने उनकी सच्चरित्रता पर सन्देह किया और उसका परिणाम यह हुआ कि मैंने आज अपनी पत्नी को यहाँ नहीं आने दिया।"

घनश्याम घबरा कर बोले—सच?

"वाक़ई। उसकी तबीयत बिल्कुल अच्छी है। मैंने बहाना कर दिया था।"

"अरे, यह तो बड़ा ग़ज़ब किया—ख़ैर अब बुलवा लो।"

"अब तो वह भोजन-वोजन कर चुकी होगी।"

"यह बुरी रही।"

"अब यह तो आप ही जानिए। इसके उत्तरदायी आप ही हैं।"

"ख़ैर चलो खाना खावें—हर मेजिस्टी प्रतीक्षा कर रही हैं।"

"उनके सामने जाते हुए मुझे शर्म मालूम होती है।"

"परीक्षा में पास हो गए तब भी शर्म?"

"शर्म केवल यह सोच कर कि उनके सम्बन्ध में मैंने न जाने कितनी बुरी धारणाएँ बना ली थीं।"

"उन बातों को भूल जाओ। मुझे तुम दोनों पर गर्व है। ऐसी पत्नी और ऐसा मित्र बड़े सौभाग्य से मिलता है।"

याचना

[श्री रामनगीना चौबे]

(१)

भूल जगत के कोलाहल में,
भटका था मैं इस मग में।
आश्रयहीन हृदय था, आश्रय—
पाया नहीं कहीं जग में॥

(२)

फिर भी भूलूँ यदि प्रभुवर!
तो मेरी भूल भुला देना।
जीवन की अन्तिम घड़ियों में,
नाथ! तुम्हीं अपना लेना॥

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

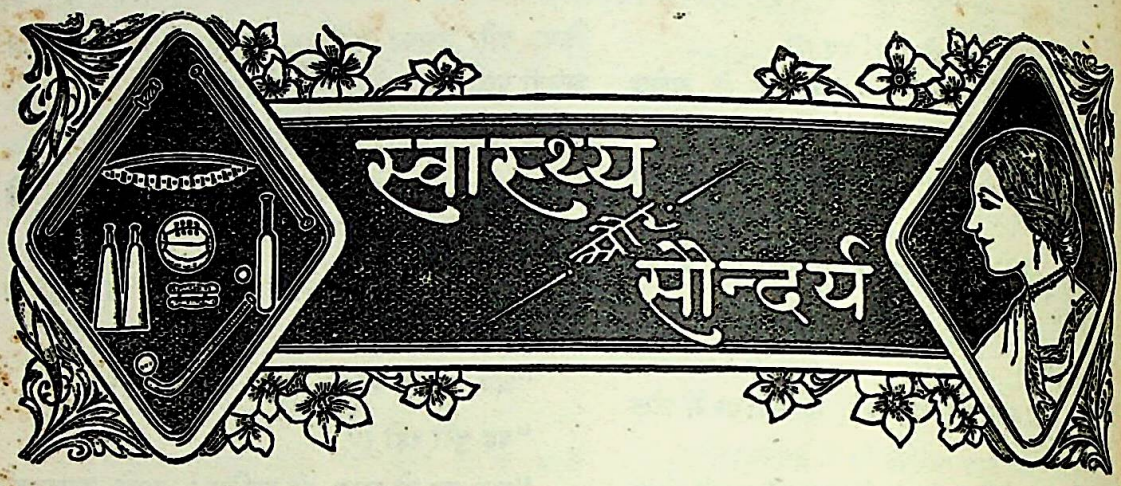

[श्रीमती दयावती देवी जी गुप्ता]

आज सारे विश्व का स्त्री-समाज सुन्दरता के पीछे पागल हो रहा है। संसार भर की स्त्रियाँ, चाहे वह किसी जाति या समाज की हों, सुन्दरता की पुनीत इच्छा रखती हैं। वास्तव में, यह गुण है भी इसी आदर और सम्मान के योग्य। किन्तु यह लिखते हुए हमें दुख होता है कि इसे प्राप्त करने के लिए जिन कृत्रिम और अस्वाभाविक उपायों का अवलम्बन किया जाता है, वे इसके पक्ष में उलटे पड़ते हैं। लाभ के स्थान पर उनसे हानि ही अधिक होती है। स्त्री का सबसे बड़ा धन, उसका रूप है। इसी रूप के कारण, सब जगह, उसका मान होता है। घर-बाहर इसी गुण के कारण वह पूजी जाती है, उसका आदर-सम्मान होता है। सौन्दर्य के साथ ही साथ यदि उसमें और भी स्त्रियोचित गुणों का विकाश हुआ हो तो फिर क्या कहना। सोने में सुगन्ध पड़ जायगी।

यूरोप का स्त्री-संसार, सुन्दरता के लिए, आज सबसे अधिक उतावला और प्रयत्नशील हो रहा है। वहाँ सुन्दर बनने के लिए, नित्य नए-नए आविष्कार होते, नित्य नई-नई तरकीबें सोची जातीं और अनेक प्रकार के स्वाभाविक-अस्वाभाविक उपाय काम में लाए जाते हैं। किन्तु यह नहीं कहा जा सकता कि उन्हें अपने प्रयत्नों में कितनी सफलता मिलती है। मेरे विचार में तो सौन्दर्य कुछ दूसरी ही वस्तु है और इन कृत्रिम उपायों से उसे किसी प्रकार प्राप्त नहीं किया जा सकता।

अब हमको इस बात पर विचार करना है कि सुन्दरता क्या वस्तु है। इसकी उचित परिभाषा, मेरे विचार में, आज तक किसी भी विद्वान ने नहीं की और शायद इसकी परिभाषा की भी नहीं जा सकती। प्रत्येक स्थान पर सौन्दर्य की परिभाषा अपनी-अपनी रुचि के अनुसार अलग-अलग पाई जाती है। यूरोप में कमर का पतला होना सुन्दरता की निशानी है तो भारत के कई प्रान्तों में कमर का भरा हुआ होना ही सुन्दरता समझी जाती है। चीन-जापान के लोग चपटी नाक और उभरी हुई गाल की हड्डी को सुन्दर समझते हैं। चीन में वह स्त्री अधिक रूपवती समझी जाती है जिसके पाँव अधिक न बढ़ सकें। हबशी लोग मोटे ओठ और आबनूसी चमकीले रङ्ग को ही सुन्दरता की पराकाष्ठा मान बैठे हैं। इसी प्रकार प्रत्येक देश और प्रत्येक जाति सौन्दर्य की परिभाषा अपनी इच्छा के अनुसार करती है। कहीं पर सुन्दरता को प्राप्त करने के लिए ओठ और मसूड़े मिस्सी लगा कर रँगने की चाल है, तो कहीं पर साबुन, तेल, पाउडर का प्रयोग करके निर्बल और जीर्ण शरीर में भी सुन्दरता की आभा झलकाने की चेष्टा की जाती है।

वास्तव में इन सब कृत्रिम उपायों से सुन्दरता प्राप्त नहीं हो सकती। सुन्दरता प्राप्त करने का साधन स्वास्थ्य प्राप्त करना है। जहाँ स्वास्थ्य है वहाँ सौन्दर्य अवश्य है। अङ्ग-प्रत्यङ्ग के सुडौल होने को ही सुन्दरता कहते हैं। जब प्रत्येक अस्थि की आकृति ठीक होती है, माँस पेशियाँ बलिष्ठ होती हैं, चर्बी आवश्यकता के अनुसार होती है, तो उस शरीर में स्वयं ही सुन्दरता की आभा झलकती है।

जब शरीर के रक्त-सञ्चालन की क्रिया ठीक रहती है

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

Jangamwadi Math, Varanasi
Acc. No. 3079

तथा धमनी और शिराएँ अपना कार्य ठीक तौर से करती हैं, तो रूप-लावण्य का विकास वहाँ स्वभाव से ही होता है। रङ्ग का काला और गोरा होना, यह तो जन्म से सम्बन्ध रखता है; किन्तु बहुधा यह भी देखा गया है कि काले रङ्ग के आरोग्य सुडौल मनुष्य, गौर वर्ण के दुर्बल शरीर से कहीं अधिक सुन्दर होते हैं। सम्भव है, जहाँ स्वास्थ्य हो वहाँ सुन्दरता न भी हो, किन्तु जहाँ सुन्दरता है वहाँ स्वास्थ्य का होना अवश्यम्भावी है। हमारे शास्त्रकारों ने जहाँ-जहाँ स्त्रियों की सुन्दरता का वर्णन किया है, तथा कवियों ने उपमाएँ दी हैं, उनसे स्पष्टतया प्रतीत होता है कि सुन्दरता के सब सिद्धान्त स्वास्थ्य-नियमों के अनुकूल थे। एक पुस्तक में सुन्दरता के चिन्ह इस प्रकार लिखे हैं:—

स्त्री-शरीर में चार भाग उज्ज्वल वर्ण के होने चाहिएँ—

(१) नेत्र (२) दन्त-पंक्ति (३) नखावली (४) मुख की कान्ति।

चार भाग कृष्ण वर्ण होने चाहिएँ—

(१) केशपाश (२) पलकें (३) भृकुटी (४) कनीनिका (पुतली)।

चार भाग रक्त वर्ण के हों—

(१) मसूड़े (२) जिह्वा (३) कपोल (४) ओठ।

चार भाग गोल हों—

(१) सिर (२) उँगलियों का अग्रभाग (३) पैर की एँड़ी (४) बाहु-प्रदेश।

चार भाग लम्बे हों—

(१) कदम (२) सिर के केश (३) पलकें (४) उँगलियों के पोरवे।

चार भाग मोटे हों—

(१) नितम्ब (२) ग्रीवा (३) पिंडली (४) जङ्घा।

चार भाग विशाल हों—

(१) मस्तक (२) नेत्र (३) छाती (४) कन्धे।

सुन्दरता के लिए मसूड़ों और ओठ का रक्त वर्ण होना आवश्यक है, जिससे शरीर में रक्त का यथेष्ट होना ज्ञात होता है। हमारे यहाँ बनावटी ढङ्ग से ओठ इत्यादि रँगने का रिवाज चल पड़ा है, किन्तु जिनके यह अङ्ग स्वभाव से ही लाल हों, वे ही वास्तव में सुन्दर हैं। सिर, पलक और भौंह के बालों की कालिमा सौन्दर्य का अङ्ग है। सिर के केश लम्बे मनोहर होते हैं, यह स्वस्थ होने का भी चिन्ह है। विस्तृत और भरी हुई छाती, जो सौन्दर्योपासकों की दृष्टि को आकृष्ट करती है, फेफड़ों की सबलता और स्वस्थ होना भी बतलाती है। स्तन यदि ढीले और लटके हुए हों, तो वे रोग का प्रमाण हैं। कूल्हे, पिंडली और जङ्घा मोटी पसन्द की जाती है; यह निर्बलता के न होने का प्रबल प्रमाण है। अस्तु, सुन्दरता के उपासकों को चाहिए कि पहले आरोग्य प्राप्त करें, फिर सुन्दरता स्वयमेव ही आ जायगी।

पुराने इतिहास को पढ़ने से ज्ञात होगा कि यहाँ सीता, मन्दोदरी, सावित्री, दमयन्ती इत्यादि जो रूप-राशियाँ जन्मी थीं, उनका मुक़ाबला आधुनिक विश्व की कोई स्त्री नहीं कर सकती। अधिक दूर न जाइए, मुग़लों के शासन-काल पर ही नज़र डालिए, जब पद्मिनी सरीखी रूपवती स्त्रियाँ इस देश में पैदा हुई थीं, जिनके कारण देश की राजनीति में कितने उलट-फेर और कितनी मार-काट हुई। लेकिन आज हमारे पास उस रूप-किरण की एक रेखा भी शेष नहीं रह गई है। इस ह्रास का कारण स्पष्ट है। हमारे समाज में जो नाशकारी कुप्रथाएँ चल पड़ी हैं, उनके कारण जीते जी ही हम नरक-यन्त्रणा का अनुभव कर रही हैं। उम्र भर पालतू चिड़िया की तरह पिंजरे में बन्द रहना, बाल-विवाह, अविद्या और घर के कलह के कारण जलना-कुढ़ना, अच्छे भोजन तथा स्वच्छ वायु का दर्शन दुर्लभ होना, हमारी सुन्दरता को सब प्रकार से ले डूबता है। जब भारत में यह कुप्रथाएँ न थीं, स्त्री-जाति का समुचित आदर था, तब उपरोक्त देवियाँ जन्मती थीं। अब वह बात न रही, तो वह शौर्य और सुन्दरता ही कैसे रह जाय? वर्तमान काल में सुन्दरता के कुछ चिन्ह मारवाड़ (राजपूताने) की स्त्रियों में किसी अंश तक पाए जाते हैं, क्योंकि उधर अब भी स्वास्थ्य के नियमों का कुछ-कुछ पालन किया जाता है। चाहे पश्चिमी सभ्यता का दम भरने वाले उनकी वेश-भूषा तथा बाह्य आडम्बरों को देखते हुए उन्हें रूपवती न बतावें, किन्तु वास्तव में सुन्दर वे ही हैं। हाँ, उनकी सुन्दरता बहुत अधिक बढ़ जाती, यदि उनमें शिक्षा-प्रचार की कोई व्यवस्था कर दी जाती। वहाँ की स्त्रियाँ घर का सब

(शेष मैटर २०६ पृष्ठ में देखिए)

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

[स्वर्गीय बङ्किम बाबू]

अङ्गरेज़ स्तोत्र

हे अङ्गरेज़ ! मैं तुम्हें प्रणाम करता हूँ।

तुम अनेक गुणों से विभूषित, सुन्दर कान्ति-विशिष्ट और विपुल सम्पद-सम्पन्न हो, अतएव हे अङ्गरेज़ ! मैं तुम्हें प्रणाम करता हूँ।

तुम हर्त्ता हो शत्रुओं के, तुम कर्त्ता हो आईन-क़ानून के, तुम विधाता हो नौकरी-चाकरी के, अतएव हे अङ्गरेज़ ! मैं तुम्हें नमस्कार करता हूँ।

तुम समर में दिव्यास्त्रधारी, शिकार में बन्दूकधारी, विचारालय में आध इञ्च मोटा बेतधारी और भोजन के समय काँटा-चम्मचधारी हो, इसलिए हे अङ्गरेज़ ! मैं तुम्हें दण्डवत् करता हूँ।

तुम एक रूप से राजपुरी में रह कर राज्य करते हो, दूसरे रूप से हाट-बाज़ार में व्यापार करते हो, तीसरे रूप से आसाम में चाय की खेती करते हो ; अतएव हे त्रिमूर्त्ते ! मैं तुम्हें प्रणाम करता हूँ।

तुम्हारा सत्वगुण तुम्हारे रचे ग्रन्थों में प्रकाशित है, रजोगुण तुम्हारे किए युद्धों में प्रकट है, तुम्हारा तमोगुण तुम्हारे लिखे भारतीय समाचार-पत्रों में प्रकाशित है। अतएव हे त्रिगुणात्मक ! मैं तुम्हें प्रणाम करता हूँ।

तुम विद्यमान हो इसीलिए तुम सत् हो, तुम्हारे शत्रु रणक्षेत्र में चित हैं, तुम उम्मेदवारों के आनन्द हो, अतएव हे सच्चिदानन्द ! मैं तुम्हें प्रणाम करता हूँ।

तुम ब्रह्मा हो, क्योंकि प्रजापति हो; तुम विष्णु हो, क्योंकि लक्ष्मी तुम्हीं पर कृपा करती हैं और तुम महादेव हो, क्योंकि तुम्हारी घर वाली गौरी है। अतएव हे अङ्गरेज़ ! मैं तुम्हें प्रणाम करता हूँ।

तुम इन्द्र हो, तोप तुम्हारा वज्र है; तुम चन्द्र हो, इनकम-टैक्स तुम्हारा कलङ्क है; तुम वायु हो, रेल तुम्हारी गति है; तुम वरुण हो, समुद्र तुम्हारा राज्य है। अतएव हे अङ्गरेज़ ! मैं तुम्हें प्रणाम करता हूँ।

तुम्हीं दिवाकर हो, तुम्हारे आलोक से हमारा अज्ञानान्धकार दूर होता है; तुम्हीं अग्नि हो, क्योंकि सब कुछ स्वाहा किए जाते हो; तुम्हीं यम हो, विशेषकर अपने मातहतों के। अतएव मैं तुम्हें प्रणाम करता हूँ।

तुम वेद हो, मैं ऋक्, यजु आदि को नहीं मानता हूँ। तुम स्मृति हो, मन्वादि भूल गया हूँ। तुम दर्शन

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

हो, न्याय मीमांसादि तो तुम्हारे ही हाथ हैं। अतएव हे अङ्गरेज़! मैं तुम्हें प्रणाम करता हूँ।

हे श्वेतकान्त! तुम्हारे अमल-धवल द्विरद-रद शुभ्र महाश्मश्रु-शोभित मुखमण्डल को देख कर इच्छा होती है कि तुम्हारा स्तव करूँ; अतएव हे अङ्गरेज़! मैं तुम्हें प्रणाम करता हूँ।

तुम्हारी हरितकपिशपिङ्गललोहितकृष्णशुभ्रादि नाना वर्ण शोभित, अतियत्नरञ्जित, ऋक्षमेदमार्ज्जित कुन्तलावलि देख कर अभिलाषा होती है कि तुम्हारा गुण गाऊँ। अतएव हे अङ्गरेज़! मैं तुम्हें प्रणाम करता हूँ।

कलिकाल में तुम गौराङ्ग के अवतार हो, इसमें सन्देह नहीं। हैट (टोप) तुम्हारा मुकुट, पैण्ट तुम्हारी काछनी और चाबुक तुम्हारी बाँसुरी है। अतएव हे गोपीवल्लभ! मैं तुम्हें प्रणाम करता हूँ।

हे वरद! मुझे वरदान दो। मैं सिर पर समला रख कर तुम्हारे पीछे-पीछे फिरूँगा, मुझे नौकरी दो। मैं तुम्हें प्रणाम करता हूँ।

हे शुभशङ्कर! मेरा भला करो। मैं तुम्हारी ख़ुशामद करूँगा, ठकुरसुहाती करूँगा, जो कहोगे वही करूँगा। मुझे बड़ा आदमी बना दो, मैं तुम्हारी वन्दना करता हूँ।

हे मानद! मुझे ख़िताब दो, ख़िलअत दो, पदवी दो, उपाधि दो, मुझे अपना प्रसाद दो। मैं तुम्हारी वन्दना करता हूँ।

हे भक्तवत्सल! मैं तुम्हारा उच्छिष्ट खाना चाहता हूँ, तुमसे हाथ मिला कर लोगों में महा सम्मानित होने की मेरी इच्छा है, तुम्हारे हाथ की लिखी दो-चार चिट्ठियाँ अपने सन्दूक़चे में रख कर औरों को नीचा दिखाना चाहता हूँ। अतएव हे अङ्गरेज़! तुम मुझ पर प्रसन्न हो, मैं तुम्हें प्रणाम करता हूँ।

हे अन्तर्यामी! मैं जो कुछ करता हूँ सो तुम्हारे रिझाने के लिए। तुम दाता कहोगे, इसलिए दान करता हूँ। तुम परोपकारी कहोगे, इसलिए परोपकार करता हूँ। तुम विद्वान कहोगे, इसलिए पढ़ता हूँ। अतएव हे अङ्गरेज़! तुम मुझ पर प्रसन्न हो, मैं तुम्हें प्रणाम करता हूँ।

मैं तुम्हारे इच्छानुसार अस्पताल बनवाऊँगा, तुम्हारे प्रीत्यर्थ विद्यालय बनवाऊँगा, तुम्हारे आज्ञानुसार चन्दा दूँगा। तुम मुझ पर प्रसन्न हो, मैं तुम्हें प्रणाम करता हूँ।

हे सौम्य! जो तुम्हारी इच्छा है, वही मैं करूँगा। मैं कोट-पैण्ट पहनूँगा, ऐनक लगाऊँगा, काँटे-चम्मच से मेज़ पर खाऊँगा। तुम मुझ पर प्रसन्न हो, मैं तुम्हें प्रणाम करता हूँ।

हे मिष्टभाषी! मैं मातृ-भाषा त्याग कर तुम्हारी भाषा बोलूँगा, बाप-दादों का धर्म छोड़ कर तुम्हारा धर्म ग्रहण करूँगा। लाला-बाबू न कहला कर मिस्टर बनूँगा। तुम मुझ पर प्रसन्न हो, प्रणाम करता हूँ।

हे सुन्दर भोजन करने वाले! मैं रोटी छोड़ कर पावरोटी खाता हूँ, निषिद्ध मांस से पेट भरता हूँ। मुर्ग़ों का कलेवा करता हूँ। अतएव हे अङ्गरेज़! मुझे चरणों में स्थान दो। मैं तुम्हें प्रणाम करता हूँ।

मैं विधवाओं का ब्याह कराऊँगा, जाति-भेद उठा दूँगा, क्योंकि तुम मेरी बड़ाई करोगे। अतएव हे अङ्गरेज़! तुम मुझ पर प्रसन्न हो। मैं तुम्हें प्रणाम करता हूँ।

हे सर्व्वद! मुझे धन दो, मान दो, यश दो, मेरी सब इच्छाएँ पूरी करो। मुझे बड़ी नौकरी दो, राजा बनाओ, रायबहादुर बनाओ, कौन्सिल का मेम्बर बनाओ। मैं तुम्हें प्रणाम करता हूँ।

यदि यह न दो तो अपनी गोठ और ज्योनारों में मुझे न्यौत बुलाओ, बड़ी-बड़ी कमेटियों का मेम्बर बनाओ, सिनेट का मेम्बर बनाओ, असेसर बनाओ, अनाड़ी मजिस्टर बनाओ, मैं तुम्हें प्रणाम करता हूँ।

मेरी स्पीच सुनो, मेरा प्रबन्ध पढ़ो, तारीफ़ करो और वाह वा कहो, फिर मैं सारे हिन्दू-समाज की निन्दा की भी परवा न करूँगा। मैं तुम्हें प्रणाम करता हूँ।

हे भगवान्! मैं अकिञ्चन हूँ, मैं तुम्हारे द्वार पर खड़ा हूँ, भूल न जाना, मैं तुम्हें डाली भेजूँगा। तुम मुझे याद रखना, मैं तुम्हें कोटि-कोटि प्रणाम करता हूँ।

(लोक रहस्य से)

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

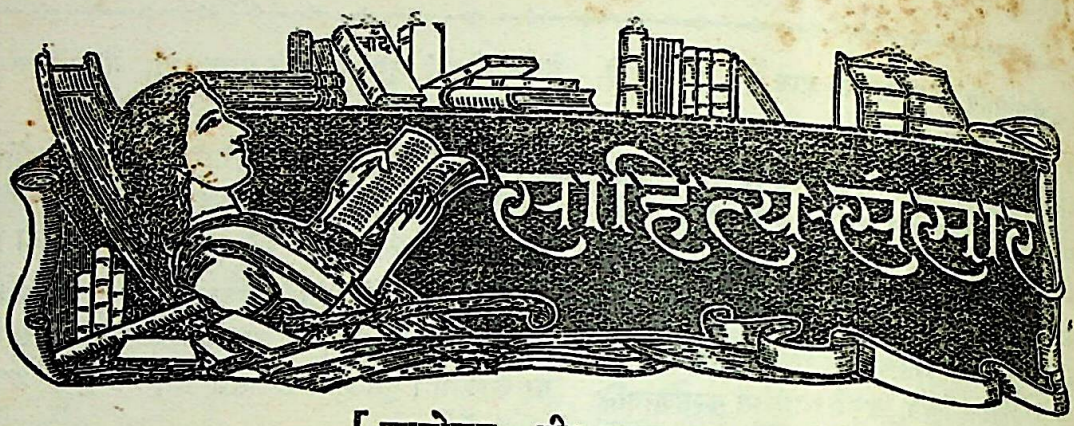

[आलोचक—श्री० अवध उपाध्याय जी]

चन्द्रकला—लेखक, चन्द्रगुप्त विद्यालङ्कार। प्रकाशक, हिन्दी-ग्रन्थ-रत्नाकर कार्यालय, हीराबाग़, बम्बई। पृष्ठ-संख्या १२२; मूल्य ॥।=), सजिल्द का १।=)

यह (१) मचाकोस का शिकारी (२) बचपन (३) भूल (४) पगली (५) आँसू (६) गोरा (७) ताड़ का पत्ता, और (८) सन्देह नामक आठ कहानियों का संग्रह है। इसकी सब कहानियाँ वास्तव में बहुत रोचक हैं। इसमें सन्देह नहीं कि श्री० चन्द्रगुप्त जी विद्यालङ्कार एक नए लेखक हैं, तथापि इनकी कहानियाँ वास्तव में बहुत सुन्दर होती हैं। मेरा पूर्ण विश्वास है कि कहानी-लेखकों के अखाड़े के सर्वश्रेष्ठ पहलवानों में विद्यालङ्कार जी का नाम शीघ्र ही लिख लिया जायगा। कहानी लिखने में, उसके प्रारम्भ करने तथा अन्त करने के ढङ्ग का सदा ख़ूब ध्यान रखना चाहिए। हमें इस बात की बड़ी प्रसन्नता है कि विद्यालङ्कार जी की कहानियों के अन्त करने का ढङ्ग सर्वथा प्रशंसनीय है। इस संग्रह की कुछ कहानियाँ तो ऐसी सुन्दर तथा उचित हैं कि उनमें उन्नति नहीं हो सकती। हमें पूर्ण विश्वास है कि यदि विद्यालङ्कार जी इसी प्रकार लिखते रहे तो बहुत ही शीघ्र वह एक सिद्धहस्त कहानी-लेखक मान लिए जायँगे। वह कहानियों को रोचक बनाने का अच्छा ढङ्ग जानते हैं।

मेरा पूर्ण विश्वास है कि विद्यालङ्कार जी मेरी निम्न-लिखित प्रार्थना पर अवश्य ध्यान देंगे। कहानियाँ कई प्रकार से रोचक बनाई जा सकती हैं। यदि हम लोग आग लगने, फाँसी देने, ज़हर खाने, मार-पीट करने और इसी प्रकार की असाधारण घटनाओं का वर्णन करें तो पाठक का मन अवश्य इस ओर आकर्षित हो जाता है। परन्तु केवल इन्हीं असाधारण घटनाओं का वर्णन करके ही, लेखक को अपनी कहानियों को रोचक बनाने का प्रयत्न नहीं करना चाहिए। साधारण घटनाओं की सहायता से कहानियाँ रोचक बनाई जा सकती हैं और बनाई जाती हैं। इस संग्रह में ऐसी बातों का एक प्रकार से अभाव है और विद्यालङ्कार जी को ऐसी कहानियों के लिखने का भी प्रयत्न करना चाहिए।

इस संग्रह की सब कहानियाँ अच्छी हैं। परन्तु मुझे 'भूल' नामक कहानी सबसे अधिक सुन्दर लगी। आदि से अन्त तक यह कहानी रोचक तथा सुन्दर है। इस कहानी से विद्यालङ्कार जी की प्रतिभा का अच्छा प्रमाण मिलता है। इस संग्रह की एक कहानी 'पगली' है। यह कहानी भी अन्य कहानियों की तरह बहुत रोचक तथा सुन्दर है, तथापि उसके अन्त करने का ढङ्ग अच्छा नहीं है और उसमें मेरा लेखक से पूर्ण मतभेद है। क़ासिम के अन्त समय की बातें और अन्त में उसकी मृत्यु बहुत खटकती है। क़ासिम के मार डालने का ढङ्ग मेरी राय में अच्छा नहीं है। जब क़ासिम ब्राह्मण (काका) के उपकारों का बदला चुकाना चाहता है और जब वह ब्राह्मण के पवित्र प्रेम से ओत-प्रोत हो जाता है, तब उसे केवल आग में कूद कर जान दे देने से ही सन्तुष्ट नहीं रहना चाहिए था। सम्भव है कि क़ासिम की सब बातें भले वैज्ञानिक भी हों, तथापि कला की दृष्टि से वह सुन्दर नहीं हैं। यदि क़ासिम नवाब के दरबार में गया होता और कम से कम उतनी वीरता तथा निर्भीकता भी दिखलाई होती, जितनी ब्राह्मण ने दिखलाई थी और यदि उसके बाद वह आत्मघात करता अथवा नवाब के नौकरों से मारा जाता तो इससे कहीं अच्छा होता। यदि क़ासिम अपने हाथ में एक नङ्गी तलवार लेकर

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

नवाब के दरबार में पहुँचता और वहाँ पर नवाब को खूब फटकारता अथवा दो-एक आदमियों को घायल करता और तब उसके बाद मरता अथवा मारा जाता तो इससे कहीं अच्छा होता।

अन्त में मैं इतना और लिखना अपना परम कर्त्तव्य समझता हूँ कि विद्यालङ्कार जी ऐसे लेखकों से हिन्दी का मुख उज्ज्वल होगा और प्रत्येक साहित्य-प्रेमी को इस संग्रह की एक प्रति अवश्य मँगानी चाहिए।

* * *

रावणा-राजपूत दर्शन—लेखक और प्रकाशक, ठाकुर नारायण सिंह पँवार, जेनरल सेक्रेटरी आल-इण्डिया रावणा राजपूत महासभा, किशनगढ़, राजपूताना। पृष्ठ-संख्या ५६; मूल्य ॥)

इस पुस्तक में उन सब आक्षेपों का उल्लेख किया गया है जो रावणा-राजपूत जाति पर प्रायः सब लोगों ने किए हैं। इस ग्रन्थ को ठाकुर नारायणसिंह जी ने अपनी जाति की सद्भावना से प्रेरित होकर लिखा है। जाति की कुरीतियों के हटाने के विचार से ही उन्होंने ऐसा किया है।

* * *

औपसर्गिक सन्निपात—लेखक, स्व० ला० राधावल्लभ जी वैद्यराज; प्रकाशक, मैनेजर धन्वन्तरि कार्यालय, विजयगढ़, ज़िला अलीगढ़। पृष्ठ-संख्या ४०; मूल्य ।); इसमें प्लेग का इतिहास, विवेचन और प्लेग की चिकित्सा आदि का वर्णन है।

* * *

किसान—(भाग २) लेखक, पं० ज्योतिःशरण रतूड़ी, टिहरी—गढ़वाल। पृष्ठ-संख्या ९३; मूल्य ॥=); इसमें भारतीय कृषक तथा अन्य लोगों के जानने योग्य कई विषयों का अच्छा वर्णन है। बग़ीचा, फलों के बाग़ और फुलवाड़ी आदि का इसमें अच्छा वर्णन है।

* * *

रुद्र-क्षत्रिय-प्रकाश—अर्थात् क्षत्रिय जाति का इतिहास। लेखक, ठा० रुद्रदत्तसिंह तोमर; मन्त्री, इन्द्रप्रस्थ क्षत्रिय-सभा। तोमर प्रकाशन द्वारा प्रकाशित। पृष्ठ-संख्या १७४; मूल्य गुप्त। इसमें क्षत्रिय-जाति का इतिहास है और उनके वंश, गोत्र, प्रवर, वेद, शाखा, शिखा, सूत्र और देवता आदि का भी वर्णन है।

* * *

आयरलैण्ड के ग़दर की कहानियाँ—लेखक, सत्यभक्त। पृष्ठ-संख्या १५४; मूल्य ॥=); इसमें आयरलैण्ड के स्वयंसेवकों के सङ्गठन, राष्ट्रीय सेना का घेरा और सरकारी सेना पर छापा मारने आदि का वर्णन है। वास्तव में यह कहानियों का संग्रह नहीं, किन्तु एक ही बड़ी कहानी है।

* * *

उपन्यास-कुसुम—सम्पादक पं० रामलोचन शर्मा; वार्षिक मूल्य ४); प्रकाशक, मैनेजर उपन्यास-कुसुम; सिद्धेश्वरी, काशी।

इसमें कविता तथा लेखों का अच्छा संग्रह है।

* * *

राज्य-ग्वालियर प्रथम हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन विवरण—इसमें प्रथम हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन का इतिहास तथा और सब विवरण है।

श्री ऋषिकुल ब्रह्मचर्याश्रम हरिद्वार के २२वें वार्षिकोत्सव पर हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन के सभापति **लाला कन्नोमल एम० ए० का अभिभाषण**—मुद्रक, पद्मसिंह जैन; प्रोप्राइटर, जैन प्रेस, जौहरी बाज़ार, आगरा।

* * *

अग्रवाल-इतिहास—लेखक, बी० एल० जैन अग्रवाल, सी० टी०; प्रकाशक, एस० सी० जैन, बुलन्दशहरी, बाराबङ्की (अवध); मूल्य ≡); पृष्ठ-संख्या २४। इसमें अग्रवालों का इतिहास है।

* * *

सूर्यरश्मि-चिकित्सा—लेखक, बाँकेलाल वैद्य सम्पादक "धन्वन्तरि"; प्रकाशक, मैनेजर धन्वन्तरि कार्यालय, विजयगढ़, ज़िला अलीगढ़। मूल्य ॥); पृष्ठ-संख्या ६०; छपाई और काग़ज़ सुन्दर। इस ग्रन्थ में सूर्य की किरणों से औषधियों का वर्णन है।

* * *

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

राजपूतों का आदर्श—लेखक ठा० केसरी-सिंह देवड़ा, जागीरदार गलथनी राज, मारवाड़; रिटायर्ड स्क्वाडर्न कमाण्डर, जोधपुर स्टेट। इस ग्रन्थ को देवड़ा जी ने क्षत्रिय-जाति के लाभ के लिए लिखा है तथा इसका वह अमूल्य वितरण करते हैं। आशा है, क्षत्रिय-जाति का इस ग्रन्थ से उपकार होगा।

* * *

श्री० श्रीचण्डी प्रथम चरित्र मधु-कैटभ-वध—श्रीमान राजा शशिशेखरेश्वर रायबहादुर कृत। राजनैतिक व्याख्या सहित।

यह मार्कण्डेय पुराण के भीतर चण्डी-ग्रन्थ का हिन्दी अनुवाद है। इसमें राजा साहब ने बड़ा परिश्रम किया है।

* * *

श्रीदासबोध—मासिक। मूल्य ।)

श्रीहनुमान व्यायाम-प्रसारक-मण्डल का चतुर्थ वार्षिक प्रतिवृत्त—अमरावती।

* * *

श्रीहनुमान व्यायाम-प्रसारक-मण्डल अमरावती का परिचय—अध्यक्ष डॉ० शि० ग० पटवर्धन और सञ्चालक अं० कृ० वैद्य। इसमें उक्त मण्डल का साधारण परिचय है।

* * *

(२०१ पृष्ठ का शेषांश)

काम अपने हाथ से ही करती हैं; चाहे कितने ही धनी-मानी पुरुष की कन्या तथा बहू क्यों न हों। दो कार्य तो उनके लिए बहुत आवश्यक समझे जाते हैं। (१) कुएँ से जल भर कर लाना (२) कुटुम्ब के लिए आटा पीसना। दोनों कार्यों के करने में उनका ख़ासा व्यायाम हो जाता है। लेकिन संसार की बहती हुई लहर अब वहाँ भी पहुँचती जा रही है। इन सब बातों का दोष यदि पुरुषों के मत्थे रक्खा जाय तो कोई अत्युक्ति न होगी, कारण वे ही स्त्रियों को उचित शिक्षा से वञ्चित रखते हैं, जिससे उनका जीवन नरक-तुल्य हो जाता है।

बहिनो, यदि वास्तव में तुम सुन्दरता की उपासिका हो, तो स्वास्थ्य को प्राप्त करके शरीर को सुन्दर बनाओ। यही एक सुन्दरता प्राप्त करने का मूल-मन्त्र है। यथाशक्ति निम्न-लिखित नियमों का पालन करो:—

(१) विद्या पढ़ कर ज्ञान उपार्जन करो, जिससे तुम संसार-सागर में अपने जीवन की नौका को अच्छे प्रकार खेकर ले जा सको।

(२) ब्रह्मचारिणी बनो। प्रत्येक बहिन गृहस्थ-आश्रम में रह कर नियमानुसार जीवन बिताते हुए ब्रह्मचारिणी रह सकती हैं। इससे तुममें आत्मिक बल, तीक्ष्णता, निर्भीकता और सत्य आदि सद्गुण आ जायँगे। इन गुणों के द्वारा संसार पर विजय प्राप्त की जा सकती है।

(३) बाल-विवाह और वृद्ध-विवाह की कुप्रथा को समाज से निकाल दो।

(४) महा विनाशकारी परदे का परित्याग कर दो।

(५) घर का काम स्वयं करने में कभी सङ्कोच न करो। परन्तु जिस काम में अधिक व्यायाम पड़ता हो, अवश्य करो।

(६) सात्विक भोजन करो, भोजन का आचार-विचार पर बड़ा प्रभाव पड़ता है।

(७) प्रातःकाल उठो और खुली वायु में रहो।

(८) ईश्वरोपासना करो। इससे अन्तःकरण की शुद्धि होती है। यदि जीवन को उन्नत बनाना चाहती हो तो प्रातःकाल या सायङ्काल ईश्वर की उपासना करना कभी मत भूलो।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

दिल की आग उर्फ़ दिल-जले की आह !

["पागल"]

पञ्चम खण्ड

सन्तोषानन्द

१

ब से अलिन्द मेरे पास से तिलमिला कर भागा, फिर लौट कर नहीं आया। सारी रात बीत गई। दूसरा दिन भी गुज़र गया। तब तो मुझे बड़ी चिन्ता हुई। उसके मकान पर गया, उसे ज्यों का त्यों बन्द पाया। इधर-उधर ढूँढ़ा। उसका कहीं पता न चला। सिर्फ़ पोस्टमैन से इतनी ख़बर मिली कि कल शाम की डाक लाने में उसे बहुत देर हो गई थी। अलिन्द के नाम बस एक ही पत्र था, जिसे उसने चिराग़ जलने के बाद लगभग साढ़े सात बजे अलिन्द को दिया था, जब वह कुछ घबड़ाया हुआ इस मकान के फाटक से निकल रहा था। उसके बाद एक मेरे जान-पहचान वाले से मालूम हुआ कि उसने उसको गङ्गा के पुल पर लम्प के खम्बे के पास खड़ा हुआ उसकी रोशनी में कोई काग़ज़ पढ़ते देखा था। यह सुनते ही मेरे होश उड़ गए। रह-रह कर सोचता था, या ईश्वर! वह दरिया के पुल पर किस नीयत से गया था और वहाँ से वह एकाएक कहाँ लापता हो गया! उसकी सम्पूर्ण आशाएँ भङ्ग होकर उसके लिए संसार असार पहिले ही हो चुका था। मेरी ही सहानुभूति ने उसमें कुछ पुनर्जीवन का सञ्चार किया था। और अन्त में हाय! मैंने ही उस पर वज्राघात किया। इसके लिए मैं विवश था। क्षणिक आवेश में मैं अपने भावों को छिपा न सका।

उससे मुझे हद दर्जे की सहानुभूति थी। उसकी व्यथाओं पर मैं आँसू बहाता था। फिर भी न जाने क्यों इधर कुछ दिनों से मेरी तबीयत उससे कुछ जल सी गई थी। शायद इसलिए कि वह मन ही मन तारा को प्यार करने लगा था; मगर मुझे भुलावे में रखने के लिए वह मेरे सामने सरोज ही का दम भरता जाता था। तारा का मेरे यहाँ होना जान कर उससे मिलने के लिए बेताब हो जाना, अपनी इस ग़रीबी की हालत में भी उस पर अपना सब कुछ न्योछावर कर देना, मेरी अनुपस्थिति में उससे लपझप करना, यह सब बिना प्रेम के कैसे सम्भव था? यद्यपि मैंने ही इस प्रेम की उत्पत्ति के लिए इतनी युक्तियाँ की थीं, तथापि यह मैं नहीं चाहता था कि मेरी युक्ति सफल होने पर भी वह मुझे जान-बूझ कर धोखे में रखने का उद्योग करे। मैंने तो इसके लिए यहाँ तक किया कि तारा को आधी रात के समय इसके कमरे में देखते ही यहाँ से कई महीनों के लिए ग़ायब हो गया। ताकि इन लोगों के प्रेम में मेरी मौजूदगी से जो कुछ ख़्याली बाधा हो भी तो वह उठ जाए। इसका तो मुझे आभास मिल चुका था कि यह दोनों एक-दूसरे को चाहने लगे हैं, मगर यह मैं नहीं जानता था कि इन लोगों की घनिष्टता इस हद तक पहुँची हुई है और वह मुझसे इस तरह छिपाई जा रही है। इसीसे मैं तारा से भी चिढ़ उठा था। मगर इसका उलटा असर पड़ा। वह बजाय मुझे अपना हिती समझने के न जाने क्या समझ कर मुझसे दिनोंदिन खिंचती गई। यहाँ तक कि उसे मुझसे बातें तक करने में सङ्कोच होने लगा। वह जो कुछ मुझसे कहना भी चाहती थी वह अलिन्द ही के द्वारा। यह पाखण्ड मेरे लिए असहनीय हुआ ही चाहे। यद्यपि अलिन्द सरोज के प्रेम में अन्धा होने के कारण, सम्भव है, मेरे उद्योग और सहायताओं को ठीक-ठीक समझ न सका हो या अपने हृदय की नवीन गति से अभी तक बिल्कुल अज्ञान हो और धोखे में अब भी यही जानता हो कि वह दिल में सरोज ही को प्यार करता है या यह भी सम्भव है कि वह तारा को मेरी स्त्री जान कर, मेरे आगे अपने भावों पर पर्दा डाल कर मुझे

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

भ्रम में रखने के लिए और ही दृश्य दिखा रहा है। तथापि तारा को तो न स्वयं धोखे में रहने और न मुझे धोखे में डालने के लिए कोई कारण था। इसीसे इसके इन दिनों के बर्तावों से मेरे दिल में एक जलन सी रहा करती थी। इसी के मारे मेरा चित्त बहुधा व्याकुल रहता था। किसी काम में जी नहीं लगता था। और इसीलिए आजकल अलिन्द से पूर्णरूप से सहानुभूति नहीं कर पाता था। उसकी कहानी कौतुकवश सुनता था। मगर उस पर पहिले की भाँति तर्स खाने के बदले बीच-बीच में तबीयत को हज़ार रोकने पर भी व्यङ्ग-वर्षा कर बैठता था। और अन्त में तो हाय! मैं वह आग उगल बैठा कि जिसका परिणाम यह हुआ कि वह मुझे ही छोड़ कर भाग गया। यदि मेरे हृदय में इतनी अशान्ति न होती तो ऐसा अनर्थ जान-बूझ कर कदापि नहीं कर सकता था।

मगर मेरे वाक्य से अलिन्द को इतनी चोट क्यों लगी? क्या उसके हृदय में सरोज का प्रेम वैसा ही बना हुआ है? क्या तारा का प्रेम अब तक उसे फीका नहीं बना सका? क्या केवल तारा ही उसे चाहती है और वह नहीं? आह! तब तो मुझी को उसके विषय में भ्रम हुआ और नाहक़ जले को मैं और जला बैठा। मगर अब पछताने से क्या होता?

मैं इसी तरह के सोच-विचार में अपने दिल को कुढ़ाने लगा। उस पर उसके पुल पर जाने का ख़्याल मुझे और भी परेशान कर रहा था। मगर मुझे अपने विचारों को किसी पर प्रगट करने का भी साहस नहीं होता था। माँ जी से और अपने यहाँ के नौकरों से यही कह दिया कि अलिन्द को एक विशेष काम से बम्बई चला जाना पड़ा है। घबड़ाने की कोई बात नहीं है। इसलिए सब लोग तो बेफ़िक्र थे। मगर मैं अपनी घबड़ाहट को कैसे रोकता? कब तक इन लोगों को बहाने पर रखता? उसका इस तरह अलोप हो जाना रह-रह कर मेरे कलेजे में बर्छियाँ चलाता था। जानता था, मैं ही इस अनर्थ का कारण हूँ। ईश्वर जाने वह जीता है या...? अन्त में मैंने सेठ जी से मिल कर किसी तरह बातों-बातों में सरोज के विषय में और हाल जानने की ठानी। शायद इस तरह अलिन्द को पाने की आशा बाँधने के लिए मुझे कोई सूत मिल जाए। मगर अफ़सोस! वह कई दिनों पहिले ही सपरिवार कलकत्ते चले जा चुके थे। कोठी के चौकीदार और माली से पूछ-पाछ करने पर जाना कि पुत्री ब्याहने के एकाध साल बाद ही सेठ जी ने बङ्गाल में स्वदेशी कपड़ों की माँग बढ़ते देख कर डिप्टी साहब की सलाह से कलकत्ते में कपड़ों का एक कल मिल खोल दिया था, और तभी से वह अधिकतर वहीं रहते हैं। यहाँ तो कभी-कभी साल में बस एकाध बार कुछ दिनों के लिए आ जाते हैं। डिप्टी साहब के विषय में पता चला कि उन्होंने इस काम में सेठ जी की बड़ी मदद की। यहाँ तक कि उन्होंने सरकारी नौकरी छोड़ कर इस कारख़ाने की मैनेजरी ख़ुद अपने हाथ में ले ली और उन्हीं के आग्रह से सेठ जी को मय अपने घर के फिर वहीं जाकर रहना पड़ा, ताकि मालिक के समीप रहने से इस नए कारबार में किसी प्रकार की आँच न आने पाए। डिप्टी साहब की यह चाल मेरी कुछ समझ में आई नहीं और न इन बातों से मुझे अलिन्द के विषय में कोई सन्तोषजनक आधार ही मिला।

कई महीनों से मुझसे और तारा से किसी प्रकार की बातचीत की नौबत नहीं आई थी। अलिन्द के जाने के बाद मुझे उससे भी इस सम्बन्ध में कुछ पूछ-पाछ करने की बड़ी इच्छा थी। मगर संयोग की ख़ूबी कि इन दिनों जब कभी वह किसी काम से मेरे घर के मकान में आई तब मैं ही घर पर नहीं होता था। और जब मैं इस इरादे से आश्रम में जाता था तो काम की भीड़ के मारे उसे मुझसे मिलने की फ़ुरसत नहीं मिलती थी!

इस तरह अलिन्द के लिए मेरी परेशानी बढ़ती ही गई। यहाँ तक कि मेरा दिमाग़ उसे अधिक सहन न कर सका और मैं बीमार पड़ गया। मेरी बीमारी की ख़बर पाते ही माँ जी दौड़ी हुई आईं और अपने साथ तारा को भी लेती आईं। मगर माँ जी के सामने अलिन्द के विषय में तारा से कुछ पूछना न तो उचित ही था और न उसकी चिन्ताग्रस्त सूरत देख कर उससे बोलने का मेरा साहस ही पड़ सकता था। मैं समझ गया कि अलिन्द के लिए यह स्वयं ही चिन्तित है। ऐसी दशा में यह प्रसङ्ग उसके लिए और भी दुखदाई होगा। इस लिए मैंने उसे आश्रम में जाने को कह कर अपना काम देखने को विवश किया।

सन्ध्या को माँ जी जब मेरे पास बैठी हुई मेरी हाल

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

देशभक्ति के अपराध में जेल जाने वाली तीन महिलाएँ

श्रीमती कमलादेवी चट्टोपाध्याय
आपको १½ मास के क़ैद की सज़ा दी गई है

श्रीमती सरोजिनी नायडू
आपको ९ मास के क़ैद की सज़ा दी गई है

श्रीमती रुक्मिणी लक्ष्मीपति
आप वर्तमान आन्दोलन में जेल जाने वाली सर्व-प्रथम महिला हैं, जिन्हें एक वर्ष का कारावास दण्ड दिया गया है।

FINE ART PRINTING COTTAGE ALLAHABAD

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

लालबुझक्कड़

[लेखक—श्री० जी० पी० श्रीवास्तव,
बी० ए०, एल्-एल्० बी०]

श्री० श्रीवास्तव महोदय संसार के सबसे श्रेष्ठ हास्य-नाटककार फ़ान्स के 'मोलियर' (Moliere) की चुनी हुई रचनाओं का रसास्वादन हिन्दी-पाठकों को अनेक बार करा चुके हैं। प्रस्तुत नाटक मोलियर महोदय की चुनी हुई रचनाओं में से है। यह नाटक सर्व-प्रथम सन् १६५३ या १६५५ ईस्वी में लॉयन (Lyons) नगर में, उसके बाद सन् १६५८ में फ़ान्स की राजधानी पेरिस में बादशाह के समक्ष खेला गया था और सारे विश्व ने इसकी भूरि-भूरि प्रशंसा की थी।

श्रीवास्तव महोदय ने जिस बाने में इसे हिन्दी-संसार में उपस्थित किया है, वह देखने योग्य है। हँसते-हँसते पेट न फूल जाय तो पुस्तक का दाम वापस !!! मूल्य २)

☞ व्यवस्थापिका 'चाँद' कार्यालय, चन्द्रलोक, इलाहाबाद

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

यत का हाल पूछ रही थीं, तब मैं बातों-बातों में उनसे अपने मतलब की बात पूछने लगा। सबसे पहिले मैंने अलिन्द की शादी का प्रसङ्ग उठाया। इसे सुनते ही वह रो पड़ीं। आँखों में आँसू भर कर कहने लगीं—घर में कोई बड़ा-बूढ़ा होता तो अब तक मैं भला बहू के मुख देखने के लिए तरसती? हाय! यह सुख मेरे नसीब में लिखा ही नहीं है। इधर हमारी बिरादरी के लोग हैं कहाँ? और हमारे देश में हमारी जाति में लड़कियाँ भी तो कम हैं। इसीलिए हमारी बिरादरी में लड़के वालों को लड़की ढूँढ़नी पड़ती है। अलिन्द से मैं कहते-कहते हार गई कि एक बार देश चल कर शादी कर ले। मगर नहीं सुनता। यही कहता है कि बहू आएगी तो तुमको मार के निकाल देगी। आख़िर इसकी अब उमर भी बीत गई। क्या करूँ? अपना दुर्भाग्य!

मैंने अवसर पाकर इसी तरह सेठ जी के घराने की चर्चा करते हुए सरोज के विवाह का भी प्रसङ्ग छेड़ दिया। इस पर वह बड़ी देर तक सरोज की सिधाई और भलमनसाहत की तारीफ़ करती रहीं। उसके बाद कहने लगीं—मैं तो उसके विवाह में अलिन्द की बीमारी में फँसी थी। मगर सुनती हूँ, उसे बड़ा अच्छा घर मिला है। बड़ी भाग्यवान लड़की है। वह रानी बनने योग्य थी और ईश्वर की कृपा से भाग्य ने भी उसे रानी ही बनाया। यों तो सेठ जी के यहाँ की लड़कियों की बड़ी अच्छी-अच्छी जगह शादी हुई है, मगर ऐसा घर किसी को नहीं नसीब हुआ। उसके पति एक बहुत ही बड़े जागीर के मालिक हैं। राजा कहलाते हैं। रङ्गून में उनके कई जहाज़ चलते हैं। कलकत्ते में उनकी अनगिनती कोठियाँ हैं ...।

मैं—उसकी ससुराल कहाँ है?

माँ जी—नाम नहीं याद पड़ता। पर है कलकत्ते के पास ही कहीं। तभी तो जब पहले-पहल सरोज ससुराल से आई थी तो सोने से लदी हुई थी, और सभी गहने बङ्गाली सुनारों के हाथ के बने थे। अहाहा! गले का चन्द्रहार तो बस देखने लायक़ था। हाथ के कङ्गन का क्या कहना था...!

मैं—तो मालूम होता है कि उसका रहना कलकत्ते में भी हुआ करता होगा?

माँ जी—हाँ-हाँ, जब वहाँ उसकी सैकड़ों कोठियाँ हैं तब वहाँ क्यों न रहे? राजा साहब तो नाच-रङ्ग, ठेठर-फेठर के बड़े शौक़ीन ही ठहरे। साल में महीनों कलकत्ते में रहा करते हैं। सरोज की दासियाँ तो यहाँ तक कहती थीं कि राजा साहब गाना सुनने के ऐसे लती हैं कि जब तक वह गाना नहीं सुन लेते तब तक उनका खाना ही नहीं पचता। इसीलिए उन्हें कलकत्ता पसन्द है। जहाँ किसी नाटक में किसी नर्तकी का उन्हें गाना पसन्द आया तहाँ उसे दो-चार महीने के लिए नौकर रख कर अपने राज्य में ज़रूर बुला लेते हैं। फिर तो रातोदिन उसका गाना हुआ करता है। नाच-गाने का आदर राजा-महाराजा के यहाँ होता ही है।

अब जाकर डिप्टी साहब के कलकत्ते में सेठ जी से नया कारख़ाना खुलवाने का कारण कुछ समझ में आया।

माँ जी ने फिर कहना शुरू किया—इसी गाने ही के कारण तो सरोज को ऐसा घर नसीब हुआ। यद्यपि सेठ जी दौलत में किसी से कम नहीं हैं, फिर भी राजा राजा ही होता है।

मैं—गाने के कारण कैसे?

माँ जी—सरोज की आवाज़ में एक अजीब मिठास और सुरीलापन है। इसी की तो तारीफ़ सुन कर राजा साहब ऐसे रीझे कि अपनी पहिली रानी के जीवित होते हुए भी सरोज से विवाह कर लिया।

मैं—क्या सरोज के पति की दो पत्नियाँ हैं?

माँ जी—हाँ, इसमें अचरज की कौन बात है? राजाओं के यहाँ दो कौन कहे, सैकड़ों रानियाँ हुआ करती हैं। और सरोज का तो सुनती हूँ वहाँ बड़ा मान है। राजा साहब के मनेजर हुकुम के लिए उसका मुँह निहारा करते हैं।

मैं—मनेजर कौन?

माँ जी—राजा साहब ही के कोई रिश्तेदार हैं। असल में वही रियासत के मालिक हैं। राजा साहब को तो लोग अभी लड़का ही समझते हैं। वह राज-काज सँभालना क्या जानें? वह नाम के राजा हैं। उन्हें बस अपने गाना सुनने से मतलब। इसीलिए तो उनके मनेजर ने जब यहाँ के हिन्दू-सङ्गठन के जलसे में—जिसके वह सभापति बन कर आए थे—सरोज को और लड़कियों के साथ 'बन्देमातरम्' गाते सुना, तब उसे अपने राजा की

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

छोटी रानी बनाने के लिए चुना था। उसी जलसे में उनसे डिप्टी साहब से जान-पहचान हुई और उनसे उन्होंने अपनी इच्छा कही। बस डिप्टी साहब ने सेठ जी से कह-सुन कर झट ब्याह तय करा दिया। तभी तो सेठ जी डिप्टी साहब को अपने पुत्र से भी बढ़ कर मानते हैं।

मैं—यह कहिए सरोज के गाने पर राजा साहब नहीं, बल्कि मनेजर साहब रीझे थे।

माँ जी—हाँ-हाँ बात तो वही हुई। अपने मालिक की पसन्द जान कर इन्होंने उसे पसन्द किया। और वह भी तो इसकी तारीफ़ ही सुन कर ब्याह के लिए राज़ी हुए होंगे। वरना इसके साल ही भर पहले उनकी पहिली शादी हो चुकी थी। बिना रीझे हुए इतनी जल्दी भला कौन अपनी दूसरी शादी कर सकता है? यह तो सोचिए।

मुझे मामला कुछ रहस्यमय जान पड़ने लगा। इसलिए इधर-उधर की बातें करके मैंने पूछा—भला इस शादी से सरोज ख़ुश थी?

माँ जी—क्यों? ख़ुश क्यों न होती? कौन ऐसी अभागी लड़की है जो रानी होने में अपना अहोभाग्य न समझेगी?

मैं—यह तो सही है। मगर सरोज के रङ्ग-ढङ्ग से क्या मालूम होता था?

माँ जी—बड़ा अच्छा रङ्ग-ढङ्ग था। यों तो देह में एक न एक बीमारी लगी ही रहती है, मगर ब्याह होने के बाद जब पहले-पहल आई थी तब भली-चङ्गी थी। गुलाब के फूल की तरह खिली हुई थी। हीरे-मोती के जड़ाऊ गहनों से लदी थी। मगर वाह! बेचारी को तनिक गुमान नहीं था। हमसे उसी तरह आकर मिली थी। मिज़ाज में वही लड़कपन था। मुँह पर वही हँसी बल्कि पहिले से और ज़्यादा। हाँ, अब ज़रा शर्माने लगी थी। ससुराल की बातों पर भाग खड़ी होती थी। यह तो सभी में होता है।

मैं—राजा साहब के सम्बन्ध में क्या कहती थी?

माँ जी—भला उनकी बातें हम वृद्धाओं के आगे थोड़े ही कह सकती थी? अपनी सखियों में उनका बखान करती थी। मगर उन दिनों तो राजा साहब दुनिया घूमने के लिए देश से रवाना हो चुके थे।

मैं—अलिन्द से भी पहिले ही की तरह मिली थी?

इस पर माँ जी चौंकीं। फिर कुछ सोच कर कहने लगीं—पहिले की तरह कैसे मिल सकती थी? ब्याह हो जाने पर अपने भाई-बाप तक से लड़कियाँ शर्माती हैं। यही उन्हें चाहिए भी।

मैं—तो क्या अलिन्द से उसने भेंट ही नहीं की?

माँ जी—भेंट करती क्यों नहीं? मगर उसके लड़के पर अलिन्द ही लिहाज़ कर गया।

मैं—कैसे?

माँ जी—वह मिलने के लिए हमारे यहाँ आई हुई थी। इतने में अलिन्द वहाँ आ गया। बस वह तो खड़ी हुई और झट ज़रा घूँघट निकाल कर मुँह ढँकने लगी। यह देख कर अलिन्द चुपचाप लौट गया। मैंने उसे वहाँ लाख बुलाया, मगर फिर वह नहीं आया। कई दफ़े मैंने बाद को उससे कहा भी कि सेठ जी के यहाँ जाकर ज़रा उससे मिल आ। जब वह हम लोगों को इतना मानती है कि रानी होकर भी हमारे घर आई तो हम लोगों को भी उसे उसी तरह मानना चाहिए। मगर वह नहीं गया। बल्कि उल्टे यही कहता था कि जब वह हमें अब बेगाना समझ कर हमारे आगे घूँघट निकालती है तो उसके सामने हमारा जाना बेकार है। हम उसे कितना मानते हैं, यह इसीसे समझ सकती हो कि हमें उसे घूँघट निकालने तक का भी कष्ट देना गवारा नहीं है। अब तो जब हमें वही बुलाएगी तभी उसके पास जा सकते हैं।

अलिन्द की दिली चोट को मैं समझ गया। मैंने माँ जी से फिर पूछा—अच्छा उसने अलिन्द को फिर कभी बुलाया?

माँ जी—उस दफ़े नहीं। क्योंकि जिस दिन वह ससुराल जा रही थी, उस दिन भी मैंने अलिन्द को उसके पास जाने को कहा था। मगर उसने ऐसा ही कुछ कहा था कि उसकी मर्ज़ी नहीं है और मेरी भी तबीयत अच्छी नहीं है। क्या बताऊँ, यह अपने मिज़ाज के आगे किसी को कुछ नहीं समझता है। इसमें उसका भी दोष नहीं; उसकी उस बीमारी ने उसका मिज़ाज ही सत्यानाश कर दिया। तभी से वह बहुत चिड़चिड़ा हो गया है। न किसी से बोलता है, न चालता। हर वक़्त न जाने क्या सोचा करता है।

अलिन्द के मिज़ाज बदलने का कारण मैं ख़ूब

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

समझता था। इसलिए मैंने यह बात छोड़ कर पूछा—भला इसके बाद सरोज कब आई ?

माँ जी—आह ! उसके बाद तो सेठ जी सब लोगों को ले जाकर कलकत्ते में रहने लगे। फिर उसका यहाँ आना-जाना कैसे होता ? जहाँ उसके माता-पिता रहते वहीं तो आती-जाती। हाँ, वह लोग यहाँ भी कुछ दिनों के लिए आ जाया करते थे। तब अलबत्ता हम लोगों की यही लालसा रहती थी कि इस बीच में अगर उसका आना हो जाता तो क्या कहना था। अन्त में ईश्वर ने हम लोगों की प्रार्थना सुनी और पारसाल जब सेठ जी पिछले दफ़े यहाँ आए थे तो वह भी उनके साथ हवा-पानी बदलने की ख़ातिर चली आई थी, क्योंकि वहाँ का पानी अच्छा नहीं है। वहाँ वह हमेशा बीमार रहती है। हम लोगों ने जब इस दफ़े उसे देखा तो बस कलेजा धक् से होकर रह गया। वह सूख कर काँटा हो गई थी। सूरत पर मुर्दनी छाई हुई थी। आँखें गड्ढे में घुसी हुई थीं। रङ्ग बिलकुल पीला पड़ गया था ; और तो और, अलिन्द भी उसे देख कर रो पड़ा।

मैं—क्या अलिन्द से उससे इस दफ़े भेंट हुई थी ?

माँ जी—हाँ, उसने अपने घर में पाँव रखते ही अलिन्द को बुलाने के लिए अपनी दासी भेजी। अब उसमें पहिले सी झिझक न थी। अलिन्द उस वक़्त घर पर नहीं था। जैसे ही आया, मैंने उससे कहा। वह दौड़ा हुआ गया। लौट कर आया तो मारे ख़ुशी के फूला नहीं समाता था। आपे से बाहर होकर कहता था कि सरोज सचमुच हम लोगों को वैसा ही मानती है। देखो आते ही उसने बुला भेजा। फिर आँखों में आँसू भर कर कहने लगता था कि बेचारी बहुत दुबली हो गई है, जैसे बरसों की बीमार। चेहरे पर वह चमक-दमक कुछ भी नहीं है। यह ज़रूर हमी लोगों के बिछुड़ जाने के कारण उसकी ऐसी दशा है। हा ! ऐसा जानते तो उसीके नगर में हम लोग कुटी बना कर रहते। इतना कहते-कहते वह रो पड़ा था। क्या करे, उसका दिल बड़ा मुलायम है। उससे किसी का भी दुख देखा नहीं जाता।

मेरी आँखों में आँसू भर आए। सच है, प्रेम का अभाव राज्य का वैभव नहीं पूरा कर सकता।

माँ जी फिर कहने लगीं—वह आते ही सफ़र की थकान के कारण बीमार पड़ गई। डॉक्टरों और अस्पताल की दाइयों से बराबर घिरी रहती थी। उसकी देख-रेख के लिए सभी थे, फिर भी अलिन्द का जी नहीं मानता था। वह दिन में कई बार उसे देखने जाता था। अलिन्द की तबीयत ही ऐसी है कि अगर कोई एक दफ़ा भी उससे मीठी बोली बोल दे तो उसकी जूतियाँ तक उठाने को तैयार हो जाता है। मैं भी तीसरे-चौथे उसे देखने जाती थी। उसका चाँद सा मुखड़ा कुम्हलाया हुआ देख कर मेरी छाती फटने लगती थी। वह मुझे देखते ही हाय ! बिलख-बिलख कर कहती थी—माँ जी, क्या आपके घर मुझे अब सेव खाना नहीं बदा है ?

माँ जी रोने लगीं। आँसू पोंछ कर बोलीं—उसे मेरे हाथ का बना सेव बहुत पसन्द था। वह पहिले जब कभी आती थी, ज़िद करके मुझसे सेव बनवा कर खाती थी। इसीलिए इस दफ़े भी जैसे ही वह कुछ अच्छी हुई, वह मेरे घर दौड़ी आई। मैं झट कड़ाई चढ़ा कर उसके लिए सेव बनाने लगी। वह भी मेरे साथ चौके में बैठी और कमज़ोरी के कारण वहीं ज़मीन ही पर लेट गई। रानी होकर उसका ज़मीन पर इस तरह लेट जाना भला मुझसे किस तरह देखा जाता ? मैं झट उठ कर क़ालीन बिछाने लगी। उसने मना करके कहा—नहीं-नहीं, मुझे इस मकान की ज़मीन में जो सुख है वह महलों के सिंहासन पर भी नहीं। मैं इस मकान के लिए, इस ज़मीन के लिए तरस-तरस गई हूँ माँ जी ! इसीके लिए मैं सौ-सौ तरकीबें करके इस दफ़े बनारस आई हूँ। ईश्वर के लिए मुझे इस सुख का कुछ आनन्द लूटने दीजिए। उसका हम लोगों के प्रति इतना प्यार देख कर मेरा हृदय उमड़ आया।

मैंने व्यग्र होकर पूछा—उसकी यह बातें भला अलिन्द ने भी सुनी थीं ?

माँ जी—हाँ, वह तो रसोई-घर के द्वार ही पर खड़ा था। बल्कि उसीने दौड़ कर क़ालीन लाकर मुझे दिया और सरोज से कहा था कि सरो, तुम रानी होकर हम लोगों को क्यों इतना काँटों में घसीट रही हो ? इस पर सरोज ने जवाब दिया कि रानी कह कर आप ही मुझ पर अन्याय कर रहे हैं। मैं तो आप लोगों के लिए वही सरो हूँ। क्या ब्याह हो जाने से हृदय थोड़े ही बदल जाता है ?

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

मेरे मुँह से सहसा एक आह निकल पड़ी। मैं यह सोच कर दिल ही दिल कसमसा उठा कि उसकी बातों का अलिन्द के हृदय पर कितना बड़ा प्रभाव पड़ा होगा। तभी वह सरो को अब भी अपनी ही समझता है और उसका प्रेम किसी प्रकार से भी शिथिल नहीं होने पाता।

माँ जी मेरी परेशानी देख कर बोल उठीं—क्या हुआ क्या?

मैं—कुछ नहीं। आगे कहिए।

माँ जी—आगे क्या कहूँ। इसके बाद सरोज अलिन्द के नए चित्र देखने के लिए चित्रशाला में गई। साथ में उसके घर के बच्चे भी थे। थोड़ी देर में सेव लेकर मैं भी वहीं पहुँची। देखा, वहाँ बच्चे ऊधम मचाए हुए हैं। सरोज फ़र्श पर बड़े सोच में बैठी हुई आँसू बहा रही है। और अलिन्द कमरे में पागलों की भाँति टहल रहा है। उस दिन सरोज न जाने क्यों इतनी रञ्जीदा थी कि उससे मेरे सेव भी खाए न गए। वह तुरन्त उठ कर घर जाने लगी। मैंने उसे बहुत रोका। मगर वह यह कह-कर चली गई कि अब तो मैं चित्रकारी सीखने जल्दी-जल्दी आया करूँगी। आज जाने दीजिए। मगर चित्र-कारी सीखने का मनसूबा उसके दिल ही में रह गया। क्योंकि फिर वह हमारे यहाँ आ न सकी और इसी बीच में उसके मनेजर की बीमारी का तार आ गया और उसे ससुराल चला जाना पड़ा। तब से उसका आना नहीं हुआ और तभी से उसका दुख देख कर अलिन्द का सर कुछ फिर सा गया है। यों तो उसका दिमाग़ पहिले ही से ख़राब था, मगर हाय! अब तो उसकी हालत और भी बत्तर हो गई। रात-रात भर कमरे में टहला करता था। सोते में चौंक कर चिल्ला उठता था—बचाओ! बचाओ! हाय! सरो को वह मार रहा है? रातोदिन वह ऐसी ही धुन में रहा करता था? मैं बार-बार उससे पूछती थी कि तुझे क्या हो गया है। इसका वह यही उत्तर देता था कि सरो बड़े दुख में है। मैंने बहुतेरा समझाया कि पराए दुख पर इतना परेशान नहीं होना चाहिए। तब वह कहता था कि वह जब हम लोगों को इतना मानती है तब वह पराई क्यों, अपनी ही है। उसका दुख मुझसे नहीं सहा जाता। ईश्वर न करे, किसी दुश्मन के भी ऐसा नर्म दिल हो। उसकी हालत देख कर जब मैं उसे बहुत समझाने-बुझाने लगी तब एक दिन ऊब कर न जाने कहाँ वह चला गया। रोते-रोते हम लोगों की बुरी दशा हो गई। मगर धन्य ईश्वर, कुछ दिनों के बाद लौट आया। और तभी शायद रेल में आने और उससे पहिले-पहल जान पहचान हुई थी। वह कहता था।

माँ जी की बातें किसी साधारण आदमी को या तो उन्हीं को साधारण प्रतीत हों तो हों, मगर किसी औप-न्यासिक जासूस के लिए, जो मेरे बराबर अलिन्द का हाल जान चुका हो, बड़े ही महत्व की थीं। इसीलिए मैं रात भर उन्हीं पर विचार करता रहा और हर बार इसी निर्णय पर पहुँचता था कि सरोज के दुख के कारण में अवश्य ही प्रेम के अतिरिक्त कोई भयङ्कर रहस्य है, जिसका कुछ-कुछ आभास अलिन्द को भी मिल चुका है और जिसको उसने स्वयं ठीक-ठीक न समझ सकने के कारण मुझसे नहीं कहा या जान-बूझ कर ही मुझसे छिपाया है। मनेजर का सरोज के गाने पर इतना मुग्ध होना कि अपने विवाहित राजा से, जिसकी एक ही साल पहले पहली शादी हो चुकी थी, सरोज के सङ्ग ब्याह कराना, उसके बाद ही उसके पति का संसार-भ्रमण के लिए चला जाना, उससे मिलन के समय अलिन्द की पागलों की हालत इत्यादि कोई बेढब भेद अवश्य रखते हैं। मगर वह है क्या? इसी को जानने के लिए मैं अब छटपटाने लगा। क्योंकि उसी पर अलिन्द का पाना या न पाना तथा उसके प्रेम का परिणाम समझना मुझे बहुत-कुछ निर्भर जान पड़ा।

(क्रमशः)

(Copyright)

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

[सम्पादक—श्री० किरण-कुमार मुखोपाध्याय (नीलू बाबू)]

आर्तनाद

[शब्दकार तथा स्वरलिपिकार पं० केदारनाथ जी 'बेकल' बी० ए०, एल० टी०]

लावनी—ताल कहरवा (८ मात्रा)

मदन मन मोहन गिरिधारी, मेरी सुधि लेना बनवारी

ज्ञान, मान, धन हीन हूँ, रहा न कुछ भी पास
कभी जो अपने दास थे, बना हूँ उनका दास
बहुत हो चुकी मेरी ख्वारी
मेरी सुधि लेना बनवारी

सङ्कट भारत के हरो, आन बचाओ प्राण
फिर इस भूमि को करो, सुख-सम्पति की खान
पधारो शङ्ख चक्रधारी
मेरी सुधि लेना बनवारी

शरण नाथ मैं आपकी, सुनो मेरी फ़रियाद
मोम हुआ पाषान भी, सुन कर आरत नाद
तुम्हीं सोये हो गिरिधारी
मेरी सुधि लेना बनवारी

'बेकल' की विनती सुनो, कहूँ नाथ कर जोर
बलिहारी मुख-चन्द्र के, दीन मलीन चकोर
शीघ्र दो दर्शन सुखकारी
मेरी सुधि लेना बनवारी

स्थायी

ति	न०	के	धी	ना	धा ×	गे	ना
स	नृ	स	स	स	स	रग	ग
म	द	न	म	न	मो	—	ह
ग	ग	ग	र	ग	स	र	—
न	गि	रि	धा	—	री	ई	—
ध	प	ध	म	प	ग	म	र
मे	रि	—	सु	धि	ले	—	ना
ग	स	र	ग	र	स	—	—
—	व	न	वा	—	री	—	—

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

अन्तरा

ति	न ०	के	धी	ना	धा ×	गे	ना
					म	—	म
					ज्ञा	—	न
म	—	म	ग	म	प	—	—
मा	—	न	ध	न	ही	—	—
प	प	ध	न	स ०	न	न	—
न	हूँ	—	—	—	र	हो	—
ध	प	ध	मग	म	प	—	—
न	कु	छ	भी	—	पा	—	—
—	—	—	—	* —	म	म	—
—	—	—	स	—	क	भी	—
म	म	म	म	ग र	र	र	र
जो	अ	प	ने	—	दा	—	—
मम	मप	ध	—	—	ध	ध	न
स —	थे	—	—	—	ब	ना	—
ध	प	ध	म	प	ग	म	र
हूँ	उ	न	का	—	दा	—	स
ग	स	र	न ०	स	स	सर	ग
ब	हु	त	ही	—	चु	की	—
ग	ग	—	र	ग	स	र	—
मे	री	—	ख्वा	—	री	—	—

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

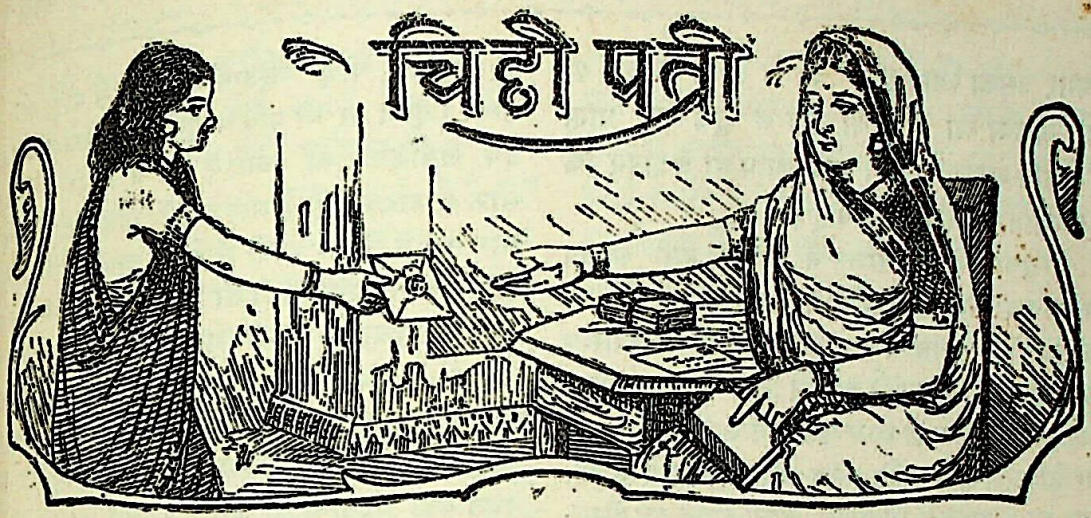

पिता-माता का अविवेक

(१)

एक बहिन लिखती हैं :—

श्रीमान सम्पादक जी,

सादर नमस्ते !

मैं अपनी दुख-भरी कहानी आपको सुनाना चाहती हूँ। मैं एक उच्च कुल की लड़की हूँ। मेरी उम्र १४ साल की है। मेरी माता का देहान्त हो चुका है। मेरी दूसरी माता ने एक ऐसे लड़के से मेरी शादी ठीक की है जो बी० ए० में पढ़ता है, आयु ३५ साल की है। वह लड़का आठ साल से बी० ए० में फ़ेल हो रहा है। घर पर तो बहोत ही सीधे रहते हैं, पर बाहर खूब शराब पीते हैं। सम्पादक जी, और बहोत सी बातें हैं, मैं कहाँ तक लिखूँ ? मेरी आपसे एक विनय है। अगर कहीं मुफ़्त में पढ़ाया जाय तो मैं बी० ए० तक पढ़ना चाहती हूँ। मैं सच लिखती हूँ, मैं तीन साल में एण्ट्रेन्स पास कर लूँगी। आप जरूर कहीं न कहीं ऐसा इन्तेजाम करके जवाब 'चाँद' में दीजिए। मैं हिन्दी कुछ नहीं जानती हूँ, सिर्फ़ घर पर ही थोड़ा-बहुत पढ़ी हूँ। सम्पादक जी ! जरूर मुझे इस कूड़े से उठाइए। मैं सच कहती हूँ, वह लड़का मुझे जरा भी पसन्द नहीं है। हाँ, मालदार बहोत है। सिर्फ़ माल पर ही मुझे बलिदान किया जा रहा है। हाय ! मुझे बहोत ही गन्दे कूड़े में ढकेल रहे हैं। मैं उसमें से कैसे निकल सकती हूँ। मुझे आप जरूर ही बचाइए।

* * *

(२)

एक कायस्थ सज्जन लिखते हैं :—

श्रीमान सम्पादक जी, जै राम जी की !

मेरे एक मित्र हैं, जिनके रिश्ते की एक बहिन ×××में रहती हैं। लड़की की उम्र इस समय २० वर्ष की होगी। घर में उसके पिता हैं, सौतेली माँ है, और पितामह हैं। ये लोग कान्य-कुब्ज ब्राह्मण हैं। पिता स्वभाव से ही नीच है। लड़की देखने में सुन्दर और पढ़ी-लिखी है, उसके नीच पिता ने इस समय उसका ब्याह एक खूसट और कुरूप वकील से ठीक किया है, जिसकी आयु लगभग ४२ वर्ष के होगी। लड़की के पितामह ने इस ब्याह में आपत्ति की थी, परन्तु दुष्ट पिता ने उनको बहुत बुरा-भला कहा और मारने पर उतारू हो गया। इस ब्याह में उसने वर से काफ़ी धन लिया है और जामाता को अपने घर रख कर उनकी आय को हथियाने का भी इरादा करता है। लड़की ने अभाग्यवश अपने भावी स्वामी को देख लिया है। उसको उसकी सूरत देख कर घृणा हो गई है। उसने खाना-पीना छोड़ दिया है और सूख कर काँटा हो गई है। वह कहती है कि

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

अगर उसका ब्याह उसी वर से होगा तो वह या तो अफ़ीम खा लेगी या नदी में डूब कर प्राण दे देगी। सम्पादक जी, अब आप ही बताइए कि हम लोगों का क्या कर्तव्य है?

[गढ़वाल के एक सज्जन ने भी हमें इसी आशय का एक पत्र भेजा है। जिसमें कहा गया है कि वर एल-एल० बी० क्लास में पढ़ता है, परन्तु उसका स्वास्थ्य इतना ख़राब है कि जीते हुए भी वह मृतवत् जीवन बिता रहा है। पिछले साल उसे ख़ून का क़ै होता था और डॉक्टरों की सम्मति वह चीड़ के जङ्गलों में रहा करता था। आजकल भी बुख़ार, खाँसी आदि कई बीमारियाँ उसे घेरे हुए हैं। इसके पहले इस लड़के की शादी एक बार हो चुकी है, परन्तु वह स्त्री यौवनकाल में जब अपनी काम-प्रवृत्ति न दबा सकी तो लज्जा छोड़ कर इधर-उधर भटकने लगी। इसी प्रकार की और भी बहुत सी बातें इस पत्र में लिखी गई हैं, जिनका उल्लेख करना यहाँ निरर्थक है।

जो माता-पिता बुद्धि और विवेक को इस प्रकार तिलाञ्जलि दे बैठे हैं, उनसे क्या कहा जाय? परन्तु इन अभागिनी कन्याओं के अन्य कुटुम्बियों तथा स्वयं इन कन्याओं से दो शब्द कहना आवश्यक है। इन शादियों को ठीक करने में जिन लोगों का हाथ हो, उन्हें इनके परिणामों को एक बार अच्छी तरह सोच लेना चाहिए। ऐसी शादियों से होने वाली बुराई प्रत्यक्ष है। ऐसी शादियों का जो घातक प्रभाव स्त्रियों के जीवन पर पड़ता है, उसके अनेक करुणाजनक उदाहरण 'चाँद' के इन्हीं स्तम्भों में प्रायः छपा करते हैं। अतः इन सभी कन्याओं के सम्बन्धियों का यह परम आवश्यक कर्त्तव्य है कि माता-पिता की अर्थ-लिप्सा पर इन निरपराधिनी कन्याओं के बलिदान को रोकने में वे अपनी सारी शक्ति लगा दें।

परन्तु इस विपत्ति से छुटकारा पाने का सब से बड़ा उपाय स्वयं इन लड़कियों के ही हाथ में है। इनके लिए घर से भाग जाने अथवा आत्म-हत्या कर लेने की अपेक्षा यह कहीं अधिक हितकर है कि ये अपने माता-पिता से साफ़ शब्दों में कह दें कि ऐसी शादी ये किसी भी हालत में नहीं कर सकतीं। जहाँ जीवन और मरण का प्रश्न उपस्थित है, वहाँ झूठी लज्जा को दो मिनट के लिए त्याग कर साफ़-साफ़ बातें कर लेना ही अच्छा है। शादी हो जाने पर, पीछे पछताने या रोने से कोई लाभ न होगा। इतने पर भी यदि ये मूर्ख माता-पिता न मानें तो इन लड़कियों को चाहिए कि वे शादी में बैठने से साफ़ इन्कार कर दें। वे मार सह लें, गाली सह लें, अपनी जान तक दे दें, पर शादी में किसी तरह न बैठें। यदि वे इतनी दृढ़ता दिखावेंगी तो कोई भी आदमी उनकी मर्ज़ी के ख़िलाफ़ उनकी शादी नहीं कर सकता। ऐसे मामलों में बदनामी से डर कर अपना सङ्कल्प कभी नहीं छोड़ना चाहिए। शुरू में थोड़ी सी बदनामी के डर से अयोग्य पुरुष के साथ विवाह कर लेने से आगे चल कर बहुत बड़ी बदनामी हो सकती है, और ज़िन्दगी भर जो नरक का दुःख भोगना पड़ेगा उसका पूछना ही क्या है! यदि ये बहिनें प्राण देकर भी अपनी बात पर अटल रहने का प्रण कर लें तो संसार की कोई भी शक्ति इनका अहित नहीं कर सकती।

पहिली बहिन यदि वास्तव में शिक्षा प्राप्त करने के लिए लालायित हों तो वे स्थानीय मातृ-मन्दिर में जा सकती हैं।

—सम्पादक 'चाँद']

* * *

सधवा या विधवा?

(१)

एक दुखिनी बहिन लिखती हैं:—

महाशय जी, नमस्कार!

आज मैं अपनी दुःख-कहानी लिखने बैठी हूँ। क्या इसका कोई इलाज है? मैं XXX एक छोटे से गाँव की रहने वाली हूँ। जब मेरी शादी हुई, मैंने समझा दुनिया की कुल ख़ुशी मेरे हाथ में आ गई। अच्छा घर, अच्छे आदमी, सब कुछ अच्छा मिला। मेरे मालिक में कोई ऐब न था। मैं समझती थी मेरे जैसी कोई ख़ुश क़िस्मत नहीं है। शादी के तीन साल बाद तक मैं अपने सास के घर रही। मेरे मालिक बहुत थोड़ा पढ़े थे। कॉलिज की शकल उन्होंने नहीं देखी थी; मगर क़िस्मत बड़ी अच्छी थी। २० साल की उमर में ही १५०) महीना की आमदनी शुरू हो गई। तीन साल के

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

अन्दर ही ४००) महीना मिलने लगा। व्यापार वे अब भी करते हैं और इस समय ६००) महीना की आमदनी है। मगर मेरी बदक़िस्मती से यार-दोस्त शराबी इकट्ठे हो गए। पहले लुके-छिपे सब कुछ होता रहा, फिर मेरे सामने होने लगा। जब कभी तीन-चार रात लगातार जगते हैं, तो कोई न कोई तकलीफ़ खड़ी हो जाती है। जब मैं मना करती हूँ, तो आगे न करने के लिए क़समें खाते हैं, मगर जब वक़्त आता है तो वही हाल हो जाता है। मिन्नत से, प्यार से, लड़ कर—हर तरह समझा कर थक गई हूँ, कुछ असर नहीं होता। अब तो शराब भी महीने में २५ दिन उड़ने लगी है। वेश्या के घर भी वे जाते हैं। उनके दोस्तों में से एक भी ऐसा नहीं जो शराब न पीता हो। मैंने शराब पीनी तो काफ़ी बर्दाश्त की, मगर दूसरी बात मुझसे बर्दाश्त नहीं होती। रोने-खपने के सिवा मेरे पास और कोई इलाज बाक़ी नहीं रहा। मैंने अपनी एक पढ़ी-लिखी बहिन से सलाह ली तो वे कहने लगीं कि ज़्यादा वक़्त इनके साथ रहने की कोशिश किया करो। मेरे पास एक आख़िरी इलाज था। मैंने ख़ुद भी शराब पीनी शुरू कर दी। उससे पहले तो वे डरे, मगर अब उसकी भी परवाह नहीं करते, बल्कि ख़ुद अपने हाथ से पीने को देते हैं। वह भी डर के मारे मैंने छोड़ दी कि कहीं मुझे ही आदत न पड़ जाय। इस वक़्त रात के १२ बजे हैं, जब कि मैं रोकर थक गई हूँ तो यह सोच कर कि 'चाँद' की ही शरण लूँ, शायद वही कोई उपाय बतला दे, यह चिट्ठी मैं आपको लिख रही हूँ।

सम्पादक जी, देश में चारों ओर लोग सुधार-सुधार चिल्ला रहे हैं, पर सुधार कहाँ होना चाहिए, इस तरफ़ किसी का ध्यान ही नहीं है। वेश्या-गमन के विरुद्ध कोई आवाज़ ही नहीं उठाता। सम्पादक जी, विधवाओं का रोना तो परमात्मा के आगे है, मगर सधवाएँ किसके आगे फ़रियाद करें? जिस वक़्त मेरा मालिक वेश्या के घर जाता है, कभी दिल चाहता है कि कुछ खा मरूँ, कभी दिल चाहता है घर से निकल जाऊँ, कभी दिल में ख़्याल आता है कि इस समय कोई ५०) रुपए महीने की आमदनी वाला आदमी आकर कह दे कि मैं यह सब कुछ नहीं करता तो उसके साथ चली जाऊँ; मगर इन सब बातों में रुकावट डालते हैं मेरे दो बच्चे, जो एक ५ साल और एक २ साल की उमर के हैं और इस वक़्त भी पास ही सोए पड़े हैं। अगर बच्चे न होते तो कब की कुछ कर छोड़ती। बदक़िस्मती से पढ़ी भी कुछ ज़्यादा नहीं हूँ। इतनी हिम्मत भी नहीं रखती कि घर छोड़ कर नौकरी कर लूँ।

* * *

(२)

एक दूसरी दुःखिनी बहिन लिखती हैं :—

सम्पादक जी,

नमस्ते!

मैं कायस्थ जाति की स्त्री हूँ और XXX की रहने वाली हूँ। मेरे पति थोड़े वेतन के सरकारी नौकर हैं। बुरे मनुष्यों के सङ्ग से उन्हें मदिरा-पान तथा वेश्यागामी होने का चाव पैदा हो गया है। इस कारण वह अब न तो अपने माता-पिता की ख़बर लेते हैं और न बच्चों की। जो कुछ पैदा करते हैं, सब वेश्या के यहाँ दे आते हैं। घर की आर्थिक दशा बिगड़ती जाती है। माता-पिता के समझाने पर उन्हें अनुचित गाली देते हैं और मुझे मारने पर तैयार हो जाते हैं! मुझे दो बातों की अधिक चिन्ता है। एक तो अपना शेष जीवन बिताने की, दूसरे इन बच्चों की क्या दशा होगी? बहुत सम्भव है कि वे उस वेश्या को भगा कर कहीं चले जावें। ऐसी दशा में भगवान ही जाने हम लोगों की क्या दशा हो! मैंने कई बार यह सोचा कि छिपे-छिपे उनकी शिकायत किसी अफ़-सर से कराऊँ। मगर ऐसी दशा में नौकरी जाने का भय है। फिर गुज़ारे की कोई सूरत न

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

रहेगी। सम्पादक जी, मैं पढ़ना-लिखना भी जानती हूँ। इसलिए विचार होता है कि कहीं नौकरी कर लूँ, मगर वह मुझे नौकरी क्यों करने देंगे? सम्पादक जी, यह भी मेरा ही दुर्भाग्य है जिससे ऐसे पति मिले हैं। मैं ऐसे पति को पाकर प्रसन्न नहीं हूँ; परन्तु क्या करूँ, हिन्दू कुल की स्त्री हूँ। आज कई वर्ष से इसी प्रकार के दुख पा रही हूँ। इतना भी ज्ञान है कि आत्मघात पाप है; और फिर छोटे बच्चों का क्या होगा? ६-६ दिन हो जाते हैं, उनके दर्शन नहीं होते। क्या आपकी राय में वह वेश्या भाग्यशालिनी नहीं है जो प्रतिदिन उनके दर्शन करती है? अब बताइए, मैं क्या करूँ?

[ऊपर जो दो पत्र प्रकाशित किए गए हैं, उनकी लेखिकाओं के हृदय की वेदना, उनकी भाषा में प्रतिबिम्बित हो उठी है। हम हृदय से उनकी पीड़ा अनुभव करते हैं। इस प्रकार की घटनाएँ हमारे समाज के लिए नई नहीं हैं। अक्सर हम ऐसी घटनाएँ देखते हैं, सुनते हैं और उन पर विचार भी करते हैं, किन्तु फिर भी ऐसी बातें सुन कर हृदय पर आघात लगता है। पाप और पुण्य की दुहाई देने वाले समाज से हम पूछते हैं, उसने ऐसी दुःखिनी बहिनों के लिए क्या व्यवस्था की है? क्या वह इनके सुख-दुख का, इनके जीवन के उत्थान-पतन का उत्तरदायी नहीं है? क्या उसका निर्माण केवल धार्मिक व्यवस्था देने और 'पतन' की व्याख्या करने के लिए ही हुई है?

पहले पत्र की लेखिका ने लिखा है—"जिस समय मेरा मालिक वेश्या के यहाँ जाता है, दिल चाहता है घर से निकल जाऊँ, किसी ऐसे आदमी के साथ चली जाऊँ जो ऐसा न करता हो।" हर तरफ़ से सताए और उत्पीड़ित हृदय का इस प्रकार की बात सोचना कुछ अस्वाभाविक नहीं है।

अपनी इन बहिनों को हम क्या उपाय बतावें जिससे ये अपना जीवन सुखमय बना सकें? हिन्दू-समाज ने इनके लिए कोई व्यवस्था नहीं की, कोई उपाय नहीं निकाला। उसकी तो आज्ञा है—

अन्ध बधिर क्रोधी अति दीना।
ऐसेहु पति कर किय अपमाना।
नारि पाव यमपुर दुख नाना॥

पति योग्य हो या अयोग्य, चरित्रवान हो या दुश्चरित्र, लेकिन स्त्री उसकी सेवा करने, उसकी अनुगत होकर रहने के लिए बाध्य है। यदि वह ऐसा न करेगी तो उसे 'यमपुर' में न जाने कितने दुःख भोगने पड़ेंगे। इस 'यमपुर' की कल्पना ने सदियों से हमारी बहिनों के दुर्बल हृदय पर आतङ्क जमा रक्खा है। अब उनके लिए कौन सा पथ है? हमारे समाज ने तो उन्हें मूक होकर सब कुछ सहने की आज्ञा देकर ही अपनी इति-कर्तव्यता समझ ली; किन्तु क्या इससे उसकी वेदना कुछ भी कम हो सकी?

तलाक़ का नाम सुनते ही हमारा समाज उन्मत्त हो जाता है, झूठे अहङ्कार से अधीर हो जाता है। हम यह नहीं कहते कि तलाक़ बहुत अच्छी प्रथा है और उसका होना समाज के लिए आवश्यक है, किन्तु जैसी परिस्थितियों में होकर हम गुज़र रहे हैं, उन्हें देखते हुए उसकी उपयोगिता स्वीकार करने से हम मुँह भी नहीं मोड़ सकते। ऐसी अवस्थाओं में पड़ कर क्या अन्य देशों की स्त्रियाँ भी इतनी ही विवश और असमर्थ रहती हैं? क्या वे अपने दुराचारी और अयोग्य पति से सम्बन्ध-विच्छेद करके जीवन को सुखमय नहीं बना सकतीं? लेकिन ठीक यही बात हमारे समाज की स्त्रियों के लिए नहीं कही जा सकती। वे कितनी विवश हैं, कितनी असमर्थ! हमारे समाज ने उनके जीवन को सुखमय बनाने के सभी द्वार बन्द कर रक्खे हैं!!

लेकिन ऐसी दशा में उनके लिए पथ कौन सा है? किस पथ पर अग्रसर होकर वे अपने इस घृणित और नारकीय जीवन से छुटकारा पाकर सुख और शान्ति प्राप्त कर सकेंगी? हमारी समझ में, उपाय उनके अपने ही हाथों में है। जब तक वे स्वयं साहस से काम न लेंगी, जब तक वे स्वयं अपने ही पैरों पर उठ खड़ी न होंगी, तब तक उनकी दशा में सुधार होने की कोई गुञ्जायश नहीं है। अपने लिए उन्हें स्वयं ही लड़ना पड़ेगा, अपना रास्ता साफ़ करना पड़ेगा।

पति-पत्नी का सम्बन्ध प्रेम और कर्त्तव्य-पालन की भित्ति पर स्थित है। जहाँ प्रेम और कर्त्तव्य-पालन की भावना नहीं, वहाँ कोई भी पति, 'पति' होने का दावा

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

नहीं कर सकता। यह अन्याय और असङ्गत है। हम जानते हैं, हमारी ये बातें कितनी ही कोमल-प्राण, कुसंस्काराच्छन्न बहिनों को पसन्द न आवेंगी, पर विवश होकर ही हमें यह कठोर बात कहनी पड़ती है! इसके सिवा और कोई गति नहीं!

इन बहिनों के लिए दो ही मार्ग हैं। या तो प्रारब्ध और समाज के नाम पर रोते-रोते अपना सारा जीवन ये इसी नरक में बिता दें अथवा साहस और तेजस्विता-पूर्वक इन अत्याचारों और अन्यायों का मुक़ाबला करें। दृढ़तापूर्वक कह दें कि हम इन अत्याचारों को न सहेंगी। इसके लिए यदि ज़रूरत हो तो वे न्यायालयों की भी सहायता ले सकती हैं। हमारा विश्वास है, इस पुनीत कार्य में उनका आत्मबल और ईश्वर उनकी सहायता करेगा और इस प्रकार उन्हें अग्रसर होते देख कर समाज भी उनके लिए कोई न कोई उचित मार्ग निर्माण करने का प्रयत्न करेगा।

दूसरी बहिन की दशा और भी शोचनीय है। पति के दुर्व्यवहार के साथ ही साथ उन्हें दरिद्रता से भी द्वन्द करना पड़ता है। वे पढ़ी-लिखी हैं, किन्तु नौकरी कर लेने की स्वतन्त्रता भी उन्हें नहीं प्राप्त है। वे लिखती हैं—"ऐसे पति को पाकर मैं प्रसन्न नहीं हूँ, किन्तु क्या करूँ, हिन्दू कुल की स्त्री हूँ। × × × इतना भी जानती हूँ कि आत्मघात पाप है।"

उनके इन वाक्यों में कितनी वेदना है, कितनी बेबसी! कोई भी सहृदय इन पंक्तियों को पढ़ कर तड़प उठेगा, मगर अभागे हिन्दू-समाज में ऐसे भी नारकीय जीव वर्तमान हैं, जो ऐसी सर्वगुण-सम्पन्ना स्त्रियों को छोड़ कर, बाज़ार की जूठी पत्तलें चाटने में ही सुख मानते हैं। हम उनसे क्या कहें? हमारी बातों का उन पर असर ही क्या होगा? लेकिन इतनी बात तो उन्हें भी याद रखनी चाहिए कि उनका यह दुराचार—पतिव्रता और सुन्दरी पत्नी के प्रति उनका यह दुर्व्यवहार ही उनका सर्वनाश करेगा, उन्हें ले डूबेगा। उन्हें यह बात भी समझ लेनी चाहिए कि सुख और आनन्द की खोज में जिस ओर वे अग्रसर हुए हैं, वह उनका प्रकृत मार्ग नहीं है। उन्हें हताश होना पड़ेगा, पछताना होगा, क्योंकि वे मार्ग भूल गए हैं, भटक गए हैं।

इन बहिनों को क्या कह कर हम सान्त्वना दें? इनका जीवन तो शायद इसी प्रकार दुःखों और विपत्तियों में ही बीतेगा। ये खुल्लमखुल्ला इन अत्याचारों का विरोध कर सकती हैं, दुराचारी पतियों से सम्बन्ध-विच्छेद करके जीवन को अपेक्षाकृत शान्त भी बना सकती हैं, किन्तु सदियों से जमे हुए संस्कार—जिन्हें दूसरे शब्दों में दुर्बलता कह सकते हैं—इन्हें ऐसा करने नहीं देंगे। घुल-घुल कर ही ये अपना जीवन विसर्जन करेंगी। किन्तु यदि इन घटनाओं का भी समाज पर कुछ प्रभाव पड़ सके, इन चोटों से भी यदि उसके मन में ऐसी असहाय बहिनों के त्राण के लिए कुछ हलचल पैदा हो सके तो इनका बलिदान बहुत हद तक असफल न समझा जायगा।

—सम्पादक 'चाँद']

* * *

पिशाचिनी या सास?

एक दूसरी देवी के पत्र का आशय है—

श्रीयुत सम्पादक जी,

सादर नमस्ते!

मैं वैश्य-कुल में उत्पन्न हुई हूँ। इस समय मेरी आयु १६-१७ वर्ष की है। मेरे पतिदेव २५ वर्ष के हैं। किन्तु कभी उनके साथ सुख और शान्ति के साथ रहने का मौक़ा मुझे नहीं मिला।

शादी के बाद जब मैं ससुराल आई उस समय मेरी अवस्था छोटी थी। मेरे पति पढ़ाई के कारण बाहर रहते थे। घर में सास और उनका एक सौतेला बड़ा लड़का रहता था। सास जी मेरा बिछौना उसी कमरे में बिछाती थीं, जिसमें मेरा जेठ सोया करता था। कुछ दिनों बाद, मेरी चारपाई हटा ली गई और कमरे में एक ही बिस्तर बिछने लगा। मैंने जब सास जी से पूछा तो उन्होंने जेठ के पास ही जाकर सो जाने को कहा। जब मैं न गई तो ज़बर्दस्ती मुझे कमरे में ढकेल आईं। उस दिन मुझे उसी जेठ के साथ सोना पड़ा और रात में उसने मेरा सर्वनाश कर डाला!

यही क्रम कुछ समय तक चलता रहा। फिर

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

मुझे जब कुछ अक्ल आई तो मैं इस पाप-मार्ग से दूर हो गई और जेठ के पास जाना या उससे मिलना-बोलना मैंने छोड़ दिया। इससे सास जी मुझसे बहुत चिढ़ गईं और उन्होंने मुझ पर तरह-तरह के ज़ुल्म करने शुरू कर दिए। कुछ दिनों तक मैं धैर्यपूर्वक सब सहती रही, फिर मैंके चली गई।

जब मेरे पति अपनी पढ़ाई ख़तम करके घर आए तो वे मुझे मैके से लेकर नौकरी पर चले गए। यहाँ आकर उनके साथ मेरा समय बड़ी निस्तब्धता के साथ कटने लगा, क्योंकि वे नपुंसक हैं। ख़ैर, मैं उसीमें सन्तोष करके दिन बिताने लगी। लेकिन दुर्भाग्य ने यहाँ भी मेरा पिण्ड न छोड़ा। एक दिन अपने सौतेले बेटे को लेकर सास जी यहाँ भी आ पहुँचीं। एक दिन मेरे पति की अनुपस्थिति में उन्होंने मुझे जेठ के पास जाने को कहा। जब मैं किसी प्रकार राज़ी न हुई, तो वे बहुत नाराज़ हुईं और तभी से मेरी दुश्मन बन बैठी हैं। पतिदेव को भी उन्होंने बहका लिया है और अब वे भी मुझसे बुरा व्यवहार करने लगे हैं। पहले और कुछ न था, तो उनसे बोल-चाल कर ही मन को सन्तोष देती थी।

अब मेरा जेठ तो मेरे सौभाग्य से मर गया है, लेकिन सास जी के कारण मैं अपने पति से मिल-जुल भी नहीं सकती, बातचीत तो कहाँ कर सकूँगी। रात में भी वे अपनी चारपाई मेरे पति के पास ही बिछाती हैं, जिसमें मैं या वे किसी प्रकार भी एक दूसरे से मिल न सकें। मेरे लिए एक छोटे गन्दे कमरे में सोने का प्रबन्ध है। सास जी और पतिदेव घी-दूध, मलाई और तरह-तरह के अच्छे खाने खाते हैं, मुझे ज्वार और बाजरे की सूखी रोटी भी भरपेट नसीब नहीं होती! पहनने के लिए मुझे कपड़ा भी नहीं मिलता, न जाने कितने दिनों की पुरानी और काली दो-तीन धोतियों पर मैं गुज़र कर रही हूँ। सम्पादक जी, मेरी सास १८-१९ वर्ष से विधवा हैं, किन्तु वे नित्य नया शृङ्गार करतीं और पति की ग़ैरहाज़िरी में मुहल्ले भर में घूमा करती हैं, लेकिन मैं अगर आईना भी उठा लेती हूँ तो मुझे तरह-तरह की बातें बोलतीं और गालियाँ देती हैं!!

सम्पादक जी, यहीं तक बस नहीं है। वे मुहल्ले भर में तरह-तरह की मेरी बदनामी करतीं और अपने बेटे की दूसरी शादी कराने की कोशिश करती हैं। वे लोगों से कहती हैं कि बहू बाँझ है, उसे अमुक रोग है, अमुक बुराई है; हालाँकि न तो मैं बाँझ ही हूँ और न मुझे कोई रोग ही है। मैं तो यह नरक-यातना भोग ही रही हूँ, सबसे अधिक चिन्ता मुझे उस लड़की के जीवन की है जो अब ब्याह कर आवेगी!!!

अब सम्पादक जी, आप ही बतलाइए कि मैं इस प्रकार कब तक सहन करती रहूँगी? पति का सुख तो मेरे भाग्य में है ही नहीं—बच्चा क्या आसमान से उतार कर मैं सास जी को दे दूँ! अब मुझसे सहा नहीं जाता। यदि यही ढङ्ग रहा तो या तो मैं ही इस असार संसार से चल दूँगी, अन्यथा यदि उन्हें दूसरी शादी करने का अधिकार है तो मैं बिना अधिकार के ही शादी कर लूँगी। यदि ऐसा न कर सकी तो जो दिल में आवेगा वही करके अपनी आपत्तियों का अन्त कर दूँगी!

[इस पत्र-लेखिका के अन्तिम वाक्यों का हम बड़े ज़ोरों से समर्थन करते हैं। यदि किसी अविचारी पुरुष को यह अधिकार है कि वह एक निरपराध स्त्री को छोड़ कर दूसरा विवाह कर सकता है तो स्त्रियों को बिना अधिकार के भी दूसरा विवाह कर लेने के लिए अवश्य प्रस्तुत होना पड़ेगा। यही एक उपाय है, जिससे ऐसी अभागिनी स्त्रियों के दुःख दूर हो सकते हैं। यदि दो-चार स्त्रियाँ भी इतना साहस दिखावें तो इससे स्त्री-जाति का अनन्त उपकार हो सकता है। हमें हर्ष है कि इस पत्र-लेखिका में इतना साहस दीखता है, जिससे वे इस दुरूह कार्य में हाथ डाल सकें।

वह लिखती हैं—"यदि ऐसी ही दशा रही तो मैं इस असार संसार से चल दूँगी।" हमारी समझ में नहीं

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

आया, इस 'असार संसार' से चल कर वह कहाँ जायँगी। यह संसार तो इतना छोटा नहीं, जितना वह समझती हैं। संसार से भाग कर भी कहीं संसार में ही जाना पड़ेगा। फिर इससे लाभ? दुःख तो सर्वत्र है। जो दुःख से घबरा कर भागना चाहता है, उसे बार-बार दुःख के समुद्र में गिरना पड़ता है। परन्तु जो लोग बहादुर हैं, बुद्धिमान हैं, वे दुःख से घबरा कर भागते नहीं, बल्कि उसका सामना करते हैं। सामना करने से ही दुःख का अन्त होता है। अतः इस बहिन को हमारी निश्चित सम्मति है कि वह इस 'असार संसार' से भागने की चेष्टा न करें, बल्कि इसकी सभी असारताओं, अनित्यताओं और तज्जनित सभी दुःखों का सामना करें।

इस बहिन को सब बातें खोल कर अपने पति से कहनी चाहिए। हमें विश्वास है, सभी बातें जानने के बाद वह अभागा अपने कर्त्तव्य के पालन से विमुख न रहेगा। परन्तु यदि उस पर उसकी माता का इतना ज़बर्दस्त आतङ्क छा गया हो कि वह उनका विरोध करने में असमर्थ हो तो इस बहिन के सामने सीधा और सच्चा मार्ग यह है कि वह अपना दूसरा विवाह कर लें। यह बहिन यदि पुनः अपना विवाह करना चाहें तो वह इलाहाबाद के मातृ-मन्दिर (कृष्ण-कुटीर रसूलाबाद, इलाहाबाद) से इस विषय में पत्र-व्यवहार कर सकती हैं। यह संस्था अपनी शक्ति भर उनकी सहायता करेगी।

—सम्पादक 'चाँद']

* * *

कृतज्ञता

चाईबासा (बिहार) से एक बहिन लिखती हैं :—

मान्यवर सहगल जी,

सविनय प्रणाम!

जिस लड़की के बारे में आपने मई के अङ्क में मेरे पत्र को छापा था, उसका शुभ विवाह गत फाल्गुन मास की पूर्णमासी को, ईश्वर की दया से उन्हीं के एक स्वजातीय, साहसी युवक के साथ सानन्द सम्पन्न हो गया।

सहगल जी! मैं आपके अपार उद्योग और स्त्री-जाति के प्रति आपकी असीम करुणा को स्मरण कर भक्ति-विमुग्ध हो जाती हूँ। मुझे आपको रूखा धन्यवाद देते लज्जा मालूम पड़ती है। मैं तथा यहाँ की शिक्षित बहिनें आपकी दीर्घायु-कामना करती हुई, ईश्वर से 'चाँद' की भी दीर्घ जीवन प्रार्थिनी हैं। मान्यवर भ्राता जी! आपकी सूचना से अनेक साहसी भाई और दयावती बहिनें, लड़की की मङ्गल-कामना से आश्रय देने और विवाह करने को उत्सुक हुए थे। अभी तक ३५ चिट्ठियाँ विवाह-प्रार्थी साहसी, पुरुष-सिंहों की मेरे पास आई हैं। देश की जाग्रति और साहस देख कर मुझे अपार आनन्द अनुभव होता है। ईश्वर युवाओं को दीर्घ जीवन प्रदान कर समाज और देश का आदर्श बनावें। महोदय! कृपापूर्वक यह पत्र 'चाँद' के जून महीने के अङ्क में छाप कर चिन्तित भाई-बहिनों की चिन्ता निवारण कीजिएगा। यही मेरी प्रार्थना है।

आपकी बहिन,

—सु० दे० सामन्त

[गत मई मास के अङ्क में पृष्ठ १०५ पर उपरोक्त बहिन की दुःखपूर्ण कहानी छपी थी। हमें अत्यन्त हर्ष है कि उसे पढ़ कर अनेक सुशिक्षित और साहसी युवक उस बहिन के कष्ट दूर करने तथा आश्रय देने को तैयार हो गए। इसी प्रकार के एक सुयोग्य युवक के साथ गत फाल्गुन मास की पूर्णिमा को उस बहिन का विवाह हो गया। अन्य भाई-बहिनों से प्रार्थना है कि अब उस बहिन के सम्बन्ध में किसी प्रकार की चिन्ता अथवा पत्र-व्यवहार करने का कष्ट न करें।

—सं० 'चाँद']

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

अजी सम्पादक जी महाराज,

जय राम जी की !

उस दिन कुछ आदमियों में बड़ी गर्मागर्म बहस हो गई। ऐसी गर्मागर्म बहस हुई कि लोगों के मुँह धुँआ हो गए। बहस का विषय अश्लील था—अर्थात अश्लीलता था। अश्लीलता पर बहस करना भी अश्लील न समझ लिया जाय, इसलिए बड़ी सावधानी से काम लिया गया था। जिस कमरे में बहस हुई थी उसके द्वार पर एक सन्तरी खड़ा किया गया था। एक महोदय की यह भी राय थी कि सन्तरी के हाथ में नङ्गी तलवार दे दी जाय; परन्तु फिर यह सोच कर कि नङ्गी तलवार लेकर खड़े होना कहीं अश्लील न समझ लिया जाय—ऐसा नहीं किया गया। अजी वैसे तो कोई बात नहीं थी, तलवार लेकर खड़ा होना कोई ऐब नहीं; परन्तु नङ्गी तलवार ! हरे-हरे ! नङ्गी शब्द अश्लील है, इसलिए उसका स्मरण करना भी बुरा है। दुर्बल हृदय लोग 'नङ्गी' शब्द पर न मालूम क्या-क्या सोच लेंगे। और वह जो कुछ सोचेंगे वह निश्चय ही अश्लील होगा, इसलिए इस शब्द का सङ्केत बुरा है। ख़ैर साहब ! बहस आरम्भ होने के पहले यह तय हो जाना आवश्यक था कि इस शास्त्रार्थ का निर्णायक कौन बनाया जाय। निर्णायक ऐसा होना चाहिए जो निष्पक्ष हो। एक सज्जन ने एक वृद्ध महोदय का नाम पेश किया। उन्होंने कहा—"श्रीमान् त्रिवेदी जी महाराज इतने वृद्ध हैं कि बड़ी से बड़ी अश्लील बात भी इनका चित्त नहीं विचल सकती, इसलिए इनके सम्मुख सब बातें निस्सङ्कोच की जा सकती हैं। अतएव मेरा प्रस्ताव यह है कि निर्णायक यही बनाए जावें।" इस पर मिश्र जी महाराज बोले—"त्रिवेदी जी निर्णायक नहीं बनाए जा सकते; क्योंकि इन्हें कोई भी बात अश्लील नहीं दिखाई पड़ेगी। जब यह श्लीलता तथा अश्लीलता में कोई अन्तर न समझेंगे तो निर्णय क्या करेंगे ?"

त्रिवेदी जी बोले—भई, मैं तो ब्रह्मरूप हो गया हूँ। मेरे लिए तो यह संसार असार है। चित्त इतना शान्त तथा स्थिर हो गया है कि चाहे जितनी अश्लील बातें बकिए—वह टस से मस न होगा—बशर्ते कि अश्लीलता की याद न आए। जवानी की याद आ जायगी तो थोड़ी देर के लिए मस्तिष्क बिगड़ जायगा—यद्यपि चित्त तब भी न बिगड़ेगा।

एक तीसरे सज्जन ने प्रस्ताव किया—मेरी सम्मति में निर्णायक मिश्र जी बनाए जावें, क्योंकि यह अश्लील जोरू का नाम लेना भी अश्लील समझते हैं। मिश्र जी, आपकी जोरू का क्या नाम है ?

मिश्र जी तुनक कर बोले—गन्दी बातें बकते हैं। जोरू का नाम भी कहीं लिया जाता है ?

मैंने पूछा—अच्छा आपकी जोरू आपका नाम लेती है कि नहीं ?

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

मिश्र जी बोले—यह और भी गन्दी बात है। पत्नी पति का नाम कभी नहीं ले सकती।

"मन में तो लेती ही होगी ?"—मैंने पूछा।

"मन की राम जाने।"—मिश्र जी ने उत्तर दिया।

"आप अपने मन में अपनी जोरू का नाम लेते हैं ?"

मिश्र जी स्त्रियों की तरह लज्जापूर्वक मुस्कराते हुए बोले—कभी-कभी तो ध्यान आ ही जाता है।

मैंने कहा—यह बेजा बात है। ऐसा ध्यान न आना चाहिए।

चलिए मिश्र जी भी अलक़त हो गए।

अब फिर निर्णायक का प्रश्न उठा।

एक महोदय बोले—निर्णायक ऐसा होना चाहिए कि जो सब कुछ सुन सकता हो।

"इसे ज़रा स्पष्ट कीजिए"—एक दूसरे महाशय बोले।

"अर्थात् जो किसी बात को सुन कर कानों में उँगली न डाल ले और उठ कर भाग न जाय। साथ ही वह ऐसा भी हो कि अश्लीलता को उसी प्रकार सूँघ ले जैसे बिल्ली चूहे को सूँघ लेती है। सात पर्दों में छिपी हुई अश्लीलता को भी देख सके।"

त्रिवेदी जी बोल उठे—सात पर्दों में छिपी हुई अश्लीलता को देख सके ! बाप रे ! तब तो हम लोग यहाँ बैठ भी न सकेंगे।

"क्यों-क्यों ?"—मैंने पूछा।

"हमारी अश्लीलता तो केवल एक पर्दे के अन्दर छिपी हुई है। हम तो उसे नङ्गे ही दिखाई पड़ेंगे।"

"तो आप लिहाफ़ ओढ़ कर बैठिए।"

"तो ख़ाली मुझे ही क्यों, सबको लिहाफ़ ओढ़ कर बैठना चाहिए। क्योंकि सबके शरीर पर केवल एक ही पर्दा है।"

मैंने कहा—लिहाफ़ ओढ़ कर बैठने की क्या आवश्यकता है, निर्णायक की आँखों पर पट्टी बाँध दी जायगी। वह केवल कानों से सुन सकेगा—आँखों से देख नहीं सकेगा।

यह राय सबको पसन्द आई।

एक महोदय ने झट से प्रस्ताव कर दिया—मेरी सम्मति में दुबे जी ऐसे ही व्यक्ति हैं, अतएव वह ही निर्णायक बनाए जायँ।

इस पर तावड़तोड़ अनुमोदन-समर्थन सब हो गया और मैं निर्णायक चुन लिया गया। एक महोदय रूमाल लेकर आगे बढ़े। मैं समझ गया कि आँखों पर पट्टी बाँधेंगे। मुझे अपने ऊपर बड़ा क्रोध आया कि मैंने पट्टी बाँधने का प्रस्ताव व्यर्थ किया। परन्तु कर ही क्या सकता था, चुपचाप पट्टी बँधवा ली। पट्टी बँध जाने पर मैंने कहा—अब एक-एक महोदय अपनी बात कहें।

सब से पहले मिश्र जी बोले—मेरी राय में अश्लील बात वह है जिसके पढ़ने, सुनने या देखने से अश्लील बात का ध्यान आवे।

त्रिवेदी जी बोले—तब तो श्रीमद्भागवत तथा रामायण दोनों अश्लील ग्रन्थ हैं।

मैंने कहा—प्रमाण दीजिए।

त्रिवेदी जी बोले—भागवत में श्रीकृष्ण तथा गोपियों का प्रेमालाप, रासलीलाएँ इत्यादि सब अश्लीलता का स्मरण कराने वाली बातें हैं। रामायण में रावण द्वारा सीता का हरण किया जाना अश्लीलता की ओर सङ्केत करता है। इसलिए यह प्रमाणित हुआ कि रामायण तथा भागवत दोनों में अश्लीलता है।

मैंने पूछा—महाभारत के सम्बन्ध में आपकी क्या राय है ?

"वह भी अश्लीलता से नहीं बचा। पाण्डु, विदुर तथा धृतराष्ट्र का जन्म अश्लीलतापूर्ण है। पञ्च-पाण्डवों का जन्म भी अश्लीलता से नहीं बचा। दुःशासन द्वारा द्रौपदी का चीरहरण अश्लीलतापूर्ण है। कीचक और द्रौपदी की घटना भी अश्लील है।"

"और कुछ ?"

"बस अब और क्या ? इसी प्रकार अन्य बातों को भी समझ लीजिए।"

मैंने पूछा—अश्लीलता के सम्बन्ध में और भी किसी को कुछ कहना है ?

एक सज्जन उठ कर बोले—अश्लीलता वह है जिसे देखने अथवा पढ़ने से अश्लीलता का ध्यान आवे—सुनने से नहीं।

"सुनने से क्यों नहीं ?"

"अजी सुनी-सुनाई बातों का क्या विश्वास ? और जब तक विश्वास न हो तब तक अश्लीलता कैसी ? सुनने को तो हम बहुधा स्त्रियों को गलियों तथा सड़कों

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

पर गालियाँ तथा गन्दे गीत गाते हुए सुनते हैं ; परन्तु उनका किसी पर कोई प्रभाव पड़ता है ? क्यों नहीं पड़ता ? इसीलिए कि वह केवल सुनी हुई बात है—देखी या पढ़ी हुई नहीं। अफ़वाहों पर विश्वास करना बुद्धिमानी नहीं है।"

"अफ़वाह कैसी ?"—मैंने पूछा।

"अपने गीतों में स्त्रियाँ जो बातें कहती हैं वह केवल अफ़वाह ही अफ़वाह होती है। उसमें सत्य कितना होता है, यह भगवान जानें। इसलिए उन पर विश्वास करना मूर्खता है।"

"तो आपका तात्पर्य यह है कि जिसमें सत्य न हो वह अश्लील नहीं।"

"हाँ, बात तो ऐसी ही है।"

"पढ़ी हुई बात सत्य होती है ?"

"बिल्कुल ! वह तो प्रत्येक समय आँखों के सामने रहती है। छपी हुई बात ब्रह्म-वाक्य हो जाती है। उससे इन्कार ही कौन कर सकता है ?"

इसके पश्चात एक अन्य महोदय बोले—मेरी समझ में अश्लील बात वह है जिसे मनुष्य चार आदमियों के सम्मुख सुने, पढ़े अथवा देखे।

मैंने प्रश्न किया—यदि एकान्त में सुने, पढ़े या देखे ?

"तो वह अश्लील नहीं है।"

"प्रमाण दीजिए !"

"एक मनुष्य नङ्गा होकर नहाता है। जब तक वह एकान्त में है तब तक अश्लीलता नहीं है, परन्तु यदि वह चार आदमियों के सम्मुख आकर खड़ा हो जाय तो वह अश्लीलता हो जायगी।"

"नाँगे साधु लोग तो हज़ारों के सम्मुख नङ्गे घूमते हैं।"

"उसमें अश्लीलता नहीं है।"

"क्यों ?"

"वह तो दर्शनीय लोग हैं। दर्शनीय मनुष्य किसी भी दशा में देखा जाय, उसमें कुछ भी अश्लीलता नहीं है।"

"यह बात कुछ समझ में नहीं आती।"

"समझ में तो मेरी भी नहीं आती, परन्तु व्यवहार में ऐसा ही देखा जाता है।"

त्रिवेदी जी बोले—अश्लीलता केवल वह है जिसका प्रभाव दुर्बल-हृदय मनुष्यों के हृदय पर पड़े। यदि कोई दुर्बल-हृदय व्यक्ति, पति-पत्नी को पास बैठे देख कर उन्हें अश्लीलतापूर्ण बातें सोचता है, तो पति-पत्नी का एक स्थान पर बैठना भी अश्लील है।

"वेश्याओं का अस्तित्व भी अश्लील है।"—एक अन्य महोदय बोले।

"क्यों ?"—मैंने पूछा।

"वेश्याओं को देखने से अश्लीलता की ओर ध्यान जाता है।"

"तब तो वेश्याएँ नेस्तोनाबूद हो जानी चाहिएँ।"

"सबको तोपदम करा दिया जाय।"

"शायद इसीलिए म्यूनिसिपेलिटियाँ उनका मुहल्ला अलग बसाने का उद्योग कर रही हैं।"

"केवल इससे काम न चलेगा। उन्हें पर्दे में रखने का प्रबन्ध भी होना चाहिए।"

"परन्तु पर्दे का तो बहिष्कार हो रहा है।"

"वह केवल भले आदमियों में। भले घरों की स्त्रियाँ बेपर्दे तथा वेश्याएँ पर्दे में रहें।"

"यह युक्ति अच्छी है।"

"पशु बड़ी अश्लीलता करते हैं। इन्हें भी पर्दे में रखना चाहिए। इनके कृत्य देख कर स्त्रियों तथा बालकों पर बुरा प्रभाव पड़ता है।"

"बहुत ठीक। जितने पशु बस्तियों में रहते हों उन सबको पर्दे में रक्खा जाय। म्युनिसिपेलिटियों को ऐसा क़ानून बनाना चाहिए।"

मैंने कहा—अच्छा यह तो एक प्रकार से प्रमाणित हो गया कि संसार में चारों ओर अश्लीलता ही अश्लीलता है।

एक महोदय बोले—कैसे प्रमाणित हो गया ? मैं कहता हूँ कि अनेक बातें ऐसी हैं कि जिनमें अश्लीलता नहीं है।

"प्रमाणित कीजिए।"—मैंने कहा।

"रोटी खाने में अश्लीलता नहीं है। पानी पीने में अश्लीलता नहीं है। ईश्वर-भजन में अश्लीलता नहीं है। देशभक्ति में अश्लीलता नहीं है। रोने में अश्लीलता नहीं है। खड़ी बोली की कविता में अश्लीलता नहीं है। ईसप की कहानियों में अश्लीलता नहीं है।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

वेदों में अश्लीलता नहीं है। संसार में भलाई ही भलाई है—बुराई कुछ भी नहीं है। बुरी बातों को बिल्ली के मल की तरह छिपाए रखने में अश्लीलता नहीं है।"

"अच्छा! तब तो ऐसी बहुत सी बातें निकल आईं जिनमें अश्लीलता नहीं है।"—मैंने कहा।

"यदि पता लगाया जाय तो अभी ऐसी बातें बहुत निकल सकती हैं जिनमें अश्लीलता नहीं है।"

"हाँ, एक और बात याद आई। अन्धे और बहरे बन कर बैठ जाने में भी अश्लीलता नहीं है।"

मैंने पूछा—और किसी को कुछ कहना है?

"अब किसी को कुछ कहना नहीं है। आप अपना निर्णय दें।"

मैंने कहा—भाइयो, ऊपर कही हुई जिन बातों में अश्लीलता नहीं है, मनुष्य को वही करना चाहिए, अन्य सब बातें छोड़ देनी चाहिए। यदि ऐसा न किया जायगा तो सब ओर अश्लीलता का ही साम्राज्य हो जायगा।

"परन्तु यह सम्भव नहीं कि केवल वे ही बातें की जायँ और सब बातें छोड़ दी जायँ।"

"यदि यह सम्भव नहीं तो अश्लीलता से बचना भी सम्भव नहीं।"

"एक प्रकार से सम्भव है।"—मैंने कहा।

"कैसे?"

"मनुष्य को पहाड़ की कन्दरा में जाकर तपस्या में लीन हो जाना चाहिए। तभी अश्लीलता से बचत हो सकती है।"—मेरे इस निर्णय को सबने मान लिया और शास्त्रार्थ समाप्त हो गया। सम्पादक जी, आपकी इस सम्बन्ध में क्या राय है? लिखिएगा।

भवदीय,
विजयानन्द (दुबे जी)

पुरुष-समाज (स्टेशन पर)

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

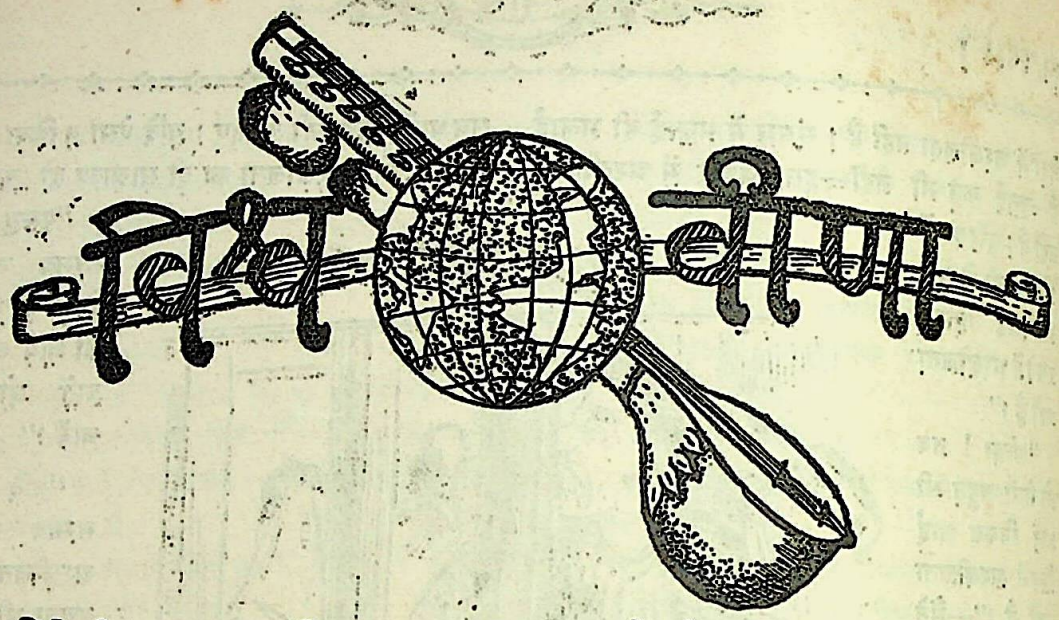

विदेशी वस्त्र का वहिष्कार

काशी राष्ट्रीय विद्यापीठ के कुलपति, आचार्य नरेन्द्रदेव जी ने कुछ समय पूर्व उक्त शीर्षक से एक विद्वत्तापूर्ण निबन्ध सहयोगी 'आज' में प्रकाशित कराया था। उसे हम यहाँ ज्यों का त्यों उद्धृत करते हैं। विदेशी वस्त्रों के सम्बन्ध में अनेक ज्ञातव्य बातें इस निबन्ध से मालूम हो सकती हैं। विदेशी वस्त्रों के उन अन्धकारपूर्ण पहलुओं पर भी इसके द्वारा प्रकाश पड़ता है, जिन्हें आमतौर पर हमारे देशवासी नहीं जानते। हमारा विश्वास है, इस लेख को मनोयोगपूर्वक पढ़ कर 'चाँद' के पाठक लाभ उठावेंगे।

यह खुली बात है कि भारत में अङ्गरेज़ी राज्य व्यापार के लिए ही क़ायम हुआ था। ईस्ट इण्डिया कम्पनी एक व्यापारी कम्पनी थी, जिसने ब्रिटिश सत्ता की नींव भारत में रक्खी और ब्रिटिश राज्य का विस्तार किया। उस समय कम्पनी भारत का माल यूरोप में बेचती थी। इङ्गलैण्ड के जहाज़ हिन्दुस्तान से गरम मसाला, मोती, जवाहिरात इत्यादि ले जाते थे। उस समय भारतवासियों के लिए पर्याप्त कपड़ा हिन्दुस्तान में ही तैयार होता था। यही नहीं, यहाँ के बारीक कपड़े विलायत भी जाते थे और वहाँ के अमीर लोग उनको बड़े चाव से पहनते थे, पर जब इङ्गलैण्ड में उद्योगवाद का आरम्भ हुआ और मैशीन से कपड़े बनने लगे, तब भारत के प्रति इङ्गलैण्ड की जो व्यावसायिक नीति थी उसमें परिवर्त्तन हुआ। इङ्गलैण्ड ही उद्योगवाद के युग का प्रवर्त्तक था, क्योंकि उसको वे सब सुविधाएँ प्राप्त थीं जिनके द्वारा नए प्रकार का उद्योग-व्यवसाय उन्नतिशील हो सकता था। इङ्गलैण्ड के पास बहुतायत से कोयला और लोहा था। यह वे चीजें हैं जिनके बिना आजकल का कोई उद्योग नहीं चल सकता। इसके अतिरिक्त इङ्गलैण्ड के पास पूँजी भी थी और बड़े परिमाण में व्यवसाय करने का अनुभव भी था। इसीलिए यूरोप में इङ्गलैण्ड ही सर्व-प्रथम राष्ट्र था, जिसने उद्योगवाद का आरम्भ किया। मैशीन के मुक़ाबिले में करघे पर बने हुए कपड़े बहुत महँगे पड़ते थे, इसलिए करघों पर काम करने वालों की रोज़ी मारी गई।

जब इङ्गलैण्ड में प्रचुर परिमाण में कपड़ा बनने लगा और वह उसकी ज़रूरत से ज़्यादा हुआ तब उसको मण्डियों की तलाश हुई। सबसे पहले यूरोप के अन्य देशों में इङ्गलैण्ड के माल की खपत होने लगी; पर जब यूरोप के अन्य देशों ने भी उद्योग-व्यवसाय के महत्व को देखा और वे संरक्षण की नीति का अवलम्बन कर इङ्गलैण्ड के प्रहार से अपने देश के उद्योग-धन्धों की रक्षा करने में समर्थ हुए और स्वयं उद्योगशाली हो गए और उन देशों में ब्रिटिश माल का आना बहुत कम हो गया, तब इङ्गलैण्ड को अपने माल के लिए यूरोप के बाहर बाज़ार ढूँढ़ने की फ़िक्र हुई। हिन्दुस्तान ऐसा बड़ा मुल्क था जो अङ्गरेज़ी माल के लिए अच्छा

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

बाज़ार बन सकता था। इसलिए ऐसे उपाय किए गए जिसमें भारतवर्ष के वस्त्र का व्यवसाय नष्ट हो। इसीलिए एक स्थान से दूसरे स्थान तक माल ले जाने की सुगमता के लिए बड़ी-बड़ी सड़कें बनवाई गईं और रेल निकलवाई गई। अङ्गरेजी शिक्षा ने शिक्षित वर्ग की रुचि को बदल दिया, वह अङ्गरेज़ी पोशाक पसन्द करने लगा। उस नवीन शिक्षा का यह भी फल हुआ कि लोगों की आवश्यकताएँ बढ़ने लगीं। लोग ज़्यादा कपड़े का इस्तेमाल करने लगे। इस प्रकार विदेशी माल की माँग बढ़ने लगी।

यूरोपीय युद्ध के पहले तक अङ्गरेज़ सरकार की यही नीति रही कि हिन्दुस्तान का उद्योग-व्यवसाय न पनपे और वह अपने कपड़े की आवश्यकता के लिए लङ्काशायर और मैन्चेस्टर पर सदा निर्भर रहे। इसीलिए अहमदाबाद की देशी मिलों को किसी प्रकार का प्रोत्साहन नहीं दिया गया। बल्कि इस बात की चेष्टा रही कि इङ्गलैण्ड का कपड़ा किसी प्रकार देशी मिलों के कपड़े से महँगा न पड़े। भारत का काम केवल इतना ही रहा कि वह इङ्गलैण्ड को कच्चा माल देता रहे और इङ्गलैण्ड के बने माल को लेता रहे। पर यूरोपीय युद्ध के कारण विवश होकर बहुत सा माल हिन्दुस्तान में ही सरकार को तैयार कराना पड़ा और यह विचार हुआ कि यदि भारत के उद्योग-धन्धों को कुछ तरक्की दी जाय तो किसी दूसरे महासमर के समय भारतवर्ष ब्रिटिश साम्राज्य की रक्षा में बहुत-कुछ समर्थ हो सकेगा। इसीलिए भारतवर्ष में एक इण्डस्ट्रियल कमीशन बैठाया गया और उसने इस बात की सिफ़ारिश की कि सरकार को भारत की औद्योगिक उन्नति में सहायक होना चाहिए। माण्टेगू चेम्सफोर्ड रिपोर्ट में एक स्थल पर यह कहा गया है कि यदि भारतवर्ष औद्योगिक राष्ट्र हो जाय तो उससे साम्राज्य की बड़ी पुष्टि हो। सन् १९२२ में फ़िस्कल कमीशन ने यह सिफ़ारिश की कि कुछ दर्जे तक भारत में संरक्षण-नीति का प्रयोग होना चाहिए। जहाँ तक भारत को आर्थिक हानि न हो वहाँ तक और देशों के माल की अपेक्षा ब्रिटिश साम्राज्यान्तर्गत माल को तरजीह देना चाहिए और विदेशी पूँजी के आने में किसी प्रकार की रुकावट न होनी चाहिए। इस नई नीति से विदेशी महाजनों और व्यापारियों ने पूरा-पूरा लाभ उठाया। संरक्षण की नीति से लाभ उठाने के लिए कई नए विदेशी कारख़ाने हिन्दुस्तान में खुल गए।

इधर देश में स्वदेशी का आन्दोलन भी बढ़ रहा था; लोग विदेशी माल का बहिष्कार करने लगे। स्वदेशी कपड़ा भी अब अधिक परिमाण में तैयार होने लग गया था। लड़ाई के ज़माने में जापान को अपने व्यापार की उन्नति करने का अच्छा मौक़ा मिला। जापानी माल का भारत में आयात बहुत बढ़ गया। जहाँ सन् १९१० में २६,००० (छब्बीस हज़ार) गज़, १९१३ में ९०,००,००० (नब्बे लाख) गज़ कपड़ा जापान से आया था वहाँ १९२७ में ३३,००,००,००० (तैंतीस करोड़) गज़ कपड़ा जापान से आया। इन सब कारणों से इङ्गलैण्ड के कपड़े के व्यवसाय को धक्का पहुँचा। स्वदेशी आन्दोलन के प्रभाव से बचने के लिए अङ्गरेज़ व्यापारियों ने यह उचित समझा कि हिन्दुस्तान में ही पूँजी लगाएँ, कारख़ाने खोलें और अपना नाम भारत के कारख़ानों की सूची में दर्ज करा लें। इस प्रकार ख़रीदार को यह पता न चल सकेगा कि जिस कपड़े को वह ख़रीदता है वह किसी ऐसे कारख़ाने का बना हुआ है जिसमें अधिकतर अङ्गरेज़ों की पूँजी लगी है, जिसका प्रबन्ध भी अङ्गरेज़ों के ही हाथ है और जिसका मुनाफ़ा भी हिन्दुस्तान के बाहर ही ख़र्च होता है। सन् १९२३ में 'फ़िनान्शल न्यूज़' नामक समाचार-पत्र ने यह लिखा था कि वह समय शीघ्र आ रहा है जब राजनीतिक दृष्टि से जो विदेशी कम्पनियाँ इस समय भारत में कारबार कर रही हैं, यह उनके हित की बात होगी कि वह अपना नाम भारतवर्ष के रजिस्टर में दर्ज करा लें और इस प्रकार 'भारतीय' बन जायँ। युद्ध के बाद से, इङ्गलैण्ड की जो पूँजी भारत में लगी है, बहुत बढ़ गई है। नीचे लिखे अङ्कों से यह बात स्पष्ट हो जायगी।

			१० लाख पौण्ड में
सन् १९१९	...	...	१·४
,, १९२०	...	...	३·५
,, १९२१	...	...	२·९५

मोटे तौर से ऐसा अनुमान किया जाता है कि जो कम्पनियाँ काम कर रही हैं उनकी ८५ प्रतिशत पूँजी अङ्गरेज़ों की है। इसके अतिरिक्त भारत से इङ्गलैण्ड का

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

व्यापार भी अच्छा ख़ासा है। जो माल इङ्गलैण्ड से हिन्दुस्तान आता है उसमें दो की प्रधानता है—

(१) विलायती कपड़ा और सूत।

(२) लोहा, फ़ौलाद, मैशीन, रेलगाड़ी, इत्यादि।

इन सभी में कपड़े का प्रथम स्थान है। ब्रिटिश राजनीति में कपड़े और लोहे के व्यवसाय का बड़ा प्रभाव है और इनका भारत को अधीन रखने में स्वार्थ है। सन् १९२७-२८ में पैंसठ करोड़ सोलह लाख रुपयों का कपड़ा विदेश से आया था। विदेशी माल मुख्य रूप से पाँच बन्दरगाहों में आता है। कलकत्ता, बम्बई, कराची, रङ्गून और मद्रास। इसका ब्यौरा इस प्रकार था—

कलकत्ता—अट्ठाइस करोड़ इक्कीस लाख रुपया;

बम्बई—अट्ठारह करोड़ इकहत्तर लाख;

कराची—नौ करोड़ छ लाख;

रङ्गून—पाँच करोड़ साठ लाख;

मद्रास—तीन करोड़ अट्ठावन लाख;

इस प्रकार विदेश से आने वाले कपड़े का ४३ फ़ी सदी कलकत्ते के बन्दरगाह में आता है और यहाँ से उत्तर भारत में फैल जाता है।

जहाँ पहले थोड़े से स्पष्टवक्ता अङ्गरेज़ ही इस बात को स्वीकार करते थे कि हमने भारतवासियों के लाभ के लिए भारत को नहीं जीता है, बल्कि इङ्गलैण्ड के माल के लिए भारत को एक बड़ी मण्डी बनाने के लिए ही हिन्दुस्तान में अपनी हुकूमत क़ायम की है, वहाँ अब पिछले कुछ महीने में इङ्गलैण्ड के बहुत से समाचार-पत्रों और राजनीतिज्ञों ने इस बात को स्पष्ट रूप से स्वीकार कर लिया है, कि अङ्गरेज़ी हुकूमत भारतवासियों के लाभ के लिए नहीं है, बल्कि इङ्गलैण्ड के व्यापार और इङ्गलैण्ड की भारत में लगी हुई पूँजी की रक्षा के लिए है। जिस प्रकार द्विचक्र शासन चला कर कुछ भारतीयों को शासन-विधान में थोड़ा-बहुत अधिकार देकर प्रसन्न करने की चेष्टा की गई है, उसी प्रकार उद्योग-व्यवसाय के क्षेत्र में भी इस बात का प्रयत्न किया गया है कि ब्रिटिश प्रभुत्व को सुरक्षित रखते हुए भारत के व्यवसायियों को छोटा-मोटा साझेदार बना लिया जाय। यह नीति बहुत भयङ्कर है, क्योंकि इससे भारतीयों में ही एक ऐसा नया समुदाय बन जाता है जो विदेशी व्यवसाय का समर्थक हो। भविष्य में भी इसी नीति से काम लिया जायगा, इसमें तनिक भी सन्देह नहीं है। हिन्दुस्तानियों का हिस्सा कुछ बढ़ाया जा सकता है, पर अङ्गरेज़ों का प्रभुत्व नहीं हटाया जा सकता। जब कभी इङ्गलैण्ड के स्वार्थ की बात आती है, तब भारत के स्वार्थ की सदा उपेक्षा की जाती है। टैरिफ़ बिल के सम्बन्ध में जो वादविवाद असेम्बली में हुआ, उससे गवर्नमेण्ट की नीति बिलकुल स्पष्ट हो गई।

थोड़े शब्दों में यदि कहा जाय तो कहना होगा कि ब्रिटिश साम्राज्य का उद्देश्य भारतवर्ष से आर्थिक लाभ प्राप्त करना है और यह लाभ पूँजी के सूद और माल के मुनाफ़े की शक्ल में ही अधिकतर होता है। यही साम्राज्यवाद का उद्देश्य है। यदि साम्राज्यवाद का अन्त करना है और भारत में पूर्ण स्वराज्य की स्थापना करना है, तो साम्राज्यवाद के उद्देश्य को विफलीभूत करना आवश्यक होगा। इसलिए प्रत्येक भारतीय का यह कर्त्तव्य है कि वह विदेशी वस्त्र का बहिष्कार करे। इसमें सन्देह नहीं कि जहाँ युद्ध के पहले ७० फ़ी सदी कपड़ा इङ्गलैण्ड से आता था वहाँ अब इङ्गलैण्ड से ३१ फ़ी सदी ही आता है और भारतवर्ष में ४१ फ़ी सदी कपड़ा तैयार होता है, तिस पर भी देशी मिलों के कपड़े की पैदावार पर्याप्त नहीं है। इस कमी को पूरा करने के लिए खद्दर की पैदावार बढ़ाना आवश्यक है। कलकत्ते इत्यादि के थोक व्यापारियों को इस बात की प्रतिज्ञा करनी चाहिए कि वे कम से कम एक वर्ष तक विदेशी कपड़े का कोई नया ऑर्डर न देंगे। प्रसन्नता की बात है कि अमृतसर और कानपुर के थोक व्यापारियों ने इस प्रकार की प्रतिज्ञा की है। आशा है, और जगहों के व्यापारी इनका अनुकरण करेंगे। जो व्यापारी कलकत्ते आदि बड़े-बड़े नगरों से थोक माल ख़रीदते हैं, उनको भी इस प्रकार की प्रतिज्ञा करनी चाहिए। काशी के बहुत से थोक व्यापारियों ने इस प्रकार की प्रतिज्ञा कर अपने देश-प्रेम का परिचय दिया है। आशा है, अन्य स्थानीय व्यापारी इसका अनुकरण करेंगे। ख़रीदारों को भी इस बात की प्रतिज्ञा कर लेनी चाहिए कि वे भविष्य में केवल स्वदेशी वस्त्र का ही व्यवहार करेंगे। सब वर्ग और श्रेणी के लोगों को इस कार्य में सहयोग करना चाहिए। मुहल्ले-मुहल्ले विदेशी

(शेष मैटर २३१ पृष्ठ के पहले कॉलम में देखिए)

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

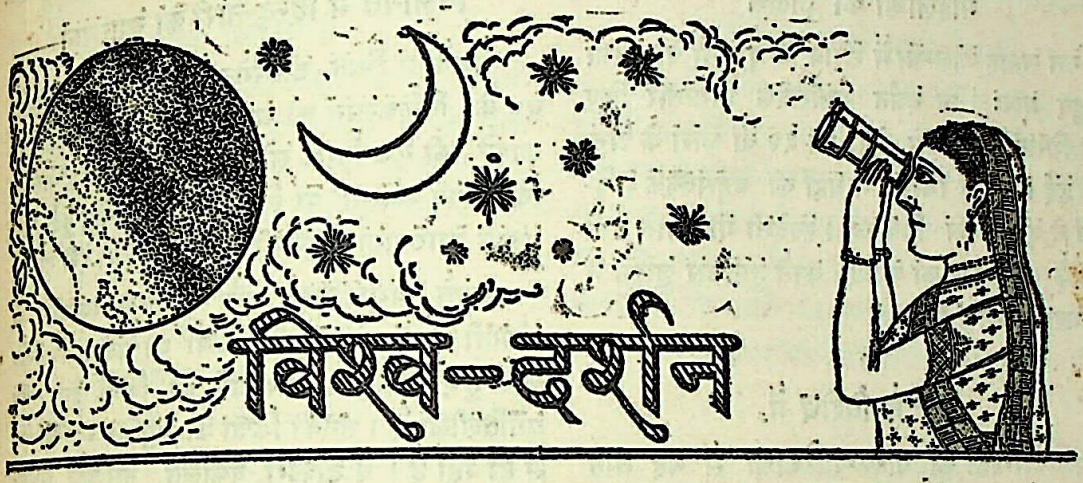

मातृमन्दिर

मातृमन्दिर (इलाहाबाद) के मन्त्री महोदय सूचित करते हैं कि गत मई मास के अङ्क में प्रकाशित सूचना के अनुसार मातृमन्दिर-कोष में ६८२ रु० ८ पाई नक़द प्राप्त हुए थे। विगत अप्रैल तथा मई मास में ४०) नक़द और मिले हैं, जिसकी सूची इस प्रकार है :—

१—एक गुप्तदान ... ... १०)

२—श्रीमती सावित्री देवी मार्फ़त श्रीयुत एस० आर० वर्मा, एम० ए०, ई० ए० सी०, पो० समराला (लुधियाना) ... ... ५)

३—कुँवर प्रतापबहादुर, मार्फ़त कुँवर लालबहादुर साहब, डिप्टी कलेक्टर, गोंडा ... ... १०)

४—श्रीमती वी० एन० वर्मा, डी० टी० एस० बी० एस० रेलवे, बीकानेर ... ... १५)

योग ४०)

इस प्रकार अब १०२२) रु० ८ पाई नक़द हमें प्राप्त हुए हैं। अब देशवासियों का कर्त्तव्य है कि वे शीघ्र ही और भी सहायता भेज कर हमारा हाथ बटावें।

* * *

स्वीकृति

गत मास के अङ्क में प्रकाशित किया जा चुका है कि "भारत में अङ्गरेज़ी राज्य" वाले मुक़द्दमे तथा अन्य मुक़द्दमों के ख़र्च में सहायता देने के लिए जो अपील प्रकाशित हुई थी, उसके उत्तर में ता० १२ अप्रैल से २५ अप्रैल तक हमें ४६) रु० मिले थे, अब २५ अप्रैल से २५ मई तक २६) रु० और निम्न-लिखित सज्जनों की सहायता प्राप्त हुई है, जिसे हम सधन्यवाद प्रकाशित करते हैं :—

१—श्रीयुत हीरालाल जी, स्टोरकीपर यू० एस० क्लब लिमिटेड, शिमला ... ... ५)

२—श्रीयुत रामलौटनप्रसाद वर्मा, अध्यापक स्टेट स्कूल, गङ्गानगर, बीकानेर ... ... २)

३—एक गुप्तदान १०)

४—मेसर्स गनेसप्रसाद बसन्तलाल, पो० डौंकिनगञ्ज (मिर्ज़ापुर) ... ... १)

५—श्रीयुत मङ्गलदास पो० डौंकिनगञ्ज (मिर्ज़ापुर) ... ... १)

६—श्रीमती सत्यवती देवी, मार्फ़त डॉक्टर लालबहादुर एल० एम० पी०, ६६ चेतराम स्ट्रीट, पो० गुलाबनगर (बरेली) ... ५)

७—श्रीयुत टी० एस० गुप्त, एस० पी० डब्ल्यू० आई०, जी० आई० पी० रेलवे, जेरूवाखेरा (सागर) ... ... २)

पिछले मास के ... ... ४६)

कुल जोड़ ७२)

* * *

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

महिलाओं का जुलूस

गत सप्ताह जालन्धर में शराब की दूकानों पर धरना देते हुए प्रायः तीन दर्जन स्वयंसेवक गिरफ़्तार किए गए। गिरफ़्तारी पुलिस ऐक्ट की ३४ वीं धारा के अनुसार हुई। इसके विरोध में वहाँ की बहुसंख्यक महिलाओं ने एक जुलूस निकाला। स्वदेशी गीत गाते तथा शराब के बहिष्कार का आग्रह करते हुए उस जुलूस ने शहर भर में भ्रमण किया।

* * *

१४४ के विरोध में

समाचार-पत्रों की पाठक-पाठिकाओं से यह बात छिपी न होगी कि पिछले दिनों दिल्ली में दङ्गा हो गया था। दङ्गे के बाद वहाँ के अधिकारियों ने १४४ दफ़ा जारी कर दिया। इस दफ़ा के अनुसार वहाँ न कोई सभा की जा सकती थी, न कोई व्याख्यान दिया जा सकता था और न अधिक संख्या में मिल कर लोग घर के बाहर ही निकल सकते थे। सबसे पहले तत्स्थानीय ६ स्वयंसेवकों ने इस दफ़ा को तोड़ा और वे गिरफ़्तार कर लिए गए। उसके बाद वहाँ की स्त्रियों ने एक जुलूस निकाला और खुली तौर से यह दफ़ा तोड़ा। दिल्ली की प्रमुख कार्यकर्त्री श्रीमती सत्यवती देवी जी गिरफ़्तार कर ली गई हैं। आप स्वर्गीय स्वामी श्रद्धानन्द जी की पोती और श्रीयुत धनीरामजी एडवोकेट की विदुषी कन्या हैं। आपको ६ मास की क़ैद की सज़ा हुई है।

* * *

ठाकुर जी ने खद्दर पहना

विगत २५ मई को स्थानीय बेणीमाधव-मन्दिर (दारागञ्ज) के अधिकारियों ने बेणीमाधव जी की मूर्ति को खद्दर परिधान कराया। प्रातःकाल बड़े समारोह के साथ यह उत्सव सम्पन्न हुआ। शहर के बहुतेरे गण्य-मान्य व्यक्ति निमन्त्रित किए गए थे। सन्ध्या को एक आम सभा भी हुई। वेणीमाधव जी प्रयाग के सर्वश्रेष्ठ और प्रथम पूज्य देवता माने जाते हैं। प्रति वर्ष माघ महीने में देश-देश के सहस्रों यात्री यहाँ आकर और गङ्गा-स्नान तथा वेणीमाधव का दर्शन करके अपना जीवन सफल समझते हैं।

* * *

विलायत में हिन्दू-नारी का व्याख्यान

मैनचेस्टर स्थित डीन्सगेट के फ़र्नले हॉल में श्रीमती ए० के० विल्किन्सन की अध्यक्षता में पिछले सप्ताह महिलाओं की एक विराट सभा हुई थी। सभा 'भारतीय स्त्रियों की अवस्था' पर विचार करने के लिए हुई थी। प्रधान व्याख्याता मैसूर की श्रीमती इन्दिरा देवी थीं।

अपने प्रभावशाली और ओजस्वी व्याख्यान में श्रीमती इन्दिरा ने भारतीय स्त्रियों की अवस्था का वर्णन करते हुए कहा कि भारतवर्ष की स्त्रियाँ इस समय प्रगतिशीला हैं। उनकी शिक्षा की समुचित व्यवस्था देश में हो रही है। वे डॉक्टरी, वकालत, नर्स और अध्यापिका के पदों की ओर उचित दिलचस्पी लेने लगी हैं। साहित्यिक कार्यों में भी उनकी रुचि बढ़ रही है। देश के भिन्न-भिन्न प्रान्तों में कन्याओं के लिए पाठशालाएँ और कॉलेज खुल गए हैं और खुल रहे हैं। देशवासी विधवाओं के प्रति अच्छा व्यवहार करने के लिए प्रयत्नशील हैं। बाल-विवाह की प्रथा रोकने के लिए वहाँ निरन्तर उद्योग हो रहा है। अनेक प्रान्तों में स्त्रियों को वोट देने के अधिकार भी मिल गए हैं और वे बड़े-बड़े ओहदों पर भी नियुक्त होने लगी हैं। कुछ समय पूर्व जब बाल-विवाह के विरोध में एक क़ानून भारत-सरकार ने पास किया था तो जनता की उसके साथ पूर्ण सहानुभूति थी, आदि।

सभानेत्री श्रीमती ए० के० विल्किन्सन ने कहा कि मुझे हर्ष है कि भारतवर्ष की स्त्रियाँ उन्नत हो रही हैं। हमारी आशा है कि शीघ्र ही भारतवर्ष ब्रिटिश राज्य का एक स्वायत्त शासित देश हो जायगा।

श्रीमती मोसेस बैरिज़ ने कहा कि भारतीय स्त्रियाँ जब अपनी उन्नति की समस्या हल करने के लिए स्वयं उद्यत हो गई हैं तो अवश्य ही उन्हें सफलता मिलेगी। श्रीमती बैरिज़ ने भारतवर्ष की स्वाधीनता के लिए सहानुभूति प्रदर्शित करते हुए सभा में एक प्रस्ताव पेश किया, जिसके द्वारा—उनका विचार था—भारतीय स्त्रियाँ अपने मतों और विचारों में परिवर्तन कर सकेंगी, जैसा कि स्वतन्त्र भारत की स्त्रियाँ ही कर सकती हैं।

* * *

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

'सरदार' की कन्या

सरदार वल्लभ भाई पटेल की विदुषी कन्या श्रीमती मणीबेन पटेल ने, श्रीमती कस्तूरीबाई गाँधी द्वारा निर्मित स्वयं-सेविकाओं के दल में नाम लिखाया है। वे जलालपुर तालुक़ा में सत्याग्रह-सम्बन्धी कार्य करेंगी।

* * *

अछूतों का मन्दिर-प्रवेश

ढाका के मुन्शीगञ्ज नामक स्थान में काली जी का एक मन्दिर है। मन्दिर के अधिकारियों ने अछूतों को मन्दिर में प्रवेश करने की आज्ञा दे दी है। इसी के अनुसार कई दिन पहले बड़े समारोह के साथ अछूतों ने मन्दिर में प्रवेश किया और काली जी की पूजा की। मन्दिर-प्रवेश के इस प्रथम उत्सव में शामिल होने के लिए पूर्वी बङ्गाल के भिन्न-भिन्न स्थानों से बहुत से अछूत एकत्रित हुए थे।

* * *

(२२८ पृष्ठ का शेषांश)

वस्त्र बहिष्कार के लिए सभा कर और स्वदेशी की प्रतिज्ञा लेकर, लोगों को विदेशी वस्त्र के बहिष्कार के कार्य को बहुत शीघ्र ही सफल करना चाहिए। आशा है, देशवासी इस नम्र प्रार्थना पर ध्यान देंगे। शीघ्र ही स्वयंसेवक घर-घर घूम कर स्वदेशी का प्रचार करेंगे। आशा है, शहर के प्रभावशाली लोग इस कार्य में स्वयंसेवकों की सहायता करेंगे। कपड़े के दूकानदारों से भी प्रार्थना है कि वे इस आन्दोलन से अनुचित लाभ उठा कर माल की क़ीमत न बढ़ा दें। इस समय सबको थोड़ा-बहुत स्वार्थ का त्याग करना ही होगा। लोगों को कपड़े की आवश्यकता को कुछ दिनों के लिए कम भी करना होगा। इससे कपड़े की निर्ख़ भी नहीं बढ़ सकेगी।

कपड़ा ख़रीदते हुए इस बात की जाँच कर लेना चाहिए कि किस मिल का बना हुआ कपड़ा है। कुछ मिलें ऐसी भी हैं जिनके मालिक अङ्गरेज़ हैं और जिनका प्रबन्ध अङ्गरेज़ों के हाथ में है, ऐसी मिलों के कपड़ों का उसी प्रकार बहिष्कार होना चाहिए, जिस प्रकार विदेशी वस्त्र का।

* * *

कॉङ्ग्रेस के कार्यक्रम में स्त्रियाँ

हाल ही में बाराबङ्की में स्त्रियों की एक विराट सभा हुई थी, जिसमें लखनऊ की श्रीमती मित्रा और श्रीमती भटनागर ने जोशीले व्याख्यान दिए। सभा में स्त्रियों को भारतीय स्वतन्त्रता के युद्ध में भाग लेने के लिए विशेष रूप से उत्साहित किया गया और श्रीमती सरोजिनी नायडू की गिरफ़्तारी पर हर्ष प्रकट किया गया। वहाँ विदेशी कपड़ों की दूकानों पर स्त्रियाँ धरना भी दे रही हैं।

* * *

दिल्ली का चूड़ी-सङ्घ

दिल्ली की अनेक प्रतिष्ठित महिलाओं ने "चूड़ी-सङ्घ" नाम की एक संस्था क़ायम की है। अब तक प्रायः १०० से अधिक स्त्रियाँ इस संस्था की सदस्या हो चुकी हैं। ये विदेशी कपड़ों की दूकानों पर धरना देती हैं और जो लोग जबरन् विलायती वस्त्र ख़रीदना चाहते हैं, उन्हें कपड़े ख़रीदने के पहिले ये स्त्रियाँ एक जोड़ी चूड़ियाँ नज़र करती हैं। उनका कहना है कि यदि तुममें विदेशी वस्त्रों के छोड़ देने तक का साहस नहीं है, तो ये चूड़ियाँ पहन कर और घूँघट काढ़ कर घर में बैठो!

* * *

श्रीमती गाँधी का उद्योग

महात्मा जी की आज्ञा के अनुसार श्रीमती गाँधी, गुजरात में शराब और विदेशी वस्त्रों के बहिष्कार का काम बड़े उत्साह और लगन के साथ कर रही हैं। उनके साथ कुमारी मीठूबेन पेटिट, कुमारी मणिबेन पटेल, श्री० जमुनालाल जी बजाज़ की धर्मपत्नी आदि अनेक सम्भ्रान्त महिलाएँ भी काम कर रही हैं।

* * *

एक सत्याग्रही कुमारी

गोपीगञ्ज (बनारस स्टेट) के रईस श्री० जङ्गबहादुर-सिंह की भतीजी श्रीमती कृष्णाकुमारी साबरमती आश्रम में गई हैं और वहाँ आपने सत्याग्रहियों में अपना नाम लिखवाया है। आपकी अवस्था अभी केवल १६ साल की है। आश्रम में आपको शिक्षा दी जा रही है।

* * *

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

महिला-दिवस

गत २३ मई को स्थानीय पुरुषोत्तमदास पार्क में पण्डित मोतीलाल नेहरू की धर्मपत्नी श्रीमती स्वरूप-रानी नेहरू के सभा-नेतृत्व में महिलाओं की एक विराट सभा हुई। यह सभा श्रीमती सरोजिनी नायडू, श्रीमती रुक्मिणी लक्ष्मीपति और श्रीमती कमलादेवी चट्टोपाध्याय की गिरफ़्तारी के सम्बन्ध में हुई थी। श्रीमती स्वरूप-रानी नेहरू और श्रीमती उमा नेहरू के अतिरिक्त और भी कई वक्ताओं ने ओजस्वी भाषण दिए और वर्तमान आन्दोलन में स्त्रियों को समान रूप से भाग लेने के लिए उत्साहित किया। श्रीमती स्वरूपरानी जी ने कहा कि अब स्त्रियों को परदे से निकल आना चाहिए और अपने आपको जेलों के निवास के योग्य बनाना चाहिए। जेल हमारे लिए सबसे बड़े पुण्य-तीर्थ हैं। भगवान श्रीकृष्ण का जन्म जेल ही में तो हुआ था!

* * *

स्त्रियों ने आज्ञा भङ्ग की

श्रीमती सरोजिनी नायडू तथा अन्य महिला नेताओं की गिरफ़्तारी के सम्बन्ध में कलकत्ता के श्रद्धा-नन्द पार्क में महिलाओं की एक सभा हुई थी। सभा-नेत्री थीं स्वर्गीय देशबन्धु दास की बहिन श्रीमती उर्मिला देवी। जिस समय सभा की कार्यवाही प्रारम्भ हुई, उसके थोड़ी ही देर बाद असिस्टेण्ट पुलीस कमिश्नर ने श्रीमती उर्मिला देवी को एक आज्ञापत्र दिखाया जिसमें उस सभा को बन्द करने की आज्ञा दी गई थी। स्त्रियों ने उसे भङ्ग करना ही निश्चय किया और सभा समाप्त होने पर एक जुलूस निकाला। पुलीस ने जुलूस पर लाठियों से आक्रमण किया, जिससे चार स्वयंसेवक घायल हुए। एक स्वयंसेवक गिरफ़्तार भी किया गया।

* * *

स्त्रियों ने नमक-क़ानून तोड़ा

बनारस की अस्सी घाट की पुलीस-चौकी के सामने श्रीमती लीलावती देवी और श्रीमती सावित्री देवी के नायकत्व में २५ स्त्रियों ने नमक बनाया और बेचा। एक-त्रित जनता में स्त्रियों की काफ़ी संख्या थी। इस सम्बन्ध का चित्र अन्यत्र देखिए।

मद्रासी महिला को एक वर्ष

आर्काट की सत्याग्रही डिक्टेटर श्रीमती [illegible] अन्य कई सत्याग्रहियों के साथ पकड़ ली गईं। [illegible] के लिए उन लोगों की पेशी तत्स्थानीय डिस्ट्रिक्ट [illegible] स्ट्रेट के यहाँ हुई। मैजिस्ट्रेट ने भारतीय पुलीस [illegible] की ११७वीं धारा और नमक-क़ानून की ७४वीं [illegible] अनुसार ६ महीने की सादी क़ैद की सज़ा उन्हें [illegible] इसके अतिरिक्त १४४ दफ़ा तोड़ने के अपराध में ३ [illegible] की और भी सज़ा उन्हें हुई। दोनों क़ैद अलग-[illegible] चलेंगी। मैजिस्ट्रेट ने उन्हें ए क्लास के क़ैदियों में [illegible] का हुक्म दिया है।

* * *

प्रयाग में स्त्रियों की विराट सभा

स्थानीय मुन्शी रामप्रसाद के बाग़ में स्त्रियों की [illegible] विराट सभा श्रीमती सरोजिनी नायडू के गिरफ़्तार [illegible] के उपलक्ष में हुई, जिसकी सभानेत्री श्रीमती स्वरूप-[illegible] नेहरू थीं। सभा में सभानेत्री के अतिरिक्त श्रीमती [illegible] नेहरू और सुभद्रा देवी के भी व्याख्यान हुए। इन [illegible] ने बड़े ज़ोरदार शब्दों में स्त्रियों से स्वयं-सेविका [illegible] सम्मिलित होने तथा खद्दर पहनने की अपील की। [illegible] हैं कि जब श्रीमती विजयलक्ष्मी पण्डित व्याख्यान [illegible] हुए देश के लिए अनेक विपत्तियों को मोल लेने [illegible] नेताओं की बातें उपस्थित जनता को समझ [illegible] तो बहुत सी स्त्रियाँ रो पड़ी थीं!

निश्चय हुआ कि शीघ्र ही एक दूसरी महिला-[illegible] करके स्त्रियों को स्वयं-सेविकाओं में भर्ती किया [illegible] और इस आन्दोलन को जाग्रत रखने के लिए प्रति [illegible] स्त्रियों की एक सभा हुआ करेगी।

बहुत सी स्त्रियों ने शुद्ध खद्दर पहनने [illegible] प्रतिज्ञा की।

* * *

एक रानी का साहस

हरदोई ज़िला कॉङ्ग्रेस कमिटी ने सत्याग्रह [illegible] के सञ्चालन के लिए श्रीमती रानी विद्यादेवी [illegible] निर्वाचित किया है। आपने सत्याग्रही जत्थे का [illegible] करना स्वीकार कर लिया है।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

विषय-सूची

क्रमाङ्क	लेख	लेखक	पृष्ठ
१	प्रातःकाल (कविता)	[श्री० चन्द्रनाथ मालवीय 'वारीश']	१
२	सम्पादकीय विचार		२
३	मातृ-मन्दिर	[डॉक्टर धनीराम 'प्रेम' लन्दन]	६
४	भेंट (कविता)	[श्री० बद्रीनारायण शुक्ल]	२६
५	वारन हेस्टिंग्ज़ और महाराज चेतसिंह	[पं० तेजनारायण काक 'क्रान्ति']	२८
६	दहेज (कविता)	[श्री० रामावतार शुक्ल]	३४
७	संसार की वायु-विजयिनी वीराङ्गनाएँ	[श्री० रतनलाल मालवीय, बी० ए०]	३५
८	स्वागत (कविता)	['मुक्त']	४१
९	उद्भ्रान्त अलाप	[श्री० महातम सिंह चौहान]	४२
१०	अन्तर्वेदना (कविता)	[श्री० दिवाकर-प्रसाद]	४४
११	अध्यात्म तत्त्व अथवा मानव-धर्म	[श्रीमत्स्वामी प्रज्ञानपाद]	४५
१२	अद्भुत सौदा	[पं० तारादत्त मिश्र, बी० ए० (ऑनर्स), काव्यतीर्थ]	५७
१३	गीत (कविता)	[श्री० दिवाकरप्रसाद विद्यार्थी]	६०
१४	कान्यकुब्ज-ब्राह्मण-परिचय	[श्री० रजनी-कान्त, शास्त्री, बी० ए०, बी० एल०]	६१
१५	वीराङ्गना (कविता)	[श्री० शम्भूदयाल सक्सेना, साहित्य-रत्न]	७०
१६	सत्याग्रह संग्राम में एक वीराङ्गना का भाग	[श्री० यतीन्द्रकुमार]	७२
१७	उठ ! जाग !! (कविता)	['मुक्त']	७८
१८	स्वप्न की छाया	['मुक्त']	७९
१९	जीवन-पथ (कविता)	[प्रोफ़ेसर रामकुमार वर्मा, एम० ए०]	८७

* * *

हर एक रोग में जादू का सा गुण दिखाती हैं।

चालीस वर्षों की परीक्षा में किसी ने किसी प्रकार की शिकायत नहीं की

सुधासिन्धु

कफ, खाँसी, हैज़ा, दमा, शूल, संग्रहणी, अतिसार, पेट-दर्द, क़ै, दस्त, इन्फ़्लूऐञ्ज़ा, बालकों के हरे-पीले दस्त और पाकाशय की गड़बड़ी से होने वाले रोगों की एक-मात्र दवा। इसके सेवन में किसी अनुपान की ज़रूरत नहीं। मुसाफ़िरी में इसे ही साथ रखिए। क़ीमत ॥) आना। डाक-ख़र्च एक से दो शीशी तक ।=)

ब्रह्मास्त्र

शरीर में तत्काल बल बढ़ाता है; क़ब्ज़, बदहज़मी, कमज़ोरी, खाँसी को दूर करता है; बुढ़ापे के कारण होने वाले सभी कष्टों से बचाता है, नींद लाता है और पीने में मीठा व स्वादिष्ट है। क़ीमत तीन पाव की बड़ी बोतल २); डाक-ख़र्च १॥); छोटी १) डाक-ख़र्च ।॥≡)

बालसुधा

बच्चों को बलवान, सुन्दर और सुखी बनाने के लिए यह मीठा "बालसुधा" उन्हें पिलाइए, क़ीमत ॥), डाक-ख़र्च ॥)

ये तीनों दवाएँ सब दूकानदारों के पास मिलती हैं।

यदि आपके शहर में न मिलें तो इस पते से मँगाइए !

सुख-सञ्चारक कम्पनी, मथुरा

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

क्रमाङ्क	लेख	लेखक	पृष्ठ
	विविध विषय		
२०—	भैया और जमादार	[श्री० जी० एस० पथिक, बी० ए०, बी० (कॉम)]	९०
२१—	स्वास्थ्य और नवयुवक	[श्री० तारकेश्वर प्रसाद]	९३
२२—	लोहे का भय	[???]	९४
२३—	आर्य-समाज में सुधार की आवश्यकता	[श्री० दाताराम आर्य]	९७
२४—	चुम्बन	[श्री० दीननाथ सिद्धान्तालङ्कार]	९८
२५—	अस्मत पर हाथ	[???]	९९
२६—	विवाह या सर्वनाश	[कौशिक]	१०२
	* * *		
२७—	विनोद-वाटिका	[श्रीमती कमलादेवी चौधरी]	१०५
२८—	नारी-जीवन (कविता)	[श्री० आनन्दि-प्रसाद श्रीवास्तव]	११०
	* * *		
	विश्व-वीणा		
२९—	भारत की आकांक्षाएँ		११२
३०—	भारत के प्रति अङ्गरेज़ों की नीति		११५
३१—	संग्राम में साहित्य		[illegible]
३२—	एक महिला का आदर्श स्वदेश-प्रेम		[illegible]
	* * *		[illegible]
३३—	नरता एवं नारिता (कविता)	[पं० अयोध्यासिंह उपाध्याय 'हरिऔध']	[illegible]
३४—	व्यभिचार छुड़ाने का नुस्ख़ा	[श्री० यमुना-प्रसाद श्रीवास्तव]	[illegible]
३५—	घरेलू दवाइयाँ	[कुमारी लक्ष्मी देवी; श्री० गयाप्रसाद शास्त्री, वैद्य]	[illegible]
३६—	स्वास्थ्य और सौन्दर्य	[श्री० रतनलाल सालवीय, बी० ए०]	[illegible]
३७—	राग्रीत-सौरभ	[सम्पादक तथा स्वरकार—... नीलू-बाबू ; शब्दकार—सदारङ्ग]	[illegible]
३८—	शिल्प-कुञ्ज	[श्रीमती शकुन्तला देवी गुप्ता, हिन्दी-प्रभाकरा]	[illegible]
३९—	दिल की आग उर्फ़ दिल-जले की आह	["पागल"]	[illegible]
४०—	बाल-मनोरञ्जन	[श्री० ज़हूरबख़्श]	[illegible]
४१—	चिट्ठी-पत्री		[illegible]

दैवी सम्पद्

[लेखक—श्री० रामगोपाल जी मोहता, बीकानेर]

यदि आप सचमुच ही स्वाधीनता के उपासक हैं,

यदि आप अपने आपको, अपनी जाति को तथा अपने देश को पराधीनता के बन्धनों से मुक्त कर स्वतन्त्र बनाना चाहते हैं तो "दैवी सम्पद" को अपनाइए।

यदि आप अपने आपको, अपनी जाति को तथा अपने देश को सुख-समृद्धि सम्पन्न करना चाहते हैं तो "दैवी सम्पद" का अध्ययन करिए।

यदि आपके जीवन के किसी भी व्यवहार के सम्बन्ध में कोई उलझी हुई ग्रन्थि हो तो उसको सुलझाने के लिए "दैवी सम्पद" का सहारा लीजिए! आप उसे अवश्य ही सुलझा सकेंगे।

यदि धार्मिक विचारों के विषय में आपका मन संशयात्मक हो तो "दैवी सम्पद" को विचार-पूर्वक पढ़िए। आपका अवश्य ही समाधान होगा।

अपने विषय की यह अद्वितीय पुस्तक है। लगभग ३०० पृष्ठ की फ्रेंदरवेट कागज़ पर छपी हुई सजिल्द पुस्तक का मूल्य केवल २॥) रु०।

सार्वजनिक संस्थाओं को, केवल डाक-व्यय के ।-) (पाँच आने) ग्रन्थकर्ता के पास भेजने पर यह पुस्तक मुफ़्त मिलेगी।

ग्रन्थकर्ता का पता—
श्री० सेठ रामगोपाल जी मोहता
बीकानेर (राजपूताना)

प्रकाशक का पता—
व्यवस्थापक 'चाँद' कार्यालय;
चन्द्रलोक, इलाहाबाद

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

क्रमाङ्क	लेख	लेखक	पृष्ठ
४२	केसर की क्यारी	... ...	१४९
४३	शिशु-पालन	[श्री० आनन्दस्वरूप शर्मा]	१५१
४४	दुबे जी की चिट्ठी	[श्री० विजयानन्द दुबे जी]	१५३
४५	साहित्य-संसार	[श्री० अवध उपाध्याय; श्री० शुकदेव राय; श्री० प्रफुल्लचन्द्र ओझा 'मुक्त']	१५६

* * *

चित्र-सूची

१—पनघट (तिरङ्गा)
२—प्रतीक्षा (तिरङ्गा)

आर्ट पेपर पर रङ्गीन

३—सुघड़ माताओं के भाग्यशाली लाल
४—महात्मा सूरदार
५—राष्ट्रपति पं० जवाहरलाल नेहरू
६—दीवान बहादुर रामचन्द्र राव
७—पार्लाकिमेडी के राजा साहब
८—श्री० ए० आर० मुदालियर
९—सर ए० पी० पैट्रो
१०—सर सी० पी० रामास्वामी अय्यर
११—रावबहादुर आर० श्रीनिवास
१२—श्री० एम० आर० जयकर
१३—डॉ० आम्बेडकर
१४—श्रीयुत भीखन मेहतर
१५—चौधरी रामदयाल चमार
१६—श्रीयुत रामजीदास नाई
१७—श्रीयुत डालू मोची
१८—भगत चन्दीमल चमार
१९—महात्मा गाँधी
२०—प्रेज़िडेण्ट (भूतपूर्व) पटेल
२१—सरदार पटेल
२२—डॉक्टर अन्सारी
२३—महामना मालवीय जी
२४—मौलाना अब्दुल कलाम आज़ाद
२५—त्यागमूर्ति पं० मोतीलाल नेहरू
२६—श्री० एम० वी० अभ्यङ्कर, बार-एट-लॉ
२७—महात्मा भगवानदीन जी
२८—श्रीमती कमलादेवी चट्टोपाध्याय
२९—श्रीमती रुक्मिणी लक्ष्मीपति
३०—पण्डित गौरीशङ्कर भार्गव
३१—धर्मपत्नी पं० गौरीशङ्कर भार्गव
३२—श्री० सुखदेव
३३—श्री० राजगुरु
३४—श्री० महावीर सिंह
३५—श्री० गयाप्रसाद
३६—श्री० विजयकुमार सिंह
३७—श्री० कमलनाथ तिवारी
३८—श्री० प्रेमदत्त
३९—श्री० यतीन्द्रनाथ सान्याल
४०—श्री० देसराज
४१—श्री० अजयकुमार घोष

सादे

४२—काशी-नरेश महाराजा चेतसिंह
४३-४६—मिस एमी जॉन्सन सम्बन्धी ४ चित्र
४७—मिस विनिफ्रेड जॉयस ड्रिङ्कवाटर
४८—मिस स्पूनर
४९—मिसेज़ चार्ल्स ए० लिण्डबर्ग
५०—फ्रॉलीन जेनी लिण्ड
५१—श्रीमती उर्मिला देवी शास्त्री
५२—श्रीमती मीरा
५३—श्रीमती रत्नबाई
५४—श्रीमती राजमानिक अम्मल
५५—श्रीमती पी० जानकी अम्मल
५६—मिस डोरोथी कोल्सवेल्ड
५७—श्रीमती पी० विशालाक्षी अम्मा
५८—मिस इक़बालुन्निसा बेगम
५९—श्रीमती मनी बहिन पटेल
६०—श्रीमती अशोकलता दास
६१—श्रीमती शान्तिदास, एम० ए०
६२—श्रीमती लावण्यप्रभा मित्र
६३—प्रोफ़ेसर कृष्णनारायण
६४—श्री० सकलातवाला
६५—मलिक लाल ख़ाँ
६६-६७—आँखों का व्यायाम—२ चित्र
६८—ज़ुराब का नमूना

कार्टून

६९—चोट पर चोट
७०—जॉनबुल और लेडी डॉक्टर
७१—भारतीय स्त्रियों का जेल
७२—नई रोशनी

* * *

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

५०००) की चीज़ ५) में

मेस्मिरेज़म विद्या सीख कर धन व यश कमाइए

मेस्मिरेज़म के साधनों द्वारा आप पृथ्वी में गड़ा धन या चोरी गई चीज़ का क्षण-मात्र में पता लगा सकते हैं। इसी विद्या के द्वारा मुक़दमों का परिणाम जान लेना, मृत पुरुषों की आत्माओं को बुला कर वार्तालाप करना, बिछुड़े हुए स्नेही का पता लगा लेना, पीड़ा से रोते हुए रोगी को तत्काल भला-चङ्गा कर देना, केवल दृष्टि-मात्र से ही पुरुष आदि सब जीवों को मोहित एवं वशीकरण करके मनमाना काम करा लेना आदि आश्चर्यप्रद शक्तियाँ आ जाती हैं। हमने स्वयं इस विद्या से लाखों रुपए कमाए और इसके अजीब करिश्मे दिखा कर बड़ी-बड़ी सभाओं को चकित कर दिया। हमारी "मेस्मिरेज़म विद्या" नामक पुस्तक मँगा कर आप भी घर बैठे इस अद्भुत विद्या को सीख कर धन व यश कमाइए। मय डाक-महसूल मूल्य सिर्फ़ ५) रुपए।

हज़ारों प्रशंसा-पत्रों में से एक

बाबू सीताराम जी बी० ए०, बड़ा बाज़ार, कलकत्ता से लिखते हैं कि मैंने आपकी 'मेस्मिरेज़म विद्या' पुस्तक के ज़रिए मेस्मिरेज़म का ख़ासा अभ्यास कर लिया है। मुझे मेरे घर में धन गड़े होने का मेरी माता द्वारा दिलाया हुआ बहुत दिनों का सन्देह था। आज मैंने पवित्रता के साथ बैठ कर अपने पिता की आत्मा का आवाहन किया और गड़े धन का प्रश्न किया। उत्तर मिला "ईंधन वाली कोठरी में दो गज़ गहरा गड़ा है।" आत्मा का विसर्जन करके स्वयं खुदाई में जुट गया। ठीक दो गज़ की गहराई पर दो कलसे निकले, उन पर एक-एक सर्प बैठे हुए थे। एक कलसे में सोने-चाँदी के ज़ेवर तथा दूसरे में गिन्नियाँ व रुपए थे। आपकी पुस्तक 'यथा नाम तथा गुण' सिद्ध हुई।

मैनेजर, मेस्मिरेज़म-हाउस नं० ११, अलीगढ़

सुगन्धित तैलों के नुस्ख़े

[लेखक—वैद्यभूषण पं० मोहनलाल कोठारी]

हमने हज़ारों रुपए व्यय करके देश के सभी प्रसिद्ध-प्रसिद्ध तैलों के नुस्ख़े प्राप्त किए हैं और अपने बीस साल के परिश्रम को हृदय खोल कर जनता के सामने रख दिया है। पुस्तक में सैकड़ों मशहूर तैलों के नुस्ख़े दिए गए हैं, जिनमें कुछ के नाम यह हैं—हिमसागर तैल, केशराज, आमला तैल, केशराज ब्राह्मी बुद्धि सागर तैल, मनमोहनी तैल, कलकत्ते के डॉ० नगेन्द्रनाथ सेन का केशरञ्जन तैल, विख्यात जवाकुसुम तैल, जैश्री तैल, प्रसिद्ध हिम-कल्याण तैल, गुलशन बहार तैल, कामनिया तैल, ब्राह्मी-विलास तैल, मालती तैल आदि के नुस्ख़े आपको इसमें मिलेंगे। सुन्दर दूधिया एण्टिक काग़ज़ पर छपी हुई पुस्तक का मूल्य सिर्फ़ १) डा० म० ।-)

सामुद्रिक विद्या

[लेखक—पं० चन्द्रशेखर जी वैद्यशास्त्री]

इस पुस्तक को पढ़ कर आप प्रत्येक मनुष्य के मुख आदि अङ्गों को देख कर फ़ौरन ही बता सकते है कि उसकी आयु कितनी होगी और उम्र के किस वर्ष में कितना सुख या दुख होगा, कितने पुत्र या कन्या होंगे। केवल अङ्ग देख कर ही उसके बाँझ, विधवा, नपुंसक होने की बातें भी बता सकते हैं। राजा या प्रजा, धनी या दरिद्री, पण्डित या मूर्ख रहने की बात आप इस पुस्तक से अङ्ग देख कर तुरन्त बता सकते हैं। मूल्य १॥) सजिल्द २)

मँगाने का पता—ब्राह्मी प्रेस, अलीगढ़

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

पाक-चन्द्रिका

८,००० प्रतियाँ हाथोंहाथ बिक चुकी हैं !!

इस पुस्तक में प्रत्येक प्रकार के अन्न तथा मसालों के गुण-अवगुण बतलाने के अलावा पाक-सम्बन्धी शायद ही कोई चीज़ ऐसी रह गई हो, जिसका सविस्तार वर्णन इस पुस्तक में न दिया गया हो। प्रत्येक चीज़ के बनाने की विधि इतनी सविस्तार और सरल भाषा में दी गई है कि थोड़ी पढ़ी-लिखी कन्याएँ भी इनसे भरपूर लाभ उठा सकती हैं। चाहे जो पदार्थ बनाना हो, पुस्तक सामने रख कर आसानी से तैयार किया जा सकता है। प्रत्येक तरह के मसालों का अन्दाज़ साफ़ तौर से लिखा गया है। पृष्ठ संख्या लगभग ६००, मूल्य केवल ४) स्थायी ग्राहकों से ३) रु० मात्र ! चौथा संस्करण प्रेस में है।

८३६ प्रकार की खाद्य चीज़ों का बनाना सिखाने वाली अनमोल पुस्तक। दाल, चावल, रोटी पुलाव, मीठे और नमकीन चावल, भाँति-भाँति की स्वादिष्ट सब्ज़ियाँ, सब प्रकार की मिठाइयाँ, नमकीन, बङ्गला मिठाई, पकवान, सैकड़ों तरह की चटनी, अचार, रायते और मुरब्बे आदि बनाने की विधि इस पुस्तक में विस्तृत रूप से वर्णन की गई है।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

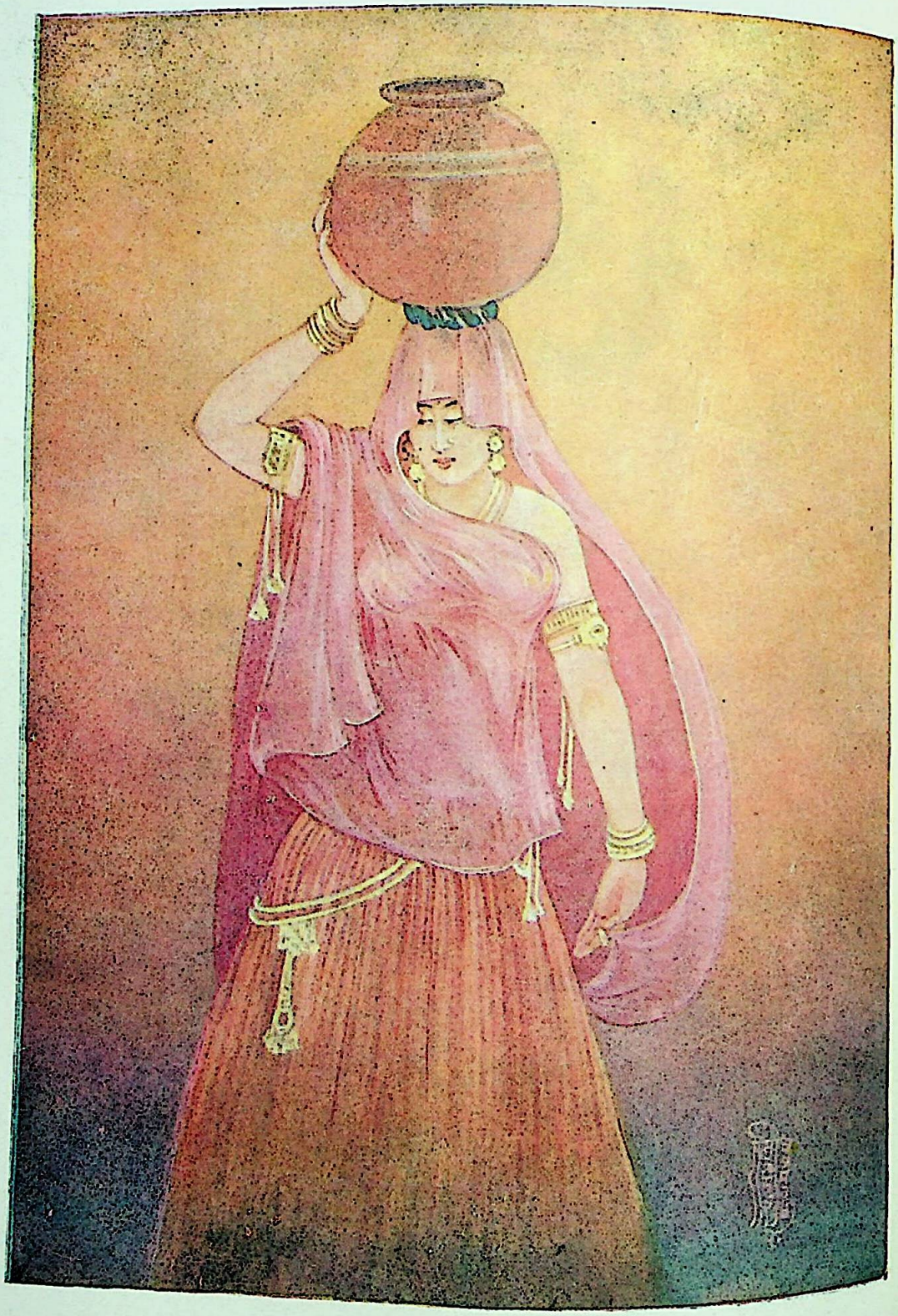

THE ART PRINTING CO. ALLAHABAD

पनघट

फ़िदा सौ ख़ूबियाँ पनघट के इस दिल-ज़ेब मनज़र पर !
इधर घूँघट भी है रुख़ पर, उधर मटका भी है सर पर !!

—नूह नारवी

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

प्रवेशाङ्क

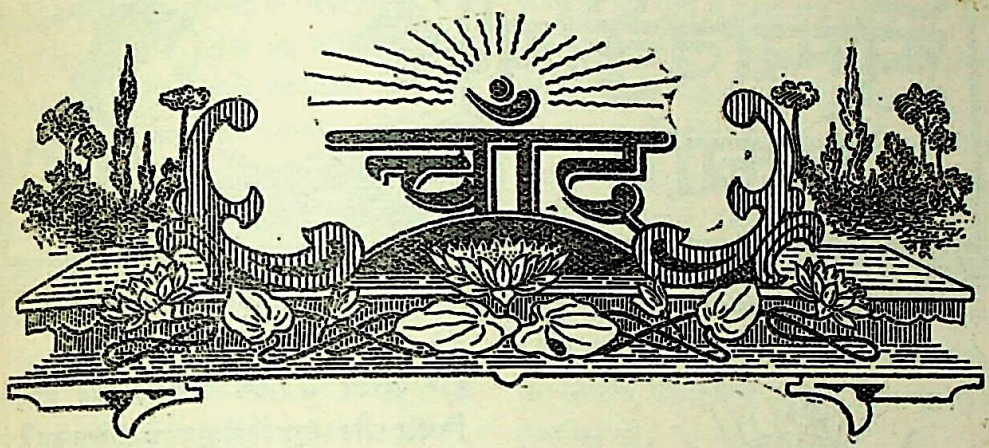

आध्यात्मिक स्वराज्य हमारा ध्येय, सत्य हमारा साधन और प्रेम हमारी प्रणाली है। जब तक इस पावन अनुष्ठान में हम अविचल हैं, तब तक हमें इसका भय नहीं, कि हमारे विरोधियों की संख्या और शक्ति कितनी है।

वर्ष ९ खण्ड १ | नवम्बर, १९३० | संख्या १ पूर्ण संख्या ९७

प्रातःकाल

[पं० चन्द्रनाथ मालवीय "वारीश"]

'चाँद'! तुम्हारी अटल नीति ने किया देश का है कल्याण!
छोड़े गए प्राण हरने को तुम पर फिर क्यों इतने बाण ??
डरे नहीं! क्यों? बढ़ते ही तुम गए सदा सङ्कट की ओर!
आ ही गया आज तो भी नव-वर्ष, तुम्हारा यह नव-भोर!!

विहँस इन्दु ने कहा (कष्ट से करुणा-भरी हँसी हँस कर)—
"जागे यह समाज तो पहले, मरने को मैं हूँ तत्पर॥
"आध्यात्मिक स्वराज्य मेरा है ध्येय, सत्य मेरा साधन।
"मेरी प्रेम प्रणाली है, यह अनुष्ठान है अति पावन॥

"मैं अविचल की भाँति अन्त तक, कभी न कर सकता परवाह!
"कितनी संख्या है विरोधियों की, कितनी है शक्ति अथाह!!"
चुए अश्रु-कण, दिए दिखाई ओस-विन्दु सम प्रातःकाल।
"निन्दा कौन करेगा शशि की"—कहा अरुण ने होकर लाल॥

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

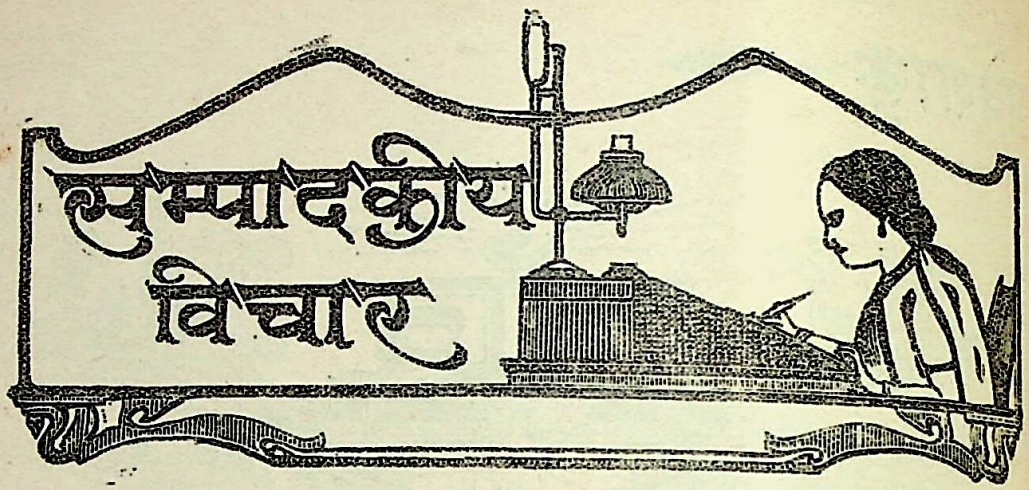

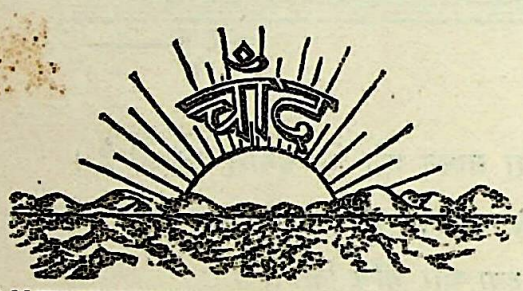

नवम्बर, १९३०

ऑर्डिनेन्स-युग

आज पूरे छः महीने के बाद भारतीय प्रेसों को थोड़ा खुल कर साँस लेने का मौक़ा मिला है। पिछले छः महीनों में प्रेस-ऑर्डिनेन्स के कारण हमारे राष्ट्रीय प्रेसों पर कैसी-कैसी भीषण विपत्तियाँ आई हैं—किस तरह देश भर के प्रायः समस्त राष्ट्रीय पत्रों का प्रकाशन बन्द हो गया है और किस तरह जो पत्र-पत्रिकाएँ निकलती भी रही हैं, वे निर्जीव और निस्तेज हो गई हैं—यह पाठकों से छिपा हुआ नहीं है। ये छः महीने वास्तव में हमारे निर्भीक राष्ट्रीय पत्र-पत्रिकाओं के लिए कठोर यातनाओं और विकट अग्निपरीक्षा के दिन रहे हैं। हर्ष की बात है कि हमारे पत्र इस परीक्षा में सच्चे वीर की तरह अपने आदर्शों पर निश्चल और सङ्कल्पों में सुदृढ़ प्रमाणित हुए हैं। परन्तु अब प्रेस-ऑर्डिनेन्स की भीषण कालरात्रि समाप्त हो गई है; सिद्धान्ततः हमारे पत्रों को सामयिक घटनाओं पर टीका-टिप्पणी करने की पूर्ववत स्वाधीनता मिल गई है। परन्तु यह सैद्धान्तिक स्वाधीनता भी हमें कितने दिनों तक प्राप्त रहेगी, यह नहीं कहा जा सकता। अतः किसी विशेष घटना या प्रसङ्ग की समालोचना करने के पूर्व हम संक्षेप में पिछले छः मास की घटनाओं पर एक विहङ्गम-दृष्टि डाल लेना आवश्यक समझते हैं।

पिछले छः महीने, राष्ट्रीय आन्दोलन और गवर्नमेण्ट की कार्रवाई दोनों की दृष्टि से, क़ानून-भङ्ग के दिन रहे हैं। इन महीनों में जहाँ राष्ट्रीय नेताओं ने गवर्नमेण्ट के नियमों को भङ्ग करके उसकी नैतिक सत्ता को एक ज़बर्दस्त आघात पहुँचाया है, वहाँ गवर्नमेण्ट ने स्वयं भी अपने नियमों और क़ानूनों की मर्यादा नष्ट करने में कुछ कम तत्परता नहीं दिखलाई है। गवर्नमेण्ट ने देश के साधारण क़ानूनों को ताक में रख कर छः महीनों के भीतर ही भीतर नौ असाधारण क़ानून या ऑर्डिनेन्स जारी कर दिए हैं। आज इन पंक्तियों के लिखे जाने के समय भी देश में ऐसे लगभग आधे दर्जन असाधारण क़ानून एक साथ ही जारी हैं। ऐसा मालूम होता है मानो भारत से साधारण क़ानून की सत्ता ही उठ गई है और हम लोग निरङ्कुश ऑर्डिनेन्सों के युग में रह रहे हैं।

सब से पहला ऑर्डिनेन्स विगत एप्रिल मास की १९ वीं तारीख़ को जारी हुआ। यह था बङ्गाल क्रिमिनल लॉ एमेण्डमेण्ट ऑर्डिनेन्स। इसके अनुसार बङ्गाल

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

गवर्नमेण्ट को यह अधिकार प्राप्त हो गया कि उसके कर्मचारी जिसकी चाहें बिना वारण्ट के तलाशी लें और जिसको चाहें बिना वारण्ट के पकड़ कर अनिश्चित काल के लिए जेल में बन्द कर दें। इसके ठीक आठ दिन बाद २७ एप्रिल को वह भीषण ऑर्डिनेन्स जारी किया गया, जिसने समस्त देश को राष्ट्रीय पत्रों से वीरान बना दिया। यह था इस साल का दूसरा असाधारण क़ानून प्रेस-ऑर्डिनेन्स। इसके बाद पूरे चार दिन भी न बीतने पाए कि १ ली मई को लाहौर कॉन्सपिरेसी केस ऑर्डिनेन्स नाम का एक तीसरा ऑर्डिनेन्स जारी करके गवर्नर जेनरल ने लाहौर षड्यन्त्र केस के अभियुक्तों को, उनके मुक़दमे की प्रारम्भिक जाँच समाप्त होने के पहले ही, एक विशेष अदालत के सुपुर्द कर दिया और साथ ही यह भी निश्चित कर दिया कि इनके मुक़दमे की अपील हाई-कोर्ट में न हो सकेगी। इसके दो सप्ताह बाद १५ मई को इस साल के चौथे ऑर्डिनेन्स द्वारा शोलापुर में मार्शल लॉ जारी किया गया। इसके बाद और दो सप्ताह बीतते ही बीतते गवर्नर जेनरल को पुनः नए ऑर्डिनेन्सों की आवश्यकता महसूस हुई। इस बार ३० मई के एक असाधारण गज़ट में एक साथ ही दो असाधारण क़ानूनों की घोषणा कर दी गई। ये थे अनलॉफ़ुल इन्स्टिगेशन ऑर्डिनेन्स और प्रिवेन्शन ऑफ़ इन्टिमिडेशन ऑर्डिनेन्स। ये दोनों इस साल के क्रमशः पाँचवें और छठें ऑर्डिनेन्स थे। इनमें से प्रथम द्वारा उन लोगों को दण्ड देने का उपाय किया गया, जो अन्य लोगों को गवर्नमेण्ट के टैक्स या लगान इत्यादि न देने के लिए प्रोत्साहित करते हों और दूसरे के द्वारा विदेशी कपड़ों और शराब की दूकानों पर धरना देना ग़ैरक़ानूनी क़रार दे दिया गया। इसके बाद एक महीने तक ऑर्डिनेन्सों के समुद्र में कोई ज्वार न आया। परन्तु २ जुलाई को पुनः एक नया ऑर्डिनेन्स जारी हुआ। यह इस साल का सातवाँ असाधारण क़ानून था—अन-अथराइज़्ड न्युज़शीट्स एण्ड न्युज़पेपर्स ऑर्डिनेन्स। इसके द्वारा लीथो से छपे हुए अन-रजिस्टर्ड परचों का दमन किया गया। इसके बाद अगस्त के मध्य में सीमा प्रान्त की स्थिति को वश में करने के लिए गवर्नमेण्ट को वहाँ मार्शल लॉ जारी करने की आवश्यकता मालूम हुई। इस बार गवर्नमेण्ट ने केवल वहीं के लिए एक ऑर्डिनेन्स न बना कर एक अत्यन्त व्यापक ऑर्डिनेन्स जारी कर दिया, जिसके अनुसार भारत के किसी भी भाग में जब चाहे मार्शल लॉ घोषित कर दिया जा सकता है। यह इस साल का आठवाँ असाधारण क़ानून—मार्शल लॉ ऑर्डिनेन्स—है, जो विगत १४ अगस्त को घोषित हुआ। इसके बाद विगत १० अक्टूबर को इस साल का नवाँ ऑर्डिनेन्स घोषित हुआ, जिसे अनलॉफ़ुल एसोसिएशन ऑर्डिनेन्स कहते हैं। इसके अनुसार गवर्नमेण्ट के कर्मचारियों को यह अनियन्त्रित अधिकार मिल गया है कि वे जिन संस्थाओं को ग़ैरक़ानूनी समझें उनका मकान, उनका सामान, उनकी धन-सम्पत्ति, रुपया-पैसा सब कुछ बिना मुक़दमा चलाए ज़ब्त कर लें।

इस अन्तिम ऑर्डिनेन्स का विरोध करते हुए महाराष्ट्र चेम्बर ऑफ़ कमर्स की कमिटी ने गवर्नमेण्ट ऑफ़ इण्डिया के सेक्रेटरी के पास एक पत्र भेजा है। इसमें कमिटी ने समस्त ऑर्डिनेन्सों की नीति की कठोर समालोचना की है। कमिटी का कहना है—"छः महीने के अन्दर ही धड़ाधड़ नौ ऑर्डिनेन्स जारी किए जा चुके हैं। इसका मतलब तो यह है कि शासन-पद्धति बिलकुल उलट दी गई है। इन ऑर्डिनेन्सों द्वारा पुलिस तथा मैजिस्ट्रेटों के हाथ में अनियमित शक्ति दे दी गई है और इसमें भी सन्देह नहीं कि कई बार उस शक्ति का भयङ्कर दुरुपयोग किया गया है। जैसे एक ओर इस आन्दोलन के आदमी क़ानून तोड़ने वाले हैं, उसी तरह गवर्नमेण्ट की ओर से भी क़ानून तोड़ने वाले सरकारी आदमी तैयार कर दिए गए हैं। इससे यह प्रत्यक्ष होता है कि क़ानून का तो नाश ही हो चुका है। गवर्नमेण्ट के पदाधिकारियों ने स्वतः क़ानून की अवहेलना करना आरम्भ कर दिया है। इधर जो सब से नया ऑर्डिनेन्स जारी किया गया है, उसके द्वारा प्रजा का एकत्रित होने का अधिकार छीन लिया गया है और व्यक्तिगत धन के अधिकार पर भी धावा बोल दिया गया है। इसमें सन्देह नहीं कि इस क़ानून से न्याय-सङ्गत तथा शान्त लोगों को भी, जो इस आन्दोलन से कुछ भी सम्बन्ध नहीं रखते, बहुत कष्ट और क्षति पहुँचेगी। अब सम्पत्ति, धन तथा व्यक्तिगत स्वतन्त्रता सभी ख़तरे में पड़ गए हैं। यह भयानक दशा आजकल के गिरे हुए व्यापार को और भी धक्का पहुँचाएगी। हमारा तो यह ख़्याल है कि

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

यह क़ानून शान्ति स्थापित करने के बदले मनुष्यों के हृदय में आत्म-बलिदान की भावना को और भी दृढ़ बनावेगा और उनमें स्वतन्त्रता की अग्नि को प्रज्वलित कर देगा। यह निश्चित है कि यह क़ानून प्रजा के चित्त को गवर्नमेण्ट की ओर से हटा कर सुलह में बड़ी भारी बाधा उपस्थित कर देगा।"

महाराष्ट्र चेम्बर ऑफ़ कमर्स की यह आशङ्का कहाँ तक उचित और युक्ति-सङ्गत है, इसका पता पिछले छः महीनों की देश की परिस्थिति पर विचार करने से आसानी से लग जायगा। इन महीनों में जैसे-जैसे ये ऑर्डिनेन्स, एक के बाद दूसरे और दूसरे के बाद तीसरे, जारी होते गए हैं और जैसे-जैसे इनके द्वारा राष्ट्रीय आन्दोलन को दमन करने की चेष्टा की गई है, वैसे ही वैसे यह आन्दोलन और भी उग्र रूप धारण करता गया है। इन छः महीनों के भीतर सत्याग्रहियों की शक्ति घटने के बदले बराबर बढ़ती गई है। आज की अवस्था यह है कि एक ओर अनेक भीषण से भीषण ऑर्डिनेन्स जारी हैं और दूसरी ओर सत्याग्रह आन्दोलन—बिना किसी नेता और बिना किसी कोष अथवा साधन के—निर्बाध गति से बढ़ता चला जा रहा है। आज संसार की कोई भी शक्ति इसे रोकने में असमर्थ दिखाई देती है। इस थोड़े से समय के भीतर ही भीतर इस आन्दोलन ने, अनेकों ऑर्डिनेन्सों और अनेकों दमनकारी क़ानूनों के रहते हुए भी, भारत के महिला-समाज में, भारत के सामाजिक जीवन में, भारत के स्वदेशी शिल्प और उद्योग धन्धों में जो अभूतपूर्व जागृति और जीवन फूँक दिया है, वह एकबारगी चकित करने वाला है।

भारतीय स्त्रियों की जागृति

भारतीय स्त्रियों ने इस आन्दोलन में भाग लेकर जो महान पराक्रम दिखाया है, वह मानव जाति के इतिहास में सदा स्वर्णाक्षरों में अङ्कित रहेगा। इस आन्दोलन की पद्धतियों से किसी का कितना ही मतभेद क्यों न हो, इस बात को कदापि अस्वीकार नहीं किया जा सकता कि इसने कुछ महीनों के भीतर ही भीतर भारत की स्त्रियों को सदियों की पराधीनता के कठिन पाश से मुक्त कर दिया है। भारतीय महिला-सङ्घ के मुखपत्र 'स्त्री-धर्म' का तो यहाँ तक कहना है कि इस आन्दोलन में सत्य, धैर्य, तपस्या और आत्मशुद्धि आदि जिन शब्दों से काम लिया जा रहा है, वे वास्तव में स्त्रियों के शब्द हैं, पुरुषों के नहीं। ऐसी अवस्था में क्या आश्चर्य है यदि इस आन्दोलन में स्त्रियाँ प्रमुख भाग लें? इङ्गलैण्ड के मज़दूर दल के सुप्रसिद्ध पत्रकार और लेखक श्री० वेल्सफ़ोर्ड, जो आजकल भारत में घूम-घूम कर यहाँ की दशा का निरीक्षण कर रहे हैं, भारतीय स्त्रियों की जागृति को देख कर अत्यन्त प्रभावित हुए हैं। वह कहते हैं—"इस आश्चर्यजनक आन्दोलन में जो सब से आश्चर्यजनक बात है, वह है भारतीय स्त्रियों की अभूतपूर्व जागृति। शताब्दियों की ग़ुलामी के बाद वे स्वाधीनता के संग्राम में आई हैं और यदि इस संग्राम द्वारा उन्होंने सम्पूर्ण भारत के लिए स्वराज्य नहीं प्राप्त कर लिया तो कम से कम अपना उद्धार तो अवश्य कर लिया है। बम्बई में स्त्रियों की दशा देख कर यह विश्वास नहीं होता कि कभी यहाँ परदे की प्रथा भी रही होगी।" केवल बम्बई तथा गुजरात में ही नहीं, स्त्रियों की यह जागृति भारत के कोने-कोने में व्याप गई है। पाठकों को यह जान कर आश्चर्य होगा कि इस आन्दोलन में भाग लेकर जेल जाने वाली स्त्रियों की संख्या आज जिस प्रान्त में सब से अधिक है, वह एक परदा-ग्रसित प्रान्त है—बङ्गाल। गुजरात आदि प्रान्तों में तो, जहाँ परदे की प्रथा नहीं है, स्त्रियों ने इस आन्दोलन में भाग लिया ही है, परन्तु दिल्ली, यू० पी०, बिहार और सी० पी० आदि परदा-ग्रसित प्रान्तों की स्त्रियों ने भी कुछ कम और कम वीरत्व तथा साहस का परिचय नहीं दिया है। निस्सन्देह यह एक ऐसा दृश्य है, जिसे देख कर किसी भी सच्चे देशभक्त और सच्चे मनुष्य की आँखें खुल हुए बिना नहीं रह सकतीं। अब भी जो लोग स्त्रियों की शिक्षा और उनकी स्वाधीनता का विरोध किया करते हैं, वे इस स्वर्गीय दृश्य को देख कर बहुत कुछ शिक्षा ग्रहण कर सकते हैं।

अछूतों की समस्या और स्वराज्य

अछूतों और दलित जातियों की समस्या भी आज उतनी विकट नहीं दिखाई देती, जितनी हमारे श्वेतकाय शासकगण इसे बनाने की कोशिश करते हैं। पिछले अगस्त मास में नागपुर में अखिल भारतीय दलित सम्मेलन

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

लन के प्रथम अधिवेशन के सभापति की हैसियत से अछूतों के प्रमुख नेता डॉ० आम्बेडकर ने इस विषय पर एक ऐसा भाषण दिया है, जिसने इङ्गलैण्ड के कई खुर्राट नीतिज्ञों के कान खड़े कर दिए हैं। उन्हें अपने जीते जी अछूतों की समस्या को इतनी आसानी के साथ हल हो जाते देख कर घोर मानसिक वेदना हो रही है। लॉर्ड समनर, लॉर्ड सिडेनहम, सर चार्ल्स ओमन, सर जॉर्ज मैकमुन, सर माइकेल ओडायर और सर क्लॉड जैकब, ये छः अङ्गरेज़ नीतिज्ञ डॉ० आम्बेडकर पर अत्यन्त रुष्ट हो गए हैं। इनका कहना है कि यदि डॉ० आम्बेडकर अपनी जाति वालों को इसी तरह हिन्दुओं से मिलने और ब्रिटिश शासकों में अविश्वास करने का उपदेश देते रहेंगे तो वह दिन दूर नहीं जब वह अपनी जाति का नेतृत्व खो बैठेंगे। आख़िर वह बात कौन सी है, जिसके कारण अछूतों और दलितों के ये नमकहलाल श्वेताङ्ग हितैषी इतने चिन्तित हो गए हैं? वह बात यह है कि अब तक हमारे श्वेताङ्ग प्रभुगण भारत को स्वराज्य देने के विरुद्ध जो अनेक उलटी-सीधी दलीलें दिया करते थे, उनमें अछूतों की समस्या एक बहुत बड़ी दलील थी; परन्तु डॉ० आम्बेडकर ने अपने उपरोक्त भाषण में इस दलील का पूर्णतः खण्डन करके यह अकाट्य रूप से प्रमाणित कर दिया है कि अछूतों का सच्चा हित इसी बात में है कि वे ब्रिटिश शासकों की शरण में न जाकर अपने देश-वासियों का साथ दें और भारत को शीघ्र से शीघ्र स्वराज्य दिलाने का प्रयत्न करें।

डॉ० आम्बेडकर कहते हैं कि अनेक जातियाँ, अनेक धर्म, अनेक भाषाएँ केवल भारतवर्ष में ही नहीं हैं। यूरोप के कई स्वतन्त्र देशों में भी जाति, धर्म और भाषा सम्बन्धी अनेकता पाई जाती है। विगत यूरोपीय महायुद्ध के बाद लटेविया, रूमानिया, लिथुआनिया, युगोस्लाविया, एस्थोनिया और ज़ेकोस्लोवाकिया आदि जिन अनेक छोटे-छोटे स्वतन्त्र देशों की सृष्टि की गई है, उनकी अवस्था इस मामले में भारत से किसी भी प्रकार अच्छी नहीं है। लटेविया में लेट, रूसी, यहूदी और जर्मन, इन चार जातियों के अलावे भी और कई वर्ग और छोटी-छोटी जातियाँ हैं। लिथुआनिया में लिथुनिआनियन हैं, यहूदी हैं, पोल और रूसी हैं, और इनके अलावे भी और अनेक छोटी-छोटी जातियाँ हैं। युगोस्लाविया में सर्ब, क्रोट, स्लोवनीज़, रूमानियन, हङ्गेरियन, अल्बेनियन, जर्मन आदि अनेक जातियाँ निवास करती हैं। इसी तरह एस्थोनिया में भी एस्थोनियन, रूसी, जर्मन तथा और कई छोटी-छोटी जातियाँ हैं। ज़ेकोस्लोवाकिया में ज़ेक, जर्मन, मेगर, रूथीनियन तथा हङ्गरी में मेगर, जर्मन, स्लोवाक इत्यादि अनेक जातियाँ हैं। इन जातियों में धर्म और भाषा का भेद भी भारत की अपेक्षा कम नहीं है। इनमें से कई देशों की अवस्था तो इन मामलों में भारत से भी गई-गुज़री है। फिर ये देश जब स्वतन्त्र हो सकते हैं, अपनी भीतरी और बाहरी नीति का स्वयं निर्णय कर सकते हैं, तब—डॉ० आम्बेडकर पूछते हैं—भारतवर्ष क्यों नहीं स्वतन्त्र हो सकता, भारतवर्ष अपने भाग्य का निर्णय क्यों नहीं स्वयं कर सकता? डॉ० आम्बेडकर का कहना है कि यह तर्क मूर्खतापूर्ण है कि भारत की विभिन्न जातियों में एकता होने पर स्वराज्य मिलेगा; बल्कि सीधा और सच्चा तर्क यह है कि स्वराज्य होने पर ही इन जातियों में एकता स्थापित हो सकती है।

डॉ० आम्बेडकर अपने विद्वत्तापूर्ण भाषण में बड़े ज़ोरदार शब्दों में पूछते हैं कि वे कौन से प्रयत्न हैं, जो ब्रिटिश गवर्नमेण्ट ने अपने डेढ़ सौ वर्षों के शासन में अछूतों के उद्धार के लिए किए हैं? अङ्गरेज़ों के आने के पहले अछूत लोग सार्वजनिक कुँओं से पानी नहीं भर सकते थे; क्या अङ्गरेज़ों ने अछूतों का यह दुःख दूर कर दिया? अङ्गरेज़ों के आगमन के पूर्व अछूत लोग मन्दिरों में नहीं प्रवेश कर सकते थे, क्या अब उन्हें यह अधिकार मिल गया है? अङ्गरेज़ी राज्य से पूर्व अछूत लोग पुलिस में नहीं भर्ती किए जाते थे; क्या अङ्गरेज़ी राज्य में वे पुलिस में भर्ती किए जाते हैं? अङ्गरेज़ी शासन के पहले सेना में अछूतों का प्रवेश निषिद्ध था, क्या अङ्गरेज़ी शासन में उन्हें यह अधिकार मिल गया? नहीं! नहीं!! नहीं!!! फिर किस बात के लिए हम अङ्गरेज़ी राज्य को अछूतों का हितैषी समझें? सच बात यह है कि अङ्गरेज़ लोग अछूतों की दुर्दशा का इतना बढ़ा-चढ़ा कर चित्र इसलिए नहीं खींचते कि उन्हें भारत के करोड़ों अछूतों और दलितों के साथ कोई हार्दिक सहानुभूति है और वे उनकी दुर्दशा का निवारण करना चाहते हैं, बल्कि इसका सच्चा कारण यह है कि इन बातों का बढ़ा-चढ़ा कर वर्णन करने से अङ्गरेज़ नीतिज्ञों

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

को भारत की राजनीतिक प्रगति के मार्ग में रोड़े अटकाने में सहायता मिलती है।

इन सभी बातों पर प्रकाश डालते हुए डॉ० आम्बेडकर ने अपने जाति-भाइयों से बड़े ही ज़ोरदार और ओजस्वी शब्दों में यह अपील की है कि वे सच्चे दिल से भारतीय स्वराज्य का समर्थन करें। क्योंकि डॉ० आम्बेडकर का कहना है कि स्वयं अछूतों के अतिरिक्त उनका उद्धार और कोई नहीं कर सकता, और वे भी अपना उद्धार तब तक नहीं कर सकते जब तक उनके हाथों में राजनीतिक शक्ति न आ जाय, और राजनीतिक शक्ति उन्हें तभी मिल सकती है, जब अङ्गरेज़ी राज्य का वर्तमान रूप बदल जाय और भारत को स्वराज्य मिल जाय। स्वराज्य ही एक मात्र ऐसी अवस्था है, जिसमें दलित लोग अपने हाथों में राजनीतिक अधिकार के आने की आशा कर सकते हैं। भारत को स्वराज्य मिले बिना अछूतों का उद्धार असम्भव है। इसलिए अछूतों को भारत की अन्य जातियों के साथ मिल कर प्राणपन से यह प्रयत्न करना चाहिए कि इस देश में शीघ्र से शीघ्र एक ऐसा शासन स्थापित हो जाय, जो यहाँ के करोड़ों ग़रीबों की आर्थिक दशा सुधारने का प्रयत्न करे। क्योंकि अछूतों के लिए सब से पहिली आवश्यकता आर्थिक सुधार की ही है। बिना आर्थिक उन्नति के वे और किसी प्रकार की उन्नति करने में सदा असमर्थ रहेंगे।

भारत की आर्थिक दुरवस्था

डॉ० आम्बेडकर ने अपने विद्वत्तापूर्ण भाषण में भारत की आर्थिक दुरवस्था का भी बड़ा ही करुणापूर्ण चित्र खींचा है। वह कहते हैं कि अङ्गरेज़ों ने हमें निस्सन्देह उन्नत सड़कें दी हैं, हमारे देश में नहरें खोदी हैं, गमनागमन के लिए रेलों का निर्माण किया है, डाक और तार का प्रबन्ध किया है, सिक्कों और माप-जोख के बटखरों को स्थिर किया है तथा देश के भीतर शान्ति और व्यवस्था स्थापित की है। इसके लिए उनकी जितनी प्रशंसा की जाय, सब थोड़ी है। परन्तु यहाँ प्रश्न तो यह है कि हम इस अनुपम शान्ति और इस स्वर्गीय व्यवस्था को लेकर क्या करें, जबकि हमारे पेट में भोजन और शरीर पर वस्त्र नहीं है? शान्ति और व्यवस्था को लेकर हम नहीं जी सकते; हमें जीने के लिए रोटी और वस्त्र चाहिए। और यही दो चीज़ें हैं, जिनका हमारे देश में आज सर्वत्र अभाव है। हमारे शासकों ने इस देश के शिल्प और कला-कौशल को इस बेरहमी के साथ कुचला है कि आज हम अपना तन-बदन ढकने और अपने नन्हें-नन्हें बच्चों तक का पेट भरने में असमर्थ हो गए हैं। ब्रिटिश शासकों की सदा यह नीति रही है कि भारत के उद्योग-धन्धों को कभी पनपने न दिया जाय और इस देश को सदा अङ्गरेज़ी माल की खपत के लिए एक खुला बाज़ार बनाए रक्खा जाय। डॉ० आम्बेडकर की सम्मति में इस शोषण-नीति का सब से घातक प्रभाव दलित जातियों पर पड़ा है, क्योंकि ये जातियाँ अधिकतर खेती-बारी अथवा अन्य उद्योग-धन्धों का ही काम करती हैं। इसीलिए डॉ० आम्बेडकर का कहना है कि दलित जातियों को सबसे पहले स्वराज्य पाने का उद्योग करना चाहिए। बिना स्वराज्य के—बिना एक ऐसी शासन-प्रणाली के, जो इस देश के शिल्प और उद्योग-धन्धों की उन्नति करने का प्रयत्न करे—दलित जातियों की अवस्था सुधरना सर्वथा असम्भव है। हमारी सम्मति में ये ऐसी बातें हैं, जिनके साथ न केवल दलित जातियों का, वरन् भारत की सभी जातियों के हित का घनिष्ट सम्बन्ध है।

ऊपर वर्णित आर्थिक दुरवस्था के साथ यदि आजकल की असाधारण आर्थिक कठिनाइयों का वर्णन और जोड़ दिया जाय तो सचमुच भारत की भीषण दरिद्रता का वर्णन सम्पूर्ण हो जाता है। आजकल नाज तथा ज़मीन की अन्य पैदावारों की सस्ती हो जाने के कारण किसानों के ऊपर एक ऐसे भयावह सङ्कट का समय उपस्थित हो गया है, जैसा पिछली एक पीढ़ी के भीतर कभी न हुआ था। आजकल बङ्गाल में जूट के पैदावार की हालत यह है कि जितने जूट को पैदा करने में सौ रुपया ख़र्च होता है, उतने को बेचने से केवल पचास ही रुपए मिलते हैं। 'टाइम्स ऑफ़ इण्डिया' का कहना है कि दक्षिण भारत के किसान खेतों की बढ़ी हुई मालगुज़ारी चुकाने के लिए अपनी स्त्रियों के बदन पर के गहने बेचने को मजबूर हो गए हैं। बम्बई प्रान्त में रूई के पैदावार की भी ऐसी ही दुर्दशा है। वहाँ एक एकड़ में रूई पैदा करने में वहाँ चालीस रुपए का ख़र्च है, वहाँ उसकी रूई को बेचने से केवल तीस ही रुपए प्राप्त हैं। इस प्रकार वहाँ के दरिद्र

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

किसानों को फ़ी एकड़ पूरे दस रुपए का घाटा पड़ रहा है। यदि इन चीज़ों की क़ीमत में वृद्धि न हुई तो आगे चल कर किसानों की दशा कैसी भयङ्कर हो जायगी, यह आसानी से समझा जा सकता है। ऐसे सङ्कट के समय किसानों की रक्षा का एक ही उपाय था—लगान माफ़ कर देना, कम कर देना या कुछ दिन ठहर कर वसूल करना। परन्तु बम्बई गवर्नमेण्ट इस समय सचमुच जो कर रही है वह यह है कि जिस लगान को अगली जनवरी में वसूल करना चाहिए था, उसे वह इसी समय वसूल कर लेना चाहती है। सब से बड़े दुःख की बात तो यह है कि हमारे किसानों की ऐसी दुर्दशा करने में स्वयं हमारी ही गवर्नमेण्ट की व्यापार-नीति और विनिमय नीति का बहुत बड़ा हाथ है। इस असाधारण सस्ती के कुछ ऐसे कारण भले ही हों, जो संसारव्यापी हों और जिन पर हमारी गवर्नमेण्ट का कोई प्रभुत्व न हो, परन्तु सर पुरुषोत्तमदास के इस कथन में तथ्य अवश्य है कि ब्रिटिश गवर्नमेण्ट ने रुपए का विनिमय-दर बदल कर भारत के ग़रीब किसानों की पैदावार का साढ़े बारह प्रतिशत ज़बर्दस्ती लूट लिया है।

नवीन वर्ष का स्वागत

विगत वर्ष, जैसे देश के जीवन में वैसे ही 'चाँद' के जीवन में भी, उथल-पुथल और क्रान्ति का वर्ष रहा है। इस वर्ष 'चाँद' पर अनेक असाधारण विपत्तियाँ आई हैं। ख़ासकर जब से प्रेस-ऑर्डिनेन्स जारी हुआ तब से तो एक तरह से 'चाँद' के जीवन पर ही सङ्कट उपस्थित हो गया था। परन्तु ग्राहक-अनुग्राहकों की कृपा, पाठकों की सद्भावनाएँ और लेखकों तथा कवियों का सहयोग पाकर 'चाँद' का यह वर्ष भी सकुशल समाप्त हो गया। इस वर्ष निस्सन्देह पत्र के प्रकाशन में कुछ त्रुटियाँ हो गई हैं, परन्तु आजकल के समान युद्धकाल में इस प्रकार की त्रुटियाँ हो जाना अनिवार्य है। हमने अपनी शक्ति भर 'चाँद' को ठीक समय पर और सर्वाङ्गपूर्ण निकालने में कोई प्रयत्न उठा नहीं रक्खा है। यदि ग्राहकों और पाठकों से इसी तरह सहयोग प्राप्त होता रहा तो 'चाँद' इस वर्ष पहले की अपेक्षा अधिक सज-धज और सुन्दर लेखों तथा कविताओं के साथ प्रकाशित होगा। यही आशा और महत्वाकांक्षा लेकर हम नवीन वर्ष का हृदय से स्वागत करते हैं।

स्वदेशी आन्दोलन की प्रगति

इस समस्त दुःखमय गाथा में स्वदेशी आन्दोलन की प्रगति ही एक ऐसी बात है, जिस पर ग़रीब भारत की आशाएँ लगी हुई हैं। पिछले कई महीनों में भारत में विदेशी माल के, ख़ासकर विदेशी कपड़े के, बहिष्कार का आन्दोलन बड़े ज़ोरों पर रहा है। इस आन्दोलन से इस देश के घरेलू उद्योग-धन्धों और शिल्प को अपूर्व प्रोत्साहन मिला है। वास्तव में स्वदेशी आन्दोलन केवल भारत तक ही परिमित नहीं है, वरन यह समस्त संसार में व्याप गया है। अब तक इस आन्दोलन का सहारा केवल पीड़ित और परतन्त्र राष्ट्र ही लेते थे, परन्तु पिछले कई महीनों में तो बड़े-बड़े साम्राज्यों और शिल्प-प्रधान देशों को भी इसकी शरण लेने के लिए बाध्य होना पड़ा है। इस समय समस्त संसार में स्वदेशी की एक लहर सी बह चली है। सभी राष्ट्र यह प्रयत्न करने लगे हैं कि अपनी जीवन-यात्रा के लिए आवश्यक तमाम वस्तुएँ अपने ही देश में पैदा की जायँ। जिन-जिन देशों में वहाँ के निवासियों के खाने के लिए यथेष्ट खाद्य पदार्थ पैदा होते हैं, वहाँ-वहाँ यह आन्दोलन बड़े ज़ोरों पर है। इससे इङ्गलैण्ड तथा जापान आदि साम्राज्यवादी देशों में खलबली सी मच गई है। इङ्गलैण्ड में इतना अन्न नहीं पैदा होता, जो वहाँ के निवासियों के खाने के लिए यथेष्ट हो। इङ्गलैण्ड के अधिकांश निवासियों की जीविका कारख़ानों और पुतलीघरों पर निर्भर है। इन कारख़ानों में बने हुए माल इङ्गलैण्ड के बाहर अन्य देशों में, जैसे भारत में, ऑस्ट्रेलिया में, दक्षिण अफ़्रीका और कनाडा आदि में, जाकर बिकते हैं और वहाँ से बदले में इङ्गलैण्ड को खाद्य पदार्थ भेजे जाते हैं। अब समस्या यह है कि यदि भारत, ऑस्ट्रेलिया, दक्षिण अफ़्रीका तथा कनाडा आदि अपनी ज़रूरत की सभी चीज़ें स्वयं ही तैयार

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

करने लगें—वे इङ्गलैण्ड का बना हुआ कपड़ा और लोहे का सामान न ख़रीदें और इन वस्तुओं को स्वयं ही बनाने लगें—तो इङ्गलैण्ड क्या करे ? यदि उसके पक्के माल की खपत इन देशों में न हो तो वह इन देशों से गेहूँ, मांस, फल, ऊन आदि कच्चे पदार्थ ख़रीदने के लिए पैसे कहाँ से ले आवे ? वास्तव में इङ्गलैण्ड जैसे राष्ट्रों के सामने, जो खाद्य पदार्थों के लिए दूसरे देशों पर निर्भर हैं, यह एक बहुत बड़ी समस्या है। ब्रिटेन के नीतिज्ञ इस कठिन समस्या को देख कर अत्यन्त व्याकुल हो गए हैं। ख़ासकर भारत में ब्रिटिश वस्तुओं के बहिष्कार का आन्दोलन उठ खड़े होने के कारण ब्रिटिश नीतिज्ञों की चिन्ता और भी बढ़ गई है।

इसी प्रकार की समस्या संसार के अन्य शिल्प-प्रधान देशों के सामने भी उपस्थित है और वे इसे हल करने का प्राणपन से उद्योग कर रहे हैं। परन्तु अभी तक कोई उपयोगी उपाय नज़र नहीं आता। ब्रिटेन का एक दल अपनी इस समस्या को इस तरह हल करना चाहता है कि ब्रिटिश साम्राज्य के स्वतन्त्र उपनिवेशों को जो माल बाहर से ख़रीदना पड़े, उसे वे अमेरिका या जर्मनी या किसी अन्य देश से न ख़रीद कर ब्रिटेन से ख़रीदें और इसके बदले ब्रिटेन उन्हें यह सुविधा दे कि उसे बाहर से जो खाद्य पदार्थ ख़रीदने पड़ते हैं, उनमें वह इन उपनिवेशों की पैदावार को पहले स्थान दे अर्थात् इनकी पैदावार पर वह, अन्य देशों की पैदावार की अपेक्षा, कम टैक्स लगावेगा। इस तरह उपनिवेशों की पैदावार को ब्रिटेन में, साम्राज्य के बाहर वाले देशों की पैदावार के मुक़ाबले, सस्ते दामों बिकने का मौक़ा रहेगा। परन्तु इस नीति में सब से बड़ी कठिनाई यह है कि ब्रिटेन को स्वतन्त्र व्यापार की नीति त्यागनी पड़ेगी। अब तक ब्रिटेन में बाहर से आने वाले खाद्य पदार्थों पर टैक्स नहीं लगाया जाता। परन्तु इस नीति को स्वीकार करने पर उसे इन पदार्थों पर न केवल टैक्स लगाना पड़ेगा, बल्कि साम्राज्य के बाहर वाले देशों के माल पर अपेक्षाकृत अधिक टैक्स लगाना पड़ेगा। इससे साम्राज्य के बाहर वाले देश भी इङ्गलैण्ड के माल पर टैक्स बढ़ाने के लिए विवश होंगे, जिससे उन देशों में इङ्गलैण्ड के माल की खपत कम हो जायगी। अब यदि ब्रिटेन स्वतन्त्र व्यापार की नीति पर दृढ़ रहता है तो ब्रिटिश उपनिवेशों और भारत में उसके माल की खपत कम होती है—क्योंकि इस दशा में ये देश ब्रिटिश माल की अपेक्षा अन्य देशों का माल सस्ते दाम पर ख़रीद सकते हैं—और यदि वह इन देशों में अपने माल की खपत बढ़ाने के लिए संरक्षण की नीति अख़्तियार करता है तो साम्राज्य के बाहर वाले देशों में उसके माल के लिए बाज़ार नहीं रह जाता। दोनों हालतों में ब्रिटेन में बेकारों की संख्या बढ़ती है और ब्रिटेन के वैभव को आघात पहुँचता है। ब्रिटिश नीतिज्ञ चाहे जो प्रयत्न करें, इस विपत्ति से ब्रिटेन की मुक्ति होती नहीं दिखाई पड़ती। संसार के परतन्त्र देशों में, ख़ास कर भारत में, स्वदेशी का आन्दोलन जैसे-जैसे बढ़ता जायगा, वैसे ही वैसे ब्रिटेन की यह विपत्ति और भी भयङ्कर रूप धारण करती जायगी।

हर्ष की बात है कि पिछले कई महीनों में भारत ने इस दिशा में यथेष्ट प्रगति की है। पिछले मास के समाचारों से विदित होता है कि भारत में मैनचेस्टर के कपड़ों की खपत पचहत्तर फ़ीसदी कम हो गई है। इससे मैनचेस्टर के व्यापार को गहरा आघात पहुँचा है। यदि यही अवस्था कुछ दिन और बनी रही तो वहाँ के व्यापार का पुनरुज्जीवित होना असम्भव हो जायगा। अभी तक वहाँ के कारख़ानेदार इस ताक में बैठे हुए हैं कि भारत में स्वदेशी आन्दोलन की प्रगति शिथिल पड़े और वे इस देश के बाज़ारों को अपने यहाँ के बने सूती कपड़ों से भर दें। उनकी यह नीति कहाँ तक सफल होगी, यह बहुत कुछ इस बात पर अवलम्बित है कि भारत के स्त्री-पुरुष स्वदेशी व्रत से कहाँ तक मुख मोड़ेंगे। परन्तु भारतीय आन्दोलन के लक्षणों को देख कर बहुत से नीतिज्ञ अभी से यह कहने लग गए हैं कि मैनचेस्टर वालों को भारत के हाथ अपने कपड़े बेच कर मालामाल होने की आशा अब सदा के लिए छोड़ देनी चाहिए। जो हो, भारत-वासियों को यह भली भाँति समझ लेना चाहिए कि भारत की सब प्रकार की उन्नति का रहस्य जिस एक मन्त्र के भीतर छिपा हुआ है, वह है—'स्वदेशी ! स्वदेशी ! स्वदेशी !!!' इसी महा मन्त्र को अपनाने से भारतवर्ष ग़ुलामी की शृङ्खला से मुक्त हो सकेगा। यही वह मन्त्र है जो संसार के पीड़ित और परतन्त्र राष्ट्रों का उद्धार करेगा। तथा इसी मन्त्र के प्रचार से समस्त संसार में शान्ति का साम्राज्य फैलेगा।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

मातृ-मन्दिर

[डॉक्टर धनीराम 'प्रेम', लन्दन]

उस समय मेरी अवस्था सोलह वर्ष की थी। इस आयु में हिन्दू बालिकाएँ भाँति-भाँति की कामनाएँ करती हैं, आशाएँ बाँधती हैं, सुख-स्वप्न देखती हैं। परन्तु मेरे भाग्य में यह सब कुछ न था। मेरी कामनाएँ उत्पन्न होने से पूर्व ही मर चुकी थीं। मेरी आशाओं को पनपने का अवसर न मिला था। मैं स्वप्न देखने की अधिकारिणी भी नहीं रह गई थी। मैं एक विधवा थी, बाल-विधवा। मेरे लिए दिन और रात एक समान थे। सौभाग्य मैंने देखा नहीं था, फिर वैधव्य को क्या समझती? मैं केवल इतना जानती थी और जानने के लिए विवश की गई थी कि मेरे लिए जीवन एक लम्बी यात्रा है, जिसमें न विश्राम के लिए अवकाश है, न शरण के लिए हरे वृक्ष हैं, न शान्ति के लिए मधुर जल के स्रोत। इन बातों के कारण यदि मेरे हृदय में नैसर्गिक भावनाएँ तथा सुख-दुख का परिज्ञान आदि उत्पन्न न हुए थे तो कोई आश्चर्य नहीं। उस विचार-शून्य रूखे-सूखे जीवन में यदि कभी समीक्षा के योग्य कोई विषय मेरे सम्मुख आता था तो वह केवल सास का अत्याचार था। परन्तु वह भी क्षणिक होता था। क्योंकि मैं यह समझने लगी थी कि एक विधवा के जीवन-क्रम का वह भी एक आवश्यक भाग है।

मेरे दिन किस प्रकार कट रहे थे, यह बताने की क्या आवश्यकता है? विधवाओं का जीवन जिस प्रकार व्यतीत होता है, वह किस पर अविदित है? प्रातःकाल से अर्द्ध रात्रि तक मशीन की भाँति काम करना, रूखे टुकड़े खा कर ठण्डा पानी पी लेना, औरों के उतरे हुए वस्त्र पहन लेना और नित्य प्रति नियम से सास की गालियाँ और झिड़कियाँ खा लेना, यही मेरी दिनचर्या थी।

उस दिन सोमवती अमावस्या थी। मेरे मुहल्ले में सभी घरों में राजघाट जाने की तैयारियाँ हो रही थीं। सास जी थीं कृपण। वे कहीं पाँच वर्ष में एक बार गङ्गा-स्नान को जाती थीं। श्वसुर जी पीछे पड़ते तो कह देतीं—"बार-बार गङ्गा नहाने में ही कौन सा पुन्य होता है? पाँच वर्ष के पाप एक बार जाकर धो आए, यह काफ़ी है। व्यर्थ ही हर बार ढ़ाई-तीन रुपया व्यय करने से क्या लाभ?" उस रात श्वसुर जी व्यालू करने आए तो कहने लगे—"सुनती हो, रामू की माँ, अमावस्या आ पहुँची है।"

"तो कहते किससे हो, जाने की इच्छा है तो नहा आओ।"

"मेरी इच्छा नहीं है। मैं तुम्हारे लिए कह रहा था। अबकी बार कर्णवास के भी दर्शन कर आना।"

"मुझे तो अभी दो ही वर्ष हुए हैं। अभी से क्या जल्दी है। अभी मरी नहीं जाती हूँ।"

"मेरी सलाह है कि अबकी बार बहू को भी गङ्गा-स्नान करा लाओ।"

"बहू को? वह पुन्न लूट के क्या करेगी? ऐसी होती तो मेरे लाल को ही क्यों डस लेती? तुम्हें ऐसी प्यारी लगती है तो ख़ुद ले जाओ। घर में अच्छे से अच्छा खाती है, अच्छे से अच्छा पहनती है, अब तीन-चार रुपया ख़र्च करके रानी जी को गङ्गा जी ले जाओ।"

"यह सब तो ठीक है, पर जिस दिन से विधवा हुई है, बेचारी ने बाहर पैर नहीं रक्खा। मायके में भी तो कोई नहीं है, जो कुछ दिनों वहीं जी बहला आवे। बेचारी बच्चा उमर है, दो दिन गङ्गा मैया के किनारे खेल-खाइ आवेगी।"

सास ने मेरी ओर देख कर पूछा—"क्यों, रानी जू! गङ्गा जी चलोगी?"

मैं चुप रही। श्वसुर जी बोले—"वह बेचारी क्या बतावेगी? जाओ इस बार उसे भी गोता लगवाइ लाओ।"

मेरे लिए वर्षों के बाद घर से बाहर पैर निकालने का यह प्रथम अवसर था। घर की चहारदीवारी के बाहर क्या होता है, इसका मुझे अधिक ज्ञान नहीं था। हम लोग एक इक्के में बैठ कर स्टेशन पहुँचे। भीड़ का क्या ठीक था। जिनके घर में खाने को अन्न नहीं था, वे भी गङ्गा जी के दर्शन के लिए निकल पड़े थे। प्लेटफ़ॉर्म खचाखच भरे थे। स्टेशन के बाहर ग्रामों से आए हुए

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

किसान, कम्बल बिछाए, पोटरियाँ बग़ल में दबाए, बैठे थे। टिकट-घर के बाहर तो एक प्रकार का युद्ध हो रहा था। मनुष्य एक के ऊपर एक गिरे पड़ते थे। श्वसुर जी हमें स्टेशन तक पहुँचाने आना चाहते थे, परन्तु इक्के के दो आने बचाने के लिए सास जी ने उन्हें रोक दिया। अब इधर-उधर फिर रही थीं। उस भीड़ में टिकट मिलना सरल न था। एक बार उन्होंने भीड़ को चीर कर खिड़की तक जाने का प्रयत्न किया तो किसी के जूते से उनका पैर कुचल गया। रोती हुई बाहर आईं। और किसी से तो कुछ कह नहीं सकती थीं, मेरे ऊपर क्रोध उतारा। चिल्लाने लगीं—"आग लगे ऐसी गङ्गा में! सारे पैर का हलुआ हो गया! यह कम्बख़्त जहाँ जायगी, वहीं ऐसा करेगी! राँड़ को मौत भी तो नहीं आती!"

मैं अब तक तो चुप थी। मेरे मुख से केवल इतना निकल गया—"तो इसमें मैंने क्या कर दिया? देखती तो हो कि भीड़ हो रही है?" बस फिर क्या था, अङ्गार की भाँति लाल हो गईं। "राम-राम! देखो इस हत्यारी की बातें! मुझे सीख देने चली है! है तो कलजुगियाई!" इतना कह कर उन्होंने दो चाँटे भी मेरे रसीद कर दिए। जिस समय वह मुझे इस प्रकार गालियाँ दे रही थीं, मेरे पास ही एक नवयुवक अङ्गरेज़ी सूट पहने खड़ा था। अवस्था बाईस के लगभग होगी। मुख पर लावण्य था और नेत्रों में दया तथा सहानुभूति का भाव। जब गालियाँ समाप्त करके सास मुझ पर हाथ चलाने लगीं तो वह धीरे-धीरे मेरी ओर आया और सास की ओर दृष्टि फिरा कर खड़ा हो गया। सास ने उसे देख कर हाथ चलाना तो बन्द कर दिया, परन्तु आप ही आप बड़बड़ाती रहीं।

वह धीरे से सास के कन्धे को झकझोर कर बोला—"बुढ़िया! इस बेचारी को क्यों पीट रही है?"

"तू कौन, राजा के मन्त्री? मेरी बहू है, चाहे जो कुछ करूँ।"

"तेरी बहू तो है, पर यहाँ तो तुझे उसके ऊपर हाथ नहीं उठाना चाहिए।"

"अरे भैया, तू क्या जाने, डाइन है! अब देखो कैसी सीधी बनी खड़ी है!"

"देख बुढ़िया! घर चाहे जो कुछ कर, बाहर इस बेचारी को न मारना। अगर पुलिस देख लेगी तो तू बँधी-बँधी फिरेगी। समझी?"

"वैसे तो भैया मेरी प्रान है। पर जब आपे से बाहर हो जाय तो क्या करूँ? मैं बुड्ढी हूँ। मुझसे भीड़ में टिकट लिया नहीं जायगा। इससे ज़रा टिकट ले लेने को कहा तो आग-बबूला हो गई। थोड़ी डाट-डपट न करूँ तो कैसे काम चले?"

"क्या गङ्गा जा रही है? ला, मैं तेरे लिए टिकट ला दूँ।"

"तू जुग-जुग जिए, भैया!" कह कर सास ने एक रुपया निकाल कर उसे दे दिया। नवयुवक ने अपनी टोपी मेरी ओर करके कहा—"ज़रा मेरी टोपी पकड़ना। मैं अभी टिकट लिए आता हूँ।"

वह टिकट लेने चला गया। सास अपना बचाव करने के लिए उससे सरासर झूठ बोली थीं। मैं शान्त रही। मेरी इस शान्ति और नवयुवक की सहानुभूति पर वह कुढ़ रही थीं और मन ही मन संसार के सारे कोप मेरे ऊपर गिराने की प्रार्थना कर रही थीं। मैं मन ही मन एक अज्ञात आनन्द का अनुभव कर रही थी। आज तक गालियों और कटु वाक्यों के अतिरिक्त और कुछ मेरे भाग्य में न आया था। आज यह सहानुभूति, यह दयार्द्रता! वर्षों रूखी रोटी खाकर किसी को एक गुड़ की डली खाने को मिले तो वह कितनी मधुर मालूम देती है! इसी प्रकार मैं अपने जीवन में इसे एक नवीनता और वह भी एक वाञ्छनीय नवीनता समझ रही थी। मैं अपने विचारों में मग्न थी और वृद्धा अपने विचारों में। आज तक उन्होंने मेरे ऊपर एकतन्त्र राज्य किया था। मेरे लिए उस नवयुवक की सहानुभूति उसे कुछ खटकी। सास को शायद ऐसा प्रतीत होने लगा कि उसके निरङ्कुश राज्य के विरुद्ध एक विद्रोही खड़ा हो गया है। प्रकृति ने मनुष्य में यह भाव क्यों भर दिया है कि जब वह अपने आश्रित को किसी की सहानुभूति पाते हुए देखता है तो उसके हृदय में अत्याचार की वासना और भी प्रबल हो उठती है! वह बोली—"सुनती है, मुझे दे टोपी। बहू-बेटी के हाथ में पराए मर्द-मानस की चीज़ अच्छी नहीं लगती।"

उसने मेरे हाथ से टोपी छीन ली। वह एक साधारण बात थी। परन्तु मुझे उससे दुःख हुआ। क्या उस टोपी से मुझे कुछ अपनापन हो गया था, उस समय इसका उत्तर मेरे पास न था। नवयुवक ने लाकर टिकट लेकर वह सास के हाथ में दे दीं और अपनी टोपी लेकर वह

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

दिया। मैं लम्बा घूँघट काढ़े हुए थी। उसमें से मैंने उसकी ओर एक बार देख लिया। सास अपनी पराजय समझ कर उस पर क्रोधित हो रही थीं, अतः उन्होंने धन्यवाद देना भी उचित न समझा।

जब टिकट लेने में इतनी कठिनाई उठानी पड़ी थी तो फिर गाड़ी में बैठना किस प्रकार सरल हो सकता था? गाड़ियों में मनुष्य भेड़-बकरी की भाँति भरे हुए थे। वैसे तो लोग हिन्दू सभ्यता की बड़ी डींग मारते हैं, परन्तु उस सभ्यता से स्त्रियाँ तो बिलकुल ही परे हैं। उन लम्बी-लम्बी चोटी रखानेवालों को, जो गङ्गा के तट पर धर्म का सौदा करने जा रहे थे, अबला स्त्रियों की सहायता का विचार कैसे हो सकता था? जिधर हम जाते, उधर ही लोग "आगे जा, यहाँ जगह कहाँ से आई?" कह कर हमें कुत्ते-बिल्लियों की भाँति भगा देते थे। सास निहोरे करतीं, हाथ जोड़तीं, कहतीं—"अरे भैया, हम गरीबिनी खड़ी ही रहेंगी?" परन्तु कौन सुनता था। मैं घूँघट अभी तक काढ़े हुए थी। मुख खोलना सास के शिर में तेल की कड़ाई खौलाना था। न मुख से शब्द निकालने का ही मुझे अधिकार था। अतः मैं बिना कुछ किए अथवा सोचे, सास के पीछे-पीछे चल रही थी। अन्त में एक स्थान पर बड़ी प्रार्थनाएँ करने पर कुछ पुरुषों ने सास को बन्द द्वार की खिड़की में से भीतर खींचना स्वीकार किया। मैं अभी बाहर ही खड़ी थी कि भीड़ का एक रेला आया। मैं सास से बिछुड़ गई। मुझे यह भी पता न था कि सास किस डब्बे में चढ़ी थीं। मैं व्याकुल होकर इधर-उधर भीड़ में घूमने लगी। परन्तु पर्दा अभी मुख पर पड़ा था। हाय रे! हम हिन्दू स्त्रियों की दशा! नेत्र है, परन्तु देख नहीं सकतीं! मुख में जिह्वा है, पर बोल नहीं सकतीं! कभी समय आएगा जब हिन्दू पुरुषों को स्त्रियों को इस प्रकार गई-बीती बना देने के लिए दण्ड भोगना पड़ेगा। कभी स्त्रीत्व की आत्मा जगेगी और जब उसके अन्दर स्वाभिमान की ज्वाला प्रज्वलित हो जायगी तो पुरुषों की यह निरङ्कुशता उसमें तृण की भाँति भस्म हो जायगी।

कुछ देर तक मैं इसी प्रकार घूमती रही। न मुझे सास का पता लगा और न शायद मैं उन्हें ही दिखाई दी। इतने ही में गाड़ी ने सीटी दी। मैं हक्का-बक्का हो-कर इधर-उधर देखने लगी। जब कुछ न सूझा तो अपने सामने वाले डब्बे में चढ़ने के लिए बढ़ी। वह था दूसरा दर्जा। मेरे खिड़की से हाथ लगाते ही भीतर से लोग चिल्ला उठे—"यहाँ कहाँ घुसी आती है? सैकिण्ड क्लास है, दीखता नहीं?" मैंने भयभीत होकर खिड़की से हाथ हटा लिया। घबराहट के कारण मेरे आँसू निकल आए। इतने ही में मेरे कानों में वही परिचित शब्द पड़ा—"हट जाओ खिड़की के पास से, आने दो उसको अन्दर!" युवक के इतना कहते ही सब चुप हो गए। उसने खिड़की खोल कर मुझे भीतर खींचा और अपने पास एक कोने में कुछ स्थान निकाल कर मुझे बिठा लिया। मेरी घबराहट दूर हो गई। उसके पास होने से ही मुझे एक प्रकार का सन्तोष-सा हो गया। गाड़ी चल दी।

२

गाड़ी के चलते ही डब्बे में शान्ति होने लगी। जो खड़े रहे थे, उन्होंने बैठे हुओं को सरका-सरका कर अपने बैठने के लिए स्थान निकाल लिया। जिनके पास तीसरे दर्जे के टिकट थे, उन्होंने अपना डेरा फ़र्श पर लगाया। जब सब बैठ गए तो कुछ तीसरे दर्जे वाली स्त्रियों ने गङ्गा जी के गीत गाना प्रारम्भ कर दिया। कुछ इन गीतों को ध्यान से सुनने लगे, कुछ आपस में बातें करते हुए हँसी उड़ाने लगे। हमारी ओर किसी का अधिक ध्यान न था, क्योंकि, शायद, लोगों ने मुझे युवक के घर की ही स्त्री समझ लिया था। जब इस प्रकार सब किसी न किसी काम में लगे हुए थे, युवक ने मुझसे वार्तालाप करना प्रारम्भ किया—"अब तो घबराहट नहीं है?"

"नहीं।" मैं घूँघट में से ही धीरे से बोली।

"तुम्हारी सास बड़ी अत्याचारिणी दीखती है। देखो न, स्वयं तो गाड़ी में बैठ गईं और तुम्हें भटकने के लिए छोड़ दिया! हिन्दू घरों की बहुओं का भाग्य सचमुच बड़ा खोटा है! अगर तुम बुरा न मानो तो मैं एक बात पूछना चाहता हूँ, उत्तर दोगी?"

"अवश्य।" मैंने बहुत ही धीरे से कहा। शायद युवक को कुछ सुनाई न दिया। अतः वह हँस कर कहने लगा—"क्षमा करना, लेकिन तुमने जो कुछ कहा वह तो तुम्हारे घूँघट ने ही पी लिया। क्या इतना लम्बा घूँघट

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

मारे बिना तुम्हारा काम नहीं चल सकता ? मुझे तुम अपना हितैषी समझो।"

मैंने अपना घूँघट कुछ ऊँचा कर लिया।

"क्या तुम्हारे पति.....?"—युवक ने सङ्कोच के साथ पूछा।

"पति का देहान्त हो गया।"

"ओह, भगवान ! तो क्या तुम विधवा हो ?"

"जी हाँ।"

"कितने दिन हुए ?"

"विवाह के दो मास पश्चात् ही। इस बात को चार वर्ष हो गए।"

"ब्राह्मणी हो ?"

"वैश्य, अग्रवाल।"

"अग्रवाल ?" उसने उत्सुकता से पूछा।

"हाँ, हाँ, क्यों, आप क्यों चौंके ?"

"मैं भी अग्रवाल हूँ, इसीलिए। मैं जात-पाँत का इतना भेद-भाव नहीं मानता, फिर भी संस्कार तो नहीं मिटते। अपनी बिरादरी का नाम कुछ अपनापन पैदा कर ही देता है।"

"आप भी अलीगढ़ से ही आ रहे हैं ?"

"हाँ, ऊपरकोट में हमारा मकान है।"

"मैं मानिक-चौक में रहती हूँ।"

"तुम्हारा नाम क्या है ?"

"फूल।"

"हिन्दी पढ़ी हो ?"

"हाँ।"

उसने अपने हाथ की पुस्तक को मेरी ओर कर दिया। उस पर उसका नाम लिखा था।

"इसे पढ़ो।"

मैंने पढ़ा—"मुरारीलाल गुप्त।"

"यह मेरा नाम है।"

"मुरारीलाल"—यह नाम तो मैंने कहीं सुना था। हाँ, ठीक है, एक दिन सास-श्वसुर इसी नाम के विषय में बातें कर रहे थे कि इस लड़के का दिमाग़ बिगड़ गया है। बी० ए० पास करने से पहले विवाह ही नहीं करना चाहता। मैं बोली—"क्या आप ही के विषय में बिरादरी में चर्चा हो रही थी कि आप किसी से विवाह की बात ही नहीं करना चाहते ?"

"हाँ, पर तुम्हें यह सब कैसे मालूम हुआ ?"

"बाहर की बातें कभी-कभी घरों की चहारदीवारी तक भी पहुँच जाती हैं।"

"बात यह है कि मैं आर्य-समाजी हो गया हूँ। मेरे चचा भी नौजवान हैं, परन्तु वे कट्टर सनातनी हैं। उन्हीं के रुपए से मेरा पालन-पोषण हो रहा है। विवाह आदि के ऊपर हममें झगड़ा होता रहता है, वही बात विवाह में भी फैल जाती है।"

"आप आर्य-समाजी हैं तो फिर गङ्गा-स्नान को क्यों जा रहे हैं ?"

"मैं पुण्य लूटने नहीं जा रहा हूँ। हमारी सेवा-समिति वहाँ जा रही है, उसीके साथ मैं जा रहा हूँ।" वह हँस कर बोला। मैं मन ही मन उसके इन भावों की सराहना करने लगी। परन्तु मुझे उसके विषय में अधिक सोचने का अधिकार कहाँ था ? मेरे मन में केवल एक विचार आया था—"वह स्त्री कितनी भाग्यशालिनी होगी, जिसे इसकी सहधर्मिणी होने का अवसर प्राप्त होगा !"

मुझे चुप देख कर वह बोला—"तुम क्या सोच रही हो ? क्या मेरा आर्य-समाजी होना तुम्हें अच्छा नहीं लगता ? शायद तुम तो कट्टर सनातनी होगी।"

"नहीं, मुझे आपकी बातों से प्रसन्नता ही होती है। मैं आर्य-समाज और सनातन-धर्म की बातें तो नहीं जानती ; हाँ इतना जानती हूँ कि मेरा धर्म सोना-उठना, खाना-पीना और काम में लगे रहना है। इसके अतिरिक्त न और कुछ मेरे जानने के लिए है और न मुझे जानने का अधिकार ही है।"

"अभागिनी फूल !" कह कर उसने वायु में एक दबी हुई निःश्वास छोड़ दी।

गाड़ी अतरौली स्टेशन पर खड़ी हुई। भीड़ में मनुष्य एक-दूसरे को कुचले जा रहे थे। मुरारी बोला—"देखती हो न फूल ! सारा हिन्दू-समाज स्वर्ग के लिए पागल हो रहा है ! कितना सस्ता स्वर्ग है ! रेल में फिर भी दो पैसे मील लगता है, परन्तु स्वर्ग गङ्गा की एक डुबकी में मिलता है !"

"परन्तु मैं स्वर्ग लूटने नहीं जा रही हूँ। जिसे पुण्य पर सुख नहीं, उसे स्वर्ग में क्या सुख मिलेगा ?"

"तो फिर राजघाट किस लिए जा रही हो ?"

"यह तो सास को स्वर्ग पहुँचाने को है।" मैं हँसी

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

लाहौर-षड्यन्त्र केस के कुछ अभिनेता

श्री० सुखदेव

श्री० राजगुरु

श्री० महावीर सिंह

श्री० गयाप्रसाद

श्री० विजयकुमार सिंह

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

लाहौर-षड्यन्त्र केस के कुछ अभिनेता

श्री० कमलनाथ तिवारी

श्री० प्रेमदत्त

श्री० यतीन्द्रनाथ सान्याल

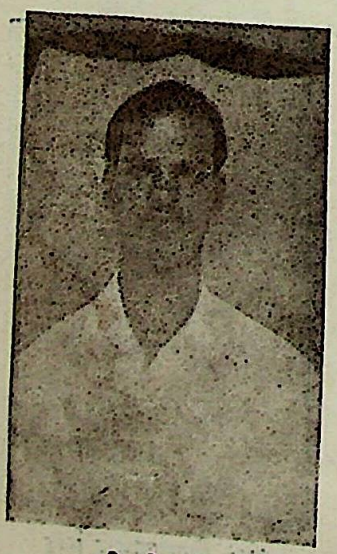

श्री० देसराज

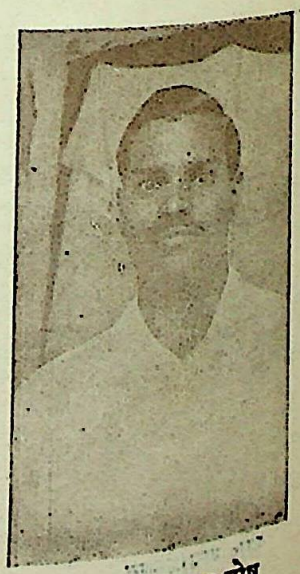

श्री० अजयकुमार घोष

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

कर बोली। वह भी ख़ूब हँसा और हँसते-हँसते बोला—"यह तुमने एक ही कही। गङ्गा पर पहुँचने दो। तुम्हारी बुढ़िया को ज़रा गहरा स्वर्ग दिलवाएँगे। हाँ, तुमने कुछ कलेवा तो किया ही न होगा। पोटली तो बुढ़िया के पास है। कुछ कलाकन्द ले लूँ?"

"आप अपने लिए ले लीजिए। मैं तो खाऊँगी नहीं।"

"क्या पाप चढ़ जायगा? परन्तु वह तो गङ्गा में धो आना!" वह हँस कर बोला।

"नहीं, पाप तो नहीं, परन्तु मैं दूसरे की चीज़ किस प्रकार.....?"

"ओह हो! यह तो मैं भूल ही गया था। हमारे समाज में एक स्त्री और पुरुष में सच्ची मित्रता तो हो ही नहीं सकती। फिर भी, बिरादरी के नाते तो मैं तुम्हें यह निमन्त्रण दे ही सकता हूँ। क्या अब भी तुम मुझे बिलकुल ही ग़ैर समझती हो?"

"यदि आप बुरा मानते हैं तो मैं खा लूँगी।"

* * *

जब डिनाई का स्टेशन निकल गया तो युवक मुझसे बोला—"समय कितना शीघ्र व्यतीत होता है फूल!"

"मेरे जीवन में तो समय कभी इतना शीघ्र नहीं व्यतीत हुआ, जितना आज। परन्तु अब क्या? फिर वही दिनचर्या, वही अत्याचार, वही नीरस जीवन। दिन के बाद दिन, सप्ताह के बाद सप्ताह, मास के बाद मास, वर्ष के बाद वर्ष; महीनों, वर्षों, सारे जीवन भर वही बात, अनुल्लङ्घनीय, अपरिवर्तनीय। इसी का नाम वैधव्य है।"

"तो क्या फिर न मिलोगी?"

"आप दयालु हैं, सहृदय हैं, मेरे साथ सहानुभूति दिखा रहे हैं, यह मेरे बड़े सौभाग्य की बात है, परन्तु.....।"

'परन्तु क्या?'

"कुछ नहीं। उन सब बातों से क्या लाभ है? राजघाट कब पहुँचेंगे?"

"पाँच मिनट की देर है।"

मैं चुप रही। वह भी चुप रहा। जब हमारा स्टेशन कुछ दूर रह गया तो वह कुछ हिचकिचाहट दिखाता हुआ बोला—"बोलो फूल! क्या फिर मिलोगी?"

"नहीं।" मैंने धड़कते हुए हृदय को थाम कर कहा।

"नहीं?"

"आप नहीं समझते या नहीं समझना चाहते। एक हिन्दू विधवा को पराए पुरुष से मिलने का अधिकार कहाँ है? मैं यदि चाहूँ भी तो क्या सास मुझे आज्ञा दे सकती हैं? क्या बिरादरी इस बात को जान कर चुप रह सकती है? यदि लोग देखेंगे तो क्या कहेंगे? मैं भी बदनाम हूँगी, आप भी बदनाम होंगे। मेरा क्या है, जिसकी अधिक चिन्ता हो, परन्तु आप? आप नवयुवक हैं। आपके सामने सारा जीवन पड़ा है, जो बिरादरी में ही काटना है। नहीं, मैं नहीं मिलूँगी।"

क्या मेरे हृदय में उसके पुनर्दर्शन की लालसा न थी? सारे जीवन में जिस एक पुरुष की वाणी में माधुर्य पाया हो, हृदय में भावुकता पाई हो, नेत्रों में सहानुभूति पाई हो, जिसने दो घण्टे वार्तालाप करके जीवन की सुप्त वास्तविकताओं को जगा दिया हो, उसको फिर देखने की इच्छा किसे न होगी? मेरा हृदय दलित था, परन्तु था तो वह हृदय। मेरी भावुकता मृतप्राय थी, परन्तु थी तो वह भावुकता। मैं विधवा थी, परन्तु मेरा शरीर तो हाड़-मांस का शरीर था। फिर मैं उस आशा-स्रोत से, उस उमङ्गों के केन्द्र से, बिलकुल ही विमुख कैसे रह सकती थी? क्या ऐसा करने में मैं पतन की ओर जा रही थी? विधवा होकर एक पर-पुरुष के लिए सोचने में अधर्म कर रही थी? कह लो। धर्म तो हिन्दू समाज के पुरुषों तथा विवाहिता स्त्रियों के हिस्से में पड़ा है। क्योंकि वे अपने पापों को छिपा सकते हैं। यदि वे भी इस आयु में वैधव्य-यन्त्रणा से छटपटाते तो उन्हें धर्म और अधर्म का रहस्य प्रतीत होता।

मेरी उस भावावलि को उसने तोड़ा। वह बोला। स्वर में एक वेदना का भाव भरा था। "तुम सच कहती हो फूल! तुम अब एक अभागिनी बालिका हो?" उसने कहा।

"अब ही क्या, भाग्य लेकर कब आई थी? जो कुछ भाग्य था, वह तो उसी दिन फूट गया, जिस दिन हिन्दू समाज में उत्पन्न हुई थी।"

"परन्तु अब समाज की वह दशा नहीं है। पूरा समाज नहीं तो उसका एक अङ्ग तुम जैसी अभागिनी बालिकाओं को सुखी जीवन की ओर ले जाने का प्रयत्न अवश्य कर रहा है। इसीलिए मैं तुमसे फिर मिलना

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

चाहता हूँ। मेरी इच्छा है कि तुम इस योग्य हो जाओ कि अपने भाग्य का सञ्चालन स्वयं कर सको। बोलो फूल! राजघाट-गङ्गा में एक बार मिलने दोगी?"

"यदि आप मिलेंगे तो रोक थोड़ा ही लूँगी?"

गाड़ी स्टेशन पर खड़ी हुई। 'गङ्गा मैया की जै, भगवती भागीरथी की जै, बोल श्रीराधे!' आदि से आकाश गूँजने लगा। लोग भेड़-बकरी की भाँति इधर-उधर भाग रहे थे। किसी का लड़का खो गया था, किसी की पर्दे वाली स्त्री नहीं मिल रही थी, किसी की पूड़ी-कचौड़ी की पोटली का पता न था।

गाड़ी से उतर कर मुरारी बोला—"तुम ज़रा इधर ही खड़ी रहो, मैं तुम्हारी सास को थोड़ा तङ्ग करूँगा।"

उसने सास को खोज कर पूछा—"कह बुढ़िया! राज़ी-ख़ुशी चली आई न?"

सास ने उसे देखते ही रोना मचा दिया—"ऐ भैया! तैने कहीं बहू देखी थी?"

"बहू? क्यों, क्या वह तेरे साथ नहीं है?"

"नहीं तो। न जानै अलीगढ़ रह गई क्या! अब मैं कैसे खोज करूँ?"

"अब बातें क्यों बना रही है? बता उसे कहाँ मार-पीट कर छोड़ दिया?"

सास सिटपिटा कर कहने लगीं—"भैया! मुझसे चाहै जैसी किसम लै ले। मैं गङ्गा जी के किनारे जो झूँठ बोलूँ तौ कोढ़िन बनूँ।"

"अच्छा, देख, मैं पुलिस से कह कर पता लगवाता हूँ। जो मिल जाय तो क्या देगी?"

"गङ्गा मैया तेरा भला करेंगी!"

"गङ्गा मैया तो भला करेंगी, तू भी कुछ खिलाएगी? इस पोटरी में क्या लाई है?"—वह यह कह कर पोटली को छूने लगा। त्योंही सास ने पोटली को एक ओर हटा कर कहा—"इसमें खाने-पीने की चीज़ें हैं। तू कौन जाति है?"

"कायस्थ!"

"कायथ? तो क्या मैं अपना खाना कायथ को छूने दूँगी? कायथ तो आधा मुसलमान होता है!"

"पर गङ्गा जी पर तो सब शुद्ध हो जाते हैं।"

"सो नहीं। मैं अपने हाथ से निकाल कर दे दूँगी।"

"अच्छा।"

वह कुछ देर के लिए इधर-उधर घूमने निकल गया। फिर मुझे लेकर सास के पास पहुँचा और कहने लगा—ले, तेरी बहू को तलाश कर लाया हूँ। इसे अब मत खोने देना और इसे डाँटना मत।

"नहीं भैया! डाटूँगी क्यों? मेरेतो पिरान से प्यारी है। कुछ लड्डू खायगा?"

"अब गङ्गा जी के किनारे!"

स्टेशन लगभग ख़ाली हो गया था। उसने हम दोनों को एक बैलगाड़ी में बिठा दिया। गाड़ी चली, सास 'गङ्गा मैया की जै' बोलीं। उसने कुछ कहा नहीं, परन्तु उसकी आँखें चुप न थीं। वे मेरे समझने लायक़ बहुत कुछ कह रही थीं। मैंने भी घूँघट में से अपनी आँखें उसकी ओर फिराईं। उन्होंने कुछ कहा या नहीं, कह नहीं सकता।

३

स्टेशन से हम लोग चले तो सास मुरारी की बड़ी प्रशंसा करने लगीं। बोलीं—"कैसा अच्छा लड़का है! हर घड़ी हँसता रहता है। स्टेशन पर पूरी-कचौरी माँगने लगा। मेरे तो भाग फूट गए बहू! नहीं तो मेरा कुन्नू भी ऐसा ही होता।"

"तो अम्माँ! इन्हीं को अपना लड़का क्यों नहीं बना लेती हो?" मैंने कहा।

"इसे अपना लड़का? कायथ के जाए को अपना लड़का बना लूँ? धरम भिरिश्ट करूँ? तुमने कितनी बार बताया है कि कायथ निरे मुसल्ला होते हैं!"

"फिर हैं तो वे हिन्दू ही। अम्माँ! बेचारे कितने भले-मानस हैं! मुझे भीड़ में गाड़ी में बिठाया और तुम्हारे पास पहुँचा दिया। सेवा-समिति के कप्तान हैं।"

स्वयं तो वे मुरारी की प्रशंसा कर रही थीं, परन्तु जब मैं कुछ प्रशंसा करने लगी तो जल-भुन कर कहने लगीं—"सेवा-सम्मती का कप्तान होय चाहे लफ़रवट, है लफङ्गा। जरा सी बात पर मुझे घुड़की दे दी, मानो वही दरोगा जी हैं। कहै—'थाने में रपट कर दूँगा।' तू बहू! बच कर रहना। मर्द बच्चा है, न जाने क्या कर बैठे।"

गङ्गा के किनारे बाज़ार लगा था। चारों ओर से गन्ध आ रही थी। हलवाइयों के थालों पर आदमी गिरे पड़े थे। कच्ची-पक्की, जली-भुनी, तेल की पूरियाँ, कुत्ते के भी न खाने योग्य भाजियाँ, गन्दी मिठाइयाँ बेच-बेच कर हलवाई पैसा लूट रहे थे। गङ्गा के पाट पर कहीं बड़ा

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

वासी पण्डों की कुटियाँ बनी थीं, कहीं साधू-सन्त (?) शारीरिक तपस्या कर रहे थे। अब तक मैंने लम्बा घूँघट मारना नहीं छोड़ा था। परन्तु यहाँ जो कुछ देखा उससे मैं अवाक् रह गई। यहाँ मुख का पर्दा ही क्या, शरीर का पर्दा भी उठ गया था। हम लोगों ने कपड़े एक ओर रख दिए, मैं उनकी रक्षा करती रही और सास स्नान करने चली गईं। वह जब लौट कर आईं तो उन्होंने एक पण्डा बुला कर उसे भोजन कराने बिठा दिया। मैं तब तक स्नान करने चली गई। एक डुबकी लगाई ही थी कि मुझे ऐसा विदित हुआ कि कोई मेरा पैर खींच रहा है। मैं चौंक कर पानी के बाहर शिर निकाल कर खड़ी हो गई। देखती हूँ तो मुरारी खड़ा मुस्करा रहा है। मैं अपने शिर का घूँघट आगे करने लगी, इतने ही में वह बोला—"ढँक लो, सारे शरीर को कम्बलों से लपेट लो। और कपड़े ला दूँ?"

मैंने मुख नहीं ढँका, केवल उधर से दृष्टि दूसरी ओर को फिरा कर बोली—"मैं तो समझी थी कि किसी कछुए ने मेरा पैर पकड़ लिया। तुमने तो मुझे बिलकुल ही डरा दिया।"

"क्या ही अच्छा होता कि मैं कछुआ होता।"

"क्यों?"

"एक तो गङ्गा जी में हर समय रहने से स्वर्ग में बड़ा ऊँचा दर्जा मिलता.....।"

"और?"

"और कुछ भी नहीं।"

"कुछ था तो सही, परन्तु कहोगे काहे को!"

"नहीं मानती हो तो सुनो। तुम जब भी जल में स्नान के लिए आतीं, तुम्हारे चरणों के पास पड़ा रहता।"

"तुम तो पहेलियाँ बुझा रहे हो। मैं क्या समझूँ, इन बातों को।"

वह कुछ उत्तर न दे पाया था कि एक फूल बेचने वाली आ गई और मुरारी से बोली—"बाबू जी! एक पैसा के फूल-बताशे गङ्गा मैया पै चढ़ाइबे कूँ लै लेउ।"

"गङ्गा मैया फूल-बताशे की भूखी थोड़े ही हैं?"

"भूखी तौ नाएँ, परि पुन्न होत्वै।"

"तूने कितना पुन्न लूटा है?"

"अए, तुम तौ गङ्गा जी तेऊ दिल्लगी कत्तौगे।"

मुरारी ने हँस कर उसे एक पैसा दिया और कहा—"देख री, फूल तो हमारे पास है। तू बस बताशे दे जा।" उसने हँस कर कुछ बताशे दिए और बोली—"त्यारी और त्यारी सेठानी की जोड़ी फली फूली रहे।"

जब वह चली गई तो मुरारी बोला—"देखो, तुम मेरी बातें तो नहीं समझती थीं। अब उस फूल वाली की बात तो समझी होगी?"

"क्या?"

"उसने हम दोनों को उठा कर एक कर दिया।"

"यह बातें फिर करना। पहले गङ्गा जी का चढ़ावा तो चढ़ा दो।"

"लेकिन कोई सङ्कल्प पढ़ाने वाला तो है ही नहीं।"

"और तुम कहते थे कि फूल तुम्हारे पास हैं?"

"हाँ हैं।"

"कहाँ?"

"मेरा फूल तुम्हें नहीं दीखता?"

"नहीं।"

उसने मेरी ठुड्डी हिला कर कहा—"यह है मेरा फूल।" मैं चुप रही। वह बोला—"अब देखो, बताशे गङ्गा जी के पास पहुँचते हैं।"

"किस प्रकार?"

"उसके दलाल के द्वारा।"

"दलाल कौन है?"

"देखो।" कह कर उसने बताशे अपने मुख में रख लिए। मैं हँस कर बोली—"और फूल को गङ्गा जी पर किस प्रकार चढ़ाओगे?"

"दलाल के ही द्वारा।"

"वह कैसे?"

"वह ऐसे।" कह कर उसने झट से मेरा हाथ चूम लिया।

४

उस दिन की घटना ने मेरे मानसिक जगत में एक विप्लव उत्पन्न कर दिया था। मुझे ऐसा प्रतीत होता था कि मैं एक ऐसी धारा में हूँ, जिसका बहाव दोनों ओर को है, कभी इधर और कभी उधर। मैं भी उस धारा के बहाव के साथ ही कभी इधर, कभी उधर बह रही हूँ; न इधर ही जा पाती हूँ, न उधर ही। कुछ दिनों पूर्व ही न मेरी कोई कामना थी, न कोई आशा, न कोई सुख-

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

स्वप्न। परन्तु अब बात और ही थी। अब मेरा हृदय ख़ाली न था, उसमें आशा थी; मेरा मन ख़ाली न था, उसमें कामना थी; मेरा मस्तिष्क ख़ाली न था, उसमें सुख-स्वप्न थे। इस थोड़े से समय में ही इतना परिवर्तन! मैंने जब अपने अन्तस्थल को टटोला तो मुझे इसका कारण यही दिखाई दिया कि मेरे जीवन में पहले वह वस्तु न थी, जिसका आश्रय पाकर यह सब बातें पनपतीं। एक हरी बेल बिना किसी सहारे के अपना विस्तार कैसे कर सकती है? मैं किसके भरोसे पर आशाओं तथा कामनाओं को जन्म देती? अब मेरे जीवन में एक सहारा दिखाई दिया था। उसीके चतुर्दिक मेरी आशाएँ, मेरी कामनाएँ आदि केन्द्रस्थ होने लगी थीं। एक ऐसा सहारा पा जाने पर मुझे हर्ष था। मैं उसके नाम पर कुछ अपना अधिकार समझने लगी थी। उसका विचार करने में मुझे आनन्द आता था। उसका स्मरण मेरे शरीर में नवीन शक्ति का सञ्चार कर देता था। झूठ क्यों बोलूँ, मैं मुरारी में लीन हो गई थी; उसे मैं प्रेम करने लगी थी।

मैं मन ही मन प्रसन्न हुई, रात्रि को शय्या पर गई। शय्या कितनी विचित्र वस्तु है, इसका पता कितनों को है? उस रात्रि से पूर्व मैं नित्य शय्या पर सोती थी, परन्तु मुझे उसमें कोई विचित्रता दिखाई न दी थी। आज ज्योंही मैं उस पर लेटी, मेरे नेत्रों के सामने भूत, वर्तमान और भविष्य सब नाचने लगे। मैंने भूत पर विचार किया, उसमें कोई विशेषता न थी। यद्यपि मेरा सर्वस्व भूत ने ही लूटा था, परन्तु मुझे उसका इतना ज्ञान न था। अतः भूत को मैंने अपने मन से शीघ्र ही निकाल दिया। वर्तमान को टटोला तो उसमें हर्ष, आशा, आमोद आदि को पाया। जब वर्तमान के उस सुखकारी चित्र के बाद भविष्य का ध्यान आया तो सामने केवल अन्धकार दिखाई दिया। उस अँधेरे पर्दे पर कल्पना ने कुछ चित्र बनाए और मैं उनकी परीक्षा करने लगी। मुरारी के साथ मैं किधर जा रही हूँ? हम दोनों नहीं मिल सकते, यह निश्चित बात है। फिर मैं इतने वेग से उसकी ओर क्यों दौड़ रही हूँ? यदि हम दोनों का विवाह हो सकता तो कोई बात नहीं थी, परन्तु एक विधवा का विवाह होने की कल्पना मेरे मन में आ ही नहीं सकती थी। वैधव्य और विवाह दोनों में तनिक भी सम्बन्ध हो सकता है, यह हिन्दू धर्म कभी स्वीकार कर ही नहीं सकता। परन्तु मैं मुरारी की ओर विवाह के लिए ही न झुकी थी। यह तो उसका व्यक्तित्व था, जो मुझे उसकी ओर खींचे लिए जा रहा था। कदाचित् वह इसलिए था कि वह एक मात्र व्यक्ति था जिसने मुझसे इतनी सहानुभूति दिखाई थी। या कदाचित् इसलिए था कि मेरे जीवन में वह पहला पुरुष था।

रात्रि भर मैं विचार करती रही। अन्त में मैंने यही निष्कर्ष निकाला कि मैं मुरारी से मिलना छोड़ दूँगी। यह बात मुझे बेचैन बना देगी, मेरे हृदय को मसोस लेगी, परन्तु फिर भी यह करना ही पड़ेगा। दोनों के लाभ के लिए, बिरादरी के लिए, समाज के लिए मुझे दृढ़ होना ही पड़ेगा। मैंने निश्चय कर लिया कि जो बालू के क़िले बनाए थे उन्हें तोड़ डालूँगी; जो आशाओं के पुल बाँधे थे, उन्हें ढहा दूँगी; जो कामनाओं के बाग़ लगाए थे, उन्हें उजाड़ डालूँगी।

जिस दिन हम लोग राजघाट छोड़ रहे थे, उस दिन मैं मुरारी से मिली। मैं अनिच्छा होते हुए भी उसके सामने रूखापन दिखाने लगी। वह यह भाव देख कर बोला—"क्यों फूल! आज यह क्या बात है?"

"बात कुछ नहीं है, मुरारी! परन्तु मैं तुमसे यह कहने आई हूँ कि उस दिन हम दोनों का व्यवहार उचित नहीं था। मैं उस दिन अपने को भूल गई थी। कदाचित् मैं उस समय स्वप्न देख रही थी। परन्तु स्वप्न में और वास्तविक जीवन में बड़ा अन्तर है। जब मैंने वास्तविक जीवन पर ध्यान दिया तो मुझे समझ पड़ा कि हम दोनों ने कैसी मूर्खता कर रहे थे।"

वह कुछ देर तक शिर नीचा किए कुछ सोचता रहा, फिर बड़ी गम्भीरता से बोला—"तुम ठीक कहती हो, फूल! मुझे दुःख है कि मैंने तुम्हारे साथ अन्याय किया। परन्तु मैं तुम्हें यह विश्वास दिलाता हूँ कि मेरे हृदय में कोई कलुषित विचार नहीं था और न है। मैं तुमसे इस कहना चाहता था, परन्तु तुमने सुना नहीं। मैं नहीं जानता क्यों, परन्तु मेरे हृदय में तुमने एक स्थान प्राप्त कर लिया है। मैं घण्टों यही विचार करता रहा हूँ कि तुम्हें उस स्थान पर बिठाने का किसी प्रकार अधिकार पा लूँ। परन्तु तुम उन विचारों से बहुत दूर हो। अब उन बातों से क्या लाभ है? अच्छा, फूल! शायद.....।"

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

"परन्तु क्या तुम्हारा अर्थ यह है कि.....?"

"कि.... कि .....हम दोनों विवाह करके एक हो जाते।"

"विवाह ? मैं तो विधवा हूँ।"

"और तुम समझती हो कि एक विधवा का विवाह नहीं हो सकता ?"

"यह कभी हुआ भी है ? एक विधवा विवाह करे, यह धर्म कभी आज्ञा दे सकता है ? सारी बिरादरी में हम लोगों की बेइज़्ज़ती हो जायगी।"

"यही तो तुम नहीं जानती हो, फूल ! धर्म यह कभी नहीं कहता कि एक विधवा विवाह न करे। जब पुरुष अपने दर्जनों विवाह कर सकता है तो स्त्री को पुनर्विवाह करने का अधिकार क्यों न दिया जाय ? यह सब स्वार्थी पुरुषों की बर्बरता है। यदि तुम शास्त्रों को पढ़ो तो तुम्हें विधवा-विवाह का विधान स्पष्ट रूप में मिलेगा। यह तुम्हारा विचार तुम्हारी परिस्थितियों का फल है। तुम स्वयं सोचो। तुम एक पुरुष को चाहती हो, वह तुम्हें प्यार करता है। तुम पढ़ी-लिखी हो, समझदार हो, अपूर्व सुन्दरी हो, विवाह करके सुखी जीवन व्यतीत कर सकती हो। परन्तु केवल बिरादरी के भय से तुम यह न करके, अनिच्छा का ब्रह्मचर्य अपने ऊपर लादना चाहती हो। शायद तुममें इतना मानसिक बल हो कि तुम इन सब प्रलोभनों के होते हुए भी अटल रह ही आओ। परन्तु वे युवतियाँ जिन्हें इतना मानसिक बल प्राप्त नहीं हुआ, दुश्चरित्र होने के अतिरिक्त और क्या कर सकती हैं ? समाज, बिरादरी, धर्म-शास्त्रों की दुहाई देने वाले पण्डित, सब गुप्त व्यभिचार अथवा आत्म-हनन को सहन कर सकते हैं, परन्तु वे एक युवती विधवा को सुखी, धार्मिक जीवन व्यतीत करने की आज्ञा नहीं दे सकते। फूल ! मैं तुम्हें किसी भी कार्य के लिए विवश नहीं कर सकता। यदि तुम ब्रह्मचर्य का जीवन व्यतीत करना चाहती हो तो प्रसन्नता से करो। मेरी सदिच्छाएँ तुम्हारे साथ होंगी। परन्तु यदि तुम्हारे हृदय में प्रेम की कुछ भी चिनगारी है और तुम उसे बलपूर्वक दमन कर रही हो तो यह तुम्हारा बड़ा अत्याचार है, मेरे ही ऊपर नहीं, अपने ऊपर भी। यदि बिरादरी के कुछ नवयुवक तथा नवयुवतियाँ साहस करके आगे बढ़ें, तो बिरादरी उनके सम्मुख अवश्य ही झुकेगी। परन्तु.....।"

मैं उस समय अपनी चिन्तन-शक्ति को खो चुकी थी। मुझसे केवल इतना कहा गया—"मुरारी ! यह मुझसे न हो सकेगा। तुम मेरे लिए क्या हो, यह तुम जानते हो। परन्तु तुम जो कहते हो, वह करने का मुझमें साहस नहीं है। ओह, मुरारी ! बस अधिक न कहो। मेरी सहन-शक्ति का बाँध टूट जायगा। मुझे जाने दो, कष्ट सहने के लिए, स्वप्नों और निराशाओं का जीवन व्यतीत करने के लिए। मेरे भाग्य में और कुछ नहीं है।"

"जाओ फूल ! परन्तु याद रक्खो कि मुरारी सदा तुम्हारी सहायता के लिए तैयार रहेगा।"

"नहीं, नहीं, मुरारी ! मैं चाहती हूँ कि तुम मुझे बिलकुल भूल जाओ। प्रतिज्ञा करो कि तुम मुझसे कभी नहीं मिलोगे।"

"प्रतिज्ञा ? फूल !"

"हाँ, मुरारी !"

"अच्छा, फूल ! मैं प्रतिज्ञा करता हूँ। परन्तु यदि कभी तुम्हें अपना विचार बदलने की आवश्यकता पड़े तो मुझे लिखना।"

"शायद ऐसा अवसर न आवे।" मैंने दृढ़ता से कहा।

"तो यह अन्तिम विदा है ? क्या एक बार अन्तिम बार तुम्हारा हाथ ....."

"नहीं, मुरारी !"

वह चला गया, गङ्गा के किनारे से, परन्तु मेरे नेत्रों से नहीं, मेरे हृदय से नहीं। मेरे नेत्रों में उसकी मूर्त्ति का चित्र खिंच गया था। मेरे हृदय पर उसकी मुद्रा लग गई थी।

५

गङ्गा जी से लौट कर आने के बाद मुझमें बड़ा परिवर्तन हो गया था। जिस प्रकार राजघाट जाने से पूर्व जीवन व्यतीत हो रहा था, उसी प्रकार रहने का मैंने भरसक प्रयत्न किया, परन्तु 'मर्ज़ बढ़ता गया ज्यों-ज्यों दवा की।' मैं मुरारी को भूल न सकी। जितना ही उसे भूलने का उद्योग करती, उतना ही हृदय अधिक मचलता। अब भी मैं उसी प्रकार घर का सारा काम करती। किसी को भी अपनी आन्तरिक पीड़ा का आभास न होने देती। मन बहलाने के लिए घण्टों गीता, रामायण तथा विष्णु-सहस्र नाम पढ़ती। परन्तु कुछ फल नहीं। लोग कहते हैं

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

कि यह पुस्तकें मन के भावों पर विजय प्राप्त करने के लिए अनुपमेय हैं। होंगी। अपने-अपने हृदय की बात है। मेरी यह मानसिक शिथिलता हो, परन्तु मेरे हृदय के भाव गीता से शान्त न हुए। जिसकी आयु संसार में प्रवेश करने की है, उसको संसार से विरक्त होने के लिए विवश करना न्याय-सङ्गत है या नहीं, यह मैं धर्म के व्यवस्थापकों पर छोड़ती हूँ। परन्तु मैं अब मुरारी के शब्दों की सत्यता समझ रही थी। मैं उन घटनाओं पर घण्टों विचार करती। क्या सचमुच हिन्दू-शास्त्र विधवा-विवाह के विरुद्ध हैं या केवल लोकमत ही इसके विरुद्ध है? क्या विधवा का मोक्ष इसी में है कि वह अपने नैसर्गिक भावों को इतना दबाती जाय कि उस दमन में उसकी आत्मा का भी लोप हो जाय? मैंने वास्तव में मुरारी पर बड़ा अत्याचार किया था कि उससे फिर न मिलने तक की प्रतिज्ञा करा ली। यह मेरी क्रूरता थी। और कुछ न होता तो उससे कभी-कभी मिल कर कुछ शान्ति तो हो जाया करती।

जब से विधवा-विवाह का प्रश्न मैंने अपने सम्मुख उपस्थित किया था, तब से मुझे उसके विषय में प्रत्येक बात जानने की जिज्ञासा हो गई थी। उस वर्ष रामलीला का मेला हुआ तो सास बड़े आग्रह से मुझे 'भगवान' के दर्शन करने के लिए ले गईं। मैं इसलिए साथ हो ली कि शायद मुरारी का दर्शन करने को मिल जाय। मुरारी तो मुझे न मिला, परन्तु एक पुस्तकों की छोटी दूकान पर मुझे 'विधवा-विवाह' नामक पुस्तक रक्खी हुई दीख पड़ी। मैंने सास से कहा—"अम्माँ! इनमें से एक पुस्तक ख़रीद लें। तुम्हें कभी-कभी पढ़ कर सुना दिया करूँगी।"

"मुझे नहीं चाहिए तेरी पुस्तक-सुस्तक। इतने पैसे कहाँ हैं?"

"जब पुरोहित जी को बुला कर कथा कहलवाती हो तब भी तो पैसे देने पड़ते हैं। एक बार कोई धार्मिक पुस्तक ले लोगी तो पुरोहित जी का ख़र्च तो बचेगा?"

वह बात उन्हें जँच गई। बोलीं—"अच्छा पुरोतानी! तो 'हनूमान-चालीसा' ख़रीद लो।"

उनसे तो यही कहा कि वह 'हनूमान-चालीसा' था, परन्तु मैंने ख़रीदी 'विधवा-विवाह' की पुस्तक। वहाँ से चले तो स्त्री-आर्य-समाज का उत्सव हो रहा था। मैंने सास से वहाँ जाकर कुछ व्याख्यान सुनने को कहा तो वे नाक-भौं चढ़ा कर बोलीं—"हमारी सात पुस्त में कोई आरिया नहीं हुआ और तू आरियन की सभा में जाना चाहती है? इन सबकी तो मत मारी गई है! मैं बावली हूँ जो इनकी अधरम की बातें सुनूँ?"

मैं चुप रही। यही बहुत था कि उन्होंने पुस्तक ख़रीदने के लिए पैसे दे दिए थे। घर आकर मैंने वह पुस्तक ध्यान से पढ़ी। उसमें वही बातें थीं जो मुरारी ने मुझसे कही थीं। मुझे यह निश्चय हो गया कि शास्त्रों की दुहाई केवल स्वार्थ-साधन के लिए दी जाती है। क्या मैं ब्रह्मचारिणी का जीवन समाज के विषमय वातावरण में निभा सकूँगी? उन विधवाओं की कहानियाँ, जो औरों के साथ घरों से भाग गई थीं, मुझे याद आईं। अवसर पड़ने पर जब मैंने किसी समवयस्क विधवा से वार्तालाप किया तो मुझे यही विदित हुआ कि वे विवाह करने के लिए बिलकुल तैयार थीं। परन्तु समाज की आज्ञा न होने से वे ज़बरदस्ती से 'पवित्र जीवन' व्यतीत कर रही थीं। जब विवाह धर्म के प्रतिकूल नहीं है और मुझे अपनी ही बिरादरी का एक ऐसा नवयुवक मिल रहा है, जिसे मैं प्राणों से भी प्यारा समझती हूँ तो क्यों मैं विवाह क्यों न करूँ?

मैं मुरारी से फिर मिली। एक बार, दो बार, अनेक बार। मिलना कोई सरल बात न थी। कभी तो महीने पर सप्ताह बिना मिले व्यतीत हो जाते थे। फिर कभी मास मेरे जीवन के सब से अधिक सुखमय मास थे। मिलन जितना ही मधुर लगता था, उतने ही मधुर उस मिलन की प्रतीक्षा। मुरारी मेरे लिए मरता था। हममें यह निर्णय हो गया था कि कुछ महीनों बाद, जब मुरारी बी० ए० पास कर लेगा, तब हम इस भेद को सब पर खोलेंगे और फिर हमारा विवाह हो जायगा। इस बीच में, संसार के बिना जाने, हम पति-पत्नी के ही समान हो गए थे। मैं मुरारी में इतनी अनुरक्त हो गई थी कि मैंने अपना 'सर्वस्व' तक उसके समर्पण कर दिया।

६

सुख के दिन अधिक काल तक नहीं रहते। कई मास व्यतीत होने पर मुझे यह प्रतीत हो गया कि मेरे पेट में कुछ है। इस बात का हम लोगों को कभी विचार तक नहीं हुआ था। मुझे इससे बड़ी चिन्ता हो गई। मुरारी की परीक्षा में कई महीने थे। बात किस प्रकार

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

छिपी रह सकेगी? बहुत दिनों तक मैं घर वालों से यह बात छिपाने का प्रयत्न करती रही। परन्तु अन्त में सास को कुछ सन्देह होने लगा। मेरे व्यवहार में भी परिवर्त्तन हो गया था। सास का अत्याचार मैं अब सहन नहीं कर सकती थी। कुछ समय के बाद ही स्वतन्त्र होने की आशा से मैं निडर हो गई थी। सास को मैं कभी-कभी उत्तर भी दे दिया करती थी। उन्हें आश्चर्य तो होता था, परन्तु उनकी कर्कशता कुछ-कुछ कम अवश्य हो गई थी, वह शायद इस विचार से कि मैं अब यह समझने लग गई थी कि उनका व्यवहार अन्यायपूर्ण था और उसे मैं अधिक समय तक सहन न करूँगी।

पुरुषों से बात छिपाई जा सकती है, परन्तु स्त्रियों से कब तक? फिर सास ठहरीं इस बात में उस्ताद! उनकी आयु इन्हीं बातों में व्यतीत हुई थी। कुछ दिन तक तो उन्होंने सन्देह को केवल सन्देह ही समझा। परन्तु जब उन्हें विश्वास हो गया तो एक रात्रि को वह चुपचाप श्वसुर जी से कुछ सलाह करने लगीं। मेरे कान में भनक पड़ गई। मैं समझ गई वे क्या करेंगे। क्या मैं उनसे भिड़ने के लिए तैयार थी? क्यों नहीं? मैंने जो कुछ भी किया था, पाप समझ कर नहीं किया था, छिपाने के लिए नहीं किया था। मैं निर्भय होकर समाज पर सारा रहस्य प्रगट कर सकती थी। मुरारी तो मेरे साथ था, फिर मुझे भय किस बात का था? मैंने उसी रात्रि को एक पत्र मुरारी के नाम लिख दिया—

"मेरे प्राण!

तुम्हारे बिना मैं कितनी व्याकुल रहती हूँ, यह तुम जानते हो। कई मास हो गए हैं, तुम्हारे दर्शन नहीं हुए। मैं यह सब इसलिए सहन कर रही थी कि तुम परीक्षा के लिए बिना किसी विघ्न के तैयारी कर सको। मैं तुम्हें उस समय तक लिखना भी नहीं चाहती थी, जब तक कि तुम्हारा परीक्षा-फल विदित न हो जाय। परन्तु अब कई घटनाएँ ऐसी हो गई हैं कि तुम्हें बिना कष्ट दिए काम नहीं चल सकता।

तुम यह जानते ही हो, मेरे हृदय-देव, कि इस घर में मैं बन्दी की भाँति पड़ी हूँ। यदि मैं गर्भवती न होती तो कोई बात न थी, परन्तु अब तो बात उतनी सरल नहीं है। शायद यह हमारी मूर्खता थी, शायद नहीं। परन्तु जो हो गया, उस पर आँसू बहाने से कोई लाभ नहीं। संसार की दृष्टि में कदाचित हम पापी हों। परन्तु परमेश्वर की दृष्टि में तो हम स्त्री-पुरुष हैं। हम उन युवक-युवतियों से तो अच्छे हैं, जो न तो समाज के नियमों से ही बद्ध हैं, न परमेश्वर के नियमों से ही, और फिर भी यह कृत्य करते हैं। वे समाज से भागते हैं। परन्तु हम तो समाज के नियमों की अपने कृत्य पर छाप लगवाना चाहते हैं।

मेरे नाथ, यहाँ वालों को सब बातों का पता लग गया है। अभी उन्होंने मुझसे कुछ कहा नहीं है, परन्तु आज नहीं तो कल चर्चा चलाई ही जायगी। मैं डरती नहीं हूँ। एक दिन घर छोड़ना तो है ही, अभी सही। मुझे आशा है कि तुम भी समाज की बदनामी से न डरोगे और इस बात को प्रत्यक्ष हो जाने दोगे। कदाचित तुम्हें कुछ असुविधा होगी, परन्तु कुछ सप्ताह बाद ही तुम बी० ए० पास हो जाओगे। विवाह तो हमें करना ही है, फिर ऐसी दशा में 'शुभस्य शीघ्रम्' ही ठीक रहेगा। मैं तो उस दिन को देखने के लिए मर रही हूँ, और तुम? तुम क्या फूल को अपने नेत्रों से लगाने के लिए अधीर नहीं हो? तुम अब मुख से 'हाँ' कहने के लिए तैयार नहीं होगे, परन्तु मैं तुम्हारे नेत्रों में सब कुछ पढ़ लूँगी। पुरुष होते ही ऐसे हैं। जब प्रेम का प्रारम्भ होता है तो स्त्री को स्वर्ग की देवी बना देते हैं, उसकी प्रशंसा के लिए सारे संसार की उपमाओं को चुरा लाते हैं, उसकी एक मुस्कान पर सारे संसार को बलिदान करने की बातें करते हैं; परन्तु जब प्रेम परिपक्व हो जाता है तो स्वयं कठोर बन जाते हैं और बेचारी प्रेमिका को उलटी प्रार्थना करनी पड़ती है। परन्तु मेरे सर्वस्व! मुझे तो प्रार्थना करने में ही आनन्द मिलता है। तुम्हारे चरणों की सेवा करने की अधिकारिणी बन सकूँ, इसके अतिरिक्त और मैं कुछ नहीं चाहती। मुझे धन की चिन्ता नहीं है, तुमसे बड़ा धन और क्या मिलेगा? मुझे सुसज्जित प्रासादों की चाह नहीं है, तुम्हारे वक्षस्थल से अधिक सुसज्जित प्रासाद संसार में कहाँ मिलेगा? मैं संसार का कोई भोग नहीं चाहती, मैं चाहती हूँ तुम्हें, तुम्हें, केवल तुम्हें! और तुम मेरे हो ही, हो न?

कल सन्ध्या को 'नादिया वाली बग़ीची' में तुम आना। मैं वहीं मिलूँगी। फिर हम अपना भावी कार्य-क्रम सोचेंगे। मैंने अभी तक तुम्हारा नाम प्रगट नहीं

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

होने दिया और न विवाह तक होने दूँगी। तुम्हें देखे बिना अभी ३६ घण्टे व्यतीत करने पड़ेंगे। तुम्हें उन घण्टों के लिए मेरा छत्तीस सौ बार प्यार!

सदा तुम्हारी—फूल"

यह पत्र भेज देने पर मैं सास का सामना करने की प्रतीक्षा करने लगी। मुझे विश्वास था कि मुरारी बग़ीची में मुझसे मिलने अवश्य आएगा, अतः जब दूसरे दिन सास ने इस विषय पर वार्तालाप करना प्रारम्भ किया तो मैं बड़ी दृढ़ता से मोरचा लेने लगी। क्रोध में भरी हुई वे बोलीं—"क्यों री, यह क्या है? यह छिप-छिपा के तू क्या करती रही है?"

"जो कुछ भी मैं करती रही हूँ, उसे छिपाना नहीं चाहती। मैं पेट से हूँ।"

"हाँ, अब बात छिप नहीं सकती तो तू छिपाएगी कैसे? पर किससे यह काला मुँह कराया है?"

"यह सब तुम्हें दो-चार दिन में मालूम पड़ जायगा।"

"तुझे ऐसा करते शरम न आई? ख़लक़ख़्वार! जो काम कभी इस कुल में नहीं हुआ, वह तैंने करके सारे कुल की मर्जादा में कालिख लगा दी।"

"तुम्हें अपने कुल की ऐसी चिन्ता है और मेरे भविष्य की कुछ भी चिन्ता नहीं? तुम बुढ़ापे में भी श्रृङ्गार करो, सुन्दर से सुन्दर वस्त्र-आभूषण पहनो, संसार के सारे भोग भोगो, और मैं युवती होते हुए भी एक भिखारिणी की भाँति तुम्हारे घर में पड़ी रहूँ, न किसी से बात करूँ, न किसी से हँसूँ? मैं तुम्हारे कुल की रत्ती भर पर्वाह नहीं करती! तुम्हें दीखे सो तुम करो, मुझे दीखेगा वह मैं करूँगी।"

"अब और कुछ करने की कसर बाक़ी है? अब हरदुआर चल कर रहने के सिवा और क्या हो सकता है?"

"हरदुआर? किस लिए?"

"गिराने के लिए।"

"हत्या करने के लिए? न, मैं ऐसा नहीं कर सकती।'

"तो क्या विधवा होकर लला खिलाने की हौस है?"

"हाँ, है।"

"तो मैं अपने घर में यह न होने दूँगी। लोग क्या कहेंगे? सारी बिरादरी जनम में थूकेगी।"

"तुम्हारे घर में यह नहीं होगा, मैं तुम्हारा घर छोड़ रही हूँ।"

"यार के साथ भागेगी?"

"भागूँगी क्यों? मैंने कोई पाप किया है जो भागूँगी? मैं सबके सामने उससे विवाह करूँगी और गृहस्थ-जीवन बिताऊँगी।"

"हाय राम! इसकी मत तौ न जाने किसने हर ली! घोर कलयुग है न! एक राँड ब्याह करेगी! महारानी के लिए फिर सँड़वा छवेगा, फिर सात फिरकयाँ पड़ेंगी! एक क्यों, रोज़ एक खसम कर और छोड़! परलै (प्रलय) आ गई न! भला तीनों तिल्लोकी में राँड़न के ब्याह सुने हैं? खिस्तान बन जा, धरम पर आग-भूभर डाल दे। हमें क्या ख़बर थी कि तू ऐसी सीरी स्याँपिनि निकलेगी!"

"हाँ, तुम कुछ भी कहो, लेकिन अब मुझे मालूम हुआ कि छिप कर पाप करने से, अपने घर वालों से ही भ्रष्ट होने से और गर्भ गिराने से तुम्हारे कुल में दाग़ नहीं लगता, तुम सब बिरादरी में लम्बी नाक लटकाए फिर सकती हो। परन्तु यदि एक विधवा अपनी ही बिरादरी के एक नवयुवक से विवाह करके धर्म का जीवन व्यतीत करना चाहती है तो वह पाप है, अधर्म है! उस पर बिरादरी बदनामी करेगी, दुनिया हँसेगी। अच्छा है, रक्खो सँभाल कर अपनी इस कुल-मर्यादा को। मैं चली।"

* * *

सन्ध्या हो गई थी। मैं केवल एक चद्दर ओढ़ कर उस घर को सदा के लिए छोड़ बग़ीची की ओर चल दी। अन्धकार हो गया था। उस ओर लोगों का आवागमन बन्द सा हो गया था। एक वृक्ष के नीचे मैंने एक नवयुवक को खड़ा देखा। मैं प्रसन्न हो गई। पास जाकर मैंने धीरे से पुकारा 'मुरारी!' युवक मेरी ओर को बढ़ा। जब वह पास आ गया तो एक साथ मैं चौंक पड़ी। वह मुरारी न था। वह बोला—"तुम्हारा ही नाम फूल है?"

"तुम्हें इससे क्या काम? तुम कौन हो?"

"मैं मुरारी का चचा, गिरधारीलाल हूँ।"

"तुम मुरारी के चचा? तुम यहाँ किस लिए आए?"

"तुमने मुरारी को यहाँ बुलाया था?"

"हाँ! परन्तु तुम्हें यह सब किस प्रकार पता लग गया? मुरारी कहाँ है?"

"मैं तुमसे यही कहने आया हूँ कि मुरारी यहाँ नहीं आएगा।"

"तो क्या आज कोई आवश्यक कार्य लग गया है?"

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

"आज ही क्यों, उसे सदा के लिए आवश्यक कार्य लग गया है।"

"रानी ?"

"वह तुमसे कभी नहीं मिलेगा।"

मेरे होश उड़ गए। मुरारी मुझसे कभी नहीं मिलेगा! यह सत्य हो सकता है? मैं इस बात पर विश्वास न कर सकी। मैं उत्तेजित होकर बोली—"मुझसे कभी नहीं मिलेगा? मेरा मुरारी? तुम असत्य बोल रहे हो। मुझे भुलावा दे रहे हो। मैं तुम पर विश्वास नहीं कर सकती, नहीं कर सकती!"

उसने धीरे से जेब से एक लिफ़ाफ़ा निकाला और मेरे हाथ में देकर कहा—"यदि विश्वास नहीं करती हो तो यह देखो, किसकी हस्त-लिपि है?"

लिफ़ाफ़े पर मेरा नाम लिखा था। वह मुरारी ने अपने ही हाथ से लिखा था, इसमें कोई सन्देह नहीं हो सकता था। अतः मैंने कहा—"मुरारी की।"

"इसमें मुरारी का पत्र है, उसे पढ़ो।"

मैंने पत्र पढ़ा—

"फूल!

तुम्हारा पत्र मिला। तुम मेरी प्रतीक्षा कर रही होगी, परन्तु मुझे दुःख है कि घटना-चक्र ने मुझे न आने के लिए विवश कर दिया है।

तुम्हारा पत्र पाने पर मेरे सम्मुख केवल एक ही मार्ग था, अर्थात अपनी माता और चचा पर इस रहस्य का उद्घाटन कर देना। मैंने उनसे सब बातें कहीं और तुमसे विवाह करने की आज्ञा चाही। परन्तु आज्ञा मिलना तो अलग, मुझे लेने के देने पड़ गए। चचा तो इस बात के घोर विरोधी रहे हैं, परन्तु उनकी मैं इतनी पर्वाह नहीं करता। माता का विचार मुझे अवश्य करना पड़ता है। जब से उन्हें मेरे विचार विदित हुए, उन्होंने भोजन-पानी छोड़ दिया और मर जाने की धमकी दी। अन्त में विवश होकर मुझे यह प्रतिज्ञा करनी पड़ी कि मैं तुमसे विवाह नहीं करूँगा। मैं स्वयं तुमसे मिलने आता, परन्तु एक तो मुझे तुम्हें मुख दिखाने का साहस न हुआ, दूसरे चचा ने मुझ पर विश्वास न किया। तुम मुझे कायर कहोगी, फूल!! हाँ, मैं हूँ। मैं वीरता की तथा साहस की डींग हाँकता रहा हूँ। परन्तु मुझे अब विदित हुआ कि एक कट्टर समाज-सुधारक भी घटनाओं से विवश होकर अपने मार्ग से विचलित हो सकता है।

वास्तव में मैंने तुम्हारे साथ बड़ा अन्याय किया है, फूल! तुम्हें इस दशा को पहुँचाने का मैं अपराधी हूँ। परन्तु चचा ने तुम्हारी सहायता करने का वचन दे दिया है। यह सन्तोष है। आशा है तुम मुझे भूल जाओगी और क्षमा करोगी।

—मुरारी"

पत्र पढ़ कर मेरी जो दशा हुई, यह वही जान सकता है, जिसने मनुष्य-जन्म लेने का इतना भारी दण्ड पाया हो। मुझे ऐसा प्रतीत होने लगा कि मेरी जीवनी शक्ति मेरे शरीर से निकल गई। मैं पृथ्वी पर बैठ गई। क्या यह वही मुरारी है, जिसके साथ मैंने महीनों व्यतीत किए थे? वह मुरारी कितना वीर, साहसी, दयालु तथा मनोरम था! यह मुरारी कितना कायर, डरपोक, क्रूर तथा अवहेलनीय है! जो समाज-सुधार के ऊँचे-ऊँचे विशाल भवन बनावे, उन्हें सुसज्जित करे और फिर घर वालों की एक आह से, एक क्षण में, उन्हें पृथ्वी पर गिरा दे, उससे तो परमात्मा ही हिन्दू समाज को बचाए! यही आजकल के समाज-सुधारकों का नमूना है! यदि यह शिक्षित लोग ऐसे आचार-विचार वाले हैं तो उन अशिक्षितों का रूढ़ियों से चिपटे रहने में क्या दोष है? कम से कम उनमें सत्यता तो है, इन सुधारकों जैसा छल-कपट तो नहीं है। मुरारी से कभी यह आशा हो सकती थी! माता के भोजन न करने से उसकी आत्मा विचलित हो गई और मेरा जीवन जो नष्ट हो गया, उसकी उसे कुछ चिन्ता नहीं! मेरे आँसुओं की, मेरे कष्टों की, इस आने वाले बच्चे की, उसे बिलकुल ही सुध न रही! मैंने सास-श्वसुर छोड़े, घर छोड़ा, सारे शहर की बदनामी लेने की भी परवाह न की, यह सब बातें उसे बिलकुल ही याद न आईं! इन सबके अतिरिक्त उसे मेरे प्रगाढ़ प्रेम का किञ्चिन्मात्र भी विचार न हुआ और सब कुछ सहन कर लूँगी, परन्तु उसके बिना मेरी क्या दशा होगी? यदि मेरे जीवन में वह न आता तो कोई बात न थी। परन्तु उसे पाकर भी खो रही हूँ! हे भगवान! सारी आशाओं का ख़ून हो गया! सारी कामनाएँ उसकी क्रूरता में भस्म हो गईं! सारे स्वप्न छाया की भाँति मिट

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

गए ! किस प्रकार हृदय में एक मन्दिर बनाया था, परन्तु हा ! जिसकी मूर्ति उसमें बिठाना चाहती थी, उसीने उस पर वज्र गिरा दिया ! मैं रोने लगी।

अब तक गिरधारीलाल चुपचाप खड़े थे, परन्तु अब मेरे पास आकर बोले—"मुझे दुःख है, फूलवती ! परन्तु तुम्हीं सोचो कि यह विवाह किस प्रकार हो सकता था ? तुम विधवा हो ; हमारे कुल में अभी तक ऐसा काम कभी नहीं हुआ। मुरारी तो अभी नासमझ है। कुछ आर्यसमाजियों की बातों में आकर उसका दिमाग़ फिर गया है। परन्तु हमारा कर्त्तव्य है कि उससे कोई काम ऐसा न होने दें, जो कुल के नाम पर धब्बा लगावे। फिर उसके विवाह के लिए एक रईस पीछे पड़ रहे हैं, जो उसे डिप्टी-कलक्टर बनवाने का उद्योग कर रहे हैं। तुम उसे भूल जाओ।"

"ठीक है ! तुमने अपने कुल की नाक बचा ली और मुरारी को भी डिप्टी-कलक्टर बना लिया। परन्तु एक निर्दोष बालिका का कुछ भी विचार न किया !"

"तुम्हारा क्या बिगड़ा है ? तुम विधवा हो। जिस प्रकार उससे मिलने के पूर्व जीवन व्यतीत कर रही थी, उसी प्रकार अब भी कर सकती हो।"

मेरे नेत्र लाल हो गए। मैं क्रोध से बोली—"मेरा क्या बिगड़ा है ? तुम्हें बताऊँ मेरा क्या बिगड़ा है ? मैंने सास-ससुर छोड़े, चरित्र-भ्रष्ट हुई, सारे शहर में कल पापिनी के नाम से पुकारी जाऊँगी और जिसको मैंने प्राणों से भी अधिक प्यार किया है उसे तुम छीने ले जा रहे हो, और कहते हो कि मेरा क्या बिगड़ा है ? मैं विधवा हूँ तो क्या मेरा समाज में कोई स्थान नहीं ? विधवा को चाहे जो कोई आकर बिगाड़ दे और फिर एक ओर फेंक कर चला जाय ? वह सबके भोग की सामग्री हो गई ! कैसे यह कुलीन हैं, धर्मात्मा हैं, बिरादरी के पञ्च हैं ! ....."

वह बीच ही में बोले—"सुनो, सुनो, लड़की ! इस प्रकार उत्तेजित न होओ। मुरारी ने जो मूर्खता की है, उसके लिए तुम्हारा मूल्य चुका सकता हूँ।"

"मेरा मूल्य ? मेरे प्रेम का मूल्य तुम पैसों में चुकाओगे ? तुमने मुझे वेश्या समझा है ? तुम मेरे सामने से चले जाओ, अभी चले जाओ ! मैं तुम्हारा मुख नहीं देखना चाहती ; तुम्हारा, मुरारी का, किसी भी पुरुष का। मैं सारी पुरुष-जाति से घृणा करती हूँ।"

७

भविष्य के पर्दे के पीछे क्या छिपा है, यह जान जाती तो यह अनर्थ क्यों होता ? परन्तु भाग्य में तो आपत्तियाँ ही लिखी थीं। वैधव्य, कलङ्क-कालिमा और फिर प्रेम-निराशा ; संसार में जीने की और क्या साध रह गई थी ? सास के पास किस मुख से लौट कर जाती ? और जाती भी तो क्या वे ग्रहण करतीं ? और फिर इस समय तक बिरादरी और मुहल्ले में मेरे निकल जाने की बात फैल ही चुकी होगी। फिर सदा के लिए समाज में एक घृण्य जीव की भाँति रह सकूँगी ? नहीं, यदि यह नहीं तो फिर दूसरा मार्ग है अचल-ताल। उसने न जाने कितनी मुझ-सी अभागिनी युवतियों को शरण दी है। फिर क्या वह मुझे भी शरण न देगा ? वह हिन्दू समाज से तो अधिक दयालु है ही। जिसे समाज में स्थान नहीं मिलता, उसे वह स्थान देता है। निर्धन धनिक, युवती वृद्धा, भङ्गी ब्राह्मण, वह सबका एक समान स्वागत करता है। मैं उसी ओर चल दी।

मरने के लिए जा रही थी, फिर भी मुरारी का ध्यान आ रहा था। हाय ! निष्ठुर ने अन्तिम बार दर्शन भी न दिए ! संसार से विदा होने से पूर्व यदि उसे एक बार देख लेती तो हृदय की आग बुझ जाती।

पक्कीसराय की ओर जो सड़क गई है, उधर अचल-ताल पर बहुत कम मनुष्य जाते हैं। अँधेरी रात साँय-साँय कर रही थी। उस ओर उल्लू बोल रहे थे। इसके अतिरिक्त दो-एक कुत्ते और भौंक रहे थे ; नहीं तो इतना बड़ा नीरव था। मैं अचल की सिढ़ियों पर जा बैठी। जल को देखा और फिर आकाश की ओर देखा। हृदय काँप गया। फिर साहस किया, परन्तु जिस संसार को सदा के लिए छोड़ने जा रही थी, उसे फिर एक बार देख लेने की इच्छा हुई। आकाश की ओर दृष्टि की, वह अपूर्व रजनीपति आज कितना मधुर लगता था ! पृथ्वी पर चारों ओर दृष्टि फिराई, पीछे से सड़क पर के मकानों की खिड़कियाँ दिखाई दे रही थीं। इतने ही में एक मकान से ढोलक तथा गायन के शब्द सुनाई दिए। मैंने ध्यान से सुना, किसी के यहाँ लड़का पैदा हुआ होगा, उसीके गीत गाए जा रहे थे। मैं वहीं बैठ गई। मेरे नेत्रों के सामने मेरे अपने बच्चे के दृश्य आ गए। मैं इसे भूल गई थी। मैं कातर होकर रो पड़ी

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

मेरा हृदय चिल्ला रहा था—"भगवान ! मुझे जीवित रहने की शक्ति दो। अपने लिए नहीं, उस बच्चे के लिए, जो संसार में आना चाहता है। मुझे उसका जीवन लेने का कोई अधिकार नहीं है। मैं मज़दूरी करके निर्वाह कर लूँगी, भूखों रह लूँगी, परन्तु उसके लिए, अपने प्रेमी के एकमात्र चिन्ह को सुरक्षित रखने के लिए, मैं जिऊँगी।"

उस शून्य स्थान से चल कर मैं सड़क पर आई तो एक ओर को एक छोटी सी झोपड़ी दीख पड़ी। मैंने द्वार पर धक्का दिया। एक बुढ़िया ने द्वार खोला।

"मुझे आज रात भर ठहरने दोगी, माई ?"

"तुम कौन हो ?"

"एक दुखिया हूँ, और क्या बताऊँ।"

"हिन्दू हो ?"

"हाँ।"

"लेकिन मैं तो मुसलमान हूँ, बेटी ! मेरे घर में तुम कैसे रहोगी ?"

मैंने कुछ देर विचार किया और फिर बोली—"तुम कोई भी हो, मैं तुम्हारे पास रात गुज़ारूँगी। बोलो, रहने दोगी ? मैं किसी हिन्दू के घर नहीं जाना चाहती।"

बुढ़िया ने मुझे रख लिया। घर में वही अकेली थी। कुछ मेहनत करके काम चलाती थी। वह इतनी दयालु थी कि मैंने जब उससे अपनी कहानी कही, तो वह बोली—"अगर तुम रहना चाहो तो मेरा घर पड़ा है, बेटी ! जब तक बच्चा हो, तुम यहाँ रह सकती हो।"

कुछ दिनों बुढ़िया के साथ रहने पर मुझे अपने ही धर्मवालों से घृणा होने लगी। कोई हिन्दू ऐसा था जो मुझे अपने यहाँ शरण दे देता ? कोई ऐसी संस्था थी जो मेरे बच्चे की रक्षा के लिए तत्पर होती ? इन विचारों से और बुढ़िया की शिक्षा के प्रभाव से कुछ दिनों बाद ही चुपचाप मैं मुसलमान हो गई। फिर मैंने सुना कि मेरे विषय में बिरादरी में यह विख्यात हो गया है कि पेट रह जाने के कारण मैं अचल में डूब कर मर गई। मैंने किसी को अपना पता न चलने दिया। बुढ़िया को सहायता देकर कुछ कमाती और उसी से व्यय चल जाता था। बुढ़िया एक दिन बोली—"बेटी ! तू नौजवान है, किसी के साथ निकाह करके क्यों नहीं बैठ जाती ?"

"नहीं माँ, मैं इसलिए मुसलमान नहीं हुई। मैं सिर्फ़ हिन्दुओं से बदला लेने के लिए मुसलमान हुई हूँ।"

वह चुप हो गई। कुछ दिनों में ही मेरा बच्चा, मेरी आँखों का पुतला, पृथ्वी पर आ गया। लड़का है, यह जब मैंने देखा तो मुझे बड़ी प्रसन्नता हुई। उसकी आकृति बिलकुल मुरारी की सी थी। उसे देख कर मैं मुरारी को याद कर लेती थी। मैं मुसलमान हो गई थी, परन्तु मेरा हृदय तो मुसलमान नहीं हुआ था। हृदय-मन्दिर के केवल भग्नावशेष ही शेष थे, फिर भी ढूँढ़ने पर मेरे देवता की टूटी हुई मूर्ति भी वहाँ मिल सकती थी।

८

सोलह वर्ष व्यतीत हो गए। उन सोलह वर्षों में मैं घर से बाहर बहुत कम गई थी। बुढ़िया ने पड़ोसियों से कह दिया था कि मैं उसकी एक रिश्तेदार हूँ, अतः किसी को किसी प्रकार का सन्देह न हो पाया था। इन दिनों में मेरे सास-श्वसुर का देहान्त हो गया था और मुरारी ने अपना विवाह कर लिया था। कभी-कभी मुरारी के दर्शनों की इच्छा बहुत प्रबल हो जाती थी, परन्तु मैं अपने मन के भावों को दबा जाती। अब वह दूसरे का था। उस पर मेरा क्या अधिकार ? उसने मेरे साथ घोर अन्याय किया था, फिर भी मेरे हृदय से उसकी मङ्गल-कामना की प्रार्थना ही निकलती थी।

दो-चार बार मुझे अपने मुसलमान होने पर बड़ा पश्चात्ताप हुआ। रह-रह कर, मैं घृणा तथा क्षोभ के आवेश में जो कुछ कर बैठी थी, उस पर मुझे ग्लानि होने लगती, परन्तु कोई उपाय उस दशा से निकलने का न था। हिन्दू-धर्म के द्वार तो मेरे लिए सदा को बन्द हो गए थे। यदि फिर हिन्दू होना भी चाहती तो मुझे कौन अङ्गीकार करता ? मेरे बच्चे की क्या दशा होती ? क्या उसे अच्छे हिन्दुओं का सा दर्जा मिलता ? हिन्दू उसे जारज समझ कर उससे उपेक्षा न दिखाते ? मुसलमान रहने पर मेरे बच्चे का मार्ग तो साफ़ था, उसका भविष्य तो अन्धकारमय न था। उसके सामाजिक अधिकारों को कुचलने वाला तो कोई न था ? यही विचार थे, जो मुझे मुसलमान बनाए रहे। मुझ जैसी युवतियों की संख्या कुछ कम नहीं है, जिन्हें हिन्दुओं ने अपनी ही मूर्खता से सदा के लिए खो दिया है।

मेरा सारा प्रेम अब 'अब्दुल' पर केन्द्रस्थ हो गया था। उसे मेरे अतीत जीवन का कुछ पता न था। शायद

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

यह मेरी हिन्दुओं के प्रति घृणा थी कि जिसने अब्दुल के हृदय में हिन्दुओं के प्रति प्रतिहिंसा भर दी थी। वह बहुधा हिन्दू लड़कों को मार-पीट कर घर आता था। मुझे इससे बड़ा दुःख होता था, परन्तु मैं उससे कुछ भी न कहती थी, इस डर से कि कहीं वह सारा रहस्य जान न जाय।

उस वर्ष सारे संयुक्त प्रान्त में हिन्दू तथा मुसलमानों में विग्रह हो रहे थे। अलीगढ़ भी उस छूत से बचा न था। इधर-उधर हिन्दू और मुसलमान मार-काट कर देते थे। अब्दुल मस्जिद में सुन आया था कि काफ़िरों को मारने से बड़ा पुण्य होता है। अतः वह बड़े उत्साह से पुण्य लूटने की तैयारी कर रहा था। अब्दुल एक दिन बड़ा सा छुरा लेकर एक पत्थर पर तेज़ कर रहा था। मैं देख कर घबरा गई। मैंने उससे कहा—"अब्दुल! यह क्या कर रहा है?"

"कल बकरीद है, उसकी तैयारी कर रहा हूँ।"

"यह छुरी क्या बकरा हलाल करने के लिए है?"

"हिन्दुओं को हलाल करने के लिए।" वह हँस कर बोला।

"पागल हुआ है? तू अभी बच्चा है, अभी से हाथ चलाना—"

"मैं बच्चा हूँ? वाह! मौलवी साहब ने सबको यही तालीम दी है। कम से कम एक हिन्दू को मैं ज़रूर क़त्ल करूँगा।"

बकरीद के दिन अब्दुल मेरे रोकने पर भी बाहर निकल गया। मैंने एक हिन्दू के पुत्र को ही हिन्दू-घातक बना दिया। मैं यह कैसा अपराध कर रही हूँ! मुझे स्वयं अपने आपसे घृणा होने लगी। क्या यह बदला लेने का ढङ्ग है? मुझे सारी बीती हुई घटनाएँ मस्तिष्क में घूमती हुई मालूम दीं। उन सब में मुरारी की सुन्दर आकृति को देख कर मैं व्याकुल हो उठी। कहीं वह भी किसी मुसलमान द्वारा मारा न गया हो। मैं उसकी कुशल की कामना करने लगी।

मैं अपने विचारों में मग्न थी कि मुझे बाहर शोर सुनाई दिया। 'अल्लाहो अकबर' के नारे बलन्द थे। इतने ही में द्वार पर धक्के का शब्द सुनाई दिया। मैंने जाकर द्वार खोला।

एक मनुष्य, जो हिन्दू विदित होता था, भीतर घुसा। उसका मुख शाल में छिपा हुआ था। मैंने विस्मय से पूछा—"तुम क्या चाहते हो?"

"शीघ्र द्वार बन्द कर दो। मुसलमान छुरियाँ लिए मेरा पीछा कर रहे हैं।"

मैंने द्वार बन्द करके उसकी ओर देखा। मेरे वस्त्र देख कर वह कराहता हुआ बोला—"एक मुसलमान का घर? कैसा दुर्भाग्य है!"

यह कह कर वह द्वार की ओर चलने लगा। मैंने उसे रोक कर कहा—"मैं मुसलमान हूँ, यह ठीक है, लेकिन यहाँ तुम्हारा कोई बाल भी बाँका न कर सकेगा।"

उसने अपने मुख से शाल हटाई। मैं हतप्रभ सी पड़ी—"मुरारी!"

उसने भी मेरे मुख की ओर देखा और वह भी चिल्ला उठा—"फूल!"

कैसा मिलन था! सोलह वर्ष के बाद मुरारी के दर्शन हुए और वह भी इस प्रकार! उस समय मुरारी ने मुझे ठुकरा दिया था, आज वह स्वयं मेरे द्वार पर शरण लेने के लिए आया! समय का कैसा खेल है!

वह बोला—"फूल! यह सत्य है या स्वप्न? तुम वास्तव में जीवित हो? मैंने तो सुना था कि तुम....."

"...मैं मर गई थी? हाँ, हिन्दू फूल मर गई। यह मुसलमान फूल है जो जीवित है। तुम्हें तो एक हिन्दू को मुसलमानी जीवन में देख कर प्रसन्नता हुई होगी! सच्चे सुधारकों का आदर्श ही यह है!"

"ताने न मारो, फूल! मैं जानता हूँ मैं पापी हूँ, मैं अपराधी हूँ। परन्तु यदि तुम कुछ सुनोगी तो शायद क्षमा कर दोगी।"

"इससे क्या लाभ है?"

"आह! यह पूछती हो फूल? एक बार मेरे नेत्रों में तुमने मेरे हृदय के भाव पढ़े थे। क्या आज मेरे नेत्रों में उसी हृदय के भाव नहीं पढ़ सकोगी? यह मत समझो कि तुम्हें मैं भूल गया था। तुम्हें वह पत्र तो मैंने लिख दिया था, परन्तु पीछे से मुझे अपनी कायरता पर बड़ा पश्चात्ताप हुआ। क्षणिक दुर्बलता के कारण तुम्हें मैंने खो दिया। परन्तु पीछे लाख प्रयत्न करने पर भी तुम्हारा पता न लगा। अन्त में तुम्हारे ताल में डूब जाने की कहानी पर विश्वास करके धैर्य रखना पड़ा। परन्तु उस दिन से हृदय चोट खाए हुए पक्षी की भाँति तड़पता रहा

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

है। अब तक वह घाव भरा नहीं है। फूल ! मेरी प्यारी ! क्या अपने अपराधी को क्षमा न करोगी ? क्या अतीत को स्मृति-पटल से न मिटाओगी ?"

"क्षमा चाहते हो मुरारी ? परन्तु किस लिए ? मुझे तुमने ठुकरा दिया, धर्म-परिवर्तन के लिए विवश कर दिया, जीवन की आशा-लता को जला डाला ; फिर भी, आज तक, इस क्षण तक, तुम्हारे अतिरिक्त इस मन ने किसी और पुरुष का चिन्तन नहीं किया, हृदय ने किसी और की पूजा नहीं की। ओह मुरारी ! जीवन के कठिनतम सोलह वर्षों के अनन्तर तुम और मैं ! नींद से जग कर फिर स्वप्न देख रही हूँ ! क्या यह चिरस्थायी रहेगा ?"

"चिरस्थायी, फूल ! इस जन्म में, अगले जन्म में, प्रत्येक जन्म में, अनन्त काल तक। मैं तुम्हें तुम्हारे सिंहासन पर फिर बिठाऊँगा। जिस लड़की से मुझे विवाह करना पड़ा था, वह दो वर्ष बाद ही उड़ गई। तब से मैंने त्याग और सेवा का जीवन व्यतीत किया है। अब सारे समाज के सामने तुम्हें अपन बनाऊँगा।"

मेरे नेत्रों में हर्ष के आँसू भरे थे। मैं मुरारी के वक्ष-स्थल पर शिर रख कर उसे आँसुओं से भिगोने लगी। इतने ही में द्वार खुला और अब्दुल भीतर आ गया। उसके हाथ में छुरी लगी हुई थी। वह द्वार से ही चिल्ला कर बोला—"एक हिन्दू को ख़त्म करके आया हूँ, अम्मी !" हम दोनों अवाक् होकर उसकी ओर देख रहे थे कि वह मुरारी की ओर देख कर विस्मय से बोला—"एक हिन्दू, हमारे घर में ?"

मैंने उसका हाथ पकड़ कर कहा—"अब्दुल ! ख़बरदार, हाथ न चलाना।"

"क्यों ?"

"यह तेरे बाप हैं।"

"मेरे बाप, एक हिन्दू ?" वह विस्मय से बोला।

"हाँ, बेटा ! तू एक हिन्दू का पुत्र है, एक हिन्दू है।"

वह विस्मय से मुरारी की ओर देखता रहा। मुरारी ने मुझसे पूछा—"फूल ! क्या वह यही है ?"

"हाँ।"

"पगली ! तुमने बड़ा अत्याचार किया। कभी मुझे समाचार तक न दिया।"

धीरे-धीरे मुरारी की भुजाएँ आगे बढ़ीं। अब्दुल ने एक शब्द भी न निकाला। उसके नेत्रों में आँसू थे। उसे हिन्दू और मुसलमान का कुछ ध्यान न रहा। जिस पिता के लिए वह कभी तड़पा करता था, उसे सामने खड़ा देख कर उसका पितृ-प्रेम उमड़ पड़ा। वह दौड़ कर मुरारी के गले से लिपट गया। मुरारी का गला भर आया था। उसने केवल 'मेरा बेटा !' ही कहा और उसे छाती से लगा कर चूमने लगा। अपरिचित पिता-पुत्र का वह सम्मिलन, सोलह वर्ष बाद, स्नेह तथा ममता का एक सजीव दृश्य था। उसे क्या मैं जीवन भर भूल सकती हूँ !

फिर द्वार खुला और एक वृद्ध हिन्दू रक्त में लथपथ आँगन में गिर पड़ा। हम सब उसकी ओर दौड़े। हैं, यह तो गिरधारीलाल है ! मुरारी ने उसकी ओर देख कर कहा—"चाचा, यह तुम्हारी क्या दशा ?"

गिरधारीलाल ने उधर आँखें फिराईं। अब्दुल अब भी उसकी छाती से लगा हुआ था। उसे देखते ही गिरधारीलाल ज़ोर से बोला—"मुरारी ! यह मैं क्या देख रहा हूँ ? मुसलमान, मेरा हत्यारा, तुम्हारी गोद में !"

"यह मेरा पुत्र है, चाचा !"

"तुम्हारा पुत्र ?"

"हाँ, मेरा और फूल का पुत्र !"

"अब मैं समझा ! सो फूल हिन्दू समाज में शरण न मिलने से मुसलमान हो गई और एक हिन्दू के पुत्र ने ही एक हिन्दू का वध किया !"

वह निर्जीव होने लगा। मैंने उसके मुख में थोड़ा जल डाल कर कहा—"आपको उठा कर पलङ्ग पर लिटा दें तो अच्छा होगा।"

वह कुछ सँभल कर बोला—"पलङ्ग पर ? नहीं, अब मुझमें रह क्या गया है ? चोट घातक है। कुछ देर में प्राण-पक्षी उड़ जाएँगे। परन्तु मैं तुमसे कुछ कहना चाहता हूँ। फूल ! मुझे अपना हाथ दो। मुरारी ! तुम भी मुझे अपना हाथ दो।" हम दोनों ने उसका एक-एक हाथ पकड़ लिया और उसका शिर मुरारी ने अपनी जङ्घा पर रख लिया।

बड़े कष्ट से गिरधारीलाल बोला—"मुझे सारी बीती हुई घटनाओं के चित्र इस समय दीख रहे हैं। मैं कितना अन्धा था ? तुम दोनों के जीवन को मैंने कितना दुःखमय बना दिया था। समाज का झूठा भय, व्यर्थ का बड़प्पन और मानसिक दासत्व ने हम

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

हिन्दुओं की बुद्धि पर कैसा पर्दा डाल दिया है ! यदि तुम दोनों का विवाह उस समय हो जाता तो एक परिवार विधर्मी होने से बचता। हिन्दू हिन्दू का ही घातक न होता। हम स्वयं ही अपने शत्रुओं की संख्या बढ़ा कर अपने पैर में कुल्हाड़ा मार रहे हैं ! हम इन भोली विधवाओं पर अत्याचार तो करते हैं, परन्तु उनकी रक्षा का उपाय कुछ नहीं करते। फल यह होता है कि या तो वे वेश्या हो जाती हैं या विधर्मी। और या फिर भ्रूण-हत्या का पाप करती हैं। यदि हमारे यहाँ ऐसे स्थान हों, जहाँ ऐसे अभागे बालकों का पालन-पोषण हो सके तो समाज का कितना भला हो ! दुःख है कि मेरी आँखें अब खुली हैं। परन्तु, मुरारी ! तुम मेरे अपराध को हल्का करने के लिए एक काम कर सकते हो ? अलीगढ़ में मेरी आधी सम्पत्ति से एक 'मातृ-मन्दिर' खोलना, जिसमें ऐसी माताओं तथा ऐसे शिशुओं की रक्षा की जा सके। करोगे, मुरारी ?"

"अवश्य चाचा ! इतना ही नहीं, मैं अपने अपराध को हल्का करने के लिए फूल से विवाह करूँगा और हम दोनों 'मातृ-मन्दिर' की सेवा में अपना जीवन लगा देंगे।"

"अब मैं शान्ति से मर सकूँगा। मुझे क्षमा करना फूल ! क्षमा करना, मुरारी !"

पाँच वर्ष बाद 'मातृ-मन्दिर' के निकटस्थ अपने बँगले में हम दोनों खिड़की के पास खड़े सामने वाले बाग़ में 'मन्दिर' के बालकों का खेल देख रहे थे। मुरारी बोला—"देखो न फूल ! बच्चों का खेल कितना प्यारा लगता है ! यदि 'मातृ-मन्दिर' न होता तो यह प्यारा बालक कहाँ होते ? या तो हरिद्वार के जल में या तीर्थ-स्थानों की मृत्तिका में या ईसाई तथा मुसलमानों की शरण में। जिस दिन प्रत्येक नगर में ऐसे आश्रम स्थापित हो जायँगे, उसी दिन मेरे जीवन का उद्देश्य सफल होगा।"

"यह तुम्हारे साहस तथा कर्मयोगिता का फल है।"

"नहीं, पगली ! यह तुम्हारी वीरता तथा स्वार्थ-त्याग का फल है।"

"सच पूछो तो यह गङ्गा जी का प्रभाव है। राम उसके तट पर मिलते न यह दिन देखने को मिलता।"

"तो फिर गङ्गा जी पर चढ़ावा चढ़ाना चाहिए।"

"फूल-बताशे कहाँ हैं ?"

उसने अपनी जेब में से कुछ बताशे निकाल कर चबा लिए और बोला—"कहो, बताशे तो चढ़ा दिए।"

"और फूल ?"

"और यह फूल" कह कर उसने मुझे अपने वक्षस्थल में छिपा लिया।

भेंट

[श्री० बद्रीनारायण शुक्ल]

(१)

गूँथ कर हृदय-पुष्प की माल,
पिरोया उसमें प्रेम-प्रवाल।
पाद-पद्मों पर तेरे डाल,
आज मैं दुखिनी हुई निहाल ॥

(२)

बेर शबरी के इसको मान,
सुदामा के वा तन्दुल जान।
करो स्वीकार इसे भगवान !
त्याग कर कठिन कष्ट का ध्यान ॥

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

चोट पर चोट

सोने की चोट, दिल की औ पहलू की हाय चोट !
खाऊँ किधर की चोट, बचाऊँ किधर की चोट !!

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

वारन हेस्टिंग्ज़ और महाराज चेतसिंह

[पं० तेजनारायण काक 'क्रान्ति']

काशी के विद्रोह के कई वर्षों बाद जब हाउस ऑफ़ कॉमन्स में वारन हेस्टिंग्ज़ का मुक़दमा चल रहा था, तब उसके ऊपर शत्रुओं द्वारा लगाए गए बीस मुख्य अभियोगों में से "काशी के महाराज चेतसिंह के साथ किया गया नीच और घृणित व्यवहार" भी एक था। इसमें कोई सन्देह नहीं कि हेस्टिंग्ज़ के शत्रुओं ने, जिनमें बर्क, फॉक्स, शारिडान प्रभृति अनेकों दिग्गज वाग्मी थे, अपनी वाक्य-कुशलता द्वारा उसके छोटे से छोटे दोष को भी तिल का ताड़ बनाने में ज़रा भी कोर-कसर न रक्खी, पर केवल इसीलिए हम ग्लीग महाशय अथवा हेस्टिंग्ज़ के अन्य प्रशंसकों के इस कथन से कदापि सहमत नहीं हो सकते कि हेस्टिंग्ज़ का प्रत्येक कार्य न्याययुक्त था और उसने जो कुछ किया वह ठीक किया। क्या हेस्टिंग्ज़ के हित-विधायक मित्र विलियम पिट का महाराज चेतसिंह से सम्बन्ध रखने वाली घटना में उसे दोषी ठहराना इस बात का अकाट्य प्रमाण नहीं है कि उसके शत्रु ही नहीं, वरन् मित्र भी उसके दोषों को स्वीकार करते थे। हेस्टिंग्ज़ को निर्दोष सिद्ध करके उसकी प्रशंसा के व्यर्थ के पुल बाँधने को यदि पानी के ऊपर लकीर खींचने के समान निष्फल कहा जाय तो कोई अत्युक्ति न होगी। दोष प्राणी मात्र से होते आए हैं और यदि हेस्टिंग्ज़ से भी कोई अपराध हो गया तो यह किसी सांसारिक नियम का अपवाद नहीं कहा जा सकता। अपराध तो वास्तव में उन सज्जनों का है, जिन्होंने जान-बूझ कर सच्ची बातों को झूठ तथा अप्रामाणिक सिद्ध करने में अपना बहुत सा अमूल्य समय व्यर्थ ही नष्ट किया है।

महाराज चेतसिंह सम्बन्धी घटना का संक्षिप्त ब्योरा इस प्रकार है। सम्राट औरङ्गज़ेब की मृत्यु के पश्चात मुग़ल साम्राज्य की नींव डाँवाडोल होने लगी। सारे देश में अराजकता फैल गई। फिर क्या था, जिसे देखिए वही अपनी मनमानी करने लगा। प्रत्येक सूबे का सूबेदार स्वतन्त्र बन बैठा। यहाँ तक कि देहली के आस-पास के कुछ भाग को छोड़ सारा देश मुग़लों के हाथ से निकल गया। ठीक इसी समय बनारस के राजा ने भी अपनी स्वतन्त्रता की घोषणा करवा दी। अवध के नवाब शुजाउद्दौला ने बनारस को हस्तगत करने का यह अच्छा अवसर देखा। एक छोटा सा राज्य कब तक इतने बड़े सूबेदार का सामना करता? अन्त में बनारस के राजा को अवध के नवाब से हार माननी पड़ी और उसके अधीनस्थ होकर रहना पड़ा। विधाता की गति जानी नहीं जाती। अवध के नवाब को यह स्वप्न में भी ख़याल नहीं था कि जिस बनारस को उसने बड़ी लालसा से इतने रक्तपात के पश्चात विजय किया है वही अब उससे छीन लिया जायगा। और यही कौन जानता था कि अवध के कुत्सित शासन से निकल कर थोड़े ही समय में बनारस को एक विदेशी जाति का दासत्व स्वीकार करना पड़ेगा, एक गहरे गर्त से निकल उससे भी अधिक भयानक तथा अन्धकारमय कूप में गिरना पड़ेगा? किन्तु हुआ ऐसा ही। रुहिला युद्ध की समाप्ति होने के थोड़े ही समय उपरान्त शुजाउद्दौला की मृत्यु हो गई। उसके मरने पर उसके पुत्र आसफ़उद्दौला से जो नई सन्धि हुई उसके अनुसार बनारस अङ्गरेज़ों को मिला। इसी समय से बनारस के महाराज चेतसिंह को साढ़े बाईस लाख रुपया प्रति वर्ष कम्पनी को कर-स्वरूप देना पड़ता था। चेतसिंह ने कभी रुपया चुकाने में विलम्ब नहीं किया। कदाचित इसी के फलस्वरूप जब सन् १७७८ में अङ्गरेज़ों तथा फ्रान्सीसियों के बीच युद्ध छिड़ा तो वारन हेस्टिंग्ज़ ने बँधे हुए वार्षिक कर के अतिरिक्त युद्ध के व्यय के लिए महाराज से पाँच लाख रुपए और माँगे। इस आदेश का पत्र जिस समय बङ्गाल काउन्सिल के सामने रक्खा गया तो उसके मेम्बरों ने उसकी कड़ी भाषा की आलोचना करते हुए उसे कुछ विनम्र बनाने की इच्छा प्रगट की। वे चाहते थे कि पत्र में 'Demand' शब्द की जगह 'Request' रख दिया जाय। क्योंकि उनका

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

कहना था कि कर के अतिरिक्त चेतसिंह से और कुछ लेने का कम्पनी को कोई अधिकार नहीं है। वास्तव में बात भी ऐसी ही थी। परन्तु हेस्टिंग्ज़ यह सब कब मानने वाला था? उसके मतानुसार कम्पनी को जब चाहे जितना रुपया लेने का अधिकार प्राप्त था। अन्त में बहुत वाद-विवाद के बाद हेस्टिंग्ज़ ही की बात रही और वह पत्र ज्यों का त्यों महाराज चेतसिंह के पास भेज दिया गया। उत्तर में जब उन्होंने कहला भेजा कि रुपया उनसे केवल एक ही वर्ष के लिए लिया जावे तो उनकी इस "धृष्टता" पर चिढ़ कर हेस्टिंग्ज़ ने हुक्म दिया कि सब वर्षों का रुपया एक ही साथ चुकाना होगा। चेतसिंह बहुत घबराए और उन्होंने प्रार्थना-पत्र भेज कर हेस्टिंग्ज़ से रुपया चुकाने के लिए छः-सात महीने की मोहलत माँगी। पर अब हेस्टिंग्ज़ के क्रोध का वारापार नहीं रहा। भला उसे इतनी मानहानि कहाँ सहनीय थी? महाराज को उसी समय कहलाया गया कि या तो वे रुपया पाँच दिन के भीतर ही दे डालें, नहीं तो कम्पनी की ओर से समझ लिया जायगा कि वे ऐसा करने से इनकार करते हैं। फिर इसका क्या परिणाम निकले , यह वे भली भाँति विचार सकते हैं। अपनी प्रार्थना । कुछ फल न निकलते देख चेतसिंह ने किसी तरह सब रुपया जुटा कर नियत समय के भीतर ही कम्पनी के हवाले कया।

सन् १७७९ में रुपए की माँग फिर दोहराई गई। अबकी बार चेतसिंह ने बड़ी नम्रता-सहित प्रार्थना की कि कम्पनी से उन्होंने जो सन्धि की थी उसके अनुसार कर के अतिरिक्त रुपया देने के लिए वे बाध्य नहीं हैं। हेस्टिंग्ज़ ने बिना कुछ सोचे-विचारे अङ्गरेज़ सेना को बनारस पर धावा बोल देने की आज्ञा दे दी। किन्तु चेतसिंह व्यर्थ का झगड़ा मोल लेना नहीं चाहते थे। अतः उन्होंने पचास हज़ार पौण्ड दे दिए। हेस्टिंग्ज़ ने इतने पर भी उनका पीछा नहीं छोड़ा और उन पर धावा करने को जो सेना भेजी गई थी उसको किसी प्रकार की क्षति न पहुँचने पर भी उसके व्यय के लिए दण्डस्वरूप दो हज़ार पौण्ड और वसूल कर लिए। तीसरी बार फिर सन् १७८० में चेतसिंह से पाँच लाख रुपए माँगे गए। सीधी तरह प्राण न छुटते देख अबकी महाराज ने दूसरी युक्ति का आश्रय ग्रहण किया। उन्होंने हेस्टिंग्ज़ को बीस हज़ार पौण्ड घूँस में भेजे। कहते हैं पहिले तो उसने इन्हें लेने से इनकार किया, किन्तु पीछे न जाने क्या सोच कर ले लिया। इसी बात को उसके प्रतिद्वन्द्वी मुक़द्दमे के समय ले उड़े थे। बहुतों का मत है कि कम्पनी के कोषागार में टोटा आ जाने के कारण ही उसने यह रक़म लेना स्वीकार किया था और उसने उसे व्यय भी कम्पनी ही के ख़र्च में किया। किन्तु यदि उसकी अन्तरात्मा दोषी नहीं थी तो उसने इस मामले को, अपने काउन्सिल के मेम्बरों से ऐसा कह कर कि यह रुपया मैं कम्पनी को अपने पास से देता हूँ, पाँच महीने तक प्रगट क्यों नहीं होने दिया? सब से अधिक आश्चर्य की बात यह है कि डाइरेक्टरों तक को इसकी कानोंकान ख़बर न होने पाई। हमें तो अवश्य कुछ दाल में काला दिखाई देता है। मालूम होता है कि पहिले लालच में पड़ कर उसने रुपया स्वीकार कर लिया, पर फिर भेद खुल जाने के भय से ऊपर लिखा हुआ बहाना बना मामले को दबा दिया। वस्तुतः बात कुछ भी क्यों न हो, कम से कम हेस्टिंग्ज़ के लिए सब से सीधा मार्ग उपहार को अस्वीकार कर देना ही होता। केवल इतने ही पर बस न करके उसने वह पाँच लाख रुपया भी चेतसिंह से ले लिया और साथ ही दस हज़ार पौण्ड जुर्माने के तौर पर भी लिया। हेस्टिंग्ज़ भली भाँति जानता था कि चेतसिंह ने बीस हज़ार पौण्ड इसीलिए दिए हैं कि उनसे पाँच लाख रुपया न लिया जाय। इतना जानते हुए भी जब उसने चेतसिंह के साथ छल तथा कौशल से काम लिया तो हम दावे के साथ कह सकते हैं कि सन् १७८३ में सिलेक्ट कमिटी की रिपोर्ट में इस मामले के प्रति जो कुछ लिखा था वह अक्षरशः सत्य है। पाठकों के मनोरञ्जनार्थ हम उसे यहाँ उद्धृत करते हैं:—

"The complication of cruelty and fraud in this transaction admits of few parallels. Mr. Hastings....displays himself as a zealous servant of the company, bountifully giving from his own fortune .....on the credit of supplies, derived from the gift of a man whom he treats with the utmost severity and whom he accuses in this particular of disaffection to the company's cause and interests.

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

With £. 23,000 of the raja's money in his pocket, he persecutes him to his destruction."*

इस विषय में अधिक टीका-टिप्पणी करना व्यर्थ है।

इतना सब कुछ हो जाने पर भी हेस्टिंग्ज़ को शान्ति नहीं मिली। थोड़े ही समय पहिले दक्षिण के युद्धों में कम्पनी का बहुत रुपया चुक गया था। यदि रुपया नहीं मिलता तो दिवाला निकल जाने का भय था। गवर्नर हेस्टिंग्ज़ ने सोचा चेतसिंह हाथ में है ही, इसीसे रुपया ऐंठना चाहिए। इससे अच्छा असामी और कहाँ मिल सकता है? उसने तुरन्त एक उपाय खोज निकाला। चेतसिंह को कहलाया गया कि वह दो हज़ार घुड़सवार फ़ौज अङ्गरेज़ों को अपने पास से दे। हेस्टिंग्ज़ ने सोचा था कि जब महाराज तङ्ग आ जावेंगे और ऐसा करने से इनकार करेंगे तो वह तुरन्त उन्हें आज्ञाभङ्ग करने के अपराध में फाँस कर रुपया देने पर बाध्य करेगा और यदि ऐसा न हो सका तो अवध के हाथों बनारस फिर से बेच दिया जायगा। किन्तु यहाँ तो बात ही उलटी पड़ गई। महाराज ने बड़ी कठिनाई से एक हज़ार फ़ौज इकट्ठी करके कहला भेजा कि वह बङ्गाल सरकार का हुक्म मानने को प्रस्तुत हैं। हेस्टिंग्ज़ ने किसी तरह दाल गलती न देख चुप्पी साध ली, मानो उसे यह ख़बर मिली ही नहीं, क्योंकि उसे तो महाराज से पचास हज़ार पौण्ड दण्ड में लेने थे। उसने स्वयं इस बात को स्वीकार किया है। वह लिखता है :—

"I resolved to draw from his guilt the means of relief to the company's distress—to make him pay largely for his pardon, or to exact severe vengeance for past delinquency."†

उसने यह भी स्वयं ही लिखा है कि उसकी ओर से चेतसिंह को कोई उत्तर नहीं दिया गया था।‡

इतनी दूर से काम न बनता देख वारन हेस्टिंग्ज़ ने बनारस जाना ही स्थिर किया। वह जुलाई में कलकत्ते से रवाना हो गया। महाराज चेतसिंह उसकी अगवानी के लिए ६० मील चल कर बक्सर आए और बहुत आदर-सत्कार के साथ उसे काशी लिवा ले गए। यहाँ तक सुनने में आता है कि उन्होंने स्वयं अपनी पगड़ी उसके पैरों में रक्खी थी। बनारस आने पर हेस्टिंग्ज़ ने महाराज से मुलाक़ात करने से इनकार किया और केवल अपनी शर्तें लिख कर उनके पास भिजवा दीं। उसी पत्र में उन पर आज्ञा-उल्लङ्घन और कर देने में आनाकानी करने के दोष भी लगाए गए थे। चेतसिंह ने बड़ी नम्रता से अपने ऊपर लगाए गए झूठे आक्षेपों का उत्तर लिख भेजा। पर हेस्टिंग्ज़ तो रुपया लेने पर तुला हुआ था। वह इन सब बातों को कैसे मानता। उसने महाराज के पत्र को रूखा तथा अपमानसूचक बतला कर उन्हें तुरन्त गिरफ़्तार कर लिया और उनके पहरे पर दो पल्टनें नियुक्त करवा दीं।

संसार का यह नियम है कि जब कोई वस्तु, चाहे वह कितनी ही तुच्छ क्यों न हो, बहुत दबाई जाती है, सीमा से अधिक दबाई जाती है, तब कभी न कभी उसका प्रतिघात अवश्य होता है। बनारस की प्रजा इतने दिन से ख़ून का घूँट पिए अपने राजा पर अङ्गरेज़ सरकार द्वारा किए गए अत्याचारों को चुपचाप देख रही थी। पर अब उसका क्रोध असह्य हो गया। वह भीषण ज्वालामुखी की भाँति भड़क उठा। क्या वह अपनी आँखों के सामने अपने प्यारे देव-तुल्य राजा को एक विदेशी गवर्नर द्वारा पददलित होते देख सकती थी? कदापि नहीं। शहर में भयानक बलवा मच गया, भीषण मार-काट जारी हो गई। असंख्य अङ्गरेज़ सिपाही क़त्ल कर दिए गए और बचे-खुचों ने भाग कर अपने प्राणों की रक्षा की। पर ऐसे भयङ्कर समय में वारन हेस्टिंग्ज़ ज़रा भी विचलित नहीं हुआ। इसे यदि उसका मानसिक स्थैर्य न कहें तो और क्या? अनेक दुर्गुण होने पर भी उसमें एक बड़ा भारी गुण था। वह था यही उसका मानसिक स्थैर्य। इसी के प्रताप से उसने अनेकों कठिनाइयों का सामना करते हुए भी बड़ी योग्यता से इतने उत्तरदायित्वपूर्ण पद का कार्य भली भाँति सञ्चालन किया। उसने प्रति दिन की भाँति ही, मानो कुछ हुआ ही नहीं था, दो पत्र लिखे। उनमें से एक तो उसकी स्त्री के नाम था, जिसमें

---

* *Reports of the House of Commons, Vol. VI, p. 582.*

† Macaulay's *Warren Hastings*, (Ward Lock), *p. 98.*

‡ See His Narrative of the Insurrection which happened in the Zemeendary of Benares.

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

उसने उसे लिखा था कि वह ख़ूब सुरक्षित है, और दूसरा कम्पनी के नाम, जिसमें उन्हें बनारस सहायक सेना भेजने का आदेश किया गया था। अब कठिनाई यह थी कि पत्र लेकर जावे कौन, चारों ओर तो चेतसिंह की सेना ने घेर रक्खा था। अन्त में यह निश्चित हुआ कि कुछ स्वामिभक्त हिन्दू सिपाहियों के कानों के छिद्रों में, जो कि प्रायः बहुत बड़े हुआ करते थे और जिनमें बड़े-बड़े सोने के छल्ले पहिने जाते थे, वह पत्र लपेट कर डाल दिए जावें और फिर उन्हें भेज दिया जावे। इसमें सन्देह होने की कोई गुञ्जाइश भी नहीं थी, क्योंकि बहुधा यात्रा के समय लुट जाने के भय से लोग छल्ले उतार कर उनके स्थान में काग़ज़ अथवा और कोई चीज़ डाल लिया करते थे, ताकि कान बन्द न हो जावें। अस्तु, जिस किसी तरह दोनों पत्र निश्चित स्थान पर पहुँचा दिए गए।

इसी बीच में समय पाकर चेतसिंह निकल भागे। उन्होंने एक बार फिर हेस्टिंग्ज़ से सन्धि करने का प्रस्ताव किया, लेकिन उसने उसे अस्वीकार कर दिया। इधर एक नई घटना और घटी। एक नासमझ अङ्गरेज़ युवक ऑफ़िसर ने महाराज चेतसिंह के पड़ाव पर आक्रमण कर दिया। उसका ऐसा करना था कि सारी प्रजा उसकी सेना पर टूट पड़ी और उसे छिन्न-विच्छिन्न कर दिया। अवध की प्रजा नवाब के शिथिल शासन से अत्यन्त अप्रसन्न थी ही, उसे जब काशी के विद्रोह के समाचार मिले तो उसने भी नवाब के विरुद्ध कर देने की बग़ावत शुरू कर दी। पर अब तक हेस्टिंग्ज़ के गुप्तादेशानुसार अङ्गरेज़ों की एक बड़ी भारी सेना काशी में आ पहुँची थी। उसने शीघ्र ही विद्रोहियों का दमन करके वहाँ फिर से शान्ति स्थापित कर दी। महाराज चेतसिंह पर बग़ावत खड़ी करने तथा कृतघ्नता का दोष लगा कर उन्हें ग्वालियर भेज दिया गया। गद्दी का अधिकारी उनका भतीजा बनाया गया और उसके साथ जो नई सन्धि हुई उसके अनुसार बनारस को साढ़े बाईस लाख से बढ़ा कर चालीस लाख रुपया बङ्गाल सर्कार को कर में देने का तय पाया।

यही संक्षेप में काशी के विद्रोह की दुःखद कहानी है। समस्त कथा को पढ़ जाने पर हमारे समक्ष तीन प्रश्न उपस्थित होते हैं, जिन पर हमें पृथक-पृथक सुचारु रूप से विचार करना होगा। प्रथम तो यह कि कर के अतिरिक्त हेस्टिंग्ज़ को चेतसिंह से रुपया लेने का अधिकार था अथवा नहीं? दूसरे जब चेतसिंह ने हेस्टिंग्ज़ की प्रत्येक माँग की पूर्ति कर दी तो उन्हें क़ैद क्यों किया गया?

काशी-नरेश महाराजा चेतसिंह

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

हमारा अन्तिम प्रश्न। इस बात का विवेचन करना होगा कि हेस्टिंग्ज़ का यह कार्य कहाँ तक सराहनीय कहा जा सकता है?

यह विषय बड़ा विवादग्रस्त है कि महाराज चेतसिंह से बङ्गाल सरकार का वास्तविक सम्बन्ध क्या था। कुछ लोगों के कथनानुसार तो चेतसिंह कम्पनी के आश्रित एक साधारण ज़मीन्दार थे और समय पर धन तथा जन से कम्पनी की सहायता करना उनका कर्तव्य था। परन्तु कुछ लोग ऐसे भी हैं जो इस बात से सहमत नहीं हैं। उनका कहना है कि चेतसिंह एक स्वतन्त्र राज्य के अधिकारी थे और वारन हेस्टिंग्ज़ को उनसे कर के अतिरिक्त और कुछ लेने का कोई अधिकार नहीं था। हमें दोनों ही पक्ष के कथन ठीक नहीं जँचते। वास्तव में बात कुछ और ही थी। हम ऊपर लख आए हैं कि उस समय भारत की राजनैतिक स्थिति बहुत ही अस्थिर थी। मुग़ल साम्राज्य का ह्रास हो चुका था और चारों ओर अशान्ति तथा अराजकता की आँधी सी चल रही थी। ऐसे समय में, जबकि क़ायदे और क़ानून का अस्तित्व ही नहीं हो सकता, धूर्त और कपटी लोगों की ख़ूब बन आई थी और वे अपनी मनमानी कर रहे थे। यह बात हेस्टिंग्ज़ की पैनी दृष्टि से छिपी न रह सकी। अपना कार्य साधन करना ही उसका एक मात्र ध्येय था। चाहे उसके लिए कितनी ही धूर्तता अथवा कूटनीतिज्ञता से काम क्यों न लेना पड़े, कितने ही अकाण्ड-ताण्डव क्यों न करने पड़ें, इसकी उसे ज़रा भी परवा न थी। उसने तुरन्त अपना पथ निश्चित कर लिया। जब कभी कम्पनी को यह सिद्ध करने की आवश्यकता होती कि बङ्गाल से कर लेने का उन्हें अधिकार है, तो तुरन्त मुग़ल सम्राट की मुहर की हुई फ़र्मान दिखा दी जाती। पर इस फ़र्मान को देने वाला नाम मात्र का सम्राट अन्धा शाहआलम था, यह नहीं बतलाया जाता था। उस समय वह भारत के शाहन्शाह दिल्लीश्वर सम्राट शाहआलम हो जाते थे। परन्तु जहाँ बादशाह ने बङ्गाल से कर लेने का अधिकार प्रगट किया कि उसे तुरन्त एक नाम मात्र का सम्राट बता कर दुत्कार दिया जाता। कहने का तात्पर्य यह है कि चेतसिंह न तो ज़मीन्दार ही कहे जा सकते हैं और न स्वतन्त्र राजा ही। वास्तव में वह थे केवल वारन हेस्टिंग्ज़ के हाथ का एक खिलौना। यही कारण था कि उसने जब जैसा चाहा वैसा ही महाराज चेतसिंह से कराया। ज़मीन्दार बना कर उनसे रुपया वसूल किया और स्वतन्त्र राजा कह कर उन्हें अपनी ओर मिलाए रक्खा। किन्तु हम इसमें हेस्टिंग्ज़ का कोई बड़ा भारी दोष नहीं समझते, क्योंकि उस समय का यह एक साधारण नियम सा हो गया था। हाँ, इतना तो अवश्य कहना ही होगा कि अङ्गरेज़ी सभ्यता के "आदर्श सिद्धान्तों" की दृष्टि से उसका यह कार्य निन्दनीय था।

चेतसिंह ज़मीन्दार थे अथवा स्वतन्त्र राजा, इससे हमें कोई विशेष मतलब नहीं। निर्णय केवल इसी बात का करना है कि क्या कम्पनी ने उनसे कभी कोई ऐसी सन्धि की थी जिसके द्वारा यह सिद्ध हो जाय कि वार्षिक कर के अतिरिक्त उसे और कुछ भी लेने का अधिकार था। यदि यह सत्य है तब तो हेस्टिंग्ज़ का कोई दोष नहीं कहा जा सकता, किन्तु अगर ऐसी कोई सन्धि नहीं हुई थी तो फिर निस्सन्देह वह दोषी ठहरता है। पाश्चात्य इतिहासकार विलसन साहब लिखते हैं कि इस आदेश की कोई सन्धि नहीं हुई थी, केवल बङ्गाल कौन्सिल ने एक ऐसा प्रस्ताव पास किया था जो कि सन्धि के रूप में परिणत नहीं हुआ। उनका यह कथन ठीक नहीं है, क्योंकि गवर्नर में पाँच जुलाई सन् १७७५ को हेस्टिंग्ज़ और चेतसिंह के बीच जो सनद लिखी गई थी उसमें लिखा था:—

"While he (Chait Singh) paid his contribution, no demand shall be made upon him by the Hon'ble. Company, of any kind, or on any pretence whatsoever, nor shall any person be allowed to interfere with his authority, or to disturb the peace of his country."*

सनद के उपरोक्त उद्धृत अंश से साफ़ प्रगट होता है कि हेस्टिंग्ज़ ने महाराज से वादा किया था कि कर के अतिरिक्त वह उनसे और कुछ नहीं माँगेगा और न किसी को उनके राज्य सम्बन्धी आन्तरिक मामलों में हस्तक्षेप करने का ही अधिकार होगा। अब प्रश्न यह उठ सकता है कि वारन हेस्टिंग्ज़ ने ऐसी सन्धि की ही क्यों, जबकि

* *Selections from the Letters, Despatches and other State Papers in the Foreign Dept. of the Govt. of India 1772-85.* G. W. Forrest. *Vol. ii, p. 402.*

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

वह एक सर्वोच्च शासक (Paramount Power) की हैसियत में चाहे जैसी सनद महाराज से लिखा सकता था? इसका उत्तर वह स्वयं इस प्रकार देता है :—

"Without some such an arrangement, Chait Singh will expect from every change of government, additional demands to be made upon him, and will of course descend to all the arts of intrigue and concealment practised by other dependent Rajas."*

अब यह तो स्पष्ट सिद्ध हो गया कि ऐसी कोई शर्त सन्धि में अवश्य थी। आगे चल कर अपने ब्रिटिश भारत के इतिहास में, जिल्द ४, पृष्ठ २५६ पर विलसन साहब ने लिखा है कि सन् १७७६ में जो सनद चेतसिंह के साथ की गई थी उसमें ऐसी कोई शर्त नहीं थी, और चूँकि इस सनद द्वारा पिछली सब सनदें रद्द हो गई थीं, इसलिए रुपया लेने के मामले में सन् १७७५ के प्रस्ताव को (जोकि वास्तव में सनद ही थी, जैसा कि ऊपर सिद्ध किया जा चुका है) दोहाई देना अत्यन्त अनुचित है। पर शायद विलसन सहब को यह नहीं मालूम था कि सन् १७७६ की सनद का वह अंश, जिसके द्वारा वह सन् १७७५ की सनद का रद्द होना बतलाते हैं, चेतसिंह के ही कहने-सुनने पर, कुछ ही समय बाद, स्वयं वारन हेस्टिंग्ज़ और उसकी कौन्सिल के मेम्बरों द्वारा निकाल दिया गया था और उसमें भी सन् १७७५ की सनद का यह अंश ज्यों का त्यों बना रहा †। अतः सन् १७७५ की शर्तों पर सन् १७७६ की सनद का कोई प्रभाव नहीं पड़ा। सब बातों पर ध्यान देने से यही निष्कर्ष निकलता है कि कर के अतिरिक्त हेस्टिंग्ज़ को चेतसिंह से एक फूटी कौड़ी लेने का भी अधिकार नहीं था। हाँ, यह बात दूसरी है कि सन्धि को हम एक रद्दी काग़ज़ का टुकड़ा ही समझें, जैसा कि आजकल की सभ्य जातियों का सिद्धान्त सा हो रहा है।

भारत के पाश्चात्य इतिहासकारों के मत से चेतसिंह पर हेस्टिंग्ज़ द्वारा किए गए अत्याचार, अत्याचार नहीं कहला सकते। वे तो केवल समयोचित कर्त्तव्य की पूर्त्ति के साधन मात्र थे। हेस्टिंग्ज़ की सी दशा में होने पर प्रत्येक मुख्य सरकार, चाहे वह भारतीय हो अथवा विजातीय, ऐसा ही करती। सेन्ट्रल गवर्नमेण्ट भी तो कोई अधिकार रखती है। जब समस्त साम्राज्य पर सङ्कट पड़ता है, उस समय स्थानीय प्रान्तों की सुख-शान्ति पर ध्यान नहीं दिया जा सकता, वरन् आवश्यकता पड़ने पर उनका बलिदान तक करना होता है। क्योंकि स्थानीय प्रान्तों की सुख-शान्ति भी तो मुख्य सरकार ही पर आश्रित है। जहाँ मुख्य सरकार का शासन शिथिल हुआ कि उसे शत्रुओं ने आ दबाया। उसी समय स्थानीय सरकारों के भाग्य का निबटारा भी हो जाता है। उन्हें परतन्त्रता की बेड़ियों में जकड़े रह कर नर्क की यन्त्रणा भोगनी पड़ती है। वह समय ऐसा ही था। मैसूर के नवाब हैदरअली और मरहठों से कम्पनी के नौकर से लगा कर मुख्य अफ़सर तक सदा चौकन्ने रहते थे। न जाने वे कब चढ़ आवें, यही ध्यान उन्हें आठों पहर सताया करता था। ऐसे समय में सेना की सुव्यवस्था के लिए रुपया न रहा तो दो-दो बलिष्ट शत्रुओं के सम्मुख वह कर ही क्या सकती थी? इन्हीं सब कारणों से प्रेरित होकर यदि हेस्टिंग्ज़ ने चेतसिंह से येन-केन-प्रकारेण रुपया वसूल करने का प्रयत्न किया तो इसमें उसका दोष ही क्या था? क्या कम्पनी के पैर उखाड़ डालने के बाद किसी दिन बनारस पर भी हैदरअली न आ धमकता? प्रायः इसी प्रकार की युक्तियों द्वारा पाश्चात्य इतिहासकार हेस्टिंग्ज़ के पक्ष का समर्थन किया करते हैं। किन्तु हमें तो यह देखना ही होगा कि उनकी इन युक्तियों में कितना तथ्य है, कहाँ तक बल है।

थोड़ी देर के लिए मान लीजिए कि हेस्टिंग्ज़ ने जो कुछ किया, समय की प्रतिकूलता के कारण ही किया, तो भी नैतिक दृष्टि से उसका यह कार्य कदापि समीचीन नहीं कहा जा सकता। क्या एक बलवान मनुष्य का अपने दुर्बल पड़ोसी के प्रति ऐसा ही कर्त्तव्य है? क्या महात्मा ईसा के इस उपदेश का कि "Do unto your neighbour as you would that he should do unto you," पूर्ण भी अक्षर सत्य तथा सर्वमान्य नहीं? और

* *Reports from Committees of the House of Commons. Vol. V. pp. 618-19.*

† *Selections from the Letters, Despatches and other State Papers in the Foreign Dept. of the Govt. of India.* G. W. Forrest, *Vol ii,* pp 512, 549, 557

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

क्या इसी सिद्धान्त का अनुसरण करने के लिए गत महा-युद्ध में समस्त सभ्य संसार ने भाग नहीं लिया था? लोग कहेंगे, इस समय और उस समय में ज़मीन-आसमान का अन्तर है। आज समाज सभ्यता के सर्वोत्कृष्ट आसन पर विराजमान है। इस समय से उस समय की तुलना कैसी? पर मैं कहता हूँ कि महात्मा ईसा का वह वाक्य आज की ही भाँति उस समय भी समस्त संसार में शान्ति तथा आनन्द की अविरल धारा प्रवाहित करता हुआ विश्वमैत्री के पथ पर अग्रसर हो रहा था। यदि कुछ थोड़े से क्षुद्राशयों ने उसका स्वाद नहीं चक्खा, उसमें एक बार गोता नहीं लगाया, तो इससे बनता-बिगड़ता ही क्या है? उस समय भी नैतिक विचार (Morality) का आसन इतना ही ऊँचा था, जितना कि वह आज है।

केवल इतना ही नहीं। हेस्टिंग्ज़ के रुपया लेने की विधि भी गर्ही थी। जब सन्धि द्वारा ऐसी कोई शर्त न होने पर भी चेतसिंह बराबर उसकी इच्छानुसार उसे रुपया देते गए, उसका आदर करते गए, उसका हुक्म मानते गए, तब भी उन पर कृतघ्नता का झूठा दोष लगा कर उन्हें गद्दी से उतार देना हेस्टिंग्ज़ की वीभत्स स्वेच्छाचारिता के अतिरिक्त और कहा ही क्या जा सकता है। यदि बनारस के महाराज का यह कर्त्तव्य बतलाया जाता है कि वे अङ्गरेज़ सरकार की प्रत्येक आज्ञा का बिना जीभ हिलाए पालन करते, तो क्या प्रत्युत्तर में यह नहीं कहा जा सकता कि बनारस की प्रजा के सुख-शान्ति का प्रयत्न करना अङ्गरेज़ सरकार का कर्त्तव्य भी था? इतिहास साक्षी है कि उसने ठीक इसका उल्टा किया। एक सर्वमान्य राजा को गद्दी से हटा कर एक निपट निकम्मे राजा को उसने उसकी जगह स्थापित किया। अधिक लिखने की कोई आवश्यकता नहीं है। वारन हेस्टिंग्ज़ के ये शब्द स्वयं उसे सबकी दृष्टि में दोषी ठहराते हैं। सन् १७७५ में बनारस जाने पर उसने लिखा था—"The province of Chait Singh is as rich and well-cultivated a territory as any district, perhaps, of the same extent in India." किन्तु वही सन् १७८४ में बनारस के विषय में लिखता है—"I was followed and fatigued by the clamours of the discontented inhabitants and the cause of their dissatisfaction existed principally in a defective, if not corrupt and oppressive administration."* पर इस सब से क्या? यहाँ कर्त्तव्याकर्त्तव्य की तो चर्चा ही नहीं चलाई जा सकती। इस जगह तो 'जिसकी लाठी उसकी भैंस' वाली कहावत ही ठीक चरितार्थ होती है।

---

* *Selections from the Letters Despatches, etc.* G. W. Forrest, *Vol. iii, p. 1082.*

दहेज

[श्री० रामावतार शुक्ल]

केते घरबारी कुल होत हैं भिखारी, और—
दम्पति-दुलारी केती क्वाँरी बिललाती हैं!
केतिक गुनागरी औ' परम सुशीला नारी,
निपट अनारिन के पाले परि जाती हैं!

जन्म भरि सेतीं केती विषम विधव-दुख,
ऊरध उसासि लै लै जीवन बिताती हैं!
परि जातीं केती 'ठहरौनों' के कुचक्र बीच,
'दायज' दवागि परि केती जरि जाती हैं!

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

संसार की वायु-विजयिनी वीरांगनाएँ

[श्री० रतनलाल मालवीय, बी० ए०]

वायुयान चलाने में स्त्रियों की अभूतपूर्व सफलता के सैकड़ों उदाहरण देख कर उन लोगों के आश्चर्य का ठिकाना न रहता होगा जो स्त्री जाति को अबला, पराधीन और निर्बल कहा करते हैं। भारत में तो अब भी नब्बे प्रतिशत लोग ऐसे हैं जो स्त्रियों को सन्तान जनने की मशीन, खाना पकाने वाली भठियारिन और पुरुषों की सेवा करने वाली लौंडी से अधिक कुछ समझते ही नहीं। पाखण्डियों के ढकोसलों ने और भारतीय समाज के वर्तमान विषाक्त वातावरण ने स्त्रियों को इतना अपाहिज और निस्सहाय बना दिया है कि बीसवीं संदी के इस स्वतन्त्र वायुमण्डल में भी वे बिना रक्षक के घर के बाहर पैर नहीं रख सकतीं, चाहे उनका रक्षक आठ-दस बरस का एक छोटा बालक ही क्यों न हो।

हमारी ये बहिनें, जिन्हें अपने अस्तित्व का, अपने भयङ्कर पतन का ही ज्ञान नहीं, संसार की महिलाओं की अद्भुत प्रगति का हाल क्या जानें? पाश्चात्य स्त्रियों को पुरुषों की ही नाईं स्वतन्त्रता और उन्नति के पूर्ण साधन प्राप्त हैं और यह उसी का परिणाम है कि पाश्चात्य स्त्रियाँ किसी भी क्षेत्र में पुरुषों से पीछे नहीं हैं।

वैज्ञानिक आविष्कारों में वायुयानों का आविष्कार बिलकुल नया है। साथ ही उसमें मनुष्य के कौतूहल की शान्ति के लिए सैकड़ों सुअवसर और पराक्रम दिखाने के हज़ारों साधन मौजूद हैं। यही कारण है कि पुरुषों की तरह स्त्रियों का भी ध्यान इस ओर विशेष रूप से आकर्षित हुआ है। और थोड़े ही समय में उन्होंने आशातीत सफलता प्राप्त कर ली है। मैं इस प्रबन्ध में संसार की कुछ ऐसी ही वीर महिलाओं की कर्म-गाथा का उल्लेख करूँगा। भारतीय स्त्रियों में यदि हृदय है तो उन्हें विचार और अपने सुधार की बहुत सी सामग्री इसमें मिल जायगी। यद्यपि वायुयानों के आविष्कार का श्रेय

इङ्गलैण्ड

को प्राप्त नहीं है तो भी उसने अपने जिन गुणों से संसार के पञ्चमांश पर अपना साम्राज्य स्थापित कर रक्खा है, उन्हीं के द्वारा वह इस क्षेत्र में भी संसार में सर्व-श्रेष्ठ हो गया है। उसके वीर और पराक्रमी नर-नारियों ने ही उसे यह गौरव प्रदान किया है। एमी जॉन्सन नाम की बाइस वर्ष की कुमारी ने वायुयान पर जो अद्भुत पराक्रम दिखलाया है उसकी वीरगाथा सुने छः मास से अधिक व्यतीत न हुए होंगे; उसकी वीरमूर्ति संसार अभी तक भूला नहीं है। कौन जानता था कि लन्दन के एक ऑफ़िस में टाइपिस्ट का कार्य करके अपनी जीविका उपार्जन करने वाली 'अबला' अकेली लन्दन से ऑस्ट्रेलिया तेरह हज़ार मील उड़ जायगी? यदि हम इस निर्बल और निर्धन लड़की को आश्चर्यजनक कहें तो अत्युक्ति न होगी। वह साधन-हीन थी, किसी का उसे सहारा न था, सहारा था केवल अपनी लगन और अन्तःकरण की प्रेरणा का। जिस दिन उसने हवाई शिक्षा का स्कूल देखा था उसी दिन उसके हृदय में वायुयान-सञ्चालन की कला सीखने की दृढ़ आकांक्षा उत्पन्न हो गई थी और साथ ही उत्पन्न हुई थी, स्कूल में प्रवेश करते ही, अपनी कला से संसार को चकित और मुग्ध कर देने की प्रबल इच्छा।

एमी ने इङ्गलैण्ड से ऑस्ट्रेलिया तक उड़ कर अपनी महत्त्वाकांक्षा पूरी कर ली। उसने संसार को चौंधिया दिया और संसार आँखें मल-मल कर उसे देखने लगा। परन्तु क्या संसार के लोगों ने कभी यह जानने की भी इच्छा की कि एमी को यह सफलता कितनी कठिनाइयाँ और आपत्तियाँ झेलने के बाद मिली? सितम्बर सन् १९२८ में जिस समय उसे स्टेगलेन एयरोड्रम में जाने से यह ज्ञात हुआ कि वह उस क्लब में कम ख़र्च में भर्ती हो सकती थी, उस समय वह वायुयान का क, ख, ग तक नहीं जानती थी। क्लब में प्रतिदिन एक घण्टे वायुयान की शिक्षा की फ़ीस पन्द्रह दिन के लिए एक

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

पौण्ड थी। एमी ने अपनी तनख़्वाह में से प्रति सप्ताह क्लब की फ़ीस के दस शिलिङ्ग बचाने के लिए अपने तैरने, टेनिस और नाच-रङ्गादि सबको तिलाञ्जलि दे दी।

संसार की सर्वश्रेष्ठ उड़ाकू महिला
मिस एमी जॉन्सन

उसी क्षण से उसने दुहरा जीवन व्यतीत करना प्रारम्भ कर दिया। दिन में ९ बजे से ५ बजे तक वह उन अगणित मिस जॉन्सनों में रहती थी जो लन्दन के धुँधले ऑफ़िसों को प्रकाशमान किया करती हैं और जिनमें उसकी कोई गणना न थी; और ६ बजे से ९ बजे तक प्रातःकाल में और ५ बजे सन्ध्या से अर्धरात्रि तक वह पुरुष-वेश में सिर से पैर तक एञ्जिन के तेल से लथ-पथ वायुयान की शिक्षा पाने में दत्तचित्त रहती थी। जिन लोगों ने उसे इस रूप में देखा है वे आसानी से पता लगा सकते थे कि उसका जीवन इन्हीं वायुयानों में से किसी एक को समर्पित होगा। ऐसा प्रतीत होता था कि इस कला में निपुणता प्राप्त करने के अतिरिक्त उसके जीवन का और कोई ध्येय ही नहीं है।

इसे कोई अस्वीकार नहीं कर सकता कि इङ्गलैण्ड की स्त्रियों को स्वतन्त्रता बहुत अधिक है, परन्तु इतनी स्वतन्त्रता होने पर भी उन्हें उतने साधन नहीं हैं जितने पुरुषों को। स्त्रियाँ कितनी ही योग्य क्यों न हों, उन्हें आर्थिक क्षेत्र तथा अन्य क्षेत्रों में सफलता का उतना अवसर नहीं है जितना पुरुषों को है। एमी इस भेद-भाव से बहुत जलती थी। इस सम्बन्ध में उसने एक बार अपने क्लब के एक साथी से कहा था—"क्या तुमने कभी मेरी कठिनाइयों का अनुभव किया है? क्या तुमने कभी लिङ्ग-भेद की उन रूढ़ियों का अनुभव किया है जिनके विरुद्ध मैं बग़ावत करने खड़ी हुई हूँ? मान लो हम

मिस एमी जॉन्सन यात्रा में

दोनों ने किसी उच्च पद के लिए दरख़्वास्त दी, तो क्या तुम समझते हो कि तुमसे पहिले मैं वह पद प्राप्त कर सकूँगी, यद्यपि तुम जानते हो कि हम दोनों के पास

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

एक ही लैसन्स होने पर भी मैं तुम्हें हवाई दौड़ में बुरी तरह पछाड़ सकती हूँ ? यह लिङ्ग-भेद मेरी सफलता के मार्ग का सब से बड़ा रोड़ा है।" यही जलन थी जिसके कारण एमी ने पुरुष जाति को लज्जित और परास्त करने के लिए यह यात्रा प्रारम्भ की थी।

वायुयान की शिक्षा में लैसन्स प्राप्त करते ही उसने ऑस्ट्रेलिया उड़ने की ठान ली। परन्तु वही उपर्युक्त भेद-भाव यहाँ भी टाँग अड़ा कर खड़ा हो गया। बेचारी एमी जिससे सहायता माँगने गई उसीने उसे हतोत्साह करके वापस कर दिया। इसका रहस्य लोगों को अभी तक नहीं मालूम कि उड़ने के साधन उसे कैसे प्राप्त हुए। हम तो इतना ही जानते हैं कि वह एक पुरानी छोटी

हवाई जहाज़ों की दौड़ में इङ्गलैण्ड का मस्तक ऊँचा करने वाली मिस एमी जॉन्सन की पाँच प्रतिकृति

सी वायुयान 'जैसन' पर उड़ी थी। और इतनी तेज़ी से उड़ी थी कि उसने कैप्टेन हिङ्कलर को भी मात कर दिया। केवल लन्दन से भारत तक ५००० मील उड़ने में वह कैप्टेन हिङ्कलर से दो दिन आगे आ गई थी।

संसार की दुलारी एमी को इस विकट परीक्षा में इङ्गलैण्ड से भारत तक की यात्रा में कोई विशेष कष्ट नहीं उठाना पड़ा, परन्तु रङ्गून से डार्विन तक, जहाँ उसे ऑस्ट्रेलिया में उतरना था, उड़ने में उसे जिन-जिन भयानक और रोमाञ्चकारी आपत्तियों का सामना करना पड़ा है उनका हाल जान कर बड़े-बड़े साहसी वीरों का भी हृदय भय से थर्रा उठेगा।

बैङ्ककॉक से सिङ्गोरा तक की अपनी यात्रा का वर्णन करते हुए एमी ने स्वयं लिखा है—"मुझे जब इस बात का ज्ञान हुआ कि मैंने समुद्र का किनारा छोड़ दिया है, जो मेरी यात्रा का मुख्य मार्ग है, और बाढ़ के कारण पानी से भरे हुए खेतों के ऊपर से उड़ रही हूँ तो मेरी निराशा का ठिकाना न रहा। इस समय मेरा मुख्य कार्य समुद्र का किनारा ढूँढ़ना था। परन्तु एक ओर मूसलाधार वर्षा और दूसरी ओर भयङ्कर तूफ़ान, दोनों में से कोई एक क्षण के लिए भी बन्द होने का नाम न लेता था। मैं पथ भूल कर कितने घण्टों तक भटकती रही, इसका मैं अनुमान नहीं लगा सकती। मैं जीवन से हाथ धो चुकी थी। मेरी आशा थी तो केवल मेरे पथ-प्रदर्शक यन्त्र और नक़्शे तथा कम्पास पर थी। इन्हीं के सहारे मैं समुद्र का किनारा ढूँढ़ सकती थी। और समुद्र का किनारा ही मेरे जीवन का आधार था। जिस समय पानी बन्द हुआ या जिस समय मैं ही उसके पार निकल गई उस समय मैं सिङ्गोरा से केवल ५० मील की दूरी पर थी।"

यही नहीं, इस भीषण यात्रा में एमी को कहीं १६,००० फ़ीट की ऊँचाई पर उड़ना पड़ा तो कहीं उसका वायुयान मीलों तक समुद्र की लहरों से केवल ६ फ़ीट की ऊँचाई पर उड़ता रहा था। न मालूम कौन सी लहर उछल कर उसे अपने अङ्क में छिपा लेती। एक बार तो ज़मीन पर उतरते समय उसकी 'मॉथ' (जो 'जैसन' का ही दूसरा नाम है) किसी अज्ञात खाई में जा गिरी थी और टक्कर से उसके पङ्खे चूर-चूर हो गए थे। इन विपत्तियों के झेलने के उपरान्त ही उसे ऑस्ट्रेलिया के समुद्र-तट के

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

दर्शन हुए थे। जब उसने पहिले पहिल समुद्र का किनारा देखा, तब वह 'ख़ुशी के मारे जहाज़ पर ही उछल पड़ी थी और पागल सी हो गई थी।' अन्त में जब वह कुशल-पूर्वक डार्विन पहुँच गई, जो उसकी यात्रा का अन्तिम लक्ष्य था, तब संसार ने सन्तोष की एक ठण्डी साँस ली।

ऑस्ट्रेलिया के लाखों दर्शकों ने उसे अपनी 'रानी' बना कर अपने मस्तक पर बिठाया। जब वह इङ्गलैण्ड वापस पहुँची, तब उसका जो सम्मान हुआ वह एक रानी के सम्मान से किसी प्रकार कम नहीं था। किसी समिति ने उसके स्वागत में भोज दिया, तो किसी दूसरी समिति

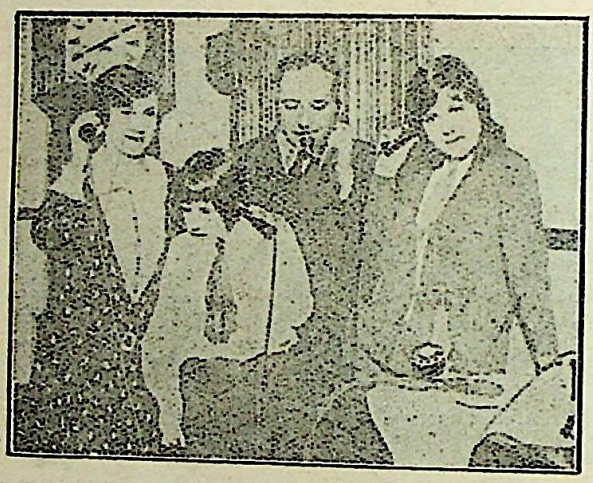

मिस एमी जॉन्सन के माता-पिता और बहिनें लन्दन में बैठे हुए टेलीफ़ोन द्वारा ऑस्ट्रेलिया में एमी से बातें कर रही हैं और उसकी अद्भुत सफलता के वर्णन सुन रही हैं।

ने मान-पत्र; एक कम्पनी ने उसे मोटरकार पुरस्कार में दी, तो दूसरी ने हज़ारों पौण्ड की थैली उस पर न्योछावर की। स्वयं सम्राट ने एमी को 'कमाण्डर ऑफ़ दी ब्रिटिश एम्पायर' की उपाधि से विभूषित किया है। इस उपाधि का सम्मान पुरुषों की 'नाइट' की उपाधि से कम नहीं है। संसार में आज शायद ही ऐसा कोई पत्र हो जिसने एमी की प्रशंसा के गीत न गाए हों। अब जब कभी इस 'निर्बल टाइपिस्ट' के विवाह की चर्चा उठती है तो सभी यही कहते हैं कि उसका पाणिग्रहण किसी लॉर्ड के साथ ही होना चाहिए। संसार एमी के जैसे पराक्रमों की आशा सन् २००० से पहिले न कर रहा था।

एमी जॉन्सन के पहले भी इङ्गलैण्ड की रमणियाँ अपनी अतुल शारीरिक और मानसिक शक्तियों का परिचय दे चुकी हैं। बेडफ़ोर्ड की डचेज़ ने लन्दन से बेटर उन उड़ कर और वहाँ से अल्पकाल में ही वापस आकर और लेडी हीथ ने अमेरिका उड़ कर संसार को चकित कर दिया है। इङ्गलैण्ड की इन वैभवशालिनी और सम्मानीय स्त्रियों के उदाहरण से क्या भारत के धनिक परिवारों की स्त्रियाँ कुछ शिक्षा ग्रहण करेंगी?

कुछ ही समय पहले की बात है, इङ्गलैण्ड के

मिस विनिफ़्रेड जॉयस ड्रिङ्कवाटर

यह सत्रह वर्षीया कुमारी संसार की सब से कम उम्र वाली एयर पाइलट है।

ओर हवाई जहाज़ों की दौड़ के लिए सम्राट ने जो पुरस्कार स्वरूप देना निर्धारित किया था वह वहाँ की एक रमणी—कुमारी बिनीफ़्रैड ब्राउन—ने पुरुष उड़ाकुओं को परास्त कर जीता था। इस दौड़ में ७२ पुरुष और महिलाएँ सम्मिलित हुई थीं, उनमें से चार महिलाओं को प्रथम दस उड़ाकों में स्थान मिला था। वायु में विजय प्राप्त करने में स्त्रियों ने जो सफलता प्राप्त की है उसका इससे बढ़ कर उज्ज्वल उदाहरण न मिलेगा। इङ्गलैण्ड को अपनी कुमारी स्पूनर के सम्बन्ध में तो यही

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

तक दावा है कि उससे दक्ष स्त्री उड़ाका आज संसार में कोई है ही नहीं।

एमी ने पाश्चात्य देशों की स्त्रियों में क्रान्ति उत्पन्न कर दी है। बहुत सी स्त्रियाँ तो एमो जैसे साहसपूर्ण कार्यों को करने के लिए छटपटाने सी लगी हैं। एमी की ही देखा-देखी अब इङ्गलैण्ड की मोटर-दौड़ में विजय प्राप्त करने वाली श्रीमती विक्टर ब्रूस ने भी इङ्गलैण्ड से

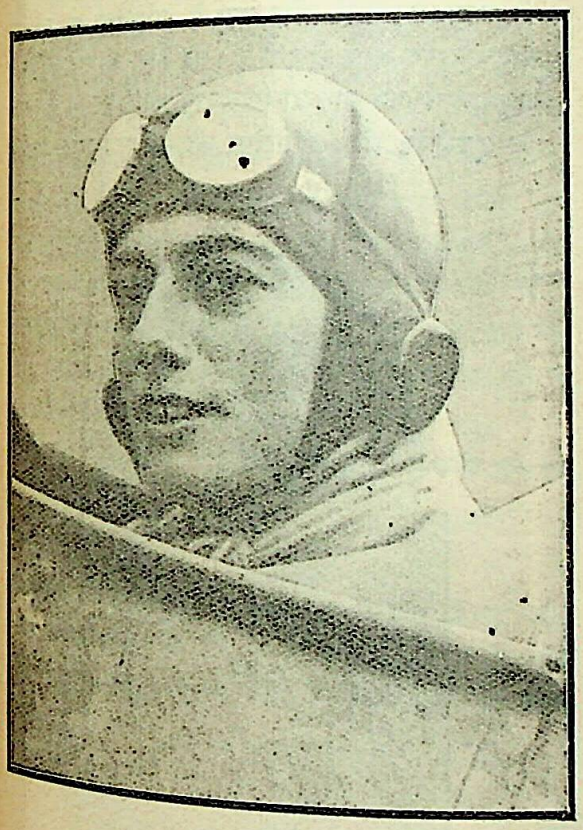

मिस स्पूनर

आपके लिए अङ्गरेज जाति का यह दावा है कि आपसे बढ़ कर दक्ष उड़ाका संसार में कोई है ही नहीं।

टोकियो (जापान) तक ११,००० मील १५ दिनों में उड़ने का विचार किया है। इस लेख के प्रकाशित होने के पहले ही शायद वह अपनी यात्रा पूरी भी कर चुकी होंगी। हवाई जहाज़ की केवल छः दिन की शिक्षा के बाद इतनी लम्बी यात्रा करना दुस्साहस नहीं तो क्या है? अब हम पाठकों को

अमेरिका

की कुछ वीराङ्गनाओं का परिचय देना चाहते हैं, जिन्होंने वायु पर विजय प्राप्त की है। लोग अभी भूले न होंगे, एक पचीस वर्षीय युवक चार्ल्स लिण्डबर्ग ने कई दिन और रात लगातार अकेले अमेरिका से पेरिस तक उड़ कर संसार को चकित कर दिया था। लिण्डबर्ग के इस अद्भुत पराक्रम से संसार भर की आँखें उस पर लग गईं। और अमेरिका की सहस्रों ऐश्वर्यशालिनी सुन्दरियों के हृदय उससे विवाह करने के लिए मचल उठे! परन्तु लिण्डबर्ग ने संसार के इस महा समृद्ध और सर्वाधिक वैभवपूर्ण देश के एक प्रशान्त भाग में जिस रमणी का पाणिग्रहण किया उसकी मनोवृत्ति लिण्डबर्ग के ही साँचे में ढली थी। श्रीमती लिण्डबर्ग अमेरिका की सर्वप्रथम महिला थीं, जिन्होंने हवाई उड़ान में सफलता प्राप्त कर लाइसेन्स लिया था। उनकी इस सफलता ने वहाँ की युवतियों में एक नई लालसा का सूत्रपात कर दिया है; वे वायु पर विजय प्राप्त करने में पुरुष से बाज़ी मारने के लिए उत्सुक हो गई हैं।

उनकी यह लालसा और उत्सुकता दिन प्रति दिन बढ़ती ही जाती है और उसका परिणाम यह हुआ है कि सैकड़ों क्लबों के अतिरिक्त, अमेरिका के हवाई शिक्षा के विशारद श्री० रोलेण्ड एच० स्पाउल्डिङ्ग के नेतृत्व में न्यूयॉर्क विश्वविद्यालय में १० सितम्बर सन् १९२९ ई० से महिलाओं की हवाई शिक्षा के लिए एक अलग स्कूल की भी स्थापना हो गई है। इस स्कूल के सिवाय हाउस्टन, केन्सस और मिन्नियापोलिस आदि शहरों में भी स्त्रियों को हवाई शिक्षा देने का प्रबन्ध किया गया है।

अभी हाल ही में एक उड़ाकू स्त्री अपने देश के दक्षिणी भाग की सैर करने निकली थी। जिस समय वह देहात के एक मैदान में उतरी, वहाँ के गाँव की सैकड़ों युवतियों ने उसे घेर लिया और उनमें से प्रायः सभी ने हवाई जहाज़ में उड़ना सीखने की हार्दिक इच्छा प्रकट की। इस साधारण सी घटना से वहाँ की स्त्रियों की मनोवृत्ति का पता चलता है। दिन प्रति दिन इस क्षेत्र में स्त्रियों की

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

संख्या बढ़ रही है। अमेरिका के संयुक्त राज्य में २०३ महिलाएँ ऐसी हैं जिन्होंने इस साल के अगस्त माह के पहिले ही हवाई जहाज़ के लाइसेन्स प्राप्त कर लिए हैं।

ये महिलाएँ केवल अपने आनन्द के लिए, सैर-सपाटे के लिए, अथवा केवल पराक्रम दिखाने के लिए ही उड़ना नहीं सीखतीं। पाश्चात्य सभ्य देशों में पुरुषों की नाईं

अमेरिका की सर्वप्रथम उड़ाकू महिला
मिसेज़ चार्ल्स ए० लिण्डबर्ग

अपने पति से हवाई जहाज़ चलाना सीख रही हैं।

स्त्रियों में भी स्वावलम्बन की मात्रा बहुत अधिक है और वे हवाई जहाज़ को अपनी जीविका का साधन बनाना चाहती हैं। उनके लिए इस क्षेत्र में स्थान भी बहुत है। व्यापारिक विभागों में पाइलट (उड़ाकू) का काम, हवाई जहाज़ों को बेचने वाली कम्पनियों के अधीन जहाज़ और उनके पुर्ज़े बेचने का काम, हवाई जहाज़ सम्बन्धी साहित्य बेचने का काम तथा हवाई बन्दर के होटलों का काम करके और हवाई जहाज़ सम्बन्धी पत्रों की सम्पादिका बन कर तथा हवाई जहाज़ों के क्लबों में शिक्षिका बन कर बहुत सी स्त्रियाँ जीविका कमा सकती हैं। इसमें सन्देह नहीं कि हवाई जहाज़ों का आविष्कार अभी नया है। इसी कारण अमेरिका की स्त्रियाँ हवाई जहाज़ सम्बन्धी ऊँचे पदों पर काम करने का स्वप्न देखा करती हैं। और आए दिन वे अपने पराक्रमों में एक दूसरे से बाज़ी मार ले जाने का प्रयास करती हैं। वहाँ ऐसी महिलाओं की कमी नहीं है जो वायुयान से हज़ारों मील की यात्रा करती हैं और वायु में वायुयान से बड़े-बड़े आश्चर्यजनक खेल खेलती हैं। वह दिन भी दूर नहीं जब वायुयान उनकी मामूली खिलवाड़ की चीज़ हो जायगा।

इङ्गलैण्ड और अमेरिका की भाँति फ्रान्स, जर्मनी,

जर्मनी की सब से प्रसिद्ध उड़ाकू लड़की
फ्रॉलीन जेनी लिण्ड

एक उड़ान में जर्मनी की राजधानी बर्लिन से केपटाउन जाने की तैयारी कर रही है।

इटली आदि देशों में भी ऐसी स्त्रियों की कमी नहीं है जिन्होंने वायु पर विजय प्राप्त करने में अद्भुत पराक्रम दिखाया है। संसार की वर्तमान वैज्ञानिक उन्नति में

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

जर्मनी

का ख़ासा हाथ है। विशेषकर कल-पुर्ज़ों और मशीनों के काम में वह सर्व-श्रेष्ठ माना जाता है। वायुयानों की उन्नति में भी वहाँ के स्त्री-पुरुषों का भाग महत्वपूर्ण है। वहाँ की स्त्रियाँ किसी क्षेत्र में अन्य सभ्य देशों की स्त्रियों से पीछे नहीं हैं। दूसरे देशों की नाईं जर्मनी की स्त्रियों ने हवाई विद्या में भी ख़ूब उन्नति कर ली है। और दिन प्रति दिन इस क्षेत्र में उनकी संख्या बढ़ती ही जाती है। इङ्गलैण्ड को यदि अपनी एमी जॉन्सन का गर्व है तो जर्मनी भी अपनी 'फ़ालीन जेनीलिण्ड' पर फूला नहीं समाता। एमी को इस प्रकार इङ्गलैण्ड का गौरव बढ़ाते देख कर फ़ालीन जेनी की भी आकांक्षा जर्मनी का गौरव बढ़ाने की हुई है। जर्मनी की यह वीराङ्गना शीघ्र ही जर्मनी की राजधानी बर्लिन से उड़ कर केपटाउन जाने की तैयारी में लगी हुई है। ईश्वर उसे सफलता और चिरायु दें। संसार की ये वीराङ्गनाएँ केवल अपने देश की ही सम्पत्ति नहीं हैं, वे संसार के स्त्री-समाज का गौरव और उनकी पथ-प्रदर्शिकाएँ हैं।

संसार के अन्य देश जहाँ इस प्रकार उन्नति कर रहे हैं, वहाँ हमारा देश

भारत

बीसवीं शताब्दी के इस स्वतन्त्र वायु-मण्डल में भी पराधीन है। उसका निज का अस्तित्व नहीं है, और जब तक उसे अपने मस्तिष्क से सोचने और अपने पैरों से चलने का अवसर न मिलेगा, वह किसी भी क्षेत्र में अन्य स्वतन्त्र देशों का मुक़ाबला नहीं कर सकता। परन्तु इतनी कठिनाइयों के होते हुए भी भारत अपनी सीमित स्वतन्त्रता का उपयोग ख़ूब अच्छी तरह कर रहा है। भारत के कई बड़े-बड़े शहरों में हवाई शिक्षा के क्लब खुल गए हैं और युवकगण उत्साहपूर्वक उड़ना सीख रहे हैं। इञ्जीनियर और चावला जैसे कुछ साहसी युवकों ने इङ्गलैण्ड से भारत हवाई जहाज़ में उड़ कर अपनी योग्यता का परिचय भी दिया है। परन्तु कुछ तो अज्ञान, कुरीतियों, रूढ़ियों और सामाजिक अत्याचारों के कारण तथा कुछ असुविधाओं के कारण भारत के महिला-मण्डल ने कोई आशाजनक सफलता अब तक नहीं दिखाई। भारत की भी कुछ वीर युवतियों ने हवाई शिक्षा के सर्टिफ़िकेट अवश्य ले लिए हैं, परन्तु उनकी किसी सफल यात्रा के समाचार हमें अभी तक नहीं मिले। हाँ, कूचबिहार की महारानी इङ्गलैण्ड से भारत हवाई जहाज़ में अवश्य आई थीं; और उनका तथा उनकी सुपुत्री का ध्यान इस ओर आकर्षित भी हुआ है। एमी जॉन्सन के उदाहरण से उत्साहित होकर भारत की युवतियों को भी वायुयानों के क्लबों और स्कूलों में यह कला सीखना आरम्भ कर देना चाहिए। उड़ना सीखने के उपरान्त उन्हें यह मालूम हो जायगा कि वायुयान आत्म-विकास का सब से अच्छा साधन है। हवा के रुख़ से तो ऐसा प्रतीत होता है कि वह दिन दूर नहीं है, जब भारत-माता भी एमी जॉन्सनों को अपनी गोद में खिलावेगी।

स्वागत

[मुक्त]

तुम बढ़ते ही चले! नहीं कुछ कष्टों का अनुमान किया।
बाँके वीर सिपाही, यह तूने कैसा अभिमान किया॥

आ, चल लौट, किन्तु यह किसकी लाश? अरे, अरमानों की।
भक्त पुजारी लिए जा रहा है अञ्जलि बलिदानों की॥

स्वागत है! आ मृत्यु॥ यहाँ पर तेरा अभिनन्दन होगा।
धन्य! धन्य॥ तुझको पाकर विकसित मेरा जीवन होगा॥

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

उद्भ्रान्त आलाप

[श्री० महातम सिंह चौहान]

वह पराक्रम ! अहा ! वह पराक्रम ! वह शक्ति ! क्योंकर कहूँ, कैसे कहूँ कि वह पराक्रम कैसा था ? स्मरण आते ही वक्षस्थल विदीर्ण होने लगता है, मस्तक लट्टू की नाईं नाचने लगता है, चक्षु-अस्थि-कूप एवं श्रवण-रन्ध्र से विद्युत की ज्वालामयी लपटें निकलने लगती हैं। तब क्योंकर बताऊँ कि वह पराक्रम कैसा था ?

वह न तो स्फुलिङ्ग सदृश्य था, न निदाघ की उग्र रवि-रश्मि का सा था, न तो चक्रि के अरि-विनाशक चक्र जैसा, न सुरेन्द्र के अक्षय वज्र जैसा था और न था अङ्गद के अचल तथा पराक्रमी पद के समान।

वह मदन महीपति के पुष्प-बाण से भी गुरु-तर था, वह उन्मुक्त वारि-धारा से भी अधिक शक्ति-शाली, कन्दर्प के दिग्विजयी शङ्ख-ध्वनि से भी अधिक तेजस्वी एवं शब्दमय था, वह प्रशान्त सिन्धु से भी गम्भीर और मेघमाला का समुद्भिन्न-कर्ता, परम देदीप्यमान, त्रिभुवन-विजयी सूर्यदेव से भी बढ़ कर तेजपूर्ण था।

मेधावी तथा मनीषी महापुरुषों के माथे में ऐसा मस्तिष्क नहीं, लेखकों की लेखनी में वह शक्ति नहीं, भाषा में वैसा शब्द नहीं, नरों में वैसी चिन्ताशक्ति नहीं, कवि की स्वप्नमयी कल्पना में वह कवित्व नहीं, वाणी के ऐसी वाणी नहीं, जो उसकी उपमा ढूँढ़ सके। जगत में उसकी उपमा कोई योग्य पदार्थ, कोई महान वैभव, कोई उन्नति, सुख, शान्ति, बल, वीरत्व, कुछ भी नहीं दिखलाई पड़ता। तब कैसे कहूँ कि वह पराक्रम कैसा था ? हाय ! वह पराक्रम ! क्या उसे एक बार और नहीं देख सकूँगा ?

हे परमेश्वर ! मैं और कुछ भी नहीं चाहता, चाहता हूँ केवल एक बार देखना उस महान पराक्रम को, वह घोर प्रलयङ्कर पराक्रम, जिससे मैं अपने अरिगणों से बदला ले सकूँ।

वह देखो ! हमारी पुकार पर, हमारी व्याकुलता पर, हमारी उन्मत्तता और प्रलाप पर सूर्यदेव हँस रहे हैं। हँस लो ! तुम भी अपनी आरत सन्तान पर हँस लो, अपना अरमान मिटा लो, अपनी उत्कट अभिलाषा की पूर्ति कर लो, नहीं तो ऐसा सुअवसर प्राप्त नहीं होगा ! अल्पकाल के अन्तर ही उस महापराक्रम के सामने तुम्हारा तेज भी फीका पड़ जायगा। पर हे दिवाकर ! यह तो बताओ कि तुम हँसते क्यों हो ? हमारी किस दुर्दशा पर हँसते हो ? हाँ, जाना, हमारी दुर्बलता, हमारे अज्ञान, हमारी अवनति, हमारे पारस्परिक बैर, द्वेष, ईर्ष्या, जलन और डाह पर हँसते हो। पर याद रखना, हमने इन राक्षसों पर, इन क्रूर मदमत्त राक्षसों पर विजय प्राप्त कर ली है। अब ये दुष्ट राक्षस हमारे उन्नति-मार्ग में कण्टक नहीं बन सकते। अब हम जीवन-संग्राम में विजयी होंगे।

आज विश्व के कोने-कोने से "अग्रसर होओ, अग्रसर होओ" का तुमुल घोष सुनाई दे रहा है। इस युग में इस घोष का शोभन स्वन भी कुछ भीषण रूप धारण कर रहा है। निस्सन्देह जीवन-संग्राम महाभीषण है। एक मनुष्य दूसरे मनुष्य का गला घोंट रहा है, एक जाति दूसरी जाति को निगलना चाहती है। प्रलयकाल की उत्ताल तरङ्गों की तरह स्वार्थ-सागर अपनी आनन्दोर्मियों द्वारा क्षितिज को परिप्लावित कर रहा है। स्वार्थ की मात्रा वर्ष-

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

कालीन सरसी के समान अति वेग से बढ़ती हुई समस्त मेदिनी को सलिल-सिक्ता बना रही है। रक्तपिपासुओं की अधिकता से संसार की शान्ति क्षण-क्षण में भङ्ग हो रही है। दिशाओं में संग्राम का भीषण कोलाहल मचा हुआ है। शान्ति के लिए विश्व-जनता छटपटा रही है। पर शान्ति, जो तृषा-पीड़ित के प्राणों में सुधा उँडेलती है, वह शान्ति कहाँ ?

कुछ भी समझ में नहीं आता कि इस समय क्या किया जाय ? किस उपाय का उपयोग किया जाय ? क्या उत्तर है, क्या यत्न है ? परन्तु विह्वलता से, आत्म-विस्मृत होने से काम न चलेगा। धैर्य धारण करो। सोचने की शक्ति का अवलम्बन करो। उपाय पाओगे, अवश्य पाओगे। उत्तर मिलेगा, निश्चय मिलेगा। उठो, जागो, उद्यत हो, पराक्रम दिखाओ, यही एक उत्तर है। जीवन का, जागृति का, नवयुग और क्रान्ति का यही महासन्देश है।

अब उठो। उठो और देखो कि संसार में हमारी क्या स्थिति है ? संसार की दौड़ में हम कौन सा भाग ले सकते हैं ? इसकी मीमांसा करने के लिए पुनः एक बार उठो। राजपूतों की वीरता का ध्यान कर उठो, मरहठों की प्रचण्डता एवं गम्भीरता की याद कर, सिक्खों के बाँकेपन और पठानों की तलवार का स्मरण कर उठो, और सफलता, उन्नति, कृतकार्यता और स्वतन्त्रता को हाथों-हाथ बँटा लो।

शीघ्र उठो, अब सोने का समय नहीं। वह देखो ! कनक-किरीटिणी उषा सज-धज कर कभी से रङ्गमञ्च पर आ गई है। तम-तोम कटे हुए पतङ्ग की भाँति कितनी दूर निकलता हुआ चला गया। काल अपने पुराने कलुषित अन्धपरम्परागत जराजीर्ण कलेवर को बदल रहा है। पृथ्वीतल से द्वेष, ईर्ष्या, क्रोध, पशुबल, स्वेच्छाचार का निरङ्कुश राज्य उठ रहा है। सभी अपने-अपने स्वत्व के हेतु, अपने नैसर्गिक, अधिकारों के लिए मर मिटने को प्रस्तुत हैं। क्या तुम अकेले पीछे पड़े रहोगे ? तुम भी आत्मोन्नति के लिए उठ खड़े होवो। मित्रों के कन्धे से कन्धा भिड़ा कर, अरियों के सीने से सीना अड़ा कर, हिमाञ्चल-शिखर की भाँति सर्वोच्च हो जाओ।

परिवर्तनशील विश्व में सभी वस्तुओं का परिवर्तन हो रहा है, सारा संसार बदल रहा है। टर्की बदल गया, अफ़ीमची चीन जाग उठा, ईजिप्ट की काया-पलट हो गई, अफ़्रिका के हबशियों में चेतना का सञ्चार हो गया। पर तुम ? तुम क्या सोते ही रहोगे ? वह महान पराक्रम, जिसके सामने समस्त संसार ने एक दिन मस्तक झुकाया था—भय से नहीं प्रेम से—क्या उसे पुनः प्रगट न करोगे ? क्या संसार के मानस क्षितिज से अज्ञान के काले बादलों को काट कर पुनः ज्ञान-सूर्य का जीवनदायी प्रकाश न फैलाओगे ? वह शक्ति, वह शौर्य, वह विशाल पराक्रम, क्या पुनः प्रगट न करोगे ?

वीर ! उठो। बहुत सो चुके, और कब तक सोते रहोगे ? कब तक "भीरु भारतीय" का नाम चरितार्थ करते रहोगे ? कब तक पारस्परिक ईर्ष्या, द्वेष, बैर, कलह आदि अपयशों के कलङ्क को अपने शुभ चरित्र पर चढ़े रहने दोगे ? कब तक अपने पूर्व पुरुषों की कीर्ति, पराक्रम और मान को अपनी इस अधम कायरता से कलङ्कित करते रहोगे, वीर !

अनल-ताप से सन्तप्त होने पर ही काञ्चन की, सान पर चढ़ाए जाने पर ही हीरा की, महाभयङ्कर विपत्ति में ही पुरुष की परीक्षा होती है। क्या तुम इस परीक्षा में खरे न उतरोगे, अपने पूर्वजों की अमरकीर्ति के उत्तराधिकारी होने योग्य अपने को प्रमाणित न करोगे ? वीर ! वीरश्रेष्ठ ! उठो। उठो और अपना वह पराक्रम, वह महान दुर्द्धर्ष पराक्रम प्रगट करो, जिसके समक्ष उन्मत्त राक्षसों का दल विनय से मस्तक झुका देता है, जिसके समीप परपीड़क अत्याचारियों का आतङ्क ध्वंस हो जाता है।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

आज मेदिनी पर मदमत्त राक्षसों का निरङ्कुश नृत्य हो रहा है। क्या वे तुम पर अत्याचार कर रहे हैं? क्या उनके बन्धन-पाश से मुक्त होना चाहते हो, उनके प्रमादी कर्मचारियों की क्षुद्र लिप्सा से त्राण पाना चाहते हो, उनकी अनिर्वचनीय प्रवञ्चना से दूर रहना चाहते हो, उनके कुटिल षड्-यन्त्रों, उनकी कुत्सित मनोवृत्ति, उनके घातक सङ्कल्पों से आत्म-रक्षा करना चाहते हो? तो उठो। वीर! उठो। आज पुनः अपना वह पराक्रम दिखाओ, सत्य के लिए मर मिटने का, सेवा के लिए बलिदान हो जाने का, मानव-समाज के मङ्गल के लिए हँसते-हँसते मृत्यु को आलिङ्गन कर लेने का पराक्रम दिखाओ। इस विराट पराक्रम, इस प्रचण्ड तेज के सामने कौन ठहर सकता है? विजय, तुम्हारी विजय अनिवार्य है। वीर! उठो, पराक्रम दिखाओ!

अन्तर्वेदना

[श्रीयुत दिवाकर प्रसाद]

(१)

व्यथाएँ कितनी मैंने सहीं;
बिछाए उनके पथ में फूल।
पुलक कर गले लगाना दूर,
न देखा इधर उन्होंने भूल॥

(२)

विहँस कर मलयानिल ने आज—
सुनाया है यह शुभ सन्देश।
—'अरे पगली! उठ, कर शृङ्गार,
तुम्हारे आते हैं हृदयेश'॥

(३)

अरे! वे आए कब चुपचाप,
न जाने फिर कब किया प्रयाण।
हाय! बैठी थी मैं निश्चिन्त,
जान उनको निश्छल अनजान॥

(४)

रिझाने जाती उनको कभी,
कली-सा ले यह रूप अनूप।
छेड़ने आ जाते हैं मुझे—
चपल मलयानिल का ले रूप॥

(५)

जलज-जल-वैमनस्य का खेल
खेलते बीते कितने वर्ष!
उलझती ही जाती यह गाँठ,
कहाँ है निठुर विश्व में हर्ष?
अरे निर्दय! ये थके निदान—
बिलखते जाएँगे क्या प्रान?

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

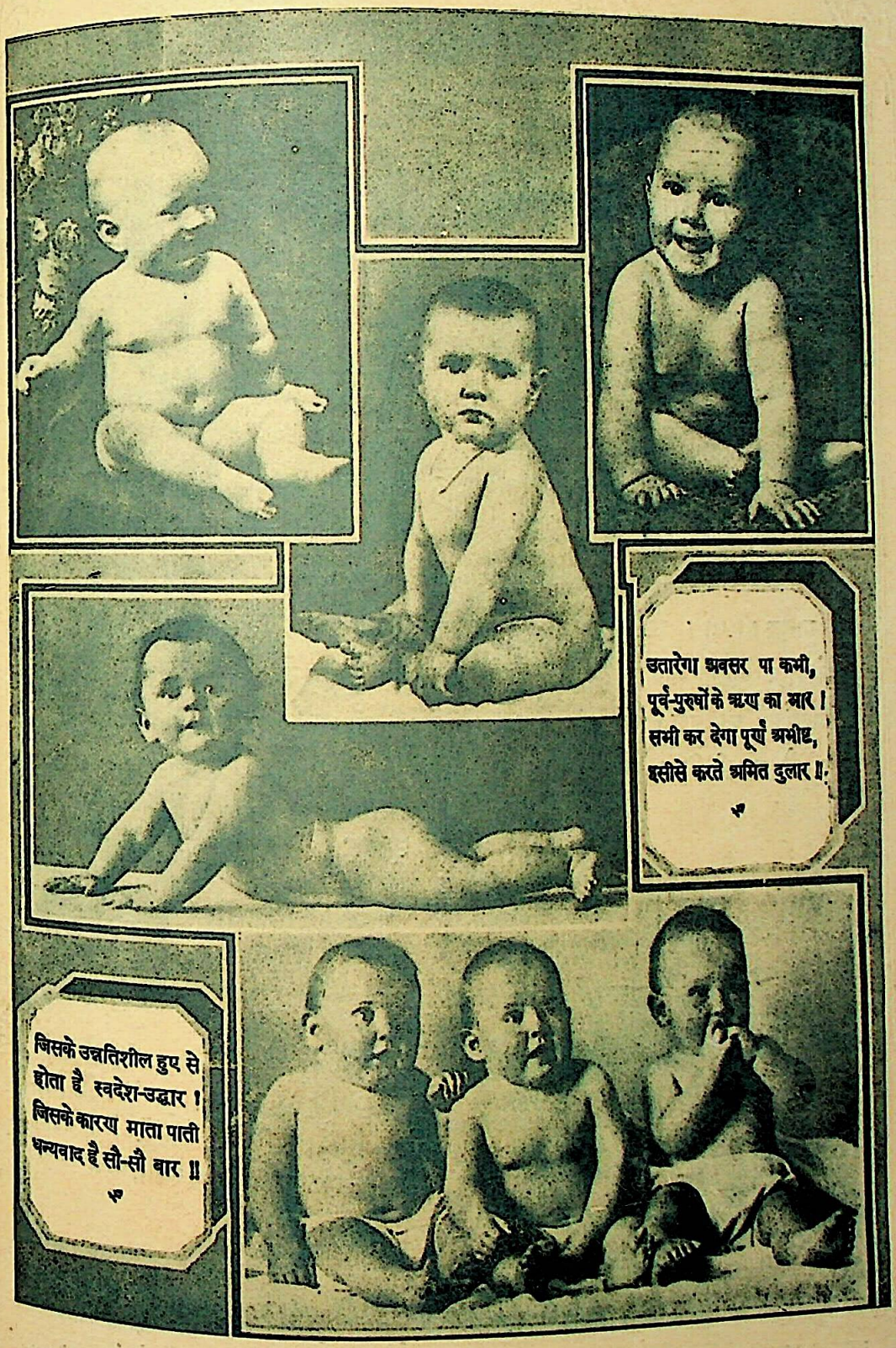

सुघड़ माताओं के भाग्यशाली लाल

प्रभु ईसा की क्षमाशीलता, नबी मुहम्मद का विश्वास।
जीव-दया जिनवर गौतम की, आओ देखो इनके पास॥

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

भविष्य

सचित्र राष्ट्रीय साप्ताहिक

के ग्राहक बन कर अपना औचित्य पालन कीजिए। सभी बड़े-बड़े और सुप्रसिद्ध विद्वानों की सम्मति है कि इससे सुन्दर कोई भी साप्ताहिक आज तक इस अभागे देश में प्रकाशित नहीं हुआ था और न किसी पत्र का इतना आतङ्क ही था। इसका एक मात्र कारण यही है कि यह राष्ट्रीय-पत्र केवल सेवा की पुनीत भावना से प्रेरित होकर प्रकाशित किया गया है और इसके प्रवर्तकों को इस बात का सन्तोष है कि हिन्दी-संसार ने पत्र की जितनी क़द्र की है, उसकी किसी को भी आशा नहीं थी।

आर्ट-पेपर का कवर

लबालब पृष्ठ-संख्या	४०	वार्षिक चन्दा केवल	६)
चुने हुए चित्र लगभग	४०	छः माही	३॥)
चुटीले कार्टून	३-४	एक प्रति का मूल्य	=)

यदि आप अब तक ग्राहक नहीं हैं तो नमूने की एक प्रति मँगा कर देखिए अथवा अपने यहाँ के एजण्ट से माँगिए—लगभग सभी स्थानों में 'भविष्य' की एजन्सियाँ क़ायम हो गई हैं। जहाँ न हों वहाँ के

एजण्टों को शीघ्रता करनी चाहिए

तार का पता : "भविष्य" व्यवस्थापक 'भविष्य' चन्द्रलोक, इलाहाबाद टेलीफ़ोन-नम्बर : २०५

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

अध्यात्म-तत्व अथवा मानव-धर्म

[श्रीमत्स्वामी प्रज्ञानपाद]

यह आश्चर्यपूर्ण धृष्टता मालूम होगी कि मानव के सामने, मानव-समुदाय के सामने, मानव धर्म की चर्चा कैसी? हम सभी मानव हैं, अपना धर्म अवश्य जानते हैं, फिर इसे बताने की क्या ज़रूरत? परन्तु इसमें आश्चर्य की कोई बात नहीं। आश्चर्य की बात यह है कि हम लोग मानव होते हुए भी अपना धर्म नहीं जानते। हमारा धर्म हमारे भीतर है, वह हमारे सब से समीप है, हम उसके साथ सर्वापेक्षा अधिक परिचित हैं, फिर भी उसका ज्ञान नहीं रखते। यही आश्चर्य है। वास्तव में हम अपना धर्म जानते हुए भी नहीं जानते। इसीलिए इस विषय में कुछ कहने की आवश्यकता है।

मानव धर्म मानव के इतना समीप है कि उससे बढ़ कर अन्य किसी पदार्थ के साथ मानव का सामीप्य हो ही नहीं सकता। हमारा धर्म हमसे अत्यन्त निकट है, इतना निकट कि हम उसे भूल गए हैं। मनुष्य की बुद्धि इतनी विशाल, इतनी जटिल हो गई है कि अत्यन्त सरल बातों को समझना उसके लिए मुश्किल हो गया है; नज़दीक की चीज़ को वह देख ही नहीं सकता, उसकी दृष्टि जब पड़ती है तो दूर पर। आज विश्व-ब्रह्माण्ड का कौन सा रहस्य मनुष्य से छिपा हुआ है? वह हवा में उड़ता है, समुद्र में डूब कर हज़ारों मील का चक्कर काट आता है, स्थल पर उसकी गति को रुद्ध करनेवाली कोई शक्ति रह ही नहीं गई। मनुष्य ने हिमालय की चोटियों पर चढ़ कर अपनी विजय-पताका फहराई है, ध्रुव-प्रदेशों का कोना-कोना छान डाला है; अणु-परमाणु से लेकर अरबों-खरबों मील और उससे भी अधिक दूरस्थ ताराओं का ज्ञान उसे हस्तामलक है। परन्तु अपने आपको, अपने धर्म को, जिससे मनुष्य एक पल-विपल के लिए भी पृथक नहीं हो सकता, वह नहीं जानता। मनुष्य की बुद्धि इतनी जटिल हो गई है।

यहाँ एक कहानी याद आती है। एक वैयाकरण पण्डित जी कहीं जा रहे थे। रास्ते में एक जङ्गल पड़ता था। लोगों ने कहा—"पण्डित जी, जङ्गल की ओर से न जाइए, वहाँ बाघ रहते हैं।" पण्डित जी ने कहा—"बाघ? शुद्ध शब्द तो व्याघ्र है न? व्याघ्र से हमें क्या डर? व्याघ्र शब्द 'वि+आ+घ्रा' से बना है, अर्थात जो विशेष रीति से सूँघे वह व्याघ्र। यही न होगा कि वह मुझे विशेष रीति से सूँघेगा? सूँघा करे, हमारी क्या हानि?" इस तरह 'व्याघ्र' शब्द की व्युत्पत्ति के फेर में पड़ कर पण्डित जी ने बाघ के असल स्वरूप को भुला दिया। वह जङ्गल में गए, उन्हें एक भयानक व्याघ्र ने आ घेरा। पण्डित जी "बाघ-बाघ" चिल्लाने लगे। गाँव वाले दौड़े आए और किसी तरह पण्डित जी को व्याघ्र के पञ्जे से छुड़ा लिया। गाँव वाले बोले—"पण्डित जी, कहिए हम लोगों ने कहा था न कि जङ्गल में बाघ है? आपने हमारी बात न सुनी।" पण्डित जी ने उत्तर दिया—"हाँ, आप लोगों ने कहा तो ज़रूर था, पर मुझे क्या मालूम कि बाघ को ही व्याघ्र कहते हैं।" पण्डित जी की बुद्धि इतनी जटिल हो गई थी कि अपनी पण्डिताई के मारे वे इस सहज बात को न समझ सके।

मानव समाज का भी ठीक यही हाल है। लोगों की बुद्धि बहुत बढ़ गई है, इतनी जटिल हो गई है कि छोटी-छोटी साधारण बातें अब उनकी समझ में आने योग्य न रहीं। वे विश्व के सारे मर्म जान रहे हैं; आकाश और पृथ्वी पर की कोई बात उनसे छिपी नहीं रही। पर अपने ही भीतर रहने वाले अपने धर्म को वे नहीं जान सके। उनका धर्म उनके सब से समीप है, इसीलिए वे उसकी उपेक्षा करते हैं, उसे सोचने, समझने, जानने की चेष्टा नहीं करते।

मानव का धर्म मानव के भीतर सदा विद्यमान है; उसे छोड़ कर मानव, मानव नहीं रह सकता। कोई वस्तु अपने धर्म को छोड़ कर पुनः वही वस्तु बनी रहे, यह असम्भव है। धर्म वह पदार्थ है जिसके बिना धर्मी न रह

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

सके, जिसके अभाव में धर्मी का अस्तित्व असम्भव हो जाय। जिस विशिष्ट गुण के कारण किसी वस्तु का अस्तित्व रहता है, जिस विशेष पदार्थ के कारण किसी जीव की सत्ता, किसी प्राणी का जीवन सम्भव है, वही विशिष्ट गुण, वही विशेष पदार्थ उस वस्तु का धर्म, उस जीव का धर्म, उस प्राणी का धर्म है। अग्नि का धर्म दाहन-शक्ति है, जल का धर्म तरलता, सुन्दरी का सौन्दर्य, रोगी का रोग, लम्पट का लम्पटता है। आग न जलावे और पानी न बहे, यह नहीं हो सकता। दाहन-शक्ति के बिना आग आग नहीं है; तरलता के बिना जल जल नहीं। सौन्दर्य न रहे और सुन्दरी रहे, यह असम्भव है। रोगी में रोग, लम्पट में लम्पटता, वीर में वीरता, दयालु में दया अनिवार्य है। वीरत्व न करे और दया न दिखावे तो और कुछ हो सकता है, वीर और दयालु नहीं हो सकता। इस विषय में विद्यापति की एक बड़ी सुन्दर उक्ति है। राधिका कृष्ण से कहती हैं—

पाखि क पाख मीन क पानी।
जीव क जीवन हम तुहुँ जानी॥

पक्ष रहे तभी तो पक्षी, पक्ष न रहे तो पक्षी कैसे? जल न रहे और मछली रहे, यह कभी सम्भव है? जीव तभी जीव है जब उसमें जीव हो। इसी प्रकार मानव तभी मानव है जब उसमें मानव धर्म रहे, अन्यथा वह मानव नहीं है।

यह मानव धर्म है क्या? वह पदार्थ कौन सा है, जिसके रहने से मानव की मानवता सिद्ध होती है? वह कौन सा गुण है, जिसके बिना मानव वस्तुतः मानव नहीं रह जाता?

मनुष्य और पशु की समानता

इसे जानने के लिए पहले हमें वह कसौटी ढूँढ़नी पड़ेगी, जिसमें कसने से मानव के प्रत्येक गुणावगुण की परीक्षा हो सके। जब तक माप, जोख, तुलना आदि की सुविधा न हो तब तक किसी वस्तु का उचित निरूपण नहीं हो सकता। मानव धर्म के निरूपण के लिए भी हमें वह मापदण्ड, वह कसौटी, वह प्रमाण खोजना पड़ेगा जिसकी सहायता से मानव जीवन के प्रत्येक अङ्ग की परीक्षा, मानव के प्रत्येक गुण और अवगुण की जाँच करके हम कह सकें कि यह मानव के योग्य है अथवा अयोग्य, मानव धर्म के साथ इसका समन्वय सम्भव है या असम्भव। वह मापदण्ड कौन सा है, वह कौन सी कसौटी है, जिससे हम लोग मनुष्य के सभी गुणों की परीक्षा, मनुष्य के सब प्रकार के बड़प्पन की तुलना किया करते हैं? थोड़ा विचार कर देखिए, वह कौन सा प्रमाण है, जिसे हम मनुष्य का आदर्श मानते हैं, जिससे हम मनुष्य की महत्ता की उपमा दिया करते हैं? ध्यान से देखने से मालूम होगा कि वह कसौटी, वह मापदण्ड, वह प्रमाण पशु है। मनुष्य के उत्तम से उत्तम और नीच से नीच सभी गुणों की तुलना पशु के ही गुण और अवगुण से की जाती है। इस विषय में पशु ही मनुष्य का आदर्श है। इसी आधार पर लोगों ने दो जगत, दो देश माने हैं। मानव पशु, मैन बीस्ट, इन्सान हैवान, आदि प्रयोग प्रत्येक देश और प्रत्येक भाषा में प्रचलित हैं। पशु ही वह प्रमाण है, जिससे मनुष्य के जीवन की सफलतापूर्वक परीक्षा कर सकते हैं। यही वह मापदण्ड है जो हमें बता सकता है कि मानव और पशु में अन्तर क्या है, सच्चा मानव धर्म क्या है।

मनुष्य की नीचता का उदाहरण पशु से दिया जाता है; यह जानवर है, तू जानवर है, आदि प्रयोग हम सबने सुने हैं। मूर्ख या बेवक़ूफ़ की तुलना गधे और उल्लू से की जाती है; अर्थात मूर्खता में मनुष्य गधे और उल्लू को मात नहीं कर सकता। अन्ध-विश्वास व अन्धानुगमन के लिए भेड़ियाधसान की उक्ति प्रसिद्ध है। लम्पटता का वर्णन अभीष्ट हो तो कहते हैं, यह भ्रमर है, फूल फूल पर मँडराता फिरता है। इन प्रयोगों द्वारा मनुष्य स्वयं यह स्वीकार करता है कि नीचता में वह पशु से बढ़ कर नहीं हो सकता। नीचता में पशु मनुष्य का आदर्श है। फिर उत्तम गुणों के लिए भी पशु ही प्रमाण है। वीरता का वर्णन करना हो तो कहते हैं, नरसिंह है, नरशार्दूल है। पञ्जाब-केशरी, महाराष्ट्र-केशरी, आदि ऐसे ही उदाहरण हैं। कोई मनुष्य बड़ा एकाग्रचित्त हो तो कहते हैं, यह तो बगुला सा ध्यान लगाता है। विद्यार्थियों के आदर्श लक्षण में कहा है—"काकचेष्टा वकोध्यानं श्वाननिद्रा तथैवच....." इत्यादि। सद्गुण के ग्रहण और दुर्गुण के परित्याग में मनुष्य का आदर्श हंस है। स्त्रियों के नेत्र-सौन्दर्य, गमन-शैली, मधुर स्वर, आदि की उपमा भी पशु-जगत में ही मिलती है। कुरङ्गनयनी, मृगलोचनी,

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

गजगामिनी, कोकिलकण्ठी, पिकवचनी, आदि विशेषणों द्वारा हम अपनी स्त्रियों को गौरवान्वित समझते हैं। चातुरी में सियार पाँड़े हमारे आदर्श हैं। बल और पराक्रम में भी हमारा आदर्श पशु ही है। हम अपने महा पराक्रमी पुरुषों को पुरुषर्षभ और बलिष्ठ पहलवानों को शेर कह कर समादृत करते हैं।

जब गामा ने पश्चिम के सुप्रसिद्ध पहलवान जेबिस्को को देखते ही देखते दो सेकेण्डों के भीतर पछाड़ कर चित कर दिया तो गामा की कला पर जेबिस्को मुग्ध हो गया। उस समय इस उदारचेता पाश्चात्य मल्ल के मुँह से गामा की प्रशंसा में आप ही आप ये शब्द निकल पड़े—"गामा शेर है।" गामा संसार का सर्वश्रेष्ठ मल्ल हुआ, परन्तु वह शेर से बढ़ कर न हो सका। अन्त में शेर ही उसका आदर्श रहा।

केवल पशु-जगत में ही नहीं, मनुष्य के भले और बुरे गुणों की उपमा उद्भिद जगत में भी पाई जाती है। शरीर बहुत बड़ा हो जाय और तदनुरूप बुद्धि न हो तो कहते हैं—ताड़ की तरह दिन-दिन बढ़ता जाता है, पर बुद्धि का ठिकाना ही नहीं। सुन्दर दाँतों की उपमा दाड़िम के दाने से दी जाती है। कमल की उपमा से तो सारा आर्य-साहित्य भरा पड़ा है। आँख, मुख, हाथ, पाँव, कोई ऐसा अङ्ग नहीं बचा जिसके सौन्दर्य की उपमा कमल के अनुपम सौन्दर्य से न दी गई हो। मनुष्य के सुयश की तुलना कपास की शुभ्रता के साथ की जाती है। नम्रता के लिए कहते हैं, भाई दूब बन कर रहना चाहिए। उरु के लिए कदली-स्तम्भ और बाहु के लिए शाल वृक्ष की उपमा प्रसिद्ध है।

इन गुणों में पशु और पेड़-पौधे वास्तव में मनुष्य जाति के आदर्श होने योग्य हैं भी। जो सत्य अन्तर्हृदय में छिपा रहता है वह भाव या भाषा द्वारा प्रगट हो ही जाता है। मनुष्य का अन्तर्हृदय सच्चे भाव से यह जानता है कि उपरोक्त गुणों में पशु जाति मनुष्य से कहीं बढ़ कर श्रेष्ठ है। इन गुणों में पशु आदर्श है। मनुष्य उस आदर्श तक पहुँचने की चेष्टा कर रहा है, पर अभी बहुत पीछे है और पीछे रहेगा। अपनी इस हीनता को मनुष्य अनुभव करता है इसीलिए पशु के साथ अपना मुक़ाबला करके, पशु के गुणों के साथ अपने गुणों की उपमा देकर मनुष्य अपने को गौरवान्वित समझता है।

मनुष्य को अपने जितने भी गुणों का गर्व है, वे सभी पशु में पाए जाते हैं। यदि केवल इन गुणों की दृष्टि से देखा जाय तो मनुष्य और पशु में कोई भेद नहीं है। वैज्ञानिक लोगों ने बहुत प्रयत्न किया कि मानव और पशु में तथा जानवर और पेड़-पौधों में कोई अन्तर कर सकें, पर अन्त में उन्हें हार माननी पड़ी। वे इनको भिन्न करने वाली रेखा नहीं खींच सके। सर जगदीशचन्द्र ने प्रमाणित करके दिखा दिया कि पशु तथा वृक्षों में कोई अन्तर नहीं है। उनके आविष्कारों ने वैज्ञानिक संसार में हलचल मचा दी। उनके आविष्कारों के बाद 'नेचर' के सम्पादक महाशय ने लिखा था—"वृक्ष स्थावर पशु है और पशु है जङ्गम वृक्ष।" (A plant is a stationery animal and an animal is a moving plant) कहने का तात्पर्य यह कि जानवर तथा पेड़-पौधे में कोई भेद नहीं है। इसी प्रकार यह भी प्रमाणित होता है कि मनुष्य तथा पशु के बीच कोई भेद नहीं है। दोनों का व्यवहार एक ही प्रकार का है; दोनों में काम, क्रोध, स्नेह, घृणा, दया, क्रूरता, मैत्री, द्वेष आदि भाव एक ही प्रकार से दिखाई पड़ते हैं।

आख़िर मनुष्य को गर्व किस बात का है, जिसके कारण वह अपने को पशु से श्रेष्ठ समझता है? मनुष्य की धारणा है कि शारीरिक गठन और चरित्र में वह पशु से श्रेष्ठ है। मनुष्य समझता है कि कला-कौशल में, सामाजिक सङ्गठन में, विनय और मर्यादा के पालन में वह पशु से श्रेष्ठ है। मनुष्य का यह भी दावा है कि उसकी इच्छाएँ, उसकी प्रवृत्तियाँ पाशविक इच्छाओं और पाशविक प्रवृत्तियों से अधिक संस्कृत हैं। एक शब्द में, मनुष्य को अपनी सभ्यता और संस्कार पर गर्व है; और इन्हीं के कारण वह अपने को पशु की अपेक्षा श्रेष्ठ समझता है। परन्तु यह गर्व मिथ्या है, यह दावा सर्वथा निराधार और भ्रमपूर्ण है। वैज्ञानिकों ने दिखा दिया है कि पशुओं तथा पौधों का शारीरिक गठन और चरित्र, मनुष्य के शरीर-गठन तथा चरित्र की अपेक्षा, कहीं अधिक समुन्नत हैं; पशुओं में भी ठीक वैसा ही सङ्गठन, वैसा ही कलाकौशल, वैसी ही इच्छाएँ और वासनाएँ मौजूद हैं जैसी मनुष्यों में हैं, बल्कि उनमें ये वस्तुएँ मनुष्यों से भी अधिक उत्कृष्ट हैं। इन बातों में पशु से श्रेष्ठ होने की तो कौन कहे, मनुष्य उनकी बराबरी का होने का भी दावा नहीं कर सकता।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

शेर को देखिए, शारीरिक गठन में कौन मनुष्य उसका मुक़ाबला कर सकता है? उसके जैसा विशाल वक्षस्थल, क्षीण कटि, मज़बूत पञ्जे, पैने दाँत, अङ्गार की तरह चमकती आँखें किस मनुष्य को प्राप्त हैं? बिल्लियाँ रात के घनीभूत अन्धकार में भी देख सकती हैं। परन्तु मनुष्य? मनुष्य इतना दीन है कि उसे दिन के प्रकाश में भी उपनेत्र की आवश्यकता पड़ती है। देखने में गृद्ध, सूँघने में कुत्ते, सुनने में घोड़े और हिरन की शक्ति मनुष्य की शक्ति की अपेक्षा कहीं अधिक तीव्र है। पशुओं के पास आत्मरक्षा के लिए नख, सींग, दन्त आदि अनेक शस्त्र हैं, परन्तु मनुष्य इन सभी प्राकृतिक शस्त्रों से वञ्चित है। हिम और ताप से रक्षा पाने के लिए पशु-पक्षियों के शरीर में रोम और पर आदि आवरण विद्यमान हैं, परन्तु मनुष्य के शरीर में इनका भी अभाव है। पशुओं की शारीरिक शक्ति और कार्यक्षमता भी मनुष्य से कहीं बढ़ी चढ़ी है। गधे को देखिए, बेचारा बहुत ही दीन जानवर समझा जाता है, परन्तु वह जिस तरह दिन भर अथक परिश्रम करता है, उस तरह कितने मनुष्य कर सकते हैं? बैल में परिश्रम करने की शक्ति मनुष्य से इतनी अधिक है कि जो व्यक्ति दिन भर परिश्रम करता रहता है और कभी विश्राम या विनोद का नाम नहीं लेता उससे लोग कहा करते हैं, भाई, क्यों तेली के बैल की तरह मर रहे हो? इन बड़े जानवरों को छोड़ दीजिए। छोटे-छोटे कीट-पतङ्गों को देखिए; उनके शरीर में भी मानव शरीर की अपेक्षा अधिक कार्य-क्षमता, अधिक सहनशीलता, अधिक शक्ति दिखाई पड़ती है। वैज्ञानिकों ने परीक्षा करके देखा है कि एक चींटी अपने शरीर के वज़न के तीन हज़ार गुना भारी वजन खींच सकती है। भला इस अतुल शक्तिमत्ता के सामने मनुष्य की शारीरिक शक्ति की क्या तुलना? जब पशु-जगत में ऐसे-ऐसे विराट शक्ति वाले जीव मौजूद हैं, तब मनुष्य का शारीरिक गठन और शक्ति में पशुओं से श्रेष्ठ होने का दावा कहाँ ठहरता है?

पशु के चरित्र के साथ मनुष्य के चरित्र की तुलना कीजिए। दया, प्रेम, स्नेह, मैत्री, सहानुभूति, स्वामिभक्ति, विश्वासपात्रता, सेवा, धैर्य, वीरत्व, ये ही गुण हैं जिनमें मनुष्य समझता है कि वह पशु से श्रेष्ठ है। परन्तु ये सभी गुण पशु में मनुष्य की अपेक्षा अधिक मात्रा और उत्कृष्ट रूप में पाए जाते हैं। हाथी, बन्दर, मछली आदि नाना प्रकार के जानवरों पर वैज्ञानिकों ने परीक्षा करके देखा है कि प्रेम और सहानुभूति की मात्रा जितनी उनमें पाई जाती है उतनी मनुष्य में नहीं। अफ्रिका के जङ्गलों में शिकार करने वाले शिकारियों ने देखा है कि जब किसी हाथी को गोली लग जाती है और वह चलने में असमर्थ हो जाता है, तब उसके झुण्ड के अनेक हाथी आकर उसे प्रोत्साहन देते हैं, उसे उठाते हैं और भगा ले जाने की कोशिश करते हैं। मछली जब जाल में फँस जाती है तो अन्य मछलियाँ उसे बचाने की प्राणपन से चेष्टा करती हैं, और तब तक उसके पास से नहीं हटतीं जब तक उसके बचने की थोड़ी भी आशा शेष हो। स्वामिभक्ति और विश्वास-पात्रता में कुत्ते और मुर्ग़े का उदाहरण लीजिए। आपका नौकर आपको धोखा दे सकता है, पर ये जानवर आपके घर की रखवाली करने में कभी विश्वासघात न करेंगे। कुत्ते, मुर्ग़े, नेवले जान पर खेल कर भी स्वामी के स्वार्थ की रक्षा करते हैं। धैर्य में तो पशुओं ने पराकाष्ठा ही प्राप्त कर ली है। बाबर और रॉबर्ट ब्रूस जैसे हमारे महा-पराक्रमी योद्धाओं को जिससे धैर्य की शिक्षा मिली थी, वह एक छोटा सा कीड़ा था। एक चींटी को दीवार पर चढ़ने की चेष्टा में इक्कीस बार गिरने के बाद बाईसवीं बार सफल होते देख कर बाबर के मन में तुर्किस्तान को जीतने की नवीन स्फूर्ति पैदा हो गई। इसी प्रकार स्कॉटलैण्ड के देशभक्त रॉबर्ट ब्रूस के विषय में प्रसिद्ध है कि एक मकड़ी के धैर्य को देख कर उन्हें अपनी मातृ-भूमि की स्वाधीनता के लिए पुनः युद्ध करने का उत्साह प्राप्त हुआ था। वीरता में शेर, सेवा में आम आदि फलों के वृक्ष, उपयोगिता में गाय, इनका मुक़ाबला कौन मनुष्य कर सकता है?

यदि सामाजिक सङ्गठन को देखें तो पशुओं का सङ्गठन मनुष्य के सङ्गठन से श्रेष्ठ प्रतीत होता है। चींटी एक बहुत ही छोटा कीड़ा है, पर मनुष्य-समाज में जितनी अनूठी बातें हैं, वे सब चींटियों में पाई जाती हैं। उनमें सेना, सेनापति, स्वामी, सेवक आदि सब भेद हैं। उनमें डॉक्टर हैं। वे घर बनाती हैं। यहाँ तक देखा गया है कि जिस प्रकार हम लोग दूध पीने के लिए गाय पोसते हैं, उसी प्रकार चींटियाँ भी गाय पालती हैं। प्रन्टलिस नामक

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

एक कीड़े के शरीर से मधुर रस चूता है। चीटियाँ उसे पाल कर उसके रस से दूध का काम लेती हैं। हम लोग अपनी गायों के लिए अलग गोठ बनाते हैं; ठीक वैसे ही चींटियाँ भी इस कीड़े के लिए अपने बिल के अन्दर छोटे से सूराख़ के समान एक अलग कोठरी बनाती हैं। उसमें उसे बाँधती हैं, उसे भोजन देती हैं, उसके मल-मूत्र को बड़ी ख़ूबी से साफ़ करती हैं; उसके आने-जाने के लिए रास्ता बनाती हैं; उसकी रखवाली के लिए पहरेदार तक नियत करती हैं। चींटियों की सामाजिक व्यवस्था ऐसी सुन्दर है कि तारीफ़ करते ही बनती है। जिस समय वे भोजन की खोज में निकलती हैं अथवा किसी अन्य काम से उन्हें बाहर जाना पड़ता है उस समय, हम सबने देखा होगा, वे किस तरह फ़ौजी ढङ्ग से क़तार बाँध कर चलती हैं। उनका एक कप्तान होता है, जो क़तार के आगे-आगे चलता है। वह शत्रुओं से मुठभेड़ करता और अपने अनुचरों की रक्षा करता है। अन्य चींटियाँ उसका अनुसरण करती हैं। इस कप्तान से यदि दूसरी ओर से आती हुई किसी चींटी से भेंट हो गई तो प्रायः देखा जाता है कि वे एक दूसरे के मुँह से मुँह सटा कर न जाने क्या बातचीत कर लेते हैं; और बात समाप्त होने पर कप्तान अपने अनुचरों सहित या तो पीछे लौट कर उस चींटी के साथ हो लेता है अथवा सीधे अपनी राह चला जाता है। इससे स्पष्ट है कि भाषा द्वारा भाव-विनिमय की पद्धति न केवल मनुष्यों में, बल्कि चींटी जैसे छोटे-छोटे कीट-पतङ्गों में भी वर्तमान है।

अब ज़रा मधुमक्खियों के जीवन पर ग़ौर कीजिए। मधुमक्खियों के समान व्यवस्थित सामाजिक जीवन साधारण मनुष्य-समाज अभी नहीं पा सका है। उनमें एकता और सङ्गठन विचित्र है। श्रम-विभाग तो उनके जीवन का प्रकृत अङ्ग है। उनमें शहद बटोरने के लिए मज़दूर होते हैं, पहरा देनेवाले सिपाही, लकड़ी काटनेवाले बढ़ई, मकान बनाने वाले राज हैं, उपभोग करने वाली रानियाँ हैं। हमारी स्त्रियों की तरह मादा मक्खी केवल अण्डे देती है और घर (छत्ते) को सम्हाल कर रखती है। नर मक्खी बाहर जाकर फूलों से रस इकट्ठा कर लाती है। बढ़ई मक्खी वृक्षों में या काठ में छेद करके मकान बनाती है। राज मक्खी छत्ते तैयार करती है। अन्य विभाग की मक्खियों का भी काम अलग-अलग बँटा हुआ है। तारीफ़ की बात यह है कि भिन्न-भिन्न विभागों की मक्खियाँ अपने-अपने काम में अत्यन्त निपुण और तत्पर होती हैं। मधुमक्खियों की एकता और सङ्गठन की परीक्षा करनी हो तो इधर-उधर उड़ती हुई किसी अकेली मक्खी को छेड़ दीजिए। देखिएगा वह उड़ कर फ़ौरन छत्ते पर जाती है और वहाँ अपने साथियों को ख़बर देती है। फिर झुण्ड के झुण्ड मक्खियाँ उड़कर अपराधी मनुष्य पर आक्रमण करती हैं और ऐसे भीषण रूप से उसका पीछा करती हैं कि पानी में डूबने पर भी जान नहीं बचती। परन्तु अपराधी मनुष्य के पास ही यदि कोई दूसरा निर्दोष व्यक्ति खड़ा हो तो मक्खियाँ उसकी ओर देखेंगी भी नहीं। यह मधुमक्खियों के सुविकसित न्याय-बुद्धि का एक सुन्दर उदाहरण है।

चींटियों और मधुमक्खियों की ही तरह बन्दर, भालू, हिरन, सूअर, तोता, कबूतर, चूहा, तितली प्रभृति सभी पशु-पक्षियों और कीट-पतङ्गों में सामाजिक व्यवस्था पाई जाती है। इससे मालूम होता है कि सामाजिक सङ्गठन मनुष्य जाति की कोई विशेषता नहीं है। यदि विचार करके देखा जाय तो इस क्षेत्र में मनुष्य अभी पशु से बहुत-कुछ सीख सकता है।

कला का भी पशुओं में अभाव नहीं है। कला में पशुओं का मुक़ाबला कर सकना मनुष्य के लिए सर्वथा असम्भव है। सब कलाओं में हृदय को हिलाने वाली कला सङ्गीत है। पर सङ्गीत में कोकिल के साथ कौन गायनाचार्य प्रतिद्वन्द्विता कर सकते हैं? ध्यानपूर्वक देखने से मालूम होगा कि पशु ही वास्तव में कला के प्रमाण हैं। पशुओं का कला-कौशल ही वह आदर्श है जिसे मनुष्य अनुकरण करने की चेष्टा करता है। सङ्गीत के स्वरों के नाम पर विचार करने से यह बात पूर्णतः स्पष्ट हो जायगी। षड्ज, ऋषभ, पञ्चम आदि नामों से साफ़ ज़ाहिर है कि सङ्गीत में पशु ही मनुष्य का मार्ग-दर्शक है। लोग सङ्गीत में वही तरङ्गायित भाव लाने का यत्न करते हैं जो कोयल के पञ्चम स्वर में है। पर इस यत्न में अभी उन्हें सफलता नहीं मिली है। इस विद्या में मनुष्य अभी पशु से बहुत पीछे है।

यह तो हुई ललित कला की बात; अब गृह-निर्माण कला, नगर-निर्माण कला, बड़ी-बड़ी सड़कें, सुरङ्ग, पुल, नहर, बाँध आदि बनाने की कला पर भी विचार

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

कीजिए। इन क्षेत्रों में शताब्दियों के वैज्ञानिक अनुसन्धान और अनुभव के बाद, स्टीम, एलेक्ट्रिसिटी, मशीनों और औज़ारों की सहायता से, मनुष्य आज जो कुछ भी कर सकता है, उससे अधिक चमत्कारपूर्ण कार्य पशु-जगत में, बिना किसी औज़ार के, न जाने किस युग से होते चले आ रहे हैं। समुद्र में एक प्रकार की मछली होती है, जो एलेक्ट्रिसिटी पैदा कर सकती है। यह अपनी एलेक्ट्रिसिटी से किसी को वैसा ही गहरा आघात पहुँचा सकती है, जैसा हम लोग बैटरी से कर सकते हैं। एक दूसरी मछली निशाना मारने में मनुष्य से कहीं अधिक निपुण है। यह पानी के बूँदों की गोली चला कर मक्खियों को इस तरह भिगा देती है कि वे सीधे उसके मुँह में जा गिरती हैं। ऐसा पक्का निशाना मार सकने वाले व्यक्ति मनुष्यों में कितने हैं? कई पशु एञ्जिनियरिङ्ग की विद्या में ऐसे पारङ्गत हैं कि उनकी कला पर मुग्ध हो जाना पड़ता है।

उत्तरी अमेरिका और कैनेडा में एक प्रकार का ऊद-बिलाव पाया जाता है। इसे गहरे जल से बहुत प्रेम है। यह अपने रहने के लिए नदियों में बाँध बाँध कर उनके जल को रोक देता है। जैसे हमारे एञ्जिनियर मकान, कारख़ाना अथवा पुल आदि बनाने के पहले उसके लिए उपयुक्त स्थान खोजते हैं, वैसे ही यह जन्तु बाँध बाँधने के पहले यह अच्छी तरह देख लेता है कि उसके लिए कौन सा स्थान उपयुक्त होगा। जहाँ नदी के किनारे दोनों ओर बहुतायत से वृक्ष पाए जाते हैं वहीं यह बाँध बनाना आरम्भ करता है। यह वृक्षों को अपने पैने दाँतों से काट-काट कर गिरा देता है। जब बहुत से वृक्ष गिर जाते हैं तब यह उन्हें पानी के बहाव की सहायता से खींच कर नदी में ले जाता है; वहाँ उन्हें नदी के एक किनारे से दूसरे किनारे तक बिछा देता है; फिर मिट्टी, कङ्कड़, पत्थर इत्यादि लाकर उन पर डाल देता है। इससे नदी के आर-पार एक मज़बूत दीवार खड़ी हो जाती है, जिससे नदी का प्रवाह बिलकुल रुक जाता है। इससे वहाँ एक गहरा जलाशय तैयार हो जाता है। जब यह जन्तु समझता है कि पानी बहुत ज़्यादा हो गया तो बाँध को एक जगह काट देता है और फालतू पानी बह जाने पर पुनः उसकी मरम्मत कर देता है। जब यह देखता है कि किनारे के सभी वृक्ष कट गए और दूर से वृक्षों को ढोकर लाने में कठिनाई होती है तो यह नदी की धारा को एकदम बन्द कर देता है। इससे नदी का पानी बढ़ कर दोनों किनारे की भूमि पर फैल जाता है। तब यह जन्तु वृक्षों की जड़ तक नहर खोदता है और उन नहरों की सहायता से वृक्षों को काट कर नदी में बहा लाता है। जब यह देखता है कि नदी का प्रवाह बहुत तेज़ है और उसके सामने यह सीधा बाँध नहीं तैयार कर सकता तब यह बाँध को टेढ़ा करके बनाता है। यह बाँध अर्द्धवृत्ताकार होता है और उसका टेढ़ा भाग नदी के प्रवाह के उलटे की ओर बढ़ा रहता है। इस प्रकार वस्तुओं को टेढ़ी कर देने से उनकी मज़बूती बहुत बढ़ जाती है। यह आधुनिक एञ्जिनियरिङ्ग का एक बहुत बड़ा सिद्धान्त है। आजकल जितने बड़े-बड़े पुल, इमारत, मशीनें आदि बनती हैं, उनमें इस सिद्धान्त से बहुत काम लिया जाता है। जन-साधारण इस सिद्धान्त को नहीं जानते, पर यह जन्तु इससे अच्छी तरह परिचित है। अपने लिए मकान बनाने और उसमें आने-जाने के लिए सुरङ्ग खोदने में भी यह जन्तु ऐसे-ऐसे उपायों से काम लेता है, जिन्हें देख कर यह मान लेना पड़ता है कि इसे आधुनिक एञ्जिनियरिङ्ग के सिद्धान्तों का प्रकाण्ड ज्ञान है।

अब एक दूसरे एञ्जिनियर को देखिए। अर्जेन्टाइन राज्य में चूहे की जाति का एक जानवर पाया जाता है, जिसे वहाँ की भाषा में 'विसकच' (Viscacha) कहते हैं। इस जाति के जानवरों ने अपने रहने के लिए ज़मीन के भीतर गाँव के गाँव और शहर के शहर बसा लिए हैं। वे अपने लिए बड़े सुन्दर मकान बनाते हैं, जिनमें कई कोठरियाँ और दरवाज़े होते हैं। उनके नगरों में सड़कों, गलियों और सुरङ्गों की जैसी वैज्ञानिक व्यवस्था है, वैसी जन-साधारण की बस्तियों में नहीं पाई जाती। इनके रास्ते, मिट्टी के गिरने से, कभी-कभी बन्द हो जाते हैं। इससे विसकचों के गाँव का गाँव ज़मीन के नीचे क़ैद हो जाया करता है। ऐसी विपत्ति में पास-पड़ोस के विसकच अपने पीड़ित भाइयों की जो सहायता करते हैं वह मनुष्य-समाज के लिए अनुकरणीय है। पड़ोस के गाँवों से झुण्ड के झुण्ड विसकच दौड़ पड़ते हैं और रास्तों को खोद कर उस गाँव वालों को बाहर निकाल लाते हैं। इन जानवरों को अपने घरों को सजाने और सुन्दर बनाने की भी बड़ी चिन्ता

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

JNANAMANDIR LIBRARY Jangamawadi Math Varanasi Acc. No. 3079

रहती है। बाहर जब कोई सुन्दर काँच, पत्थर, हड्डी अथवा पर मिल जाता है, ये उसे फ़ौरन उठा लाते हैं और घर में इस तरह रखते हैं, जिससे घर की सुन्दरता बढ़ जाय।

पशु-जगत में एञ्जिनियरिङ्ग के और भी उदाहरण देखिए। चींटी, दीमक, मधुमक्खी आदि की गृह-निर्माण कला जितनी विकसित है, उसे देख कर हम आसानी से समझ सकते हैं कि जिन वैज्ञानिक सिद्धान्तों को हम लोगों ने शताब्दियों के कष्टमय परिश्रम के बाद आविष्कृत किया है, उनसे ये छोटे-छोटे पशु-पक्षी और कीट-पतङ्ग न जाने कितने युगों से परिचित हैं। इनके मकान जितने सुन्दर, जितने स्वच्छ और स्वास्थ्यकर होते हैं, हम लोगों के मकान उतने स्वच्छ और स्वास्थ्यकर अभी तक नहीं हो सके हैं। केवल दाँत और नख की सहायता से ये लोग जैसी सुन्दर-सुन्दर चीज़ें बना लेते हैं, हम लोग अपने समुन्नत आरे, रन्दे और रुखानी से अभी तक वैसी सुन्दर चीज़ें नहीं बना सके हैं। बेचारे ऊदबिलाव के पास क्या है? केवल दाँत और नख द्वारा वह जैसा अद्भुत बाँध तैयार कर लेता है, वैसा यदि मनुष्य को तैयार करना हो तो न जाने कितने सामान, कितने मज़दूर, कितने द्रव्य की आवश्यकता होगी। ऐसे काया में हम लोगों के सामने द्रव्य सम्बन्धी जो भयानक कठिनाइयाँ आ उपस्थित होती हैं, बेचारा ऊदबिलाव उन कठिनाइयों और चिन्ताओं का स्वप्न भी नहीं देख सकता। जिस कार्य को वह बात की बात में कर लेता है, उसीके लिए हमें नाना कष्ट उठाने पड़ते हैं, हज़ारों तकलीफ़ें झेलनी पड़ती हैं। ऐसी अवस्था में इन पशुओं के मुक़ाबले में, कला में, हमारी श्रेष्ठता कहाँ प्रमाणित होती है?

केवल शारीरिक शक्ति, चरित्र, सङ्गठन और कला में ही नहीं, जीवन के सभी क्षेत्रों में पशु मनुष्य का आदर्श है। इच्छाओं और प्रवृत्तियों में भी मनुष्य का आदर्श पशु ही है। इच्छा से प्रवृत्ति होती है। सब इच्छाओं का सामान्य नाम 'बढ़ना' कह सकते हैं। 'बढ़ने' की इच्छा मानव और पशु दोनों में समान भाव से विद्यमान है। यह इच्छा तीन रूप से प्रगट होती है, धन-सम्पत्ति में बढ़ने की इच्छा, संख्या अथवा परिवार में बढ़ने की इच्छा, यश तथा प्रसिद्धि में बढ़ने की इच्छा। इन्हीं इच्छाओं को शास्त्रकारों ने एषणा नाम दिया है। द्रव्य या मात्रा में बढ़ने की इच्छा को वित्तैषणा, स्त्री-पुत्रादि द्वारा संख्या में बढ़ने की इच्छा को दारैषणा वा पुत्रैषणा, और समाज में रहने तथा कीर्त्ति पाने की इच्छा को लोकैषणा कहा है। ये तीनों एषणाएँ जैसे मनुष्य में वैसे ही पशु में भी पाई जाती हैं। दोनों में अन्तर केवल यह है कि पशु इनमें आदर्श है, मनुष्य उस आदर्श का अनुकरण करने वाला।

धन एकत्र कर रखने की इच्छा में मनुष्य का आदर्श भ्रमर तथा चींटी हैं। परिमित द्रव्य से कोई तृप्त नहीं होता है। 'और' 'और' की आकांक्षा सबको रहती है। सौ रुपया मिले तो दो सौ पाने की इच्छा, दो सौ मिले तो चार सौ की, और चार सौ भी मिल जाय तो 'और' की कामना बनी ही रहती है। मनुष्य और पशु दोनों का यही हाल है। दारैषणा वा पुत्रैषणा अर्थात् स्त्री और परिवार पाने की इच्छा भी मनुष्य और पशु दोनों में समान है। कामशक्ति, सन्तानोत्पादन की शक्ति दोनों में है। उसी शक्ति से वे स्त्री से मिलते हैं। स्त्री-प्रसङ्ग में सुख होता है। उस सुख के लिए मनुष्य और पशु दोनों विह्वल होते हैं और उसकी प्राप्ति के लिए अनेक प्रयत्न करते हैं, नाना कष्ट झेलते हैं। इस सुख की वासना इतनी प्रबल है कि इससे जीव को कभी तृप्ति होती नहीं दिखाई देती। 'और' 'और' की वासना सदा बनी रहती है। स्त्री-पुरुष के संयोग से सन्तान की उत्पत्ति होती है। सभी प्राणी अपनी सृजन शक्ति का, अपने रङ्ग-रूप की सन्तान पैदा करने में, उपयोग करते हैं। सन्तान को संसार में प्रवेश करने योग्य बनाने के लिए भी सभी प्राणी अपने-अपने ढङ्ग से उन्हें पाल-पोस कर बड़ी करते हैं। ऐसा करना प्रत्येक जीव का धर्म है। परन्तु इस धर्म के पालन में पशु जितनी तत्परता, जितनी कर्त्तव्य-निष्ठा दिखाता है, मनुष्य नहीं। जानवर अपने बच्चे को कभी मैला-कुचैला नहीं रहने देता; बच्चे के शरीर पर उसने जहाँ कोई गन्दगी देखी कि उसे फ़ौरन चाटना शुरू कर देता है और चाटते-चाटते उसे पूर्णतः निर्मल बना देता है। मनुष्य अपने बच्चों की सफ़ाई पर इतना ध्यान कभी नहीं देता। मनुष्य के बच्चों की अपेक्षा कुत्ते और बिल्लियों के बच्चे अधिक साफ़ रहते हैं, यह तो हम सब लोगों ने ही देखा होगा। बच्चों के लालन-पालन के बाद उनकी शिक्षा का समय आता

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

है। प्रत्येक माता-पिता का यह धर्म है कि सन्तान को ऐसी शिक्षा दे, जिससे वह अपनी वृत्ति स्वयं कमा सके। मनु ने स्पष्ट शब्दों में आज्ञा दी है—

उत्पाद्य पुत्रांस्तु पिता तेषां वृत्तिं प्रकल्पयेत् ॥

पिता को चाहिए कि पुत्र उत्पन्न करके, उनका पालन-पोषण करने के बाद, उनकी आजीविका की व्यवस्था करे। पशु अक्षरशः इस मनु-वाक्य के अनुसार आचरण करते हैं। वे अपने बच्चों को अपनी-अपनी जाति का व्यवसाय निश्चय-पूर्वक सिखा देते हैं। मछलियाँ अपने बच्चों को तैरना, बिल्लियाँ शिकार करना, पक्षी उड़ना सिखलाते हैं। वे अपने बच्चों को शिक्षा देने के लिए उनके सामने स्वयं तैरते हैं, दौड़ते हैं, पङ्खों को फड़फड़ा कर उड़ने का तरीक़ा बताते हैं। कोयल अपने अण्डे को कौए के घोंसले में रख देती है, जिससे उसका उचित पोषण और शिक्षण हो सके। वह स्वयं इस काम को नहीं कर सकती। इसलिए अपने कर्त्तव्य का पालन वह इस प्रकार से करती है। परन्तु मनुष्य, जो अपने को श्रेष्ठ प्राणी समझता है, अपने कर्तव्य के पालन में इतनी तत्परता नहीं दिखाता। वह पहले तो अपनी सन्तान का भली-भाँति लालन-पालन नहीं करता, फिर जब उसकी शिक्षा का समय आता है तो उस ओर से भी वह उदासीन ही रहता है। सच बात यह है कि बेचारे मनुष्य-समाज को अभी तक यह मालूम नहीं हो सका है कि उसकी वास्तविक आजीविका क्या है। ऐसी हालत में वह अपनी सन्तान को आजीविका की शिक्षा दे तो कैसे दे? पशुओं में एक भी प्राणी ऐसा नहीं मिलेगा, जिसे यह न मालूम हो कि उसकी जीविका का साधन क्या है। परन्तु मनुष्यों में आज लाखों नहीं, करोड़ों की संख्या में ऐसे जीव विद्यमान हैं, जिनके सामने बेकारी की समस्या भयङ्कर रूप धारण करके खड़ी है, जिन्हें यह नहीं मालूम कि वे अपना पेट भरने के लिए क्या करें और क्या न करें। ऐसी दशा में वे अपनी सन्तान को आजीविका की शिक्षा देने का प्रबन्ध ही क्या कर सकते हैं? परन्तु जो थोड़ा-बहुत, भला-बुरा, उपयोगी-अनुपयोगी, उचित-अनुचित प्रबन्ध वे करते हैं, वह भी स्वार्थ-बुद्धि से। पशुओं में यह विशेषता है कि सन्तान की रक्षा जहाँ तक करनी चाहिए, वे करते हैं। जब वह स्वतन्त्र जीवन बिताने योग्य बन जाती है तब उसे छोड़ देते हैं। फिर माता-पिता और सन्तान के बीच किसी तरह का सम्बन्ध नहीं रह जाता। पर मनुष्य की बात दूसरी है। मनुष्य चाहता है कि मेरी सन्तान बड़ी होने पर मुझे सुख पहुँचाने, वृद्धावस्था में मेरी सेवा करे, मेरा आधिपत्य माने। यह स्वार्थ भाव मनुष्य के जीवन में पद-पद पर दिखाई पड़ता है। पर पशु में यह नहीं पाया जाता। मानव समाज में पुत्र और पुत्री में जो भेद है, पुत्र के जन्म पर प्रसन्नता और पुत्री के जन्म पर दुःख प्रगट किया जाता है, यह मानव जाति की अपनी निजी विशेषता है। पशु-जगत में ऐसी भयङ्कर स्वार्थपरता के भाव कहीं नहीं पाए जाते। पशुओं में पुत्र और कन्या का आदर समान है। यह तो मानव मनुष्य जाति ही है, जो स्वार्थ के वशीभूत होकर पुत्र के साथ एक तरह का और कन्या के साथ दूसरी तरह का व्यवहार करती है। पशु के जीवन में यह स्वार्थ भाव नहीं है। शायद इसीलिए मनुष्य पशु को अपना आदर्श मानता है।

ध्यान से देखें तो मनुष्य की तरह पशु में भी लोकैषणा या जनेच्छा दिखाई पड़ेगी। जैसे मनुष्य चाहता है कि मैं समाज में रहूँ, लोग मेरा सत्कार करें, मुझे सुख मिले, मेरी कीर्ति बढ़े, उसी प्रकार पशुओं में भी ऐश्वर्य और प्रभुता की कामना होती है। पशुओं में भी राजा, सरदार, गरोहपति आदि सत्ताधारी होते हैं जो अपने समाज का शासन, नियमन और नेतृत्व करते हैं।

यही तीन एषणाएँ या इच्छाएँ पशु में पाई जाती हैं और यही तीन कामनाएँ मनुष्य में भी हैं। इन्हीं एषणाओं में जीव सुख के लिए प्रवृत होता है। इन्हीं एषणाओं के फेर में पड़ कर मनुष्य कौड़ी-कौड़ी जोड़ कर करोड़ इकट्ठा करने का प्रयास करता है। इन्हीं विषयों में सुख पाने की आशा से मनुष्य विवाह करता है, घर बनाता है, समाज की सेवा, राज्य का प्रबन्ध, यज्ञ-जाप, पूजा-पाठ करता है। पर शुद्ध सुख कहीं नहीं मिलता; सुख से अधिक दुःख मिलता है। चण्डीदास ने कहा है—

सुख दुःख दुटि भाई।
सुखेर लागिया जे करे पीरीति
दुख जाय तार ठाईं ॥

सुख दुख दो भाई हैं। सुख के लिए जो प्रीति करता है उसके यहाँ दुःख भी जाता है। गुरु गोविन्द से एक शिष्य

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

ने पूछा कि सुख क्या चीज़ है ? उन्होंने जवाब दिया कि तलवार के धार पर रक्खी हुई शहद की बूँद है। सुख चाहो तो चाटो। मधु-विन्दु मीठा तो लगेगा, पर साथ-साथ जिह्वा कट जायगी ; रक्त बह निकलेगा ; सुख से अधिक दुःख मिलेगा। यही संसार का नियम है। इसी स्वल्प सुख के लिए मनुष्य एषणाओं के चक्र में फँसा हुआ है। वह पशु के समान इन्हीं इच्छाओं के पीछे भटकता फिर रहा है। इन्हीं वासनाओं के वशीभूत होकर मनुष्य कभी शारीरिक बल में शेर का अनुकरण करता है तो कभी कोकिला के कण्ठस्वर की नकल करने की चेष्टा करता है, कभी सौन्दर्य में मयूर से प्रतिद्वन्द्विता करना चाहता है तो कभी चींटी से धैर्य और उद्योग की शिक्षा लेता है। परन्तु, जैसा कि ऊपर कह चुके हैं, उसके ये सारे प्रयत्न व्यर्थ होते हैं। इन प्रयत्नों में उसे सफलता और सुख के बदले विफलता और दुःख ही अधिक मिलते हैं। इन गुणों में मनुष्य पशु से बड़ा नहीं हो सकता। इसीलिए इन गुणों द्वारा पशु को जो सुख मिलता है वह मनुष्य को कदापि नहीं मिल सकता। सुख पाने के उद्देश्य से मनुष्य का, पशुओं की तरह, समाज-सङ्गठन करना, कला की उन्नति और वासनाओं की तृप्ति करना, शरीर का विकास और गुणों की वृद्धि करना व्यर्थ है।

शारीरिक बल और चरित्र की दृष्टि से, सङ्घ और कला की दृष्टि से, इच्छाओं और प्रवृत्तियों की दृष्टि से देखें तो प्राणीमात्र समान हैं। "त एते सर्व एव समाः सर्व एव अनन्ताः।" वे सब पशु, पक्षी, कीट, पतङ्ग तथा मानव समान हैं, अनन्त हैं। उनकी एषणा का वृत्त अनन्त है ; उनकी इच्छा का कभी अन्त नहीं होता। उपभोग के साथ-साथ वासनाएँ और भी प्रज्ज्वलित हो उठती हैं। एक लाख रुपया मिले तो दूसरे लाख की, एक स्त्री मिले तो दूसरी स्त्री की, एक राज्य मिल जाय तो दूसरे राज्य की कामना निरन्तर सताती रहती है। 'और' 'और' की रट कभी बन्द नहीं होती। 'और चाहिए' 'और चाहिए' की अन्तर्ध्वनि सदा सुनाई पड़ती है। इसी प्रवाह में मानव तथा पशु दोनों बहे जा रहे हैं।

हर एक वृत्त के लिए एक केन्द्र होता है, उसीके आधार पर वृत्त बनता है। इन सब इच्छाओं का केन्द्र-मूल वस्तु "मैं" है। "मैं" ही से बढ़ते-बढ़ते सारा संसार नज़र आता है। मेरा शरीर, मेरा घर, मेरी स्त्री, मेरा गाँव, मेरा देश, मेरी जाति, मेरी सभ्यता, मेरा धर्म, मेरा सम्प्रदाय, आदि व्यवहार "मैं" को केन्द्र बना कर चल रहे हैं। "मैं" तथा "मेरा" यह सब जगह व्याप्त है। इन्हीं दो को द्वन्द्व, द्वैत या नाना कहते हैं। एक देखने वाला "मैं" और एक दृश्य विषय "मेरा" ये दोनों हर एक प्राणी के जीवन में मौजूद हैं। इन्हीं दोनों से संसार का अस्तित्व है। संसार का हर एक प्राणी समझ रहा है कि एक "मैं" हूँ, और "मैं" से भिन्न दूसरे पदार्थ वे हैं जिन्हें "मैं" देखता हूँ, छूता हूँ, पकड़ता हूँ, फेंकता हूँ। इन्हीं बाहरी पदार्थों के रूप पर वह प्राणी मुग्ध होता है ; उसे आशा होती है कि इन पदार्थों के सम्पर्क में आने से, इनके पास रहने से, इनका स्पर्श करने से, उसे सुख मिलेगा। इस आशा से वह इन बाहरी पदार्थों से, इन बाह्य विषयों से, प्रेम करता है, इन्हें बड़े प्रेम से "मेरा" कह कर पुकारता है। इनमें से किसी को वह 'मेरा धन', किसी को 'मेरा शरीर', किसी को 'मेरा भाई', किसी को 'मेरी स्त्री', किसी को 'मेरा देश', किसी को 'मेरी जाति', किसी को 'मेरी सभ्यता', आदि आदि कह कर पुकारता है। इसी "मेरा" के पीछे वह अपने शरीर को पुष्ट और बलवान, अपने धन को असीम, परिवार को सम्पन्न, कला को उन्नत, सभ्यता को विकसित, चरित्र को श्रेष्ठ बनाने का प्रयत्न करता है। परन्तु यह पहले ही देख चुके हैं कि शारीरिक बल और चरित्र में, सङ्घ-शक्ति और कला में, इच्छाओं और प्रवृत्तियों में मनुष्य पशु से बढ़ कर नहीं हो सकता। जहाँ-जहाँ बाह्य पदार्थों का आश्रय लेना पड़ता है, जहाँ-जहाँ विषय का राज्य है, वहाँ सर्वत्र पशु श्रेष्ठ है, आदर्श है, मनुष्य उसका मुक़ाबला नहीं कर सकता। जहाँ तक "मेरा" का राज्य है वहाँ सर्वत्र पशु बड़ा है, मनुष्य छोटा। इससे यह साफ़ ज़ाहिर है कि "मेरा" के राज्य में रहना पशु का काम है; विषयों में सुख की खोज करना पशुत्व है; द्वैत या नाना को देखना पशु-धर्म है। फिर मानव धर्म क्या है ? मनुष्य की मनुष्यता किस बात में है ?

फ़ारसी की एक उक्ति है—

तफ़रक़ः दर रूहे हैवानी बुअद।
रूहे वाहिद रूहे इन्सानी बुअद॥

पशु नाना को देखता है। यह नाना, द्वैत, "मैं"

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

तारों में, नीच और ऊँच में, पापी और पुण्यात्मा में, मित्र और शत्रु में, सर्वत्र "मैं" ही "मैं" देखने लगता है; "मैं" के राज्य में पहुँच जाता है। स्वराट हो जाता है। इसी स्थिति को लोग जीवन्मुक्ति कहते हैं। यही परम पुरुषार्थ है, यही स्वराज्य है, यही मोक्ष है, निर्वाण यही है, शून्य यही है। इसी "मैं" की प्राप्ति, अद्वैत का लाभ, शाश्वत सुख की अनन्त शीतलता, मानव धर्म है। यही अध्यात्म-तत्व है। यही है! यही है!! यही है!!!*

* लेखक महोदय द्वारा काशी-विद्यापीठ-सुलभ-व्याख्यानमाला में दिए गए एक व्याख्यान के आधार पर।

—सम्पादक 'चाँद'

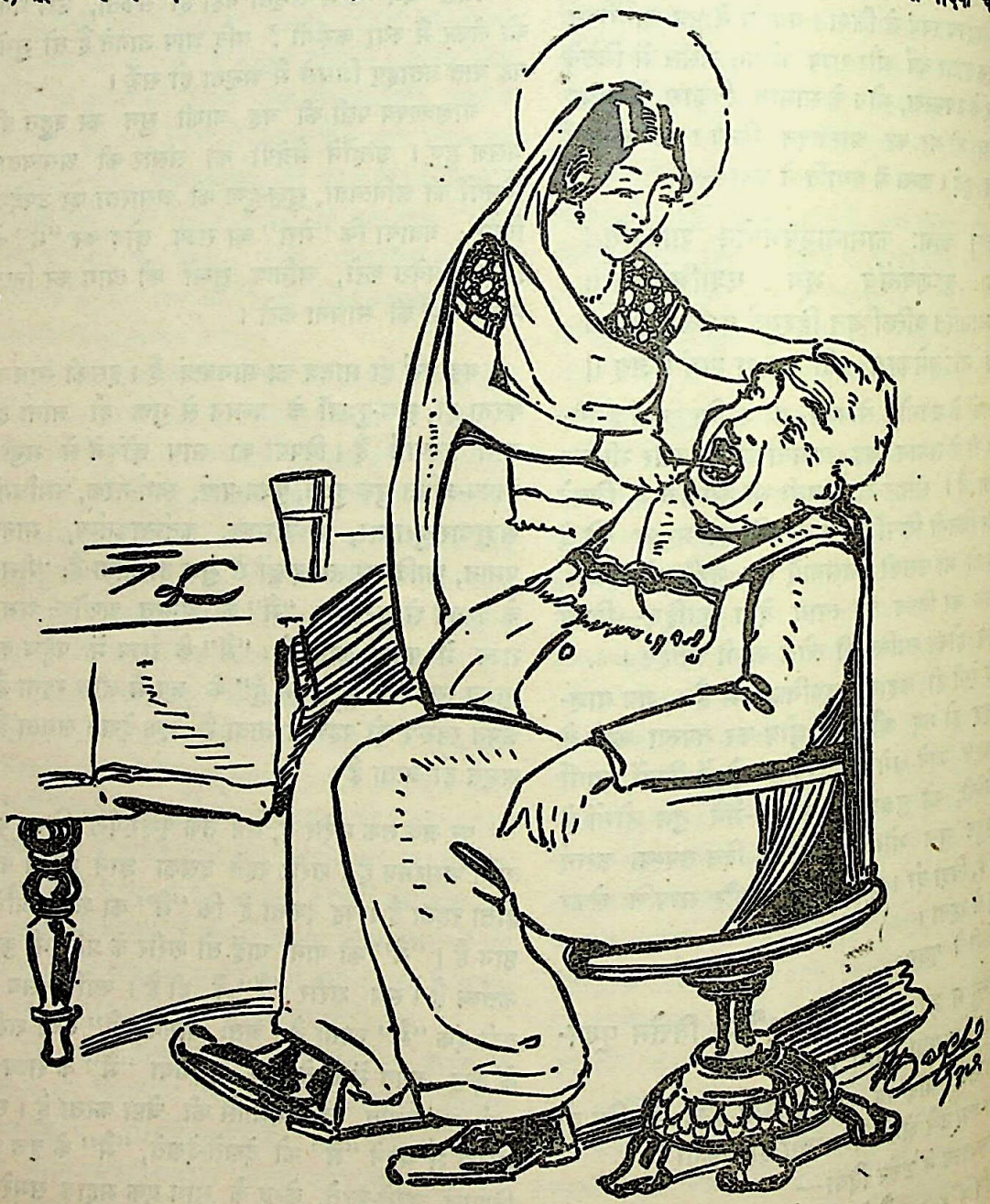

जॉनबुल—हाय बाप रे! बड़ा दर्द होता है। रात-दिन खाना और सोना हराम हो रहा है!
लेडी-डैण्टिस्ट—मुझे बड़ा खेद है महाशय, आपकी अक़्ल की दाढ़ सड़ गई है!!

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

अद्भुत सौदा

[पं० तारादत्त मिश्र, बी०ए० (ऑनर्स), काव्यतीर्थ]

पनी स्त्री के मरने के बाद कल्लू मदारी को अपने दोनों लड़कों जग्गू और बीरजू के पालन-पोषण का भार अपने ऊपर लेना पड़ा। उसके पास एक बन्दर था। वह उसे बेटा रघुआ कह कर पुकारा करता था और वास्तव में उसे बेटे की तरह प्यार भी करता था। जब घर में स्त्री थी तो उसे इन लड़कों के विषय में विशेष चिन्ता न थी। वह रघुआ को लेकर दूर-दूर शहरों और देहातों में निकल जाया करता था और महीने दो महीने बाहर ही रह, रघुआ को नचा कर अपने परिवार के खाने से अधिक ही पैदा कर लेता था। पर अब ऐसा करने से लाचार हो गया। घर में दो लड़कों के सिवा और कोई न था। अब उसे अपने हाथ से रसोई बनानी पड़ती थी। एक रात भी घर से बाहर रहना उसके लिए कठिन हो गया। यद्यपि अभी भी वह अपनी जीविका के लिए रघुआ को नचाने जाया करता था, पर आसपास के गाँवों में नचा कर ही फिर शाम तक घर लौट आता था। धीरे-धीरे उसकी आमदनी कम होने लगी। कारण एक ही नाच को देखते-देखते सबों की, यहाँ तक कि बच्चों की भी, उत्सुकता कम हो गई थी। आमदनी के कम होने से उसे बहुत कष्ट होने लगा। कभी-कभी तो रात-रात भर भूखे ही रह जाना पड़ता। परन्तु अपने ऊपर सब कष्टों को सह कर भी उसने बच्चों तथा रघुआ को कभी कष्ट न होने दिया। इन कष्टों के रहते हुए भी वह भविष्य-सुख की आशा से उत्साह के साथ अपना जीवन बिताने लगा, जैसे प्यास से व्याकुल कोई पथिक सामने कुछ दूर पर बहती हुई नदी को देख उत्साहपूर्वक लपकता हुआ आगे बढ़ा चला जाता है।

इसी तरह कुछ वर्ष बीत गए। जब जग्गू और बीरजू सयाने हुए और अच्छी तरह काम-धाम करने के योग्य हो गए तो कल्लू ने सोचा—"अब मेरा कष्ट दूर हुआ। लड़के कमाएँगे और मैं बैठे-बैठे खाऊँगा। जो मेरी इच्छा होगी वह करूँगा। दिन-रात रघुआ के साथ खेलता रहूँगा। बेटा रघुआ को भी मेरे साथ बहुत कष्ट हुआ है, इसे भी सुख होगा। जग्गू और बीरजू इसे बड़े भाई की तरह मानेंगे।" इस सुख की कल्पना में उसे जितना आनन्द हुआ शायद उतना आनन्द उस सुख की वास्तविक अवस्था में भी न होता।

जग्गू और बीरजू को अपने पिता की जीविका पसन्द न आई। उन लोगों ने खेती करना आरम्भ किया। खेती से ख़ूब ही लाभ हुआ और उसी लाभ से उन लोगों ने एक गाय ख़रीदी। गाय को चराने का भार कल्लू के ऊपर पड़ा। पहले तो कल्लू को यह भार कठिन जान पड़ा। वह स्वतन्त्र विचार का था, उसे लड़कों की यह ग़ुलामी पसन्द न आई। अतएव इस काम में उसने अनिच्छा प्रगट की। पर लड़कों की बात से मालूम हुआ कि बिना कुछ काम किए, घर में योंही पड़े रहने से उसका निर्वाह न होगा। अब उसे मालूम हो गया कि पहले उसने जो स्वतन्त्रता की कल्पना की थी वह कोरी कल्पना मात्र थी। उसने जिसे जल समझा था वह पास आने पर मरीचिका निकली।

२

कल्लू पहले बन्दर का नचाने वाला मदारी था, अब चरवाहा हो गया। अब उसे अपनी इच्छा के विरुद्ध भी गाय को खोल कर चराने के लिए ले जाना पड़ता था। एक तो अवस्था ढल गई थी, दूसरे इस काम में उसे उत्साह भी न था। अतएव उसके लिए यह भार दुस्सह हो गया। इस पर भी लड़कों को अपने पिता की परवाह कम ही थी। वही गाय को चराता था, पर लड़कों के मन में इतना भी विचार न था कि वे अपने पिता को थोड़ा सा दूध दे दें। किसी तरह सूखी रोटी मिल जाती थी, यही बहुत था। धीरे-धीरे वह दुबला होने लगा। पर इसकी चिन्ता किसी को भी न थी। यदि चिन्ता थी तो केवल रघुआ को। कल्लू के दोनों लड़कों ने अपनी

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

पितृ-भक्ति का परिचय दे दिया था, पर रघुआ वास्तव में अभी भी उसका बड़ा बेटा था।

जब प्रातःकाल कल्लू गाय को खोल, चराने के लिए निकलता तब रघुआ भी पीछे-पीछे जाता। पास ही जङ्गल में मवेशियों की चरागाह थी। वहाँ पहुँच किसी वृक्ष के नीचे कल्लू बैठ जाता और रघुआ के साथ खेल-खेल कर अपने दिल का अरमान पूरा करता था। कभी-कभी ठण्ढी हवा के लगने से जब कल्लू को नींद आ जाती तब रघुआ गाय की रखवाली करता। बीच-बीच में एक पेड़ से दूसरे पेड़ पर उछल-उछल कर आम, जामुन, अमरूद, नासपाती आदि फलों को भरपेट खाता और कल्लू के लिए भी जमा करता। कल्लू का दुबला-पतला शरीर देख कर रघुआ के मन में बड़ी चिन्ता होती थी। वह भली भाँति समझता था कि घर पर लड़के इसकी परवाह नहीं करते तथा इसे कभी दूध भी नहीं देते। इसी विचार से जब कभी नींद में कल्लू का मुँह खुल जाता तो रघुआ पत्ते के दोने में दूध दुह कर उसके मुँह में डालने लगता। इसी बीच में कल्लू की नींद खुल जाती और सामने रघुआ को दूध पिलाते देख उसका हृदय प्रेम से गद्गद हो उठता। वह उसे छाती से लगा लेता और आनन्द में इस तरह तन्मय हो जाता जैसे एक योगी ब्रह्म के ध्यान में तन्मय हो जाता है।

इन दिनों कल्लू का स्नेह रघुआ पर और भी बढ़ गया था। उसे अपने लिए विशेष परवाह न थी, पर वह रघुआ को सुखी देखना चाहता था। वह अपने बेटों से बराबर ही झगड़ा किया करता था कि रघुआ को कम से कम आधा सेर दूध देना चाहिए। पर लड़के कभी देने को तैयार न होते। अतएव वह कभी-कभी दूध चुरा लाता और छिप कर रघुआ को पिलाता। लड़के दूध की चोरी हो जाने पर बहुत रञ्ज होते और बाप को डाटते। आख़िर एक रोज़ बीरजू ने अपने बाप को चोरी से दूध पिलाते देख लिया। फिर क्या था, लगा रघुआ को मारने, बहुत पीटा, कल्लू ने बीच में आकर छुड़ाया। बीरजू क्रोध से लाल-लाल आँख किए पिता को धमकाते और गुनगुनाते बाहर चला गया।

३

मनुष्य अपने ऊपर किए गए अत्याचारों को तो किसी तरह सह सकता है, पर अपने प्रियजनों के ऊपर अत्याचार होते देख कर मुर्दे-मुर्दे मनुष्यों का ठण्ढा रक्त भी खौलने लगता है। ठीक वही हालत कल्लू की हुई। अब तक न मालूम उसके स्वतन्त्र विचार कहाँ लुप्त हो गए थे, न मालूम क्यों वह लड़कों का ग़ुलाम बना हुआ था। पर आज रघुआ के ऊपर होने वाले अत्याचार ने उसके स्वतन्त्र विचारों को फिर से जागृत कर दिया। मुर्दे में फिर जान आ गई। उसे अपने में एक नई शक्ति का अनुभव होने लगा। फिर क्या था, रघुआ को साथ ले घर से चल हुआ, प्रतिज्ञा कर ली कि इस घर में फिर न आऊँगा। रघुआ कल्लू के पीछे चला, पर बीच-बीच में घूर-घूर कर पीछे की ओर देखता जाता था। उसके हृदय में जग्गू और बीरजू के प्रति स्नेह था। शायद वह चाहता था कि जाने के पहले दोनों भाइयों से मिल लूँ। रात को खाने का अफ़सोस उसके हृदय में ज़रा भी न था। पर जग्गू और बीरजू का हृदय द्वेष से भरा था। जाते समय उन लोगों ने पिता से भी मुलाक़ात न की, रघुआ को कौन पूछे।

कल्लू फिर अपनी पुरानी जीविका पर आ गया। रघुआ बड़ा प्रसन्न था। कल्लू का मन अब बिल्कुल निश्चिन्त हो गया। उसने अपना प्रदेश छोड़ दिया और अन्य-अन्य प्रदेशों में जाकर रघुआ को नचाने लगा। एक जगह कहीं अड्डा जमा लेता और वहाँ कुछ दिन तक आसपास के देहातों में नचा, फिर दूसरी जगह चला जाता था। जहाँ जाता खँजड़ी बजाते ही लड़के जुट जाते, थोड़ी ही देर में आदमियों की ख़ासी भीड़ लग जाती। रघुआ नाचने लगता। कभी सिपाही बन कर मालिक को सलाम करता, कभी जज बन कर फ़ैसला लिखता, कभी बजवैया बन कर खँजड़ी बजाता, कभी चरवाहा बन कर पीठ पर लाठी लेकर घूमता, कभी कहार बन कर खटोले ढोने का खेल दिखलाता। इस तरह अपनी अनेकों चाल तथा नाच से लोगों को मुग्ध कर देता। बीच-बीच में ऐसा मुँह बनाता कि लोग हँसते-हँसते लोट-पोट हो जाते। बस रघुआ की एक ही बार की नाच में कल्लू को कई पैसे मिल जाते थे। नाच ख़तम होने के बाद जब कल्लू आगे चलता तब रघुआ पाँव से खुट-खुट करते कभी दाहिने, कभी बाएँ, पीछे की ओर हुलक-हुलक कर देखता हुआ उसके पीछे-पीछे चलता। जनता को खुश कर कल्लू आनन्दित हो इस तरह आगे बढ़ता मानो एक राजा

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

लड़ाई में विजय प्राप्त कर अपने सेनापति के साथ अपनी राजधानी को लौट रहा हो।

शाम होते-होते कल्लू जब डेरे पर पहुँचता तो नित्य भोजन बनाता। उस समय रघुआ हमेशा चूल्हे के पास बैठा रहता था। वह सीझते हुए भात की गद्गद आवाज़ सुनने के लिए बहुत ही उत्सुक रहता था। कड़ाही में साग को डालने से जो छाँय से आवाज़ होती थी वह तो रघुआ के कानों में वीणा की ध्वनि से भी अधिक आनन्द पैदा कर देती थी। इसी तरह कल्लू और रघुआ का पिता-पुत्र-वत जीवन बीतने लगा।

४

एक बार कल्लू ने कलकत्ते के पास किसी गाँव में डेरा डाला। बाबू महेन्द्रनारायण राय वहाँ के एक प्रतिष्ठित धनी-मानी व्यक्ति थे। उन्हें बन्दर पालने की धुन थी। जब उन्होंने रघुआ को देखा तो उस पर लट्टू हो गए। रघुआ सचमुच बड़ा ही सुन्दर था। महेन्द्र बाबू ने कल्लू को बुला कर रघुआ को अपने हाथ बेच देने के लिए कहा। महेन्द्र बाबू के घर में बन्दरों की कमी न थी। वे रघुआ के बदले एक नहीं, बल्कि दो या तीन बन्दर तक देने को तैयार थे। उन्होंने कल्लू से उसका मनमाना दाम देना भी स्वीकार किया। पर कल्लू को रघुआ को देना किसी तरह स्वीकार न था। तब तो महेन्द्र बाबू को बड़ा क्रोध आया। उन्होंने उसे बड़ा धमकाया। पर कल्लू दृढ़ था, वह टस से मस न हुआ।

डेरे पर लौट कर कल्लू ने विचारा कि कल इस गाँव को छोड़ दूँगा। इसी विचार से सब सामान ठीक कर रात में सो गया। इधर महेन्द्र बाबू ने सीधी अँगुली घी न निकलता देख रघुआ को उसी रात दो-एक आदमियों से चुरवा लिया। सवेरे उठ कल्लू ने देखा, रघुआ का पता न था। इधर-उधर सब जगह ढूँढ़ा, कहीं पता न लगा। समझ लिया हो न हो महेन्द्र बाबू ने कोई लकड़ी मारी है। वह बन्दर को खोजता हुआ उनके दरवाज़े पर गया, पर महेन्द्र बाबू ने उसे रघुआ के मूल्य में पाजी-बदमाश आदि कह कर गाँव से बाहर निकलवा दिया। कल्लू के मुँह से कोई शब्द भी न निकला। कारण वह जानता था कि महेन्द्र बाबू के सामने किसी की आवाज़ तक न निकलेगी। केवल हृदय में मार्मिक व्यथा हुई। यह वियोग एक बन्दर का वियोग नहीं था। उसके हाथ से तो उसका बड़ा बेटा छीन लिया गया था।

रघुआ से बिछुड़ने के बाद कल्लू के मन में वैराग्य सा उत्पन्न हो गया। अब संसार में कोई भी अभिलाषा न रह गई। वह लौट कर घर भी न जा सकता था, कारण घर न जाने की प्रतिज्ञा कर ली थी। उसने सोचा, अब इस वृद्धावस्था में कुछ तीर्थ-भ्रमण कर लूँ। पर इसके लिए विशेष रुपए की आवश्यकता थी। अतएव उसकी इच्छा कुछ रुपए पैदा कर लेने की हुई। भाग्यवश कलकत्ते में कहीं एक सरकस कम्पनी में उसकी नौकरी लग गई। इस कम्पनी में वह बन्दरों को अद्भुत-अद्भुत खेल सिखलाया करता था। जन्म भर बन्दर नचाते-नचाते वह इस कला में बहुत ही प्रवीण हो गया था। अपनी कार्य-कुशलता से एक ही वर्ष की नौकरी से उसके पास क़रीब ५००) हो गए। पर उसका मन नौकरी में न लगता था। गत एक वर्ष में रघुआ की याद से वह बहुत ही दुःखी रहा। बराबर रघुआ के बारे में सोचता रहता था। कभी-कभी रात-रात भर नींद नहीं आती और आती भी तो प्रायः रघुआ का स्वप्न देखता। रघुआ स्वप्न में आता था और उसके सामने थिरक-थिरक कर नाचने लगता था, पर जब कल्लू उसे पकड़ने के लिए आगे हाथ बढ़ाता तो उसकी नींद टूट जाती। रघुआ को कभी भी न पकड़ पाता।

दिन प्रति दिन कल्लू की चिन्ता बढ़ती गई, अतएव उसने नौकरी छोड़ दी। पास में कुल ५०२) रुपए थे। उसने सोचा ये ५०२) रु० हैं, इनमें कुछ रुपए तीर्थ-भ्रमण में ख़र्च करूँगा और बाक़ी रुपयों से अपनी ज़िन्दगी के बाक़ी दिन किसी तरह काट लूँगा।

५

माघ का महीना था। बहुत से यात्री प्रयाग कुम्भ मेला में जा रहे थे। कल्लू भी प्रयाग जाने के लिए कलकत्ते में गाड़ी पर बैठा। जब बर्द्धमान गाड़ी पहुँची तो गाड़ी से उतर पड़ा। कारण रघुआ की याद आ गई। महेन्द्र बाबू का गाँव बर्द्धमान स्टेशन के पास ही था। उसकी इच्छा हुई कि एक बार उस गाँव में जाऊँ और रघुआ को नहीं तो कम से कम उस स्थान को भी देख आऊँ, जहाँ रघुआ से वियोग हुआ था। वह इसी विचार से महेन्द्र बाबू के गाँव में पहुँचा। उनके दरवाज़े से

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

होकर वह ज्योंही निकल रहा था कि रघुआ पर दृष्टि पड़ी। रघुआ एक ज़ञ्जीर में बँधा उदास मुँह किए बैठा था। सचमुच कल्लू के हाथ से जब से निकला था तब से कभी प्रफुल्लित नहीं हुआ था। कल्लू का प्रेम उमड़ आया। रघुआ ने भी कल्लू को पहचान लिया और ज़ञ्जीर को दाँतों से काट कर उसके पास आना चाहा। पर ज़ञ्जीर का तोड़ना सहज न था। वह छटपटाने लगा। कल्लू भी आगे बढ़ा और उसके शरीर पर हाथ फेर उसे पुचकारने लगा। इसी बीच में महेन्द्र बाबू वहाँ पहुँच गए। कल्लू को देख कर उनके क्रोध का ठिकाना न रहा। वे उसे चोर, बदमाश कह कर डाटने लगे। लोगों की भीड़ लग गई। कल्लू ने सबों से अपना पूरा परिचय देते हुए महेन्द्र बाबू से कहा—"बाबू जी, मेरा बन्दर दे दीजिए। मैं आपके पैरों पड़ता हूँ।" महेन्द्र बाबू के क्रोध का पारा और भी बढ़ गया, उन्होंने क्रोध भरे शब्दों में कहा—"हरगिज़ यह तेरा बन्दर नहीं है।" कल्लू ने फिर कहा—"ख़ैर आप ही का सही, मैं इसे मोल लेना चाहता हूँ। आप जो दाम कहें देने को तैयार हूँ।" महेन्द्र बाबू समझते थे कि इस दरिद्र के पास अधिक रुपए कहाँ से आएँगे। इसलिए उन्होंने कड़क कर कहा—"तू रुपया वाला बना है, देगा ५००) रुपए? यदि है तो निकालो।" कल्लू का चेहरा खिल उठा। शीघ्र ही कपड़े से बँधी हुई एक गठरी महेन्द्र बाबू के सामने रख दी। महेन्द्र बाबू ने गिना, कुल ५०२) थे। रुपए की बात लगी। ५००) रख लिया और २) लौटा कर रघुआ को छोड़ दिया। कल्लू रघुआ को लेकर आगे बढ़ा तो कुछ लोगों ने कहा—"कल्लू तुमने ५००) मुफ़्त में फेंक दिए। तुम्हारी तीर्थयात्रा भी न हुई। इस बूढ़े बन्दर के साथ तुम्हें कौन सा सुख होगा?" कल्लू ने विश्वास और प्रेम भरे शब्दों में कहा—"भाइयो, मुझे इस कार्य में तीर्थ यात्रा से कम फल नहीं हुआ है। ५००) गए तो क्या वर्षों का बिछुड़ा बेटा रघुआ तो मिल गया।"

गीत

[श्री० दिवाकरप्रसाद विद्यार्थी]

भूल जा, फिर यह गीत न गा।
कन्था के मुरझे प्रसून-दल हाय न यों बिखरा॥

(१)

हृदय अभी तक करता धक-धक,
अब तक निरख रही हूँ अपलक,
बुझता हुआ व्यथा का दीपक—
सजनि! न यों उकसा।

(२)

सहसा खुल पड़ता विस्मृति-पट,
वह रजनी, वह गङ्गा का तट,
आती याद सबों की झट-पट,
ज्वाला फिर न जला।

(३)

वह जीवन-इतिहास मनोहर,
निर्झर-नालों से झर-झर कर,
आज कँपा देगा गिरि-गह्वर,
प्रति कण-कण में छा।

(४)

बुझती व्यथा भभकती पल-पल,
क्या तुमको मिलता कलपा कल!
तन्द्रा के ये तार सुकोमल—
निर्दय! यों न कपा।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

महात्मा सूरदास

प्रीति करि काहू सुख न लह्यो। प्रीति पतङ्ग करी दीपक सों, आपै प्राण दह्यो॥
अलिसुत प्रीति करी जलसुत सों, सम्पति हाथ गह्यो। सारङ्ग प्रीति करी जो नाद सों, सन्मुख बाण सह्यो॥
हम जो प्रीति करी माधव सों, चलत न कछु कह्यो। सूरदास प्रभु बिन दुख दूनो, नैनन नीर बह्यो॥

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

TWO IMPORTANT ANNOUNCEMENTS

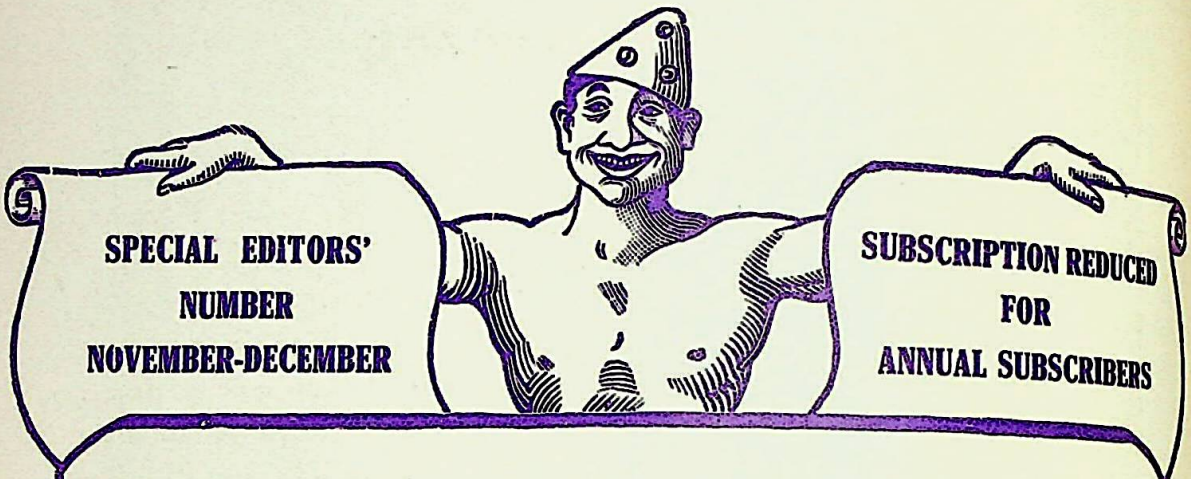

Telephone : 205

The 'CHAND'

Telegrams : CHAND

— Urdu Edition —

Editor : MUNSHI KANHAIYA LAL, M.A., LL.B., Advocate.

1. The Special Editors' Number will be the combined November-December issue.

It will be an unusually good number, more than 100 editors of different papers and magazines are contributing to this special number which will contain a large number of tri-colour and other illustrations also.

Price of this number is Rs. 3/- only. To Annual Subscribers Free. This concession will not apply to new half-yearly subscribers.

2. Subscription has been reduced for annual subscribers who enroll at once.

To increase the already vast circulation and to meet the wishes of a very large number of readers, those who apply immediately, will get CHAND for one year for Rs. **6/8** instead of Rs. **8/-** *and there will be no chance to cut down present features.*

DO NOT DELAY. SEND YOUR ORDER TODAY

Manager,
CHAND (Urdu Edition),
Chandralok, Allahabad.

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

कान्यकुब्ज-ब्राह्मण-परिचय

[श्री० रजनीकान्त शास्त्री, बी० ए०, बी० एल०]

युक्त प्रान्तस्थ कन्नौज नामक शहर भारत के विख्यात शहरों में से है। इसकी ऐतिहासिक ख्याति इतिहास के पृष्ठों पर अमिट अक्षरों से लिखी है। सातवीं शताब्दी के प्रारम्भ में थानेश्वर घराने का विख्यात सम्राट हर्षवर्द्धन, जो उत्तर भारत का अन्तिम शक्तिशाली हिन्दू सम्राट था, अपनी राजधानी थानेश्वर से हटा कर इसी कन्नौज में लाया था। इसी कन्नौज में उक्त प्रतापी सम्राट ने प्रसिद्ध चीनी परिव्राजक हुएनसाङ्ग के सम्मानार्थ एक विशाल सम्मेलन रचा था, जिसमें अनेक करद सामन्त-गण, लाखों बौद्ध, जैन तथा ब्राह्मण, संन्यासी, महात्मा एवं विद्वान इकट्ठे हुए थे। ग्यारहवीं शताब्दी के प्रारम्भ में यही कन्नौज दिल्लीश्वर पृथ्वीराज के प्रतिद्वन्द्वी राजा जयचन्द की भी राजधानी हुआ था और यहीं पर सोलहवीं शताब्दी के प्रारम्भ में प्रसिद्ध पठान वीर शेर ख़ाँ अकबर के पिता हुमायूँ को परास्त कर दिल्ली का बादशाह बन बैठा था।

अति प्राचीन काल में, यहाँ तक कि भगवान् रामचन्द्र के भी समय से पूर्व, कान्यकुब्ज नामक एक विख्यात देश भारत के उत्तरी भाग में अवस्थित था। सम्भवतः इस देश का प्रसिद्ध नगर इसी के नामानुसार कान्यकुब्ज कहलाया, जो कालान्तर में विकृत होकर कन्नौज शब्द में परिणत हो गया।

१—"कान्यकुब्ज" शब्द की व्युत्पत्ति

कन्याः कुब्जा यस्मिन् देशे स कन्याकुब्जः। निपातनात् कुब्ज शब्दस्य परनिपातः। वृषोदरादित्वात् "कन्या-कुब्ज" शब्दः "कन्यकुब्ज" इति जातः। ततः स्वार्थेऽणि कृते 'कान्यकुब्ज' इति पदं सिद्धम्। जिस देश में कन्याएँ कुबड़ी हो गईं वह देश कान्यकुब्ज कहलाया।

२—"कान्यकुब्ज" नामकरण का इतिहास

कान्यकुब्ज देश का यह नामकरण क्यों हुआ? वहाँ की कन्याएँ कुबड़ी क्यों हो गईं? इसका वृत्तान्त वाल्मीकीय रामायण, बा० का०, अ० ३२—३३ में इस प्रकार लिखा है—

कुशनाभस्तु राजर्षिः कन्याशतमनुत्तमम्।
जनयामास धर्म्मात्मा घृताच्यां रघुनन्दन॥ १॥

अर्थ—विश्वामित्र जी कहते हैं कि हे रामचन्द्र! ऐल (चन्द्र) वंशीय प्रसिद्ध राजर्षि तथा धर्मात्मा कुशनाभ ने, जो महोदयपुर में निवास करते थे, घृताची नामक अप्सरा में सौ कन्याओं को उत्पन्न किया॥ १॥

तास्तु यौवन शालिन्यो रूपवत्यस्त्वलङ्कृताः।
उद्यान भूमिमासाद्य प्रावृषीव शतह्रदाः॥ २॥

अर्थ—वे कन्याएँ रूप और यौवन से सम्पन्न तथा भूषणों से सुसज्जित होकर वर्षा-काल में विद्युत् की तरह बागीचे में विहार करने के निमित्त गईं॥ २॥

गायन्त्यो नृत्यमानाश्च वादयन्त्यश्च राघव।
आमोदं परमं जग्मुर्वराभरण भूषिताः॥ ३॥

अर्थ—हे रामचन्द्र! अच्छे-अच्छे आभूषण पहने हुए उन सबों ने गाने, नाचने तथा बजाने से परम आनन्द प्राप्त किया॥ ३॥

ताः सर्वगुणसम्पन्ना रूपयौवन संयुताः।
दृष्ट्वा सर्वात्मको वायुरिदं वचनमब्रवीत्॥ ४॥

अर्थ—सकल-गुण-सम्पन्न तथा रूप-यौवन-शालिनी उन कन्याओं को देख कर पवन देव, जो सर्वत्र विद्यमान रहते हैं, प्रगट होकर उनसे कहने लगे॥ ४॥

अहं वः कामये सर्वा भार्या मम भविष्यथ।
मानुषस्त्यज्यतां भावो दीर्घमायुरवाप्यस्थ॥ ५॥

अर्थ—मैं तुम सबों को चाहता हूँ; तुम लोग मेरी भार्याएँ हो जाओ और इस मनुष्य भाव का परित्याग कर दीर्घायुता प्राप्त करो॥ ५॥

तस्य तद्वचनं श्रुत्वा वायोरक्लिष्ट कर्मणः।
अपहास्य ततो वाक्यं कन्या शतमथाब्रवीत्॥ ६॥

अर्थ—पवन देव का यह वचन सुन कर वे कन्याएँ उनके वचन को अपमानपूर्वक हँसती हुई बोलीं॥ ६॥

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

काल में बङ्गाल की पश्चिमी सीमा से लेकर पञ्जाब की पूर्वी सीमा तक गौड़ देश का विस्तार था। निम्न-लिखित प्रमाणों से यह भी स्पष्ट हो जाता है कि यह देश कोशल देश से उत्तर तथा नैपाल की तराई से दक्षिण की ओर अवस्थित था —

श्रावस्तश्च महातेजा वत्सकस्तत्सुतोऽभवत्।
निर्मिता येन श्रावस्ती गौड़देशे द्विजोत्तमाः॥
—मत्स्य पुराण

अर्थ—हे द्विजश्रेष्ठो! महातेजस्वी राजा श्रावस्त के पुत्र वत्सक हुए, जिन्होंने गौड़ देश में श्रावस्ती नामक नगरी बसाई। और भी—

उत्तराकौशले राज्यं लवस्य च महात्मनः।
श्रावस्ती लोकविख्याता आविता च लवस्य च॥
—वायुपुराण

अर्थ—कोशल देश से उत्तर महात्मा लव का राज्य था, जहाँ पर लव के द्वारा परिपालित, जगद्विख्यात श्रावस्ती नगरी अवस्थित है।

ऊपर लिखित दोनों उद्धरण इस बात की सिद्धि करते हैं कि विख्यात श्रावस्ती नगरी कोशल देश से उत्तर गौड़ देश में बसी थी। अब यदि हमें इस श्रावस्ती नगरी की भौगोलिक स्थिति मालूम हो जाय तो गौड़ देश का ठीक-ठीक पता लग जाय। इतिहासवेत्ता ए० वी० स्मिथ (A. V. Smith) साहब अपनी "अर्ली हिस्ट्री ऑफ़ इंडिया" (Early History of India) नामक पुस्तक श्रावस्ती के विषय में यों लिखते हैं —

"Sravasti (Savathi) situated on the upper course of the Rapti at the foot of the hills, was the reputed scene of many of Buddha's striking discourses."

अर्थ—श्रावस्ती (सावत्थी) राप्ती नदी के प्रवाह के ऊपरी भाग पर पहाड़ियों की जड़ के पास अवस्थित थी। कहा जाता है कि यह नगरी गौतम बुद्ध के अति प्रभावशाली व्याख्यानों में से बहुतों की रङ्ग-भूमि थी।

उक्त साहब बहादुर इस नगरी के विषय में और भी लिखते हैं —

"The exact site of Sravasti being buried in the jungles of Nepal, is not known; but its approximate position to the North-East of Nepalganj or Banki in about N. Lat. 28° 6' and E. Long. 81° 50' has been determined."

अर्थ—श्रावस्ती का ठीक स्थान नैपाल के जङ्गलों में धँस जाने के कारण अज्ञात है; पर इसका लगभग ठीक स्थान नैपालगञ्ज या बाँकी के उत्तर-पूर्व की ओर अक्षांश २८°६' और देशान्तर ८१°५०' पर निश्चित किया गया है।

अब पाठकों को श्रावस्ती की अवस्थिति के द्वारा गौड़ देश की अवस्थिति का ठीक अनुमान हो गया होगा और यह स्पष्ट रूप से विदित हो गया होगा, जैसा मैं पहले लिख आया हूँ कि यह गौड़ देश कोशल और नैपाल की तराई के मध्य में बङ्गाल से लेकर पञ्जाब तक पूर्वोत्तर चला गया था। जो महाशय "भुवनेशान्त" का अर्थ कुमारी अन्तरीप व जगन्नाथ धाम व भुवनेश्वर महादेव पर्यन्त लगाते हैं वे भारी भ्रम में पड़े हैं; कारण कि वस्तु-स्थिति, इतिहास तथा प्राचीन आर्षग्रन्थ इन मतों में से किसी की भी पुष्टि नहीं करते।

गौड़ देश की अवस्थिति विषयक दो-एक और भी भ्रान्तिपूर्ण मत हैं, जिनका खण्डन करना ज़रूरी है। कोई-कोई कहते हैं कि वर्तमान गोण्डा ज़िला ही प्राचीन गौड़ देश था। यह हो सकता है कि वह भू-भाग, जहाँ पर आजकल गोण्डा ज़िला है, गौड़ देश का एक अंश रहा हो; पर दोनों को एक मान बैठना पूर्वोल्लिखित प्रमाणों से खण्डित हो जाता है। इसी प्रकार किसी किसी का जो यह मत है कि प्राचीन बङ्गाल का गौड़ नामक स्थान गौड़ ब्राह्मणों की आदि मातृ-भूमि था यह भी निःसार है। इतिहास से पता चलता है कि कुछ न्यूनाधिक एक हज़ार वर्ष हुए कि बङ्ग देश के हिन्दू राजाओं ने कुछ गौड़ ब्राह्मणों को अपने यहाँ किसी धार्मिक कृत्य के सम्पादनार्थ बुलाया था। वे उन्हीं राजाओं के द्वारा बसाए गए उसी स्थान का नाम गौड़ पड़ा। पीछे यह गौड़ नामक स्थान एक समृद्धिशाली नगर हो गया और बङ्गाल के मुसलमान शासकों का कालान्तर में राजधानी बना।

६—गौड़ नामकरण विषयक विविध कल्पनाएँ

ऊपर लिखा जा चुका है कि पञ्चगौड़ सप्तशती के अन्तर्गत कान्यकुब्ज आदि सभी वर्ग मूलतः गौड़ ब्राह्मण

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

जौहरी परखें ज़रा जौहर जवाहरलाल के

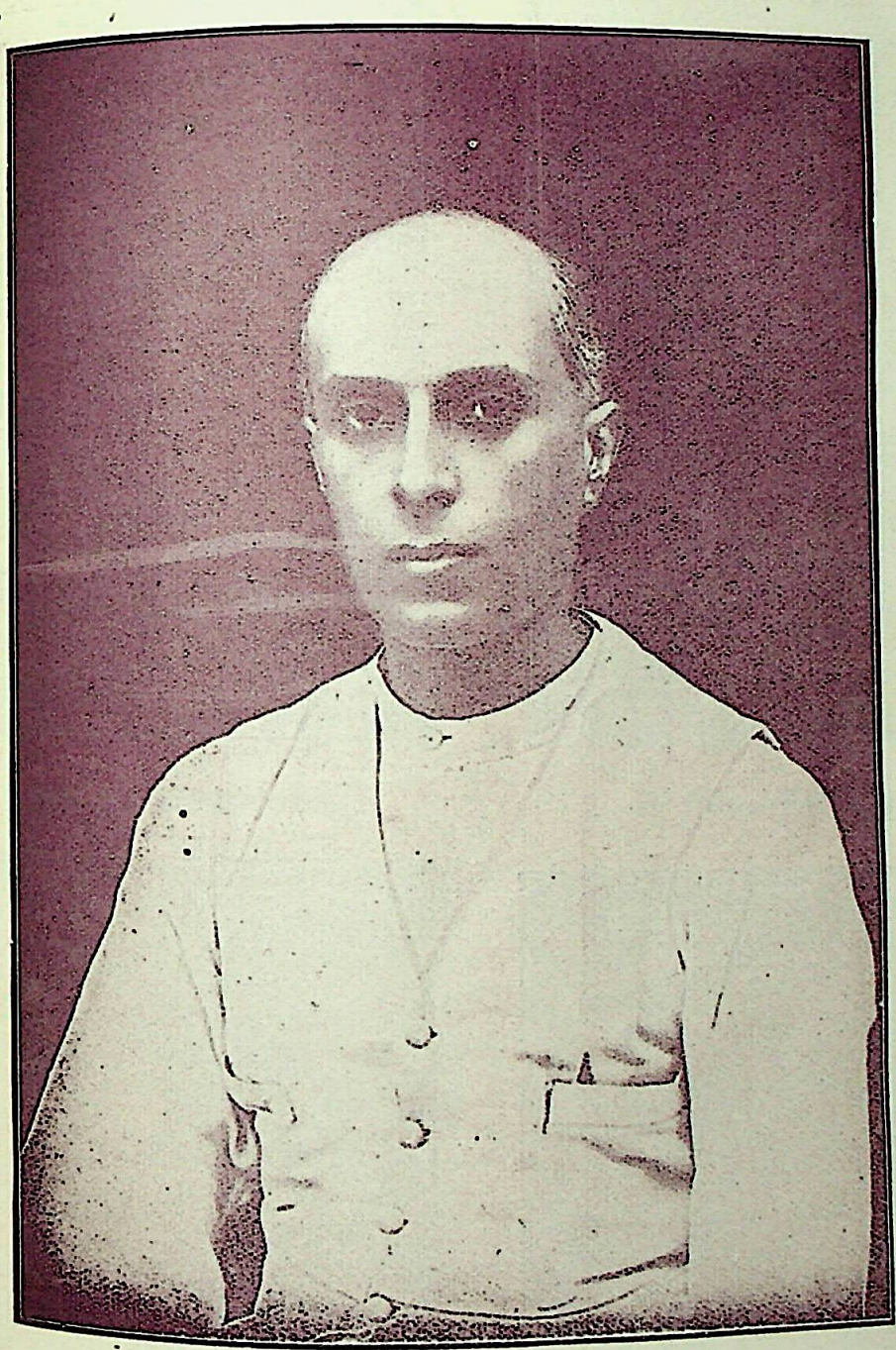

राष्ट्रपति पं० जवाहरलाल नेहरू

जो एक सप्ताह की स्वतन्त्रता के बाद फिर पकड़ लिए गए

सादगी से सादगी के साथ नाता जोड़ कर—
ऐशो इशरत से हमेशा के लिए मुँह मोड़ कर।
सारी दुनिया छोड़ कर, सारा ज़माना छोड़ कर—
चैन अगर लेगा, तो ज़ञ्जीरे-ग़ुलामी तोड़ कर।

कोई देखे तो वतन पर किस तरह क़ुर्बान है,
चलते-फिरते इसको आज़ादी ही का अरमान है।
सच कहा "बिस्मिल" ने प्यारी आन, प्यारी शान है,
समझो तो है देवता, देखो तो यह इन्सान है!

इन्क़लाबाते-जहाँ, सब कह रहे हैं हाल के। [illegible] जवाहरलाल है, सुन लो ज़बाने हाल से!
[illegible] में आगे है मोतीलाल से॥

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

राउन्डटेबिल-कॉन्फ्रेन्स में

दीवान बहादुर रामचन्द्र राव

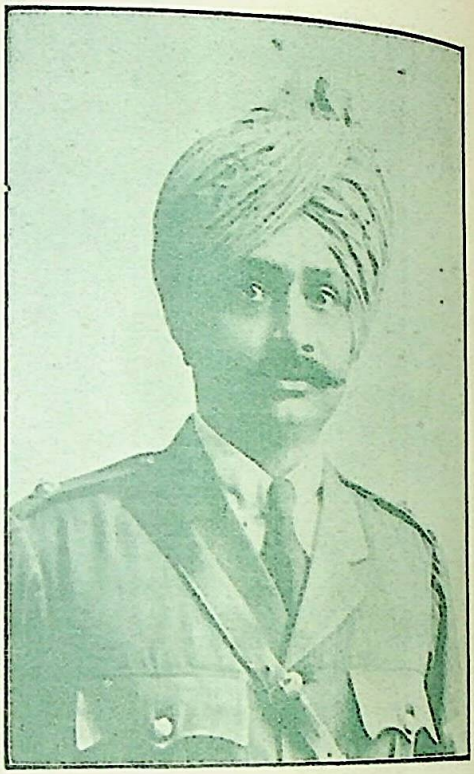

पार्लाकिमेडी के राजा साहब

श्री० ए० आर० मुदालियर

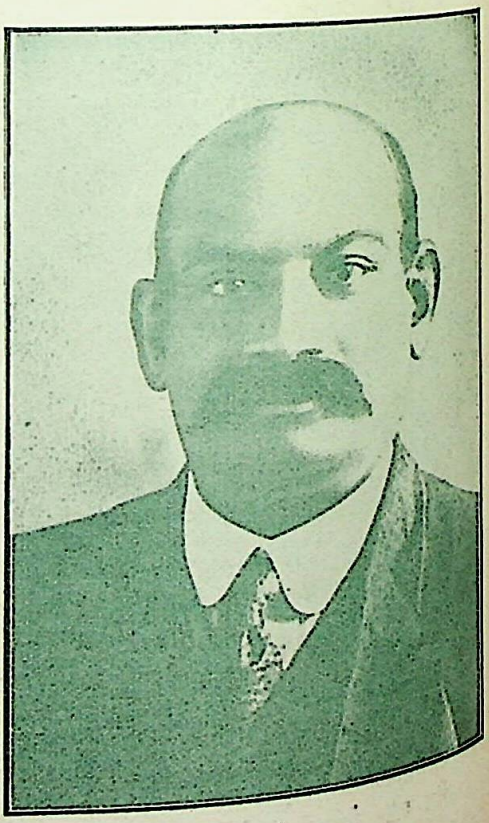

सर ए० पी० पैट्रो

CC-0: Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

जाने वाली कुछ मूर्तियाँ

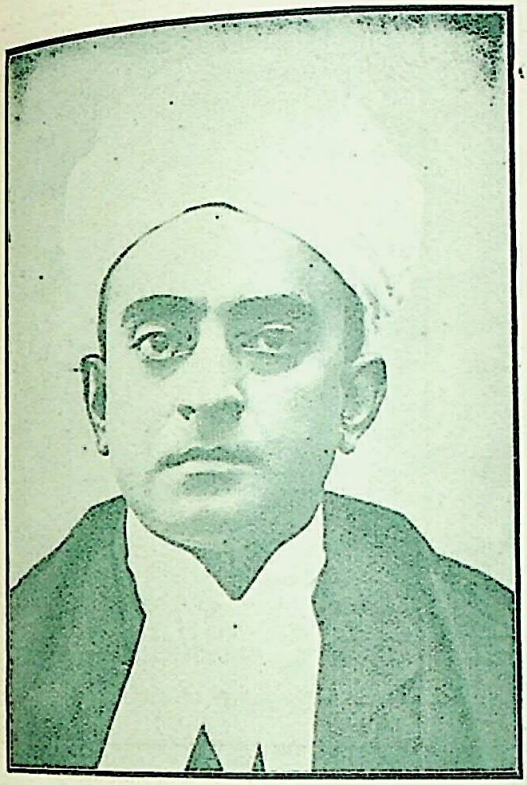

सर सी० पी० रामास्वामी अय्यर

राव बहादुर आर० श्रीनिवास

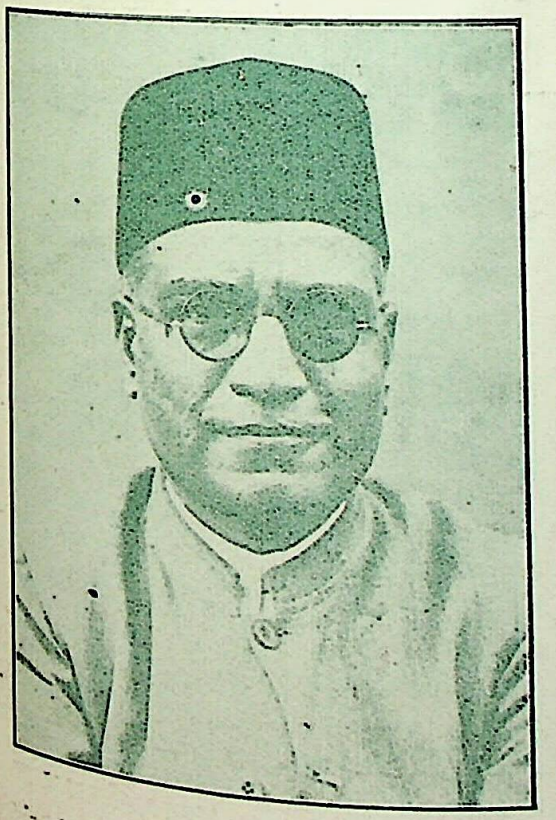

श्री० एम० आर० जयकर

डॉ० आम्बेडकर

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

भारत की भावी-आशा

श्रीयुत भीखन मेहतर

आप मेरठ-अलीगढ़ विभाग की तरफ़ से संयुक्त प्रान्तीय कौन्सिल के सदस्य चुने गए हैं।

चौधरी रामदयाल चमार

आप लखनऊ शहर की तरफ़ से संयुक्त प्रान्तीय कौन्सिल के सदस्य चुने गए हैं।

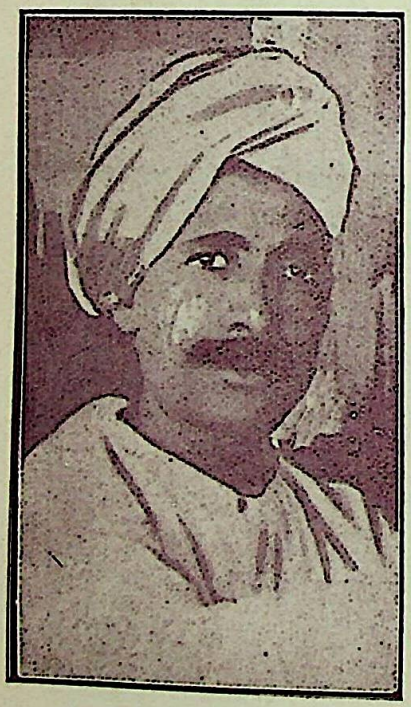

श्रीयुत रामजी दास नाई

आप अमृतसर की तरफ़ से पञ्जाब प्रान्तीय कौन्सिलके सदस्य चुने गए हैं।

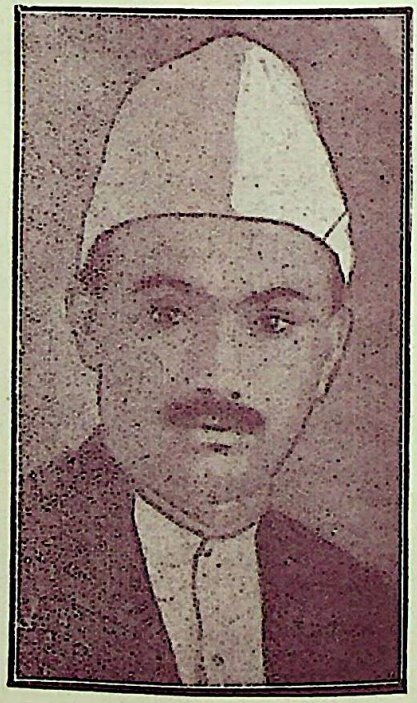

श्रीयुत डालू मोची

आप पूर्वीय सिन्ध से बम्बई प्रान्तीय कौन्सिल के सदस्य चुने गए हैं।

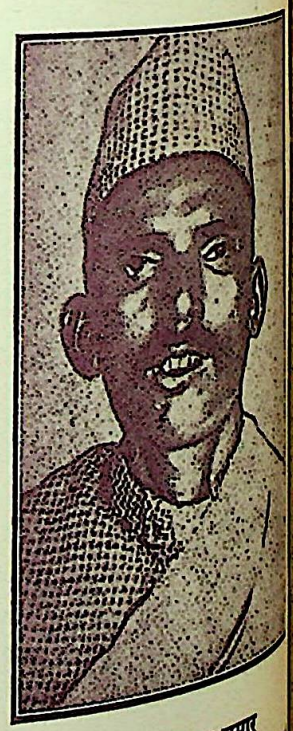

भगत चन्दीमल चमार

आप दिल्ली-प्रान्त की तरफ़ से लेजिस्लेटिव कौन्सिल के सदस्य चुने गए हैं।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

हैं, और जब वे एक दूसरे से पृथक नहीं हुए थे, उन सबों की एक ही संज्ञा "गौड़" थी। यहाँ पर ये प्रश्न उठ सकते हैं कि विन्ध्योत्तरवासी सभी ब्राह्मणों ने अपने को गौड़ क्यों कहा, गौड़ शब्द का क्या अर्थ है, इत्यादि। इन प्रश्नों के उत्तर में विद्वानों ने जो नाना प्रकार की कल्पनाएँ की हैं, वे नीचे दी जाती हैं। पाठकगण भी अपनी-अपनी अक़्ल लड़ावें—

१—गौड़ ब्राह्मण आर्यवंशीय हैं। इनका रङ्ग इषत् श्याम वर्ण वाले द्राविड़ ब्राह्मणों के मुक़ाबले में गौर था; अतः विन्ध्योत्तरवासी ब्राह्मणों ने अपना नाम गौर ब्राह्मण रक्खा, जो विकृत होकर गौड़ ब्राह्मण हो गया। 'र' और 'ड़' का पारस्परिक परिवर्तन प्रत्यक्ष देखने में आता है। बिहार के उत्तर भाग के रहने वाले, जैसे सारन और चम्पारन ज़िलों के निवासी, प्रायः 'बोरा' को 'बोड़ा' तथा 'सड़क' को 'सरक' बोलते हैं।

२—गुड़ नाम इक्षुरस-पाक का है। गुड़ से चीनी तथा चीनी से नाना प्रकार की स्वादिष्ट मिठाइयाँ बनती हैं। जिन ब्राह्मणों को मिठाई खाने में अधिक रुचि दीख पड़ी तथा जिन्होंने मिठाई के अभाव में गुड़ को ही अपनाया, उन्होंने ही गुड़ के सम्बन्ध से गौड़ ब्राह्मण कहला कर "ब्राह्मणा मधुरप्रियाः" को चरितार्थ किया।

३—गुप्त तथा दुर्बोध विषयों को गूढ़ कहते हैं। जिन्होंने दर्शनशास्त्र के जीव, ब्रह्म, माया, पुरुष, प्रकृति आदि जैसे गूढ़ तत्वों का अध्ययन किया और उन्हें जाना, वे ही गौढ़ (गूढ़ वेत्ति तदधीतेवा) ब्राह्मण कहलाए। फिर 'ढ़' और 'ड़' के पारस्परिक सवर्णता-वश गौढ़ शब्द गौड़ रूप में परिणत हो गया।

४—गोल विद्या गणित ज्योतिःशास्त्र का एक प्रधान अङ्ग है। बिना उसके पढ़े ज्योतिर्विद्या का ज्ञान पूर्ण नहीं होता। जिन्होंने गोल (गोलविद्या) का अध्ययन किया वे ही गौल (गोल+अण्) वा गौड़ ब्राह्मण कहलाए। "ल" और "ड" की सवर्णता का प्रमाण लीजिए—

रलयोर्डलयोश्चैव सषयोर्बवयोस्तथा।
वदन्त्येषाञ्च सावर्ण्यमलङ्कारविदो जनाः॥

अर्थ—अलङ्कारशास्त्र के जानने वाले र ल, ड ल, स ष, तथा ब व का सावर्ण्य कहते हैं।

५—गुड़ (सङ्कोचने) धातु से गुड़ बनता है। इसकी व्युत्पत्ति इस प्रकार है—"यो देहेन्द्रियादीनि स्वतपसा सङ्कोचयति जड़ी करोतीति गुड़ः" अर्थात् जिसने तपस्या करके देहादिक अपने कर्मेन्द्रियों को पापाचरण से रोक कर धर्माचरण में लगाया वह गुड़ हुआ और फिर "गुड़स्यापत्यं गौड़ः" हुआ अर्थात् जो गुड़ की सन्तान हुई वह गौड़ कहलाई।

६—गुड़ (रक्षायाम्) धातु से गुड़ हुआ और गुड़ की सन्तान गौड़ हुई। व्युत्पत्ति इस प्रकार है—"गुड़ति वेदान् रक्षति यः स गुड़ः। गुड़स्यापत्यं गौड़ः।" जो वेदों की रक्षा करता है वह गुड़ है और जो गुड़ की सन्तान हैं वे गौड़ हैं।

७—जिन ब्राह्मणों ने सृष्टि के आदि में पूर्व वर्णित गौड़ को अपना निवास-स्थान बनाया वे ही गौड़ ब्राह्मण कहलाए। पर यहाँ यह प्रश्न उठता है कि गौड़ देश नाम क्यों पड़ा? इस प्रश्न का कोई-कोई विद्वान् यह उत्तर देते हैं कि जिस देश में गुड़ कसरत से पैदा हो वह देश गुड़ के सम्बन्ध से गौड़ कहलाया।

८—कोई-कोई विद्वान यह कहते हैं कि सूर्य का नाम गोल है; अतः जो गोल (सूर्य) से उत्पन्न हुए वे ही गौल (गौड़) कहलाए। ड, ल की सवर्णता का प्रमाण दे ही आए हैं।

९—यजुर्वेद दो प्रकार का है, कृष्ण और शुक्ल। "कृष्ण" शब्द काला, तम, अन्धकार, हिंसा आदि का द्योतक है। "शुक्ल" शब्द स्वच्छ, उज्ज्वल तथा गौर वर्ण का अर्थ रखता है। अतः जिन ब्राह्मणों में शुक्ल यजुर्वेद के पठन-पाठन की परिपाटी चल निकली तथा जिन्होंने अपने आचरण को स्वच्छ बनाए रक्खा वे ही गौर (गौड़) ब्राह्मण के नाम से प्रसिद्ध हुए।

१०—'आदि गौड़ दीपिका' में लिखा है—

नारायणं पद्भवं वशिष्ठं
शक्तिञ्च तत्पुत्र पराशरञ्च।
व्यासं शुकं गौड़ पदं महान्तं
गोविन्दयोगीन्द्रमथास्य शिष्यम्॥

अर्थ—नारायण (विष्णु) से ब्रह्मा जी उत्पन्न हुए; ब्रह्मा से वशिष्ठ; वशिष्ठ से शक्ति; शक्ति से पराशर; पराशर से व्यास; व्यास से शुकदेव जी तथा शुकदेव जी से गौड़पद पैदा हुए। गौड़पद के शिष्य योगिराज गोविन्द हुए। इन्हीं गौड़पद के वंशज गौड़ ब्राह्मण कहाए।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

गौड़ शब्द विषयक पूर्वोक्त दसों कल्पनाएँ पञ्चगौड़ मात्र को दृष्टि में रख कर की गई हैं, न कि केवल पञ्चगौड़ समूहान्तर्गत वर्तमान काल में लोक में प्रचलित गौड़ संज्ञाधारी वर्ग विशेष को। अब पाठकगण स्वयं विचार लें कि इन कल्पनाओं में से कौन सी कल्पना ठीक जँचती हैं। एक और भी (ग्यारहवीं) कल्पना है, जिसे ठीक न समझ मैंने कल्पनाओं की ऊपर लिखी सूची में स्थान नहीं दिया। वह यह है—मुख्य (प्रधान) का उल्टा गौण (अप्रधान) होता है। जो ब्राह्मण मुख्य न थे वे ही गौण वा गौड़ ब्राह्मण कहलाए। पर जब पञ्चगौड़ ही मुख्य नहीं रहे तो मुख्य हैं कौन ? इस प्रश्न का कोई उत्तर नहीं है।

'आदि गौड़ दीपिका' के अनुसार ऋषि गौड़पद के वंशज गौड़ हैं। पर यह मत कई कारणों से अमान्य ठहरता है। "गौड़पद" नाम में दो शब्द हैं ; पर वंशजों की जाति-संज्ञा में केवल "गौड़" शब्द है। पुनः इस मत के अनुसार निःशेष गौड़ों में केवल वशिष्ठ और पराशर ये ही दो गोत्र होने चाहिए; पर गौड़ों (विन्ध्योत्तर वासी ब्राह्मणों) में कश्यप, भारद्वाज, शाण्डिल्य, संकृत आदि अनेक गोत्र हैं। यह हो सकता है कि निःशेष गौड़ तो नहीं, पर उनमें से कुछ, जिनमें उक्त गोत्र पाए जाते हों, गौड़पद के वंशज हों। सम्भवतः राजा जनमेजय ने जिन ब्राह्मणों को अपने यज्ञ में बुला कर भूमि-दान, मान आदि से सन्तुष्ट किया था, वे ही गौड़पद के वंशधर हों और आदिगौड़ कहलाए हों ; क्योंकि इनके पूर्वज शुकदेव जी तथा व्यास जी की घनिष्टता जनमेजय के पूर्वज परीक्षित तथा पाण्डवों के साथ महाभारत तथा भागवत से सिद्ध है। ये सब बातें निम्न-लिखित विवरण से स्पष्ट होंगी।

७—कुरुक्षेत्र और आदिगौड़

किसी-किसी महाशय की यह धारणा है कि गौड़ ब्राह्मणों की आदि निवास-भूमि कुरुक्षेत्र था। वहीं से इनके चार दल निकल कर कान्यकुब्ज, सारस्वत आदि देशों में जा बसे और कान्यकुब्ज आदि ब्राह्मण वंशों के प्रवर्तक हुए ; पर जो दल अपनी मातृ-भूमि कुरुक्षेत्र को छोड़ कर अन्यत्र नहीं गया वही आदिगौड़ की संज्ञा से प्रख्यात हुआ। गौड़ों का मौलिक निवास-स्थान कुरुक्षेत्र था, इस मत की सत्यता वा असत्यता आदिगौड़ों की उत्पत्ति, जो 'ब्राह्मणोत्पत्ति मार्त्तण्ड' में लिखा है, पढ़ने से ही स्पष्ट हो जाएगी। वहाँ स्पष्ट लिखा है कि राजा जनमेजय ने जिन बटेश्वर मुनि तथा उनके १४४४ शिष्यों को अपने यज्ञ में बुलाया था और जिन्हें आदिगौड़ की संज्ञा मिली थी वे गौड़ देश के, न कि कुरुक्षेत्र के, रहने वाले थे—

ते गौड़ ब्राह्मणाः सर्वे गौड़देशनिवासिनः।
वेदशास्त्रपुराणज्ञः श्रौतस्मार्त्त परायणाः॥

अर्थ—वेद, शास्त्र और पुराण के जानने वाले तथा श्रौत और स्मार्त कर्मों के करने में तत्पर वे गौड़ ब्राह्मण गौड़ देश के रहने वाले थे। राजा ने उन्हें अपने देश में बसा लिया—

क्षमध्वं चापराधं मे कृपां कृत्वा ममोपरि।
एवमुक्त्वा स्वदेशे वै वासयामास तान्द्विजान्॥

अर्थ—राजा ने कहा कि मैंने जो गुप्त रूप से पत्र के बीड़ों में ग्रामों का दानपत्र लिख कर आप लोगों को दान देने का अपराध किया है, उसे क्षमा करें। ऐसा कह कर राजा ने उन ब्राह्मणों को अपने देश में बसा लिया। सम्भवतः कुरुक्षेत्र में ही, जो उनके तथा उनके पूर्वजों के राज्यान्तर्गत था, राजा ने उन्हें बसने का स्थान दिया हो। इससे सिद्ध होता है कि आदिगौड़ों का कुरुक्षेत्र के साथ कुछ भी मौलिक सम्बन्ध न था। वे वहाँ दूसरे देश से जाकर पीछे से बसे थे। 'जनमेजय दिग्विजय' में लिखा है —

आदिशब्दोपाधिदत्ता ब्राह्मणा तु स्वयंभुवा।
वेदोऽपिदत्तस्तेनैवह्यादिगौड़ास्तुतो मताः॥

अर्थ—जिन ब्राह्मणों को स्वयं ब्रह्मा जी ने आदि शब्द वेद पढ़ा कर आदि शब्द की उपाधि दी वे ही आदिगौड़ माने गए। अवश्य ही ब्रह्मा जी ने इन्हें गौड़ देश में वेद पढ़ाया होगा।

८—कनौजियों की उत्पत्ति विषयक एक अन्य मत

पहले लिख आए हैं कि जो गौड़ ब्राह्मण कान्यकुब्ज देश में आ बसे अथवा जो उक्त देश का यह नामकरण होने के पूर्व से ही वहाँ बसते थे, वे कान्यकुब्ज वा कनौजिए ब्राह्मण कहलाए। यही मत शास्त्र-सङ्गत तथा युक्ति-युक्त होने से सर्वमान्य है। पर कनौजियों की उत्पत्ति के

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

विषय में एक और भी मत है, जिसका आधार केवल जनश्रुति है। पं० हरिकृष्ण शास्त्री जी ने कनौजियों की उत्पत्ति स्वरचित 'ब्राह्मणोत्पत्ति मार्त्तण्ड' नामक ग्रन्थ में इसी मत के अनुसार लिखने के पूर्व ही उक्त आधार को स्वीकार किया है—

अथातः संप्रवक्ष्यामि कान्यकुब्ज विनिर्णयम्।
श्रुत्वा द्विजमुखादेतद् वृत्तान्तं पूर्वकालिकम्॥

अर्थ—अब इसके पश्चात ब्राह्मणों के मुख से पूर्वकालीन वृत्तान्त को सुन कर कनौजियों का निर्णय कहूँगा। इससे स्पष्ट है कि उक्त पण्डित जी को अपने मत की पुष्टि में जनश्रुति के सिवा कोई शास्त्रीय प्रमाण न मिला। जनश्रुति का मूल्य ही शास्त्रीय प्रमाण के मुक़ाबले में कितना होता है, यह कहने की आवश्यकता नहीं। इस मत का संक्षिप्त विवरण इस प्रकार है—

रामचन्द्र रावण का वध कर अयोध्या लौटे और अपने पट्टाभिषेक के कुछ समय पश्चात उन्होंने यज्ञ ठाना। इस यज्ञ को देखने के लिए कान्य और कुब्ज नामक दो ब्राह्मण और भी कितने ब्राह्मणों के साथ कान्यकुब्ज देश से अयोध्या आए। कुब्ज रामचन्द्र को रावण की हत्या करने के कारण ब्रह्मघाती मान और उनका दान-दक्षिणा आदि लेना अनुचित समझ अपने भाई कान्य को छोड़ अपने अनुयायी अन्य ब्राह्मणों के साथ सरयू नदी के उत्तर तट पर चला गया; पर कान्य ने स्वानुयायियों के साथ वहीं रह रामचन्द्र का दिया हुआ धनादि स्वीकार कर लिया। जो कुब्ज के साथ सरयूपार चले गए वे तो सरयूपारी (सरवरिए) ब्राह्मण हुए, तथा जो कान्य के साथ सरयू के दक्षिण में रह गए वे कनौजिए (कान्यकुब्ज) कहलाए। इस मत के विषय में जो अनेकों शङ्काएँ उठती हैं, उनका सन्तोषजनक समाधान नहीं दीखता। वे शङ्काएँ ये हैं—

१—इस मत के अनुसार भी कान्यकुब्ज देश पहले से ही विद्यमान था, जहाँ से कान्य और कुब्ज रामचन्द्र का यज्ञ देखने आए थे। यहाँ यह प्रश्न उठता है कि वहाँ के ब्राह्मण किस नाम से अपना परिचय देते थे। यदि कहो कान्यकुब्ज नाम से, तो उनका वंशप्रवर्त्तक कान्य कैसे हुआ? यह नाम तो उन्हें पहले से ही प्राप्त था। यदि कहो गौड़ नाम से, तो यह शास्त्र-विरुद्ध है। कान्यकुब्ज देश की विद्यमानता सिद्ध हो जाने पर वहाँ के ब्राह्मणों की गौड़ संज्ञा नहीं मानी जा सकती।

२—यदि कान्य सचमुच किसी ब्राह्मण-वंश का प्रवर्त्तक था तो वह वंश केवल कान्य के नाम से विख्यात होता। इस वंश के नामकरण में उसके भाई का कुब्ज का नाम, जो उसे छोड़ कर सरयूपार चला गया था, क्यों घुस पड़ा?

३—दोनों भाइयों के नाम (कान्य और कुब्ज) को समस्त कर देने से कान्यकुब्ज देश का यह नाम बन जाता है, जिससे वह ध्वनि निकलती है कि इन दोनों भाइयों के नामानुसार ही उक्त देश का नाम पड़ा था, जो वाल्मीकीय रामायण से खण्डित हो जाता है।

४—रामचन्द्र ने ब्राह्मण रावण की हत्या की है, यह समाचार सर्वत्र फैल गया था; अतः कुब्ज भी इससे अनभिज्ञ न था। इस बात को जानता हुआ भी कुब्ज, यदि सचमुच उसे अपने ब्राह्मणत्व का अभिमान था तो, एक ब्रह्मघाती के यज्ञ में क्यों आया?

५—यदि अनजान में आया तो जान लेने पर अपने देश कान्यकुब्ज को क्यों नहीं लौट गया? ऐसा न कर वह अपने अनुयायियों के समेत सरयू पार जा बसा, जहाँ उसी ब्रह्मघाती का, उसके उत्तर कोशलेश्वर होने से, राज्य था। ऐसे पापी के राज्य में अपनी निवास-भूमि बना वह अपने सिद्धान्तों से क्यों गिर गया और उसने अपने समेत अपने साथियों को भी रसातल में क्यों ढकेल दिया? इत्यादि।

शोक है कि जिस राक्षस-समाज ने "हन्नो द्विजान् देवयजीन् निहन्मः" को ही अपने जीवन का एक मात्र लक्ष्य बना रक्खा था, उस समाज के प्रमुख नेता रावण जैसे आततायी को, जो अपने कुकर्मों के कारण ब्राह्मण-पद से पूर्णतः परिच्युत हो चुका था, बध कर ब्राह्मण-जाति मात्र के उपकारी रामचन्द्र को कुब्ज ने, स्वयं ब्राह्मण होता हुआ भी, ब्रह्मघाती क़रार देकर अपनी अक्षम्य कृतघ्नता तथा अन्यायशीलता का परिचय दे दिया। पर यथार्थ में ये सब बातें कुछ भी नहीं हैं। इस मत का आधार केवल कपोलकल्पना के सिवा और कुछ भी नहीं होने से यह मानने योग्य नहीं है।

उक्त मत के प्रतिकूल, सरयूपारी अपनी उत्पत्ति इस प्रकार बतलाते हैं कि रामचन्द्र ने उक्त यज्ञ में कान्यकुब्ज

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

देश से सोलह ब्राह्मणों को, जो अपनी कुलीनता, विद्वत्ता आदि उत्तम गुणों के कारण विख्यात थे, बुला कर और उन्हीं को ऋत्विक्, होता, अध्वर्यु आदि बना कर यज्ञ किया। पुनः यज्ञोपरान्त उन्हें दान-मान आदि से सन्तुष्ट कर स्वराज्यान्तर्गत साख देश में, जो सरयू के उत्तर तट पर अवस्थित था, बसा दिया। वे ही १६ ब्राह्मण सरयूपारियों के वंशप्रवर्त्तक हुए। ये गोरखपुर, सारन, चम्पारन, शाहाबाद, पटना, गया तथा बलिया ज़िलों में अधिक संख्या में पाए जाते हैं। इनमें गर्ग, गौतम और शाण्डिल्य उत्तम माने जाते हैं।

९—कान्यकुब्जों के प्रसिद्ध १६ गोत्र

अथ गोत्राणि वक्ष्यामि कान्यकुब्ज द्विजन्मनाम्।
कश्यपश्च भरद्वाजो शाण्डिल्यः सांकृतस्तथा॥
कात्यायनोपमन्युश्च काश्यपश्च धनञ्जयः।
कविस्तो गौतमो गर्गो भारद्वाजस्तथैव च॥
कौशिकश्च वशिष्ठश्च वत्सः पाराशरस्तथा।
इत्येते कान्यकुब्जानां गोत्राण्याहुश्च षोड़श॥

अर्थ—अब कान्यकुब्ज ब्राह्मणों के प्रसिद्ध १६ गोत्र कहते हैं—(१) कश्यप, (२) भारद्वाज, (३) शाण्डिल्य, (४) सांकृत, (५) कात्यायन, (६) उपमन्यु, (७) कश्यप, (८) धनञ्जय, (९) कविस्त, (१०) गौतम, (११) गर्ग, (१२) भारद्वाज, (१३) कौशिक, (१४) वशिष्ठ, (१५) वत्स और (१६) पाराशर। कान्यकुब्जों के ये १६ गोत्र कहे गए हैं।

१०—षट्कुलज (कुलीन)

कात्यायनोपमन्युश्च भारद्वाजोऽथ कश्यपः।
शाण्डिल्यः सांकृतश्चैव षडेते गोत्रजोत्तमाः॥

अर्थ—कात्यायन, उपमन्यु, भरद्वाज, कश्यप, शाण्डिल्य और सांकृत, इन ६ गोत्रों में उत्पन्न कान्यकुब्ज उत्तम माने जाते हैं। इन ६ गोत्रों को कुलीन कहते हैं।

११—धाकर कान्यकुब्ज

पाराशरः काश्यप भारद्वाज
धनञ्जया गौतम वत्स गर्गाः।
वशिष्ठ काविस्त सुकौशिकाश्च
उदाहृता धाकरका दशैते॥

अर्थ—शेष १० गोत्र धाकर कहे गए हैं—(१) पाराशर, (२) काश्यप, (३) भारद्वाज, (४) धनञ्जय, (५) गौतम, (६) वत्स, (७) गर्ग, (८) वशिष्ठ, (९) कविस्त और (१०) कौशिक।

कुलीन उसी को कहते हैं जिसके आचार-विचार, चाल-चलन, सम्बन्ध आदि ठीक हों। इसके विपरीत को धाकर कहते हैं। कुलीन कनौजियों के उक्त ६ गोत्र ६ घर तथा धाकरों के १० गोत्र आधे घर कहे जाते हैं। अतः सब मिला कर कनौजियों के साढ़े छः घर हैं। इनसे पृथक जो ५६ गोत्र कनौजियों में देख पड़ते हैं वे अप्रसिद्ध हैं और उनका प्रवर्त्तन उक्त १६ गोत्रों से ही पीछे से हुआ मालूम होता है।

१२—विश्वा मर्यादा

विश्वाओं के अनुसार मर्यादा का प्रचार भी उन अप्रसिद्ध ५६ गोत्रों के सदृश ही पीछे से हुआ मालूम पड़ता है। विद्वानों का कथन है कि कन्नौज के सम्राट् महाराज जयचन्द ने विक्रमीय सम्वत् १२३६ में एक विशाल राजसूय यज्ञ रचा था। सम्भवतः यह वही राजसूय यज्ञ था जिसमें दिल्लीश्वर पृथ्वीराज की सुवर्णमयी मूर्त्ति से द्वारपाल का काम लिया गया था और पृथ्वीराज ने भी इस अपमान का बदला जयचन्द की पुत्री संयोगिता का हरण करके चुकाया था। इस यज्ञ में जयचन्द ने सम्पूर्ण कान्यकुब्ज ब्राह्मणों को बुला कर उनमें अपनी अपनी कुलीनता के अनुसार विश्वाओं की संख्या निश्चित कर दी थी। पर विश्वाओं की संख्या सदा एक सी न रही। काल पाकर उसमें न्यूनाधिक्य होते देखा गया। जिसके पहले १० विश्वाएँ थीं उसी के बाद की लिखी वंशावली में केवल ९ ही विश्वाएँ लिखी मिलीं। इससे मालूम होता है कि मर्यादा के न्यूनाधिक्य के साथ-साथ विश्वा-संख्या में भी घटती-बढ़ती हुआ करती थी।

१३—प्रवर

अष्टाध्यायी, अध्याय ४, पाद १ का १६२ वाँ सूत्र है—"अपत्यं पौत्र प्रभृति गोत्रम्" अर्थात् पौत्र प्रभृति अपत्य गोत्रसंज्ञक हों। इससे यह भाव निकलता है कि गोत्र प्रवर्त्तक ऋषि, उसका पुत्र तथा उसका पौत्र ये तीनों सम्बन्धित गोत्र के प्रवर होते हैं। जैसे कश्यप गोत्र के कश्यप, असित और देवल ये तीन प्रवर हैं। वहीं

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

साधारण नियम हैं; पर किसी-किसी गोत्र में ५ प्रवर तक मिलते हैं। जैसे गर्ग गोत्र के गर्ग, शौनक, भारद्वाज, बार्हस्पत्य और अङ्गिरस ये ५ प्रवर हैं। जिस-जिस गोत्र में जो-जो व्यक्ति अति श्रेष्ठ (प्रवर) माने गए उस-उस गोत्र के वे ही व्यक्ति प्रवर कहलाए। कनौजियों के पूर्वोक्त १६ गोत्रों के संख्याक्रमानुसार प्रवर इस प्रकार हैं—

१—कश्यप, असिति, देवल। २—भारद्वाज, अङ्गिरा, बृहस्पति। ३—शाण्डिल्य, असित, देवल। ४—सांकृत, सांख्यायन, किल। ५—कात्यायन, विश्वामित्र, किल। ६—उपमन्यु, वशिष्ठ, याज्ञवल्क्य। ७—काश्यप, नैध्रुव, आवत्सार, कौशिक, लोहित। ८—धनञ्जय, माधुच्छन्दस, विश्वामित्र। ९—काविस्र, देवरात, विश्वामित्र। १०—गौतम, अङ्गिरस, बार्हस्पत्य। ११—गर्ग, शौनक, भारद्वाज, बार्हस्पत्य, अङ्गिरस। १२—भारद्वाज, अङ्गिरस, बार्हस्पत्य। १३—कौशिक, देवरात, अघमर्षण। १४—वशिष्ठ, शक्ति, पराशर। १५—वत्स, च्यवन, और्व्व, अप्नुवान्, जमदग्नि,। १६—पराशर, वशिष्ठ, सांकृत।

१४—वेद, शाखा और सूत्र

पूर्वोक्त १६ गोत्रों के वेद, शाखा और सूत्र क्रमशः इस प्रकार हैं—

१—साम, कौथुमी, गोभिल। २—यजुर्, माध्यन्दिनी, पारस्कार। ३—साम, कौथुमी, गोभिल। ४—यजुर्, माध्यन्दिनी, पारस्कर। ५—यजुर्, माध्यन्दिनी, पारस्कर। ६—यजुर्, माध्यन्दिनी, पारस्कर। ७—साम, कौथुमी, गोभिल। ८—साम, कौथुमी, गोभिल। ९—यजुर्, माध्यन्दिनी, पारस्कर। १०—यजुर्, माध्यन्दिनी, पारस्कर। ११—साम, कौथुमी, गोभिल। १२—यजुर्, माध्यन्दिनी, पारस्कर। १३—यजुर्, माध्यन्दिनी, पारस्कर। १४—यजुर्, माध्यन्दिनी, पारस्कर। १५—साम, कौथुमी, गोभिल। १६—यजुर्, माध्यन्दिनी, पारस्कर।

१५—आस्पद

अष्टाध्यायी, अध्याय ६, पाद १ का १४६ वाँ सूत्र है—"आस्पदं प्रतिष्ठायाम्"। आस्पद प्रतिष्ठा पाने का नाम है। प्रत्येक गोत्र में जिस पुरुष ने जिस ग्राम में वास करके प्रतिष्ठा पाने योग्य यज्ञादि कर्म किया, उस पुरुष को उस ग्राम की आस्पद पदवी प्राप्त हुई और वही पदवी उसके वंशधरों ने भी धारण कर लिया; जैसे कपिला के मिश्र, बटपुर के अग्निहोत्री इत्यादि। कनौजियों में अनेक उत्तम-उत्तम पदवियाँ हैं; जैसे द्विवेदी, त्रिवेदी, त्रिपाठी, चतुर्वेदी, उपाध्याय, पाठक, पाण्डेय, भट्टाचार्य, अवस्थी, दीक्षित, वाजपेयी, शुक्ल, मिश्र इत्यादि।

१६—कनौजियों की आत्मप्रशंसा तथा वर्त्तमान स्थिति

'कान्यकुब्ज चिन्तामणि' नामक ग्रन्थ के रचयिता महाशय ने स्वजाति की प्रशंसा में निम्न-लिखित श्लोक रचे हैं—

कान्यकुब्जद्विजाः श्रेष्ठा धर्म कर्म परायणः।
प्रलयेनाऽपिसीदन्तियदि कन्या न जायते॥

अर्थ—कान्यकुब्ज ब्राह्मण श्रेष्ठ हैं तथा धर्म-कर्म में तत्पर रहते हैं। यदि इनके घर कन्या न जन्म ले तो ये प्रलय काल में विषाद को नहीं प्राप्त होते। कुलीनता का घमण्ड तथा धन का अभाव, इन दो कारणों से इनके यहाँ कन्या के विवाह में बड़ी दिक्कत होती है। ग्रन्थकार महाशय ने केवल स्वजाति की प्रशंसा ही नहीं की, बल्कि अन्य ब्राह्मणों को बुरा भी कहा है—

कान्यकुब्जा द्विजाः सर्वे मागधं माथुरं विना।
कुलानामकरो नास्ति कर्मणा जायते कुलम्॥

अर्थ—मथुरिए और मगहिए (गयावाल) ब्राह्मणों को छोड़ कर सभी कान्यकुब्ज हैं। कुलों का कहीं स्थान नहीं होता। कर्मों से ही कुल बनता है। बेचारे मथुरियों और गयावालों ने ग्रन्थकार का क्या बिगाड़ा था कि उन्हें कनौजियों की पंक्ति से बाहर कर बुरा कह दिया? सच्ची होती हुई भी अपनी प्रशंसा तथा दूसरे की निन्दा करना शिष्टाचरण के विरुद्ध है।

इसमें शक नहीं कि ये कनौजिए ब्राह्मण किसी समय, जैसा कि उनकी पूर्वोक्त उपाधियों से मालूम पड़ता है, वेद-विद्या की उच्चतम कोटि पर पहुँच गए थे। और इनके यहाँ यज्ञादि शुभ कर्मों को करने की परिपाटी खूब बढ़ी-चढ़ी थी। इनकी विद्वत्ता की प्रखर ज्योति के सामने अन्य ब्राह्मण निस्तेज मालूम पड़ते थे। पर अब ये उपाधियाँ नाम मात्र की रह गई हैं। अधिकतर इनमें भोजन-भट्ट

(शेष मैटर ७३ पृष्ठ के पहले कॉलम में देखिए)

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

वीरांगना

[श्री० शम्भूदयाल सक्सेना, साहित्य-रत्न]

यावक न जिनके पैर का—
किञ्चित अभी मैला हुआ।
उस नव-बधू के आगमन को
आज था न समय हुआ।

कुछ प्रेम का प्रतिफल न पाया—
था यथोचित रीति से।
लग भी न पाई थी गले वह—
प्राणपति के प्रीति से।

बस, आ गया इकबारगी
सन्देश राना का नया।
जिसमें उन्हें था रण-निमन्त्रण
भूरि-भूरि दिया गया।

यह जान कर भी, युद्ध में—
अनिवार्य मरना है उन्हें।
प्रस्ताव का प्रण भी हृदय से—
पूर्ण करना है उन्हें।

युद्धार्थ होने को उपस्थित—
वीर चूणावत तभी।
तैयार आप लगे कराने,
शीघ्र ही सेना सभी।

घनघोर रव सुन कर नगाड़े—
का, प्रथम आवास से।
झट झाँकने आकर झरोखों—
में लगी उल्लास से।

सेना सजा कर आप चूणावत
महल को चल दिए।
लेने विदा उस नव बधू से,
युद्ध करने के लिए।

सत्वर जगा कर आरती, वह
भामिनी भी आ गई।
पतिदेव के पुरुषार्थ की
करने लगी पूजा नई।

उस रूपराशि, नवीन यौवन—
की मदोन्मत चाल को।
विद्युत-प्रभा, मणिमाल, चन्द्र—
विनिन्दकारी भाल को।

निज सामने पाकर, व्यथित—
सरदार चूणावत हुए।
सब वीरता के भाव उनके,
शीघ्र छूमन्तर हुए।

कहने लगी वीराङ्गना तब,
"नाथ! यह क्या हो गया?
आते यहाँ क्यों आपका
वीरत्व सारा खो गया?

सेना सजाने का नया—
उल्लास लख पड़ता नहीं।
वह वीरता का तेज भी तो—
देख अब पड़ता नहीं।"

"कहना तुम्हारा है सही, पर
बात समझी है नहीं।
है रक्त बहना रुक गया इन—
नाड़ियों में क्या कहीं?

है सत्य, यद्यपि शत्रु की—
सेना असंख्य-अपार है।
कुण्ठित नहीं पर आज फिर भी
हो गई तलवार है।

जब तक यहाँ पर क्षत्रियों की—
छत्र-छाया शेष है।
पग-पग धरा का प्राण से भी—
मूल्य एक विशेष है।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

कट जायँ ये भुजदण्ड चाहे,
पर रहे गौरव बना।
इस राजपूती मान का
अभिमान इतना है बना।

पर—पर यही प्राणाधिके! है
वेदना होती बड़ी।
सूनी तुम्हारी है पड़ी—
यौवन-उमङ्गों की घड़ी।"

"हाँ, यदि यही है बात, निष्प्रभ—
आप जिससे हो रहे।
जो व्यर्थ चिन्तालोक में—
आलोक अपना खो रहे।

तब तो नहीं हूँ मैं कहाने—
योग्य नारी आपकी।
दण्ड-व्यवस्था की गई यह,
कौन भारी पाप की?

करबद्ध मेरी प्रार्थना है,
नाथ! बस इतनी यही—
करिए हृदय से दूर ऐसी—
भ्रान्ति आप रही सही।

आदर्श रानी पद्मिनी का—
है अभी बिल्कुल नया।
वीरङ्गनाओं का निराला
मार्ग भूल नहीं गया।"

"तो अब बिदा होता प्रिये! हूँ,
शेष कुछ कहना नहीं।
हो जानती मुझसे अधिक तुम
नीति की सत्ता कहीं।

है मिट गया सन्देह सब,
विश्वास पक्का हो गया।
वह वेदना का भार सारा—
अब हृदय से खो गया।

निश्चय मुझे है, ध्यान अपनी
आन का रख कर, सदा—
तुम कर दिखाओगी वही, जो
उचित होगा सर्वथा।"

लेकर विदा जाने लगे वे,
जब निकल कर द्वार से;
तो थे निरुत्तर एक चिन्ता—
के अपरिमित भार से।

मुड़ कर पुनः आए महल में,
प्राणप्यारी से कहा—
क्या?—वही, जो भूल कर उस
बार कहने से रहा।

अनुकूल आश्वासन मिले, फिर
द्वार से बाहर हुए।
पर चिन्तना से एक क्षण को
मुक्त वे न कहीं हुए।

जाते समय अट्टालिका पर—
एक दृष्टि बिछा गए।
जिसमें व्यथित सकरुण हृदय के
भाव सञ्चित थे नए।

उनका न असमञ्जस छिपा उस—
वीर बाला से रहा।
तब तो बुला कर पास उसने
एक दासी से कहा—

"ये शीश देती हूँ—उन्हें देकर,
विनय करना यही—
संशय न रक्खें आज से—
क्षत्राणियों पर वे कहीं।"*

* अप्रकाशित खण्ड काव्य का एक सर्ग।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

सत्याग्रह संग्राम में एक वीरांगना का भाग

(श्रीमती उर्मिला देवी शास्त्री का जीवन-चरित्र)

[श्री० यतीन्द्रकुमार]

आज से बाइस वर्ष पूर्व वङ्ग-भङ्ग के आन्दोलन ने ग़ुलामी की ज़ञ्जीर में जकड़े हुए परतन्त्र भारत को एक नई विचार-धारा में डाल कर सजग कर दिया। लॉर्ड कर्ज़न का एक प्रान्त को भङ्ग करने का प्रयत्न राष्ट्र की तमाम शक्तियों को एकत्रित कर एक स्वतन्त्र राष्ट्र की नींव डाल गया। बॉयकॉट और सत्याग्रह के अमोघ अस्त्रों ने भारतीयों के हृदय में वह लहर बहा दी कि आज कोई पशुबल से उन्मत्त राष्ट्र उसे उपेक्षा की दृष्टि से नहीं देख सकता।

आज देश का बच्चा-बच्चा आज़ादी के लिए दीवाना नज़र आता है। राष्ट्र की तमाम ताक़तें केन्द्रीभूत होकर सफलता के लिए व्याकुल हैं। भोगवाद के अन्धविश्वासी भारतीयों से इतनी आशा किसे थी कि वे स्वयं इतने कष्ट-सहिष्णु बन कर इस कठिन संग्राम में जुट पड़ेंगे? सब से आश्चर्य की बात इस संग्राम में यह हुई है कि अन्ध-विश्वास और रूढ़िवाद की उपासिका स्त्रियाँ भी पुरुषों के साथ कन्धे से कन्धा भिड़ा कर काम कर रही हैं। जिन्हें पुरुष-समाज अबला कह कर पुकारता था, जो शृङ्गार तथा मनबहलाव की चीज़ समझी जाकर पर्दे में बन्द रक्खी जाती थीं, वे ही आज पुरुषों के साथ-साथ, और कहीं-कहीं उनसे भी आगे बढ़ कर, भारत की राजनैतिक प्रगति में भाग ले रही हैं। कोमलकलेवरा बहिनें आज भद्दे और खुरखुरे खद्दर को धारण करके मैदान में पहुँच गई हैं। जिधर देखिए वे प्रगति के पथ पर नज़र आ रही हैं। किसी भी स्थान पर वे पुरुषों से पीछे रहना उचित नहीं समझतीं। कहीं उनके द्वारा धरना दिया जा रहा है; कहीं जुलूस निकल रहे हैं; कहीं व्याख्यान दिए जा रहे हैं और कहीं-कहीं जेल-मन्दिर की भी यात्रा हो रही है। सारांश यह है कि आज स्त्री-समाज जग कर भविष्य में होने वाली क्रान्ति की सूचना दे रहा है। भारत का आधुनिक स्त्री-समाज विलास के सभी साधन और पुराने ज़माने से आते हुए कुसंस्कारों का त्याग कर स्वतन्त्रता के यज्ञ में जो आहुति दे रहा है, दुनिया के इतिहास में एक ऐसी अनोखी और नई बात है, जो किसी भी अवस्था में भुलाई नहीं जा सकती। श्रीमती सरोजिनी नायडू ने जो आदर्श महिला-संसार के आगे रक्खा है और लाखों स्त्रियों को स्वतन्त्रता के विकट मार्ग का अनुसरण करने, तथा स्वाधीनता के विकट संग्राम में भाग लेने के लिए प्रोत्साहित किया है, उसका असर काफ़ी है। अब तक इस आन्दोलन में भाग लेकर सैकड़ों स्त्रियाँ जेल जा चुकी हैं तथा जिन्होंने अन्य प्रकार से कष्ट सहे और त्याग किए हैं, उनकी संख्या लाखों में नहीं तो हज़ारों में अवश्य है। इस लेख में हम एक ऐसी ही वीर महिला का परिचय 'चाँद' के पाठकों को देना चाहते हैं, जिन्होंने इस आन्दोलन में भाग लेकर अपना आत्म-त्याग किया है तथा अपने नगर की महिलाओं में नया जीवन डाल दिया है।

संयुक्त प्रान्त में जिन वीराङ्गनाओं ने इस आन्दोलन में भाग लिया है उनमें मेरठ के सत्याग्रह दल की प्रधान नायिका श्रीमती उर्मिला देवी को किसी भी अवस्था में भुलाया नहीं जा सकता। उनके दिन-रात के अथक परिश्रम ने हज़ारों स्त्रियों में आज़ादी की उमङ्ग पैदा कर नवीन क्रान्ति की लहर और राष्ट्रीय यज्ञ में कूद आने की जो शक्ति पैदा कर दी, वह आगामी भारत की स्वतन्त्रता के यज्ञ में स्वर्णाक्षरों से अङ्कित रहेगा। उनका दिन-रात का अथक परिश्रम और ठोस तथा अनुकरणीय कार्य स्वतन्त्रता के यज्ञ में महिला-समाज का मस्तक सदा ऊँचा रक्खेगा। आज जो मेरठ के अन्दर हज़ारों स्त्रियों ने अपनी आहुति स्वतन्त्र भारत के लिए दी है, उसका श्रेय श्रीमती उर्मिला देवी शास्त्री को ही है। अन्ततोगत्वा सरकार को भी इस बात का क़ायल होना पड़ा और उसने उन

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

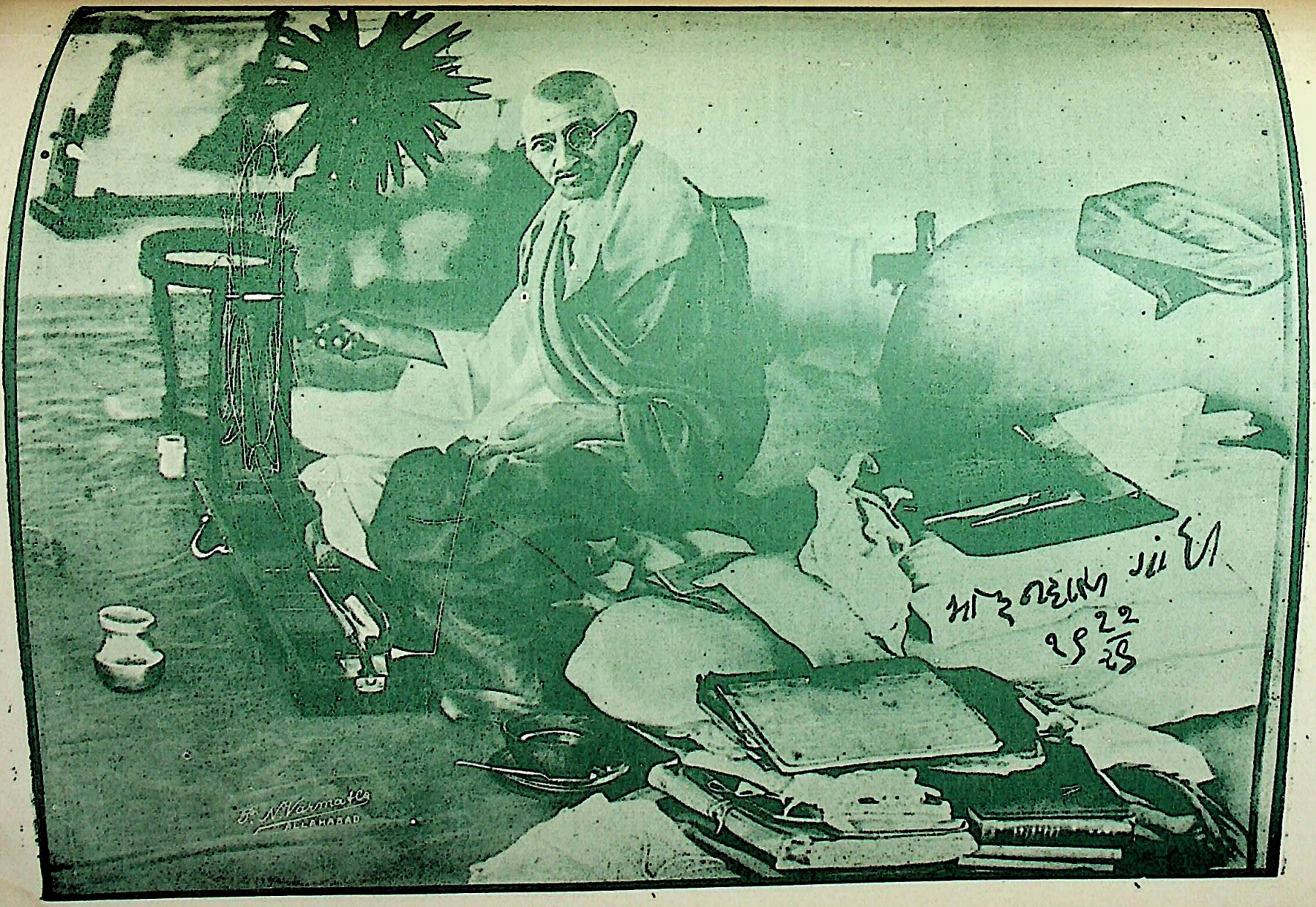

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

सत्याग्रह-संग्राम की

प्रेज़िडेण्ट (भूतपूर्व) पटेल

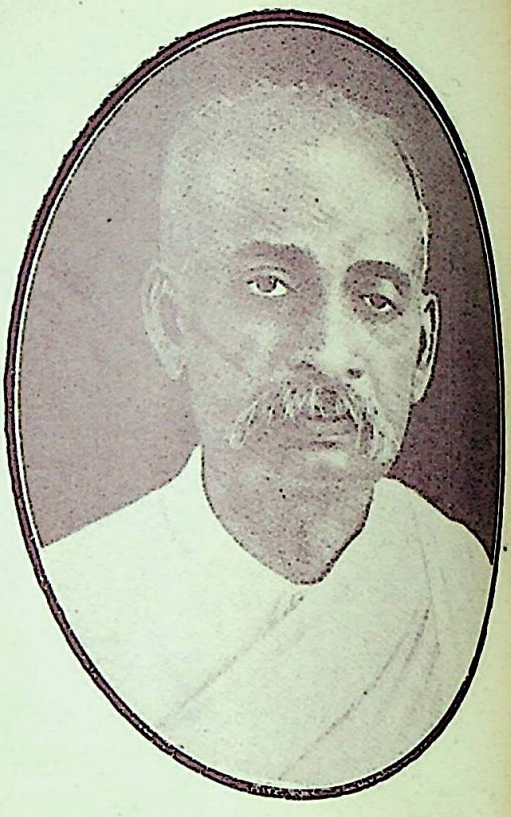

सरदार पटेल

डॉक्टर अन्सारी

महामना मालवीय जी

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

कुछ महत्वपूर्ण आहुतियाँ

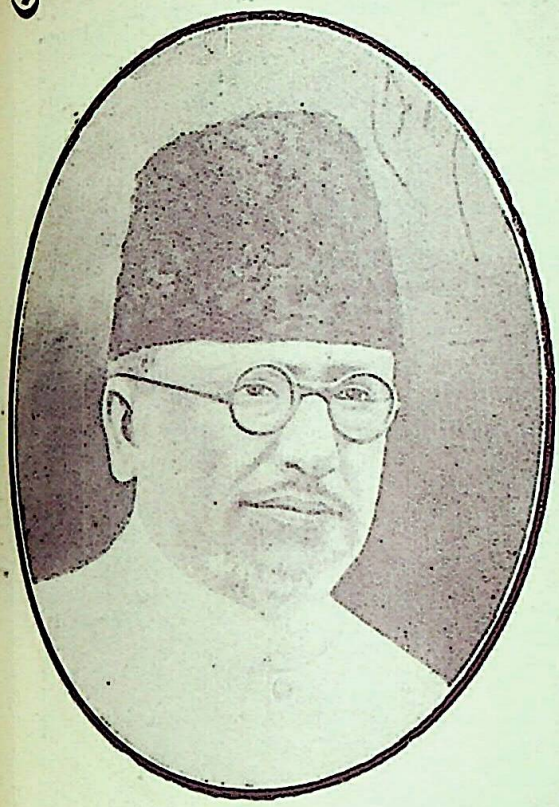

मौलाना अब्दुल कलाम आज़ाद

त्यागमूर्ति पं० मोतीलाल नेहरू

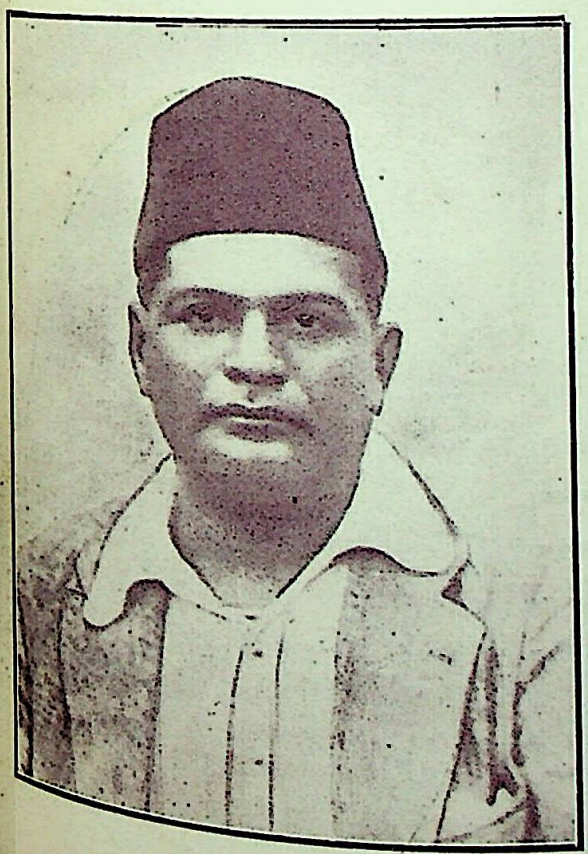

श्री० एम० वी० अय्यङ्गार, बार-एट-ला
(सदस्य [illegible])

महात्मा भगवानदीन जी
("[illegible]" के सदस्य)

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

बम्बई में सत्याग्रह की अग्नि प्रज्ज्वलित करने वाली
श्रीमती कमलादेवी चट्टोपाध्याय

सत्याग्रह-संग्राम में सबसे पहले जेल जाने वाली
श्रीमती रुक्मिणी लक्ष्मीपति (आन्ध्र प्रान्त)

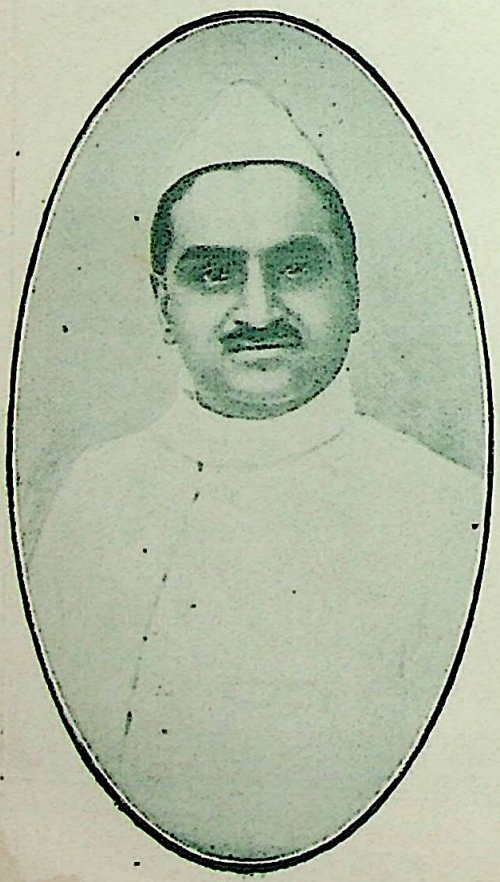

अजमेर के पण्डित गौरीशङ्कर भार्गव और उनकी धर्मपत्नी, जिन्हें सत्याग्रह के सम्बन्ध में क़ैद की सज़ा दी गई है। इस समय दोनों पति-पत्नी जेल में हैं।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

अनमोल मोती को परीक्षा की विकट अग्नि में डाल कर छः मास के लिए कारागार में बन्द ही तो कर दिया। इस वीर महिला का जीवन प्रारम्भ से आज तक एक महान आदर्श और महान सन्देश का परिचायक है और रूढ़िवाद अन्त करने के लिए शुरू से ही जो प्रयत्न उनके जीवन में हो रहा है वह प्रत्येक समाज की महिलाओं के लिए अनुकरणीय है।

बाल्यकाल और शिक्षा

भारत के प्राकृतिक सौन्दर्य की विभूति और पृथ्वी का स्वर्ग काश्मीर (श्रीनगर) हमारी चरित्रनायिका का जन्म-स्थान है। उनके पिता लाला चिरञ्जीवलाल, जो पहले एक बैङ्क के मैनेजर थे और बाद में जिन्होंने स्वतन्त्र उद्योग-धन्धों को तरक़्क़ी देकर काफ़ी धन संग्रह किया, एक बहुत ही विचारवान तथा सज्जन पुरुष हैं। आप वर्षों से श्रीनगर आर्यसमाज के प्रधान चले आ रहे हैं। आपकी पहली पुत्री श्रीमती सत्यवती देवी बम्बई में अपने पति के साथ हैं और सत्याग्रह कार्य कर रही हैं। सब से छोटी पुत्री कुमारी प्रतिभा एक प्रतिभाशालिनी कवि हैं और अब तक अनेक कविताओं द्वारा सम्मेलनों में पदक तथा प्रशंसापत्र प्राप्त कर चुकी हैं। श्रीमती उर्मिला देवी लाला जी की द्वितीय पुत्री हैं। आपका जन्म सन् १९०९ ई० में हुआ। सुशिक्षित आर्य परिवार में जन्म लेने के कारण ही आपकी शिक्षा-दीक्षा का प्रबन्ध प्रारम्भ से ही अच्छा रहा। पहले आपने वर्नाक्यूलर मिडिल पास किया। उसके पश्चात आप घर पर ही रह कर स्वाध्याय करने लगीं और थोड़े ही दिनों में संस्कृत के अभ्यास के साथ ही साथ हिन्दी में विशेष योग्यता प्राप्त कर ली। फिर कुछ अङ्गरेज़ी का अभ्यास करने के उपरान्त आपने पञ्जाब आर्य-प्रतिनिधि-सभा की उच्च परीक्षा "सिद्धान्त विशारद" पास की और अन्त में पञ्जाब युनिवर्सिटी की हिन्दी की सब से ऊँची परीक्षा "हिन्दी प्रभाकर" में उत्तीर्ण हुईं, जिसका कोर्स हिन्दी के एम० ए० से भी बड़ा है।

आपका ध्यान प्रारम्भ से ही स्त्री-जाति को सुशिक्षित करने की ओर था, अतः अपना शिक्षा-काल समाप्त करने के बाद आपने कुछ दिनों तक निस्स्वार्थ भाव से देहरादून कन्या गुरुकुल में अध्यापिका का कार्य किया। फिर कुछ दिनों तक श्रीनगर की आर्य कन्या पाठशाला में आप अवैतनिक रूप से मुख्याध्यापिका का कार्य करती रहीं। इस कार्य में आपको इतनी सफलता प्राप्त हुई कि अपने कठोर परिश्रम और अध्यवसाय के बल से आपने उस पाठशाला को थोड़े ही दिनों में एक ऊँचे दर्जे के विद्यालय का रूप दे दिया।

विवाह

उर्मिला देवी का जीवन प्रारम्भ से ही स्वदेशी के व्रत से दीक्षित हुआ था। और समय पाकर आपके हृदय में देश-भक्ति का अङ्कुर एक पौधे का रूप धारण कर गया। प्रारम्भिक काल में उनका ध्यान देशी उद्योग-धन्धों के साथ मिलों की उन्नति की ओर आकृष्ट हुआ। कहना न होगा कि खद्दर के महत्व की ओर इस समय तक उनका ध्यान विशेष आकृष्ट नहीं हुआ था। इन्हीं दिनों एक विशेष घटना ने उनके विचारों में अद्भुत परिवर्तन पैदा कर दिया। मेरठ कॉलेज के प्रोफ़ेसर पं० धर्मेन्द्रनाथ जी शास्त्री तर्क-शिरोमणि, एम० ए० अपनी गरमी की छुट्टियों में काश्मीर पधारे। श्रीनगर में उन्होंने खादी-माहात्म्य पर एक मर्मस्पर्शी व्याख्यान दिया। पण्डित जी की वक्तृत्व शक्ति के अद्भुत जादू से शिक्षित समाज भली भाँति

(६९ पृष्ठ का शेषांश)

ही देख पड़ते हैं। कुलीनता के घमण्ड के मारे ये अपने बच्चों को पढ़ाते तक नहीं; पर विवाहार्थी कन्या वालों से ठहरौनी स्वरूप एक ख़ासी रक़म की फ़र्मायश करते हैं। इसका नतीजा यह होता है कि कितने निर्धन कुलीनों की लड़कियाँ क्वाँरी ही बूढ़ी हो जाती हैं। दश गोत्रियों के बालक आजन्म क्वाँरे रह जाते हैं। साधारणतः कनौजियों का खान-पान स्वच्छ है; पर यह खेद के साथ लिखना पड़ता है कि आजकल इनमें से कितने मांस आदि अभक्ष्य पदार्थों का सेवन करते सुने जाते हैं। परमात्मा से प्रार्थना है कि वह स्वपूर्वजों के प्राचीन गौरव के उत्तराधिकारी इस कान्यकुब्ज ब्राह्मण जाति पर दया कर इसे सुबुद्धि प्रदान करे, ताकि विविध कुरीतियों के भयङ्कर रोगों से आक्रान्त यह जाति इन रोगों के कीटाणुओं को शीघ्र नष्ट करे और सुयोग्य पूर्वजों की सुयोग्य सन्तान बन कर स्वदेश तथा स्वजाति का उद्धार करे।

* * *

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

परिचित है। उस व्याख्यान का असर सहस्रों नर-नारियों पर पड़ा, परन्तु जिस व्यक्ति ने उसे सबसे अधिक हृदयङ्गम किया और जिसने उस दिन से खादी की उन्नति को अपने जीवन का मन्त्र बना डाला, वह थीं उर्मिला देवी। उस दिन से उर्मिला देवी के अन्दर खादी के प्रति ऐसी अगाध श्रद्धा उत्पन्न हो गई कि उन्होंने ख़ादी पहनने का व्रत धारण कर लिया।

संयोग के अदृष्ट बन्धन और भावी के अटूट विधान का निर्णय कौन कर सकता है? जीवन के प्रवाह में मनुष्य किन विचारों को लेकर न जाने क्या-क्या सोचता है, परन्तु एक अवसर उसके जीवन में ऐसा आता है जो उसके जीवन की धारा को सर्वथा नवीन क्षेत्र में प्रवाहित कर देता है। विवाह मनुष्य-जीवन की ऐसी ही एक घटना है। एक आकस्मिक दैवी संयोग से दो मन किस प्रकार एक होकर सदैव के लिए जीवन की कायापलट कर देते हैं, यह कोई नई बात नहीं। ता० ९ अक्टूबर १९२९ के दिन श्रीनगर में उर्मिला देवी का विवाह संस्कार जात-पाँत के मिथ्या आडम्बर को तोड़ कर सन् १९२३ के सिविल मैरिज ऐक्ट (Civil Marriage Act of 1923) के अनुसार प्रो० धर्मेन्द्रनाथ जी शास्त्री के साथ हुआ। इस तरह विवाह के साथ ही साथ उनका जीवन महिला-समाज के लिए एक नया सन्देश लेकर उपस्थित हुआ। वे मेरठ आईं और यहाँ आए उन्हें दो मास भी न गुज़रे कि उन्होंने अपने जीवन के मुख्य कार्य को प्रारम्भ कर दिया।

समाज-सुधार और स्त्री जाति की सेवा

स्त्री जाति की जो दशा हमारे हिन्दू समाज में है वह किसी से छिपी नहीं। मनमाने अत्याचार उन पर होते हैं। वे पैरों की जूतियाँ समझी जाती हैं। उनका स्थान समाज में सिवाय पुरुषों के मनबहलाव के और कुछ भी नहीं। श्रीमती उर्मिला देवी का ध्यान इस ओर आकृष्ट हुआ और उन्हीं की अध्यक्षता में जनवरी में स्त्रियों की एक बड़ी सभा हुई। उसमें स्त्री जाति पर होने वाले अन्याय के प्रत्येक पहलू पर विचार किया गया तथा कितने ही महत्वपूर्ण प्रस्ताव पास हुए। एक प्रस्ताव में यह पास किया गया कि मृत व्यक्ति की मृत्यु पर उसकी सम्पत्ति का हक़ उसकी विधवा स्त्री को मिलना चाहिए। एक दूसरे प्रस्ताव में चौधरी मुख़्तारसिंह, एम० एल० सी० के आर्य-मैरेज-बिल में इस बात को बढ़ाने की ज़ोरदार सिफ़ारिश की गई कि पुरुषों के लिए भी एक पत्नीव्रत होना आवश्यक है; अगर ऐसा न हुआ तो स्त्री जाति के कष्टों में एक संख्या और बढ़ जायगी। उसके बाद उर्मिला देवी जी ने गुरुकुल विश्वविद्यालय वृन्दावन की रजत-जयन्ती के अवसर पर, आर्य महिला कॉन्फ्रेन्स की सभानेत्री की हैसियत से, स्त्री जाति के विरुद्ध होने वाले आन्दोलन के विरुद्ध भी ज़ोरदार आवाज़ उठाई। इन सब बातों का परिणाम यह हुआ कि थोड़े ही समय में स्त्रियों के उद्धार का प्रयत्न करने वाली एक प्रमुख कार्यकर्त्री समझी जाने लगीं।

इसी समय देश में एक नया आन्दोलन उठा। साबरमती के उस अनोखे जादूगर ने भारत के प्रत्येक समझदार व्यक्ति का ध्यान राष्ट्र की ओर आकर्षित कर दिया। श्रीमती उर्मिला देवी इस विकट परीक्षा के समय पीछे कैसे रह सकती थीं? इस आन्दोलन के साथ ही साथ उनके जीवन में एक नया अध्याय शुरू हुआ।

राजनैतिक क्षेत्र में पदार्पण

छोटी-छोटी घटनाओं का भी, जिन्हें साधारण आदमी तुच्छ समझता है, महान आत्माओं पर विचित्र असर पड़ता है। एक ऐसी ही घटना उर्मिला देवी के राजनैतिक क्षेत्र में पदार्पण करने का कारण हुआ।

शिवरात्रि के अवसर पर श्री० धर्मेन्द्रनाथ जी शास्त्री को कार्यवशात अनूपशहर जाने का मौक़ा पड़ा। इस अवसर पर श्रीमती उर्मिला देवी भी उनके साथ गईं। बुलन्दशहर से अनूपशहर जाने वाली सड़कें मुग़ल बादशाहों के समय की उन सड़कों की याद दिलाया करती हैं जिनमें जगह-जगह गड्ढे पड़े रहते थे और जिन पर एक दफ़ा चलने के बाद मनुष्य को जन्म भर उनकी याद न भूलती थी। ब्रिटिश राज्य में इन सड़कों की अवस्था मुग़ल राज्य से कुछ अच्छी नहीं है। इन पर चलने में आज भी लॉरी और मोटर के धक्के असह्य हो उठते हैं और थके होने पर भी मनुष्य पैदल चलने में ही अपना कुशल समझता है। यह हालत देख कर उर्मिला देवी ने प्रश्न किया कि यह सड़क इस अवस्था में क्यों है? उत्तर मिला कि सरकार के पास इस मद में ख़र्च करने के

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

एक पैसा नहीं है। उर्मिला देवी के हृदय पर इस उत्तर का गहरा असर पड़ा। उनके मन में यह विचार उठा कि जो सरकार फ़ौजों में तथा बड़े वेतनों में करोड़ों रुपया फूँक देवे, वह आज जनता के फ़ायदे के लिए एक पैसा भी ख़र्च नहीं कर सकती है, यह कितने अफ़सोस और शर्म की बात है! जब तक हमारा देश परतन्त्रता की शृङ्खला में बँधा है तब तक यह दुरवस्था दूर नहीं हो सकती। फलतः उसी समय से उनका ध्यान देश की स्वाधीनता की ओर आकर्षित हुआ और वे कॉङ्ग्रेस के प्रोग्राम के अनुसार देश-सेवा की धुन में दिन-रात रहने लगीं।

नौचन्दी का मेला और विदेशी बॉयकॉट

भारतवर्ष की नुमाइशों में नौचन्दी का मेला अपना एक ख़ास स्थान रखता है, दूर-दूर के लाखों यात्री इसमें आते हैं और लाखों रुपए का विलायती कपड़ा इसमें बिकता है। मेला लगने के एक सप्ताह पहले स्त्रियों की एक सभा हुई, जिसमें उर्मिला देवी ने खादी के समर्थन में एक ज़ोरदार भाषण दिया। फिर सभा में विदेशी वस्त्र के बॉयकॉट करने का प्रस्ताव स्वीकृत हुआ। स्मरण रहे कि मेरठ शहर में विलायती कपड़े के विरुद्ध यह सबसे पहला आन्दोलन था, जिसमें स्त्रियों ने भाग लिया। उस समय तक किसी को स्वप्न में भी यह आशा नहीं थी कि स्त्रियाँ इस आन्दोलन में कैसे-कैसे आश्चर्यजनक काम कर दिखावेंगी। इस सभा का आश्चर्यजनक परिणाम निकला। उर्मिला देवी के नेतृत्व में तीस बहिनें वालण्टियर बनीं और विलायती कपड़े पर ज़ोरदार धरना देना शुरू हुआ। इसका जो परिणाम हुआ, उसने लोगों की आँखें खोल दीं। विलायती कपड़े की बिक्री अस्सी प्रति शतक कम हो गई। इस अवसर पर सत्तर हज़ार नोटिसें बाँटी गईं और बहुत सी बहिनों ने उर्मिला देवी के साथ चौदह-चौदह घण्टे प्रति दिन धरना दिया। लोग हैरान थे कि स्त्रियों में इतनी शक्ति कहाँ से आगई? इस मेले ने मेरठ की महिलाओं में नवीन स्फूर्ति, नवीन कार्यशक्ति पैदा कर दी और उनमें नवजीवन का सञ्चार हो गया।

सत्याग्रह दल और उसका नेतृत्व

नौचन्दी के मेले के साथ ही आज़ादी का जङ्ग छिड़ गया और मेरठ की महिलाओं ने न विश्राम की परवाह की और न किसी प्रकार के आराम की। उन्होंने फ़ौरन महिला सत्याग्रह समिति की स्थापना की। श्रीमती उर्मिला देवी प्रधान कैप्टेन चुनी गईं और श्रीमती विद्यावती सहायक कैप्टेन। फिर क्या था, मेरठ के बजाज़े पर धावा बोल दिया गया और विलायती कपड़े पर धरना देना प्रारम्भ कर दिया गया। धरना इतना सख़्त हुआ कि चार दिनों के बाद ही दूकानदारों ने अपना विलायती माल तालों में बन्द कर सत्याग्रह-समिति की मुहर लगवा दी तथा अपनी दूकानों को स्वदेशीमय कर दिया। इसके

मेरठ की महिला-स्वयंसेविकाओं की कप्तान
श्रीमती उर्मिला देवी, शास्त्री

बाद कॉङ्ग्रेस के निश्चय के अनुसार बजाज़ों ने विलायती कपड़ा न मँगाने की प्रतिज्ञा की और पिकेटिङ्ग बन्द की गई।

देश के प्राण महात्मा गाँधी को लोगों के बीच से हटा कर ४ मई को गवर्नमेण्ट ने जब अपना मेहमान बना लिया तो जनता के अन्दर नवीन जोश और उत्साह का समुद्र उमड़ पड़ा। मेरठ में ५ तारीख़ के प्रातःकाल पौन मील लम्बा जुलूस निकला। जुलूस का रास्ता पाँच मील लम्बा था। इस जुलूस की सब से बड़ी विशेषता इसमें

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

शामिल होने वाली तीन हज़ार महिलाओं का विशाल समुदाय था। मई का महीना और मेरठ की गर्मी दोनों असह्य थे। फिर स्त्रियों के लिए यह पहिला ही अवसर था कि वे पाँच मील तक जुलूस के साथ-साथ चलती रहें। नतीजा यह हुआ कि सब बहिनें बिलकुल थक कर वापस आगईं। सबके इकट्ठी होने पर यह निश्चय हुआ कि आज का दिन एक पवित्र दिन है; सब महिलाओं का कर्त्तव्य है कि आज वे उपवास रक्खें और तमाम दिन चरख़े और खादी के प्रचार में व्यय करें। इसी के अनुसार कार्य प्रारम्भ हुआ। सत्याग्रही स्त्रियों ने अपने को सात हिस्सों में बाँट कर निश्चय किया कि प्रत्येक टोली अपने-अपने मुहल्ले में सभा करके लोगों को खादी का महत्व समझावे, जिससे प्रत्येक व्यक्ति पर खादी का असर पड़ सके और कोई उस महान आत्मा के महान सन्देश से वञ्चित न रहे।

ठीक बारह बजे के समय, जब कि मध्याह्न का सूर्य अपनी प्रखर किरणों से समस्त पृथ्वीतल को सन्तप्त कर रहा था, मेरठ की वीर महिलाएँ स्वदेश-सेवा के व्रत को लेकर उस दिन मेरठ के कोने-कोने में महात्मा गाँधी के दिव्य सन्देश को जनता के सम्मुख सुना रही थीं। उस दिन भिन्न-भिन्न मुहल्लों में ७४ सभाएँ हुईं और २२०० आदमी खादी पहनने की प्रतिज्ञा में आबद्ध हुए। ज्यों ज्यों लू और धूप बढ़ती थी, बहिनों में उत्साह की मात्रा भी बढ़ती जाती थी। भूखी-थकी महिलाओं का यह जोश देख कर कुछ लोग डर रहे थे कि अगर किसी बहिन को लू लग जाय और वह बेहोश हो जावे तो क्या किया जायगा? उन लोगों को आश्वासन देते हुए श्रीमती उर्मिला देवी जी ने जो जवाब दिया वह स्मरण रखने लायक़ है—"अगर किसी बहिन को लू लग जाय तो वही किया जायगा, जो युद्ध के समय होता है। जिस बहिन को लू लगे वह वापस भेज दी जायँ और बाक़ी बहिनें आगे बढ़ती जावें।" स्मरण रहे कि काश्मीर जैसे शीतप्रधान स्थान में रहने वाली श्रीमती उर्मिला देवी के ऊपर जत्थे के नेतृत्व का भार होने के कारण और भी ज़िम्मेदारी थी। उस दिन रात्रि की विराट सभा में भाषण देते हुए जो शब्द उर्मिला जी ने कहे वे सुनने लायक़ थे—

"आज हमारे ऊपर आसमान की गर्मी नहीं बरस रही थी, अपितु यह प्रेम के देवता महात्मा गाँधी की प्रेममयी आग थी। मातृ-भूमि के सेवकों के लिए यह प्रेम की वर्षा थी, पर उसके शत्रुओं के लिए प्रचण्ड आग थी।"

सार्वजनिक क्षेत्र में स्त्रियों में इतना उत्साह शायद ही कहीं रहा हो। पूरे तीन हफ़्ते तक गर्मी की परवाह न करके घर-घर और मुहल्ले-मुहल्ले स्त्रियों ने चरख़े और स्वदेशी का प्रचार किया और सहस्रों नर-नारियों से प्रतिज्ञा कराई कि वे आजन्म खादी पहनेंगे।

विदेशी वस्त्र की होली

मेरठ के अन्दर विलायती कपड़े की होली का एक विशेष महत्व था। अन्य प्रोग्रामों के अतिरिक्त मेरठ की महिला सत्याग्रह समिति ने अपने प्रोग्राम में एक विशेष कार्य यह रक्खा था कि जब-जब देश में कोई महिला गिरफ़्तार होवे तब-तब विलायती कपड़े की होली जलाई जावे। इस प्रस्ताव के अनुसार श्री० रुक्मिणी लक्ष्मीपति, श्री० कमलादेवी चट्टोपाध्याय, श्री० सरोजिनी नायडू, श्री० सत्यवती देवी और अन्त में श्री० उर्मिला देवी की गिरफ़्तारी पर एक-एक विशाल होली जलाई गई।

विलायती कपड़े पर मोहर

इलाहाबाद में ऑल इण्डिया वर्किङ्ग कमेटी ने जब यह निश्चय कर दिया गया कि "विलायती कपड़ा बेचना जब तक लोग बन्द न करें तब तक दूकानों पर धरना जारी रहे" तो इस निश्चय के अनुसार मेरठ में पुराना प्रोग्राम फिर अमल में लाया गया और श्रीमती उर्मिला देवी ने अपनी अध्यक्षता में महिला सत्याग्रह समिति के प्रोग्राम के अनुसार सात ही दिन में सारा विलायती कपड़ा दूकानों में बन्द करा कर मोहरें लगवा दीं। मेरठ में अन्य स्थानों की अपेक्षा सब से बड़ी विशेषता यह हुई कि यहाँ उस कपड़े पर भी मोहर लगाई गई जो भारत में विलायती सूत से बनाया हुआ था। जब माता कस्तूरीबाई गाँधी मेरठ में पधारीं तो उन्होंने महिला सत्याग्रह समिति के काम को देख कर कहा कि मेरठ के मुक़ाबले किसी भी शहर में बहिष्कार का काम नहीं हुआ है। उस समय तक मेरठ की हर एक कपड़े की दूकान पर स्वदेशी की छाप लग चुकी थी।

शहर और ज़िले में प्रचार

श्रीमती उर्मिला देवी के व्याख्यानों का असर लोगों के दिल पर उसी प्रकार होता था जिस तरह कि एक

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

सच्ची आत्मा की वाणी का होना चाहिए। वेश्याओं की एक सभा में शास्त्रों के विरोध में और खादी और चरखे के उद्देश्य को लेकर जब डेढ़ घण्टे तक उनका व्याख्यान हुआ तो वेश्याओं का हृदय भर आया और उनकी आँखों से आँसू बह उठे। उन्होंने खादी पहिनने की प्रतिज्ञा की तथा शराब न पीने की क़सम खाई।

इस अवसर पर उन्हें कभी-कभी बाहर जाने का भी मौक़ा पड़ता रहा। गाँवों और क़स्बों में शराब तथा विदेशी कपड़े के बायकॉट के लिए उन्होंने कई दौरे किए। छोटे-छोटे क़स्बों में भी जाकर उन्होंने कॉङ्ग्रेस का महान सन्देश जनता के सामने रक्खा। उन्हें इसी काम के कारण कई दफ़े बीमारी हुई, गला बन्द गया, पर धुन काम करने की ही रही। उन्होंने दवाई का सेवन करके फिर वही प्रोग्राम जारी रक्खा—ज़िले सहारनपुर में कॉङ्ग्रेस की ओर से गुरुकुल के ब्रह्मचारियों के प्रयत्न से बहादुरपुर में एक बड़ी भारी सभा हुई, जिसमें उर्मिला देवी जी ने एक बड़ा ही ज़ोरदार भाषण दिया और लोगों के अन्दर जो एक तरह का अज्ञात भय व्याप्त हो रहा था उसे दूर किया। उस दिन की श्रीमती उर्मिला देवी जी की प्रभावशालिनी वक्तृता ने गाँव-गाँव कॉङ्ग्रेस का सन्देश पहुँचा दिया और साथ ही उनके नाम को भी प्रसिद्ध कर दिया।

इसके बाद ही एक ऐसी घटना घटी, जो आज भी एक पहेली सी मालूम पड़ती है। ता० २५ जून की रात के एक बजे मोटर से उतर कर कुछ व्यक्तियों ने श्रीमती उर्मिला देवी के बँगले पर धावा बोल दिया। प्रो० धर्मेन्द्रनाथ जी शास्त्री ने कई फ़ायर किए, पर वे लोग बँगले के कम्पाउण्ड में घुस ही आए। अन्दर तो वे न जा सके, किन्तु बाद में यह पता लगा कि बँगले के द्वार पर का झण्डा वे लोग उतार कर ले गए। पुलिस ने बड़ी सरगर्मी से इस मामले की खोज की। पता चला कि फ़ौजी अङ्गरेज़ अफ़सरों ने यह आक्रमण किया था। अतः मामला पुलिस के पास से फ़ौजी अफ़सर के सिपुर्द हुआ। किन्तु आज तक यह पता न चला कि मामला क्या था।

अङ्गरेज़ी माल का बायकॉट

विदेशी वस्त्र के काम से निबट कर महिला सत्याग्रह समिति ने अपना ध्यान विदेशी वस्तुओं के बॉयकाट की ओर लगाया। मेरठ में बायकॉट पर भाषण देते हुए श्रीमती उर्मिला देवी ने कहा कि लोग समझते हैं कि बीमारी की हालत में तो अङ्गरेज़ी दवा पीनी ही पड़ेगी; पर मैं कहती हूँ कि अगर अङ्गरेज़ी दवा से आप तन्दुरुस्त होते हैं तो उसकी अपेक्षा मर जाना बेहतर है। आपका कर्त्तव्य तो इस समय यह है कि चाहे कितनी ही मुसीबतें आकर पड़ें, इङ्गलैण्ड की कोई वस्तु छूना भी आप पाप समझिए।

कृष्ण-मन्दिर में

एक परतन्त्र राष्ट्र में देशसेवा की क़ीमत जेल, बेंत, फाँसी, आदि के सिवाय और क्या कूती जा सकती है। श्रीमती उर्मिला देवी अपने कार्यों से सरकार की आँखों में खटकने लगीं और उनके लिए वह समय आ गया जो प्रत्येक देश-सेवक के लिए वर्तमान समय में सब से बड़े सौभाग्य का समय है। विगत १७ जुलाई रात के समय दस हज़ार जनता की उपस्थिति में उनका एक अत्यन्त ओजस्वी भाषण हुआ, जिसमें उनके हृदय के उद्गार फूट पड़े—

"प्राकृतिक सौन्दर्य का घर काश्मीर मेरी जन्मभूमि है। पिता जी का सन्देश काश्मीर आने के लिए आया है। किन्तु जेल के सौन्दर्य के आगे काश्मीर का सौन्दर्य तुच्छ है। जेल की चहारदीवारी में देश के प्राण और संसार की सब से सुन्दर विभूति महात्मा गाँधी बन्द हैं।" उसके बाद उसी भाषण में उन्होंने कहा—"केवल कार्य करने से जेल नहीं मिलती। वह तो भाग्य से मिलती है। न जाने मेरा भाग्य कब चमकेगा।" उनके इन ओजस्वी शब्दों ने लोगों के दिलों को एकदम अपनी ओर आकृष्ट कर लिया। आपने फिर कहा—"कल का चमकता हुआ सूर्य न जाने किस-किस के लिए हथकड़ी लाएगा। यह काली भयानक रात्रि न जाने किस-किस को समेट लेगी।"

रात कटी। सुबह हुआ। और पाँच बजने के साथ ही मेरठ महिला सत्याग्रह समिति की प्राण श्रीमती उर्मिला देवी जेल की चहारदीवारी में बन्द कर दी गईं। जेल जाते समय उनका मुख-मण्डल हर्ष और आनन्द से विभोर था; उस समय एक अपूर्व तेजस्विता उनके चेहरे पर विराजमान थी। सहस्रों आँखों ने हर्ष के साथ उस दिन उन्हें विदाई दी।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

ता० १६ जुलाई को मैजिस्ट्रेट ने आपके मामले का फ़ैसला सुनाया। जिस समय आपसे पूछा गया कि क्या आपके व्याख्यान की जो रिपोर्ट आई है सच है, तो आपने अभिमान से कहा—"सब सही और इससे भी ज़्यादा।" फिर आपको मैजिस्ट्रेट ने कहा—"चूँकि आप लीडर हैं, इसलिए पिकेटिङ्ग ऑर्डिनेन्स के अनुसार छः मास की सज़ा आपको दी जाती है, जो कि इस धारा में सब से बड़ी सज़ा है।" इस पर श्री० उर्मिला जी ने मैजिस्ट्रेट साहब को उनके इस पारितोषिक के लिए धन्यवाद दिया और कोर्ट से जाने लगीं। उस समय सारा कोर्ट "महात्मा गाँधी की जय", "उर्मिला देवी की जय" के निनाद से गूँज उठा। कई बहिनों ने मैजिस्ट्रेट के सामने ही उन्हें फूल-मालाओं से लाद दिया। सारे नगर में इस ख़बर के सुनते ही सनसनी सी फैल गई और एक अभूतपूर्व शानदार जुलूस उनकी विदाई के लिए निकाला गया।

सन्देश

जेल जाने के पहले देवी जी ने जो सन्देश अपनी जनता को दिया उसका एक-एक अक्षर देशभक्ति की ज्वाला से भरा हुआ है। उन्होंने कहा—"मेरठ के हज़ारों भाइयों ने मुझे बहिन कह कर पुकारा है। आज बहिन के नाते स्वराज्य-मन्दिर में जाते हुए अपने भाइयों से एक उपहार माँगना चाहती हूँ। वह यह है कि मेरठ में एक भी ऐसा घर न बचे जो कम से कम एक सत्याग्रही न दे। इस महायज्ञ में प्रत्येक घर से एक-एक आहुति पड़नी चाहिए जिससे कि इस यज्ञ की ज्वाला ऐसा प्रचण्ड होकर इतने ज़ोर से जल उठे कि तमाम ब्रिटिश साम्राज्य भस्मसात हो जावे। मेरे भाइयो! जिस उर्मिला को आपने बहिन कह कर पुकारा है उसकी यह छोटी सी माँग व्यर्थ जायगी? यदि ऐसा हुआ तो मुझे जेल की ऊँची दीवारों के बीच निराशा भरी रातें, तारे गिन-गिन कर काटनी पड़ेंगी। परन्तु यदि मेरे भाइयों ने मेरी पुकार सुन ली तो जेल की कठोर ज़मीन मेरे लिए फूलों की कोमल शय्या बन जायगी। आज विदाई के समय मैं आपकी बहिन के नाते एक यही उपहार माँगती हूँ। सोचिए, इस देश में आज भाई बनने की क़ीमत क्या है?"

उस समय सहस्रों जनता के बीच से यह आवाज़ प्रतिध्वनित हो उठी—"प्रत्येक घर से एक आहुति।" क्या मेरठ वासियों को अब भी अपनी वह पुनीत प्रतिज्ञा पूर्ण करने की धुन है? क्या मेरठ का महिला समाज उस पवित्र काम को जारी रक्खेगा, जिसकी सफलता के लिए उर्मिला देवी आज दिन-रात कृष्ण-मन्दिर में बैठी हुई प्रार्थना कर रही हैं?

उठ! जाग!!

[मुक्त]

विष क्या है? अमृत क्या है?
इसका है जिसे न ज्ञान।
क्या वह इस मादकता का
कर सकता है अनुमान?
छिपी हुई चिनगारी से
यह लहक उठी है आग।
जाग-जाग, मेरे अन्तर के
रुद्ध भाव उठ, जाग!!

आज तिमिर की विदा, ज्योति का
होता है आह्वान।
तरुण देश पागल हो, गाता
है प्रलयङ्कर गान॥
डस लेगा, यह जाग उठा है
क्रोधित काला नाग।
जाग-जाग, मेरे अन्तर के
क्रुद्ध भाव उठ, जाग!!

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

स्वप्न की छाया

[मुक्त]

बौद्ध-चैत्य से होकर जो सड़क दश-पारमिता के मन्दिर की ओर गई है, युवक भिक्षु भद्रवाहन उसी पर नतमस्तक चला जा रहा था।

धीरे-धीरे सन्ध्या हो आई। अन्धकार की धूमिल छाया धरित्री पर कुछ देर के लिए फैल गई। फिर नीले आसमान में चन्द्रमा खिलखिला उठा। उसकी सफ़ेद, चाँदी-सी, धुली हुई ज्योत्स्ना चारों ओर फैल गई। एक-दो झिलमिलाते हुए तारे आकाश में उग आए। भद्रवाहन उस समय भी, मन्दगति से, उसी पथ पर अग्रसर हो रहा था।

भद्रवाहन के मन में एक पहेली थी। वह उसे ही सुलझाने में तल्लीन था, लेकिन कोई सन्तोषजनक युक्ति और तर्क उसे मिल नहीं रहा था। इसीसे वह चञ्चल था, इसीसे वह उस निर्जन रात्रि में वन-पथ पर, अकेला, उद्देश्यहीन, चला जा रहा था।

भद्रवाहन के मन में कौन चिन्ता थी?

वह सोच रहा था—सत्य क्या है? और मिथ्या ही क्या है? सत्य और मिथ्या, जगत् के इन दो तत्त्वों पर वह बड़ी देर से आलोचना कर रहा था, किन्तु उसकी समझ में कोई बात न आती थी। जितना ही वह सोचता था, उलझन उतनी ही बढ़ती जाती थी, चिन्ता उतनी ही गहरी होती जाती थी। चलते-चलते रात एक पहर बीत गई। बाल चन्द्रमा की किरणें शिथिल और पीताभ होकर अपनी ज्योत्स्ना समेटने लगीं। भद्रवाहन भी, श्रान्त होकर, एक शिलाखण्ड पर बैठ गया।

सहसा अपने कन्धों पर किसी का कर-स्पर्श अनुभव करके वह चौंक उठा। घुटनों में छिपे हुए सिर को उठा कर उसने देखा—उसका सहपाठी देवसेन है। वह थोड़ा गम्भीर हुआ। बोला—"देवसेन! तुम्हें सङ्घाराम से बाहर जाने की अनुमति कैसे मिल गई?"

देवसेन हँसा। कहने लगा—"और तुम्हें ही यह अधिकार कैसे मिला है, भद्रवाहन? तुम स्वयं भी तो इस निर्जन रात्रि में शैलमाला में इधर-उधर भटक रहे हो! तुम अपनी कहो?"

"मेरा चित्त स्वस्थ नहीं है, देवसेन! मेरी बात क्या पूछते हो! अभी भी मेरा चित्त स्थिर नहीं है, अभी भी बुद्ध पर मेरी सम्पूर्ण आस्था नहीं हो सकी है। मैं तो अपना अशान्त मन लेकर घूम रहा हूँ। लेकिन तुम? तुम्हें क्या आवश्यकता आ पड़ी है?"

"मैं तो तुम्हारे ही पास आया हूँ। पीठस्थविर ने एक नवीन आज्ञा प्रचारित की है, जानते हो?"

"नहीं, मैं कुछ भी नहीं जानता। शायद जान सकता ही नहीं। देवसेन! मैंने धर्म परिवर्तन किया है। धर्म परिवर्तन करने से हृदय परिवर्तन करना होता है, और यह सब से कठिन है। उस समय अन्तर में एक महान सङ्घर्ष उठ खड़ा होता है। अनेक बार उस सङ्घर्ष में विजय प्राप्त करना बहुत आसान नहीं होता। मेरा हृदय बहुत अशान्त हो उठा है, देवसेन! तुम जानते नहीं हो।"

"नहीं, और उसकी मुझे आवश्यकता ही क्या है? लेकिन अब चलो। विलम्ब होने से पीठस्थविर का कोपभाजन बनना पड़ेगा। मैं सङ्घाराम में तुम्हें कहीं न देख कर ढूँढ़ता हुआ इधर चला आया हूँ।"

"लेकिन तुम आ कैसे सके देवसेन?"

"सङ्घाराम में आरती का आयोजन हो रहा था, सब लोग उसी कोलाहल में भूले हुए थे, अवकाश पाकर मैं इधर चला। वह देखो, आरती के घण्टे की गुरु गम्भीर ध्वनि सुन पड़ती है। अभी कुछ देर में आरती ख़तम हो जायगी। उस समय हम लोगों की उपस्थिति आवश्यक है। चलो।"

भद्रवाहन थोड़ी देर तक कुछ सोचता रहा। फिर सिर हिलाता हुआ बोला—"नहीं, मैं न जा सकूँगा। तुम

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

जाओ। हाँ, अकेले ही जाओ। बन्धु! मैं तुम्हारा बहुत कृतज्ञ हूँ।"

भद्रवाहन देवसेन के उत्तर की प्रतीक्षा किए बिना ही उठ खड़ा हुआ। आश्चर्य-चकित आँखों से उस विचित्र भिक्षु की ओर देखते हुए देवसेन ने भी सङ्घाराम की ओर प्रस्थान किया।

भद्रवाहन आगे बढ़ा। उसके मन में भयानक सङ्घर्ष हो रहा था, वह अशान्त था, लेकिन स्वयं समझ न पाता था कि वह क्या चाहता है। धीरे-धीरे उसके पैर नीचे की ओर बढ़ते गए। चलते-चलते, रात्रि जिस समय शेष हो रही थी, वह उपत्यका के नीचे समतल प्रदेश में पहुँच गया।

वहाँ, बोधिवृक्ष के नीचे, एक तरुणी भिक्षुणी को उसने समाधिस्थ देखा। देख कर वह मुग्ध हुआ। उसके विकृत मन में एक और विकार उत्पन्न हुआ। उसने सोचा, नेत्रों के होने से ही यह सारा उत्पात है। इन्द्रियों को संयत करने के लिए कदाचित दृष्टि का एकान्त अभाव अपेक्षित है। वह आत्म-विस्मृत होकर चुपचाप भिक्षुणी की ओर देखता रहा।

भिक्षुणी युवती थी। उसके कृश-गौर शरीर में यौवन का उच्छलित लावण्य कल्लोल कर रहा था। उसके मुँदे हुए नेत्रों से एक प्रकार की ज्योति निकल रही थी। वह समाधिस्थ थी।

कुछ देर बाद उसकी समाधि भङ्ग हुई। उसने भद्रवाहन को देखा—बार-बार देखा—आश्चर्य से, विस्मय से और कौतूहल से भी। मालूम पड़ता था, जैसे वह उसे पहचानने का प्रयत्न कर रही हो। फिर उसने स्नेह-स्निग्ध कण्ठ से पुकारा—"भद्रवाहन! क्या मैं सपना नहीं देख रही हूँ?"

अब भद्रवाहन की मोह-निद्रा टूटी। उसने चौंक कर भिक्षुणी की ओर देखा, विस्मित होकर उसका चिर-परिचित स्वर सुना और फिर उसे पहिचाना। क्षण भर में उसके नेत्रों के सम्मुख एक मनोहर और विराट वैभव-युक्त साम्राज्य का चित्र खिंच गया। हताश होकर, एक बार उसने उस चित्र को देखा। क्षण भर स्तब्ध रहा—घटनाओं के चक्कर ने उसको पागल बना दिया था—और फिर बोला—"हाँ, नन्दा! यह सपना ही है। सपना नहीं तो और क्या है?"

"ओः! वह कितने दिनों की बातें हैं!!"

"प्रायः पन्द्रह वर्षों की।"

"और मालूम पड़ता है, जैसे पलक मारते इतना समय बीत गया हो।"

"और जैसे वे कल की ही घटनाएँ हों।"

"भद्र! जीवन के उषःकाल के वे दिन कितने मनोहर थे!"

"बचपन के जीवन में कितना सुख था!"

"हम दोनों खेलते थे।"

"दिन-रात एक साथ रहते थे।"

"आपस में कितना प्रेम था!"

"कितनी ममता थी!"

"तुम बड़े दुष्ट थे।"

"तुम मुझे बहुत चिढ़ाती थीं।"

"तुम मुझे पीट देते थे।"

"तुम रूठ जाती थीं।"

"ओः! उन क्रीड़ाओं की स्मृति कितनी मधुर है!"

"और काल के प्रवाह ने उन सारी क्रीड़ाओं का अन्त एक ही आघात में कर दिया!"

"हम दोनों का जीवन दो धाराओं में प्रवाहित हुआ।"

"और हम दोनों संसार के अतल-तल में डूब गए।"

"पन्द्रह वर्षों तक फिर कोई किसी को देख भी न सका।"

"और आज संयोग के प्रवाह में बह कर, विक्षुब्ध आ मिल जाने वाले बहते हुए दो तिनकों की तरह, फिर हम दोनों आ मिले हैं।"

"आज मैं गैरिकवसना भिक्षुणी हूँ।"

"और मैं भिक्षु हूँ। नन्दा! मेरा हृदय बड़ा अशान्त है। इतने दिनों के बाद तुमसे मिल कर क्षण भर के लिए अपने को भूल सका हूँ।"

भद्रवाहन ने अपने हृदय की अशान्ति नन्दा से कह कर थोड़ा हल्का हुआ। नन्दा ने कहा—"भद्र! तुम्हें फिर वहीं जाना पड़ेगा। हृदय को इस प्रकार उच्छृङ्खल बनाने से काम न चलेगा। स्मरण रक्खो, तुम भिक्षु हो! तुम्हें आत्म-दमन करना होगा, शान्त होना होगा।"

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

नन्दा की वाणी में तेज था, दृढ़ता थी। भद्रवाहन प्रभावित हुआ। कातर कण्ठ से उसने कहा—"नन्दा!"

"हाँ भद्र! तुम्हारे लिए वही उपयुक्त स्थान है। जाओ।"

मन्त्रमुग्ध की भाँति भद्रवाहन फिर उसी पथ पर लौटा। कुछ दूर अग्रसर होकर रुका, फिर वापस आया। बोला—"नन्दा! तुम्हारी बाँसुरी क्या हुई?"

"है, वह अब भी मेरे ही पास है!"

"एक बार बजाओगी नन्दा?"

"नहीं, अभी नहीं। बाँसुरी सुनने का उपयुक्त समय अभी नहीं आया है। फिर सुनना, अभी जाओ।"

उत्तर दिए बिना ही, सिर झुका कर, भद्रवाहन चला गया।

बात पन्द्रह साल पहले की है। मगध में उस समय चण्डविक्रम महाराज अशोक का शासन-सूर्य चमक रहा था। उनकी राजधानी पाटलिपुत्र के समीपस्थ एक छोटे गाँव में, गङ्गा के तट पर, उसी समय हमने दो बालक-बालिकाओं को देखा था।

बालक दस बरस का रहा होगा और बालिका आठ वर्ष की। गङ्गा के तट पर दोनों ही खेल रहे थे। चाँदी की तरह सफ़ेद बालू की राशि दूर तक फैली हुई थी। धरित्री के आँगन में सन्ध्या का अन्धकार उस समय भी सघन नहीं हो उठा था।

बालिका ने कहा—"भद्र भाई! मुझे एक घर बना दो।"

बालक बोला—"मैं नहीं बनाता।"

बालिका ने कहा—"मैं अपने लिए स्वयं ही बना लूँगी।"

"मैं भी बनाऊँगा।"

"देखूँ कौन अच्छा बनाता है।"

स्पर्धापूर्वक दोनों बालू का घर बनाने लगे। ठण्डी-ठण्डी बयार चल रही थी। बालिका के अस्तव्यस्त कुन्तल, वायु के झकोरों से, मुँह पर खेल जाते थे। वह उन्हें सावधानी से हटा देती और फिर अपने गृह-निर्माण में लग जाती थी।

परिश्रम से उसके मुँह पर दो-चार स्वेद-बिन्दु दीख पड़े। घर बन कर तैयार हो गया। भद्रवाहन ने बालिका की ओर मुग्ध नयनों से देखा। डूबते हुए सूरज की अन्तिम पीली किरणें उसके ललाट को चूम रही थीं।

"नन्दा! किसका घर ज़्यादा सुन्दर बना है?"—रहस्य भरे स्वर में भद्रवाहन ने पूछा।

"तुम्हीं बताओ!"

"मेरी बात मानोगी?"

"हाँ! तुम्हारी बात?—न मानूँगी?"

आश्चर्य से भद्रवाहन ने नन्दा की ओर देखा—उसकी आँखों में कितनी सरलता थी! कितना भोलापन था!! क्षण भर में उसके मन में दो विचार उठे और जल-बुद्बुद की भाँति विलीन हो गए। झटपट वह कह उठा—"नन्दा! घर तुम्हारा ही सुन्दर बना है। वाह!!"

विजय-गर्व से नन्दा की आँखें चमक उठीं। उसने कृतज्ञतापूर्वक भद्रवाहन की ओर देखा। भद्रवाहन ने सिर झुका कर हँस दिया।

उस समय अपने पराजय में भी उसे जिस सुख की अनुभूति हो रही थी, उसकी कल्पना कौन कर सकता है?

दोनों बालक एक अनिर्वचनीय आनन्द का अनुभव कर रहे थे। इतने ही में वायु का एक तीव्र झोंका आया—दोनों के बालू के घर क्षण भर में बालू में मिल गए। नन्दा के मुँह से एक चीख़ निकल गई—"हाय! इसे बिगड़ते क्षण भर देर न लगी।"

भद्रवाहन ने सरलतापूर्वक कहा—"बनते-बिगड़ते कितनी देर लगती है, नन्दा!"

बालक के इस सरल उत्तर में संसार का एक महान तत्व छिपा हुआ था। लेकिन इतनी बातें सोचने-समझने का उस समय उन्हें अवकाश कहाँ था?

दोनों बालकों का घर, गाँव में, पास ही पास था। एक-एक दिन दूर से आती हुई किसी नौका को देख कर नन्दा कहती—"भद्र भाई, हम लोग भी इसी तरह नौका पर पाल तान कर किसी दिन चलते। ओः! गङ्गा की तरङ्गों में कैसा आनन्द है!!"

बालिका भाव-मुग्ध होकर नौका की गति-विधि का निरीक्षण करती और बालक उसका सरल सौन्दर्य देखा करता। लेकिन बहुत दिनों तक उनकी यह हौंस पूरी नहीं हो सकी।

नन्दा के पास एक बाँसुरी थी। ज्योत्स्ना से भीगी

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

हुई विभावरी में, गङ्गातट की बालुका-राशि पर बैठ कर, कभी-कभी, वह उसे बजाया करती थी। नन्दा जब बाँसुरी बजाती तो भद्रवाहन अधीर हो जाता था। वह बाँसुरी की करुण रागिनी सुनते ही नन्दा की एक अवस्था-विशेष का ध्यान कर लेता और तब फिर वह एक क्षण भी विलम्ब नहीं कर सकता था। जहाँ हो, जिस तरह हो, हज़ार काम छोड़ कर उसे नन्दा के पास जाना ही पड़ेगा, बाँसुरी बजाते-बजाते नन्दा स्वयं भी इतनी तन्मय हो जाती, इतनी विह्वल हो जाती कि उसे अपने-पराए का ज्ञान न रह जाता। हाँ, उसकी बाँसुरी में ऐसा ही जादू था, ऐसा ही आकर्षण था।

आर्यावर्त में उन दिनों चतुर्मुखी क्रान्ति हो रही थी। इस क्रान्ति की ज्वाला ने मगध में विशेष विप्लव उत्पन्न कर दिया था। कलिङ्ग-विजय करने के पश्चात् सम्राट अशोक ने धर्म-परिवर्तन किया था—उन्होंने बौद्ध धर्म की दीक्षा ली थी। स्वयं बुद्ध की शरण में जाकर उन्होंने अपने साम्राज्य में बौद्धमत के प्रचार का विशेष आयोजन किया। इस आयोजन के लिए भद्रवाहन और नन्दा को चिरकाल के लिए एक दूसरे से अलग होना पड़ा।

दो सुन्दर कलियाँ एक ही डाली में उगी थीं। वे खिलने भी नहीं पाईं, चटकने भी नहीं पाईं, और काल के माली ने उन्हें तोड़ लिया। उस समय कौन कह सकता था कि जीवन में फिर कभी इनका मिलन हो सकेगा? कब और किस रूप में??

उसके बाद एक युग बीत गया। स्मृति की लड़ियाँ उलझती और जुड़ती-टूटती रहीं। भद्रवाहन और नन्दा एक दूसरे को भूल गए।

सहसा, पन्द्रह वर्षों के बाद वे क्षण भर के लिए फिर मिले और अलग हो गए।

नन्दा अब बालिका नहीं, पूर्ण युवती थी। उसका प्रशान्त नारी-हृदय विक्षुब्ध हो उठा, जैसे भयानक तूफ़ान के आने पर समुद्र खौल उठता है। वह सोचने लगी कि इतने दिन के खोए हुए बन्धु को किस कलेजे से उसने उलटे पाँवों लौटा दिया? क्यों नहीं एक बार उसे बैठा कर उसके हृदय की व्यथा उसने पूछी? क्यों नहीं एक बार उससे जी खोल कर बातें कीं? हाय! वह कैसी पाषाण-हृदया है!!

नन्दा एक बार फिर भद्रवाहन से मिलने के लिए अधीर हो उठी। उसने आँखें फैला कर चारों ओर देखा—एक ओर शून्य निर्जन प्रान्तर दूर तक फैला हुआ था, दूसरी ओर विशाल शैलमाला नेत्रों की गति अवरोध किए हुए थी। पथ निर्जन था। भद्रवाहन चला गया था। एक लम्बी साँस लेकर वह चुप हो रही।

नन्दा की इतने दिनों की साधना, इतने दिनों का संयम, क्षण भर में लालसा की चिनगारियों में जल कर ख़ाक हो गया। उसका प्रशान्त मन अस्थिर और अधीर हो उठा। भद्रवाहन स्वयं तो चला गया, किन्तु अपने हृदय की आग उसके हृदय में भी लगाता गया।

सङ्घाराम की ऊँची और भयावनी प्राचीरों के सम्मुख पहुँच कर भद्रवाहन सहम गया। उसके पैर आगे बढ़ने से इनकार करने लगे। एक बार उसकी इच्छा हुई कि वह वापस लौट जाय, किन्तु इसके बाद ही नन्दा की याद आई, नन्दा के तेजस्वी मुँह की याद आई, उसके स्नेह-भरे अनुरोध की याद आई और वह पत्थर की तरह चुपचाप खड़ा रह गया—न आगे बढ़ सका, न पीछे ही लौट सका।

किन्तु, इस प्रकार चुपचाप खड़ा भी कब तक रहा जा सकता था? वह धीरे-धीरे बढ़ा। एक बार चारों ओर देखा। फिर छलाँग मार कर प्राचीर पर चढ़ा। उसके बाद पलक मारते-मारते वह सङ्घाराम के प्राङ्गण में पहुँच गया।

प्राङ्गण के मध्य में विशाल जन-समूह एकत्रित था। यह किसी महान आयोजना की सूचना थी। चारों ओर जन-रव से उत्थित एक आकुल कोलाहल ध्वनित हो रहा था। अच्छा मौक़ा देख कर भद्रवाहन कुशलता से उस विशाल जन-स्रोत में मिल गया। उस समय उसे देखने का किसी को अवकाश न था।

जनता में प्रविष्ट होकर उसने देखा—एक सुन्दर मण्डप के मध्य में एक वेदिका बनी हुई थी। वेदिका के एक ओर सङ्घाराम के उपाध्याय अथवा पीठस्थविर बैठे हुए थे। उन्हें घेर कर भिक्षुओं का एक दल था, फिर जनता थी, उपाध्याय के सम्मुख एक अपरिचित भद्र पुरुष थे। भद्रवाहन ने अनुमान किया, आज उनकी दीक्षा होगी।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

इसी समय भद्र पुरुष ने भक्ति-नत स्वर में कहा—

बुद्धं शरणं गच्छामि।
धम्मं शरणं गच्छामि।
सङ्घं शरणं गच्छामि।

एकत्रित जन-समूह ने सहस्र-सहस्र कण्ठ से दुहराया—

बुद्धं शरणं गच्छामि।
धम्मं शरणं गच्छामि।
सङ्घं शरणं गच्छामि।

भद्रवाहन ने उन स्वरों में अपना स्वर भी मिलाना चाहा, पर उसके मुँह से आवाज़ न निकली। वह अधोमुख होकर चुपचाप नन्दा का ध्यान करने लगा।

दीक्षा सम्पन्न हुई। उपाध्याय ने भिक्षुओं को सम्बोधित करके एक छोटा सा व्याख्यान दिया—"हे भिक्षुगण! जन्म दुःख है, जरा दुःख है, व्याधि दुःख है, मृत्यु दुःख है—अर्थात् जिन पदार्थों से हम घृणा करते हैं, उनका अस्तित्व दुःख है, जिन वस्तुओं की हम कामना करते हैं उनका न मिलना दुःख है, तात्पर्य यह कि जीवन की पाँच कामनाओं (पाँच तत्वों) में लिप्त रहना दुःख है।

"हे भिक्षुगण! पुनर्जन्म का कारण लालसा है। पुनर्जन्म में कामनाएँ और लालसाएँ उत्पन्न होती हैं। लालसाएँ तीन हैं—सुख की लालसा, जीवन की लालसा और शक्ति की लालसा।

"हे भिक्षुगण! लालसाओं के पूर्ण निरोध से, अर्थात् लालसाओं को दूर करने से, लालसाओं को छोड़ देने से, लालसा के बिना काम चलाने से और लालसाओं का नाश कर देने से दुःख दूर हो सकते हैं।

"हे भिक्षुगण! जिससे दुःख दूर होता है, वह पवित्र मार्ग आठ प्रकार का है—(१) सत्य विश्वास (२) सत्य कामना (३) सत्य वाक्य (४) सत्य व्यवहार (५) सत्य उपाय (६) सत्य उद्योग (७) सत्य विचार और (८) सत्य ध्यान।

"हे भिक्षुगण! आर्य सत्यचतुष्टय के यही चारो सत्य हैं।"

इस प्रकार नव-दीक्षित का प्रव्रज्या और उपसम्पदा संस्कार हो चुकने पर उसे भिक्षु की उपाधि मिली। साथ ही साथ मठ की ओर से उसे कषाय वस्त्र और भिक्षापात्र, मेखला, वासि, सूची और परिस्रावण भी मिला। बौद्ध भिक्षु के जीवन-निर्वाह के ये ही साधन हैं। इसके बाद एक-एक करके सब लोग चले गए।

सबके चले जाने पर भद्रवाहन भी उठा। उसके मन में उपाध्याय की वाणी प्रतिध्वनित हो रही थी—"जन्म दुःख है, जरा दुःख है, व्याधि दुःख है, मरण दुःख है। जीवन की पाँच लालसाओं में लिप्त रहना दुःख है।" ओः! कितनी भयानक बात—और वह उसी दुःख की ओर अग्रसर हो रहा है—कितने वेग से!!

अपने निभृत प्रकोष्ठ में जाकर भद्रवाहन गम्भीर चिन्ता में मग्न हो गया—"जगत् मिथ्या है, जगत् दुःखमय है, तब सत्य क्या है? सुख क्या है? उसे पाने का उपाय क्या है?—निर्वाण। कठिन है, असाध्य है,—उस मार्ग पर चलने के लिए अन्तर की प्रवृत्ति होनी चाहिए, बलपूर्वक मन का निरोध करना क्या सफल हो सकता है? असम्भव! सुख जहाँ दीख पड़ता है, वहाँ नहीं है—सत्य का हम जहाँ अनुभव करते हैं, वह वहाँ नहीं है। यह कैसी माया है! कैसा इन्द्रजाल है!!"

दो दिनों तक भद्रवाहन लगातार इन्हीं विचारों की उलझन में पड़ा रहा। इन दो दिनों में वह अपने प्रकोष्ठ से बाहर नहीं निकला, किसी से मिला-जुला भी नहीं। दूसरे भिक्षुओं ने भी उसकी शान्ति भङ्ग नहीं की। वह अकेला, चुपचाप, अपने मन में ऊहापोहों की जाली बिनता रहा। दो दिनों में, अनेक बार, यह अकेलापन, यह सूनापन उसके लिए असह्य हो उठा था। किन्तु, फिर भी वह बाहर निकलने का साहस नहीं कर सका।

उपाध्याय ने उसके मन की अशान्ति लक्ष्य की थी। इसीसे उन्होंने अन्य भिक्षुओं को भद्रवाहन से मिलने-जुलने का निषेध कर दिया था। उन्होंने, इस प्रकार, भद्रवाहन को मानसिक अशान्ति से निवृत्त होने का अवसर देना चाहा था।

देवसेन दो-एक बार छुक-छिप कर भद्रवाहन के प्रकोष्ठ में झाँक गया था, किन्तु उपाध्याय की आज्ञा के विरुद्ध उससे बातचीत करने का साहस उसे न हुआ।

दो दिनों के बाद भद्रवाहन का चित्त फिर ऊबने लगा। सङ्घाराम की ऊँची-ऊँची प्राचीरें उसे क़ैदख़ाने

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

सी जान पड़ने लगीं। दो दिनों के एकान्त वास में उसने अपने मन का बहुत समाधान कर लिया था। उपाध्याय के उपदेशों का उस पर बहुत प्रभाव पड़ा था, किन्तु जब नन्दा की बात याद आती तो वह सब कुछ भूल जाता था। नन्दा! अहा! नन्दा हमारी ही थी, वह अब भी हमारी ही है—लेकिन, लेकिन क्या वह दुःख-रूप है? जगत के सारे दुःखों का लय क्या उसी में है? कितनी कठोर कल्पना है!! भद्रवाहन का मन यह बात सोचने के लिए उस समय भी तैयार न हो सका था।

जिस प्रश्न ने पहले उसके मन को अस्थिर कर रक्खा था वह जब हल होने को आया तो भद्रवाहन के सामने एक दूसरी ही, और शायद उससे भी भयानक, समस्या आ उपस्थित हुई। वह सोचने लगा कि कल्याण का मार्ग कौन सा है?

जगत में सत् और असत् का निर्णय करना कितना कठिन है!

भद्रवाहन को कोई पथ न दीख पड़ा। वह एक बार फिर असहाय होकर अपने मन के अन्धकार में सत्य का प्रकाश ढूँढ़ने लगा।

उस दिन एकादशी का चन्द्रमा आकाश में उठ आया था। रजनी चन्द्रकिरणों के बहाने मुस्कुरा पड़ी थी। धरित्री पर एक अलस मादकता ढल पड़ी थी। भद्रवाहन उस समय बाहर निकल कर टहल रहा था।

सहसा उसने सुना—सङ्घाराम से बाहर, दूर, एक बाँसुरी बज उठी—मधुर, किन्तु करुण!

बाँसुरी की करुण रागिनी, जैसे भद्रवाहन के हृदय को छूकर झनझना उठी। चोट खाए हुए की तरह चौंक कर, उत्कर्ण होकर, उसने सुना—"हाँ, वही, वही चिर-परिचित स्वर तो है। नन्दा!—तब क्या नन्दा मेरा आह्वान कर रही है? क्या उसका मन भी मेरे ही जैसा अशान्त और अस्थिर है?"

और अधिक सोचने का समय न था। एक छलाङ्ग में सङ्घाराम का प्राचीर नाँघ कर भद्रवाहन निकल आया। भय-जड़ित हृदय से एक बार उसने चारो ओर देखा और फिर बाँसुरी का स्वर लक्ष्य करके चल पड़ा।

एक घने देवदारु वृक्ष के नीचे बैठ कर नन्दा बाँसुरी बजा रही थी। तरु-पत्रों के अन्तराल से छन कर आती हुई चञ्चल और चितकबरी किरणें उसके मेचक-कुञ्चित कुन्तलों से क्रीड़ा कर रही थीं। उसके कपड़े अस्त-व्यस्त हो गए थे, वेणी खुल गई थी, वह आत्म-विस्मृत होकर बाँसुरी बजा रही थी।

एक अलस स्वप्न की तरह चन्द्र-ज्योत्स्ना चारो ओर बिखरी हुई थी।

वृक्ष की छाया के अन्धकार में छिप कर भद्रवाहन खड़ा हुआ। मुग्धविह्वल नेत्रों से वह नन्दा की एक कल्पित मूर्ति प्रत्यक्ष करने लगा। बाँसुरी की करुण रागिनी वायु तरङ्गों पर थिरक रही थी।

नन्दा ने बाँसुरी रख दी। इधर-उधर देख कर एक बार अँगड़ाई ली—संसार कितना मनोहर है!

पास ही एक झरना अपने निरन्तर हर-हर स्वर से निःशब्द पर्वत-प्रदेश को मुखरित कर रहा था। नन्दा के स्वर में स्वर मिला कर उसने भी कहा—"संसार कितना आकर्षक है!"

श्रम-कम्पित वाणी में भद्रवाहन ने पुकारा—"नन्दा!"

नन्दा ने गम्भीर होकर सिर हिलाया; उठी; क्षण भर में वह भद्रवाहन के सामने थी। बोली—"तुम आ गए भद्र? मैं तुम्हारी ही प्रतीक्षा में थी।"

"आज बहुत दिनों के बाद तुम्हारी बाँसुरी सुन रहा हूँ, नन्दा! फिर क्या मैं स्थिर रह सकता हूँ?"

"आज बहुत दिनों के खोए हुए दिन लौट आए हैं, भद्र! देखो, रात कितनी सुहावनी है! हम-तुम बदल गए हैं, पर इस चाँदनी रात में कोई परिवर्तन नहीं, कोई विकार नहीं!!"

भद्रवाहन ने उत्तर नहीं दिया, केवल एक बार उमड़ती हुई आँखों से नन्दा की ओर देखा—कितना स्निग्ध रूप था! कितना मादक यौवन!!

दो भूले हुए, उन्मत्त-हृदय युवक-युवती, उस चाँदनी रात में, सब कुछ भूल कर एक हो गए। नन्दा ने भद्रवाहन के हृदय में अपना मुँह छिपा लिया।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

प्रतीक्षा

मुस्तइद अहले-वफ़ा हैं डूब मरने के लिए !
है कोई बेचैन अब अशनान करने के लिए !!

—नूह नारवी

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

सन्तान-शास्त्र

[ले० विद्यावाचस्पति पं० गणेशदत्त जी गौड़, 'इन्द्र']

भूमिका-लेखक—

श्री० चतुरसेन जी शास्त्री

जो माता-पिता मनचाही सन्तान उत्पन्न करना चाहते हैं, उनके लिए हिन्दी में इससे अच्छी पुस्तक न मिलेगी। काम-विज्ञान जैसे गहन विषय पर यह हिन्दी में पहली पुस्तक है, जो इतनी कठिन छान बीन करने के बाद लिखी गई है। सन्तान-वृद्धि-निग्रह का भी सविस्तार विवेचन इस पुस्तक में किया गया है। बालपन से लेकर युवावस्था तक अर्थात् ब्रह्मचर्य से लेकर काम-विज्ञान की उच्च से उच्च शिक्षा दी गई है। प्रत्येक गुप्त बात पर भरपूर प्रकाश डाला गया है। प्रत्येक प्रकार के गुप्त रोग का भी सविस्तार विवेचन किया गया है। रोग और उसके निदान के अलावा, प्रत्येक रोग की सैकड़ों परीक्षित दवाइयों के नुस्खे भी दिए गए हैं। पुस्तक सचित्र है—५ तिरङ्गे और २५ सादे चित्र आर्ट पेपर पर दिए गए हैं। छपाई-सफ़ाई की प्रशंसा करना व्यर्थ है। पुस्तक समस्त कपड़े की जिल्द से मण्डित है, ऊपर एक तिरङ्गे चित्र सहित Protecting Cover भी दिया गया है। इतना होते हुए भी प्रचार की दृष्टि से मूल्य केवल ४) रु० रक्खा गया है। 'चाँद' तथा स्थायी-ग्राहकों से ३)। इस पुस्तक का पहला तथा दूसरा संस्करण हाथोंहाथ बिक चुका है। तीसरा संशोधित तथा परिवर्द्धित संस्करण अभी-अभी तैयार हुआ है। शीघ्र ही मँगा लीजिए, नहीं तो पछताना पड़ेगा।

व्यवस्थापिका 'चाँद' कार्यालय, चन्द्रलोक, इलाहाबाद

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

कुटीर के एक पार्श्व में विश्रान्त होकर भद्रवाहन सोया हुआ था। नन्दा की आँखों में, किन्तु, उस समय भी नींद नहीं थी।

भद्रवाहन को सङ्घाराम छोड़े हुए कई दिन बीत चुके थे। वह अपेक्षाकृत स्वस्थ था, किन्तु नन्दा के मन में एक आग जल रही थी। पश्चात्ताप की ज्वाला से उसका अङ्ग-अङ्ग झुलसा जा रहा था—हाय! उसका मन कितना दुर्बल है। लालसा की एक आँधी ने उसकी साधना का सर्वस्व नष्ट कर डाला और वह कुछ भी नहीं कर सकी।

भद्रवाहन सोया हुआ था। नन्दा एकटक उसके सुश्री मुख-मण्डल की ओर देख रही थी। देखते-देखते उसकी आँखों से जल की धारा बह चली, उसने उसके कपोलों को, और फिर उत्तरीय को भिगा डाला। नन्दा सोचने लगी—"यह श्रान्त युवक किस आकर्षण से सर्वनाश के इस अग्निकुण्ड में कूद पड़ा है? वह क्या मेरा रूप ही नहीं है? हाय! इस रूप ने कैसा अनर्थ किया है? भद्रवाहन के सर्वनाश का कारण, तब क्या मैं ही बनूँगी? नहीं, जैसे हो, इस बार भद्रवाहन को उबारना पड़ेगा।"

क्षण भर में नन्दा ने अपना कर्त्तव्य स्थिर कर लिया और तब उसके मन की अशान्ति सुगन्ध की भाँति उड़ गई।

भद्रवाहन ने जग कर अलस-विजड़ित कण्ठ से पुकारा—"नन्दा!"

नन्दा सिहर उठी। उसने कुछ उत्तर नहीं दिया।

भद्रवाहन ने फिर पुकारा—"नन्दा! प्रिये!!"

नन्दा फिर भी चुप ही रही।

तब भद्रवाहन उठा। उठ कर उसने नन्दा की ओर देखा—वह बाहर शून्य आकाश की नीलिमा देखने में तन्मय थी। भद्रवाहन ने उसका कन्धा पकड़ कर झकझोर दिया—"नन्दा! क्या सोच रही हो?"

नन्दा ने जैसे सोते से जग कर उत्तर दिया—"नहीं, कुछ नहीं। देखती हूँ, आकाश में कितने रङ्ग हैं!"

भद्र—"इसका क्या अर्थ है नन्दा! आज तुम उद्विग्न क्यों हो?"

नन्दा—"उद्विग्न हूँ? तुम्हें ऐसा ही मालूम पड़ता है? तब ज़रूर उद्विग्न होऊँगी। लेकिन मैं पूछती हूँ, तुम क्या सचमुच ही मुझे प्यार करते हो भद्रवाहन?"

भद्र—"हाँ; नन्दा! अब क्या इसके लिए भी मुझे सफ़ाई देनी पड़ेगी?"

नन्दा—"सफ़ाई की बात नहीं। मैं पूछती हूँ, क्या सचमुच ही तुम मुझे हृदय से प्यार करते हो?"

भद्र—"हाँ, नन्दा! बहुत।"

नन्दा—"मेरी एक बात मानोगे?"

भद्र—"हाँ।"

नन्दा—"प्रतिज्ञा करते हो?"

भद्र—"हाँ।"

नन्दा—"सोच लो भद्र! यह तुम्हारे प्रेम की परीक्षा है।"

भद्र—"मुझे कुछ नहीं सोचना है, नन्दा! तुम कहो।"

नन्दा—"अच्छा, तब सुनो—तुम्हें फिर लौट कर सङ्घाराम में जाना पड़ेगा, फिर जीवन का सदुपयोग करना पड़ेगा। मैं तुम्हारा—बौद्ध भिक्षु का—यह अधःपतन नहीं देख सकती। यदि सचमुच ही तुम मुझे प्यार करते होओ, तो बिना वाक्य-व्यय किए, तुम फिर वहीं लौट जाओ।"

भद्रवाहन को जैसे किसी ने आकाश से डाल दिया। क्षण भर स्तब्ध रह कर उसने कहा—"तुम्हें यही कहना था नन्दा? हाय! मैं तुम्हें कितना प्यार करता हूँ?"

नन्दा—"झूठ बोलते हो भद्र! प्रेम का नाम लेकर उसे कलङ्कित मत करो। यदि मुझे प्यार करते हो, तो अभी उसी पथ पर लौट जाओ।"

भद्र—"पर, वहाँ क्या अब मेरे लिए स्थान रह गया है? जानती हो नन्दा! अपने लक्ष्य से च्युत होने वाले भिक्षु के लिए दण्ड की क्या व्यवस्था है?"

नन्दा—"वह कुछ भी हो, यदि प्राण भी देने पड़ें तो वह जीवन का सदुपयोग ही होगा। बोलो, जाते हो?"

भद्रवाहन शीघ्र कुछ उत्तर न दे सका। क्षण भर ठहर उसने काँपती हुई वाणी में कहा—"नहीं नन्दा! मैं वहाँ न जा सकूँगा। मुझे क्षमा करो।"

तिरस्कारपूर्ण तीव्र दृष्टि से नन्दा ने कहा—"तब फिर नन्दा का नाम न लेना, उसके प्रेम का दम न भरना। भद्र! क्षण भर पहले मैं तुमसे प्रेम करती थी, लेकिन अब वह घृणा के रूप में बदल गया है। याद रक्खो भद्र-

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

वाहन ! नारी यदि प्रेम कर सकती है तो वह घृणा भी कर सकती है। प्रेम करना उसके लिए जितना आसान है, घृणा भी उतना ही है। लो, मैं चली। फिर कभी मेरा नाम न ले सकोगे।"

उत्तर की अपेक्षा किए बिना ही नन्दा तीव्र गति से बाहर निकल गई। भद्रवाहन हतबुद्धि होकर चुपचाप ताकता रह गया।

अकेला भद्रवाहन कुटीर में रह गया—नन्दा सचमुच ही चली गई थी। भद्रवाहन कुछ समझ न सका, क्षण भर में, यह न जाने कैसा विप्लव उत्पन्न हो गया था !

वह विस्मित था, स्तब्ध था, झुँझलाया हुआ था।

कुछ देर बाद वह प्रकृतिस्थ हुआ। उसने सोचा—"तब क्या जगत सचमुच ही दुःखमय है ? जिसमें संसार के सारे सुखों का मैंने दर्शन किया था, अन्त में क्या उसीके द्वारा मुझे चिर-जीवन के लिए यह दुःख उपहार में मिला है ?"

उसने और भी सोचा—"अब मेरे लिए कौन सा पथ है ? जिसके लिए सब कुछ छोड़ा, जगत के हास-उपहास की उपेक्षा की, चरम सुख निर्माण की अवहेलना की, वह मुझे कितनी आसानी से छोड़ कर चली गई ! हाय नारी ! तेरा हृदय क्या पत्थर से भी कठोर है !!"

तब, उसके मन में एक दूसरी भावना का उदय हुआ— नारी इस प्रकार आसक्ति की उपेक्षा कर सकती है, और मैं, पुरुष होकर, लालसाओं की धारा में डूब-उतरा रहा हूँ ? हाय ! मेरा जीवन धिक्करणीय है !!

अपने प्रति एक तीव्र उपेक्षा और धिक्कार के भाव से उसका हृदय भर गया। तब उसके मन में प्रतिहिंसा और क्रोध का उदय हुआ—वहीं चलना होगा। दूसरा पथ नहीं है। संसार का सारा अपमान, तिरस्कार, व्यङ्ग और उपेक्षा सह कर भी यदि मैं प्रायश्चित्त कर सकूँ ! एक बार कोशिश करके देखूँगा !

और तब वह एक बार रोया। रोने से जी हलका हुआ ; दृष्टि का विकार दूर हो गया। आँखें पोंछ कर फिर जब उसने देखा तो संसार उसे दूसरे ही रूप में दिखाई पड़ा।

एक आघात ने संसार का परिवर्तन कर दिया था। उसने स्पष्ट देख पाया—नन्दा ने उसके जीवन की सारी कलुषता एक झोंके में दूर कर दी है। नन्दा के प्रति अपूर्व श्रद्धा और कृतज्ञता से उसका हृदय भर गया।

अब वह शान्त था। उठा और सङ्घाराम की ओर चल दिया।

उस दिन फिर सङ्घाराम के विशाल प्राङ्गण में जन-समूह एकत्रित हुआ। कौतूहल से लोग एक-दूसरे की ओर देखते और आँखों में बातचीत करते थे, पर कोई किसी की बात समझ न पाता था।

यथासमय उपाध्याय के साथ भिक्षुओं ने मण्डप में प्रवेश किया। एक आवृत्त और धीमे कोलाहल से प्राङ्गण गूँज उठा।

सहस्र-सहस्र नेत्रों ने विस्मय और आश्चर्य से देखा—मुण्डित मस्तक भद्रवाहन प्रव्रज्या ग्रहण करने के लिए उपाध्याय के सम्मुख बैठा हुआ है। फिर एक धीमे कोलाहल से प्राङ्गण गूँज उठा।

सब लोगों के यथास्थान उपविष्ट हो जाने पर भद्रवाहन ने उठ कर धीमे—किन्तु सब लोग सुन सकें ऐसे—स्वर में उपाध्याय से निवेदन किया—"हे उपाध्याय ! मैं भिक्षु के कर्त्तव्य का पालन नहीं कर सका हूँ, जान-बूझ कर ही मैं अपने मार्ग से भ्रष्ट हुआ हूँ, पर इसका कारण मेरे मन का अज्ञान और अशान्ति भी है। हे उपाध्याय ! अन्धकार की ओर जाकर मैं अन्धकार की वास्तविकता का अनुभव कर सका हूँ और तब फिर वहाँ से वापस आया हूँ। मैं अपराधी हूँ। अपने अपराध का दण्ड चाहता हूँ। और उसके बाद, हे उपाध्याय ! मैं आपसे प्रव्रज्या ग्रहण करना चाहता हूँ। अब मेरा मन पूर्ण शान्त है, मैं अपने को प्रव्रज्या ग्रहण करने के लिए पूर्ण योग्य समझता हूँ। हे उपाध्याय ! आप मुझे अन्धकार से निकल कर प्रकाश में आने का फिर एक बार अवकाश दीजिए।"

भद्रवाहन इतना कह कर चुप हो गया। भिक्षुओं के साथ, उपस्थित जनता की सहस्र-सहस्र उत्सुक आँखें एक साथ उपाध्याय पर जा पड़ीं। सभी उत्सुक थे, व्याकुल थे—देखें, उपाध्याय क्या फ़ैसला देते हैं ?

गम्भीरतापूर्वक सब कुछ सुन लेने के बाद उपाध्याय

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

उठे। भिक्षुओं को सम्बोधित करके उन्होंने कहा—"हे भिक्षुगण! भद्रवाहन का अपराध अक्षम्य है। इस सङ्घाराम में इस प्रकार की यह पहली ही घटना है। किन्तु इसके साथ ही भद्रवाहन को अपने कृत्यों पर पश्चात्ताप भी है, वह अपने सुधार के लिए अवकाश चाहता है। हे भिक्षुगण! आप लोगों की सम्मति के अनुसार इस बार हम उसे क्षमा करते हैं। जीवन के अतीत सत् और असत् से निवृत्त होकर वह पुनर्वार प्रव्रज्या ग्रहण करना चाहता है। मैं समझता हूँ, उसका उदाहरण अन्य भिक्षुओं के लिए मार्ग-दर्शक बनेगा और वे असत् पथ पर जाने से विरत होंगे।"

इसके बाद उपाध्याय ने फिर कहा—"हे भिक्षुगण! भद्रवाहन को सत्-पथ पर लाने में सब से बड़ा हाथ इस भिक्षुणी का है। यह एक सब से कठोर परीक्षा में उत्तीर्ण हुई है। इस पर हम पूर्ण विश्वास कर सकते हैं और इसे दक्षिण में प्रचार के लिए भेज रहे हैं।"

ऐसा कह कर उपाध्याय ने नन्दा को जनता के सम्मुख खड़ी कर दिया। भक्ति-नत होकर सब लोगों ने उसकी ओर देखा। भद्रवाहन ने भी देखने की चेष्टा की, किन्तु श्रद्धा और कृतज्ञता से उसका मस्तक झुका ही रहा।

उसके बाद भद्रवाहन का प्रव्रज्या और उपसम्पदा संस्कार हुआ। कषाय वस्त्र और अन्य वस्तुएँ उसे मिलीं। फिर उसने भिक्षु होकर प्रतिज्ञा की—

बुद्धं शरणं गच्छामि।
धम्मं शरणं गच्छामि।
सङ्घं शरणं गच्छामि।

सहस्र-सहस्र कण्ठों से उच्चरित होकर यह महामन्त्र सङ्घाराम के विशाल प्राङ्गण में प्रतिध्वनित हो उठा।

जीवन-पथ

[प्रोफ़ेसर रामकुमार वर्मा, एम० ए०]

ओ मेरे पथ, जीवन-पथ!
मेरे पदाघात सह कर बतलाते हो गृह-गृह के द्वार।
बसता है इस ओर और उस ओर तुम्हारे सब संसार॥
ओ मेरे पथ, जीवन-पथ!
यह जीवन पर्वत-प्रदेश-सा असम-विषम है चारों ओर।
पतले कृश बनते जाते हो, जैसे आता है वन घोर॥
ओ मेरे पथ, जीवन-पथ!
यद्यपि वृद्ध सदृश झुकते-से दिखते हो तुम निर्बल श्रान्त।
पर दिखलाते रहो मुझे मेरे जीवन का अन्तिम प्रान्त॥
ओ मेरे पथ, जीवन-पथ!

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

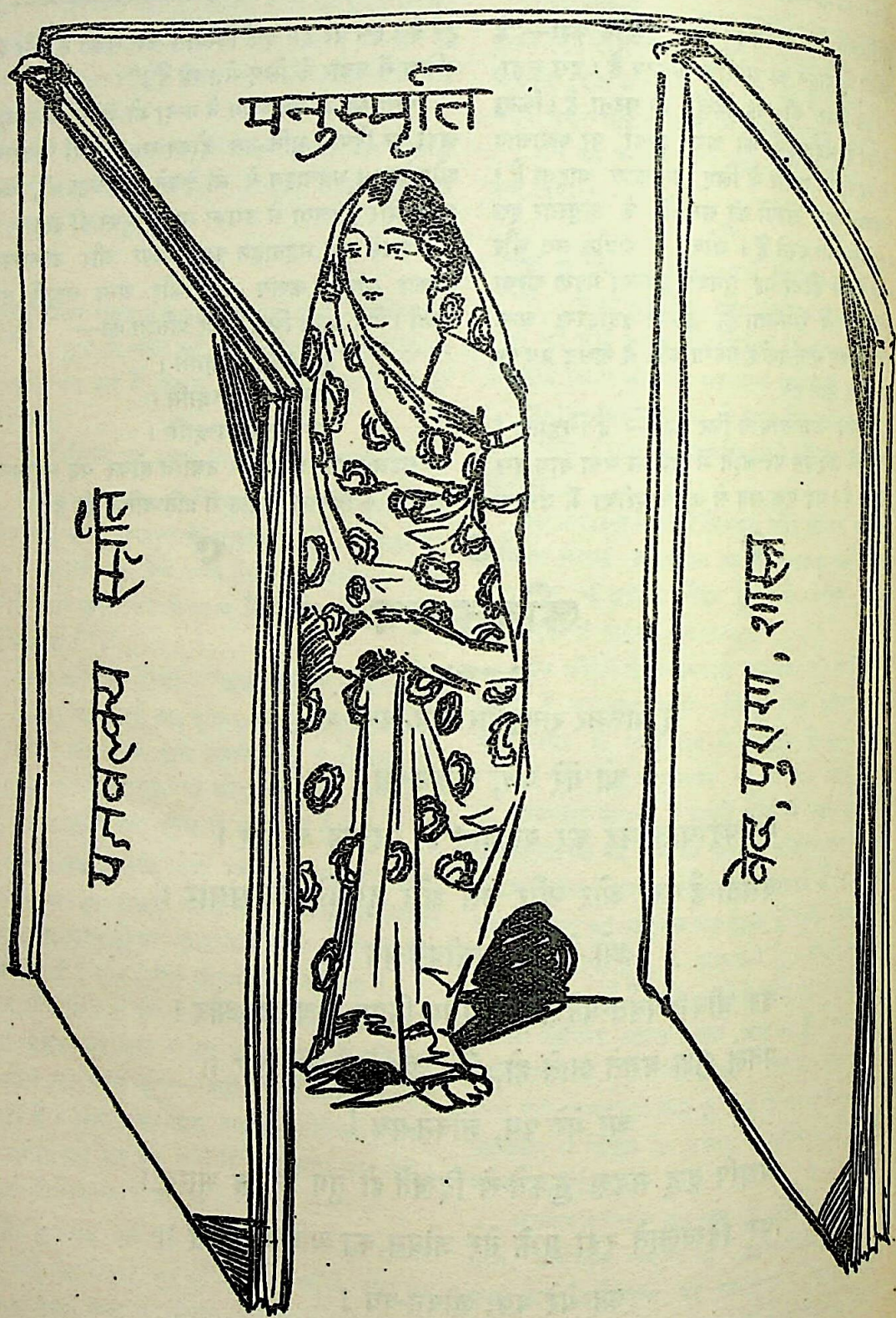

भारतीय स्त्रियों का जेल

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

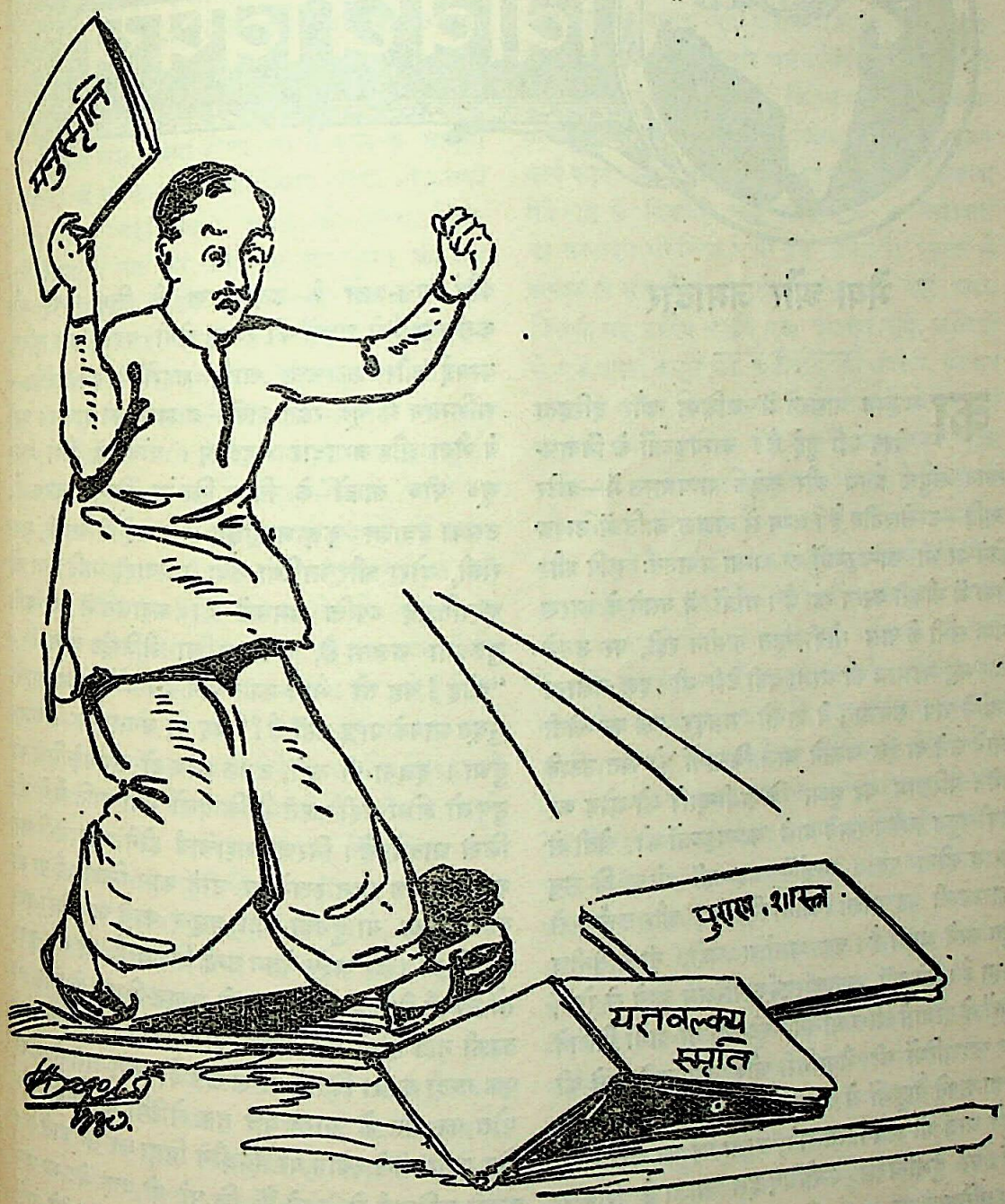

नई रोशनी

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

रहने से तो मौत पाकर नर्क में रहने को मिले तो कहीं श्रेष्ठ है। पर न जाने इन अज्ञानी युवकों को क्या शौक़ चर्राता है कि घर की खेती-बारी छोड़ कर अथवा आस-पास की कोई छोटी-बड़ी नौकरी या धन्धा छोड़ कर दस-बारह रुपए के साधारण वेतन के लिए कलकत्ते दौड़े आते हैं, और अपने शरीर की और कुटुम्ब की हर प्रकार से छीछालेदर कराते हैं।

पूज्य मालवीय जी को पण्डित पुरुषोत्तम राय तथा इन जमादारों ने कई बार घेरा कि आप ब्राह्मण हैं, धनी मारवाड़ियों के प्राण हैं, इन ब्राह्मण मज़दूरों के लिए कोई मकान बनवा दीजिए, जहाँ पर बैठ कर वे अपना उद्धार करने का आयोजन तो कर सकें। मालवीय जी महाराज पहले तो बहुत कुछ आश्वासन देते-दिलाते रहे, पर एक बार जब उनको इन लोगों की एक सभा में आना पड़ा, तो कहा कि तुम सब भाई यदि प्रति वर्ष एक-एक रुपया दे डालो, तो हर साल एक नया विशाल भवन तैयार हो सकता है। तब से ये जमादार भी समझ गए कि कोई नेता हो या धनी हो, उनका उद्धार किसी से नहीं होगा। उन्हें अपना उद्धार स्वयं करना होगा। पर आज उनमें अनैक्य इतना ज़बर्दस्त है कि उनका सङ्गठन ही शिथिल हो गया। अन्यथा, उनके आरम्भिक सङ्गठन को देख कर पार्लामेण्ट के भूत-पूर्व मेम्बर शापुरजी सकलतवाला ने इन जमादारों की सभा में पधार कर कहा था कि ब्राह्मण और दूसरी जातियों के श्रमजीवी जो यह सङ्गठन कर रहे हैं, वह बड़ा अपूर्व है। मैंने श्रमजीवियों का इतना ज़बर्दस्त सङ्गठन भारतवर्ष में और कहीं नहीं देखा था। उस सङ्गठन की भी पूरी छीछालेदर हो गई। यदि ये लोग कलकत्ते में कोई छोटे-छोटे रोज़गार करने लगें तो बड़ी उन्नति कर सकते हैं। लिमिटेड कम्पनी में, सङ्गठन के रूप में, हर एक जमादर दो-दो चार-चार रुपए के शेयर ख़रीद कर हर साल छोटे-छोटे धन्धों के कारख़ाने व दूकानें खोलें, तो उन्हें उन्हीं सङ्गठनों में काम भी मिलेगा और मुनाफ़ा मिलेगा सो अलग। आज जो उन्हें यह भय रहता है कि उन्हें निकाल दूसरी जाति के लोग भर्ती कर लिए जाएँगे, यह भय तब न रहेगा। कलकत्ता, बम्बई और कानपुर—कहीं भी इस प्रकार के सङ्गठनों की स्थापना कर यह लोग अपनी उन्नति कर सकते हैं। इतनी पूँजी तो उनमें से किसी के पास नहीं है कि अपने पास से रुपया लगा कर कोई धन्धा शुरू करें, जिसमें उन्हें और दूसरों को काम मिले, परन्तु इसका सहल उपाय आजकल के ज़माने में इन्हीं कम्पनियों के सङ्गठन करने का है। भाँग-बूटी और तमाखू फाँकना छोड़ कर या गाड़ी कमाई के चार पैसे का अधिक भाग सुनारों को देकर ज़ेवर बनवाना क़तई बन्द कर अपनी आर्थिक अवस्था सुधारने का घोरतम प्रयत्न करना चाहिए। अनेक युवक ऐसे भी इन शहरों में आते हैं जो मुसीबतों के मारे दर-दर भटकने पर कहीं नौकरी पाते हैं। बेचारे एक बार खाना जैसे-तैसे कुछ पैसे बचाते हैं, तो घर से युवा पत्नी का आभूषण बनवाने के तक़ाज़े पर तक़ाज़े आते हैं। उनकी इस कमाई का बहुत कुछ तो सुनार बनवाई और चोरी में हड़प लेता है, और बाक़ी हिस्सा घिसाई आदि में नष्ट हो जाता है। इस बीसवीं शताब्दी के ज़माने में भी स्त्रियों के पैरों में कड़े और छड़ों की बेड़ियाँ डालना और हाथ व गले में सोने-चाँदी के बेहूदे ज़ेवर पहनना अतीव हानिकारक है। आश्चर्य तो यह है कि बड़े-बड़े पढ़े-लिखे घरों की भी स्त्रियाँ इस महा छूत रोग से नहीं बची हैं। जिस जाति की इतनी शोचनीय अवस्था है, उसकी देवियाँ चाँदी और सोने के ज़ेवरों के लिए लालायित हों, यह कैसा दुर्भाग्य है! घर में खाने को नहीं हो, बच्चों की तालीम के लिए पैसे की कठिनाई पड़ती हो, पर स्त्रियों के लिए ज़ेवर चाहिए! यदि मितव्ययिता से दो-चार पैसे बचा कर अपने खेतों में लगावें, या किसी धन्धे में लगावें या उसे बैङ्क में ही डाल दें और स्त्रियों से कहें कि यह धन जो लगा है, वह तुम्हारा ही है, इससे हमारी ग़रीबी तो दूर होगी ही, बल्कि जो धन तुम्हारे पैर-हाथ और गले में पड़ कर नष्ट होता, वह देश की निर्धनता दूर करने के लिए लगा हुआ है, हमें भैयागिरी और जमादारी से छुड़ावेगा, तो कितना अच्छा हो? गाँवों में कान्यकुब्ज ब्राह्मणों की हालत इतनी शोचनीय इसीलिए है कि उनके पास जो दो-चार पैसे आते हैं, उनका वे सदुपयोग नहीं करते। वे गाँवों से भाग कर शहरों में नौकरी करेंगे और चार पैसे पास हुए नहीं कि नौकरी छोड़ बैठे। जब सब खा लेंगे, लोटा-थाली तक बेच डालेंगे, तब पान और तमाखू खाना छूटेगा और फिर नौकरी की फ़िक्र होगी। इस

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

प्रकार इन कान्यकुब्ज ब्राह्मणों ने अपनी ज़मीनें दूसरों को सौंप दीं, और स्वयं उन मज़दूरों से भी बदतर हो गए, जो मिलों में काम करते हैं। साँप की तरह ऐंठ तो उनकी बात-बात में होती है, फिर वे कैसे सफलतापूर्वक खेती कर सकते हैं, कैसे कोई रोज़गार कर सकते हैं? आज भी यदि वे गाँवों में मन लगाकर खेती करें, सभी काम—हल चलाने और गोबर उठाने से लेकर अनाज घर में लाने तक—अपने हाथों से करें, तो न तो उनका ब्राह्मणत्व नष्ट होगा और न उनकी ऐसी दुर्दशा ही होगी, जैसी आजकल हो रही है। इस प्रकार गाँवों में रह कर वे अपनी आर्थिक अवस्था भी सुधार सकेंगे और विद्या-सम्बन्धी ज्ञान सीख कर ब्राह्मणत्व की शोभा बढ़ा सकेंगे। भैयागिरी और जमादारी में न तो उनका पौरुष रहता है, न आर्थिक अवस्था सुधरती है; बल्कि घोरातिघोर तिरस्कार सहना पड़ता है। यदि उन्हें इन शहरों में ही जाना है, तो वहाँ जाकर वे कोई हुनर सीखें, जिससे या तो वे किसी बड़े धन्धे में लग जावें या अपना ही कोई स्वतन्त्र काम करने लगें। पशुओं के समान इस दयनीय अवस्था से उन्हें अपना छुटकारा करना चाहिए।

खेती में भी तभी सफलता होगी, जब वे नए साधनों का उपयोग करेंगे और फ़ुर्सत के समय खेती के साथ-साथ और कोई धन्धा भी गाँवों में करेंगे। उन्हें यह जानना चाहिए कि यह कर्मयुग है, इस युग में चाहे ब्राह्मण हो या और कोई, परिश्रम करने से ही चार पैसे मिलेंगे। हम जितना ही स्वतन्त्र धन्धा करेंगे, उतना ही हम अपने स्वाभिमान, पूर्व गौरव और अपने ब्राह्मणत्व की रक्षा करेंगे। सब फ़िज़ूलख़र्चियाँ मिटा—मितव्ययिता-पूर्वक रह कर—जो चार पैसे बचें, उन्हें रोज़गार में लगाते चले जाना चाहिए। जनेऊ और ब्याह-शादी इस रूप में करने चाहिए कि मानो हम पर उसका कोई भार नहीं पड़ता है। धार्मिक कृत्यों के करने में, जनेऊ-विवाह में पाँच-दस या बीस-तीस रुपए से अधिक का ख़र्च ही नहीं है। तीज-त्यौहारों के मानने में भी व्यर्थ का ख़र्च न करना चाहिए। हमें यह याद रखना चाहिए कि धन कमाना सहल है, किन्तु उसका ख़र्च करना अत्यन्त कठिन है। जो लोग इस ख़र्च करने में सावधानी रखते हैं, वे ही सफलता प्राप्त करते हैं। हमारे इस कथन का यह भी अर्थ नहीं है कि लोग खाएँ-पिएँ न, अच्छे वस्त्र तक न पहिनें। नहीं, वे यह सब करें, पर सदैव धन का सदुपयोग करें। आज जैसा ज़माना आ रहा है, हमको उसी के उपयुक्त अपनी तैयारी करनी चाहिए। यह समय वह है कि यदि हम ज़रा भी न सम्हले तो हमारा अस्तित्व ही नहीं रहेगा। वैसे ही हमारी जाति मिटती चली जाती है, पर जब पूरा घड़ा भर जाएगा, तब हम जगे तो क्या जगे? सारी जातियाँ अपने-अपने कलङ्कों को धोने में लगी हैं, पर हमारे भाई—भैयागिरी और जमादारी कर—आज भी भयानक आर्थिक सङ्कट और पैशाचिक सामाजिक कुरीतियों के दलदलों में फँसे हुए हैं। अभी तक जो हमारी बेढङ्गी रफ़्तार है, उससे हमारा भविष्य अन्धकारमय ही प्रतीत होता है।

—जी० एस० पथिक बी० ए०, बी० (कॉम)
(प्रधान मन्त्री, कान्यकुब्ज सभा, ग्वालियर)

* * *

स्वास्थ्य और नवयुवक

दुःख की बात है कि स्वास्थ्य का महत्व इस देश से लुप्तप्राय सा हुआ जा रहा है। यह एक सपने की स्मृति सी रह गई है। स्वास्थ्य और नवयुवक से बहुत घनिष्ठ सम्बन्ध है। परन्तु दुःख की बात है कि आजकल के नवयुवक यह भी नहीं जानते कि स्वास्थ्य है क्या चीज़! जान कर ही क्या करेंगे? उन्हें इससे क्या काम?

आज हिन्दू जाति लाञ्छित क्यों है, पददलित क्यों है, ग़ुलाम क्यों है, रूढ़ियों का पोषक क्यों है? इसका एक साधारण सा उत्तर है—नवयुवकों में स्वास्थ्य का न होना। नवयुवक ही राष्ट्र की शक्ति हैं। उनमें प्राणोन्मादिनी उत्तेजना रहती है, भयङ्कर जोश रहता है, और रहता है अदमनीय उत्साह। मगर यहाँ अब वह बात नहीं है,—है उसके एकदम विपरीत!

स्कूलों तथा कॉलेजों के दूषित एवं उच्छृङ्खल वातावरण में पल कर क्या कोई नवयुवक यौवन की उन्नत भावनाओं से भावित हो सकता है? कदापि नहीं। मैं दावे के साथ कह सकता हूँ कि आजकल कोई भी नवयुवक स्कूलों के भयङ्कर अनाचार, अमानुषिक प्रथा, अप्राकृतिक कुचेष्टाओं से वञ्चित नहीं है, सभी ने इस स्वर्गीय

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

सुख को लूटा है और ख़ूब लूटा है। मानवता की पवित्र भूमि में दानवता का यह उच्छृङ्खल अट्टहास कैसा दुर्दान्त है!

सब से बड़े दुःख की बात यह है कि इस ओर किसी नेता या सुधारक का ध्यान नहीं। कोई ध्यान ही क्यों दे? किसे इतना अवकाश है कि इन गन्दी बातों पर माथापच्ची करे? भला अश्लील बातें कोई कैसे अपने मुँह पर लावे? उग्र जी ने इस विषय पर लेखनी भी उठाई तो उनकी लेखनी अप्राकृतिक व्यभिचार का शत्रु न होकर दिलदार साक़ी बन गई!

स्वास्थ्य को नष्ट करने वाला यह दुराचार स्कूलों में ही अधिकतर फैला हुआ है और दिन दूना तथा रात चौगुना बढ़ता चला जा रहा है। हमारे सुकुमार बालक खिलने न पाते और निर्दयतापूर्वक मसल दिए जाते हैं। परन्तु आश्चर्य तो यह है कि इन बातों को देख और सुन कर भी कोई चूँ तक नहीं करता। सारा समाज इस ओर से लम्बी तान कर निश्चिन्त है। मैं पूछता हूँ, उन समाज के नरपुङ्गवों से—जिनके हाथों में समाज की बागडोर है—कि उन्होंने इन नर-पिशाचों को दण्ड देने का क्या प्रबन्ध किया है, जो बालकों को मनुष्यत्व से गिरा कर नपुंसकता की दोज़ख़ी आग में जलाते हैं और आप भी जलते हैं? इन गुण्डों के कुचक्र में फँस कर जब कोई स्त्री कुछ कर बैठती है, तब तो समाज के नियामक उसे भयङ्कर से भयङ्कर दण्ड देने के लिए उतावले हो जाते हैं, पर वे इन गुण्डों का क्या बिगाड़ लेते हैं? कुछ भी नहीं। इस तरह हमारे समाज में गुण्डे स्वतन्त्र होकर हमारे होनहार बालकों और बालिकाओं का जीवन नष्ट कर रहे हैं, पर कोई उनका नियन्त्रण करने वाला नहीं है।

ऐसी अवस्था में नवयुवकों के स्वास्थ्य की आशा करना नितान्त युक्तिहीन है। हमारे नवयुवक आजकल चाहते हैं पतली कमर, धँसी छाती, चिपके गाल, अन्दर घुसी आँखें और चाहते हैं औरतों की चाल! वह भारत, जो पहिले वीर सन्तानें पैदा करता था, अब उत्पन्न करता है नपुंसक, जिन्हें स्वास्थ्य से चिढ़ ही नहीं, वरन् घृणा भी है। यह कितनी दयनीय दशा है, कैसी भयङ्कर अवस्था है, इसे कहने की ज़रूरत नहीं। हम कहना केवल इतना ही चाहते हैं कि समाज के विधायकों का ध्यान इस समस्या की ओर आकर्षित होना चाहिए; जो लोग रात-दिन हाथ धोकर साहित्यिक अश्लीलता के पीछे पड़े रहते हैं, उन्हें थोड़ा-बहुत इस व्यावहारिक अश्लीलता की ओर भी ध्यान देना चाहिए।

—तारकेश्वर प्रसाद

* * *

लोहे का भय

"महाराज की दुहाई, महाराज ग़ज़ब हो गया, महाराव रणबङ्का राठौर अमरसिंह मारे गए! और बादशाह सलामत की आज्ञा से उनकी लाश बुर्ज पर नङ्गी करके डाल दी गई है, ताकि चील और कौवे उसे दुर्दशापूर्वक खा जायँ; बहूरानी के पास जो थोड़ी सेना थी, वह लाश लाने के उद्योग में कट-मरी है; राजमहल की रक्षा केवल कुछ बाँदियाँ कर रही हैं। बादशाह सलामत ने ग़ुस्से में आकर हुक्म दिया है कि महाराव का महल ज़मींदोज़ करा दिया जाय और उनके ख़ानदान का बच्चा-बच्चा गिरफ़्तार करके शाही हुज़ूर में दाख़िल किया जाय! बहूरानी अकेली असहाय अबला हैं, आप उनके पूज्य श्वसुर के स्थानापन्न और महाराव के चचा हैं, बहूरानी ने आपकी शरण ली है। वे प्रार्थना करती हैं कि महाराज मेरी आबरू की रक्षा करें, अपने वंश की रक्षा करें और मुझे पति का शरीर ला दें और मुझे निश्चिन्त सती होने की व्यवस्था कर दें। इस विदेश में आप ही सगे हैं।"

"अभी कल ही तो महाराव अमरसिंह हमसे मिल कर गए थे। एक ही दिन में यह क्या घटना हो गई!"

"आज दर्बार में सलावत ख़ाँ ने उनका अपमान किया था, उसे उन्होंने वहीं छाती में कटार मार कर मार डाला, फिर क़िले की सफ़ील कूद कर भाग भी आए। परन्तु महाराज! नमकहराम अर्जुन गौड़ ने अपकार किया।"

"क्या किया?"

"वह धोखा देकर महाराव को क़िले में ले गया, बहूरानी को भी बहुत क़सम दे गया। वहाँ पीछे से अचानक वार करके राठौर को गिरा दिया।"

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

"हूँ, अब मुझसे क्या कहते हो ?"

"महाराज ! बहूरानी आपकी शरण हैं। अपनी और उनकी कुल-मर्यादा, धर्म और इज़्ज़त की रक्षा कीजिए।"

"(हँस कर) हम कब से उनके श्वसुर और चचा हुए ? हम बाँदी-पुत्र हैं और वे रणबङ्का राठौर हैं। हमारी उनकी बराबरी क्या है ? कल तक तो वे हमें विवाह, शादी, ग़मी, किसी में भी बराबर का आसन नहीं देते थे—इससे उनकी कुल-कान चली जाती—अब बहूरानी बाँदी-पुत्र की शरण क्यों ? उनसे कह दो कि बूँदी जाकर अपने उच्च कुलीन पीहर वालों को बुला लें, वे ही उनके कुलधर्म और कुल-गौरव की रक्षा करेंगे। हम बाँदी-पुत्रों का कुल-धर्म ही क्या और कुल-गौरव ही क्या ?"

"महाराज की जय हो। स्वामिन, इस अवसर पर ऐसी बात न करिए। वहाँ अकेली अबलाएँ तलवारें चला रही हैं, यह समय इन बातों का नहीं।"

"परन्तु हम बाँदी-पुत्र भी तो हैं ?"

"आपके रक्त में राठौर रक्त है।"

"फिर भी वह विशुद्ध नहीं।"

"यह समय इस विवेचना का नहीं।"

"जब अच्छे दिनों में हम नीच और ग़ैर रहे तब अब सगे कैसे बनेंगे ?"

"महाराज ! यह क्षत्रियों का धर्म है।"

"उनके लिए, जो उनकी प्रतिष्ठा करें।"

"बहूरानी आपको पितृव्य की भाँति प्रतिष्ठा करती हैं।"

"इस मतलब के समय पर न ? और इस प्रतिष्ठा को हम प्राण देकर ख़रीद लें, जब कि जीवन भर हम बाँदीपुत्र कह कर तिरस्कृत होते रहे ? यह देखो, हमारी छाती अपमान की आग से फुँकी पड़ी है।"

"महाराज ! रक्षा करो, रक्षा करो, आपके भतीजे की लाश को कौवे-चील खा रहे हैं !!"

"हम उनके कुछ नहीं।"

"बहूरानी अभी शाही दर्बार में अपमानित होंगी, वे आपकी कुल-वधू हैं।"

"उनके पीहर वाले बूँदी से आ जावेंगे। वे बड़े बाँके योद्धा हैं, पल भर में उनके गौरव की रक्षा कर लेंगे।"

"तब क्या महाराज अबला, असहाय राजपूतनी को सहाय न देंगे ?"

"वह हमारी कौन हैं ?"

"महाराज का अन्तिम उत्तर क्या है ?"

"बूँदी से पीहर वाले कुलीन वीर बुला कर बहूरानी की प्रतिष्ठा की रक्षा की जाय।"

२

"महारानी, अनर्थ हो गया। महाराव अमरसिंह मारे गए और उनकी रानी का महल शाही सेना ने घेर रक्खा है, अकेली स्त्रियाँ लोहा ले रही हैं। बहूरानी ने महाराज की शरण ली थी, उन्होंने अस्वीकार कर दिया।"

"सुन चुकी हूँ। तू ठहर और जो कुछ मैं कहती हूँ, सावधानी से सुन। अभी महाराज भोजन करने भीतर पधारेंगे। तू सभी सोने-चाँदी के बर्तनों को उठा कर छिपा कर रख दे। और महाराज का भोजन लोहे के बर्तनों में परोस देना। यदि महाराज नाराज़ हों तो तू कुछ जवाब न देना। मैं सब देख लूँगी।"

"जो आज्ञा।"

३

"हैं, यह क्या बेवक़ूफ़ी है ? यह लोहे के बर्तनों में भोजन कैसा ? बाँदी ! कौन है ? किसने यह दुष्टता की है ? मैं उसे कभी क्षमा न करूँगा। यह किसका काम है, सामने आ।"

महारानी सामने आकर—"स्वामिन् ! क्या है ?"

"देखती हो, मेरा किसने अपमान किया है ? यह लोहे के पात्रों में भोजन.....मैं अभी उसे तलवार से टुकड़े-टुकड़े कर डालूँगा। क्या मेरा क्रोध तुम पर विदित नहीं ?"

"विदित है स्वामिन् ! आपका क्रोध, आपका तेज, प्रतिष्ठा, सम्मान, वीरता इस तुच्छ नारी को विदित है। आख़िर यह आपकी अर्धाङ्गिनी दासी ही तो है। यह दुष्टता जिस दासी ने की है, उसे कभी क्षमा न करना स्वामी ! नहीं तो आपका प्रताप आज ही नष्ट हो जायगा। (दासी से) अरी पापिष्ट ! बोलती क्यों नहीं ? अभागिनी, क्या तू नहीं जानती कि महाराज लोहे से भय खाते हैं ? तूने उन्हीं के सम्मुख लोहा रख दिया। तेरी इतनी मजाल ? अरी क्या तू यह नहीं जानती कि यह

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

किसी राजपूत का चौका नहीं—बनिए का रसोई-घर है। यहाँ हीरे, मोती, सोना, चाँदी रहने चाहिएँ या लोहा? क्या तुझसे मैंने बारम्बार नहीं कहा था कि महाराज लोहे से डरते हैं, उनके सम्मुख कभी लोहा न लाना? ठहर मैं तुझे कुत्तों से नुचवाऊँगी।"

"महारानी! तुम यह क्या बक रही हो? क्या तुम पागल हो रही हो? क्या कहा—मैं लोहे से भय करता हूँ? इस भुजदण्ड के बल पर और इस तलवार के ज़ोर पर मैंने सहस्रावधि शत्रुओं के रुण्ड-मुण्ड पृथक् किए हैं। कौन वीर रण-रङ्ग में मेरे सम्मुख खड़ा रह सकता है? और आज तुम मेरा यह अपमान करती हो? मैं लोहे से डरता हूँ? क्या मैं लोहे से डरता हूँ?"

"क्या तुम लोहे से नहीं डरते? अभी तुम जो अपने इन निरर्थक भुजदण्डों की डींग हाँक चुके हो, क्या ये प्रकृत वीरों के भुजदण्ड हैं? यदि तुम लोहे से भय न खाते होते तो क्या यह सम्भव था कि तुम्हारे वंश के अनमोल लाल की लाश, जिसकी वीरता की धाक राजपूताने के घर-घर है, पशु की तरह नङ्गी चील-कौवों के लिए पड़ी होती? तुम्हारी पुत्रवधू की लाज लुट रही है—तुमने शरणागत होने पर भी स्त्री को निराश किया है और तुम इतने पर भी सोने-चाँदी के पात्रों में छत्तीस प्रकार के स्वादिष्ट भोजन गले से उतारने और इन वीर बाहुओं को पुष्ट करने रसोई में पधारे हो। अरे नामर्द, कायर! तेरी पत्नी होने में मुझे लाज लगती है। तू कहता है कि वे तुझे बाँदी-पुत्र कहते हैं? मैं कहती हूँ—एक बार नहीं, सौ बार, लाख बार, करोड़ बार बाँदी-पुत्र है। बाँदी-पुत्र ही शरणागता अबला को निराश कर सकता है। प्रकृत क्षत्रिय के प्राण और सर्वस्व तो शरणागत की रक्षा के ही लिए है, फिर वह शरणागत चाहे उसके प्राणों का जन्म-शत्रु ही क्यों न हो।"

"बैठो, स्वर्ण की चौकी पर। बाँदी, ले आ सोने-चाँदी के थाल और परस दे षड्रस व्यञ्जन। यह बाँदी-पुत्र पेटू, भरपेट आज भोजन करेगा, क्योंकि इसके वीर पुत्र की लाश चील-कौवे खाकर पेट भर रहे हैं, और इसकी शीलवती कुल-वधू, अपनी आबरू अपने हाथ में स्वयं तलवार लेकर बचा रही है।"

"लाओ, यह तलवार मुझे दो। मैं देखूँगी कि राजपूत बाला के हाथ की शक्ति सहन करना मुग़ल-तख़्त के बस का है या नहीं। (अपना सौभाग्य-सिन्दूर पोंछ कर और सौभाग्य-चूड़ियों को चूर-चूर करके) यह लो, अपवित्रता को मैंने दूर कर दिया। अब मैं बाँदी-पुत्र की पत्नी नहीं; मैं साक्षात् रणचण्डी क्षत्रिय बाला हूँ।"

"बस-बस-बस, महारानी बस, अधिक नहीं। ईर्ष्या ने मुझे नीच और अन्धा बना दिया था। जब तक मैं वीर अमर की लाश लाकर वीरबाला बहू को प्रतिष्ठापूर्वक सती नहीं कर दूँगा, तब तक न अन्न ग्रहण करूँगा न जल, न मरूँगा, न हटूँगा, मैं प्रण करता हूँ। तेजस्विनी! तुम धन्य हो, तुम बाँदी-पुत्र की पत्नी नहीं—तुम ओजस्विनी क्षत्रिय बाला हो। लाओ मेरी तलवार। महारानी! विदा। अब हम उस लोक में मिलेंगे। यह मैं चला।"

"तब तुम सचमुच ही स्वामी प्रतीत होते हो। आह! मैं मूर्खा आपे से बाहर होकर क्या कह गई, स्वामिन्! क्षमा।"

"महारानी! अब समय नहीं है, अब हम उस लोक में मिलेंगे।"

"अच्छा, मेरे वीर स्वामी! मैं क्षण भर में ही तुम्हारे चरणों में आने का सब सरञ्जाम किए रखती हूँ, जाओ।"

४

"महारानी, सब कुछ समाप्त हुआ!"

"मुझमें यथेष्ट धैर्य है, सब कुछ विस्तार से कहो। क्या अमरसिंह की लाश मिली?"

"उसे सहस्रों नङ्गी तलवारों की कठिन मार में पुर कर, मुर्दों की छाती पर पैर धरते हुए, महाराज को पुर से लाते और दोनों हाथों से तलवार चलाते हमने स्वयं देखा है।"

"लाश चिता तक सुरक्षित पहुँच तो गई न?"

"महाराव के शयन-कक्ष को ही चिता बनाया गया था, वहाँ बहुत सा ज्वलनशील पदार्थ—घृत आदि भी था, संग्रह करके तैयार किया गया था।"

"चिता में विधिवत अग्नि तो दे दी न?"

"महाराज तब तक स्थिर खड़े रहे, तलवार उनकी मुट्ठी में कस कर पकड़ी हुई थी।"

"बहू सती हो गई?"

"सती हो जाने पर ही महाराज गिरे।"

"महाराज गिरे? क्या महाराज काम आए?"

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

"महारानी ! महाराज अमर हुए, ऐसा साखा किसी ने न देखा होगा।"

"बहुत ठीक, अब तुम कितने बचे हो ?"

"अकेला मैं।"

"महाराज का शरीर कहाँ है ?"

"महाराज के निज कक्ष में धरा है।"

"क्या शाही सेना यहाँ आ रही है ? यह कोलाहल कैसा है ?"

"महारानी ! शाही सेना इधर ही आ रही है।"

"अच्छा, एक क्षण ठहरो। जाओ महाराज के शव को प्राङ्गण में ले आओ। यह द्वार पर धूमधाम क्या है ?"

"महारानी ! शाही सेना भीतर घुसने की चेष्टा कर रही है।"

"अब वह असम्भव है। अच्छा चिता में अग्नि दो और देखो, भण्डार में सब कुछ प्रस्तुत है, आग लगा दो, क्षण भर में महल शाही सेना के लिए अगम्य हुआ जाता है।"

जय वीर माता की !

—???

* * *

आर्यसमाज में सुधार की आवश्यकता

इसमें कोई सन्देह नहीं कि आर्यसमाज पूरा देश-हितैषी तथा देश-भक्त समाज है और जितने काम इस समय तक आर्यसमाज ने किए हैं, वे आदर्श तथा सराहनीय हैं। इस समाज ने सद्धर्म-प्रचार में जैसी-जैसी आपत्तियाँ उठाई हैं, वे देश के किसी व्यक्ति से छिपी हुई नहीं हैं। आर्यसमाज ने देश और जाति को जगाने के लिए भरपूर यत्न किया, इसमें बिलकुल सन्देह नहीं। यह आर्यसमाज का ही प्रभाव है कि जो लोग किसी समय शुद्धि, अछूतोद्धार वा विधवा-विवाह के नाम से कानों पर हाथ रखते थे, वे आज उनके पूरे समर्थक हैं।

परन्तु सवाल तो यह है कि आर्यसमाज की गति मन्द क्यों होती जा रही है ? हमारे समाज की गति में जो इतना परिवर्तन हो गया है, उसका सबब एक यही हो सकता है कि हमारे समाजों के पदाधिकारी और बहुत से प्रचारक और भजनीक अपनी पौराणिक जाति के बड़े प्रेमी हैं। यही एक बात है कि जो देश और धर्म की उन्नति में रोड़ा अटका रही है। यह प्रायः देखने में आता है कि कई आर्यसमाजी भाई बड़े ज़ोर से कह उठते हैं कि मैं तो बीस वर्ष से समाज का सभासद हूँ और मैंने कई सभासद बनाए हैं। इसमें कोई सन्देह नहीं कि उन्होंने समाज की बड़ी सहायता की है ; परन्तु मेरी समझ से तो यह सहायता अधूरी है। क्योंकि जब कोई आर्य-सभासद उनसे कहता है कि आज मेरे घर भोजन का निमन्त्रण है तो वे बग़ले झाँकने लग जाते हैं। वैसा ही उनके बनाए सभासदों का हाल है। अब बताइए उन्होंने समाज की ख़ास कमी में क्या पूर्ति की ? ऐसी बातों से तो यह सन्देह होता है कि कहीं आर्यसमाज अपने आपको और अपने पवित्र और प्यारे धर्म को सङ्कुचित न बना बैठे।

हमारे आर्यसमाजी भाइयों को भूला न होगा कि नवम्बर सन् १९२७ को देहली सार्वदेशिक सभा में स्वर्गीय लाला लाजपतराय जी ने इस विषय का प्रस्ताव रक्खा था और भाई परमानन्द जी ने इस प्रस्ताव का समर्थन किया था कि जितने प्रतिनिधि समाजों से आए हुए हैं, वे अपने-अपने शहर और क़स्बों के समाजों में जात-पाँत-तोड़क मण्डल स्थापित करें। इस प्रस्ताव पर लोगों की सम्मतियाँ माँगी गईं तो सारे लोगों ने, जो पण्डाल में क़रीब १५,००० के मौजूद थे, हाथ ऊँचे कर दिए और प्रस्ताव पास कर लिया। इन प्रस्ताव पास करने वालों ने यह भी प्रतिज्ञा की थी कि हम इस कार्य को पूरी लगन और प्रेम के साथ चलावेंगे। परन्तु अब बताइए, आपने देहली से लौटने के तीन साल बाद में कितना काम जात-पाँत-तोड़क-मण्डल के विषय में किया है ? आप ख़ूब जानते हैं कि कोई भी काम बग़ैर किए तो आप से हो नहीं जावेगा, फिर आपने इस प्रस्ताव को किसके भरोसे रख छोड़ा है ? आर्यसमाज ऐसे ही पचास वर्ष से चिल्ला रहा है और एकता की ढपली पीट रहा है ; पर काम कुछ भी नहीं होता, और न तब तक हो सकता है जब तक हमारे मन से जात-पाँत के बन्धन न टूट जायँ।

हमारे समाजों में होता है क्या ? आठ रोज़ में कुछ थोड़े से सभासद समाज-मन्दिर में जमा हो गए, हवन

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

कर लिया, या दो-एक भजन गा लिए और चलते बने। कभी कोई संन्यासी या उपदेशक या भजनीक आ गया तो शहर में ख़ूब हैण्डबिलबाज़ी कर दी और लोगों को जमा कर लिया। एक-दो रोज़ ख़ूब चहल-पहल रही। परन्तु इसके बाद जाकर कोई समाज-मन्दिर देखे तो मालूम होगा कि कोई नई या पुरानी धर्मशाला ख़ाली पड़ी है, कभी-कभी कोई परदेशी आ ठहरता होगा। मेरे ख़्याल से वह जाति सचमुच कोई जाति नहीं हो सकती और न वह समाज ही कोई हो सकता है, जिसका रहन-सहन और खान-पान एक नहीं। आजकल के हमारे समाज तो ऐसे हो रहे हैं, जैसे कोई लाइब्रेरी या क्लब होते हैं, जहाँ शाम को या सुबह लोग जमा हो जाते हैं और बाद में कुछ नहीं रह जाता; वही आर्यसमाजों का हाल है। अगर यही हाल हमारे समाज का रहा तो बस हो चुका देश का उद्धार और सङ्गठन।

इसलिए इस समय आवश्यकता है अपने को सँभालने की और जो नियम महर्षि दयानन्द के बनाए हुए हैं; उन पर मज़बूत होकर पाँव रखने की, नहीं तो छोड़ दीजिए आर्यसमाजी बनने के ढोंग को। भला एक सच्चे देशभक्त दयानन्द और उनके पवित्र सिद्धान्तों को फ़िज़ूल कलङ्कित करने से क्या लाभ?

आप जानते हैं कि अब शान्ति से बैठने का समय नहीं है। अब भारी क्रान्ति की आवश्यकता है। बस, कर्मक्षेत्र में उतर आइए और अपने सिद्धान्तों को आदर्श बना कर दिखा दीजिए कि आर्यसमाज क्या है, और भारत की भलाई के लिए क्या-क्या कर सकता है। आपके ऊपर यह भारी ज़िम्मेदारी स्वामी दयानन्द की सौंपी हुई है। इसके ज़िम्मेदार आप हैं और आपका समाज है। दुनिया यह देखने के लिए आँखें लगाए बैठी है कि आप इस ज़िम्मेदारी को कहाँ तक निभाते हैं।

—दाताराम आर्य

* * *

चुम्बन

चुम्बन पाश्चात्य सभ्यता की चीज़ है। परन्तु अब इसके विरुद्ध, पाश्चात्य देशों में भी, ख़ूब आन्दोलन हो रहा है। वैज्ञानिक लोग स्वास्थ्य की दृष्टि से और नीतिशास्त्रज्ञ नैतिक दृष्टि से इसे हानिकारक बता रहे हैं। अमेरिका के डॉक्टरों ने अन्य देशों के डॉक्टरों से सहमति प्रकट करते हुए यह घोषणा की है—"शिशुओं स्त्रियों को क्षयरोग और बुख़ार के कीटाणुओं से बचाने के लिए चिकित्सकों का यह कर्त्तव्य है कि वे चुम्बन के विरुद्ध आवाज़ उठावें।" यूरोप और अमेरिका में खुले-आम चुम्बन का रिवाज है। जापान में भी यह रिवाज कुछ-कुछ जड़ पकड़ने लगा था, पर वहाँ की सरकार ने इसे क़ानून द्वारा बन्द कर दिया और जिन्होंने उसे भङ्ग किया, उन्हें तत्काल दण्डित किया गया। अमेरिका के कानसास नगर में कई वर्ष हुए एक विवाहित पुरुष को भारी जुर्माना इस अपराध पर किया गया था कि उसने खुले-आम अपनी स्त्री को चूमा था।

यूरोप में भी इस समय शायद ही कोई ऐसा देश होगा जहाँ चुम्बन के विरुद्ध आन्दोलन न उठ रहा हो। यह आन्दोलन स्वास्थ्य के अतिरिक्त नैतिक और सौन्दर्य-कला के (Aesthetic) आधार पर भी है। पाश्चात्य देशों में राजनीतिज्ञों को भी, रिवाज के अनुसार, अपने आन्दोलनों में चुम्बन के आदान-प्रदान का शिकार होना पड़ता था। परन्तु अभी हाल ही में अमेरिका के राष्ट्रपति श्री० हूवर और फ़्रान्स के प्रधान मन्त्री श्री० मिलेरान्द ने इस रिवाज का शिकार होने से स्पष्ट इन्कार कर दिया।

गत महायुद्ध के बाद जब यूरोप और अमेरिका में फ़ौजी बुख़ार (इन्फ़लुएन्ज़ा) फैल गया था, उस समय इन देशों में स्थान-स्थान पर चुम्बन के विरुद्ध सङ्घ और सभाएँ स्थापित की गई थीं। उस समय एक समाचारपत्र ने इस प्रकार की एक सभा का समाचार इस शीर्षक के साथ प्रकाशित किया था—"चुम्बन मोटर की टक्कर से भी अधिक घातक है।" युवक-युवतियों को सावधान किया गया था कि होठों के प्रत्येक मिलन और स्पर्श के साथ ४० हज़ार कीटाणु एक दूसरे के अन्दर चले जाते हैं। ऑस्ट्रिया-हङ्गरी की राजधानी विएना में सरकार ने चुम्बन को सर्वथा रोक दिया था। रोग के कीटाणु पहुँचाने के अतिरिक्त वैज्ञानिकों का कहना है कि एक चुम्बन के देने वा लेने से ३ मिनट आयु कम हो जाती है।

सौन्दर्य-कला की दृष्टि से भी पाश्चात्य विद्वान चुम्बन का विरोध कर रहे हैं। विएना में एक बार एक युवक ने विदा होते समय अपनी प्रेयसी को चुम्बन दिया। पुलिस में इसकी शिकायत हुई। युवक

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

को अदालत में बुलाया गया। उस समय युवक के विरुद्ध एक विवाहिता स्त्री ने गवाही देते हुए कहा कि मुझे यह दृश्य सौन्दर्य-कला के इतना विरुद्ध मालूम हुआ कि मैंने घृणापूर्वक उसी समय अपने मकान की खिड़की बन्द कर ली। सिनेमा में जब प्रेमी और प्रेमिका का बारम्बार चुम्बन दिखाया जाता है तो विज्ञ लोग उसे बहुधा नापसन्द करते हैं। क्यों? इसीलिए कि वह बड़ा अस्वाभाविक और सौन्दर्य-कला के विरुद्ध प्रतीत होता है। एक कला-विज्ञ लेखक का कहना है कि सिनेमा में जो सबसे बड़ी हानि है वह इस प्रकार के सौन्दर्य-कला-हीन दृश्यों द्वारा उपस्थित जनता को दुर्भावित करना है। फलतः पाश्चात्य देशों में सिनेमा-घरों में ही चुम्बन का रिवाज चल पड़ा है और सबसे आगे की बेंचों पर बैठे प्रेमी-प्रेमिका उपस्थित जनता के सम्मुख बार-बार चुम्बन करते तनिक भी सङ्कोच अनुभव नहीं करते। कई सिनेमा-घरों में इस प्रकार का प्रत्यक्ष चुम्बन सर्वथा बन्द कर दिया गया है। भिन्न-भिन्न देशों के पार्लियामेन्ट-घरों में भी चुम्बन रोक दिया गया है। कुछ दिन हुए, फ्रान्स के पार्लियामेन्ट-भवन से एक स्त्री-पुरुष को इसलिए निकाल दिया गया था कि उन्होंने वहीं पर चुम्बन-विनिमय कर लिया था। हैङ्काऊ (चीन) में एक चीनी दम्पति पर ५ पौण्ड जुर्माना इसलिए किया गया था कि उसने घोड़ागाड़ी पर बैठे खुले-आम चुम्बन किया था। ऑस्ट्रिया की रेलवे कम्पनी ने मुसाफ़िरों के लिए जो नियम प्रकाशित किए हैं, उनमें एक यह भी है कि विदाई के समय प्लेटफ़ार्म पर वा चलती गाड़ी की खिड़की में से चुम्बन नहीं करना चाहिए, क्योंकि इससे दोनों को हानि होती है। वाशिङ्गटन (अमेरिका) में जब चुम्बन के विरुद्ध आन्दोलन चला तब लड़के-लड़कियाँ अपनी छाती पर "मुझे मत चूमो" का बिल्ला लगाए बाज़ारों में घूमते थे। अगले वर्षों में यह आशा की जाती है कि चुम्बन के विरुद्ध और भी अधिक प्रबल आन्दोलन होगा।

हमारे प्राचीन साहित्य में चुम्बन का वर्णन बहुत कम पाया जाता है। हाँ, वात्स्यायन के कामसूत्रों में इसका निर्देश अवश्य है। संस्कृत काव्य-ग्रन्थों के शृङ्गार-पूर्ण भागों में भी चुम्बन की अपेक्षा आलिङ्गन का ही अधिक वर्णन पाया जाता है।

किसी अंश तक यह कहा जा सकता है कि चुम्बन पाश्चात्य सभ्यता के प्रचार के साथ ही इस देश में आया है। अशिक्षितों की अपेक्षा शिक्षितों में और ग्रामों की अपेक्षा नगरों में इसका अधिक प्रचार है। आजकल के अधिकांश अश्लील सिनेमा, थिएटर और उपन्यास भी इस कुप्रवृत्ति के बढ़ाने में सहायक हो रहे हैं।

परन्तु, इस देश में प्रत्यक्ष चुम्बन (Public Kissing) सर्वथा नहीं है। यह न हिन्दुओं में है और न मुसलमानों में। जहाँ तक हम समझते हैं, एशिया के किसी देश में भी अभी तक पश्चिम की तरह प्रत्यक्ष चुम्बन का रिवाज नहीं है। भारत में रहने वाले अङ्गरेज़ों में ऐसा रिवाज अवश्य है, पर वह भी उतना सार्वजनिक नहीं, जितना उनके अपने पाश्चात्य देशों में। हिन्दुस्तानी, जो ईसाई हो गए हैं, उनमें भी खुले-आम चुम्बन कम ही देखा जाता है।

हाँ, निजूरूप से चुम्बन अब घर-घर में घुस गया है। यह पाश्चात्य सभ्यता के साथ ही यहाँ आया है और उसी के साथ-साथ यह बढ़ रहा है। अङ्गरेज़ी शिक्षा के अड्डे—स्कूल, कॉलेज, यूनिवर्सिटी इत्यादि—में तो यह व्याधि भयङ्कर रूप से फैल रही है।

अब समय आगया है कि सुधार-प्रेमी इस घातक कुप्रवृत्ति के विरुद्ध आवाज़ उठावें। शिक्षित पुरुषों का कर्त्तव्य है कि वे स्वयं इससे बचें और दूसरों को भी बचावें। स्वास्थ्य, नीति-कला आदि दृष्टियों से जब चुम्बन हानिकारक है और हमारी सभ्यता के विरुद्ध होने से अनुपयुक्त है, तब इस नई बढ़ती कुप्रवृत्ति के विरुद्ध आन्दोलन करना प्रत्येक शिक्षित भारतीय का कर्तव्य है।

—दीननाथ सिद्धान्तालङ्कार

* * *

अस्मत पर हाथ

बूँदी के राजमहलों में नाच-रङ्ग के दौर-दौरे थे। छोटे महाराज का विवाह था। डाढिनें गा रही थीं। भाट विरद वर्णन कर रहे थे। बाँके राजपूत अपनी-अपनी बाँकी अदा दिखा कर मस्ती दिखा रहे थे। कुँवर साहेब उठती उम्र के अल्हड़ युवक थे। वे एक

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

बढ़िया क़ालीन पर समवयस्कों के साथ मसनद के सहारे पड़े शराब की प्यालियाँ ख़ाली कर रहे थे। ख़वास और गोले ख़िदमत में हाज़िर थे। कुँवर साहेब ने हँस कर एक दोस्त से कहा—"यार, बूँदी में सब से ज़्यादा सुन्दर स्त्री कौन है?"

"ओह, क्या महाराज कुमार को इसका पता ही नहीं? अजी, आपकी बड़ी साली साहिबा के मुक़ाबिले की स्त्री इस समय बूँदी तो क्या राजपूताने भर में नहीं है।"— एक मित्र ने उत्साह से कहा।

"क्या सत्य?"

"कुमार चाहे जब आज़मा लें, अब तो आप नातेदार हो गए। और नाता भी ऐसा कि दो बात उल्टी-सीधी भी हो जायँ तो निभाव हो जाय।"

कुमार हँस पड़े। बोले—"तब आज ज़रा उस मुख-चन्द्र की बहार देखी जायगी।"

"मगर कुमार, यह वादा कीजिए कि जो कुछ गुज़रेगी, सब मित्रों को बताना पड़ेगा।"

"लो, हम हाथ पर हाथ मारते हैं।"

एक बार यार लोग ठहाका मार कर हँस पड़े। और एक-एक प्याला और पीकर उन्होंने एक साँस ली।

२

महल में बाँदियों ने कुँवर साहेब को ले जाकर एक गद्दी पर बैठा दिया। ऊपर चन्दोवा तान दिया। एक ने सुराही से शराब भर कर कुँवर साहेब को दी; उन्होंने उसे पीकर प्याला अशर्फ़ियों से भर कर लौटा दिया। दूसरी ने पान की गिलोरियाँ पेश कीं। कुँवर साहेब ने उस पर अपनी मोतियों की माला और एक कटाक्ष फेंक दिया।

तीसरी बाँदी ने आगे बढ़ कर मुजरा करके कहा—"कुँवर साहेब! हुक्म हो तो कुछ गाना-बजाना हो।"

कुँवर साहेब ने हँस कर कहा—"यह तो कहो, तुममें राजकुमारी कौन सी है?"

"सरकार, हम लोग तो बाँदियाँ हैं, हुक्म हो सो बजा लावें।"

"तब क्या बड़ी बाई साहिबा भी हमसे छिप कर बैठेंगी?"

"हुज़ूर, छिप कर क्यों, वे तो आपके ब्याह की तैयारी में हैं।"

"उन्हें ज़रा बुलाओ तो।"

बाँदी दौड़ी गई। क्षण भर बाद महाराज कुमारी उपस्थित थीं। उन्होंने मुस्कुरा कर कहा—"बींद राजा का क्या हुक्म है?

राजकुमार की आँखें उस रूप को देख कर झँप गईं। उन्होंने मुस्कुरा कर कहा—"हुक्म देने वाले तो यहाँ हाज़िर नहीं हैं, कहें तो जैसलमेर साँड़नी-सवार भेज दिया जाय।"

"इतना कष्ट क्यों, उनका हुक्म लेकर तो यहाँ आई ही हूँ, आज आपका भी हुक्म बजा लाया जाय।"

"इस तुच्छ पर इतनी कृपा का कारण?"

"कारण? कारण की एक ही कही।"

"फिर भी।"

"आप बींद राजा हैं—हमारे मान हैं—महमान हैं—यहाँ महाराज पर भी हुक्म करें तो उसे बजा लाना ही होगा।"

राजकुमार हँसने लगे। राजकुमारी ने और निकट आकर कहा—"बैठिए, खड़े कब तक रहेंगे, मैं आपके लिए जलपान ....."

राजकुमार ने अनायास ही कुमारी का हाथ पकड़ कर कहा—"आप भी तो बैठिए; दासी....."

कुमार पूरी बात कह न सके, एक प्रबल धक्का खाकर वे धरती में जा गिरे।

क्षण भर बाद उन्होंने उठ कर देखा—यह रूप-राशि सुकुमार महिला सिंहनी की भाँति ज्वालामय नेत्रों से उन्हें ताक रही है। उसके नथने फूल गए हैं और श्वास में तूफ़ान के चिन्ह देख पड़ते हैं।

राजकुमार काँप उठे। उनके मुख से बात न निकली। कुमारी ने वज्र गर्जन की भाँति कहा—"कायर! पापिष्ट!! अधम!!!"

इसके बाद ही उसने अपने वस्त्रों से कटार निकाली और देखते-देखते अपनी उस सुन्दर सुकुमार कलाई को खट से काट डाला।

रक्त की धार बह चली। दासी, बाँदी हक्का-बक्का खड़ी रह गईं। देखते ही देखते महल के सभी छोटे-बड़े वहाँ इकट्ठे हो गए। महाराज ने आकर कहा—"बेटी, यह क्या किया?"

"इस पापिष्ट ने मुझे छू लिया!"

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

Jangamawadi Math, Varanasi
Acc. No. 3079

"बेटी, यह नाता ही ऐसा है।"

"पिता जी, चुप रहो।"

महाराज ने गर्दन नीची कर ली। कुमारी शीघ्र ही मूर्च्छित होकर धरती में गिर गईं।

३

"वीरेन्द्र!"

"अन्नदाता, महारानी!"

"अभी जैसलमेर को साँड़नी रवाना कर दो। वह बिना मञ्ज़िल लिए जाय और महाराव से सब हक़ीक़त बयान कर दे। और अभी हमारे कूच की भी तत्काल तैयारी कर दो।"

"जो महारानी की आज्ञा।"

बूँदी भर के छोटे-बड़े राजवर्गी इकट्ठे हो गए। सभी ने कुमारी को समझाया, पर उसने हठ न छोड़ी। उसके मुख पर शब्द थे—अस्मत! अस्मत! होठ मानो आप ही फड़क रहे थे और उनमें से 'अस्मत' की ध्वनि फूटी पड़ती थी।

* * *

सबने समझ लिया कि ख़ैर नहीं। सारा रस-रङ्ग फीका पड़ गया। सबके चेहरों पर हवाइयाँ उड़ने लगीं। महाराज ने वर-पक्ष से कहला भेजा कि लड़की का डोला तैयार है, उत्तम यही है कि झटपट विदा हो जाइए। यदि जैसलमेर की सेना आ गई तो एक भी मर्द बच्चा जीवित न बचेगा।

रो-रोकर दुलहिन बिदा हुई। इसके भाग्य में कै घड़ी का सुहाग था? कौन जाने? राजमहल में कुहराम मच रहा था। थोड़ी ही देर में दुलहिन की पालकी को बीच में डाले वर-पक्ष की सेना सर्प की भाँति दुर्ग से बाहर जा रही थी।

* * *

दो ही मञ्ज़िल के बाद गर्द उड़ती देख वर-पक्ष ने समझ लिया कि काल मँडराता हुआ आ रहा है। इधर सेना बहुत कम थी। पर जितने भी थे, वे मोर्चेबन्दी करके तलवारें सूत कर मरने को खड़े हो गए।

४

"इस सेना का मुखिया कौन है?"

"यह सेना नहीं, बारात है।"

"इस बारात में हमारा गुनहगार है, उसे हमारे सुपुर्द किया जाय।"

"वह कौन है?"

"बींदराज।"

"उन्हें हम प्राण रहते सुपुर्द नहीं कर सकते।"

"तुम्हारे प्राण रहने ही न पावेंगे।"

"हमें इसकी परवा नहीं। पर बारात पर अकस्मात यों चढ़ दौड़ना वीरता नहीं।"

"यहाँ वीरता का प्रश्न नहीं, यहाँ शत्रु से युद्ध नहीं, यहाँ अपराधी को गिरफ़्तार करके दण्ड देना है।"

"उसका अपराध क्या है?"

"उसने स्त्री की अस्मत पर हाथ डाला है।"

"वह साधारण दोष था।"

"उसकी सज़ा मौत है।"

"यह साधारण काम नहीं।"

"यदि राजपूताने की तलवारें भी आकर उसकी रक्षा करना चाहें तो बचा नहीं सकतीं।"

बाँके वीर टूट पड़े। खटाखट तलवारें चलीं और देखते ही देखते ख़ून की नदी बह निकली। जैसलमेर की सेना विजयी हुई। सेना के सर्दार ने लाशों में से दूल्हा की लाश निकाल कर, उच्च स्वर से कहा—"प्रिये! अपराधी को दण्ड मिल गया।"

"स्वामिन! अब एक और कर्त्तव्य शेष रह गया है।"

यह कह कर ज्येष्ठ राजकुमारी डोले में से निकल कर लाशों को पैरों से रौंदती हुई, दुलहिन के डोले के पास पहुँचीं। देखा, दुलहिन की आँखों में आँसू नहीं हैं। उसने अपने हाथ से माथे का सिन्दूर पोंछ लिया है और अपनी सुहाग की चूड़ियाँ चूर-चूर कर डाली हैं। बहिन को देखते ही वह सहसा हँस पड़ी। उसने कहा—"जीजा जी कहाँ हैं?"

वह क्रुद्ध वीर—जो अब तक बघेरे की भाँति तलवार लिए फिरता था, चुपचाप विनयपूर्वक आ खड़ा हुआ। उसने विनम्र स्वर से कहा—"बाई जी को मुजरा है।"

"जीजा जी! जीजी के मन का तो तुमने किया—अब कुछ मेरा भी उपकार कर दो।"

"जो आज्ञा।"

"क्या मेरे ससुराल वालों में कोई जीवित बचा है?"

"एक भी नहीं।"

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

"तब तुम्हीं चिता चुन दो, पति की लाश को स्नान करा—चन्दन-चर्चित कर—रख दो, जीजी आग दे देंगी। मैं अब सती होऊँगी। जीजा जी, यह कष्ट तो करना होगा।"

वीर राजपूत की आँखों में एक बूँद आँसू आकर ढलक गया। उसने वीरबाला का सैनिक सलाम किया और पीछे हट गया।

* * *

सूर्य छिप रहा था और चिता बड़ी-बड़ी लपटों को उड़ा कर धक-धक जल रही थी! बड़ी-बड़ी लकड़ियों के लाल-लाल अङ्गारे मानो हँस-हँस कर उस खेल को देख रहे थे!!

—???

* * *

विवाह या सर्वनाश

भारतवर्ष की मनुष्य-गणना की रिपोर्ट में यह पढ़ कर कि यहाँ सैकड़ों की संख्या में ऐसी विधवाएँ हैं, जिनकी आयु एक वर्ष से भी न्यून है, हृदय को कभी विश्वास नहीं होता था। कभी-कभी तो यह भी शङ्का होती थी कि यह मिस मेयो की भाँति, शायद गवर्नमेण्ट ने हम लोगों को बदनाम करने के निमित्त अपनी ओर से झूठमूठ लिखवा दिया हो। मैं समझता था कि प्रथम तो ऐसे विवाह किसी जाति में होते ही नहीं, जिनमें कन्या की आयु एक वर्ष से न्यून हो; और यदि कदाचित् इतने बड़े देश में एकाध विवाह ऐसा हो जाता हो तो क्या यह आवश्यक ही है कि वह विधवा भी हो जाय? और सो भी सैकड़ों की तादाद में! यह विचार मेरे मस्तिष्क में बहुत समय तक घूमता रहा।

पिछले साल फाल्गुन मास के आरम्भ में मुझे कार्य-वश मथुरा जाना पड़ा। वहाँ एक दिन सायङ्काल चौबों के एक मुहल्ले से होकर गुज़रा तो क्या देखता हूँ कि पुरुषों और स्त्रियों का एक जगह जमघट लगा हुआ है। ऐसा मालूम होता था कि यहाँ कोई शादी हो रही है। आगे बढ़ कर देखा तो एक युवती की गोद में पाँच या छः महीने की एक बच्ची बैठी हुई थी, जिसके माथे पर कुछ पुरुष रोली और चावल चढ़ा रहे थे। एक परिचित जी यह कार्य सम्पादन करा रहे थे। मैंने पहिले तो यह ख़्याल किया कि यह शिशु उस स्त्री की नवजात लड़की है, जिसको वह इस समय अपने से पृथक करने में असमर्थ होने के कारण गोदी में लिए हुए है। परन्तु यह देख कर कि यह सारा संस्कार उस बच्ची का ही किया जा रहा है, मुझे अपना यह विचार छोड़ना पड़ा। मैंने सोचा कि शायद उस बच्ची का अन्नप्राशन हो रहा है। परन्तु कुछ ठीक समझ में न आया।

अन्त में एक आठ-नौ वर्ष के लड़के से मैंने पूछा—"भाई! यह क्या हो रहा है?"

लड़का कुछ रुखाई के साथ बोला—"दीखे नायने, आगौनी हो रही है?"

मैंने कहा—"ठीक है, वही अन्नप्राशन? उसी को यहाँ आगौनी कहते हैं।"

लड़का मेरी बात सुन कर मेरा मुँह निहारता रह गया। फिर आश्चर्यपूर्ण हँसी के साथ बोला—"अरे, अन्नप्राशन नायने। या को कल ब्याह होगो, आज आगौनी है।"

यह सुन कर मैं एकदम सहम गया। मेरी कुछ समझ में न आया कि इतनी छोटी बच्ची का विवाह कैसे हो सकता है? लड़कपन में बेशक सुना करते थे कि बच्चे अपने गुड्डों और गुड़ियों का विवाह भी बड़ी धूम-धाम और पूर्ण शास्त्र-विधि से रचते हैं। तो क्या यह भी कोई ऐसा ही विवाह है? मैं इसी उधेड़-बुन में था कि उस युवती की गोद से रोने की आवाज़ आई। वह लगी उस बच्ची को थपथपाने और पुचकारने। अब मेरे आश्चर्य की कोई सीमा नहीं रही। मैं जिसे निर्जीव गुड़िया समझ रहा था, वह निकली जीवित गुड़िया! मैं जिसे बच्चों का खेल समझ रहा था, वह सचमुच का विवाह निकला! इससे मेरे मन में और भी कुतूहल बढ़ा। मैं सोचने लगा कि इस बच्ची का विवाह कैसा! यह किस जाति में हो रहा है? यह अपने ढङ्ग का अकेला ही विवाह है, अथवा ऐसे और भी होते हैं? परन्तु मेरे इन प्रश्नों का उत्तर कौन दे? वहाँ तो आबाल-वृद्ध सभी आमोद-प्रमोद में मस्त थे। किसी के चेहरे पर हँसी है, तो किसी के मुँह पर मुस्कुराहट। स्त्रियाँ अपनी तथा दूसरों की छवि देख रही हैं, तो

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

पुरुष धक्कमधक्का में मशग़ूल हैं। मैं ही अकेला अपनी उलटी खोपड़ी लिए अलग खड़ा विचारों में मग्न था। मैं कभी उस युवती की गोद में लेटी हुई बालिका को देखता था, कभी वहाँ के आचार्य तथा कार्यकर्ताओं पर दृष्टि दौड़ाता था, कभी देश के दुर्भाग्य पर अफ़सोस करता था। जब छः-छः महीने की गुड़ियों का विवाह होता है तो उनके विधवा हो जाने में ही कौन सा आश्चर्य है? ख़ास कर जिस जाति में विधवा-विवाह को पाप समझा जाता है, जो लोग विधवा-विवाह को कोली और चमार जैसी नीच जातियों का काम समझते हैं, उनमें ऐसी विधवाओं की कैसी दुर्दशा होती होगी? मेरे पास ही खड़े हुए एक युवक से पूछा—"यह किस जाति की बालिका है?"

युवक—"जगत्प्रसिद्ध चौबों की।"

मैं—"कौन से चौबों की—मीठों की या कड़ुओं की?"

युवक—"मीठों की नहीं, यहाँ तो अधिकांश कड़ुए ही रहते हैं। यह उन्हीं की बच्ची है।"

मैं—"अच्छा, तो वे, जिनमें से कुँवर जगदीश-प्रसाद हैं तथा और भी बड़ी-बड़ी नौकरियों पर हैं, और कुछ कलकत्ते में व्यापार भी करते हैं? यह उन्हीं में की बालिका है?"

युवक—"अजी, नहीं साहब! आप जाने कहाँ की क्या कहने लग गए। उनका इनका क्या सम्बन्ध? वे कुलीन, ये बदलीन। दोनों के बीच केवल रोटी का व्यवहार चलता है, बाक़ी और कोई संसर्ग नहीं। ये तो वे हैं, जिनमें बड़े-बड़े नामी पहलवान हो चुके हैं, जिनका पेशा तीर्थ-पुरोहिताई है, जिनके बड़े-बड़े महाराजे यजमान हैं, जो भङ्ग पीने और दण्ड पेलने के लिए ही बहुधा प्रसिद्ध हैं।"

मैं—"अच्छा, तो ये मथुरा के पण्डे हैं, जो स्टेशनों पर से यात्रियों को लाते हैं और मन्दिरों के दर्शन और यमुना-स्नान कराते हैं?"

युवक—"जी हाँ, वही हैं। अब आप ठीक समझे।"

मैंने इस युवक से और भी बहुत सी बातें कीं। यह स्वयं भी उसी समुदाय का था, जिसमें यह विवाह हो रहा था। इसकी बातचीत से मालूम हुआ कि इस जाति में इस प्रकार का यह पहला ही विवाह नहीं था। ऐसे विवाह पहले भी होते रहे हैं। डेढ़-दो वर्ष की बच्चियों का विवाह तो प्रायः हो जाता है। परन्तु छः छः महीने की गुड़ियों का विवाह हाल पर होने लगा है। मैंने इस युवक से पूछा—"क्यों भाई! ऐसे विवाहों के होने का कुछ कारण भी बता सकते हो?"

युवक ने कहा—"इसका कारण यह है कि हम लोग बदलुए हैं।"

मैं—"बदलुए से क्या मतलब?"

युवक—"बदलुए से मतलब यह कि हमारे यहाँ विवाह अक्सर बदले से होते हैं। एक घर में एक लड़की और एक लड़का हुआ और दूसरे में भी एक लड़की और एक लड़का, तो वे इनका विवाह अदले-बदले में कर लेते हैं। पहले घर के लड़के का दूसरे घर की लड़की से और दूसरे घर के लड़के का पहिले घर की लड़की से विवाह होता है। यह बदला भाई-बहिन का तो होता ही है, परन्तु चाचा-भतीजी का, मामा-भाञ्जी का, नाना-धेवती का और बाप-बेटी का भी हो सकता है। इसीलिए हम लोग बदलुए कहलाते हैं।"

मैंने पूछा—"लेकिन बदले का तो यह माने नहीं कि छः-छः महीने की बच्चियों का ही ब्याह रचा डालिए?"

युवक—"नहीं, इसके यह माने तो नहीं। इसके कुछ और भी गम्भीर कारण हैं। बदले के विवाह में यह शर्त होती है कि जिस घर में लड़की जाय उस घर से एवज़ी में एक लड़की आवे। अब, यदि उस घर में कोई लड़की नहीं है तो उसे एक लेखा लिखना पड़ता है कि मेरे कुटुम्ब में जब कभी कोई लड़की पैदा होगी तो मैं उसे अमुक घर में दूँगा। कुछ समय तक तो यह लेखा ही सब कुछ था। परन्तु पीछे से इसमें बेईमानी होने लगी। लोगों ने एवज़ी का बदला न चुकाया। तब सरकारी रजिस्ट्री की शरण लेनी पड़ी। रजिस्ट्री में बेटे वाले को लिखना पड़ता था कि अमुक घर में या तो मैं एवज़ी की एक लड़की दूँगा अथवा उसके बदले में इतना रुपया भरूँगा। रुपए की रक़म पहले से ही तय रहती थी। कुछ समय पश्चात् इसमें भी धोखा होने लगा। तब हार मान कर यह तरकीब निकालनी पड़ी कि लड़की की एवज़ी में दूसरी ओर से लड़की ही ली जाय, चाहे वह छोटी-बड़ी, कुरूप-सुरूप कैसी ही क्यों न हो, और अपनी लड़की के विवाह के साथ ही साथ उससे विवाह भी कर लिया जाय। फिर अपने घर में आकर

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

वह जीती-मरती रहेगी, देखा जायगा। यह विवाह एक ऐसी ही शर्त के विवाह का नमूना है।"

मैंने पूछा—"आप लोग इसे बुरा नहीं समझते?"

युवक—"समझते तो सब कुछ हैं। पर करें क्या? स्वार्थ में अन्धे, ये किसी की सुनते हैं? जातीय सभाओं ने इन कुकृत्यों को रोकने का अनेक बार प्रयत्न किया। परन्तु इन पर कोई प्रभाव न पड़ा। न ये किसी की सुनते, न मानते, न किसी के आदेशानुसार बर्तते हैं। ये अपने सामाजिक कार्यों में पूर्ण स्वच्छन्द और निरङ्कुश हैं।"

मैंने आश्चर्य के साथ पूछा—"क्या इस जाति के समझदार व्यक्ति भी इन बातों पर ध्यान नहीं देते?"

युवक ने कुछ हँस कर कहा—"इनके समझदारों की कुछ न पूछिए। इनमें समझदार ऐसे-ऐसे हैं कि अभी कहो तो न कुछ मामले को लेकर उसे ऐसा रूप दे दें कि ज़मीन-आसमान एक कर दें। एक छोटी सी ग़लती को बड़े से बड़ा रूप दे दें और फिर उसके कर्ता और उसके सहायकों को एकदम जातिच्युत कर दें। उनका सिर मुड़वा डालें, जनेऊ बदलवा डालें। परन्तु अनेक लोग घोरतम पाप करते हैं तो भी इनके कान पर जूँ नहीं रेंगती। स्वार्थ के वशीभूत होकर ये उसकी चर्चा तक नहीं करते। स्वार्थपरता इनमें इस तरह कूट-कूट कर भरी है कि सुन कर आपके रोंगटे खड़े हो जाएँगे। इनके समझदार व्यक्ति और आचार्य पैसे के ग़ुलाम हैं। जो पैसा दे सो उन्हें जोते। इन्हें पैसा देकर कोई चाहे तीन दिन की लड़की का विवाह साठ वर्ष के बाबा से करा ले, चाहे पैंतीस वर्ष की प्रौढ़ा का सोलह वर्ष के युवक से। इनका तो यह कहना है—

छोरा मरौ चाहे मरौ छोरी।
पीले टके से भर दो झोरी॥

मैंने पूछा—"यहाँ के नवयुवक इन बुराइयों को रोकने का कुछ प्रयत्न नहीं करते?"

युवक—"वे बेचारे जहाँ तक बनता है, हाथ-पैर मारते हैं। परन्तु जहाँ दाढ़ी-मूँछ वालों की नहीं चलती, जहाँ बड़े-बड़े शास्त्रियों और आचार्यों की बोलती बन्द हो जाती है, वहाँ इन छोकरों को कौन पूछे? बड़े-बड़े जातीय नेताओं ने इन्हें सुधारना चाहा, परन्तु ये लोग उन नेताओं को ही अपने से पृथक बता देते हैं और अपनी ग़लती मानने के बदले उन्हीं में सैकड़ों ऐब निकालने लग जाते हैं। जब बड़े-बड़ों की यह दशा है तब बेचारे युवक क्या करें? वे अपनी सभा करते हैं और बिलबिला कर रह जाते हैं।"

समय अधिक हुआ जान कर मैं उस युवक से विदा हुआ और रास्ते भर यह सोचता गया कि परमात्मा इन मूर्खों को कब सुबुद्धि प्रदान करेगा? यदि हम लोगों की यही हालत रही तो हमारी जाति का भगवान ही मालिक है।

—कौशिक

"मैं तुम्हें नौकर रख सकता हूँ। परन्तु तुम्हारे पास मुन्शी महादेव प्रसाद का सर्टिफ़िकेट नहीं है।"

"हुज़ूर सर्टिफ़िकेट की ज़रूरत क्या है? यदि कहें तो मैं उनकी वह घड़ी दिखा दूँ, जिस पर उनका नाम खुदा हुआ है।"

* * *

मियाँ बीबी दोनों रात में सो रहे थे। कुछ खटका हुआ, बीबी ने कहा—"देखो तो, शायद कोई चोर है।" मियाँ ने कमरे के दरवाज़े के पास पहुँच कर पुकारा—"कौन है?" जवाब मिला—"कोई नहीं।" जवाब विश्वसनीय था, केवल सवेरे कुछ चीज़ें ग़ायब थीं।

पहला—"तुम आजकल क्या करते हो?"

दूसरा—"मैं बिना सींग के बकरों का व्यापार करता हूँ।"

पहला—"मगर....."

दूसरा—"मगर से मैं कोई सम्बन्ध नहीं रखता।"

* * *

"मैं एक पहलवान आदमी चाहता हूँ।"

उम्मीदवार—"मैं यथेष्ट बलवान् हूँ।"

"इसका प्रमाण?"

"जब मैं आया तब आपके द्वार पर दस उम्मीदवार खड़े थे, मैं उन सबको भगा कर आया हूँ।"

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

[श्रीमती कमला देवी चौधरी]

अँधेरी मैजिस्ट्रेटी

ऑनरेरी मैजिस्ट्रेट (कुर्सी पर बैठे हजामत बनाते हुए)—हूँ! अब बाज़ी मार ली है। बस, दो-चार महीने की देर है। थोड़ा सा जुरमाने का रुपया और भेजा कि फिर क्या, रायबहादुरी मिली ही समझो।

ऑनरेरी मैजिस्ट्रेट की स्त्री—चूल्हे में जाय ऐसी रायबहादुरी.....

ऑ० मै०—(बीच ही में बात काटते हुए) अरे! ज़रा धीरे से बोलो। बाहर सब चपरासी सुनते होंगे। ज़रा यह तो ख़्याल किया करो कि ऑनरेरी मैजिस्ट्रेट का घर है।

स्त्री—मिल ही जायगी तो कहाँ की दौलत हाथ लगेगी, जिसके लिए हज़ारों के गले काटे? घर की सारी ज़र-ज़मीन का सत्यानाश किया .....

ऑ० मै०—चुप हो! चुप हो!!

स्त्री—घर में बच्चे एक-एक चीज़ को तरसें और अफ़सरों के यहाँ रोज़ डालियाँ जायँ! बरसों से यही रङ्ग देख रही हूँ, मिल तो न गई रायबहादुरी? वही मसला है—बाहर अब्बे तब्बे, घर में चूहे पक्के।

ऑ० मै०—अजी! तुम तो बस बक-बक करना जानती हो। कितना समझाओ, सब बेकार। देखो तो आँखें खुल जायँ, अफ़सर लोग मेरी जैसी इज़्ज़त करते हैं। मेरे पहुँचते ही कुर्सी से उठ कर हाथ मिलाते हैं, अपने बराबर कुर्सी पर बिठाते हैं। कितने हिन्दुस्तानियों को यह इज़्ज़त नसीब है? अङ्गरेज़ लोग बिला 'डैम फूल' के बात तो करते ही नहीं।

स्त्री—वाह! यह एक ही रही। अरे! किसे अपना घर मेवा-मिठाइयों से भरना बुरा लगता है? दिन-रात कमर झुकाए 'हाँ हजूर!' 'हाँ हजूर!' करते रहते हो, सुबह से शाम तक नाक रगड़ते हो, तो हाथ मिला ही लिया तो कौन भाग जग गए?

ऑ० मै०—उँह! कौन तुम्हारे साथ अपना दिमाग़ ख़राब करे? कोई और औरत हो तो ऐसा घर पाकर फूली अङ्ग न समाए, तुम्हें हर वक़्त जलते ही बीतता है।

ऑनरेरी मैजिस्ट्रेट का नौकर लालू आकर कहता है—हजूर, कोचवान—हजूर, कोचवान—साहब, कोच.....

ऑ० मै०—(बीच ही में) अबे! गधे, पाजी, सूअर के बच्चे, मुझे कोचवान कहता है? पता है तुझे, मैं ऑनरेरी मैजिस्ट्रेट हूँ?

लालू—हजूर.....हजूर.....हजूर..... साहब, पता है। हजूर.....आप.....हजूर अनाड़ी मेजिस्ट्रेट .....

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

ऑ० मै०—(बात काट कर) अबे ! साले, सूअर के बच्चे, फिर तूने अनाड़ी कहा ? कह—'ऑनरेरी।'

लालू—हजूर, अनाड़ी.....अनाड़ी .....

ऑ० मै०—चुप पाजी, बदमाश !

लालू—(हैरान होकर) तो फिर हम का करी ? तुमहीं तो कइत हौ, बात बात माँ 'हजूर' कह, जीमा जान पड़ै कि हम अनाड़ी मजिस्ट्रेट के नौकर हन। मुंदा हमार जुबान नाहीं फिसलत है तो हम का करी ? गदहा, पाजी, सूअर का बच्चा तो हमहूँ फर-फर कह सकित हैं।

ऑ० मै०—कमबख़्त ! तुझे कौन कहेगा कि तू ऑनरेरी मैजिस्ट्रेट का नौकर है ?

लालू—कउनौ हजूर कमबखत न कहै तौ उइका हम का करी ? लेओ हम जाइत है।

ऑ० मै०—अबे पाजी, कहाँ चला ?

लालू—रोटी खाए।

ऑ० मै०—अभी हमने तो खाया नहीं, तू चला—

लालू—तौ तुमका रायबहादुरी की फिकर माँ भूखै न लागै तो उइका हम का करी ?

ऑ० मै०—(मन ही मन) कहता तो ठीक है ! लेकिन रायबहादुरी चीज़ ही ऐसी है। (नौकर से) अच्छा, बता तू क्या कहने आया था ?

लालू—पहिले तुम यह बताओ, 'हजूर-हजूर' करके बतलाई या जस मनई बतलात है, तस बतलाई।

ऑ० मै०—अबे बता भी। मैं इस वक़्त जल्दी में हूँ।

लालू—जल्दी माँ तौ हमहूँ हन, काहे सेनी भूख लाग है।

ऑ० मै०—अच्छा बता क्या कहता है ?

लालू—कोचवान कहत है कि कहूँ कलट्टर बलट्टर के घर जाओ तौ गाड़ी लगावे।

ऑ० मै०—(आप ही आप) आज न जाने किसका मुँह देख कर उठा था ! सुबह ही सुबह लल्ला की माँ ने झगड़ा ठान दिया ; आज मेरा कुछ काम नहीं बना। (नौकर से)—जा, कोचवान से कह, जल्दी गाड़ी लावे। अब खाना न खाऊँगा, मुझे कलक्टर साहब से जल्दी मिलना है।

लालू बड़बड़ाते हुए चला गया—जाव तुम्हारे करम माँ रोटी बदी होए तब ना, कलट्टर रायबहादुरी से पेट भर देहैं।

२

पानी बरस चुका था। सड़क कीचड़ से भरी हुई थी। उस पर एक मोटर-गाड़ी हॉर्न देती हुई आ रही थी। पर पुलिस का सिपाही शान के साथ अपने साथी से बातें करते हुए चौराहे पर खड़ा था। उसने मोटर की ओर ध्यान न दिया। इतने में मोटर नज़दीक पहुँच गई और कीचड़ के छींटे उड़ कर उसके साथी के पाजामे पर जा पड़े। सिपाही मोटर का नम्बर लेते हुए ग़ुस्से से बोला—मालूम होता है अन्धे हो ! बिल्कुल बेकायदा मोटर चलाते हो। दिखाई नहीं देता कौन खड़ा है !

टैक्सी ड्राइवर—दिखाई क्यों नहीं देता ? मैं तो दूर ही से हॉर्न देता आ रहा हूँ।

सिपाही—आप तो हॉर्न देते आ रहे हैं और हम भले आदमी के कपड़ों का क्या होगया ?

ड्राइवर—कीचड़ के सबब से छींटें उड़ कर पड़ गईं, इसमें मेरा क्या क़सूर ?

सिपाही—क़सूर ? क़सूर यह है कि हम पुलिस के आदमी हैं ! चालान कर देंगे तो सारी हेकड़ी निकल जाएगी। मोटर लिए खोपड़ी पर चढ़े आते हैं !

आदमियों की भीड़ लग गई। इतने में एक ताँगे वाला बोला है—हाँ, ग़लती तो ज़रूर है। देखते नहीं ये ख़ाँ साहब खड़े हैं ? पाजामा बुरी तरह ख़राब हो गया।

साथी—अजी ! मैंने अभी पाजामा सिलाया था, इसे इन्होंने बिल्कुल ग़ारत कर दिया।

ताँगे वाला—ख़ैर, ग़लती तो हुई, अब माफ़ कर दीजिए। (ड्राइवर से) भई, तुम भी अजब आदमी हो ! अपने क़सूर की माफ़ी क्यों नहीं माँगते ? ख़ाँ साहब को इतनी तकलीफ़ हुई। और नहीं तो कुछ पान-सिगरेट के लिए ही दो।

ड्राइवर कुछ न बोल कर चलता बना। इस पर ताँगे वाला आप ही आप कहता है—कहा था, ख़ाँ साहब से माफ़ी माँग लो, बेचारे बड़े भले आदमी हैं, हम ग़रीबों पर हमेशा मेहरबानी की नज़र रखते हैं, मामला निबट जाता। मगर कुछ अजब गधा आदमी है !

सिपाही—नहीं भाई, ये लोग बड़े बदमाश होते हैं। जब तक चालान न होगा, बाज़ थोड़े ही आएँगे ?

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

तरकारी की पोटली हाथ में लिए लालू ने बीच ही में आकर कहा—का कह्यो, का? पैजामा पर छप्पा पड़ गए, येहू का चलान होत है? तौ मनई पर काहे चलान करत हौ, चलान करौ भगवान पर, जो पानी बरसाइन है!

सिपाही—(लालू को देख कर) अरे भई, सलाम!

लालू—तू हमका काहे सलाम करत हौ पुलिस के मनई हुइकै? तुम सोचे हुइहौ कि इहके मालिक के पास मुकदमा जैहै तो यही से गवाही दिलाउब। सो हम अस झूठ बोले वाले मनई नाहीं हन, हन अनाड़ी मजिस्ट्रेट के नौकर तो का भा?

ताँगे वाला—मियाँ, तुम भी ग़ज़ब करते हो! इसमें झूठ बात क्या है? यह तो आँख से देख ही रहे हो, पाजामा कैसा ख़राब हो गया है। इस तरह अपने रिश्तेदारों की बेइज़्ज़ती कौन बर्दाश्त कर सकता है? चालान तो करना ही पड़ेगा। यह तो क़ानून की बात है।

लालू—तुमका तौ इनकी लल्लो-चप्पो करबै का चही, काहे सेनी ताँगा चलाउत हौ, खुसामद न करौ तौ बनै कइसे? इक भले मनई का फँसाय कै आपन स्वारथ देखत हौ। हम अस मनई नाहीं हन।

लालू बड़बड़ाते हुए चला जाता है। इसके बाद सिपाही अपने दोस्त से कहता है—यार, तुम्हारा पाजामा तो ख़राब हुआ, लेकिन इस साले को भी पता लगेगा कि हम लोग चीज़ क्या हैं, साले से ऐसा बदला लेंगे।

साथी—तुम्हारा यह चालान चल ही जायगा, इसका क्या पता? मोटर पर कई आदमी बैठे थे, आख़िर वे लोग भी तो गवाही देंगे?

सिपाही—ऊँह! क्या होता है? शहर के ऑनरेरी मैजिस्ट्रेट के पास मुकदमा जायगा, क्या मजाल जो पुलिस का चालान छोड़ दें? और उनका भी तो फ़ायदा है। सरकार का ख़ज़ाना न भरेंगे तो रायबहादुरी कहाँ रक्खी है? सरकार का फ़ायदा न हो तो वह इन रईसों को ऑनरेरी मैजिस्ट्रेट बनावे ही क्यों?

साथी—अच्छा! यह बात है? तब तो पुलिस की नौकरी में पाँचों घी में रहती हैं!

सिपाही—और नहीं तो क्या? हम लोग ऐसी हिकमतें न चलें तो इतनी कम तनख़्वाह में कैसे काम चले? अभी साला दस-पाँच दे जाता तो क्या पड़ी थी चालान करने की?

३

"लालू! लालू!"

"कहो, का है?"

"कहौ भाई! मैजिस्ट्रेट साहब घर में हैं?"

"काहे? ओही मोटर वाले का चलान किए हुइहौ?"

सिपाही ने अधीर होकर कहा—अरे भई, तुम्हें इन बातों से क्या मतलब? जाओ, मैजिस्ट्रेट साहब से मेरे आने की इत्तला करो।

लालू—देखौ! इनका देखौ! कस हुकुम दिहिन, जानौ इनहिन के नौकर होई। जुबान माँ लगामै नाहीं।

सिपाही—ख़बर करोगे या नहीं? जब से बकबक कर रहे हो।

लालू—कर देब, कउनौ जल्दी है? तमाखू पी लेई।

सिपाही—जल्दी तो है ही, फ़ौरन जाओ।

लालू—"फउरन जाव!" कस हुकुम दिहिन—जानौ लाट साहब एही होयँ! या पुलिस की सेखी तुम मोटरनै वालन पर चलायौ। हमरे मूँ लगिहौ तौ भल न होई। हियाँ ललपगड़िया का डर नाहिन है।

सिपाही—अरे! तुम तो ख़ामख़ा मुझसे उलझना चाहते हो। मालूम होता है, मोटर वाला तुम्हारा कोई लगता है। यह बात थी तो उसी रोज़ क्यों न कह दिया? फिर बात ही क्यों बढ़ती?

लालू—अउर तुमहीं हमरे कउन लागत हौ जो तुम्हार हुकुम बजाई? मोटर वाला कउनौ लागतऊ होत तबहूँ हम तुम्हरे अस घुसखोरन से तौ जरूरै सिपारिस करित! अपने मुँह मियाँ-मिट्ठू!

सिपाही—देखो लालू! अभी तक मैं तुम्हारी बात मज़ाक़ में टाल रहा था। अब ज़बान बन्द करो, वरना अच्छा न होगा।

लालू—ओहोहो! हमरउ चलान कर देओ, नीक है, हमहूँ देख लेब।

सिपाही—सच कहता हूँ, अभी मैजिस्ट्रेट साहब से शिकायत करूँगा।

लालू—करौ, हमका उनकी नाईं रायबहादुर थोड़ै बनै का है, जो हम काहू से डेराई? भगवान पइदा

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

करिन हैं, ओही खाए का दैहैं। हम काहे का काहू से डेराई?

सिपाही—(बात टाल कर, हँसता हुआ) अरे लालू, तुम्हारे सरकार रायबहादुर हो जायँ तब तो तुम्हारा भी फ़ायदा है, ख़ूब इनाम मिलेगा।

लालू—उनका रायबहादुरी मिल जाय, जो रात-दिन एक कर राखिन हैं! लालू का इनाम न चाही।

सिपाही—क्यों? तुम तो उनके पुराने नौकर हो, जो माँगोगे वही मिलेगा।

लालू—नाहीं, हमका इनाम की भूख अब नाहीं है। जानत हौ, बड़े लाला से सोने के खड़वा पाय चुके हन। अब तौ रात-दिन बे कसूरन पै जिरीबाना सुनत-सुनत आँतैं जर गईं। (हुक्का दीवार से रखता हुआ) अब कुछ न चाही।

सिपाही—अच्छा, अब तो तुम तम्बाकू पी चुके?

लालू घर में जाता है और ऑनरेरी मैजिस्ट्रेट साहब बाहर आते हैं।

सिपाही—सलाम हज़ूर!

ऑ० मै०—सलाम भाई! कहो क्या मामला है?

सिपाही—हज़ूर, आप जानते हैं, साले मोटर वालों ने समझ लिया है कि सड़कें हमारे बाप की हैं, ऐसी बदतमीज़ी से मोटर चलाते हैं—बिल्कुल बेक़ायदा। कोई अफ़सर लोग देखें तो हज़ूर, सारी आई-गई हम लोगों के सर जाय।

ऑ० मै०—ठीक कहते हो!

सिपाही—हज़ूर, अभी तीन-चार दिन की बात है, मैं और मेरे मामा के साले खड़े बातें कर रहे थे। बग़ैर हॉर्न दिए, बड़ी तेज़ी से मोटर ले आया; बेचारे के तमाम कपड़े छींटे से ख़राब हुए सो तो हुए ही, बड़ी चोट भी आई। गर्दन तो हज़ूर, बिल्कुल टेढ़ी हो गई, कोहनी तमाम छिल गई है। मैंने बहुत हैरान होकर चालान किया है। इस ड्राइवर को मैं कई बार होशियार कर चुका था, लेकिन ये लोग तो अपने सामने किसी को कुछ समझते ही नहीं।

ऑ० मै०—अच्छी बात है, हम देख लेंगे। बेशक, ये लोग बड़े बदमाश होते हैं। ख़ूब जुरमाना होगा, ठीक हो जाएँगे।

सिपाही—हाँ हज़ूर! दस-पन्द्रह रुपए को तो ये कुछ समझते ही नहीं। एक तो इतनी बड़ी ग़लती की, ऊपर से मुझे गालियाँ दीं।

ऑ० मै०—अच्छा, गालियाँ भी दीं! तब तो हम ख़ूब समझेंगे।

सिपाही—सलाम हज़ूर!

ऑ० मै०—सलाम भई!

४

ऑनरेरी मैजिस्ट्रेट के इजलास में मुद्दई, मुद्दाअलैह, गवाह इत्यादि हाज़िर होते हैं।

मुद्दई—हज़ूर, यह देखिए मेरे कपड़े मौजूद हैं।

(कीचड़ से भरा पाजामा दिखाता है)

ऑ० मै०—तुम्हारे चोट किस जगह आई?

मुद्दई—हज़ूर, चोट तो अब अच्छी हो गई, गर्दन और हाथ में बड़ी चोट आई थी। वैसे तो सारा जिस्म चूर-चूर हो गया था, लेकिन ख़ुदा का लाख-लाख शुक्र है कि मेरी जान बच गई।

लालू—(दूर बैठा हुआ) जब तुम्हार गटई टेढ़ हुइ रहै, हाथ टूट रहै, तौ कहाँ इलाज कराए रह्यौ, जो अब जल्दी नीक हुइगा? अउर फटा भवा कुरता कहाँ रहि गवा? (ग़ुस्से से) मारे सारे का पकड़ के, अब गटई टेढ़ कर दे।

ऑ० मै०—यह कौन बक-बक कर रहा है? लालू, चलो यहाँ से।

लालू—(जाता हुआ) हाँ हम तौ जाइत है, तुम बैठे-बैठे अँधेरी करौ। राम दोहाई! कलै रायबहादुर बन जइहौ!

ऑ० मै०—क्यों जी, तुम्हारी मोटर से इस आदमी के चोट आई?

ड्राइवर—जी नहीं, कीचड़ की वजह से सिर्फ़ पाजामे पर छींटें पड़ गई थीं।

ऑ० मै०—नहीं, तुम झूठ बोलते हो—अपने गवाह पेश करो।

पहला गवाह—हज़ूर, मैं मोटर पर बैठा था, ड्राइवर हॉर्न दे रहा था। ये दोनों आदमी रास्ते पर खड़े थे, इसलिए छींटें पड़ गईं।

ऑ० मै०—तुम झूठ बोलते हो; इस आदमी के बहुत चोट आई थी।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

दूसरा गवाह—हज़ूर, मोटर बहुत धीरे-धीरे चल रही थी, किसी के चोट नहीं लगी।

आँ० मै०—ओ! हम समझ गए, तुम बनावटी गवाह हो।

लालू—(ड्राइवर के पास जाकर) कहो भैया ! फिरौ गनीमत समझौ। पचासै पर बीती।

ड्राइवर—मैं तो समझता था, शहर के मशहूर रईस हैं, ठीक न्याय करेंगे, कौन पुलिस वालों की ख़ुशामद करें? नहीं तो उसी वक़्त दस-पाँच देकर मामला तै कर लेता। मैं ग़रीब आदमी ५०) कहाँ से लाऊँगा ?

लालू—अँधेरी है भैया, अँधेरी ! अपनोई गला मूसत हैं, नाहीं तौ रायबहादुरी कहाँ से मिलै।

ड्राइवर—घर की सारी चीज़ बेचने पर भी ५०) न मिलेंगे। अभी नौकरी ही मिले कितने दिन हुए हैं, पहला ही क़र्ज़ा सर पर चढ़ा है।

लालू—भैया, इहकी कुछ फिकर न करौ, भगवान देई।

ड्राइवर—कहाँ से भगवान देगा, कोई ज़रिया भी तो होता ?

लालू—उदास न होओ, बइठ जाव, एक चिलम पी लेव। (चिलम देते हुए) करज काढ़ कै दै दिहौ।

ड्राइवर—अरे भई, क़र्ज़ देगा कौन ?

लालू—(पचास रुपए टेंट से निकालते हुए) लेओ, जब तुम्हरे पास होय, दै दिहौ।

ड्राइवर, आँखों में आँसू भरे हुए, लालू के पैरों पर गिर पड़ता है।

लालू—उहमाँ का बात है, हम करज देइत है, जब होय तब दे दिहौ।

ड्राइवर जब रुपए लेकर जुरमाना अदा करने चला तो रास्ते में सोचता जा रहा था—हाय ! क्या हम अभागों की आह ही वह मन्त्र है, जो इस राज्य में लोगों को ऑनरेरी मैजिस्ट्रेटी और रायबहादुरी दिलाया करता है !

दाम्पत्य दण्ड-विधान में संशोधन

एक सम्बाददाता महोदय लिखते हैं—

श्रीमान सम्पादक जी,

मेरी श्रीमती जी गत तीन वर्षों से 'चाँद' पढ़ा करती थीं। उन्होंने 'चाँद' की प्रतियों को बड़ी हिफ़ाज़त के साथ रक्खा है। एक दिन 'चाँद' की फ़ाइल उलटते हुए सन् १९२७ के अक्टूबर मास के अङ्क पर मेरी दृष्टि पड़ी। उसमें पृष्ठ ६९९ पर, 'दाम्पत्य दण्ड-विधान' के तीसरे अध्याय में, यह बताया गया है कि गृह की शान्ति भङ्ग करने वाले पति को कौन-कौन सी सज़ाएँ दी जा सकती हैं। उनमें एक सज़ा फाँसी की भी है, जिसके विषय में लिखा है—"इस क़ानून में फाँसी का यह अर्थ समझा जायगा कि स्त्री अपने पिता के घर अथवा किसी सखी के घर चली जायगी, और शीघ्र लौटने की इच्छा न करेगी।"

यद्यपि विधान-कर्ता ने इस बात का ज़िक्र नहीं किया है कि स्त्री कितने दिनों तक अपने पिता अथवा सखी के यहाँ रह सकती है, तो भी विधान-कर्त्ता का यह आशय तो कदापि न रहा होगा कि स्त्री अपने पिता अथवा सखी के यहाँ स्थायी रूप से रहने लगे। मैं आज दो वर्षों से इस तरह की फाँसी की सज़ा भुगत रहा हूँ, पर अभी तक छुटकारे की कोई सूरत दिखाई नहीं पड़ती। ऐसा मालूम होता है कि मेरे मामले में "शीघ्र न लौटने की इच्छा" का ग़लत अर्थ समझ लिया गया है। मैंने अपने अपराधों के लिए अनेक बार माफ़ी माँगी, मिन्नतें कीं, हाथ जोड़े, परन्तु श्रीमती जी को किसी से भी सन्तोष न हुआ। वह मुझ जैसे पराजित शत्रु पर जिस तरह वार पर वार करती चली जा रही हैं, उसके लिए मैं उनकी बहादुरी, हिम्मत और धैर्य की प्रशंसा तो अवश्य करूँगा, पर साथ ही मैं इस दण्ड-विधान का भी विरोध करना चाहता हूँ। इसमें फाँसी की सज़ा वाली दफ़ा के बाद यदि यह और जोड़ दिया जाय कि—"किसी भी अपराधी को यह सज़ा छः महीने से अधिक न भुगतनी पड़ेगी", तो हमारे जैसे अभागे अपराधी विधान-कर्त्ता के प्रति अत्यन्त कृतज्ञ होंगे।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

नारी-जीवन

[श्री० आनन्दिप्रसाद श्रीवास्तव]

पत्र-संख्या १३

[वृद्ध-पत्नी की ओर से बाल-विधवा को]

बहिन,

तुम्हारा वह प्रत्युत्तर
अनुचित न था किन्तु कटु था।
युवा-अवस्था थी, स्वभाव था
उग्र, नहीं संस्कृति-पटु था।

क्या करतीं तुम, और नहीं कुछ
कर सकती थीं तुम उस काल।
नहीं धैर्य रहने देती है
तन-मन की पीड़ा विकराल।

सह सकता है कौन धैर्य से
इस जग में ऐसा लाञ्छन?
तुम पर तो बीती थी, सुन कर
मेरा जलता है तन-मन।

विधवा का जीवन तो तप है
और तपों से अधिक कठोर।
उससे यदि वह तनिक डिगेगी भी
तो है उचित न करना शोर।

जो तप करते नहीं जगत में
उन्हें दोष देता है कौन?
विधवा तप से विरत अगर हो
तो क्यों मनुज न रहते मौन?

उन पर दोषारोपण करने
वाले होते हैं कैसे?
उनका हृदय-विदारण करने
वाले होते हैं कैसे?

झूठे दोष लगाए जाते
हैं उन लोगों पर अधिकांश।
कुटिल स्वयं होते हैं दोषा—
रोपी स्त्री औ' नर अधिकांश।

प्रलोभनों से जिन लोगों के
डिगतीं न वे आत्म-पथ से।
वही पटकना उन्हें चाहते
हैं नीचे सतीत्व-रथ से।

नहीं जान पड़ता मुझको क्यों
उन पर ही समाज है क्रूर?
और, प्रलोभन देने वाले
क्यों समझे जाते हैं शूर?

उन दुष्टों पर क्यों समाज यह
करता नहीं कठिन शासन?
अबलाओं पर बल दिखला
क्यों करता उनका निष्कासन?

नहीं एक भी दुश्चरित्र नर
घर से बाहर किया गया।
और कहें क्या? उसे न किञ्चित
दण्ड कभी है दिया गया।

होते हैं कुछ जन समाज में,
जिनका होता है यह काम—
कि वे फँसाते विधवाओं को
या उनको करते बदनाम।

क्यों समाज रहता है उनके
दोष देखता हुआ तटस्थ?
धनी हुए तो उन्हें भले जन
सदृश लेखता हुआ तटस्थ?

बहिन कहा यह बहुत, सुनो अब
कुछ मेरा आगे का हाल।
सुन कर मेरी बात चला वह
वृद्ध गया बाहर उस काल।

कहा—"प्रिये! मैं फिर आऊँगा,
करो यहीं रह कर आराम।"
इस प्रकार टाला मैंने वह
सङ्कट, साधा अपना काम।

द्वार कर लिया बन्द, खोलने
का उसको फिर लिया न नाम।
सोचा मैंने—बची आज, अब
कल आवेंगे बूढ़े राम।

बहिन, बाद इसके मैं अपने
कमरे में खुल कर रोई,
रोती रही रात भर, क्या था
समझाने वाला कोई?

पर यह रुदन बड़ा अच्छा था,
जितने गिरे अश्रु के कण,
वे मानों हलका करते थे
दया-पूर्ण हो मेरा मन।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

रोती थी मैं, समझ रही थी
अपने को अतिशय असहाय ।
हुआ सवेरा, सूर्यदेव के
दर्शन हुए मुझे फिर हाय !

खिड़की से वे झाँक रहे थे,
थे वे क्या लज्जा से लाल ?
भुवन—सहायक हैं, पर सकते
थे वे यह आपत्ति न टाल ।

धीरे-धीरे सूर्यदेव की
मानों वह लज्जा छूटी ।
समझे थी निज को असहाया
जो वह मम निद्रा टूटी ।

मन्द प्रभामय उषाकाल में चमक उठा मेरा भी मन ।
दृढ़ता आई मेरे भीतर, स्वयं सचेष्ट हुआ कुछ तन ।

पत्र-संख्या १४

[बाल-विधवा की ओर से वृद्ध-पत्नी को]

बहिन,
बहुत होता जाता है
रोचक हाल तुम्हारा अब ।
धुन बस यही मुझे रहती है,
पाऊँ पत्र तुम्हारा कब ?

बात कहीं जो तुमने अबला
विधवाओं के जीवन पर,
बहुत उचित हैं, बैठ गई हैं
वे सब तो मेरे मन पर ।

बहिन, तुम्हारी बुद्धि तीव्र है,
तुम होतीं महिला-जन-रत्न,
जो तुमको शिक्षित करने का
किया गया होता सुप्रयत्न ।

जो न यहाँ की महिलाएँ यों
परवश अशिक्षिता रहतीं,
जो न कार्य वे निम्न कोटि के
ही करने का दुख सहतीं,

तो क्या जाने कितनी होतीं
जगत चकित करने वाली,
जग में अपनी प्रखर बुद्धि से
नई प्रभा भरने वाली ।

कुछ विज्ञान-विशारद होतीं,
तो कुछ गणितज्ञा होतीं ।
कुछ भाषा-विदुषी होतीं ।
क्या इस प्रकार अज्ञा होतीं ?

कहते हैं यह मनुज कि पढ़तीं
वे तो काम कौन करता !
अप्रखर मति नर-महिलाओं का
दल वह काम मौन करता ।

प्रखर-बुद्धि की महिलाएँ-नर
जग की ज्ञान-वृद्धि करते ।
भारत को सब से उन्नत कर
उसकी जग-प्रसिद्धि करते ।

इसीलिए भारत महिलाओं
को समुच्च शिक्षा देना ।
उनके मस्तिष्कों की पहले
पूर्ण परीक्षा कर लेना ।

भारत के समाज-नेताओं
का है गुरु कर्तव्य प्रधान ।
यदि वे सचमुच ही रखते हैं
भारत की उन्नति का ध्यान ।

सुनो बहिन, मैं तुम्हें सुनाती
हूँ फिर अब आगे का हाल ।
सुन कर मेरी बात सास बस
हुई राक्षसी सी विकराल ।

शीघ्र ससुर जी को लाई वह
कह उनसे झूठी बातें ।
समझ रही थी मैं मन ही मन
उसकी वे सारी घातें ।

कहा ससुर जी ने आकर के—
"निकल हमारे घर से तू ।"
ननदें सारी बोल उठीं तब
कि "चल हमारे घर से तू ।"

इस पर ही सन्तोष हुआ क्या ?
लगे पीटने मुझे सभी ।
इतनी मार पड़ेगी मुझ पर,
सोचा था यह नहीं कभी ।

होकर संज्ञा-हीन गिरी जब,
तब आई कुछ मुझमें शान्ति ।
पर इस अल्प शान्ति में गर्भित
थी सुदीर्घ जीवन की क्रान्ति ।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

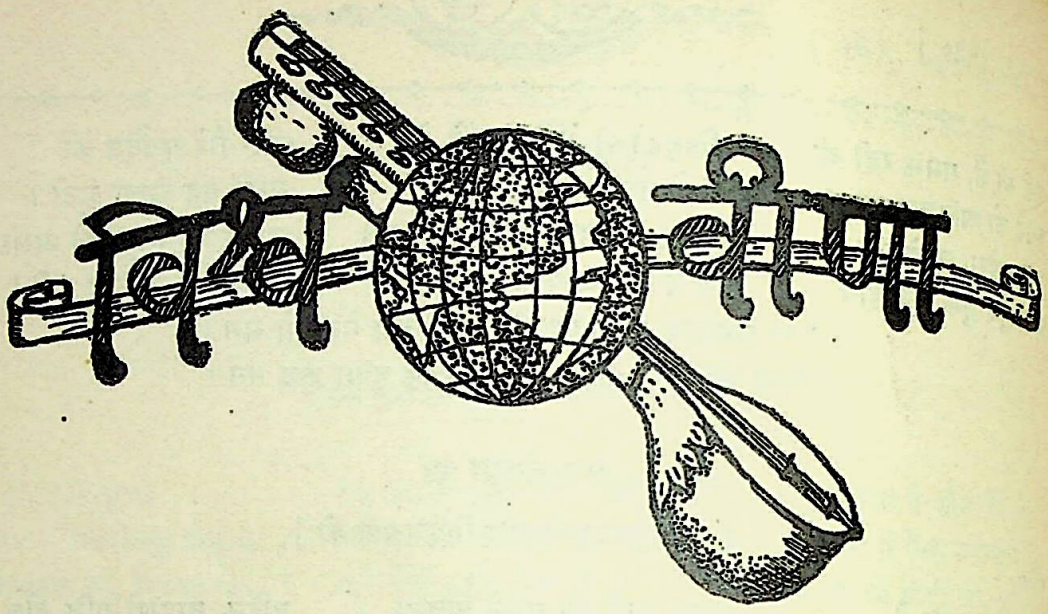

भारत की आकांक्षाएँ

श्री० जे० कृष्णमूर्ति मसीहा भले ही न हों; अज्ञान के दलदल में फँसी हुई मानव जाति का उद्धार करने के लिए ही उनका अवतार भले न हुआ हो; परन्तु इस बात को अस्वीकार नहीं किया जा सकता कि उनके विचार संसार के सर्वश्रेष्ठ महापुरुषों के विचार की कोटि के हैं। उनके विचारों में जो उदारता और जो उत्कट सत्यनिष्ठा पाई जाती है वह अद्भुत है। एक शब्द में कहें तो कह सकते हैं कि कृष्णमूर्ति सत्य के अनन्य उपासक तथा ढोंग और दिखावट के कट्टर शत्रु हैं। उनका स्वार्थ-त्याग और निर्भीकता अपना सानी नहीं रखती। हम लोगों ने सत्य के लिए राज्य का त्याग करने वाले राजर्षियों, सत्य के लिए अपना सर्वस्व स्वाहा करने वाले वीर साधकों और यतियों के अनेक उदाहरण सुने हैं; पर आज तक हमने एक भी ऐसा उदाहरण न सुना जिसमें किसी धर्म के प्रवर्तक अथवा किसी सम्प्रदाय के गुरु ने सत्य की रक्षा के लिए अपनी धर्म-गद्दी का त्याग किया हो। यह अपूर्व त्याग करने का श्रेय केवल कृष्णमूर्ति को ही प्राप्त है। कृष्णमूर्ति का कहना है कि जितने भी मज़हब, सम्प्रदाय, जाति आदि धार्मिक सङ्घ हैं वे सभी धर्म का ढकोसला मात्र हैं। धर्म व्यक्तिगत आचरण की वस्तु है; समाज या सङ्घ के साथ उसका कोई सम्बन्ध नहीं। इसी सिद्धान्त के अनुसार कृष्णमूर्ति ने अपने सम्प्रदाय को, जिसके वह सब से बड़े गुरु थे, तोड़ दिया है और अपनी धर्म-गद्दी का त्याग कर दिया है। निस्सन्देह यह त्याग अपूर्व है। मानव जाति के इतिहास में इसकी समता शायद ही मिल सके।

एक इतनी महान आत्मा की वाणी, चाहे उसके साथ हमारा कितना ही मतभेद क्यों न हो, हमारे लिए अवश्य विचारणीय है। इस समय भारतवासियों के हृदय में स्वाधीनता पाने की जो प्रबल आकांक्षा उत्पन्न हो गई है, उसके सम्बन्ध में कृष्णमूर्ति ने अपने विचार प्रगट किए हैं। नीचे हम उन्हीं विचारों को उद्धृत कर रहे हैं और आशा करते हैं कि 'चाँद' के पाठक इनका ध्यान से मनन करेंगे।

आन्तरिक और वाह्य स्वाधीनता एक दूसरे से अलग नहीं की जा सकती। किसी भी देश के बाहरी स्वार्थों से उस देश का जीवन अधिक महत्व की वस्तु है। कोई भी देश उस समय तक वास्तव में स्वतन्त्र नहीं हो सकता जब तक कि वह जीवन के अटल नियमों का यथावत् पालन नहीं करने लगे। इस दृष्टि से आज संसार का कोई भी देश पूर्ण स्वतन्त्र नहीं है। हर एक देश में स्वाधीनता का कोई न कोई अंश ही पाया जाता है।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

परन्तु आपको जहाँ-जहाँ राजनीतिक स्वाधीनता का कोई अंश मिलेगा, वहाँ आप यह भी देखेंगे कि लोगों को उतने ही अंशों में उन मिथ्या बन्धनों से भी स्वतन्त्रता मिल गई है, जो जीवन के स्वाभाविक और क्रियात्मक प्रवाह को बद्ध अथवा सङ्कुचित रखते हैं। मृत परम्परा ही स्वाधीनता का सब से बड़ा शत्रु है। स्वयं सोचने-विचारने की चेष्टा न करके हर एक बात में दूसरों के आदेशों का पालन करना—वर्त्तमान जीवन को अतीत काल के मृत नियमों की जञ्जीर में जकड़ देना—ही स्वाधीनता के लिए सब से बढ़ कर घातक है। और आज संसार में शायद ही कोई ऐसा देश हो जहाँ पर इस मृत परम्परा का आधिपत्य इतना अधिक हो जितना भारतवर्ष पर है। इस अन्धपरम्परा से छुटकारा पाना ही भारत की मुख्य समस्या है। इसे हल कर दीजिए और फिर आप देखेंगे कि दूसरी तमाम बाधाएँ जो भारत के रास्ते में रुकावट डाल कर उसे पीछे खींच रही हैं, आप ही आप क्षण भर में सवेरे के कुहरे की तरह अदृश्य हो जाएँगी। जीवन के नियमों को धोखा नहीं दिया जा सकता। जिस देश अथवा जाति ने अपने आन्तरिक जीवन में स्वतन्त्रता नहीं प्राप्त की, उसे कभी भी सच्चे अर्थों में बाहरी स्वतन्त्रता पाने की आशा नहीं रखनी चाहिए। और यदि ऐसे देश अथवा जाति को कभी बाहरी स्वाधीनता मिल भी गई तो, उसके फलों को चखने से पता चलेगा कि उसके बाहरी सौन्दर्य के भीतर सिवा मिट्टी और राख के कुछ भी नहीं है। उसमें किसी प्रकार का सार अथवा रस नहीं। वह सर्वथा खोखली है।

यह एक कड़ुवा सबक़ है और शायद कुछ लोग इसे पढ़ना भी पसन्द न करें। किन्तु भारत की सच्ची आशाएँ तो इसी बात पर अवलम्बित हैं कि यह देश, यदि अपनी अभिलाषाओं को पूर्ण करना चाहता है तो, अब इस कठिन पाठ को पढ़ ले। इसे सीखने में महान कष्टों का सामना करना पड़ेगा, किन्तु जिस समय भारत इस अग्नि-परीक्षा से बाहर निकलेगा वह पवित्रता की एक ऊँची श्रेणी पर विद्यमान होगा। भारत की आत्मा एक महान आत्मा है, किन्तु वह ज़ञ्जीरों से बँधी हुई है। उसकी ज़ञ्जीरों को काट दीजिए, फिर देखिएगा कि वह संसार की जातियों के सामने एक भीम-रूप में उपस्थित हो जाती है। इसमें कोई सन्देह नहीं कि पुनर्जीवित भारत सारे संसार को पुनर्जीवित करने की केवल अभिलाषा ही नहीं रक्खेगा, बल्कि इसके लिए महान प्रयास भी करेगा। हमारे अन्दर वह सभी महान आत्मिक शक्तियाँ मौजूद हैं, जो हमें अपने पूर्वजों से मिली हैं। लेकिन केवल एक बात के अभाव में हमारी ये सारी शक्तियाँ निरर्थक और निर्जीव हो गई हैं। वह बात है, दूसरों के प्रति सद्भाव और स्नेह। किसी भी परम्परा में से जब यह बात निकल जाती है तो वह दूषित और हानिकारक हो जाती है।

हमारी प्राचीन अलौकिक परम्परा में से कौन सी

श्रीमती मीरा

आप हज़ारीबाग (बिहार) की एक प्रभावशाली राष्ट्रीय कार्यकर्त्री हैं। आपको सत्याग्रह-आन्दोलन में नौ मास की सज़ा हुई है।

वस्तुएँ अब हमारे पास बची हैं? भीषण क्रूरता और स्वार्थपरता, घातक बाल-विवाह तथा वे निर्दय नियम, जिन्हें हमने अपनी विधवाओं पर ज़बर्दस्ती लाद रक्खे हैं, समस्त स्त्री जाति के प्रति हमारा निन्दनीय बर्ताव, और अस्पृश्यता की प्रथा—इन सबका कारण कुछ ऐसी पुरानी रूढ़ियाँ ही हैं, जिनके बोझ से हमारे हृदय की साधारण सुन्दर अनुभूतियाँ भी, जो मनुष्य जीवन को मधुर और शान्तिमय बना सकती हैं, कुचल दी गई हैं।

जाति-भेद ही को लीजिए। यह सङ्गठित स्वार्थ-

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

परता के सिवा और क्या है ? यह मनुष्य की उस कुभावना का व्यापक रूप है, जिसके कारण वह अपने को दूसरों से भिन्न समझता है, अथवा जिसके कारण वह समझता है कि जो गुण उसके अन्दर मौजूद हैं, वे और किसी के अन्दर हैं ही नहीं। ये और ऐसी ही अनेक बातें आज हमारी पैतृक सम्पत्ति हैं। और इसी पैतृक सम्पत्ति का यह भार है जिसके नीचे आज हम दबे हुए कराह रहे हैं। परन्तु एक बात ध्यान देने योग्य है, और वह यह

श्रीमती रत्नबाई

आप गुन्टूर (मद्रास) के भारतीय महिला-संघ की सेक्रेटरी चुनी गई हैं।

है कि हमारी सम्पूर्ण पैतृक सम्पत्ति इतनी ही नहीं है। यह तो हमारी पैतृक सम्पत्ति का केवल मृत और अनावश्यक अंश है—कूड़ा-करकट है। इसके नीचे भारत की सच्ची पैतृक सम्पत्ति गड़ी पड़ी है। और इसे ही हम अपनी प्राचीन पैतृक सम्पत्ति का जीवित और सार अंश समझते हैं। वह सम्पत्ति कौन सी है ? वह है मुक्त होने की आन्तरिक अभिलाषा, जो भारतीय प्रकृति का मूल है। यदि भारत अपनी आत्मा पर से कुसंस्कारों का मैल दूर हटा दे तो आज भी हम उसके भीतर आत्म-त्याग का प्रबल भाव और यथार्थता पर अटल विश्वास रखने की इच्छा पाएँगे।

आज हमें भारत की इसी अन्तरात्मा का पुनरुज्जीवन करना है। यही वह आत्मा है, जो पुनर्जीवित होने के पश्चात, यदि इसे आत्मविकाश की स्वाधीनता दी जाय, तो संसार में वह आश्चर्यजनक जाग्रति उत्पन्न कर सकती है, जिसका हम ऊपर ज़िक्र कर आए हैं। ऐसी महान आत्मा के लिए कुछ भी असम्भव नहीं है। एक बार यह बन्धन से निकली तो समस्त संसार को स्वाधीनता के पथ पर चला देगी। यह केवल राजनीतिक स्वाधीनता ही नहीं प्रदान करेगी—राजनीतिक स्वाधीनता तो इसका एक छोटा और स्वाभाविक परिणाम होगा—वरन यह इससे भी बड़ा कार्य करेगी। यह अपने सत्य-स्थापन के एक ही महान प्रयत्न में समस्त संसार की आध्यात्मिक और जीवनी-शक्तियों का केन्द्र तथा आगार बन जायगी। मैं समझता हूँ कि यही पद इसके भाग्य में निश्चित है।

इस जाग्रति के लिए किस बात की आवश्यकता है? पहली आवश्यकता है पूर्ण रूप से सत्य पालन की और अपने अवगुणों को निस्सङ्कोच स्वीकार करने की, तथा दूसरी आवश्यकता है ऐसे असन्तोष की, जिसका सूत्रपात स्पष्ट विचारों से हुआ हो। इसके पश्चात हमें अविचल भाव से अपने घर की मरम्मत शुरू कर देनी चाहिए। किसी भी विघ्न का ध्यान न करके, आवश्यकता पड़ने पर, हमें पुरानी रूढ़ियों को छोड़ कर उनके स्थान पर ऐसी प्रथाएँ चलानी चाहिए जो हमारी आजकल की परिस्थिति में सुविधाजनक हों। पुरानी लकीर के फ़क़ीर बन कर चलने का समय अब नहीं रहा। हमें अपने दैनिक जीवन की उन कुरीतियों को देखकर लज्जित होना चाहिए, जिन्हें हम बाहर वालों की आँखों के सामने पड़ने देने में डरते हैं। हमें अब यह समझ लेना चाहिए कि अपनी कुरीतियों को शब्दों की आड़ में छिपाने का हमारा प्रयत्न सर्वथा निरर्थक है, ख़ासकर ऐसे समय में जबकि संसार की जनता उन्हें उनके नग्न स्वरूप में देख कर उन पर शान्तिपूर्वक अपना मत निर्धारित कर रही है। संक्षेप में, हमें अपने देश को पुनः सत्य-प्रेम की ओर अग्रसर करना पड़ेगा।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

जब हम ऐसा करना आरम्भ कर देंगे और ऐसे ही करते रहने का निश्चय कर लेंगे, तभी भारत को स्वतन्त्र कर सकेंगे।

इन सब कार्यों में हम अन्य जातियों से भी बहुत कुछ सीख सकते हैं। हमें अपने बड़प्पन का इतना अहङ्कार न होना चाहिए कि हम दूसरों से कुछ सीखने में सङ्कोच करें। भौतिक जीवन में स्वच्छता और शिष्टता लाने में, परिश्रम को बचाने वाले उपायों में, सामाजिक स्वतन्त्रता में, रचनात्मक सङ्गठन में, सम्मानपूर्ण सहयोग और निस्स्वार्थ कर्तव्य-पालन में हमें पश्चिमी जगत बहुत से पाठ पढ़ा सकता है। सम्पूर्णता प्राप्त करने की अभिलाषा हमारे अन्दर जितनी ही बलवती होगी हम उतना ही औरों से सीखने के लिए उद्यत रहेंगे और हम स्वयं तब औरों को भी सिखा सकेंगे। बहुत से पाठ ऐसे हैं जिन्हें केवल आध्यात्मिक पुनरुज्जीवन-प्राप्त भारत ही सिखा सकता है। ऐसे विषय अभी पश्चिम के विचार-जगत में नहीं आ सके हैं। हम यह बात संसार की किसी भी और जाति की अपेक्षा अधिक अच्छी तरह दिखला सकते हैं, कि हमारा भौतिक जीवन किस प्रकार एक इससे कहीं बड़े अदृश्य आत्मिक जीवन पर अवलम्बित है। किसी भी और जाति की अपेक्षा हम यह अधिक अच्छी तरह सिखा सकते हैं कि जीवन का आनन्द धन सम्पत्ति के बटोरने में नहीं, वरन अन्तःस्थित आत्मा और बाह्य जीवन के सामञ्जस्य में है।

परन्तु शिक्षा देने से पहले हमें शिक्षक बनने का अधिकार प्राप्त करना चाहिए। और यह हम केवल तभी कर सकते हैं जब अपने समस्त राष्ट्रीय कार्यों तथा विचारों की पुष्टि के लिए अपने प्राचीनतम शास्त्रों को न दिखला कर केवल सहज बुद्धि और शुद्ध अनुभूति का ही आश्रय लें। सच्ची स्वतन्त्रता प्राप्त करने के मार्ग में भारतवर्ष के लिए, मैं समझता हूँ, यही पहला क़दम होना चाहिए।

* * *

भारत के प्रति अङ्गरेज़ों की नीति

भारत के प्रति अङ्गरेज़ों की नीति को बताने में अब तक सर विलियम जॉयन्सन हिक्स (अब लॉर्ड ब्रेन्टफ़ोर्ड) का वह भाषण ही सब से प्रसिद्ध रहा है, जिसमें उन्होंने स्पष्ट शब्दों में अङ्गरेज़ जाति की स्वार्थपरता को स्वीकार किया था। परन्तु अब इङ्गलैण्ड के प्रसिद्ध दक्षियानूस दैनिक पत्र 'डेली मेल' के सम्पादक लॉर्ड रॉदरमियर ने उस स्वार्थपरता को और भी स्पष्ट शब्दों में स्वीकार किया है। यद्यपि हिक्स साहब की बातों का, उनके ब्रिटिश पार्लामेण्ट के गृह-सचिव रहने के कारण, अधिक महत्त्व है, तथापि

श्रीमती राजमानिक अम्मल

ये मद्रास की अगमवादिया जाति की पहिली हिन्दू कन्या हैं जो एस० एस० एल० सी० पास करके डॉक्टरी का अध्ययन कर रही हैं।

लॉर्ड रॉदरमियर की उक्ति का महत्त्व भी कुछ कम नहीं है। (क्योंकि) भारत-शासन के सम्बन्ध में ब्रिटिश जनता की सम्मति को लॉर्ड रॉदरमियर उतनी ही निर्लज्जता और सफ़ाई के साथ प्रगट करते हैं, जितनी निर्लज्जता और सफ़ाई के साथ हिक्स साहब ने इङ्गलैण्ड के नीतिज्ञों की सम्मति

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

प्रगट की थी। हम यहाँ पाठकों के मनोरञ्जनार्थ, इन दोनों साहबान की बातें, ज्यों की त्यों उन्हीं की भाषा में, उद्धृत कर रहे हैं।

सर विलियम जॉयन्सन हिक्स

We did not conquer India for the benefit of the Indians. I know it is said at missionary meetings that we conquered

श्रीमती पी० जानकी अम्मल
आप ट्रावनकोर की निवासी हैं और हाल ही में सैलियर के महिला-सम्मेलन की सभानेत्री नियुक्त की गई थीं।

India to raise the level of the Indians. That is cant. We conquered India as the outlet for the goods of Great Britain. We conquered India by the sword and by the sword we should hold it. ('Shame') Call shame if you like. I am stating facts. I am interested in missionary work in India, and have done much work of that kind, but I am not such a hypocrite as to say we hold India for the Indians. We hold it as the finest outlet for British goods in general, and for Lancashire cotton goods in particular.

अर्थ—हिन्दुस्तान को हमने इस उद्देश्य से नहीं जीता था कि इससे हम भारतीयों की भलाई करेंगे। मैं जानता हूँ कि मिशनरी लोगों की मीटिङ्गों में यह बात कही जाती है कि हमने भारतीयों की उन्नति करने के लिए भारत को जीता था। यह सब गपोड़ेबाज़ी है। भारत को जीतने में हमारा एक ही उद्देश्य था, वह यह कि ब्रिटेन के माल की खपत के लिए हमें बाज़ार मिल जावे। हम लोगों ने भारत को तलवार के बल से जीता था और तलवार के बल से ही हम उसे अपने हाथ में रक्खेंगे। ('शर्म-शर्म' की आवाज़)। अगर आप इस पर 'शर्म-शर्म' चिल्लावें तो भले ही चिल्लावें, मैं तो जो सच्ची बात है वही कह रहा हूँ। वैसे मुझे ख़ुद भी उस काम में, जो मिशनरी लोग हिन्दुस्तान में कर रहे हैं, दिलचस्पी है और मैंने इस तरह का बहुत कुछ काम किया भी है, लेकिन मैं ऐसा कपटी आदमी नहीं हूँ, जो यह कहता फिरूँ कि हम लोग हिन्दुस्तान पर हिन्दुस्तानियों के हित के लिए ही अधिकार बनाए हुए हैं। असली बात तो यह है कि हिन्दुस्तान पर क़ाबू रखने में हमारा उद्देश्य यही है कि वहाँ ब्रिटिश माल की ज़्यादा से ज़्यादा खपत हो—ख़ास तौर से लङ्काशायर के बने कपड़े की।

लॉर्ड रॉदरमियर

"Among all the great nations of the world the British are the most ignorant of work-a-day, bread-and-butter economics." Foolish people in this country talk about the evacuation of India as if it would make no more difference to the prosperity of our Empire than the abandonment of British Guiana.

They do not realise that the step they so lightly contemplate would be "the

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

end of Britain as a Great Power." Their hazy minds are incapable of understanding that the loss of India would bring immediate economic ruin to this country; that instead of close on two million unemployed we should have four or five million, for whom no relief could be provided, and who would soon be faced with sheer starvation.

OUR BEST MARKET

The sloppy-minded sentimentalists whose weak good nature favours a feeble surrender to Indian agitation have no conception of the inevitable economic results of the policy they preach. The shrinkage of British prosperity that has already begun is largely due to the fact that competing countries like Japan are driving us out of the Indian market, in which we were once supreme.

India is still far and away the largest consumer of British exports, and our imports from there are second only to those from the United States.

Without the profits which Great Britain draws from her commerce with India the most ruthless Chancellor of the Exchequer would be unable to raise enough revenue to provide old-age pensions, unemployment relief, education grants, and all the other State allowances which are regarded by their beneficiaries in this country as part of the automatic routine of existence.

These advantages are unparalleled in any other nation, and the only reason we are able to afford them is that we had hitherto found the greatest over-seas market for our manufactured products among the 320,000,000 people of India

At least four shillings in the pound of the income of every man and woman in Great Britain is drawn, directly or indirectly, from our connection with India. British interests in that great Dependency are so enormous and diverse that they underpin our national prosperity at every point. From the presidents of great commercial corporations down to the charwomen who scrub out their offices, every individual in this country would be a great deal poorer if we allowed the long-standing trade-ties between Britain and India to be broken by surrender-

मिस डोरोथी कोल्सवेल्ड

आपने विलायत की बुक-कीपिङ्ग और एकाउण्टैन्सी की परीक्षा में चार हज़ार प्रतियोगियों के बीच सर्वश्रेष्ठ पुरस्कार प्राप्त किया है।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

ing our authority there to a handful of mischievous native agitators.

TELL THE NATION !

* * *

We cannot allow the safety of the most vital of all the assets of the British Empire to be jeopardised a single moment longer. For to us India is not far from being our all in all.

श्रीमती पी० विशालाक्षी अम्मा

आप त्रिचूर (ट्रावनकोर) में ऑनरेरी मैजिस्ट्रेट नियत की गई हैं।

अर्थ—"संसार के बड़े-बड़े राष्ट्रों में ब्रिटेन अपने नित्य-प्रति की साधारण आवश्यकताओं—रोटी और मक्खन—की आर्थिक समस्याएँ समझने में सब से अधिक अनभिज्ञ है।" इस देश के मूर्ख लोग भारत के शासन से हाथ खींच लेने की सलाह देते हैं; उनकी राय से जिस प्रकार ब्रिटिश गायना का आधिपत्य छोड़ देने से साम्राज्य के वैभव को कोई क्षति नहीं पहुँची, उसी प्रकार भारत के निकल जाने से भी उसमें कोई विशेष अन्तर न पड़ेगा।

परन्तु वे यह नहीं समझते कि भारत के हाथ से निकलते ही "ब्रिटेन की महाशक्ति की इतिश्री" हो जायगी। उनके दिमाग़ में यह बात नहीं आती कि भारत से सम्बन्ध-विच्छेद होते ही ब्रिटेन के सामने एक विकट आर्थिक समस्या उपस्थित हो जायगी ; और बीस लाख के बदले चालीस या पचास लाख मज़दूर बेकारी के कारण भूखों मर जायँगे।

सोने की चिड़िया

ऐसी दुर्बल और भ्रान्त मनोवृत्ति के लोग, जो भारतीय क्रान्ति के सम्मुख सिर झुकाने की सलाह देते हैं, कभी अपनी नीति के भयङ्कर आर्थिक दुष्परिणामों का विचार नहीं करते। ब्रिटिश वैभव का ह्रास प्रारम्भ हो गया है, और उसका एक प्रधान कारण यह है कि भारत के जिस व्यापारिक क्षेत्र में पहले हमारी तूती बोलती थी, वहीं से जापान जैसे देश अब हमें खदेड़ने का प्रयत्न कर रहे हैं।

ब्रिटेन से, और देशों की अपेक्षा, अभी भी भारत में सब से अधिक माल भेजा जाता है; और हमारे यहाँ बाहर से माल भेजने वाले देशों में भी अमेरिका के बाद भारतवर्ष का ही सब से ऊँचा स्थान है।

ग्रेट ब्रिटेन को भारत के इस व्यापारिक सम्बन्ध से जो लाभ होता है, उसका प्रवाह यदि रुक जाय, तो क्रूर से क्रूर चान्सलर-ऑफ़-एक्सचेकर भी वृद्धों की पेन्शन, बेकारों की परवरिश, शिक्षा संस्थाओं की सहायता और इसी प्रकार के अन्य सरकारी ख़र्चों के लिए धन जुटाने में असमर्थ हो जाय। और ये ख़र्चे ऐसे हैं कि इनके अभाव में हमारा जीवन ही अस्त-व्यस्त हो जायगा।

इस प्रकार की सहूलियतें किसी भी दूसरे राष्ट्र को नसीब नहीं हैं, और इसका प्रधान कारण यही है कि हमें समुद्र पार भारत में अपने माल की बिक्री के लिए एक बहुत ही बड़ा बाज़ार मिल गया है और हमें मिल गए हैं, हमारे माल को ख़रीदने के लिए, ३२ करोड़ भारतवासी।

ग्रेट ब्रिटेन के हर एक स्त्री और पुरुष की आमदनी में पौण्ड पीछे कम से कम चार शिलिङ्ग, प्रत्यक्ष अथवा अप्रत्यक्ष रूप से, भारत से आता है। इस विशालकाय ग़ुलाम देश में ब्रिटेन का इतना अधिक और इतने विविध

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

प्रकार का स्वार्थ है कि हमारे वर्तमान ऐश्वर्य और वैभव के अङ्ग-अङ्ग में उसका कुछ न कुछ हाथ अवश्य है। यदि भारत के मुट्ठी भर बदमाश क्रान्तिकारियों के भय से हम वहाँ के शासन से हाथ खींच लें और भारत के साथ ब्रिटेन के व्यापारिक सम्बन्ध का अन्त हो जाने दें तो इसमें सन्देह नहीं कि इस देश में—बड़े-बड़े व्यापारिक संघों के अध्यक्षों से लेकर आँफ़िस साफ़ करने वाली मजदूर स्त्रियों तक—प्रत्येक व्यक्ति की आमदनी का एक बहुत बड़ा हिस्सा हमारे हाथ से निकल जायगा।

ब्रिटेन को चेतावनी

× × ×

ब्रिटिश जनता को यह अच्छी तरह समझ लेना चाहिए कि हम अपने साम्राज्य के सब से बड़े रत्न को एक क्षण के लिए भी खोने को तैयार नहीं हैं। हमें यह अच्छी तरह समझ लेना चाहिए कि भारतवर्ष हमारा सर्वस्व है—इससे कम कुछ भी नहीं।

* * *

संग्राम में साहित्य

श्री० प्रेमचन्द जी उपरोक्त शीर्षक से "हंस" के विगत जुलाई के अङ्क में लिखते हैं :—

घोर सङ्कट में पड़ने पर ही आदमी की ऊँची से ऊँची, कठोर से कठोर और पवित्र से पवित्र मनोवृत्तियों का विकास होता है। साधारण दशा में मनुष्य का जीवन भी साधारण होता है। वह भोजन करता है, सोता है, हँसता है, विनोद का आनन्द उठाता है। असाधारण दशा में उसका जीवन भी असाधारण हो जाता है, और परिस्थितियों पर विजय पाने या विरोधी कारणों से आत्मरक्षा करने के लिए उसे अपने छिपे हुए मनोऽस्त्रों को बाहर निकालना पड़ता है। आत्म-त्याग और बलिदान के, धैर्य और साहस के, उदारता और विशालता के जौहर उसी वक्त खुलते हैं, जब हम बाधाओं से घिर जाते हैं। जब देश में कोई विप्लव या संग्राम होता है, तो जहाँ वह चारों तरफ़ हाहाकार मचा देता है, वहाँ इसमें देव-दुर्लभ गुणों का संस्कार भी कर देता है। और साहित्य क्या है? हमारी अन्तर्तम मनोवृत्तियों के विकास का इतिहास। इसलिए यह कहना अनुचित नहीं है कि साहित्य का विकास संग्राम ही में होता है। संसार-साहित्य के उज्ज्वल से उज्ज्वल रत्नों को ले लो, उनकी सृष्टि या तो किसी संग्राम काल में हुई है, या किसी संग्राम से सम्बन्ध रखती है।

रूस और जापान के युद्ध में आत्म-बलिदान के जैसे उदाहरण मिलते हैं, वह और कहाँ मिलेंगे? यूरोपियन

मिस इक़बालुन्निसा बेगम

आप बङ्गलोर (मैसूर) के उर्दू स्कूलों की लेडी इन्स्पेक्टर हैं। हाल ही में आपने बी० ए० की परीक्षा पास की है।

युद्ध में भी साधारण मनुष्यों ने ऐसे-ऐसे विलक्षण काम कर दिखाए, जिन पर हम आज दाँतों उँगली दबाते हैं। हमारा स्वाधीनता-संग्राम भी ऐसे उदाहरणों से ख़ाली नहीं है। यद्यपि हमारे समाचार-पत्रों की ज़बानें बन्द हैं और देश में जो कुछ हो रहा है, हमें उसकी ख़बर नहीं होने पाती, फिर भी कभी-कभी त्याग और सेवा, शौर्य और विनय के ऐसे-ऐसे उदाहरण मिल जाते हैं, जिन पर

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

हम चकित हो जाते हैं। ऐसी ही दो-एक घटनाएँ हम आज अपने पाठकों को सुनाते हैं।

एक नगर में कुछ रमणियाँ कपड़े की दूकानों पर पहरा लगाए खड़ी थीं। विदेशी कपड़ों के प्रेमी दूकानों पर आते थे? पर उन रमणियों को देख कर हट जाते थे। शाम का वक्त था। कुछ अँधेरा हो चला था। उसी वक्त एक आदमी एक दूकान के सामने आकर कपड़े ख़रीदने

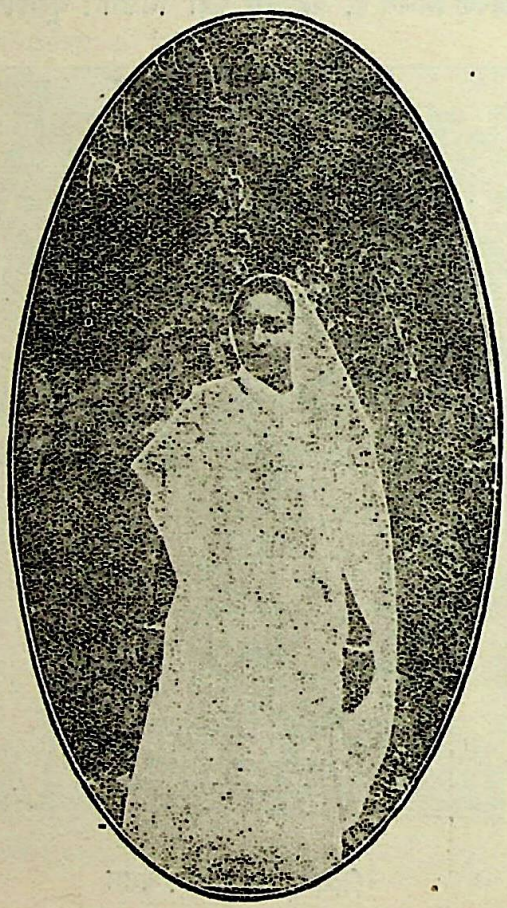

श्रीमती मनी बहिन पटेल

आप सरदार वल्लभ भाई पटेल की सुयोग्य पुत्री और गुजरात के सत्याग्रह-संग्राम की एक प्रमुख कार्यकर्त्री हैं।

के लिए आग्रह करने लगा। एक रमणी ने जाकर उससे कहा—"महाशय, मैं आपसे प्रार्थना करती हूँ कि आप विलायती कपड़ा न ख़रीदें।"

ग्राहक ने उस रमणी को रसिक नेत्रों से देख कर कहा—"अगर तुम मेरी एक बात स्वीकार कर लो, तो मैं क़सम खाता हूँ, कभी विलायती कपड़ा न ख़रीदूँगा।"

रमणी ने कुछ सशङ्क होकर उसकी ओर देखा और बोली—"क्या आज्ञा है?"

ग्राहक लम्पट था। मुसकिरा कर बोला—"बस, मुझे एक बोसा दे दो।"

रमणी का मुख अरुण वर्ण हो गया, लज्जा से नहीं, क्रोध से। दूसरी दूकानों पर और कितने ही वालण्टियर खड़े थे। अगर वह ज़रा-सा इशारा कर देती, तो उस लम्पट की धज्जियाँ उड़ जातीं; पर रमणी विनय की अपार शक्ति से परिचित थी। उसने सजल नेत्रों से कहा—"अगर आपकी यही इच्छा है, तो ले लीजिए, मगर विदेशी कपड़ा न ख़रीदिए।" ग्राहक परास्त हो गया। वह उसी वक्त उस रमणी के चरणों पर गिर पड़ा और प्रण किया कि कभी विलायती वस्त्र न लूँगा। क्षमा-प्रार्थना की और लज्जित तथा संस्कृत होकर चला गया।

एक दूसरे नगर की एक और घटना सुनिए। यह भी कपड़े की दूकान और पिकेटिङ्ग ही की घटना है। एक दुराग्रही मुसलमान की दूकान पर ज़ोरों को पिकेटिङ्ग हो रही थी। सहसा एक मुसलमान सज्जन अपने कुमार पुत्र के साथ कपड़ा ख़रीदने आए। सत्याग्रहियों ने हाथ जोड़े, पैरों पड़े, दूकान के सामने लेट गए; पर ख़रीदार पर कोई असर न हुआ। वह लेटे हुए स्वयंसेवकों को रौंदता हुआ दूकान में चला गया। जब कपड़े लेकर निकला तो फिर वालण्टियरों को रास्ते में लेटे पाया। उसने क्रोध में आकर एक स्वयंसेवक के एक ठोकर लगाई। स्वयंसेवक के सिर से ख़ून निकल आया। फिर भी वह अपनी जगह से न हिला। कुमार पुत्र दूकान के ज़ीने पर खड़ा यह तमाशा देख रहा था। उसका बाल-हृदय यह अमानुषीय व्यवहार सहन न कर सका। उसने पिता से कहा—"बाबा, आप कपड़े लौटा दीजिए।"

बाप ने कहा—"लौटा दूँ! मैं इन सबों की छाती पर से निकल जाऊँगा।"

"नहीं, आप लौटा दीजिए!"

"तुम्हें क्या हो गया है? भला लिए हुए कपड़े लौटा दूँ!"

"जी हाँ!"

"यह कभी नहीं हो सकता।"

"तो फिर मेरी छाती पर पैर रख कर जाइए।"

यह कहता हुआ वह बालक अपने पिता के सामने

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

लेट गया। पिता ने तुरन्त बालक को उठा कर छाती से लगा लिया और कपड़े लौटा कर घर चला गया।

तीसरी घटना कानपुर नगर की है। एक महाशय अपने पुत्र को स्वयंसेवक न बनने देते थे। पुत्र के मन में

श्रीमती अशोकलता दास (कलकत्ता)

आपको सत्याग्रह आन्दोलन में चार मास की सज़ा मिली है।

देश-सेवा का असीम उत्साह था; पर वह माता-पिता की अवज्ञा न कर सकता था। एक ओर देश-प्रेम था, दूसरी ओर माता-पिता की भक्ति। यह अन्तर्द्वन्द्व उसके लिए एक दिन असह्य हो उठा। उसने घर वालों से कुछ न कहा। जाकर रेल की पटरी पर लेट गया। ज़रा देर में एक गाड़ी आई और उसकी हड्डियों तक को चूर-चूर कर गई।

चौथी घटना एक दूसरे नगर की है। मन्दिरों पर स्वयंसेवकों का पहरा था। स्वयंसेवक जिसे विलायती कपड़े पहने देखते थे उसे मन्दिर में न जाने देते थे। उसके सामने लेट जाते थे। कहीं-कहीं स्त्रियाँ भी पहरा दे रही थीं। सहसा एक स्त्री खद्दर की साड़ी पहने आकर मन्दिर के द्वार पर खड़ी हो गई। वह कॉङ्ग्रेस की स्वयंसेविका न थी, न उसके अञ्चल में सत्याग्रह का बिल्ला ही था। वह मन्दिर के द्वार के समीप खड़ी तमाशा देख रही थी। स्वयंसेविकाएँ विदेशी वस्त्रधारियों से अनुनय-विनय करती थीं, सत्याग्रह करती थीं; पर वह स्त्री सब से अलग चुपचाप खड़ी थी। उसे आए कोई घण्टा भर हुआ होगा कि सड़क पर एक फ़िटिन आकर खड़ी हुई और उसमें से एक महाशय सुन्दर महीन रेशमी पाढ़ की धोती पहने निकले। यह थे रायबहादुर हीरामल, शहर के सब से बड़े रईस, ऑनरेरी मैजिस्ट्रेट, सरकार के परम राजभक्त और शहर की अमन-सभा के प्रधान। नगर में उनसे बढ़ कर कॉङ्ग्रेस का विरोधी न था। पुजारी ने लपक कर उनका स्वागत किया और उन्हें गाड़ी से उतारा। स्वयंसेविकाओं की हिम्मत न पड़ी कि उन्हें रोक

श्रीमती शान्तिदास, एम० ए० (कलकत्ता)

आप श्रीमती अशोकलता दास की पुत्री हैं। आपको भी चार मास का दण्ड मिला है।

लें। वह उनके बीच से होते हुए द्वार पर आए और अन्दर जाना ही चाहते थे कि वही खद्दरधारी रमणी आकर उनके सामने खड़ी हो गई और गम्भीर स्वर में बोली—"आप यह कपड़े पहन कर अन्दर नहीं जा सकते।"

हीरामल जी ने देखा, तो सामने उनकी पत्नी खड़ी

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

हैं। कलेजे में बरछी सी चुभ गई। बोले—"तुम यहाँ क्यों आईं?"

श्रीमती लावण्यप्रभा मित्र (कलकत्ता)

सत्याग्रह-आन्दोलन में आपको चार मास का दण्ड हुआ है।

रमणी ने दृढ़ता से उत्तर दिया—"इसका जवाब फिर दूँगी। आप यह कपड़े पहने हुए मन्दिर में नहीं जा सकते।"

"तुम मुझे नहीं रोक सकतीं।"

"तो मेरी छाती पर पाँव रख कर जाइएगा।" यह कहती हुई वह मन्दिर के द्वार पर बैठ गई।

"तुम मुझे बदनाम करना चाहती हो?"

"नहीं, मैं आपके मुँह का कलङ्क मिटाना चाहती हूँ।"

"मैं कहता हूँ, हट जाओ। पति का विरोध करना स्त्रियों का धर्म नहीं है। तुम क्या अनर्थ कर रही हो, यह तुम नहीं समझ सकतीं।"

"मैं यहाँ आपकी पत्नी नहीं हूँ, देश की सेविका हूँ। यहाँ मेरा कर्तव्य यही है, जो मैं कर रही हूँ। घर में मेरा धर्म आपकी आज्ञाओं को मानना था। यहाँ मेरा धर्म देश की आज्ञा को मानना है।"

हीरामल जी ने धमकी भी दी, मिन्नतें भी कीं, पर रमणी द्वार से न हटी। आख़िर पति को लज्जित होकर लौटना पड़ा। उसी दिन उनका स्वदेशी संस्कार हुआ।

पाँचवीं घटना उन गढ़वाली वीरों की है, जिन्होंने पेशावर के सत्याग्रहियों पर गोली चलाने से इनकार किया। शायद हमारी सरकार को पहली बार राष्ट्रीय आन्दोलन की महत्ता का बोध हुआ। वह गोरखे, जिन्हें हम लोग पशु समझते थे, जिनकी राज-भक्ति पर सरकार को अटल विश्वास था, जिनमें राष्ट्रीय भावों की जाग्रति की कोई कल्पना भी न कर सकता था, उन्हीं गोरखे योद्धाओं ने निःशस्त्र सत्याग्रहियों पर गोली चलाने से

प्रोफ़ेसर कृष्णनारायण

आप बाँसुरी बजाने में अद्वितीय हैं।

इनकार कर दिया। उन्हें ख़ूब मालूम था कि इसका नतीजा कोर्टमार्शल होगा, हमें कालेपानी भेजा जायगा, फाँसियाँ दी जायँगी, शायद गोली मार दी जाय, पर यह

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

जानते हुए भी उन्होंने गोली चलाने से इनकार किया! कितना आसान था गोली चला देना। राइफ़ल के घोड़े को दबाने की देर थी; पर धर्म ने उनकी उँगलियों को

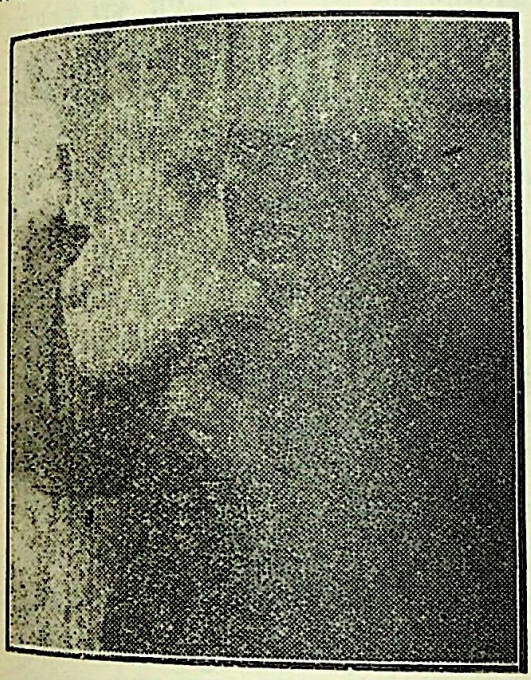

श्री० सकलातवाला

आप इङ्गलैण्ड में रह कर सदैव भारत के हित की चेष्टा करते रहते हैं।

बाँध दिया था। धर्म की वेदी पर इतने बड़े बलिदान का उदाहरण संसार के इतिहास में बहुत कम मिलेगा।

* * *

एक महिला का आदर्श स्वदेश-प्रेम

विगत श्रावण मास की "त्यागभूमि" में अहमदाबाद के मज़दूर-आन्दोलन की उत्पत्ति और उसके विकास का वर्णन करते हुए एक लेख प्रकाशित हुआ है, जिसका कुछ अंश इस प्रकार है :—

अहमदाबाद के मज़दूर-आन्दोलन की उत्पत्ति की कथा बड़ी विचित्र है। यह आन्दोलन मिल-मालिकों के अत्याचारों से सन्त्रस्त मज़दूरों ने अपने बल से या किसी साम्यवादी नेता की सहायता से आरम्भ नहीं किया। न कोई पुरुष इस कार्य को बढ़ाने के लिए आगे बढ़ा। इसकी प्रारम्भिक उन्नति का श्रेय है वहाँ के एक बड़े भारी पूँजीपति श्री० अम्बालाल साराभाई की, जो उस समय वहाँ के मिल-मालिकों के सङ्घ के अध्यक्ष थे, बहन श्रीमती अनसूया बहन को।

वर्तमान मज़दूर-सङ्घ बनने से बहुत समय पूर्व, सन् १९१४ में, श्रीमती अनसूया बहन ने ग़रीब लड़कों के लिए एक स्कूल खोला था। इस स्कूल के कारण उनका ग़रीबों और मज़दूरों के साथ अधिक सम्बन्ध होता गया। वह बड़े प्रेम और सहानुभूति से मज़दूरों की तकलीफ़ों को सुनतीं और यथासाध्य उन्हें दूर करने का प्रयत्न करतीं।

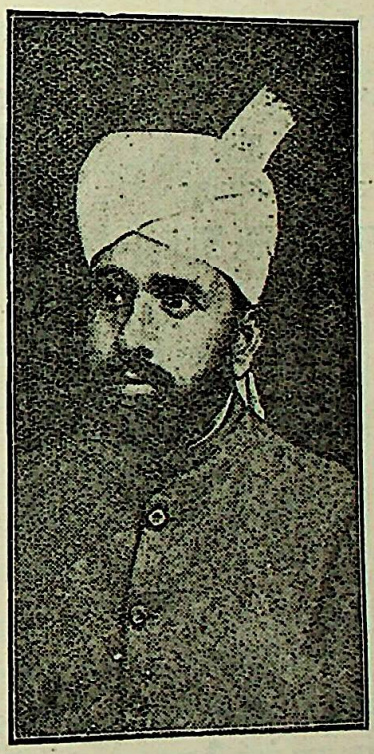

मलिक लाल ख़ाँ

पञ्जाब की प्रान्तीय 'वार-कौन्सिल' के डिक्टेटर, जो जेल में हैं।

मज़दूर अब तक निराश्रय थे, अब उन्हें एक आश्रय मिल गया। कुछ समय बाद अहमदाबाद के ताने के मज़दूरों ने अपना वेतन बढ़ाने की माँग पेश कर हड़ताल कर दी और श्रीमती अनसूया बहन से इस सम्बन्ध में

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

सहायता और नेतृत्व की याचना की। इस समय भी मिल-मालिक सङ्घ के अध्यक्ष उनके भाई ही थे। एक तरफ़ अपना सहोदर भाई था और दूसरी तरफ़ थे ग़रीब मज़दूर, जिनसे उनका कोई सम्बन्ध न था। परन्तु धन्य हैं अनसूया बहन! उन्होंने अपने भाई का कुछ भी ख़्याल न कर उनके विरुद्ध ग़रीब मज़दूरों को ही सहायता देना स्वीकार किया और वह उस हड़ताल का नेतृत्व करने लगीं। इधर श्री० अम्बालाल साराभाई ने बम्बई से मज़दूरों को बुलवा लिया, जिससे मिलें बन्द न हों। परन्तु उनकी चतुर बहन ने बम्बई के मज़दूरों को अपने पास बुला कर समझाया और अपने पास से ख़र्च देकर उनको वापस बम्बई भेज दिया! इस तरह इस हड़ताल में मज़दूरों की विजय हुई और मिल-मालिकों को लाचार होकर उनका वेतन बढ़ाना पड़ा।

नरता एवं नारिता

चौपदे

[पं० अयोध्यासिंह उपाध्याय 'हरिऔध']

देख चञ्चलता चपला की,
गरजते मेघों को पाया।
बिखर जाती है घनमाला,
वायु का झोंका जब आया॥

देख करके रवि को तपता,
द्रुमों में छिपती है छाया।
चन्द्रमा के पीछे-पीछे
चाँदनी को चलती पाया॥

गोद में गिरिगण के बैठी
घाटियाँ शोभा पाती हैं।
दौड़ती जा करके नदियाँ
समुद्रों में मिल जाती हैं॥

अङ्क में उपवन के बिरची,
क्यारियाँ कान्त दिखाती हैं।
पादपों के सुन्दर तन में,
बेलियाँ लिपटी जाती हैं॥

साथ जलते दीपक का कर,
बत्तियाँ जलती रहती हैं।
सितम मतवाले भौरों का,
तितलियाँ सहती रहती हैं॥

मोतियों की माला अपनी
भोर को रजनी देती है।
अरुण का मुख देखे ऊषा
रङ्ग अपना रख लेती है॥

देख कुसुमाकर को कोयल
गीत है बड़े मधुर गाती।
मञ्जु मलयानिल से मिल कर,
महँक है मोहकता पाती॥

सामना उँजियाले का कर,
भाग जाती है अँधियाली।
गगनतल के नीलापन में
विलसती रहती है लाली॥

फूल को हँसता अवलोके
कब नहीं कलियाँ खिल जातीं।
कलेजा उनका तर करने
ओस की बूँदें हैं आतीं॥

रङ्गतों से तारकचय के
ज्योति रञ्जित बन जाती है।
देख राकापति को निकला,
बिहँसती राका आती है॥

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

व्यभिचार छुड़ाने का नुस्ख़ा

[श्री० यमुनाप्रसाद श्रीवास्तव]

है गदा वह शाह जिसके पाकेट में ज़र नहीं।
व्यभिचारियों की आबरू सारे ज़माने में नहीं॥

इङ्गलिस्तान के अधीश्वर सम्राट चार्ल्स (द्वितीय) बड़े व्यभिचारी थे। वे सन्ध्या होते ही भेष बदल कर मटरग़श्त को निकलते, और वेश्याओं के अड्डों पर जाकर सौन्दर्यपूर्ण नवयौवना सुन्दरियों की खोज करते तथा जिसे सुन्दर और प्रौढ़ा देखते उसीको विलास-भवन में ले जाकर क्रीड़ा करते। जब कुछ रात्रि रहती, तब भेंट चढ़ा कर उससे विदा होते और प्रभात की सफ़ेदी छिटकने के पूर्व ही राज-भवन में आ विराजते थे।

लॉर्ड रोचेस्टर उनके लङ्गोटिए यार थे। वे भी भेष बदल कर उनके साथ रहते थे और नवयौवना सुन्दरियों की खोज करने में उनकी सहायता करते थे। जब सम्राट अपनी प्रियतमा को लेकर विलास-भवन में चले जाते, तब वे बाहर बैठ कर चुरुट पिया करते थे।

एक रूपवती मेम से भी सम्राट ने आशनाई कर ली थी। उन्होंने उसे राज-महल में भी बैठा लिया था। तो भी उनकी काम-पिपासा शान्त नहीं हुई। बेचारी मेम अत्यन्त दुखी रहती थी। उसने सम्राट को बहुतेरा समझाया और कहा :—

बासी फूलों बास नहीं।
प्रियतम ! तेरी मुझको आस नहीं॥
खिलौना समझ के बिगाड़ो न मुझको।
कि मैं भी उसी की बनाई हुई हूँ॥

परन्तु उनके मन में कुछ भी न भाया। उनकी तो यह दशा थी :—

मरज़ बढ़ता गया ज्यों-ज्यों दवा की।

अन्त में लाचार होकर मेम साहिबा ने लॉर्ड रोचेस्टर से विनती की कि किसी प्रकार सम्राट की इस कुटेव को छुड़ाइए। लॉर्ड रोचेस्टर भी प्रतिदिन की दौड़-धूप के मारे तङ्ग थे। उन्होंने मेम साहिबा की बात स्वीकार कर, प्रतिज्ञा की कि शीघ्र ही इस कुटेव को छुड़ाने का प्रयत्न करूँगा।

एक दिन मेम साहिबा ने लॉर्ड रोचेस्टर को एकान्त में पाकर उनके कान में कुछ कहा। वे उसे सुन कर अत्यन्त प्रसन्न हुए और बोले—"युक्ति तो बहुत अच्छी है।"

"आप इसे कार्य-रूप में कब परिणत करेंगे ?"

"आज ही रात्रि को।"

सन्ध्या होते ही सम्राट और लॉर्ड रोचेस्टर दोनों भेष बदल कर शाही महल से निकले और मटरग़श्त करते हुए एक कोठीख़ाने पर पहुँचे। द्वार पर नायिका से भेंट हुई, वह बड़ी ख़ुर्राट और तजरबेकार बुढ़िया थी। दोनों के फटे-पुराने वस्त्र देख कर, उसने इन्हें साधारण मनुष्य समझा और लॉर्ड रोचेस्टर की ओर अग्रसर होकर लापरवाही से पूछा—"कहो ! क्या चाहते हो ?"

"सौन्दर्यपूर्ण नवयौवना सुन्दरी की तलाश है। यदि हो तो ले आओ।"

"सुन्दरियाँ तो एक से एक बढ़ कर हैं, परन्तु पाकेट में रुपए भी चाहिए। तुम अपनी हैसियत की क्यों नहीं मँगवा लेते ?"

"तुमको हमारी हैसियत से क्या पड़ी है ? जो कहते हैं तामील करो। भागे तो जाते ही नहीं। कौड़ी-कौड़ी धरवा लेना तब जाने देना।"

इससे नायिका को कुछ तसल्ली हुई। वह दूसरे कमरे से एक सुन्दरी को ले आई और सामने खड़ी करके कहा—"यह हाज़िर है।"

बरस चौदह या कि पन्द्रह का सिन।
जवानी की रातें मुरादों के दिन॥

सम्राट उसके रूप-लावण्य को देखते ही मोहित हो गए। उन्होंने चलते समय रुपए देने का वादा करके नायिका को रुख़सत किया तथा कोट उतार कर लॉर्ड रोचेस्टर के हवाले किया और आप सुन्दरी सहित विलास-भवन में चले गए। लॉर्ड रोचेस्टर चुरुट सुलगा कर धुँआ उगलने लगे।

चुरुट से निपट कर उन्होंने सम्राट के कोट की जेबें टटोलना आरम्भ किया। एक जेब में नक़दी की अच्छी

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

रक़म थी, वह सब निकाल कर अपने पाकेट में भरी, दूसरी जेब में घड़ी थी, उसे भी निकाल कर अपने कोट में लगा ली। इस प्रकार कोट ख़ाली करके वहीं रख दिया और अपने घर की राह ली।

सम्राट प्रियतमा के हाथ में हाथ दिए हुए प्रायः एक बजे रात्रि को बाहिर आए। लॉर्ड रोचेस्टर को वहाँ न देख कर उन्होंने नायिका से पूछा—

"हमारा साथी कहाँ गया?"

"मुझे मालूम नहीं। मैं दूसरे कमरे में थी।"

कुछ समय प्रतीक्षा करने के बाद सम्राट ने कोट पहन कर चलने का इरादा किया और रुपए निकालने के लिए जेब में हाथ डाला। जेब को ख़ाली पाकर उन्होंने नायिका से कहा—"मेरा साथी आपको काफ़ी रुपए दे गया होगा।"

"मुए! होश की दवा कर। अधिक तो नहीं पी गया है, जो ऐसी बहकी-बहकी बातें करता है? ज़िम्मेदार तो तू है, न कि वह।"

नायिका की यह धृष्टता देख सम्राट का समस्त शरीर काँप उठा, नेत्र लाल हो गए। परन्तु वे कुछ कह नहीं सके। क्योंकि नायिका ने भी ठीक कहा था। वह क्या जाने कि उससे बातचीत करने वाला कौन है?

"अबे नालायक़! चुप क्यों है? बोलता क्यों नहीं? तेरी जीभ क्या कुत्ता ले गया है?"

सम्राट दीर्घ निश्वास ले रहे थे। उनके नेत्रों में रक्त उतर आया था। परन्तु फिर भी वे चुप थे।

"भला चाहते हो तो हमारी फ़ीस फ़ौरन अदा कर दो।"

सम्राट ने क्रोध थाम कर नम्र और मधुर स्वर में कहा—"बड़ी बी साहिबा! ख़फ़ा न हूजिए। कल तक की मुहलत दीजिए। सन्ध्या होते ही मैं फ़ीस के दूने रुपए दाख़िल कर दूँगा।"

"झूठ कहीं का! तेरा क्या एतबार? तुम दोनों ही ने पहिले कहा था कि कौड़ी-कौड़ी धरवा लेना तब जाने देना। अब तू किस मुँह से मुहलत माँगता है? मैंने तेरे ऐसे सैकड़ों को रास्ता बतलाया है। मालूम नहीं तेरा बेईमान साथी कहाँ चला गया। वह मेरा कुछ सामान तो नहीं चुरा ले गया?"

"बड़ी बी साहिबा!....."

"बड़ी बी साहिबा गईं जहन्नुम में। तू हमारी फ़ीस देता है कि नहीं?"

"रुपए तो इस वक़्त मौजूद नहीं हैं। प्रभु ईसा मसीह के सच्चे सेवक के समान मैं आपसे प्रार्थना करता हूँ कि ....."

"प्रभु का बड़ा भक्त बना है! यदि ऐसा ही भक्त था तो यहाँ झख मारने क्यों आया? ख़ैरियत इसी में है कि हमारी फ़ीस दे डाल, वरना ऐसी गतें करवाऊँगी कि जन्म भर याद करेगा कि किसी बुढ़िया से पाला पड़ा था।"

"मेरी बातों पर आपको विश्वास नहीं है तो मेरी सोने की घड़ी रख लीजिए। कल सन्ध्या को रुपए देकर ले जाऊँगा।"

"बशर्ते कि वह पीतल की न हो।"

यह सुनते ही सम्राट को जान में जान आई। उन्होंने आनन्द-सागर में ग़ोता लगा कर कहा—"मुलाहज़ा कर लीजिए, सोने की है या पीतल की।" और घड़ी निकालने के लिए जेब में हाथ डाला। परन्तु घड़ी थी ही नहीं। उनका चेहरा सूख गया और जेब का हाथ जेब ही में रह गया।

"अबे! ला घड़ी। देता क्यों नहीं? क्या तेरे हाथ को लकवा मार गया है, जो जेब का जेब ही में रह गया है?"

"अफ़सोस! इस वक़्त घड़ी भी नहीं है। मेहरबानी करके कल तक की मुहलत दीजिए।"

"तेरे शरीर पर एक लत्ता तक तो साबित नहीं है। फिर भी अमीरज़ादा बन कर घड़ी रखने का दावा करता है! मैं तेरी चालें ख़ूब समझती हूँ।"

सम्राट चुप थे। उनकी ज़बान पर यह शेर था:—

ज़रदार का सौदा है,
बेज़र का ख़ुदा हाफ़िज़!

सुन्दरी भी पास ही खड़ी थी। उसने तमक कर कहा:—

कौन धों पाटी पढ़े हो लला!
मन लेत पै देत छटाँक नहीं॥

"मैंने यदि तुम्हें कोल्हू में न पिरवाया तो कुछ भी न किया।"

सम्राट की बेचैनी और व्याकुलता बहुत बढ़ गई थी। उनके मुँह से बरबस यह निकल गया:—

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

तुम्हारा जितना जी चाहे, सितम मज़लूम पर ढा लो।
कलेजा चीर डालो, मेरी आँखों को निकलवा लो ॥
मेरी नस-नस को छेदो, और रग-रग मेरी कटवा लो।
वह हाज़िर है बदन मेरा, इसे कोल्हू में पिरवा लो ॥

यह सुन नायिका ने उत्तेजित होकर कहा—"नराधम! तेरे वस्त्र ही देख कर मैं जान गई थी कि तेरे पास कानी कौड़ी नहीं है। परन्तु स्त्री ही ठहरी, तेरे साथी की चिकनी-चुपड़ी बातों में आ गई।"

उस समय की सम्राट की दशा का वर्णन महात्मा तुलसीदास जी के शब्दों में इस प्रकार है :—

आसुहि द्रवत श्रवत पुनि थोरे।
सहि न सकत दीनन कर जोरे ॥

"अबे! तेरा सिर तो नहीं फिर गया? तू उत्तर क्यों नहीं देता? क्या तेरे मुँह में दाँत नहीं है? कुशल इसी में है कि हमारा हिसाब चुका दे, वरना ऐसी गत बनाऊँगी कि छठी का दूध याद आ जायगा।"

सम्राट पर सन्नाटे की अवस्था तारी थी। उनके प्राणों में प्राण नहीं थे। उत्तर देवे तो कौन देवे?

नायिका ने डपट कर कहा :—

अब तू अनजान होता जाता है!
नन्हा नादान होता जाता है!!

"ओ मक्खीचूस! नख़रेबाज़ी मत कर। मैं तेरे सम्पूर्ण कपड़े उतरवा लेती, परन्तु वे तो दो-चार आने के भी नहीं हैं। ख़ैर! यदि कुछ वसूल न होगा तो जो मज़ा उड़ाया है वह सब उलटे रास्ते से निकलवा लूँगी। तूने अभी मेरे मुसण्डों को नहीं देखा है?

फ़रिश्ते को पकड़ बैठें, मेरे दरबान ऐसे हैं।
ख़ुदा से भी नहीं डरते, ये ईमान ऐसे हैं।
देख अब तेरी कैसी गत करवाती हूँ। है कोई?"

"हुज़ूर! क्या हुक्म है?"—दो मुसण्डों ने आकर कहा।

"इस बेईमान को ले जाओ और मुश्कें कस कर कोठरी में बन्द कर दो।"

"हुज़ूर! बहुत अच्छा।"

दोनों मुसण्डों ने सम्राट की मुश्कें कसीं और उन्हें घसीटते हुए कोठरी में ले गए।

सम्राट, जिनके अधिकार में लाखों-करोड़ों मनुष्यों की ज़िन्दगी, मौत, और स्वतन्त्रता थी, उनकी यह दुर्गति कि मुश्कें बाँध कर घसीटे जायँ! वह भी किसके द्वारा? अपनी प्रजा के! प्रजा भी कौन? एक बूढ़ी नायिका, जिसकी हैसियत दो कौड़ी की भी नहीं! परमेश्वर की लीला अपरम्पार है!

चाहे तो रङ्क को राव करे,
चाहे राव को द्वारहि द्वार फिरावे।

परन्तु उन्हें इसकी चिन्ता न थी। चिन्ता थी तो इस बात की कि थोड़ी सी रात्रि रह गई है। यदि शीघ्र छुटकारा न मिला तो भोर होते ही बात फैल जायगी और बड़ी बदनामी होगी। उन्होंने कातर स्वर में रक्षकों से कहा—"भाई साहब! ईश्वर के लिए एक बार बड़ी बी साहिबा से भेंट करा दो।"

"असम्भव है।

जब चाह थी, तब चाह थी, अब चाह नहीं है।
तुम क़ैद में मर जाओ, उन्हें परवाह नहीं है ॥"

"नहीं, भाई साहब! नहीं, कुछ ज़रूरी अर्ज़ करना है।"

रक्षकों को दया आई। उन्होंने सम्राट को ले जाकर नायिका के सामने खड़ा कर दिया।

"अरे! इस मुरदार को अब मेरे पास क्यों लाए?"

"हुज़ूर! यह कुछ अर्ज़ करना चाहता है।"

"कह बे! क्या कहता है?"

"बड़ी बी साहिबा! कोठरी में पहुँचते ही मेरी नज़र इस अँगूठी पर पड़ी। यह सोने की है। इसका हीरा भी क़ीमती है। इसे रख लीजिए और मुझे जाने की इजाज़त दीजिए। कल सन्ध्या को रुपए देकर ले जाऊँगा।"

"अब मैं तेरी बातों में नहीं आने की। तू बड़ा ठग मालूम होता है। ठग लोग बहुधा स्त्रियों को फुसलाने के लिए झूठी अँगूठियाँ रक्खा करते हैं। ख़ैर! ला, अगर पीतल की न होगी तो रख लूँगी।"

"यह लीजिए, जी चाहे जहाँ परखवा लीजिए।"

नायिका ने एक ख़िदमतगार को अँगूठी देकर कहा कि जाकर फ़लाने जौहरी के यहाँ से इसे परखवा ला।

ख़िदमतगार अँगूठी लेकर गया और जौहरी को सोते से जगा कर अँगूठी दी और कहा कि बड़ी बी साहिबा ने भेजी है, इसे परख दीजिए, सोने की है या पीतल की और इसका हीरा सच्चा है या झूठा।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

जौहरी ने लैम्प के प्रकाश में अँगूठी देखी। उसको बड़ा आश्चर्य हुआ। उसने ख़िदमतगार से कहा—"यह शाहाना अँगूठी है। राजा महाराजाओं के सिवाय किसको मक़दूर है जो ऐसी अँगूठी पहने। बड़ी बी साहिबा की सम्पूर्ण सम्पत्ति भी इसके दसवें हिस्से के मूल्य के बराबर न होगी। बड़ी बी को यह कहाँ मिली?"

"आज शाम को एक मुफ़लिस हमारे यहाँ आया और रात्रि भर मज़े उड़ाता रहा। चलते समय उसके पास टका तक न निकला। बड़ी मुशकिलों में यह अँगूठी दी है।"

मुफ़लिस और इस अँगूठी का मालिक! जौहरी भी अय्याश था। बड़ी बी के यहाँ आता-जाता था। कुतूहलवश अँगूठी लेकर ख़िदमतगार के साथ चल खड़ा हुआ।

सम्राट अधमरे हो रहे थे। उनकी ज़बान पर यह शेर थे :—

मज़ा भी मिलता है इन बुतों से दिल लगाने में।
सज़ा भी मिलती है इन बुतों से दिल लगाने की॥

वे ख़िदमतगार के लौट आने की प्रतीक्षा में घड़ियाँ गिन रहे थे कि कब वह आवे और इस पाप-पुञ्ज से छुटकारा मिले, वरना सवेरा होते ही भण्डा फूट जायगा और बड़ी बदनामी होगी।

इसी बीच में जौहरी भी आ पहुँचा। वह कई बार शाही दरबार में हाज़िर हुआ था। सम्राट तक उसकी रसाई थी। सम्राट उस समय भेष बदले थे। परन्तु जौहरी ने देखते ही उन्हें पहचान लिया और शाहाना आदाब बजा लाकर उनके क़दमों पर गिर पड़ा और हाथ जोड़ कर अर्ज़ की—"पृथ्वीनाथ! यहाँ कहाँ?"

यह दृश्य देखते ही सबके होश उड़ गए और कलेजा काँप उठा। बड़ी बी मूर्च्छित होकर पृथ्वी पर गिर पड़ीं। सुन्दरी केले के पत्ते सी काँपती हुई अश्रुपूर्ण नेत्रों से सम्राट के पाँव से लिपट गई। रक्षकों की कुछ न पूछिए, वे सिजदे में ऐसे गिरे कि सिर तक उठाना हराम हो गया।

जौहरी ने सबकी ओर से हाथ जोड़ कर माफ़ी माँगी और अर्ज़ की कि फिर कभी ऐसी भूल न होगी।

सम्राट ने इस घटना की चर्चा न करने का बचन लेकर सबको जीवदान दे अभय किया। और इस मौक़े को ग़नीमत समझ, अकेले ही चल पड़े। मार्ग में तोबा करते और कानों को हाथ लगा कर शपथपूर्वक सौन्दर्य की हरजाई ललनाओं को कभी छाती से न लगाने की प्रतिज्ञा करते हुए, प्रभात की सफ़ेदी छिटकने के पूर्व ही राजमहल में जा विराजे।

प्रातःकाल होते ही लॉर्ड रोचेस्टर हाज़िर हुए। उन्हें देखते ही सम्राट ने गर्ज कर कहा—"तुम बड़े नमकहराम और विश्वासघाती हो!"

"पृथ्वीनाथ! सुन लीजिए, फिर जी में जो आवे सो कहिए।"

"क्या तुम्हें कुत्ता उठा ले गया था?"

"पृथ्वीनाथ! कुत्ता नहीं। मुझे आबदस्त लेने की ज़रूरत मालूम हुई थी।"

"तो क्या रात्रि भर आबदस्त ही लेते रहे? और लौट कर न जा सके?"

"घर पहुँचते ही दस्त शुरू होगए। बड़ी मुशकिलों से अभी-अभी बन्द हुए हैं, सो मैं दौड़ा चला आ रहा हूँ।"

"भला नक़दी और घड़ी क्यों ले आए थे?"

"तो मैं इनको वहाँ किसके भरोसे छोड़ आता?"

"तुम्हारे चले आने के कारण रात्रि को मेरी बड़ी दुर्दशा हुई थी। मैंने भी तङ्ग आकर तोबा की और यह प्रतिज्ञा की है कि अब कभी सौन्दर्य की हरजाई ललनाओं को छाती से न लगाऊँगा।"

"यदि मेरी कल की ग़ैरहाज़िरी का यह फल हुआ है तो मैं पृथ्वीनाथ का बड़ा ही उपकारी नमकहलाल और शुभचिन्तक ठहरता हूँ।"

"बेशक!"

यह कह सम्राट खिलखिला कर हँसे और कहा :—

बूए वफ़ा नहीं है मिसों के उसूल में।
बस, रङ्ग देख लीजिए, गमलों के फूल में॥

ख़ैर! अच्छा ही हुआ जो :—

रोने से इस इश्क़ में बेबाक हो गए।
धोए गए हम इतने कि बस पाक हो गए॥

और सच है :—

रङ्ग लाती है हिना पत्थर से पिस जाने के बाद।
अक़्ल आती है बशर को ठोकरें खाने के बाद॥*

* एक प्राचीन उर्दू पत्रिका में प्रकाशित लेख के आधार पर।
—लेखक

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

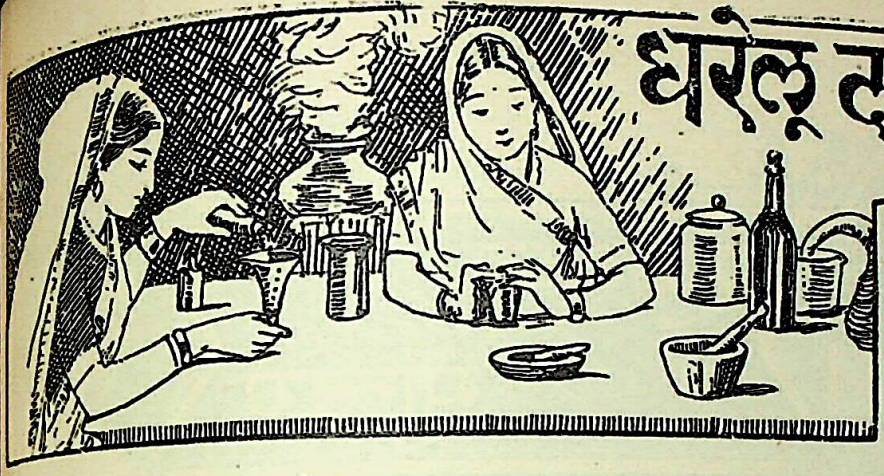

घरेलू दवाइयाँ

शिर-पीड़ा नाशक लेप

कुचला एक माशा, केशर तीन माशे, मैनफल चार माशे और चन्दन का बूरा तीन माशे लेकर अर्क़-सौंफ़ में खरल कर लेप करे।

* * *

केश का गिरना

सिकाकाही आध पाव, आँवला सूखा पाव भर, रतवड़ एक छटाँक, सफ़ेद चन्दन एक छटाँक, पाडुरी एक छटाँक, ख़स एक छटाँक, सुगन्धबाला एक छटाँक, इन सब औषधियों को कूट कर चलनी से छान कर रख छोड़े। इनमें से आवश्यकतानुसार रात्रि भर भिगो रक्खे और इसी से शिर को मले।

* * *

मूत्रावरोध

अपामार्ग की जड़ एक तोला, तीन दाने काली मिर्च के साथ आध पाव जल में पीस कर पिलाने से मूत्रावरोध तथा विसूचिका रोग आराम होता है।

* * *

खुजली

ज़हर कनैली के पत्ते, धमोए के बीज, और थोड़ा सा गन्धक—तीनों को पीस कर लगावे।

—कुमारी लक्ष्मी देवी

* * *

तापतिल्ली तथा ज्वर

गन्धक का तेज़ाब २० बूँद, मिश्री २ तोला, जल १ पाव।

विधि—८ औन्स की १ शीशी में २ तोला पिसी हुई मिश्री तथा २० बूँद गन्धक का तेज़ाब डाल कर एक पाव पानी भर देना चाहिए। तीनों चीज़ें मिल कर एक-रस हो जाने पर काम में लाना चाहिए।

मात्रा—अवस्था के अनुसार १ तोला से २ तक।

समय—प्रातः-सायम् तथा आवश्यकता के अनुसार अधिक बार भी औषध का प्रयोग किया जा सकता है।

रोग—पित्त का प्रकोप, पित्ती का उछलना, ज्वर का तीव्र वेग, उदरविकार, प्लीहा एवं अरुचि।

* * *

ज्वर-नाशक पेय (मीठा शर्बत)

गुल बनफ़्शा ४ तोला, लौंग १ तोला, लाल चन्दन १ तोला, गुल गावज़बाँ १ तोला, उन्नाब २ तोला, मुनक्का २ तोला, ख़ूबकला १ तोला, ख़स २ तोला, मिश्री १ सेर।

विधि—सब चीज़ों को साफ़ करके रात में किसी मिट्टी की हाँडी या अन्य पात्र में १॥ सेर जल डाल कर उक्त औषधों को भिगो देना चाहिए। प्रातःकाल चूल्हे पर चढ़ा कर मीठी आँच से सब चीज़ों को पका लें। आधा जल शेष रहने पर उतार कर छान लीजिए। शीतल होने पर थिराए हुए क्वाथ में १ सेर मिश्री डाल कर किसी क़लईदार साफ़ बटलोई में पुनः आग पर चढ़ा देना चाहिए। दो तार की चाशनी आ जाने पर उतार और छान कर किसी साफ़ बोतल में भर कर रख लेना चाहिए।

मात्रा—अवस्था के अनुसार ६ माशे से २ तोला तक।

समय—प्रातःकाल तथा सायङ्काल, आवश्यकता होने पर अन्य समय में भी दिया जा सकता है।

अनुपान—बच्चों के लिए माता का दूध या साधारण गो-दुग्ध आदि। बड़ों के लिए १ छटाँक जल।

रोग—चित्त की व्याकुलता, पित्तज्वर, प्यास, मस्तक पीड़ा, पेशाब का पीलापन या जलन, गले का सूखना एवं हृदयदाह।

* * *

(शेष मैटर १३५ वें पृष्ठ पर देखिए)

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

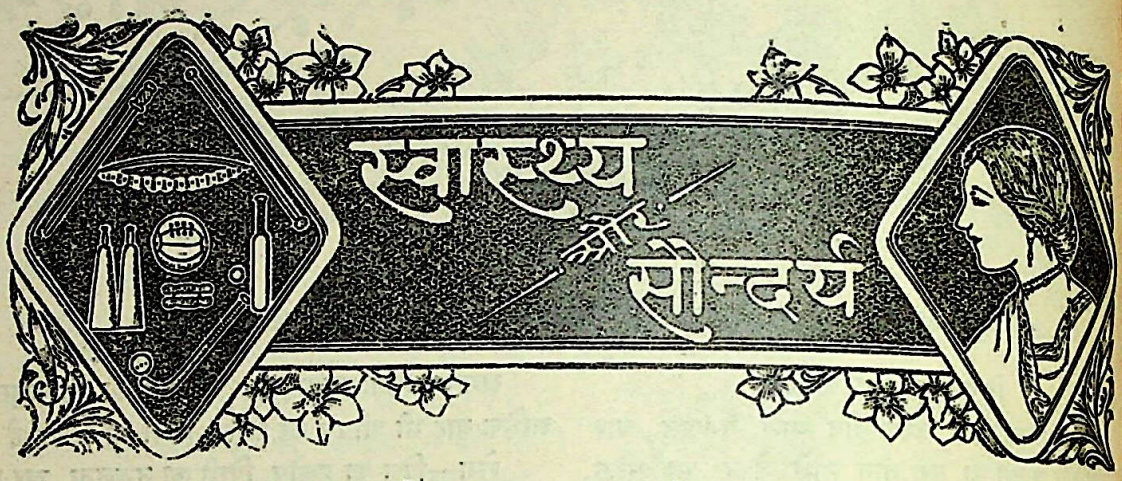

आँखों का सौन्दर्य

स्त्रियों के सौन्दर्य का आँखों से घनिष्ठ सम्बन्ध है। सारा शृङ्गार-शास्त्र आँखों की महिमा से भरा पड़ा है। कवियों ने आँखों की प्रशंसा में उपमाओं का दिवाला निकाल दिया है और अन्त में थक कर उन्हें अपनी क़लम थाम लेनी पड़ी है। केवल शिक्षित ही नहीं, बल्कि अशिक्षित स्त्रियाँ भी अपनी आँखों के सौन्दर्य की रक्षा के लिए तरह-तरह के मरहमों, लोशनों, और कज्जल, सुर्मा आदि का उपयोग किया करती हैं। परन्तु अधिकांश स्त्रियों को इन उपचारों से प्रायः हताश होना पड़ता है। इसके लिए उपचारों को दोष नहीं दिया जा सकता। वे अपना प्रभाव उस समय अवश्य दिखाते हैं, जब आँखें बाहरी कारणों से, जैसे ऋतु-परिवर्तन, अपूर्ण निद्रा, धूप लग जाने अथवा आँखों से अधिक परिश्रम लेने आदि से, मलिन और निर्बल हो जाती हैं। परन्तु जब शारीरिक निर्बलता, तेज प्रकाश में पढ़ने या बहुत छोटे टाइप की पुस्तकें पढ़ने और दाँतों की गन्दगी के कारण आँखें निर्बल हो जाती हैं, तब इन वाह्य उपचारों का अधिक लाभप्रद और स्थायी प्रभाव नहीं पड़ता।

चश्मे का उपयोग

आँखों के जितने रोगी आँख के विशेषज्ञों के पास जाते हैं, उनमें से अधिकांश वे ही लोग रहते हैं जिनकी आँखें अधिक परिश्रम द्वारा निर्बल हो गई हैं। इसका मुख्य कारण शरीर के स्नायुओं की निर्बलता है, और डॉक्टरों के हाथ में उसका उपचार केवल चश्मे का उपयोग है। उनका मत है कि चश्मा आँखों को आराम पहुँचाता है, जिससे आँखों की साधारण शक्ति वापिस आ जाती है। यह सच है कि चश्मे के उपयोग से आँखों का परिश्रम कम हो जाता है, इससे आँखों को आराम मिल जाता है और वे साधारण काम के योग्य बनी रहती हैं। परन्तु चश्मे का आँख के आभ्यन्तर रोगों से विशेष सम्बन्ध नहीं रहता और न वे आँखों को उनसे मुक्त ही कर सकते हैं। उन रोगों का वास्तविक सम्बन्ध आँखों के स्नायुओं से है और उनसे छुटकारा पाने के लिए स्नायुओं को स्वस्थ रखना आवश्यक है। बहुत से लोग सिर की असह्य पीड़ा से कराहते रहते हैं, परन्तु उन्हें उसके कारण का पता नहीं लगता। इस पीड़ा का प्रधान कारण आँखों के स्नायुओं से सम्बन्ध रखता है। यों तो सिर में अनेक कारणों से पीड़ा उत्पन्न होती है, परन्तु उसका प्रधान कारण प्रायः आँखों से अधिक परिश्रम लेना ही है। ऐसे रोगों का सब से अच्छा उपाय है आँखों के स्नायुओं को स्वस्थ और शक्तिपूर्ण रखना।

पहले जब कोई पुरुष या स्त्री चश्मे का उपयोग करती है तो आँख धीरे-धीरे स्वयं चश्मे के उपयुक्त बन जाती है और फिर वह चश्मे के बिना कोई कार्य नहीं कर सकती। चश्मे के इस प्रकार निरन्तर उपयोग से अधिकांश लोगों की आँखें और भी अधिक निर्बल हो जाती हैं, क्योंकि चश्मे से आँखों के वास्तविक रोग या निर्बलता का निवारण नहीं हो पाता। इसका परिणाम यह होता है कि वे अधिक शक्ति वाले चश्मे का उपयोग करने के लिए विवश हो जाते हैं। आँखों के इस प्रकार चश्मे पर निर्भर हो जाने से आँखें अधिक-

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

धिक निर्बल होती जाती हैं। इस निर्बलता को रोकने के लिए अधिक शक्ति वाले चश्मों का बहिष्कार करना ही सब से अच्छा उपाय है। परन्तु केवल चश्मे के बहिष्कार से आँखों के दोष दूर न होंगे। उसके साथ ही कुछ प्राकृतिक नियमों के अवलम्बन की और व्यायाम की भी आवश्यकता पड़ेगी।

आँखों का व्यायाम

आँखों में भी स्नायुएँ और मांसपेशियाँ उसी प्रकार होती हैं, जिस प्रकार शरीर के अन्य अङ्गों में। अतः

पक पेन्सिल या कोई अन्य नुकीली वस्तु लेकर उसे आँखों से थोड़ी दूरी पर पकड़िए। फिर उस पर दृष्टि जमाइए और इसी अवस्था में १५ तक गिनिए।

फिर दृष्टि को शीघ्रतापूर्वक पेन्सिल पर से हटा कर बहुत दूर के किसी चिन्हित पदार्थ पर जमाइए और इस अवस्था में १५ तक गिनिए। इस प्रकार प्रतिदिन १० बार करने से आँखों की ज्योति बढ़ेगी।

आँखों को स्वस्थ और बलिष्ठ रखने के लिए व्यायाम की उसी प्रकार आवश्यकता है, जिस प्रकार अन्य अङ्गों को स्वस्थ और बलिष्ठ रखने के लिए। आँखों को चश्मे के उपयोग की अपेक्षा समुचित व्यायाम, उचित उपयोग और आराम के द्वारा अधिक नीरोग और स्वस्थ रक्खा जा सकता है। परन्तु केवल व्यायाम से भी आँखें पूर्ण रूप से स्वस्थ और नीरोग नहीं होने पातीं। इसका प्रधान कारण शारीरिक अस्वस्थता और स्नायुओं की निर्बलता है। जितने आदमी नेत्र-रोगों से पीड़ित रहते हैं, उनमें से नब्बे प्रतिशत ऐसे हैं जिनके शरीर, गैसों की उत्पत्ति के कारण, विषैले हो गए हैं। ऐसे लोगों की आँखों पर उपचार का बहुत कम प्रभाव पड़ता है। चश्मे का उपयोग करके वे आँखों से अपना काम भले ही निकालते रहें, परन्तु उन्हें स्वस्थ नहीं कहा जा सकता। नीरोग और जोतिपूर्ण आँखें तो उन्हें उस समय प्राप्त होंगी जब वे उपयुक्त व्यायाम और अन्य प्राकृतिक उपायों द्वारा अपने शरीर को विषैले द्रव्यों से मुक्त कर लेंगे। किसी विद्वान ने कहा है कि आँखें 'आत्मा की खिड़कियाँ' हैं।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

परन्तु वे केवल 'आत्मा की खिड़कियाँ' ही नहीं हैं, मनुष्य

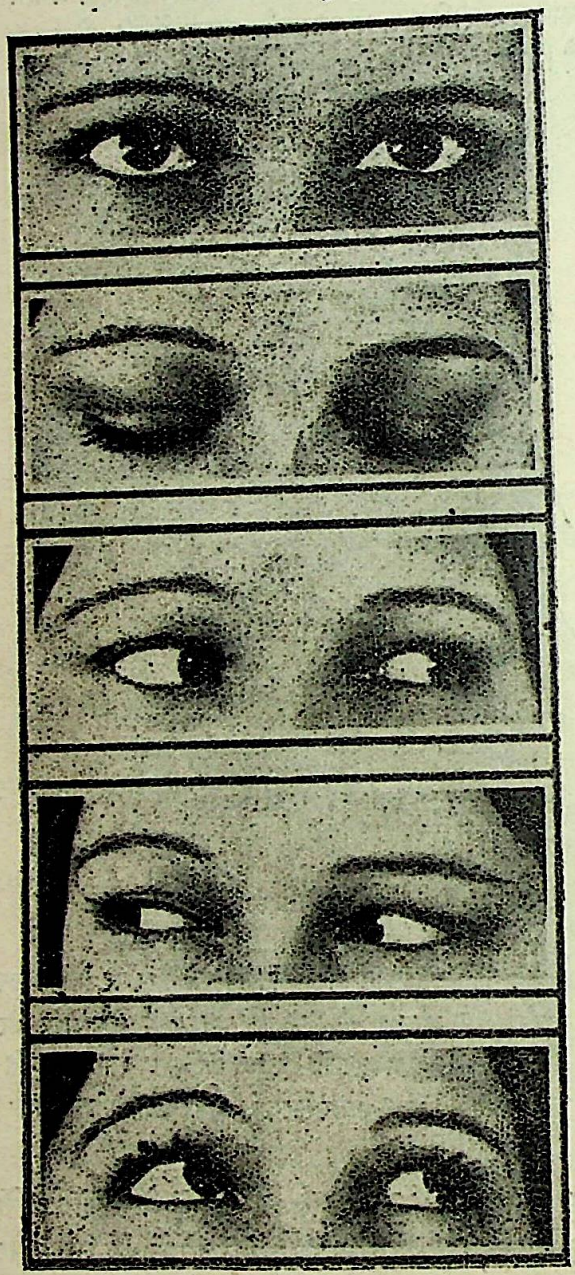

सिर को सीधा रखिए। फिर आँखों को बलपूर्वक ऊपर उठाइए। थोड़ी देर इसी अवस्था में ठहरिए। फिर दृष्टि को जहाँ तक हो सके नीची कीजिए। थोड़ी देर ठहरिए। फिर बाईं ओर दूर तक देखिए। थोड़ी देर योंही ठहरिए। फिर दाईं ओर दूर तक देखिए। एक क्षण योंही ठहरने के बाद पुतलियों को चारों ओर घुमाइए।

के 'शारीरिक सङ्गठन का दर्पण" भी हैं। जब शरीर विषैले द्रव्यों से युक्त रहता है और उसकी जीवनी-शक्ति कम हो जाती है तब आँखें मलिन, आभा-रहित और निस्तेज हो जाती हैं। इसके विपरीत, सुन्दर स्वास्थ्य प्राप्त होने पर आँखें भी अपना रङ्ग-रूप बदल देती हैं। इसलिए जो स्त्री-पुरुष अपने नेत्रों को चमकीला, तेजपूर्ण और स्वस्थ रखने के इच्छुक हों, उन्हें अपने सारे शरीर को स्वस्थ रखने का सदैव प्रयत्न करना चाहिए।

एक अमेरिकन महिला के अनुभव

नीचे हम एक अमेरिकन महिला के नेत्र-सम्बन्धी अनुभव और उसके व्यायाम देते हैं, जिनके सहारे उसने चश्मे से अपना पिण्ड छुड़ा कर अपनी आँखों को चमकीली और तेजपूर्ण बनाया था।

"प्रत्येक स्त्री की हार्दिक आकांक्षा स्वस्थ और सुन्दर बनने की रहती है और इसी के लिए वह तरह-तरह के वस्त्राभूषणों, तेल, इत्र, क्रीम, पाउडर आदि का उपयोग करती है। यदि मेरे हृदय में भी यही उमङ्ग हिलोरें मारती थी तो यह कुछ अप्राकृतिक न था। परन्तु ईश्वर ने मुझे सुन्दर बनने के सब साधन न दिए थे। मैं युवती अवश्य थी, परन्तु छुटपन से ही अस्वस्थ रहा करती थी। अजीर्ण मेरा प्रधान रोग था, जिसके कारण मेरा समस्त शारीरिक सङ्गठन जर्जरित हो गया था। मेरी आँखें इसके प्रभाव से बच न सकीं। कई वर्षों तक लगातार चश्मे के उपयोग के अनन्तर भी मैं उनकी निर्बलता से अपना पिण्ड न छुड़ा सकी। आँख के बहुत से डॉक्टरों के पास मैं उपाय पूछने गई, परन्तु किसी ने अधिक शक्ति के चश्मे के सिवा अन्य कोई उपाय न बतलाया। सौभाग्य से एक दिन मेरी भेंट एक सुप्रसिद्ध प्राकृतिक चिकित्सक से हो गई और उसने मुझे आँखों के सम्बन्ध में बहुत से प्राकृतिक व्यायाम और अन्य उपाय बतलाए, जिनका मैं नित्यप्रति अभ्यास करने लगी।

सब से पहिला व्यायाम हथेलियों से आँखों को बन्द करना और खोलना था। इसकी पद्धति बिलकुल सरल है। अपनी अँगुलियाँ एक-दूसरे से चिपका कर मैं हथेली की एक कटोरी सी बना लेती थी और फिर दोनों हथेलियों को आँखों पर इस तरह रख लेती थी कि अन्दर प्रकाश न पहुँचने पावे। इसी अन्धकार में मैं अपने मन में ३० तक संख्या गिनती थी और फिर हथेलियाँ हटा

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

होती थी। कुछ ही दिनों के बाद आँखों पर इस व्यायाम के आश्चर्य-जनक प्रभाव का आभास मिलने लगा। यह व्यायाम मैं दिन में तीन बार करती थी।

आँखों का एक दूसरा उत्तम व्यायाम, जो मैं प्रतिदिन किया करती थी, आँखों की दृष्टि को किसी नुकीली वस्तु पर जमाना था। इस व्यायाम के लिए मैं प्रायः सीस पेन्सिल का उपयोग करती थी। उसे हाथ की पूरी लम्बाई पर पकड़ कर उसकी नोक पर कुछ देर तक अपनी दृष्टि जमाए रहती थी; फिर उस पर से दृष्टि हटा कर जितनी दूर का पदार्थ दृष्टिगोचर होता था, उसे देखती थी। इसी प्रकार मैं कई बार दृष्टि-परिवर्तन किया करती थी।

इन दो व्यायामों के साथ ही मैं सिर को कड़ा कर आँखों के तारों को चित्र में बतलाई हुई रीति से ऊपर आकाश की ओर, नीचे पृथ्वी की ओर, दोनों कोणों पर और फिर चारों ओर फेरती थी। मैं इन व्यायामों की हर एक क्रिया थोड़े समय ठहर-ठहर कर करती थी। इस व्यायाम को करते समय सब से अधिक आवश्यकता उसकी प्रत्येक क्रिया में बल लगाने की पड़ती थी। मैं यह व्यायाम प्रतिदिन कई बार दुहराती थी। इसके लिए न तो किसी निश्चित समय की आवश्यकता पड़ती है और न स्थान की।

आँखों के इन विशेष व्यायामों के साथ मैं अजीर्ण दूर करने के लिए नियमित रूप से पेट का व्यायाम भी किया करती थी। मेरे प्राकृतिक चिकित्सक ने अजीर्ण के दूर करने के जो व्यायाम बतलाए थे, उनमें मुझे कभी लेटी हुई स्थिति से, एड़ियाँ ज़मीन से छुआए बिना तथा बिना किसी सहारे के, उठ कर पैर के अँगूठे छूने पड़ते थे, कभी शरीर को चारों ओर मोड़ना पड़ता था और कभी बछड़ों की नाईं पैर फटकारने पड़ते थे। ये सभी व्यायाम ऐसे थे जिनमें पेट के पट्ठों पर बहुत अधिक ज़ोर पड़ता था। आपको यह जान कर आश्चर्य होगा कि इस उपचार से, थोड़े ही दिनों में मेरी आँखें ज्योतिर्मय और चमकीली हो गईं। आँखों पर व्यायाम के इस आश्चर्यजनक प्रभाव में बहुत कम लोगों को विश्वास होगा।

नेत्रों की मालिश

एक बार मुझे मालूम हुआ कि न्यूयार्क में पेरिस से एक सौन्दर्य-विशारदा आई है। मुझे उसे देखने का बहुत कौतूहल हुआ। मैं आँखों के सौन्दर्य का उपचार जानने के लिए बहुत उत्सुक थी और इसलिए मैंने उससे आँखों का उपचार करवाया। उसने मेरी आँखों में कोई क्रीम लगा कर कहा—"अब मैं तुम्हें नेत्र-स्नान कराऊँगी।"

"नेत्र-स्नान!"—मैंने आश्चर्य से कहा।

"हाँ"—उसने कहा—"ज़रा सोचो, तुम्हारी आँखों में दिन भर मोटरों का धुँआ और वायु के वेग से उड़े हुए धूलि के कण प्रवेश करते रहते हैं; उन पर उष्ण और शीत का भी प्रभाव पड़ता रहता है, उससे वे मलिन और तेजहीन हो जाती हैं।"

इसके बाद उसने मेरी किसी अनुमति की प्रतीक्षा किए बिना ही मेरी आँखों की मालिश प्रारम्भ कर दी। वह उस क्रिया को जिस रीति से करती थी, मैं उसका पूर्ण ध्यान रखती थी। पहले उसने अँगुलियों से मेरी आँखों की दोनों पलकों को दबाया और उसके बाद बारी-बारी से थपकियाँ दे-देकर नाक से लेकर माथे में बालों की रेखा तक दबाया। फिर उसने अपने दोनों हाथों को ललाट के बीच में रक्खे और धीरे-धीरे अँगूठे और तर्जनी को मिला कर ललाट के बीच से दोनों कनपटियों तक मांसपेशियों को चुटकी से दाबना प्रारम्भ कर दिया। थोड़ी देर तक यह क्रिया करने के उपरान्त वह अपने अँगूठे को मेरे दोनों पलकों पर फिराती रही। अब उसने नाक के पास पलक के नीचे की स्नायु दबाना प्रारम्भ किया। और थोड़ी देर ठहर कर पलकों को ऊपर उठाया। इसके बाद मालिश समाप्त हो गई और मेरी आँखों पर किसी सुगन्धित बूटी की दो गर्म पोटलियाँ रख दी गईं।

ये पोटलियाँ थोड़ी देर आँखों पर रक्खी रहीं। फिर शीघ्र ही आँखों पर से ये उठा ली गईं और अबकी बार बर्फ़ की नाईं ठण्डी अङ्गुलियों से उसने आँखों पर मालिश प्रारम्भ कर दी। बाद में मेरी पलकों के नीचे बर्फ़ से भीगी हुई रुई की छोटी-छोटी गद्दियाँ रख दी गईं और एक पट्टी से आँखें बाँध मुझे अँधेरे में अकेली छोड़ कर वह चली गई। थोड़ी देर में जब पट्टी खोली गई तब मेरे आश्चर्य का ठिकाना न रहा। नेत्र-स्नान,

(शेष मैटर १४२वें पृष्ठ के पहले कॉलम में देखिए)

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

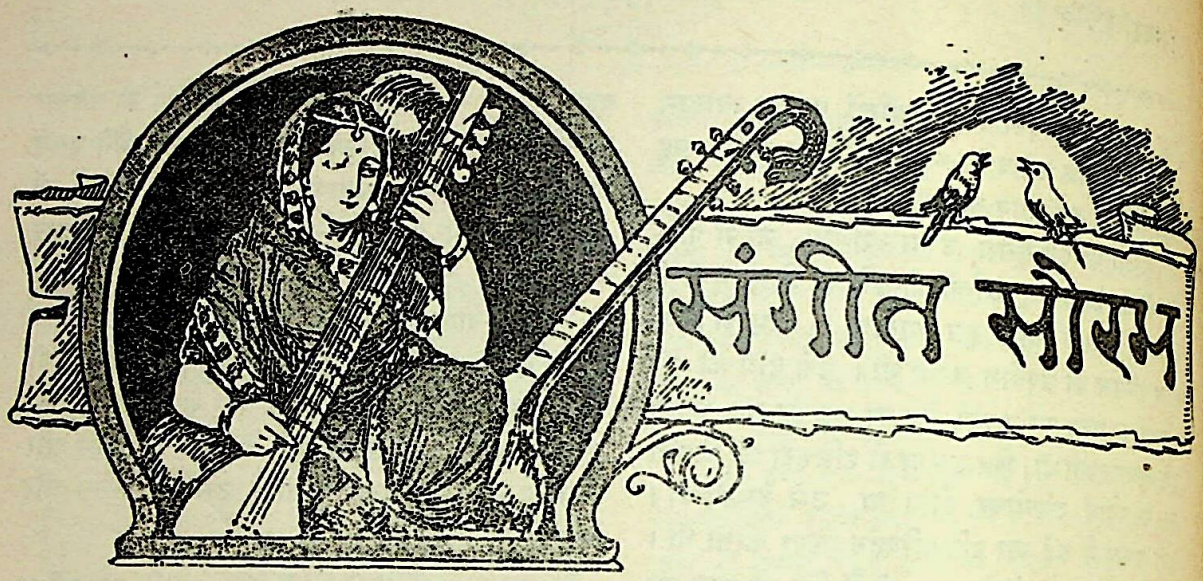

[सम्पादक तथा स्वरकार—श्री०
किरणकुमार मुखोपाध्याय
(नीलू बाबू)]

राग भूपाली—३ ताल

(मात्रा १६)

[शब्दकार—सदारङ्ग

स्थायी—ए तन जोबन पर मान न करिए ।
डरिए प्रभू सों आज मोरि आली ।
अन्तरा—जो कोई आवे अपने ढिंगवा ।
ता सों गरब न कीजिए ।
सदारङ्ग यह रीत माने ॥

स्थायी

०				१				×				३			
ध	स	ध	प	ग	प	ग	रे	ग	—	प	ग	ध	प	ग	—
ए	त	न	जो	ब	न	प	र	मा	—	न	न	क	रि	ए	—
प	—	ध	—	स	—	ध	प	ग	—	ग	रे	ग	—	प	—
ए	—	ए	—	ए	—	ड	रि	ए	—	प्र	भू	सों	—	आ	—
ध	—	प	स	ध	प	ग	प	ग	रे	—	स	—	—	—	—
आ	—	ज	मो	ओ	री	ई	आ	आ	ली	—	ई	—	—	—	—

अन्तरा

ग	—	ग	ग	प	—	ध	—	स	स	स	—	स	रे	स	—
जो	—	को	ई	आ	—	वे	—	अ	प	ने	—	ढिं	ग	वा	—

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

			स॰	स॰	स॰	स॰	रे॰		स॰						
ध	—	ध	ग	र	ब	न	की	—	ई	—	ध	—	स॰	—	प
ता	—	सों									ई	—	ई	—	ई
			ग॰		रे॰		स॰								
स॰	र॰	—		—		—		प	—	ध	—	स॰	—	रे॰	—
जि	ए	—	ए	—	ए	—	ए	ए	—	ए	—	ए	=	ए	—
ग॰	रे॰	स॰	ध	रे॰	स॰	ध	प	स॰	—	ध	प	ध	स॰	—	—
स	दा	आ	र	अ॰	ग	य	ह	री	—	ई	ई	त	मा	—	—
ध	—	प	—	ध	—	प	—	ग	—	रे	—	स	—	—	—
आ	—	आ	—	आ	—	आ	—	आ	—	ने	—	ए	—	—	—

(१२९वें पृष्ठ का शेषांश)

अतिसार-नाशक चूर्ण

सोंठ १ तोला, आम की गुठली १ तोला, सौंफ़ १ तोला, पोस्त का छिलका १ तोला, भुना हुआ सफ़ेद ज़ीरा १ तोला, अनार का फूल १ तोला, बेल की गिरी १ तोला, नागरमोथा १ तोला, मिश्री ८ तोला।

विधि—सब औषधों को विधिपूर्वक कूट, पीस, छान कर चूर्ण बना लेना चाहिए। मिश्री पृथक पीस कर मिलाना चाहिए।

मात्रा—३ माशे से ६ माशे तक।

समय—प्रातः-सायम्।

अनुपान—शुद्ध जल।

रोग—सब प्रकार के नए-पुराने दस्त और उन में ख़ून आना।

* * *

आमातिसार नाशक चूर्ण

आँवला १ तोला, धनिया १ तोला, सौंफ़ १ तोला, कासनी १ तोला, गुलाब के फूल १ तोला, छोटी इलायची १ तोला, ईसबग़ोल की भूसी ५ तोले, मिश्री ५ तोले।

विधि—सब चीज़ों को कूट, पीस, छान कर चूर्ण बना लेना चाहिए।

मात्रा—१ माशे से ३ माशे तक।

अनुपान—शुद्ध जल।

समय—तीन-तीन घण्टे के बाद।

रोग—आँव मिले दस्त, पेट की मरोड़, ख़ून के दस्त, हृदय-दाह, प्यास, पेशाब की जलन तथा ग्रीष्म ऋतु के विकार।

* * *

पाण्डु रोग नाशक चूर्ण

कलमी शोरा १ तोला, मिश्री ५ तोले—दोनों चीज़ों को खरल में डाल कर महीन कर लेना चाहिए।

मात्रा—३ माशे से ६ माशे तक

समय—दिन में तीन बार।

अनुपान— शुद्ध जल।

रोग—पाण्डु रोग, पेशाब की जलन, पेशाब का रुक-रुक कर आना।

* * *

श्वास नाशक वटी

छोटी इलायची १ तोला, वंशलोचन १ तोला, अफ़ीम ३ माशे, छोटी पीपल १ तोला, अतीस १ तोला, काकड़ासिंगी १ तोला।

विधि—सब चीज़ों को कूट, पीस, छान कर पान या अदरख के स्वरस में घोट कर मटर के बराबर गोलियाँ बना लेना चाहिए।

मात्रा—१ गोली।

समय—प्रातः-सायम्।

अनुपान—जल।

रोग—श्वास।

—गयाप्रसाद शास्त्री, वैद्य

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

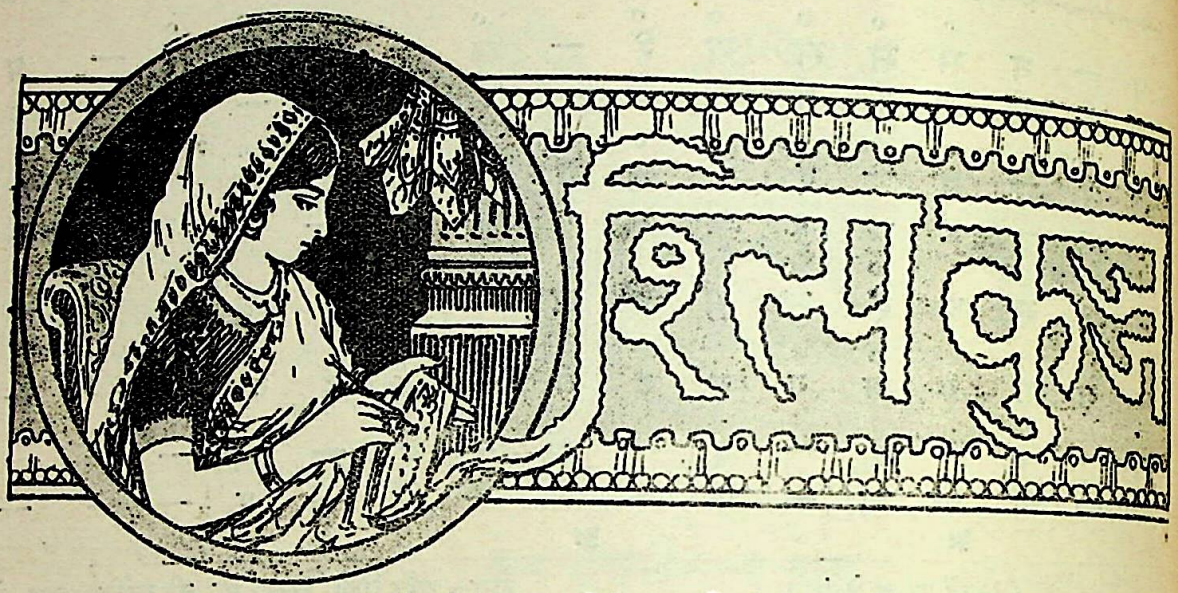

[श्रीमती शकुन्तला देवी गुप्ता, हिन्दी-प्रभाकरा]

मर्दानी जुराब

आवश्यक वस्तुएँ—४ सलाइएँ लोहे की, आध पाव ऊन।

आरम्भ—३ सलाइयों पर ९० फन्दे चढ़ाओ। ऊपर का रिब दो इञ्च तक ४ सीधे, १ उलटा, इस प्रकार बुनो। फिर सीधा ही सीधा बुनना होगा। इसमें ४ इञ्च बुन कर घटाना होगा, जिससे टाँग पर खिंची रहे—ढीली न हो। इसके लिए १ चक्र में १-१ फन्दा तीनों सलाइयों में से घटा दो, फिर ५ चक्रों में न घटाओ। फिर १ चक्र में ३ फन्दे घटा दो। इस प्रकार बीस फन्दे घटा दो। यहाँ तक कि जुराब की लम्बाई १२ इञ्च होने पर एड़ी बनाई जाय। फिर पूर्वोक्त रीत्यनुसार एड़ी बनाओ। फिर पैर को १० इञ्च तक बुन कर घटाओ, जिसकी रीति पूर्व दी गई है। यह जुराब

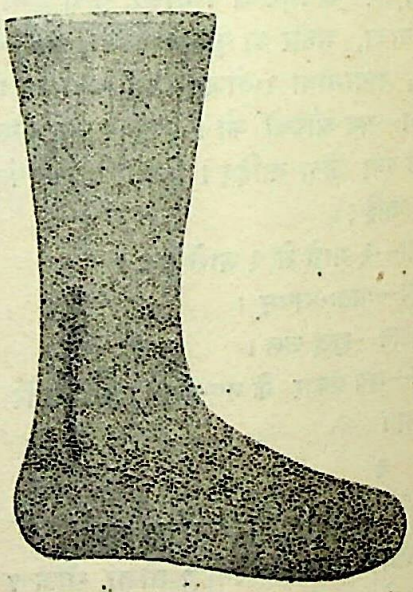

जुराब का नमूना

बिलकुल आसान और सीधी है। प्रत्येक नाप की यथेच्छा बन सकती है।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

दिल की आग उर्फ़ दिल-जले की आह

["पागल"]

पाँचवाँ खण्ड

६

जहानारा के तीसरे पत्र ने मुझमें एक नई उत्सुकता पैदा की। मैं उसकी लड़की का हाल जानने के लिए बेचैन हो गया। मगर इसके बाद के कई पत्रों में उसका कुछ भी ज़िक्र न था। उनसे केवल यही प्रतीत होता था कि अलिन्द के उत्तर की प्रतीक्षा में जहानारा का दिनोदिन धैर्य का बाँध टूटता गया। कभी प्रेम में दीवानी हो जाती थी और कभी निराशा से जल मरती थी। अब तक तो वह ज्ञान और प्रेम दोनों ही से बराबर लड़ती रही। और अलिन्द की भलाई की खातिर अपने प्रेम को यथाशक्ति दबाने का उद्योग करती थी। मगर उसमें अब यह भी शक्ति न रही। उसकी वेदना में सारा ज्ञान लुप्त हो चुका था। वह प्रेम-प्रवाह में दूने वेग से बह रही थी और बार-बार नैराश्य के चट्टान से टकरा कर तड़प-तड़प कर बिलकती थी, झुँझलाती और कोसती थी। और पत्र न लिखने की सौ-सौ प्रतिज्ञाएँ करती थी। मगर फिर अपनी व्यथा से अधीर होकर अलिन्द को आने के लिए मिन्नतें पर मिन्नतें करती थी। एक दफ़े उसने यहाँ तक लिखा कि "अलिन्द यदि यह पाखण्डी देश हम लोगों के सम्बन्ध को साधारण दृष्टि से भी नहीं देख सकता तो आओ हम लोग चल कर अन्य देश में रहें। वहाँ मामूली तौर से गुज़र-बसर करने के लिए मेरे पास काफ़ी रुपए हो गए हैं। और तुम्हारी कला का आदर भी विदेश ही में यथेष्ट हो सकता है। ईश्वर के लिए यदि मुझसे किसी बात पर रुष्ट हो तो उसे भूल जाओ। मुझे क्षमा करो और पत्र देखते ही चले आओ। मैं आज ही बैङ्क से अपने सभी रुपए निकाल कर अपने पास किए लेती हूँ। ताकि तुम्हारे आने यहाँ से रवाना होने में तनिक भी विलम्ब न हो।"

इसके बाद वाले पत्र में उसने लिखा था कि "विदेश चल कर तुम्हारे साथ रहने की उमङ्ग में मैं ऐसी आपे से बाहर हुई कि अपने सब रुपए बैङ्क से निकाल कर अपने पास रक्खे और नौकरी भी पहिले ही से छोड़ देने की ठानी। मगर हाय! उसी रात को मैं लुट गई। मेरे सब माल-असबाब चोरी चले गए। मेरा सुख-स्वप्न सब नष्ट हो गया। हत्यारे चोरों ने एक झम्मी कौड़ी भी नहीं छोड़ी। उफ़! बुढ़ापे का सहारा भी जाता रहा। रूप-यौवन जब मुझसे एकदम ही मुँह मोड़ लेंगे, तब कैसे पेट पालूँगी? कौन मुझे इतनी लम्बी तनख़्वाह देगा? उसी दिन के लिए मैंने कौड़ी-कौड़ी जोड़ी थी। जाने दो। अगर भाग्य मुझे तुम्हारे साथ रानी बन कर नहीं रहने दे सकता तो तुम्हारी दासी बन कर रहूँगी। समाज के भय से या अपने हृदय के अब बदल जाने से तुम मुझे अर्धाङ्गिनी या प्रेमपात्री का स्थान नहीं देना चाहते तो मुझे सेविका ही समझ कर अपने पास रहने दो। अपने उस प्रेम के नाम पर, जिसको तुमने मुझसे कभी किया था, बस इतनी ही भीख मुझे प्रदान करो। मैं अपना पेट किसी तरह आप पाल लूँगी। तुम जिसको चाहो प्यार करो, जिससे चाहे ब्याह करो, ...आह! इस बीच में शायद तुम्हारा विवाह हो गया है। बस-बस, यही बात है, ज़रूर यही बात है। उफ़! आज समझी। तभी तुम चुप हो। तुम्हें यह बात कहने का मुझसे साहस नहीं होता होगा। मगर अलिन्द, मैं तुम्हारे सुखों में तनिक भी बाधा नहीं डालना चाहती। मुझे तो केवल तुम्हारी सेवा करने की अभिलाषा है। मैं इतने ही में अपने हृदय को सन्तोष दे लूँगी। अपने चरणों में मुझे लगी रहने दो। इतनी तो दया करो अलिन्द। अब तो अपने मुँह से कह दो कि चली आओ। मैं सर के बल दौड़ी आऊँगी। अगर अब भी उत्तर न दोगे तो मैं ठीक पन्द्रहवें दिन तुम्हारे पास पहुँच जाऊँगी। देखें आँखें चार होने पर तुम किस तरह दुतकारते हो।"

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

इस पत्र में इसी तरह और बहुत सी बातें थीं। हर वाक्य से आशा और निराशा टपकती और प्रत्येक शब्द में वेदना कूट-कूट कर भरी थी। मगर अब तक मुझे वह बात न मिली जिसे मैं ढूँढ़ रहा था। और उसका अब अन्तिम ही पत्र पढ़ने को रह गया था, जो रजिस्ट्री लिफ़ाफ़े की तारीख़ से बीस ही दिन पहिले का लिखा था। धड़कते हुए दिल से उसे पढ़ने लगा।

जहानारा का अन्तिम पत्र

वज्रहृदय,

आख़िर तुम भी उसी अन्यायी और विश्वासघाती पुरुष जाति ही के कीट निकले। अरे कठोर! अरे निर्दयी! यही तुम्हारा प्रेम था, कि नज़रों से दूर होते ही मुझे ऐसे भूले कि बरसों गिड़गिड़ाने पर भी तुम न पिघले? उफ़! मनुष्य नहीं, तुम साक्षात् हत्यारे हो। जाओ मैं भी तुम्हें नहीं प्यार करती।.....आह! क्या बक गई? नहीं-नहीं, ईश्वर के लिए यह न समझना। हाथ जोड़ती हूँ, पैरों पर गिरती हूँ। प्रीतम, मैं और तुमको न प्यार करूँ? सूर्य का पश्चिम निकलना सम्भव हो तो हो, मगर यह नहीं हो सकता। हाँ, यह नहीं हो सकता कि मेरे हृदय से तुम्हारा प्रेम उठ जाए। तुम्हारी उदासीनता से मैं पुरुष जाति को और भी घृणा करने लगी सही, परन्तु तुमसे नहीं। इसीलिए हर बार तुमसे अनादर पाकर भी तुम्हारे ही चरणों में लिपटने को दौड़ती हूँ। और तुम ऐसे पत्थर हो कि ठोकरों से भी बात नहीं करते।

इस दफ़े तुम्हारा उत्तर न पाकर मैं पन्द्रहवें दिन तुम्हारे पास आने को तैयार थी। मगर तब जाना कि मैं बन्दी हूँ। मेरी कार्रवाइयों पर इस थियेटर के मालिक की बड़ी कड़ी निगाह है। यह बरसों से मेरे पीछे, साए की तरह, लगा हुआ है। इसने आमदनी के ख़्याल से नहीं, बल्कि मेरे ही लिए यह कम्पनी खोली थी। मगर अब तक मैं इसे अपने हृदय में तनिक भी स्थान न दे सकी और न कभी दे सकती हूँ। यद्यपि यह मेरा कुछ बिगाड़ नहीं सकता—क्योंकि यह जाने रहो कि स्त्री अगर स्वयं न बिगड़ना चाहे तो एक पु प अकेला, चाहे वह कितना ही शक्तिशाली क्यों न हो, उसका बाल भी बाँका नहीं कर सकता—फिर भी इसके पञ्जे से मैं नहीं निकल पाती। इसीलिए मेरे आने की सभी कोशिशें बेकार हुईं। मैं कलेजा मसोस कर रह गई और भविष्य में किसी तरह चुपचाप भागने की ताक में थी।

इसी बीच में कम्पनी ने भ्रमण करने का इरादा किया। क्योंकि मालिक की लापरवाही से इसकी आर्थिक दशा बहुत ख़राब होगई। उसे तो रातोदिन मेरी चौकीदारी करते बीतती है, उसे आमदनी की फ़िक्र कैसे होती? बिना अन्य नगरों में भ्रमण किए इसकी दशा किसी तरह से भी सुधरती हुई नहीं जान पड़ी, तब कर्मचारियों के आग्रह पर इस मण्डली को अपनी यात्रा पर निकलना पड़ा। मैंने सोचा कि बम्बई से बाहर मुझे भागने का अधिक सुअवसर मिल सकता है। ईश्वर की कृपा से एक नगर में जब मण्डली तमाशा करने के लिए गई हुई थी, मुझे ऐसा मौक़ा भी मिला और मैं भाग कर स्टेशन आई। काशी के लिए टिकट लेकर गाड़ी का इन्तज़ार करने लगी। वैसे ही मेरे हृदय पर एक ऐसा वज्राघात हुआ कि मुझे काठ मार गया और मैं मूर्च्छित होकर वहीं वेटिङ्गरूम में बैठी की बैठी रह गई।

जब मैं टिकट लेकर वेटिङ्गरूम में जा रही थी तो देखा कि एक बुढ़िया, जो अभी मुसाफ़िरों से पैसे माँग रही थी, सहसा मेरी तरफ़ झपटी। लोग मुझे सङ्केत करके चिल्ला पड़े कि भागो-भागो, यह पगली है, पगली। मैं घबड़ा कर खड़ी हो गई और बुढ़िया मुझसे चिमट गई। अब जाना कि यह तो साढ़े सात बरस की बिछुड़ी हुई मेरी दासी है। मैं भी उससे लिपट गई। लोग चकित होकर तमाशा देखने लगे।

दासी के लक्षण पगली से अवश्य प्रतीत होते थे, मगर उसकी बातों से पहिले मुझे कुछ भी पागलपन का आभास नहीं हुआ। मैं समझे हुए थी कि मेरी बच्ची अपने पिता के पास पहुँच कर अपने ठिकाने लग गई। और मैं संसार की दृष्टि में मर चुकी थी। इसलिए मैंने उसकी तरफ़ से अपना दिल पत्थर करके उसकी कोई खोज-ख़बर नहीं ली, यद्यपि उसकी याद की वेदना मेरे हृदय में बराबर उठा करती थी। मगर दासी की ज़बानी उसका हाल सुन कर मैं एकाएक सकते में आ गई। वह रो-रोकर केवल इतना ही बता सकी कि जब वह बच्ची को लेकर मेरे पति जी के पास पहुँची तो वह उसकी पीठ पर अपना नाम देखते ही जल मरे और उस नाम को संसार की दृष्टि से मिटाने के लिए अपनी ही लड़की की,

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

अपने हाथ से, जान लेने को तैयार हो गए। दासी उनसे बच्ची छीन कर भागी। एक स्टेशन पर जब गाड़ी खड़ी हुई, वह उसे बेञ्च पर सुला कर पानी पीने के लिए उतरी। मगर लौट कर फिर न चढ़ सकी। गाड़ी छूट गई। उस डब्बे में केवल एक स्त्री और थी। तब से उसे मेरी बच्ची का कुछ भी पता न मिला। वह उसकी खोज में न जाने कहाँ-कहाँ भटकती फिरी। और स्टेशनों पर गाड़ी में घुस-घुस कर वह बराबर उसीको ढूँढ़ती है। इसके लिए कई दफ़े वह चोर और पगली समझ कर जेलख़ाने में बन्द की भी जा चुकी। मगर उसकी यह आदत नहीं छूटी। यह सुनते ही मैं अपनी छाती पीट-पीट कर रोने लगी।

इतने में गाड़ी की घड़घड़ाहट सुनाई पड़ी। दासी की आँखें चमक उठीं। वह बिजली की तरह यह चिल्लाती हुई प्लेटफ़ॉर्म पर दौड़ी कि रोको गाड़ी, मेरी बच्ची उसमें है। आवेश में वह प्लेटफ़ॉर्म के नीचे गिर पड़ी। दूसरे ही क्षण उसकी लाश पहियों के नीचे टुकड़े-टुकड़े होने लगी। मेरा सर चकरा गया। मैं मूर्च्छित हो गई। होश आने पर देखा कि थियेटर का मालिक और कर्मचारीगण मेरे पास खड़े हैं। तब से मैं जीवित रह कर भी मुर्दे से बत्तर हो गई। हरदम बुख़ार सा बना रहता है। कुछ भी अच्छा नहीं मालूम होता। किसी तरह कर्त्तव्यवश रङ्गमञ्च पर जाती हूँ, मगर वहाँ से आते ही बिस्तरे पर गिर पड़ती हूँ। और दिन भर कोने में पड़ी रहती हूँ। रोने के लिए मेरी आँखों में आँसू तक नहीं। दिनोंदिन मेरी हालत गिरती जाती है। अलिन्द, तुमसे मुझे बड़ी आशाएँ थीं। मगर तुमने भी धोखा दिया। मेरा एक भी पत्र वापस नहीं आया। इसलिए अब मैं कैसे सोच सकती हूँ कि तुम्हें मेरे पत्र नहीं मिलते या तुम अपने ठिकाने पर नहीं हो या स्वर्गलोक में बैठ मेरी प्रतीक्षा कर रहे हो? नहीं-नहीं, यह बात नहीं हो सकती। तुम्हारे पास मेरे पत्र पहुँचते ज़रूर हैं। मगर जान पड़ता है कि तुम उन्हें बिना पढ़े ही फाड़ डालते हो। हर तरह से तुमसे निराश होकर दिल में कभी थी कि तुम्हें अब कुछ न लिखूँगी। मगर विपत्ति में अपने निजी जनों की याद बुरी तरह उमड़ती है। तुम्हारे सिवाय इस संसार में मेरा अपना कहने के लिए कौन था? तुमने मेरे साथ जैसी भी हृदयहीनता की है, उसे ईश्वर ही जानते होंगे। फिर भी यह दिल तुम्हें अपना समझने से बाज़ नहीं आता। इसलिए तबियत को रोक न सकी और लिखने बैठ गई। अगर तुममें दया न सही, कुछ मनुष्यत्व भी हो तो कृपया एक दफ़े आकर दर्शन दे जाओ। क्योंकि मेरी अवस्था अब ऐसी नहीं है कि यहाँ से निकल भागूँ। एक अनुरोध और भी करती हूँ। अगर मेरी बच्ची जीवित हो तो इस समय आठ बरस की हुई होगी। वह अपने पिता पर नहीं, बल्कि मुझी पर पड़ी थी। इसलिए रङ्ग-रूप उसके मेरे ही से होंगे। कमर पर गोदना है। गले में उसके मैंने चाँदी की तावीज़ भी पहना दी थी, जिसमें उसकी कुण्डली और उसके पिता का नाम-ठिकाना भी लिख कर भर दिया था। संसार में उसके कोई है तो मेरे प्रेम के नाते बस तुम्हीं हो। उसे अपनी ही बच्ची जान कर ढूँढ़ो। अगर मिल जाए तो उसके संरक्षक बन कर उसकी रक्षा करो।

तुम्हारी ठुकराई हुई,

—दर्शनों की प्यासी जहानारा

जहानारा के सभी पत्र समाप्त हो गए। फिर भी उसके सम्बन्ध में मेरी उत्सुकता न मिटी। अब किस तरह से उसका शेष हाल जानता? इतने में उस हत्यारे के अधूरे पढ़े हुए अङ्गरेज़ी पत्र की याद पड़ी, जिसने जहानारा के पत्रों को रोक कर यह सब अनर्थक काण्ड रच दिया था। मुझे उसके छूने तक से घृणा थी, मगर अब उसे समाप्त करने के लिए विवश हो गया।

हत्यारे हुर्मुज़ जी के अङ्गरेज़ी पत्र का शेषांश

मेरा भाग्य इस तरह एकाएक बिगड़ जाने पर भी मेरे दिल से जहानारा की प्राप्ति की लालसा न मिटी। जानता था कि वह अच्छी होते ही मेरे चङ्गुल से सदा के लिए निकल जाएगी। क्योंकि अब मैं उसे धनबल से अभिनेत्री की हैसियत में रख नहीं सकता था। सौभाग्य से वह अपनी बीमारी के कारण चारपाई से हिल नहीं सकती थी और उसका पक्ष करने वाले कर्मचारीगण से भी मुझे छुट्टी मिल चुकी थी। ऐसा सुअवसर मेरे लिए छोड़ने का न था। मुझे आशा थी कि इस अनुकूल परिस्थिति में उसे झक मार कर मेरे अनुकूल होना पड़ेगा। यद्यपि धन से हाथ धो बैठा था, तथापि अपनी कोठी किराए पर चला कर उसके साथ जीवन व्यतीत करने का सहारा था। इसी इरादे से मैं शादी का प्रस्ताव लेकर कई बार उसके पास गया। मगर इसे सुन कर उसकी आँखों से न जाने

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

कैसी चिनगारियाँ निकलने लगती थीं कि मैं सहम कर अपना सा मुँह लिए लौट आता था। अन्तिम भेंट में उसकी झिड़कियों से मैं जल मरा और गुस्से में उससे कह बैठा कि देख, तुझसे आज बताता हूँ कि मैंने तेरे ही लिए अपनी स्त्री तक की हत्या कर डाली, फिर भी तू मेरा कहना नहीं सुनती। अगर आज भी तुम मुझे वही जवाब दोगी, तो क़सम है, तुम्हारी भी जान ले लूँगा। बोलो, अब भी मानती हो या नहीं? इस पर वह घृणा से और भी तिलमिला उठी। मुँह फेर कर बोली—"अरे हत्यारे! तू ख़ूनी भी है? उफ़! मैं नहीं जानती थी। हट जा सामने से, ओ पापी कुत्ते! नहीं अभी चिल्ला कर तुझे पकड़वा दूँगी। हट जा! हट जा! दूर हो जा!"

ख़ूनी का शब्द कान में पड़ते ही मेरा कलेजा काँप उठा। अब समझा कि मैंने कैसी बड़ी मूर्खता की कि अपने किए हुए गुप्त पाप का अपने आप ही जोश में एक गवाह पैदा कर बैठा, जिसका मुँह बिना बन्द किए किसी तरह से भी मेरे प्राणों की कुशलता न थी। एक हत्या को छिपाने के लिए दूसरी हत्या करना ज़रूरी हो गया। अपनी जान बचाने की धुन के आगे प्रेम के मनसूबे चूल्हे में गए। दूसरे ही क्षण मेरी उँगलियों ने चील की तरह झपट कर जहानारा का गला अपने चङ्गुल में ऐसा दबोचा कि वह हमेशा के लिए चुप हो गई।

मगर अब लाश देख कर मेरे होश उड़ गए। आँखें निकल पड़ीं। पैर लड़खड़ाने लगे। मेरे रोम-रोम में बदहवासी छा गई। मारे घबराहट के मैं आप मरने लगा। कोठी के भीतर मेरे लिए ज़रा देर भी रहना मुश्किल हो गया। ईंट-पत्थर, फ़र्श, मेज़, कुर्सी, सभी एक ज़बान से कह रहे थे, भागो। मैं पागलों की भाँति उसीके भीतर चक्कर खा कर रह जाता था। आख़िर भागने की ठानी। मगर क्या लेकर भागता? मेरे रुपए-पैसे तो मकान में रहते न थे। और बैङ्क का दिवाला पहिले ही निकल चुका था। सहसा जहानारा के नोटों के बण्डल की याद आई, जिनको मैंने उसके चोरी गए हुए सामान से निकाल कर चुपके से अपने पास रख लिया था। मैं जल्दी से उसको निकाल लाया। उसीके साथ उसके यह सब ख़त भी, जिनको मैं डाकख़ाने पहुँचने के पहिले ही रोक-रोक कर वहीं रखता जाता था, चले आए। अब फ़िक्र हुई कि लाश को किस तरह छिपाऊँ। परेशानी में कोई भी युक्ति न सूझी तो मैंने अपनी कोठी में आग लगा दी।

आग और धुएँ ने मेरे इस पाप को ढक लिया और दुनिया यही जानती है कि जहानारा की मृत्यु केवल अग्नि-घटना से हुई। सभी मेरी इस दुर्दशा पर मेरे साथ सहानुभूति कर रहे हैं। मगर मेरी आत्मा मुझे कोड़े पर कोड़े मार रही है। क्षण भर भी मुझे चैन नहीं लेने देती। जिस प्राण की रक्षा के लिए मैंने यह पाप किया, हाय! वही कम्बख़्त अब मेरा कट्टर दुश्मन बन कर मेरे कलेजे में सोते, उठते, बैठते, हरदम बर्छियाँ भोंक रहा है। कठिन से कठिन प्रायश्चित्त भी मुझे इस सन्ताप से नहीं बचा सकता। चार दिन से एक घूँट पानी तक अपने मुँह में नहीं डाल सका। जहानारा के रुपए मेरे पास मौजूद हैं। उनके बल पर मैं फिर दौलतमन्द हो सकता हूँ। मगर हाय! अब तो न जाने मुझमें कैसा अनोखा परिवर्त्तन हो गया कि भूख से तड़प रहा हूँ, फिर भी वे रुपए मुझसे नहीं ख़र्च किए जाते। जी में यही आता है कि उसकी लड़की को ढूँढ़ कर इसे दे दूँ, इस तरह शायद मुझे कुछ शान्ति मिले। मगर जहानारा ने अपने ख़तों में, जिनसे यह भेद मुझे मालूम हुआ, कहीं का नाम-ठिकाना भी नहीं दिया है। मैंने उससे इस डर से इस विषय पर कभी पूछ-पाछ भी नहीं की कि कहीं वह ताड़ जाए कि उसके ख़त रोके जाते हैं। इसलिए उसकी लड़की को कहाँ ढूँढ़ने जाऊँ? और मुझमें एक क्षण से भी अधिक अपनी सन्तापी आत्मा को अपने पास रखने की अब सहनशीलता नहीं है। इसी कारण इन्हें आपके पास भेज कर यह भार आप पर सौंप रहा हूँ। उफ़! कलेजा फुँका जाता है। बस विदा, इस संसार से विदा। देखूँ नरक में भी मुझे जगह मिलती है या नहीं। मैंने केवल हत्याएँ नहीं कीं, बल्कि एक दिल भी तोड़ा है। और वह भी जहानारा का ऐसा दिल। आह! इसका पाप आप पर नहीं, मुझ पर है।

अपने कर्मों का फल भोगने वाला,

—हुर्मुज जी

इस पत्र को अन्त तक पढ़ना मेरे लिए विष का घूँट पीना था। मेरी आँखों में ख़ून उतर आया। मगर मैं दाँत पीस कर रह गया।

(क्रमशः)

(Copyright)

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

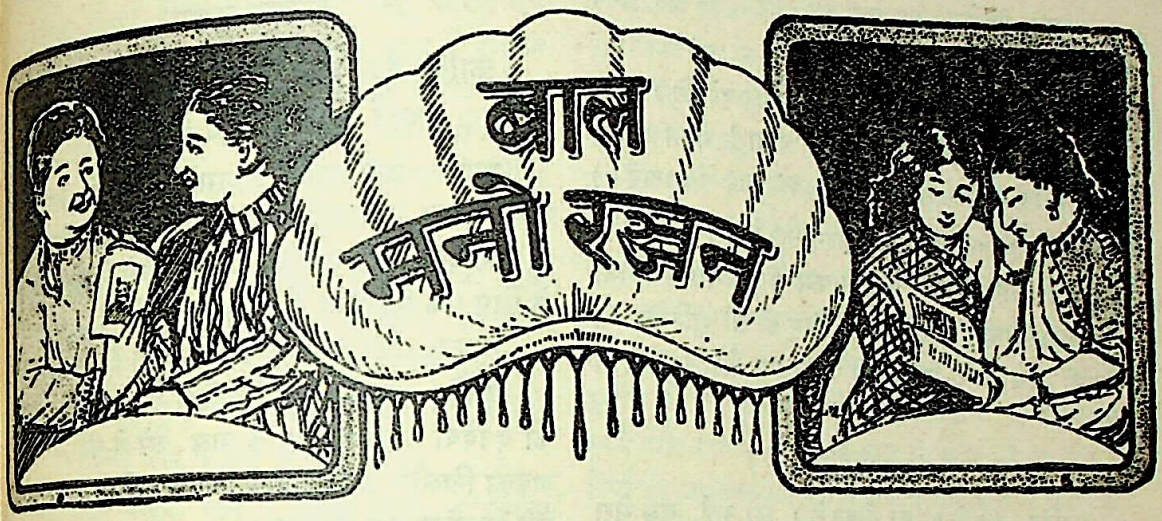

दयालु लड़का

पात्र—

१—जाफ़र
२—क़ादिर (जाफ़र का छोटा भाई)
३—बूढ़ा
४—मोहन (बूढ़े का बेटा)
५—दूकानदार

पहला दृश्य

(जाफ़र आरामकुर्सी पर लेटा हुआ अख़बार देख रहा है। क़ादिर आता है।)

क़ादिर—(जाफ़र से) भाई साहब, आपको मालूम है, आज शहर के बाहर मेला भरेगा? मैं भी देखने जाऊँगा। क्या आप मुझे दो-चार पैसे न देंगे?

जाफ़र—क़ादिर! पैसे तो तुम्हें ज़रूर मिलेंगे। पर यह बताओ कि तुम उनका करोगे क्या?

क़ादिर—कोई चीज़ पसन्द आ जाएगी तो लेता आऊँगा।

जाफ़र—(इकन्नी देकर) अच्छा, इतने पैसों से काम चल जाएगा न?

क़ादिर—(इकन्नी लेकर) बस-बस, बहुत हैं।

(चला जाता है)

दूसरा दृश्य

(खिलौनों की दूकान। दूकानदार खिलौनों की गर्द झाड़ रहा है। क़ादिर आता है।)

दूकानदार—(क़ादिर से) क्यों बाबू! कुछ लोगे? कौन-कौन से खिलौने पसन्द किए?

क़ादिर—(दस-पाँच खिलौने उठा कर देखता है और फिर एक को हाथ में लेकर) इस तोते की क्या क़ीमत होगी?

दूकानदार—वह तोता? तुम्हें दो आने में दे दूँगा।

क़ादिर—अरे! कहते क्या हो! दो आने तो बहुत होते हैं। मैंने देखा है कि ऐसे तोते चार-चार पैसे में बिकते हैं। चार पैसे में देना हो तो दे दो।

दूकानदार—अच्छा भई, तुम्हारी ही बात सही। लाओ पैसे।

(क़ादिर पैसे देता और खिलौना लेकर चला जाता है।)

तीसरा दृश्य

(स्थान—रास्ता। बूढ़ा जा रहा है। साथ में मोहन है और बूढ़े के हाथ से झूलता जाता है।)

मोहन—मैं नहीं मानूँगा। मुझे भी एक खिलौना ले दो। सब तो ले रहे हैं।

बूढ़ा—बेटा! कहाँ से ले दूँ? मेरे पास पैसा हो, तब न! कितने बार कहूँ?

मोहन—हूँ ऊँ! ले दो दादा। मैं काहे से खेलूँगा?

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

(क़ादिर खिलौना लिए आता और बाप-बेटे की बातें सुनने लगता है।)

मोहन—(क़ादिर का खिलौना देख कर बूढ़े से) बस दादा ! ऐसा ही मुझे भी ले दो। अहा ! कैसा अच्छा सुआ है। (क़ादिर के खिलौने की ओर बड़ी चाह से देखता है।)

बूढ़ा—(ठण्डी साँस लेकर मोहन से) बेटा ! कहाँ से ले दूँ ऐसा खिलौना ? चार पैसे से कम में न मिलेगा। यहाँ एक भी पैसा नहीं। भोजन के लिए ही तो मुश्किल से चार-छः पैसे कमा पाता हूँ। मान जा बेटा ! फिर ले दूँगा।

(मोहन रोने लगता है)

क़ादिर—(आगे बढ़ कर मोहन से) लो भई, तुम मेरा खिलौना ले लो। रोओ मत। बूढ़े बाप को हैरान मत करो।

बूढ़ा—(क़ादिर से) रहने दो भैया !

क़ादिर—नहीं-नहीं बाबा ! मोहन भी मेरा भाई है। वही इस खिलौने से खेलेगा। हर्ज़ क्या है।

बूढ़ा—भगवान् तुम्हारा भला करे भैया !

(क़ादिर मोहन को खिलौना देकर चला जाता है।)

चौथा दृश्य

(क़ादिर का घर। क़ादिर और जाफ़र दोनों बातें करते दिखाई देते हैं।)

जाफ़र—अरे क़ादिर ! तुमने उन पैसों का क्या किया ? कुछ लाए नहीं ? कहीं गिरा तो नहीं दिए ?

क़ादिर—भाई साहब ! मैंने उन पैसों से छोटी बहिन के लिए एक खिलौना लिया था।

जाफ़र—फिर कहाँ है वह खिलौना ?

क़ादिर—रास्ते में वह खिलौना मैंने एक ग़रीब लड़के को दे दिया। उसके बाप के पास पैसे थे नहीं, बेचारा लड़का खिलौने के लिए रोने लगा। मुझे दया आ गई। मैंने खिलौना उसे दे दिया।

जाफ़र—(ख़ुश होकर) अच्छा ! पर खिलौना दे डालने से तुम्हें कुछ रन्ज तो नहीं हुआ ?

क़ादिर—नहीं। रन्ज क्यों होगा ? मुझे तो ख़ुशी है कि मैंने खिलौना देकर एक ग़रीब लड़के को ख़ुश किया।

जाफ़र—तब तो भाई, तुमने बड़ा अच्छा काम किया।

(भीतर से आवाज़ आती है—'अरे जाफ़र ! ओ क़ादिर!' दोनों चले जाते हैं।)

* * *

(१३३ वें पृष्ठ का शेषांश)

मालिश और विश्राम से आँखों में नया प्रकाश आ गया था। आँखें पहले की अपेक्षा मुझे बड़ी मालूम होने लगी थीं; तारे और भी अधिक चमकने लगे थे और आँखों से तेज, ओज और जीवनी शक्ति टपकने लगी थी। ऐसा स्वास्थ्यप्रद अनुभव मेरे जीवन में पहले मुझे कभी नहीं हुआ था।"

ऊपर नेत्र-स्नान का जो ज़िक्र आया है, उसके अनुसार भारतीय स्त्री-पुरुषों को त्रिफला—हर्रे, बहेरा और आँवले—के पानी से नेत्र-स्नान कराना सदैव लाभदायक है। मुझे विश्वास है, ऊपर जिन उपचारों का उल्लेख हुआ है उनसे प्रत्येक स्त्री-पुरुष अपनी आँखों को स्वस्थ और सुन्दर बनाए रख सकता है।

—रतनलाल मालवीय, बी० ए०

* * *

खाँसी क्यों आने लगी ?

कुछ दिन हुए शिब्बू को खाँसी चलने लगी थी। पहले तो उसने चिन्ता न की, पर खाँसी दिनों-दिन बढ़ती गई। इसके बाद शिब्बू को हलका बुख़ार भी आने लगा। अब बेचारा शिब्बू बहुत परेशान रहता, धीरे-धीरे वह दुबला-पतला हो चला। उसके गुलाबी गाल पिचक गए, उन पर कालिख छा गई।

शिब्बू की यह दशा देख, उसके पिता मोहन बाबू को बड़ी चिन्ता हुई। एक दिन वे उसे अपने साथ अस्पताल लिवा ले गए। डॉक्टर साहब से उनकी दोस्ती थी। उन्होंने एक कुर्सी पर बैठ कर डॉक्टर साहब से कहा—"बाबू साहब, ज़रा शिब्बू की दशा तो देखिए। इसकी जाँच कर लीजिए, और कुछ ऐसी दवाई दीजिए, जिससे यह जल्दी अच्छा हो जावे।"

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

डॉक्टर साहब शिब्बू को अच्छी तरह जानते थे। उसकी हालत देख कर उन्हें बड़ा दुःख हुआ। उन्होंने शिब्बू से पूछा—"बेटा, तुम्हें क्या तकलीफ़ है?" शिब्बू ने जवाब दिया—"बाबू साहब, मुझे ज़ोरों से खाँसी चलती है। रात को थोड़ा बुख़ार भी हो आता है। रोटी अच्छी तरह नहीं खाई जाती।"

डॉक्टर साहब ने शिब्बू की छाती और पीठ की जाँच की। फिर उससे कहा—"अच्छा मुँह खोलो।" शिब्बू ने मुँह खोल दिया। डॉक्टर साहब ने पास रक्खे हुए एक काँच की सहायता से उसका मुँह और गला भी अच्छी तरह देखा। इसके बाद वे कुछ सोचने लगे।

इसी समय मोहन बाबू ने उनसे पूछा—"डॉक्टर साहब, शिब्बू की यह हालत क्यों हुई?" डॉक्टर साहब ने मुसकुरा कर उत्तर दिया—"बीड़ी पीने से।"

यह सुन कर मोहन बाबू को बड़ा अचरज हुआ। उन्होंने कहा—"डॉक्टर साहब, आप कहते क्या हैं! मेरा शिब्बू बीड़ी नहीं पीता, मैंने कभी इसे बीड़ी पीते नहीं देखा।" डॉक्टर साहब बोले—"आपने न देखा होगा। पर यह बीड़ी पीता ज़रूर है, बीड़ी पीने से ही इसकी यह दशा हुई है। यह आपकी चोरी से बीड़ी पिया करता है।" फिर उन्होंने शिब्बू से पूछा—"बेटा शिब्बू, तुम सच बतलाओ, बीड़ी पीते हो या नहीं?"

शिब्बू ने उत्तर दिया—"हाँ डॉक्टर साहब, मैं पिता जी की चोरी से बीड़ी पीता हूँ। मेरे साथ पढ़ने वाले और भी कई लड़के छिप-छिप कर बीड़ी पिया करते हैं। पर बीड़ी पीने से तो कोई बीमार नहीं होता—मैं ही क्यों हुआ?"

डॉक्टर साहब ने हँस कर उत्तर दिया—"जान पड़ता है, तुमने उन्हीं ख़राब लड़कों के साथ रह कर बीड़ी पीने की आफ़त मोल ले ली है। बेटा, तुम्हारा यह कहना ठीक नहीं कि बीड़ी पीने से कोई बीमार नहीं होता। तमाखू बुरी चीज़ है। उसके पीने से सभी बीमार होते हैं। कोई कम कोई अधिक। तमाखू में एक तरह का विष होता है, जो धुएँ के साथ आदमी के पेट में जाकर तरह-तरह की ख़राबियाँ पैदा करता है। वह विष के धुएँ के साथ फेफड़ों और गले की नली में जम जाता है। इसीसे धीरे-धीरे कफ पैदा होने लगता और खाँसी चलने लगती है। विष और धुएँ की गर्मी से ख़ून पतला पड़ता है। मुँह की लार भी पतली हो जाती है और मनुष्य बार-बार थूकने का आदी हो जाता है। इस प्रकार बहुत सी लार बरबाद हो जाती है। यह लार भोजन पचने में बड़ी सहायता पहुँचाती है। परन्तु उसकी कमी से भोजन भली भाँति नहीं पचता, इसीसे भोजन करने में रुचि नहीं रहती। कफ-खाँसी के बढ़ने और हाज़मे के बिगड़ जाने से और भी कई बीमारियाँ हो जाने का डर रहता है। तमाखू पीने से बहुत से मनुष्यों को तपेदिक़ और दमे की बीमारियाँ भी हो जाती हैं, जिनसे फिर उनका बचना कठिन हो जाता है। तमाखू में एक बड़ा ऐब यह भी है कि उसके पीने से मनुष्य आलसी हो जाता है, और कभी-कभी उसके पीने से मुँह से बुरी बास भी आने लगती है। बेटा शिब्बू, यदि तुम अच्छे होना चाहते हो तो आज से ही तमाखू पीना छोड़ दो।"

शिब्बू ने घबरा कर कहा—"तो डॉक्टर साहब, आप मुझे कोई दवाई न देंगे?"

डॉक्टर साहब बोले—"नहीं शिब्बू, मैं तुम्हें दवाई तो ज़रूर दूँगा। पर जब तक तुम तमाखू पीना न छोड़ोगे तब तक दवाई से कुछ फ़ायदा न होगा।"

शिब्बू की समझ में डॉक्टर साहब की बातें आ गई थीं, उसने कान पकड़ कर कहा—"डॉक्टर साहब, अब मैं कभी तमाखू नहीं पिऊँगा, आप मुझे ज़रूर दवाई दीजिए।"

डॉक्टर साहब ने एक शीशी में शिब्बू को दवाई दी। उसके पीने से कुछ दिन में उसकी तबियत बिलकुल अच्छी हो गई। अब कोई शिब्बू से कहता है—"क्यों भई तुम भी तमाखू पियोगे?" तो वह यही जवाब देता है—"साहब, बचने भी दीजिए इस बला से।"

—ज़हूरबख़्श

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

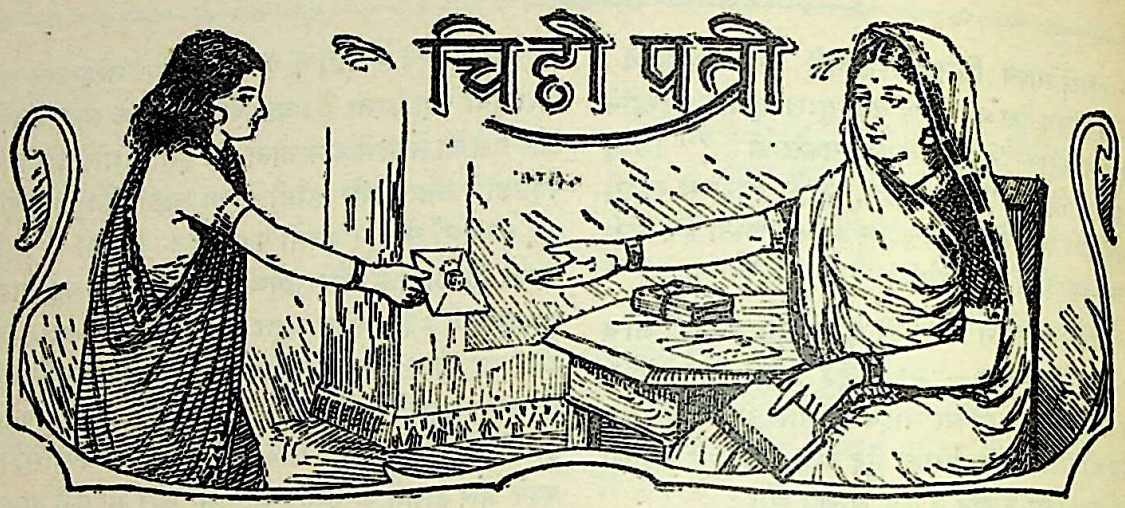

सभा में स्त्रियों का व्यवहार

गोरखपुर से एक बहिन अपने २४ सितम्बर सन् १९३० के पत्र में लिखती हैं—

सम्पादक जी,

सादर नमस्ते !

कल हमारे राष्ट्रपति पं० जवाहरलाल नेहरू की वीर पत्नी हम लोगों को दर्शन देने तथा देश-सेवा का पवित्र उपदेश सुनाने के अभिप्राय से गोरखपुर आई थीं। यहाँ की सभी दर्शनाभिलाषी औरतें सभा में उपस्थित हुईं। पर बहुत सी स्त्रियों ने इस क़दर शोर मचाया कि हमारी पूजनीया बहिन ऊब कर पण्डाल के बाहर निकल आईं। हम लोगों ने वहाँ जाकर उनके दर्शनों का ही लाभ उठाया, परन्तु उनके पवित्र तथा कल्याणमय उपदेश सुनने का हमें सौभाग्य प्राप्त न हुआ। उसका हमें इतना अफ़सोस हुआ कि लेखनी द्वारा प्रगट नहीं कर सकतीं। हमारी बहिनें सभा में जाने को तो फ़ौरन तैयार हो जाती हैं, पर वहाँ ज़रा भी शिष्टाचार का पालन नहीं करतीं। छोटी-छोटी बातों में लड़ने और गाली बकने में हमारी बहिनें जितनी निपुण होती हैं, उतनी अगर गृहस्थी के कार्यों में निपुण होतीं तो पुरुष अपना धन्य भाग्य मानते।

सम्पादक जी, हमारी बहिनें लड़ती तो आपस में हैं, मगर एक दूसरी के सात पुश्त को स्वर्ग से नरक में गिरा देती हैं। इसका अनुभव मुझे कल ही हुआ। मैंने एक बहिन से कहा—"बहिन, ज़रा शान्त होकर बैठो। देखो, एक बहिन तो इतनी दूर से कष्ट उठा कर आई हैं और तुम इस क़दर लड़ रही हो।" तब वह बोली—"तुम हमें चुप रहने को तो कहती हो, मगर और इतनी औरतें जो शोर मचा रही हैं, उन्हें क्यों नहीं रोकतीं?" भला इस कठहुज्जत का क्या जवाब था, मैं चुप रह गई। अगर हर एक स्त्री इसी तरह सोच ले कि जब सब स्त्रियाँ शोर मचा रही हैं, तब मैं ही ऐसे मौक़े पर क्यों चूकूँ तो सभा में कैसी हालत हो? यदि सब बहिनें एक दूसरी की बातों को ज़्यादा नहीं, सिर्फ़ एक घण्टे के लिए सह लें तो क्या बुराई है, चाहे दूसरे वक़्त इसकी कसर लड़ कर, गाली देकर, मार-पीट करके दुगनी, चौगुनी, अठगुनी निकाल लें? अन्य जगहों के लोग जिस पूजनीया बहिन का स्वागत करते हैं, जिसके सम्मान में जुलूस निकालते हैं, बड़े शोक की बात है कि गोरखपुर के स्त्री-पुरुषों ने उनके स्वागत करने से तो कुछ कम, परन्तु उनके उपदेश सुनने से बहुत ज़्यादा मुँह मोड़ा है।

हमारी बहिन कमला नेहरू ने लालडिग्गी के पण्डाल के नीचे खड़े होकर जो शब्द कहे थे वे हम लोगों के लिए बड़े मार्के के हैं, क्योंकि हम इतने दिनों के बाद भी उन पर अमल नहीं कर सके हैं। हमारी पूजनीया बहिन ने यों तो बहुत सी बातें कहीं; पर विदेशी कपड़े को छोड़ने और स्वदेशी वस्त्र को अपनाने पर उन्होंने ख़ास तौर से ज़ोर दिया। परन्तु विदेशी वस्त्रों को त्यागने की बात कौन कहे, यहाँ तो लोग सोचते हैं कि आजकल विदेशी कपड़ा बहुत सस्ता मिलेगा, लाओ चोरी-चोरी जो कुछ ख़रीद सकें, ख़रीद कर रख लें। यहाँ के कहारों ने पञ्चायत करके दारू या ताड़ी का पीना बन्द कर दिया है। अबकी काली-पूजा पर, जो कहार लोग करते हैं,

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

दारू या ताड़ी के बदले उन्हीं पैसों का लड्डू मँगा कर बाँटा गया है। जिन्हें हम लोग अपने से नीच मानते हैं, उन्होंने तो इतना भी किया, मगर हम लोग ऐसे बुज़दिल निकले कि विदेशी कपड़ा भी नहीं त्याग सके। ईश्वर से प्रार्थना है कि वह हमारे हृदय में बल दें तथा हमें सुबुद्धि प्रदान करें।

[निस्सन्देह इस देवी का कहना बहुत ही ठीक है। आजकल, जब स्त्रियों की जागृति के लिए इतना घोर आन्दोलन हो रहा है, उन्हें सार्वजनिक स्थानों में सभ्यतापूर्ण व्यवहार करना चाहिए। स्वदेशी आन्दोलन को सफल बनाने का भी अधिकांश उत्तरदायित्व स्त्रियों पर ही है। पुरुष तो किसी तरह खुरखुरा खद्दर पहन भी लेते हैं, पर स्त्रियाँ इन चीज़ों से बुरी तरह नाक-भौं सिकोड़ती हैं। जिस तरह हमारी बहुत सी बहिनों ने इस आन्दोलन में भाग लेकर घोर कष्ट सहे हैं, उसी तरह हमारी अन्य बहिनों का भी यह कर्त्तव्य है कि वे स्वदेशी वस्तुओं को अपनाकर देश की उन्नति में अपना भाग पूरा करें।

—सम्पादक 'चाँद']

* * *

एक शिक्षापूर्ण घटना

एक सज्जन इन्दौर छावनी से लिखते हैं—

श्रीमान् सम्पादक महोदय !

मुझे निम्नलिखित घटना को 'चाँद' में प्रकाशित करना आवश्यक प्रतीत होता है। साँईखेड़ा के दादा जी के शिष्य दण्डी स्वामी नामक एक व्यक्ति हैं। ये आज से आठ वर्ष पूर्व कॉङ्ग्रेस के प्रसिद्ध कार्यकर्ता थे और उज्जैन में योगाभ्यास के लिए आठ वर्ष तक दादा जी के साथ रहे। वहाँ भी इन्होंने ख़ूब प्रसिद्धि पाई। सम्मान में छोटे दादा जी के बाद आप ही का नम्बर था। गत वर्ष दादा जी मय जमात के लगभग साल भर तक उज्जैन में ठहरे हुए थे। दादा जी के पास सुदूर प्रान्तों से दर्शनाभिलाषी लोग अपनी-अपनी कामनाएँ लेकर जाते हैं। कोई-कोई वहाँ महीनों ठहरते भी हैं।

इसी प्रकार उज्जैन के हनुमानबाग़ में देवास के एक जागीरदार, जिनका नाम चन्द्रराव पवार है, मय अपने बाल-बच्चों के किसी कार्यवश ठहरे हुए थे। वे दादा जी को तथा उनके चेले छोटे दादा जी व दण्डी स्वामी को ख़ूब मानते थे। उनके सब से बड़ी एक कन्या लगभग उन्नीस वर्ष की सारजा बाई नाम की है। वह दण्डी स्वामी के पास नित्य-प्रति सेवा को जाया करती थी। यह देश का दुर्भाग्य है कि जवान सण्डे-मुसण्डे साधुओं के पास हम भक्ति-भाववश अपनी माँ-बहिनों को भेज देते हैं। यह बालिका स्वामी जी के पास रात्रि में घण्टों तक सेवा किया करती थी। इसका वही परिणाम हुआ जो होना था। होते-होते दोनों में प्रेम हो गया और एक दूसरे के साथ स्त्री-पुरुषवत् व्यवहार करने लगे।

अभी कुछ दिन हुए दादा जी उज्जैन से रवाना हो कर देवास होते हुए क्षिप्रा-तट पर ठहरे हुए थे। वहाँ जाने पर स्वामी जी ने एक दिन, लड़की से भविष्य में वियोग होता जान कर और इस विचार से कि उसका विवाह अन्यत्र होने पर उसके पातिव्रत का नाश हो जायगा, उसके घर जाकर सब कच्चा चिट्ठा कह सुनाया। उन्होंने अपने अपराध को स्वीकार करते हुए उस लड़की का कहीं विवाह न करने की प्रार्थना की और उसके पिता को दो घण्टे तक रो-रोकर समझाया और कहा कि लड़की ने मुझसे गान्धर्व विवाह किया है, अतः वह मेरी पत्नी है। मैं ब्राह्मण हूँ, आप मरहठे हैं, यदि हमें यह लड़की दे देवें तो हम अपनी भूल सुधार कर गार्हस्थ्य जीवन में रह सकते हैं। लड़की भी स्वामी जी पर अत्यन्त ही प्रेम करती है। सुनते हैं कि उसने यह भी कहा है कि मैं अब विवाह न करूँगी। शरीर एक पति को अर्पण कर चुकी। गुरु-दरबार में मैंने उनका और उन्होंने मेरा हाथ पकड़ लिया। अब मैं पातिव्रत से नहीं डिगूँगी। आत्मघात कर लूँगी, पर दूसरी शादी न करूँगी।

पिता की इच्छा ज़बरदस्ती विवाह करने की है, पर बालिका नहीं मानती। पिता ने स्वामी जी की प्रार्थना ठुकरा दी और अन्त में स्वामी जी को भी दादा-दरबार छोड़ना पड़ा। उनकी इच्छा अभी तक यही है कि मेरी भूल तो हुई, पर जिसके कौमार्य का हरण मेरे हाथ से हुआ है उसके सतीत्व की रक्षा मरते दम तक करना मेरा धर्म है। स्वामी जी ने अभी तक ब्रह्मचर्य का पालन किया

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

है और वे शपथपूर्वक कहते हैं कि यह उनकी पहली ही भूल है, जिसको वे सुधारना भी अपना कर्त्तव्य समझते हैं।

स्वामी जी का पतन तो महान हुआ है, परन्तु उनका सत्य और धैर्य प्रसंशनीय है। उन्होंने स्वयम् अपनी भूल को ज़ाहिर किया। चाहते तो इस ग़लती को पचा डालते, परन्तु उनका कहना है—"मेरे सुख से रहने पर भी मुझे रात-दिन यह यन्त्रणा लगी रहती है कि एक निर्दोष बालिका को धोखा देकर उसका सर्वनाश मैंने कर डाला (क्योंकि, बालिका का कहना है कि या तो अविवाहिता रहूँगी, या स्वामी जी के पास रहूँगी अथवा आत्म-हत्या कर लूँगी।), यदि भूल हो गई है तो मैं उस लड़की को अपने मस्तक पर धारण करूँगा और गार्हस्थ्य-जीवन बिता कर उसे अपनी टूटी-फूटी झोपड़ी की गृहलक्ष्मी बनाऊँगा।" उन्होंने संन्यास वेष का त्याग कर दिया है और अब वे कोई नौकरी करने का इरादा करते हैं। उनका यह भी कहना है कि यदि पिता ने मुझे लड़की दे दी तो अच्छा, नहीं तो उसीके प्रेम में शरीर का अन्त कर डालूँगा।

सम्पादक जी, जहाँ इस घटना को सुन कर मुझे रोष हुआ वहाँ यह सन्तोष भी होता है कि दण्डी स्वामी ने धैर्य के साथ अपनी भूल स्वीकार की और एक सच्चे प्रेमी की तरह उस लड़की से विवाह कर उसके सतीत्व की रक्षा करने को तैयार हैं। उन्होंने भयङ्कर अपकीर्ति व अपमान को सहन करते हुए भी सचाई के साथ अन्त तक बालिका का साथ देने का निश्चय किया है। अब भी लड़की के माता-पिता को दुराग्रह छोड़ देना चाहिए। लड़की को आगे भ्रष्टाचार से बचाने में ही अब कल्याण है। मेरी राय में अब लड़की के पिता को वही करना उचित है, जिससे लड़की के सतीत्व की रक्षा हो सके।

[इस सम्बन्ध में हमारे पास स्वयं दण्डी स्वामी का लिखा हुआ एक पत्र भी आया है, परन्तु उसके बहुत लम्बा होने के कारण तथा इन दोनों पत्रों का आशय एक ही होने के कारण हम यहाँ केवल इसी पत्र को प्रकाशित कर रहे हैं। यह कहानी बहुत शिक्षाप्रद है। इसके अनेक पहलू हैं। और उन सब पहलुओं पर विचार करके पाठकगण अनेक उत्तम शिक्षाएँ ग्रहण कर सकते हैं।

हमारी सम्मति में इस सम्बन्ध में दो बातें पूर्णतः स्पष्ट हैं। पिता ने निर्जन रात्रि में नवयौवना कन्या को स्वामी जी की सेवा के लिए भेज कर एक भयङ्कर भूल की और अब उसे स्वामी जी से पृथक करने की चेष्टा करके उससे भी बढ़ कर भयङ्कर भूल करने पर तुले हुए हैं। दूसरी बात यह है कि स्वामी जी ने एक तरुणी की सेवा स्वीकार करके घोर अधर्म किया, परन्तु हर्ष की बात है कि अब वह अपनी भूल का मार्जन करने के लिए तत्पर हो गए हैं। इतनी सचाई के साथ अपनी भूल को स्वीकार करने वाले पुरुष भी आजकल कहाँ मिलते हैं? यदि इस पत्र की बातें सच हैं तो लड़की की इच्छा भी ज़ाहिर ही है। इस कहानी में सत्य और असत्य दोनों प्रत्यक्ष हैं। यदि निष्पक्ष बुद्धि और न्याय-निष्ठा से विचार किया जाय तो इस समय कौन पक्ष सच्चे रास्ते पर है और कौन पक्ष ग़लत रास्ते पर तथा आगे का क्या कर्त्तव्य है, इसे निश्चित करने में कोई कठिनाई न होगी।

—सम्पादक 'चाँद']

* * *

अन्धविश्वास का राज्य

इस बीसवीं शताब्दी में भी हिन्दू समाज में किस तरह अन्धविश्वास का राज्य फैला हुआ है, इसका एक करुणाजनक उदाहरण नीचे के पत्र में मिलेगा :—

श्रीमान् सम्पादक जी,

नमस्ते।

मैं अग्रवाल कुलोत्पन्न सधवा होते हुए भी विधवा हूँ। मेरा वयस इस समय २२ साल के लगभग है। मुझे गृह में इतनी उपेक्षा की दृष्टि से देखा जाता है कि शायद ही ऐसी अमानुषिकता का दूसरा उदाहरण मिले। बात-बात में लात, घूसों, डण्डों से पीटना, बात-बात में चुड़ैल, भूतनी, डाकिनी, पिशाचिनी इत्यादि अपशब्दों से अपमानित करना एक साधारण बात हो गई है। इसका कारण यह है जिस दिन मैं ससुराल में आई थी,

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

उसी दिन मेरे श्वसुर का हैज़े से देहावसान हो गया था और उसके तीसरे दिन पतिदेव की छोटी बहिन का शरीरान्त हो गया था। बस, उसी दिन से मैं समस्त परिवार को काँटे की तरह खटकने लगी। अब आप ही बतलाइए इसमें मेरा क्या दोष? मैंने तो किसी को ज़हर दे के मार ही नहीं दिया। भवितव्य अमिट है। इसमें किसी का क्या वश? लेकिन सास-ननद और मुहल्ले की अन्धविश्वासिनें मेरे ऊपर ही लाञ्छन लगाती हैं। मैं यहाँ पर भली प्रकार भोजन तक नहीं पाती हूँ। बासे-तिवासे, रूखे-सूखे टुकड़ों पर ही निर्वाह करती हूँ। ख़ैर, मुझे इस पर भी सन्तोष है। परन्तु जब मुझे वाँझिनी, कुलघातिनी आदि कह के पुकारा जाता है, तब मेरा हृदय जल उठता है।

सम्पादक जी, पति के आचरणों पर और उनकी अस्वस्थता पर कोई ध्यान नहीं देता। वह सन्तानोत्पादन करने में सर्वथा असमर्थ हैं। समस्त दोषारोपण मेरे ऊपर ही किया जाता है। मेरे पतिदेव छात्रावस्था में अनैसर्गिक मैथुन करने-कराने से नपुंसक हो गए हैं। इस कारण उनको इतनी शर्म है कि पास आना तो दूर रहा, बात तक नहीं करते। यदि किसी समय उनसे मेरा बोलने का मौक़ा लगा भी और सास-ननद का दुर्व्यवहार वर्णन किया तो प्रथम तो बोलते ही नहीं। यदि मेरे विशेष आग्रह करने पर बोले भी तो ऐसा मालूम होता है मानो बिजली कड़क कर फट पड़ी। सो भी मेरी तरफ़ न देख कर सास से कहने लगते हैं कि यह हत्यारी मुझे अच्छी तरह खाने-पीने भी नहीं देती। रात-दिन कलह किए रहती है। फिर सास जी रुई की तरह धुनती हैं और कहती हैं कि छिनाल ने घर को तो चौपट कर दिया। घर आते ही ससुर को खा लिया, × × × को खा लिया, अब खसम को भी खाएगी राँड़। तू होते ही क्यों न मर गई? मेरा तो तूने बण्टाधार कर दिया।

सम्पादक जी, मैं अब ऐसी अवस्था में क्या करूँ? अब दुःख असह्य हो गया है। अब कष्ट सहन नहीं किया जाता। अन्याय की पराकाष्ठा हो गई। न तो माता-पिता के यहाँ ही कोई मेरी सुनवाई है। माता-पिता से जब कभी सास का दुर्व्यवहार वर्णन करने का मौक़ा मिलता है तो वह यही उत्तर देते हैं कि मेरा क्या क़सूर? मैंने तो वर अच्छा ही देख कर विवाह किया था। यह सुन कर मैं जी मसोस के रह जाती हूँ। अपने दुर्भाग्य पर बहुत रोती हूँ, पर अब रोने से भी जी ऊब गया। मैंने अभी तक अपना सतीत्व सुरक्षित रक्खा है, मन को विचलित नहीं होने दिया। क्योंकि मैंने धार्मिक पुस्तकों का अध्ययन किया है। मैं हिन्दी तथा संस्कृत का भी थोड़ा बहुत ज्ञान रखती हूँ। पर यह ज्ञान कब तक रहेगा? प्राकृतिक व्यवहारों की अवहेलना मैं कहाँ तक करूँगी?

सम्पादक जी, स्थानाभाव से अधिक नहीं लिख सकती। आप 'चाँद' में अपनी सम्मति प्रकट कीजिए कि मुझे ऐसी स्थिति में क्या करना चाहिए।

[वास्तव में हिन्दू समाज के सामने यह एक विकट समस्या है कि इन कुसंस्कारों और अन्धविश्वासों से इस अभागे समाज का उद्धार कैसे हो। नई बहुओं के आगमन के थोड़े ही दिन बाद घर के किसी आदमी की जहाँ मृत्यु हुई कि फ़ौरन उस मृत्यु की सारी जवाबदेही बेचारी निरपराध बहुओं पर लाद दी जाती है, और इसके लिए उन्हें आजन्म इस बेरहमी और ऐसी क्रूरता के साथ कोसा जाता है कि बेचारियों के जीवन का एक-एक क्षण पहाड़ हो जाता है, काटे नहीं कटता। वे दिन-रात मौत के लिए तरसती रहती हैं। इस महिला की भी ऐसी ही दुर्दशा की जा रही है। और कौन जानता है कि हमारे समाज में ऐसी त्रस्त महिलाओं की संख्या आज कितनी है?

हिन्दू स्त्रियों और पुरुषों में यदि मनुष्यत्व का लेशमात्र भी शेष रह गया हो तो उन्हें अपने पास-पड़ोस में ऐसा अमानुषिक अत्याचार होते हुए देख कर कभी चुप न बैठना चाहिए। क्या हैज़े से मरे हुए किसी जराजीर्ण बुड्ढे की मृत्यु के लिए एक निरपराध बालिका को इस तरह कोसते और सताते रहने में न्याय और विवेक का कुछ भी सम्पर्क है? हर एक सच्चे स्त्री और पुरुष को ऐसे अन्याय का अपनी पूरी शक्ति के साथ विरोध करना चाहिए और तब तक विश्राम न लेना चाहिए जब तक पीड़ित व्यक्ति की रक्षा का कोई उपाय न निकल आवे।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

यदि इस महिला के घर की औरतें और मर्द उसे अपने घर में रखना चाहते हैं, तो एक मनुष्य की तरह रक्खें, और यदि नहीं रखना चाहते तो उन्हें एक निरपराध व्यक्ति को इस तरह सताने का क्या अधिकार है? यदि वह सचमुच पिशाचिनी या भूतिनी है, जैसा कि उसके घर वाले मूर्खतावश समझते हैं, तो वे उसे अपने घर से क्यों नहीं निकाल देते? हिन्दू समाज इतना मूर्ख और जाहिल हो गया है कि वह ऐसी स्त्रियों को न तो अच्छी तरह जीने देता है और न मरने ही देता है।

नपुंसक पुरुषों की स्त्रियों पर तो हमारे समाज में ऐसे-ऐसे ग़ज़ब ढाए जा रहे हैं कि सुन कर रोंगटे खड़े हो जाते हैं। इसी कहानी को देखिए। बेचारी स्त्री का क्या दोष है? जब पुरुष ही नपुंसक है तब वह घर वालों को सन्तान कहाँ से पैदा करके दे? पर हिन्दू समाज इतना मूढ़ हो रहा है कि वह इन छोटी-छोटी बातों को भी नहीं समझता। वह न तो ऐसी स्त्रियों को पुनर्विवाह करने देगा, न उन्हें घर से निकल जाने देगा और न यही सहन करेगा कि वे सन्तानहीन रहें! इस मूर्खता का भी कोई अन्त है?

इस दशा में जो स्त्रियाँ पड़ी हुई हों उन्हें हमारी एक ही सलाह है। उन्हें ऐसे सभी अत्याचारों का वीरता के साथ विरोध करना चाहिए। यदि घर वालों के पत्थर के दिल न पसीजें तो उन्हें ऐसे घर को छोड़ देना चाहिए और अपने लिए दूसरे घर की खोज करनी चाहिए। आजकल ऐसी स्त्रियों से विवाह करने के लिए उद्यत होने वाले नवयुवकों की कमी देश में नहीं है। जगह-जगह ऐसी स्त्रियों की सहायता के लिए सभाएँ भी स्थापित हैं। उन्हें इन सभाओं की सहायता से अपने योग्य कोई युवक ढूँढ़ कर शादी कर लेनी चाहिए। दुःखी और त्रस्त स्त्रियों के उद्धार का हमें यही एक मार्ग दिखाई देता है।

निस्सन्देह इस मार्ग पर चलने के लिए असाधारण आत्मबल की आवश्यकता है। परन्तु बिना आत्मबल के प्राणी को संसार में सुख कहाँ नसीब है? सुख चाहते हैं तो अपने पैरों पर खड़े होइए और जो आपको सताना चाहता है, वह चाहे अपना हो या बेगाना, हिन्दुस्तानी हो या अङ्गरेज़, उसे ठोकर मार कर अपने रास्ते से हटा दीजिए। सुख और शान्ति का यही मार्ग है।

—सम्पादक 'चाँद'

मेम साहबा—(एक लँगड़े फ़क़ीर से) ले लँगड़े, एक पैसा ले। तेरे लँगड़ेपन पर मुझे तर्स आता है। ख़ैर, फिर भी अन्धा होने से तो लँगड़ा होना अच्छा है।

लँगड़ा—आप ठीक कहती हैं; क्योंकि जब मैं अन्धा था तो लोग मुझे खोटा पैसा दिया करते थे।

* * *

ख़ुशामदी प्रेमी—(कमरे के भीतर आते हुए) प्रिये, तुम तो हारमोनियम ख़ूब बजाती हो। मैं बाहर खड़ा-खड़ा सुन रहा था।

प्रेमिका—मैं बजाती नहीं थी, बल्कि हारमोनियम पर की गर्द झाड़ रही थी।

ख़रीदार—तुमने कहा था कि मेरी दवा एक ही रात में फ़ायदा करती है। मगर कल मैंने उसे खाया, कुछ भी फ़ायदा न हुआ।

दवा बेचने वाला—मगर यह मैंने कब कहा था कि यह किस रात को फ़ायदा करती है?

* * *

क्ट—कहिए श्रीमती जी, आपके पति अच्छे हैं? वही खाना खाते हैं न, जो मैंने उनके लिए बताया है?

श्रीमती—नहीं, वह कहते हैं कि चार दिन और ज़िन्दा रहने की ख़ातिर मैं भूखों मरना नहीं चाहता।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

केसर की क्यारी

दिल मुझे लोग लिए जाते हैं ज़िन्दाँ की तरफ़ !
यह नहीं साफ़ बताते कि बहार आई है !!
मुज़दए मौसमे-गुल मुझसे छुपे नामुमकिन !
कोई यह कान में कह देगा बहार आई है !!

—"नूह" नारवी

बेड़ियाँ सख़्त हुई जाती हैं देख ऐ सय्याद !
यूँ क़फ़स में ख़बरे फ़स्ले बहार आई है !!

—"वलीग़" लखनवी

सैरे-ज़िन्दाँ की तरफ़ देख के रह जाता हूँ !
जब यह सुनता हूँ कि दुनिया में बहार आई है !!

—"मजज़ूब" लखनवी

बज़्म आबाद में दीवानों ने हलचल कर दी !
बाद मरने के यह सुन कर कि बहार आई है !!

—"शफ़ीक़" लखनवी

हम तो मर जायँगे बेमौत तड़प कर सय्याद !
क्या यह सच है कि गुलिस्ताँ में बहार आई है !!

—"सफ़ा" अकबराबादी

तुझ हँसे बर्क़ नशेमन पे गिरी मैं हुआ क़ैद !
मेरे गुलशन में ख़िज़ाँ बन के बहार आई है !!

—"क़दीर" लखनवी

और सब कहना असीराने-क़फ़स से सय्याद !
यह न कहना कि गुलिस्ताँ में बहार आई है !!

—"बशीर" लखनवी

फिर भी कहते हो कि है क़िस्सये-ग़म बेतासीर !
कोशिशें की हैं हँसी की तो हँसी आई है !!

—"सिराज" लखनवी

कैसे रहते हैं मरक़द में भी ख़्वाबे-हस्ती !
मौत आई है हमें या हमें नींद आई है !!

—"शातिर" इलाहाबादी

ज़िन्दगी में तो शबे-ग़म न कभी आँख लगी !
गोशए क़ब्र में आया हूँ तो नींद आई है !!

—"सरशार" लखनवी

मुझसे पूछे कोई मैं ख़ूब समझता हूँ इसे !
जान लेने के लिए याद तेरी आई है !!

—"ग़ाफ़िल" इलाहाबादी

कह गए अहले-चमन यह तेरे दीवानों से !
होश में आओ ज़माने में बहार आई है !!
फूट कर पाँव के छाले मेरे लाए यह रङ्ग !
बाग़ तो बाग़ है सहरा में बहार आई है !!

—"बिस्मिल" इलाहाबादी

क्या कहूँ झूठ अकेला हूँ अकेला तो नहीं,
एक में एक यह मेरी शबे-तनहाई है

—"नूह" नारवी

जितने आते हैं वह इलाज़ामे ज़ुनूँ देते हैं
सब का मुँह देखने वाला तेरा सौदाई है

—"बहार" लखनवी

आज तोबा जो न टूटी तो क़यामत होगी
मैंने साक़ी की जवानी की क़सम खाई है

—"मेहदी" लखनवी

जानता हूँ कि सितम आपके महदूद नहीं,
मैंने भी आह न करने की क़सम खाई है

—"सफ़ा" अकबराबादी

साक़िया मै से मैं तोबा करूँ तोबा तोबा,
मैंने दुनिया के देखाने को क़सम खाई है

—"क़दीर" लखनवी

बातें मैं तेरे तसव्वर से किया करता हूँ,
कहने वाले मुझे कहते हैं कि सौदाई है !

—"सरशार" लखनवी

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

जान शीशे की मुझे इश्क़ में कुछ क़दर नहीं,
ज़िन्दगी जैसे कहीं मैंने पड़ी पाई है,

—"सिराज" लखनवी

शमआ महफ़िल की दिलेज़ार ही तक़लीद करे,
उसने जलने की बदौलत यह जगह पाई है

—"शातिर" इलाहाबादी

दो घड़ी दिल के बहलने का सहारा भी गया,
लीजिए आज तसव्वर में भी तनहाई है

—"मज़हर" लखनवी

दस्त बरदारिए उलफ़त की तमन्नाई है !
मैं समझता हूँ यह जैसी तेरी अँगड़ाई है !!
पूछिए बहरे-ग़मे इश्क़ का रुतबा हमसे !
इसमें जो मौज है वह हुस्न की अँगड़ाई है !!
हाथ मुझको दिले मुज़तर से उठाना ही पड़ा !
किस क़दर सर्व शिकन आपकी अँगड़ाई है !!
नाज़ो अन्दाज़ में आज़ारो सितम ढाने में !
तुझसे दो हाथ ज़ियादा तेरी अँगड़ाई है !!

—"नूह" नारवी

झोंक खाकर हुई किस नाज़ से सीधी क़ातिल !
यह लचक तेग़ की है या तेरी अँगड़ाई है !!

—"मुनीर" लखनवी

मुतमईन बढ़ सकूँ बैठे बज़्में जहाँ में क्यों कर !
गरदिशे लेलोनिहार आपकी अँगड़ाई है !!
कौंद जाती है ज़माने की नज़र में बिजली !
बर्क़ लरज़ाँ मेरे महबूब की अँगड़ाई है !!

—"शातिर" इलाहाबादी

सब मेरे दिल की रगें खिंच गईं ओ मस्ते-शबाब !!
तू तो यह कह के बरी हो गया अँगड़ाई है !!

—"सहरा" लखनवी

चौंक कर जाग उठे क़ब्र में सोने वाले !
यह क़यामत भी किसी शोख़ की अँगड़ाई है !!

"ग़ाफ़िल" इलाहाबादी

खुल गए नज़्रआ में असरारे तिलस्मे-हस्ती !
ज़ीस्त कहते हैं जिसे मौत की अँगड़ाई है !!
मैं किसी रोज़ दिखाऊँ दिले सद चाक अदा !
तुझको मालूम तो हो क्या तेरी अँगड़ाई है !!
जलवए रोज़े अज़ल ने मुझे बेचैन किया !
पहली दुनिया में यह पहली तेरी अँगड़ाई है !!

—"बिस्मिल" इलाहाबादी

ढूँढ़ती क्यों न रहे उसको अबद तक दुनिया !
जिसने छुपने की अज़ल ही में क़सम खाई है !!

—"बिस्मिल" इलाहाबादी

आज आईने में वह महवे ख़ुद आराई है
क्या तमाशा है तमाशा भी तमाशाई है

—"नूह" नारवी

वह जो देखें मुझे आइना बना कर अपना !
फिर तो कोई न तमाशा न तमाशाई है !!

—"शफ़ीक़" अकबराबादी

या इलाही यह ग़श आया है कि मौत आई है !
आँखें क्यों बन्द किए उनका तमाशाई है !!

—"अज़ीज़" मतरोनी

दिल मेरा देख सके हुस्न के जलवे क्यों कर !
सौ तमाशे हैं, मगर एक तमाशाई है !!

—"शातिर" इलाहाबादी

दिल की हैरत ने बनाया उन्हें महवे हैरत !
जिसको समझे थे तमाशा वह तमाशाई है !!

—"ग़ाफ़िल" इलाहाबादी

ग़ौर करने पे हक़ीक़त यह नज़र आई है !
ख़ुद तमाशा भी है वह ख़ुद ही तमाशाई है !!
यह समझ कर कोई परदे से निकलता ही नहीं !
कि ख़ुदाई मेरे जलवे की तमाशाई है !!

—"बिस्मिल" इलाहाबादी

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

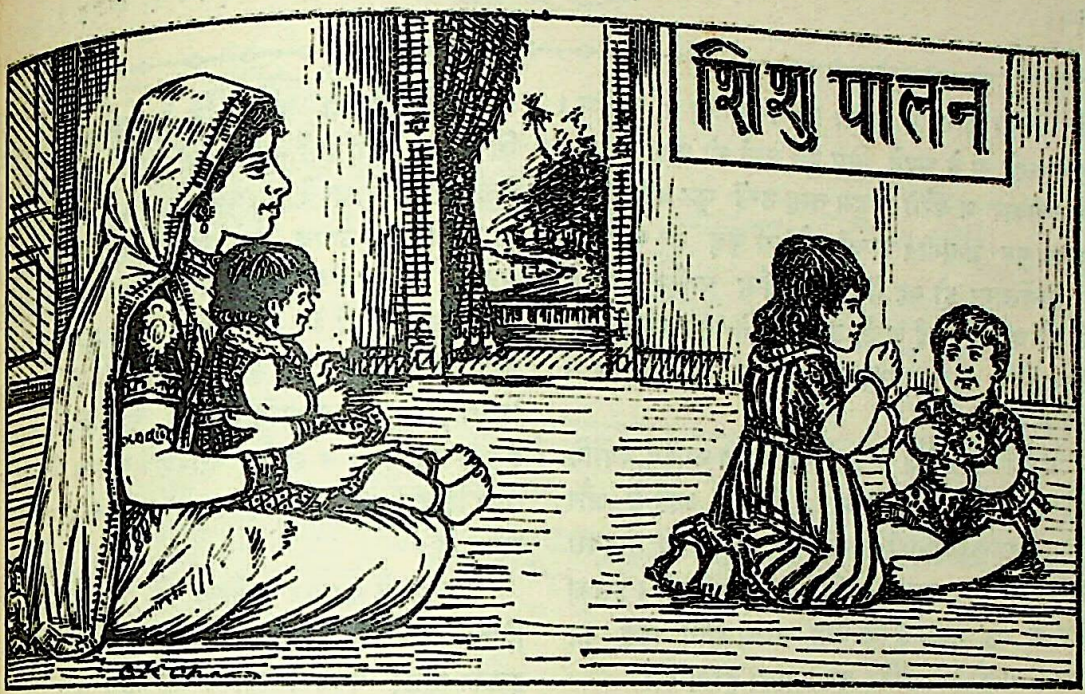

बाल-शिक्षा

आजकल हमारी माताएँ तथा बहिनें प्रायः इस बात को नहीं जानतीं कि बच्चों को उचित शिक्षा किस तरह से देनी चाहिए। यही कारण है कि आजकल भारतवर्ष के बच्चे युवाअवस्था में उस उच्च पद तथा विद्वत्ता को नहीं पहुँचते, जिस पर प्राचीन काल में ऋषि-मुनियों की आज्ञानुसार चलने से पहुँचते थे। आजकल की प्रणाली कुछ ऐसी बदल गई है कि हम लोग उन आवश्यक बातों को बच्चों को नहीं सिखलाते, जिनसे वे स्वावलम्बी तथा सदाचारी बनें।

हम लोग शुरू से ही बच्चे को ए, बी, सी, डी या क, ख, ग पढ़ाना ही शिक्षा का आदर्श समझते हैं। परन्तु यदि यथार्थ में देखा जाय तो बच्चे की वास्तविक शिक्षा उसके चरित्र का सङ्गठन करना है। यह कार्य गर्भावस्था से ही आरम्भ हो जाता है। स्त्री के आचरण का प्रभाव उसकी गर्भस्थ सन्तान पर पड़ता है। यदि स्त्री का आचरण अच्छा हुआ तो सन्तान सदाचारिणी होती है और यदि बुरा हुआ तो दुराचारिणी। इसी कारण हमारे पूर्वजों ने यह बतलाया है कि स्त्री को गर्भावस्था में अपनी रहन-सहन तथा आचार-विचार को नियमबद्ध तथा पवित्र रखना चाहिए। उसे अच्छे-अच्छे विषय की पुस्तकों का अध्ययन, तथा ऋषि-महर्षि और सदाचारी जनों के जीवन-चरित्रों का पाठ करना चाहिए।

बहुधा हमारी माताएँ तथा बहिनें यह कहा करती हैं कि अभी उनका अमुक पुत्र बच्चा है, उसे अभी लिखने-पढ़ने की आवश्यकता नहीं है, पर कदाचित वे यह नहीं जानतीं कि बच्चे की शिक्षा गर्भावस्था से ही प्रारम्भ हो जाती है। बच्चों में नक़ल करने की शक्ति बहुत होती है। वे जो कुछ हम लोगों को करते तथा कहते देखते हैं, उसीका अनुकरण करने लगते हैं। और यह अनुकरण करना ही उनके चरित्र सङ्गठन की प्रथम श्रेणी है। इस कारण भूल कर भी बच्चों के सम्मुख न तो कोई अश्लील शब्द मुँह से निकालना चाहिए और न कोई बुरा काम ही करना चाहिए। शुरू से ही बच्चों को अच्छी आदत सिखाने का प्रयत्न करना चाहिए। उन्हें अच्छी-अच्छी बातों की महिमा, आदर्श मनुष्यों की जीवनी तथा सद्-गुणों के लाभ बतला देना चाहिए। साथ ही साथ दुर्गुणों के दुष्परिणाम से भी उन्हें अनभिज्ञ न रखना चाहिए।

माता-पिता केवल अपने चरित्रों से ही बच्चों को अच्छा नहीं बना सकते। बच्चा चलने-फिरने योग्य होते ही और लड़कों से मिलने-जुलने लगता है। अतः बच्चों के साथ खेलने वाले और लड़कों की ओर भी माता-पिता का ध्यान रहना चाहिए। बच्चों को बुरी सङ्गत से सदा बचाना चाहिए, क्योंकि सङ्गत का असर बहुत पड़ता है।

बच्चों से यदि कोई भूल, अपराध या हानि हो जाय

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

तो उनको क्रोध से डाटना या झिड़कना न चाहिए। ऐसा करने से वे अपने किए हुए कार्य को दण्ड के भय से स्वीकार न करेंगे। इस तरह उन्हें झूठ बोलने की आदत पड़ जायगी। बच्चों को जो कुछ भी बतलाना या सिखलाना हो वह प्रेमपूर्वक होना चाहिए। बच्चों को जो बातें सिखाई जायँ, उनके हानि-लाभ भी समझा दिए जायँ। जो बात प्यार से हो सकती है, वह मार से नहीं हो सकती।

बच्चों को अधिक प्यार भी नहीं करना चाहिए, क्योंकि अधिक लाड़-प्यार से वे प्रायः ढीठ हो जाते हैं और माँ-बाप का कहना नहीं मानते। प्रायः माताएँ मोहवश अपने बच्चों के अवगुणों पर भी ध्यान नहीं देतीं। इसका परिणाम यह होता है कि ऐसा बच्चा आगे चल कर माता-पिता को अपमानित करने वाला होता है।

बच्चों को शिक्षा देने में सर्वदा इस बात का ध्यान रखना चाहिए कि बच्चे का हृदय एक कच्चे घड़े अथवा छोटे पौधे के समान है। जिस प्रकार कच्चे घड़े पर कोई निशान करके पकाने पर वह निशान वैसा ही बना रहता है, इसी तरह छोटे बच्चों के हृदय पर जो संस्कार बचपन में पड़ जाते हैं वे आजन्म नहीं मिटते। छोटा पौधा इच्छानुसार मोड़ा जा सकता है। बालक का चरित्र भी इच्छानुसार बनाया जा सकता है। इसलिए माताओं को चाहिए कि वे अपनी सन्तान के हृदय पर प्रारम्भ से ही अच्छी-अच्छी बातों का प्रभाव डालें।

जब बच्चा बोलने-चालने और साधारण बातों को समझने लगे तो उसे अपने ग्राम तथा पिता इत्यादि का नाम याद करा देना चाहिए। अपने माता-पिता, भाई-बहन इत्यादि को आदर सहित सम्बोधन करना तथा उनसे वार्तालाप करना भी सिखाना चाहिए। प्रायः यह भी देखने में आया है कि बच्चों को कहानी सुनने तथा याद करने का बड़ा शौक़ होता है। हमारे घरों में अभी तक यह प्रथा चली आती है कि सन्ध्या समय सोते वक्त हमारी माताएँ अथवा घर की बूढ़ी स्त्रियाँ बच्चों को कहानियाँ सुनाती हैं। किन्तु शोक है कि हमारी माताओं की अज्ञानता के कारण वे शिक्षाप्रद नहीं होतीं और उनसे मन बहलाव के अतिरिक्त बच्चों को कोई लाभ नहीं होता।

माताओं को चाहिए कि वे बच्चों को सरल तथा शिक्षाप्रद कहानियाँ सुनाने का प्रयत्न करें, जिससे आगे चल कर उनके बच्चे चरित्रवान बन सकें। भूतों-प्रेतों की या अन्य भय उत्पन्न करने वाली कहानियाँ बच्चों को न सुनानी चाहिए। बहुधा माताएँ, जब उनका बच्चा उनके घर के काम-काज में बाधा डालता है या उनकी आज्ञा नहीं मानता, अपना कार्य सिद्ध करने के लिए उसे 'हव्वा', 'लू-लू' इत्यादि कह कर डरवाती हैं। बच्चों को इस प्रकार कभी न डराना चाहिए। बचपन में ही डर का बीज दिल में जम जाने से लड़का आजीवन डरपोक बना रहता है।

बच्चों के कोमल मस्तिष्क को शुरू में अधिक गूढ़ विषयों से भी भरने की कोशिश नहीं करनी चाहिए। इसका असर बच्चे के स्वास्थ पर बहुत बुरा पड़ता है। और बालक के स्वास्थ्य पर ध्यान देना माता का पहला कर्त्तव्य है। बच्चों को ख़ूब खेलने देना चाहिए। इससे बालक बलवान होते हैं।

पाठकगण! आपने महाभारत तो अवश्य ही पढ़ा होगा। उसमें आपने देखा होगा कि किस तरह अर्जुन के पुत्र अभिमन्यु ने सोलह वर्ष की अवस्था में ही महाभारत युद्ध में चक्रव्यूह के अन्दर लड़ कर बड़े-बड़े महारथियों के दाँत खट्टे कर दिए थे। इसका कारण यही था कि अर्जुन ने अपनी पत्नी सुभद्रा से, जब अभिमन्यु गर्भ में था, चक्रव्यूह का वर्णन किया था। उसका प्रभाव गर्भस्थित बालक अभिमन्यु पर यह हुआ कि वह जीवन में एक महान पराक्रमी युद्धवीर हो सका।

उपरोक्त रीत्यनुसार शारीरिक और धार्मिक शिक्षा देकर ही कोई माता अपने बच्चों को कर्मवीर बना सकती है। ऐसे ही बच्चे युवा होने पर अपने माता-पिता तथा देश का नाम संसार में उज्ज्वल करके अपनी मातृ-भूमि की सेवा करने के योग्य बनते हैं। अतः यदि आप चाहते हैं कि आपकी सन्तान सदाचारी, धर्म-रक्षक, कुल का मुख उज्ज्वल करने वाली, तथा मातृभूमि का सच्चा सेवक बने तो बालकों की शिक्षा में कभी असावधानी न करें, क्योंकि इन्हीं पर हमारी और हमारे देश की भावी मान-मर्यादा निर्भर है।

—आनन्दस्वरूप शर्मा

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

अजी सम्पादक जी महाराज,

जय राम जी की !

आजकल हिन्दी-साहित्य-क्षेत्र में बड़े आनन्द हैं। जिधर देखिए लेखक और कवि घूम रहे हैं। जो एक प्रेम-पत्र लिख सकता है वह लेखक है, और जो "तीन पाँच होते हैं आठ" लिख सकता है वह कवि है। आज से बीस वर्ष पहिले यह कौन जानता था कि हिन्दी-साहित्य-क्षेत्र आगे चल कर इतना उर्वरा प्रमाणित होगा कि लेखक और कवि लोग घास की तरह उत्पन्न होंगे। घास है भी बड़े काम की वस्तु। आजकल बाग़-बग़ीचों में देखिए तो फूलों की अपेक्षा घास ही अधिक मिलेगी। "ग्रास लॉन" कितनी आवश्यक वस्तु है। यह सब बँगला-वासी (बँगलों में रहने वाले) लोग जानते हैं। हरी-हरी घास देखने से आँखों को भी लाभ पहुँचता है। कवि और लेखकगणों की इस भीड़ को देख कर हिन्दी-प्रेमियों के नेत्र ठण्डे हो जाते हैं। यदि आँखें बन्द करके हिन्दी-साहित्य-क्षेत्र में हाथ डालिए तो किसी लेखक अथवा कवि का सिर हाथ में आएगा। लेखकों में उपन्यास और गल्प-लेखक अधिक मिलेंगे और कवियों में कृपावादी कवि। क्योंकि इन दोनों विषयों में सफलता प्राप्त करना दाल-भात खाने के समान है। इन दोनों कामों के लिए न अधिक शिक्षा की आवश्यकता है, न अध्ययन की। दो प्रेमियों का झगड़ा ले लिया—कभी उन्हें मिला दिया, कभी अलग कर दिया—दो एक हत्याएँ और आत्म-हत्याएँ करा कर अन्त में प्रेमी और प्रेमिका का विवाह करा दिया—चलिए एक गल्प अथवा उपन्यास तैयार हो गया। और तारीफ़ यह है कि काग़ज़, क़लम और सियाही से लेकर सम्पादक और प्रकाशक के पास भेजने के लिए पोस्टेज तक सब अपना ही है, उधार लिया अथवा चोरी किया हुआ नहीं। मौलिकता इसीका नाम है! एक ज़टलकाफ़िया उड़ाया, उपन्यास तैयार हो गया; एक गप्प हाँक दी, गल्प तैयार हो गई। कितना सहल नुस्ख़ा है। रही भाषा की अशुद्धियाँ; सो उसके लिए तो सम्पादक लोग पले ही हुए हैं। इतना भी न करेंगे तो फिर किस मर्ज़ की दवा हैं। सम्पादक ने भी सोचा कि मुफ़्त में एक गल्प हाथ लगी—पत्र के छः पृष्ठ भरे जाते हैं—चलने दो। इधर लेखक साहब की गल्प जो प्रकाशित हुई तो अङ्क हाथ में लिए घूम रहे हैं। किसी ने पूछा—"क्यों साहब, यह क्या है?" तो आपने मुँह बना कर उत्तर दिया—"कुछ नहीं—पत्र का अङ्क है, अबकी अच्छा निकला, लीजिए देखिए।" यदि किसी ने लेकर ध्यानपूर्वक देखा और पूछा—"यह लेख आप ही का लिखा हुआ है?" तो बोले—"जी हाँ"। "अच्छा, आप लेखक भी हैं, यह मुझे आज मालूम हुआ।" यह शब्द सुन कर लेखक महोदय मुस्करा कर रह गए। और मन ही मन फूल कर कुप्पा हो गए। यदि किसी ने पत्र केवल सरसरी दृष्टि से देखकर लौटा दिया, उनके लेख और नाम पर ध्यान न दिया तो लेखक महोदय ने

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

उसी समय से उसे मूर्ख और असभ्य की सूची में प्रविष्ट कर दिया। वास्तव में है भी यही बात। पत्र हाथ में लेकर बिना प्रत्येक लेख का शीर्षक और लेखक का नाम पढ़े लौटा देना बहुत बड़ी मूर्खता और असभ्यता है। वैसे तो यह मूर्खता और असभ्यता क्षम्य भी है, परन्तु जब कि उसमें उस व्यक्ति का लेख भी है जो सामने खड़ा हुआ है, तब तो यह सोलहो आने अक्षम्य है। और यदि कहीं किसी ने पत्र लेकर लेखक का लेख और नाम देख लिया और उसे कोई अन्य आदमी समझ कर लेखक से बिना यह पूछे ही कि—"यह आप ही का लिखा हुआ है ?" पत्र लौटा दिया तो समझ लीजिए ग़ज़ब हो गया, सितम हो गया। वह आदमी तो एकदम गोली मार देने के योग्य है। सब देख-सुन कर भी दुष्ट की समझ में न आया। वज्र मूर्ख है। संसार में ऐसे मूर्खों का रहना उचित नहीं। ऐसे ही आदमियों के मारे साहित्य की उन्नति नहीं होती !

—कविता में छायावाद की कविता बनाना उतना ही सरल है जितना कि भोजन में खिचड़ी पकाना। कोष खोल कर बैठ गए और पाँच-पाँच तथा दस-दस सेर के शब्द चुन लिए। उन्हें बिना छन्द और तुक का विचार किए हुए क्रियाओं के साथ सजा दिया—चलिए कविता तैयार हो गई। किसी ने पूछा—"इसका छन्द कौन सा है ?" उत्तर दिया—"यह नया छन्द है, हमने निकाला है।" तुक के लिए कह दिया अतुकान्त कविता है। रहे भाव, सो वे जितने ही अधिक समझ में न आवें उतनी ही कविता बढ़िया है। पढ़ने वालों में अधिकांश ऐसे होते हैं जो अपनी अल्पज्ञता प्रकट होने के भय से यह नहीं कहते कि—"इस कविता के भाव हमारी समझ में नहीं आए।" वे सोचते हैं कि हमारी समझ में नहीं आते तो बड़े गूढ़ और ऊँचे भाव होंगे। इसलिए कहने लगते हैं कि—"बड़ी सुन्दर कविता है, बड़े ऊँचे भाव हैं।" सम्पादक जी, मेरा यह निज का अनुभव है। जो व्यक्ति किसी कविता को पढ़ कर यह कहे कि—"इस कविता के भाव बड़े गहरे हैं, बड़े ऊँचे हैं, हर एक आदमी उन्हें नहीं समझ सकता" तो रुपए में पन्द्रह आने भर यह निश्चय समझ लीजिए कि वह व्यक्ति कविता को ख़ाक नहीं समझा। इसी प्रकार अधिकांश सम्पादकों को भी ऐसी कविताएँ, जो उनकी समझ में न आवें, अधिक पसन्द आती हैं और वे ऐसी कविताओं को बढ़िया समझ कर प्रकाशित कर देते हैं।

यह तो नए लेखकों की बात हुई, अब ज़रा पुराने लेखकों का हाल सुनिए। पुराने लेखकों से मेरा तात्पर्य उन लेखकों से है जिनकी कुछ पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं और जिनके लेख सम्पादक लोग बड़े चाव से छापा करते हैं। ऐसे लेखकों में से कुछ ने तो अपने मठ स्थापित कर रक्खे हैं। इस मठ में उनके दस-बीस शिष्य और मित्रगण होते हैं। लेखक साहब स्वयम् उस मठ के महन्त बन कर रहते हैं। महन्त जी जो कुछ लिखते हैं—शिष्य लोग उसकी प्रशंसा के पुल बाँधते हैं। महन्त जी ने पादा तो शिष्य लोगों ने शोर मचाया—"वाह ! क्या मधुर स्वर निकाला ! क्या मौलिक स्वर है ! क्या कविता है !" महन्त जी की कृपा से शिष्य लोग लेखक और कवि बनते हैं। शिष्य लोग लेखक बन कर महन्त जी के लेख और कविताओं की आलोचना करते हैं। और उन्हें थोड़े ही दिनों में आचार्य अथवा सम्राट बना देते हैं। जहाँ दो-चार आलोचनाओं अथवा लेखों में उन्हें आचार्य तथा सम्राट लिखा गया, वहीं सम्पादक तथा प्रकाशक लोग भी उन्हें आचार्य और सम्राट मान कर उन्हें इसी उपाधि से अलंकृत करने लगते हैं। इतनी फ़ुरसत और इतनी सूझ किस भकुए में है कि पहले इस बात की छान-बीन तो कर ले कि वास्तव में वह आचार्य और सम्राट बनने योग्य है अथवा नहीं। जहाँ दो-एक लेखकों को आचार्य और सम्राट लिखते देखा, बस मान लिया कि वाक़ई यह आचार्य है, सम्राट है। ये आचार्य और सम्राट जो कुछ लिखते हैं वह हिन्दी की वस्तु नहीं, विश्व-साहित्य की चीज़ होती है। और उनकी लिखी हुई चीज़ का जवाब इङ्गलैण्ड, फ़्रान्स और रूस को छोड़ कर संसार में और कहीं नहीं मिलता। हिन्दुस्तान बेचारा तो झख मारता है—वह है किस गिनती में ? हिन्दुस्तान में अपना जवाब वे स्वयम् हैं। किसी की क्या मजाल जो उन्हें जवाब दे सके।

इधर-उधर हाथ मारने में ये लोग बड़े उस्ताद होते हैं। इस सफ़ाई से माल उड़ाते हैं कि बहुत कम लोगों को पता लगता है। और जिन्हें पता लग भी जाता है वे भी उनका कुछ नहीं कर सकते। प्रथम तो उनकी बात का विश्वास ही कौन करता है ? "वाह ! इतना

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

बड़ा लेखक कहीं चोरी कर सकता है ?" चलिए फ़ैसला हो गया। किसी ने कुछ लिखा भी तो शिष्यों ने उत्तर देना आरम्भ किया—इसमें भी महन्त जी का लाभ है—नाम ही होता है। "बदनाम भी होंगे तो क्या कुछ नाम न होगा ?" चार-छः दफ़ा पत्रों में खण्डन-मण्डन हुआ। महन्त जी का नाम छपा। सर्वसाधारण को पता लगा कि हाँ, यह भी कोई पाँच सवारों में हैं। कौन ठीक कहता है और कौन ग़लत—यह बात तो कुछ थोड़े से लोगों ने समझी—महन्त जी का नाम बहुत से लोग जान गए। यह लाभ क्या कुछ कम है ?

सम्पादक जी, इन महन्तों में कुछ ऐसे भी हैं, जो अपने शिष्यों की किसी सुन्दर कृति को अपने नाम से प्रकाशित करा लेते हैं और स्वयम् लिख कर अपने प्यारे शिष्य के नाम से छपवा देते हैं। गुरु और शिष्य का सम्बन्ध जो ठहरा—अदला-बदला चलता रहता है। स्वयम् लिख कर शिष्य के नाम से छपवा कर शिष्य को आगे बढ़ाना, यह तो गुरु का बड़प्पन है, इसमें कुछ कहने की गुञ्जायश नहीं। परन्तु शिष्य की चीज़ पर नियत ख़राब करना, यह ज़रा कम समझ में आता है। आख़िर बेचारे करें क्या ? रात-दिन लिखते-लिखते अपना दिमाग़ तो खोखला हो चुका। और कुछ न कुछ निकलते रहना चाहिए, अन्यथा यदि लोग महन्त जी को भूल जाएँगे तो आचार्य और सम्राट की कष्टसञ्चित उपाधि मुफ़्त में विलीन हो जायगी। अतएव शिष्यों के माल पर अधिकार जमाते हैं। किसी तरह नाम तो चलता रहे और पैसे भी आते रहें। क्योंकि पुरस्कार जो मिलता है उसे गुरु जी गुरुदक्षिणा में डकार जाते हैं—उसमें से शिष्य को पान खाने भर को देते हों तो देते हों—अन्यथा सब हज़म ! परन्तु यह है कलियुग—शिष्य लोग बाग़ी हो जाते हैं और भण्डाफोड़ कर देते हैं। ऐसे ही एक कलियुगी शिष्य के द्वारा अपने राम को इस रहस्य का पता लगा है।

सम्पादक जी, अब तो अपने राम की भी इच्छा है कि एक मठ स्थापित करें। दस-बीस चेलों को एकत्र करके अपनी प्रशंसा का ढोल पिटवावें और थोड़े ही दिनों में कोई उपाधि ग्रास कर लें। परन्तु अपने राम कवित्त-भूषण, सवैया-रत्न, दोहा-कलानिधि, कवि-सम्राट, उपन्यास-सम्राट, गल्पाचार्य, कहानी-पितामह और आख्यायिका के नाना, इत्यादि समस्त उपाधियों को अपने अयोग्य समझते हैं; क्योंकि ये उपाधियाँ बहुत सस्ती हो गई हैं। अपने राम कोई नई उपाधि चाहते हैं। अतएव आप मेरे लिए कोई नई उपाधि अभी से सोच रखिए। उपाधि बढ़िया हो; क्योंकि मैं जो कुछ लिखूँगा वह विश्व-साहित्य की वस्तु नहीं, वरन् ब्रह्माण्ड-साहित्य की वस्तु होगी। उस साहित्य का जवाब तभी निकलेगा जब ब्रह्मा जी कोई नई सृष्टि रचेंगे अथवा किसी ऐसी भाषा में निकलेगा जिस भाषा को संसार में कोई न समझता हो। जो कुछ मैं लिखूँगा उसको कोई भी न समझ सकेगा। जो समझेगा वह सीधा स्वर्गलोक को चलता बनेगा। वह स्वयम् न जायगा तो अपने राम उसे ज़बर्दस्ती भेज देंगे; क्योंकि अपने राम का लिखा हुआ समझने के पश्चात वह इस मर्त्यलोक में नहीं रहने पाएगा।

यह तो नाम कमाने की युक्ति हुई। परन्तु ख़ाली नाम कमाने से काम नहीं चलेगा। कुछ टके भी पैदा करने पड़ेंगे। इसके लिए अपने राम ने एक बड़ी सुन्दर युक्ति सोची है। एक एजेन्सी खोलेंगे। उसका नाम—"लेख और कविता प्रकाशित करावन एजेन्सी" होगा। उस एजेन्सी द्वारा ऐसे लेखकों और कवियों की कृतियाँ हड़प ली जाया करेंगी अथवा थोड़ा मूल्य देकर ख़रीद ली जाया करेंगी, जिनकी कृतियाँ सम्पादक लोग रख कर भूल जाया करते हैं और पोस्टेज भेजने पर भी वापस नहीं करते। उन कृतियों को थोड़ा नमक-मिर्च और मसाला लगा कर अपने राम अपने नाम से प्रकाशित कराया करेंगे और जो कुछ पुरस्कार मिलेगा वह सब का सब स्वयम् हड़प जाया करेंगे। अजी यह तो रोज़गार है, इसमें क्या चोरी। हमने एक लेख अथवा कविता आठ आने में ख़रीदी। अब हम उसे बीस-पचीस रुपए में बेचते हैं ? तो इसमें किसी के बाप का क्या इजारा ? और सम्पादक लोग बीस-पचीस रुपए लेख अथवा कविता पर तो देंगे नहीं, हमारे नाम पर देंगे। इसलिए हमारा यह डबल हक़ हो गया कि हम उसमें से मूल लेखक को एक झन्झी कौड़ी भी न दें। एक कलदार अठन्नी तो पहले ही थमा चुके हैं। दोबारा कुछ देने की आवश्य-

(शेष मैटर १५७ पृष्ठ के पहले कॉलम में देखिए)

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

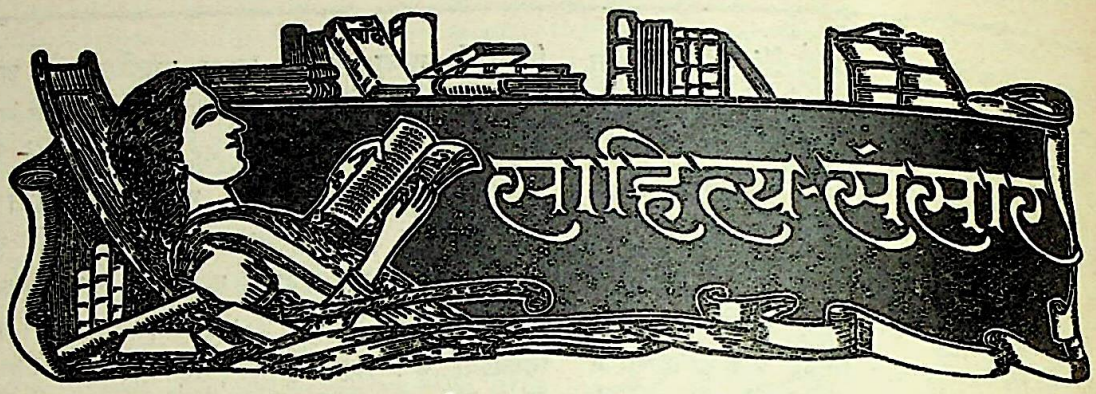

प्रेम-मोहिनी नाटक—लेखक और प्रकाशक पं० लक्ष्मीकान्त चतुर्वेदी, हेडमास्टर श्रीगोदावत स्कूल, पोष्ट—छोटी सादड़ी (मेवाड़), पृष्ठ संख्या ९२, मूल्य ॥), काग़ज़ साधारण, छपाई ख़राब।

माघ कृष्ण अमावस्या सम्वत १९८४ (ता० २२ जनवरी सन् १९२८) के 'श्रीकृष्ण-सन्देश' में 'नवीन उपहार' नामक लेख में यह बात प्रकाशित कराई गई थी कि जिस आदमी का 'बाल-विवाह से हानि' सम्बन्धी नाटक सर्वश्रेष्ठ होगा उसे इनाम दिया जायगा। इसी प्रतियोगिता-पुरस्कार के लिए चतुर्वेदी जी ने इस नाटक को लिखा था और यह बड़ी प्रसन्नता की बात है कि उन्हें यह पुरस्कार मिल भी गया। इसमें सन्देह नहीं कि इसके लिखने में लेखक ने ख़ूब परिश्रम किया है और ग्रन्थ के प्रारम्भ में जो एक अठारह पृष्ठ की भूमिका है, उसमें लेखक ने कई संस्कृत के ग्रन्थों के दरवाज़े को भी खटखटाया है। पं० जी का यह प्रथम प्रयास सर्वथा प्रशंसनीय है।

पता नहीं कि लेखक ने नाटक के सम्बन्ध में कोई ग्रन्थ पढ़ा है या नहीं। पहले मैंने समझा कि जब इस नाटक पर पुरस्कार मिला है तो यह अवश्य ही सुन्दर होगा। परन्तु ज्यों-ज्यों मैं इसे पढ़ता गया, त्यों-त्यों पता चलने लगा कि यह कथा नीरस, भद्दी तथा व्यर्थ है। न तो कथानक में रोचकता है, न भाव है, न नाट्यकला का लेशमात्र है। मेरी समति में यदि इस प्रकार की पुस्तकें न लिखी जायँ तो हिन्दी का परम उपकार हो। आजकल हिन्दी में लेखकों की बाढ़ सी आ गई है और बहुत लोग अनधिकार चेष्टा करने लगे हैं। मेरा पूर्ण विश्वास है कि यह नाटक भी अनधिकारी चेष्टा का एक उदाहरण है। कथा का लगभग सब भाग नीरस है। अन्त में विष का प्रयोग भी व्यर्थ ही है। बहुत लोग दुखान्त का अर्थ नहीं समझते और अन्त में सब को मार डालना ही अच्छा समझते हैं। ईश्वर से प्रार्थना है कि वह ऐसे लोगों से हिन्दी की रक्षा करें।

* * *

रामराज्य (प्रथम भाग)—लेखक और प्रकाशक श्री० मुरारीलाल अग्रवाल ज्योतिषी, दिलदारपुरा, मुरादाबाद; पृष्ठ-संख्या १३६, मूल्य ॥।), छपाई और काग़ज़ सुन्दर।

इस पुस्तक के लेखक ने पहिले राम सम्बन्धी सब पुस्तकों का साधारणतः अवलोकन किया है और वाल्मीकि रामायण का विशेष कर। तब आपने इस ग्रन्थ को लिखना प्रारम्भ किया है। यह पुस्तक चार भागों में समाप्त होगी। प्रस्तुत पुस्तक उसका प्रथम भाग है। प्रत्येक भाग में सात परिच्छेद होंगे। प्रथम भाग में शासन-शैली तथा प्रजा के अतुलनीय प्रेम इत्यादि का वर्णन किया गया है।

प्रायः यह देखा जाता है कि कुछ लोग श्रीरामचन्द्र जी की कथा में विश्वास नहीं करते। इसलिए लेखक महोदय डर गए हैं कि जिस तरह से वाल्मीकि ऋषि ने श्रीरामचन्द्र जी का वर्णन किया है, सम्भव है उस तरह से बीसवीं शताब्दी के लोगों का उसमें विश्वास न हो। इसलिए इसके निर्माण करने में इस बात का विशेष ध्यान रक्खा गया है कि इसकी कथा ऐसी लिखी जाय कि इसमें वैज्ञानिक लोग भी विश्वास कर सकें। इसमें केवल श्रीरामचन्द्र जी के कौटुम्बिक जीवन का ही वर्णन नहीं किया गया है, किन्तु उनके भारी उत्तरदायित्व

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

का भी। इस पुस्तक में इस बात के दिखलाने का भी प्रयत्न किया गया है कि श्रीरामचन्द्र जी का शासन प्रजा-तन्त्र था। इसे वर्तमान के रँग में रँगने का भी पूरा प्रयत्न किया गया है। पुस्तक की भाषा सुन्दर तथा परिमार्जित है और सम्पूर्ण पुस्तक बिलकुल नए ढङ्ग से लिखी गई है। आशा है हिन्दी-संसार में इसका आदर होगा।

* * *

श्रद्धाञ्जलि—लेखक श्री० भगवानदास केला, प्रकाशक भारतीय ग्रन्थमाला, वृन्दावन, पृष्ठ-संख्या १८२, मूल्य ।।।)।

श्रीभगवानदास केला हिन्दी के एक प्रसिद्ध लेखक हैं। यह पुस्तक उन्हीं की लिखी हुई है। एक प्रकार से इसमें २६ मनुष्यों का जीवन-चरित्र लिखा गया है। इसमें वाल्मीकि, राम, श्रीकृष्ण, गौतमबुद्ध, शङ्कराचार्य, रुक्मिणी, कृष्ण, चैतन्य, राणा प्रताप, शिवाजी, गुरु गोविन्दसिंह, अहल्याबाई, राममोहन राय, दयानन्द, लक्ष्मीबाई और तिलक भारतीय चरित्र हैं और सुक़रात, ईसा मसीह, मुहम्मद साहब, देवी जोन, मार्टिन लूथर, गेलिलियो, न्यूटन, एब्राहम लिङ्कन, फ़्लोरेन्स नाइटिङ्गल, मेज़िनी, टॉल्सटॉय, कार्ल मार्क्स, सन युत सेन और बुकरटि वाशिङ्गटन अन्य देशीय चरित्र हैं। जिस प्रकार प्रायः जीवन चरित्र लिखा जाता है, उस प्रकार से यह पुस्तक नहीं लिखी गई है। पुस्तक लिखने का ढङ्ग लेखक का अपना है। यह ग्रन्थ इस प्रकार से लिखा गया है मानो लेखक इन महान आत्माओं के पास और उनके सामने खड़ा है और उनके प्रति अपने भावों का उद्गार, श्रद्धाञ्जलि के रूप में, उन्हें अर्पित कर रहा है। इस प्रकार से लिखने में पुस्तक का महत्व बढ़ गया है और वह अधिक मनोरञ्जक हो गई है। लेखक ने केवल महत्वपूर्ण घटनाओं पर ही अधिक प्रकाश डाला है। इससे पुस्तक की रोचकता और भी अधिक हो जाती है। इसकी भाषा साहित्यमय है। मैं इस पुस्तक को प्रत्येक हिन्दी जानने वाले के हाथ में देखना चाहता हूँ।

* * *

हिन्दू नाम—लेखक वैदिक मुनि, प्रकाशक स्वामी रामस्वरूप, पुस्तक मिलने का पता—मैनेजर, हिन्दू ग्रन्थमाला अमृतसर या सन्त-समाचार पुस्तक भण्डार, अमृतसर, पृष्ठ ७०, मूल्य ।-)।

इस पुस्तक में यह विचार किया गया है कि हिन्दू नाम कैसे पड़ा। कुछ लोग समझते हैं कि जब विधर्मी लोग पहले भारत में आए, तब सिन्धु नदी के उस पार के लोगों ने उन्हें लूट लिया। इसलिए विधर्मियों ने पूर्ववालों को लुटेरा समझा और उन्हें हिन्दू (लुटेरा) कहना प्रारम्भ किया और हमारे पूर्वजों ने अज्ञान के कारण उसे स्वीकार कर लिया। दूसरे लोग कहते हैं कि जब विधर्मियों ने भारत पर आक्रमण किया और हमारे पूर्वजों को परास्त कर दिया तब हमारे पूर्वजों ने उनके दासत्व के जुए को अपने कन्धे पर रख लिया। इससे विदेशियों ने हम लोगों के लिए दास के अर्थ में 'हिन्दू' शब्द का प्रयोग करना प्रारम्भ कर दिया। वास्तव में उन लोगों ने दास या ग़ुलाम के अर्थ में ही हिन्दू शब्द का प्रयोग किया। इतना ही नहीं, उन विदेशियों ने यहाँ तक कहा कि आज से तुम लोग अपने को हिन्दू कहना, नहीं तो जान से मार दिए जाओगे। तभी से हम लोगों का नाम हिन्दू पड़ गया।

इस ग्रन्थ के लेखक ने इस बात के सिद्ध करने का प्रयत्न किया है कि हम लोगों का यह नाम मन्त्र काल से चला आता है और ऊपर के दोनों मत बहुत ही अधिक

(१५५ पृष्ठ का शेषांश)

क्या ही क्या है। हम तो व्यापार करेंगे, कुछ ख़ैरात-खाता थोड़ा ही खोलेंगे। क्यों सम्पादक जी, यह ढङ्ग कैसा रहेगा? आम के आम गुठलियों के दाम! इधर नाम भी बैल के सींगों की तरह बढ़ रहा है उधर रुपया भी आ रहा है। फिर क्या है। हमीं हम होंगे। परन्तु यह सब तभी सुफल होगा जब आप कोई गज़ दो गज़ लम्बी उपाधि अपने राम के लिए सिला रक्खेंगे। क्योंकि यदि उपाधि न मिली तो अपने राम का किया-धरा सब व्यर्थ हो जायगा। इसलिए सारा दारोमदार आप पर है। ऐसे समय में आप थोड़ा साथ दे डालें तो आनन्द आ जाय। उत्तर शीघ्र दीजिएगा।

भवदीय,

विजयानन्द (दुबे जी)

* *

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

भ्रामक हैं। इस पुस्तक के लेखक ने वास्तव में बड़ी योग्यता का परिचय दिया है और अनेक पुस्तकों से अच्छे-अच्छे अवतरणों को उद्धृत किया है। इससे पुस्तक की प्रामाणिकता बढ़ गई है।

—अवध उपाध्याय

* * *

व्रतोत्सव-विधान—लेखक श्री० रामेश्वर-प्रसाद ओझा, प्रकाशक ओझा-बन्धु आश्रम, इलाहाबाद, पृष्ठ-संख्या १२९, मूल्य ॥=)।

"किसी जाति के यथार्थ रूप का ज्ञान उसके त्योहारों से होता है। ये त्योहार जाति के उत्थान-पतन के परिचायक होते हैं। अतएव जीवन-संग्राम में दौड़ लगाने वाले कर्मवीरों के लिए इनका बड़ा महत्व है!" इन्हीं शब्दों से इस पुस्तक की भूमिका आरम्भ होती है। आगे चल कर कहा गया है—"यद्यपि इस समय हमारी असावधानी, हमारी मूर्खता से उत्सवों का उद्देश्य पूरा-पूरा पालित नहीं होता, उत्सवों में बहुत सी मूढ़ धारणाएँ प्रचलित हो गई हैं, इतना होने पर भी उत्सवों की उपयोगिता में सन्देह नहीं किया जा सकता।" निस्सन्देह व्रतों और उत्सवों ने हमारे जातीय जीवन और राष्ट्रीय भावों के संरक्षण में बहुत बड़ा भाग लिया है। परन्तु दुःख की बात है कि हम इन व्रतों और उत्सवों के सच्चे रहस्य को भूल गए हैं। हम लोग व्रत करते हैं, पर उसके अर्थ और महत्व को नहीं समझते और इसीलिए उसका फल भी हमें नहीं मिलता।

इस पुस्तक में नव वर्ष, गणेश चतुर्थी, करवा चौथ, जन्माष्टमी, रामनवमी, गङ्गा दशहरा, अनन्त चतुर्दशी, महाशिवरात्रि, भैयादूज, नाग पञ्चमी, बसन्त पञ्चमी, दीपावली, रक्षाबन्धन, होली, छठ आदि ३३ व्रतों का वर्णन बड़ी सुन्दरता के साथ किया गया है। त्योहारों के ऐतिहासिक महत्व के साथ ही साथ उनके करने का शास्त्रीय विधान भी समझाया गया है। इससे पुस्तक की उपयोगिता बहुत बढ़ गई है।

इन त्योहारों के विषय में संस्कृत ग्रन्थों में जो कथाएँ लिखी गई हैं, उनमें कई बातें ऐसी घुसेड़ दी गई हैं, जिनसे अन्धविश्वास फैलता है। उदाहरण के लिए, हरतालिका व्रत के माहात्म्य में कहा गया है—"सौभाग्य की इच्छा रखने वाली स्त्रियों को यह व्रत अवश्य करना चाहिए। जो स्त्रियाँ यह व्रत नहीं करतीं और इस दिन आहार करती हैं, वे सात जन्म तक बन्ध्या और विधवा होती हैं।" इसी प्रकार गणेश चतुर्थी को चन्द्र-दर्शन का निषेध करते हुए कहा गया है—"भगवान ने इस दिन चन्द्रमा का दर्शन किया था और उन्हें कलङ्क लगा था। इसी से आज के चन्द्रमा को न देखना चाहिए।" करवा चौथ का माहात्म्य दिखाने के लिए कहा गया है कि एक नवविवाहिता कन्या केवल इसीलिए विधवा हो गई कि उसने करवा चौथ में भूख लगने के कारण चन्द्रोदय होने के पहले ही अर्घ्य देकर भोजन कर लिया। ये बातें ऐसी हैं जिनका आधार अन्ध-विश्वास के अतिरिक्त और कुछ हो ही नहीं सकता। व्रत करने से उसका सुफल मिलेगा, और नहीं करने से वह सुफल नहीं मिलेगा, यह बात तो समझ में आती है, पर व्रत न करने से ऐसे-ऐसे भीषण दण्ड मिलेंगे, यह बात निरी कपोल-कल्पित है। इसी प्रकार के और भी अनेक भ्रम इन व्रतों के विषय में फैले हुए हैं। इस पुस्तक में ऐसी बातों की आलोचना की गई है, पर बहुत कम, प्रायः नहीं के बराबर। व्रतों के समस्त विधान पर और इनकी कथाओं पर जैसे ऐतिहासिक दृष्टि से विचार किया गया है, वैसे ही यदि वैज्ञानिक दृष्टि से भी विचार किया गया होता तो इस पुस्तक का महत्व बहुत बढ़ जाता। होली और दिवाली पर जो मूर्खताएँ की जाती हैं, उनकी इस पुस्तक में तीव्र निन्दा की गई है।

सब बातों पर विचार करते हुए पुस्तक बहुत ही उपयोगी हुई है। ख़ास कर स्त्रियों के लिए यह बड़े काम की है। भाषा शुद्ध, मँजी हुई और विषय के उपयुक्त है। छपाई, सफ़ाई सुन्दर, काग़ज़ अच्छा।

—शुकदेव राय

* * *

जीवन-स्मृति—लेखक श्री० रवीन्द्रनाथ ठाकुर; अनुवादक श्री० सूरजमल जैन, प्रकाशक मित्र ग्रन्थमाला कार्यालय, सीतलामाता बाजार, इन्दौर, पृष्ठ-संख्या ३२५ से ऊपर, मूल्य २), छपाई, सफ़ाई और काग़ज़ साधारण।

कविश्रेष्ठ रवीन्द्र बाबू का लिखा हुआ यह आत्म-चरित है। जो लोग उनकी लेखन-शैली से परिचित हैं,

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

वे जानते हैं कि रवि बाबू किसी साधारण से साधारण बात को भी कितने रोचक और सुन्दर ढङ्ग से कह देते हैं। फिर, यह जीवन-स्मृति तो अनेक मधुर स्मृतियों से भरी हुई है। कई परिच्छेद तो मुझे बड़े ही अच्छे लगे। पढ़ने में उपन्यास का सा आनन्द आता है। पुस्तक समाप्त किए बिना छोड़ने को जी नहीं चाहता। लेकिन इतना सब होते हुए भी अनुवाद की शिथिलता खटकती है। अनुवाद अच्छा नहीं हुआ। जगह-जगह बङ्गालीपन का असर पड़ गया है। यों भी भाषा अशुद्ध और कमज़ोर है। लेकिन हमारा विश्वास है कि साधारणतया इस पुस्तक से पाठकों का मनोरञ्जन हो सकेगा और वे इससे कुछ सीख भी सकेंगे।

* * *

२१ बनाम ३०—लेखक श्री० चतुरसेन शास्त्री, प्रकाशक सञ्जीवन कार्यालय, दिल्ली, पृष्ठ-संख्या लगभग ३२५, मूल्य १॥) रुपया, छपाई और काग़ज़ दरिद्र।

इस पुस्तक के इनर कवर पर इसके विषय की ओर इङ्गित करते हुए लिखा है—"वर्तमान आन्दोलन पर नई रूपरेखा और नए विचारों द्वारा अपूर्व प्रकाश डालने वाला, बड़ी ओजस्वी भाषा में लिखा हुआ, सर्वथा मौलिक ग्रन्थ"। मुझे इस बात से कोई इन्कार नहीं हो सकता कि विचार मौलिक हैं, गम्भीर हैं और भाषा भी बड़ी ओजस्वी है, किन्तु इसकी अनेक बातों में औचित्य का अभाव खटकता है। मुझे दुःख है कि अपने 'मौलिक विचारों' में शास्त्री जी ने सब जगह उदारता से काम नहीं लिया। जहाँ-तहाँ वे महात्मा गाँधी और राष्ट्रपति जवाहरलाल के व्यक्तित्व पर भी आक्रमण कर बैठे हैं। मैं नहीं समझता यह कहाँ तक उचित है। फिर भी, विचार उत्तम हैं, सलाहें काम की हैं और इनसे जनता को परिचित हो लेना चाहिए।

—शुकदेव राय

* * *

कौन जागता है ?—लेखक श्री० विनायक शङ्कर मेहता, आई० सी० एस०, अनुवादक पं० रामनरेश त्रिपाठी, प्रकाशक हिन्द-मन्दिर प्रयाग, छपाई-सफ़ाई अच्छी, पृष्ठ-संख्या ६४, मूल्य ॥)।

त्रिपाठी जी हिन्दी के बहुत बड़े कवि और लेखक हैं। हिन्दी भाषा-भाषी जनता को उन पर गर्व हो सकता है। जब उनके द्वारा अनुवादित इस नाटक का नाम सुना था, तब मन में बड़ी-बड़ी आशाएँ इस पुस्तक के प्रति बँध गई थीं। अब जब यह पुस्तक सामने आई है, तो देख कर दुःख होता है। मूल पुस्तक चाहे जैसी भी रही हो, अनुवाद बिलकुल निकम्मा हुआ है। कविताएँ इतनी दरिद्र, इतनी शिथिल और इतनी अरुचिकर हैं कि पढ़ने को जी नहीं चाहता। पुस्तक के प्रारम्भ में त्रिपाठी जी ने एक छोटी सी भूमिका लिखी है। उसमें कहा है—"गुजराती मेरी मातृ-भाषा नहीं, अतएव उसके शब्द और आन्तरिक रस को हिन्दी में ठीक-ठीक लाने में मैं कहाँ तक सफल हुआ हूँ, यह मैं नहीं कह सकता।" त्रिपाठी जी की यह शङ्का सोलहो आने उचित है। इस काम में वे बिलकुल ही सफल नहीं हो सके या बहुत कम सफल हो सके हैं।

पाठकगण ! कुछ अनुवादित कविताओं की बानगी देखिए—

१—मित्र मेरा प्राण सम—
नहीं फिर देखूँ दिदार !

२—दैव-सर्प मार सफल जन्म करेंगे।
प्राण क्यों न जायँ कदम आगे धरेंगे॥

३—वेग रोक ऐ सखा !
नहीं तो तीर छोड़ता हूँ मैं॥

४—बाजे अस्तोदय की वीणा
क्षण-क्षण गगनाङ्गण में रे।
मधुर-मधुर किरणें फैला कर—
देखो है आ रहा निशाकर।

५—नाहीं कर न सके जो प्राणी।
मानूँ उसकी सफल जिन्दगानी।

६—झूलो-झूलो प्रियतम प्यारे—
झूला बाँधा चन्दन डाल से।

७—पूनो की रजनी सा मैं भी
पाऊँ पूर्ण कला रे।
निष्कामी प्रभु कामी होकर
नूतन रास रचाया।

बस, इतने ही नमूनों से पाठकों का जी ऊब गया

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

होगा। सब टके सेर वाली कविताएँ हैं। छन्द ऐसे मालूम पड़ते हैं, जैसे पागल का प्रलाप हो—एक पद का दूसरे पद से, एक चरण का दूसरे चरण से कोई सम्बन्ध ही नहीं मालूम पड़ता। भाषा अशुद्ध है, शिथिल और अनर्थक भी है। ऊपर के उद्धरणों पर ध्यान देने से यह बात पूर्णतः स्पष्ट हो जायगी।

गद्य की भाषा भी कुछ कम शिथिल और कम अस्त-व्यस्त नहीं है। उदाहरणार्थ—"क्या अपना जीवन प्रास-बद्ध होगा?" यह प्रास-बद्ध क्या बला है? साधारण पाठक तो पढ़ कर ही घबरा जायगा। और शायद आगे पढ़ने की हिम्मत ही छोड़ बैठे, क्योंकि ऐसे उदाहरणों की कमी नहीं है। पुस्तक पढ़ कर पढ़ने की मिहनत भी नहीं वसूल होती, पैसों की तो बात ही न पूछिए। मेरी सम्मति में यदि त्रिपाठी जी यह अनुवाद न करते तो उनके प्रसिद्ध नाम और हिन्दी साहित्य दोनों का उपकार होता।

—प्रफुल्लचन्द्र ओझा, 'मुक्त'

* * *

हमारा शासन—लेखक श्री० जगन्नाथप्रसाद 'विरही', प्रकाशक छात्र-भण्डार, लोहरदगा, राँची, पृष्ठ-संख्या १४२, मूल्य ॥=)।

इस पुस्तक में संक्षेप में भारतीय शासन-यन्त्र का परिचय देने की चेष्टा की गई है, पर इस कार्य में लेखक को किञ्चित भी सफलता नहीं मिली है। सारा ग्रन्थ पढ़ जाने के बाद ऐसा प्रतीत होता है कि किसी उच्च उद्देश्य से प्रेरित होकर यह नहीं लिखा गया है। जगह-जगह भारतीय समाज की निन्दात्मक आलोचना करने की चेष्टा की गई है, परन्तु सम्पूर्ण ग्रन्थ में एक भी ऐसा स्थल नहीं है जहाँ वर्तमान शासन-प्रणाली के भीषण दोषों की ओर सङ्केत भी किया गया हो। इसके विपरीत यत्र-तत्र अङ्गरेज़ों की चापलूसी-भरी प्रशंसा ही की गई है। भाषा इतनी शिथिल और लेखक को विषय का ज्ञान इतना अल्प है कि जगह-जगह अत्यन्त आपत्तिजनक और अशुद्ध बातें लिख गई हैं। एक जगह लिखा है—"अङ्गरेज़ हमारे राजा हैं.....।" यह एक ऐसा भ्रमपूर्ण वाक्य है, जिससे साफ़ ज़ाहिर हो जाता है कि लेखक ने जिस विषय पर लेखनी उठाई है, उस पर उसका थोड़ा सा भी अधिकार नहीं है। पुस्तक आदि से अन्त तक नीरस और अव्यवस्थित है, कम से कम विद्यार्थियों के पढ़ने लायक़ तो बिलकुल नहीं है। भाषा सम्बन्धी अशुद्धियों की भरमार है। लेखक को लिङ्ग का ज्ञान है ही नहीं। आप पृष्ठ १३३ पर लिखते हैं—"प्रजा को बड़ी कष्ट होती थी।" पृष्ठ ११७ पर लिखा है—"भारत में पत्र-पत्रिका अङ्गरेज़ों ने इजाद किया।" कोई ऐसा पृष्ठ नहीं जिस पर इस प्रकार की अशुद्धियों से भरे हुए कुछ वाक्य न मिल जायँ। जब भाषा की यह हालत है तब विराम-चिन्हों की बात करना ही व्यर्थ है। छपाई ऐसी ऊल-जलूल है कि अङ्क कहीं अङ्गरेज़ी में दिए गए हैं, कहीं हिन्दी में। विषय-सूची का पता ही नहीं है, हालाँकि अध्यायों की संख्या बीस से कम नहीं है। समझ में नहीं आता कि लेखक ने इस पुस्तक को लिखने की चेष्टा क्यों की है।

लेखक का कहना है—"यह पुस्तक विद्वानों के लिए नहीं है, पर छोटे स्कूलों के शिक्षकों और विद्यार्थियों के लिए है।" मेरी सम्मति में विद्यार्थियों के लिए यह पुस्तक न केवल लाभहीन, बल्कि निश्चयपूर्वक हानिकारक है। विद्यार्थियों की पाठ्य पुस्तकों का, भाषा और विषय के प्रतिपादन दोनों की दृष्टि से, शुद्ध होना अत्यन्त आवश्यक है। परन्तु इस पुस्तक में इन दोनों गुणों का सर्वथा अभाव है। लेखक ने भूमिका में कहा है—"मैं तो चुप ही था, पर कुछ शिक्षकों ने अनुरोध किया तो क़लम उठाया। मैं समझ ही नहीं सकता कि विद्वान लोग इस विषय पर कुछ क्यों नहीं लिखते।" जब हिन्दी भाषा में श्री० भगवानदास केला कृत 'भारतीय शासन' जैसा उत्तम ग्रन्थ विद्यमान है, जिसकी अनेक विशेषज्ञों और शिक्षा-विशारदों ने एक स्वर से प्रशंसा की है, तब लेखक का यह कहना निरी धृष्टता प्रतीत होती है। और यदि विद्वान लोग किसी विषय पर न लिखें तो यह निस्सन्देह दुःख की बात है, परन्तु इससे अविद्वान लोगों को अनधिकार चेष्टा करने का अधिकार कैसे प्राप्त हो जाता है? एक शब्द में मैं इतना ही कह देना चाहता हूँ कि यदि ऐसी पुस्तकें न लिखी जायँ तो हिन्दी-साहित्य और हिन्दी-भाषा-भाषी जनता दोनों का उपकार हो।

—'निर्मोही'

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

Certified circulation of Hindi CHAND exceeds 15,000 copies.

[جلد ۱ ، نمبر ۱] جنوري سنه ۱۹۳۰ع [January 1930

SRI JAGADGURU SHWARADHYA
JNANA SIMHASANA MANDIR
LIBRARY

ایڈیٹر — منشي کنهيالعل - ایم - اے - ایل ایل - بي ، ایڈووکیٹ

چندہ سالانہ آٹھہ روپیہ
چندہ ششماهي پانچ روپیہ

PRINTED AT

چندہ فارین دس روپیہ
قیمت ایک کاپي ایک روپیہ

THE FINE ART PRINTING COTTAGE, CHANDRALOK—ALLAHABAD

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

A RARE ENGLISH PUBLICATION

KAMALA'S LETTERS

TO

HER HUSBAND

THE whole book is a collection of sixty letters —letters, based purely on domestic affairs and society—letters in which the most ordinary details of family life are described. But the description is so interesting, so pungent, so piercing and inspite of all these so refreshingly beautiful that one cannot leave the book unfinished. But this is not all. The pungency of the style has got its inner allurements too. For there is hardly a single description devoid of the deepest love, which an extremely loving and sentimental wife conceives for a dearly loved husband and under these conceptions, there are hidden a series of growling silence—the outpourings of love-fervour. This has made the book all the more interesting.

The end of the book contains a few love letters. These letters are the masterpiece production of human sentiments. They give us the clear glimpse of the ravages perpetrated by love's terrific storm and the beauty is that every ravage is laden with the deepest pathos which a human mind can scent.

Neatly Printed. Full Cloth Bound with Protecting Cover. Price Rs. 3 only.

The "CHAND" Office, Chandralok—Allahabad

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

فہرست مضامین

۱ - قطعہ دعائیہ - عالیجناب سید ضامن علی صاحب - ایم - اے - صدر شعبۂ اُردو الہ آباد یونیورسٹی ۱

۲ - ہمارے خیالات :- ایڈیٹر

(۱) چاند ۲

(۲) کانگریس و سوشل ریفارم ۵

(۳) مسلم خواتین میں بیداری ۱۱

۳ - مجذوب کی بڑ :- پنڈت کرشن پرشاد صاحب کول سرونٹ آف انڈیا سوسائٹی .. ۱۴

۴ - گھنٹہ نہیں بجیگا :- پنڈت اندرجیت صاحب شرما ۲۵

۵ - ہندولا میں عورتوں کے حقوق :-

(۱) ہندولا - بابو بھولا لال صاحب بی - اے - یل - یل - بی - ۲۸

(۲) ہندو عورت ۳۱

۶ - کلام احسن - جناب احسن صاحب مارہروی لکچرار مسلم یونیورسٹی علیگڈھ ۳۴

۷ - بہادر ٹیپو :- ایک اجنبی گریجویٹ ۳۵

۸ - دوبے جی کی چٹھی - پنڈت وجیانند دوبے ۴۳

۹ - صندل کا ٹیکا :- جناب باسط صاحب بسوانی ۵۰

۱۰ - شوشل ریفارمس کی ضرورت :- شریمتی ودیاوتی سہگل ۵۱

۱۱ - کلامِ آرزو - بابو رام نامابرشاد صاحب آرزو الہ آبادی ۵۳

۱۲ - عورت کا آنسو - لالہ نانک چند صاحب ناز ایڈیٹر روزانہ پرتاپ ۵۴

۱۳ - تتلی - جناب نند کشور صاحب بی - اے - فیروزپوری ۵۹

۱۴ - پند و نصائح ۶۰

۱۵ - حمد - افضل الشعراء بابو نارائن پرشاد صاحب ورما مہر گوالیاری ۶۱

۱۶ - مضامین :-

(۱) سسٹر نیویدتا - جناب سید محمد حفیظ صاحب لکچرار الہ آباد یونیورسٹی ۶۲

SRI JAGADGURU VISHWARADHYA
JNANA SIMHASAN JNANAMANDIR
LIBRARY
Jangamawadi Math, Varanasi
CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

(۲) سوسائٹی میں مستوراتی وقر - جناب منشی ایشور سرن صاحب یم - ایل - اے - از لندن ۶۵
(۳) فطرت نگار تلسی کا ناصحانہ کلام - ڈاکٹر اعظم کریوی ۶۶
(۴) کرمان (ایران) میں ہندو - منشی مہیش پرشاد صاحب مولوی عالم فاضل، ہندو یونیورسٹی . . ۷۳
(۵) دوشیزۂ سحر - جنابہ نجم سلطانہ قریشی صاحبہ ۷۵
(۶) ایک شام - جناب اسلام احمد صاحب قریشی . . . . . ″
(۷) قومی جماعتیں - منشی مہادیو پرشاد صاحب ایم - اے - ایل ایل - بی - ۷۷
(۸) کانپور کا عظیم الشان مشاعرہ - جناب شرف الحسین صاحب قمر سدھوروی . . . ۷۹
۱۷ - فلسفۂ ہستی - جناب بسمل الہ آبادی ۸۰
۱۸ - جواہر لال نہرو - جناب سکھدیو پرشاد صاحب سنہا بسمل الہ آبادی ۸۱
۱۹ - گلزار لطائف :-
لتھوری لال - منشی - جی - پی - سریواستو - بی - اے - ایل ایل - بی - ۸۳
۲۰ - خانہ داری :-
(۱) مکان کی صفائی ۸۹
(۲) بدن کی صفائی ۹۱
(۳) کپڑے کی صفائی . . . . . ″
(۴) صنف نازک کا احترام - جناب منشی جگ جیون لال صاحب بھٹناگر بی - اے -
(ا) آداب مجلسی . . ″ ″ ″ ″ ″ ″ ۹۲
(ب) پردہ ″ ″ ″ ″ ″ ″ ۹۳
(ج) اعتدال ″ ″ ″ ″ ″ ″ ۹۴
(د) مذہبی زندگی ″ ″ ″ ″ ″ ″ ۹۵
۲۱ - موسیقی :-
(۱) موسیقی - بابو کرن کمار مکھوپادھیا (نیلو بابو) ۹۷
(۲) بھیرو جھنجھوٹی - پنڈت کدار ناتھ - بی - اے - ایل - ٹی ۹۹
۲۲ - منتخبات :-
دلچسپ معلومات - جناب محمود احمد خانصاحب پروفیسر کلیہ جامعہ عثمانیہ ۱۰۲

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

۲۳ - غزل منشی لچھمن پرشاد صاحب مرحوم ۱۰۵
۲۴ - تربیت طعام :- شریمتی یشودا دیوی
(۱) آٹا مائدہ کی سادی پوری ۱۰۶
(۲) مائدہ کی میٹھی پوری . . . . . "
(۳) آلو کی پوری ۱۰۷
(۴) آٹا کی سادی چپاتی "
۲۵ - نکات و مسائل :- ایڈیٹر
(۱) بیداری بخت ۱۰۸
(۲) عصمت کی قیمت ۱۱۱
(۳) شادی کی فضول خرچی اور تلک و جہیز کی بدرواجی ۱۱۴
(۴) بیوی کے حقوق ۱۱۶
(۵) ہندوستان میں تعلیم ۱۱۸
(۶) سوتنتر کی مطلق العنانی ۱۲۰
(۷) بخدمت ناظرین و معاونین ۱۲۴
۲۶ - اپنی اپنی سمجھ . . . . . ۲۴ - ۲۷ - ۹۷ و ۱۰۱ صفحات

تصاویر

۱ - سیہ رنگی
(۱) سوراج کا پیغام
(۲) ٹیپو سلطان
۲ - کارٹون
(۱) ہمارے طالب علم کی زندگی (رنگین)
(۲) انڈر گریجویٹ بیوی
(۳) گریجویٹ شوہر
۳ - سادی -
(۱) پنڈت جواہر لال نہرو
(۲) مایوسی کا عالم
(۳) رانی صاحبہ منڈی
(۴) سسٹر نیویدتا

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

(۵) مس میری ماتھن

(۶) مس بھگت ادھکاری

(۷) شریمتی سکھی بائی

(۸) مسٹر موتی رام چودھری

(۹) شریمتی اپیا

(۱۰) مس سلیڈ

(۱۱) شریمتی شاردا دیوان

(۱۲) مس آنند پائی

(۱۳) شریمتی سی۔ کرشنا ما

(۱۴) نواب صاحب بھوپال

(۱۵) بیگم صاحبہ بھوپال

(۱۶) شاردا بل کی تائید میں عورتوں کا کھڑی ہونا۔

(۱۷) شریمتی سوبھا لکشمی اہل

(۱۸) شریمتی ہنسا مہتا

(۱۹) انٹرنیشنل ویمن کانفرنس

(۲۰) شریمتی بسنتی دیوی

(۲۱) شریمتی شیلاوتی

(۲۲) شریمتی کاویری بائی

(۲۳) مس کے۔ ملاکھی

(۲۴) مس بچو بین لوٹوالا

(۲۵) شریمتی دھگوری دیوی

(۲۶) مس فلٹ

(۲۷) مس جینک کماری زتشی

(۲۸) مس رئیس النساء بیگم

(۲۹) شریمتی ایم۔ ڈی مودک

(۳۰) مس سدھا نشو بالا

(۳۱) مس آر۔ بیگم

(۳۲) شریمتی رامیشری نہرو

(۳۳ و ۳۴) مردانی پوشش میں عورتیں خفیہ پولیس

نوٹ۔ (۱) جناب فصیح العصر ناخدائے سخن حضرت نوح ناروی و جناب برق دہلوی کی خاص نظمیں بزمرہ "گریٹنگز" بجا برکت درج کی گئی ہیں۔ (۲) اشعار زیر تصاویر جناب منشی سکھدیو پرشاد صاحب سنہا بسمل الہ آبادی کے نتیجۂ فکر ہیں

(ایڈیٹر)

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

विनोद और शिक्षा का सुन्दर समावेश

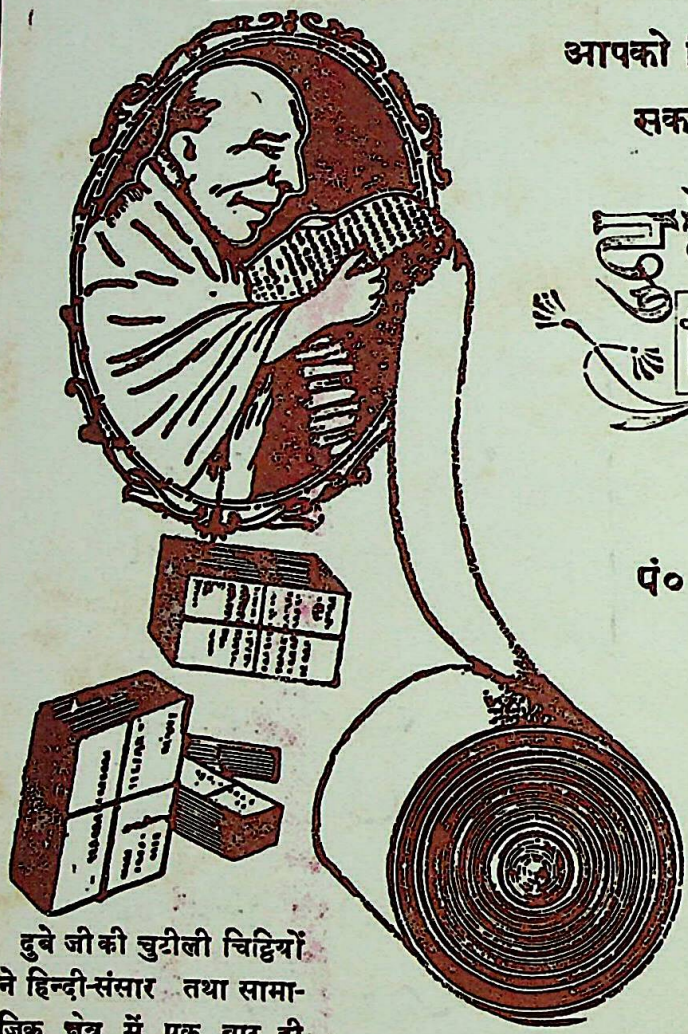

आपको किसी पुस्तक में नहीं मिल सकता, इसे स्मरण रक्खें !

दुबेजी की चिट्ठियाँ

लेखक—

पं० विजयानन्द दुबे जी

छपाई-सफ़ाई मनोहर, रङ्गीन प्रोटेक्टिङ्ग कवर के साथ मूल्य लागत मात्र—केवल ३) रु० ; स्थायी ग्राहकों से २।) मात्र !

दुबे जी की चुटीली चिट्ठियों ने हिन्दी-संसार तथा सामाजिक क्षेत्र में एक बार ही क्रान्ति मचा दी है। सुप्रसिद्ध राष्ट्रीय पत्र 'कर्मवीर' ने लिखा है :—

"श्री० विजयानन्द दुबे के सामाजिक विनोद बहुत चुटीले और शिष्ट हुआ करते हैं।"

'चाँद' के पाठकों से इन विनोदपूर्ण, किन्तु मर्मभेदी कटाक्षों के सम्बन्ध में विशेष कहना व्यर्थ है। इस पुस्तक में लगभग १५ चिट्ठियाँ तो ऐसी हैं, जो 'चाँद' में प्रकाशित हो चुकी हैं, तथा १५ ऐसी चुटीली चिट्ठियाँ भी हैं, जो 'चाँद' में प्रकाशित नहीं हुई हैं। पुस्तक की पृष्ठ-संख्या लगभग ५०० तथा सजिल्द पुस्तक का मूल्य ३) रु० है। छपाई-सफ़ाई दर्शनीय, तथा ऊपर सुन्दर प्रोटेक्टिङ्ग कवर भी है। प्रत्येक चिट्ठी में समाज के एक पहलू पर विचार किया गया है—पत्र इतने विनोदपूर्ण हैं कि हँसते-हँसते आप दोहरे हो जायँगे। भोजन करने के बाद रात्रि में ऐसी पुस्तकें पढ़ना स्वास्थ्य एवं मस्तिष्क—दोनों के लिए बहुत लाभदायक सिद्ध हुआ है।

व्यवस्थापिका 'चाँद' कार्यालय, चन्द्रलोक, इलाहाबाद

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

سوراج کا پیغام

واہ رے چرخا کہ تجھہ سے چرخ بھي چکر میں ھے
تیري شہرت اور تیري دھوم اب گھر گھر میں ھے

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

GREETINGS

Pt. Moti Lal Nehru, President, All India Congress :

I welcome the appearance of the Urdu CHAND. It supplies a real want. I hope it will fulfil the expectations raised by the excellence of its Hindi parent. I wish it every success.

Sir Abdul Qadir, Member Public Service Commission :

I have learnt with great pleasure that you propose to bring out an Urdu Edition of your excellent magazine, The CHAND, which has rendered valuable service to the cause of Hindi literature for more than 7 years. I think Urdu and Hindi are so connected together that in serving the literature of one you are practically serving the literature of the other. The only difficulty is that of the script, and in bringing out an Urdu Edition, you are surmounting that difficulty, and placing the result of your labours within the reach of the Urdu-reading public. I regard Urdu as the common heritage of Hindus and Muslims, and congratulate you on your resolve to serve Urdu as well as Hindi, and wish you success in your laudable enterprise.

F. W. Wilson, Esq., ExChief Editor of the "Pioneer":

I am delighted to hear that you are about to bring out an Urdu CHAND. I am told that your main objects are to kindle among the Urdu-reading public a desire for social reform and to spread among them a knowledge of enlightened social criticism. I can conceive of no more useful and beneficial a publication, if these principles are faithfully and unswervingly followed. Again and again the criticism is made against Indian life to-day and the objection raised against further political progress that a large majority of the public are either, because of illiteracy or indifference unaware of the need for social reform. The greatest vehicle in the education of Public opinion is an enlightened, vigorous, independent and free press. That you realise the need for bringing to bear the influence of modern publicity against the many dead and rotten branches of social custom that are choking the young and vigorous life of a healthy Indian nationality, is obvious by the mere fact that you have undertaken this new venture. I cordially wish you all success.

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

Munshi Iswar Saran Saheb, Member Legislative Assembly:

(By Air Mail from London)

I wish this magazine every success. The work of social reform is blessed and thrice blessed are those, who honestly do it. I hope this magazine will advocate the right policy in social matters and if it does, it will have to fight the obscurantists on the one hand and the blind imitators of the west on the other. I trust it will strive for the realisation of the fact that a girl has as much right to education and freedom as has her brother. I sincerely wish it to work for the preservation of the true type of Indian womanhood. I wish it a long career of usefulness.

Pt. Manohar Lal Zutshi, M.A., Principal, Training College, Lucknow:

I am glad to hear of this enterprise and wish it all success.

[جناب فصیح العصر ناخدائے سخن
حضرت نوح ناروی]

چاند نکلا ہم سے پوچھے کوئی کیسا چاند ہے
جسکے آگے چاند بھی ہے ماند ایسا چاند ہے
تھمتی تھمتی روشنی کی گرم جوشی ہر طرف
تیرگی رخصت سیاہی دور ظلمت ہر طرف
بس وہی گردش کسی ساعت کو تھکتا ہی نہیں
کیا گہن کیا ابر ہرگز ڈوب سکتا ہی نہیں
دنگ ارباب نظر حسن معانی دیکھ کر
اہل دل حیران طرز دل ستانی دیکھ کر
جلوۂ افکار نو کا بول بالا ہو گیا
بزم جدت میں اُجالا ہی اُجالا ہو گیا
دیدۂ انجم کھلے بہر تماشائے زمیں
اک قمر بالائے گردوں ایک بالائے زمیں
کروٹیں لیں غنچہ و گل نے مہکنے کے لئے
قطرۂ شبنم بنے موتی چمکنے کے لئے
ہے دعا اپنی رسالہ حشر تک جاری رہے
روز و شب صبح و مسا صورت ضیاباری رہے
قدرداں سوجی سے صدقے مہہ وشی کے گھات پر
اچھے اچھوں کی نگاہیں اُجلی اُجلی رات پر
حرصلہ اے نوح نکلیگا دل ناشاد کا
یہہ کریگا نام روشن اب الہ آباد کا

Major D. R. Ranjit Singh, O. B. E., (Kaisar-i-Hind) I. M. S., (Late):

I am very pleased to get your circular letter intimating the welcome news of your intention to publish a profusely illustrated Urdu Edition of the CHAND. I hasten to give it my sincere welcome and wish it the same success which Hindi Edition has had. I am conscious of the great good the Hindi CHAND has already done and I am confident its Urdu Edition will be able to do the same.

Pt. Krishna Pd. Kaul, B. A., of the Servant of India Society, Lucknow:

I am glad to learn that you are bringing out an Urdu Edition of the CHAND.

Pt. Brij Mohan Dattatrya, Chinani (Kashmir):

I most sincerely wish you success in this new venture.

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

Dr. Sir Tej Bahadur Sapru, M. A., LL. D., Ex Law Member of the Government of India:

I wish it every success.

Mr. Nand Kishore Akhgar, B. A., Ferozepur City:

I am indeed very much pleased to know of your new enterprise. Wishing you every success.

Mr. Lalit Mohan Verma, Municipal Commissioner, Mirzapur:

It is pleasant to hear of an Urdu Edition of CHAND, I should congratulate you for your decision to publish it. I wish the magazine every success.

Mr. Manohar Lal "Talib," B. A., (Hons), LL. B., Chakwal:

Please accept my congratulations and best wishes for your new venture. I trust the Urdu CHAND will do for Urdu what the old CHAND has done for Hindi.

Mr. Islam Ahmad, Hadi Qureshi Adib-i-Fazil, Rohtak:

I am extremely glad to know that you have dicided to publish an Urdu Edition of the CHAND. In fact the public was in great need of an Urdu Journal like the CHAND, from the United Provinces. I pray for the success of your magazine.

Mr. Jai Ram Sharma, Jigranvi, Meerut:

I wish your new enterprise all success.

Mr. M. H. Syed, M. A., Lecturer in Urdu, Allahabad University:

I am glad to learn that an Urdu Edition of the CHAND is being issued. I wish this new venture every success. I understand that this monthly is devoted to the cause of social reform in India. In our present state of society there is no cause as laudable as this and I do hope that the CHAND in its Urdu garb will bring light to a large number of people who are still steeped in ignorance and are averse to new ways of life.

The Hon'ble Munshi Narayan Prasad Saheb Asthana, M. A., LL. B., Advocate, Allahabad High Court, Member Council of State, Vice Chancellor, Agra University:

I am very glad to learn that an Urdu CHAND is to be shortly started. Urdu language and literature stand in need of all such fostering care as those proficient in Urdu can render, and the issue of a really high class Journal in Urdu will give the language a great impetus. The achievements of Urdu in the past have been of great benefit to Upper India and I hope and trust that the new venture will add to those achievements and will bring Urdu in line with modern thought. I wish the new Journal all success.

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

Zafar Omar, Esq., Supdt. of Police Camp Jaunpur:

I am very glad to learn from to-day's Pioneer that you are bringing out an Urdu Edition of the CHAND. I congratulate you on your enterprise and hope it will be as great success as the Hindi Edition.

Prof. Hamid Ullah Afsar, B. A., of Government Jubilee Intermediate College, Lucknow:

I congratulate you on your new venture and hope you will be able to remove the gulf that lies between Urdu and Hindi by bringing together the writers of both vernaculars.

Prof. Ram Kumar Verma, M. A., Hindi Dept. of the Allahabad University:

I am immensely pleased at the extraordinary success which has been achieved by the CHAND, in the domain of Journalism. Welcoming its Urdu Edition I desire that may it appear in English also to enlighten a still wider circle of readers.

Babu Shiva Shanker Singh, M. L. C., Ghazipur:

There has been a great want in the Urdu world for a magazine like the Hindi CHAND. It is a great pleasure to learn that CHAND is appearing in Urdu garb also. I hope it will prove to be as useful as its Hindi Edition. I wish it all success.

Mr. C. Y. Chintamani, M. L. C., Chief Editor of the "Leader":

I wish the best fortune for the Urdu CHAND about to be brought out by the enterprising proprietor of the bright Hindi publication of that name.

Lala Deshbandhu Gupta, Director "Tej" (Founded by Swami Shraddhanand—the great martyr of India) Delhi:

I am very glad to note that you have decided to bring out an Urdu Edition of the CHAND. The success which your Hindi Edition has achieved you can well be proud of. I feel that the proposed Urdu Edition will fulfil a long-felt want and will be particularly welcomed in Urdu literary circles. I offer my best wishes for the success of the new enterprise and congratulate you on the decision.

Yuvaraj Ambikeshwar Pratap Singh of Mankapur:

It has afforded me immense pleasure to know that we are about to be fortunate enough to get a splendid Urdu magazine CHAND under your able editorship.

The publishing of such a magazine will, I hope, prove of immense interest and value to Urdu-loving public.

I wish all success and prosperity to the magazine; and I congratulate you most heartily on your attempt, which may it prove to be a brilliant success, is my fervent prayer to God.

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

Munshi Mazhar Husain Saheb Allahabad :

"چاند" کي خوشگوار روشني سے ممالک متحدہ کے هندي داں پبلک بالخصوص اور تمام هندوستان کے هندي داں پبلک بالعموم زمانہ دراز سے متمتع هوتي رهي هے - لیکن اسکي پرنور ضیائیں ابتک اردوداں پبلک کے اندهیرے گهرونکا چراغ نہ بني تهیں اور اسکي پر آشوب سیاسي آنکهیں اسکي تسکین بخش تهنڈک سے محروم تهیں - "چاند" کي خدمات محتاج بیان نہیں - اسکي اردو میں آمد کي خبر کے متعلق اتنا کہنا کافي هے کہ زمانہ دراز کے بعد اردو داں پبلک کو وہ نعمت هاتهہ آگئي جسکي کہ وہ ایک زمانہ سے متلاشي تهي - میں آپکو مبارکباد دیتا هوں کہ آپ نے ایک اهم سیاسي بیمار یعني اردوداں پبلک کا علاج اپنے ذمہ لیا اور امید کرتا هوں کہ "چاند" کي علمي روشني انکي سیاسي واقتصاري علالتوں کي بوجهہ احسن تدبیر کریگي - کیا ایسي حالت میں میري یہہ امید بیجا هوگي کہ پبلک دوڑ کر اپنے مسیح کا استقبال کریگي اور اسکے خیرمقدم کے ترانے گائیگي - مجهے امید هے کہ اپکا یہہ احسان پبلک نہ بهولیگي اور "چاند" کي زندگي کو دوامي کرنے میں آپکا هاتهہ بٹائیگي -

Dr. Syed Mustafa Husain, M. A., (Cantab) Ph. D., (Berlin) writes from Cairo:

(By Air Mail)

I am atonce delighted at the good news that the management of that most powerful magazine of Hindi has decided to bring out also an Urdu Edition of this roaring Journal. I welcome it thrice on behalf of young muslims and I only wish that be it able to open the eyes of the so-called conservative Mussalmans of India and bring them nearer to their Hindu brethren, at a time when the whole of our *Hindostan* is passing between the devil and the deep sea. May the light of the CHAND illuminate every Muslim-home—this is my fervent prayer.

Khwaja Hasan Nizami Saheb, Delhi :

"چاند" کے اردو ایڈیشن کي اشاعت پر مبارکباد -

B. Suraj Prasad Saheb Visharad, Editor "Chhatri"; Bunsgaon :

ایشور "چاند" کو چاند بناوے -

Munshi "Prem Chand" Saheb, B. A., Editor "Madhuri" Lucknow :

یہہ امر باعث مسرت هے کہ "چاند" کا اردو ایڈیشن نکل رها هے -

Lala Nanak Chand Saheb, "Naz" Editor "Pratap" Lahore :

هندو سوسائٹي کي ایک کمي آپ نے پورا کر دیا - میں اردو "چاند" کا خیر مقدم کرتا هوں -

Dr. Azam Karewi, Saheb Shafiq Manzil Jubbulpore :

"چاند" کا اردو ایڈیشن شائع هونے والا هے یہہ پڑهکر انتہائي مسرت هوئي - میں اپنے پیارے وطن کے اس صحیفہ کا دلي خیر مقدم کرتا هوں -

B. Amrit Lal Sil, (Retired) Professor, Osmania University Hyderabad (Deccan) :

تمام روئے زمین آج کل کچهہ عرصہ سے سوشل رفارم کي کوشش کي هوا نہیں بلکہ آندهي چل رهي هے اور هندوستان کي دیسي زبانوں میں سیکڑوں رسالے اس کوشش میں غلطاں و پیچاں هیں - هندي میں ماهانہ رسالہ "چاند" آج سات سال سے اس کوشش میں مبتلا هے ترقي ملکي زبان ادب علوم و فنون ترمیم سماج اور سیاست کے اهم اور پیچیدہ سوالوں پر اپني جان کهپا رها هے اور خوشي کا موقع هے کہ اب بزبان اردو بهي شایع هو رها هے - آج کل کوئي بهي رسالہ اگر صدق دل سے اپنے ملک کي خدمت ادا کرے تو دشواریوں اور آفتوں کے جهونکوں سے رها نہیں هوتا - چونکہ رسالہ مذکور ادائي خدمت میں صداقت جرات اور نیک نیتي میں کلام نہیں اسلئے پاک پروردگار سے ملتجي هوں کہ ان بلاؤں سے بري هو کر اُسے ادائے خدمت میں بہ دل و جان مشغول رهنے کا موقع ملے اور دن بدن ترقي کرکے ملک کا عمدہ ترین و قابل تقلید رسالہ بن جاوے -

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

Dr. Tara Chand, M. A., D. Phil (Oxon) Principal, Kayestha Pathshala University College, and General Secretary, Hindustan Academy, U. P.:

مسٹر سہگل نے اردو میں ایک نیا رسالہ نکالنے کا ارادہ ک
ھے - میں اُنہیں مبارکباد دیتا ہوں اور امید کرتا ہوں کہ ار
کا "چاند" صحافي دنیا کي کشمکش میں کامیابي حاص
کریگا اور ادبي خدمات سے ملک کو فائدہ پہونچایگا -

S. M. Zamin Ali, Esq., M. A., Head of the Urdu Dept., Allahabad University:

یہہ معلوم کرکے کہ آپ نے "چاند" اب اُردو میں بھ
نکالنے کا اِرادہ کیا ھے - نہایت مسرت ہوئي - دعا کرتا ہوں
جس طرح آپ کے "چاند" نے ھندي کے گوشے گوشے کو روش
کیا ھے اُسي طرح دنیاے اُردو کو بھي اپني ضیاباریوں سے م
کرے اور مرد و زن دونوں کے لئے مشعل ھدایت
کام دے -

Lala Ram Lal Saheb Verma, Editor "Tej" Delhi:

اپني سات سالہ خدمات سے "چاند" نے اپنے وجود ا
اپنے نام کا جواز ثابت کردیا ھے - "چاند" سے ابتک زیادہ
ھندي دنیا کو ھي فیض پہنچ رہا تھا لیکن اب "چاند" ک
شعائین پھیل رھي ھیں - اسکي روشني کا دائرہ وسیع ہو
ھے - اِسلئے یہہ عین موزوں ھے کہ اردو دنیا کو بھي "چاند
سے اتنا ھي فیض پہونچانے کي کوشش کي جائے جتنا کہ ھند
دنیا کو پہونچایا جاتا رھا ھے - مالکان منتظمان اور کارکنا
"چاند" جنکي مجموعي مساعي کا نتیجہ "چاند" ک
یہہ اردو ایڈیشن ھے مبارکباد کے مستحق ھیں - "چاند" ک
مقصد ھندوستاني سوسائٹي کے رخ سے قدامت پسندي کے دھبہ
کو صاف کرنا ھے - مجھے اُمید ھے کہ "چاند" کے اردو
ایڈیشن میں بھي اس مقصد کو ملحوظ رکھا جائیگا - اور اسکي
تکمیل کي کوشش کي جائیگي - اردو دنیا کو اِس نئے "چاند"
کا خیر مقدم کرنا چاھئے -

Master "Basit" Biswan:

"چاند" کے اردو ایڈیشن کا حال معلوم ھوکر نہایت
مسرت ھوئي - خدا کرے یہہ بدر بنکر اُفق ادب پر چمکے ا
اسکي جلوہ ریزیاں دنیائے سخن کو پرنور کر دیں -

M. Mahesh Prasad Saheb, Maulvi Alam-Fazil, Benares Hindu University:

مجھے یہہ معلوم کرکے بہت خوشي ہوئي کہ ھندي
چاند کے مالک نے ترقي کے میدان میں ایک قدم اور آگے
بڑھایا ھے - میري دلي خواھش ھے کہ چاند کے اردو اڈیشن کو
بھي غیر معمولي کامیابي نصیب ہو -

The "Munadi" of Khwaja Hasan Nizami Saheb of Delhi:

ھمیں بیحد مسرت ھے کہ ھندي "چاند" اردو میں
بھي مہینے کي ھر پہلي تاریخ کو طلوع ھوا کریگا - خدا تعالیٰ
نظر بد سے بچائے اور اردو "چاند" ھمیشہ چودھویں رات کے
چاند کي طرح چمکے -

Mr. Inderjit Sharma Machhra:

اس سے بڑھکر بھلا اور کیا خوشي ھو سکتي ھے کہ
"چاند" کا اردو ایڈیشن نکلے گا - میں آپ کو آپ کي ھمت
اور کوشش پر مبارکباد دیتا ھوں - ایشور آپ کو آپ کے دلي
مقصد میں تائد اکرام کرے -

Mr. Jagjiwan Lal Bhatnagar, Delhi:

واقعي یہہ جائے مسرت ھے کہ جناب نے اردو میں "چاند"
نکال کر اس زبان کو چار چاند لگانے کا ارادہ کیا ھے - مبارک ھے
ثنا بقا یہہ خیال - اور اردو داں پبلک اس کا بدل و جان
خیر مقدم کریگي -

Lala Ghasi Ram Saheb, M. A., LL. B., Advocate, Meerut:

یہہ معلوم کرکے کہ ھندي کے مشہور و معروف رسالہ چاند
کے اردو ایڈیشن شایع کرنیکا فیصلہ کیا گیا ھے نہایت مسرت
ھوئي - خصوصاً اِسوجہ سے کہ اُسکي ادارت آپ ایسے قابل
ھاتھوں میں ھوگي - ھندي زبان کي جو خدمت چاند نے کي
ھے وہ اظہر من الشمس ھے - سچ پوچھئے تو اُسنے ھندي کو
چار چاند لگا دئے ھیں - ادبي خدمت کے علاوہ اُسنے تعلیم و
تربیت نسوان اور اُنکے حقوق کي حفاظت میں جو سعي بلیغ
کي ھے اوسکے لئے ھر بھي خواہ قوم شکر گذار ھے - اُمید ھے کہ
اردو چاند بھي اُسکے نقش قدم پر چلیگا - اور اپنے حسن ظاھري
و باطني سے ناظرین کے دلونکو مسخر کریگا - پرمیشور آپ کے
نیک ارادونمیں برکت اور کامیابي دے -

ایں دعا از من و از جملہ جہان آمین باد

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

چاند

[منشي مهراج بهادر صاحب "برق" دهلوي بي - اے]

بالائے بام گردوں یہہ چاند ضوفگن ھے * زریں لباس پہنے چوتھي کي یا دلہن ھے
ھر رات گو نیا ھے دور شراب جلوہ * گردش میں آسماں پر اک ساغر کُہن ھے
اے چاند تیرے آگے پھیکا ھے رنگ سب کا * تاروں کے انجمن میں تو صدر انجمن ھے
بیساختہ نگاھیں کھینچتي ھیں تیري جانب * حُسن ضیافشاں میں تیرے وہ بانکپن ھے
کیا ماجرا فروزي ھے تیري چاندني میں * فرحت دہ دل و جاں تیري ھر ایک کرن ھے
سب سے خراج تحسیں لیتا ھے حُسن تیرا * زیبا تیرے بدن پر زر تار پیرھن ھے
تیرے فروغ رخ سے چمکي ھے سب کي قسمت * کُہسار ھے کہ صحرا یا وادي ھے یا چمن ھے
زیرے نگیں ھے تیرے شب بھر فضائے عالم * تنو پر مہر انور لیکن تجھے گہن ھے
وہ دن بھي تھے کہ جب توھم پہلوئے زمیں تھا * یہہ تیرے دورے نو میں افسانہ کہن ھے

تو قبۂ نگاریں ھے چرخ کي جبیں پر
جلوہ نشاں ھیں تیري کرنیں رخ زمیں پر

خاطر نشیں ھے جلوہ ماہ تمام تیرا * موجوں کے لوح دل پر کندہ ھے نام تیرا
خورشید کي ضیا سے ھے روئے روز روشن * ظلمت میں نور پاشي شب کو ھے کام تیرا
سیلاب نور سے ھے روئے زمین منور * سیراب ھو رھا ھے ھر تشنہ کام تیرا
اھل جہاں نہوں کیوں مست مئے نظارہ * خمخانۂ فلک کي زینت ھے جام تیرا
میں تجھکو دیکھتا ھوں سُرخاب کي نظر سے * رکھتا ھوں میں بھي سر میں سودائے خام تیرا
کیوں کر میري رسائي ھو تیري بارگہ تک * اُفتادۂ زمیں میں اونچا ھے بام تیرا
ایک کیف کا سا عالم ھوتا ھے مجھپہ طاري * جب دیکھتا ھوں جلوہ میں وقت شام تیرا
رکھتا ھوں عہد طفلي سے رسم و راہ تجھہ سے * دیتي ھیں تیري کرنیں مجھکو پیام - تیرا
صدقے نہوں نگاھیں کیوں تجھہ پہ ماہ کامل * یہ حُسن یہہ تجلي یہ احتشام تیرا

اے جلوۂ مُجسم ! عالم فروز تو ھے
معروف دید میري چشم نظارہ جو ھے

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

चाँद

CURRENT OPINIONS

The Amrit Bazar Patrika says.

Had there been such magazine, in Bengalee, Urdu, Marathi, Telegu, etc., a great service would surely have been rendered in the cause of our poor helpless children. *We sincerely thank the Editor of this magazine for his genuine services.*

In a word, we have been extremely pleased by its perusal and wish it all success in its useful career.

***

The Servant says:

The magazine stands for progressive social reform and is largely devoted to the welfare of our women-folk. The articles published in it are of great merit and its get-up has left nothing to be desired.

It may be rightly called a women's magazine and deserves patronage at the hands of the Hindi-reading public.

***

The Indian Daily Telegraph says:

We have received the first number of the fourth volume of CHAND. It is ably edited and deserves much encouragement from the Hindi public. Its language is simple and chaste. The Magazine stands for progressive social reform and it mainly deals with important social problems, which our women will do well to read. In the current magazine the editor contributes a striking article on child-marriage in which he graphically describes the evil-effect of early marriage. Two other equally important articles are on Temperance and Cruelty to Animals. The magazine gives enough reading matter. Besides it contains good many essays written by well-known authors. It also gives attractive pictures

The Leader says:

The February (1929) number of the *Chand* fully maintains its reputation for fearless criticism of social injustice and bold advocacy of reform. Its columns are always full of interesting articles poems and stories. Hindi may well be proud of possessing a high class magazine like *Chand*.

***

The Patriot says:

We commend this journal to the Hindi-reading public with the hope that they will extend their patronage to this useful *journal, which, we are sorry to learn, has been kept up at a considerable pecuniary loss to the promoters of the enterprise.*

***

The Tribune says:

The Magazine is neatly printed on good white paper and in get-up and elegance is all that the most fashionable lady may desire. It has been aptly described as an emporium of ladies own literature and we have no hesitation in recommending it to our readers and its use in schools, colleges and public reading-rooms will go a long way in furthering the cause of Hindi in this Province.

***

The Sunday Times says:

The CHAND is perhaps the only vernacular magazine of its kind in India. Its fine get-up, neat printing, thoughtful contributions and beautiful illustrations compel the reader to speak highly of the journal. It is no exaggeration, we believe, to say that the CHAND occupies foremost place among the journals published in this country. We extend our hearty congratulations to the editor and wish the journal a long and useful career.

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

JNANA SIMHASAN JNANAMANDIR
LIBRARY
Jangamawadi Math, Varanasi
Acc. No. 3079

ہندی چاند کی سرٹیفائڈ اشاعت ۱۵۰۰۰ کاپیاں ہیں

m. V. Sharma
Nalgonda

خدمت گذاری اور جان نثاری کا بلا تعصب وکیل

اس سادگی پہ کون نہ مرجائے اے خدا لڑتے ہیں اور ہاتھ میں تلوار بھی نہیں

پہلا سال
جلد اول

جنوری ۱۹۳۰ء

نمبر ۱
تعداد جلد ۱

قطعہ دعائیہ

[عالیجناب سید محمد ضامن علی صاحب ام۔اے صدر شعبۂ اردو الہ آباد یونیورسٹی]

مژدہ باد اے دل کہ اب شہر الہ آباد سے شکر ہے اللہ کا طالع ہوا اردو کا چاند
چار چاند اس سے لگیں یارب سپہر علم کو ضوفشاں ہو روز و شب صبح و مسا اردو کا چاند
روشنی پھیلائے معلومات کی مابین خلق منزل تعلیم کا ہو رہنما اردو کا چاند
چشم ظاہر بیں کو تصویروں سے دے کیف و سرور عقل کو بخشے معانی سے ضیا اردو کا چاند
روح کو بالیدہ گلہائے مضامیں سے کرے گلشن ایجاد میں ہو جاں فزا اردو کا چاند
معتدل رکھے زبانِ "ریختہ" کا یہ مزاج ارض علمی کا ہو خط استوا اردو کا چاند

صدقِ دل سے یہ دعا کرتا ہے ضامن روز و شب
آسمان علم پر چمکے سدا اردو کا چاند

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

ہمارے خیالات

چاند

جنوری ۱۹۳۰ء

"چاند"

یہ امر ایسا اظہر من الشمس ہے کہ ہر گز محتاج روشنی بیان نہیں ہے کہ عرصہ دراز سے ہندوستانی عورتوں کی بیکسی اور بے بسی کی عجیب حالت ہے۔ اُن کے ساتھ ہر صورت و پیرایہ میں جو کچھ بے انصافی و بیدردی برتی جاتی ہے سب پر روشن ہے۔ واہ رے انقلاب زمانہ؟ ہمیشہ سے سنتے چلے آئے ہیں کہ ؎

بترس از آہ مظلوماں کہ ہنگام دعا کردن
اجابت از درِ حق بہر استقبال می آید

کیا یہ احاطۂ شعر ہذا سے باہر ہیں؟ ہماری ان غریبوں کی آہ و بکا میں کیا کوئی اثر نہیں؟ کیا اِن بیکسوں و مظلوموں کی نالہ و فریاد کے سوز و گداز پر پانی ہی پھر گیا ہے؟ بیشک ہمارا تجربہ کچھ ایسا ہی بتلاتا ہے باوجودیکہ آج ایک ابلا بیکس کی کون کہے بیشمار مستورات ہند میں ڈھاڑیں مار مار کر رو رہی ہیں اور فرداً و مجملاً آہ سرد بھر رہی ہیں۔ تاہم ان ظالموں اور سنگدلوں کا دل کچھ ایسا تنگ ہے کہ اس کوتاہ بینی کے حصار کے اندر سوسائٹی کی انسانی زندگی کے پامال کر ڈالنے والی بداعمالیوں، بدرواجیوں و بدسلوکیوں کی

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

فوجیں بھری ہیں۔ اس کلیۂ مظالم کو آج تک جلا کر خاک سیاہ نہ کر سکیں۔ وجہ؟ اس کو شاعرانہ خیال یا تخویف از نتیجہ اعمال کہنا بس ہے۔

سوسائٹی کی بے انصافیوں، بدسلوکیوں اور بداعمالیوں کے قرار واقعی رفع کرنے کے لئے کچھ اور ہی تدبیر کرنے کی ضرورت ہے۔ مدبران گذشتہ و موجودہ بتلاتے ہیں کہ ان کے دفعیہ کی تین صورتیں ہیں (۱) جنگ (۲) قانون (۳) حق پسند خیالات کا عوام پر اظہار۔ جس گروہ اور ملک میں نہ تو طاقت جنگ ہے اور نہ چارۂ کار قانون، اُن کے لئے تیسری ہی صورت جائے پناہ ہے اور ہو سکتی ہے۔ نظم و نسق عالم میں نیک و بد ایسے مخلوط ہیں کہ اُن میں سے کوئی بھی یکقلم معدوم نہیں ہو سکتا۔ گنجائش ہے تو محض اتنی کہ نیک بد پر حاوی کر دیا جائے۔ چنانچہ حق پسند خیالات کا عوام پر اظہار کر کے حق کو ناحق پر ترجیح دلوانا ہی مناسب تدبیر ہے۔ یہ امر اظہر من الشمس ہے کہ ہندوستانیوں کی ملکی، تمدنی اور معاشرتی برائیوں کو دُور و دفعہ کرنے کے لئے تیسرا ہی طریق مذکور بالا احاطہ امکان میں ہے۔

اِس تدبیر و طریق کے انجام دینے کے خاص دو ہی ذرائع ہیں ایک تقریر دوسرے تحریر۔ تقریر سے عوام کے خیالات برائیوں سے ہٹا دئے جا سکتے ہیں بشرطیکہ گوش شنوا ہوں، ورنہ یہ نتیجہ ہوگا کہ حاضرین میں کچھ تو بالکل ہی اس گوہر سے بے بہرہ رہ جائینگے اور کچھ ایک کان سے سُنیں گے اور دوسرے سے نکال دینگے۔ اگر اسکی وجہ پوچھئے کہ کیوں؟ وجہ یہ ہے کہ مزاج موزوں نہ تھا پیام تقریر روانی دریا کی طرح ناپائدار ہے وقت پر ہاتھ دھولو ورنہ اُس بوند سے بھینٹ کہاں۔ قوت تحریر تقریر پر یوں بالا ہے کہ وہ ہمیشہ گھات میں لگی رہتی ہے اور جب موقع ملا اور مزاج موزوں پائی ہے تیر بہدف ہو جاتی ہے، چنانچہ درس تدریس اس مرض مہلک و جانکاہ کا علاج کامل و انسب ہے۔

ہندوستانی سوسائٹی میں ہر قسم کی برائیاں عموماً ہر شکل و پیرایہ میں اور خصوصاً بشکل پابندی عقاید مذہبی روزانہ ترقی پاتی جاتی ہیں۔ اس کی وجہ سے ہم کو تیسری تدبیر بالا کی پناہ لینی پڑی اور رسالہ 'چاند' بزبان ہندی عرصہ سات سال سے نمود ہوا جس کا شہرہ آج اس حد تک پہنچ گیا کہ اُردو داں اصحاب و تعلیم یافتہ خواتین کی طرف سے بہت بڑی مانگ ہے کہ رسالہ "چاند" کے اُردو اڈیشن کا بھی شایع ہونا ضروری ہے تاکہ اُردو زبان داں اصحاب و خواتین بھی "چاند" کی روشنی میں آکر سوسائٹی کی برائیوں کو دور کرنے میں ہاتھ بٹاویں۔ چنانچہ "چاند" اُردو میں اصحاب و خواتین ملک کی خدمت میں پیش کیا جا رہا ہے۔

اُردو لباس میں 'چاند' سوسائٹی کی وہی خدمتگذاری کریگا جو اب تک ہندی پیرایہ میں کرتا چلا آیا ہے پردے کی بدرواجی کو ہٹانا، نسوانی ظلمت و جہالت کو دور کرنا، اُن کے حقوق کو واضح کرنا، بچوں کی پرورش و پرداخت کے بہترین طریقے بتلانا، امور خانہ داری میں پختہ کار بنانا، غرضیکہ 'لکشمی' جو واقعی ہندوستانی دیوی کا نام نامی ہے اُس کو اسم بامسمّٰی کر کے دکھلا دینا

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

اُردو 'چاند' کی زندگی کا ایک خاص مقصد ہوگا نیز سوسائٹی کے دیگر عیوب کو دُور کرنا، سوسائٹی کو راہ راست پر لانا ہندوستانیوں میں کارِ حق بلا خوف و خطر کر گذرنے کی ہمت پیدا کرنا، اُن کو حق شناس اور حق پسند بنانا وغیرہ وغیرہ اُردو 'چاند' کا فرض اعلیٰ ہوگا۔ زمانہ سلف و حال کے نیک مردوں اور خاتون باوفا کی زندگی کی نصیحت آمیز باتوں کا بالتصویر تذکرہ، اصلاح و ترقی اور سُدھار کا اعلیٰ ترین آلہ جو کسی فرقہ یا گروہ کے وجود و قیام کے لئے بجدّے ضروری ہے یعنی آباء و اجداد و بزرگانِ سلف کی تواریخ و کارنامے، چھوٹے چھوٹے قصے و لطائف، فن موسیقی کی باتیں اُردو 'چاند' کو مرصع بنا دینگی، زبان نہایت عام فہم ہوگی اور کوشش یہ رہیگی کہ اُردو ہندی ایک دوسرے کے نزدیک تر آجاویں بشرطیکہ بموقع اظہار خیالات و مضامین غامض اُردو زبان کا خون محض اس عہد و اقرار سے نہ ہو جائے نیز اس شرط کا یہ بھی مدعا نہیں کہ عبارت سلیس و روزانہ بول چال میں عالی خیالی کے شائقین اپنے لطف مذاق سے محروم ہی رہ جائیں۔ سوسائٹی کی ساخت بر شکل جسم انسانی ہے جسطرح کہ جسم میں پھوڑا یا ناسور ہو جانے سے مرہم پٹی کام نہیں دیتی تو جراحی سے کام لیا جاتا ہے ویسے ہی اُردو 'چاند' کے نشتر کلام پر سخت کلامی کا اتہام ناجائز و خلاف انصاف ہوگا۔ 'چاند' ہمیشہ حق پسندی کا بندہ بنا رہیگا۔ وہ ہمیشہ بلا خیال دوست و دشمن حق کے سوا حتی الوسع دیدہ و دانستہ کچھ نہ کہیگا۔ یہ رسالہ بلا خیال اپنے پرائے ہندو مسلمان جو قابل توقیر ہیں اُن کی قدر اور جو قابل تحقیر ہیں ان کو نظر حقارت سے دیکھیگا۔ اُردو 'چاند' ہندی 'چاند' کا لفظی ترجمہ نہ ہوگا بلکہ ہندی 'چاند' کے چیدہ اور زبان اُردو کے تازہ مضامین نظم و نثر زیب متن ہونگے 'چاند' کسی قومیت یا ذات پات کا بندہ نہیں ہے یہ تو آزادانہ ترقی و بہبود کا غلام ہے۔ اسم ضمیر 'ہم' 'چاند' کا ایک قسم کا مُوٹو ہے جس کی تشریح وہ یوں کرتا ہے کہ اس لفظ کے دونوں حروف سے یہ مطلب ہے کہ حرف (ہ) سے ہندو اور حرف (م) سے مسلمان دونوں کا اتحاد اور اختلاط باہمی لفظ 'ہم' کا مفہوم ہے۔ 'چاند' کا مقصد اور نقطۂ نظر ملک ہند کے باشندوں کو دنیا کے دوسرے ملکوں کے ترقی یافتہ باشندوں کے شانہ بشانہ دیکھنا ہے۔ اگر اس کا یہ مقصد نہ حل ہو سکا تو وہ بہادرانہ موت سے ہم آغوش ہونے کو کمربستہ ہے اُس کا قدم پیچھے نہ ہٹے گا۔

'چاند' کے دوستوں ہی کو نہیں بلکہ 'چاند' کے دشمنوں کو اُس کے اس عہد مکرر کا خیال خاص طور سے بنا رہنا واجب ہے کہ شیریں کلامی بے شک اچھی صفت ہے لیکن ہر جگہ اُسی پر زور نہیں دیا جا سکتا۔ دوائے شیریں دافع مرض ہو تو بہتر ورنہ محض اُس کی مٹھاس کے مقابلہ میں اُس کا دافع مرض ہونا نہایت ضروری ہے۔ 'چاند' تو بلا شک حسب ضرورت نشتر سے بھی کام لیگا اور مریض کے نالہ و فریاد کی طرف سے ڈاکٹر مہربان کی مانند رُخ پھیر لیگا 'چاند' سے خوشامدانہ گفت و شنید کی اُمید عبث ہے۔

ہمارا آغوش اُمید گوہر مراد سے صرف اُنھیں کے

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

دست شفقت سے جو ممبران سوسائٹی ہیں اور جن کے رُوبرو آج اُردو "چاند" بعجز تمام آسمان سے اُتر کر بصورت چاندنی نقش قدم کو بوسہ دینا چاہتا ہے پُر ہوگا۔ ہم مالک دو جہان سے جو خاکساروں اور صادقوں کا حامی و نگہبان ہے دعا مانگتے ہیں کہ یہ وسیلہ اُردو "چاند" ہم کو اپنی مراد براری کی برکت عطا کرے۔

کانگرس اور سوشل ریفارم

تمام ہندوستان کا جلسۂ اعظم یعنی کانگرس گذشتہ ۴۳ سال سے ہند کی خود مختاری کے لئے کوشش کرتا آرہا ہے لیکن نصف صدی کے عرصہ دراز میں ہندوستان میں اعلیٰ ترین پختہ کاران بزرگوار، تیز فہموں اور بڑے بڑے کارکنان سے متصل ہو کر بھی اپنی مقصد براری میں تسکین دہ کامیابی حاصل نہیں کر سکا ہے۔ اسکا کیا باعث ہے؟

تواریخ عالم بتلا رہی ہے کہ نیک اعمالی کی ترقی اور قومی اصلاح کی مضبوط بنیاد کی زمین پر عمارت ملکی کی دیواریں قائم کرنے سے وہ مضبوط اور دیرپا ہو سکتی ہے۔ مذہب اسلام کے بانی محمد صاحب کے آنے کے بعد عرب میں جنگلی فرقوں نے جس قدر زود تر عجلت کے ساتھ ترقی کی تھی وہ بعید از اُمید اور لاثانی تھی۔ خود محمد صاحب نے یہ خواب میں بھی نہیں سوچا تھا کہ اُن کی وفات کے بعد ایک ہی صدی میں اسلام کا جھنڈا فارس سے لیکر تا بہ فرانس پھرانے لگے گا۔ یورپ کے موجودہ مادہ پرست شائستگی کو بھی اپنی مبتدی حالت میں مذہب کی پناہ لینا پڑا تھا۔ مغربی یورپ میں پندرھویں سولھویں اور سترھویں صدیوں میں قومی اصلاح اور مذہبی اُصول بلاشک و شبہہ قبول کرنے والے اعتقاد کی بیخکنی کرنے میں بیحد جد و جہد سے کام لیا گیا تھا۔ اس شائستہ سرزمین میں کارڈنل لوتھر نے جس خالص اصول عقلی کا تخم ڈالا تھا اسی نشو و نما موجودہ یورپ کی قوت اور سروت کے اندر ہو رہا ہے۔ تواریخ ہند ابتدا سے انتہا تک ایسی بیشمار مثالوں سے پُر ہے۔ مہاتما بُدھ کے اصول پر مہاراج اشوک کی ایک طول و طویل بادشاہت کی ساخت ہوئی تھی سلاطین خاندان گپت کے عہد سلطنت میں پورانک دھرم کی گود میں ہند کے "طلائی زمانہ" کی پرورش و پرداخت ہوئی تھی۔ حال ہی کے اکبر بادشاہ کو تحفظ امن و امان کے بندوبست کے لئے مذہبی اور قومی انجمنوں کی پناہ لینی پڑی تھی۔ کسی بھی قومی ترقی کرنے والے نے ملکی اتحاد سے اہم کام میں آج تک مذہبی تن مردہ میں دوبارہ جان ڈالنے کی طرف عدم توجہی اور قومی اصلاحوں کی طرف بے پروائی نہیں کی لیکن بدقسمتی سے موجودہ زمانہ کے لیڈروں نے اس طرف توجہ نہیں کی۔ مغرب سے آوردہ ازم جس کو وے خود بخوبی ہضم نہیں کر سکے ہیں اُس نے زور پر ہند کا دوبارہ تر و تازہ کرنے کا سوال حل کر ڈالنا چاہتے ہیں اور بھی سبب ہے کہ سخت جد و جہد پر بھی کامیابی اُن سے کوسوں دور ہے۔

ہندوستان وہ ملک ہے جس میں مذہب پر زیادہ تر زور دیا جاتا ہے۔ اس کے پاس دنیا کو سنانے

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

کے لئے ایک اپنا خاص پیغام ہے۔ ملک ہند کے رشیوں نے زمانۂ سلف میں جنگ و جدل کی زندگی سے تھکی ہوئی قوموں کو قومی اور نفسی غل و شور سے نجات پانے کے لئے ایک سکون قلب کا طریق دکھلایا تھا۔ آج بھی تمام دُنیا کی آنکھیں روشنی کے رُوے روشن کو دیکھنے کے لئے ہندوستان کی جانب لگی ہوئی ہیں لیکن "اُو خویشتن گم است کرا رہبری کند" جو خود بداعمالیوں کے کیچڑ میں از سرتاپا غرق ہے اگر وہ پیر عالم بننے کا دعوی کرے تو اُس کی یہ کوشش ضحوکہ روزگار ہوگی۔ اپنے اس کار اہم کی تکمیل کے لئے ہند کو مستعد ہونا ہے۔ روحانی عروج ہند کا نعرۂ اسدی ہر ایک خفتہ دل کو بیدار کر سکتا ہے جبکہ وہ ایک بار بیدار ہو جاویگا تو ہند کے آج کل کے ملکی لیڈروں کو یورپ کے جوش دلانے والے قصے سُنا کر اُس کی قوت کو اُبھارنے کی ضرورت نہیں رہ جائیگی۔ اُس کی بیداری ایک مہر منور کی طرح روشن ہو جائیگی۔ برٹش گورنمنٹ اگر اُس کی راہ میں دنیا کو امن و چین کا پیغام سنانے میں سد راہ ہوگی تو وہ چشم زدن میں اُس رکاوٹ کو بنیاد سے بے بنیاد کر دیگا۔

ہمارے نیشنل لیڈرس چاہتے تو مرہٹا اور سکھوں کی تواریخ سے بہت کچھ نفع اُٹھا سکتے تھے۔ چھترپتی شیواجی مہاراج اور گرو گوبند سنگھ جی نے انڈین نیشنل کانگرس ہی کی طرح غلامی کی رسن سے ملک ہند کو نجات دینے کی قابل تعریف کوشش کی تھی۔ ان کی کارروائی کی تہ میں سمرتھ گرو رام داس اور گرو نانک دیو کی مذہبی اور قوت اصلاح کام کر رہی تھیں۔ مرہٹا اور سکھ عالمان علم سیاسی ہند کے باشندگان کی خُو بُو سے بخوبی واقف تھے۔ اُنھوں نے ہند کے معراج کے اعلیٰ ترین ظہور سے بزرگوں کی عزت کی، اُن کے بتلائے ہوئے راستہ پر چلے۔ وے ہندوستانی بہبود کے ہم آہنگ ہو کر ملکی ترقی کے لئے قومی قوتوں کے طالب ہوئے۔ اُن کی صدا تمام ہندوستان کے دلوں کو ہلا سکتی تھی۔ انھیں عوام کا اتحاد میسر ہوا اور وے اپنا نام انسانوں کے زمرہ میں زندہ جاوید کر گئے۔

انڈین نیشنل کانگرس کو بھی وہی موقع معقول حاصل تھا جو کہ گرو گوبند اور شوامی شیواجی کو ملا تھا۔ انیسویں صدی کے ابتدا میں ہندوستان کے مسئلہ روحانیت پر ایک مرتبہ اور خلل پیدا ہوا اور سوامی دیانند سرسوتی و نیز راجہ رام موہن رائے نامی دو لہریں اپنا طول و طویل ڈیل ڈول دکھلا کر انجام کار تاریکی عدم میں رُوپوش ہو گئیں۔ کانگرس کے نامی گرامی لیڈروں نے اُن بزرگوں کی قوت سے جو کہ مفید خلائق تھی مستفید نہیں ہوئے۔ اُنھوں نے پیشتر پبلک سے اتفاق رائے کر کے قومی اصلاح کا لمبا راستہ پسند نہیں کیا۔ کرتے بھی تو کیونکر؟ انیسویں صدی کی ابتدا میں انگریزی حکام کے رُوبرو یہ سوال پیش تھا کہ اہل ہند کو کس قسم کی تعلیم دی جائے جس سے اُن کی غلامی کا سلسلہ روز بروز مستحکم ہوتا جائے اور اُنھیں (اہل ہند) کو بالکل نکما بنا سکے۔ اُس زمانہ کی تاریخ کو دیکھنے سے پتہ چلتا ہے کہ اُنیسویں صدی کے ابتدا میں دو مختلف الخیال علماء سیاسی نہایت غور سے اس پیچیدہ پہیلی کے حل کرنے میں سرگرم تھے۔ ایک جماعت کا نام اوری انٹلسٹ اور دوسرے کا نام آکسی ڈنٹلسٹ تھا۔ پہلے قسم کے پولی ٹیشین کی رائے

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

تھی کہ ہندوستانی لوگوں کو ہندوستانی ادب، ہندوستانی علوم اور سنسکرت، فارسی، عربی و نیز دیگر مادری زبانیں پڑھانا واجب ہے۔ اس قسم کے مؤیدوں کو اوری نٹلسٹ کہا جاتا تھا لیکن آکسی ڈنٹلسٹ لوگوں کی رائے مستحکم یہ تھی کہ ہندوستانیوں کو زبان انگریزی، مغربی ادب و نیز مغربی علوم وغیرہ کی ہی تعلیم دی جائے۔ کئی سال تک اس سوال پر بحث مباحثہ ہوتا رہا۔ یہی وہ زمانہ تھا جبکہ اپنے زمانہ کے بڑے بھاری ماہر علم سیاست لارڈ مکالے ہند میں تشریف آور ہوئے تھے۔ یہ زمانہ ۱۸۳۴ء کا تھا۔ یہ وہی زمانہ تھا جبکہ حکام اپنی تعلیم ہند کی رائے قائم کرنے میں بحث و مباحثہ میں مصروف تھے۔ صرف لارڈ مکالے کی رائے سے ہی یہ سوال حل ہوگیا۔ یہ صاف ظاہر ہے کہ لارڈ مکالے ہندوستانیوں کو پرانی ہندوستانی تعلیم دینے کے بالکل خلاف اور انھیں انگریزی رنگ میں رنگنے کے جانب دار تھے۔

لارڈ مکالے کا صاف مقصد یہ تھا کہ اعلیٰ درجہ کے ہندوستانیوں میں پولٹیکل خیال پیدا ہونے سے روک دیا جائے اور انھیں انگریزی وجود کے قائم رکھنے اور اُسے خوبصورتی سے چلانے کے لئے کارآمد بنایا جائے۔ لارڈ مکالے نے اپنے ۱۸۳۵ء کے منٹ میں صاف الفاظ میں لکھا ہے:-

"ہمیں ہندوستان میں اس طرح کے لوگوں کا ایک خاص فرقہ تیار کرنے کے لئے حتی الوسع کوشش کرنا ہوگا، جو کہ ہمارے اور اُن کروروں ہندوستانیوں کے مابین جن پر ہم حکمراں ہیں، مترجم کا کام کرے۔ یہ لوگ ایسے ہونے چاہئے جو خون اور رنگ کی نظر سے تو ہندوستانی ہوں لیکن خواہش، زبان اور خیالوں کی نظر سے انگریز ہوں۔"

شاید یہ بتلانے کی ضرورت نہ ہوگی کہ اُس زمانہ میں ہندوستانیوں پر حکام کا اس حرفت سیاسی کا سحر بے طرح کارگر ہو چکا تھا۔ کانگرس کے اُس زمانہ کے مہتم لوگ صورت شکل میں ہندوستانی ہوتے ہوئے بھی تہ دل اور خیال سے ہندوستانی نہیں تھے۔ اُنھیں انگریزی تعلیم ملی تھی۔ اُن کا طرز معاشرت انگلستانی تھا۔ وے ہندوستانی لوگوں کی اصلی زندگی سے بالکل بے بہرہ تھے۔ ہندوستانی خیالات کی اُن کے دلوں میں مطلق گنجائش نہ تھی۔ اُن کی نگاہیں مغرب کی طرف لگی ہوئی تھیں۔ انگلینڈ کی پارلیامنٹ اور سلطنت فرانس کی سیاسی ہلچلیں ہی اُن کے دماغ میں جوش زن تھیں اور اپنے گھر کی اُنھیں مطلق خبر نہ تھی۔ یورپ کی متزلزل سیاست کو وے ہند کے لئے معراج سمجھتے تھے۔ اس کا نتیجہ یہ ہوا کہ ہندوستانیوں کے تعلیم یافتہ بنانے اور اُس کے بداعتقادیوں کے نشانوں کو دُور کرنے، اُس میں عالی خیالی پھرنے اور اُن میں اصلاح قومی کرنے کے مقابلہ میں اُنھوں نے سول سروس میں زیادہ عہدوں پر معمور ہونے کی بھیک مانگنا ہی مفید سمجھا۔ بنگال کے اُس بادشاہ کی جسکی رسم تاجپوشی ادا نہیں ہوئی تھی جملہ طاقت گورنمنٹ سے سول سروس کے ٹکڑے مانگنے میں ہی ختم ہوئی!! آہستہ آہستہ جبکہ اپنے فضول رونے پیٹنے پر انگریزی گورنمنٹ کی پھٹکار سن کر اُنھیں اپنی بے بسی کا علم ہوا تو ان لوگوں کی آنکھیں کھلنا شروع ہوئیں۔ اُنھوں نے

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

محض تقریروں کے زور پر ہندوستان کے لئے خود مختارانہ حکومت کا مانگنا شروع کیا اور ۱۹۲۷ء میں مدراس میں تو آزادی مطلق (انڈپنڈنس) تک کا زبانی فتویٰ گورنمنٹ کو دے ڈالا گیا۔ لیکن مرہٹوں اور سکھوں نے نصف صدی میں جو قابل اعزاز کامیابی حاصل کرلی تھی اُس کے مقابلہ میں کانگرس کا کیا وزن ہے؟ مرہٹہ اور سکھوں کے ہنگامے اپنے بھروسہ پر بپا ہوئے تھے۔ کانگرس کی جڑ میں دست نگری غیر کا خیال خام کام کر رہا ہے۔ خیر۔

کانگرس اگر سوامی دیانند سرسوتی، راجہ رام موہن رائے سوامی دیویکانند اور سوامی رام تیرتھ کی تعلیم کے بموجب ہوتی تو اُن کے سیاسی خیالات سے نفع اُٹھا کر ہندوستانی قوم قومی اصلاح کا کام انجام دے چکی ہوتی تو آج اُس کے لئے آزادی کے میدان جنگ میں فتحیابی کیسی آسان ہوگئی ہوتی۔ یہ محض فرضی خیال رہ گیا ہے۔ مغربی سلطنتوں کا زیر و زبر اور یورپ کے مختلف (ازم) یعنی وقت اور ہت کی تواریخ پڑھکر جن لوگوں کا دماغ منتشر ہوگیا ہے وے کہیں گے کہ ہندوستان کی انگریزی گورنمنٹ ہمیں کسی طرح پر بھی قومی اصلاح کرنے کے لئے موقع نہیں دیتی۔ جب تک حکومت کی لگام ہندوستانیوں کے ہاتھ میں نہیں آجاتی تب تک کسی قسم کی بھی اصلاح کرنے کا امکان نہ ہوگا۔ ہم بھی یہ تسلیم کرتے ہیں کہ قومی اصلاح کے کام میں حکام کے اتفاق رائے کی ہمدردی سے کام کرنے کی ضرورت پڑتی ہے لیکن اُسی کے ساتھ ساتھ ہماری مستحکم رائے ہے کہ کچھ دُور تک بلا امداد گورنمنٹ کے بھی اصلاح قومی کا کام انجام دیا سکتا ہے۔ اس حد تک اصلاح اور ترقی کر چکنے کے بعد جب گورنمنٹ کی امداد کے بغیر آگے بڑھنا ناممکن ہوجائے اُسی وقت ہمیں گورنمنٹ سے جنگ کرنے کی بنظر واجبیت بناء مخاصمت پیدا ہوتی ہے اُسی وقت ہم عامۂ خلائق کی ہمدردی حاصل کرسکیں گے اور اُسی وقت ہمیں آزادی کے میدان میں جنگ میں فتحیابی حاصل ہوگی ورنہ بالکل غیر ممکن ہے۔

خوشی کی بات ہے کہ کانگرس کے لیڈران اپنی اس غلطی کو کچھ کچھ محسوس کرنے لگے ہیں۔ مہاتما گاندھی نے جب سے اس کام میں قدم رکھا ہے تب سے کانگرس کے پلیٹ فارم سے اصلاح قومی کی صدا اُٹھنے لگی ہے مہاتما گاندھی کی زندگی میں ہندوستانی معراجوں کا بخوبی اظہار ہوا ہے۔ اُن کے طرز معاشرت میں ہندوستانی شائستگی کی چمک دمک نظر آتی ہے۔ مذہب اُن کی زندگی کا بنیادی رُکن ہے جو کہ ہندوستانی لوگوں کو جان سے زیادہ تر عزیز ہے۔ مذہب ہندوستان کا مقصد و مرام ہے سوشل اتحاد، سیاسی اور مالی ترقی اس کے ذرائع حصول ہیں۔ مہاتما گاندھی حصول مقصد کے لئے جملہ درکار ذرائع کا گلدستہ بنانا چاہتے ہیں۔ مہاتما جی کی اصلاحیں یک رُخی نہیں ہیں کیونکہ وے چاہتے ہیں کہ ہندوستانی لوگ محض سیاسی یا مالی تحفظ سے زندہ نہیں رہ سکتے۔ اصلاح قومی اُن کی مذہبی تشنگی کے رفع کرنے کے لئے زیادہ تر درکار ہے۔ اُنھوں نے (مہاتما جی نے) زندگی کے ہر پہلو کے جزء اعظم پر نگاہ رکھنے کا خیال پیدا کر دیا ہے۔ سیاسی پہلو میں اُنھوں نے ہمیں زبانی لفاظی کی جگہ پر ٹھوس کام کرنا سکھلایا ہے۔ جماعتی پہلو میں

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

گری ہوئی قوموں کے موخیز نالوں کو بے تعلقی سے سُننے کے عوض اُنھیں مستعدی سے اپنی مشکلوں کا مقابلہ کرنے کا سبق پڑھانا بتلایا ہے اور مالی پہلو میں زرِ دھنر بخش چرخا عطا کیا ہے۔ اُن کے اخلاقوں کی یہ مکمل تکمیل ہی اُن کے ہر دلعزیزی اور کامیابی کا راز ہے۔

زمانہ حال کی تعلیم کی روشنی میں پروردہ جو لوگ بلا بخوبی غور و فکر ہندوستان کو فرانس یا روس کے ضحوکۂ روزگار شکلوں میں مبدل کر دینے کے لئے تعجیل کر رہے ہیں انھیں اس وسیع میدان عوام الناس میں قدم رکھنے کے پیشتر شرق و غرب میں کس قدر تفاوت ہے اسے پورے طور سے سمجھ لینا چاہئے۔ عیش و عشرت ممالک مغربی کا معراج ہے۔ اس کے حصول کے ذرائع دولت اور قومی اتحاد ہیں۔ اس معراج کے حصول کے موافق قوم کی ساخت میں اگر مذہب سدّ راہ ہوتا ہوا معلوم ہو تو مغربی لوگ دھرم کو ایکدم الوداع کہہ سکتے ہیں۔ لیکن مشرقی ممالک کی بابیں اس کے بالکل برعکس ہیں۔ مشرق کا معراج مذہب کا حصول ہے۔ مشرقی قوم کا اتحاد باہمی اصول مذہبی پر ہوتا ہے۔ مادّی غرضی اور ذاتی آزادی کے ذلیل و فانی اصول پر نہیں ہے۔ مشرقی ملکی اور سیاسی اتحاد اور مال و منال کا استعمال حصول مذہب کے لئے کرتے ہیں۔ یہ اُنکی خو ہے۔ اس خو کو ترک کر کے وے اپنی ہستی قائم نہیں رکھ سکتے۔ جو اصلاحیں اس اصول کے خلاف کیجائینگی وے نہ تو نفع بخش اور نہ باقی ثابت ہونگی۔

اعتبار اور اعتقاد کے دیدک زمانہ سے تا بہ بیسویں صدی کے ترقی اور روشنی کے زمانہ کی تواریخ ہند سے اگر کوئی نتیجہ ہم نکال سکتے ہیں تو وہ یہی ہے کہ اصلاح ہند ہندوستانی طور و طریق سے ہونا مناسب ہے۔

مغربی پودا مشرقی آب و ہوا میں پورے طور سے بارآور نہیں ہو سکتا۔ ہندوستان کے نیشنل لیڈران اگر اپنی قوتوں کا باسود استعمال کیا چاہتے ہیں تو اُنھیں کاؤنسلوں کی محبت ترک کر کے کسانوں کے جھوپڑوں میں جانا پڑیگا۔ وہاں بھی محض انڈی پنڈنس اور بالشوزم کا شور و غل مچانے سے مقصد براری نہ ہوگی۔ جو لوگ اپنے کپڑے اور مکان تک صاف رکھنا نہیں جانتے وے سوراج کا انتظام کیسے کر سکیں گے؟ جس قوم میں چھوا چھوت اور جات پات کا خوفناک خیال ناہمواری محیط ہے اُن میں آزادی، برابری، اُخوت کے خیالات کا عام رواج کیونکر ہوگا؟ جس ملک کے جاہل باشندوں کو اتنا بھی علم نہیں ہے کہ لڑکے اور لڑکیوں کی شادی کس عمر میں کرنا چاہئے وہ انجمن آزادی کے لئے اپنا نمایندہ کس طرح پر چُن سکیں گے ہندوستان کے جو تعلیم یافتہ لیڈران اپنی تین کرور بدھوا بہنوں کا جگر خراش نالہ خوشی سے بیٹھے ہوئے ترانڈ دل آویز کی طرح خاموش سُن سکتے ہیں یا وے خود مختار ہند کے جلسہ اعظم میں بے زبان مزدوروں کے حقوق کا لحاظ بھلا کیونکر کر سکینگے؟ اس کی اُمید ہم کس بھروسہ پر کریں؟ آج کے دن ہند کے غریب کاشتکار اور غمزدہ مزدور خشک روٹی کے ٹکڑوں کے لئے بے حال ہو رہے ہیں! چُناؤ کے جھگڑوں کو غور سے سُننے کے پیشتر اُنھیں چرخہ اور خانگی کاروبار کے دوبارہ زندہ کرنے کی ضرورت ہے۔ ہندوستانی

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

سوسائٹی میں تعلیم کے نہ ہونے کی وجہ سے عوام کی رائے بالکل نیست و نابود ہے۔ جس ملک میں عوام کی رائے نیست ہے اُس ملک میں سلطنت جمہوری کے کیا معنی ہو سکتے ہیں۔ ہندوستان کے کسان اور مزدوروں میں سب سے پہلے صفائی، اصلاح قومی اور کارآمد ہنروں کو پھیلانا ہوگا۔ اُسی وقت ہندوستان کے عوام الناس کو ٹھوس تعلیم ملیگی۔ ان کے عقل و شعور کو وسعت ہوگی اور تب ہی سوراج حاصل کرنے میں اُنھیں زیادہ عرصہ نہیں لگ سکتا۔ اُنکی اندرونی بیداری ہی اُنکے سیاسی سوراج میں مبدل ہو جائیگی

یہ علامت نیک ہے کہ نوجوانوں کی دماغی قوت اس اُصول سے آگاہ ہوگئی ہے۔ اُس دن احاطہ بنگال کے کانفرنس کے میر مجلس کی حیثیت سے دور تقریر میں بابو سوبھاس چندر بوس نے فرمایا تھا جسکا مطلب یہ ہے

"سوامی دیویکانند نے کسی ایک خاص فرقہ تک ہی اپنا خیال محدود نہیں رکھا، اُنھوں نے کل قوموں کو ایک نظر سے اپنایا۔ اُنکے پر معنی الفاظ میں یہ صدا بھری ہے۔

"کاشتکاروں کے ہل سے، ماہی گیروں، موچیوں اور مہتروں کی ٹوکریوں سے اور کارخانوں سے جھوپڑیوں اور بازاروں سے ہر جا سے نئے ہندوستان کا نمود ہونا چاہیئے، آج بھی بنگالیوں کے ہر ایک مکان میں یہی صدا گونج رہی ہے۔ اس مسئلہ برابری کی پیدائش کارل مارکس کی کتابوں سے نہیں ہوئی تھی بلکہ ہندوستانی دماغ اور معاشرتی تعلیم سے ہوئی تھی۔ سوامی دیویکانند نے سلطنت جمہوری کے جس پاک اصول کو پھیلایا تھا دیش بندھو داس کے تحریروں میں وہ مکمل طور پر شایع ہوا ہے اور اس کی تشریح قابل دید ہے "دیش بندھو داس نے کہا تھا کہ "نارائن" اُن لوگوں کے درمیان میں رہتے ہیں جو لوگ کھیت جوتتے ہیں جو اپنے خون کو پسینہ بنا کے ہماری زیست کا انتظام کرتے ہیں۔ جن لوگوں نے سخت غربت کے سنگ آسیا سے پیسے جاکر بھی شائستگی کے چراغ تعلیم اور مذہب کے مشعل کو گل ہونے نہیں دیا۔ ملک کے بام ہستی کا پہلا زینہ ہے راست بازوں کو پیدا کرنا دوسرا زینہ اتحاد باہمی ہے۔ دیویکانند اور نیز دیگر لوگوں نے انسان کے پیدا کرنے کی فکر و تدبیر تو کی، دیش بندھو داس نے ملکی اتحاد کرنے کی فکر کی اور اس کام میں وے یہاں تک کامیاب ہوئے کہ پونجی پتیوں کے جانب داروں کو بھی مجبوراً اُن کی تعریف کرنی پڑی۔

"فی زمانہ مغرب سے سلطنت جمہوری کے نئے اصول کی ہندوستان میں آمد آمد ہو رہی ہے اور اس سے کتنوں کے خیالوں میں انقلاب بھی ہو رہا ہے لیکن اس ملک کے لئے سلطنت جمہوری کا خیال بالکل نیا نہیں ہے؟ اُسے نیا سمجھتے ہیں کیونکہ ہم نے اپنا تاریخی تاگا گم کر دیا ہے۔ کسی بھی دماغی اُپج کو فوراً بے خطا اور صحیح مان لینا واجب نہیں ہے۔ ہمیں یہ بات نہ بھولنا چاہیئے کہ کارل مارکس کے شاگرد رشید روسیوں نے بھی اُن کی تعلیم پر آنکھ بند کر عمل درآمد نہیں کیا۔ اُنھوں نے دیکھا کہ ان خیالات کو عملی جامہ پہنانا دشوار ہے۔ اُنھوں نے ذاتی سرمایہ اور کارخانوں کے مالک بننے کو جائز قرار دیکر نئی مالی صلاح کا سہارا لیکر چنانچہ خیالات کا ظہور پذیر ہونے کے لئے روس

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

بھروسہ کرنا بیوقوفی ہوگی۔ ہم تو اپنے مزاجوں اور ضروریات کے بموجب اپنے سوسائٹی اور ملک کی ساخت کرینگے۔ ہر ایک اہل ہند کا یہی مقصد اور یہی مدنظر ہونا چاہیئے۔"

ہمیں خوب یاد ہے کہ امسال کے جلسۂ کانگرس کے صدر نشین پنڈت جواہر لال نہرو نے بھی گذشتہ دسویں اپریل کو الہ آباد یونیورسٹی کے ہندو ہوسٹل میں لالہ لاجپت رائے کی تصویر کھولتے ہوئے اسی مضمون کی پُرزور تقریر کی تھی جس کا خلاصہ مطلب یہ ہے۔

"لالہ لاجپت رائے کی زندگی کی ایک خصوصیت یہ تھی کہ وے علم سیاسی تک ہی اپنے کو محدود نہیں رکھتے تھے۔ قومی اصلاح، مالی ترقی وغیرہ اور دیگر پبلک تحریکات میں بھی وہ دلچسپی رکھتے تھے +++ ہندوستانی سیاست میں یہ ایک عجیب بات ہے کہ جو لوگ پولٹیکل معاملات میں گرم ہوتے ہیں وہ سوشل معاملات میں نرم ہوتے ہیں۔ ہمیں اب تک اتنی کم کامیابی کیوں ہوئی ہے اس کی تھوڑی وجہ اس سے سمجھ میں آسکتی ہے جبتک پالٹکس کے ساتھ ہی ساتھ سوشل معاملات پر غور نہیں کیا جاتا تب تک ملک کی ترقی بالکل ناممکن ہے۔

کانگرس کا جلسہ اعظم امسال لاہور میں ہو رہا ہے جس میں زمانہ آئندہ ہند کے لئے کون تدبیر مناسب ہوگی یہ اہم مسئلہ طے کیا جا رہا ہے۔ خوش قسمتی کا باعث ہے کہ پریسیڈنٹ صاحب اتفاق سے وہی جناب موصوف چنے گئے ہیں جو کہ ابھی حال ہی میں کانگرس کی ناکردنی فاش غلطی جو کہ ابتدائے آفرینش سے کرتی چلی آرہی ہے گرفت کر چکے ہیں اور قابل ہیں۔ چنانچہ اُن کے متعلق یہ قیاس غالب ہے بلکہ یقین کے حد تک پہنچ جاتا ہے کہ کم از کم پہلے وے کانگرس کے منہ سے یہ سیاہ داغ دھو کے، یعنی ٹھوس سوشل ریفارم کرنے کے بعد فتویٰ انڈپنڈنس آسمان ہفتم سے نازل فرماوینگے۔

مسلم خواتین میں بیداری

ہمارا یہ یقین کامل ہے کہ ملک کے ترقی و بہبود کے لئے تمام عالم مستورات کا بیدار ہو جانا نہایت ضروری ہے۔ اس کا سب سے بڑا سبب یہ ہے کہ مستورات جان تحریک ہیں۔ ہمارے اس پیارے ملک کی قابل تعظیم پُرانی تواریخوں میں ایسے بکثرت ثبوت پائے جاتے ہیں کہ ہماری بہادر عورتوں نے مردوں کو ملک و مذہب کے بچانے کے لئے تحریک کر کے اپنے زور و طاقت کا نمونہ دکھلا دیا ہے۔ اس لئے سوامی دیانند نے کہا تھا کہ ہندو دھرم ہندوستان کے لڑکوں سے نہیں ہندوستان کی لڑکیوں کی عنایت سے قائم ہے۔ اگر ہندوستانی مستورات اپنا دھرم چھوڑ دیتیں تو اب تک ہندوستان تباہ ہو گیا تھا۔ سوامی جی کے اس کلام میں سر مو مبالغہ نہیں ہے۔ اس لئے ہم خواتین کی بیداری کو بڑی خوشی اور خرمی کی نگاہ سے دیکھتے ہیں۔ ہندو مسلمان دونوں ہی ہندوستان مادر مہربان کی آنکھوں کے تارے ہیں

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

بڑے دولار اور پیار سے پالے گئے ہیں۔ ماں اپنی آرزومند نگاہوں سے دیکھ رہی ہے۔ محض ہندو عورت خواہ محض مسلم عورت کی بیداری سے کام نہیں چلے گا۔ دونوں ہی کو اپنے فرائض کے پورا کرنے کی طرف گہری نگاہ رکھنی ہوگی ہندو مستورات تو پہلے ہی سے بیداری کے اُجالے میں آنے کی فکر کر رہی تھیں۔ آج اُن کی مسلم بہنوں کا اس بیداری کے میدان جنگ میں آنے کی خوشی کا بڑی عزت کے ساتھ ہم اظہار کرتے ہیں۔ مسلم خواتین ایک بات میں ہندو مستوراتوں سے زیادہ خوش نصیب ہیں۔ ہم یہاں پر جس طرف اشارہ کر رہے ہیں وہ مسلم مستورات کی اسلامی دنیا کی زندگی نہیں ہے۔ گو کہ یہ بے موقع بات ہے تو بھی ہم یہ کہہ ہی دینا چاہتے ہیں کہ ہندو عورتیں مسلم مستورات کے مقابلہ میں کہیں بڑھ چڑھ کے اپنے فرقہ کے بیرحم شکنجہ میں جکڑی ہیں۔ ہم جو یہاں مسلم مستورات کے خوش نصیبی کی بات کہہ رہے وہ اُن کے برتاؤ کی ترغیب جو کہ اُن کو اپنے ملک کے اندر اور باہر سے ملی ہے، ہے۔ سچ پوچھئے تو ہندوستانی عورتوں کو اس بیداری کے مندر کی گرد تک پہنچنے میں قدم قدم پر بہت سی ٹھوکروں، رُکاوٹوں اور مصیبتوں کا سامنا کرنا پڑا ہے لیکن اُنکی مسلم بہنوں کو اپنے اس راستہ میں دیسی مصیبتیں نہیں جھیلنا پڑیں۔ اُنکے لئے اس راہ کے کانٹوں کا پھول ہو جانا جس قدر خوشی کا باعث ہے اتنا ہی ہمارے لئے بھی باعث مسرت ہے۔ ہندوستانی مسلم مستورات کے سامنے اُن کی ترکستان اور مصر کی رہنے والی خاتون نے ایک نہایت خوشنما نمونہ رکھکر اُن کی بیداری کے راستہ کو پاک وصاف بنا دیا ہے۔ ترکی عورتوں نے ملک اور مذہب کی حفاظت کے لئے یکبارگی بلا تکلف اور بیخوف ہو کے ہزاروں برس کے پُرانے پردے کو پامال کر ڈالا وفادار عورتوں کی طرح وے اپنے بہادر ملکی بھائیوں کی خدمت کرنے کے لئے دایہ بنکر میدان جنگ میں گئیں اور وہاں سے لوٹتے ہی اُنھوں نے اپنے مسئلہ تعلیم و بیداری کو ہاتھ میں لیکر دنیا کی بدرواجیوں کا دشمن، ایک متبرک نمونہ سب کے سامنے رکھدیا، اُدھر مصری عورتوں نے اپنی بہادری کا جلوہ چوبیس گھنٹے کے اندر اپنے قید خانہ حرم کی دیواریں گرا کر بہادروں کے سرتاج زغلول پاشا کی بہادر بیوی کی رہنمائی میں خود مختاری کا ہل چلانا شروع کر دیا۔ آج بھی عورتیں اپنے ملک کی ترقی میں بہادری سے جان دیکر شریک ہو رہی ہیں۔ اس طرح اپنے ہم مذہب بہنوں کے معزز اور نہایت پاک نمونے کو سر جھکا کر اور اُن کے اُس پر جوش ترغیب سے بھری بیداری کے متبرک مقام کی طرف پیشرو بنی ہیں اور اپنے مبارک سفر میں اُنھیں سب سے زیادہ ترغیب بی اماں صاحبہ مرحومہ سے اور اُن کے بیٹے کی بہو محمدی بی بی سے ملی ہے۔ اِن دونوں ساس اور بہوؤں نے 'سوراج' کا پاک منتر ہر ہندوستانی کے کان میں پھونکا تھا اور ان کے اس پاک نمونے نے ہندوستانی مسلم مستورات کو جوش و خروش سے متوالا بنا دیا۔ مسلم مستورات جوش کے جوش میں اور خوشی کے زور سے اپنے راستہ پر پیشوا ہونے لگیں۔

اس بیداری کا یہ نیک نتیجہ نکلا کہ مسلم مستورات

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

پہلے معمولی اُردو تعلیم ہی پر قانع تھیں لیکن اب تعلیم اعلیٰ کی متمنی ہیں اور اعلیٰ سے اعلیٰ سند پانے کی کوشاں ہیں۔ ہماری یہ رائے ہمیشہ سے ہے کہ دماغی قوت میں عورتیں مردوں سے ذرّہ برابر کم نہیں ہیں۔ ہم کو اس بات کا فخر ہے کہ ہندو عورتوں کی طرح پر مسلم مستورات نے بھی ہماری اس رائے کی تصدیق کر دی۔ اس طرح پر تعلیم کے میدان میں مسلم مستورات کی بیداری ایک اور بھی پاک اور خوشگوار آئندہ بہبود کی علامت ہے۔ فی زمانہ مسلم مستورات کی بیداری کی راس بالکل جنابہ بیگم صاحبہ بھوپال کے ہاتھوں میں ہے جنابہ موصوفہ اپنی قوم اور مذہب کی ایسی خدمت کر رہی ہیں کہ اب تک دیکھنے میں نہیں آئی۔

اس میں ذرہ برابر شک کی گنجائش نہیں کیونکہ وے خود عورت ہیں اور اُن کی رہنمائی سے مسلم خواتین کی جماعت کی آئندہ بہبود اور بھی روشن ہوگی۔ اس میں شک کی کوئی وجہ ہی نہیں۔ جنابہ بیگم صاحبہ علیگڈھ یونیورسٹی کی وائس چانسلر مدت تک رہ چکی ہیں۔ شاید ہندوستانی دارالعلوم کی تواریخ میں یہ پہلا ہی موقع ہے کہ ایک عورت اس طرح پر ممتاز و سرفراز ہوئی ہو۔ اُن کی اس لاجواب بزرگی نے ہندو مسلم مستورات کے قدم کو بیداری کی رفتار میں بڑھا دیا ہے۔ بیگم صاحبہ بھی ہر طرح سے تعلیم کی ترقی کے لئے کوشاں ہیں۔ اخباروں میں ہماری اخبار خواں عورتوں نے پڑھا ہوگا کہ اُنھوں نے علیگڈھ یونیورسٹی کو ایک لاکھ اور مسلم لڑکیوں کے کالج کو بیس ہزار روپیہ دیا ہے۔ اُنھوں نے اپنی خیرات سے ملک کی رانیوں اور مہارانیوں کے سامنے ایک اچھا نمونہ رکھدیا ہے۔ ہم کو اُمید قوی ہے کہ آئندہ دیگر امیر اعلیٰ اتبار خواتین اپنی جماعت کی بہبود کی ترقی دینے میں جنابہ بیگم صاحبہ کی پیرو ہوں گی۔ مہاتما گاندھی کا یہ خیال ہے کہ باوجودیکہ مسلم مستورات میں بمقابلہ ہندوستانی عورتوں کے پردہ کا رواج زیادہ ہے تاہم اُن کی تعلیم بڑھی چڑھی ہے۔ یہ اُن کے لئے بیشک باعث اعزاز ہے۔ بات تو بالکل ٹھیک ہے لیکن اتنا ہم اور کہنا چاہتے ہیں کہ اب مسلم مستورات کو یہ پُرانا رواج پردہ بالکل اُٹھا دینا چاہئے۔ اُن کے پیش نظر اُنھیں کی ترکی اور مصری بہنوں کا پاک نمونہ موجود ہے۔ ملک کو آج کے دن اُن کے دست خدمت کی نہایت ضرورت ہے۔ مصر کی طرح اُن کا بھی ملک اُن کی رہنمائی کی راہ تک رہا ہے۔ اگر پردے کے اُٹھا دینے میں وے پیشوا بنیں تو ہندو عورتوں کو خواہ مخواہ اُٹھانا پڑیگا۔ ہم کو یقین کامل ہے کہ مسلم مستورات کی بیداری ملک میں باعثِ امن و امان اور دولت جاوداں ہوگی اور ہوگی۔ ہمارے دل میں متواتر یہ خیالات اُٹھا کرتے ہیں کہ ملک کی بدقسمتی سے یہ ہندو مسلمانی سوءمزاجی کی آگ جو دھدھک رہی ہے وہ مسلم مستورات کی بیداری کی لہروں سے ٹھنڈی ہو جائیگی اُن کی بیداری کی شکل میں ملک کا اختر اقبال طلوع ہو رہا ہے۔ اُن کی اس روز افزوں ترقی تعلیم سے ملک کے دل میں خوشی اور خوش اُمیدی کی تازگی سی آتی جاتی ہے۔ اُنکی ہندو بہنیں اُن کے اس جشن بیداری کو بڑی خوشی سے دیکھ رہی ہیں اور اُسی جشن نوروزی کی مہربان مادر ہند سے دعا مانگتی ہیں۔ "چاند" بھی ایک نئے قسم کا لطف اُٹھا رہا ہے

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

مجذوب کی بڑ

فسانہ

[پنڈت کرشن پرشاد صاحب کول سرونٹ آف انڈیا سوسائٹی]

"کچھ نہ سمجھے خدا کرے کوئی"

جب میں اس قفس عنصری سے آزاد ہو کر عالم ارواح میں داخل ہوا تو دیکھتا کیا ہوں کہ جنت اور دوزخ کے فرشتے پریاگ اور کاشی کے پنڈوں کی طرح آپس میں دست و گریباں ہو رہے ہیں ایک کہتا ہے کہ اس نے دین و ایمان کے لئے جان دی ہے۔ ملک اور قوم پر سے اس نے اپنے تئیں نثار کیا ہے۔ یہ بندگان خدا کا سچا خدمت گذار ہے لہذا اسے جنت میں جگہ دیجائیگی اور ہم اس کو وہیں لیجائینگے۔ دوسرا بضد ہے کہ نہیں اس نے بھوکوں مر کے جان دی ہے جو بمنزلہ خودکشی ہے۔ زندگی خدا کی دین ہے بجائے اس کی قدر کرنے کے اور خداوند عالم کا شکر گذار ہونے کے اس نے اس عطیہ کو ٹھکرایا ہے۔ یہ کفران نعمت ہے اس نے خدا کی توہین کی ہے لہذا یہ جہنم کا سزاوار ہے اور ہم اسکو بغیر وہاں لے جائے نہ چھوڑینگے۔ ترلسٹھ دن بے آب و دانہ گذار کر میں ایک حد تک جہنم کے عذاب سے بیخوف اور جنت کے ارمان سے بے نیاز ہو چکا تھا۔ مجھے اُن کے جھگڑنے پر ہنسی آئی اور میں نے کہا "یارو لڑتے کیوں ہو مجھے اعراف میں چھوڑ دو اور تم دونوں جا کر اپنے حاکم اعلیٰ سے اس قضیہ کا فیصلہ کرا لاؤ۔ یہ بات اُنکی سمجھ میں آگئی۔ مجھے اعراف میں چھوڑ کر یہ دونوں وہاں سے چلدئے میں یہاں کی اُس بیکاری اور شدت انتظار سے اُکتا رہا تھا کہ اُنھوں نے آکر کہا کہ اس وقت خداوند عالم بیحد مصروف ہیں تمہارا معاملہ عقب سے پیش ہوگا۔ میں نے کہا "نہ مجھے فیصلہ کی جلدی نہ اُس کا غم ہے لیکن بیکاری سے اُکتا رہا ہوں کچھ پڑھنے کو مل سکتا ہے؟"۔ اُنھوں نے احکام الٰہی کے دفتر کی بڑی بڑی ضخیم جلدیں میرے سامنے لا کر ڈالدیں اور کہا "نظام عالم اور قوانین قدرت

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

کے متعلق تمام مسلوں اور معاملوں پر احکام الٰہی ان میں تحریر ہیں ان کو پڑھو تمھارا وقت کٹ جائیگا" میں نے اسے غنیمت جانا اور ان کے مطالعہ میں مصروف ہو گیا۔ پڑھتا تھا اور غور سے ڈھونڈھتا تھا کہ میرے معاملہ کی بھی کوئی دوسری نظیر ملجاتی تو دیکھتا اُس میں کیا فیصلہ ہوا ہے تمام دفتر چھان ڈالا لیکن جو چیز ڈھونڈھتا تھا اُس کا کہیں پتہ نہ چلا۔ معلوم ہوا کہ ان احکام الٰہی میں بھی قانون ضابطۂ فوجداری ہند کی طرح بقول سر جیمس کرار کے (لکونا) یعنی خلا واقع ہوا ہے جس کے پُر کرنے کی ضرورت ہے میں اس نتیجہ پر پہنچا ہی تھا کہ دفعتاً خیال آیا کہ زمانہ حال میں چند سال پہلے میرے پیشرو ایک میاں میکسونی بھی تو ہو چکے ہیں۔ آخر اُن کا کیا حشر ہوا۔ اسی سوچ میں تھا کہ ایک روز وہی دونوں فرشتے میری خیر سلاّ پوچھنے کے لئے آئے میں نے فوراً ہی پوچھا "یارو مجھ سے پیشتر ایک مرد خدا میکسونی نامی کا بھی تو ایسا ہی معاملہ گذرا ہے اُس پر کیا حکم ہوا تھا" اُنھوں نے کہا "ان کا معاملہ آپ کی طرح زیر نظر ہے"۔ میں حیران و پریشان متحیر اُن کی طرف دیکھنے لگا تو وہ دونوں مسکرائے اور کہنے لگے "واللہ آپ بھی چیز ہیں، آپ کو حیرت کس بات پر ہے آپ کے یہاں چند ضلع ہیں ہر ضلع میں ایک درجن سے زاید حاکم تاہم چھوٹے چھوٹے معاملوں اور مقدموں کے فیصل ہونے میں مہینوں بلکہ برسوں صرف ہو جاتے ہیں۔ یہاں تمام کائنات عالم کا انتظام درپیش ہے بیچارے ایک اللہ میاں تن تنہا حکم صادر کرنے والے۔ اگر دیر لگتی ہے تو تعجب کیا ہے اور پھر یہاں وقت کا اندازہ مہینوں اور برسوں سے نہیں بلکہ جگوں سے ہوتا ہے آپ کو آئے مشکل سے ایک جگ ہوا ہے۔ میاں میکسونی کو وارد ہوئے دو تین جگ ہوئے ہونگے۔ آخر ہتھیلی پر سرسوں کیسے جمائی جا سکتی ہے"۔ میں تو یہ سُنکر ہکا بکا رہ گیا اور وہ دونوں نظر سے غائب ہو گئے۔ قصہ مختصر جب میں یہاں کی اُمس اور بیکاری سے قطعی عاجز آگیا تھا تو ایک دن یہ حکم سُنایا گیا کہ اس کے عذاب و ثواب دونوں کے پلہ برابر ہیں یہ نہ جنت کے لائق ہے نہ جہنم کا سزاوار ہے۔ اسے پھر عالم اجسام کو واپس کرو۔ البتہ اس قدر رعایت برتی جائیگی کہ اس کی زندگی از سر نو نہیں بلکہ وہیں سے شروع ہوگی کہ جہاں سے اس نے اُسے منقطع کیا تھا۔ ماسوا اس کو عالم ارواح کا جو علم اور حس ہو چکا ہے وہ دنیاوی زندگی میں بھی باقی رہے گا تاکہ اُس فاش غلطی کو جو اس نے کی تھی پھر نہ دہرائے یوں تو کون نہیں جانتا کہ دنیا عالم رنج و محن ہے اور مجھ پر بھی کچھ کم کڑی اُفتادیں نہیں پڑی تھیں تاہم دنیا مجھے نہایت دلچسپ جگہ معلوم ہوتی تھی اور میں اسے خوشی سے چھوڑنا نہیں چاہتا تھا۔ وہ تو حکومت پنجاب سے کچھ ضد ہی پڑ گئی تھی کہ میں نے بھی اس کا بیڑا اُٹھا لیا کہ اسکی ہٹ دھرمی کو توڑے بغیر نہ مانونگا۔ ورنہ پہلے بھی ایک ایسی ہی صورت پیش آچکی تھی اور حکومت بنگالہ کی مصالحت آمیز گفتگو اور عذر و معذرت سے تمام قضیہ سہولت اور خوش اسلوبی سے رفع دفع ہو گیا تھا لہذا یہ حکم سُنکر میری باچھیں کھل گئیں اور میں آناً فاناً پھر سرزمین ہندوستان کو واپس پہنچا دیا گیا جب میں نے اس دار فانی کو چھوڑا تھا تو شروع زمانہ

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

ستمبر ۱۹۲۹ء کا تھا۔ اب واپس آکر جو لوگوں سے پوچھتا ہوں
تو ہر شخص تو میر ۱۹۵۶ء بتاتا ہے اور میں ششدر کہ پل مارنے
میں ایک نسل کا زمانہ کیسے گذر گیا۔ نہ صرف یہی بلکہ اس
خانہ بدوشی کی حالت میں میں نے جو اطراف ملک کی خاک
چھاننا شروع کی تو دیکھا کہ یہاں کی تو کایا پلٹ ہوگئی ہے
اب تو ہندوستان کا باوا آدم ہی نرالا ہوگیا ہے۔ ہمارے
زمانہ تک تو لڑکوں کے لئے بھی تعلیم لازمی نہ تھی اب تو لڑکیوں
میں بھی پڑھنے لکھنے کا چرچا تمام ہوگیا ہے جس کا اثر یہ
ہے کہ یونیورسٹی میں لڑکیاں بھی لڑکوں کے ساتھ بال
پر قینچ کرا کے اور خاکی گھٹنا چڑھا کر میدان میں قواعد اور
نشانہ بازی کی مشق کرتی ہیں۔ ایسی حالت میں پردے
کا تو ذکر ہی کیا وہ تو ہندوستان کے مردوں کی آنکھوں سے
اٹھکر برٹش گورنمنٹ کی عقل پر پڑ گیا ہے۔ جس زمانہ میں
میں لاہور کے جیل میں فاقہ کشی کا ریاض کر رہا تھا۔ اسمبلی
میں ساردا بل کے نام سے ایک مسودۂ قانون پیش تھا
جس کی غرض یہ تھی کہ چودہ سال کی عمر سے کم کی لڑکیوں کی
شادی قانوناً ممنوع ہو جانی چاہیئے۔ پرانے خیال کے
لوگوں نے اس کے خلاف بڑا طوفان برپا کر رکھا تھا اور
مخالفت برپا کرنے والوں میں بڑے بڑے نامی لیڈر
شامل تھے۔ چودہ تو درکنار اب اگر کسی اٹھارہ برس کی
لڑکی سے بھی پوچھتا ہوں کہ تمھاری شادی ہوگئی ہے تو
وہ اسکو اپنی توہین سمجھتی ہے۔ ہمارے سامنے مسجدوں
کے سامنے باجا بجانے اور گاؤکشی کے مسئلوں پر آئے دن
ہندو مسلمانوں میں جھگڑے اور بلوے ہوا کرتے تھے مگر اب
ان کا چرچا سننے میں نہیں آتا۔ دریافت کرنے سے معلوم
ہوا کہ ۱۹۳۷ء کے عالمگیر سیلاب نے کاشی میں بھارت
مہامنڈل اور لکھنؤ میں فرنگی محل کو جب سے ڈھا دیا
دودھ بجائے چار آنہ سیر کے آٹھ آنہ سیر بکنے لگا گاؤکشی
بند ہوگئی اور مصطفےٰ کمال نے جب سے ٹرکی میں مسجدوں
میں موسیقی کو رواج دیا ہندوستان کے مسلمانوں نے بھی
باجا بجانے پر اعتراض کرنا چھوڑ دیا لیکن اس کے یہ معنی
نہیں کہ ملک سے لڑائی جھگڑا دور ہوگیا۔ پہلے ہندو مسلمانوں
میں بلوے ہوتے تھے اب پولیس اور فوج سے نوجوانان قوم
کی آئے دن ہنگامہ آرائیاں ہوتی ہیں۔

جب سے انڈپنڈنس یعنی کامل
آزادی کا طوفان کانگرس نے برپا کیا سرکار عالیہ نے
حفظ امن کی خاطر کانگرس کا سالانہ اجلاس بند کروا دیا
اب عام جلسوں اور مظاہروں کا ہونا قطعی بند ہوگیا ہے
پریس ایکٹ کے دوبارہ نفاذ اور اسکی سختیوں سے
تنگ آکر صاحبان اخبار نے اپنی ناراضی کا اظہار اس طرح
کیا ہے کہ ایک سرے سے اخبار نکالتے ہی بند کر دیتے
ہیں۔ جن کو اخبار پڑھنے کا عارضہ ہے وہ اینگلو انڈین
اخبارات سے اپنی تسکین کر لیتے ہیں غرضکہ ملک میں
سیاسی ہڑتال ہے پرانے لیڈروں میں سے نہ اب کسی کا
نام سنائی دیتا ہے نہ کوئی دیکھنے میں آتا ہے۔ بعض سے
اعراف میں ملاقات ہوئی تھی تو تعجب ہوا تھا کہ یہاں
آکر پھنسے ہیں پھر معلوم ہوا کہ لامذہبی اور کفر و الحاد کے
عذاب نے ان کی حب الوطنی اور نیکیوں کے ثواب کو
دھو کر ان پر جنت کا دروازہ بند کر دیا وہاں صرف ہندو
سبھا اور خلافت کمیٹی کے لیڈر ہی داخل ہونے پائے

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

کیونکہ انھوں نے اپنی حکمت عملی سے دنیا اور عقبیٰ دونوں کے سنبھالنے کی فکر کر لی تھی۔ بعض جو ابھی بقید حیات ہیں اُن میں سے کوئی خانہ نشین ہو کر کانگریس مرحوم کا مرثیہ لکھنے میں مصروف ہے کوئی ہندوستان کی آئینی حکومت کا دستور العمل ترتیب دینے میں منہمک ہے۔ ایک صاحب نے مہاتما گاندھی کے فلسفہ ترک موالات پر کئی ضخیم جلدیں تیار کی ہیں۔ نئے لیڈروں کا کون نام نہیں جانتا یونیورسٹی کے طلبا اور نوجوانان قوم میں جب کبھی ان کا ذکر ہوتا ہے تو اشارۃً اور کنایۃً سرگوشیاں ہوتی ہیں۔ جنکے سمجھنے سے میں عاری رہتا ہوں۔ کونسلوں کا یہ حال ہے کہ وہاں یا تو نیچ ذاتوں کے نمایندے دکھائی دیتے ہیں یا صاحبان جاگیر اور تعلقہ دار۔ خال خال سوراجی پلیٹن کے بھولے بھٹکے اور بچھڑے ہوئے خدائی فوجدار بھی نظر آجاتے ہیں یہ سول دس اُبیدس نوشنکس کمپنی اویس ٹرش

اور اسی طرح کی بھانت بھانت کی بولیاں بولتے ہیں جو نہ کسی کی سمجھ میں آتی ہیں نہ جن پہ کوئی دھیان دیتا ہے۔ بالآخر یہ بیچارے اپنی بیکسی کو سمجھکر خاموش ہو رہتے ہیں گورنمنٹ اظہار ہمدردی کر کے ان کی اشک شوئی کر دیتی ہے۔ کبھی کبھی ڈومینین اسٹیٹس اور نہرو رپورٹ کا مطالبہ بھی پیش کیا جاتا ہے جب کونسل اس مطالبہ کو باتفاق رائے منظور کرتی ہے تو گورنمنٹ جواب دیتی ہے کہ مسئلہ زیر غور ہے لیکن ابھی آخری فیصلہ کے اعلان میں کچھ دیر لگے گی۔ یہ کیفیت دیکھکر میں اس نتیجہ پر پہنچا کہ جہاں تک ملکی سیاسیات کا تعلق ہے ہم پر جمود کی کیفیت طاری ہے لیکن جب میں نے اخبارات پڑھنے کی طرف توجہ کی تو میری حیرت اور تشویش کی انتہا نہ رہی کسی نہ کسی حصۂ ملک سے کم و بیش روزانہ خبریں پڑھنے میں آنے لگیں کہ آج فلاں جگہ بم کا گولا چلا کل فلاں سرکاری افسر کا قتل ہوا۔ پولیس نے چند نوجوانوں کو گرفتار کرنے کی کوشش کی تو دونوں جانب سے رائفل اور پستول سے گولیاں چلیں۔ پہلے سُنا کرتے تھے کہ جاٹ، اہیر اور پاسی چوری کے لالچ میں ڈاکہ ڈالا کرتے ہیں اب پڑھنے میں آیا کہ شریف خاندانوں کے پڑھے لکھے نوجوان ڈاکہ ڈالکر اُس کمی کو پورا کرتے ہیں جو پہلے قومی چندوں سے پوری ہوتی تھیں۔ غرضکہ ملک میں نوجوانوں نے خاصی اچھی چہل پہل پیدا کر رکھی ہے۔ ان لوگوں میں تائٹ کلب کا چرچا اکثر ہوا کرتا تھا گو دبی زبان سے۔ تمام باتیں پردہ داری اور راز کا پہلو لئے ہوئے تھیں۔ یہ سب میرے کچھ اچھی طرح سمجھ میں نہیں آتا تھا سوچنے لگا کہ نوجوانوں سے ملکر اس راز کی تہ کو پہنچنا چاہئے میں خود اس ہنگامہ میں شریک ہوں یا نہ ہوں کم از کم جو کچھ ہو رہا ہے اُس سے واقفیت تو حاصل کرنی چاہئے۔ جب میں نے اعراف سے اس کرۂ خاکی کی طرف کوچ کیا تھا تو فرشتوں سے کہدیا تھا کہ میں مصلحتاً بنگالہ سے کنارہ کش رہا چاہتا ہوں اور چونکہ پنجاب میں بھی لوگ مجھ سے بہت کچھ واقف ہوئے ہیں اس لئے اگر مجھے صوبجات متحدہ میں پہنچا دیا جائے تو اچھا ہے چنانچہ وہ لوگ مجھے گنگا کنارے سے مگروارے کے قریب چھوڑ کر چلے گئے تھے۔ میں کشاں کشاں لکھنؤ

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

پہنچ گیا۔ یہاں مجکو تین ماہ سے زائد ہو گئے تھے اور چند لوگوں سے مراسم بھی پیدا کر لئے تھے۔ میں جس دُھن میں تھا اُس کا ذکر میں نے اپنے ایک مہربان سے کیا اُنھوں نے مسکرا کر جواب دیا کہ کیا مضائقہ ہے۔

میرے یہی مہربان شنکر ناتھ ایک روز سہ پہر کو مجھ سے ملے اور کہنے لگے کہ چلو تم کو مکٹ بہاری سے ملا دیں اُن سے ملکر تمھیں بہت سی باتیں معلوم ہو جائینگی مکٹ بہاری راجہ جسونت سنگھ کے چھوٹے لڑکے تھے راجہ جسونت سنگھ ضلع سیتاپور کے بڑے تعلقہ داروں میں تھے۔ آدمی پڑھے لکھے روشن دماغ اور ایک حد تک آزاد خیال بھی تھے۔ کونسل کے ممبروں میں ممتاز سمجھے جاتے تھے اور اعلیٰ حکام میں بھی آپ کا رسوخ تھا آپ کی اولاد میں دو لڑکے اور ایک لڑکی تھی۔ بچوں کی تعلیم کی طرف آپنے بہت توجہ کی تھی۔ بڑے صاحبزادے برج راج بہاری زراعتی کالج الہ آباد کا امتحان پاس کر کے اب ریاست کا کاروبار دیکھتے بھالتے تھے۔ مکٹ بہاری میڈیکل کالج لکھنؤ میں تین سال سے تعلیم پا رہے تھے اور ان کی بہن منورما لکھنؤ یونیورسٹی میں۔ ایم۔ ایس۔ سی میں پڑھتی تھی۔ مکٹ بہاری کی عمر تقریباً ۲۴ سال کی اور منورما کی ۲۲ برس کی ہوگی۔ دونوں بھائی بہن اور ان کی ماں گھر کی کوٹھی میں دی روڈ پر رہتے تھے۔ کوٹھی نہایت عالیشان اور پر تکلف سامان آرائش سے سجی ہوئی تھی۔ سہ پہر کا وقت تھا کہ جب میں اور شنکر ناتھ اُن کی کوٹھی پر پہنچے۔ اطلاع ہوئی۔ ڈرائنگ روم میں بلائے گئے۔ وہاں اُس وقت علاوہ مکٹ بہاری اور منورما کے ایک صاحب اور موجود تھے جن کا نام بعد میں معلوم ہوا کہ کاشی ناتھ تھا اور یہ یونیورسٹی لائبریری میں اسسٹنٹ کا کام کرتے تھے۔ شنکر ناتھ نے مکٹ بہاری اور منورما سے میرا تعارف کرایا۔ دونوں بڑے خلوص اور تپاک سے ملے۔ چائے منگوائی گئی۔ شنکر ناتھ تو چائے پی کر کسی ضرورت سے چلے گئے اور میں اور کاشی ناتھ اور دونوں میزبان بیٹھے باتیں کرنے لگے۔ پہلے تو کچھ اِدھر اُدھر کی باتیں ہوتی رہیں پھر پالٹکس کا ذکر چھڑا۔

مَیں۔ پچھلے پندرہ سال میں تو یہاں کے پالٹکس کا بالکل ہی رنگ بدل گیا ہے، میرے تو کچھ سمجھ ہی میں نہیں آتا۔

مکٹ بہاری۔ تو کیا آپ ملک سے باہر تھے؟

مَیں۔ ہاں میں سترہ سال کا تھا اور کالج میں پڑھتا تھا جب ضرورتاً اور مجبوراً مجکو فی جی جانا پڑا۔ پندرہ سال بعد آیا ہوں۔ اس عرصہ میں تو ملک کی کایا پلٹ ہو گئی ہے

مکٹ بہاری۔ مجھے اس کا حس نہیں کیونکہ میں نے تو جب سے ہوش سنبھالا یہی رنگ دیکھا بلکہ اسی میں نشو و نما پائی البتہ اس قدر فرق ضرور ہو گیا ہے کہ پچھلے پانچ سات برس میں قوم کا بل بوتا بہت کچھ بڑھ گیا ہے اور روز افزوں ہے یہ تو کوئی افسوس و ملال کی بات نہیں جیسا کہ آپ کے لہجہ سے معلوم ہوتا ہے۔

مَیں۔ ارے صاحب ایک زمانہ تھا کہ کانگرس کا بڑا زور تھا دھواں دھار تقریریں سننے میں آتی تھیں اخبارات میں جوشیلے مضامین نکلتے تھے۔ ہر شخص مہاتما گاندھی کا کلمہ پڑھتا تھا اور ہر جانب سے گاندھی جی کی جے کے نعرے بلند ہوتے تھے۔ اب تو سناٹا پڑا ہے

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

اور جو کچھ خبریں سُننے میں آتی ہیں وہ ایسی وحشت انگیز کہ رونگٹے کھڑے ہوتے ہیں۔

مکٹ بہاری۔ اس میں وحشت کی کیا بات ہے۔ ہر زمانہ کا رنگ جُداگانہ ہوتا ہے وہ تقریر و تحریر کا زمانہ تھا اب عملی جدوجہد کا وقت ہے۔ ہاں دل گردے کی ضرورت ہے

منورما۔ (میری طرف مخاطب ہوکر) گاندھی سے مراد آپکی مہاتما گاندھی سے ہے۔ یہ تو بڑی پدوی کے مہاتما تھے جیسے مہاتما بودھ، گرونانک، رشی دیانند۔ میری ماں تو ان کو پرمیشر کا اوتار کہتی ہیں۔ چوبیس اوتار تو سُنے تھے وہ ان کو پچیسواں اوتار بتاتی ہیں۔

کاشی ناتھ۔ تو اس میں شبہہ کیا ہے۔ وہ معمولی انسان نہ تھے۔ ہندوستان پر ہی کیا منحصر ہے ساری دنیا ان کی عظمت کی قائل تھی۔ ہندوستان میں تو اب بھی لوگ اُنھیں پوجتے ہیں۔

منورما۔ اُن کے نام سے تو کئی مندر بنے ہوئے ہیں۔ احمد آباد کے سابرمتی آشرم میں میں نے اُن کی سنگ مرمر کی مورتی دیکھی ہے۔ ایسی خوبصورت اور پاکیزہ کہ بیان نہیں ہو سکتا۔ بنارس میں بھی گاندھی کا مندر ہے۔

مکٹ بہاری۔ وہ مندر نہیں ہے بلکہ کاشی ودیا پیٹھ ہے

منورما۔ واہ۔ میں نے خود دیکھا ہے۔ مورتی کو ہار پہنائے جاتے ہیں۔ آرتی کی جاتی ہے۔ جو لوگ درشن کرنے آتے ہیں پیسے چڑھاتے ہیں۔ باہر دیواروں پر جیسے کسی مندر پر گیرو سے سیتارام سیتارام یا جے شیو جے شیو لکھا ہوتا ہے وہاں مہاتما کی جے سے تمام دیواریں لسی ہوئی ہیں اور کہیں کہیں ایک پہیا سا بھی بنا ہوا ہے۔ مندر تو ہے ہی۔

مکٹ بہاری۔ تم بڑی بیوقوف ہو۔ وہ چرخا ہے پہیا نہیں ہے۔

منورما۔ تو میں نے جو چیز کبھی نہ دیکھی نہ سُنی اُس کا نام کیسے بتا سکتی ہوں؟۔

مکٹ بہاری۔ میں دیکھتا ہوں کہ تمھارا حافظہ ابھی سے خراب ہوتا جاتا ہے۔ چرخا تم نے کبھی دیکھا نہیں ہے؟۔

منورما۔ جی نہیں دیکھا ہے۔ آپ اُس کھلونا کو کہتے ہونگے جو دادا جی کے ڈرائنگ روم میں رکھا ہوا ہے۔ لکھنؤ کا بنا ہوا گیرو سے رنگ کا مٹی کا چرخا۔

مکٹ بہاری۔ جی نہیں۔ آپ نے سچ مچ کا دیکھا ہے آپ کو یاد نہیں۔

منورما۔ اچھا تو بتلائیے کہاں دیکھا ہے؟۔

مکٹ بہاری۔ قیصر باغ والے عجائب خانہ میں سچ مچ کا ایک پُرانا چرخا نہیں رکھا ہے اور آپنے نہیں دیکھا ہے؟

مجھے مسکراہٹ آگئی اور منورما بغیر قائل ہوئے بولی "آپ تو مذاق کرتے ہیں۔ وہ تو دیکھا ہے اور بھی بیسیوں عجیب و غریب چیزیں وہاں دیکھی ہیں اُن سے کیا مطلب

کاشی ناتھ۔ مہاتما گاندھی صرف مہاتما اور سنت ہی نہیں تھے بلکہ وہ ایسے پایہ کے پولیٹکل لیڈر تھے کہ ہندوستان میں آج تک ایسا لیڈر پیدا ہی نہیں ہوا اُنھوں نے برٹش گورنمنٹ سے علانیہ اعلان جنگ کیا تھا اور ایسے معرکے جیتے کہ جنکی یاد آج تک ہندوستانیوں کے دلوں میں چٹکیاں لیتی ہے۔

منورما۔ ہسٹری میں کہیں اس لڑائی کا ذکر نہیں۔ برٹش

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

گورنمنٹ سے تو آخری معرکہ سو برس ہوئے ۱۸۵۷ء میں ہوا تھا۔ اس پر بھی اختلاف رائے ہے بعض کہتے ہیں کہ وار آف انڈی پنڈنس تھی بعض کی رائے ہے کہ محض فوج نے غدر کیا تھا۔

کاشی ناتھ۔ اُس کا مسلک کشت و خون نہیں تھا وہ تو چرخے کے زور سے لڑتے تھے۔

منورما۔ یہ بات تو کچھ سمجھ میں نہیں آتی۔

مکٹ بہاری۔ (مسکرا کر) جی ہاں بقول شاعر ؎

اس سادگی پہ کون نہ مر جائے اے خدا
لڑتے ہیں اور ہاتھ میں تلوار بھی نہیں

کاشی ناتھ۔ جناب مذاق نباشد۔ سیکڑوں بلکہ ہزاروں کو جیلخانہ ہو گیا۔ نہ معلوم کتنی زندگیاں تباہ ہو گئیں۔

مکٹ بہاری۔ بھائی لڑائی میں جیلخانہ نہیں ہوتا سر کٹتے ہیں۔

منورما۔ بھئی ہماری سمجھ میں نہیں آیا۔ یہ چرخے کی لڑائی کیسی؟ کیا اُس وقت تک ہم لوگ ہتھیار بنانا نہیں جانتے تھے؟

مکٹ بہاری۔ منورما! وہ زبانی لڑائی تھی جیسے شیم فائیٹ ہوتی ہے سچ مچ کی لڑائی نہیں

منورما۔ تب تو ملک نے پچھلے پندرہ برس میں بڑی ترقی کی ہے۔

کاشی ناتھ۔ جی یہ ترقی نہیں، ہماری تہذیب و تمدن پر ایک بدنما داغ ہے۔ ایک طرف تو تہذیب و شائستگی کا دعویٰ۔ دوسری جانب کشت و خون اور نیم وحشیانہ حرکات۔ یورپ والے تو آج صلح و امن کی قسمیں کھا رہے ہیں اور کشت و خون اور جنگ و جدل کا خاتمہ کرنا چاہتے ہیں اور آپ مہاتما گاندھی کا جنھوں نے تمام دنیا کو اہنسا کا پیام دیا مذاق اُڑاتے ہیں سول فورس اور ستیاگرہ کا پیام دنیا کو صرف مہاتما گاندھی نے ہی دیا اور تمام ہندوستان نے ان کے اس پیام کے آگے سر تسلیم خم کیا

مکٹ بہاری۔ میں تمھارے سول فورس کے اصول کے خلاف کچھ نہیں کہتا۔ پہلے حضرت عیسیٰ مسیح نے دنیا والوں کو ایسا ہی پیام دیا تھا اب دو ہزار برس بعد مہاتما گاندھی نے پھر اس کی تلقین کی۔ غالباً اور دو ہزار برس بعد پھر کوئی ولی اللہ پیدا ہونگے اور دنیا کو اپنا کرشمہ دکھائیں گے مگر یہ تو بتاؤ کہ "ما را چہ ازیں قصہ الم"۔ ہمارا تو یہ حشر ہوگا کہ "تا تریاق از عراق آوردہ شود مار گزیدہ مردہ شود"۔ حضرت مسیح کے نام سے ہزاروں نہیں بلکہ لاکھوں گرجا بن گئے اور مہاتما گاندھی کی مورت بھی بہت سے مندروں میں پوجی جاتی ہے لیکن ہماری غلامی کی زنجیریں ابھی تک ڈھیلی نہیں ہو سکیں اور دول فرنگ آج بھی جنگ و جدل اور سامان خونریزی تیار کرنے میں اسی طرح منہمک ہیں کہ جیسے روز اوّل۔

کاشی ناتھ۔ میں اس کو نہیں مانتا۔ ہندوستان میں مہاتما کے پیام کا جو اثر ہوا اور جس طرح لوگوں نے اُس کا خیر مقدم کیا اُس کی یاد آج تک تازہ ہے۔

مکٹ بہاری۔ تو بھئی ایک ہی فریق کے سول فورس سے تو کام نہیں نکلتا۔ تم کو جن سے سابقہ ہے یعنی انگریز سے وہ تو اس فلسفہ کو سمجھتے نہیں۔

کاشی ناتھ۔ ہتھیلی پر سرسوں نہیں جما کرتی۔ اثر ہوتے ہوتے ہوگا۔ وہ بھی سمجھنے لگیں گے۔

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

مکٹ بہاری - ہاں جب ہماری طرح وہ بھی بھوکے مرنے لگیں گے، تن ڈھکنے کو کپڑا نہیں رہیگا، بیماری اور غلاظت سے اُن کے یہاں بھی جب بربادی ہونے لگیگی اور رگوں میں خون بجائے جوش پیدا کرنے کے خشک ہونے لگے گا تب وہ بھی سول فورس اور ستیاگرہ کے قائل ہو جائیں گے لیکن اس کے لئے ابھی ایک زمانہ چاہیئے

کاشی ناتھ - مانا - آپ ہی کون سے گڑھ جیت رہے ہیں یہ ایک دو نائٹ کلب جو آپ نے قائم کر لئے ہیں انھیں پر بھولتے ہیں -

مکٹ بہاری - کم از کم راستہ تو سیدھا اختیار کیا ہے گمراہ تو نہیں ہو رہے ہیں -

کاشی ناتھ - پر یہ راز نہ کھلا کہ وہاں ہوتا کیا ہے ؟ -

مکٹ بہاری - آپ کو اُن سے کیا دلچسپی ہے، آپ تو گاندھی پنتھی ہیں، بس چرخا چلایا کیجئے -

کاشی ناتھ - نہیں بھئی اگر معلوم ہو کہ تم لوگ واقعی کچھ کر رہے ہو تو ہم بھی تمھارے شریک ہو جائیں مگر کچھ بتاؤ تو سہی -

مکٹ بہاری - پہلے یہ اطمینان ہو کہ آپ کچھ کرنے کے لئے تیار ہیں -

کاشی ناتھ - بھئی جیسا پکا وعدہ چاہے لے لو - میں مذاق نہیں کر رہا ہوں اگر سمجھ میں آجائیگا تو دل و جان سے تمھارا شریک ہو جاؤنگا -

مکٹ بہاری - بھئی وہاں کا کارخانہ تو فرامشن کا سا ہے تم وہاں کا حال معلوم کر کے اُس راز کو طشت از بام نہیں کر سکتے - چاہے شریک ہو چاہے شریک نہ ہو - پر زبان نہیں کھول سکتے -

کاشی ناتھ - منظور -

مَیں - میں بھی اس معاملہ کی تہ کو پہنچنے کے لئے بیچین ہو رہا ہوں بلکہ اسی غرض سے آپ سے ملنے آیا تھا میں اس کا تو ابھی سے وعدہ نہیں کر سکتا کہ آپ کا شریک ہو کر آپ کے کام میں ہاتھ بٹاؤنگا لیکن اس کا پکا وعدہ کرتا ہوں کہ جو کچھ آنکھیں دیکھیں گی زبان سے نہ نکلیگا -

مکٹ بہاری - دیکھئے صاحب یہ بچوں کا کھیل نہیں اس میں جان جوکھم ہے - اس پر غور کر لیجئے ابھی کچھ نہیں گیا ہے لیکن اگر آئندہ وعدہ خلافی ہوئی تو نتیجہ اچھا نہ ہوگا -

دونوں صاحبوں نے نہ صرف لبوں پر مہر سکوت لگانے کا حتمی وعدہ کیا بلکہ کاشی ناتھ تو کہنے لگے "بخدا اگر جو کچھ کہا ہے اس میں سر مو فرق آئے تو گردن اُڑا دینا" اس پر مکٹ بہاری نے کہا چلئے میرے پڑھنے کے کمرے میں - میں آپ کو کلب کے قواعد و ضوابط دکھلا دوں - پہلے ان کو غور سے پڑھ لیجئے پھر رات کو آپ کو کلب بھی لے چلونگا - وہاں آپ کو ہمارے لیڈر کے سامنے قسمیں کھانی پڑینگی تب کلب میں داخل ہو سکئے گا - دونوں نے اس شرط کو منظور کر لیا اور چاروں شخص اُٹھکر دوسرے کمرے کی طرف چلے - اتفاقاً کاشی ناتھ نے دروازے کی چوکھٹ سے ٹھوکر کھائی اور گرتے گرتے بچے - سنبھلکر مکٹ کے ساتھ ہو لئے - منورما اُن کے پیچھے تھی - جب کاشی ناتھ نے ٹھوکر کھائی تو منورما نے اُنکے جیب سے ایک خط اور لفافہ سامنے گرتے دیکھا اُس نے

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

چاہا کہ اُٹھا کر اُن کو دیدے لیکن جب اُس کی نگاہ لفافہ پر پڑی تو حیرت زدہ ہو کر وہیں ٹھٹک گئی۔ اُس کا چہرہ غصہ سے سُرخ ہو گیا اور لفافہ فوراً اٹھا کر اُس نے جیب میں رکھ لیا۔ وہ تینوں اصحاب تو آگے والے کمرے میں چلے گئے۔ منورما کچھ معذرت کر کے ڈرائنگ روم میں واپس آئی۔ مکٹ بہاری نے کمرے میں پہنچکر اپنی میز کی دراز کا تالا کھولا اور ایک جلد کلب کے قواعد کی نکالی اور دونوں صاحبوں کو پڑھنے کے لئے دی۔

چند لمحوں کے بعد کاشی ناتھ بولے کہ بھئی ان قواعد کے ساتھ یہ نسخہ سا کیا نتھی ہے؟۔

مکٹ بہاری۔ کچھ نہیں۔ یہ بمب بنانے کا نسخہ ہے تم اس کو ابھی سمجھ نہیں سکتے۔

کاشی ناتھ۔ اچھا تو مجکو یہ قواعد و ضوابط چند گھنٹوں کے لئے دیدو گھر پر اطمینان سے بغور پڑھونگا۔

مکٹ بہاری۔ نہ۔ یہ نہیں ہو سکتا۔ یہیں دیکھ لو میں دے نہیں سکتا۔

کاشی ناتھ۔ (ہنسکر) میاں بڑے وہمی اور شکی ہو۔ خیر۔ نہ سہی۔

یہ گفتگو ہو رہی تھی کہ منورما کمرے میں داخل ہوئی، وہ کچھ گھبرائی ہوئی تھی۔ اُس نے جب قواعد و ضوابط کی کاپی کاشی ناتھ کے ہاتھ میں دیکھی تو اُسکے چہرے کا رنگ فق ہو گیا لیکن ضبط کر کے خاموشی سے کرسی پر بیٹھ گئی۔

چند منٹ اِدھر اُدھر کی باتیں ہوتی رہیں پھر کاشی ناتھ نے کہا "بھئی چلدئے" میں نے بھی رخصت چاہی اور رات کو امین آباد کے چوراہے پر سب کے ملنے کا وعدہ ہوا کہ ساتھ ساتھ کلب چلیں گے۔ اس طرح باتیں کرتے ہوئے مکٹ بہاری، کاشی ناتھ، منورما اور میں برآمدے سے باہر نکلے اور کوٹھی کے باغ میں سے ہوتے ہوئے دروازے پر پہنچے۔ میں نے مکٹ اور منورما سے ہاتھ ملایا۔ کاشی ناتھ نے بھی مکٹ سے ہاتھ ملانے کے بعد منورما کی طرف اپنا ہاتھ بڑھایا تو اُس نے نہایت لاپروائی سے اپنا ہاتھ کھینچ لیا اور بولی "میں ایسے ذلیل آدمیوں سے جو جھوٹی قسمیں کھاتے اور دھوکا دیتے ہیں ہاتھ نہیں ملانا چاہتی"۔ کاشی ناتھ نے تیور بدل کر جواب دیا "آپ میری توہین کرتی ہیں"۔ منورما بولی "تم پولیس کے جاسوس ہو اور یہاں سے جان سلامت نہیں لیجا سکتے"۔ یہ سنتے ہی کاشی ناتھ کے چہرے کا رنگ فق ہو گیا وہ سنبھلکر کچھ کہنا ہی چاہتا تھا کہ منورما نے آناً فاناً اپنا دہنا ہاتھ جس میں پستول تھا پیچھے سے نہایت پھرتی سے لاکر کاشی ناتھ کے سینے پر گولی مار دی اور وہ وہیں گر کر ختم ہو گیا۔ میں متوحش اور ہکا بکا تھا کہ مکٹ بہاری گھبرا کر بولا "منورما یہ کیا غضب کیا"

منورما نے اپنے جیب سے ایک لفافہ نکالکر مکٹ بہاری کے ہاتھ میں دیا اور نہایت لاپروائی سے کھڑی ہوئی پستول کا منہ جس میں سے گولی نکلی تھی رومال سے آہستہ آہستہ صاف کرنے لگی۔ مکٹ خط پڑھنے میں مصروف تھا اور منورما پستول کے صاف کرنے میں۔ میں وحشت زدہ شام کی دھندلاہٹ

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

میں آنکھیں پھاڑ پھاڑ کر دیکھ رہا تھا کہ کوئی آتو نہیں رہا ہے کہ دفعتاً کسی کے زور سے لپکے ہوئے آنے کی آواز کانوں میں پڑی۔ میں سنبھلا ہی تھا کہ ایک پولیس کانسٹبل ہمارے سر پر کھڑا تھا۔ اُس نے منورما کے ہاتھ میں پستول دیکھکر سب سے پہلے اُسی پر ہاتھ ڈالنا چاہا۔ میں نے للکارا کہ خبردار جو ہاتھ لگایا، دُور ہو یہاں سے۔ کانسٹبل نے ایک ہاتھ سے تو منورما کا ہاتھ پکڑا اور دوسرے ہاتھ سے مجھے ایسا دھکا دیا کہ میرے قدم لڑکھڑا گئے۔ مگر خدا جانے مجھ پر کیا جنون سوار ہو گیا کہ میں سنبھل کر اُس کی طرف لپکا اور منورما کے ہاتھ سے پستول چھین کر میں نے کانسٹبل کو گولی ماردی اور اُس کی لاش بھی کاشی ناتھ کی لاش کے برابر پھڑکنے لگی۔ اب ہم تینوں فارغ ہو کر اطمینان سے کوٹھی میں داخل ہوئے اور کمرے میں بیٹھکر گفتگو ہونے لگی۔

مکٹ بہاری۔ یہ تو جو کچھ ہوا ٹھیک ہوا لیکن اب گرفتاری کے لئے تیار ہو جانا چاہئے۔

منورما۔ تینوں گرفتار نہیں ہو سکتے۔ میں جرم کا اقبال کرونگی اور قصہ ختم ہو جائیگا۔

میں۔ یہ نہیں ہو سکتا۔ میں نے کانسٹبل کو مارا ہے۔ اقبال میں کرونگا۔

مکٹ بہاری۔ منورما تمھیں یاد ہے کہ ہمارا تمھارا ایسی صورت میں کیا وعدہ تھا۔ یہ کیسے ممکن ہے کہ تم گرفتار ہو اور میں کھڑا تماشہ دیکھوں۔

میں۔ تو مجھے تو یہ کوئی عقل کی بات نہیں معلوم ہوتی کہ اس ذرا سے حقیر معاملہ کے لئے تین جانیں بھینٹ چڑھائی جائیں۔ آپ لوگوں کو ابھی بہت کام کرنا ہے۔ میں فالتو آدمی ہوں۔ لہٰذا مہربانی کر کے ضد نہ کیجئے اور مجھے اقبال کرنے دیجئے۔

منورما۔ (چیں بجبیں ہو کر) میں دوسروں کی آڑ لیکر مُنہ چھپانا گوارا نہیں کر سکتی۔

میں۔ آپ کو اختیار ہے۔ بہرحال میں تو پولیس کے روبرو جُرم کا اقبال کرنے سے باز نہ رہونگا۔

مکٹ بہاری۔ (سوچکر) اچھا اس کا فیصلہ کلب کی کمیٹی پر چھوڑ دیا جائے اور ہر شخص اُس کے فیصلہ کا پابند ہو۔

منورما۔ منظور۔

میں۔ منظور۔

مکٹ۔ اچھا تو فوراً یہاں سے نکل چلو ورنہ کلب پہنچنا بھی دشوار ہو جائیگا۔

چونکہ اندیشہ تھا کہ دروازے پر بھیڑ لگ رہی ہوگی اور ممکن ہے کہ پولیس کی دوڑ بھی آرہی ہو اس لئے پیچھے کے راستہ سے نکلکر ہم تینوں کلب پہنچے۔ میرا تعارف لیڈر سے کرایا گیا۔ مکٹ بہاری نے تمام واردات بیان کی۔ فوراً کلب کی کمیٹی کا اجلاس ہوا۔ میں نے اور منورما نے جو کچھ کہنا تھا کہا۔ فیصلہ میرے موافق اور منورما کے خلاف ہوا اور ہم تینوں وہاں سے لوٹ آئے۔ منورما کے تیور چڑھے ہوئے تھے۔ میں یہ دیکھکر مسکرایا۔ اُس نے خفا ہو کر میری طرف سے منہ پھیر لیا۔ وہ دونوں اپنے گھر گئے میں اپنی جائے قیام پر واپس آیا۔

مکٹ اور منورما جب کوٹھی پر پہنچے تو پولیس چاروں طرف سے کوٹھی کا محاصرہ کئے ہوئے تھی۔ یہ دونوں گرفتار کر لئے گئے۔ صبح اُٹھکر میں نے پولیس اسٹیشن پہنچکر جرم کا اقبال کر لیا۔ ان دونوں نے شروع سے اپنی لاعلمی ظاہر

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

کی تھی اور اپنے تئیں بے قصور بیان کیا تھا۔ کوئی شہادت کسی قسم کی موجود نہ تھی۔ یہ دونوں رہا کر دئے گئے۔ مجھے ایک ہفتہ کے اندر پھانسی کا حکم ہو گیا۔

جس شخص نے تریسٹھ دن تک سخت سے سخت جانکنی کی تکلیف برداشت کی ہو اُسے پھانسی کی ایک لمحہ کی تکلیف کی کیا پروا ہو سکتی ہے۔ میں ہنسی خوشی پھر عالمِ ارواح کی طرف بڑھا اور اس خیال میں مست تھا کہ جنت کے فرشتے مجھے ہاتھوں ہاتھ وہاں پہنچائیں گے اور حوریں شراب طہور کے جام ہاتھوں میں لئے میرے خیر مقدم کے لئے دروازے پر کھڑی ہونگی لیکن عالمِ ارواح میں داخل ہوتے ہی ایک بڑا شور سُنائی دیا۔ ہر طرف سے آوازیں آنے لگیں "نکالو نکالو۔ اسے نکالو۔ یہ بڑا ہٹی اور ضدی ہے اس کی یہاں گنجائش نہیں۔ اسے عالمِ اجسام کو پھر واپس بھیجدو۔" میں یہ سُنکر ہکا بکا رہ گیا اور سوچنے لگا کہ اونٹ کی طرح اللہ میاں کی بھی کوئی کل سیدھی نہیں۔ ان کا خوش کرنا بہت مشکل ہے اور بہشت کا ارمان بالکل فضول۔ یہ سوچتا ہوا میں اُلٹے پاؤں پھرا اور اس طرح اپنا اطمینان کرنے لگا کہ جنت کیسی ہی شاندار، خوشنما اور خوبصورت جگہ کیوں نہ ہو ہماری دُنیا سے زیادہ دلچسپ نہیں ہو سکتی۔ پھر حیاتِ ابدی کی شرط کے ساتھ جنت میں رہنے سے تو آوا گون ہی اچھا۔ طبیعت اُکتائیگی تو نہیں۔ اسی خیال میں غلطاں و پیچاں دنیا کو واپس آیا اور آتے ہی اپنی عجیب و غریب داستان لکھنے بیٹھ گیا۔

خاص

اپنی اپنی سمجھ

جج صاحب ہوٹل میں کھانا کھا رہے تھے بیئر کی بخنی بھی سامنے آئی، باورچی کچھ انعام کا خواستگار تھا، پوچھا بیئر کی بخنی کیسی ہے؟ جج صاحب کہنے لگے "میری رائے میں بیئر نے اپنا موجود نہ ہونا بخوبی ثابت کر دیا ہے۔"

کچھ رجسٹر کی غلطی کی وجہ سے ایک قیدی ایک ہفتہ زیادہ روک لیا گیا۔ جیلر نے اپنی غلطی تسلیم کی اور معافی کا خواستگار ہوا، قیدی نے کہا "کوئی افسوس کی بات نہیں ہے" اگلی مرتبہ ایک ہفتہ جلد چھوڑ دینا"۔

فقیر نے دادا کے جیب میں ہاتھ ڈالدیا وہ سب پر خفا ہوئے کہ اُنھیں کسی نے نہیں بچایا مگر وہ بھول گئے کہ فقیر نے انھیں جیب سے پیسہ نکال کے دینے کی زحمت سے بچا لیا۔ کیا یہ مہربانی کم ہے؟۔

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

گھنٹہ نہیں بجیگا

[پنڈت اندرجیت صاحب شرما]

یہ نظم "روز ہارٹ وک تھارپ" کی ایک مشہور انگریزی نظم کا ترجمہ ہے۔ اس نظم کا ہیرو "بیسل ایڈورڈ" اور ہیروئن "بیسی" ہے۔ جس سے بیسل کو سچا عشق ہے اور شادی کی تاریخ بھی مقرر ہو چکی ہے مگر 'بیسل' کو شاہ پسندی کے جرم میں "الیور کرامول" کی بارگاہ سے یہ حکم صادر ہو چکا ہے کہ "جس وقت روشنی گل کرنے کا گھنٹہ بجیگا بیسل پھانسی پر لٹکایا جائیگا"۔ پھانسی لگنے کا دن آگیا 'بیسی' نے جس حکمت عملی سے اپنے عاشق کو بچایا تھا اس نظم میں اُسی واقعہ کا ذکر ہے۔

تھا شام روز ماتم کا گرنے والا پردا
انگلینڈ کا وہ سورج لب بام جا لگا تھا

اُس وقت کا وہ منظر کچھ ایسا جانفزا تھا
گویا کہ روحِ تازہ ہر شے میں پھونکتا تھا

وہ آخری شعاعیں دو بے بسوں کے دل پر
اُف! قہر ڈھا رہی تھیں لوسے جبیں کے لیکر

اک ہونے والی بیوی تھی نازنین کم سن
اک ہونے والا شوہر تھا مرنے والا لیکن

غمگیں تھا سر جھکائے محو خیال بیکس
تصویر غم سراپا بے قیل و قال بیکس

بارِ الم سے اُس کے اُٹھتے قدم نہیں تھے
بھاری بنے ہوئے تھے پڑتے کہیں کہیں تھے

بکھرے تھے نازنیں کے چمکیلے بال سر پر
اور یہ صدا لبوں سے آتی تھی لڑکھڑا کر

گھنٹہ نہیں بجے گا گھنٹہ نہیں بجے گا

اک محبسِ کہن وہ جس میں جواں مقید
دیواریں کالی کالی اور کالے کالے گنبد

وحشت برس رہی تھی دیوار اور در پر
دوزخ کا تھا نمونہ وہ خوفناک منظر

زنداں کی سمت کرکے گھڑیال سے اشارہ
کرنے لگی حسیں وہ یوں راز آشکارا

"بیچارہ میرا عاشق اُس جیل میں پڑا ہے
جس کو شش جہت سے یہ حکم ہو چکا ہے

جب شب کو تیرے گھنٹہ کا ہوگا شور محشر
کھینچیں گے اُس کو قاتل اُف دار پر چڑھا کر"

تیرے سوا جہاں میں حامی مرا نہ یاور
پھوٹا مرا مقدر۔ افسوس یہ مقدر

جبتک نہ آسماں پر ظلمت ہو آج طاری
گھنٹہ نہ بجنے پائے قربان جاؤں واری

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

آئی وہی صدا پھر شیریں دہن سے باہر — بھورے لبوں سے رُک رُک کر اور لڑکھڑا کر
گھنٹہ نہیں بجے گا گھنٹہ نہیں بجے گا

گھنٹہ بجانے والا کہنے لگا کہ گھنٹہ — بجتا رہا ہے مغرب کے وقت یہ ہمیشہ
اب تک نہیں ہوئی ہے مجھ سے نمک حرامی — اس فرض کی بدولت پائی ہے نیکنامی
کاٹی ہے عمر ساری گھنٹہ بجا بجا کر — کیوں فرض منصبی سے ہو جاؤں آج باہر
دامان عاقبت پر دھبہ نہ میں لگاؤں — یہ زندگی کا جوہر کیوں مفت میں گنواؤں
گھنٹہ تو یہ بجے گا گھنٹہ تو یہ بجے گا

سُنکر جنوں سمایا یہ نازنیں کے سر میں — چہرہ بدل گیا وہ وحشت بھری نظر میں
بے درد جج نے ہو کر جو حکم دیدیا تھا — رہ رہ کے نازنیں کے دل میں وہ گونجتا تھا
آتا تھا دھیان جسدم بڑھتی تھی بیقراری — "گھنٹہ بجے گا پھانسی بسمل کو جب لگیگی"
سینہ میں اُس کے غم کا شعلہ بھڑک رہا تھا — اور یہ لبوں پہ مصرعہ آکر اٹک رہا تھا
گھنٹہ نہیں بجے گا گھنٹہ نہیں بجے گا

کچھ دل میں غور کر کے اُس نے قلانچ ماری — ہمت کے در کی لعنی بنکر چلی بھکاری
گھنٹہ بجانے والے کو رستہ ہی میں چھوڑا — بڑھتی رہی وہ آگے پیچھے کو منہ نہ موڑا
بیکار ایک لمحہ کھونے نہیں وہ پائی — مینار ہی پہ چڑھنے کی سر میں دُھن سمائی
نظروں سے اس کی بچکر زینہ پہ چڑھ گئی وہ — اور جانب درا پھر جلدی سے بڑھ گئی وہ
چمکیلی اس کی آنکھیں ہونٹوں پہ تھی سفیدی — اور یہ صدا برابر منہ سے نکل رہی تھی
گھنٹہ نہیں بجے گا گھنٹہ نہیں بجے گا

اُوپر کی سیڑھیوں پر چڑھکر پہنچگئی جب — آنے لگا تھا منظر اک اور ہی نظر تب
قاصد اجل کا بن کر گھنٹہ لٹک رہا تھا — زینہ اجل کا کھولے منہ نیچے تک رہا تھا
بیخوفی سے اُچک کر لٹکن کو اُس نے پکڑا — گویا اجل کو دونوں ہاتھوں سے اپنے جکڑا
گھریالی تھا وہ بھرا کھینچا جو اُس نے رسّا — سمجھا کہ موت کا یہ بجنے لگا ہے گھنٹا
پکڑے رہی وہ لیکن گنبد میں سر پٹکتی — لٹکن سے وہ چھٹکتی گھنٹہ سے وہ اٹکتی
دل میں سمجھ لیا تھا لٹکن اگر یہ چھوڑا — مل ہی نہیں سکیگا میرا جہاں میں جوڑا
گو ہل رہا تھا گھنٹہ بانگ درا نہ نکلی — لڑکی غضب کی نکلی نکلی بلا کی پتلی

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

دھڑکی سی لگ رہی تھی گو دل میں اسکے یکسر لیکن صدا یہ مُنہ سے آتی رہی برابر
گھنٹہ نہیں بجے گا گھنٹہ نہیں بجے گا

بجنے کا وقت گھنٹہ کا جب گذر گیا تھا اور جھومتا ہوا وہ لٹکن ٹھہر گیا تھا
آہستگی سے لٹکن کو چھوڑ کر وہ اُتری زینے سے نیچے آئی بیچاری گرتی پڑتی
ظلمت کدہ بنا تھا تاریک ایسا زینہ صدیوں وہاں بشر نے پہلے قدم نہ رکھا
جو کام کر گئی وہ وردِ زباں رہے گا اور عشق کی کشش کا صدیوں کھچیگا خاکہ
مغرب کے وقت جب وہ خورشید کی شعاعیں کر کے فلک کو روشن انساں کا دل لبھائیں
بوڑھے پدر سُنائیں بچوں کو یہ کہانی گھنٹہ نے روشنی کے شب کو صدا نہ دی تھی
آیا کرامول تو نقشہ اِک اور دیکھا گرجے میں نازنیں کو دیکھا بغور دیکھا
جسکی جبیں سے ظاہر فرحت کے کچھ نشاں تھے رنج و الم کے ساماں مستور بے گماں تھے
قدموں پہ گر کے بولی "قصہ حضور ہے یہ گھر یالی بے خطا ہے میرا قصور ہے یہ
یہ ہاتھ میرے رسّا سے آہ خونچکاں ہیں کچلی ہوئی پڑی ہیں جو ان میں ہڈیاں ہیں
یوں ملتجی ہوا تھا غمگین روے زیبا وہ پیارا پیارا چہرہ وہ بھولا بھالا چہرا
ڈالا اثر یکایک ایسا کرامول پر دھندلی سی روشنی میں اُن آنکھوں نے چمک کر
کہنے لگا کہ "شیدا زندہ ترا رہیگا اور حکم رات بھر یہ نافذ مرا رہے گا
گھنٹہ نہیں بجے گا گھنٹہ نہیں بجے گا"

خاص

اپنی اپنی سمجھ

لارڈ ریڈنگ کا استقبال ہندوستان سے واپسی پر بہت دھوم سے انگلستان میں ہوا، سب کو یہ دیکھکر بہت خوشی ہوئی کہ وہ آجکل خوب تندرست ہیں، وائسرائے صاحب نے کہا کہ میری تندرستی اس وجہ سے اچھی ہے کہ میں ایک گھنٹہ روز گھوڑے کی سواری کرتا تھا اس پر کسی پریس والے نے پُوچھا کہ اب بھی آپ گھوڑے کی سواری کیجئے گا یا نہیں، جواب ملا کہ "لندن میں گھوڑے کا خرچ بہت ہے" کیا کریں بیچارے اپنی سب کمائی ہندوستان میں خرچ کر گئے، اب دیکھنا یہ ہے کہ کچھ مقروض تو نہیں گئے۔

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

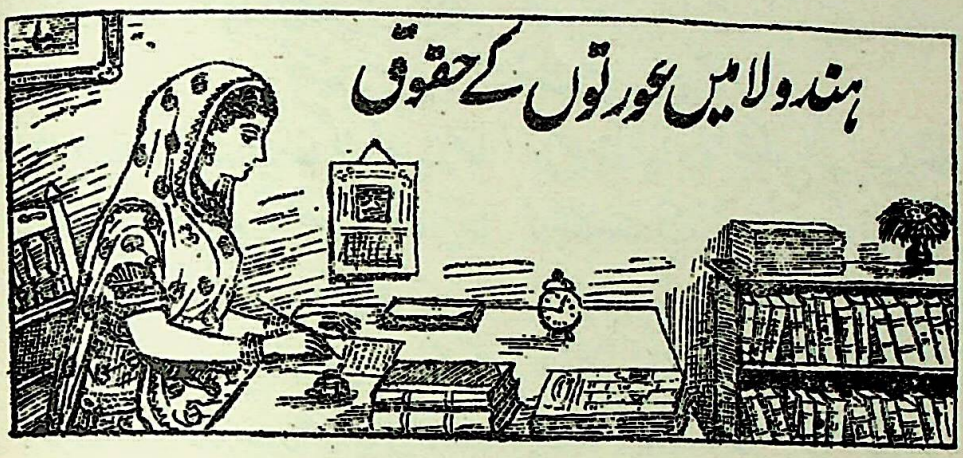

[بابو بھولا لال داس صاحب، بی۔ اے۔ ایل ایل۔ بی]

ہندولا

یہ سرنامہ دو لفظوں سے بنا ہے 'ہندو' جو کہ مسلمانی لفظ ہے اور 'لا' جو کہ انگریزی لفظ ہے۔ سب سے پہلے ہم لفظ 'لا' کی تفسیر بیان کرینگے۔

لفظ 'لا' کے معنی قانون کے ہیں۔ اس کا ہم معنی لفظ سنسکرت زبان میں نہیں ہے لیکن اس کمی سے یہ نہ سمجھ لینا چاہئے کہ پُرانے زمانہ میں ہندوؤں میں قانون نہ تھے۔ ہندوؤں میں قانون ضرور تھے مگر وے اُسکو 'دھرم' کے نام سے پکارتے تھے۔

مغربی ملکوں میں لفظ 'دھرم' زمانہ حال میں اُن عقاید کے لئے استعمال کیا جاتا ہے جن کا تعلق دنیا کی پیدائش و رُوح و رُوح مقدس سے ہے۔ فرائض کے معنی میں یہ لفظ استعمال نہیں ہوتا۔ پُرانے زمانہ میں عقاید و فرائض دونوں ہی لفظ دھرم (مذہب) میں داخل تھے۔ کہا جاتا ہے کہ علم و تہذیب کی ترقی پا جانے پر عقائد لفظ 'مذہب' میں داخل ہو گئے اور 'فرائض' لفظ 'قانون' میں۔

ہندو سوسائٹی میں اب بھی فرائض پر دھرم کا رنگ چڑھا ہوا ہے۔ قدیم زمانہ میں 'وید' ہی ہندوؤں کے قانون تھے۔ 'وید' آسمانی کتاب مانے جاتے تھے۔ ہر معاملہ میں اُن کے احکام مستند سمجھے جاتے تھے۔ 'وید' کے احکام میں کسی کو چون و چرا کرنے کا اختیار نہ تھا۔ 'وید' کے احکام برتنے میں الجھن پڑنے لگی تو مہرشی جیمینی نے میمانسا شاستر (وید کے ہی سہارے پر) بنا ڈالا۔ غرض مہرشی کی یہ تھی کہ 'وید' کے مستند ہونے میں کوئی حرف نہ لگا سکے۔ بنی انسان کے جملہ معاملات کے سلجھاؤ ویدوں میں موجود تھے۔ یہی سبب ہے کہ پُرانے زمانہ سے ہندوؤں کے 'فرائض' 'دھرم' میں داخل چلے آتے ہیں۔

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

میمانسا کے بعد جب سمرتیوں میں مختلف فرائض وضاحت کے ساتھ بیان کر دئے گئے تو سمرتیوں کا نام 'دھرم شاستر' رکھا گیا۔ اس سے بھی ظاہر ہوتا ہے کہ ہندوؤں میں قانون کا خیال 'دھرم' سے الگ نہ تھا پھر بھی لفظ 'دھرم' سے محض قانون کے مطلب نہیں نکلتے اور نہ دھرم شاستر قانونی کتاب کہے جا سکتے ہیں۔ لفظ 'دھرم' بہت وسیع لفظ ہے جس میں 'قانون' داخل ہے لیکن قانون کا ہم معنی لفظ 'دھرم' نہیں ہے۔

شروع میں قانون کا تصور کچھ بھی رہا ہو لیکن آجکل قانون کی صورت یہ ہے کہ وہ عدالتوں میں برتا جاتا ہے اور اُس کے رائج ہونے کا دارمدار حکومت کے زور و خوف پر ہے۔ وے ہی قانون آجکل چالو سمجھے جاتے ہیں جنکے مطابق حکام عدالت جھگڑوں کا فیصلہ کرتے ہیں اور جنکو ملک کی سرکار مانتی ہو یا یوں کہنا چاہئے کہ :-

برٹش انڈیا (انگریزی بھارت) میں وے ہی قانون جاری سمجھے جاتے ہیں جن کو سرکار نے بنایا یا مان لیا ہے۔ یہ قانون تین حصوں میں ہیں (۱) دیوانی (سول) اور (۲) مال (ریونیو) اور (۳) فوجداری (کرمنل)

انگریزی راج کے پہلے یہ قانون جس صورت میں تھے وہ صورت اب ان کی نہیں رہگئی۔ دھیرے دھیرے انگریزی سرکار نے پہلے کے قانون کو بہت کچھ بدلکر نیا بنا دیا ہے۔ مثلاً ہندوؤں کے زمانہ میں مجرم کی ذات پر جُرم کی سزائیں باندھی گئی تھیں۔ ایک ہی جُرم کے لئے برہمن، چھتری، ویش اور شودر مُجرم کے واسطے مختلف سزائیں تھیں۔ آجکل ہر ذات و ہر قوم کے لئے قانون کی کتاب میں جُرم کی سزا ایک ہی ہے۔ اِس طور سے پُرانے قانون انگریزی سرکار نے زیادہ تر بدلڈالے البتہ دیوانی کے معاملات میں انگریزی سرکار نے سابق کے قانون کے کچھ حصے مان لئے ہیں جو اب تک برتے جاتے ہیں۔ ان کا بالکل ہی بدلڈالنا کچھ ناممکن سا تھا۔

اس ملک کے باشندے زیادہ تر ہندو و مسلمان ہیں ان دونوں کے قانون 'دھرم' میں داخل ہیں۔ اس لئے ان کے قانون کو بالکل ہی بدلڈالنا ان کے 'دھرم' کو بدلدینا ہوتا۔ جب ہندو دھرم اور مسلمانی مذہب کو انگریزی سرکار نہیں بنا سکتی تھی تو ان کے قانون کو بھی نہیں بنا سکتی تھی۔ اس لئے ہندوؤں اور مسلمانوں کے قانون میں انگریزی سرکار نے جس قدر ردّ و بدل کئے ہیں اُن کو بہت سوچ و سمجھ کے۔ جن قانونی عنوانوں پر محض نام کے لئے مذہب کا رنگ چڑھا ہوا تھا یا جن کے بدلنے میں ہندو و مسلم سوسائٹی میں آفت برپا ہونے کا اندیشہ نہ تھا اُن کو یا تو بالکل ہی بدل ڈالا یا اُن میں کچھ ہی ہیر پھیر کر دیا۔ بقیہ عنوانوں کو مثل پہلے کے قائم رکھا۔

۱۷۸۳ء میں ایکٹ نمبر ۴ میں انگریزی سرکار نے کامل اقرار کیا ہے کہ شادی و وراثت و مذہب و خیرات وغیرہ کے معاملات میں ملک کی رعایا کے جو رواج جس چلن پر ہیں وہ اُسی چلن پر قائم رکھے جاوینگے۔ اس طور سے موجودہ 'ہندو لا' اور 'محمڈن لا' کی پیدائش ہوئی ہے۔

اب دیکھنا یہ ہے کہ موجود 'ہندو لا' کیا ہے؟

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

دیوانی قانون کے اُس جزو کو "ہندو لا" کہتے ہیں جس کے بموجب نیچے لکھے ہوئے عنوانوں کے متعلق ہندوؤں کے جھگڑوں کا انگریزی عدالتیں تصفیہ کرتی ہیں :-

(۱) ولایت
(۲) شادی
(۳) تبنیت (گود لینا)
(۴) خاندان اجمالی
(۵) بٹوارہ
(۶) ہبہ (دان) و وصیت
(۷) وراثت
(۸) مذہبی و رفاہی وقف
(۹) استری دھن

ان عنوانوں کے متعلق ایسا نہیں ہے کہ ہندوؤں کے دھرم شاستر کی کل ہی باتیں مان لی گئی ہوں بہت سی باتیں بدل ڈالی گئی ہیں یا اُن کے متعلق نئے قانون بنا دئے گئے ہیں۔

ہندو دھرم شاستر و بیوہار نے ہندوؤں کی آزادی اس قدر چھین رکھی تھی کہ جب کوئی ہندو اپنے مذہب کو ترک کر دیتا تھا یا ذات سے خارج ہو جاتا تھا تو اُس کے سارے حقوق جو اُسے بطور ہندو کے حاصل تھے زائل ہو جاتے تھے مگر ۱۸۵۰ء میں مذہب کی آزادی فریڈم آف ریلی جن ایکٹ کا قانون پاس کر کے ملکیت و وراثت کے معاملات میں ترک مذہب یا ذات سے خارج ہونے کی وجہ سے ہندو کے حقوق زائل نہیں ہوتے۔

ہندو دھرم شاستر میں بیوہ کا عقد ثانی جائز ہے لیکن اونچی ذات کے ہندوؤں میں بیوہ کی دوسری شادی ناجائز سمجھی جانے لگی۔ چنانچہ ۱۸۵۶ء میں ہندو بیوہ کے عقد ثانی کا قانون ہندو ویڈو ری میرج ایکٹ نمبر ۱۵ ۱۸۵۶ء پاس کر کے ہندو بیوہ کا عقد ثانی و نیز اُن کے عقد ثانی کی اولاد جائز کر دئے گئے۔

دھرم شاستر میں شادی ایک معاہدہ نہیں ہے بلکہ داخل کار مذہبی ہے۔ طلاق یا شادی کا توڑنا جائز نہیں ہے۔ ۱۸۶۶ء میں قانون پاس ہوا ہے کہ عیسائی ہو جانے پر ہندو کی پہلے کی شادی بذریعہ عدالت توڑی جا سکتی ہے۔ ہندو شادی میں اس شکل سے طلاق کا مسئلہ جگہ پا گیا ہے۔

دھرم شاستر میں نام کے لئے بھی وصیت کا ذکر نہیں ہے لیکن بعض بعض جگہ ہندوؤں میں وصیت کا ہونا پایا گیا تھا۔ ۱۸۶۷ء میں پریوی کونسل نے یہ فرمایا کہ "محض اس وجہ سے کہ دھرم شاستر میں وصیت کا ذکر نہیں ہے یہ کہنا کہ ہندو اپنی جائداد کے بارے میں وصیت نہیں کر سکتا صحیح نہ ہوگا۔ یہ امر طے شدہ ہو گیا کہ ہندو چند صورتوں میں ذریعہ وصیت جس کو چاہے اپنی جائداد دے سکتا ہے۔ ۱۸۷۰ء کے ہندوؤں کی وصیت کے قانون ہندو ولس ایکٹ نے اور مروجہ سرکاری قانون وراثت نے وصیت کے مسئلہ کو بالکل ہی واضح کر دیا ہے۔

بلوغیت و ولایت اور انتقال جائداد کے قانون بنا کر انگریزی سرکار نے دھرم شاستر کے بیوہار کو

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

بہت کچھ بدل ڈالا ہے یعنی ترمیم و تنسیخ کر دیا ہے۔

اوپر کے جن عنوانوں کے بارے میں کوئی نئے قانون انگریزی سرکار نے نہیں بنائے ہیں وے بھی اپنی حالت میں اب نہیں پائے جاتے۔

ایک سبب تو یہ ہے کہ جب انگریزوں نے ملک کی حکومت کی راس اپنے ہاتھوں میں لی تو اُس وقت اُنھیں ہندو دھرم شاستر معلوم نہ تھے۔ شاستر کے مطابق فیصلہ کرنے میں انگریزوں کو پنڈتوں سے مدد لینی ہوتی تھی یعنی اُن سے وے ویوستھا حاصل کرتے تھے۔ ان پنڈتوں کے مشورہ میں خامیاں ظاہر ہونے لگیں۔ ایک ہی مسئلہ پر کبھی وہ ہاں اور کبھی نہیں کا جواب دینے لگے اور اُن سے مشورہ لینا بند کر دیا گیا۔ دھرم شاستر کے چند حصوں کا ترجمہ ہو گیا۔ پھر بھی چونکہ پنڈتوں سے مشورہ لینا بند ہو چکا تھا عدالت کے انگریزی حاکم کچھ کا کچھ سمجھنے لگے۔

دوسرا سبب یہ ہے کہ دھرم شاستر کی بہت سی کتابیں اب تک نہیں چھپی ہیں۔ جن کتابوں کا ترجمہ ہوا ہے اُن کے بہت سے حصوں کے ترجمہ میں غلطیاں ہیں۔ حاکم عدالت کو غلط ترجمہ پر ہی رائے قائم کرنی پڑتی تھی۔ انگریزوں کی یہ نیت ہوتے ہوئے بھی کہ ہندو شاستر برتا جاوے نتیجہ یہ ہوا ہے کہ بہت سے مغرب کے خیالات ہندولا میں گھس پڑے ہیں۔

تیسرا سبب یہ ہے کہ ہر ملک اور ہر زمانہ میں حاکم عدالت کو اپنی عقل و دانش کے مطابق تکرار کو سلجھانے کی پوری آزادی دی گئی ہے۔ دھرم شاستر کی شرح کرنے والوں نے بھی اس آزادی کے زور پر بہت سی نئی باتیں دھرم شاستر میں پیدا کر دی ہیں۔ عدالت کے انگریز حاکموں نے بھی اس آزادی کو بہت کچھ دخل دیا ہے۔

ان سب کا نتیجہ یہی ہوا ہے کہ عدالتوں میں جو 'ہندولا' برتا جا رہا ہے اُس کی شکل دھرم شاستر کی شکل سے بہت کچھ بدلی ہوئی ہے۔ اس میں شبہہ نہیں کہ جملہ عنوانوں کی بنیادیں دھرم شاستر ہی پر ڈالی گئی ہیں پھر بھی جس شکل میں دھرم شاستر عدالتوں میں برتا گیا ہے یا برتا جا رہا ہے وہ شکل موجودہ 'ہندولا' کی ہے (نہ کہ پُرانے دھرم شاستر کی)۔

غرضیکہ اب ہم کہہ سکتے ہیں کہ 'ہندولا' اُس قانون کا نام ہے جس کو انگریزی سرکار نے ہندوؤں کی چند تکرار کے سلجھاؤ کے لئے (ہندوؤں کے) دھرم شاستر پر و اپنے بنائے ہوئے قانون پر اور اپنی اُونچی عدالتوں کے نظایر پر قائم کیا ہے اور جس کا بیوہار انگریزی عدالتوں میں کیا جاتا ہے اور جس کو انگریزی سرکار برقرار رکھتی ہے۔

ہندو عورت

لفظ 'ہندو' کا کسی دھرم شاستر میں پتہ نہیں ہے۔ وید اور پوران میں (الفاظ آریہ) یا بھارتیہ (ہندوستان کے رہنے والے) استعمال ہوئے ہیں۔ بہت سے لوگ لفظ 'ہندو' کو سنسکرت اور ہندی زبان میں استعمال کرنے لگے ہیں مگر یہ لفظ غیر ملک کا ہے۔ مغرب سے مسلمان اس ملک میں آنے لگے تو اُنھیں نے اس ملک کو 'ہند' اور یہاں کے باشندوں کو 'ہندو' کہنا شروع کر دیا۔ اس کا سبب یہ ہے کہ دریائے سندھ تک یہ

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

ملک پھیلا ہوا تھا۔ مسلمانوں نے سندھ کو بگاڑ کر 'ہند' بنا دیا اور یہاں کے باشندوں کو 'ہندو' کہہ ڈالا۔

لفظ 'ہندو' اپنی بناوٹ میں کسی مذہب کی طرف اشارہ نہیں کرتا لیکن آہستہ آہستہ جب مسلمانوں کی تعداد اس ملک میں بڑھنے لگی تو لفظ 'ہندو' میں مذہب کا بھی اشارہ ہونے لگا اور آجکل تو پرانے آریوں کا مذہب 'ہندو دھرم' کہلانے لگا ہے۔

ہندوستان میں رہنے کے سبب سے مسلمان، عیسائی پارسی سب ہی کو ہندو کہہ سکتے ہیں مگر دھرم کی طرف اشارہ موجود ہونے سے یہ لفظ ایک محدود معنی میں استعمال ہوتا ہے۔

جب ہندو مذہب کی تفسیر بڑھی ہے تو لفظ 'ہندو' کا مطلب بتلانا آسان نہیں ہے۔ یہی سبب ہے کہ عدالتوں میں اکثر یہ تکرار چھڑ جاتی ہے کہ 'ہندو' کون ہے؟ کسی خاص فریق کے لئے 'ہندو لا' برتا جاوے یا نہیں؟۔

پٹنہ ہائیکورٹ کے ایک مقدمہ رام پرگاش بنام دین بی بی (پٹنہ بی۔ یل۔ ٹی ۲۰۳) میں جسٹس سر جوالا پرشاد نے بڑی قابلیت کے ساتھ اس تکرار کو یوں سلجھایا ہے کہ 'ہندو لا' کا اس ملک کے سارے اُن باشندوں کے لئے برتا جانا مناسب ہے جو مسلمان نہیں ہیں اور جنھوں نے اپنے لئے کوئی دوسرا شخصی قانون یعنی پرسنل لا قبول نہیں کیا ہے۔

اس سے ظاہر ہوتا ہے کہ سر جوالا پرشاد صاحب کی رائے میں لفظ 'ہندو' میں ہندوستان کے کل باشندوں کو آجانا چاہئے مگر ہم اس لفظ کے استعمال میں مسلمان، عیسائی اور پارسی وغیرہ کو شامل نہ کرینگے۔

اب دیکھنا ہے کہ ہندو عورت کون ٹھہری۔ انگریزی عدالتوں کے فیصلہ کا نتیجہ یوں نکلتا ہے

ہندو عورت وہ عورت ہے:۔

(الف) جو ہندو خاندان میں جائز تعلق سے پیدا ہوئی[1] اور جس کا مذہب[2] ہندو ہو۔

اُس عورت کے ساتھ ہندو لا نہیں برتا جائیگا جس کے والدین ہندو نہ رہے ہوں اور جو خود ہندو مذہب نہ قبول کئے ہو۔

کوئی مسلمان یا عیسائی اگر وید و پوران اور ہندو دھرم شاستر کو مان لے اور ہندوؤں کی طرح رہنے لگے تو وہ ہندو نہیں مانا جائیگا۔

پیدائش کسی خاندان میں ہوئی ہو لیکن جب کوئی شخص مسلمانی یا عیسائی مذہب قبول کر لیتا ہے تو وہ مسلمان یا عیسائی ہو جاتا ہے۔ ہندو دھرم میں ایسا نہیں ہے۔ ہندو دھرم کی یہ خصوصیت ہے کہ جب تک ہندو خاندان میں کوئی شخص پیدا نہ ہوا ہو محض ہندو مذہب اختیار کر لینے سے ہندو نہیں ہو جاتا۔ البتہ یہ ممکن ہے کہ شدھی وغیرہ کی ہوا چلی ہے اُس سے یہ خصوصیت قائم نہ رہ جاوے۔ حال ہی میں بمقدمہ شیر بہادر بنام گنگا بخش باجلاس پریوی کونسل میں یہ سوال پیدا ہوا تھا کہ وہ شخص ہندو ہے یا نہیں جس کی ماں چھترانی تھی اور جس کا باپ چھتری مرد اور مسلمان عورت

---

[1] ۹۔ یم۔ آئی۔ اے۔ ۱۹۹ (۲۴۳)

[2] ۳۱ کلکتہ (۳۳) یا ۳۰۔ آئی۔ اے۔ ۲۴۹۔ ۱۹۰ بمبئی ۳ ۷۸۳ (۸۸)

[3] ۳۶ اے (۱۶/۱۱۵)، ۴۱ آئی۔ اے۔ ۱ (۱۴)

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

سے پیدا ہوکر ہر طرح سے پابند ہندو مذہب رہا۔ پریوی کاونسل نے اس مقدمہ میں اس سوال کے متعلق کچھ بھی اپنی رائے ظاہر نہیں کی لیکن ایک دوسرے[1] مقدمہ میں پریوی کاونسل نے اپنی رائے ظاہر کی ہے کہ لفظ ہندو میں وے بھی داخل ہیں جو ہندو بنائے گئے ہیں۔ دھرم شاستر میں پرائشچت (کفارہ) کے اصول و طریقے موجود ہیں۔ پیدائشی ہندو لامذہب ہوجانے پر پرائشچت کے ذریعہ ہندو مذہب میں واپس جاسکتا ہے لامذہبی کی حالت میں اگر ہندو کے اولاد ہوگی تو وہ اولاد بھی ذریعہ پرائشچت ہندو ہوجاتی ہے اور انکے ساتھ ہندولا برتا جائیگا۔

علاوہ بریں ہندو کے گھر پیدا ہوکر اور ہندو مذہب نہ ترک کرکے اگر کوئی شخص محض کھانے پینے اور بیوہار میں کٹر ہندوؤں کی طرح نہیں چلتا ہے یا کہ داخل برہمو سماج ہوگیا ہو تو وہ غیر ہندو نہیں[2] ہے۔ غرضیکہ ہندو عورت کے لئے یہ ضروری نہیں ہے کہ وہ کٹر ہندو ہو صرف اُس کو ہندو مذہب کو قطعی طور پر نہ ترک کردینا چاہیئے۔

(ب) جو ہندو[3] باپ و ماں کی ناجائز اولاد ہو۔ اگر ہندو باپ و ماں کا بیاہ شاستر کے مطابق ہوا ہے تو اُن کی لڑکی جائز اولاد ہے اور داخل مد (الف) ہے لیکن اگر اُن کا بیاہ شاستر کے مطابق نہیں ہوا اور محض اُن میں ناجائز تعلق ہے تو اُن کی لڑکی ناجائز اولاد ہوئی مگر ہندو ہوگی۔

اس قاعدہ کا عدالتی نظایر نے ایک مستثنیٰ بنادیا ہے وہ یہ کہ عیسائی باپ اور ہندو[4] ماں کی اولاد ہندو مان لیجائیگی بشرطیکہ وہ اولاد ہندو کے طور پر پالی گئی ہو۔

(ج) جو جین[5] یا سکھ[6] یا نام بدری[7] برہمن یا آریہ سماجی یا بودھ مذہب والوں کی اولاد[8] ہو۔

یہ گروہیں ہندو دھرم کی شاخیں سمجھی گئی ہیں مگر ان کے یہاں اگر کوئی خاص بات خلاف 'ہندولا' کے رواج پاگئی ہے تو اُس کے متعلق رواج اُن کے ساتھ برتا جائیگا۔

ان کے علاوہ اور بھی گروہیں چھوٹی چھوٹی ایسی ہیں جن کے ساتھ 'ہندولا' برتا جائیگا۔ ان گروہوں کی شناخت یہی ہے کہ وے ہندو دھرم کی شاخیں سمجھی جاتی ہوں۔

(د) جو اُن غیر ہندو مذہب کے خاندان کی ہوں جنکے ساتھ وراثت وغیرہ کے معاملات میں 'ہندولا' برتا جاتا ہے مثلاً:۔ خواجہ۔ کچھی۔ میمن۔ کاماتھی۔ امرتسری ترکان۔ آسامی کوچ۔

(ہ) جو ہندو نائکن یا طوایف یا کسبی کی اولاد ہو اور دوسرے شخصی قانون کو قبول نہ کئے ہو۔

گو ایسی عورتیں ذلیل سمجھی جاتی ہیں لیکن محض طوایف کہلانے یا مسلمانی نام رکھنے یا گانے بجانے کا پیشہ اختیار

---

[1] ۳۰ کلکتہ ۹۹۹ ؛ ۴۳ اے - ۵۲۵ (۵۳۳) ؛ ۴۸ - آئی - اے ۳۸۱ (۳۸۵)۔

[2] ۳۱ کلکتہ ۱۱ ؛ ۳۰ آئی - اے ۲۴۹۰۔

[3] ۱۸ - کلکتہ ۲۶۴۴۔

[4] ۸ - ایم - آئی - اے ۴۲۰

[5] ۱ - اے - ۶۸۸ ؛ ۵ - آئی - اے - ۴۸ ؛ ۴ کلکتہ ۷۴۴ ؛ ۶ - آئی - اے - ۱۵ ؛ ۳۷ - آئی - اے - ۹۳۰۔

[6] ۳۱ - کلکتہ ۱۱ ؛ ۳۰ - آئی - اے ۲۴۹۔

[7] ۳۴ - مدراس - ۴۹۶

[8] ۲۵ - کلکتہ ویکلی نوٹ ۲۷۳ (۲۷۵) ؛ ۸ بمبئی ۴۳۳ (۴۳۵) ؛ ۴ بمبئی ۷۵۴۔

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

کر لینے سے یہ غیر ہندو نہیں ہو جاتیں۔

اب ہندو عورت کون ٹھہری اس کی وضاحت کے لئے یہ بھی بتلا دینا ضروری ہے کہ کون عورت ہندو نہیں ہے۔

وہ عورت ہندو نہیں ہے :-

(۱) جو ہندو باپ اور عیسائی (۲۷ م ۱۳) یا مسلمان (۲-ل ۲۴۳) ماں سے پیدا ہوئی ہو اور جس کی غیر ہندو کی طرح پرورش و پرداخت کی گئی ہو۔

(۲) جو عیسائی ہو گئی ہو۔

(۳) جو ہندو دھرم یا ہندو دھرم کی شاخوں کے علاوہ دوسرے مذہب میں پیدا ہوئی ہو یا جس نے ہندو دھرم اور اُس کی شاخوں کو چھوڑ کر علاوہ عیسائی مذہب کے کوئی دوسرا مذہب قبول کر لیا ہو اور اُس کی پرائشچت ہو نہ سکتی ہو یا ہوئی نہ ہو۔

'ہندو لا' مقامی اور شخصی دونوں ہے۔ جو ہندو جس صوبہ کا باشندہ ہے اُسی صوبہ کا ہندو لا، اُس کے ساتھ برتا جائیگا اور جب وہ دوسرے صوبہ میں بود و باش اختیار کر لیتا ہے تو اُس کے سابق کے صوبہ کا ہندو لا اُس کے ساتھ برتا جاویگا تاوقتیکہ یہ نہ ثابت کر دیا جائے کہ اُس نے اس دوسرے صوبہ کا ہندو لا قبول کر لیا ہے۔

(باقی)

کلام احسن

[جناب احسن صاحب مارہروی لکچرار مسلم یونیورسٹی علیگڈھ]

بیٹھ نہ نکہت پسند چھپ کے حریم ناز میں
دل کی دوا دوش کو دیکھ رہگذر نیاز میں

بن کے کسی کا نقش پا میں نہ اُٹھائے اُٹھ سکا
عشق کا حسن دیکھنا ناز بھی ہے نیاز میں

شکوۂ بغیر واسطہ ملنے کا اک ہے راستہ
ورنہ خدا نخواستہ عذر نہیں نیاز میں

پیش نظر جو ہیں صنم سب ہیں وہیں کے بیش و کم
دیکھ حقیقت حرم بتکدۂ مجاز میں

پردے کی آڑ بھی ہوئی رُخ پہ نقاب بھی پڑی
شوخ نظر نہ چھپ سکی گوشۂ چشم ناز میں

دیکھئے کس کو وہ ملیں دیکھئے کس کے دن پھریں
آنکھ بھی تاک جھانک میں دل بھی ہے ساز باز میں

دیکھے غلط تسلیاں لی گئیں اور چٹکیاں
تھی یہ ادائے جانستاں عشوہ دلنواز میں

تار نفس کی کشمکش ساز حیات و مرگ ہے
دونوں جہان بند ہیں ایک ہوا کے راز میں

عشق کی ہیں جو حسرتیں احسن اُٹھا یہ زحمتیں
جان کو پھونک سوز میں دل کو گھلا گداز میں

(خاص)

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

بہادر ٹیپو

[ایک اجنبی گریجویٹ]

جنوبی ہندوستان میں اگر اب بھی کوئی ضعیف بھکاری جو کہ اکثر سارنگی پر دیسی راگیں گایا کرتے تھے زندہ ہے تو اکثر اُن کے گانوں میں ٹیپو کا نام سُنائی دیگا۔ یہ ٹیپو وہی بہادر جانباز سلطان ہے کہ جس نے اٹھارویں صدی میں جبکہ انگریزی سلطنت کی بنیاد ہندوستان کی سرزمین پر رفتہ رفتہ مستحکم ہوتی جارہی تھی انگریزوں کو اپنی لیاقت و ناموری سے اس قدر خایف کردیا تھا کہ فرنگی اس کے جانی دشمن بن بیٹھے۔ جس وقت کہ ٹیپو اپنی سلطنت میسور میں مستحکم بنا رہا تھا اُس وقت کارنوالس برطانیہ سلطنت کا گورنر جنرل تھا۔ بڑھتی ہوئی طاقت کو انگریزوں نے رقابت کی نگاہ سے دیکھا۔ دنیا میں کون ایسا ہے کہ جو اپنے رقیب و مخالف کو بغل میں طاقت پکڑتے ہوئے دیکھکر چین کی نیند سوئیگا۔ یہی حال فرنگیوں کے گورنر جنرل کا تھا۔ لڑائی چھڑنے کے لئے بہانہ کی ضرورت بہت زیادہ نہیں ہوا کرتی۔ پس مختصر یہ کہ میسور کی تیسری جنگ ۱۷۹۰ء تا ۱۷۹۲ء شروع کردیگئی کارنوالس نے منگلور میں ایک مضبوط انگریزی فوج تیار کرلی۔ نظام اور مرہٹوں نے حتی الامکان امداد میں کوئی کسر نہیں اُٹھا رکھی۔ ٹیپو کی فوج دریائے کاویری کے شمالی گھاٹ پر خیمہ گاڑے پڑی ہوئی تھی۔ فرنگیوں نے شب کو نظامی اور مرہٹہ فوجوں کے ساتھ دشمن کی فوج پر حملہ کردیا جسکا انجام یہ ہوا کہ ٹیپو کی فوج کو قلعہ کی طرف حفاظت کے لئے جانا پڑا دوسرے روز قبل اس کے کہ صبح کو افق سے سُرخی دور ہو۔ انگریزی فوج نے قلعہ کا محاصرہ کرلیا اور انگریزی توپیں قلعہ کی دیوار کی طرف منہ پھیلا کر کھڑی کردی گئیں۔ لاچار ٹیپو کو شکست ماننی پڑی اور انگریزوں کے صلح کے شرطنامہ پر بمجبوری دستخط کرنا پڑا۔

صلح کی شرطوں میں اول بات تو یہ تھی کہ ٹیپو اپنی نصف سلطنت سے دست بردار ہوجائے اور فتحیابوں کے سر مبارک پر اپنی جائداد نچھاور کرے۔ دوسرے یہ کہ تین کرور روپیہ بطور جرمانہ و اخراجات کے انگریزی و امدادی فوجوں کے حوالہ کرے۔ ایک کرور روپیہ تو سلطان ٹیپو کو فوراً روانہ کرنا پڑا اور باقی دو کرور دو سال کی مدت پر واجب الادا رکھے گئے۔ اس دو کرور روپیہ کی واجب الادائیگی کی شرط ایسی تھی کہ اگر ٹیپو لائق و منتظم سلطان نہ ہوتا تو شاید اس کی تقدیر کا فیصلہ فوراً ہی ہوگیا ہوتا اور چند مورخین کی رائے میں اس شرط کے پوشیدہ معنی یہی ہوسکتے تھے کہ اگر روپیہ ادا نہ ہوسکا جس کی پوری اُمید تھی کہ نہ ہوسکیگا تو باقی رہی سہی جائداد بھی صاف کردی جائیگی۔ ٹیپو کی حالت پر غور کرتے ہوئے تاریخ کے پڑھنے والوں کو بھی حیرت ہوتی ہے کہ ٹیپو کس طرح سے اور کس خوش اسلوبی کے ساتھ ان دو کرور روپیوں کا انتظام کرسکا۔ اس کی آدھی سلطنت اس کے قبضہ سے جاتی رہی تھی باقی نصف جو باقی تھی اس کا بھی بندوبست پچھلے لگاتار

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

لڑائیوں و جھگڑوں کی وجہ سے ٹھیک نہ تھا۔ فصل ہر سال خراب ہوتی جا رہی تھی۔ کسان غریب ہو گئے تھے۔ خزانہ میں ایک پیسہ شاید ایک کروڑ روپے کے بعد باقی نہ بچا ہوگا لیکن یہ ٹیپو کا دل و دماغ تھا کہ جس نے ایسے موقع کے اوپر اپنے لکھے ہوئے دستخط کی عزت رکھ لی اور یہی نہیں تھا۔ صلح ہونے کے بعد ہی اُس نے دو سال کے درمیان میں اپنے ملک کی وہی حالت کر دی جو ایک فارغ البال ملک میں ہونا چاہئے۔ فوجوں میں نئے سپاہیوں کی بھرتی کی اصلحہ جنگ تیار کرائے۔ گھوڑے خریدے۔ کسان پھر اسی طرح سے خوش و خرم نظر آنے لگے اور پھر فصلیں اسی طرح کٹنے لگیں۔ اُن اُمراے سلطنت نے کہ جنھوں نے سرکشی کا ارادہ کیا تھا یا دوران جنگ میں غنیموں سے جا ملے تھے بموجب انصاف سزاؤں کے مستحق ہوئے۔ وہی ٹیپو سلطان جو کہ دو سال پیشتر ایک عاجز ہارا ہوا بادشاہ تھا پھر سے ایک نئی سلطنت کی بنیاد قائم کی اور پھر وہی شان و شوکت، حشمت و دبدبہ دست بستہ محل کے وزیر چوکیدار و دربان بن گئے۔ وہی شاہی جھنڈا جو کہ ایک بار برطانیہ کی فوجوں کے سامنے نیچے ہو گیا تھا پھر اونچی ہوا میں اُڑنے لگا اور وہی شوخی آزادگی شاہانہ اس کے سر سے ٹپکنے لگی۔

منتظر دشمنوں کے دل میں ایک نئے خوف نے جگہ کرنا شروع کر دی۔ جس سلطنت کو اُنھوں نے خیال کیا تھا کہ دو سال میں نیست و نابود کر کے اپنے قبضہ میں لائیں گے وہی از سر نو سرسبز ہو گئی تھی۔ غنیموں کی آرزوؤں کی حسرتناک موت نے ایک نئی جان ان کی دشمنی میں ڈال دی۔ کارنوالس کے کاغذات و خطوط سے صاف آشکارا ہے کہ اُسکی دلی منشا یہی تھی کہ ٹیپو کا نام تواریخ کے صفحہ ہستی سے مٹا دے اور برطانیہ کی حکومت اس کے زوال سے عروج لاوے۔ ٹیپو اس کے نزدیک ایک خطرناک بادشاہ تھا ولزلی جو کہ کارنوالس کے بعد دوسرا مشہور گورنر جنرل ہند میں ہوا اور جس کے عزیز برادر نے ولنگٹن کے نام سے وا کے میدان میں نپولین کی تقدیر کا فیصلہ کر دیا وہ کب سونے والا و غفلت کا آدمی تھا۔ اس کے خطوط سے ثابت ہوتا ہے کہ جب ولایت سے اس کا جہاز ہندوستان کے ساحل پر بھی نہیں آیا تھا راستہ میں کیپ آف گڈ ہوپ ہی میں مصمم ارادہ کر لیا تھا کہ کچھ بھی ہو ٹیپو دنیا سے اُٹھ جائے۔ یہاں ولزلی کو جہاز پر چھوڑ کر ذرا یورپ کی طرف نگاہ کرنا چاہئے۔ فرانس میں عوام الناس نے یکایک بغاوت کا جھنڈا اسی درمیان میں بلند کیا تھا اور وہاں کا بادشاہ اور اس کی ملکہ پھانسی کے زیر نظر ہو چکی تھی۔ پیرس دارالسلطنت میں ایک جمہوری سلطنت کی بنیاد ڈالی گئی تھی۔ کورسیکا کا ایک غیر معمولی سپاہی و انجینیر مسمی 'نپولین' ڈائرکٹری کے عہدہ پر مامور ہوا تھا اور یہ وہی نپولین تھا کہ جس کے نام سے اس وقت تمام یورپ کے بادشاہوں کے کان کھڑے ہو جاتے تھے اور جس کی فتحیابی سے تمام یورپ کی مجموعی طاقت کانپ رہی تھی۔ وہ مصر تک اپنی فوج لا چکا تھا۔ جس وقت وہ شرقی ہندوستان میں آیا اور کچھ روز کے بعد یہاں کے معاملات سے واقف ہو گیا اس نے ایک بہانہ ٹیپو کے ساتھ جنگ کا آخر کار نکال ہی لیا۔ الزام بھی وقت حساب سے بہت موزوں اور واجب تھا۔ کہا جاتا

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

ٹیپو سلطان

خوب میدان شجاعت کا علم بردار تھا
واقعہ یہ ہے کہ سرداروں میں تو سردار تھا

By courtesy of Prince Ahmad Halimuzzaman, great grandson of Tipu Sultan and his Nephew Prince Ghulam Husein Shah, from their original Painting.

SPECIAL FOR THE CHAND

FINE ART PRINTING COTTAGE ALLAHABAD

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

नवीन संस्करण छप गया !!

एक क्रान्तिकारी उपन्यास

मानिक-मन्दिर

[ले० श्री० मदारीलाल जी गुप्त]

[प्रस्तावना-लेखक—श्री० प्रेमचन्द जी]

यह वही क्रान्तिकारी उपन्यास है, जिसकी सालों से पाठक प्रतीक्षा कर रहे थे, ऐसी सुन्दर पुस्तक की प्रस्तावना लिख कर प्रेमचन्द जी ने इसे अमरत्व प्रदान कर दिया है। श्री० प्रेमचन्द जी अपनी प्रस्तावना में लिखते हैं :—

"उपन्यास का सब से बड़ा गुण उसकी मनोरञ्जकता है। इस लिहाज़ से श्री० मदारीलाल जी गुप्त को अच्छी सफलता प्राप्त हुई है। पुस्तक की रचना-शैली सुन्दर है। पात्रों के मुख से वही बातें निकलती हैं, जो यथावसर निकलनी चाहिए, न कम न ज़्यादा। उपन्यास में वर्णनात्मक भाग जितना ही कम और वार्त्ताभाग जितना ही अधिक होगा, उतनी ही कथा रोचक और ग्राह्य होगी। 'मानिक-मन्दिर' में इस बात का काफ़ी लिहाज़ रक्खा गया है। वर्णनात्मक भाग जितना है, उसकी भाषा भी इतनी भावपूर्ण है कि पढ़ने में आनन्द आता है। कहीं-कहीं तो आपके भाव बहुत गहरे हो गए हैं और दिल पर चोट करते हैं। चरित्रों में, मेरे विचार में, सोना का चित्रण बहुत ही स्वाभाविक हुआ है और देवी का सर्वाङ्ग सुन्दर। सोना अगर पतिता के मनोभावों का चित्र है, तो देवी सती के भावों की मूर्ति। पुरुषों में ओङ्कार का चरित्र बड़ा सुन्दर और सजीव है। विषय-वासना के भक्त कैसे चञ्चल, अस्थिर-चित्त और कितने मधुर-भाषी होते हैं, ओङ्कार इसका जीता-जागता उदाहरण है। उसे अपनी पत्नी से प्रेम है, सोना से प्रेम है, कुमारी से प्रेम है और चन्दा से प्रेम है; जिस वक्त जिसे सामने देखता है, उसी के मोह में फँस जाता है। ओङ्कार ही पुस्तक की जान है। कथा में कई सीन बहुत मर्मस्पर्शी हुए हैं। सोना के मिट्टी हो जाने का और ओङ्कार के सोना के कमरे में आने का वर्णन बड़े ही सनसनी पैदा करने वाले हैं, इत्यादि।" सजिल्द पुस्तक का मूल्य २॥) रु० ! नवीन संशोधित संस्करण अभी-अभी प्रकाशित हुआ है !!

गुदगुदी

पुस्तक क्या है, हँसी का ख़ज़ाना है। श्रीवास्तव महोदय ने इस पुस्तक में कमाल कर दिया है। एक-एक चुटकुला पढ़िए और हँस-हँस के दोहरे हो जाइए, यही इस पुस्तक का संक्षिप्त परिचय है। बालकों तथा स्त्रियों के लिए विशेष मनोरञ्जन की सामग्री है। मू० केवल ॥) ; स्था० आ० से ।=) ; दो संस्करण हाथो हाथ बिक चुके हैं! तीसरी बार छप कर तैयार है।

व्यवस्थापिका 'चाँद' कार्यालय, इलाहाबाद

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

کہ ایک فرانسیسی نامی رٹیڈ ٹیپو کی عدالت میں اُن دنوں جزیرہ ماریش سے آیا ہوا تھا۔ ولزلی کے ایک خط میں مورخہ ۹ر جون ۱۷۹۹ء جو کہ اُس نے گورنر مدراس کو لکھا یہ تھا کہ "ٹیپو خفیہ طور سے اپنے سفیر کو جزیرہ میں بھیج چکا ہے اور غالباً مدد مانگی ہے کہ فرانسیسی فوجیں اس کی مدد سے انگریزوں کو ہندوستان سے نکال باہر کردیں"۔

دوسرے خط میں ولزلی پھر ہیرئس گورنر مدراس کو لکھتا ہے کہ "وہ ٹیپو کے ساتھ جنگ کو تیار رہے اور وہ خود بحری ساحل پر انگریزی فوج و جنگی بیڑے کو اکٹھا کرنے کا حکم جاری کر رہا ہے اور جہاں تک ہوگا جلد ہی کلکتہ سے مدراس خود جنگ کی کارروائیاں شروع کرنے کے لئے آوینگا۔ خط میں اس بات کی ہدایت کردی تھی کہ بات پوشیدہ رکھی جاوے اور اس حکم کا راز کسی پر آشکارا نہ ہونے پاوے۔ ٹیپو کے لئے کہا جاتا ہے کہ اُس نے خود اپنے ہاتھ سے قلعہ سرنگاپٹم میں ایک جھنڈا آزادی کا دیوار پر لٹکا دیا تھا اور اپنے کو جمہوری سلطنت کا بادشاہ ہونے کا اعلان کردیا۔ اس ایک عجیب حرکت نے ولزلی کے کان اور بھی کھڑے کردئے۔ اُس نے سوچا کہ شاید فرانسیسی خیالات ہندوستان میں رفتہ رفتہ سرایت کرنے لگے ہیں لیکن یہ واقعہ کہاں تک سچ اور غلط ہے مورخین کی رائے پر چھوڑا جاتا ہے۔ پچھلے صلحنامہ کی شرطوں سے واضح ہوگا کہ یہ شرط قرار پائی تھی کہ ٹیپو اپنے وعدہ کا پکا رہے اور اپنے قول سے منحرف نہ ہوا تو آئندہ اُس سے صلح قائم رہیگی اور فریقین آئندہ کے لئے آمادۂ جنگ نہ ہونگے۔ ولزلی اس شرط کا خیال رکھتے ہوئے ایک معمہ کی حالت میں تھا بیکس تھا کہ کونسی تدبیر ٹیپو سے چھیڑ چھاڑ کی نکالی جائے تاکہ مرہٹے اور نظام اس کی مدد سے منہ نہ موڑیں۔

ہندوستان میں آتے ہی اُس نے ایک نئی چال اختیار کی۔ مرہٹوں اور نظام کو بغیر اپنی طرف ملائے کامیابی کی صورت نظر نہیں آتی تھی لہذا اُس نے سبسیڈیری الائنس کی پالسی اختیار کی اوّل اوّل اُس نے نظام کو اپنی چالوں کا شکار بنایا اُس کے یہاں انگریزی فوجیں بغرض حفاظت مقرر کیں چند اضلاع بعوض اخراجات لے لیا۔ نظام کے سب فرانسیسی عہدہ دار نوکری سے برطرف کردئے گئے اور اُن کے بجائے انگریز مقرر کئے گئے۔

اس موقع پر ولزلی کے اصول سیاست پر غور و فکر سے نظر ڈالنا چاہئے۔ یہ وہ اصول ہیں جس سے ہند کے مختلف مقاموں کے مسند نشین امیر یکے بعد دیگرے غلامی کا طوق گلے میں ڈالکر انگریزوں کے ماتحت بنگئے یا کہ صفحۂ ہستی سے اُن کا نام و نشان بالکل مٹ گیا اس اصول سے مقامی حکمرانوں کے امیر اور سپہ سالاروں کو انگریزوں نے روپیہ کا سبز باغ دکھایا اور اُن بے ایمان نمک حراموں نے اپنے آقاؤں کو جان سے مار اپنے ملک کو غیر ملکی تاجروں کا غلام بنا دیا۔ کمپنی کے ملازموں نے نہ صرف یہاں کے حکمرانوں کے مشیروں کو بلکہ اُن کے پاس ہر وقت رہنے اور خدمت کرنے والے خدمتگاروں کو کثیر تعداد رقم نقد سے اپنے قبضہ میں کرلیا۔ وے سب کے سب حکمراں کو حسب تعلیم غلط خبریں سُنایا کرتے اور حکمراں خواب غفلت میں پڑا رہتا۔ جب اُس کی آنکھ

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

کھلتی تب دیکھتا کہ موت سر پر ہے مشیر و سپہ سالار اپنا اپنا انعام حاصل کر کے کہیں کے کہیں چلے گئے۔ اُس وقت اُن پر غصہ بھی فضول تھا۔ چشم زدن میں کام ختم ہو جاتا۔

ولزلی کی اس چال کا انصاف ناظرین پر چھوڑا جاتا ہے کہ وہ اس انگریزی اصول سیاست پر غور کریں اور دیکھیں کہ کیسی عجیب چال تھی۔ خرچہ کوئی دے فوج کسی کی ہو۔ اپنے اخراجات دوسرے کے ذمے۔ اُس وقت حیدر آباد میں نظام علی خاں آصف جاہ ثانی والی مسند تھے وہ بھی اپنے وزیر اعظم میر عالم کے پھندے میں پھنسے ہوئے تھے اور میر عالم انگریزوں کے وظیفہ خوار تھے۔ سیاست دانی میں وہ بھی کم نہ تھے۔ اُنھوں نے اپنی حفاظت دوسروں کے ہاتھ میں سپرد کر دی۔ سُنتے ہیں کہ وہ فخریہ کہا کرتے تھے کہ اُمرا اپنے محلوں کی حفاظت کے پہرہ دار نوکر رکھتے ہیں ہم نے بھی اسی طرح اپنے ملک کی حفاظت کے لئے کمپنی کو نوکر رکھا۔ اسی اصول سے ہند کی سب ہندو مسلم ریاستیں یکے بعد دیگرے برباد ہو گئیں اور تمام ملک میں انگریزوں کی عملداری ہو گئی۔

ولزلی نے ایک طرف سے مطمئن ہو کر دوسری طرف یعنی مرہٹوں کی جانب رُخ کیا۔ یہاں معاملہ ذرا کچھ ٹیڑھا نظر آیا۔ پیشوا کے حضور میں یہ چال چلنا ذرا آسان بات نہ تھی لیکن ولزلی ایسے آدمی کو ایک نیا راستہ اپنے مطلب حل کرنے کا نکال لینا کوئی مشکل بات نہ تھی۔ سندھیا کو ملا کر پیشوا کے برخلاف ورغلا دیا۔ پس ان دونوں میں آپس میں جھگڑے شروع ہو گئے۔ ولزلی کا کام بن گیا۔ سوچی ہوئی مراد مل گئی۔ ان دونوں طرف سے سکون قلب حاصل ہونے پر ولزلی نے ٹیپو کی جانب رُخ کیا۔

جیمس مل نے لکھا ہے کہ جس بنا پر ولزلی نے ٹیپو کو الزام لگایا تھا وہ بعید از یقین اور بالکل غلط تھے کیونکہ اسی درمیان میں مارشیس سے فرانسیسی جنگی جہاز اپنے ملک کو واپس بُلا لئے گئے تھے دوسرے دریائے نائل کی بحری جنگ میں فرانسیسی بیڑے کو نلسن کے ہاتھ سے ایک عظیم شکست ہوئی جس سے کہ امید نہیں کی جاتی تھی کہ فرانسیسی ہندوستان کی طرف رُخ کرینگے اور ٹیپو کی مدد سے انگریزی سلطنت کی بنیاد کھود دینگے۔ مورخہ ۹ر جون ۱۷۹۸ء کو ہیرس کو ولزلی کا خط ملا جس میں صاف صاف لکھا تھا کہ ٹیپو کے ساتھ لڑائی کے لئے مدراس میں فوج تیار کرائی جاوے اور اسی کے ایک ہفتہ بعد ۱۷ر جون کو ولزلی نے ایک محبت نامہ ٹیپو کی خدمت میں روانہ کیا۔ یہ خط محض سلطان کو دھوکا دینے کے لئے و غافل رکھنے کے لئے لکھا گیا تھا۔ اسی کے ساتھ موضع وائی ناد کے گاؤں کو انگریزی حکومت سے ٹیپو کے حوالہ کر دیا تھا۔ یہ دوسری چال تھی کہ جس سے ولزلی اپنے کارروائیوں سے سلطان کو بالکل بے خبر و غافل رکھنا چاہتا تھا۔ ولزلی کو ابھی ٹیپو سے کھلم کھلا جنگ کرنے کی جرأت نہ ہوتی تھی اس کا دلی منشا سوائے اس کے کیا ہو سکتا تھا کہ وہ جب جنگ کا مکمل انتظام کر لے تب ٹیپو کو اعلان دے اور اگر سلطان گھبرا کر برطانیہ گورنمنٹ کی شرطوں کو منظور نہ کرے تو فوج سے اُس کی حکومت خاک میں ملا دیجاوے۔ مسٹر پی۔ ای رابرٹس اپنی تواریخ میں لکھتا ہے کہ ولزلی فوراً ہی میسور سے جنگ شروع کر دیتا لیکن چونکہ مدراس کا گورنر

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

بالکل تیار نہیں تھا لہذا تین سال اس کو مجبوری انتظار کرنا پڑا گو کہ وہ اپنے ارادے سے باز نہیں آیا۔ ولزلی نے ایک دوسرا ذریعہ ٹیپو کو تباہ کرنے کے لئے تلاش کیا۔ زر کی لالچ دکھا کر ٹیپو کے اراکین سلطنت کو اپنی طرف ملانے کی کوشش شروع کر دی۔ نمک حرام نوکروں نے اپنے مالک کے ساتھ دغا کر کے گاؤں اور زر کی لالچ میں اپنا ایمان فنا ہونے والی مال و جائداد پر فروخت کر دیا۔ جب ولزلی نے دیکھا کہ ٹیپو کے دربار کے اُمرا و سردار پوری طور سے اُن کے قبضہ میں آگئے ہیں تو اپنی فوجوں کا ایک جگہ پر اکٹھا کرنا شروع کیا۔ کاش کہ ٹیپو کو کسی اس کے ساتھیوں نے اس وقت بھی ہوشیار کر دیا ہوتا تو شاید ہندوستان کی تاریخ آج دوسرے پیرایہ میں لکھی گئی ہوتی۔ لیکن قضا و قدر سے کس کا بس چلا ہے۔ اس وقت کچھ اور شدنی تھا (برطانیہ کے اقبال کا ستارہ بلندی کی طرف تھا۔) ایک طرف تو ولزلی یہ حرکتیں ناشایستہ و نامردانہ پر تلا ہوا تھا اور دوسری جانب شفقت آمیز نامے روانہ کرتا تھا تیسری جانب ساحل پر جنگی بیڑے و خشکی پر فوج کو مارچ کا حکم جاری کر دیا تھا۔ ٹیپو بے خبر خواب غفلت میں مطمئن سب دھوکے اور چالوں سے بے بہرہ سرنگاپٹم کے قلعہ میں نمک حرام غلاموں کے ساتھ سلطنت کے اندرونی انتظام میں مشغول تھا۔ اس کے دل میں ذرا بھی اس بات کا شبہ و گمان نہ تھا کہ جن شرطوں کو پورا کرنے کے لئے اس نے اس جانبازی و راستی سے کام لیا تھا وہ پوری ہو جانے کے بعد ہی اس طرح بیکار ثابت ہو جائیں گی۔ چند مہینوں کے بعد جب اس کو ان سب اُڑتی ہوئی کارروائیوں کی خبر ملی تو اُس نے ایک ایک خط میں ولزلی کو لکھا کہ "اس دنیا کے اندر ہر بادشاہ کے کچھ دوست و دشمن ہوتے ہیں اور ان میں چند عنقس ایسے ہوتے ہیں جو آپس میں دو سلطنتوں کی صلح ٹھنڈے دل سے نہیں دیکھ سکتے۔ کیونکہ اُن کی بہبودی کا دارومدار دو یا دشاہوں کے جھگڑوں پر ہوتا ہے لہذا اگر میری کوئی شکایت آپ کے رُوبرو کی گئی ہے تو بیجا اور ناجائز سمجھی جاوے اور اگر آپکی دانش میں کوئی بات ایسی وقوع میں آئی ہے تو سفیر بھیجکر اس معاملہ کو صاف اور طے کر لینا چاہئے تاکہ دونوں ملک میں امن و امان قائم رہے اور آپس کے جھگڑے سے رعایا کی ذات کو کوئی نقصان نہ پہنچے"۔ اس سے زیادہ کوئی اور کیا اُمید کرتا ہے کہ ٹیپو صلح قائم رکھنے کے لئے لکھ سکتا تھا لیکن ولزلی کے یہاں سے اس کا جواب صرف یہ تھا کہ تمہارے دربار میں افسر ڈیوٹن نصیحت اور معاملے کو طے کرنے کے لئے بھیجے جاتے ہیں اور تم فوراً سبسیڈیری پالیسی میں داخل ہو جاؤ اور جن اضلاع کی ہم کو ضرورت ہے ہمارے پیش نظر کر دو اور اسی کے ساتھ ساتھ ایک حکم جنرل رئیس کو لکھا کہ میں نے حیدرآباد کو خوب ٹھیک کر لیا ہے۔ بحری و خشکی فوجیں جنگ کے لئے تیار ہو چکی ہیں اور اس لئے یہ موقع ٹیپو کے نیست و نابود کرنے کا ہاتھ سے نہ جانے پاوے۔ ولزلی ٹیپو کے خط کے جواب کا انتظار کئے ہوئے بغیر کلکتہ سے ۲۱ دسمبر ۱۷۹۸ء کو مدراس کی طرف پہنچنے کو روانہ ہو گیا۔ مدراس پہنچنے پر ٹیپو کا جواب

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

ولزلی کو ملا۔ ٹیپو نے خط کے اندر بہت ہی مودبانہ طریقہ سے میور بشش کے معاملہ کو صاف صاف بیان کر دیا اور لکھا کہ یہ ایک بے بنیاد گپ تھی جس کا کہ نہ وجود تھا نہ ہستی تھی۔ جہانتک کہ میری معلومات ہے وہ محض یہ ہے کہ ایک تجارتی جہاز چاول سے لدا ہوا معہ دس بارہ ہندوستانیوں کے جو اپنے معاش کی تلاش میں وطن چھوڑ کر جزیرہ کو چلے گئے ہیں فرانسیسی ساحل کی طرف گیا ہے لیکن اس میں نہ میری سازش تھی اور نہ مجھے فرانسیسیوں کی مدد کرنے کی خواہش تھی۔ لہذا اگر کوئی تفرقہ اس بات پر قائم ہوا ہے تو میں استدعا کرونگا کہ وہ طرفین کی جانب سے صاف کر دیا جائے۔ میری یہ دلی خواہش ہے اور خداوند تعالیٰ اس کا گواہ ہے کہ کمپنی بہادر کے اور میرے درمیان صلح قائم رہے۔ ۹ر جنوری ۱۷۹۹ء کو ولزلی نے اس کے جواب میں یہ لکھا کہ ساحل کے سب شہر و بندرگاہ ٹیپو سلطان انگریزوں کے قبضہ میں دیدے اور آئندہ کے لئے اُن پر حکومت سے دست بردار ہو جائے اور اگر ۲۴ گھنٹوں کے اندر ٹیپو اس رائے کا فیصلہ نہیں کرتا تو جنگ کے لئے تیار ہو جاوے۔ مختصر یہ ہے کہ گورنر جنرل ٹیپو سے صرف یہ چاہتا تھا کہ وہ خود اپنی خود مختارانہ بادشاہت چھوڑ کر غلام کی طرح اس کا ماتحت بنا رہے۔ غفلت میں سوتے ہوئے مطمئن ٹیپو کو اب ہوش ہوا کہ اُس نے جن وعدوں پر اعتبار کیا تھا اُنکی ہستی مثل حباب کے ناپائدار تھی اور جن محبت آمیز خطوں میں اس نے اپنے کو حفاظت میں سمجھا تھا وہی الفاظ اس کے جال کے پھندے ہو گئے تھے۔ ٹیپو اب بھی جنگ کے لئے تیار نہ تھا لیکن کرتا تو کیا کرتا۔ جنگ آمدو بخرد

ایک ہی ساتھ ولزلی نے کل انگریزی و دیسی فوجوں کو میسور پر حملہ کرنے کے لئے حکم دیدیا۔ جنرل ہیرس و نظام کی فوج جو کہ ارتھر ولزلی کے ماتحت تھی میسور پر مشرقی جانب سے حملہ آور ہوئیں اور دوسری بمبئی کی فوج مغربی گھاٹ کی راہ سے میسور کے پچھم پر حملہ کر بیٹھی۔

نمک حرام نوکر غلط خبریں ٹیپو کے کان میں سناتے رہے۔ کبھی تو یہ کہیں کہ انگریزی فوج تعداد میں پانچ ہزار سے زیادہ نہیں اور کبھی یہ خبر دیں کہ انگریزی فوج مقابلہ کے لئے بالکل ابھی تیار نہیں ہے۔ ٹیپو سلطان نے ایک دستہ اپنی فوج کا جنرل ہیرس کے مقابلہ میں جو کہ بیس ہزار فوج لئے ہوئے آرہا تھا روانہ کی۔ سپہ سالار لوبینا جو کہ ٹیپو کا بہت عزیز نوکر تھا اس فوج کا سردار تھا لیکن یہ دغاباز بے ایمان اپنی فوج میدان میں لئے ہوئے ٹہلتا رہا اور غنیم کے لشکر کے چاروں طرف اطمینان سے گھومتا رہا۔ ایسا معلوم ہوتا تھا بجائے جنگ کے کبڈی کا کھیل کھیل رہا ہو۔ جبکہ بہادر سپاہیوں نے دیکھا کہ معاملہ کیا ہے اور انگریزی فوج سمندر کی لہروں کی طرح بڑھتی ہوئی چلی آرہی ہے تو یکایک دشمنوں سے جاکر بھڑ گئے اور ایک گھمسان لڑائی ہوئی دشمنوں کی کئی صفوں کو صاف کر دیا۔ تھوڑی ہی دیر میں بہت سے آدمی دشمنوں کے موت کے گھاٹ اُتر گئے لیکن اس بہادری کا صلہ سپہ سالار کی جانب سے ایک حقارت کی نگاہ اور لعنت و ملامت تھی۔ ہندوستان کے زوال کے باعث یہاں کے نمک حرام

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

سپہ سالار ہوئے ہیں۔ معلوم نہیں بعد مرنے کے کونسی سزا کے انصاف کے رُوبرو مستحق ہونگے۔ پلاسی کی لڑائی میں جس نے کہ انگریزوں کی حکومت کا شمالی ہندوستان میں سکہ جما دیا وسراج الدولہ کی شان خاک میں ملا دی۔ اس کا بانی سپہ سالار میر جعفر تھا۔ اسی طرح دکھن میں لورینا نے ٹیپو کو دھوکا دیکر انگریزوں کی جیت کرائی۔ جس سپہ سالار سے ٹیپو کو یہ اُمید تھی کہ جیتے جی وہ ٹیپو کی خاطر شمشیر سے ہاتھ نہ اُٹھائیگا وہ زر کی زنجیر میں جکڑا ہوا انگریزوں کی چالوں کا شکار ہو گیا تھا۔ ٹیپو اپنے سرداروں کے دھوکا میں ہمیشہ رہا اور یہی شاید اُس کا قصور تھا اور یہ اُس کی سزا ملی۔ آخری دم تک اس فریب و مکر سے اس کو نجات نہ ملی لیکن بہادر ٹیپو کے دل میں اس بات کا گمان بھی نہ تھا کہ جن سرداروں کو اس نے یہ رُتبہ بخشا تھا اور اس قدر و منزلت کے درجہ پر پہنچایا تھا وہ اس قدر ذلیل ہو جائیں گے۔ پانی کو بھی اپنی ذات سے پرورش پائی ہوئی لکڑی کو ڈبوتے غیرت ہوتی ہے۔ خود ایک فوج کو لیکر مدراسی فوج کے مقابلہ کو نکلا۔ مالاولی کے میدان میں ایک عظیم الشان جنگ ہوئی۔ ٹیپو کے سپاہیوں نے نیزے اور تلوار کے وہ ہاتھ دکھائے کہ انگریزوں کی بڑھتی ہوئی فوج کو پسپا ہونا پڑا لیکن دوران جنگ میں اس کو خبر ملی کہ پچھم سے ایک بمبئی کی فوج حملہ کو میسور میں داخل ہو رہی ہے۔ جس وقت یہ خبر سُنی فوراً تھوڑی سی فوج پھر اپنے نمک حرام سرداروں کے ماتحت میں کرکے پچھم کی جانب کا رُخ کیا۔ دو روز کے اور تمام شب کو زیادہ وقت تک سخت و دشوار منزلیں طے کرکے انگریزوں کی فوج کو جا پکڑا۔ تھوڑی دیر کے لئے تھکی ہوئی فوج کو آرام کرنے کو اجازت دی تاکہ آنے والی لڑائی میں زیادہ جوش و خروش سے کام کر سکیں۔ جیسے کہ اس طرف آفتاب نے پردہ سے منہ نکالا فوراً فوج کو دو صفوں میں کھڑا کرکے حملہ کا حکم دیا۔ بس پھر کیا تھا۔ سپاہی غنیموں کے لشکروں میں گھُس پڑے۔ خود ٹیپو تلوار لئے ہوئے خون کے پیاسے شیر کی طرح جس طرف اپنی فوج کو مارتے دیکھتا پہنچکر وہ جوانمردی و بہادری کا ثبوت دیتا کہ کھوئی ہوئی طاقت سپاہیوں میں پھر واپس آجاتی۔ دن بھر کی لڑائی کے بعد جبکہ شب کی سلطنت کا حکم آیا اور تاریکی نے رفتہ رفتہ اپنی چادر پھیلائی۔ انگریزوں کی فوج پیچھے ہٹ گئی تھی لیکن یہاں پھر دغابازوں نے دھوکہ دیا اور کہا کہ اب انگریزوں کی پلٹن کا کہیں پتہ نہیں۔ اصلیت یہ تھی کہ بمبئی کی فوج نے جب دیکھا کہ ٹیپو کے مقابلہ کی تاب نہیں ہے تو قریب ہی کے جنگل میں جا گھسے اور منتظر رہے کہ جب مدراس کی فوج قریب آجاوے تو ملکر جنگ شروع کی جاوے۔ ٹیپو نے اب قلعہ کی طرف منہ پھیرا۔ ادھر مکار دغابازوں نے اس کے ہرانے کے لئے ایک نیا جال رچنا شروع کیا۔ کسی نے صلح کی درخواست کو ورغلایا، کسی نے قلعہ سے بھاگ جانے کو کہا لیکن گو کہ نمک حراموں نے ٹیپو کو ہر جگہ دھوکا دیا لیکن اس کے دل کو دھوکہ یا فریب نہ دے سکے۔ ٹیپو کہتا تھا کہ دو روز شیر کی طرح بنکر زندہ رہنا بہتر ہے بجائے اس کے کہ دو سو روز بھیڑوں کی طرح زندہ رہے

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

جس ٹیپو نے کہ آزادی کی ہوا کھائی تھی وہ کیسے کسی غنیم کے سامنے سر جھکا سکتا تھا۔ اِدھر بمبئی و مدراسی فوجوں نے، سرنگاپٹم کے قلعہ کا محاصرہ کر لیا۔ محاصرہ کا تذکرہ بہت بُرا نہیں لیکن بہت ہی دردناک ہے۔ دوستوں کی بیوفائی، سرداروں کی سرکشی، سپہ سالاروں کی بغاوت، درباریوں کا مکر اور ٹیپو کا زوال یہ چار چیزیں محاصرہ کی مختصر تواریخ ہے۔ ٹیپو کا اب بھی ایک وفادار نوکر باقی تھا جس کا نام غفار خاں تھا۔ اس نے قلعہ کی حفاظت ایمانداری سے کی لیکن مہتاب باغ پر جہاں کہ اس کا پہرہ تھا یہ دغابازوں کی رائے سے قلعہ میں بلا لیا گیا بس پھر کیا تھا قلعہ کا دروازہ ایک طرح سے کھل گیا۔ ۴ مئی ۱۷۹۹ء کو جبکہ صبح ہوئی اور پچھلے دنوں کے تھکے ہوئے سپاہیوں نے پھر سے اپنا زرہ بکتر و تلواریں سنبھالی۔ اِدھر توپوں نے گولہ باری شروع کر دی۔ پھر ایک قتل عام کا بازار گرم ہوا۔ دونوں طرف سے سپاہی اپنے جوہر و نیز کمال کا ثبوت دیتے تھے لیکن دوپہر کو جس وقت کہ ٹیپو دسترخوان پر بیٹھا ہوا کھانا کھا رہا تھا اسی وقت خبر ملی کہ غفار خاں کو کسی نے قتل کر ڈالا ہے پس وہاں سے سیدھے اُٹھکر گھوڑے کی پشت پر سوار ہو خود قلعہ کی حفاظت پر آمادہ ہوا لیکن معاملہ ہاتھ سے جا چکا تھا۔ دیواریں ٹوٹ چکی تھیں۔ دشمن ہر دم بڑھتے چلے آ رہے تھے۔ اس پر سے میر صادق دغاباز و نمکحرام نے ٹیپو کا راستہ قلعہ سے باہر جانے کا بند کر دیا تھا تاکہ ٹیپو فرار نہ ہو جائے لیکن دغابازی کی ایک حد ہوتی ہے اور ظلم کی ایک انتہا۔ ٹیپو کے ایک وفادار نوکر نے جب میر صادق کا یہ رنگ دیکھا کہ سلطان ہی کی جان پر یہ آمادہ ہے فوراً تلوار سے سر کو تن سے جدا کر دیا قبل وار کرنے کے یہ جتا دیا کہ نمکحرام سرسبز نہیں ہو سکتے۔ ٹیپو اپنی رہی سہی فوج کو قلعہ کے پھاٹک کے نیچے اکٹھا کر ایک بندوق ہاتھ میں لیکر کھڑا ہو گیا اور اس جانبازی کا ثبوت دیا کہ دلزلی ایسے غنیم کو بھی ماننا پڑا کہ ٹیپو ایک بہادر تھا۔ ٹیپو ایک مرد تھا اور مرد کی حیثیت سے زندہ رہا اپنی گولیوں سے کئی افسران فوج کا شکار کیا۔ ایک گولی بائیں سینے پر لگی تو صرف داہنے ہاتھ سے وار کرتا رہا۔ گولی پھر داہنے سینے میں لگی۔ اب ٹیپو کے جسم سے خون کی دو دھاریں بہ رہی تھیں۔ اسکے بعد اس نے تلوار کا ہاتھ میں لیا لیکن اس کے نوکر اس کو ایک ہاتھ رکھکر پیچھے ہٹا لائے۔ لڑائی کا تو فیصلہ ہو چکا تھا۔ جب ایک فوجی ٹیپو کے قریب آیا تاکہ اسکے جواہرات چرا لے ٹیپو نے ہاتھ مارا کہ ٹانگیں کٹ کر علیحدہ گریں۔ وفادار نوکروں نے آخری دم تک نمک کو ادا کیا اور جبتک جان میں جان رہی ٹیپو کو زندہ گرفتار نہ ہونے دیا۔ آخر کار شام کو جب ٹیپو کی لاش کی تلاش کرائی گئی تو وہ قلعہ کے پھاٹک کے نیچے وفادار نوکروں کی لاشوں کے نیچے ملا۔ یہ انجام تھا میسور کی چوتھی لڑائی کا۔ باقی فیصلہ و معاملہ دلزلی کے لئے بہت آسان تھا۔ اس اخیر لڑائی میں نظام نے انگریزوں کی مدد کی تھی یہ تھی کہ جو ملک ملیگا اُسکا نصف نظام کا حصہ ہوگا لیکن پیچھے دیکھا کہ اگر نصف حصہ نظام کو دیا جاتا ہے تو اُنکی بہت وسیع ہوئی جاتی ہے اس لئے کچھ حصہ تو نظام کو دیا باقی

(بقیہ مضمون صفحہ ۶۷ پر دیکھئے)

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

جناب اڈیٹر صاحب، جے رام جی کی۔

آج میں بدرواجی رسم جہیز و نیز دیگر امور متعلقہ رسم شادی کی نسبت مجبوراً کچھ تحریر کرنا چاہتا ہوں مگر سمند قلم قابو میں نہیں آتا اور ایسے اذکار سے سرنگوں اور روسیاہ ہو کر زبان حال سے کہتا ہے کہ

'خموشی معنی دارد کہ گفتن نمی آید'

لیکن میدان مجربات کو چھوڑ کر جائے کہاں۔ بفرض محال اِدھر اُدھر کوچہ قیاسی و سماعی میں تگ و پو اور خوش کن باتیں کر کے چشم زدن کی واہ واہ کی چمکار پچکار کے سیوا نہ دانہ نہ گھاس۔ لہذا بزور اُس کی باگ اپنے ہاتھ میں لیکر واقعات مجربہ کے میدان وسیع میں بغرض تحریر رواں دواں کر کے خیر و خشت اشرار سال خدمت ہے اُمید کہ اس کو بنظر تنبیہ عوام شرف طبع عطا فرمائیگا۔

رسم جہیز یعنی شادی میں قرارداد کی بدرواجی ایسی عالمگیر بلا ہے کہ ہمارا ملک تباہ ہو رہا ہے۔ اس رواج بد کی بدولت بسا اوقات ایسی ناموزوں شادیاں ہوتی ہیں جیسے مخمل میں ٹاٹ کا پیوند:۔

ایک شخص کی لڑکی خواندہ، خوبصورت، تمیزدار ہے اور کارِ خانہ داری میں بجدے ہوشیار ہے اُس کی شادی ایک کُندۂ ناتراش، عقل و شعور سے خالی اور جاہل مطلق بن مانس احمق سے ہوتی ہے۔ کیوں؟ بدینوجہ کہ لڑکی کے باپ کے پاس کافی روپیہ نہیں ہے کہ کسی خواندہ خوبصورت، عقیل و جمیل لڑکے کے باپ کی تشنگی دولت کو بجھا سکے۔ ایک لڑکا درجہ اعلیٰ کا تعلیم یافتہ، قبول صورت، قابل و ہوشیار تیز و طرار بہمہ وجوہ پسندیدہ ہے۔ اُس کی شادی کس سے ہوتی ہے ایک بدشکل بدخو بدتمیز اور بالکل روشنی علم و ادب سے باہر اور تاریکی جہل میں مستغرق از سرتاپا لڑکی سے۔

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

کیوں؟ اس لئے کہ لڑکی کے باپ نے لڑکے کے والد ماجد کا کاسۂ گدائی سیم و زر سے لبریز کر دیا ہے۔

اب آپ ہی فرمائیے کہ ان ہر دو قسم کی شادیوں میں میاں بیوی کی زندگی کیسے عیش و آرام سے بسر ہو سکتی ہے؟ ہندوؤں کے چند فرقوں کی یہ کیفیت ہے کہ وہ اپنے لڑکے کو اتنا ہی قیمتی سمجھتے ہیں کہ جتنا ایک طوائف اپنی بیٹی کو طوائف کے یہاں تولید دختر علامت نیک اختر ہے یعنی اب ایام پیری و زمانہ مفلوک الحالی تمہارا تب فارغ البالی سے بسر ہو جائیگا۔ چند قوموں میں بھی صورت پسر دیکھی نہیں کہ سمجھ گئے کہ اس دولت خداداد کے فیض سے کلید گنج قارون ہاتھ آئیگی۔

اس کے متعلق ایک چشم دید واقعہ گوش گذار کرتا ہوں۔ ہمارے جان پہچان کے ایک مرد شریف کلین قنوجیہ برہمن ہیں، اُن کی مالی حیثیت بھی بلا کم و بیش مسلم ایک بیگہ کی تھی۔ غربت و افلاس کے فرشتے اُن کے در دولت پر پاسبان تھے کہ جبہ بھی مکان کے اندر قدم نہ رکھنے پائے۔ مہاراج ایک مہاجن کے یہاں پچیس روپیہ ماہانہ پر ملازم بھی تھے۔ بقولیکہ۔ گھورے کے دن بھی پھرتے ہیں۔ آپ کے گھر میں بیٹا پیدا ہوا۔ پھر کیا پوچھنا تھا دن عید اور رات شب برات تھی۔ طوائف کی تمثیل بالا حرف بحرف موزوں اور چسپاں تھی۔ تولید فرزند ارجمند پر زمانہ خوشی مناتا اور شادیانہ بجاتا ہے لیکن زمانہ ایک طرف اور پنڈت جی ایک طرف دونوں کی شادمانی میں بعد المشرقین تھا۔

لڑکے کے پیدا ہونے کے ہفتہ عشرہ کے بعد آپ میرے پاس تشریف لائے اور کہنے لگے "مجھے دو سو روپیہ قرض چاہئے" میں نے کہا "یہ تو بجا ہے لیکن صورت ادائیگی کیا ہے؟" - اتنا سُنتے ہی اُنھوں نے بہ جوش و خروش فرمایا "کیا - ادا کیسے کرینگے؟ آپ دو سو روپئے کے لئے اتنے پریشان ہوتے ہیں؟ میں ہزاروں ادا کر سکتا ہوں" میں نے متعجب ہو کر پوچھا "کیسے؟" کیا آپ کو کہیں سے کچھ جائیداد مل گئی ہے؟" اُنھوں نے جواب دیا "کیا آپ کو نہیں معلوم ہے کہ میرے لڑکا ہوا ہے؟ میں نے کہا کہ اس کی خبر تو مجھے ہے مگر اس سے کیا ہوا؟" ہوا یہ کہ وہ پانچ ہزار کی رقم ہے" "بہت خوب۔ اس کا مجھے مطلق پتہ نہ تھا۔ مہربانی کر کے یہ بھی فرمائیے کہ کیسے؟ کیا فروخت کرنے کا ارادہ ہے؟" "آپ بھی نرے چونچ معلوم ہوتے ہیں۔ کیسی خبط پنے کی باتیں کرتے ہیں۔ اپنا لڑکا کوئی بیچتا ہے؟" "کیا ہوا؟ عدد فاضل اکثر نکال بھی ڈالتے ہیں۔ یہ پانچ ہزار آوینگے کیسے؟" وہ اکڑ کر کہنے لگے "اس کی شادی میں"۔ "اچھا! پیدا ہوتے دیر نہیں اور شادی کی تیاری شروع ہو گئی؟" "ہاں اور کیا؟ پانچ چھ برس کی عمر میں اُس کی سگائی کرونگا۔ ڈھائی ہزار صرف سگائی میں گنوا لونگا" "تب تو آپ کے لڑکا کیا ہوا بھلے آدمی کی شامت آگئی" شامت آگئی کہ تف کھل گئی؟ ہمارے ایسے کلین ملتے کہاں ہیں؟ کلین میں۔ "لیکن قواعد مروجہ حال کے رُو سے لفظ کلین کو ترقی واجب دی گئی ہے یعنی کاف کو چھوٹے بڑا کر کے نون حذف کر دیا گیا ہے" اس کا کیا

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

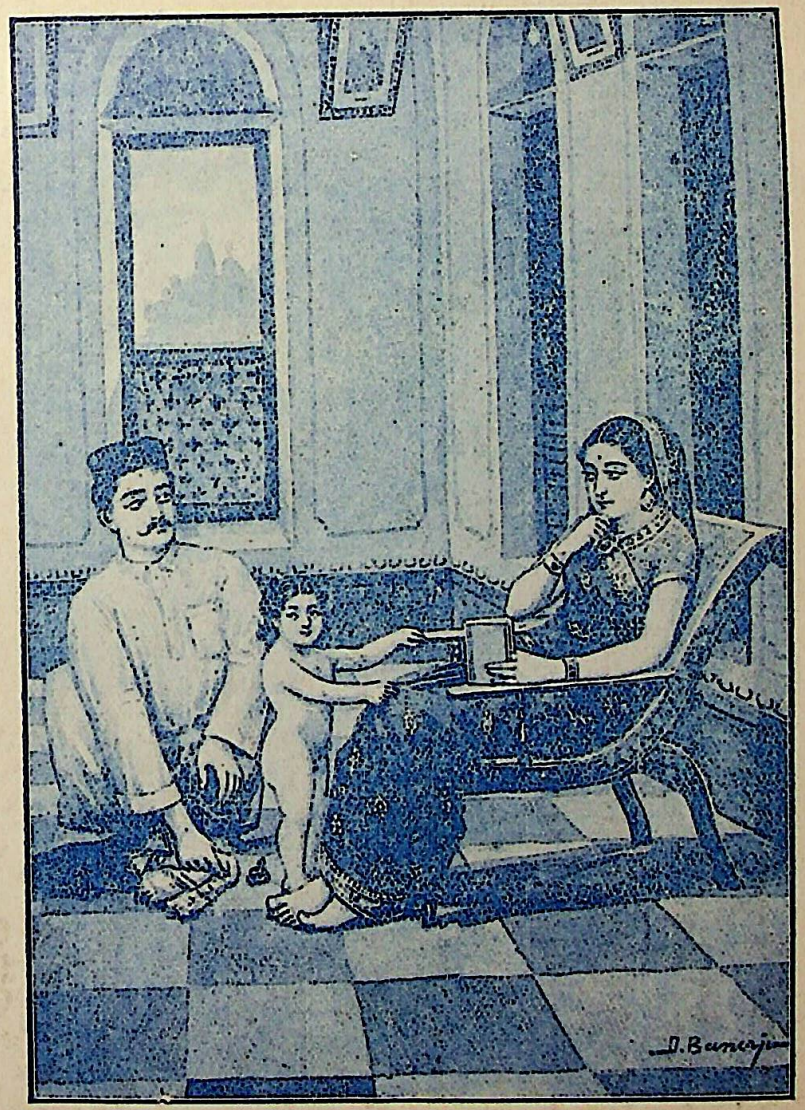

انڈر گریجویٹ بیوی

نئی روشنی کی انڈر گریجویٹ بیوی صاحبہ نارل پڑھ رہی ہیں اور جناب خاوند صاحب . . . . نہ پوچھئے نیا کر رہے ہیں! خاوند صاحب کی بیکسی قابل رحم ہے!!

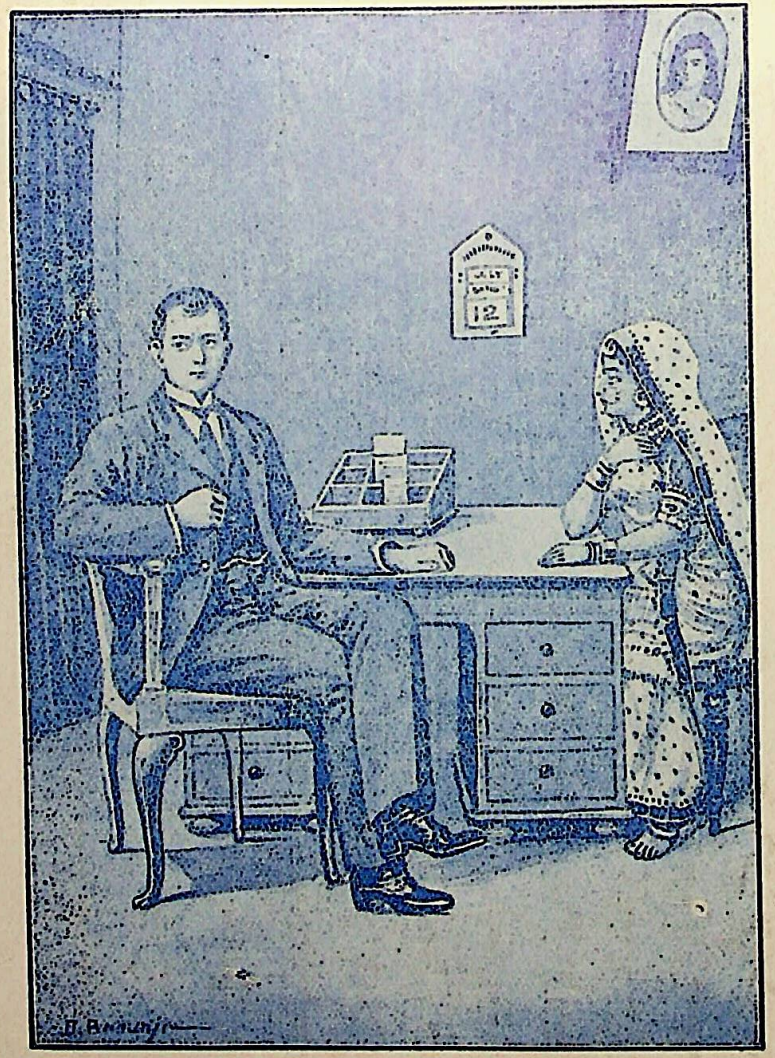

گریجویٹ شوہر

مسٹر (ڈاکٹر) پی ناراین - ایم - اے - ایل ایل بی - پی - ایچ - ڈی (برلن) میونسپل کمشنر ایڈووکیٹ وغیرہ وغیرہ (انگلینڈ ریٹرنڈ) اور پرانی چال کے قدیم سے لیے ہوئے جناب موصوف کی بیوی صاحبہ "پتودیبا" -

ART PRINTING CO. ALLAHABAD

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

مس ریئس اُلنسا بیگم

آپ حیدرآباد (دکن) کي ایک اُلوالعزم لڑکي هیں
حال هي میں انگلینڈ ڈاکٹري پڑهنے گئي هیں -

مس جنک کماري زتشي - ایم - اے

آپ الہ آباد ڈسٹرکٹ کچہري کے مشہور وکیل شري لاڈلي پرشاد جي کي
عالم دختر هیں - ماں کي تعلیمي هیبت پاکر آپ نے پنجاب
یونیورسٹي سے سنہ ۱۹۲۶ میں ایم - اے پاس کیا هے - آپکي

مس فلت

ب کلکتہ کي رهنے والي ایک بہادر خاتون هیں - ابهي آپنے
تالاب میں ڈوبتے هوئے ایک جهوٹے لڑکے کي جان

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

ہے؟ میں نہیں سمجھا۔" میں نے عرض کیا "آپ ایسی معقول پسندی کے دشمن ہیں۔" پنڈت جی۔ "خیر۔ یہ فرمائیے روپیہ دیجئیگا کہ صاف جواب"؟"

"آپ کی جائداد منقولہ قابل اطمینان نہیں ہے۔ ایسی جائداد کے بھروسہ پر روپیہ دینا سر پر بلاوجہ جوکھم اُٹھانا ہے۔"

"جائداد منقولہ کیسی؟"

"جائداد منقولہ سے مراد فرزند ارجمند ہے اور بے اطمینانی یہ کہ جائداد مذکورہ پانچہزار دلانے سے پہلے ہی اگر خدا پور منتقل ہوگئی تو آپ سے کوئی کیا بھنا لیگا۔ بیچارہ قرضخواہ تو ٹکا سا منہ لیکر رہ جائیگا۔"

"آپ نہ معلوم کیا اوٹ پٹانگ بک رہے ہیں۔ میری سمجھ سے باہر ہے۔"

"میں۔" مطلب میرا صرف اس قدر ہے کہ اس وقت زرِ مطلوبہ نقد موجود نہیں ہے یوں تو یہ سب بیت واساس البیت آپ کا ہی ہے۔

اتنا سُنکر پنڈت جی چیں بہ جبیں اور خشمگیں ہوکر چلدئے۔ تیسویں دن دانتوں پسینہ آنے کے بعد صلح ۲۹ عدد چہرہ شاہی کے دیدار کا حق جن کو نصیب ہوتا ہے۔ وہ لڑکے کے پیدا ہوتے ہی دو سو روپیوں کو "رُپئی" کہنے لگے۔ لڑکوں کی داشت معمولی بات نہیں نہایت توجہ اور احتیاط کی محتاج ہے۔

علی العموم معمولی لوگوں میں تولید کے بعد سوال غذا زیر بحث ومباحثہ رہا کرتا ہے اور اکثر بکثرت رائے یہ طے ہوجاتا ہے کہ نونہال کو موٹا تازہ، ہٹا کٹا بنانے کا ایک ہی نسخہ ہے کہ خوب کھلاؤ۔ خوب کھلاؤ اور خوب کھلاؤ۔ جس طرح پر قصاب کے ہاتھ فروخت کرنیوالے گڈریے بھیڑ بکری پالتے ہیں اور اُن کی نظر محض جانور کی فربہی پر ہوتی ہے اُسی طرح ایسے لوگ اپنے بیٹے کی پرورش اسی نقطۂ نگاہ سے کرتے ہیں۔ ایسے دولت پرستوں اور غلامان زر کی نظروں میں لڑکے کا بڑھنا کیا ہے اشرفیوں کے بے دست وپا توڑوں پر کشش مقناطیسی کا عمل کرنا ہے۔ ایسے لوگوں کے گھر میں کہیں شامت اعمال سے لڑکی پیدا ہوگئی تو گویا مجسم پیغام اجل مل گیا۔ اگر خوف جہنم اور تعزیرات ہند ان ظالموں کا دست ستم خوب زور سے اپنی طاقت بھر نہ پکڑے رہے تو یہ لوگ بلا تکلف قتل دختر کو بحیلہ شرعی موسوم بہ قربانی حلال کرکے نجات دارین حاصل کرنے کی درخواست بلا توقف بخدمت پروردگار عالم بیرنگ بھیجدیں۔ یہ کیوں؟ کیونکہ جس وقت خیال آتا ہے کہ اس کی شادی میں اتنے روپے دینے پڑینگے تو آنکھوں میں خون اُتر آتا ہے۔ شادی کے موقعہ پر اس جہیز کی رسم کی وجہ سے اکثر وہ نعلین بازی ہوتی ہے کہ الامان! الامان! بال بال صاف ہوجاتے ہیں۔ لڑکے والے کی یہ نیت رہتی ہے اگر لڑکی والا نجات ابدی کا خواستگار رہے یعنی وہ پھر ایسی مصیبت کا منہ نہیں دیکھنا چاہتا تو اُسے واجب ہے کہ تارک الدہر ہوکر گوشہ گزیں ہوجائے اور کل مال ومتاع اپنی دختر کے شوہر کے ولی قانونی اُس کے پدر کے حوالہ کردے۔ یہ شادی ہے کہ آباو اجداد کی جائداد کا تعلقہ ہے۔ بقولیکہ

"طمع راسہ حرفست وہرسہ تہی"

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

جیسے مریض استسقاء کی پانی سے ویسے ہی طامع کو زر سے سیری نہیں ہوتی۔ ہو بہو یہی کیفیت لڑکے والے باپ کی ہوتی ہے۔ بیٹے کو پہلے ہی سبق پڑھا دیا۔ "دیکھو بیٹا پہلے موٹر مانگ لینا تب کلیوا کھانا۔" باپ نہ دادے تیسری پشت حرامزادے۔ جدّ امجد کو تو کبھی لڑھیا بھی نصیب نہیں ہوئی تھی بیٹے موٹر باندھنے کے پھیر میں غلطاں و پیچاں ہیں۔ کیا مضایقہ "اگر پدر نتواند پسر تمام کند" لڑکی والا اس موٹر کی صدا ہیبت ناک سنکر گھبرا اُٹھا کہ سنگ آمد و سخت آمد۔ مگر سوچا کہ خود کردہ را علاجے چیست۔ موٹر بھوانی کا صدقہ سائیکل دیکر ساٹھ سو کی موٹر کی قیمت کا سود ساٹھ روپیہ کی بائیسکل دے کر ٹال مٹول کر کے کسی طرح پر جان چھڑاتا ہے۔ ادھر لڑکے والے نے سوچا کہ مفت را چہ گفت۔ از خرس موئے بس است۔ کچھ ملا ہی تو۔ تیر بے نشانہ تو نہیں ہوا۔ براتیوں سے ہنس ہنس کر فرماتے ہیں۔ دیکھا آپ لوگوں نے۔ پیش بندی کے یہی معنی ہیں۔ موٹر سے چلے تب سائیکل کی سواری نصیب ہوئی۔ براتی بھی تو مہادیو کے براتی تھے۔ ایک صاحب بولے "جاے اُستاد خالی ست"۔ آپ نے قدرے غلطی کی اگر ریل گاڑی سے چلتے تو گرتے پڑتے موٹر لاری کا ملنا اصول بالا کے رُو سے امر محال نہ تھا۔

اس داد دہش پر بھی اگر لڑکی والے نے بوجوہ چند در چند کسی مد میں برائے نام کفایت شعاری کو دخل دیا تو پھر اس کی دستار عزت زیر قدم۔ خدا بچائے!

لڑکے والے کو خواہر مادر کا اختیار تو اُسی وقت ر
جائز ہو جاتا ہے جس ساعت سعید میں یا خود
رشتہ داری سے پابندی رسم شادی ہو جاتی ہے
سمدھی کو سمدھی کی گالیاں بمنزلہ مبارکبادی ہوتی
کیونکہ "ابتداے عشق ہے روتا ہے کیا + آگے آگے
دیکھئے ہوتا ہے کیا"، اگر ابتدا سے اس کے عادی
ہو جائیں گے تو پھر برات کی بیڑن سے رسم گالی
سے عزت افزائی کی برداشت کا دل و گردہ کہا
سے لائیں گے۔ کیونکہ وہ سودا تو بر سر مجلس اور
نہیں نقد لینا دینا ہو گا۔ لڑکی والے کی جانب
کسی قسم کی خامی کے متعلق سہواً کا لفظ زبان پر
جرم ہے رہا قصداً خواہ مخواہ طوق گلو ہو گا اور
یہ حکم صادر ہوتا ہے کہ تمام براتی معہ دولھا دعوت
پختہ و خام حرام سمجھیں اور ایسے حرامی کے گھر کھانا
تو درکنار پانی پینا بھی روا نہیں لہذا بہتر ہے کہ
رخصتی ادا کر کے روانہ باشد۔ واہ رے مُرچ
شائستگی تو حضور پر نور کے سامنے شب دیجور
طرح کدی نہ منہ دیکھتی ہے اور نہ دکھلاتی ہے
"شرم چہ کتی ست کہ پیش مرداں بیاید"
آپ کا سخن تکیہ ہے۔

ایسی حرکت وحشیانہ محض جہلا کی جاگیر نہیں
بڑے بڑے تعلیم یافتہ برقع تہذیب منہ پر ڈالے
ہوئے ایسے ننگ و ناموس کو اپنا باعث فخر
ہیں اور اپنی نالائقی پر نازاں ہوتے ہیں اور فر
ہیں کہ شادی کے متعلق جملہ مراسم و اُمور چند روز

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

فانی ہیں۔ صرف یہی جھگڑے و فساد ہی ایسی شے ہیں جو کہ دیرپا اور جاودانی ہیں۔ افسوس ایسے تعلیم یافتہ ہونے پر۔ سچ ہے۔

"لاکھ طوطے کو پڑھایا پر وہ حیواں ہی رہا"

طرہ یہ کہ محض غربا کی یہ حالت دست و گریباں ہوتی تو ناداری کے سر میں بدکرداری کا سہرا بندھ جاتا مگر دین خدا تو ہے۔ بڑے بڑے دولتمند ایسے دست سوال دراز کرنے کے عادی ہیں۔ بلا ساختہ کہا کرتے ہیں کہ یہ تو پشتہا پشت سے چلا آتا ہے۔ ایسے لوگوں کا یہ خیال ہے کہ لڑکے والے کی شان اسی میں ہے۔ حالانکہ مدتوں سے سر چڑھی مانگ بھی فی زمانہ سامنے سے ہٹ کر دہنے بائیں بغلیں جھانکتی ہے اور سوال کے لئے تو یہ صاف جواب دیا جاتا ہے کہ:۔

دستِ سوال سیکڑوں عیبوں کا عیب ہے
جس ہاتھ میں یہ عیب نہ ہو دست غیب ہے

اگر کہیں لڑکی والا اپنی شان ایسی ہی عزت افزائی سے سمجھتا تو سمدھی کو دروازہ پر بٹھا کر تاج چرمی سرپوش کر کے مبارک و سلامت کی رسم ادا کرتا تو پھر بھولے سے بھی سمدھی صاحب مہمان اپنی شان بگھارتے اور اینٹھنے کا نام کبھی نہ لیتے۔

جناب اڈیٹر صاحب، اس وحشیانہ رسم جہیز کی وجہ سے بیچاری لڑکیوں پر کیسے کیسے ظلم ہوتے ہیں کہ محض اُن کے خیال سے روح کو صدمہ پہنچتا ہے۔ کنار مادر میں پھول سی بیٹی سب کی آنکھوں میں محض قومی بدرواجیوں کے باعث خار سی کھٹکتی رہی۔ بادِ شادی سے کشاں کشاں اگر کسی چھوٹے موٹے ذات بھائی کے گھر پہنچی تو صموم جہیز کے ٹمپریچر کی کمی و بیشی اس کے لئے پیام اجل ہو گئی اور سسرال میں نندیں کسی پہلو میں چین نہیں لینے دیتیں۔ ہر دم یہی گفتگو یہی چرچا، باپ نے یہ کیا وہ کیا۔ ایسا نہیں کیا ویسا نہیں کیا۔ یہ اور ایسا کرتا۔ وہ ویسا کرتا کے تیر طعنہ کا نشانہ ہو رہی ہے۔ بیچاری کی زیست دشوار ہو جاتی اور مانگے موت بھی نہیں پاتی ہے۔

میں ایک ایسے خاندان کی ایک بہو کی سرگذشت سے براہ راست واقف ہوں کہ جس کی ساس نے محض والدین کے اس قصور پر کہ سمدھن صاحبہ کے پسند خاطر جوڑا نہیں دیا تھا بہو کے ساتھ ایسے بُرے ظالمانہ برتاؤ عمل میں لائے گئے تھے کہ اُن کا بیان کرنا ایک قوم بھر کے منہ میں کاجل پوتنا ہے۔ بیچاری بہو کو کمبخت ساس نے جنم داغ دیکر حکم دیا کہ گھر جا کے ماں کو دکھلا دینا کہ تمہاری کرتوت کا یہ نتیجہ ہے تاکہ آئندہ ایسی خفیف الحرکاتی سمدھیانے کے متعلق نہ کرے۔ غضب تو یہ ہے کہ جس لڑکے کی بیوی کے ساتھ یہ ستم کیا گیا تھا وہ اس مجرمانہ اور ظالمانہ حرکت کا خود چشم دید شاہد تھا۔ گو کہ وہ گربجویٹ کی دُم، ناک، کان سب کچھ تھا مگر اُس نے بدقسمتی لفظ سعادتمند تو پڑھا تھا مگر اس کا استعمال تو پڑھایا نہیں جاتا۔ پس اگر ایسے شخص پر پڑھے جاہل کا کلمہ موزوں سمجھا جاوے تو کیا مضایقہ ہے اور درینصورت سعادتمندی کا استعمال بیجا بھی بجا ہے۔

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

اُن سے کہا گیا کہ آپ نے اُن کی مخالفت کیوں نہیں کی تو منہ بنا کے بولے :-

"وہ آخر میری مادر مہربان ہی ہیں۔ میں اُنکے کاموں میں مداخلت بیجا کر کے ناخلف ہو جاؤں؟ یہ بالکل شائستگی کے خلاف ہے"

لعنت ہے ایسی شان محبت، شائستگی اور مادری پر۔ ایسی ماں تو زندہ در گور بہتر۔ شادیوں میں بجائے باخود ہا محبت و پیار، اتفاق و اتحاد، عزت و آبرو اور ہر کام باسانی انجام دینے کے خیال کے یہ وحشیانہ حرکت کی جاتی ہے کہ میدان شادی میں دو سمدھیوں کا میل مثل میل خراں ہے کہ ملتے ہی دو دو دو لتیاں جھاڑ کے مراسم آداب و تسلیمات ادا ہوئے اور یہ نتیجہ ہوا کہ لقمان دوران اور ارسطو زمان بھی پیغام صلح نہیں لے جا سکتے کیونکہ یہ مسئلہ مسلمہ ہے کہ

اگر در ہر دو جانب جاہلانند
دگر زنجیر باشد بگسلانند

ابھی مجھے ایک بارات میں شرکت کا اتفاق ہوا تھا۔ اس بارات میں نوشہ کے چچا صاحب رات کو تین بجے کی ٹرین سے اپنے مکان واپس جانے والے تھے۔ اُس روز دعوت پختہ تھی رات کو ایک بجے دعوت سے فرصت ملی۔ چچا صاحب مذکور کو اسٹیشن تک لیجانے کے لئے سواری طلب کی گئی تھی۔ بیچارے لڑکی والے نے ایک یکہ والے سے یکہ لانے کے لئے کہدیا تھا۔ اس کے بعد وہ انتظام دعوت میں گرفتار ہو گیا۔ اس قصبہ میں کل چھ سات یکے تھے۔ اتفاقاً یکہ کے آنے میں چار کے حساب سے کچھ عرصہ ہو گیا (گو کہ گاڑی کے ٹائم کے حساب سے کافی وقت تھا) بس پھر کیا تھا؟ چچا پاپیادہ ہی اسٹیشن چلدئے اور تمام راستہ بھر لڑکی والے سات پشت کو گالیاں دیتے ہوئے اسٹیشن پہنچے پر پہنچکر لڑکی والے کی طرف کے آدمیوں کو سنا کر

"اگر میں نے اس ہتک عزتی کا عوض اس کے بچہ وغیرہ وغیرہ سے نہیں لیا تو میرا نام نہیں سالا یاد کریگا کہ کسی سے پالا پڑا تھا"

چچا صاحب مسطور کافی طور پر تعلیم یافتہ تھے پوجیری، ہون، حبس دم وغیرہ کے علاوہ اگر وجد میں تو بیساختہ یہ شعر نوک زبان ہوتا کہ

دنیا خواب است زندگانی دروے
خوابیست کہ در خواب ابہ بینند آنرا

موصوف بہ صفات بالا ایسی ذات شریف کرشمۂ ناز تھا۔

اس رسم بد جہیز کے ساتھ اعزاز و شرف ذاتی شان کے مشیخت کی بجنسہ یہ حالت ہے کہ

نشہ دولت کا بد اطوار کو جس آن چڑھا
سر پہ شیطان کے اک اور بھی شیطان چڑھا

رؤسا کی طرف سے بھی جو زیادتی کی جاتی ہے وہ بھی کے سر پر بار گراں ہو جاتی اور نہ روے رفتن و نہ ماندن کا مسئلہ ہو جاتا ہے یعنی جو کام کہ ہزار دو ہزار میں انجام ہو سکتا ہے شیخی کے مارے اُس میں دس کے خرچ کرنے کا عزم بالجزم کر چکے ہیں۔ کیوں؟

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

شخص نے اپنی بیٹی کی شادی میں اتنا خرچ کیا تھا تو ہم کہاں کے گئے گذرے ہیں۔ لڑکی لڑکوں کی شادی میں فضول خرچی اور مال و زر کی بربادی دھوم دھام کے نام سے مشہور ہے اور آپ کے لئے باعثِ فخر و شان ہے یوں تو دھوکے سے بھی کسی غریب کے لئے ایک دھیلا خیرات کے نام نہیں نکالا جاتا بلکہ دینے کے نام سے فقط گھر کے کیواڑ دیتے ہیں اور دوسرے کو دینا تو بالائے طاق اغلب ہے کہ خود بھی بخوبی کھا پی نہ سکتے ہوں۔ لیکن شادی میں جان پر کھیلنے کو مستعد و کمربستہ۔ کیوں؟ بھائی لینا دینا کھانا پینا تو روز کا دھندھا ہے یہ عزت کا کام روز روز تھوڑا ہی آتا رہتا ہے۔ اِسی دن کے واسطے قرض و دام بھی کر کے اپنی اور باپ دادوں کی آبرو بچانا اور ہو سکے تو بڑھانا واجبات سے ہے۔ ایسا معلوم ہوتا ہے گویا دنیا میں صرف لڑکی لڑکے کی شادی ہی ایک ایسا موقع ہے جس وقت انسان دل کھول کے خرچ کر سکتا ہے اور شرعاً پابند ہے اور اپنے بزرگان گذشتہ و موجودہ کی ناک ہاتھوں دراز کر سکتا ہے۔ آل و اولاد کی تربیت و تعلیم کا خدا مالک ہے پیش از وقت اور بیش از قسمت کسی کو نہیں مل سکتا تو پھر بمد تربیت و تعلیم خرچ واقعی فضول خرچی اور حمق ہے۔ داد دہش بغرض آرام و آسایش بیٹی و داماد ممنوع نہیں بلکہ خاصۂ فطرت ہے وہ بھی اپنی حیثیت سے ہرگز تجاوز نہ کرنے پاوے ورنہ جو فروشی اور گندم نمائی کی پناہ لینا پڑیگا اور ٹکے کی چیز کا سولہ آنہ درج فہرست جہیز کرنا پڑیگا اور بلا پوچھے جا بجا اعلان کرنا پڑیگا کہ ہم نے یہ کیا اور یہ دیا تاکہ بوقت ضرورت شہادت کافی کے دستیابی میں تردد نہ اُٹھانا پڑے مگر ایسے معقول پسندوں کو بھی بعض اوقات بڑی چپقلش پڑتی ہے یعنی اگر وہ محض مراسم ضروری ادا کر کے ایک قدم آگے نہ بڑھے تو یہ پھبتیاں اُڑاتے ہیں کہ بیچارہ کیا کرے جو کچھ اُس کے پاس تھا سب ایک داؤں میں میں لگا دیا۔ اب ہارا جُواڑی کا سا منہ لیکر خاموش بیٹھا ہے اور اگر اس گفت و شنود اور زبان خلق سے جان بچانا چاہتا ہے تو آگے چاہ قرض و دام ہے کہ جس میں گر کر جانبری دشوار کیا نا ممکن ہے۔ اِن بلیات سے تحفظ کے لئے وہی بہادران قوم ہوتے ہیں جو کہ بلا خوف و خطر علانیہ بر سر مجلس نعرہ زن ہوتے ہیں کہ

"خورانیدن صد عیب و نخورانیدن یک"

اس طرح پر واجبیت پسندوں کو اپنی ہی دردسری اور خرچ فضول سے جانبری نہیں ہوتی بلکہ اپنی قوم کے شریف زادے جو کہ گردش زمانہ سے نشانہ افلاس و ناداری ہو رہے ہیں اُن کی آبرو کو مفت بچانا ہے۔ یہ حرکت فضول خرچی کوزہ آب زرداروں کی محض اُنھیں کی ذات پر اثر بد نہیں ڈالتی بلکہ بیچارے غربا کو اس کا بُرا نتیجہ اُٹھانا پڑتا ہے اور بہت سی بھلے گھروں کی لڑکیاں جہیز کے باعث کوڑے کی طرح گھر سے نکال کر پھینک دیجاتی ہیں اور ایسا بھی دیکھنے میں آیا ہے کہ کچھ شرم و حیا سے موت کو ایسی حیات پر ترجیح دیتی ہیں اور اسی رسم بد کی وجہ سے خودکشی کر لیتی ہیں۔

جناب اڈیٹر صاحب۔ جس روز اس قرارداد

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

کی رسم کا خاتمہ ہو جائیگا اُس روز لڑکے اور لڑکیوں کی شادی و تولید یکساں باعث خوشی و خرمی ہوگی اور دولت آل و اولاد جو کہ دین خدا ہے اُس کے جزء اعظم کے ساتھ عذاب کفران نعمت سے رُستگاری ہو جائیگی اور ہندوؤں کا مکان جہان میں جہنم سے جنت ہو جائیگا زیادہ واجبات و دعاے حصول مرام۔

"صندل کا ٹیکا"

تقاضا درد سر کا ہے۔ تری تعریف صندل ہو
سُنیں اہلِ جنوں آکر تری توصیف۔ صندل ہو

نظر افروز عالم ہے مگر تو خوشنمائی میں
حسینانِ جہاں سے کم نہیں ہے دلربائی میں

کیا کرتے ہیں دل سے قدر کیا کیا نازنیں تیری
کہ اُن کے ہاتھ سے ملتی ہے شاخ صندلیں تیری

صباحت روے زیبا کی تری رنگت سے پائی ہے
ترے دم سے حسینوں میں یہ شانِ خود نمائی ہے

تری شاخوں سے لپٹے سیکڑوں کالے بھی دیکھے ہیں
تری خوشبوے جاں پرور کے متوالے بھی دیکھے ہیں

بنا دیتا ہے جب بیخود کسی رنجور کو سودا
سنگھاتے ہیں اطباے زمانہ لخلخہ تیرا

شفا بخشی میں تو اکسیر ہے، جادو اثر تو ہے
دواے اختلاج دل۔ دواے درد سر تو ہے

کیا کرتے ہیں کیا کیا جستجو ہر دم حسیں تیری
فلک رفعت ہوئی عطروں کی صورت میں زمیں تیری

کسی صورت سے گر تو زندگی کے پیرہن میں ہے
عدم کے جانیوالوں کے بھی دامان کفن میں ہے

بہت اہل محبت کا چتا تک ساتھ دیتا ہے
کہ اُن کے ساتھ خود جلکر عدم کی راہ لیتا ہے

بتوں کے سامنے گر دیر میں تجکو جلاتے ہیں
تو محراب حرم میں بھی ترے چھاپے لگاتے ہیں

یہ سب کچھ ہے مگر اک بات تیری جانستاں نکلی
ذرا سی چیز اے ظالم۔ بلائے آسماں نکلی

غضب ہے حسن کے مطلع پہ کس عنوان سے پہنچا
جگہ کی ماہ کے دل میں۔ نرالی شان سے پہنچا

بظاہر ایک نقطہ تھا مگر وہ جاں طلب نکلا
کہوں کیا حسن کے دفتر میں کیونکر منتخب نکلا

وہ ہو جانا ترا گاہک بہر صورت مرے جی کا
وہ بن جانا کسی بت کی جبینِ ناز کا ٹیکا

(جناب یاسا صاحب لیہ)

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

سوشل ریفارمس کی ضرورت

(سریمتی۔ ودیاوتی سہگل)

بیسویں صدی ترقی کا زمانہ ہے یا یوں کہیئے کہ ترقی کے زمانے کا دوسرا نام بیسویں صدی ہے۔ دُنیا کے مدبران کی نوائے ہم آہنگ یہ ہے کہ اسی صدی میں ہر ملک کی قسمت کا فیصلہ ہو جائیگا۔ اس لئے ہر ملک والے اس نئے دور کے آغاز سے ہی اپنی اپنی ترقی کی راہوں کو ڈھونڈھکر نکالنے لگے ہیں اور ہر ملک کے رہنمایان نے اپنی اپنی قوم کی تنظیم شروع کر دی ہے۔ ان رہنمایان نے اعلیٰ ترین علم و تجربہ حاصل کرکے اور پُرانی تواریخ کی چھان بین کرکے نتیجہ نکالا ہے کہ بلا قومی تنظیم کے کوئی قوم خود اختیاری کی گھوڑ دوڑ میں بازی نہیں لیجا سکتی۔

خود اختیاری کا خوش کن نعرہ دنیا کے ہر کونے میں گونج رہا ہے۔ بوڑھا ہندوستان بھی مدتوں کی نیند کے بعد انگڑائی لیتا ہوا نظر آرہا ہے لیکن ابھی تک اچھی طرح سے اُسکی آنکھیں نہیں کھُلی ہیں۔ جس وقت سوسائٹی کی حالت پر اُس کی نظر جائیگی تو خوف یہ ہے کہ ہمت ہار کر وہ پھر نہ کہیں سو جائے۔

یہ امر مسلمہ ہے کہ سوسائٹی میں تنظیم کے بغیر قوم کا سُدھار کسی پہلو سے بھی انسانی قوت سے باہر ہے۔ قوم کے جسم میں سوسائٹی کی بدرواجیاں کوڑھ کا کام کرتی ہیں۔ اس میں اختلاف رائے ممکن نہیں ہے۔ تہذیب کی ڈینگ مارنے والے انگلینڈ میں بھی اٹھارویں صدی کے شروع تک سوسائٹی میں بدرواجی ایسی ہی بُری طرح پھیلی تھی جیسی آج ہندوستان میں لیکن انگلینڈ نے کیسے ترقی کی؟ جواب ظاہر ہے۔ سوشل ریفارم سے۔ پہلے آدمی اپنے گھر میں چراغ جلا لیتا ہے تو مسجد اور مندر میں جلاتا ہے۔ گھر کا سُدھار کئے بغیر کوئی بھی کچھ نہیں کر سکتا۔ جس کی گھر میں عزت ہوتی ہے اُس کی باہر بھی۔ سوشل ریفارمس کا یہ پھل ہے جو آج انگلینڈ ترقی کی چوٹی پر پہنچ چکا ہے اور یہ سوسائٹی کے بدرواجیوں کا ہی پھل ہے کہ ہندوستان اس بُری طرح پامال ہے۔

سوسائٹی کی تنظیم کا مسئلہ ہر ایک ہندوستانی کے سامنے درپیش ہے۔ جس طرح ایک بڑی سے بڑی مشین ایک چھوٹے سے چھوٹے پُرزے کے بگڑ جانے سے اور پُرانے ہو کر گھس جانے سے بیکار ہو جاتی ہے اسی طرح ہماری قومی مشین کا جب تک اُس کے تمام پُرزے جو بہت پُرانے اور بیکار ہو گئے ہیں نئے سرے سے جڑ سے نہ جاوینگے چلنا ناممکن ہے۔

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

بھلا جس ملک میں ایسے لڑکوں اور لڑکیوں کی شادی ہوتی ہو جنھوں نے پوری طور سے ہوش بھی نہ سنبھالا ہو۔ اتنا ہی نہیں بلکہ جس ملک کے کچھ حصوں میں لڑکے اور لڑکی کی شادی جب وے ماں کے پیٹ ہی میں ہیں طے کر لی جاتی ہو۔ جس ملک میں ایک ماہ سے بارہ ماہ کی عمر کی سترہ لاکھ سے زاید بیوہ بچیاں ماں کی گودوں میں مُنہ ڈال کر روتی ہوں۔ جس ملک میں عورتوں کی اتنی خواری ہو۔ جس ملک میں عورتیں پیر کی جوتی سمجھی جاتی ہوں۔ جس ملک یا قوم کے مرد عورتوں کے نسوانی اعلیٰ مرتبہ کو تسلیم نہ کرتے ہوں اور اُن کو محض اپنی کھیتی سمجھتے ہوں۔ جس ملک میں ماتائیں تعلیم سے محروم رکھی جاتی ہوں جس ملک کی لڑکیاں جہالت کی تاریک گودوں میں پلتی ہوں۔ جس ملک کے دودھ پیتے بچے ہر سال کروروں کی تعداد میں قبل از وقت موت کے لقمہ بنتے ہوں۔ جس ملک میں ہر سال کروروں ہی انسان وبا، قحط، پلیگ اور انفلوئنزا وغیرہ ہولناک بیماریوں کے شکار ہوتے ہوں۔ جس ملک میں قریب قریب پانچ ہزار عورتیں سوسائٹی کے ظلم سے ہر سال خودکشی کرتی ہوں۔ جس ملک میں ہزاروں مختلف فرقے قائم ہوں۔ جس سوسائٹی میں ایک باپ محض اپنی خواہش کے مطابق کسی مرد کے ہاتھ میں اپنی لڑکی کا ہاتھ دیدیتا ہو اور اُس کے درد انگیز مخالفت کی اُتنی ہی پرواہ کرتا ہو جتنا کہ ایک قصائی اپنی بکری کو ذبح کرتے وقت اُس کے مزاحمانہ ہل چل کی اور جس سوسائٹی کے قواعد اتنے سخت، تنگ، گندے بھیانک اور برباد کُن ہوں۔ اُس ملک کا خود اختیاری کے لئے چلّانا ٹھیک ویسا ہی ہے جیسا کہ چھوٹے بچوں کا چاند کے لئے مچلنا ایسے ملک و سوسائٹی کی حالت پر جتنے آنسو بہائے جاویں وہ تھوڑے ہیں۔ ایسی سوسائٹی نہ تو ترقی کی چوٹیوں پر ہی پہنچ سکتی ہے اور نہ دُنیا کے لئے فائدہ بخش ہی ثابت ہو سکتی ہے اگر وہ اپنی حالت نہ سُدھارے تو زمین پر اپنا فضول بوجھ ڈالنے کے بجائے اُس کا برباد ہو جانا ہی کہیں اچھا ہے۔ ہندوستانی سوسائٹی کی بھی آج یہی حالت ہے۔ مرقومہ صدر کی سبھی بُرائیاں اُس میں بھری ہوئی ہیں۔

جب یہ بات ثابت ہو گئی کہ سوسائٹی میں تنظیم کے بغیر کوئی بھی ملک ترقی نہیں کر سکتا تو قدرتی طور پر یہ سوال پیدا ہوتا ہے کہ آخر اس کام کی ابتدا کہاں سے اور کیسے ہو گی؟ اس کا جواب بھی صاف ہے۔ پہلے تعلیم نسواں کی جڑ سینچی جائے اور عورتوں میں تنظیم کی اور نہ سوسائٹی کی بدرواجیوں کا مٹانا اور اُس کی تنظیم مشکل ہی نہیں بلکہ ناممکن ہو گی۔ کسی قوم کو کمزور بنانے کے اسباب اُس قوم کی عورتوں میں تعلیم کا نہ ہونا اور اُن کی رُوحانی و دماغی ترقی کی کمی ہیں۔ عورت ماں ہے اور اُس کے بچے ہی ملک کے نجات دہندہ ہیں جب تک وے بچے اپنی ماتاؤں سے تربیت پانے سے محروم رکھے جاوینگے تب تک اپنی ذمہ داری کو وے کیسے سمجھ سکتے ہیں۔ یہی سبب ہے جو اب تک ہمارا ملک خود اختیاری کی دلفریب فضا سے کوسوں دُور ہے۔ ایک صاحب علم کا قول ہے کہ "دو باتوں

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

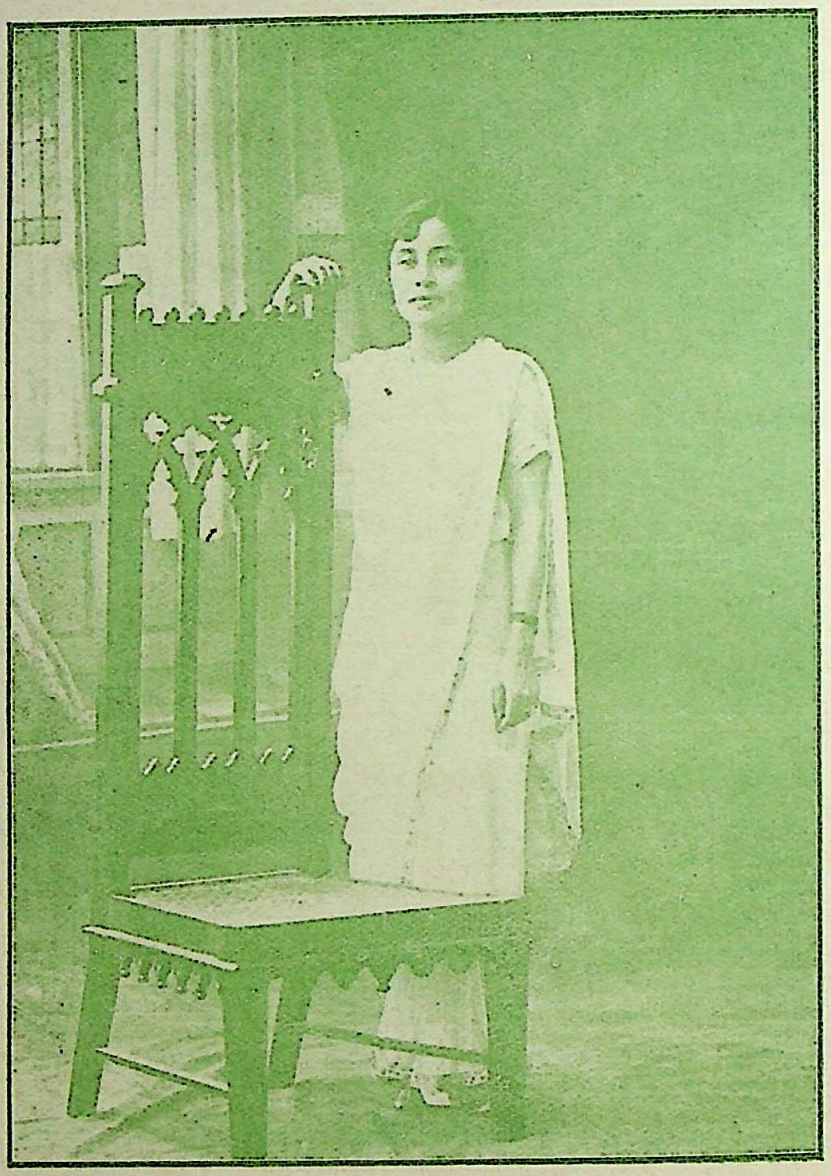

شریمتي رانی للت کماري صاحبہ، منڈي

آپ پٹنہ کي تیسري آل انڈیا ویمن کانفرنس کي پریسیڈینٹ تھیں - آپ
عورتوں کی بہبودي کے لئے بہت کچھہ کام کر رھي ھیں -

FINE ART PRINTING COTTAGE ALLAHABAD

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

شریمتي کاویري بائي - بي - اے - ایل - ٹي
آپ موسلي پٹم کے لیڈي ٹریننگ اسکول کي هیڈ مسٹریس
هیں اور حال هي میں ڈسٹرکٹ سیکنڈري
ایجوکیشن بورڈ کي میمبر چني گئي هیں -

شریمتي شیلاوتي
آپ ریاست حیدرآباد کے شریمان راجہ دین دیال مصور جنگ
کے لڑکے بابو حکم چند کی بیوی هیں - آپہ عورتوں میں
تعلیم پھیلانے کی بہت کوشش کر رهی هیں -

شریمتي باسنتي دیوي
آپ لفٹیننٹ کرنل ڈي - جي - راے - آئي - ایم - ایس
کي بیوي هیں اور حال هي میں منگلور میں
مہلا سبھا کي پریسیڈینٹ چنی گئی هیں -

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

کا ایک دوسرے سے گہرا تعلق ہے۔ عورتوں کی تربیت (جسمانی دماغی اور روحانی ترقی) اور اُس قوم کی بڑائی۔ جب ہند میں قابل ماتائیں تھیں تب وے دانا اور دلیر اولاد پیدا کرتی تھیں لیکن اب ناسمجھ اور کمسن ماتائیں نامرد اور کپوت بیٹے پیدا کرتی ہیں۔ نقایص کو دُرست کرکے اچھا پھل حاصل کرنا اب بھی ہمارے ہاتھ میں ہے۔

اِس قول میں کتنی سچائی ہے۔ ناظرین خود اندازہ کرسکتے ہیں۔ ماں کا پیٹ وہ تالاب ہے جس سے کنول (کمل) نکل سکتے ہیں۔ ماں ہی وہ شجر ہے جس پر رنگ برنگ کے پھول کھلتے ہیں۔ ماں ہی وہ کان ہے جس سے انمول جواہرات نکلتے ہیں۔ ماں ہی ہاتھی کا وہ مستک ہے جہاں سے گج مکتا نکلتا ہے۔ ماں سے ہی وہ کیڑا پیدا ہوتا ہے جو ریشم اُپجاتا ہے۔ ماں کا پیٹ ہی وہ آسمان ہے جہاں سے چاند نمایاں ہوتا ہے۔ ماں کا پیٹ ہی کوہستان کی وہ تاریک وادی ہے جہاں سے حیات بخش بوٹی نکلتی ہے۔ ماں کا پیٹ ہی وہ گھنا جنگل ہے جہاں کہ آہوئے مشکبار ناز سے پلتے ہیں۔

کہنے کا مطلب یہ ہے کہ ملک کی تمناؤں کی نظر سے یا سوسائٹی کی بہبودی کے خیال سے دونوں ہی صورتوں میں قوم کی تنظیم کا سوال سب سے پہلے پیدا ہوتا ہے ایسی حالت میں ہندوستانیوں کا کان میں تیل ڈالے ہوئے سُست اور لاپرواہ بیٹھے رہنا ہندوستان کی بدبختی نہیں تو اور کیا ہے۔ اگر ہم اس ترقی کے دَور میں بھی بیدار نہ ہوئے تو یقینی ہمارا نام دُنیا کے پردے سے مٹ جائیگا۔ کیا ہمارے بھائی اور بہنیں تن من دھن سے اس پیچیدہ سوال کی طرف متوجہ ہونگے۔

کلامِ آرزو

(بابو رام ناما پرشاد صاحب ایڈوکیٹ۔ آرزو، الہ آبادی)

یاد آجاتی ہے اُن کی یاد کرلیتا ہوں میں
اس دلِ ناشاد کو یوں شاد کرلیتا ہوں میں

کیا زمیں کا ذکر ہے یہ چرخ بھی کھاتا ہے چرخ
ٹوٹے دل سے جب کبھی فریاد کرلیتا ہوں میں

اک زمانہ ہوگیا ہے دل مجھے کھوئے ہوئے
پھر بھی کس حسرت سے اُسکو یاد کرلیتا ہوں میں

ہمنشیں اب قصۂ عہدِ جوانی کچھ نہ پوچھ
کانپ اُٹھتا ہے جگر جب یاد کرلیتا ہوں میں

شاعری کی آرزو اے آرزو مجھکو نہیں
اس بہانے سے دل اپنا شاد کرلیتا ہوں میں

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

عورت کا آنسو

(لالہ نانک چند صاحب ناز، اڈیٹر روزانہ پرتاپ)

میں نے رات کی تاریکی سے کہا مگر اُس نے بھی مجھے اپنے دامن میں نہ چھپایا۔ گھر کی دیواروں کو اپنی آہ وزاری سے لرزا دیا لیکن اُنھوں نے میری بات نہ سُنی۔ ہوا کے ذروں کو اپنا دُکھڑا سُنایا اس خیال سے کہ وہ ہمارے مکان میں باہر سے آئے ہیں یہاں کے رہنے والوں سے مختلف ہونگے لیکن میرے لئے ہمدردی کا ایک لفظ اُنھوں نے بھی زبان سے نہ نکالا۔ میں مایوس ہوگئی۔ فیصلہ کرلیا کہ اب زندگی کو موت کے حوالے کر ہی دوں لیکن موت سے لپٹ جانا بزدل کا کام نہیں۔ اگر مجھ میں یہ ہمت ہوتی تو پھر رونا کاہے کا تھا۔ نہ ساس گالیاں دیتی نہ دیورانیاں جٹھانیاں حقارت کی نگاہ سے دیکھتیں وہ ایک کہتیں میں سو سُناتی۔ موت کی آغوش میں سونے کے لئے خود بخود چلے جانا اُن لوگوں کا کام ہے جن آدمیوں میں دل مضبوط ہوتے ہیں۔ مجھے ایشور نے اس نعمت غیر مترقبہ سے محروم رکھا ہے۔ نہ معلوم کیوں لوگ کہتے ہیں۔ پچھلے جنموں کا پھل ملا کرتا ہے ممکن ہے میری یہ مصیبت بھی اسی لئے ہو۔ شاید نہ ہو۔ لیکن اس سے اتنا تو ہو جاتا ہے کہ دل کو ڈھارس مل جاتی ہے۔ انسان سمجھ لیتا ہے۔ میں نے جو کیا اس کا پھل بھگت رہا ہوں۔

آہ اس وقت وہ ہوتے تو میری حالت آنکھوں دیکھتے لیکن وہ کون؟ کیا وہ کبھی مجھے تو یاد نہیں۔ لوگ کہتے ہیں تھے۔ ہوں ہاں۔ مگر میں لوگوں کی باتوں پر اعتبار کرلوں کیا دنیا میں دھوکا نہیں کیا جاتا رہا۔ ممکن ہے بھی دھوکا ہو رہا ہو۔ جب میں نے اُنھیں دیکھا نہیں تو میں کیسے یقین کرلوں کہ وہ بھی کوئی میں اس وقت اُن کے ہونے سے انکار کرد تو کوئی میرا کیا کرسکتا ہے۔ میں نوجوان ہوں کی ابھی سولہ بہاریں ہی دیکھی ہیں۔ مجھ میں قوت ہے زور ہے۔ طاقت ہے۔ اگر چاہوں تو حوصلہ پیدا ہوسکتا ہے۔ بوڑھی ساس کو ایک دھکا دو تو گھنٹوں ہوش میں نہ آئے۔ دیورانی اور جٹھ کو ایک چپت لگاؤں تو رُخ دوسری طرف پھیر دوں لیکن وہ مجھے گھر سے نکال دیں کرونگی، کہاں جاؤنگی۔

ساری برادری میں کوئی ہے جو میری کریگا، شاید کردے لیکن تا بہ کے دن کھلادیگا دو دن کھلادیگا۔ ساری عمر

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

کھلا سکتا ہے۔ ان دنوں تو میں نوجوان ہوں۔ ایشور نے شکل و صورت بھی اچھی دی ہے۔ ہر شخص جو بھی میری مدد کریگا کیا اس کی مدد خود غرضی سے پاک ہوگی۔ کیا اس سوسائٹی میں ایسے مہاتما لوگ ہیں؟ نظر تو کوئی نہیں آتا ہوگا مگر۔ . . . . میں موت سے ڈرتی تھی اس لئے ایک کر بیٹھ گئی۔

— ۲ —

"روتی کیوں ہے؟"

"کون؟"

"یہ بھیڑ کی۔ ڈاین"

"باپ مرگیا ہوگا"

تم بھی عجب آدمی ہو۔ یہاں اُسے رکھنے سے کیا فائدہ، نقصان ہی نقصان ہے"

سچ کہتی ہے۔ جب گھر میں ہر وقت کا رونا ہے وہ ترک سماں ہے"

بڈھی نے جھاڑو اُٹھایا۔ سورکھشا کے سر پر دو تین دفعہ مار گئی۔

کندن نے کہا:—

"بے شرم کو جتنا مارو گی اُتنا بگڑیگی

"میں کیا کروں تنگ آگئی ہوں۔

تو اس کو ٹھڑی سے نکال کیوں نہیں دیتیں"

بڈھی قریب پڑی چارپائی پر لیٹ گئی۔ اس کا دم پھول گیا تھا۔ ایک منٹ کے بعد بولی:—

"نکال تو دوں مگر بدنامی سے ڈرتی ہوں"

کندن بڑی جاہل عورت تھی۔ وہ جانتی تھی کہ گھر میں اس کی قدر بہت ہوتی ہے۔ شادی کے ایک سال بعد اُس نے ایک لڑکا جنا تھا۔ اسے اس بات کا گھمنڈ بہت تھا۔ ساس سے کہنے لگی:—

"تم اپنے گھر کو تباہ کر رہی ہو، ایسی عورت کو گھر میں رکھنا سبون کا گھاٹا ہے"

"مگر بدنامی سے ڈرتی ہوں"

"بدنامی کس کی ہے، ہم اس پر بدچلنی کا الزام لگا کر نکال دیں تو ہمیں کون بُرا کہے گا، جو بھی سُنے گا کہ اس نے بدمعاشی کی، اس کے چہرے پر تھوکے گا، تم جانتی ہو ہماری برادری کتنی سخت ہے"

بڈھی سب کچھ سُن رہی تھی لیکن جواب نہ دیا، وہ خاموش چارپائی پر بیٹھی رہی۔

کندن جتنا وقت خاموش رہی اس کا دماغ سورکھشا کے خلاف نئے نئے الزام گھڑنے میں مصروف رہا، چند منٹ کے بعد اُس نے کہا:—

"ماں، تمھیں یاد نہیں، اگلے روز پنڈت جی کیا کہہ رہے تھے"

"کب؟ مجھے تو . . . . . .

کندن کشیدہ کاڑھ رہی تھی، سر اوپر اُٹھا کر کہا:—

"جس گھر میں رانڈ عورت ہو وہاں ہمیشہ نحوست برستی رہتی ہے"

بڈھی کافی آرام کر چکی تھی، چارپائی پر سے اُٹھ بیٹھی، بولی:—

"ہاں سب کچھ ٹھیک ہے مگر اسے گھر سے نکالنے

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

کو جی نہیں چاہتا، خیال نام و ننگ سدِّ راہ ہے۔"

"اگر نہیں چاہتا تو میں نکل جاؤنگی، انہیں اس گھر میں نہیں آنے دونگی۔"

کندن آگ کے شعلوں کی طرح لپک رہی تھی۔

"مجھے تو خواب میں دیوی بھگوتی نے کہدیا ہے۔"

"تمہارا خاوند اگر اس گھر میں رہا جہاں سورکھشا رہی تو وہ جلد ہی مر جائیگا، مجھ سے رنڈیپا نہیں سہا جاتا۔"

سورکھشا خاموش سب کچھ سُن رہی تھی۔ اسکی چھاتی پر دہاپڑ بیلے جا رہے تھے لیکن وہ خاموش تھی۔

—— ۳ ——

میں برتن مانجھ رہی تھی، گرم آنسوؤں کا ایک قطرہ میرے ہاتھ پر گرا، میں نے محسوس کیا، کوئی خدائی طاقت مجھے اُٹھا رہی ہے، میری آتما میں ایک حرکت سی آئی، اس حرکت نے میری ہمت، ارادے، حوصلے میں برقی رَو دوڑا دی، میں اپنے آنسوؤں کو گندے جوہر کے اُس قطرہ کی طرح بے مایہ سمجھتی تھی جسے کسی چڑیا کی چونچ اُٹھاتی ہے اور سورج کی گرمی سے تپی ہوئی ریت پر ڈال جاتی ہے عورت کے آنسو، ہاں کسی عورت کے آنسو جو دُنیا کی تمام رحمتوں سے محروم ہو چکی ہو، واقعی کوئی حقیقت نہیں رکھتے، مجھے معلوم نہ تھا کہ اُن میں بھی گرمی ہوتی ہے، اگر ہوتی تو آج سوسائٹی کے اس نظام کو جس کے ماتحت عورت غلام سے زیادہ کوئی حیثیت نہیں رکھتی یہ آنسو جلا کر راکھ کو نہ کر چکے ہوتے؟

لیکن اس قطرۂ اشک سے جو برتن مانجھتے وقت میری آنکھوں سے خاک میں لتھڑے ہوئے [illegible] پر گرا مجھے احساس ہوا کہ ان میں گرمی ہوتی ہے [illegible] محسوس کرنے والا دل چاہیئے اور اس کو استعمال کر[illegible] کے لئے ہمت و حوصلہ۔

اس آنسو میں میں نے بغور دیکھا، حیران رہ[illegible] ایک دنیا اس کے اندر بند تھی، ہزاروں لاکھوں [illegible] لڑکیاں اس آگ میں جھلس رہی تھیں، خوفنا[illegible] شعلوں کی لپیٹ سے نکلنے کو جدّوجہد کرتیں [illegible] لمبے بالوں والے پنڈت اور موٹی موٹی توندوں [illegible] برہمن انھیں لمبے لمبے سانسوں سے پھر اندر آگ میں ڈھکیلنے کے لئے موجود رہتے، ان کی آہ و [illegible] سے آسمان کے فرشتے بھی تڑپ اُٹھتے۔

مجھ سے یہ دردناک، خوفناک منظر نہ دیکھا [illegible] دوسرے ہاتھ کے ساتھ آنسو کے اس قطرہ کو جو [illegible] سامنے آئینہ کی صورت تھا مٹا دیا لیکن آنکھ [illegible] دوسرا گرا جس نے پہلے قطرہ کی جگہ لے لی۔ [illegible] اُس کو بھی مٹا دیا۔ تیسرا گرا میں نے اُس کے [illegible] بھی وہی سلوک کیا، دُکھی لڑکیوں کی جگر پا[illegible] آہیں اور نالے سُننے کی تاب ہوتی تو میں انھیں [illegible] مٹاتی۔ یہ بڑی قیمتی چیزیں تھیں۔ عورت کا [illegible] واقعی ایک آئینہ ہے جس میں ہر انسان سب [illegible] دیکھ سکتا ہے۔

برتن صاف کرنے کے بعد میں نے چوکا [illegible] کنوئیں سے پانی بھرا، فرش صاف کیا، دیو[illegible] جیٹھانی کے بچوں کے کپڑے گندے تھے اُن کو [illegible]

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

مایوسي کا عالم

ناأمیدي بھي دیکھ لے آکر ✱ دل اُمیدوار کا عالم

FINE ART PRINTING COTTAGE ALLAHABAD

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

نے اُتار کے پھینک دئے تھے تاکہ میں اُنھیں دھو ڈالو۔ اُنھیں دھویا، چھوٹے بچے نے کمرے کے اندر دو تین جگہ پاخانہ کر دیا تھا اسے اپنے ہاتھ سے اُٹھایا۔ غرض میں نے وہ تمام فرائض انجام دئے جو کسی نوکرانی کو دینے پڑتے ہیں، ابھی دو منٹ کمر سیدھی نہ کی تھی کہ آواز آئی

"کہاں گئی وہ موئی"۔

"رانڈ کام یا ٹہل نہیں کرتی"۔

میں نے سنا۔ اس قسم کی گالیاں اس گھر میں میرے بغیر اور کسے مل سکتی تھیں، میں چور ہو چکی تھی، اُٹھنے کو جی نہ چاہتا تھا لیکن اُٹھے بغیر چارہ بھی نہ تھا۔ جوں توں کر کے اُٹھی، باہر آئی تو دونوں ناگنی کی طرح لپک پڑیں "ہر وقت بیٹھی رہتی ہو، کیا کمر ٹوٹی تھوڑی ہے"۔ میں نے جواب نہ دیا، دیتی بھی کیا، خاموش ہو رہی، صرف اتنا کہا۔ "کیا کام ہے؟"۔

ساس تو گالیاں دیتی اور بڑبڑاتی ہوئی اندر کمرے میں چلی گئی، جٹھانی نے کوئی دس پندرہ میلے کچیلے کپڑے میرے سامنے پھینک دے۔ "انھیں دھو ڈالو"۔

ابھی مجھ میں موت سے لپٹنے کا ساہس پیدا نہیں ہوا تھا اس لئے میں انکار کس طرح کرتی، پانی کے کنارے بیٹھ کر کپڑے دھونے شروع کر دئے، ادھر اپنی مصیبتوں کو گن رہی تھی، اُدھر آنکھوں سے آنسوؤں کی جھڑی بندھی تھی، ایک ایک آنسو دریا کی لہروں سے ہمکنار ہوتا تو مجھے ایسا سُنائی دیتا گویا مجھ جیسی لاکھوں نوجوان لڑکیاں دکھوں میں تڑپ رہی ہیں۔

مجھے جب کبھی کام سے فرصت ملتی تو آسمان سے دریافت کرتی "میری مصیبتیں کبھی ختم بھی ہونگی۔ میں سچ کہتی ہوں اس نے مجھے کبھی جواب نہیں دیا۔

—— ۴ ——

میں نے ایک دن ساس سے کہا:۔

"تھوڑا صابن دیدو کپڑوں کو دھولوں، ان میں سے سخت بُو آتی ہے"۔

یہ الفاظ اُس کے کان میں کیا پڑے اُسے آگ لگ گئی، اُس نے شکل ایسی بنائی گویا مجھے کھایا چاہتی ہے، غصہ میں کہنے لگی:۔

"ذری تمھیں شرم نہیں آتی، کپڑے دھوتی ہو میرے لڑکے کے مرنے کا تمھیں اتنا بھی دُکھ نہیں"۔

میں نے کہا:۔

"کپڑے دھونے سے اس کے مرنے کا کیا تعلق؟"۔

اُس کا غصہ زیادہ تیز ہو گیا، میرے نزدیک آکر بولی:۔

"جن کے پتی مر جاتے ہیں وہ اور اپنے کپڑے دھوئیں، توبہ توبہ، یہ بات تو ہم نے آج سے پہلے کبھی نہ سُنی تھی، بیوہ عورت کو تو سفید کپڑے چھونا بھی پاپ ہے"۔

بڈھی کی اُونچی اُونچی باتیں سُنکر کندن بھی وہیں آگئی، وہ اس سے کم نہ تھی بولی:۔ "مگر یہ تو بال بھی سنوارتی رہتی ہے، ہونٹوں پر اندرسہ بھی کئی بار ملا ہے"۔ "یہ تو سمجھتی نہیں کہ اس کی دُنیا ختم ہو چکی ہے"۔ "دال میں کچھ کالا ضرور ہے"۔ اس کو تو روٹی بھی وہ کھانا چاہئے جو جھوٹے

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

برتنوں میں سب لوگوں کے سامنے سے
بچ جایا کرے۔

میں کھڑی نہ رہ سکی، دیوار کے سہارے
بیٹھ گئی، اتنا روئی، اتنا روئی کہ میری آنکھوں
میں آنسوؤں کا ایک قطرہ باقی نہ رہا، جسم میں
جس چیز سے آنسو بنتے ہیں وہ بھی ختم ہو گئی
لیکن وہ میری مصیبتوں کا خاتمہ نہ ہوا۔ ان میں
سے کسی نے مجھے چپ نہ کرایا، دونوں چارپائی
پر آرام سے بیٹھی رہیں، بہت دیر بعد کندن نے
کہا تو یہ کہ اُٹھو لڑکے کا پاخانہ اُٹھا کر باہر پھینک آؤ۔

—— ۵ ——

کلکتہ میں گنگا کے ریلوے پُل پر سے گذر رہی
تھی، کمار نے اس کا پلہ پکڑ لیا

"ٹھہرو، ٹھہرو، کیوں . . . . . ."
"چھوڑو، چھوڑو، مجھے . . . . . ."
"نہیں، نہیں، تم . . . . . ."
"بس، بس، مجھے . . . . . ."
"نہیں، نہیں، صبر کرو . . . . . ."

سورکھشا نے بہت کوشش کی مگر کمار نے
اس کی قمیص کا پچھلا حصہ اس کڑی گرفت کے ساتھ
پکڑے رکھا کہ ریل گاڑی پل پر سے دریا کی دوسری
طرف چلی گئی۔ کمار نے اپنی ستری سے کہا:۔

"اب اسے اپنے پاس بٹھائیے۔ کوئی مصیبت
کی ماری ہے۔"

"بہن جی بیٹھ جاؤ۔"

سورکھشا دروازے کے قریب جہاں کھڑی تھی وہیں
بیٹھ گئی، کمار نے کہا:۔

"اگر میں نہ ہوتا تو یہ لڑکی اس وقت دریا کی گہرائی
میں غرق ہو چکی ہوتی۔" اس کی بیوی نے
جواب دیا:۔

ایشور کا دھنواد ہے کہ آپ اس وقت ہمارے
کمرے میں تھے ورنہ . . . . . ." کمار نے کہا:

"ہاں اتفاق کی بات ہے، اگر گاڑی جلد نہ چلتی
تو مجھے یہاں کب ہونا تھا، میں نے ایک عزیز
بچائی۔ سٹیشن آیا، گاڑی ٹھہری، کمار اتر کر
کمرے میں چلا گیا، موہنی نے سورکھشا کو اپنے
پاس بٹھا لیا، موہنی پڑھی لکھی لڑکی تھی، ادب
کی باتیں کر کے سورکھشا کو اپنا گرویدہ بنا لیا۔ اس
نے بھی اپنی زندگی میں پہلی بار محسوس کیا کہ
دل رکھنے والے لوگ اس دنیا میں ابھی موجود
ہیں، موہنی کے پوچھنے پر اُس نے اپنا حال
مختصراً سُنایا:۔

بارش برس رہی تھی، بجلی چمک رہی تھی
کو ہاتھ سوجھائی نہ دیتا تھا، آدھی رات کے
میری ساس نے مجھے گھر سے نکال دیا، ایک
ساتھ دیا جو مجھے گاڑی میں بٹھا گیا، مجھے
نہ تھا کہاں جاؤں گنگا میں ڈوب کر مر جانا ہی
سمجھا، موت سے لپٹ جانے کی ہمت اب مجھ
پیدا ہو چکی ہے، اب میں ڈرتی نہیں، کاش
آج مر جانے دیا ہوتا۔" موہنی کے آنسو نکل

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

اس میں ہمدردی تھی، اس لئے سورکھشا کو گلے سے لگالیا، کمار نے جب ساری داستان مصیبت سُنی تو اس کی آنکھوں سے دریا جاری ہوگیا۔

سورکھشا کا دُکھڑا سن کر اس کا کلیجہ پھٹا جاتا تھا، اُسے اگر کوئی تسلی تھی تو یہ کہ ایک ابلا کو اُس نے بچالیا، سورکھشا اس وقت لاہور میں موجود ہے پروفیسر کنور سین سے شادی کرکے وہ اپنے آپ کو ایک نئی دُنیا میں پاتی ہے، اس کی گود میں ایک لال بھی ہے جو اس کی تمام اُمیدوں کا مرکز رام چندر نام۔

خاص

تتلی

جناب نند کشور صاحب آنگر۔ بی۔ اے۔ فیروزپوری

آجا مری پیاری تتلی!، میں تیرے بلہاری تتلی!
میری تتلی رنگ رنگیلی
گوری کالی پیلی نیلی
آنکھ رسیلی ہے شرمیلی
چال انوکھی چھیل چھبیلی
پیاری پیاری بھولی بھالی!، مست جوانی ہے متوالی
اک پل بھی آرام نہیں ہے
صبح نہیں ہے شام نہیں ہے
ڈالی ڈالی گھوم رہی ہے، پھولوں کے مکھ چوم رہی ہے
مست ہوا اُن پر جھوم رہی ہے
تیری مہمانیاری تتلی!، جاؤں تجھ پر واری تتلی
میں تیرے بلہاری تتلی، آجا مری پیاری تتلی
تو ہے پھولوں کی متوالی
مست ہے تجھ پر پھول کی ڈالی
آہا! تیری شان نرالی
ہر اک دل کو موہنے والی
آ مجکو اک گیت سُنا دے، پیت کی دلمیں آگ لگا دے
طوطی شاماں ہریل گائیں
شور مچاتی ہیں مینائیں
آم پہ کوئل کوک لگائے، سرو پہ بیٹھی قمری گائے
بلبل گل کو راگ سُنائے
اب ہے تیری باری تتلی!، تو کیوں چپ ہے گاری تتلی!
آجا مری پیاری تتلی

خاص

جب سوز جگر کہنے بیٹھا کوئی دیوانہ — اک اُف کی صدا آئی اور ختم تھا افسانہ
فانوس کے پردے میں لو شمع کی تھرّائی — اللہ رے انداز جانسوزیِ پروانہ (بابو شیام موہن صاحب)

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

وہ جو بے خبر ہے اور اپنی بے خبری سے بھی بیخبر ہے وہ بیوقوف ہے۔ اُس سے بچو۔

وہ جو بے خبر ہے مگر اپنی بے خبری سے باخبر ہے۔ وہ سیدھا ہے۔ اسکو تعلیم دو۔

وہ جو باخبر ہے مگر اپنی واقفیت سے بے خبر ہے۔ وہ سو رہا ہے۔ اس کو جگا دو۔

وہ جو باخبر ہے اور اس سے بھی باخبر ہے کہ وہ باخبر ہے۔ وہ دانا ہے اُس کی صحبت کرو۔

مترجمہ منشی کیلاش بہاری لال

حضرت ابوہریرہؓ سے روایت ہے کہ ایک شخص نے عرض کیا "یا رسول اللہ فلاں عورت کی نسبت لوگ کہتے ہیں کہ وہ کثرت سے نماز پڑھتی ہے، بہت روزے رکھتی ہے اور بہت صدقہ دیتی ہے مگر اپنے ہمسایہ کو زبان سے تکلیف بھی پہنچاتی ہے"۔ آپ نے فرمایا "وہ دوزخ میں جائیگی"۔ پھر اُس نے عرض کیا "یا رسول اللہ فلاں عورت کی نسبت کہتے ہیں کہ وہ نماز کم پڑھتی ہے، روزے تھوڑے رکھتی ہے اور صدقہ بھی تھوڑا دیتی ہے مگر ہمسایہ کو زبان سے تکلیف نہیں دیتی"۔ آپ نے فرمایا

(احمد۔ بیہقی)

نیکی اور بدی برابر نہیں ہوتی تو آپ نیکی سے بدی کو ٹال دیا کریں۔ پھر یکایک دیکھو کہ آپ میں اور جس شخص میں عداوت تھی وہ ہو جائیگا جیسا کوئی دلی دوست ہوتا ہے۔ یہ بات ان لوگوں کو نصیب ہوتی ہے جو بڑے صابر ہیں۔ اور یہ بات اُسی کو نصیب ہوتی ہے جو بڑا صاحب نصیب ہے۔ (حٰم السجدہ رکوع ۵ پارہ ۲۴)

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

جو لوگ تم سے لڑتے ہیں تم بھی اُن سے خدا کے راستے میں لڑو لیکن زیادتی نہ کرو کیونکہ زیادتی کرنیوالوں کو خدا دوست نہیں رکھتا۔

(البقرہ۔ رکوع ۲۴۔ پارہ ۲)

تم کو واقعی نہ تو کوئی فرض ادا کرنا ہے، نہ کسی شخص کے ذمہ دار ہو، نہ تم کو کوئی قرض ادا کرنا ہے، تم کسی کے پابند نہیں ہو، اپنی ذات کو جملہ تعلقات سوسائٹی نیشن اور شے سے مبرّا سمجھو۔ یہی ویدانت کی رُو سے لفظ ترک کے معنی ہیں۔ سوامی رام تیرتھ

واقعی طور پر جس قدر حالات میں سختی اور ہر چہار طرف کی چپقلش میں زیادتی ہوتی ہے اُتنے ہی ایسے زمانہ میں پیدا شدہ لوگ مضبوط تر ہوتے ہیں۔ اسلئے ظاہری تکالیف و مصائب کو مبارک قدم کہو۔ ویدانت کی زندگی ایسی صورتوں میں بھی بسر کرو اور جبکہ تم ایسی زندگی بسر کروگے تو کیا دیکھوگے کہ حالات و زمانہ تمھارے مطیع و فرمانبردار ہو جائینگے وہ سب تمھارے ماتحت اور تم اُن کے افسر بن جاؤ گے۔ (سوامی دیویکانند)

حمد

(افضل الشعرا بابو تارا ین پرشاد صاحب ورما مہر گوالیاری)

یہاں تُو، وہاں تُو، نہاں تُو، عیاں تُو
جگہ کونسی ہے نہیں ہے جہاں تُو

نہیں دیکھتیں تجکو آنکھیں ہی، ورنہ
جہاں ہے نہاں تُو، وہاں ہے عیاں تُو

پتہ مجکو ملتا ہے منزل بہ منزل
نہیں جادۂ عشق میں بے نشاں تُو

ترا نور ہوں، پھر بھی کیا تجھ سے نسبت
کہاں تُو، کہاں میں، کہاں میں، کہاں تُو

جُدا ہو گیا ورنہ کیسی جُدائی
جہاں تُو، وہاں میں، جہاں میں، وہاں تُو

تغافل سے کچھ اور مطلب نہیں ہے
فقط کر رہا ہے مرا امتحاں تُو

ترے عشق کا لطف ملتا کہاں پھر
جو مجکو عدم سے نہ لاتا یہاں تُو

نہ طالب ہی ہوتا نہ مطلوب ہوتا
اگر اپنے جلوہ کو رکھتا نہاں تُو

کھلائے ہوئے ہیں یہ سب پھول تیرے
جہاں باغ ہے، اور ہے باغباں تُو

یہی آرزو ہے نہیں اور حسرت
رہے مہر پر ہر گھڑی مہرباں تُو

خاص

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

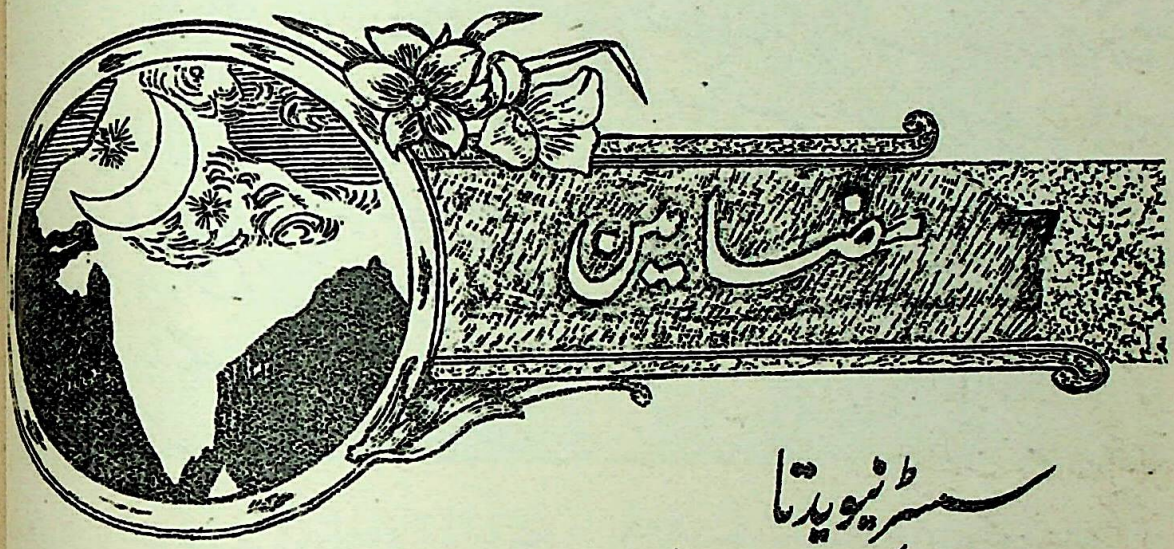

سسٹر نیویدتا

(جناب سید محمد حفیظ صاحب لکچرار الہ آباد یونیورسٹی)

کسی پیدائشی ہندوستانی کا ایثار نفس، اُس کی وطن پرستی اور خدمت ملک، اس قدر قابل تحسین و آفریں نہیں جتنی ایک غیر ہندوستانی شخص کی جو مادر ہند کی خدمت کے لئے اپنے اصلی وطن، عزیز و اقارب، دوست و احباب، راحت و آسایش کو ترک کر کے غیر ملک کو اپنا وطن بنائے۔ ایسے بے نفس اور خدا ترس شخص کی تعریف جس قدر کی جائے کم ہے۔

سسٹر نیویدتا انھیں چند برگزیدہ نفوس میں میں ہیں جنھوں نے اپنے آبائی وطن کو خیر باد کہکر ہندوستان میں بود و باش اختیار کی اور جس کی خدمت میں دل و جان سے مصروف رہیں۔

۱۳ اکتوبر ۱۹۱۱ء کو سسٹر نیویدتا بمقام دارجلنگ جاں بحق ہوئیں۔ ان کی وفات حسرت آیات سے ہندوستان کی معاشری، تعلیمی اور مذہبی ترقی کو صدمۂ عظیم پہنچا۔ سسٹر کی زندگی کے کارنامے اور خدمات اس قدر زیادہ ہیں کہ ایک مختصر مضمون میں وہ سب قلمبند نہیں کئے جا سکتے۔ لہذا ہم چند واقعات اور حالات کے اظہار پر اکتفا کرتے ہیں۔

شکاگو کی عالمگیر مذہبی کانفرنس اور سفر امریکہ سے فارغ ہو کر جب سوامی ویویکانند صاحب لندن تشریف لے گئے تو اہل مشرق خصوصاً ہندوستان کے حال زار کا ذکر کرتے ہوئے وہاں کی پبلک سے خدمت ہند کی اپیل کی۔ مس مارگریٹ ای نوبل (سسٹر نیویدتا) نے بڑی خوشی سے اپنی زندگی خدمات سوامی جی کے نذر کیں اور اُن کے ہمراہ ہندوستان آئیں۔

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

سوامی دیو یکانند ہندو فلسفہ کے ماہر اور عارف کامل تھے۔ آپ کی خداداد سحر بیانی اور پُرمعنی تقریر کا ایسا معجز نما اثر ہوا کہ مس نوبل صاحبہ نے نہ صرف یہ کہ آپ کی شاگردی کا شرف حاصل کیا بلکہ یوں کہنا چاہئے کہ حلقہ بگوش ہوگئیں۔

اس زمانہ سے ہندو مذہب اور ہندو قوم کی محبت اُن کے دل میں اس درجہ بڑھی کہ اپنا طرز معاشرت بلکہ نام بھی تبدیل کر دیا۔

سسٹر کی مرتاضانہ زندگی کو دیکھکر کوئی یہ نہیں کہہ سکتا تھا کہ وہ سچی ہندو نہیں وہ ہندوؤں کی معاشری، سیاسی اور مذہبی اصلاح کی حمایت بذریعۂ تحریر و تقریر آخر وقت تک کرتی رہیں۔ اپنی وفات سے ۱۳ برس قبل آپ مسز جے۔ سی۔ بوس صاحبہ سے ملیں اور ہندی بہنوں کی تعلیمی ضرورت کو محسوس کرکے اُن کی خدمات کا مصمم ارادہ ظاہر کیا۔ مسز بوس کا بیان ہے کہ میں نے حقیقی کامیابی سے نا اُمیدی ظاہر کی اور ہندوؤں کی راسخ الاعتقادی، جاہلانہ ذاتی تفریق اور تنگ خیالی کی بنا پر یہ عرض کیا کہ آپ کو غیر ملکی ہونے کی وجہ سے ہر قدم پر ناقابل برداشت دقت، نا اُمیدی اور جہالت کا سامنا کرنا پڑیگا۔ اس لئے بہتر ہے کہ آپ اپنے اس ارادہ سے باز رہیں مگر اس ثابت قدم انسان نے میری ایک نہ سُنی اور وہ اپنے عزم بالجزم پر قائم رہیں۔

کچھ عرصے بعد اُنھوں نے مجھے ایک چھوٹے سے مکان میں جو یو پارہ لین میں واقع ہے مدعو کیا میں ان کی کارگزاریوں کو دیکھکر حیرت میں رہ گئی۔

جس محکمہ میں سسٹر نے مکان کرایہ پر لیا تھا اس میں کٹر ہندو آباد تھے۔ ابتدا میں ان کو کوئی خدمتگار بھی نہیں ملا وہ اکثر محض فواکہ پر گذارا کرتی تھیں۔ یا کبھی کبھی خود کچھ پکا لیا کرتی تھیں۔ اس مکان میں اُنھوں نے ایک کنڈن گارٹن اسکول جاری کیا تھا جس میں نہ صرف نوعمر بچوں بلکہ سن رسیدہ ماؤں کو بھی شفقت اور مادرانہ محبت سے تعلیم و تربیت دیا کرتی تھیں۔ ان کی دینداری، انکسار اور بے نفسی کو دیکھکر وہ ہندو مستورات جو پہلے ملنے جلنے سے ہچکچاتی تھیں یا اپنے بچوں کو مدرسہ میں بھیجنے سے پرہیز کرتی تھیں اب بلا تامل آنے جانے لگیں۔ اس مدرسے سے ہندو بچوں اور عورتوں کو جس قدر فائدہ پہنچا وہ محتاج بیان نہیں۔ ہر ایک تعلیم یافتہ بنگالی سسٹر کی بے نظیر خدمات کا معترف ہے۔

فیض رسانی کا دائرہ صرف اس درسگاہ تک محدود نہ تھا بلکہ وہ ہمیشہ محلہ والوں کو صفائی اور حفظان صحت کی تعلیم و ترغیب دیا کرتی تھیں۔ اکثر ایسا دیکھا گیا کہ اُنھوں نے ناپاک زمین اور گندی نالیوں کو خود اپنے ہاتھ سے صاف کیا اور محلہ والوں کو صفائی کا عملی نمونہ دکھایا۔ پہلے پہل جب کلکتہ میں طاعون پھیلا تو سارا شہر بد حواس اور خائف ہوکر گرد و نواح میں بھاگنے لگا۔ نفسی نفسی کی صدا ہر طرف بلند تھی۔ ایسی حالت میں مفلسوں اور محتاجوں کی خبر گیری کون کرتا مگر آفریں ہے سسٹر کی ذات قدسی صفات

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

پر کہ صبر و استقلال کو ہاتھ سے نہ جانے دیا۔ نہایت سرگرمی اور مادرانہ توجہ سے غرباء کی تیمارداری کی اور اپنی جان عزیز کو جوکھم میں ڈالا۔ ایک غریب لڑکا طاعون میں مبتلا ہوا اس کا کوئی پرساں حال نہ تھا۔ سسٹر نے اس کے علاج میں کوئی دقیقہ نہیں اُٹھا رکھا۔ آخر میں اُس بچے نے ان کی گود میں جان دی۔

خدا ترسی اور رحمدلی کا یہ حال تھا کہ خود تکلیف اُٹھاتیں مگر دوسروں کی مدد ضرور کرتیں۔ ایک مرتبہ کا واقعہ ہے کہ اُن کا ملازم پڑا سردی کھا رہا تھا۔ آپ نے اپنا گرم لبادہ اُس کو اُڑھا دیا اور خود رات بھر سردی کھایا کیں

جس زمانہ میں مشرقی بنگال قحط و طغیانی کا شکار ہوا سسٹر نویدتا اس خبر بد کو سُنتے ہی باریسال جا پہنچیں اور قحط زدہ کسانوں کی حتی الوسع امداد کی۔ ان اَن تھک خدمات کا یہ اثر ہوا کہ اُن کی تندرستی خراب ہو گئی آپ کے احباب اور نیز ڈاکٹروں نے بہ اصرار تمام صلاح دی کہ اس تنگ و غیر محفوظ مکان کو ترک کر دیں اور کسی دوسرے مکان میں فروکش ہوں۔ مگر آپ نے بچوں کو چھوڑ کر دوسری جگہ جانا گوارا نہ کیا۔

علمی قابلیت، سچی دینداری اور عالمانہ تقریر و تحریر کا یہ حال تھا کہ یورپ و امریکہ کے بڑے بڑے سربرآوردہ اہل الرائے سسٹر نویدتا کی خداداد لیاقت کے مداح ہیں۔ علاوہ متعدد رسالوں اور مضامین کے آپ نے متعدد کتابیں بھی تصنیف کیں۔ جن میں سے "ویب آف انڈین لائف" نہایت مقبول و مشہور ہے۔ آخری زمانہ حیات میں آپ نے دو اور کتابیں لکھنی شروع کی تھیں اور انھیں میں مشغول تھیں کہ پیغام اجل آپہنچا اور یہ دونوں کتابیں ناتمام رہ گئیں۔

یوں تو ہندوستان کی ہر شے اور ہر فن ان کو ازبس عزیز تھا مگر فن تعمیر اور دستکاری سے خاص دلچسپی تھی۔ سسٹر کا خیال تھا کہ ہندوستان کو یورپ کی کورانہ تقلید نہ کرنا چاہیئے۔ بلکہ وطنی صنعت اور حرفت کو ترقی دینے اور ہندوستان کی حیرت انگیز دستکاریوں کو قائم رکھنے کی کوشش کرنا چاہیئے۔

سسٹر نویدتا کی محبت صرف اہل ہنود تک محدود نہ تھی بلکہ وہ سچی وطن پرست تھیں۔ اس لئے بلا خیال فرقہ و ملت ہر گروہ کے ساتھ ان کو ہمدردی تھی۔ مسلمانوں کے قدیم کارناموں سے از حد دلچسپی تھی۔ ایک دفعہ کا ذکر ہے کہ آپ خدا بخش اورینٹل لائبریری بانکی پور دیکھنے گئیں۔ کسی کتاب یا کتبہ پر شاہجہاں کا اصلی دستخط تھا۔ محافظ کتب خانہ کی اجازت لیکر آپ نے نہایت ادب اور تعظیم سے اس دستخط کو بوسہ دیا اور دیر تک دم بخود کھڑی رہیں۔ راقم الحروف کو بخوبی یاد ہے کہ جس زمانہ میں آپ لکھنؤ میں لکچر دے رہی تھیں تو شہر کی شاہی عمارتوں اور اسلامی بادشاہوں کے کارناموں کی تعریف میں از بس رطب اللساں تھی۔ ان کا خیال تھا کہ ہندو مسلمانوں میں موجودہ اختلاف محض انگریزی داں اصحاب کے باعث ہے۔ غیر انگریزی داں ہندو مسلمان اب بھی دوستانہ و برادرانہ مراسم رکھتے ہیں۔

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

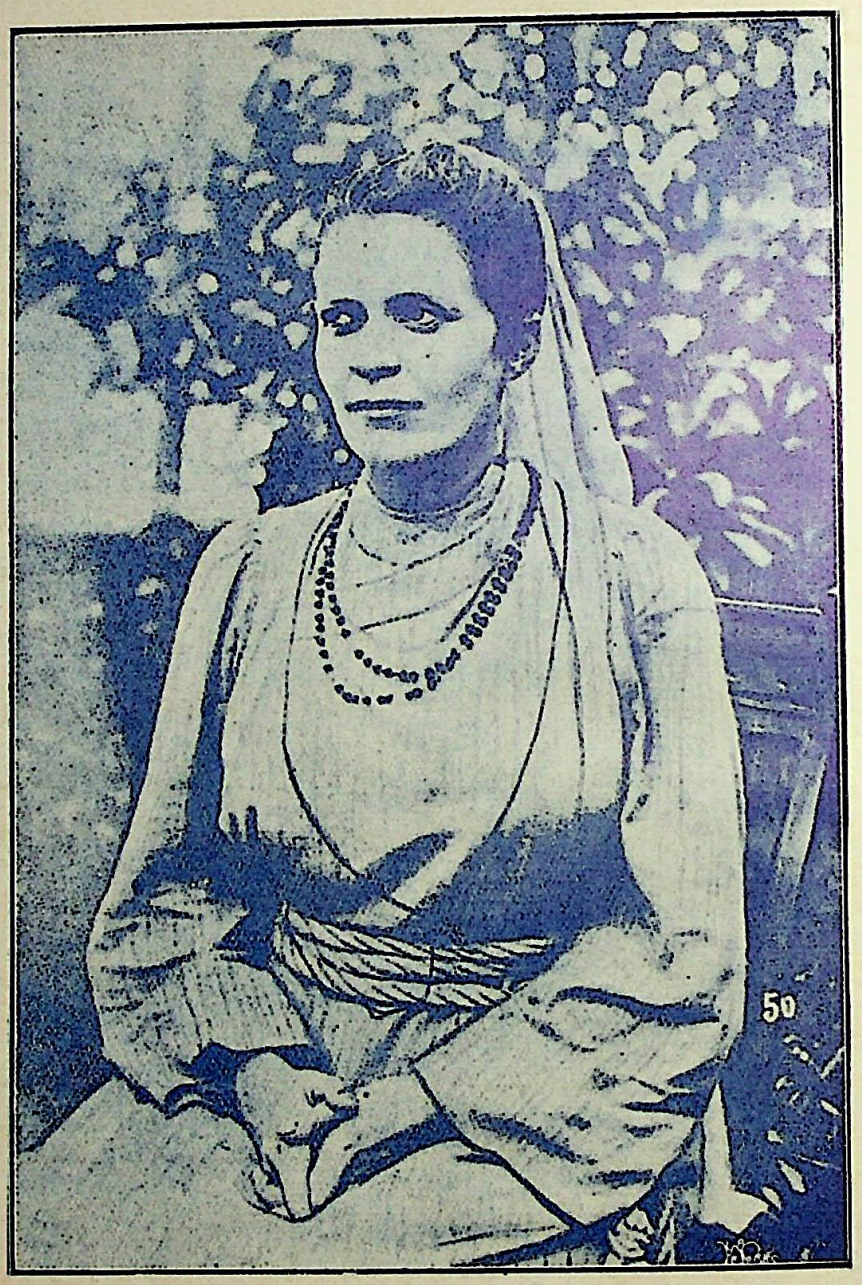

سسٹر نویدتیا

FINE ART PRINTING COTTAGE ALLAHABAD

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

مس آر بیگم

آپ حیدرآباد (نظام) کی فوج کے سب سے بڑ
آفیسر ڈاکٹر محمد اشرفالحق کی صاحبزادی

مس سدھانشوبالا ھازرا بی - اے - بی - ایل وکیل ھائی کورٹ

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

آپ سودیشی تحریک کی پُرجوش حامی تھیں۔ اُن کی رائے میں اس تحریک کی ترقی میں ہندوستان کی مالی بہبودی کا اصلی راز وابستہ ہے۔ حب الوطنی اور یک جہتی کی تعلیم وہ برابر دیتی رہیں۔ مغربی ممالک میں ہندوستان کے پیچیدہ معاشرتی و سیاسی مسائل کے متعلق سسٹر نیویدتا کی رائے نہایت مستند مانی جاتی ہے حق یہ ہے کہ ایسا ہونا بھی چاہئے۔ وجہ یہ کہ سسٹر نیویدتا اپنے خلوص اور ہمدردی کی وجہ سے تقریباً سارے ہندوستان میں عزت کی نگاہ سے دیکھی جاتی تھیں۔ خصوصاً بنگال میں جہاں وہ زیادہ تر قیام پذیر رہیں۔ معزز اور متوسط الحال اہل ہنود کے گھروں میں اُن کی رسائی تھی۔ ہندوؤں کی ظاہری و خانگی دونوں زندگیوں سے وہ بخوبی واقف تھیں۔ تقریباً تمام ہندوستان کا سفر کر چکی تھیں۔ ہر ایک تاریخی مقام کے حالات سے واقف و آگاہ تھیں۔ ہندوستان کو اپنا وطن اور ہندوستانیوں کو اہل وطن سمجھتی تھیں۔ ایسی حالت میں اُن سے زیادہ کس مغربی شخص کو حق حاصل تھا کہ ہندوستان کے معاملات اور ہندوستان کے معاشرتی مذہبی اور سیاسی اُمور پر رائے زنی کر سکے۔

ہندوستانیوں کو ایک متحد قوم بنانے کا خیال اُن کے دل میں عرصہ سے جاگزیں تھا اور اس موضوع پر بارہا تقریریں کی تھیں۔ سسٹر کی رائے میں وہ دن ضرور آنے والا ہے کہ جب ہندوستان کے یہ منتشر اجزاء اور یہ متفرق ادیان و ملل، جاپان و انگلستان کی طرح ایک قوم، ایک ملت کی صورت میں جلوہ گر ہونگے۔ دنیا میں ایسے پاکباز، بے نفس اور خالص وطن پرست بہت کم پیدا ہوتے ہیں۔ ہم لوگ سسٹر نیویدتا کے بار احسان سے کبھی سبکدوش نہیں ہو سکتے۔ وہ ہماری سچی محسن اور خیر اندیش تھیں۔ خاص

سوسائٹی میں مستورات کی قدر

(جناب منشی ایشور سرن صاحب ایم۔ ایل۔ اے، از لکھنؤ)

میرے قابل دوست منشی کنھیالال نے مجھ سے ارشاد تحریری کیا کہ ایک مضمون مختصر اس رسالہ کے لئے بھیجدیجئے چنانچہ میں بخوشی تمام تعمیل ارشاد کرتا ہوں۔

اگر عروج ہند ہونا ہے اور اگر وہ روئے عالم پر تمام نیشنوں میں اپنی جائے مناسب جس کا کہ وہ مستحق ہے حاصل کرنے والا ہے تو مرد و زن کو اپنی متحدہ جد و جہد کا استعمال اس کار عروج قومی اور اس کی از سر نو ساخت کے متعلق کرنا ہوگا۔ ذکور و اناث کے ہمپلگی کے شور و غل کا اثر میرے قلب پر کچھ نہیں پڑتا۔ میں تو یہ اُمید کرتا ہوں کہ ہند بلا خیال موازنہ مابین مرد و زن قدم بقدم رُو بہ ترقی رہیگا۔ میں تو اُس روز سعید کا خواب دیکھتا ہوں جبکہ ہر انسان ہندوستان میں بلا خیال نر و مادہ آزاد مطلق ہو کر اپنے قدرتی قد و قامت کے نشو و نما کی بلندی پر رسا ہوگا اور جبکہ ہر شخص کو اپنی ترقی اور ظہور ذات خاص کا پورا موقع دیا جاویگا اُس وقت مرد و زن اپنے وطن کی خدمت

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

محبت و پیار سے کرتے ہیں باہم اور ہمقدم ہونگے
اور یہ نام تمام زمانہ میں مشہور ہوگا کہ وہ بنی آدم کا
صادق خادم ہے۔ بجز اس کے اور کوئی کام اہل ہند
کے لئے شایاں نہ ہوگا۔ جلال ہند اسی میں ہے کہ وہ
اپنا سرمایہ بہترین عالم و عالمیان پر نثار کردے۔ یہ کام
اُس وقت تک نہیں ہوسکتا جب تک کہ دختران
ہند اپنے جملہ قوائے ظاہر و باطن کی ترقی کرنے کے
قابل نہ بن لیں اور اُن کو پائے مقدس مادر ہند پر
بہ اعزاز تمام اُس کے فرزندوں کے بالکل برابر نہ رکھ سکیں۔

اس نقطۂ نگاہ سے جملہ مباحثہ بابت رواج پردہ
ازدواج کم عمری، شادی بیوگاں ایک خبط بے ربط سا
ہوجائیگا۔ رواج پردہ کالعدم ہوگا اور ہوگا۔ کم سنی
کی شادی بروئے قانون سرکاری ممنوع ہوگئی۔ تعلیم
نسوانی کے مسئلہ پر کوئی ذی شعور شخص معترض نہیں ہے
اور شادی بیوگان کے متعلق یا رسومات دیرینہ و مردہ
میں دوبارہ جان ڈالنے والے لوگوں کا فتویٰ اخلاف
ہے۔ میرا مرکز خیال یہ ہے کہ کوئی مرد کسی عورت کے
متعلق قانون و قواعد بنانے کا مستحق نہیں ہے۔
قواعد آیندہ مرتبہ انسان ذکور نہ ہوگا۔ مرد و زن
باہم مل جل کر باعث رونق شان ہندوستان اور
خادم دو جہان ہونگے۔ مشترک ہوکر قانون و قاعدے
منضبط کرینگے اور بالاشتراک اُس کا نفاذ کرینگے۔
ہر ایک کار نیک و بد اُن کے باہم رائے موافق و
منافق کے رُو سے کیا جاویگا۔

وہ لوگ جو کہ نجات ہند کے لئے جنگ و جدل
کر رہے ہیں بخوبی ذہن نشین کرلیں کہ ہند کی
اور قیام نجات اور اُس کا استعمال بالنفع
فاتح ہے اور وہ قوت جب تک کہ سوسائٹی
یکقلم رفع دفع نہیں ہوجاتے نہیں آسکتی
کو اپنا تابع بنانے سے بدتر دوسرا عیب نہیں
سوسائٹی میں اُسی وقت توانائی اور تندرستی
ہوگا جبکہ مستورات استحقاق خود مختاری اور سوسائٹی
باوقار اپنی جائے مناسب حاصل کرلیتی ہیں۔

اُن لوگوں کو جنکے کہ چشم بینا اور دماغ دانا ہیں
سوشل عروج پر مسلسل دلسوزی و دلدہی تمام
کرنے کے لئے غور و فکر کرنے دینا ہی واجب

فطرت نگار تلسی کا ناصحانہ کلام

(ڈاکٹر اعظم کریوی)

گسائیں تلسی داس جی کی زندہ جاوید تصنیف
"رامائن" کا نام کس نے نہیں سُنا۔ ڈاکٹر گریرسن
"ہندوؤں کی بائبل" کہتے ہیں۔ اس کی مقبولیت
کا ادنیٰ ثبوت یہ ہے کہ بہت سے لوگ صرف
پڑھنے ہی کے لئے ہندی سیکھتے ہیں۔ چنانچہ
خود رامائن سے روحانیت کا سبق حاصل کرنے
لئے ہندی پڑھی اور اب میں بڑے فخر سے
کہہ سکتا ہوں کہ یہ رامائن ہی کا فیض تھا کہ
کتاب "ہندی شاعری" (جسے ہندوستانی اکیڈمی
الہ آباد نے شرف قبولیت بخشا اور اب زیر

کو تکمیل تک پہنچا سکا۔ اس سے قبل میں تلسی کرت رامائن پر رسالہ زمانہ، ہمایوں، مخزن، نیرنگ خیال اور ہندی شاعری میں کافی سے زیادہ لکھ چکا ہوں آج فطرت نگار تلسی کی ایک دوسری مایۂ ناز تصنیف "دوہاولی" سے اُردو دُنیا کو رُوشناس کرانا چاہتا ہوں میرے خیال میں اس طریقہ سے نہ صرف اُردو کے خزانہ میں بیش قدر ادبی موتیوں ہی کا اضافہ ہوگا، بلکہ اس سے متحدہ قومیت کی بنیاد بھی قائم کی جاسکتی ہے اسی خیال کو مدنظر رکھکر ہندی انشا پردازوں نے اُردو کے بہترین شعرا داغ، اکبر، ذوق، حالی، نظیر، امیر وغیرہ وغیرہ کا منتخب کلام اور اُس پر تنقید مستقل کتابوں کی شکل میں شایع کی ہیں۔ اسی کوشش کے تحت میں فارسی کے مشاہیر شعرا مثلاً شیخ سعدی مولانا روم، عمر خیام وغیرہ کو بھی ہندی ادبیات میں جگہ دی گئی ہے۔ آجکل میرے محترم دوست منشی دھنپت رائے "پریم چندر" بی۔ اے۔ ایڈیٹر مادھوری، فسانۂ آزاد کا ترجمہ ہندی میں کر رہے ہیں۔ ان مساعی کو دیکھتے ہوئے جو ہندی ادیب اُردو زبان کی قابل فخر تصانیف کو ہندی زبان میں شایع کرنے کے لئے عمل میں لا رہے ہیں یہ بات قابل افسوس ہے کہ ہندی زبان کی مقبول تصانیف کو اُردو میں لانے کی کوئی باقاعدہ کوشش نہیں کی جارہی جس سے یہ دونوں متحد الاصل زبانیں ایک دوسرے کے تخیلات سے فائدہ اُٹھا سکیں۔ پنڈت رتن ناتھ سرشار، منشی نوبت رائے نظر، پنڈت برج نراین چکبست کو دُنیا بھُلا نہیں سکتی جنھوں نے بغیر کسی تعصب کے اُردو کی خدمت کی۔ مشفقی پنڈت برجموہن دتاتریہ کیفی، منشی تلوک چند محروم، مخلصی منشی پریم چندر، مکرمی دیانراین نگم ایڈیٹر زمانہ ڈاکٹر تاراچند، ڈاکٹر سر تیج بہادر سپرو، محبی بلدیو سہائے صحرائی سروری ایڈیٹر نوشیرواں، جناب منشی نارائن پرشاد صاحب مہر گوالیاری منشی کنھیالال ایڈیٹر رسالہ چاند، منشی مہاراج بہادر برق دہلوی، پنڈت راج نراین ارمان، بابو جگت موہن لال رواں، منشی میلارام وفا، عزیزی سکھدیو پرشاد سنہا بسمل، منشی کرشن سہائے ہتکاری وحشی، بابو شیام موہن لال جگم، مسٹر سدرشن پروفیسر رام پرشاد کھوسلہ وغیرہم وہ ہندو ادبا و شعرا ہیں جن کے احسانات سے اُردو کبھی عہدہ برا نہیں ہوسکتی اس کے مقابلہ میں اس موجودہ زمانہ میں گنتی کے ہندی داں مسلمان ادیب و شعرا ملیں گے۔ ہمارے مسلمان ادبا و شعرا کا بھی فرض ہے کہ وہ ہندی خیالات سے اپنی شاعری کی وسعت اور وقعت میں ایک قیمتی اضافہ کریں اور اُردو دُنیا کو ہندی زبان کے بہترین ادب سے

بقیہ از صفحہ ۴۲ (بہادر ٹیپو)

راج میں داخل کرلیا گیا اور کچھ موجودہ میسور راج بنایا گیا۔ جس ہندو خاندان کو ہٹا کر حیدر علی تخت نشین ہوا تھا اُس خاندان کے ایک لڑکے کو میسور کا راجہ بنا دیا۔

خاص

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

روشناس کراتے رہیں اور یہ اسی وقت ممکن ہو سکتا ہے جب ہندی زبان سے واقفیت حاصل کی جائے اگر بھارت ماتا کے ان دونوں سپوتوں ہندوؤں اور مسلمانوں نے کشادہ دماغی سے ایک دوسرے کے علوم و فنون کا مطالعہ کیا تو اس سے نہ صرف ادبی فائدہ ہی ہوگا بلکہ ہندو مسلم اختلافات بھی دور ہو جائیں گے اور دونوں قومیں فرقہ بندی کی تنگ و تاریک گلیوں سے نکلکر اخوت و ہمدردی کی وسیع فضا میں پہنچ جائینگی۔

ہندی شاعری ایک نہایت وسیع موضوع ہے اس کی تعریف کرنے کی نہ تو اس مختصر مضمون میں گنجائش ہے اور نہ تفصیلی بحث کرنے کی ضرورت مختصر طور سے آپ یہ سمجھ لیجئے کہ بھاشا کی شاعری چند لفظوں میں لطیف جذبات اور مرصع خیالات کی شاعری ہے۔ ڈاکٹر کزن لکھتا ہے :-

"جب ہم مشرقی خصوصاً ہندی شاعری اور فلسفہ پر نظر ڈالتے ہیں تو اس پاک اور اعلیٰ تخیل کے مقابلہ میں یورپین فلسفہ کی بلند ترین پرواز (جہاں بسا اوقات صرف ہماری اعلیٰ ترین ہستیاں پہنچ سکی ہیں) اس قدر پست و ذلیل معلوم ہوتی ہیں کہ ہم ان استادان مشرق کے سامنے زانوے تلمذ تہ کرنے پر مجبور ہوتے ہیں اور ہمیں ماننا پڑتا ہے کہ یہ گہوارۂ تمدن درحقیقت اعلیٰ ترین فلسفۂ عالم کا سرچشمہ ہے۔"

"دوہاولی" کو مقبولیت میں تلسی کرت رامائن کا مقابلہ نہیں کر سکتی پھر بھی اس کا مرتبہ ہندی ادب بہت بلند ہے اس میں معرفت، تصوف اور ناصحانہ انداز بیان کی نہایت پاکیزہ تصویر ہیں۔ اپنے خیال کو واضح کرنے کے لئے "دوہاولی" سے چند دوہے ہدیہ ناظرین کرتا ہوں میں نے معمولی معمولی ترجمہ کر دیا ہے نکات کے ذوق پر چھوڑتا ہوں :-

دئے پیٹھ پاچھے لگے سنمکھ ہوت پرائے
تلسی سنپت چھانہہ جیوں لکھ دن پیٹھ کنوائے

مطلب = لکشمی (دولت کی دیوی) کی سایہ سے ملتی ہے (جس طرح صبح کے وقت کوئی پورب سے پچھم کی جانب چلے تو سایہ اس کے آگے رہتا ہے لیکن وہ آدمی اگر واپس ہو کر کی طرف چلنے لگے تو سایہ اس کے پیچھے پیچھے لگتا ہے اور اس کو کوئی پکڑ نہیں سکتا) بالکل لکشمی کا ہے، اس سے دور رہو تو وہ قریب آنے کوشش کرتی ہے اور اگر اسے پکڑنا چاہو بھاگ جاتی ہے۔ بھگت کبیر کا بھی یہ دوہا سے ملتا جلتا ہے۔ "مایا چھایا ایک سی برلا جانے بھگتا کے پاچھے لگے سنمکھ بھاگے لوے"

سوئی سینور تئی سوا۔ سیوت سدا بہنت
تلسی مہاموہ کے سنت سدا ہت سنت

مطلب = تلسی داس جی کہتے ہیں کہ یہ جانتے بھی کہ سیمل کا درخت اپنے پھل اور پھول سے کوئی فائدہ نہیں پہنچا سکتا، طوطا موسم بہنت

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

ہمارے طالب علم کي زندگي

روپئے کي کمي ، کورس کي سختي ، اور بي - اے تک پڑھنے
پڑھنے ۴ - ۵ بچوں کے باپ !! خدا حافظ !!!

ART PRINTING CO. ALLAHABAD

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

امریکہ کے خوفیہ پولیس کی ایک
عورت مردانی پوشاک میں -

شریمتی رامیشوری نہرو
آپ اے آل انڈیا کمیٹی کی ممبر ہیں -

مردانی پوشاک میں امریکہ پولیس
کی ایک مسلح نازک -

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

اس پر بیٹھ کر اس کی سیوا کرتا رہتا ہے کہ شاید کچھ فائدہ حاصل ہو جائے۔

یہی کیفیت دنیاوی سادھوؤں کی بھی ہوتی ہے وہ یہ جانتے ہوئے بھی کہ دُنیا کی سوہ مایا میں پھنسکر کبھی اطمینان قلب حاصل نہیں ہو سکتا وہ اسی میں ہمیشہ پھنسے رہتے ہیں۔

گیانی، تاپس، سور، کوئی، کوو گُن آگار
کیہہ کے لوبھ بڈمبنا کینہ نہ یہ سنسار

مطلب = حرص و ہوا نے اس دنیا میں کتنے کتنے عقلمند، عبادت گذار، بہادر، شعرا، عالموں اور فاضلوں کو ذلیل نہیں کیا (اس حرص و ہوا ہی کی وجہ سے سب کو ذلیل ہونا پڑتا ہے)۔

دیپ سکھا سم جوتی تن، من جن ہوس پتنگ
بھجئے رام، تج کام مد کرئے سدا ست سنگ

مطلب = خوش جمالوں کا خوبصورت نازک بدن شمع کی طرح نظر فریب ہے، اس لئے اے دل تو اس میں پروانہ کی طرح جل کر خاک نہ ہو۔ غصہ، لالچ اور خواہشات نفسانی کو ترک کر کے رام نام کا وظیفہ پڑھ (خدا کی عبادت کر)۔ یہی وہ پاکیزہ خیالات ہیں جن پر ہندی شاعری جس قدر بھی ناز کرے کم ہے۔

پوی۔ پاہن۔ دامن گرج جھر جھکور کھری کھینچ
روش نہ پریتم دوش لکھ تلسی راگ ہی ترجھ

مطلب = جس طرح چاتک (پپیہا) پتھروں کی چوٹ، بجلی کی کڑک، بادل کی گرج اور ہوا کے جھوکوں کی مصیبت سہتے ہوئے بھی دن رات "پی کہاں"۔ "پی کہاں" کی رٹ لگائے رہتا ہے اسی طرح سے خدا کے برگزیدہ بندے بھی دنیاوی مشکلات کی پرواہ نہ کرتے ہوئے خدا کی یاد میں مگن رہتے ہیں۔

بدھیو۔ بدھک۔ پریو پینہ جل اُلٹ اُٹھائی چونچ
تلسی چاتک پریم پٹ مرتہو لگی نہ کھونچ

مطلب = پپیہا شکاری کے تیر سے زخمی ہو کر گنگا جل میں گر پڑا لیکن اس حالت میں بھی اُس نے محبت کی خودداری کو ہاتھ سے نہ جانے دیا (پانی میں گرتے ہی) اس نے اپنی چونچ فوراً اُوپر اُٹھالی کہ کہیں ایسا نہ ہو کہ بیہوشی کے عالم میں گنگا جل اسکے پیٹ میں چلا جائے (اور مفت کا احسان ہو) تلسی داس فرماتے ہیں کہ پپیہا کی محبت میں مرتے دم تک فرق نہ آیا اور وہ اپنی محبت میں ثابت قدم رہا۔

جرت تہن لکھ بنجبن روی دے پیٹھ پراؤ
اُدے بکس اتھوت سیکھ مٹے نہ سیج سبھاؤ

مطلب = کنول کو پالے سے جلتا ہوا دیکھکر اس کا بیوفا محبوب آفتاب پیٹھ دکھا کر بھاگ جاتا ہے۔ کیا آفتاب کی اس بیوفائی سے کنول اپنی محبت (کھلنا) چھوڑ دیتا ہے؟۔ کبھی نہیں سچا عاشق ہمیشہ اپنی محبت میں ثابت قدم رہیگا۔

لکھے کٹھن کرت کو مل ہو ہت ہٹ ہوئی سہائی
پلک پانی پراورات سمجھ کو گھائی سکھائی

مطلب = جب خراب وقت آتا ہے تو بہت سے نرم دل دوست بھی سخت دل بن جاتے

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

ہیں لیکن جو سچا دوست ہے وہ محبت سے کبھی مُنہ نہیں موڑتا جس طرح آنکھ کی پلک پر چاہے کیسی ہی چوٹ کیوں نہ لگنے والی ہو اس کا سچا دوست ہاتھ اپنی ہتھیلی سے فوراً اوپر آنے والی مصیبت کو سہہ کر اسکی (پلک کی) حفاظت کرتا ہے۔ کتنا نیچرل دوہا ہے۔

ہردے کپٹ بربش دھر بچن کہیں گڑھ چھول
اب کے لوگ مور جیوں۔ کیوں ملئے من کھول

مطلب = آج کل کے لوگ دیکھنے میں مور کی طرح خوبصورت ہوتے ہیں، ان کی باتیں بھی بڑی میٹھی ہوتی ہیں لیکن باطن میں ان کا دل مور کی طرح ہوتا ہے۔ جس طرح مور خوبصورت ہوتے ہوئے بھی سانپ کو کھا جاتا ہے اسی طرح یہ دُنیا کے رنگیلے سیار گو بظاہر کتنے ہی قبول صورت کیوں نہ ہوں لیکن ان کا باطن اچھا نہیں ہوتا۔ گوسائیں جی کہتے ہیں کہ بھلا ایسے لوگوں سے کوئی کس طرح کشادہ دلی سے مل سکتا ہے۔

رامائن میں بھی تلسی داس جی نے اس طرح کی ایک چوپائی کہی ہے "بولہین مدھر بچن جم مورا۔ کھائیں مہا اہی ہردے کٹھورا"

(تلسی کرت رامائن۔ اترکانڈ)

چرن چونچ رنگ لوچن۔ چلو مرالی چال
چھیر نیر دیورن سمے بک اگھرت نہی کال

مطلب = جس طرح سے بگلا اپنی چال چونچ اور آنکھوں کی سُرخی سے ہنس کی چال چلکر راج ہنس نہیں ہو سکتا کیونکہ جس وقت دودھ اور پانی [illegible] ہوتا ہے اس وقت بگلے کی ساری قلعی کھل جا[illegible] اسی طرح سے اُوپری بناؤ سنگار کرنے والے بگلو[illegible] کی بھی امتحان کے وقت ساری حقیقت معلوم ہو[illegible] ہے اور اس کو آخر میں ذلیل ہونا پڑتا ہے۔

ملے جو سرل ہی سرل ہے کٹل نہ سہج بہائی
سو سہیت جیوں بکر گت بیال نہ بل سمائی

مطلب = ٹیڑھی چال چلنے والا سا[illegible] میں گھستے ہی سیدھی چال چلنے لگتا ہے (کیونکہ سیدھی چال چلے وہ بِل میں گھس ہی نہیں سکتا) [illegible] طرح سے بدباطن لوگ چاہے اپنے ملنے والوں [illegible] کتنی ہی شرافت سے کیوں نہ پیش آئیں (کیو[illegible] ظاہرداری کے بغیر سوسائٹی میں ان کا نباہ [illegible] ہو سکتا) مگر غیبت میں وہ بُرائی کرنے سے [illegible] نہیں آسکتے کیونکہ وہ اپنی خصلت سے مجبور [illegible]

کرس دھن سکھ ہی نہ دیب سکھ مینہہ نہ مانگیو [illegible]
تلسی سجن کی ریاں پاوک پالی پنچ [illegible]

مطلب = غریب دوست سے روپیہ [illegible] تکلیف دینا اچھی بات نہیں ہے اسی طرح کنجو[illegible] کمینے دولتمند سے بھی کچھ طلب کرنا اچھا نہیں [illegible] سامنے ہاتھ پھیلانے سے مرجانا بہتر ہے۔ شر[illegible] کے لئے یہ دونوں حالتیں آگ اور پانی کی طرح [illegible] ہیں۔ غریب دوست سے مانگنا چلو بھر پانی [illegible] ڈوب مرنا ہے اور کنجوس ذلیل دولتمند سے [illegible] آگ میں جلکر مرجانے کے برابر ہے۔

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

نیچ نچائی نہ تجے سجن ہو کے سنگ
تلسی چندن بٹب بسن بن بشن بھئے نہ بھوانگ

مطلب ۔ جس طرح سے چندن ایسے پاکیزہ اور خوشبودار درخت میں لپٹے رہنے سے سانپ اپنے زہریلے اثر کو دُور نہیں کر سکتا اسی طرح کمینہ شخص بزرگوں کے پاس رہ کر بھی اپنی کمینہ خصلت کو نہیں چھوڑ سکتا۔

بھلو بھلائی پے لہے ۔ لہے نیچائی نیچ
سدھا سراہے امرتا ۔ گرل سراہے تیچ

مطلب ۔ جو شریف ہے وہ ہمیشہ بھلائی کریگا جو کمینہ ہے وہ بُرائی سے باز نہ آئیگا۔ آب حیات اپنی عمدہ خاصیت سے مُردوں کو بھی جلا دیتا ہے لیکن برخلاف اس کے زہر اپنی بُری خاصیت سے زندوں کو بھی مُردہ بنا دیتا ہے۔

سجن ست ۔ ترو ۔ اوکھ سم کھل ٹانکی کار رکھان
پرہت ان ہت لاگ سب سانت سہت سمان

مطلب ۔ بزرگ انسان کی مثال خوبصورت درخت، کپاس اور گنّے سے دی جا سکتی ہے اور کمینہ لوگوں کی خاصیت رُکھانی (بڑھیوں کا آلہ) اور سنگتراش کی طرح ہوتی ہے گو ان دونوں کو ایک ہی قسم کی تکلیف پہنچتی ہے لیکن ایک سے تو دوسرے کی بھلائی ہوتی ہے اور ایک سے دوسرے کو نقصان ۔ جیسے اگر خوبصورت درخت، کپاس اور گنّے کو تکلیف دی جائے یعنی کولھو میں پلوایا جائے کاٹا جائے یا پتھر پھینکا جائے تو وہ تکلیف پہنچانیوالے کو اُلٹا رس، پھل، پھول وغیرہ دیتے ہیں اس کے برعکس رکھانی اور سنگتراش آگ میں جلکر اور ہتھوڑے سے پٹ کر اس لئے تیز ہوتے ہیں کہ وہ بھی ظالموں کی طرح دوسروں کے جسم کو کاٹیں اور اسے تکلیف پہنچائیں۔

غور کیجئے تشبیہ و تمثیل کی قوت سے فطرت نگار تلسی نے نفس مضمون میں کس قدر دلکشی پیدا کر دی ہے ۔ یہی کمال شاعری ہے ۔

پپیہین سُمن رس الی بٹپ کاٹ کول پھل کھات
تلسی ترو جیون جُگل سُمت کُمت کی بات

مطلب ۔ تلسی داس جی کہتے ہیں کہ اگرچہ کوئل اور بھونرا دونوں ہی کی زندگی کا سہارا درخت ہوتے ہیں لیکن ان کے خیالات اور مقاصد میں بین فرق ہے ۔ بھونرا تو درخت کے پھل پھول پر عاشق ہو کر اپنا گانا سُنا کر خوشبو سونگھتا ہے اور رس چوستا ہے لیکن کوئل پھلوں کو کتر کاٹ کر درخت کو تکلیف پہنچا کر ہی خوش ہوتی ہے ۔ حقیقت میں دونوں کی زندگی کا انحصار درخت پر ہے لیکن اپنے حسب منشا اور خصلت کے مطابق کام کرتے ہیں ۔

تلسی مٹے نہ مرمٹو سانچوں سبھ سنیہ
مور سکھا بن مر ہو پل ہت گرجت مینہ

مطلب ۔ گوسائیں جی کہتے ہیں کہ سچی محبت مرنے کے بعد بھی نہیں جا سکتی جس طرح کہ "مور سکھا" نام کی بوٹی ۸ مہینے تک جلی بھُنی، بغیر جڑ پتی کے بھی صرف بادل کی گرج ہی سُن سُن کر جیتی رہتی ہے (یہاں تک کہ برسات کا موسم آجاتا ہے اور وہ ہری بھری ہو جاتی ہے)۔

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

اوسر کوڑی جو چکے بھری دئے کا لاکھ
دوج نہ چندا دیکھئے ادو کہا بھر پاکھ

مطلب = اگر موقع ملنے پر کسی نے اپنی غلطی کی تلافی نہ کی تو بعد میں چاہے وہ لاکھ کوشش کرے پھر وہ بات نہیں بن سکتی۔ جس طرح اگر کسی نے اچھی ساعت میں دوج کے چاند کو نہ دیکھا تو چاہے وہ مہینہ بھر چاند دیکھا کرے تو کیا ہوتا ہے۔

اتم مدھیم نیچ گت پاہن سکتا پان
پریت پریچھا تین کی بپرہت کرم جان

مطلب = شریفوں کی دوستی پتھر کی لکیر کی طرح دائمی ہوتی ہے۔ معمولی آدمیوں کی دوستی ریت کی دیوار کی طرح تھوڑے دن تک رہتی ہے اور کمینوں کی دوستی پانی کی لکیر کی طرح فوراً مٹ جانیوالی ہوتی ہے اسی اصول سے تینوں کی دشمنی کا بھی اندازہ کیا جاسکتا ہے (یعنی شریفوں کی دشمنی پانی کی لکیر کی طرح جلد مٹ جاتی ہے معمولی آدمیوں کی دشمنی ریت کی دیوار کی طرح کچھ عرصہ تک رہتی ہے لیکن کمینوں کی دشمنی پتھر کی لکیر کی طرح کبھی نہیں جاسکتی)۔

آپ آپ کیوں سب بھلو اپنے کیوں کوی کوی
تلسی سب کون جو بھکو سجن سرا ہے سوی

مطلب = اپنے آپ کے لئے تو سب اچھے ہیں لیکن غیروں کے ساتھ بھلائی کرنے والے شاذ و نادر ہی ہوتے ہیں۔ گوسائیں جی کہتے ہیں کہ جو سب کے لئے بھلا ہے بزرگ منش انہیں کی تعریف کرتے ہیں۔

لوک ریت پھوٹی نہیں۔ آنجی نہیں نہ کوئے
تلسی جو آنجی سہے سو آندھرو نہ ہوئے

مطلب = یہ دنیا کا دستور ہے کہ آنکھوں میں انجن لگانے کی تکلیف سے ڈر کر لوگ آنکھیں پھوٹنے کی تکلیف برداشت کر لیتے ہیں ایسے لوگوں کے بارے میں گوسائیں جی کا خیال ہے کہ اگر یہ لوگ انجن کے کڑوے پن کو برداشت کر لیں تو کبھی اندھے نہ ہوں۔ کتنا سبق آموز دوہا ہے۔

تلسی بھیڑی کی دھسان جڑ جنتا سنمان
اپجت ہی ابھمان بھو کھودت موڑہ اپان

مطلب = نااہل آدمیوں کی جانب سے ملی ہوئی عزت کی مثال بھیڑ چال سے دیجا سکتی ہے (جس طرف ایک بھیڑی چل پڑی سب اسی طرف چلی جاتی ہیں یہ کوئی نہیں دیکھتی کہ راستہ خراب ہے یا اچھا (اسی طرح اگر کوئی ایک ناسمجھ شخص کسی کی عزت کرنے لگتا ہے تو سب اس کی تقلید کرنے لگتے ہیں یہ کوئی نہیں دیکھتے کہ جس کی وہ قدر کرتے ہیں آیا وہ اس کا اہل ہے یا نہیں) ایسے لوگوں کی جانب سے عزت جو شخص خود کو بڑا آدمی سمجھنے لگتا ہے وہ اپنے ضمیر کو دھوکا دیتا ہے۔

پر درد ہی۔ پر دارتھ۔ پر دھن۔ پر اپوا
لتے نر پانور پاپ مے دیہہ دھرے من جا

مطلب = دوسروں سے دشمنی رکھنے والے پرائی بہو بیٹیوں کو نظر بد سے دیکھنے والے

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

کو اُڑانے والے اور دوسروں کی بُرائی کرنے والے انسان گنہگار اور کمینے ہوتے ہیں۔ انھوں نے انسانی جسم اختیار کرکے خواہ مخواہ انسانی نسل کو بدنام کیا ہے۔

غرضیکہ کہاں تک لکھا جائے تلسی داس جی کے شاعرانہ کمال اور انکی اخلاقی شاعری کے صفحۂ حیات کی بڑی لمبی داستان ہے فی الحال "دوہاولی" کا یہ مختصر اقتباس ہی کافی ہوگا بشرطیکہ فرصت پھر کبھی فطرت نگار تلسی کے اس نگار خانہ سے کچھ سبق آموز و دلکش تصویریں ہدیہ ناظرین کرونگا۔

خاص

کرمان (ایران) میں ہندو

(منشی مہیش پرشاد صاحب مولوی
عالم، فاضل، ہندو یونیورسٹی)

مجھے اپنے سفر ایران کے دوران میں جن مقامات میں ہندو ملے ہیں اُن میں سے ایک کرمان بھی ہے۔ یہ سطح سمندر سے تقریباً ۵۰۰۰ فیٹ کی بلندی پر ہے۔ اس کی آبادی تقریباً پچاس ہزار ہے۔ یہ ایک قدیم شہر ہے اور ایک صوبہ کا دارالخلافہ ہے۔

کرمان کے باشندے زیادہ تر مسلمان ہیں مگر ان کے سوا پارسی، یہودی اور ارمنی وغیرہ ہیں جن میں سے ۲۷ یا ۲۸ نفر ہندو ہیں، شکارپور سندھ کے باشندے ہیں، دوکاندار ہیں، کپڑا، چائے اور دیا سلائی وغیرہ کی تجارت کرتے ہیں، سب کے سب ایک ہی مقام میں رہتے ہیں، اس کا نام کارواں سرائے ہندواں ہے، یہ بہت مشہور جگہ ہے، شہر کے کسی حصہ میں دریافت کرنے سے اس کا پتہ چل جاتا ہے۔

یہاں ہندوؤں کے ذاتی مکانات ہیں مگر کوئی شخص عیال و اطفال ساتھ نہیں رکھتا عموماً ایسا ہوتا ہے کہ لوگ دو تین برس کے لئے یہاں آتے ہیں پھر اپنے وطن چلے جایا کرتے ہیں۔ اس طرح ایک کے بعد دوسرا آتا جاتا رہتا ہے اور دوکان کا کاروبار برابر جاری رہتا ہے۔

یہاں کے ہندو زیادہ تر سندھی زبان جانتے ہیں، کچھ لوگ گورمکھی بھی جانتے ہیں، رفتہ رفتہ فارسی بولنا جان گئے ہیں اور خوب بولتے ہیں مگر لکھ نہیں سکتے ہیں، ان میں چھوا چھوت کا زبردست ڈھکوسلہ نہیں، وہ مسلمانوں کا چھوا ہوا پانی پیتے ہیں ہاں چائے بھی پی لیتے ہیں مگر بہت ہی کم ایسے ہیں جو مسلمانوں کی بنائی یا چھوئی ہوئی روٹی کھاتے ہیں ورنہ زیادہ تر حال یہ ہے کہ لوگ اپنے وطن سے ہندو باورچی لے گئے ہیں باقی چھوٹے موٹے کاموں کے لئے مسلمان نوکر ہیں۔

—— ۲ ——

ہندوؤں نے یہاں ایک عبادت خانہ بھی قائم کر رکھا ہے، یہ دربار صاحب کے نام سے موسوم ہے، اس میں گرو گرنتھ صاحب ہیں، روزانہ شام کے وقت دربار صاحب میں آرتی ہوتی

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

ہے اور کبھی کبھی کڑاہ پرشاد ہوتا ہے۔

عبادت خانہ میں ہنومان جی، شیوجی اور رامچندر جی کی تصویریں بھی ہیں، چنانچہ سوموار کو شیوجی اور منگل کو ہنومان جی کی عبادت و آرتی خصوصیت کے ساتھ ہوتی ہے، ان کی تعریف میں بھجن وغیرہ بھی ہوا کرتے ہیں۔

دربار صاحب کو خوب آراستہ کیا گیا ہے، قیمتی چاندنی و فرش ہیں، ڈھول، سنکھ، جھانجھ، گھنٹہ و نقارہ ہیں جو بڑے زوروں کے ساتھ بجا کرتے ہیں کئی بار میں عبادت خانہ میں گیا ہوں اور آرتی وغیرہ میں شریک ہوا ہوں۔ پس ان ہندوؤں کی دھارمک شردھا نے جو گہرا اثر مجھ پر کیا ہے وہ میرے دل سے غالباً مدت دراز تک دُور نہ ہوگا۔

عبادت خانہ کب سے قائم ہے اور ہندوؤں کی آمد و رفت کب سے جاری ہے ان دونوں اُمور کی بابت فی الحقیقت ٹھیک ٹھیک کچھ نہیں کہا جا سکتا۔ ہاں ایک خفیف سا احتمال یہ ہے کہ تقریباً دو سو برسوں سے ہندوؤں کی آمد و رفت کا سلسلہ یہاں جاری ہے۔

اس موقع پر اس امر کا اظہار بھی ضروری ہے کہ عبادت خانہ کے بارہ میں نہ تو کبھی ایران گورنمنٹ کو ہی کسی قسم کا اعتراض ہوا ہے اور نہ اس کی ہستی ایرانی مسلمانوں کی نگاہ میں ہی کبھی کھٹکی ہے۔

—— ۳ ——

تمام اہلِ ایران ہندوؤں کو 'ارباب' کے لفظ سے مخاطب کیا کرتے ہیں، عزت کی نگاہ سے ہیں، ان کو خواجہ یعنی مالدار سیٹھ سمجھتے ہیں ہوا کہ ہندوؤں نے یہاں کافی دولت پیدا ان کا کاروبار بہت اچھا تھا لیکن رُو بہ تنزل بعض اوقات ہندوؤں کے ناموں کو ایرا بآسانی نہیں بول سکتے لہٰذا بعض حضرات اپنا بدل لیتے ہیں مثلاً کنھیا رام کا نام خواجہ طا اور ٹیمول کا نام خوشحال ہو گیا ہے۔

—— ۴ ——

ہندوستان سے کرمان تک پہنچنے کے لئے راستے ہیں۔ ایک بحری راستہ بندر عباس ہے۔ بندر عباس سے کرمان کا فاصلہ تقریباً میلوں کا ہے، موٹر لاریاں آتی جاتی ہیں راستہ کوئٹہ بلوچستان ہو کر ہے۔ کوئٹہ سے تک ریل ہے، اس کے بعد پانچ چھ سو سفر کے لئے موٹر لاریاں ملتی ہیں، یہ دو راستے میرے دیکھے ہوئے ہیں، اگرچہ لا کی وجہ سے کسی قدر سہولت ضرور ہے جو لوگ ہندوستان میں ریلوے سفر ہو گئے ہیں اُن کے لئے تو بہت ہی ہیں مگر جبکہ ان راستوں میں لاریاں تھیں لوگوں کو اونٹ یا گدھے کے ذریعہ ہی راستہ طے کرنا پڑتا تھا۔ القصہ ان کی ہمت و جرأت قابل تعریف ہے جنہوں عرصہ پہلے کم و بیش ایک ماہ تک متواتر اونٹ

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

پر سفر کر کے بندر عباس یا بلوچستان کے راستہ سے کرمان تک پہنچے تھے اور اپنے کاروبار میں خوب پھولے پھلے تھے۔

خاص

"دوشیزۂ سحر"

(جناب نجم سلطانہ قریشی صاحبہ)

مشرق کی طلائی وادی میں نور کی لہریں موجیں مار رہی تھیں، کائنات ایک خفیف سی انگڑائی لیکر بیدار ہو چکی تھی ——— مگر ابھی تک خاموشی طاری تھی! تاریکی لحہ بہ لحہ مفقود ہوتی جا رہی تھی اور نور چاروں طرف پھیلا پڑا تھا۔

صبح صادق سے پہلے ظلمت و نور باہم دست و گریباں ہوئے۔ اس کشمکش میں بالآخر "نور" نے فتح پائی اور اب وہ اپنی کامیابی پر شاداں و مسرور سامنے کھڑا مسکرا رہا تھا!! ———

یکایک اُفق مشرق میں ایک زبردست لرزش پیدا ہوئی، کائنات عالم کی ہر شے پر مسکراہٹ نمایاں نظر آنے لگی اور ایک نہایت حسین و جمیل پری سنہری زلفیں شانوں پر بکھرائے، طلائی تاج زیب فرق کئے عجب.. تزک و احتشام کے ساتھ خراماں خراماں مشرق سے برآمد ہوئی اور اپنے دستِ زرّیں سے ہر چیز پر 'نور' برسانے لگی ——— یہ "دوشیزۂ سحر" تھی!

اس کے آتے ہی ایک بھینی بھینی مست خوشبو فضا میں چاروں طرف پھیل گئی اور مرغان سحر اس کی آمد کے گیت گانے لگے۔

دوشیزہ نہایت سبک رفتاری سے آگے بڑھی جوں جوں وہ بڑھتی جاتی تھی صبح کی سفیدی بتدریج دنیا کے ایک گوشے سے دوسرے گوشے تک پھیلتی جاتی تھی اور بالآخر آہستہ آہستہ "صبح صادق" میں تبدیل ہو کر اس کا وجود نظروں سے پنہاں ہو گیا۔ .....

اور اب جو آنکھ کھول کر دیکھا تو صبح ہو چکی تھی اور "شاہِ خاور" کی سنہری کرنیں پہلی دفعہ سطح زمین پر چمک کر دنیا کے ہر ذرّہ کو زرنگار بنا رہی تھیں!!!۔

خاص

ایک شام

(جناب اسلام احمد صاحب قریشی)

وہ ایک دلکش شام تھی! بارش ہو چکی تھی، درختوں کے پتوں پر نکھار کا عالم تھا، ہوا شرابِ مستی سے مخمور رقص کرتی پھر رہی تھی، آسمان پر بادلوں کے سُرمئی ٹکڑے ہوا میں اِدھر اُدھر تیرتے پھر رہے تھے، سُنہری، روپہلی اور شفقی رنگوں سے مزین آسمان کسی مصور کا رنگین شاہکار معلوم ہوتا تھا مغرب کی طرف ہلکی ہلکی سُرخ شفق پھیل کر اس منظر کو اور بھی دلفریب بنا رہی تھی۔ مشرق میں وسطی تاریخوں کا سنہری چاند کچھ اس انداز سے چمک رہا تھا گویا اس نظارہ کو دیکھکر وہ بھی فرطِ مسرت سے مسکرا رہا ہے!۔

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

ہر شے پر مستی و محویت طاری تھی اور فضا بہار کے پُرکیف نغموں سے معمور!! ——— بہار کی حسین و رنگین دیویاں رنگا رنگ کے لباس پہنے باغ کے ہر کنج اور ہر روش پر محو خرام تھیں! یا زمردین سبزہ پر بیٹھی آپس میں چہلوں . . . . میں مصروف تھیں۔ ان کے شیریں قہقہوں سے باغ نغمہ زار بنا ہوا تھا۔ ایسا معلوم ہوتا تھا کہ بہار کے دیوتا نے جشن بہار منانے کے لئے بہار کی بیشمار دیویوں کو کرۂ ارض پر بھیجدیا ہے۔ جہاں یہ حسین قافلہ باغوں میں جمع ہو کر ——— اپنے نغموں اور قہقہوں سے دُنیا کو "کیف زار" بنا رہا ہے!!

اُس دن مجھے یاد ہے، تم کاسنی رنگ کی ایک خوشنما ساری زیب تن کئے، پھولوں کا زیور پہنے "مجسم بہار" بنی ہوئی اپنی سہیلیوں سمیت باغ کے ایک گوشے میں بیٹھی قہقہہ بازیوں میں مصروف تھیں۔ اردگرد گلاب کے پیڑ تھے جسکے پھولوں کی خوشبو مختلف معطر لباسوں کی خوشبوؤں کے ساتھ ہوا میں ملکر ایک عجیب قسم کی نفیس و لطیف نکہت بن گئی تھی جو باغ کے گوشہ کو مہکا رہی تھی۔

اُس شام، بہار کی کیف آفریں ہواؤں نے میرے مُردہ دل میں بھی زندگی کی نئی رُوح پھونکدی اور مجکو باغ کی سیر پر مجبور کر دیا تھا۔ چنانچہ میں اپنے خیالات میں محو آہستہ آہستہ ٹہلتا ہوا باغ کے دروازہ تک جا پہنچا۔ ابھی میں اندر داخل نہ ہونے پایا تھا کہ یکایک میری نظر تم پر جا پڑی ——— میں نے تم کو دیکھا! ——— دُور سے مُسکراتے ہوئے دیکھا!! ——— آہ، شام کا وہ دلفریب وہ باغ کا گوشہ اور اُس میں تمھارا "پیکر حُسن" ہوئے مُسکراتے نظر آنا، بیتاب دل کے لئے قیامت سے کم نہ تھا! میرا دل دھڑکنے لگا۔ مگر میں اپنے دونوں ہاتھوں سے سنبھالے آگے ——— بڑھا۔ تم ابھی تک میری موجودگی سے بے خبر ——— تھیں ایک محویت کے عالم میں آسمان کے دلکش منظر کو دیکھ رہی تھیں، خصوصاً شفق کے خون سُرخ رنگ کو تم کچھ خوف اور تعجب کی نظروں سے دیکھ رہی تھیں کہ میں آہستہ آہستہ بڑھتا ہوا تمھارے قریب والے گلاب کے پودے تک پہنچ گیا ——— اچانک تمھاری نظریں مڑ گئیں تم نے مجکو دیکھ لیا اور شرما کر نیچی نظریں کر کے خاموش ہو گئیں۔ آہ، میں اس منظر قیامت کی تاب نہ لا سکا، میرا دل بلیوں اچھلنے لگا اور میں مبہوت ہو کر وہیں کا وہیں کھڑا رہ گیا! سہیلیاں تمھاری اس غیر معمولی خاموشی کو تعجب اور راز کی نظروں سے دیکھنے لگیں مگر مسکرا کر خاموش ہو گئیں۔ اب سُورج غروب ہو چکا تھا، باغ میں ہلکا سا اندھیرا چھا گیا۔ یکایک تم اپنی سہیلی کا ہاتھ اُٹھ کھڑی ہوئیں اور اپنی ایک سہیلی سے یہ کہتی ہوئیں کہ ——— "آؤ سوشیلا گھر چلیں شام ہو گئی!!" سب کے ہمراہ باغ کے دروازہ سے نکلکر خراماں خراماں گھر کی جانب

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

لفٹیننٹ کرنل نواب محمد حمید اللہ خاں بہادر
نواب صاحب بہادر ، بھوپال -

بیگم صاحبہ بھوپال -

شاردا بل کي تائید میں شملہ میں اسیمبلي چیمبر کے سامنے
عورتیں جھنڈے لیکر کھڑي تھیں -

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

شریمتي سي - کرشناما

آپ بھي حال ھي میں سیدپٹ (مدراس) کي میونسپالٹي کي میمبر بنائي گئي ھیں -

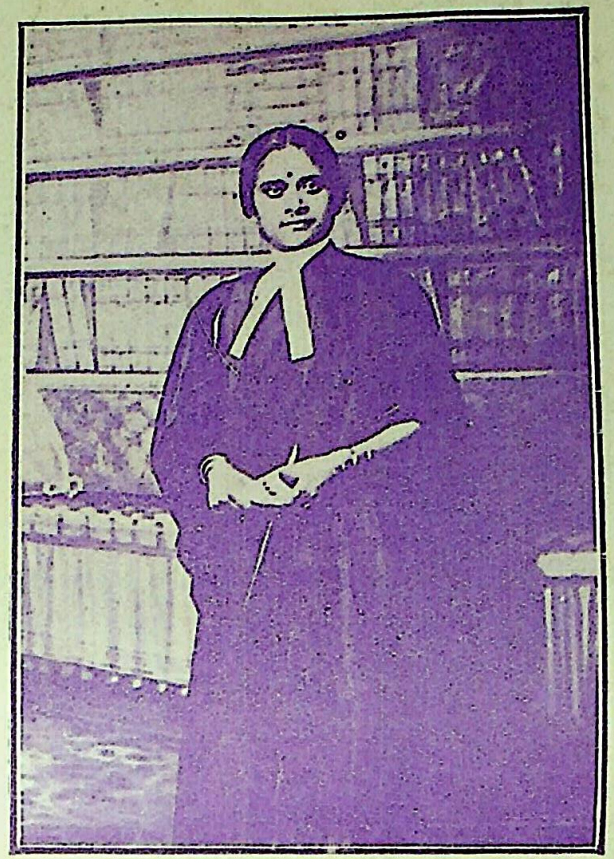

مس بي - آنند بائي - بي - اے، بي - ایل

آپ مدراس ھائي کورٹ کي دوسري لیڈي ایڈوکیٹ اور عورتوں کو تعلیم دینے کي حامي ھیں -

شریمتي شاردا دیوان ایم - اے

آپ موڈریٹ لیڈر سر چمن لال سیتلواڈ کي گریجویٹ صاحبزادي ھیں - بمبئي کا مشھور وٹیتا ویشرام جماعت آپکے زیرنگراں بڑی ترقی پا رھا ھے - آپ اس جماعت کي آنریري سیکریٹري ھیں -

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

ہوگئیں اور میں بدقسمت، حرمان نصیب دل کو سنبھالے زیرلب یہ مصرعہ دُہراتا ہوا اُسی دروازہ سے واپس گھر لوٹ گیا۔ ع

"اے بسا آرزو۔ کہ خاک شدہ"

خاص

قومی جماعتیں

(منشی مہادیو پرشاد صاحب ایم۔اے، ایل ایل بی)

ملک کی اس بیداری کے زمانہ میں مختلف اقوام کے لوگوں نے زمانہ کی رفتار سے متاثر ہوکر اپنے چھوٹے دائرہ میں اپنی قوم کی بہبودی و بہتری کی غرض سے مختلف قسم کی جماعتیں قائم کیا ہے اور ان میں سے اکثر جماعتیں فی الواقع اچھا کام کر رہی ہیں مگر یہ امر بھی نظرانداز نہیں کیا جاسکتا کہ ایسی جماعتیں ملک میں تنگ خیالی پھیلانے کی بھی باعث ہو رہی ہیں۔ ایسے نازک وقت میں جبکہ ملک کی قسمت کا فیصلہ اپنے اتفاق واتحاد، اپنی استطاعت وانجماد اور اپنی دوربینی و معاملہ فہمی پر مبنی ہو مختلف جماعتوں سے مختلف آواز اُٹھنا ملک کے سراسر خرابی کا باعث ہوگا۔ اس کشمکش کی حالت میں جب ہمارے نظام سلطنت میں ہمارے ملک کے جان نثاران کی قربانیوں کی بدولت قادران الوقت ہمارے حقوق کو ہمکو دینے پر مجبور ہو رہے ہوں کسی قسم کی دورائی ہونا یا چند فوری فوائد کے توقع میں اور کسی ممبر کی فیاضی پر بھروسہ کرکے ملک کی بہبودی کو نظرانداز کرنا اپنی ترقی کے حق میں سخت مُضر ہوگا۔

مختلف اقوام و فرقوں کی جماعتیں اپنی ہستی کا احساس کرانے کی غرض سے اپنی کم تعدادی و پستی کی دُہائی دیکر ملک کی ترقی کی راہ میں مانع ہو رہی ہیں۔ اس نازک وقت میں بہتر تو یہ ہوتا کہ اس مُلک کے رہنے والے اپنے انفرادی و مجموعی حقوق کی محافظت مُلک کے آزمودہ بہی خواہان سچے جاں نثاران اور پیشروان کے ہاتھوں میں سپرد کردیتے اور اپنی ساری طاقت اپنی گروہ کی مخصوص بُرائیوں کو اُکھاڑ پھینکنے میں صرف کرتے۔ اس طرح عمل کرنے سے اُن کے حقوق کو کسی طرح کا زوال پہنچنے کا احتمال نہیں ہے کیونکہ جب اس ملک میں واقعی آزادی کا دَور شروع ہوگا ہر ایک متنفس چاہے وہ کسی قوم و فرقہ کا ہو اُس کو ہمسر حقوق حاصل ہونگے۔ ایک گروہ دوسرے پر جبر و تشدد نہ کریگی بلکہ مختلف قومیں و گروہ اپنی اپنی جگہ پر خوشنما پھولوں کی طرح کھلے ہونگے۔ اور سارے ملک سے ایک خوشنما باغ بہار کی فضا نمایاں ہوگی۔

موجودہ قومی جماعتوں کے نصب العین میں ایک خاص تبدیلی کی ضرورت ہے۔ اپنے ممبران کی انفرادی و مجموعی ترقی کے ساتھ ہی اُن کو ملک کی بہبودی کا خیال بھی مدنظر رکھنا چاہئے۔ حقیقت تو یہ ہے کہ کوئی کام جو ملک کی ترقی میں مانع ہو وہ ہرگز ایک خاص جماعت یا گروہ کے لئے مفید نہیں ہوسکتا۔ مثلاً سرکاری ملازمت کا سوال اس وقت اکثر لوگوں کے

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

خیالات کو پراگندہ کر رہا ہے۔ ایسی آوازیں ہمارے
کانوں میں گونج رہی ہیں کہ فلاں گروہ یا جماعت کے
لوگ فلاں محکمۂ ملازمت میں کم تعداد میں ہیں اُن کو
استحقاقاً جگہ ملنی چاہیئے۔ ایسی لغو باتوں سے ایک تو
مختلف فرقوں میں کدورت پھیلتی ہے اور دوسرے اگر
ایسی لغو تحریکوں کو کامیابی بھی قدرے حاصل ہوئی
اور اس جماعت کے چند لوگوں کو دلی مراد مل بھی گئی
تو بھی اس سے اس جماعت کی تمدنی حالت میں کوئی
خاص بہتری کی صورت نہیں پیدا ہو سکتی بلکہ اس کے
برعکس ایسی حرکت سے ملک کو سخت نقصان پہنچتا
ہے اور ملک کے مختلف محکمہ سلطنت میں ایسے لوگ
نہیں پہنچ پاتے جن کی وہاں ضرورت ہے۔ ایسی
جماعتوں کو کوتاہ بینی کی متعدد مثالیں آسانی سے قلمبند
کی جا سکتی ہیں۔ ہر ایک قومی جماعت کا یہی اصول
ہونا چاہیئے۔ اس کے علاوہ اپنی جماعت کی خدمت
عملی طریقہ سے کرنے کی ضرورت ہے۔ ہندوستان میں
معاشرتی بُرائیوں کی کمی نہیں۔ ان میں سے اکثر
ایسی بُرائیاں ہیں جو عام طور سے سارے مُلک میں
پھیلی ہوئی ہیں اور محض ایسی ہیں جو کسی ایک خاص
جماعت سے تعلق رکھتی ہیں۔ ہماری موجودہ پستی
و انحطاط کا راز بہت کچھ انہیں بُرائیوں میں مضمر ہے
اور اپنی غلامی کے موجودہ مہلک بیماری کا بہت کچھ
افاقہ ان کی اصلاح سے ہو سکتا ہے۔ ہمارے دُوربیں
پیشروان بہت کچھ کام ان اُمور کے متعلق کر چکے ہیں
مگر پھر بھی بہت کچھ ابھی کرنا باقی ہے۔ مختلف جماعتوں

کا یہ فرض العین ہے کہ ان بُرائیوں کی بیخکنی کریں
اگر اس میں کامیابی حاصل ہوئی تو واقعی ملک
ترقی کی بہت سی منزلیں طے ہو جائینگی۔ ا
جماعتوں کی جماعتی درسگاہیں ہیں جہاں کہ ا
ممبران کو تعلیم حاصل کرنے میں مختلف اقسام
سہولت مہیا کی جاتی ہے۔ یہ ایک نہایت
اچھا کام ہے اس میں کسی کو کوئی شبہہ نہیں
مگر ایسی درسگاہوں کے کارکنان کی زبردست
ہے۔ اپنی جماعت میں اعلیٰ تعلیم کا پھیلانا
کی امداد و دیگر ایسے کام واقع میں قابل قدر
مگر اس کا لحاظ رکھنا چاہیئے کہ ان درسگاہوں
قومی جوش کے پردہ میں کوتاہ بینی طلباء میں
ہونے پائے بلکہ یہ بات صاف نمایاں ہونا چاہیئے
کہ یہ درسگاہ ایک خاص جماعت کا مادرِ ہند
خدمت میں ایک نذر ہے جہاں کہ اُس خا
جماعت کے نوجوان تعلیم حاصل کر کے مُلک
سچے سپاہی و خدمتگذار بنتے ہیں۔ اپنی جماعت
بہتری کے دُوسرے کاموں میں بھی یہی خیال
رہنا چاہیئے۔ ملک کی بھلائی و ترقی کا نشا
میں چھپا یا ہو، اپنی جماعت کی خدمت کا خیا
ملک کی بہتری کے خیال سے متاثر ہو اور
جماعت کی خدمت ملک کی خدمت کا ذریعہ
اگر یہ دلی مُراد پوری ہوئی تو ملک میں اتفاق
اتحاد کا بادل چھایا ہوا ہو گا اور ایک ایسی
فضا ہو گی جس کو دیکھنے کو ہماری آنکھیں

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

سے ترس رہی ہیں، اُس وقت ہمارے ملک کی کچھ اور ہی حالت ہوگی اور اُس کی بھی دنیا کی نظر میں وہی وقعت ہوگی جو اس وقت دُوسرے آزاد ملکوں کی ہے۔ خاص

کانپور کا عظیم الشان مشاعرہ

(جناب شرف الحسین صاحب قمر سدھوری)

۹ر نومبر کی شب کو ۱۰ر بجے یہ مشاعرہ احاطۂ کمال خاں میں بصدارت حکیم ناطق صاحب شروع ہوا۔ کانپور، لکھنؤ، بمبئی و جھانسی و نیز دیگر مختلف مقامات کے شعرا شریک مشاعرہ تھے۔ منجملہ دیگر صاحبان کے جناب جادو رقم رشید رام پوری و شاعر بے بدل حبیب رامپوری و محشر رامپوری و جناب صفی و آشفتہ و حسرت موہانی و سراج لکھنوی و ثاقب کانپوری وغیرہ تشریف لائے تھے، آرائشی سامان نہایت عمدگی سے لگایا گیا تھا و خورد و نوش کا بھی معقول انتظام تھا۔ اوّل جناب ناطق صاحب نے غزل شروع کی اُس کے بعد دیگر شعرا نے یکے بعد دیگرے اپنے کلام سے محظوظ فرمایا۔ شعرا کی نشست کا بہترین انتظام تھا۔ دوسرے روز ۱۲ر بجے دن کے یہ مشاعرہ ختم ہوا۔ ہم کامیابی مشاعرہ کے متعلق حکیم صاحب کو مبارکباد دیتے ہیں۔ مصرعہ طرح یہ تھا:۔

"شاعر جو قدرتی ہے فطرت کا رازداں ہے"

ناظرین کی دلچسپی کے لئے ہم کچھ خاص اشعار مشاعرہ کے درج کرتے ہیں جو کسی طرح لُطف سے خالی نہیں ہیں۔

"میری جبیں ازل سے مرہونِ آستاں ہے
میں تو یہاں ہوں لیکن قسمت مری وہاں ہے"

"اہلِ ہوس کے دل کا اندازہ کر رہے ہیں
مجھ پر جفا کا مقصد دُشمن کا امتحاں ہے"

"اب وسعتِ تصوّر اس حد میں آگئی ہے
جس سمت دیکھتا ہوں جلوا ترا عیاں ہے"

"ہر شے ہے سربسجدہ ہر ذرّہ نغمہ خواں ہے
اے بیخودی سنبھلنا، یہ کسکا آستاں ہے"

"گذری ہوں اک قفس میں جب سیکڑوں بہاریں
اُس کو قفس سمجھنا توہینِ آشیاں ہے"

"جس جا پہ دیکھتا ہے گلشن میں چار تنکے
صیّاد جانتا ہے بلبل کا آشیاں ہے"

"آیا ہے عہدِ پیری فکرِ سخن جواں ہے
نظروں میں ہیں بہاریں گو موسمِ خزاں ہے"

"جوشِ شبابِ الفت اک شب کا میہماں ہے
پھر صبح ہوگئی تو وہ رنگ رُخ کہاں ہے"

"کچھ عشق کا توارد کچھ سادگی بیاں کی
ہر اک سمجھ رہا ہے، یہ میری داستاں ہے"

"مجبورِ بیاں میں ہوں ضبطِ غم نہاں ہے
جس کو سُنے نہ کوئی وہ میری داستاں ہے"

"قصہ وہی ہے میرا جو قیس و کوہکن کا
بدلا ہوا فقط اک عنوانِ داستاں ہے"

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

"اُلٹی تو اپنے رُخ سے اُس نے نقاب لیکن
اب میرے اور اُسکے اک برق درمیاں ہے"

"کب یہ خیال تم کو یاران رفتگاں ہے
مثلِ غبار کوئی ہمراہ کارواں ہے"

"ہر گام پر ہیں سجدہ ہر ذرہ ضوفشاں ہے
میری جبیں سے باہر کب اُنکا آستاں ہے"

[جناب حبیب]

"اے ہمرہان غربت کیا بیخودی ہے مجھکو
حد نظر ہے میری یا گرد کارواں ہے"

[جناب رشید]

"پامالیوں نے کھویا گور و کفن کا احساں
مشتِ غبار اپنا آسودۂ جہاں ہے"

فلسفۂ ہستی

(جناب بسمل الہ آبادی)

پئے کیف مسرت نہیں جام ہستی
قائم نہیں رہتا کبھی نام ہستی
موت آئے تو ٹل جائے رہائی بسمل
کچھ دن سے کہ ہم ہیں غلام ہستی

اٹھے ہوئے ہیں ہم پہ جو تاج ہستی
دینا پڑے گا اُن کو خراج ہستی
پہلے اپنے کوئی میں بلائے بسمل
ممکن نہیں مل جائے مزاج ہستی

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

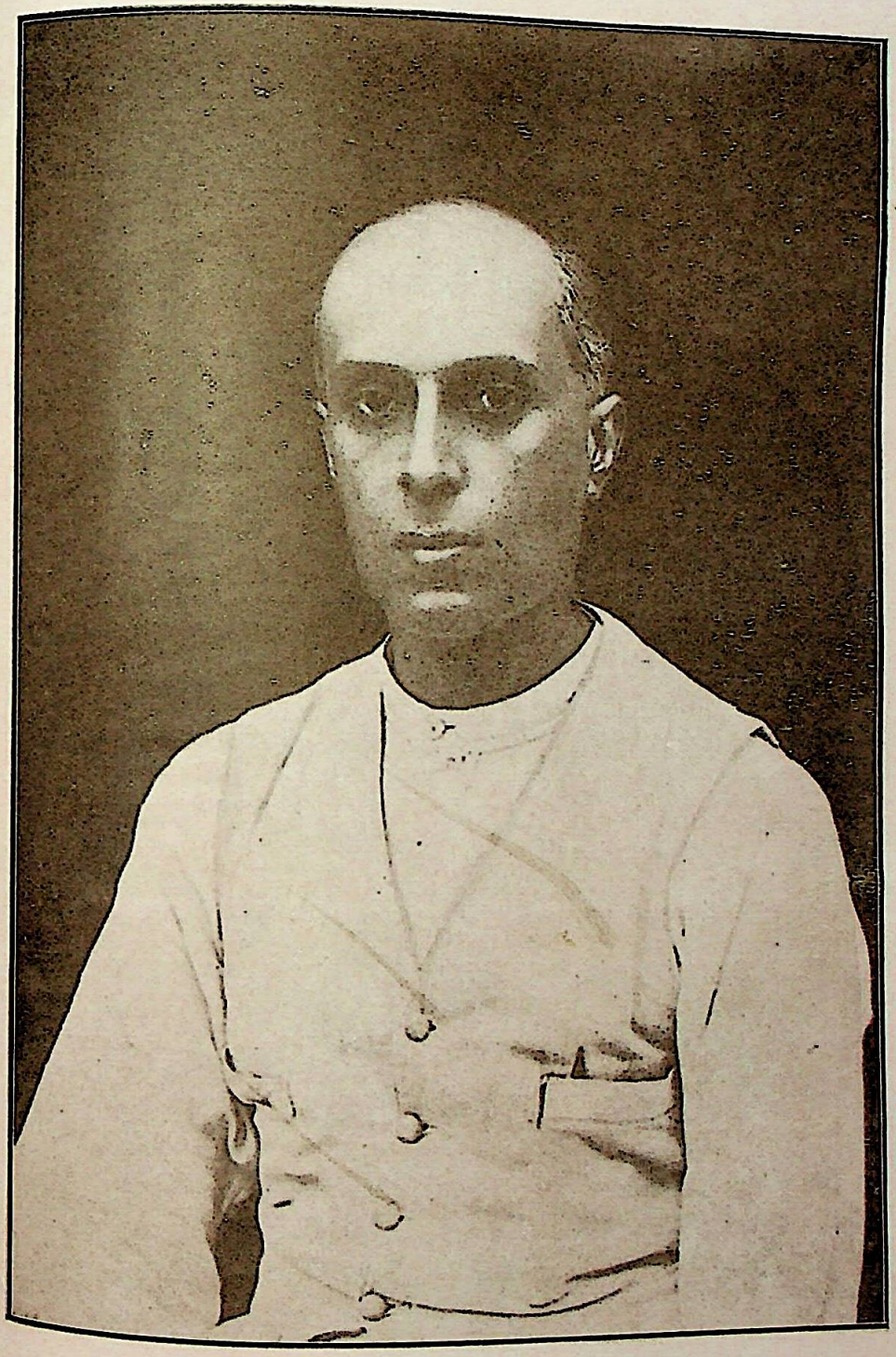

انڈین نیشنل کانگریس ، لاہور کے صدر پنڈت جواہرلال صاحب نہرو

انقلابات جہاں سب کہہ رہے ہیں حال کے
جوہری پرکھیں ذرا جوہر جواہرلال کے

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

جواہر لال نہرو

(جناب سکھدیو پرشاد صاحب سنہا بسمل الہ آبادی)

آج ہے باغِ وطن میں پھر بہار آئی ہوئی
آج مژدہ ہے مسرت کا صبا لائی ہوئی
آج گردوں پر نرالی ہے گھٹا چھائی ہوئی
آج پڑتی ہے نظر بے طور للچائی ہوئی
غیرتِ اکسیر رُتبے میں چمن کی دھول ہے
ناشگفتہ جو کلی تھی وہ بھی کھل کر پھول ہے

میکشوں کی آرزو ہے دَدو چلنا چاہئے
وقت آپہنچا سنبھلنے کا سنبھلنا چاہئے
خونِ دل کو جوش کھا کھا کر ابلنا چاہئے
ایسے میں ارماں نہ کیوں نکلے نکلنا چاہئے
پینے والے کہہ رہے ہیں یہ ہے پینے کی گھڑی
دیر اے ساقی نہ کر ہے مرنے جینے کی گھڑی

کیوں توقف اس قدر پینے پلانے کے لئے
کہدے مُطرب سے کہ آئے جلد گانے کے لئے
منتظر ہیں اہل محفل لُطف پانے کے لئے
ہو اشارہ آگ پانی میں لگانے کے لئے
کون کہتا ہے مجھے ڈر ڈر کے پیمانہ ملے
جی مرا بھر جائے یوں بھر بھر کے پیمانہ ملے

وہ مئے اُلفت کہ بیہوشوں کو جس سے ہوش ہو
کوئی ساغرِ نوش ہو تو کوئی دریا نوش ہو
دیکھکر بدمستیاں سارا جہاں خاموش ہو
اس قدر بڑھ جائے دل رگ رگ سے پیدا جوش ہو
قہر ڈھائیں گے غضب ڈھائیں گے آفت ڈھائیں گے
سرخ ڈورے سرخ آنکھوں کے قیامت ڈھائیں گے

ایک انوکھا رند ایسا بھی بھری محفل میں ہے
جس کی حسرت جس کی خواہش ہر کسی کے دل میں ہے
سہل مشکل ہوگئی مشکل کہاں مشکل میں ہے
قافلے کا قافلہ اب دامنِ منزل میں ہے

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

ناخدائی کے لئے حاجت روائی کے لئے
رہ نما اچھا ملا ہے رہ نمائی کے لئے

کیوں کسی کو مائل فریاد ہونا چاہئے — کس بنا پر خلق کو برباد ہونا چاہئے
قید غم سے ہر طرح آزاد ہونا چاہئے — شاد ہونا چاہئے دل شاد ہونا چاہئے

رات دن شام و سحر تدبیر آزادی رہے
سامنے نظروں کے بس تصویر آزادی رہے

سادگی سے سادگی کے ساتھ ناتا جوڑ کر — عیش و عشرت سے ہمیشہ کے لئے منہ موڑ کر
ساری دُنیا چھوڑ کر سارا زمانہ چھوڑ کر — چین اگر لیگا تو زنجیر غلامی توڑ کر

انقلابات جہاں سب کہہ رہے ہیں حال کے
جوہری پرکھیں ذرا جوہر جواہر لال کے

اس کی دُنیا اور ہی ہے اس کا عالم اور ہے — اس کا درماں اور ہے اور اس کا مرہم اور ہے
جو سمٹ جاتا ہے لہرا کر وہ پرچم اور ہے — سر کہیں خم ہو نہیں سکتا یہ دم خم اور ہے

قدر و قیمت میں خدا رکھے درِ نایاب ہے
آبرو موتی[1] کی ہے کیا خوب آب و تاب ہے

دُھن کا پکّا ہے اسے سودا ہے اپنے کام کا — نام ہو دنیا میں یہ طالب نہیں ہے نام کا
سامنا ہر وقت اُٹھتے بیٹھتے آلام کا — مشغلہ کب عیش کا کب تذکرہ آرام کا

خدمتِ ملکی کو سوجی سے بھکاری بن گیا
یعنی آزادی کے مندر کا پجاری بن گیا

ہر طرف دُنیا میں ہے شُہرا جواہر لال کا — کام جو ہوتا ہے وہ اچھا جواہر لال کا
بانکپن ایک ایک نے دیکھا جواہر لال کا — مانتے ہیں اہلِ دل لوہا جواہر لال کا

زور کی چلتی ہوئی آندھی جواہر لال ہے
درحقیقت پیرو گاندھی[2] جواہر لال ہے

کوئی دیکھے تو وطن پر کس طرح قربان ہے — چلتے پھرتے اس کو آزادی ہی کا ارمان ہے
سچ کہا تلسی نے پیاری آن پیاری شان ہے — سمجھو تو ہے دیوتا دیکھو تو یہ انسان ہے

کیا جواہر لال ہے سن لو زبان حال سے
دو قدم ہر کام میں آگے ہے موتی لال سے

[1] پنڈت موتی لال نہرو۔ [2] مہاتما گاندھی۔

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

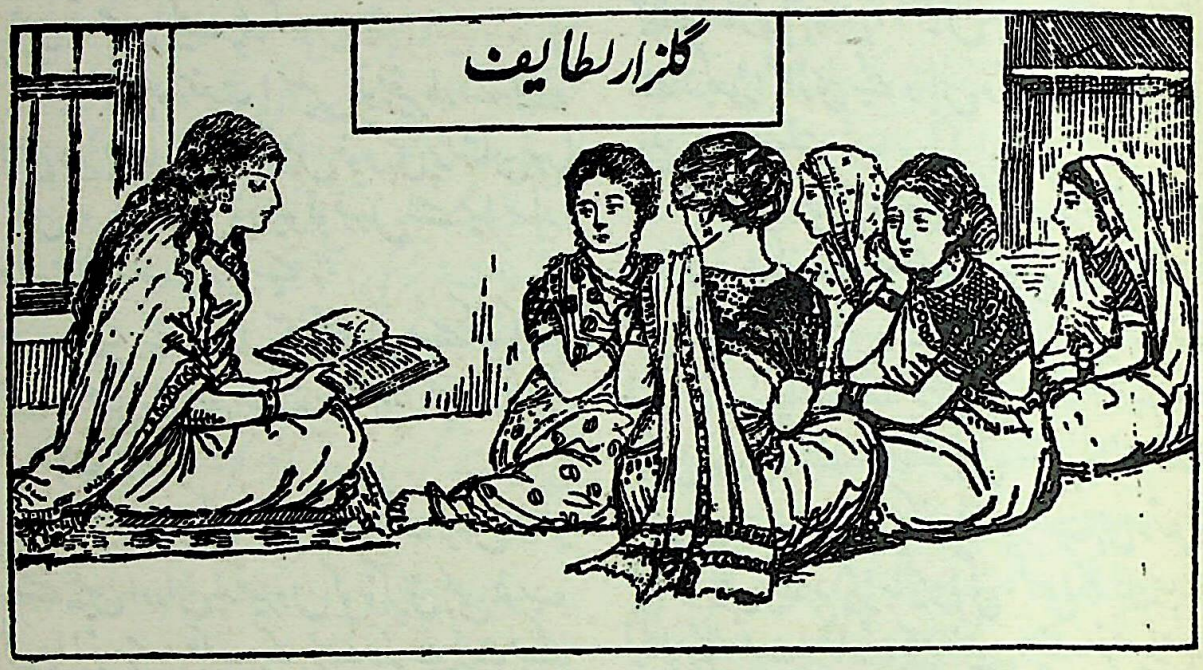

لتھوری لال

(منشی جی۔ پی۔ سریواستو صاحب بی۔ اے۔ ایل ایل۔ بی)

"انجنیر صاحب گھر میں ہیں؟"

"کہہ نہیں سکتا۔ حضور!"

"کیوں؟ کیا تیرے مُنہ میں زبان نہیں ہے؟"

"ہے کیوں نہیں مگر بلا جانے کیسے کہدوں کہ صاحب اندر ہیں یا نہیں"

"تو عجب قانونیا نوکر معلوم ہوتا ہے، اندر جاکے اُنہیں دیکھیگا بھی کہ یہیں کھڑا کھڑا باتیں بنائیگا؟"

"تو کیا چاہتے ہیں جناب! آپ کی بات کا جواب نہ دوں"

"بس، بحث مت کر، جاکے دیکھ، صاحب اندر ہیں یا نہیں"

"اگر نہ ہوئے؟"

"بدمعاش، بدتمیز! جو میں کہتا ہوں اُسے تو سُنتا کیوں نہیں"

"سُن تو رہا ہوں سرکار، بہرا میں تھوڑے ہی ہوں"

"بہرے کے بچے، میں کہتا ہوں کہ صاحب مکان میں ہیں یا نہیں، سُنا؟"

"سن لیا سرکار"

"ہائے، ہائے۔ سُن لیا تو کاٹھ کے پُتلے کی طرح کھڑا کیا دیکھ رہا ہے، جو پوچھتا ہوں بتاتا کیوں نہیں؟"

"حضور ہی تو جواب دینے پر خفا ہوتے

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

ہیں تو میں کیسے کچھ کہوں"۔

"دور ہو کمبخت! نہیں تو بغیر مارے نہ چھوڑونگا اتنی دیر ہو جانے سے تو میں خود ہی پریشان ہو رہا ہوں اور یہ بدتمیز اپنی بیوقوفیوں سے میرا سارا وقت خراب کر رہا ہے"۔

اب لیجئے، نوکر سچ مچ وہاں سے کھسک گیا، میں تو سمجھا کہ مکان کے اندر جائیگا مگر وہ تو شاگرد پیشہ کی طرف چلا گیا۔

نہ جانے ایسے بیوقوف کو لوگ کیوں نوکر رکھتے ہیں اور ان بدتمیزوں کو نوکری بھی خوب مل جاتی ہے، ملک کے بڑے بڑے پڑھے لکھے بی۔ اے اور ایم۔ اے کچہری کی سڑکوں پر خاک چھان رہے ہیں، حاکموں کے تلوں پر ناک رگڑ رہے ہیں مگر کوئی ان بیچاروں کو بات تک نہیں پوچھتا اور ان اَن پڑھ پتلوں کو لوگ خوشامدیں کر کے بلاتے ہیں، پھر بھی ان بدمعاشوں کے مزاج نہیں ملتے، نوکری تو سب ہی ایک سی، چاہے چھوٹی ہو یا بڑی، پھر یہ کیا کہ جو اُس کی قدر کرتا ہے اُس سے تو وہ بھاگتی ہے اور ناقدروں کے گلے پڑتی پھرتی ہے، کچھ نہیں، معلوم ہوا کہ یہ ملک ہی بیوقوف ہے، تب ہی تو یہاں ایسی دھاندلبازی ہے۔

خیر، نوکر تو چلا گیا مگر میں اب کیا کروں؟ میری شریمتی جی اسی گاڑی سے آ رہی ہیں، گاڑی کا وقت بھی ہو گیا ہے اور میں ابھی تک یہیں جھک مار رہا ہوں، اسٹیشن یہاں سے پانچ میل ہے، گھوڑا گاڑی مجھے وہاں وقت پر کسی طرح نہیں پہنچا سکتی۔

موٹر سے میری پہنچ ہو سکتی ہے مگر موٹر تو ایک چیز ہے، مانگنے سے بھلا کیوں کوئی دینے لگا۔ اس کے پھیر میں میں نے اپنا سارا دن خراب کر دیا، میں چاہتا تھا کہ شریمتی جی کو اسٹیشن پر لاؤں تو خوب شان سے مگر میں نہیں جانتا تھا کہ میری اس ضرورت کے وقت سب ہی موٹروں کی موٹریں ایکدم بگڑ جائیں گی، کسی کا ٹائر پھٹ جائیگا تو کسی کا سلف اسٹارٹر کام نہیں دیتا۔ غرضیکہ میں آج ایک نہ ایک ایسا عیب ہو گیا ہے جس سے موٹر چل ہی نہیں سکتی۔

تب ہار کر موٹر یا سائیکل کے لئے انجینئر صاحب کے پاس دوڑ آیا، ٹھیک پانچ بجے اسٹیشن پر گاڑی آتی ہے اور اب پانچ بجنے کو صرف چار منٹ باقی ہیں۔

اب تو شان سے بڑھکر ضرورت کا سوال ہو گیا، پھر کیا کروں، اس کمبخت نوکر کے مارے انجینئر صاحب تک میری اطلاع بھی نہیں ہوئی۔ اسٹیشن پر میرا وقت پر پہنچنا نہایت ضروری ہے۔ دھرم سوسائٹی اور انصاف کی نظروں میں شریمتی میری ہی بیوی ہیں، آج سے نہیں بلکہ برسوں سے مگر قسمت کی خوبی، آج تک اُن سے ملنے کو ترستا ہی رہ گیا۔

کئی دن سے آنکھیں پھڑک رہی ہیں

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

یا بائیں، یہ تو نہیں کہہ سکتا، شریمتی جی سے ملنے کے منصوبہ بازی میں اس بات کے جاننے کی اب تک فرصت ہی نہیں ملی، ایک تو بڑی مشکلوں سے سسرال والوں نے شریمتی جی کو اس مرتبہ رخصت کیا ہے اور میں اُن کو لانے کے لئے وہاں گیا بھی نہیں، کیونکہ داماد کا بار بار سسرال جانا ٹھیک نہیں ہوتا، اس لئے بیوی کو رخصت کرالانے کے لئے میرا ایک چچیرا بھائی بھیجا گیا تھا، اب اگر میں اپنی بیوی صاحبہ کے پیشوائی کے لئے وقت پر اسٹیشن بھی نہ جاؤں تو بڑی آفت ہو جائیگی، یوں تو پالکی والکی لیکر اور لوگ وہاں گئے ہی ہیں لیکن میرا وہاں جانا ضروری ہے ورنہ شریمتی جی ضرور روٹھ جائیں گی اور تب ملنے کا سارا مزا کرکرا ہو جائیگا۔

مگر جاؤں تو کیسے جاؤں؟ انجنیر صاحب کی موٹر بائیسکل کا ہی ایک آخری سہارا ہے اور اُن تک میری کوئی خبر پہنچانے والا ہی نہیں، بڑے آدمیوں کے مکان پر جا کے باہر سے اُن کو پکارنے کا فیشن نہیں ہے، اگر کسی طرح ہمت کرکے چلاؤں بھی تو وہ ضرور بگڑ جائینگے۔ پھر اُس وقت مجھے معافی مانگنے میں گھنٹوں لگ جائینگے تب کہیں اپنی غرض کہنے پاؤنگا، ممکن ہے اُسے وہ منظور کریں یا نہ کریں۔ یا موٹر والوں کی طرح یہ بھی کوئی بہانہ کردیں اور یہاں وقت اب بالکل ہی نہیں ہے۔

موٹر بائیسکل باہر برساتی میں کھڑی ہے۔ پوچھ پاچھ کے جھگڑے میں کون پڑے، چٹ جا کر سوار ہو لوں اور چلدوں۔ میں نے موٹر بائیسکل کبھی خود چلائی نہیں تھی تب بھی انجنیر صاحب کے ساتھ کئی بار سائیڈ کار میں بیٹھکر اُن کو چلاتے دیکھ چکا تھا اس لئے مجھے اطمینان تھا کہ اُس کے چلانے میں کوئی دقت نہ پڑیگی، لوٹ کر انجنیر صاحب کو شکریہ کے ساتھ بائیسکل واپس کرتے وقت اپنی سخت ضرورت اور وقت کی تنگی کا حال اور اُن کے نوکر کی جہالت کی وجہ سے اُن کی موٹر بائیسکل استعمال کرنے کی اجازت نہ حاصل کرنے کی مجبوری کہہ سُناؤنگا تب وہ میری اس چھوٹی سی حرکت کو ضرور معاف کردینگے بس یہی ٹھیک ہے۔

میں برساتی میں گیا، پٹرول کھولکر بائیسکل پر چڑھ گیا، پیڈل کس کس کے گھمانے لگا، پھر کیا تھا، پھٹ پھٹ دھنے کے ساتھ انجن چل پڑا اور پھٹ پھٹاتی ہوئی بائیسکل تیر کی طرح احاطہ سے باہر ہوگئی۔

پیچھے چور! چور! کا غل سُنکر گھوم کے دیکھا تو وہی کمبخت نوکر شور مچا رہا تھا اور مجھے اپنی طرف تاکتے دیکھکر اور بھی شور کرنے لگا "روکو، روکو، پھٹپھٹیا بگڑی ہے"

مگر اب میں بھلا اُس کے چرکہ میں کہاں آنے والا تھا، میں اپنے کان دبائے ہوا سے باتیں کر رہا تھا کہ اتنے میں معلوم ہوا کہ موٹر بائیسکل زمین سے ڈیڑھ فٹ اُونچی اُچھلکر جھم سے سڑک پر گر پڑی، اُس کے ساتھ ہی بکریوں کے چلانے کی آواز، آدمیوں کے غل مچانے اور گالیوں کی پوچھار

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

یکبارگی گونج اُٹھی، اب معلوم ہوا کہ اُس کمبخت نوکر کی طرف گھوم کر تاکنے میں میرا ہاتھ ذرا بہک گیا تھا اس لئے بائیسکل سڑک سے ہٹ کر پٹری پر گرد اُڑاتی ہوئی جا رہی تھی اور وہاں چار پانچ بکریوں پر جو مزے میں بیٹھی جگالی (پاگر) کر رہی تھیں جا چڑھی، ایشور جانے بکریاں مر گئیں یا فقط اُن کی ہڈی پسلی ٹوٹ کر رہ گئی۔

میری بائیسکل اُچھل پھاند کرتی ہوئی آگے بھاگتی ہی گئی مگر سڑک کے چلنے والے کچھ بدحواس ہو کر اِدھر اُدھر دوڑنے لگے اور کمبختوں نے اتنا شور مچایا کہ سامنے کی بیل گاڑی کے دونوں بیل بھڑک گئے اور ایک آتی ہوئی فٹن کے گھوڑے سے لڑ گئے، میں تو بال بال بچتا ہوا تیر کی طرح نکل گیا مگر فٹن اور بیل گاڑی دونوں وہیں لوٹ گئیں۔

"ہائے باپ مرے!" کی چیل یوں بڑی دُور تک سُنائی دیتی رہی مگر بندے نے پھر پیچھے گھوم کر تاکنے کی بیوقوفی نہیں کی، پھر تاکنے کی ضرورت ہی کیا تھی؟ میری غلطی تو کچھ تھی ہی نہیں، بکریاں ایک نہ ایک دن قصائی کے چھُرے کے نیچے جاتیں ہی، وہاں جانے کے بدلے میری بائیسکل کے نیچے پڑ گئیں، وہ بھی اُس کمبخت نوکر کی غلطی سے جس نے شور مچا کر میرا دھیان گڑبڑ کر دیا تھا۔

تو اِس بات پر راہ چلنے والوں کو بھلا اس قدر بدحواس ہونے کی کیا ضرورت تھی؟ اگر یہ لوگ عقلمندی سے کام لیتے اور چپ چاپ اپنی راہ چلے جاتے تو بیل کیوں بھڑکتے اور گاڑیاں کیوں الٹتیں، سچ پوچھئے تو انہیں لوگوں کی بیوقوفی کے سبب سے میں بھی گاڑی کے نیچے آ گیا مگر تقدیر کا میں دھنی تھا اس سے بچ گیا۔

ابھی دو میل کا بھی سفر پورا نہیں کیا کہ چوراہا (چوراستہ) آ گیا۔ اسی چوراہے پر داہنے کے سڑک پر مجھے اسٹیشن جانے کے لئے مُڑنا تھا مگر اسپیڈومیٹر پر جو نظر ڈالی تو دیکھا میری بائیسکل چالیس میل فی گھنٹہ کے حساب سے بھاگی جا رہی تھی۔

اوفوہ، اتنی تیز چال میں سائیکل کو کس طرح موڑی جا سکتی تھی، اس لئے میں نے جھٹ دونوں بریک کو دبا کر ہینڈل گھمانے کی کوشش کی۔

مگر، ہائے، ہائے، غضب ہو گیا، بریک نے کام نہیں دیا، ایشور جانے وہ پہلے سے ہوا تھا یا بکریوں کے اُوپر اُچھل کود میں بریک کی نس ڈھیلی ہو گئی تھی یا بریک کا کوئی اور پُرزہ تھا، میں کہہ نہیں سکتا۔

سائیکل تو اسٹیشن والی سڑک پر نہیں بلکہ پٹری سے بھی نیچے اُتر کر ایک لمبا چکر لگاتی ہوئی پھر اپنی ناک کے سیدھ والی سڑک پر آ گئی ایسا کرنے میں درختوں کے نیچے ایک جوڑا جو ایک دُوسرے کے کمر میں ہاتھ ڈالے بے غم پیار کے خوش غپ کرتا ہوا ٹہل رہا تھا

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

اُلٹ گیا۔ یہ اُن کے بدسلیقہ ہونے کی سزا ملی۔ اِن کمبختوں کو محبت کی باتوں کے لئے مکان میں جگہ نہیں تھی جو سڑک پر بیحیائی کرنے چلے تھے۔ اور اگر اُن دونوں کو اس طرح ٹہلنا ہی تھا تو راہ چلتے اتنے پیار میں مست نہ رہتے، ذرا آگے پیچھے دیکھکر چلتے تو صاحب اور مس صاحبہ کو اس وقت زمین پر اوندھا گرنے کی کیوں نوبت آتی۔ بقول ظفر ؎

"کم ظرف پُرغرور ذرا اپنی ظرف دیکھ
مانند جوش خم نہ زیادہ اُبل کے چل"
"پھر آنکھیں بھی تو دی ہیں کہ رکھ دیکھکر قدم
کہتا ہے کون تجھ سے نہ چل چل سنبھل کے چل"

اور اُس پر لطف یہ کہ ساتھ لے چلے تھے کتا، ذرا تماشا تو دیکھئے، آخر نتیجہ وہی ہوا جو ہونا تھا، کمبخت "بھوں بھوں" کرتا ہوا راستہ میں اڑ گیا اور میرے لاکھ بچانے پر بھی پہیوں کے نیچے آکر "پوں پوں" کرتا ہوا تڑپنے لگا۔ میں کیا کرتا؟ آپ ہی سوچئے، اس میں بھلا میرا کیا قصور تھا؟۔

کسی طرح اپنے کو گرنے سے بچاتے ہوئے اور بائیسکل کو سنبھالتے ہوئے جب تک بیچ سڑک پر آیا تب تک میں اسٹیشن والی سڑک کو چھوڑ کر دو میل اور آگے بڑھ گیا تھا، یہ تو بڑی مصیبت ہوئی۔ کس طرح بائیسکل کو روکوں، بریک کام نہیں دیتا اور نہ انجن بند کرنے کی ترکیب ہی معلوم تھی اور نہ چال گھٹانے بڑھانے کا ڈھنگ ہی جانتا تھا کسی طرح پٹرول کیٹن کی ایک ہاتھ سے ڈبری کھولی تو یہ پتہ چلا کہ لبالب بھرا ہے، میرے تو ہوش اُڑ گئے اگر میں کسی طرح سے بائیسکل نہیں روک سکونگا تو اتنا مصالحہ مجھے بات کی بات میں نہ جانے کہاں سے کہاں پہنچا دیگا، اُس پر غضب یہ کہ جس قدر میں اسے روکنے کی کوشش کر رہا ہوں اُسی قدر یہ تیز ہوتی جاتی ہے نہ جانے دھوکے میں کونسا پُرزہ میں نے چھو لیا کہ اب اس کی چال ایک دم ساٹھ میل فی گھنٹہ کی ہو گئی۔

ہائے، ہائے، میں تو لٹ گیا، برباد ہو گیا شریمتی جی سے ملنے کے سارے منصوبے خون ہو گئے سوچا تھا کہ شریمتی جی مجکو اپنی پیشوائی کے لئے نہایت ہی شان سے پھٹ پھٹ کرتا ہوا اسٹیشن پر آیا ہوا دیکھکر بہت خوش ہونگی، کیونکہ عورتیں شان، شوکت، تڑک، بھڑک اور بناؤ سنگار بہت پسند کرتی ہیں، اس لئے مجھے یقین تھا کہ وہ مجھے اس شان سے دیکھتے ہی میری ساری غلطیوں کو بھولکر مجھ سے لپٹ جائینگی اور پالکی میں بیٹھنے کے بدلے سائیدکار پر بیٹھکر گھر آئینگی، اس طرح راستہ بھر اُن سے خوب مزے مزے کی باتیں ہونگی گھر آکر تو سیدھے جنت ہی پہنچ جاؤنگا مگر اب تو ہائے۔

جنت کے راستہ سے بہک کر جہنم کی راہ پر جا رہا ہوں، کیا کروں؟ کہاں سے اس منحوس بائیسکل کے پالے پڑا؟ گھر پر رہتا تو بھی غنیمت تھی شریمتی جی سے اسٹیشن پر نہ سہی تو گھر پر ملاقات ہو جاتی، مگر

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

اب تو ہائے، نہ گھر کا رہا اور نہ گھاٹ کا، آپ ہی بتلائیے، اگر کسی طرح یہ کمبخت مشین رُکی بھی تو گھر لوٹونگا کیسے؟ ہائے، ہائے، رات کے بھی سب ہی منصوبے خواب ہو گئے۔

میں اپنی تقدیر پر آنسو بہاتا ہوا آندھی کی طرح جا رہا تھا کہ دیکھا کہ سڑک کے کنارے ایک باغ میں کسی صاحب کا پڑاؤ پڑا ہوا ہے اور اُن کی آیہ بیچ سڑک پر بچوں والی گاڑی میں صاحب کے بچے ٹہلا رہی ہے، ساتھ میں خوان ساماں بھی تھا سامنے یہ جھمیلا دیکھتے ہی میرے ہوش اور بھی اُڑ گئے بھونپو وونپو بہت کچھ بجایا، سب تو کھسک کر پٹری پر ہو گئے مگر آیہ کمبخت مارے شیخی کے آڑی رہ گئی ٹس سے مس نہ ہوئی۔

اتنے میں میری موٹر بائیسکل جھجھماتی ہوئی وہاں پہنچ گئی، بچانے کو تو میں نے بہت کچھ اُسے بچایا پھر بھی سائیڈ کار کا اگلا حصہ اُس آیہ کے پیچھے دونوں ٹانگوں کے بیچ میں اس زور سے جا اڑا کہ وہ اُچک کر لدسے میرے سائیڈ کار پر چت گر گئی اور بائیسکل اُسے ساتھ لیکر چلی اور پیچھے سے خوان ساماں چلا اُٹھا "ارے روکو، ہائے، ہائے میری عورت کو کہاں بھگائے لئے جا رہا ہے"۔ یہ کہتا ہوا وہ میرے پیچھے بدحواس دوڑا اور ڈھیلا کھینچکر مارنے لگا مگر تب تک میں [illegible] سے ہوا ہو گیا۔

ہات تیرے تقدیر کی، شریمتی جی کو [illegible] لے آنے کے منصوبوں میں چور ہو کر میں نے [illegible] کمبخت بائیسکل پر قدم رکھا تھا اور کہاں [illegible] یہ چڑیل آیہ، کپڑے تو سفید ضرور تھے مگر [illegible] بھنگن تھی یا چماری، اُس پر آفت یہ کہ جب ہوش میں آئی تو ایکدم گلا پھاڑ کر چلانے [illegible] سے کچھ زیادہ نقصان تو نہ تھا کیونکہ راہی [illegible] کے گاؤں والے اُس کی چلاہٹ پر کچھ [illegible] مجھے خالی دیکھکر رہ جاتے تھے اور کچھ ڈنڈا [illegible] گالیاں بکتے ہوئے میرے پیچھے دوڑ پڑتے [illegible] بھی میری گرد تک بھی نہیں پاتے تھے۔ [illegible] کمبختی تب پوری ہوئی جب اُس نے دیکھا [illegible] رُکتی ہی نہیں بلکہ دنا دن آگے بڑھی چلی جا [illegible] ہے تو دونوں ہاتھوں سے اُس نے میری [illegible] کی مرمت کرنی شروع کر دی اور اسی طرح [illegible] چڑیل لگاتار گھنٹہ بھر تک مجھے دُھنتی رہی [illegible] کیا حالت ہوئی ہوگی، مگر میری اس [illegible] کو شریمتی جی بھلا کیا جانیں، وہ تو اس [illegible] منہ پھلائے گھر میں بیٹھی کوس رہی ہونگی۔

(باقی [illegible])

آنکھوں سے لہو ٹپکے یا دل کی رگیں ٹوٹیں
ہم یوں ہی نباہیں گے جب تک نبھے یارانہ

تفریق مذاہب سے کیا کام شام مجکو
ایک ہی سجدے سے مطلب ہے کعبہ ہو کہ بتخانہ

(کاپی رائیٹ)

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

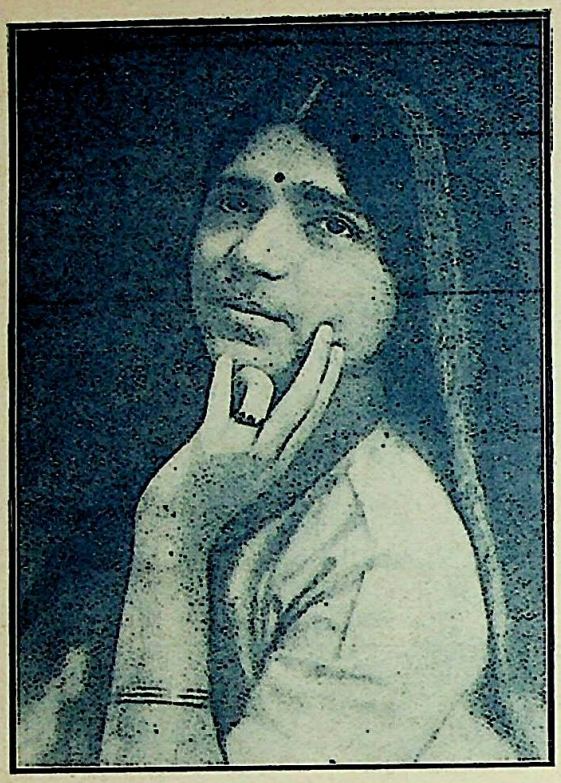

شریمتي شوبھا لکشمي امل

مدراس گورنمینٹ نے آپکو سیدپیٹ کی میونسپالٹی کی میمبر بنایا ھے -

شریمتي ھنسا مہتا بي - اے

آپ بڑودا کے گذشتہ دیوان اور بیکانیر کے موجودہ منسٹر سر منوبھائی مہتا کی گریجویٹ دختر ھیں - آپ نے یوروپ اور امریکہ میں سیاحت کرکے کافی علم حاصل کیا ھے - ترمیم سماج میں بڑی دلچسپی لیتی ھیں - خود ناگر برھمن ھوتے ھوئے بھی ویش ذات کے قابل ڈاکٹر جیوراج جی ایم - ڈی سے اپنی شادی کی ھے -

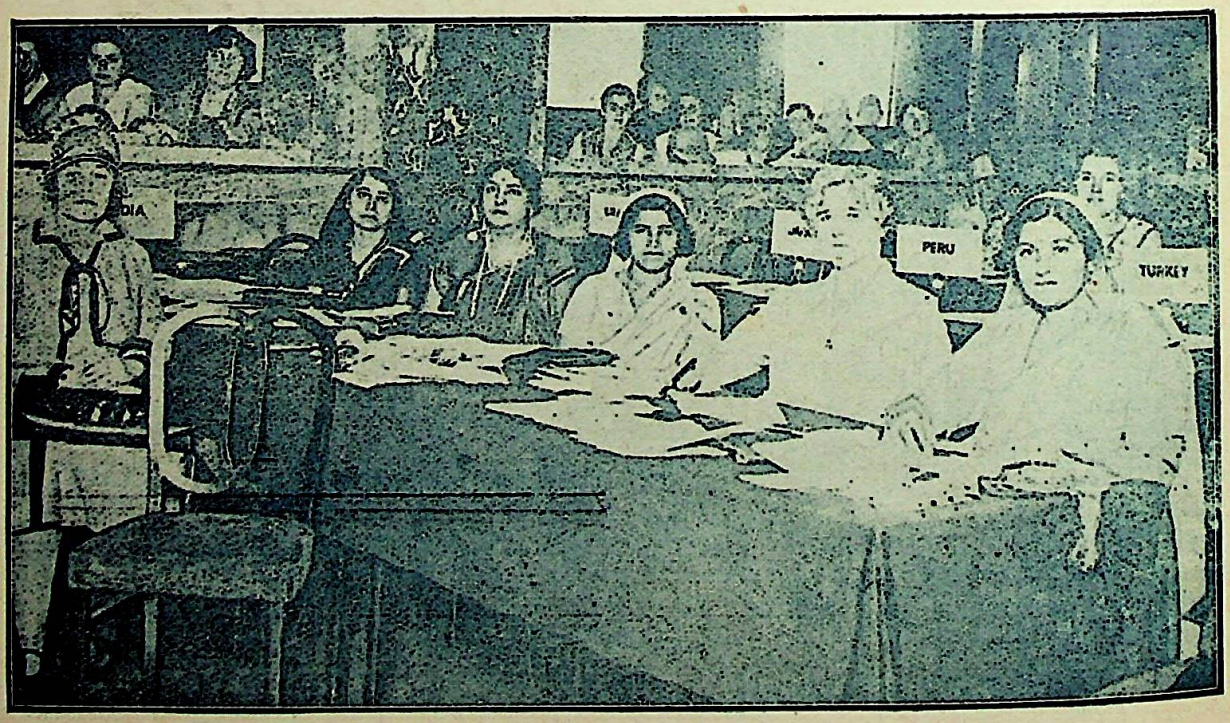

انٹر نیشنل ویمن کانگریس (برلن)

اس جلسہ میں ھندوستان کے طرف سے کتنی ایک خواتین شریک ھوئی تھیں -

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

مس میری ماتھن بی - اے

آپ بنگلور سے جلد ہی ولایت تعلیم کی غرض سے جانیوالی ہیں -

مس بھکت ادھکاری

آپ بنارس ہندو یونیورسٹی کے بی - اے کے امتحان میں اول ہوئی ہیں - آپ ہندو یونیورسٹی کے پروفیسر بی - بی ادھکاری کی صاحبزادی ہیں -

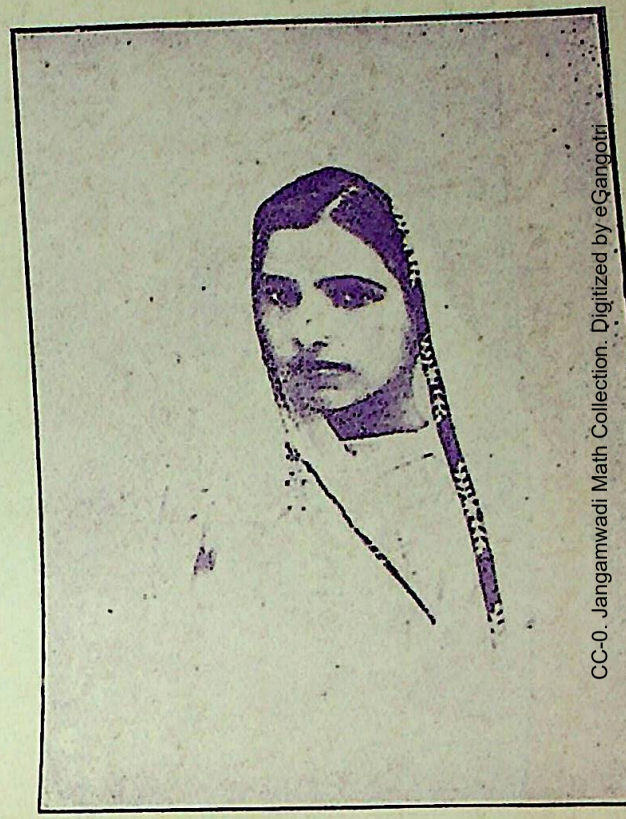

شریمتی سکھی بائی

آپ روہری (سندھ) کے اسکول بورڈ کی میمبر چنی گئی ہیں -

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

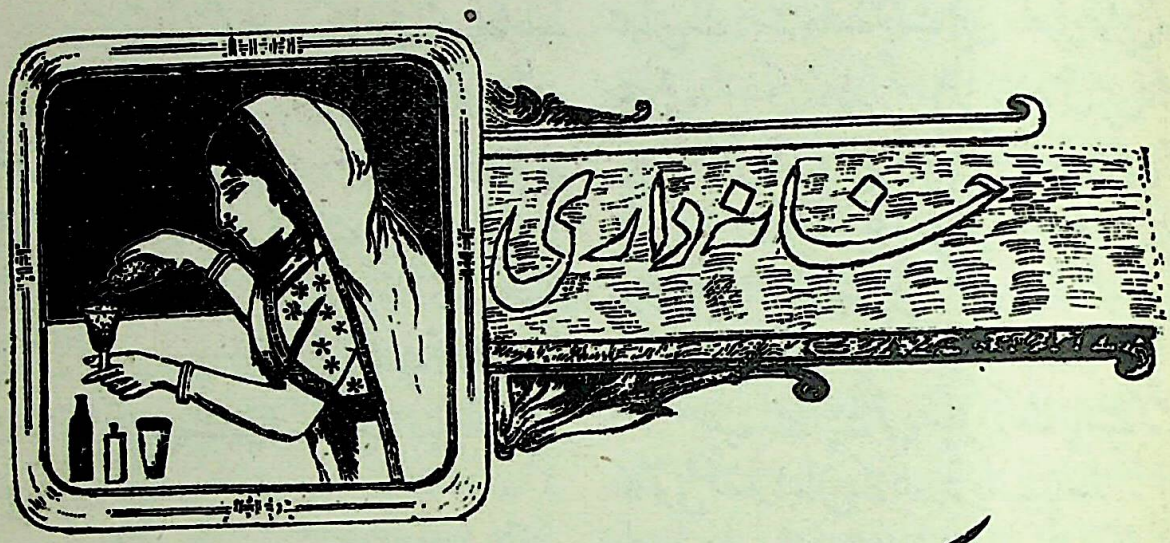

مکان کی صفائی

مکان کی صفائی میں بہت سی باتیں آجاتی ہیں، صفائی کے لئے سب سے پہلے رسوئی گھر کی طرف توجہ ہونی چاہئے۔

ہندو گھروں میں پوتنے کی ایک ہانڈی ہوتی ہے جس سے چوکہ صاف کیا جاتا ہے، صاف کرنے کے بجائے یہ چوکے کو اور بھی گندہ کر دیتی ہے، اس ہانڈی کو ذرا غور سے دیکھیں، اس کے اندر جو پتنا ہے وہ ایک نہایت ہی گندہ چیتھڑا ہے مہینوں کی جوٹھن اس ہانڈی کے اندر سڑکے رہجاتی ہے، ہزاروں مکھیاں اس کے اندر انڈا دیتی ہیں اس کے اندر جو پانی ہے وہ گندگی سے کالا ہوجاتا ہے، بھلا اس سے چوکے کی کیا صفائی ہوگی۔

ہندو لوگ جب خانہ داری کے معاملات میں کچھ ترقی کرنا چاہتے ہیں تو وے یا تو نوکروں کی تعداد بڑھا دیتے ہیں یا عورتوں کے لئے زیورات بنا دیتے ہیں یا ریشمی اور چمکدار کپڑے پہننے لگتے ہیں لیکن رسوئی گھر خوشنما اور سہانا بنانے کی مطلق فکر نہیں کرتے، بڑے سے بڑے گھروں میں جائیے جن میں مہینے میں سیکڑوں روپے خرچ ہوجاتے ہیں اُن کے یہاں مہمان بنکر دیکھ لیجئے، جتنی شان باہر ہوگی اُس کا دسواں حصہ بھی رسوئی گھر میں نہیں پائی جائیگی، وہی چوکہ، وہی مکھیاں وہی دھوئیں سے کالی کالی دیواریں وہی پیڑھا جس پر بیٹھنے میں ذرا چوکے نہیں کہ دھوتی اور کپڑوں میں کالی مٹی لگ گئی، کچھ گھر تو ایسے ملیں گے جہاں رسوئی گھر میں وہ پانی اور کیچ اور وہ دھواں ہے کہ بھاگ جانے کا جی چاہیگا کھاتے وقت دماغ میں وہ پراگندگی آجائیگی کہ کسی طرح دو چار لقمہ نگل کر چوکے سے اُٹھ جانا ہی خیر ہے۔

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

چوکے کے لئے اگر علیحدہ ایک جھاڑو رکھا جائے اور اگر اُس کو روز پانی میں اچھی طرح دھو کر ایک مرتبہ سُکھا دیا جائے تو نہ کوئی زیادہ خرچ ہے اور نہ تردد ہے، اگر چوکے کا فرش پختہ ہے تو صاف پانی اُس پر گرا کر اُسی جھاڑو سے آہستہ بلا چھینٹا اُڑائے دھو ڈالا جائے تو کیا حرج ہے اور اگر فرش کچا ہے تو صاف پانی کے ساتھ ہاتھ ہی سے بلا پتنا کے لیپ دیا جائے تو بھی اچھا ہے۔

رسوئی گھر سے دھواں نکلنے کا مناسب انتظام رکھا جائے، اگر غریب ہیں تو چھوٹے چھوٹے کمل کی آسن پر بیٹھ کے اور سامنے ایک اُونچے پیڑھے پر تھالی وغیرہ میں کھانا رکھ کے کھایا جائے تو نہایت آرام سے کھا بھی سکتے ہیں اور کھاتے وقت طبیعت بھی خوش رہیگی، اگر امیر ہیں تو کھانے کا کمرہ الگ کرلیں اور اپنی سماتی کے مطابق اُس کو سجالیویں، تخت پر سفید چادر بچھا کر اُس پر بیٹھنے کے لئے ایک خوبصورت آسنی کا استعمال رکھیں اور اُس پر ایک چھوٹی چوکی پر جس پر سفید چادر پھیلی ہو اچھے برتنوں میں کھانا رکھ کر کھایا جائے صفائی بھی آجائیگی اور طبیعت بھی نہایت خوش ہوگی۔

مکان میں گندگی کا دوسرا مقام نابدان ہے۔ آنگن سے کیچڑ، پانی اور جوٹھن تو روزمرہ بٹور لئے جاتے ہیں پھر بھی ان کا زیادہ تر حصہ نابدان کے راستہ بہتا ہے، روز کیا مہینوں نابدان صاف نہیں کیا جاتا، گھر کا کیچڑ، پانی، برتن کی کالکھ، تھوک، بلغم، کھکھار، بچوں کا پیشاب پاخانہ، ناک، پان کی پیک سب ہی نابدان کے راستہ بہائے جاتے ہیں، گھر کی عورتیں سے جب گندگی بٹور کر آنگن میں پہنچا دیتی ہیں ہیں کہ صفائی ختم ہوگئی لیکن گندگی نابدان میں ہو کر بدبو اور بیماری پیدا کر رہی ہے، ہزاروں نابدان میں بلبلا رہے ہیں، مکھیوں نے نابدان گھر بنا رکھا ہے۔

سب سے پہلے تو یہ خیال رکھنا چاہئے کا کوئی فضلہ نابدان کے اندر نہ جانے پائے۔ حاجت روائیوں کے لئے دوسرے طریقے اختیار کئے نابدان کی صفائی کے لئے اگر پیسہ ہے تو مہتر کی تنخواہ روز نہیں تو دوسرے، تیسرے دن نابدان صاف کرا پانی سے بالٹی ڈالکر دھلا دینا چاہئے اور فینایل چھڑک چاہئے اور اگر پیسہ نہیں ہے تو صاحب خانہ یا انکی نابدان کی صفائی کرلیویں اور فینایل کا استعمال

مکان میں گندگی کا تیسرا مقام پاخانہ ہے صفائی کی فکر زیادہ رہنی چاہئے لیکن لوگ اس سے زیادہ بے پرواہ ہیں۔

ہندوستان میں پاخانہ زیادہ تر دو قسم کے ہیں مغلی یا قدمچے، دونوں ہی آبدست کے سے نم رہتے ہیں، مکھیوں کی فوج وہاں کے لئے رہتی ہے، مہتر بھی ایسا کرتے ہیں تو اپنی ٹوکری میں اُٹھالے گئے کچھ وہیں گلے اس سے بجد بدبو پھیلتی ہے، مغلی کے اندر یا مٹی کی ڈلیا رکھدینا چاہئے اور قدمچے مٹی کے گملے جو کولتار سے پوتے ہوئے ہوں

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

کے اندر باریک پسی ہوئی مٹی یا راکھ کسی برتن میں موجود رکھنا چاہیئے، جو صاحب پاخانہ کو استعمال کریں وہ فارغ ہونے کے بعد مٹی یا راکھ چھڑک کے فضلہ کو ڈھانک دیا کریں، اس طرح سے مکھیاں نہ بیٹھیں گی اور بدبو نہ پھیلے گی، مغلی اور قدمچہ سے ہٹکر آبدست لیا کریں، روزمرہ صفائی کے لئے مہتر کا انتظام رہے اور فینایل چھڑکوا دیا جایا کرے، پاخانہ کا اگر فرش کچا ہے تو مہتر کو دو چار پیسہ دیکر ہفتہ میں دو بار لپوا دینا نہایت ضروری ہے، پاخانہ کا دروازہ بند رکھا جائے محض ٹاٹ کا پردہ نہ پڑا رہے۔

تھوکنے یا پیک پھینکنے یا ناک صاف کرنے کے لئے مٹی کے برتن یا اُگالدان مناسب مقامات پر مکان میں رکھے رہنا چاہیئے، یہ نہیں کہ جہاں چاہا ان ضرورتوں کو رفع کر لیا۔

بدن کی صفائی

ہندوستانیوں کو اور خاصکر ہندوؤں کو یہ سکھلانے کی ضرورت نہیں کہ وہ نہا لیا کریں، وے نہا تو لیتے ہیں لیکن زیادہ تر نہانا یا نہ نہانا اُن کا برابر ہے، بہتیرے دو چار لوٹا سر پر پانی گرا لینا نہانا سمجھتے ہیں، اس سے وہ اپنا ہندو پنا ظاہرا تو ضرور قایم کر لیتے ہیں لیکن بدن کی صفائی اس سے نہیں ہوتی، پیر، بغل، ران، کمر، پیٹھوں کی صفائی محض پانی اُنڈیل لینے سے نہیں ہوتی

ایک دقت اور بھی ہے، کھلے کنوئیں پر یا مکان کے آنگن میں یا بھیڑ میں نہانے سے مرد یا عورت جسم کے پوشیدہ حصّوں کو صاف نہیں کر سکتے، جہاں تک ہو سکے نہانے کے لئے تنہائی کا مقام تجویز کرنا چاہیئے تاکہ جسم کے پوشیدہ حصوں کی پانی سے خوب صفائی کی جا سکے اور وہ حصے خوب پونچھے جا سکیں ورنہ محض دو لوٹا پانی گرا لینے سے داد وغیرہ کے قسم کے مرض جسم پر نمودار ہو جائینگے اور میل تو دُھلیگی نہیں۔

کپڑے کی صفائی

ممالک متحدہ میں کپڑے کی صفائی کی ذمہ داری دھوبی پر ڈالی جاتی ہے لیکن اگر دھوبی نہ ملے یا دھوبی کے لئے پیسہ نہ ہو تو کیا کرنا چاہیئے؟ محض کپڑوں کو پانی میں نم کر کے نچوڑ ڈالنے سے صفائی نہیں آئیگی، مناسب ہے کہ صابون کا استعمال رکھا جائے، ایسے ملک بھی ہیں جہاں کپڑوں کی صفائی کا انتظام گھر کی عورتیں رکھتی ہیں صابون لگانے کے لئے ایک چوکی رکھ لیتی ہیں۔ شام کو یا رات میں صابون کپڑوں میں لگا کر رات بھر ایک بالٹی میں ڈال دیا، صبح پانی سے اچھی طرح کپڑوں کو کھنگال کر تاکہ صابون اور میل نکل جائے سوکھنے کے لئے پھیلا دیا، نہایت ہی

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

اچھا طریقہ ہے، کپڑوں کو بحفاظت رکھنا چاہیئے
اِدھر اُدھر پھیلے رہنا نہ چاہیئے۔

صنف نازک کا احترام

(از قلم منشی جگ جیون لال صاحب بھٹناگر۔ بی۔ اے)

آداب مجلسی

بظاہر یہ ایک معمولی سا سوال ہے اور ہر شخص جس سے کہ اس موضوع پر گفتگو کی جائے فوراً منتو یا دھرم کی دیگر مستند کتابوں کے حوالے پیش کر دیگا۔ لیکن اگر اس اہم مسئلے پر خوب اچھی طرح غور کیا جائے تو ہمیں افسوس کے ساتھ اس امر کا احساس ہوگا کہ ہمارے دعوئی محض کتابوں تک ہی محدود ہیں، جہاں اس سوال کا عملی پہلو درپیش ہوگا وہاں ہم بالکل ناکامیاب رہ جائینگے، روزمرہ کی زندگی کو لیجئے، ہم ٹرین میں سفر کر رہے ہیں، گاڑی مسافروں سے کھچا کھچ بھری ہوئی ہے، ایک سٹیشن سے ایک خاتون سوار ہوتی ہے، اُس غریب کے بیٹھنے کے لئے ذرا سی جگہ نہیں ہے لیکن ہم ہیں کہ اپنی خوش پوشی کا ناجائز فائدہ اُٹھا کر کافی جگہ گھیرے بیٹھے ہیں، ہم آرام سے تختے پر لیٹے ہوئے ہیں لیکن وہ دیوی جگہ نہ ہونے کی وجہ سے کھڑی ہے، ہمارے دل میں یہ خیال تک نہیں آتا کہ اُسے جگہ دیکر خود قدرے تکلیف برداشت کرلیں تو کوئی مضائقہ نہیں، ہمیں پر اگر کوئی مغربی تہذیب میں نشوونما پایا ہوا شخص موجود ہوتا تو فوراً اپنی جگہ سے کھڑا ہو جاتا اور جگہ اس خاتون کے لئے چھوڑ دیتا، سڑک پر ہے، لوگوں کا ہجوم زیادہ ہے، ایک عورت ہے، لوگ فوراً اُس کے لئے راستہ چھوڑ دیتے ہیں، ہماری ہندوستانی ذہنیت اس بات کی بہت کم پرواہ کرتی ہے، ہم سگرٹ نوشی کر رہے ہیں، نزدیک ہی ایک دیوی بیٹھی ہے، سگرٹ کا دھواں اس طرف جا رہا ہے، دیوی اُس سے پریشان ہے، ہمیں یہ خیال تک نہیں آتا کہ یہ حرکت خلاف تہذیب ہے، بعض موقعوں پر عورتوں کی موجودگی میں ایسی حرکتیں زبانی اشارتاً، کنایۃً کی جاتی ہیں جو آداب مجلسی کے لحاظ سے قطعی ناجائز اور ناواجب ہوتی ہیں، فحش غزلوں کا گانا، آپس میں بیہودہ مذاق کرنا، فقرے بازی اور آوازے کسنا، بیجا قہقہے فضول کی بکواس، یہ سب ہمارے اخلاق کا ایک بدنما دھبہ ہیں۔

آجکل کی زندگی میں ہم مغربی اقوام کی نقل میں نقل کرتے ہیں، کھانے، پینے، پہننے اور طرز زندگی میں بہت کچھ مغربی تہذیب کا ہے لیکن جہاں اُن کی ذاتی خصوصیات کا درپیش ہوتا ہے، جہاں اُن کی خوش اخلاقی اور آداب مجلسی کا سوال پیدا ہوتا ہے وہاں ایسا جاہلانہ مظاہرہ کرتے ہیں کہ دوسری قوم کے لوگ ہماری طرف حقارت بھری نظر

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

دیکھنے لگتے ہیں، ہم نقل کرنا جانتے ہیں تقلید کرنا نہیں جانتے، ہندوستان کا غیر تعلیم یافتہ اور جاہل طبقہ جس میں عموماً دیہات کے کاشتکار لوگ شامل ہیں اس اُصول کو قطعی نظر انداز کر دیتا ہے، گنگا، جمنا یا دیگر تیرتھوں پر جب کہ میلوں کی وجہ سے ہجوم ہوتا ہے یہ لوگ ایسا طوفان بدتمیزی بپا کرتے ہیں کہ توبہ ہی بھلی۔ بہت کم دیہاتی عورتیں ایسے موقعوں پر جانے کا حوصلہ کرتی ہیں، دیہاتی زبان کے فحش گانے نیز کئی اس قسم کے مظاہرے جو خلاف تہذیب اور مخرب اخلاق ہوتے ہیں وہ بے روک ٹوک کرتے ہیں، اگر کوئی عورت آگئی تو بس غریب کی شامت ہے، جہلا کا ایک گروہ ہر ممکن خرافات سے اُن کو مخاطب کرتا ہے اور حکام کھڑے ہوئے تماشہ دیکھتے ہیں کان تک نہیں ہلاتے۔ یہ تو رہی اُس طبقے کی بات جو غیر تعلیم یافتہ ہونے کی وجہ سے قابل رحم اور کسی قدر قابل معافی ہے لیکن زیادہ افسوس اُن روشن خیال تعلیم یافتہ نوجوانوں پر آتا ہے جو خود کو مغربی تہذیب کا علمبردار کہتے ہیں، اُن میں زیادہ تر تعداد کالج کے طلبا کی ہے، جن کے اخلاق میں کچھ عرصے سے ایک نمایاں تبدیلی واقع ہوگئی ہے، اس کا جلد انسداد ہونا چاہیئے۔

پردہ

متعدد بار یہ سوال علمی سوسائٹیوں کے زیر بحث رہا ہے اور بہت کچھ اس سوال پر روشنی پڑ چکی ہے لیکن جو لوگ اس کے حامی و مددگار ہیں اور اس موضوع پر نہایت مدلل تقاریر کر سکتے ہیں اس کے عملی پہلو میں بہت پیچھے ہیں، کوئی ذی ہوش اور انصاف پسند آدمی اس مجلسی قید کو گوارا نہ کریگا ادبی کتابوں اور مذہبی لٹریچر میں کہیں بھی اس نامراد رواج کا ذکر نہیں ہے لیکن پھر بھی تعلیم یافتہ پبلک پورے طور پر اس پر کاربند ہونے کے لئے تیار نہیں ہے، یورپ کے اخلاق پر کافی سے زیادہ نکتہ چینی کی جاتی ہے اور اس کی گراوٹ بڑا سبب بے پردگی اور مجلسی آزادی خیال کی جاتی ہے لیکن ہم اس خیال سے ایک حد تک اتفاق نہیں کرتے قدرت کا خاصہ ہے کہ جس چیز کو چھپا کر رکھنے کی کوشش کی جاتی ہے اُس چیز کو دیکھنے کا شوق زیادہ ہوتا ہے، اس کا نتیجہ بہت سی ایسی پوشیدہ خرابیاں ہیں جو ہم لوگوں کی بیخکنی کر رہی ہیں۔

دماغی زناکاری جو خیالات کی پراگندگی سے پیدا ہو رہی ہے ہمیں زوال کی طرف لئے جا رہی ہے عورتوں سے بات کرنے میں ہمیں حجاب آتا ہے، ہم اُن سے تمیز سے گفتگو بھی نہیں کر سکتے، اُن کے ساتھ کہیں جا نہیں سکتے، آ نہیں سکتے، اُن کی طرف سے بے حد بے اعتباری ہے، کیا یہ اُن کی سخت ہتک نہیں ہے؟ مہاراشٹر، گجرات اور احاطہ مدراس نیز پنجاب میں عورتیں بے نقاب اور بے پردہ پھرتی ہیں لیکن اس سے اُن کے اخلاق پر کوئی خاص اثر پڑتا معلوم نہیں ہوتا، مہاراشٹر میں مہمان کی تواضع کا تمام بار گھر کی مالکہ کے اُوپر ہوتا ہے

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

وہی بے حجاب آکر مہمان کو کھانا کھلاتی ہے، وہاں
کوئی نقص پیدا ہوا معلوم نہیں ہوتا، انگریز آپس
میں آزادی سے ملتے جلتے ہیں، عورتوں کے گروہ
میں بلا روک ٹوک آجا سکتے ہیں، اُن کی طبیعت
میں ذرا ہچکچاہٹ نہیں ہوتی، کوئی بُرا خیال دل
میں پیدا نہیں ہوتا، انگریز عورتیں بے باکانہ طور
پر پھرتی ہیں، ٹینس کھیلتی ہیں، خرید و فروخت
کرتی ہیں، موٹر چلاتی ہیں، سائیکل پر سوار ہوتی
ہیں، کوئی آنکھ اُٹھا کر بھی نہیں دیکھ سکتا، اُن
عورتوں میں ایک قسم کی سنجیدگی ہوتی ہے، مرد
بھی اس سے مبرّا نہیں ہوتے، اسی سنجیدگی پر تمام
انگریز قوم کی عظمت کا راز مضمر ہے، پردہ ملک کی
فلاح و بہبودی میں ایک زبردست رُکاوٹ ہے۔ اسکی
وجہ سے ہم ہندوستانیوں کے اخلاق پر ایک ایسا
زبردست اثر پڑ رہا ہے جو آئندہ چلکر سخت مضر
ثابت ہوگا۔ جس طرح بلا ہچکچاہٹ ہم اپنی بہن
سے بات چیت کر سکتے ہیں اُسی طرح دوسری عورتوں
کو ماں اور بہن کا مرتبہ دیکر ہم اُن سے بلا روک ٹوک
گفتگو کرنے میں کیوں کترائے ہیں، ہم اُن کی کچھ
خدمت نہیں کر سکتے، ہمارے اندر وہ کشادہ دلی
موجود نہیں ہے جو ملک کے ہر مرد اور ہر عورت
میں ہونی چاہیئے۔

ہماری تہذیب اور تمدّن پر مغرب کا عکس پڑ رہا
ہے اور پردے میں رہنے والی خواتین بھی اکثر اسی
رَو میں بہی چلی جا رہی ہیں، پردے میں رہنے والیوں

کی بھی تقریباً پوشش وہی ہوتی ہے جو پردے
سے باہر رہنے والیوں کی، محض یہ خیال
مرد کو دیکھ لینے سے ہی عورت بد اخلاق ہو
ہمارے خود کے بد اخلاق ہونے کی عین دلیل
یہ بات محتاج بیان نہیں ہے کہ اس مذموم
نے ہماری مستورات کی تندرستی پر کتنا بُرا
ڈالا ہے، ایک کافی تعداد ایسی ہوتی ہے جو
حمل کی تاب بھی نہیں لا سکتیں اور یا تو وضع
کے وقت ہی اس دنیا کو خیر باد کہہ جاتی ہیں
دائم المرض ہو جاتی ہیں، تپ دق، انتڑیوں
کی بیماریاں، رحم کے امراض نیز ہسٹریا
نامراد مرض میں مبتلا ہو جاتی ہیں اور گھر
ناکارہ ہستی شمار کی جانے لگتی ہیں، بہت
پُرانے لوگ اکثر یہ کہکر پردے کی تائید کرتے
کہ آخر پہلے بھی تو پردہ ہوتا تھا، ابھی کیا
بات ہوگئی جو امراض بھی بڑھ گئے اور امراض
تعداد میں بھی اضافہ ہوگیا، اس زمانے میں
ہے کہ گھر کے کام کاج نیز اور کچھ اسباب ایسے
ہوں جن سے اُنکی صحت اچھی رہتی ہو لیکن
کے ساتھ ساتھ اسباب اور حالتیں بھی بدلتی
ہیں، دور جدید ایسا نہیں ہے جبکہ اس
کو اتنی اہمیت دی جائے۔

اعتدال

شاستروں کی رُو سے شادی کا مدعا
طاقتور اور قابل اولاد پیدا کرنا ہے لیکن

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

کے نوجوان اپنے گریبان میں منہ ڈالکر دیکھیں کیا وہ اس اصول کے پابند ہیں؟ میں وثوق کے ساتھ کہونگا، ہرگز نہیں، شادی کے بعد وہ بیوی کو انسان نہ سمجھ کر حیوانوں سے بدتر سلوک کرتے ہیں اور اپنی اور اُنکی صحت کا ستیاناس کر لیتے ہیں، آج کل عورتوں کے بیمار اور کمزور رہنے کا یہ بھی ایک بڑا سبب ہے، شہوت اور جذباتِ نفسانی کو پورا کرنے کے لئے عموماً لوگ اعتدال سے گذر جاتے ہیں، تندرست اور قابل اولاد پیدا کرنے کا خیال اُن کے لئے ایک فضول سی بات ہے۔ اس لئے جو اولاد اس حیوانی جذبہ کے زیر اثر پیدا ہو جاتی ہے وہ عموماً نالائق، ناقابل اور کمزور ہوتی ہے، والدین کو نہ اُس سے اتنی محبت ہوتی ہے اور نہ پرورش کی پرواہ۔ موجودہ زمانے میں افزائش نسل کو روکنے کا سوال بڑے بڑے دماغوں کے سامنے درپیش ہے، کوئی ادویات تجویز کر رہے ہیں، کوئی دیگر ذرائع پیش کر رہے ہیں لیکن اعتدال کا سوال بہت کم دماغوں میں آیا ہے، یہ مسئلہ بھی قابل غور ہے اور ہماری فوری توجہ کا محتاج ہے، عورتیں بہت عرصے سے محتاج بنا دی گئی ہیں اور اُن کے رگ و ریشے میں دائمی غلامی اور پتی ورتا دھرم کا خیال زبردستی ٹھونس دیا گیا ہے لیکن زمانہ اس بات کا مقتضی ہے کہ اُن کے ساتھ انسانوں کا سا سلوک کیا جائے تاکہ ہندوستان کی آنے والی نسلوں میں حبّ قوم و ملک پیدا ہو۔

مذہبی زندگی

یہ سوال کچھ ایسا پیچیدہ ہے کہ وثوق کے ساتھ اس پر کچھ نہیں کہا جا سکتا، مختلف خیالات کے لوگ مختلف مذاہب کے پیرو ہوتے ہیں لیکن عورتیں کسی خاص مذہب کی پیرو نہیں، وہ عموماً لکیر کی فقیر ہوتی ہیں اور جب تک اُن کو اصلی معنوں میں اُس کے نشیب و فراز نہ سمجھائے جائینگے وہ اس پر کاربند نہ ہونگی، آریہ سماج سوشل اور مذہبی ریفارم میں دیگر مذاہب سے بہت آگے بڑھ گیا ہے لیکن اب بھی ایسے متعدد گھرانے ہیں جہاں عورتیں اپنے اُنہیں پرانے رواجوں پر قائم ہیں اور ٹس سے مس نہیں ہوتیں آریہ سماج نے اُن کی مذہبی زندگی و نیز تہواروں کے لئے کوئی عملی تجویز پیش نہیں کی، اس لئے گھر کے مرد خواہ کتنے ہی آزاد خیال ہوں لیکن اکثر مستورات کے توہم کا شکار ہوتے ہیں، سیکڑوں کانفرنسیں ہوتی ہیں، سدھائیں قائم ہوتی ہیں لیکن مستورات کے لئے وہ محض کاغذی گھوڑے ہیں۔ نہ وہ اُس کے اصول کو سمجھکر خود کاربند ہوتی ہیں اور نہ مردوں کو کاربند ہونے دیتی ہیں، اس کا ایک سبب ہے؟ اس کا سبب ہے ہماری لاپرواہی جو ہم اُن کی طرف سے کرتے ہیں، خود مذہبی اُپدیش سُنتے ہیں، سبھاؤں میں جاتے ہیں لیکن عورتوں کو جن کی وجہ سے ملک کی نسلوں پر ایک دائمی اثر پڑ سکتا ہے ہم بالکل

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

فراموش کر دیتے ہیں، مرد قومی کام کرتے ہیں
سیاسی معاملات میں حصہ لیتے ہیں، سودیشی چیزیں
استعمال کرتے ہیں لیکن عورتیں بالکل اس کا
نعم البدل ہوتی ہیں، وہ خود بھی بڑھیا سے بڑھیا
ولایتی چیزیں استعمال کرتی ہیں اور اپنے بچوں کو
بھی وہی استعمال کراتی ہیں، اس کی وجہ بھی یہی
ہے، ہم اُن کو برابری کا درجہ دینے کے لئے تیار
نہیں اور اگر پبلک پلیٹ فارم پر یا قومی اخبارات
میں اُس طبقے کی حمایت بھی کرتے ہیں تو عموماً ہم اُن
خیالات کو عملی صورت دینے سے پہلو تہی کرتے ہیں
گوسوامی تلسی داس جی نے رامائن میں کہا ہے:-

"ڈھول گنوار شودر پشو ناری
یہ سب تاڑن کے ادھیکاری"

نہ جانے اُنھوں نے یہ خیال کیوں ظاہر کیا
ہماری پراچین اور قدیمی تہذیب پر دھبہ
یہ جہالت اُسی زمانہ کے ساتھ چلی گئی
اگر طبقہ نسواں کے حقوق کا خیال نہ رکھا
ہندوستان کو کبھی امن کی زندگی نصیب
اور دن بدن ہم لوگ کمزور ہو کر اپنا نام و نشان
صفحۂ ہستی سے مٹا دینگے اس لئے نوجوانوں
ہندوستانی ہونے کا دعویٰ کرتے ہیں صنف
اور اُس کے حقوق کا احترام کرنا چاہئے اور
کو دکھا دینا چاہئے کہ ہم دراصل مادر شکتی
پجاری ہیں۔

اپنی اپنی سمجھ

سفر میں ہوشیاری کی بہت ضرورت رہتی ہے
مگر بہت کم ایسے آدمی ہونگے جو کافی طور سے اسکی
فکر کرتے ہوں، یہ میرا دیکھا ہوا ہے کہ ایک صاحب
ہر اسٹیشن پر گارڈ صاحب کو سلام کر لیتے تھے، پوچھنے
پر جواب دیا کہ گارڈ صاحب گاڑی کے مالک ہیں
سلام کرنے سے اتنا فائدہ تو ضرور ہو گا کہ گاڑی
تو کم سے کم نہ لڑائینگے، گاڑی تو نہیں لڑی مگر
وہ بیچارے پانچ چھ اسٹیشن کے بعد اُتار دئے گئے
شاید انہیں یہ آج تک نہیں معلوم ہوا کہ کس وجہ
سے وہ اُتارے گئے۔

میں تم کو نوکر رکھ سکتا ہوں مگر تمہارے
منشی مہادیو پرشاد کا سرٹیفکٹ نہیں ہے
"حضور سرٹیفکٹ کی ضرورت ہی کیا ہے؟
طلائی گھڑی میں دکھا سکتا ہوں جس پر
نام کھدا ہوا ہے"

"کسر رہ گئی میرے مرنے میں تھوڑی
ذرا پھر نظر بھر ادھر دیکھ لینا"

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

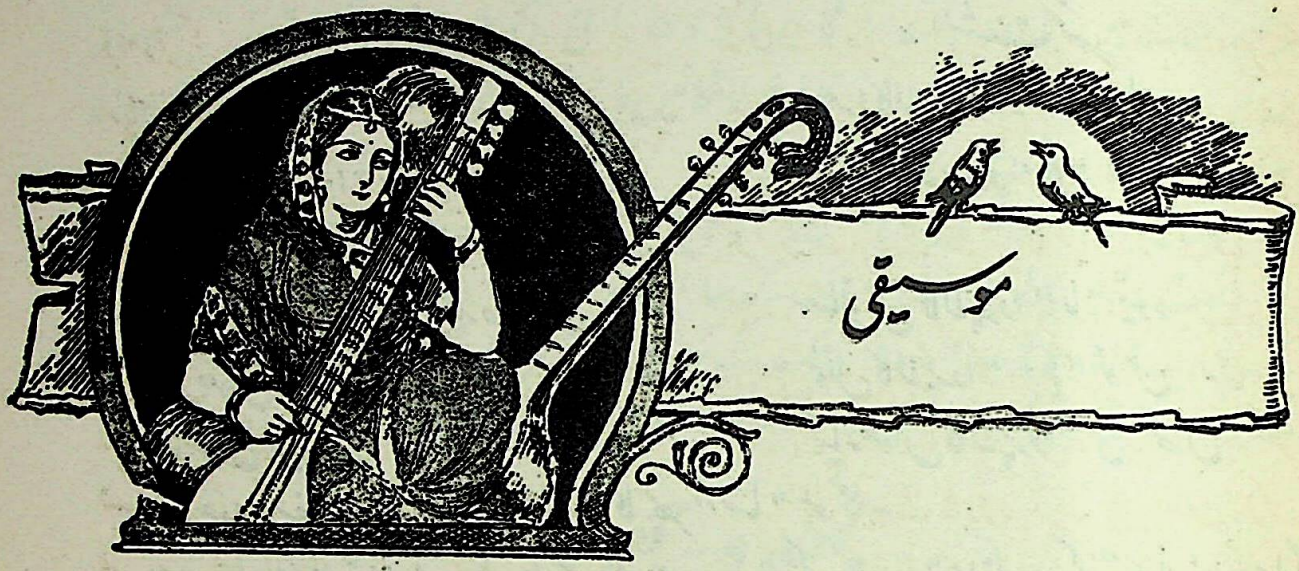

موسیقی

[بابو کرن کمار مکھو پادھیا (نیلو بابو)]

گانے، بجانے اور ناچنے کے جاننے کی خواہش سبھی کو ہوتی ہے لیکن ناچنے کو رہنے ہی دیجئے، گانا بجانا ہی سیکھنے میں کم پریشانی نہیں ہوتی، اچھے استادوں ہی کی کمی کیا کم ہے؟ موسیقی کے متعلق جو کچھ بھی کتابیں ہیں اُنہیں بغیر کسی استاد کی مدد کے سمجھنا آسان کام نہیں ہے، ان دقتوں کے دُور کرنے کا ہم نے ایک سہل طریقہ ڈھونڈھ نکالا ہے، ذیل کے نقشہ کی مدد سے بغیر کسی مشکل، موسیقی کے متعلق بہت کچھ علم حاصل ہو سکتا ہے زیادہ دماغ خرچ کرنے کی ضرورت نہ پڑیگی۔ بس اُنگلیاں چلاتے جائیے۔ قبل اس کے کہ نقشہ کے بارے میں ہم کچھ کہیں کچھ باتوں کا بتا دینا ضروری ہے، گانا، بجانا سیکھنے کے پیشتر سُروں کے متعلق گیان کر لینا ضروری ہے۔

ہارمونیم کے باجے میں کل ۳۶ پردے ہوتے ہیں، اس میں ۲۱ سفید اور ۱۵ کالے پردے کہلاتے ہیں اور وہ تین سپتک میں منقسم ہوتے ہیں یعنی ایک سپتک میں ۱۲ پردے ہیں، ۵ کالے اور ۷ سفید، انہیں بارہوں پردوں کو ملا کر ایک سپتک کہتے ہیں، اسی طرح سے کل ۳۶ پردوں کے تین سپتک ہوئے، پہلے سپتک کا نام "مندر" دُوسرے کا "مدہ" اور تیسرے کا "تار" ہے۔ گانا بجانا دوسرے یعنی "مدہ" سپتک سے شروع ہوتا ہے، اس لئے سپتک کے کسی پردے کو "سا" قرار دے کر مشق کرنا چاہئے۔

ہر ایک سپتک میں بارہ پردے اس طرح رکھے گئے ہیں:۔

("سی" سے "سی" یا "بی" والے باجوں میں)۔

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

شدہ سُر	انشت سُر
پہلا سفید پردا "سا"	دوسرا کالا پردا "رے" کومل
تیسرا سفید پردا "رے" شدہ	چوتھا کالا پردہ "گا" کومل
پانچواں سفید پردا "گا" شدہ	
چھٹا سفید پردا "ما" شدہ یا کومل	ساتواں کالا پردا "ما" تیور
آٹھواں سفید پردا "پا"	نواں کالا پردا "دہا" کومل
دسواں سفید پردا "دہا" شدہ	گیارھواں کالا پردا "نی" کومل

تیرھواں سفید پردہ "مدہ" سپتک کا پھر "سا" ہو گا۔

اسی طرح سے تیرھویں پردے سے پچیسویں پردے تک "مدہ" سپتک کے "سا"، "رے"، "ما"، "پا"، "دھا"، "نی" اور "سا" ہوئے اور اسی طرح تیسرے سپتک کے یعنی "تار" سپتک کے "سا"، "رے"، "گا"، "ما"، "پا"، "دھا" اور "نی" ۲۵ سے ۳۶ پردے تک ہوئے۔

اب ذیل کے نقشہ کے دیکھنے سے سب باتیں معلوم ہونگی:-

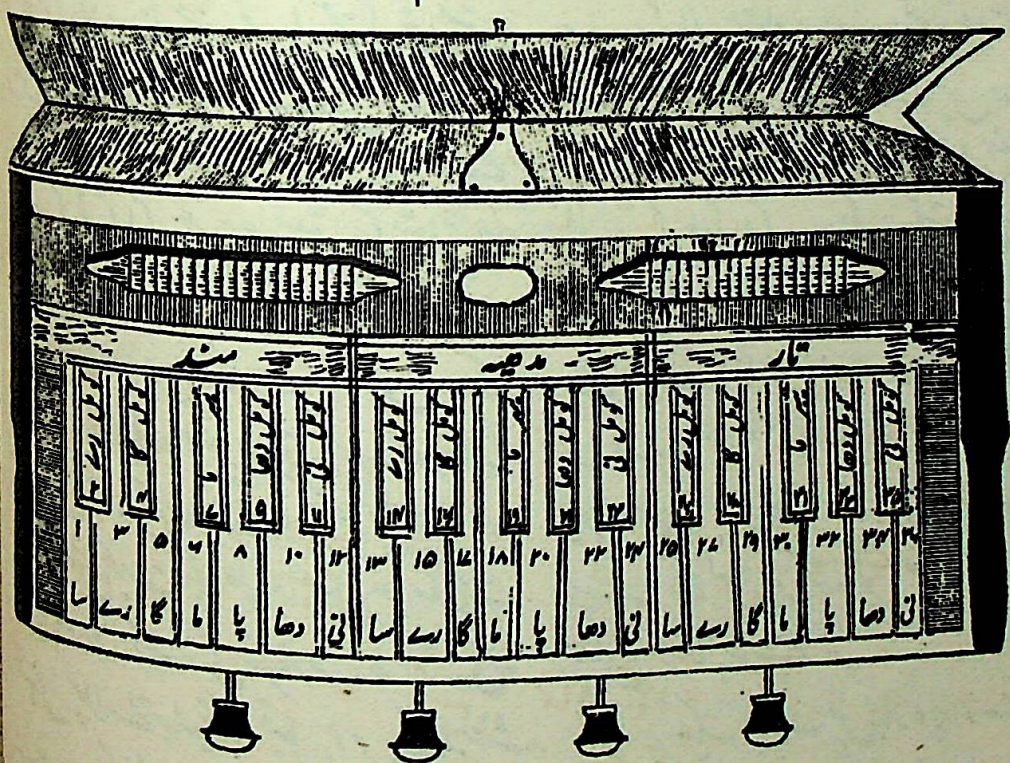

اس نقشہ میں سا ۱، رے ۳، گا ۵، ما ۶، پا ۸، دھا ۱۰، نی ۱۲ × × × × سا ۱۳ "شدہ"

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

سرگرم کہلاتے ہیں ما اور رے ۲ ، گا ۴ ، ما ۴ ، دھا ۹ ، نی ۱۱ (کومل) یہ "وکرت" یا "انشت" سُر ہیں - جب آپ سا ، رے ، گا وغیرہ گائیں یا بجائیں اُس وقت آپ کو "شدہ" سروں میں گانا یا بجانا چاہیئے -

نوٹ (۱) "سا" اور "پا" کے "کومل" یا "تیور" نہیں ہوتے -

نوٹ (۲) پہلے یا "مندر" سپتک کے سا ، رے ، گا ، ما وغیرہ کے سُروں کے لئے ان سُروں کے نیچے ایک نقطہ ہوگا اور "مدہ" سپتک کے سُروں میں کہیں بھی نقطہ نہ ہوگا مگر "تار" سپتک کے سُروں کے لئے ہر ایک سا ، رے ، گا وغیرہ سُروں کے اُوپر نقطہ ہوگا -

بھیرو - جھپتال

(پنڈت کدار ناتھ جی "بیکل" بی - اے - ایل - ٹی)

(دس ماترا)

استھائی —

بھج من رام رام
نت اکام پُن دہام
کرلے سپھل جنم
گالے گن للام

انترہ —

(۱)

داتا ترا تا دیال
کٹت بھرم - موہ - جال
کرپا سندھو دین دیال
پریم پنج دیا دہام

(۲)

دانی تو سم نہ اور
یاچک موسم نہ دین
مانگت ہے پریم بھیکھ
سیوک چرن تھام

(۳)

الس انماد چھوڑ
سائیں سے نیہہ جوڑ
بیکل، اوسر گنوائے
کوئی آوے نہ کام

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

استھائی

تال	دھن	نا	دھن	دھن	نا	کت	تا	دھن	دھن
	×		۳			۰		۱	
	رے	—	رِے	رِے	سا	دھا	—	نی	سا
	پھ	ج	م	ن	را	—	م	را	—
	رِے	رِے	رِے	—	سا	ماگا	گا ما	رے	—
	ن	ٹ	ا	کا	م	پلو	ن	دھا	—
	سا	—	دھا	—	دھا	نی	سا	رے	—
	ک	ر	لے	—	س	پھ	ل	ج	ن
	سا	سا	دھا	—	پا	ما	گا	گا	رے
	گا	—	لے	—	گ	ن	ل	لا	—

انترہ

×		۳			۰		۱	
پا	—	دھا		دھا	نی	سنا	سنا	—
دا	تا	ترا	—	تا	—	د	پا	—
دھا	—	نی	سنا	سپا	رنے	—	سنا	سنا
ک	ٹ	ت	بھر	م	پلو	ہ	جا	—
دھا	دھا	رے	رے	سا	سنا	دھا	نی	دھا
کر	پا	س	ن	دہو	دی	ن	بن	ن
پا	ما	رے گا	گا ما		پا	رے	—	سا
پر	یم	پلو	ن	ج	د	یا	دھا	—

دوسرے انترے بھی اسی طرح بن جائیں گے۔

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

راگ کے بارہ میں بھیرو ٹھاٹھ کل صبح کے وقت کا راگ رکھب اور دہوت کومل سُر۔ دہوت وادی، رکھب سنوادی اور رکھب دہوت آندولت۔ بھگت۔ رس۔ پردہان۔

نشانات

۱۔ نیچے نقطہ والے "مندر" سپتک کے بغیر نقطہ والے "مدہ" سپتک کے اور اوپر نقطہ والے "تار" سپتک کے سُر ہیں۔ سا۔ سا۔ سا۔

۲۔ نیچے باریک لکیر والے سُر کومل ہیں۔ رے۔ گا۔ دہا۔ نی، اور بغیر لکیر والے "تیور" سُر ہیں جیسے رے، گا، دھا۔ نی۔

۳۔ کومل مدہم کو "ما" اور تیور "ما" لکھتے ہیں۔

۴۔ جو سُر کسی سُر کے اُوپر لکھا ہو جیسے سا ما گا اسکو النکارک سر یا "گریس نوٹ" کہتے ہیں۔ (النکارک سر تھوڑا سا دبانے کے بعد اصل سر کو دبانا چاہیئے)

تال

۱۔ سم کا نشان = x

خالی کا نشان = ٥

تالوں کے لئے = ۱، ۳

۲۔ ب اس نشان کے اندر لکھے ہوئے سُروں کو ذرا ہی دیر تک گانا یا بجانا چاہیئے

۳۔ جن سُروں کے سامنے (ـ) ڈیش کا نشان ہو اُن کو ایک ماترا وقت تک اور بڑھانا چاہیئے جیسے سا ـ رے ـ اگر ایسے دو یا دو سے زیادہ ہوں تو وہاں اتنے ہی ماترا وقت تک رکنا چاہیئے جیسے ـ ـ ـ

۴۔ جہاں سے استھائی یا انترہ کو دُہرانا ہو گا وہاں (*) نشان ہو گا۔

اپنی اپنی سمجھ

پچھلی مرتبہ جب کلکتہ میں ہندو اور مسلمان لڑے تھے تو شراب کی دوکانیں بند ہو گئی تھیں اور اگر پھر لڑائی ہو گی تو قطعاً یہ دوکانیں بند ہو جائیں گی، اُمید قوی ہے کہ کم سے کم شرابی تو شراب نہ ملنے کے خوف سے لڑنے کی ہمت نہ کرینگے

"انساں شراب پی کے نہ کیوں شور و شر کرے
اک شر شراب میں ہے تو اک شر بشر میں ہے"

لڑکے نے اسکول پہنچکر اپنے استاد کو یہ خط دیا ماں کا خط تھا اور مضمون یہ تھا:۔

تسلیم، میرا لڑکا بہت ہی نازک ہے اور ڈرتا بھی بہت ہے اگر وہ کچھ شرارت کرے (اکثر وہ شرارت بھی کرتا ہے) تو براہ مہربانی جو لڑکا اُسکے پہلو میں بیٹھا ہو اُسکی گوشمالی کیجئے، اُمید ہے کہ ساتھی کی سزا کافی ہو اور میرا لڑکا پھر شرارت نہ کرے۔

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

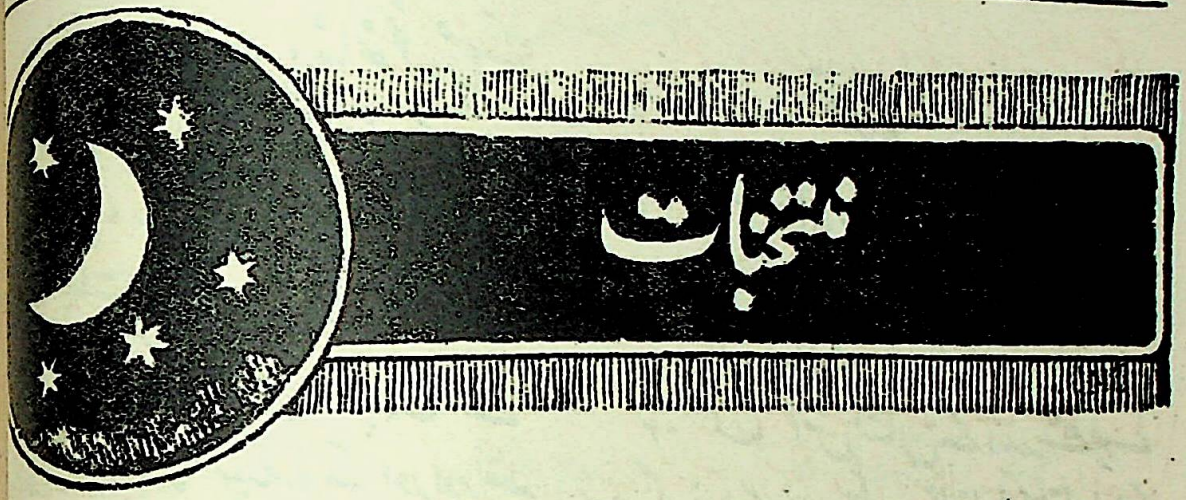

دلچسپ معلومات

(جناب محمود احمد خاں صاحب پروفیسر کلیہ)
جامعہ عثمانیہ

چاند کے عجیب وغریب اثرات

ایک لڑکے نے جو حال ہی میں انگلستان کے کسی موضع میں بعلّت سرقہ گرفتار ہوا تھا اپنی بریت میں یہ انوکھا عذر پیش کیا کہ وہ "قمری دیوانگی" کے مرض میں مبتلا ہے۔ ہر چوتھے ہفتے ایک خاص قمری تاریخ کو اس پر جنون کا دورہ تاری ہوتا ہے جس کے بعد اُس سے بے اختیار ایسے افعال سرزد ہوتے ہیں جن پر اسے بالکل قابو نہیں ہوتا۔

اس مقدمہ نے اُن خیالات کو از سرِ نو تازہ کر دیا ہے جو قدیم زمانے میں چاند کے اثرات کے متعلق قائم کئے گئے تھے، لاطینی زبان میں دیوانے کو لیونیٹک کہتے ہیں اور یہ لفظ انگریزی کے علاوہ یورپ کی بعض اور زبانوں میں بھی استعمال کیا جاتا ہے، اسی سے یہ ظاہر ہوتا ہے کہ زمانہ میں دیوانگی کو (لیونو) یعنے چاند اثرات کا نتیجہ قرار دینے کا خیال کس قدر قدیم ادبیات انگریزی میں دیوانے اکثر کے نام سے موسوم کئے گئے ہیں، ایک زمانہ کاشتکاروں کا بھی یہ عام خیال تھا کہ اندھیری راتوں میں جو بیج بویا جاتا ہے وہ اتنا اچھا نہیں اُگتا جتنا چاندنی رات میں بونے سے ہے لیکن عرصہ سے اس خیال کو ایک وہم سے وقعت نہیں دی جاتی۔

مگر حال ہی کے علمی انکشافات اور سے یہ ممکن نظر آنے لگا ہے کہ چاند کے اثر کے متعلق پُرانے لوگوں کے خیالات محض ہی نہیں ہیں بلکہ ان میں اُس سے کچھ حقیقت مضمر ہے۔ جو روشنی چاند سے پہنچتی ہے وہ بلاشبہہ سورج ہی کی روشنی فرق اتنا ہے کہ یہ روشنی چاند سے منعکس ہو تک آتی ہے اور جو روشنی کسی کرہ کی سطح

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

ہو رہی ہو وہ پھر معمولی روشنی نہیں رہتی بلکہ مقطب[1] ہو جاتی ہے۔ یعنی روشنی کی شعاعوں کا راستہ ایک سطح مستوی تک محدود ہو جاتا ہے۔ بیج کو مقطب روشنی کو زیر اثر رکھکر جو تجربے کئے گئے ہیں اُن سے یہ ثابت ہوتا ہے کہ اس قسم کے بیج میں معمولی بیج کی بہ نسبت زیادہ بالیدگی کی قوت ہوتی ہے۔ اس سے یہ پتہ چلتا ہے کہ کاشتکاروں کا پرانا خیال کسی نہ کسی معقول وجہ پر ضرور مبنی ہے۔ اسی طرح سے اثر پذیر اشخاص کا مقطب روشنی سے متاثر ہونا بھی محال نہیں ہے۔ یہ اثر گو خفیف ہوگا لیکن جن لوگوں کی دماغی کیفیت صحت حواس اور دیوانگی کی "سرحد" پر واقع ہے وہ ان کے دماغی توازن کو برہم کرنے کے لئے کافی ہوگا۔

اس کے علاوہ دوسرے طریقوں سے بھی اس بات کا پتہ چلتا ہے کہ نہ صرف حیات انسانی بلکہ ہر قسم کی جاندار مخلوق کے نوعی خصائص پر چاند کا معتد بہ اثر ہوا ہے۔ اب یہ قطعی طور پر ثابت ہو چکا ہے کہ حیات کی ابتدا سمندر میں ہوئی تھی، سب سے قدیم ذی حیات مخلوق بحری جاندار تھے۔ ارتقا کی متعدد منزلیں طے کرنیکے بعد اُن سے بتدریج ایسے اجسام پیدا ہوئے جو جوار بھاٹے کے درمیانی وقفوں میں زمین پر رہ سکتے تھے، ان کو جلتھلئے کہتے ہیں، ان میں سے بعض نے نشو و نما پا کر زمین پر نقل و حرکت کے ذرائع پیدا کر لئے لیکن پھر بھی زندہ رہنے کے لئے ان کو ہر اٹھائیس دن کے بعد "مد" کے موقع پر سمندر کے پانی میں شرابور ہونے کی ضرورت باقی رہی، علمائے حیاتیات کا خیال ہے کہ زندگی کے وہ مختلف مظاہر جن کی دوریت تشکلاً قمر سے مطابق رکھتی ہے ابتدا میں اسی قسم کی اشکال سے پیدا ہوئے تھے، جنکا مدوجزر پیدا کرنے میں چاند کے اثرات پر انحصار ہے۔

مذکورۂ بالا اُمور سے یہ سوال پیدا ہوتا ہے کہ کیا یہ ممکن نہیں کہ سیاروں سے روشنی کی جو شعاعیں نکلتی ہیں وہ حیات ارضی پر خاص قسم کا اثر ڈالتی ہوں؟ گو یہ سچ ہے کہ کوئی شخص جسے سائنس میں کچھ بھی دخل ہے یہ تسلیم نہیں کریگا کہ یہ اثر وہی ہے جس کے مدعی قدیم اور جدید زمانے کے نجومی ہیں۔

تاہم اب لوگ یہ سمجھنے لگے ہیں کہ کسی ایسے عام خیال کو محض اس بنا پر غلط ٹھہرانا کہ سائنس کی رُو سے اس کی کوئی معقول توجیہ نہیں ہو سکتی ہرگز قرین صواب نہیں، بڑے بڑے سائنس داں یہ طرز عمل کبھی اختیار نہیں کرتے۔

کھانے کے بعد ورزش

عام طور پر خیال کیا جاتا ہے کہ اگر کھانے کے بعد بلا توقف کسی قسم کی جسمانی ورزش شروع کر دی جائے تو وہ صحت کے لئے مضر ثابت ہوتی ہے لیکن کائیز ہاسپٹل

---

[1] پولرائزڈ [2] امفیبئنس۔

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

لندن میں تین ڈاکٹروں نے جو تجربے کئے ہیں اُن سے اس پرانے خیال کی تردید ہوتی ہے۔ یہ ڈاکٹر اس نتیجے پر پہنچے ہیں کہ اگر کھانے کے بعد معتدل قسم کی ورزش کی جائے تو اس سے فعل ہضم میں بہت مدد ملتی ہے جب تک ورزش ناگوار نہ معلوم ہونے لگے یہ ہضم میں کوئی فتور پیدا نہیں کرتی۔

جن لوگوں نے اس قسم کی ورزش کی باقاعدہ مشق شروع کر رکھی تھی اُنکے متعلق یہ معلوم ہوا کہ وہ کھانے کے بعد بلا مضرت دو میل تک آہستہ آہستہ دوڑ سکتے ہیں لیکن جو اُس کے عادی نہیں تھے اُن کے ہاضمے میں صرف گھنٹہ بھر پیدل چلنے ہی سے خلل واقع ہوگیا۔ اِن ڈاکٹروں کا قول ہے کہ اگر کھانا کھانے کے بعد سخت قسم کی ورزش کی جائے تو اس سے معدے میں عارضی طور پر قلت الدّم یا کمی خون کی شکایت پیدا ہو جاتی ہے کیونکہ اس طرح خون کی کچھ مقدار معدے سے مشقت کرنے والے عضلات میں منتقل ہو جاتی ہے۔

سات نئے سیارے

شاہی رصد خانہ بلجیم کے ہیئت داں موسیو ڈلپورٹے حال ہی میں سیارہ مشرقی کے قریب سات چھوٹے چھوٹے کئی سیارے دریافت کئے ہیں جو ہماری زمین کی مانند سورج کے گرد گھومتے ہیں، جس آلے سے اُنہوں نے اس اکتشاف میں کام لیا ہے وہ ایک بہت بڑی دُوربین ہے جو خود بخود اجرام فلکی کی تصویر کھینچتی اور آسمان پر اُن کے محل وقوع کا نقشہ تیار کرتی ہے اس قسم کی دُوربین 'فلک نگار' الیسٹروگراف سے موسوم کی جاتی ہے۔

ہیئت دانوں کا قول ہے کہ مریخ اور مشتری کے مابین تقریباً ایک ہزار چھوٹے چھوٹے سیارے ہیں جو اپنے مدار پر آفتاب کے گرد گھومتے ہیں ان میں سے سب سے بڑے سیارے کا قطر بیس میل سے زیادہ نہیں ہے۔

کیا اہل مریخ ہم سے گفتگو کرنا چاہتے ہیں

فرانس کے ضلع ... کے باشندوں نے ... روز تک متواتر ... کہ رات کے ٹھیک دس بجے آسمان پر چند ... روشن ستارے نظر آتے ہیں جن کے ٹوٹنے سے چنگاریوں کی بارش ہونے لگتی ہے، اسی قسم کا واقعہ اس ضلع میں ٹھیک ایک سال پہلے اُسی وقت پر ظہور میں آیا تھا۔ اس موقع پر چنگاریوں کی روشنی اتنی تیز تھی کہ رات کی ... میں دو سو گز کے فاصلے پر چلتے ہوئے آدمی ... اچھی طرح سے دکھائی دیتے تھے۔

دوسرے سال اس واقعہ کے ٹھیک ... وقت معرض ظہور میں آئے اور بالکل اتنی ... مرتبہ چنگاریوں کے دکھائی دینے سے ایک ... فرانسیسی محقق پینا نامی نے یہ نتیجہ نکالا ہے ... ان چنگاریوں کا باعث محض شہابی مادہ ہی ... بلکہ ممکن ہے کہ اس روشنی کے ذریعہ سے اہل ... نے اہل زمین سے نامہ و پیغام کا آغاز کیا ہو ...

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

مس سلیڈ (ایڈمرل سلیڈ کی لڑکی اور مہاتما گاندھی
کی پیرو) چرخا کات رہی ہیں۔

شریمتی اپیپا - بی - اے
آپ حال ہی میں پلٹر (مدراس) میں فرسٹ کلاس
مجسٹریٹ بنائی گئی ہیں۔

مسٹر موتی رام جی چودھری
کراچی کے آریہ سماج کے سیکریٹری اور وہاں کے اسپیشل اسکول
کے ہیڈ ماسٹر ہیں۔ آپ نے اچھوت ذات کی ایک
معمولی پڑھی لکھی لڑکی سے شادی کیا ہے۔

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

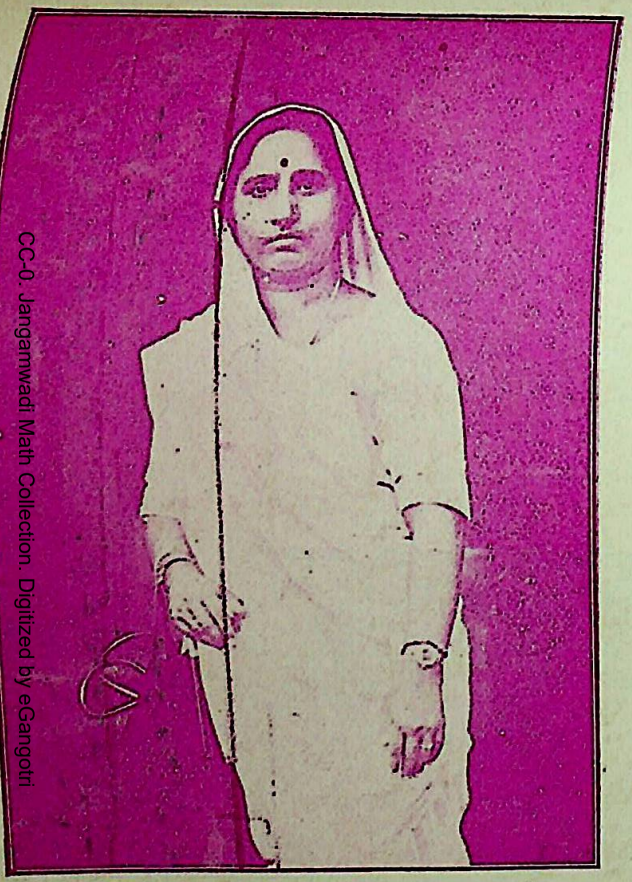

شریمتی دھگوری دیوی
آپ بڑودا سیٹی کی میونسپالٹی کی میمبر بنائی گئی ہیں

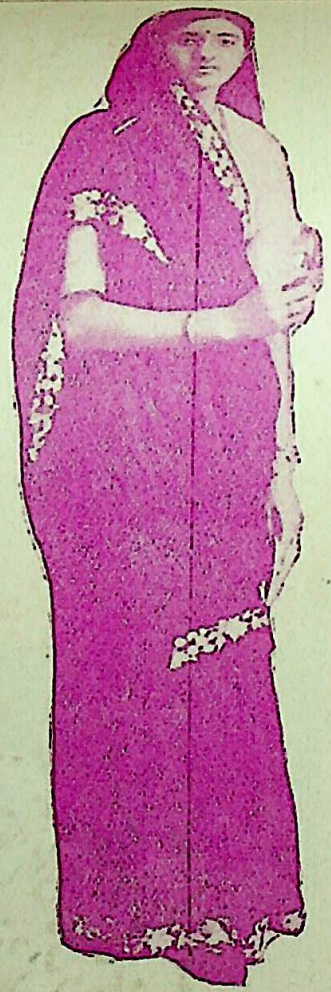

مس بچو بین لوٹوالا
آپ شری آر - بی لوٹوالا کی عالم لڑکی ہیں - حال ہی میں
ولایت سے واپس آکر اپنے والد کی جگہ مشہور "ہندوستان"
یومیہ اخبار کی ایڈیٹر ہوئی ہیں اور بڑی خوبی سے
سرانجام دے رہی ہیں - آپ ہندوستان میں یومیہ
اخبار کی اول لیڈی ایڈیٹر ہیں -

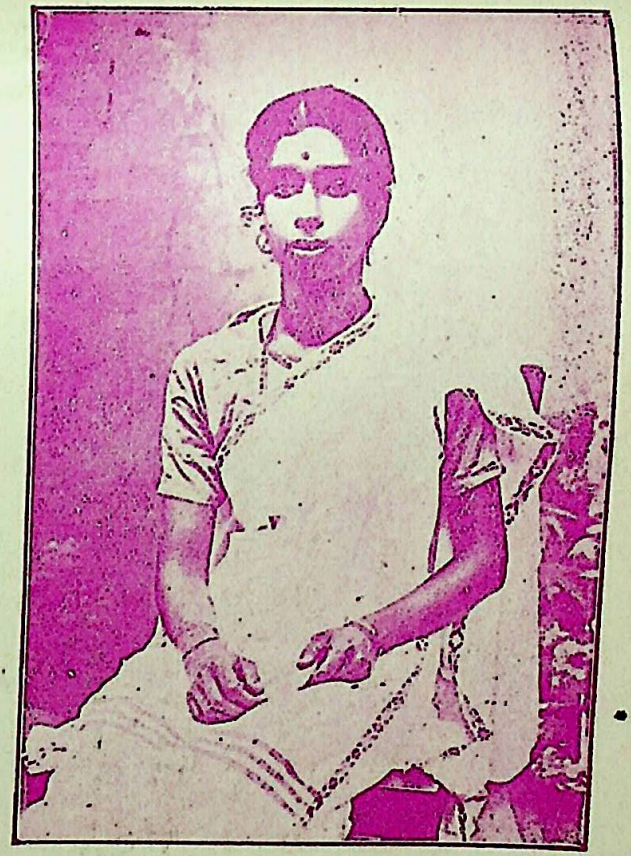

مس کے - ملاتھی
آپ راشٹر بھاشا پریکچھا میں اول ہوئی ہیں - اس کے
لئے آپکو تمغہ بھی ملا ہے -

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

درندوں کے پکڑنے کی نئی تدبیر

دنیا کی تاریخ میں یہ پہلا موقع ہے کہ آئندہ مختلف باغہاے حیوانات کے لئے درندے اور دُوسرے وحوش جسمانی ایذا پہنچاے بغیر گرفتار کئے جاسکیں گے۔ جنوبی افریقہ کے شہر پرٹیوریا میں جو باغ حیوانات ہے اُس کے مہتموں نے اس کام پر کپتان برٹٹ ہیرس کو مامور کیا ہے، صاحب موصوف نے ایک ایسی گولی ایجاد کی ہے جس سے جانوروں کی جان لئے بغیر ان کا شکار کیا جاسکے گا، یہ گولی درحقیقت ایک قسم کی پچکاری ہے، جس درندے کے یہ گولی لگیگی وہ صرف اتنا ہی محسوس کریگا کہ اُسے ایک کانٹا چبھ گیا ہے، گولی کے اندر دوا ہوگی جو جلد کے اندر پہنچکر درندے کو بیہوش کر دیگی۔ (سائنس)

غزل

نشہ ہے عشق کا بیفکر ہوں غیرت و ذلت سے
تمہیں کیا دوستو اب اس نصیحت اور فضیحت سے

کسوٹی ہے یہ اک، گھبرائے انساں کیوں مصیبت سے
یہ نعمت بھی خدا کی دین ہے ملتی ہے قسمت سے

خیال آتشیں رُخ میں تڑپ کر جان نکلی تھی
بنا ہے کشتہ سیماب میری خاکِ تربت سے

گرفت یوں ہی جنوں میں ہے گیں ہیں سب کی سب بکڑیں
چھٹے اب بھی نہیں زنجیر کی بندش کی زحمت سے

گلا تھا منتظر لیکن نہ رُخ کی تیغ قاتل نے
گلہ اُس سے ہے کیا ہاں ہے شکایت اپنی قسمت سے

خرام ناز سے اُس گل نے جو تلووں سے روندا ہے
ہزاروں پھول کی بُو آرہی ہے خاکِ تربت سے

جو دم عاشق کا گذرے سایۂ شمشیر قاتل میں
عجب پر لطف ہے، بڑھکر ہے وہ جنت کی راحت سے

اُسی کی زندگی بعد، زفنا بھی ہستی رکھتی ہے
شرف جس کو ملا ہو جیتے جی انساں کی خدمت سے

کہاں سے ہو طبیعت میں روانی پختگی کیسی
نہ ہو جب ہجر ربطِ شعر خوانی ایک مدت سے

خاص

لچھمن پرشاد صاحب مرحوم

غیر دل دل میں سما جائے یہ ممکن ہی نہیں
یہ محض تیرا یقیں ہے جو بدلتا ہی نہیں

عشق جس میں نہ ہو وہ بشر ہی نہیں
جو نہ دیکھے خدا وہ نظر ہی نہیں

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

تربیت طعام

[شریمتی یشودا دیوی صاحبہ]

دن بھر کے کام کے بعد ہماری قوتوں میں جو کمی آجاتی ہے اُس کو پوری کرنے کے لئے ہم کھانا کھاتے ہیں، جو چیزیں ہماری تندرستی کے لئے ضروری ہوں اُنہیں کو پکا کے کھانے میں بہتری ہے، پکے ہوئے کھانے کو کچے کھانے پر ترجیح اس لئے دی جاتی ہے کہ اُن کا ہضم کرنا آسان ہو جاتا ہے، مختلف موسم کے کھانے بھی مختلف ہوتے ہیں، جاڑے کے موسم میں گوشت و مچھلی و گھی و تیل کا استعمال مناسب ہے کھانے کا مزیدار بنانا بھی ضروری ہے، اس لئے کہ مزیدار کھانا سے آسودگی آجاتی ہے اور طبیعت بہت خوش ہو جاتی ہے۔

آٹا یا مائدہ کی سادی پوری

خوب چلے ہوئے آٹا یا مایدہ میں ہاتھ سے پہلے گھی ملا دے، اس طرح سے کہ گھی جذب ہو کر آ[illegible] ہر رو میں اثر کر جائے اور آٹا کی شکل قائم [illegible] ایک سیر آٹا میں آدھ پاؤ گھی کافی ہوگا [illegible] آٹا میں باریک پسا ہوا نمک اس انداز سے [illegible] کہ آٹا نمکین نہ ہو جائے، بعدہ آٹا کو دودھ [illegible] گوندھے۔ دودھ تھوڑا تھوڑا کر کے ملایا جا[illegible] سخت گوندھا جائے، گوندھنا اُس وقت [illegible] کر دیا جائے جبکہ گوندھے ہوئے آٹا میں [illegible] گڑ کر ہٹا لینے میں گڑ ولنے کا داغ خود [illegible] لوئی بنا کے پوری بیلکر گھی میں دھیمی آنچ [illegible] چھان لیا جائے، پوریاں نہایت ہی ملایم اور لذ[illegible]

مائدہ کی میٹھی پوری

اچھا باریک گیہوں کا مائدہ ایک سیر لیکر [illegible] ایک چھٹانک گھی کا موین ملا کے خوب [illegible] پھر آدھ سیر عمدہ بیسن کو گھی میں دھیمی آنچ [illegible]

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

سُرخ بھون لے، پھر آدھ سیر صاف شکر کے ایک تار کی چاشنی بنا ڈالے، بیسن میں کٹی ہوئی گری، چرونجی و کشمش ملا کر چاشنی میں آہستہ آہستہ حل کرکے آنچ پر حلوے کی طرح گاڑھا کرے، بیسن کا حلوا جب ٹھنڈا ہو جائے تو تھوڑا تھوڑا مائدہ کے لوئی میں بھر کر پوریاں بیل کے گھی میں دھیمی آنچ پر چھان لیوے۔

آلو کی پوری

آلو بڑے ایک سیر، مائدہ ایک سیر، زعفران ۳ ماشہ۔ پہلے آلو کو دھیمی آنچ میں اُبال ڈالے پھر چھیل کر اس قدر ملے کہ بالکل ہی باریک ہو جاویں مگر پیسے نہیں۔ زعفران اور اندازے نمک سیندھا کو گھی میں گھوٹ کر مائدہ میں ملا دے اور اُس میں مالیدہ آلو ملا کر بقدر ضرورت دودھ سے گوندھے مگر سخت گوندھے، بعدہ چھوٹی چھوٹی لوئیاں بنا کے اور بیل کے گھی میں آہستہ آنچ میں چھان لے۔

آٹا کی سادی چپاتی

باریک اور عمدہ آٹا کو پہلے سخت گوندھ لے بعدہ تھوڑا تھوڑا پانی دیکر مکیوں سے خوب گوندھے اس قدر کہ وہ نہ سخت ہی رہ جاوے اور نہ بالکل ہی پتلا ہو جاوے، تھوڑی دیر اُسے پڑا رہنے دے، دوبارہ اُس کو مکیوں سے گوندھے اور ایک پاؤ میں جتنی چپاتیاں بنانا ہو اُسی اندازے سے لوئیاں بنا ڈالے، جب لوئیاں ڈھل جاویں تو ہاتھ سے یا بیلن سے جیسی عادت ہو روٹی بڑھا کر تیز آنچ میں توے پر سینک ڈالے پلٹنے میں تیزی کرے۔

قورمہ سادہ

گوشت	پیاز کے لچھے	دہی ترش
ایک سیر	آدھ پاؤ	آدھ پاؤ
گھی	ہینگ	مرچ سیاہ مسلم	لونگ مسلم
یک پاؤ	یک رتی	یک ماشہ	۴ پھول

لہسن کچلا ہوا۔ ادرک و دھنیا نصف نصف چھٹانک گٹھ جوڑے پیاز ایک چھٹانک و لہسن چوتھائی چھٹانک و لال مرچ ۵ عدد یہ سب باریک پانی میں پیسے ہوئے۔ گرم مصالحہ یعنی بڑی الائچی و زیرہ سیاہ دو دو ماشہ و مرچ سیاہ یک ماشہ و لونگ دو پھول باریک خشک پیسے ہوئے۔ پہلے قلعی دار پتیلی میں گھی کو خوب آنچ دیوے پھر اُس میں ہینگ ڈالدے۔ جب ہینگ جل جائے تو اُسے نکال کر پھینکدے۔ پیاز کے لچھے سُرخ گھی میں تل کے علیحدہ رکھ لے۔ گوشت کو معہ نمک بقدر ضرورت گھی میں ڈالدے اور اُس کا پانی جل جانے دے۔ پھر پسا ہوا مصالحہ اور مسلم مرچ و لونگ کو چھوڑ کر گوشت کو خوب بھونے بعدہ کچلا ہوا لہسن کا پانی اور دہی تھوڑا تھوڑا ڈال کر گوشت کو بھونے اُس وقت تک جب تک گوشت سے گھی علیحدہ

(بقیہ مضمون صفحہ ۱۰۹ کے آخر میں دیکھئے)

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

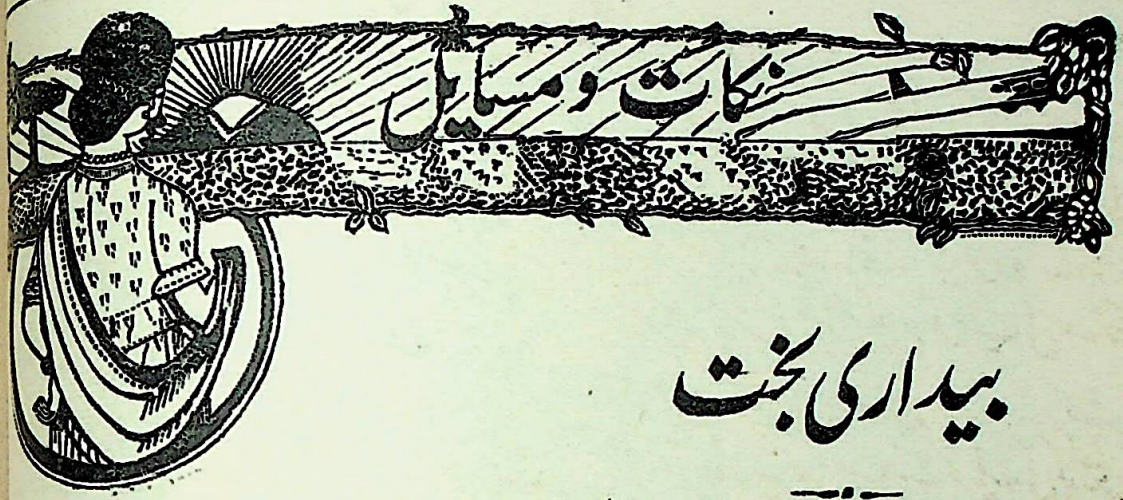

بیداری بخت

خدا کے رحم و سر جیمس گیرار کے کرم اور کونسل آف سٹیٹ و اسمبلی کے دھرم کا تہ دل سے ہم شکریہ ادا کرتے ہیں کہ شاردا بل مقبول ہو کر قانون بن گیا۔

ریفارمر صاحبان کو ہم مبارکباد دیتے ہیں کہ ایسی بے مثل کامیابی آج تک کسی بل کو نہیں نصیب ہوئی، گورنمنٹ کے موجودہ رویہ کو مدنظر رکھتے ہوئے یہ کامیابی ایسی ہوئی ہے کہ کسی کو اس کی قوی اُمید نہ تھی۔

اسمبلی میں کثرت رائے اور کشادہ دلی ایسی لاجواب تھی کہ مخالفت کرنے والے صرف چار اصحاب تھے۔ کچھ اصحاب اس پر نازاں ہیں کہ آدھے درجن مسلمان ممبران نے اسمبلی ہال کو ناخوشی میں چھوڑ کر اپنی مخالفت کا اظہار کیا اور اس طور سے مخالفین کی تعداد دس ہو گئی۔ ہمارے نزدیک یہ خیال خام ہے۔ ووٹنگ کے وقت جو صاحبان شرکت کرتے ہیں فی الحقیقت اُنہیں کا شمار منافق و موافق میں ہو سکتا ہے۔ اس لحاظ سے کثرت رائے کے خلاف چار اصحاب شمار کئے جا سکتے ہیں) بہرکیف کثرت رائے ایسے اہم معاملہ میں اگر نایاب تو کمیاب ضرور ہے۔

خدا سے ہماری اتنی دعا اور ہے کہ سے یہ بدرواجی ایک خاص قانون بنا کر ہے ویسے ہی اس قانون کے برتنے میں کے برتاؤ کا احتمال ظاہر کیا گیا ہے وہ ہو جائے۔ خدایا! پڑھے لکھے اور بے جاہلوں کو اس بدرواجی کے سُدھار کے سوجھ بوجھ کی نگاہ دے۔ یہ تیرے لئے اور بڑی بات نہیں، ہندوستان کے کو طاقت دے کہ وہ اس قانون کے اعلیٰ کو لاحاصل نہ ہونے دے۔

ظاہرا اس قانون کا لب لباب تو ہے کہ چودہ سال کی عمر پوری ہونے کی کی شادی نہ ہو سکے تاکہ سن بلوغیت کو پہلے حقوق ازدواجی کا بیجا استعمال نہ

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

گہری نظر سے دیکھنے پر معلوم ہوگا کہ قانونی دنیا میں یہ ایک ایسا قانون بن گیا ہے جو مُلک کے لئے آبِ حیات اور خدا کی رحمت ہے۔ اگر ہم اس کو تندرستی اور توانائی کی جان، آئندہ طاقتور نسل کی کان اور اہل ہند کا دین و ایمان کہیں تو بھی کم ہے۔

ایج آف کانسینٹ کمیٹی کی رپورٹ

اس بل کی منظوری و مقبولی میں ایک لاجواب مددگار ثابت ہوئی۔ کمیٹی کے ممبران کی چھان بین کا یہ رپورٹ ایک اعلیٰ نمونہ ہے اور اسی نے اسمبلی کے اصحاب کو اس بل کے موافق کر دیا۔ خاصکر گورنمنٹ کو یہ ترغیب کہ شاردا بل کی تائید کرنا اُس کا فرض ہے اس رپورٹ نے دی۔ یہ ترغیب اس رپورٹ نے محض استدعا اور التجا سے ہی نہیں دی بلکہ تجسس، تلاش، کوشش اور مغز سوزی کا نتیجہ پیش کر کے ثابت کر دیا کہ کم سنی کی شادی ملک میں عالمگیر ہے اور قوم کو اندر اندر کھوکھلا کر رہی ہے۔

اس بل پر غور کرتے وقت اسمبلی کے اُن ممبران نے بھی جو دیگر اُمور پر آپس میں اکثر متفق الرائے نہیں رہے ہیں نہایت ہی زور و شور سے تائید کی کہ بل کا قانون بن جانا احسن ہے اور ذرا بھی خیال نہیں کیا کہ اسمبلی کے باہر کٹر لوگوں میں اُن کی بدنامی اور انگشت نمائی ہوگی۔ کوتاہ بیں کٹر لوگوں کو ان سے عبرت لینا چاہئے کہ آخر ضمیر بھی کوئی چیز ہے۔

سر جیمس کرار پہلے ہی گورنمنٹ کے خیالات کا اظہار کر چکے تھے، اُن کو اس بل میں ایک حرف بھی ترمیم کرنا ناپسند تھا۔ کٹر گروہ کے حمایتداران نے ترمیم پر ترمیم پیش کیں مگر سب کی سب ترمیمیں آخر میں ردّی ہی ہوئیں۔

آچاریہ صاحب نے تحریک کی کہ کمیٹی مذکور کی رپورٹ دیر میں شایع ہوئی ہے جس پر غور کرنے کا وقت کافی نہیں ملا اس لئے بل پر بحث اسمبلی کے آئندہ سشن کے لئے ملتوی کر دی جائے۔ اس لچر تحریک کی تائید **مہامنا مالوی جی** نے ان الفاظ میں کی:-

"کمسنی کی شادی کی بُرائیوں سے جس قدر میں واقف ہوں شاید ہی کوئی واقف ہوگا۔ نوعمری میں شادی ہونا ہندوستان کے لئے کوئی نئی بات نہیں ہے، ہندو تو ہزارہا سال سے اسکے عادی ہیں۔"

(صفحہ ۱۰۷ کا بقیہ مضمون، "تربیت طعام")

ہونے لگے۔ احتیاط رکھے کہ مصالحہ و گوشت جلنے نہ پاوے۔ پھر پانی گلنے کے واسطے ڈالدے، جب گوشت گل جاوے اور شوربہ محض لعاب سا رہ جاوے تو گرم مصالحہ اوتلے ہوئے پیاز کو ڈالدے اور بند کر کے نہایت ہی نرم آنچ بلکہ کوئلہ پر پتیلی کو پانچ سات منٹ رہنے دے بعدہ جب چاہے استعمال میں لاوے۔

خاص

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

اپنی تائید کی تائید میں یہ کلام ایک ایسا معمہ ہے کہ جس پر بہتیرے اپنی اپنی سوجھ بوجھ پر جھک مار رہے ہیں کہ آخر مہامنا مالوی جی کا مطلب کیا تھا۔ ایک صاحب نے تو یوں عُقدہ کُشائی کی کہ یہ مہامنا مالوی جی کی علمی بلند پروازی کا نمونہ ہے۔ اس بلندی پر علم و جہل کے سرے جب ملجاتے ہیں تو دونوں کے درمیان کا خط تمیزی غائب ہو جاتا ہے۔ دُوسرے صاحب فرماتے ہیں کہ پنڈت جی پنچوں میں سنسکرت کے عالم اور دھرم شاستر کے مبصر مانے جاتے ہیں اور پالیسی کے بھی دلدادہ ہیں چنانچہ دھرم سنکٹ اور پس و پیش میں پڑ کر آپ نے دھرما اوتار آچاریہ صاحب کی تائید نہ کرنا ادھرم سمجھا اور اُدھر پرفارمر لوگوں میں نظر نیچی ہونا ناپسند کر کے مہابھارت کی پناہ لی اور دھرمراج کی پالیسی پر کہ "اُدا شوتھاما مارا گیا (آدمی نہیں ہاتھی) عمل کرنا جائز سمجھا۔ تیسرے صاحب کا خیال ہے کہ کسی ایک دیندار آدمی کے لئے شاستر کے خلاف کسی بدرواجی کو مٹانے کے کارِ ثواب میں شنکر آچاریہ کی طرح ٹانگ اُڑا دینا ہی کارِ ثواب ہے۔

ہمارے نزدیک تو کم سنی کی شادی ستی داہ سے بھی زیادہ سنگین ہے، ستی ہونے میں تو ایک ہی خون ہوتا تھا لیکن کمسنی کی شادی سے تو کتنے ہی ناتوان نوزائیدہ بچوں کا اور ساتھ ہی ساتھ اُن کے کمسن ماؤں کا خون ہو جاتا ہے۔

دھرم شاستری ہندو کا جی اتنی جائز [illegible] جانے سے گھبراتا ہو یا نہ ہو مگر نجات نہ ملنے [illegible] نجات ملنے کی اُمید ملتوی ہو جانے سے دو [illegible] گھبرا اُٹھتا ہے۔ ستی داہ سے تو اُس کو [illegible] خبر گیری و گذر بسر کے بوجھ سے نجات ملتی [illegible] اور کم سنی کی شادی سے تھوڑی ہی عمر میں [illegible] پار کرانے والے" پتر و نواسہ ملجانے کی اُمید [illegible] ہو جاتی ہے، ستی داہ بند ہونے سے اُس [illegible] ذمہ داری بڑھ گئی، اس ذمہ داری کا متحمل [illegible] تو اُس نے سیکھ لیا ہے اور اُس کے قابو کے [illegible] نہیں ہے کیونکہ بیوہ کو روکھی سوکھی روٹی کھلا [illegible] اور پھٹے پُرانے، میلے کچیلے کپڑے پہنا دینا [illegible] لئے زیادہ دقت طلب نہیں ہوتا لیکن کم سنی [illegible] شادی بند کر دینا تو گویا اُس کو غارت ہی کر [illegible] ہوا۔ پُتر و نواسہ کو جلد دنیا میں لا کے اپنی [illegible] سے نجات پانا اگرچہ ناممکن نہیں ہو گیا تو بہت [illegible] تو ضرور کر دیا گیا۔

شاردا بل کی مخالفت کی وجہ کچھ [illegible] ہو لیکن سر جیمس کرار نے اپنی دانائی سے [illegible] بل کا یا سانی خون نہ ہونے دیا اور کثرت [illegible] کی مدد سے بل کو قانون بنا ہی ڈالا، ہم [illegible] ہی خوش اور شکر گذار ہیں کہ شادی کے [illegible] "شادی" کا استعمال ہونا اب کسی قدر [illegible]

دوسرے ملکوں میں ریفارم اور رفاہ عام [illegible] مسئلے اور مسودے پیش کرنے اور اُن کو [illegible]

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

وقبول کرانے میں محض گورنمنٹ وقت سے جنگ وجدل کرنا پڑتا ہے، رعایا متفق ومتحد رہا کرتی ہے بحث صرف اسی قدر ہوتی ہے کہ مسئلہ یا مسودہ پیش شدہ بہبودی عامہ خلائق اور ملک کے مفاد کے لئے ہے اور ہوسکتا ہے یا نہیں مگر بدبخت ہندوستان میں بہبود اور اصلاح کے مسئلے اور مسودے پیش کرنے کی ہمت کرنا بوجوہ چند در چند کارے دارد۔ اگر خدا خدا کرکے ہمت کی بھی گئی تو خانہ جنگی سے جان سلامت بچالینا ناممکن ہوجاتا ہے، پھر لطف یہ کہ ہندو تو ہندو ہمارے مسلمان بھائی بھی بلا غور آغاز و بغیر خیال انجام شمشیر برہنہ ہوجاتے ہیں اور اگر کہیں قابل معقول کی چپقلش میں آگئے تو پھر اپنی اپنی جگہ چھوڑ کر خواہ مخواہ اظہار مخالفت کرینگے۔

ہندو ہوں یا مسلمان، پارسی ہوں یا کرستان بشرطیکہ ہوں وے شریف اور بدھمان ہمیں اُن سے اس قانون کے بارے میں فقط اس قدر عرض کردینا ہے کہ کسنی کی شادی خطا ہے اور

"خطا اگر صد بار راست آید ہنوز خطاست"

قانون امن وامان کے لئے ہے اور امن وامان کا دار ومدار قانون کی پابندی پر ہے، کسی کام کو واجب سمجھنے ہی سے انسان اُس کام کو نہیں کرنے لگتا۔ اگر ایسا ہوتا تو کسی قانون کی ضرورت ہی کسی زمانہ میں نہ ہوتی۔ جس قدر کہ قانون کا بنانا ضروری ہے اُس سے زیادہ انسان کو اُس قانون کی پابندی کرنے کے لئے مجبور کرنا ضروری ہے۔

شاردا بل قانون بن گیا مگر اس کا نفاذ کرنے میں گورنمنٹ اور ریفارمر کو تین قسم کے لوگوں سے مڈبھیڑ ہوگی (۱) نافہم (۲) کم فہم (۳) کج فہم۔

یہ تین قسم کے لوگ تین ہی طریقے سے راستہ پر آوینگے، نافہم تعلیم کی تدبیر سے، کم فہم ریفارمر کی تقریر وتحریر سے، کج فہم گورنمنٹ کی تعزیر سے۔

نافہموں کے سُدھار کے لئے گورنمنٹ اور ریفارمر دونوں ہی مدرسوں میں اخلاقی تعلیم پر کافی توجہ رکھنا اپنا فرض سمجھیں۔

کم فہموں کی اصلاح کے لئے ریفارمر لوگ تیز گامی سے اپنا قدم بڑھاویں۔ وے اس بات کی ازحد کوشش کریں کہ کم فہم لوگ پڑھے لکھے جاہلوں کے دام فریب سے بچے رہیں ورنہ جس قدر کہ شاردا بل کے قانون بنانے میں مغز سوزی کی گئی ہے وہ نقش بر آب ہوجائیگی، یہ خیال خام ہوگا کہ محض گورنمنٹ کی کوشش کافی ہوگی، جہلا کے پیر ومرشد اس قانون کے یکتائے زمانہ ہونے کے فخر کو دھول میں ملا دینگے اگر پیر ومرشد صاحبان ایسا نہ کریں تو جہلا کے گروہ میں وہ دو کوڑی کے آدمی سمجھے جائینگے ان پیر ومرشد صاحبان کے اثر کو دُور کرنا ریفارمر کا پہلا کام ہے، گورنمنٹ کا تو اُس وقت کام ہوگا جب کم فہمی کج فہمی کی طرف بالکل ہی مائل ہوجائیگی۔

عصمت کی قیمت

یہ ہندوستان جنت نشان وہ مقام مقدس ہے

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

جہاں کہ شاہِ ہفت اقلیم بھی کسی غریب و بیکس کی
حُرمت و عصمت نسوانی کو نظر حقارت سے نہیں
دیکھتے تھے بلکہ اس کی وہ عزت و مرتبت کرتے تھے کہ
کبھی اُس پر نگاہِ بد نہیں ڈال سکتے تھے۔ آج وہی
متبرک رُوئے زمین مسکن شیطانی بن گیا ہے اور حُرمتِ
نسوانی کے مول بھاؤ کئے جانے میں گویا بقل ہے
اس حرکت ناشایستہ سے یہ امر صاف ظاہر ہوتا ہے
کہ اہل ہند کا زوال کس کمال کو پہنچ گیا کہ اُن میں
بُوئے مردانگی برائے نام باقی نہ رہ گئی، وہ حُکام وقت
جن کو کہ اپنی رعایا کی حُرمت و عصمت نسوانی کا
محافظ و نگہبان ہونا چاہئے، جن سے ہر کہ و مہ کو
اُمید قوی رہتی ہے کہ کیسا ہی زبردست کیوں نہ ہو
مگر کسی زیردست کی عصمت نسوانی پر کسی قسم کا حملہ
اگر کریگا تو بار نگہبانی اور ذمہ داری اور جوابدہی سب
اُنہیں کے سر پر ہوگا، برعکس اس کے اب وہ حُکام
اپنے خود مختارانہ اور بے اصول حکومت کے زعم پر
ہندوستانی رعایا کی بہو بیٹیوں کے باعث ننگ
ناموس ہو رہے ہیں، اہل ہند اس جور و ستم کو
بلا چون و چرا برداشت کر رہے ہیں۔ قوت برداشت
ایک انسانی جوہر ہے لیکن اُس کا استعمال بیجا
قابل تحسین نہیں قابل نفرین بلکہ بعید از مردمیت
اور مجسّم نامردی ہے۔

ننگ خاندان شاہی راجہ پٹیالہ نے عرصہ بارہ
سال کا ہوا کہ سردار امر سنگھ نامی ایک مرد شریف
کی بیوی کو چوروں کی طرح سے پس پشت نکال لیجا کر
زبردستی سے اپنی مدخولہ بنالی تھی، وہ راز
میں طشت از بام ہوا ہے، انڈین پیٹریٹ
کانفرنس کے ہاتھ ایک اہم خط لگ گیا ہے
کہ اس معاملہ پر بہت کچھ روشنی ڈالتا ہے
پھلکیا، پٹیالہ، نابھا، جہند کے پولیٹیکل
سابق مسٹر کریمپ کا یہ خط دستخطی ہے، اور
پٹیالہ نے سردار امر سنگھ کی زوجہ منکوحہ کو
نکال لیا تو سردار مذکور نے مہاراجہ صاحب
اپنی بیوی کی واپسی کے لئے بہت منت
کی لیکن صدائے بر نہ خاست۔ مہاراجہ
کو مال مسروقہ سے دست برداری کرنا تو
اُس سے جُدائی کا کلمہ سُننا ناگوار تھا، سردار
نے بخدمت ہر دو سرکار دولت مدار زدی
یعنی انڈین گورنمنٹ و نیز گورنمنٹ پنجاب
زیر حکومت ریاست پٹیالہ تھی بذریعہ
عرض مُصیبت و بدکرداری و زبردستی کی
روپریٹ و منت سماجت کرکے یہ استدعا
اُن کی زوجہ منکوحہ واپس دلا دی جائے
عرض و معروض کا کوئی نتیجہ خیر نہ نکلا، کئی
بعد سردار امر سنگھ کو منجانب گورنمنٹ ایک
دستخطی پولیٹیکل ایجنٹ مسٹر کریمپ ملا
خط یہ تھا کہ گورنمنٹ آف انڈیا آپ کی
منکوحہ کو مہاراجہ پٹیالہ سے واپس کرانے
بے بس ہے۔ اگر آپ چاہیں تو مبلغ بیس ہزار
معاوضہ مہاراجہ پٹیالہ سے لیکر آپ کو دیئے جائیں

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

کیا کوئی بھی شریف مرد روے زمین پر کتنا ہی محتاج ولاچار کیوں نہ ہو اپنی زوجہ منکوحہ کی حرمت کو بیس ہزار خواہ بیس کروڑ کیوں نہ ہو کسی قیمت پر ایک بدمعاش بداطوار کے ہاتھ فروخت کرنے پر آمادہ ہو سکتا ہے؟ جواب صاف ہے، چنانچہ سردار امر سنگھ نے بھی اس فرش زر کو پائے انکار سے پامال کر کے اپنی مردانہ عزت ذاتی کی بزرگی کا نمونہ پیش نظر کر دیا۔

سردار مذکور نے انصاف کے نام پر، بے انصافی اور امن و امان کے نام پر بدامنی کے پیرو ہر ایک حکام کے روبرو رو رو کر اپنی مصیبتوں کی سرگذشت کے اظہار کی کوشش بے سود کی لیکن حلقہ بگوش قوم میں پیدا ہونے والے کی بیوی کا حرمت بہا کیا ہو سکتا ہے؟ یہ امر سب پر روشن ہے حوادث ریل گاڑی میں اگر اوسط درجہ کا آدمی ہے تو اُسکے وارثان کو ہزار بارہ سو جان بہا دیکر معاملات بے چون وچرا طے و فیصل کرا دئے جاتے ہیں۔

اسی قاعدہ کے بموجب سردار امر سنگھ کی بیوی کی حرمت کی قیمت ساکنان بالائے کوہ شملہ حکام اعلیٰ ترین نے بیس ہزار روپیہ لگا کر اپنے فیاضانہ دریا دلی کا مینہ برسا دیا، لیکن سایل کو اس ابر کرم کے آب زر سے منہ دھونا تو درکنار پاشوئی سے بھی گریزاں دیکھکر پولٹیکل ایجنٹ مسٹر کریمپ کے جو کہ ریاستوں میں محض بدکرداری بے انصافی و تظلم روکنے کے لئے معمور ہیں اور خزانہ شاہی سے تنخواہ دار و نمک خوار ہیں سردار امر سنگھ کی درخواست مورخہ ۲۱ اگست ۱۹۱۷ء کے جواب میں میمورنڈم مورخہ ۱۰ دسمبر ۱۹۱۷ء میں جو تحریر کیا ہے وہ مسٹر تارا سنگھ بی، اے ایڈیٹر "اکالی" کے قبضہ میں ہے، اُس خط کا ترجمہ حسب ذیل ہے:-

میمورنڈم

نمبر ۹۰۹ - اے - ۶ - ۷

تاریخ ۱۰ دسمبر ۱۹۱۷ء

بجواب درخواست سردار سنگھ مورخہ ۲۱ اگست بحکم سرکار راقم خط ہذا ایک مرتبہ پھر مطلع کرتا ہے کہ اگر وہ مہاراجہ پٹیالہ سے مبلغ بیس ہزار روپیہ لینا نہیں قبول کرتا اور بعوض اس کے اپنی زوجہ منکوحہ (جو کہ مہاراجہ پٹیالہ کے قبضہ میں ہے) کے متعلق جملہ حقوق کو واگذاشت نہیں کرنا چاہتا تو آئندہ اُس کی کسی درخواست کی جس میں کہ اُس کی بیوی کی واپسی کے متعلق اندراج ہوگا شنوائی نہ ہوگی۔

دستخط - ایل - یم - کریمپ

پولٹیکل ایجنٹ

ریاست پھلکیا - نابھا - پٹیالہ - جہند

بنام

سردار امر سنگھ بسویدار موضع روڑکی

ریاست پٹیالہ

واقعہ مذکور اس امر کا فی البدیہہ ثبوت ہے

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

کہ سفید چمڑے کے شاہنشاہ ہندوستانی مستورات کے جواہر عصمت کی کیا قیمت لگاتے ہیں، جن انگریزی حکام کو بھارت کی دیویوں کی عزت و حرمت کا نگہبان صادق ہونا چاہئے تھا وہی (حکام) مہاراجہ پٹیالہ ایسے ملعون کے نفس پرستی کے معاون، روزگار نسوانی کے درمیانی اور سودے کا موں چکانے کا کام کرکے پورے دلال ہو رہے ہیں۔

علاوہ خطوط مذکور الصدر دو خطوط اور بھی دستیاب ہوئے ہیں جو کہ اس امر کو ثابت کرتے ہیں کہ مہاراجہ پٹیالہ نے سردار امر سنگھ کی بیوی کو زبردستی اپنے قبضہ میں کر لیا تھا، اُن میں سے ایک خط پر گورنر پنجاب کے سکریٹری کا دستخط ہے اور دُوسرا ایک کسی دیگر افسر ذمہ دار کا دستخطی ہے، یہ دونوں خطوط فی الحال ملک الشعرا (کبیشور) شار دول سنگھ کے قبضہ میں ہیں، ایک بد چلن ملعون راجہ کے ذریعہ سے ایک بیکس شخص کی بیوی کے نکال لیجانے کے مذموم اور قابل نفرین کام میں گورنر پنجاب و نیز ریاست پھلکیا کے پولٹیکل ایجنٹ ایسے جوابدہ و ذمہ دار افسران کے ساز کرنے کے عیب سے بدتر ہندوستان میں انڈین گورنمنٹ کا روسیاہ کرنے والا دوسرا عیب نہیں ہو سکتا، ان ذلیل و قابل ہجو حرکات کو دیکھکر بے ساختہ زبان سے نکل جاتا ہے کہ جن مذموم ذرائع سے ہند میں انگریزی ہستی کی بنا ڈالی گئی ہے اور اُسکی ترقی کی گئی ہے وہی خفیف الحرکاتی اور ذلالت تا ایندم اجزاء

حرفت سیاسی بنے ہوئے ہیں کیا گورنر آف انڈیا یا پنجاب گورنمنٹ کا کوئی بھی ذمہ افسر اس سوال کا جواب دینے کی عنایت کر سکتا ہے کہ اگر مہاراجہ پٹیالہ نے اس کی کو اپنی بیوی بنا لینے کی عزت بخشا ہوتا تو اس حالت میں وہ افسر کیا کرتا؟ اغلب ہے کہ افسر مہاراجہ سے چند ہزار چہرہ شاہی خواہ پاکر اپنی خوش قسمتی پر پھولا نہ سماتا لیکن اس کی اس گری ہوئی بے بسی اور بیکسی کی حالت ابھی ایسی خوش نصیبی کے قدم رکھنے کی گنجائش نہیں ہے۔

شادی کی فضول خرچی اور ملک جہیز

بدرواجی

کراچی کے ایک متمول مہاجن سیٹھ لاچند کی بیٹی کی شادی کے بارے میں مہاتما گاندھی کے پاس ینگ انڈیا کے ایک نامہ نگار نے تحریر کیا ہے:-

"بوقت شادی لڑکی کی عمر ۱۶ سال کی سیٹھ صاحب نے اخراجات کو غایت درجہ اس شادی کو انجام دیا، اکثر رسوم شادی کئی انجام پاتے ہیں لیکن اس شادی میں دو زیادہ نہیں لگے۔

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

مذہبی رسوم کو ایک ذی علم پنڈت صاحب نے انجام دیا، اکثر سنسکرت زبان میں چند اشلوکوں کا پڑھ دینا کافی سمجھا جاتا ہے مگر ان پنڈت صاحب نے معنی اور مطلب خوب سمجھا کر دولھا اور دُلھن کو واضح کر دیا کہ شادی اور اُس کی ذمہ داریاں کیا ہیں"۔

مہاتما گاندھی جی نے سیٹھ صاحب و سیٹھانی صاحبہ و دولھا کو مبارکباد دی ہے، بلاشک وے اِس مبارکبادی کے مستحق ہیں۔

ممالک متحدہ و صوبجات بنگال و بہار میں تو دولھا کے باپ یا چچا یا خود دولھا شادی کے معاملات میں ذلیل ترین خودغرضی سے کام لیتے ہیں، اس قدر گرانبار تلک و جہیز کے طلبگار ہوتے ہیں کہ رؤسا و غربا دونوں ہی اخراجات شادی سے تباہ ہو جاتے ہیں، قرض میں غرق اور ضروریات زندگی سے محروم، یہ وہ سخت گیری ہے کہ لڑکی والا چکنا چور ہو جاتا ہے رہن نامہ کی بناء پر جس قدر تالشات عدالتوں میں دائر ہوتی ہیں اُن میں زیادہ تر لڑکیوں کی شادی کا ماتمی گانا ہی پایا جائیگا۔

اس لہو چوسنے والی بدرواجی کی اور بھی دردناک صورتیں ہیں جو شاید ہی مہاتما گاندھی جی کی نظروں سے گذری ہوں، کہیں جایداد والی ایسی بیوہ مل گئی جس کے دو یا دو سے زاید بن بیاہی لڑکیاں ہیں تو اس بیوہ کی ایسی ابتر حالت کر دیجاتی ہے کہ سُنکر رونگٹے کھڑے ہو جاتے ہیں، جہاں پہلی لڑکی کی شادی کی بات چیت چھڑی نہیں کہ بیچاری بیوہ پریشان، وہ گرانبار تلک و جہیز مانگا جاتا ہے کہ وہ ایشور کو کوسنے لگتی ہے کہ وہ ایسے ابھاگے ملک میں کیوں پیدا ہوئی، اگر دولھا کے باپ صاحب مقدرت ہوئے تو تلک و جہیز و جملہ اخراجات شادی کے لئے سود در سود کے اقرار پر قرض دینے کے لئے تیار ہو گئے پہلی ہی لڑکی کی شادی میں ایک ایک کا دس دس لکھا کر بیچاری بیوہ کی ساری جایداد کو پھنسا لیتے ہیں وہ خوب جانتے ہیں کہ بیوہ کے بعد جایداد لڑکیوں کو پہنچے گی، لیکن خودغرضی تو یہ ہے کہ پہلی لڑکی کے بدولت کُل ہی جائداد اُن کے بیٹے صاحب کی ہو جائے، بیوہ بیچاری بھیک مانگے اور اُس کی دوسری لڑکیاں جہنم میں جائیں اس کا اُنہیں مطلق لحاظ ہی نہیں۔

افسوس کا مقام تو یہ ہے کہ تعلیم یافتہ باپ اپنے تعلیم یافتہ بیٹے کی شادی میں مطلق خیال نہیں کرتے کہ اُن کی تعلیم میں کلنگ لگ رہا ہے، زیادہ سمجھایا جائے تو اس بے حیائی سے کہہ بیٹھتے ہیں کہ "رہنے دو، ہم لکچر نہیں سُننا چاہتے، روپیہ کلدار چاہتے ہیں"۔ اگر خدانخواستہ رُوکھے پن سے بیحیائی دکھانا منظور نہ ہوا تو فرماتے ہیں "جناب! تلک و جہیز تھوڑے ہی مانگتے ہیں، بارات لیجانے میں صرفہ ہوتا ہے، اتنی دُور جانا ہے، زادراہ پیشگی عنایت کر دیجئے، تلک و جہیز جو جی میں آئے بھیجدیجئیگا"۔ کیا اچھی تعلیم ہے، اُس پر لُطف یہ کہ سوسائٹی کے لیڈر اور ملک کے رہبر بننے کا ارادہ بھی رکھتے ہیں، خدا ہی اس مُلک کو ان تعلیم یافتہ صاحبان سے بچائے۔

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

بیوی کے حقوق

حال ہی میں الہ آباد ہائیکورٹ نے شوہر بیوی کے مقدمہ میں ایک نہایت ہی اہم فیصلہ صادر فرمایا ہے جسے ہندوستان کے ہر مرد اور خاصکر ہر عورت کو اپنے دل پر نقش کر لینا چاہئے۔

مقدمہ یہ تھا کہ مسماۃ کولیا کی شادی دس سال کی عمر میں مسمّی ہیرا کے ساتھ ہوئی تھی اور قریب تین سال ہوئے کہ ان سے ایک لڑکی بھی پیدا ہوئی تھی دونوں ذات کے کوری ہیں، مسماۃ کولیا کا چال چلن نہایت ہی اچھا ہے اور وہ باعصمت ہے، نہایت ہی صدق دلی سے وہ شوہر کی فرمانبردار رہی، اُس پر کبھی کوئی ایسا الزام بھی نہیں لگایا گیا تھا اور نہ گمان ہی کیا گیا تھا کہ خانہ داری کے کاموں میں اُس نے کوئی تساہلی کی ہو جس سے کہ اُس کے شوہر کو کوئی تکلیف پہنچی ہو، اتنے پر بھی مسماۃ کولیا اپنے بدبخت شوہر ہیرا کو ناپسند تھی، ہیرا نے مسماۃ کولیا سے کشیدگی اختیار کر کے گھر میں ایک چماری عورت کو رکھ لیا، ہیرا اور اُس کی چماری محبوبہ مسماۃ کولیا پر ظلم و تشدد کرنے لگے، ہیرا نے کئی بار مسماۃ کولیا کو لات اور گھونسوں سے مارا، بھوکی رکھا اور مار کے گھر سے نکال دیا، اپنی جان کی حفاظت کے لئے مسماۃ کولیا کئی بار اپنے مائکہ جا کر رہی لیکن سنگدل ہندو سوسائٹی میں رحم نے جگہ نہ پائی۔

کئی بار پنچایتیں بھی ہوئیں جن کا مقصد صرف اسی قدر تھا کہ ہیرا کو ذات سے خارج کر کے سناتن دھرم کی پاکیزگی قائم رکھی جا

پنچایت نے مظلوم مسماۃ کولیا کی حفاظ
کچھ فکر نہ کی اور حکم دیا کہ غریب کولیا اپنی ذا
خارج شدہ شوہر کے ساتھ رہکر اُس کی خدمت
آخرش جب ہیرا اور اُس کی چماری
ظلم ناقابل برداشت ہو گئے تو مسماۃ کولیا
عدالت فوجداری کی پناہ لی، یہاں بھی
کولیا کے نصیب سوتے ہی رہ گئے، مجسٹریٹ
نے مسماۃ کولیا کی کلیجہ دہلانے والی سرگذ
کو سُن کے یوں رقم فرمایا ہے:۔

شوہر اور بیوی میں جیسا سلوک اس قوم
ہوتا ہے اُس پر غور کرتے ہوئے یہ نہیں کہ
کہ مسماۃ کولیا کے ساتھ جو بدسلوکی کی گئی
داخل بے رحمی ہے اور اُس کے ساتھ ایسے
ہمیشہ عادتاً کئے جاتے تھے .....
زیادہ مہذب نہیں ہیں اور اب تک وہ
بیوہار و چلن اپنی سوسائٹی کے قاعدے
مطابق رکھے ہیں"

مسماۃ کولیا کو یہاں سے بھی حکم ملا کہ وہ
اپنے شوہر کی خدمت میں واپس جائے
اُس کے ساتھ رہے۔

کسی بیکس عورت کو ظلم و بدسلوکی کی آگ
جھلستے رہنے کے لئے نہایت ہی اچھی دلیل
جس کا لب لباب یہی ہے کہ اپنی بدنصیبی
بہاتے ہوئے عورتوں کو خاموش زندگی کو گذار دینا چاہئے

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

اس فیصلہ کو اُلٹتے ہوئے الہ آباد ہائیکورٹ کے جسٹس لیس - ین سین صاحب فرماتے ہیں:-
"کیا اس وجہ سے کہ وہ ذات کا کوری ہے، نامہذب ہے اور اپنی سوسائٹی کے قاعدے پر چلتا ہے شوہر کو اپنی بیوی کے ساتھ جانوروں کی طرح بے رحمی کا سلوک کرنے دینا چاہیئے؟ برٹش انڈیا میں دفعہ ۴۸۸ ضابطہ فوجداری ذی شان راجکمار اور سوسائٹی کے ادنیٰ سے ادنیٰ شخص میں کوئی فرق نہیں سمجھتا۔ برابری اور انسانیت کی عزت کرنا ہی قانون کا مقصد ہے، اگر کوری ذات کا کوئی مرد مناسب چارہ کار رہتے ہوئے بھی اپنی بیوی کے تعلق فرائض کے ادا کرنے سے گریز کرتا ہے اور اپنی بیوی کی پرورش کے لئے آمادہ نہیں ہے اور پرورش کرنے سے انکار کرتا ہے تو وہ مرتکب جرم دفعہ ۴۸۸ ضابطہ فوجداری کا ہے، اگر وہ اپنے فرائض سے اس لئے گریز کرتا ہے کہ وہ زیادہ مہذب نہیں ہے تو دفعہ ۴۸۸ مذکور کو اُس پر ضرور عاید کرنا چاہیئے، اس دفعہ کا برتنا ہی اُس کی نامہذب عادتوں کو دُور کرنے میں حکمی دوا کا اثر رکھتا ہے"۔

جسٹس سین صاحب کے اس فیصلہ کی جو تعریف کی جائے وہ تھوڑی ہوگی، جسٹس سین صاحب نے مسماۃ کولیا کو اپنے شوہر ہیرا سے علیحدہ رہنے کی اجازت دیدی ہے اور ہیرا کو حکم دیا ہے کہ مسماۃ کولیا کے گذر بسر کے لئے مبلغ سے ماہانہ دیا کرے۔

ہندوستان میں نہ معلوم کتنی عورتیں مسماۃ کولیا کی طرح اپنی بدنصیبی پر آنسو بہاتے ہوئے سوسائٹی کو کوس رہی ہوں گی لیکن سوسائٹی کے ٹھیکہ داروں کا دل بھلا ان پُر درد آہوں کی طرف کیوں کھنچیگا۔

مسماۃ کولیا ذات کی کوری ہے، جان کی حفاظت کے لئے ذات کی پنچایت کی پناہ مانگی۔ لیکن پنچایت کے ٹھیکہ داروں نے اُس کی قابلِ رحم حالت پر کوئی توجہ نہیں کی تو ہائیکورٹ تک لڑکے غریب نے اپنے حقوق کی حفاظت کی۔

اُونچی ذات کی عورتوں کی پُرغم داستان سُننے کے لئے نہ تو کوئی پنچایت ہے اور نہ وے عالی خاندان ہونے کے فضول فخر میں عدالتوں کے سامنے اپنی مصیبت کی کہانی سُنا سکتی ہیں، یوں ہی گھٹ گھٹ کے مرا کرتی ہیں۔

سوسائٹی سے سچی محبت رکھنے والے حق شناس مردوں کو لازم ہے کہ بیکس اور معصوم عورتوں کو بدمعاش اور نفس پرست کے ظلم سے بچانے کے لئے کمربستہ ہو جائیں، عورتوں کو بھی چاہیئے کہ خاندان کی عزت و فخر کے جھوٹے خیالات کو ترک کر کے اپنی بیش بہا انسانی زندگی کو نامُرادی سے بچائیں۔

چھوٹی چھوٹی باتوں کے لئے عدالت جانے سے ہم عورتوں کو منع کرتے ہیں لیکن جہاں کہیں اُن کی زندگی کے حقوق سے مخالفت کی جاتی ہو اور اُن کو انسانی حقوق سے محروم کیا جاتا ہو وہاں ہم ضرور عورتوں سے عرض کرتے ہیں کہ وے اپنے ہر چارہ کار سے کام لیویں۔

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

جب تک خاندان کے جھوٹے فخر پر عورتیں اپنی انسانی زندگی کو ترجیح نہ دینگی تب تک خود غرض اور نفس پرست مردوں سے دنیا میں اُنہیں کوئی بھی بچا نہ سکیگا، ایشور اُنہیں کی مدد کرتا ہے جو اپنی مدد کر لیتے ہیں۔

ہندوستان میں تعلیم

ہارٹاگ کمیٹی کی رپورٹ ہندوستانی ترقی تعلیم کی بابت شایع ہوگئی ہے، یہ کمیٹی سائمن کمیشن کی ایک معاون کمیٹی تھی، بموجب ایکٹ گورنمنٹ آف انڈیا شاہی کمیشن کے فرائض میں سے ایک یہ بھی تھا کہ ہندوستان کی ترقی تعلیم کی بابت جانچ کریں، اسی تحقیقات و جانچ کے لئے یہ کمیٹی مقرر ہوئی تھی، اس کے ممبران بجز صوبہ متوسط سنٹرل پراونس آسام اور نارتھ ویسٹ فرانٹیر پراونس اجمیر اور بلوچستان تمام ہندوستان میں گھومے اور مختلف معزز و معتبر اشخاص سے استفسار کے بعد یہ رپورٹ کمیٹی ہذا نے تیار کی جو کہ سائمن کمیشن کے سامنے پیش ہوکر بادشاہ سلامت تک پہنچیگی۔

اس رپورٹ میں ہندوستان کی ترقی تعلیم پر جو گذشتہ دس سال کے اندر ہوئی ہے غور کرتے ہوئے کمیٹی نے بیان کیا ہے کہ لوگوں کی وہ پرانی بُو تحصیل علم سے نفرت کی بتدریج دُور ہوگئی ہے اور قوم ہند میں علامات درس تدریس نمایاں ہیں، مستورات نے بھی اس جانب بہت کچھ ترقی کی ہے، کمیٹی نے کہا ہے کہ تعلیم و تربیت عوام میں صوبوں نے بہت کچھ روپیہ صرف کیا ہے، تاہم روپیہ کی ضرورت معلوم ہوتی ہے، کمیٹی کی رائے ہے کہ طریقہ تعلیم غیر موثر ہے، چنانچہ اہل ہند کی محنت اور دولت بے سود ہو رہی ہے، مابین سنہ ۲۳-۱۹۲۲ لغایت سنہ ۲۶-۱۹۲۵ء قریب قریب از چودہ کروڑ روپیہ بمد ابتدائی تعلیم خرچ فضول ہے، کمیٹی کے خیال کے مطابق ابتدائی تعلیم کا مقصد یہ ہے کہ لوگوں میں ووٹ دینے کے شعور کی قابلیت آجائے اس کے قابل بنا دینا ہے مگر بکثرت ایسا نہیں پایا جاتا، اس کے بہت سے وجوہات گنائے گئے ہیں۔

ذات پات کے جھگڑے، دیہاتیوں کی نافہمی و تنگدستی ملک ہند میں فیصدی بکثرت پائے جاتے ہیں اور اُن کی نافہمی کا اثر قومی پر بہت کچھ پڑتا ہے، رپورٹ میں تحریر کیا ہے کہ دیہاتوں میں اکثر جیوں ہی لڑکا چودہ دیگر خانگی کاموں کے قابل ہوا نہیں کہ فوراً پڑھنا ترک کرا دیا گیا، نتیجہ اس کا یہ ہے کہ ابتدائی تعلیم بھی نہیں پانے پاتے اور پھر کے کاموں میں لگا دئے جاتے ہیں، کمیٹی نے ہے کہ تعداد سکول بے وجہ کہیں پر بہت زیادہ کہیں کم ہے، پرائمری سکول میں مدرسوں تنخواہیں از حد قلیل ہیں، اُن صوبوں میں

CC-0 Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

مدرسوں کی حالت بدتر ہے تیز و طرار طلباء اس پیشہ کی طرف قدم نہیں رکھتے اور عموماً غبی اور ناکارہ لوگ ماسٹر بن جاتے ہیں، ٹریننگ سکول کے ماسٹران کی لیاقت لگ بھگ طلباء کی سی پائی گئی ہے۔

کمیٹی کی رائے میں سکنڈری ایجوکیشن کی ترقی معقول ہوئی ہے مگر یونیورسٹیوں کا حال تباہ بتلایا ہے، زیادہ تر تعداد طلباء ایسی پائی جاتی ہے جو اعلیٰ تعلیم کے قابل نہیں ہیں، چونکہ سرکاری ملازمت پانے کے لئے سند یونیورسٹی ضروری رکھی گئی ہے اس لئے اس قدر یورش ہے، کمیٹی نے گورنمنٹ کو یہ رائے دی ہے کہ ولایت کے سول سروس کمیشن کے طرز کا یہاں بھی اگر کوئی امتحان بہت سی کلرکل جگہوں کی تقرری کے لئے کھول دیا جائے تو یونیورسٹیوں کا بہت کچھ بوجھ ہلکا ہو جائیگا۔

مستوراتی تعلیم کی حالت تو بہت ہی ابتر بیان کی گئی ہے، کمیٹی کا خیال ہے کہ اس کی وجہ لڑکیوں کا تھوڑے ہی زمانہ میں سکول چھڑا دینا ہے، مستورات معلمہ کی کمی اور سکولوں کی خرابی ہے۔

علی العموم سب لوگ اور مدبران قوم ان عیوب سے بخوبی واقف ہیں اور اکثر ان باتوں پر غور کیا جا چکا ہے، ان مسائل کے حل کرنے کے لئے ترکیبیں سوچی گئی ہیں، اب بھی کوششیں ہو رہی ہیں، کمیٹی نے کوئی نئی بات نہیں بتلائی ہے تاہم اس قدر تسلیم ہے کہ ان جملہ عیوب کا مجموعہ بشکل رپورٹ شایع کر کے لوگوں کی نظر توجہ ایک مرتبہ اس طرف رجوع کر دی ہے، کمیٹی نے ان تمام نقایص کو جس طرح پر صراحت کے ساتھ بیان و عیاں کیا ہے اُسی طرح پر اُن کے دُور و دفع کرنے کی صورت مفصل و تدابیر مناسب نہیں بتلایا۔

چونکہ جارٹک کمیٹی ایک سیاسی کمیٹی تھی اس لئے اس رپورٹ سے سیاسی بُو آتی ہے اور ہر شخص جو اس رپورٹ کی طرف رُخ کریگا تو اُس کے دماغ سے پوشیدہ نہیں رہ سکتی، کمیٹی نے تعلیم مسلمانان ہند پر توجہ خاص کی ہے اور یہ رائے قایم کی ہے کہ مسلمانوں کے لئے ہر سکول میں ایک تعداد معین کر دی جائے اور مذہبی تعلیم بھی دی جائے، یہ رائے خالی از جائے اعتراض نہیں ہے کیونکہ کس اُصول معقول پر مبنی ہے رپورٹ ہذا سے پتہ نہیں لگتا، اگر یہ رائے بہبود و ترقی ہند کی غرض سے ہے تو وہ غرض بالکل فوت ہو جاتی ہے اور برعکس اس کے باعث نفاق ہوگی اور جو آتش نفاق جل رہی ہے اُس کو اور بھڑکانا ہے کیوں مختلف مذاہب اور مختلف تعداد ہندو مسلمان کا فساد اور محشر ہر دم قدم بقدم اور جا بجا بپا رہیگا، ہم اپنے مسلمان بھائیوں کی ترقی تعلیم کے خلاف ہرگز نہیں ہیں۔ بلکہ اُس کے دل و جان سے خواہاں اور کوشاں ہیں کیونکہ وہ بھی تو قوم ہندوستان میں شامل ہیں اُن کی بھلائی اور بہبود قوم کی بھلائی اور بہبود بلاشک و شبہہ ہے، مگر اس غرض کے پورا کرنے کے لئے دیگر طریق مناسب بے ضرر بے خطر

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

ہو سکتے ہیں، نگاہ حبّ خالص کی ترکہ پر کہہ اور تجسّس و تلاش کی درکار ہے، کمیٹی کے ایک ممبر راجہ نریندر ناتھ نے کمیٹی کی اس رائے کی تائید نہیں کی اور اپنا ایک جداگانہ نوٹ اس کی بابت تحریر فرمایا ہے جس کا شرح تذکرہ چاند کے آئندہ نمبر میں کیا جائیگا صاف صاف بتلا دیا ہے کہ سکولوں میں مذہبی تعلیم کا خیال تو بالکل فضول سا ہے، تعلیم مذہبی لڑکوں کے والدین ہی قابل اطمینان طریق پر دے سکتے ہیں۔

کمیٹی تعلیمی معاملات میں انڈیا گورنمنٹ کا سروکار ضروری بتلاتی ہے اور یہ بھی کہا ہے کہ اس تعلق کا نہ رہنا باعث بدقسمتی ہے، کمیٹی کی رائے ہے کہ ایک سنٹرل بورڈ قائم ہونا چاہیے جو کہ ایک صوبہ کا دوسرے صوبوں سے میل ملاپ بنائے رہے اور مسئلہ تعلیم پر صلاح و مشورہ دیا کرے، یہ رائے بہت پرانے طریق کی موید ہے جو کہ اب اس ترقی یافتہ زمانہ میں از حد نظر حقارت سے بالیقین دیکھی جائیگی کیونکہ اس زمانہ میں ہر پراونس جو خود مختاری اور آزادی کا خواستگار ہے اور چاہتا ہے کہ کسی کے زیر حکومت اور غلام بنکر اپنی زندگی نہ بسر کرے اور انڈین گورنمنٹ تو ایک حاکم و حکم رواں سر دست سر پر ہے یہ ایک بورڈ کا شیطان سر پر چڑھانا کوئی ذیشعور منسٹر بہ حیثیت مشورہ ہرگز قبول و منظور نہ کریگا اور اگر ہوا بھی تو سنگ آمد و سخت آمد ہوگا۔

کمیٹی کی رائے ہے کہ انڈین گورنمنٹ کو بھی صوبہ میں اخراجات تعلیم کے لئے کچھ دینا چاہیے کمیٹی کی اس رائے کے ہم بھی موید ہیں اور اس کے ساتھ یہ بھی کہنا چاہتے ہیں کہ گورنمنٹ اب بھی خواب غفلت سے اس صدا پر بیدار ہو تو غنیمت ہے، کمیٹی کی رائے ہے کہ انڈین سروس میں تخفیف کرنے سے بہت کچھ نقصان ہوا ہے اور کمیٹی کی یہ بھی رائے ہے کہ یورپین کو اچھی تنخواہیں اور دیگر حقوق دیکر بلانے کی ترغیب دی جائے۔

ہندوستانیوں نے محکمہ تعلیم میں اعلیٰ اعلیٰ عہدوں پر رہکر اور اپنا کام بخوبی انجام دے یہ ثابت کر دیا کہ اُن میں کوئی خامی نہیں ہے اس سروس کے قائم رکھنے میں کس قدر خرچ ہے وہ ہر شخص سمجھ سکتا ہے، بیچارہ ہندوستان قابل نہیں ہے کہ اس بار گراں کا متحمل ہو سکے۔

"سوتنتر" کی مطلق العنانی

حال ہی میں ہمیں ایک سختی کے ساتھ مجبوراً کرنا پڑا ہے، ناظرین کو حالت موجودہ دیکھتے ہوئے ماننا پڑیگا کہ ہمارا فعل بالکل نہیں کہا جا سکتا، پبلک کے خیال سے اخبار کا فرض ایک بہت اہم کام ہے، یہ زمانہ جمہوری کا ہے، اس زمانہ میں اخبارات ہی

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

ایک ایسے خاص وسائل ہیں جن کے ذریعہ سے عوام کی رائے کا اظہار ہوتا ہے اور اُسی کے ساتھ ہی ساتھ اُن کی پختگی بھی ہوتی جاتی ہے، اخبارات کی اہمیت میں ترقی کے ساتھ ایڈیٹر کی جوابدہی بمقابلہ پیشتر کے بہت بڑھ گئی ہے، ہمیں افسوس کے ساتھ یہ تسلیم کرنا پڑتا ہے کہ ہندی کے زیادہ تر ایڈیٹر کے اپنی اس بڑی جوابدہی کے برتاؤ میں واجبی برتاؤ کے علامات نہیں نمودار ہوئے ہیں، ہندی کے اخبارات تو جوابدہی کی لاعلمی میں ضرب المثل سے ہوگئے ہیں۔ ہندوستان کی گری ہوئی حالت میں لوگوں کی اصلاح اور پابند مصائب کی رہائی کے لئے لکھنے پڑھنے کا بہت سامان رہتے ہوئے بھی ہندی کے متعدد اخبارات بغض وحسد سے مشتعل ہوکے ایک دوسرے کے مضرت رسانی کے خیال سے دُشمن جان ہوتے جارہے ہیں، یہ ملک کی بدبختی کے سوا اور کیا کہا جاسکتا ہے۔

ہم تنقید حق کے مخالف نہیں کتنی ہی سخت کلامی کے ساتھ کیوں نہ ہو بلا تعصب تنقید کنندہ کی تمثیل اُس ہوشیار باغبان کی ہے جو کہ باغ ادب کے تختہ گُل سے خس وخار کو نکالکر پھینکدیتا ہے لیکن میری یہ رائے لازم ہے کہ تنقید حق ہو اور مبنی بہ ثبوت واقعات واقعی ہو، خیالی، فرضی و رغبت ونفرت کی وجہ سے جو تنقید کی جاتی ہے اُس سے نہ تو دنیاوی منفعت ہوتی ہے اور نہ ایڈیٹر کی نیک نیتی کا پتہ چلتا ہے، چندے ادنیٰ درجہ کے اخبار خوانوں کے اتفاق رائے کا فخر حاصل ہو تو ہو سکے لیکن اس زمانہ ترقی وعروج میں اس قسم کی دھاندھلی بازی عرصہ دراز تک لوگوں کی آنکھوں میں خاک نہیں ڈال سکتی، یہی وجہ ہے کہ اکثر ہمیں زیادہ تر اسی اپنی جوابدہی کے خیال سے خالی اخبارات کی بے وقت کی موت کی خبریں ملتی رہتی ہیں، کیا ہندی اخبارات اس بے وقت کی موت سے سبق نہیں سیکھ سکتے؟ ہمیں حال ہی میں ایک ایسے ہی ذلیل حملہ کے مقابلہ میں قانون کی پناہ لینا پڑا ہے، جبکہ ہم نے کسی دوسرے چارہ کار سے تحفظ انصاف نہ دیکھا لاچار ایسی حالت میں اپنا فرض سمجھکر یہ تکلیف دہ کام کرنے پر آمادہ ہوئے، اگر ہم ایسا نہ کرتے تو ہمارا ذاتی نقصان تو ہوتا ہی مزید براں ہم بلا تعصب نکتہ چینی ونیز مذموم حملوں کو موقع دینے کے ملزم سمجھے جاتے۔

ناظرین کو یاد ہی ہوگا کہ گذشتہ مارچ میں اس مطبع کا شایع کردہ مستند تواریخی رسالہ "بھارت میں انگریزی راجیہ" کے متعلق اُس کے شایع ہونے کے دو ہی دنوں بعد یو۔ پی گورنمنٹ نے تھیٹر کے تماشہ کی طرح ضبطی کا پردہ جھٹ پٹ الٹا کر بالکل سین ہی بدل دیا، اس کے متعلق کلکتہ کے ہندی اخبار موسوم بہ "سوتنتر" کے گذشتہ ماہ اساڑھ کرشن ۱۱ر کے اڈیٹوریل میں "اس ضبطی میں کیا رھسیہ ہے" اس سُرخی کے

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

تلے ایک مضمون شایع ہوا تھا، مضمون کی سُرخی سے یہ مترشح ہوتا ہے کہ ایڈیٹر صاحب نے اس میں گورنمنٹ پالسی کی بے باکانہ نکتہ چینی کی ہوگی! لیکن بدبختی سے معاملہ بالکل اس کے برعکس تھا ایڈیٹر صاحب نے گورنمنٹ پالسی پر نکتہ چینی کے عوض میں اشاعت کُنندہ پر کئی بے بنیاد حملے کئے تھے جن کو پڑھکر ہمیں تکلیف ہوئی لیکن ہم نے اپنے رنج والم کا ذکر نہ تو ایڈیٹر صاحب "سوتنتر" سے کیا اور نہ "چاند" کے متعلقین کو ہی یہ خبر سُنا کر انہیں مغموم کرنا چاہا، ہم نے اس ذلیل بات پر زور دینا اخلاق کے موافق نہ سمجھ کر اسے فراموش کر دینے کی کوشش کی لیکن افسوس ہے کہ بوجوہ چند در چند اس بات میں ہمیں کامیابی نہ حاصل ہوئی، اسکی وجہ خاص تھی۔

مضمون ہذا کے شایع ہونے کے کچھ ہی دنوں کے بعد ہمارے پاس اس کے متعلق بہت سی شکایتیں آنے لگیں، ہمارے متعلق عوام میں انواع اقسام کی غلط فہمیاں پھیلنے لگیں، ہم نے یہ بھی محسوس کیا کہ ہماری مالی حالت پر بھی حملہ مذکور کا بہت بڑا مضرت دہ اثر پڑیگا، جبکہ ہمیں اس بات کا یقین کامل ہوگیا کہ حملہ بالا کی تردید کرنا ہمارے لئے نہایت ضروری ہے تب ہم نے "سوتنتر" کے ایڈیٹر کے اُوپر بذریعہ تحریر خط اس بات پر زور ڈالا کہ وے خود ہی ایک مضمون شایع کرکے اُن بے بنیاد باتوں کی جن کی وجہ سے ہمارے متعلق عوام میں غلط فہمیاں پھیل رہی ہیں، تردید کریں لیکن یہ خبر پاکے ہمارے رنج والم کا ٹھکانا نہ رہا کہ "سوتنتر" کے ایڈیٹر صاحب ہمارے ساتھ اس قدر بھی اخلاق برتنے کے لئے آمادہ نہ ہوئے انہیں ایک مشہور بارسٹر آر۔ لیس پنڈت کی معرفت اس کے متعلق ایک نوٹس دلوائی گئی جواب ندارد۔ تہذیب اخلاق کا یہ ایک دوسرا نمونہ ہے!!

آخر کار مجبوراً ہمیں الہ آباد کے جوائنٹ جج کی عدالت میں بذریعہ منشی کنھیالال صاحب و منشی مہیشری پرشاد صاحب ایڈوکیٹان "سوتنتر" کے ایڈیٹر اور مطبع اور اشاعت پر ازالہ حیثیت عُرفی کا دعویٰ کرنا پڑا، تاریخ پیشی مقرر ہوئی، "سوتنتر" کے سن رسیدہ ایڈیٹر پنڈت امبکا پرشاد جی باجپئی اور نیز اشاعت صاحب عدالت میں حاضر ہوئے، اپنی تحریر کی تائید میں کوئی ثبوت نہ پیش کر سکے، انھوں نے اپنی اس فاش غلطی کو تسلیم کرتے ہوئے مضمون کے متعلق صاف الفاظ میں معافی کے منتظر ہوئے باوجودیکہ ہمیں صلح کرنے کی کوئی ضرورت نہ تھی اگر ہم چاہتے تو بعد الت دیوانی چارہ جوئی کر سکتے تھے تاہم ہم نے اس مقدمہ بازی کو ہندی کے لئے کوئی باعث فخر نہ سمجھکر اور نیز اپنے کئی احباب کے قابل تعظیم دباؤ کے باعث "سوتنتر" کے ایڈیٹر کی درخواست معافی قبول کرلی اور مقدمہ واپس

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

"سوتنتر" کے ایڈیٹر و نیز اشاعت کنندہ نے ہمیں اخراجات مقدمہ کا ایک جز مبلغ ۱۸۰ روپیہ ادا کیا اور بطور استدعا معافی ایک مضمون اپنی جانب سے ۸ر اکتوبر ۱۹۲۹ء کے "سوتنتر" کے ایڈیٹوریل میں شایع کرکے اپنے اس گناہ کا کفارہ کیا ہے۔

"بھارت میں انگریزی راجیہ" کے متعلق "سوتنتر" کے گذشتہ اساڑھ کرشن ۱۱ر چہارشنبہ کے پرچہ میں "اس ضبطی میں کیا رہسیہ ہے" کی ہیڈنگ میں جو یہ مضمون شایع ہوا تھا اس سے یہ مترشح ہوتا تھا کہ "بھارت میں انگریزی راجیہ" کے اشاعت کنندہ نے:-

(۱) ممالک متحدہ کے گورنمنٹ کے افسران بالادست سے ملکر "بھارت میں انگریزی راجیہ" نامی رسالہ اس لئے ضبط کروادیا تھا کہ بعد مضبطی وہ زیادہ تر قیمت میں فروخت ہو سکے۔

(۲) مولف رسالہ سُندر لال صاحب کو اُجرت تالیف پورے طور پر ادا نہیں ہوئی۔

(۳) رسالہ کو ضبط کروا کے اسکے اشاعت کنندہ صاحب نے ناواجب ناموری ہی نہیں حاصل کرلی بلکہ پیروی مقدمہ کے اخراجات کے لئے اپیل کی جسکی وجہ سے ان کے دونوں ہاتھوں میں لڈو رہے۔ وغیرہ

(۴) بھارت میں انگریزی راجیہ" نامی کتاب کی جلدیں جن کے دو حصوں کی قیمت مبلغ عہ ر تھی وہ بیس بیس روپیہ میں فروخت کی گئیں۔"

ہمیں افسوس ہے کہ اس قسم کی باتوں کے شایع کرنیکے پہلے انکی جانچ نہیں کی گئی تھی اور اب معلوم ہوا کہ یہ سب از سرتاپا دروغ اور بے بنیاد ہیں، اس قسم کے مضمون کی اشاعت کا ہمیں از حد افسوس ہے، ہمارے مضمون بالا کے باعث لوگوں کے خیال میں "بھارت میں انگریزی راجیہ" کے اشاعت کنندہ کے متعلق اگر کوئی نفرت پیدا ہوگئی ہو تو وے اُسے دُور کردیں اور اشاعت کنندہ صاحب سے بھی اپنی اس غلطی کے لئے ہم مودبانہ معافی کے مستدعی ہیں۔

ہمارے متعلق "سوتنتر" کا یہ پہلا حملہ نہ تھا اسکے پیشتر بھی جب ایک مرتبہ مارواڑی لوگوں نے ایک واجب نکتہ چینی پر خفا ہوکر "چاند" کے قلع قمع کا شور و غل مچا رہے تھے اُس وقت میں بھی "سوتنتر" نے چاند کے خلاف مسلسل مضمون شایع کرکے اپنی پست حوصلگی سے آگاہ کیا تھا۔ جیساکہ مسند رسالہ کے ضبط ہو جانے سے ہم مغموم تھے اور ہمیں ایسی حالت میں ہمدردی کی سبھوں سے زیادہ تر ضرورت تھی "سوتنتر" نے ہمیں جگر خراش حملوں سے تکلیف دہی کی کوشش کی۔ "سوتنتر" ہمارے ساتھ ایسا برتاؤ کیوں کرتا ہے اس کا علم ہمیں نہیں ہے لیکن "سوتنتر" جس طرح پر بالکل بے بنیاد اور فرضی باتیں کہکر ہمیں بدنام کرنے کی سعی کیا کرتا ہے یہ حرکت ہم ایک سن رسیدہ اور صاحب علم ایڈیٹر کے لئے قابل تعریف نہیں سمجھتے، ایسے جوابدہی کے خیال سے خالی مضامین کا شایع ہونا (بقیہ مضمون صفحہ ۱۲۴ پر دیکھئے)

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

بخدمت ناظرین و معاونین

"چاند" کی جلد اول واقعی جیسی کہ اُسکی آئندہ جلدیں ہونگی نہیں ہے، وجہ یہ ہے کہ طوالت مضامین زیر اشاعت سے مجبوراً اپنی معمولی ہیڈنگز کی اشاعت بماہ آئندہ ملتوی کرنا پڑا۔

"چاند" میں معمولاً علاوہ متعدد مضامین نظم و نثر لیڈنگ آرٹکلس و نوٹس حسب ذیل ہیڈنگز ہوا کرینگی۔

(۱) گلزار لطائف (۲) تربیت طعام (۳) پند و نصائح (۴) بازیچۂ اطفال (۵) منتخبات (۶) دُنیا کے مرد و عورت (۷) سائنس (۸) موسیقی (۹) آتشِ جہنم (۱۰) روزمرّہ (۱۱) خوبصورتی و تندرستی (۱۲) دوبے جی کی چٹھی (۱۳) نامہ و پیام (۱۴) گھریلو دوائیاں (۱۵) خانہ داری (۱۶) ہندولا میں عورتوں کے حقوق (۱۷) نکات و مسائل (۱۸) تنقید و تبصرہ۔

"چاند" میں کم از کم ۱۲۰ صفحات قابل مطالعہ مضامین سے پُر علاوہ کارٹونس، تصاویر رنگین و دیگر تصاویر ہونگے، یہ اس کا دوامی خاکہ ہوگا، حتی الامکان "چاند" اس بات کا کوشاں رہیگا کہ وہ مفید اور دلپذیر ناظرین ہو۔

ہم اپنے بخوشی تمام اپنے ایک کثیر التعداد معاونین کے جنھوں نے مضامین نظم و نثر وغیرہ جلد اول میں شایع ہونے کے لئے مرحمت فرمایا ہے نہایت ممنون و مشکور ہیں، ہم اس بات کا بافسوس اظہار کرتے ہیں کہ مجبوراً ہم کو مضامین موصولہ کو بوجہ عدم گنجایش روک لینا پڑا۔

"چاند" مضامین اعلیٰ کا خیر مقدم اور شکریہ پیشگی ادا کرتا ہے، ہم بخوشی ایسے مضامین قابل اشاعت کا لحاظ کرینگے اور ہمارے منظور شدہ مضامین بالیقین "چاند" میں جگہ پا دینگے، معاونین و ناظرین دونوں کی امداد و اتحاد باہمی سے جن کی بابت ترقی شوق جو کہ از حد ہمارے دستگیر ہونگے۔ ہم خدمات سوسائٹی و ملک کی کار آمد زندگی کی اُمید کر سکتے ہیں۔

اس جانب بھی نظر توجہ بنی رہے کہ جملہ مضامین نظم و نثر بغرض اشاعت کتب و رسالہ بغرض تنقید و تبادلہ بنام ایڈیٹر "چاند (اُردو) ۲۸ رائیڈ منسن روڈ الہ آباد موصول ہونا چاہئے۔

(بقیہ مضمون صفحہ ۱۱۲)

اور خصوصاً ایڈیٹوریل میں ہندی اخبارات کے لئے واقعی بڑی شرم کا باعث ہے۔

ہم "سوتنتر" کے اس قابل نفرین کارروائیوں کو حقارت کی نظر سے دیکھتے ہیں اور اُمید کرتے ہیں کہ "چاند" کے خریداران اور عنایت فرما اس ہتھکنڈوں کو ذلیل سمجھ کر اس پر نظر توجہ نہ ڈالیں گے اور "سوتنتر" کی اس غلطی کو معافی فرمائینگے۔

پرنٹر بجرنگ بہادر سریواستو۔ بجرنگ پریس ۳۹ ہیوٹ روڈ الہ آباد
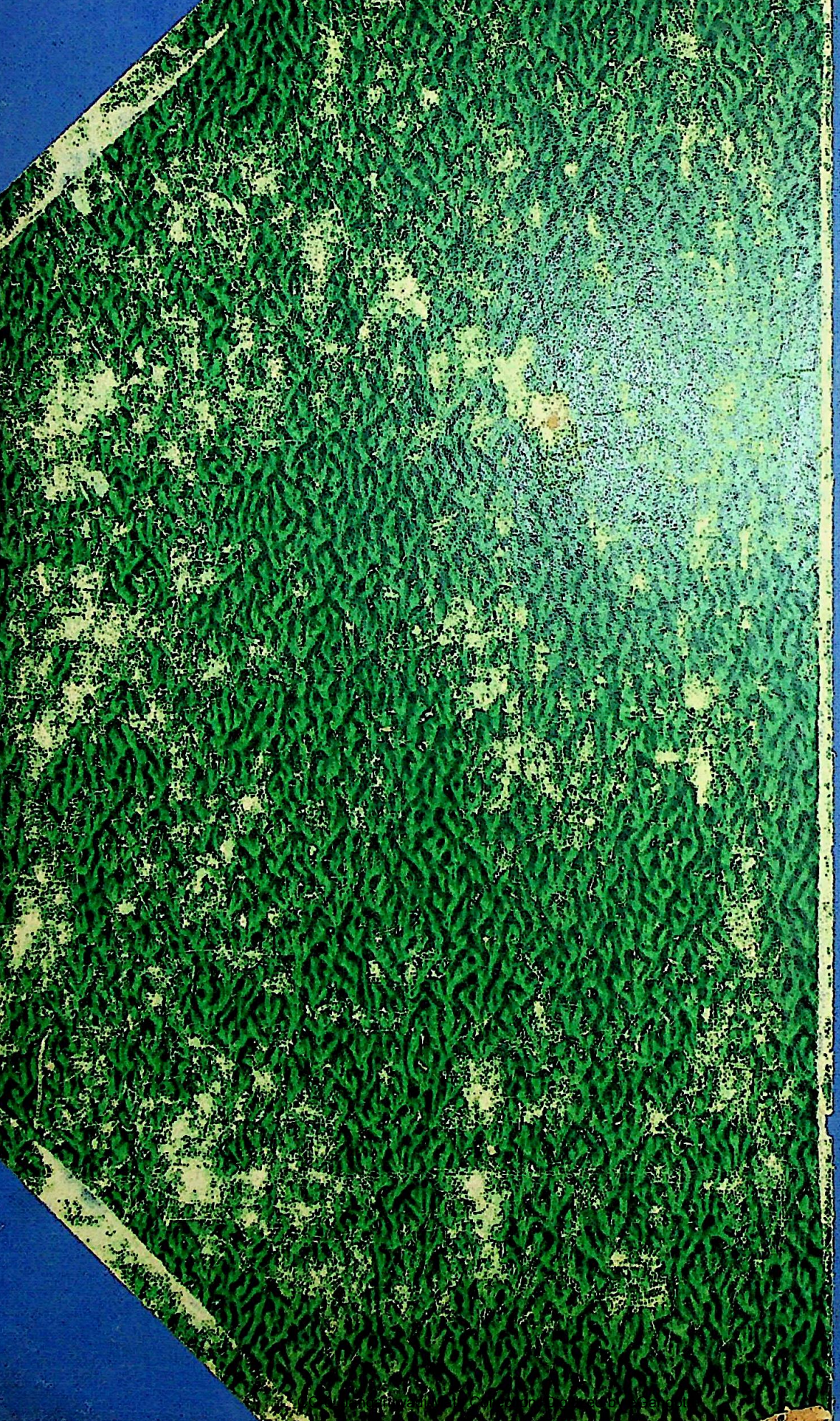
CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri